राजस्थान के जैन शास्त्र मराहारों

4

—= ग्रन्थ-सूची ==

[चतुर्थ भाग]

(जयपुर के बारह जैन ग्रंथ भंडारों में संग्रहीत दम हजार से अधिक ग्रंथों की सूची, १८० ग्रंथों की प्रशस्तियां तथा ४२ प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों का परिचय सहित)

भूमिकालेखक.-

डा० वासुदेव शारण अग्रवाल , श्राप्यक्त हिन्दी विभाग, काशी विश्व विद्यालये, वाराससी

सम्गादकः---

डा० कस्तूरचंद कासलीवालं एम. ए. पी-एम. डी., बास्त्री - - -पं० अनूपचंद न्यायतीर्थ साहित्यरल

R

प्रकाशक :---

केशरलाल बरूशी

संत्री :---

प्रबन्धकारिणी कमेटी श्री दिगम्बर जैन चित्रस्य चेत्र श्री महाबीरजी महाबीर भवन, जवपुर

पुस्तक पाप्ति स्थान:-

- मंत्री श्री दिगम्बर जैन अ० लेत्र श्री महावीरजी
 महाबीर भवन, सवाई मानसिंह हाईवे, जयपुर (राजस्थान)
- २. मैनेजर दिशम्बर जैन अ० चेत्र श्री महावीरजी श्री महावीरजी (राजस्थान)

鲘

प्रथम संस्करण ४०० प्रति महाबीर जर्यान्त वि० सं० २०१९ ऋप्रेल १६६२

鲘

मुद्रकः— मॅनरलाल न्यापतीर्थ भी नीर मेस, जयपुर ।

★ विषय-सूची ★

•		
प्रकाशकीय	****	पत्र संख्या १-२
८ भूमिका	***	₹–8
१ प्रस्तावना	****	¥- -२३
) प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों का परिचय	****	₹8-8=
,, ,, विवरसा	****	8E-XE
त्रिषय		पत्र संख्या
१ सिद्धान्त एवं चर्चा	****	P—80
२ धर्म एवं ऋगचार शास्त्र	****	8<£=
अध्यात्म एवं योगशास्त्र	••••	६६-१२८
्रेन्याय एवं दर्शन	****	989-359
पुराण् साहित्य	****	*१४२-१४६
्काञ्य एवं चरित्र	****	१६०-२१२
र् कथा साहित्य	****	२१३-२४६
ः व्याकरण साहित्य	••••	२्४७२७०
ं ६ कोश	••••	२७१-२७=
१० ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान	****	२७६-३६४
११ चायुर्वेद	••••	२६६-३०७
्रे२ चन्द एवं श्रसंकार	****	३०=-३१४
्रै ६ संगीत एवं नाटक	***	३१६–३१⊏
रिंश लोक विज्ञान	••••	३१६–३२३
१४ सुभाषित एवं नीति शास्त्र	****	३२४–३४६
१९ मंत्र शास्त्र	****	<i>386-385</i>
१७ काम शास्त्र	****	ENE
१८ शिल्प शास्त्र	••••	#X8

		पत्र संख्या'
. 0	****	3xx-3xe
१६ लक्ष्म एवं समीका		३६०-३६७
२० फागु रासा एवं वेलि साहित्य	***	३६=-३६६
२१ गणित शास्त्र	****	70,5
२२ इतिहास	****	રેહદ~ ઇ પ્રર [‡]
२३ स्तोत्र साहित्य		844-444
२४ पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य	••••	<i>ጟጷ</i> ፞ - ዾጷጷ
२४ गुटका संग्रह	***	७६६६००
२६ द्भवशिष्ट साहित्य	****	== १-==४
७ ग्रंथानुकमणिका		<u> </u>
८ ग्रंथ एवं ग्रंथकार	••••	£2E-£30
	****	£46-640
ह शासकों की नामात्रलि		.३१३−६३
१० ग्राम एवं नगरों की नामापलि		£80-E4 3
११ शुद्धाशुद्धि पत्र		_

فضف

🛨 प्रकाशकीय 🔻

' प्रथ सूची के चतुर्थ भाग को पाठकों के हाथों में देते हुये गुक्ते प्रसन्नता होती है। प्रथ सूची का यह भाग श्रव तक प्रशाशित प्रथ सूचियों में सबसे वड़ा है और इसमें १० हजार से अधिक प्रयों का विवरण दिया हुआ है। इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भंडारों के प्रयों की सूची दी गई है। इस प्रकार सूची के चतुर्थ भाग सहित श्रव तक जयपुर के १० तथा श्री महावीरजी का एक, इस तरह १० भंडारों के अनुमानतः २० हजार प्रयों का विवरण प्रकाशित किया जा चुका है।

प्रंबों के संकलन को देखने से पता चलता है कि जयपुर प्रारम्भ से ही जैन साहित्य एवं संस्कृति का फेन्द्र रहा है और दिगम्बर शास्त्र भंडारों की दृष्टि से सारे राजस्थान में इनका प्रयस स्थान है। जयपुर बड़े बड़े विद्वानों का जन्म स्थान भी रहा है तथा इस नगर में होने वाले टोडरमल जी, जयचन्द्र जी, सदामुखजी जैसे महान विद्वानों ने सारे भारत के जैन समाज का साहित्यक एवं धार्मिक दृष्टि से पय-प्रश्नत किया है। जयपुर के इन भंडारों में विभिन्न विद्वानों के हाथों से लिली हुई पाय-लिपियां प्राप्त हुई हैं जो राष्ट्र एवं ममाज की श्रमूल्य निधियों में से हैं। जयपुर के पाटोदी के मन्दिर के शास्त्र भंडार में पंठ टोडरमल जी द्वारा लिखे हुये गोम्मस्सार जीवकांड की मूल पाय-लिपियां प्राप्त हुई है जिसका एक विश्व हमने उम भाग में दिया है। इसी तरह महा रायमस्त्र, जोघराज गोदीका, खुरालचंद श्रादि श्रन्य विद्वानों के द्वारा लिखे हुई प्रतियां हैं।

इस प्रंथ सूची के प्रकाशन से भारतीय साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य को कितना लाभ पहुँचा/इसशा सही व्यनुसान तो विद्वान ही कर सकेंगे किन्तु इतना व्यवस्य कहा जा सकता है कि इस भाग के प्रकाशन से संस्कृत, व्यपभंश एवं हिन्दी की सैकडों प्राचीन एवं ब्रह्मात रचनायें प्रकाश में व्यायी हैं। हिन्दी की व्यभी १२ वी शताब्दी की एक रचना जिनवत्त चौपई जयपुर के पाटोदी के मन्दिर में उपलब्ध हुई है जिसको संभवतः हिन्दी भाषा की सर्वाधिक प्राचीन रचनाओं में स्थान मिल संकृता तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास में वह उल्लेखनीय रचना कहलायी जा सकेगी। इसके प्रकाशन की व्यवस्था शीप ही की जा रही है। इससे चूर्व प्रयुक्त चरित की रचना प्राप्त हुई थी जिसको सभी विद्वानों ने हिन्दी की व्यव्हें रचना स्थीकार किया है।

उनत सूची प्रकाशन के आतिरिक्त त्रेत्र के साहत्य शोध संख्यान की ओर से अब तक प्रथ सूची के तीन भाग, प्रशस्ति संप्रह, सर्वाधीसद्धिसार, तामिल भाषा का जैन साहित्य, Jainism a key to true happiness. तथा प्रयुक्तचरित चाठ प्रथों का प्रकाशन हो चुका है। सूची प्रकाशन के चातिरिक्त राजस्थान के विभिन्न नगर, करने एवं गांचों में स्थित ७० से भी अधिक भंडारों की प्रथ सुचियां बनायी जा चुकी हैं जो इसारे संस्थान में हैं, तथा जिनसे विद्वान एवं साहित्य शोध में लगे हुये विशाधी लाभ उठाते रहते हैं। मंथ सूचियों के साथ २ करीब ४०० से भी अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रचीन मंथों की मरास्तियां एवं परिचय लिये जा चुके हैं जिन्हें भी पुन्तक के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्ही पद भी इन मंद्यारों में प्रवुर संख्या में निलने हैं। ऐसे करीब २००० पदों का हमने संबद्द कर लिया है जिन्हें भी प्रकाशित करने की योजना है तथा संभव है इस वर्ष हम इसका प्रथम भाग प्रकाशित कर सकें। इस तरह लोज पूर्ण साहित्य प्रकाशन के जिस उद्देश्य से चेत्र ने साहित्य शोध संस्थान की स्थापना की थी हमारा वह उद्देश्य भीरे धीरे परा हो रहा है।

भारत के विभिन्न विद्यालयों के भारतीय भाषाओं सुक्यतः प्राक्तत, संस्कृत, अपभ्रंश हिन्दी एवं राजस्थानी भाषाओं पर खोज करने वाले सभी विद्वानों से निवेदन है कि वे प्राचीन साहित्य एवं विशेषतः जैन राहित्य पर खोज वरने वा प्रदास करें। हम भी उन्हें साहित्य उपलब्ध करने में यथाशकि सहयोग होंगे।

प्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के जिन जिन शास्त्र मंडारों की सूची दी गई है मैं उन भंडारों के सभी व्यवस्थापकों का तथा विशेषतः श्री नाधूलालजी वज, श्रानूपचंदजी दीवान, पंट भंबरलालजी न्यायतीर्थ, श्रीराजमलजी गोघा, सभीरमलजी आवड़ा, कपूरचंदजी रांवका, एवं प्रो. सुल्तानर्सिहजी जैन का श्राभारी हूं जिन्होंने हमारे शोध संस्थान के विद्वानों को शास्त्र भंडारें की सूचियां बनाने तथा समय समय पर वहां के प्रंथों को देखने में पूरा सहयोग दिया है। श्राशा है भविष्य में भी उनका साहित्य सेवा के पुनीत कार्थ में सहयोग मिलता रहेगा!

हम श्री डा॰ वासुदेव रारणजी कामवाल, हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणमी के हृदय में आभारी हैं जिन्होंने कास्तरथ होते हुये भी हमारी प्रार्थना स्वीकार करके प्रथ सूची की भूमिका लिखने की कृषा की है। भविष्य में उनका प्राचीन साहित्य के शोध कार्य में निर्देशन मिलता रहेगा ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

इस प्रंय के विद्वान् सम्यावक श्री डा॰ कस्तूरचंद्जी कासतीयाल एवं उनके महयोगी श्री पं॰ अनुपचंदजी न्यायतीर्थ नथा श्री सुगनचंदजी जैन का भी मैं आभारी हूं जिन्होंने विभिन्न शास्त्र मंडारों को देखकर लगन एवं परिश्रम से इस प्रंय को तैयार किया है। मैं जयपुर के सुयोग्य विद्वान् श्री पं॰ चैन-सुख़दासजी न्यायतीर्थ का भी हृदय से आभारी हूं कि जिनका हमको साहित्य शोध संस्थान के कार्यों में प्य-प्रदर्शन व सहयोग मिलता रहता है।

मूमिका

श्री दिगम्बर जैन खातराय चेत्र श्री महावीर जी, जयपुर के कार्यकर्ताशों ने कुछ ही वर्षों के भीतर खपनी संस्था को भारत के साहित्यक मानांचत्र पर उभरे हुए रूप में टांक दिया है। इस संस्था द्वारा संचालित जैन साहित्य शोध संस्थान का महत्वपूर्ण कार्य समी विद्वानों का ध्यान हठान् खपनी और खींच लेने के लिए पर्यारत है। इस संस्था को श्री करत्र्य चंद्र जी कासलीवाल के रूप में एक मीन साहित्य साधक प्राप्त हो गए। उन्होंने अपने संकरप बल और खद्मुत कार्यशांक द्वारा जयपुर एवं राजस्थान के अन्य नगरों में जो शास्त्र भंडार पुराने समय से चले खाते हैं उनकी छान बीन का महत्वपूर्ण कार्य खपने उपर चठा लिया। शास्त्र भंडारों की जांच उनकी कमबद्ध वर्गीकृत और परिचयात्मक सूची बनाने का कार्य बिना करें हुए कितने ही वर्षों तक कासजीवाल जी ने किया है। सीमाय से उन्हें खतिराय चेत्र के संबालक और प्रवंपकों के रूप में ऐसे सहयोगी मिले जिन्होंने इस कार्य के राष्ट्रीय महत्व को पहचान लिया और सूची पत्रों के विधिवन प्रकारान के लिए आधिक प्रवंध नी कर दिया। इस प्रकार का मिणकांचन संबोग वहन ती एलाय इस प्रकार का परिचयात्मक सूची मं में के तीन भाग पहले सुदित हो चुके हैं। जिनमें लगभग दस सहत्य मं थों का नाम और परिचय खा चुका है। हिन्दी जान में इन मंथों का ज्यापक स्वागत हुखा। और विश्वविद्यालयों में शोध करने वाले विद्वानों को इन मंथों के द्वारा बहुत सी खातर नहें सामग्री का परिचय प्राप्त हुखा। सहत्व सी शोध करने वाले विद्वानों को इन मंथों के द्वारा बहुत सी आहात नई सामग्री का परिचय प्राप्त हुखा।

उससे प्रोत्साहित होकर इस शोध संस्थान ने अपने कार्य को और अधिक वेगयुक करने का तिरचय किया। उसका प्रत्यक्त कला प्रंथ सूची के इस चतुर्ध आग के रूप में इसारे सामने हैं। इसमें एक साथ ही लगभग १० सहस्त्र नए इस्तलिखित प्रंथों का परिचय दिया गया है। परिचय यदाप संद्वित है किन्नु उस के लिखने में विवेक से काम लिया गया है जिनमे महत्वपूर्ण या नई सामगी की और शोध कर्त्ता बिद्धानों का ध्यान अवश्य आकृष्ट हो सकेगा। प्रंथ का नाम, प्रंथ कर्ता का नाम, प्रंथ की भाषा, लेवन की तिथि, प्रंथ पूर्ण है या अपूर्ण इत्यादि तथ्यों का यथा संभव परिचय देते हुए महत्वपूर्ण सामग्री के उदरण या अवतरण भी दिये गये हैं। प्रमृत सूची पत्र में तीन सौ से ऊपर गुटकों का परिचय भी सम्मिलत है। इन गुटकों में विविध प्रकार की साहित्यक और जीवनोपयोगी सामग्री का संग्रह किया जाता था। शोध कर्त्ता विद्वान यथावकाश जब इन गुटकों की व्योरेवार परीचा करेंगे तो उनमें से साहित्य की बहुत सी नई सामग्री प्राप्त होने की आशा है। प्रंथ संख्या ४४०६ गुटका संख्या १२४ में भारतवर्ष के मौगोलिक विस्तार का परिचय देते हुए १२४ देशों के नामों की सूची अत्यन्त अपयोगी है। प्रध्वीचंद चरित्र आवि कर्यां के स्वर्ध कर्यां में इस प्रकार की और भी भौगोलिक सूचिया मिलती हैं। उनके साथ इस सूची

का तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी होगा। किसी समय इस सूची में ६८ देशों की संख्या रूढ .हो गई थी। बात होता है कालान्तर में यह संख्या १२४ तक पहुँच गई। गुटका संख्या २२ (मंथ संख्या ४४०२) में नगरों की बसापत का संवत्वार व्यौरा भी उल्लेखनीय है। जैसे संवत् १६१२ अकवर पातसाह आगरो बसायो : संवत् १७१४ औरंगसाह पातसाह औरंगावाद वतायो : संवत् १२४४ विमल मंत्री स्वर हुवो विमल बसाई।

विकास की उन पिछली शांतियों में हिन्दी साहित्य के कितने विविध साहित्य रूप थे यह भी अंगुसंधान के लिए सहत्वपूर्ण विषय है। इस सूची को देखते हुये उनमें से आनेक नाम सामने आते हैं। जैसे स्तीत, पाठ, संमह, कथा, रासो, रास, पूजा, मंगल, अयमाल, प्ररानत्ती, मंत्र, अष्टक, सार, समुरूचय, वर्ष्णन, सुभाषित, चौपई, ग्रुमालिका, निराणी, जकही, व्याइली, वधावा, विनती, पत्री, आगती, वोल, वरचा, विचार, नात, गीत, लीला, चरित्र, इंद, ख्र्पय, भावना, विनोद, करूप, नाटक, प्रशस्त, धमाल, वैद्यालिका, चौमासिया, वरासामास, वटोई, बेल, हिंडोलखा, च्यूनडी, सरक्षाय, वाराखड़ी, भकि, वन्दना, पच्चीती, क्तीसी, पचांसा, वावनी, सत्तद, सामायिक, सहस्रनाम, नामायली, गुरुवायली, स्तवन, संवोध्यन, मोहली आदि, पद्याली, स्तवन, संवोध्यन, मोहली आदि। इन विविध साहित्य रूपों में से किसका कब आश्म हुआ और किस प्रकार विकास और विकास हुआ, वह शोध के लिये रोचक विषय है। उसकी वद्युप सामधी उन मंडारों में मुर्तकृत है।

राजस्थान में कुल शास्त्र मंडार लगभग दो सी हैं और उनमें संचित प्रं थों की संख्या लगभग हो लाल के आंकी जाती है। हवें की वात है कि शोध संस्थान के कार्य कर्ता इस भारी दायित्व के प्रति-जागरूक हैं। पर स्वभावतः यह कार्य दीर्घकालीन साहित्यक साधना और बहु व्यय की अपेला गवता है। जिंस प्रकार अपने देश में पूना का भंडारकर इस्स्टीट्यूट, तंजोर की सरस्वनी महल लाइ मेरी, मद्राम विश्वविद्यालय की ओरिवन्टल मेनस्किल्ट्स लाइ मेरी या कल करो की वंगाल परिवादिक सोमाइटी का प्रंथ भंडार हस्तिलिक्त प्रंथों को प्रकाश में लाने का कार्य कर रहे हैं और उनके कार्य के महत्व को मुक्त कंठ से सभी स्वीकार करते हैं, आशा है कि उसी प्रकार महत्वीर अतिराय क्षेत्र के जैन साहित्य शोध मंस्थान के कार्य की ओर प्रता और यह संस्था जिस सहायता की पात है, वह उसे मुक्त के जियागी। संस्था ने अब कर अपने साधनों से बड़ा कार्य किया है, किम्मु जो कार्य शेष हैं वह कहीं अधिक बड़ा है और इसने संहेह नहीं कि प्रवारत की पात है, वह उसे मुक्त के जो साहित्य रचना होती रही उसकी संचित निर्ध का कुलेर जैसा समृद्ध कोष ही हमारे सामने आ गया है। आज से केवल १४ वर्ष पूर्व तक इन मंडारों के अस्तित्व का पता वहुत कम लोगों को था और उनके संबंध में छान वीन का हार्य तो कुछ हुआ ही नहीं था। इस सबको देखते हुये इस संस्था के महत्वपूर्ण कार्य का व्यापक स्थागत किया जाना चाहिये।

काशी विद्यालय

प्रस्तावना

राजस्थान शताब्दियों से साहित्यक त्तेत्र रहा है। राजस्थान की रियासतें यद्यपि विभिन्न राजाओं के ऋषीन थी जो आपस में भी लड़ा करती थीं फिर भी इन राज्यों पर देहती का सीघा सम्पर्क नहीं रहने के कारण यहां ऋषिक राजनीतिक उथल पुथल नहीं हुई और सामान्यतः यहां शान्ति एवं व्यवस्था बनी रही। यहां राजा महाराजा भी अपनी प्रजा के सभी धर्मी का समादर करते रहे इसलिये उनके शासन में सभी धर्मों के स्वतन्त्रता प्राप्त थी।

जैन धर्मानुवायी सदैव शान्तिभिय रहे हैं। इनका राजस्थान के सभी राज्यों में तथा विशेषतः जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैमलमेर, उदयपुर, बूंदी, कोटा, खलबर, भरतपुर खादि राज्यों में पूर्ण ममुत्व रहा। शानाविद्यों तक वहां के शासन पर उनका खाधिकार रहा और वे खपनी स्वामिभक्ति, शासनदक्ता एवं सेवा के कारण सदैव ही शासन के सर्वोच्च स्थानों पर कार्य करते रहे।

प्राचीन साहित्य की सुरत्ता एवं नवीन साहित्य के निर्माण के लिये भी राजस्थान का वाता-बरण जैनों के लिये बहुत ही उपयुक्त सिद्ध हुआ। यहां के शासकों ने एवं समाज के सभी वर्गों ने उस श्रोर बहुत ही रुचि दिललायी इसलिये सैकड़ों की संख्या में नये नये प्रंथ तैयार किये गये तथा हजारों प्राचीन प्रंथों की प्रतिलिपियां तैयार करवा कर उन्हें नष्ट होने से बचाया गया। त्याज भी हस्तलिखित प्रंथों का जितना सुन्दर संग्रह नागौर, बीकानेर, जैसलमेर, ब्राजमेर, त्याग्रेर, ज्यपुर, उदयपुर, ऋषभदेव के प्रंथ भंडारों में मिलता है उतना महत्वपूर्ण संग्रह भारत के बहुत कम भंडारों में मिलेगा। ताइपन्न एवं कागज दोनो पर लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रतियां इन्हों भंडारों में उपलब्ध होती हैं। यही नहीं व्यपक्षार, हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा का व्यथिकार साहित्य इन्हों भच्डारों में संग्रहीत किया दुआ है। व्यपक्षार। साहित्य के संग्रह की दृष्टि में नागौर एवं जयपुर के भन्डार उन्होंकतीय हैं।

श्राजमेर, नागौर, श्रामेर, वहयपुर, हूं गरपुर एवं ऋषभदेव के अंडार भट्टारकों की साहित्यक गतिविधियों के केन्द्र रहे हैं। ये भट्टारक केवल धार्मिक नेता ही नहीं ये किन्तु इनकी साहित्य रचना एवं उनकी सुरक्ता में भी पूरा हाथ था। ये स्थान स्त्रान पर अमण करते ये श्रीर वहां से अन्यों की बटोर कर इनको श्रपने सुख्य सुख्य स्थानों पर संबद्द किया करते थे।

शास्त्र भंडार सभी आकार के हैं कोई छोटा है तो कोई बढ़ा । किसी में केवल स्वाध्याय में काम आने वाले प्रथ ही संप्रहीत किये दुये होते हैं तो किसी किसी में सब तरह का साहित्य मिलता है । साथारणतः हम इन प्रथ भंडारों को ४ श्रे णियों में बांट सकते हैं !

- १. पांच हजार मंथीं के संग्रह बाले शास्त्र भंडार
- २. पांच हजार से कम एवं एक हजार से अधिक प्रंथ वाले शास्त्र अंडार

- ३. एक हजार से कम एवं पांचसी से ऋधिक प्रंथ वाले शास्त्र भंडार
- पांचमी प्रथों से कम वाले शास्त्र भंडार

इत शास्त्र भंडारों में केवल धार्मिक सिह्त्य ही उपलब्ध नहीं होता किन्तु काव्य, पुराण, क्योतिष, आयुर्वेद, गणित आदि विधयों पर भी मंथ मिलते हैं। प्रत्येक मानव की रुचि के विध्य, कथा कहाबी एवं नाटक भी इनमें अच्छी संख्या में उपलब्ध होते हैं। यही नहीं, सामाजिक राजनीतिक एवं अवश्यास्त्र पर भी मंथों का संमह मिलता है। कुछ भंडारों में जैनेतर विद्वानों द्वारा तिखे हुये अवश्य मंथ भी संम्रहीत किये हुये मिलते हैं। वे शास्त्र मंडार बोज करते वाल विद्यार्थियों के लिये शोध संस्थान हैं लेकिन भंडारों में साहत्य की इतनी अमृत्य सम्पत्ति होते हुये भी कुछ वर्षे पूर्व तक ये विद्वानों के पहुंच के बाहर रहे। अब कुछ समय वदत्ता है और मंडारों के ट्यक्त्यापक मंथों के दिवलाने में उतनी आता-कानी नहीं करते हैं। यह परिवर्तन वास्तव में कोज में लीन विद्वानों के लिये शुभ हैं। आज के २० वर्ष पूर्व तक राजस्थान के ६० मिलता मंडारों के न तो किसी जैन विद्वान ने देना और न किसी जैनसर विद्वान ने हम मंडारों के महत्व को बानने का प्रयास ही किया। अब गत १०, १५ वर्षों से इधर कुछ विद्वानों का ध्यान आवश्च हुआ है और सर्थ प्रयम इसने राजस्थान के ५५ के करीव भंडारों को देना है भीर सेंबरों की देखते की योजना वनाई जा चुकी है।

ये अंध अंडार आचीन बुरा कें पुस्तकालयों का काम भी देते थे। इनमें यैठ कर स्वाध्याय प्रेमी शास्त्रों का ध्यध्ययन किया करते थे। उस समय इन अंधों की सूर्वियां भी उपलब्ध हुआ करती थी तथा ये अंध लकड़ी के पुट्टों के बीच में रलकर सून अधवा सिल्क के फीतों से वांचे जाने थे। किर उन्हें कपड़े के वेष्टनों में बांध दिया जाता था। इस प्रकार अंधों के वैद्धानिक रीति से रखे जाने के कारण इन अंडारों में ११ वीं शताब्दी तक के लिखे हुये अंध पाये जाते हैं।

जैसा कि पहिले कहा जा जुका है कि वे भंध भंडार नगर करने एवं गांवों तक में पाये जाते हैं इसकिये राजस्थान में उनकी वास्तविक संख्या कितनी है उसका पता कराना कांठन है। फिर भी यहां असुमानतः क्षांटे बड़े २०० भंडार होंगे जिनमें १॥, २ कास से अधिक इस्तांविधत अंधों का संग्रह है।

जब्धुर आरम्भ से ही जैन संस्कृति एवं साहित्य का केन्द्र रहा है। यहां १४० से भी श्राधिक जिन मंदिर एवं जैत्यालय हैं। इस नगर की स्थापना संवत्त १७५४ में महाराजा सवाई जबसिंहजी द्वारा की नाई भी तथा उसी समय श्रामेर के बजाय जयपुर को राजधानी बनाया गया था। महाराजा ने इसे साहित्य एवं कता का भी केन्द्र बनाया तथा एक राज्यकीय पोधीखाने की स्थापना की जिसमें भारत के विभिन्न स्थानों से लाये गये सैक्टों महत्वपूर्ण इस्तिलांब्यत ग्रंथ संमिति किये हुये हैं। यहां के महाराजा मतापरिंग्हजी भी विद्यान् थे। इन्होंने कितने ही मंथ लिखे थे। इनका लिला हुआ एक ग्रंथ संगीतसार जयपुर के बड़े मन्दिर के साहत्र मंडार में संमदीत है।

१८ वी एवं १६ वी शताब्दी में अयपुर में अनेक उच्च कोटि के विद्वान हुये जिन्होंने साहित्य की अपार सेवा की। इनमें दौलतराम कासलीवाल (१८ वी शताब्दी) रामनीराम (१८, १६ वी शताब्दी) रामनीराम (१८, १६ वी शताब्दी) दोपचन्द्र कासलीवाल (१८ वी शताब्दी) जयचन्द्र कावजा (१६ वी शताब्दी) केश्वर्यात्र कावजा (१६ वी शताब्दी) निम्दलाल कावजा (१६ वी शताब्दी) ग्यक्तपचन्द्र विलाला (१६ वी शताब्दी) सदासुल कासलीवाल (१६ वी शताब्दी) महालाल लिन्दुका (१६ वी शताब्दी) प्रतस्वास निनोत्या (१६ वी शताब्दी) जैतराम (१६ वी शताब्दी) महालाल लिन्दुका (१६ वी शताब्दी) तुलीचन्द्र (१६ वी शताब्दी) आदि विद्वानों के नाम उत्तर्वेताचनि प्रताबनी विद्वानों के नाम उत्तर्वेताचनि पर भाग रीवा किली थी। इन विद्वानों के जम उत्तर्वेताचनि पर भाग रीवा किली थी। इन विद्वानों के अवार के लिये सैकड़ी प्राकृत पर्यो पर भाग रीवा किली थी। इन विद्वानों के अवार के लिये सैकड़ी लापकार हुये जिन्होंने अवकों के अमुरोध पर सैकड़ी प्रत्यों की लिपयां कर के विराजमान की। इन विद्वानों के अतिरिक्त यहां सैकड़ी लिपकार हुये जिन्होंने अवकों के अमुरोध पर सैकड़ी प्रत्यों की लिपयां की तथा जनमें सिकड़ी नि विद्वानों के विद्वानों के विद्वानों के विषय नगर के विभिन्न भवारों में रिली गई।

प्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भंडारों के प्रथों का विवरण दिया गया है ये सभी शास्त्र भंडार वहां के प्रमुख शास्त्र भंडार है और इनमें दस हजार से भी ऋषिक मधों का संग्रह है। महत्वपूर्ण प्रयों के संग्रह की दृष्टि से का, ज तथा का भन्डार प्रमुख हैं। प्रथ सूची में आये हुये इन मंडारों का संक्लित विवरण निम्न प्रकार है।

१. शास्त्र मंडार दि० जैन मन्दिर पाटोदी (अ भंडार)

यह भंडार दि॰ जैन पाटोदी के मंदिर में स्थित है जो जयपुर की चौकड़ी मोदीलाना में है। यह मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध जैन पंचायती मन्दिर है। इसका प्रारम्भ में खादिनाय चैत्यालय भी नाम या। लेकिन बाद में यह पाटोदी का मन्दिर के नाम से ही कहलाया जाने लगा। इस मन्दिर का निर्माण जोंघराज पाटोदी द्वारा कराया गया था। लेकिन मन्दिर के निर्माण की निर्चत तिथि का कही उल्लेख नहीं मिलता। किर भी यह अवश्य कहा जा सकता है कि इसका निर्माण जयपुर नगर की ग्यापना के साथ साथ हुखा था। मन्दिर निर्माण के परचान यहां शास्त्र मंद्यार की स्थापना हुई। इसलिये यह शास्त्र मंद्यार २०० वर्ष से भी खिक पुराना है।

मन्दिर प्रारम्भ से ही भट्टारकों का केन्द्र बता रहा तथा श्रामेर के भट्टारक भी यही श्राकर रहने कने। भट्टारक चेमेन्द्रकीलि झुरेन्द्रकीलि, झुखेन्द्रकीलि एवं नरेन्द्रकीलि का क्रमशः सवत् १८१४,

र. देखिये प्र'व सूची पृष्ठ संस्था १६६, व ४६०

१५२२, १८६३, तथा १८७६ में यही पट्टाभिषेक' हुव्या या। इस प्रकार इनका इस मन्दिर से करीव १०० वर्ष तक सीधा सम्पर्क रहा।

प्रारम्भ में यहां का शास्त्र भंडार भट्टारकों की देख रेख में रहा इसलिये शास्त्रों के संमद में दिन मतिदिन वृद्धि होती रही। यहां शास्त्रों की जिल्लाने जिल्लाने की भी चच्छी ज्यवस्था थी इसलिये आवकों के खनुरोध पर वहीं पंथों की मतिलिपियां भी होती रहती थी। अट्टारकों का जब प्रभाव चीण होने लगा, तमा जब वे साहित्य की चोर उपेचा दिललाने लगे तो यहां के भंडार की ज्यवस्था आवकों ने संभाव ली। लेकिन शास्त्र भंडार में संमहीत मंथों को देखने के परचात यह पता चलता है कि आवकों ने संभाव ली। लेकिन शास्त्र भंडार में संमहीत मंथों को देखने के परचात यह पता चलता है कि आवकों ने संभव्य में डार कि भेषों की संख्या वृद्धि में विशेष चामिकचि नहीं दिललाई चौर उन्होंने मंडार को उसी जबस्था में डरिचन रला।

हस्तनिखित ग्रंथों की संख्या

भंडार में शास्त्रों की कुल संस्था २२४७ तथा गुटकों की संस्था २०८ है। लेकिन एक एक गुटके में बहुत से शंधों का संग्रह होता है इसलिये गुटकों में १८०० से भी काधिक गंधों का संग्रह है। इस प्रकार इस भंडार में चार हजार शंधों का संग्रह है। भक्तामर, स्तोत्र एवं तत्वार्थसूत्र की एक एक ताडपत्रीय प्रति को छोड़ कर शेष सभी गंध कागज पर लिखे हुये हैं। इसी गंडार में कपडे पर लिखे हुये इस्स जम्बूद्वीय एवं क्षवाईद्वीय के चित्र एवं यस्त्र, मंत्र क्षादि का उल्लेखनीय संग्रह हैं।

भंडार में महाकि पुष्पदन्त कृत जताहर चरिंछ (यशोधर चरित) की प्रति सबसे प्राचीन है को संबत १४०० में चन्द्रपुर दुर्ग में लिखी गई थी। इसके व्यतिरिक्त यहां १४ वी, १६ वी, १७ वी एवं १८ वी ताहाव्यी में किस्से हुव शंबों की संख्या व्यधिक है। प्राचीन प्रतियों में गोम्मटसार जीवकांड, तत्त्वाय सृत्र (सं० १४४८) इव्यस्तह कृत्ति (प्रहादेव-सं० १६३४), उपासकाचार वोहा (सं० १४४४), वर्म-संग्रह आवकाच्यर (संवत् १४४२) आवकाचार (गुणभूषणाचार्य संवत् १४६२,) समयसार (१४४४), विद्यानित्व कृत व्यष्टसहस्त्री (१७६१) उत्तरपुराण दिष्पण प्रभाषन्य (सं० १४७४) शान्तिनाथ पुराण (व्यवस्त्रकवि सं. १४४२) ऐतिव्याह चरिए (त्रवसण देव सं. १६६६) नागकुमार चरित्र (सल्क्षिण कि सं. १४६४) वराग चरित्र (वर्द्ध मान देव सं. १४६४) नवकार प्रावकाचार (सं० १६१२) व्यक्ति वर्द्ध मान देव सं. १४६४) नवकार प्रावकाचार (सं० १६१२) व्यक्ति वर्द्ध मान देव सं. १४६४) नवकार प्रावकाचार (सं० १६१२) व्यक्ति हैं।

विभिन्न विषयों से सम्बन्धित ग्रंथ

शास्त्र अंबार में प्रायः सभी विषयों के प्रांथों का संग्रह है। फिर भी पुराया, चरित्र, काव्य, कथा, व्याकरण, कायुर्वेद के अंबों का अच्छा संग्रह है। यूजा एवं स्तोत्र के प्रांथों की संख्या भी पर्याप्त

१. महारक पट्टावलीः सामेर शास्त्र संडार असपुर वेष्ट्रन सं० १७२४

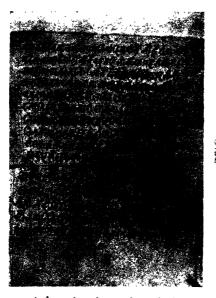
जयपुर के प्रसिद्ध साहित्य सेवी

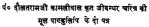












है। शुटकों में स्तोजों एकं कथाओं का अच्छा संग्रह है। बातुर्वेद के सैकहों तुसले इन्ही गुटकों में लिखे हुये हैं जिनका चातुर्वेदिक विदानों द्वारा अध्ययन किया जाना आवर्षक है। इसी तरह विनिक्त जैन विदानों द्वारा अध्ययन किया जाना आवर्षक है। इसी तरह विनिक्त जैन विदानों द्वारा किया है। हिन्ती के प्रायः सभी जैन कियों ने हिन्दी में पूर्व लिखे हैं जिनका अभी तक हमें कोई परिचय नहीं मिलता है। इसलिये इस दृष्टे से भी गुटकों का संग्रह महत्वपूर्य है। जैन विदानों के पद आध्यासिक एवं सुति एसक रोनों ही हैं और उनकी गुलना हिन्दी के बच्छों से अच्छों किये के पदों से की जा सकती है। जैन विदानों के धारितक कवीर, सुरवास, मलुक्साम, आदि कवियों के पदों का संग्रह भी इस अंबार में मिलता है।

ब्रज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथ

शास्त्र भंडार में संस्कृत, अपभंश, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा में जिस्से हये सैकड़ों सक्कात श्रंथ प्राप्त हुये हैं जिनमें से कुछ प्रंथों का संक्षित परिचय आगे दिया गया है। संस्कृत भाषा के प्रंथों में अतकथा कोष (सकलकीत्ति एवं देवेन्द्रकीत्ति) आशाधर कृत भूपाल चतुर्विशति स्तोत्र की संस्कृत टीका एवं रत्तत्रय विधि भद्रारक सकलकीति का परमात्मराज स्तोत्र. भद्रारक प्रभाचंद का मुनिसन्त छंदं. साशा-धर के शिष्य विनयचंद की मुपालचतुर्विशति स्तोत्र की टीका के नाम उल्लेखनीय हैं। अपभंश भाषा के ग्रंथों में लक्ष्मण देव कत सीमिसाह चरित्र, नरसेने की जिनसिविधान कथा, मुनिस्यागढ का रीहिसी विधान एवं दशलस्या कथा, विसलासेन की सर्गथदशसीकथा अज्ञात रचनायें हैं। हिन्दी भाषा की रचनाओं में रस्त कविकत जिनदत्त चौपई (सं. १३४४) मुनिसकलकीर्ति की कर्मचरिवेलि (१७ वी शताब्दी) ब्रह्म गुलाल का समोशरणवर्णन, (१७ वी शताब्दी) विश्वभूषण कृत पार्श्वनाथ चरित्र, कृपाराम का ज्योतिष सार, प्रथ्वीराज कत कृष्णक्रिमस्त्रीवेलि की हिन्दी गय टीका, बचराज का स्वनकीर्ति गीत. (१७ वीं शताब्दी) विद्वारी सतसई पर हरिचरणदास की हिन्दी गन्न टीका. तथा उनका ही कविवल्लम मंथ, पदमभगत का कृष्णकृतिमणीमंगल, हीरकवि का सागरदत्त चरित (१७ वी शताब्दी) कल्यामकीर्ति का चारुदच चरित, हरिषंश पराण की हिन्दी गया टीका आदि ऐसी रचनाएं हैं जिनके सम्बन्ध में हम पहिले अन्धकार में थे। जिनवत्त चौपई १३ वीं शताब्दी की हिन्दी परा रचना है भौर जब तक उपलब्ध सभी रचनाओं से प्राचीन है। इसी प्रकार जन्य सभी रचनायें महत्वपूर्ण हैं। मंथ भंडार की दशा संतोषप्रद है। श्राधकांश ग्रंथ वेष्टनों में रखे हये हैं।

२. बाबा दुलीचन्द का शास्त्र मंडार (क मंडार)

बाबा दुवीचन्द का शास्त्र अंबार दि॰ जैन बढ़ा तेरहपंत्री मन्दिर में स्थित है। इस मन्दिर में वो शास्त्र अंबार है जिनमें एक शास्त्र अंबार की शंध सूची एवं उसका परिचय अबसूची द्वितीय भाग में है विया गंधा है। दूसरा शास्त्र अंडार इसी मन्दिर में बाबा दुलीवन्द द्वारा स्थापित किया गंबा था इसें लिये इस अंडार को उन्हीं के नाम से पुकारा जाता है। दुलीवन्दजी जयपुर के मूल निवासी नहीं थे किन्तु वे महाराष्ट्र के पूना जिले के फल्टन नामक स्थान के रहने वाले थे। वे जयपुर हस्तिविस्तित शास्त्रों के साथ यात्रां करते हुये प्रायं और उन्होंने शास्त्रों की सुरक्षा की दृष्टि से जयपुर को उचित स्थान जानकर यहीं पर शास्त्र संमदालय स्थापित करने का निश्चय का लिया।

इस शास्त्र मंद्रार में न्थ्र॰ इस्तिलिखत प्रंय हैं जो सभी दुलीवन्द्जी द्वारा स्थान स्थान स्था जाना करने के परचान संमद्दीत विन्ये गये थे। इनमें से इच्छ प्रंय स्वयं वावाजी द्वारा लिखे हुये हैं तथा इच्छ श्रावकों द्वारा उन्हें प्रदान किये हुये हैं। वे एक जैन साधु के समान जीवन यापन करते थे। प्रंयों की सुरक्षा, लेखन व्याप्त ही उनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य था। उन्होंने सारे भारत की तीन वार यात्रा की थी जिसका विस्तृत वर्णन जैन यात्रा दर्पण में लिखा है। वे संस्कृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा उन्होंने १४ से भी अधिक प्रंयों का हिन्दी अनुवाद किया था जो सभी इस भन्डार में संप्रदीत हैं।

यह शास्त्र अंकार पूर्यंतः व्यवस्थित है तथा सभी प्रंथ त्रालग श्रवलग वेष्टनों में रखे दुये हैं।

इक एक प्रंथ तीन तीन एवं कोई कोई तो चार चार वेष्टनों में बंधा हुआ है। शास्त्रों की ऐसी सुरक्षा

व्यक्षर के किसी अंकार में नहीं मिलेगी। शास्त्र अंकार में सुरुवतः संस्कृत एवं हिस्ती के प्रंथ हैं। हिस्ती

के प्रंथ क्षाविकांत्रतः संस्कृत प्रंथों की भाषा टीकार्थे हैं। वैसे तो प्रायः सभी विषयों पर यहां प्रंथों की

प्रतिक्षां मिलती हैं होकिन सुख्यतः पुरास, कथा, चरित, धर्म एवं सिद्धान्त विषय से संबंधित प्रंथों ही का

यहां क्षाविक संग्रह है।

भंडार में व्याप्तमीमांसार इति (व्याप्त विद्यानिय) की सुन्दर प्रति है। कियाकलाए टीका की संबन् १४३४ की लिली हुई प्रति इस भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो मांडवगढ़ में सुल्तान गया-सुद्दीन के राज्य में लिली गई थी। तत्त्वांश्रेस्त्र की स्वर्धमयी प्रति दर्शनीय है। इसी तरह यहां गोन्मटसार, विलोकसार व्यादि कितने ही श थों की सुन्दर सुन्दर प्रतियां हैं। ऐसी व्यव्हा प्रतियां कदाचित् ही दूसरे भंडारों में देवने की मिलती हैं। विलोकसार की सचित्र प्रति है तथा इतनी वारीक एवं सुन्दर लिली हुई है कि वह देवते ही वनती है। पत्रालाल चौधरी के द्वारा लिली हुई डाल्स्स्म इत डादशांग पूजा की प्रति भी (सं० १८७६) दर्शनीय प्रथा में से हैं।

१६ वी राताब्दी के प्रसिद्ध हिन्दी विद्यान पं० पत्रातालजी संघी का अधिकांश साहित्य वहां संग्रहीत है। इसी तरह भंडार के संस्थापक दुलीचन्द की भी यहां सभी रचनायें मिलती हैं। उल्लेख-नीय एवं महत्वपूर्ण प्रंथों में अल्ह कवि का प्राकृतङ्गदकोष, विनयचन्द की दिसंधान काव्य टीका, व्यदिचन्द्र सूरि का पदवद्ग काव्य, झानार्णव पर नंयविकास की संस्कृत टीका, गोस्मट-सार पर संक्षत्रभूषण एवं धर्मचन्द की संस्कृत टीका में है। हिन्दी रचनाकों में देवीकिह सावचा कृत

ंडपदेशरिनमाला भाषा (सं॰ १०६६) हरिकिशन का भहनाहु जरित (सं॰ १०८०) इत्तपति जैसनाल की सन् सोदन पोषविशाति भाषा (सं॰ १६१६) के नाम कलेखनीय हैं। इस भंडार में हिन्दी पर्योका भी खच्छा संग्रह है। इन कवियों में माणकचन्द, दीराचद, दीलतराम, भागचन्द, संगलचन्द, एवं जयजन्द छानडा के हिन्दी पद उल्लेखनीय हैं।

३. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जीवनेर (ख भंडार)

यह शास्त्र भंडार दि॰ जैन मन्दिर जोवनेर में स्थापित है जो खेजडे का रास्ता, चांद्रवोत्त वाजार में स्थित है। यह मन्दिर कव बना था तथा किसने बनवाया था इसका कोई उल्लेख नंहीं मिलता है लेकिन एक प्रंथ प्रशस्ति के अनुसार मन्दिर की मूल नायक प्रतिमा पं॰ पन्नालाल जी के समय में स्थापित हुई थी। पंडितजी जोवनेर के रहने वाले थे तथा इनके लिखे हुये जलहोमयिथान, धर्मचक पूजा आदि प्रंथ भी इस भंडार में मिलते हैं। इनके हारा लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रति संवन् १६२२ की है।

शास्त्र भंडार में प्रंथ संग्रह करने में पहिले पं० पकासाताजी का तथा किर उन्हों के शिष्य पं० बस्तावरतात जी का विशेष सहयोग रहा था। दोनों ही बिद्यान ज्योतिष, अयुर्वेद, संत्रशास्त्र, पूजा साहित्य के संग्रह में विशेष श्रामिक्षि एलते थे इसतिये यहां इन विषयों के मंत्रों का अच्छा संकक्षन है। भंडार में २५० प्रंथ हैं जिनमें २३ गुटके भी हैं। हिन्दी भाषा के प्रंथों से भी भंडार में संस्कृत के प्रंथों की संख्या अधिक है जिससे पता चलता है कि मंथ संग्रह करने वाले विद्यानों का संस्कृत से श्रीभक्ष प्रेम था।

भंडार में १० वी राताब्दी से लेकर १६ वी राताब्दी के प्रंथों की अधिक प्रतियां हैं। सबसे प्राचीन प्रति पद्मानिवरंचविंदाति की है जिसकी संग ११४० में प्रतिज्ञिप को गई वो। भंडार के उन्लेखनीय प्रंथों में पं॰ बाशाधर की बाराधनासार टीका एवं नागौर के भट्टारक चेमेन्ट्रकीर्ति कुन गजपंचामंडलयुजन उल्लेखनीय प्रंथ हैं। बाराधर ने बाराधनासार की यह वृत्ति बपने शिष्य मुनि विनवचंद के लिये की थी। प्रेमी जी ने इस टीका को जैन साहित्य एवं इतिहास में अप्राप्य लिखा है। रघुवंदा काव्य की मंडार में सं॰ १६८० की बच्छी मृति है।

. हिन्दी अंबों में शांतिकुशल का कंजनारास एवं प्रध्वीराज का रूकिमणी विवाहलो उल्लेखनीय अंध हैं। जुड़ों विद्यारी सतसई की एक ऐसी प्रति है जिसके सभी पछ वर्ण कमानुसार तिसे हुये हैं। मार्नसिंह का मार्नावनोद भी कायुर्वेद विषय का काव्का अंध है।

शास्त्र मंडार दि. जैन मन्दिर चोधरियों का जयपुर (ग मंडार)

बह सन्दिर बोंबी के कुमा के पास बौकड़ी नीवीखाना में रिवत है पहिले यह 'नेमिनाथ के मंदिर' के बामको भी मसिद्ध वा लेकिन वर्तमान में यह चौचरियों के चैत्यालय के नाम से प्रसिद्ध है। यहां छोटा सा शास्त्र भंडार है जिसमें केवल १०० इस्तिलिखन प्रंथ है। इनमें ७४ हिम्दी के तथा शेष संस्कृत भाषा के प्रंथ हैं। संग्रह 'सामान्य है तथा प्रतिदिन स्वाध्याय के उपयोग में बाने वाले प्रंथ हैं। शास्त्र मंडार किति १४० वर्ष पुराना है। काल्रासबी साह यहां उत्साही सज्जन हो गये हैं जिन्होंने कितने ही प्रंथ लिखवाकर शास्त्र, भंडार में विराजमान किते थे। इनके द्वारा लिखवाये हुये मंधों में पं. जयचन्द्र छावका क्व झानार्थ्य भाषा (सं. १८२२) सुशालचन्द्र कृत जिलोकसार भाषा (सं. १८८४) दौलतरामजी कासलीयाल कृत आहि पुराण भाषा सं. १८६२ एवं छोतर ठोलिया कृत होलिका चरित (सं. १८६२) के नाम उल्लेखनीय हैं। भंडार ज्यवस्थित है।

४. शास्त्र भंडार दि. जैन नया मन्दिर बैराठियों का जयपुर (घ भंडार)

'घ' अंबार बौहरी बाजार मोतीसिह मोमियों के रास्ते में स्थित नये सन्दिर में संम्रहीत है। यह सन्दिर बैराठियों के सन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। शास्त्र अंबार में १४० हस्तिलिखत अंथ है जिनमें बीरतन्द कत चन्द्रअम चरित के प्रति सबसे प्राचीन है। इसे संवत् १४२४ भादवा बुदी ७ के दिन लिखा गथा था। शास्त्र संग्रह की दृष्टि से मंदार छोटा ही है किन्तु इसमें कितने ही अंथ चल्लेखनीय हैं। प्राचीन इस्तिलिखन प्रतियों में गुणमद्राचार्य कृत उत्तर पुराण (अं० १६०६) अग्रजिनदास कत हरिवंश पुराण (सं० १६४१) वीपचन्द्र कृत ज्ञानदर्पण एवं लोकसेन कृत दशलकृणकथा की प्रतियां उल्लेखनीय हैं। श्री राजहंसीपाध्याय की पच्छायिक शतक की टीका संवत् १४७६ के ही खगहन मास की लिखी हुई है। श्राक्षजिनदास कृत चठावीस मूलगुणरास एवं दान कथा (हिन्दी) तथा ब्रह्म खजित का इंसतिलकरास उल्लेखनीय प्रतियों में हैं। अंबार में ऋषिमंदल स्तोत्र, ऋषिमंदल पूजा, निर्वाणकान्द्र, खष्टान्दिका जयमाल की स्वर्णाक्ररी प्रतियों हैं। इन प्रतियों के बार्डर सुन्दर बेल वूटों से युक्त हैं तथा कला पूर्ण हैं। जो बेल एक बार एक पत्र पर बार्गई वह फिर खागे किसी पत्र पर नहीं खाई है। शास्त्र अंबार सामान्यतः स्वयस्थित है।

६. शास्त्र मंडार दि. जैन मन्दिर संघीजी जयपुर (क मंडार)

संघीजी का जैन मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध एवं विशास मन्दिर है। यह चौकड़ी मोदीसाना में महाधीर पार्क के पास स्थित है। मन्दिर का निर्माण दीवान भू बारामजी संघी द्वारा कराया गया था। ये महाराज जबसिंहजी के शासन काल में जयपुर के प्रधान नंत्री थे। मन्दिर की मुख्य चंदरी में सोने एवं काच का कार्य हो रहा है। वह बहुत ही सुन्दर एवं कता पूर्य है। काच का ऐसा अच्छा कार्य बहुत ही कम मन्दिरों में मिलता है।

मन्दिर के शास्त्र मंद्रार में ६०६ इस्तिबिबित प्रंथों का संग्रह है। सभी प्रंथ कागज पर किसे हुये हैं। क्षत्रिकांश प्रंथ १८ वीं एवं १६ वीं शतान्त्री के किसे हुये हैं। सबसे नवीन प्रंथ फ्लोकारकान्य है जो संवत् १६६४ में किसा वया था। इससे पता चलता है कि समाज में कब भी प्रंबों की प्रति- क्षिपियां करवा कर अंडारों में विराजमान करने की परस्परा है। इसी तरह व्यावार्य कुन्दकुन्द क्षत पंचा-स्तिकाय की सबसे प्राचीन प्रति है जो संवत् १४८० की तिस्ती हुई है।

मंन संबार में माचीन प्रतियों में भ. ह्यंकीर्ति का क्रमेकार्यरात संबत् १६६५, धर्मकीर्ति की क्रीमुदीकथा संवत् १६६३, पद्मतन्दि आवकाचार संवत् १६६३, म. ग्रुमचंद्र कृत पायडवपुराण सं. १६१३, ध्वारासी विकास सं० १५१४, मुनि श्रीचरद कृत पुराणसार सं० १५४३, के नाम उल्लेखनीय हैं। संबार में संवत् १५३० की किरातार्ज्ज नीय की भी एक मुन्दर प्रति है। द्वाराय निगोत्या ने धर्म परीचा की भाषा संवत् १५१० में पूर्ध की थी। इसके एक वर्ष बाद सं० १७१६ की ही लिखी हुई मंडार में एक प्रति संम्रहीत है। इसी भंडार में एक प्रति समझीत है। इसी भंडार में महेरा कवि कृत हम्भीररासो की भी एक प्रति है जो हिन्दी की एक मुन्दर एवता है। किरानलाल कृत कृष्णवालविलास की प्रवि भी उल्लेखनीय है।

शास्त्र भंडार में ६६ गुटके हैं। जिनमें भी हिन्दी एवं संस्कृत पाठों का अच्छा संग्रह है। इनमें 'हर्पकिव कुत चंद्रहंसकथा सं० १७०८, हरिदास की झानोपदेश वत्तीसी (हिन्दी) सुनिभद्र कृत शांतिनाय स्तोत्र (संस्कृत) आदि महत्वपूर्ण रचनायें हैं।

७. शास्त्र मंडार दि॰ जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर (च भंडार)

(श्रीचन्द्रप्रभ दि० जैन सरस्वती भवन)

यह सरस्वती भवन छोटे दीवानजी के मन्दिर में स्थित है जो अवस्पेदजी दीवान के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। ये जयपुर के एक लंबे समय तक दीवान रहे थे। इनके पिता शिवजीलालजी भी महाराजा जगतसिंहजी के समय में दीवान थे। इन्होंने भी जयपुर में ही एक मन्दिर का निर्माण कराया था। इसलिये जो मन्दिर इन्होंने बनाया था वह बड़े दीवानजी का मन्दिर कहलाता है और दीवान अमरचंदजी द्वारा बनाया हुआ है वह छोटे दीवानजी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। दोनों ही विशास एवं कला पूर्ण मन्दिर हैं तथा दोनों ही मुन्मिन पंच आझापु के मन्दिर हैं। हो

भंडार में न२० इस्तिलिखित शंय हैं। सभी शंय कागक पर लिखे हुये हैं। यहां संस्कृत शंभों का विशेषतः पूजा एवं सिद्धान्त शंभों का व्यविक संग्रह है। शंभों को भाषा के व्यनुसार निम्न प्रकार विभाजित किया जा सकता है।

र्संस्कृत ४९८, प्राकृत ६८, व्यपभंश ४, हिन्दी ३४० इसी तरह विषयानुसार जो ग्रंथ हैं वे निन्न प्रकार हैं।

कर्म एवं सिद्धान्त १४७, कथ्यात्म ६२, पुराख ३०, कथा ३८, पूजा साहित्व १४२, स्तोत्र ८१ कम्ब विषय ३२०।

इन पंथों के संप्रह करने में स्वयं अमर्त्यं द्वी दीवान ने बहुत रूचि सी क्योंकि उनके

समयकासीन विद्वानों में से नवसराम, गुमानीराम, जयबन्द छावशा, डाख्राम । मन्नासास सिन्दूका, स्वरूपक्षम् विस्ताना के नाम उल्लेखनीय हैं और संभवतः इन्हीं विद्वानों के सहयोग से वे प्रंयों का इतना संप्रद कर सके होंगे । प्रतिमासांतचतुर्वराण्यितालापन सं. १८००, गोस्मटसार सं. १८८६, पंचतन्त्र सं. १८८०, कुत्र चुकामणि सं० १८६१ जादि प्रंयों की प्रतिसिपयां करवा कर इन्होंने संवार में विराजमान की थी।

भंडार में कथिकांश संग्रह १६ वी २० वी शताब्दी का है किन्तु कुळ प्रंग १६ वी एवं १७ वी शताब्दी के भी हैं। इनमें निग्न प्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं।

पूर्णेचन्द्राचार्य	उपसर्गह रस्तोत्र	हे. का सं० १४४३	संस्कृत
पं० अभदेव	लव्यिविधानकथा	सं० १६०७	**
चमरकीर्ति	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	सं० १६२२	श्रपञ्च श
पू ज्यपाद	सर्वार्थसिद्धि	सं० १६२४	संस्कृत
पुरुपद्च्य	यशोधर चरित्र	सं० १६३०	अपभ्रंश
ब्रह्मने सिद्त्त	नेमिनाथ पुराण	सं० १६४६	संस्कृत
जोधराज	प्रवचनसार भाषा	सं० १७३०	हिन्दी

श्रक्कात कृतियों में तेजपाल कविकृत संभविजणणाह चरिए (श्रपक्रंश) तथा हरचंद गंगवाल कृत सुकुमाल चरित्र भाषा (र० का० १९१८) के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं ।

□. दि० जैन मन्दिर गोधों का जयपुर (छ मंडार)

गोघों का मन्दिर घी वालों का रास्ता, नागोरियों का चौक जौहरी वाजार में श्यित है। इस सन्दिर का निर्माण १८ वी शताब्दी के धन्त में हुमा था और मन्दिर निर्माण के पश्चात ही यहां शास्त्रों का संग्रह किया बाना प्रारम्भ हो गया था। बहुत से मंथ यहां सांगानित के मन्दिरों में से भी लाये गये थे। वर्तमान में यहां पह सुब्यवस्थित शास्त्र मंखार है जिसमें ६१६ हस्तलिखित मंथ एवं १०२ गुटके हैं। मंखार में पुराख, चरित, कथा एवं स्तोत्र साहित्य का अच्छा संग्रह है। अधिकांश मंथ १० वी शताब्दी से लेकर १६ वी शताब्दी तक के लिखे हुये हैं। शास्त्र मंदा में जतकथाकोश की संवत् १४८६ में लिखी हुई प्रति सबसे प्राचीन है। यहां दिन्दी एचनाओं का भी अच्छा संग्रह है। हिन्दी की निस्त एचनाचें सहत्वपूर्ण हैं जो अस्य मंदारों में सहज ही में नहीं मिलती हैं।

चिन्तामणिजययाल	ठक्कुर कवि	हिन्दी	१६ वी शताब्दी
सीमन्थर स्तवन	"	**	" "
गीत एवं चादिनाय स्तवन	पल्ड कवि	**	17 17

नेमीरवर चौमासा	सुनि सिंहनस्टि	हिण्दी	१७ वी शताब्दी
चेतनगीत	*9	,,	17 19
नेमीश्वर रास	दुनि रतनकीर्ति	"	, ,
नेमीरवर हिंडोजना	,,	, ,,	" "
द्रव्यसंग्रह भाषा	हेमराज	7	३० काट १७१६
चतुर्दशीकथा	डाल् राम	"	१७६४

उक्त रचनाओं के श्रांतिरिक जैन हिन्दी कवियों के पदों का भी अच्छा संग्रह है। इनमें भूच-राज, द्रीहल, कनककीर्ति, प्रभाचन्द, हिन शुभचन्द्र, मनराम एवं श्रज्जयराम के पद विशेषतः उल्लेखनीय है। संवन्^{प्}रहरह में राचन <u>द्वारकिय की होलिका चौपई भी</u> ऐसी रचना है जिसका परिचय प्रथम बार मिला है। संवन् १८३० में रिचत हरचंद् गंगवाल कृत पंचकल्यायक पाठ भी ऐसी ही सुन्दर रचना है।

संस्कृत शंधों में टमास्त्रामि विराचित पंचपरमेष्टी स्वोत्र महत्वपूर्ण है। सूची में उसका पाठ उद्धृत किया गया है। भंडार में संमद्दीत प्राचीन प्रतियों में विमत्ननाथ पुराण सं० १६६६, गुणभद्राचार्य कृत घन्यकुमार चरित सं० १६४२, विद्रयसुष्ठमंडन सं० १६=३, सारस्वत दीपिका सं० १६४७, नाममात्रा (थनंजय) सं. १६४३, धर्म परीक्षा (क्रमितराति) सं. १६४३, समयसार नाटक (बनारसीदास) सं० १७०४ क्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं।

६ शास्त्र मंडार दि० जैन मन्दिर यशोदानन्दत्री जयपुर (ज मंडार)

यह सन्दिर जैन यति यशोदानन्दजी द्वारा सं० १०४६ में बनवाया गया था और निर्माण के इन्छ समय परचात ही यहां शास्त्र भंडार की स्थापना कर दी गई। यशोदानन्दजी स्वयं साहित्यक व्यक्ति ये इसिक्षये उन्होंने योड़े समय में ही अपने यहां शास्त्रों का अच्छा संकलन कर लिया। वर्तमान में शास्त्र भंडार में २४२ मंत्र एवं १२ गुटके हैं। अधिकारा मंत्र १८ वी राताच्दी एवं उसके बाद की राताचित्रों के लिखे हुये हैं। संबद्ध सामान्य हैं। उन्लेखनीय मंत्रों में चन्त्रप्रमकाच्य पंजिका सं० १४६४, पं० देवी-चन्द कृत हितोपदेश की हिन्दी गया टीका, हैं। प्राचीन प्रतियों में आ० कुन्दकुन्द कृत समयसार सं० १६६४ का सामाय सं० १६६६ के नाम उन्लेखनीय हैं। यह मन्दिर चौडा रास्ते में स्थित हैं।

१० शास्त्र मंडार दि० जैन मन्दिर विजयराम पांड्या जयपुर (ऋ भंडार)

विजयराम पांड्या ने यह अन्दिर कव बनवाया इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन मन्दिर की दशा को देखते हुये रह जयपुर कसने के समय का ही बना हुया जान पढ़ता है। यह मन्दिर पानों का दरीवा चो० रामचन्द्रजी में स्थित है। यहां का शास्त्र मं ग्रार भी कोई चन्द्री दर्शा में नहीं है। बहुत से मं व जीयों हो चुके हैं तथा बहुत सो के पूरे पत्र भी नहीं हैं। वर्तमान में यहां २७४ मं च पर्व ७६ गुरे एक भी नहीं है। वर्तमान में यहां २०४ मं च पर्व ७६ गुरे एक से हिंद है। इनमें विश्वभूषण की नेनीश्वर की कहरी, पुरायरत्न की नेमिनाथ पूजा, रंशाम कवि की तीन चौशीसी चौपाई (र. का. १७४६) स्थोजीराम सोगाणी की लग्नचिन्द्रका भाषा के नाम उल्लेखनीय हैं। इन छोटी छोटी रचनाओं के खातिरिक रूपचन्द्र, दरिगह, मनराम, हर्ष कीरिंत, कुमुदचन्द्र आहि कवियों के पद भी संग्रहीत हैं साह लोहण इन कडनेश्यावेलि एवं जसुराम का राजनीतिशास्त्र भाषा भी हिन्दी की उल्लेखनीय रचनायें हैं।

११ शास्त्र मेंडार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ जयपुर (व भंडार)

दि० जैन सन्दिर पार्श्वनाथ जयपुर का प्रसिद्ध जैन सन्दिर है। यह सवासजी का रास्ता चो॰ रामचन्द्रजी में स्थित है। सन्दिर का निर्माण संयन् १८०४ में सोनी गोत्र वाले किसी श्राषक ने कराया था इसलिये यह सोनियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। यहां एक शास्त्र मंडार है जिसमें ४४० मंच एवं १८ गुटके हैं। इसमें सबसे अधिक संख्वा संस्कृत भाषा के प्रंथों की है। माणिक्य सूरि कृत नलोदय काव्य भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो सं० १४४४ की लिखी हुई है। यद्यपि भंडार में प्रंथों की संख्या अधिक नहीं है किन्तु अज्ञात एवं महत्वपूर्ण दंथों तथा प्राचीन प्रतियों का पहां अच्छा संग्रह है।

इन श्रक्कान मंथों में अपभंश भाषा का विजयसिंह कत अजितनाथ पुराण, कवि दामोदर इत ऐमिणाह चरिए, गुणनिय इत वीरनिय के चन्द्रप्रभकाव्यकी रंजिका, (संस्कृत) महापंडित जगलाथ इत नैमिनरेन्द्र स्तोत्र (संस्कृत) श्रुनि पद्मानीय इत वर्द्धमान काव्य, शुभचन्द्र इत तत्ववर्णेन (संस्कृत) चन्द्रसुनि इत दुराणसार (संस्कृत) इन्द्रजीत इत सुनिसुक्रत पुराण (हि०) आर्दि के नाम उल्लेखनीय हैं।

यहां प्रंथों की प्राचीन प्रतियां भी पर्याप्त संख्या में संप्रहीत है। इतमें से कुछ प्रतियों के नाम निम्ने प्रकार हैं।

सूची की क. सं.	वंथ नाम	प्रंथकार नाम	ले. व्यत	भाषा
१४३४	वट्पाहुइ	স্মাণ কুন্বকুন্ব	१४१६	সা৹
२३४०	वर्द्ध मानकाच्य 💛	पद्मनिन्द	የ ጀየ።	संस्कृत
१८३६	स्याद्वादमं जरी ?	मल्लिवेण सूर्रि	१४२१	,,
१८३६	व्यजितनाथ <u>पु</u> राण	विजयसिंह	8140	श्रपञ्च रा
२०६८	सेमिणाइचरिए 🗸	दासीदर	१४=२	"
२३२३	यशोधरचरित्र टिप्पण	प्रभाचन्द्र	8×=x	संस्कृत
११७६	सागारवर्मामृत	आशाधर	XXX	

सूची की का व २४४१	र्स. प्र'व नाम कथाकोश		प्र'थ कार नाम हरिषेणाचार्य	ले. काल १४६७	भाषा संस्कृत
3508	जिनशतकटीका		नरसिंह भट्ट	SXFR	**
२२ ४	तस्वार्थरत्नप्रभाकर		प्रभाचन्द	१६३३	
१०२६	सत्रपुडामणि		वा दीशसिंह	१६०४	19
488	धन्यकुमार चरित्र	H	चा० गुणमङ्	१६०३	19
२११४	नागकुमार चरित्र	5	धर्मधर	? ? ? ?	"

इस मंडार में कपड़े पर संवत् १४१६ का लिखा हुच्या मतिष्ठा पाठ है। जयपुर के मंडारों में उपजब्य कपड़े पर लिखे हुवे मंथों में वह मंथ सबसे माचीन है। यहां बसोधर चरित की एक सुम्दर एवं कला पूर्ण सचित्र मति है। इतके दो चित्र पंथ सूची में देखे जा सकते हैं। चित्र कला पर मुगृक्ष कालीन प्रभाव है। यह प्रति करीब २०० वर्ष पुरानी है।

१२ भामेर शास्त्र मंडार जयपुर (ट मंडार)

कासेर शास्त्र मंडार राजस्थान के प्राचीन मंच मंडारों में से है। इस मंडार की एक मंध सूची सन् १६४- में चेत्र के शोध संस्थान की कोर से मकाशित की जा चुकी है। उस मंच सूची में १४०० मंधों का विवरण दिया गया था। गत १३ वर्षों में मंडार में जिन मंबों का और संग्रह हुआ है उनकी सूची इस भाग में दी गई है। इस मंबों में मुख्यतः जयपुर के खावहों के मन्तिर के तथा वाबू झानचंदनी सिन्दुका द्वारा भेट किये हुये मंध हैं। इसके झतिरिक मंबार के इक मंथ जी पहिते वाली अंध सूची में बाने से रह गये के उनका विवरण इस भाग में दे दिया गया है।

इन मं यों में पुष्पदंत इत क्लापुराण भी है जो संवत् १२६६ का विस्ता हुमा है। यह मित्र इस सूची में माये हुये मंत्रों में सबसे प्राचीन मित्र है। इसके जीतिरिक १६ वी १० वी पर्व १० वी राताव्यी में का प्रका संमद्द है। अंदार के इन मंत्रों में महारक हुर्दै न्यूकीर्ति विरवित्त होवसीय कवित्र (हिन्दी), म० जिनवास इत चौरासी न्यातिभावा (हिन्दी), कामवर्द न इत पान्यव-चित्र (संस्कृत), सालो कविकृत पार्यनाय चौपाई (हिन्दी) भादि मंत्रों के नाम क्लोक्सीय हैं। गुटकों में मंत्रीद्द सिक्स इत मनोद्दर्शवरी, उदयभाद्य इत भीकरासो, कामवास के कवित्र, तिपरवास इत सिक्सणी इन्याची का रासो, जमनोद्दन इत रिव्हणीविष्य का क्लोक्सीय रचनावें हैं। इस प्रकार कामेर सास्त्र मंत्रार में मार्थीन मंत्रों का कथ्या संवक्षत है।

प्रथों का विषयानुसार वर्गीकरण

प्रं स सूची को क्षियक उपयोगी बनाने के लिये प्रं यों का विषयानुसार वर्गीकरण करके उन्हें र.४ विषयों में विभाजित किया गया है। विषय विषयों के प्रंथों के क्षण्ययन से पता चलता है कि जैन काचार्यों ने प्रायः सभी विषयों पर शंध लिखे हैं। साहित्य का संभवतः एक भी ऐसा विषय नहीं होगा जिस पर इन विद्वानों ने क्षपनी कलम नहीं चलाई हो। एक क्षोर जहां इन्होंने धार्मिक एवं कागम साहित्य लिख कर मंद्रारों को भरा है वहां दूसरी कोर काव्य, चरित्र, पुराण, कथा कोरा क्यादि लिख कर प्रवानी विद्वानों के आप है शावकों एवं सामाम्य जन के हित के लिये इन बाचार्यों एवं विद्वानों के सिद्धान्त एकं क्यादा राश्त्र के सूचम से सूचम विषय का विरत्येण किया है। सिद्धान्त की इतनी गहन एकं सूचम चर्चा शावर ही कम्ब धर्में में निल सके। पूजा साहित्य जिलने में भी ये किसी से पीड़े नहीं रहें। इन्होंने प्रत्येक विषय की पूजा लिखकर शावकों को इनको जीवन में उतार की देखा। भी री है। पूजाओं की जयमालाओं में कमी कमी इन विद्वानों ने जैन वर्भ के सिद्धान्तों का बढ़ी उत्त्यना से वर्णन किया है। प्रं सूची के इसही भाग में १४०० से क्षयिक पूजा शंधों का उत्लेख हुमा है।

धार्मिक साहित्य के धार्तिरक्त लौकिक साहित्य पर भी इन धाचार्यों ने खब लिखा है । तीर्थ-करों एवं शासाकाओं के महापुरुषों के पावन जीवन पर इनके द्वारा सिखे हुये वडे वडे पुराग एवं काव्य श्रंथ मिसते हैं । श्रंथ सूची में प्रायः सभी महत्वपूर्ण पुराख साहित्य के श्रंथ त्रागये हैं । जैन सिद्धान्त एवं भाचार शास्त्र के सिद्धान्तों को कथाओं के रूप में वर्णन करने में जैताचारों ने अपने पारिब्रत्य का अच्छा प्रदर्शन किया है। इन भंडारों में इन विद्वानों द्वारा लिखा हुआ कथा साहित्य प्रचर मात्रा में मिलता है। वे कथायें रोचक होने के साथ साथ शिवापद भी हैं। इसी प्रकार व्याकरण, ज्योतिष एवं आयुर्वेद पर भी इन भंडारों में अच्छा साहित्य संप्रहीत है। गुटकों में खायवेंद के नसकों का अच्छा संप्रह है। सैंडडों ही प्रकार के नसखे दिये हुये हैं जिन पर खोज होने की अध्यक्षिक आवश्यकता है ।। इस बार हसने कारा, रासी एवं बेलि साहित्य के मंथों का अतिरिक्त वर्णन दिया है। जैन आचारों ने हिन्दी में छोटे छोटे सैकडों रासो मंथ तिले हैं जो इन भंडारों संबहीत हैं। अकेले बड़ा जिनवास के ४० से भी ऋषिक रासी बंध मिलते हैं । जैन भंडारों में १४ वीं शताब्दी के पूर्व से रासी मंध मिलने लगते हैं । इसके श्रातिरिक्त श्राध्य-बन करने की दृष्टि से संप्रहीत किये दृये इन भंडारों में जैनेतर विद्वानों के काव्य, नाटक, कथा, ज्योतिय, बायवेंद. कोष. नीतिशास्त्र, व्यावश्ण आदि विषयों के पंथों का भी अच्छा संकलन सिलता है। जैन विद्वानों ने कालिवास. साथ, भारवि श्रादि प्रसिद्ध कवियों के काव्यों का संकलन ही नहीं किया किन्त सन पर विस्तृत टीकार्ये भी तिस्ती हैं। प्रंथ सुची के इसी भाग में देसे कितने ही काव्यों का उल्लेख व्याचा है। मंडारों में ऐतिहासिक रचनायें भी पर्याप्त संख्या में मिलती हैं। इनमें भड़ारक पहावित्यां. भद्दारकों के खुन्द, गीत, चोमासा वर्णन, वंशीत्पत्ति वर्णन, देहली के बादशाहीं एवं खम्य राज्यों के राजाकों के वर्णन एवं नगरों की बसापत का वर्णन मिलता है।

विविध मापाचाँ में रचित साहित्य

राजस्थान के शास्त्र अंशारों में क्यरी आरत की प्रायः सभी आषाओं के प्रंथ मिलते हैं। संस्कृत आकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी एवं गुजराती आषा के प्रंथ मिलते हैं। संस्कृत आषा में जैन विद्यानों ने बृहद् साहित्य लिला है। व्या॰ समन्तभन्न, अकलंक, विद्याननिंद, जिनसेन, गुज्यमद्भ, बद्ध आन भट्टारक, होसदेव, वीरनिंद, हेमचन्द्र, आशायर, सकलकीर्त आदि सेक्क्रों आचार्य एवं विद्यान् हुये हैं जिल्होंने संस्कृत आषा में विविध विषयों पर सैक्क्रों प्रंथ किलो हैं जो इन अंदारों में मिलते हैं। यही नहीं इन्होंने अजैन विद्यानों उत्पातिक के काव्य एवं नावों की टीकार्य भी लिली हैं। संस्कृत आपा में लिले हुये यशनितकक चन्यू, वीरनिंद का चन्द्रप्रभकाव्य, बद्ध आनदेव का बरांगचरित्र आदि ऐसे काव्य हैं जिन्हें किसी भी महाकाव्य के समकक विद्याया जा सकता है। इसी तरह संस्कृत आधा में लिला हुया जीनाचार्यों का दर्शन एवं न्याय साहित्य भी उच्च कोटि का है।

प्राइत एवं अपभ्रं रा भाषा के ज्ञेत्र में तो केवल जैतावार्यों का ही अधिकांशतः योगदान है। इन भाषात्रों के अधिकांश मंत्र जैत विद्वानों द्वारा लिखे हुये ही मिलते हैं। मंत्र सूची में अपभ्रंश में एवं प्राइत भाषा में लिखे हुये पर्याप्त मंत्र आये हैं। महाकवि स्वयंभू, पुष्पदंत, अमरकीर्ति, तयनिद् जैसे महाकवियों का अपभ्रंश भाषा में उच्च केटि का साहित्य मिलता है। बाब तक इस भाषा के १०० से भे भी अधिक मंत्र मिल जुके हैं और वे सभी जैत विद्वानों द्वारा लिखे हुये हैं।

इसी तरह हिन्दी एवं राजस्थानी आण के प्रंथों के संबंध में भी हमारा यही मत है कि इन आण कों की जैन विदानों ने खुन सेवा की है। हिन्दी के प्रारंभिक युग में जब कि इस माणा में साहित्य निर्माण करना पिढ़का से परे समका जाता था, जैन विदानों ने हिन्दी में साहित्य निर्माण करना प्रारम्भ किया था। जयपुर के इन मंडारों में हमें १२ वी शताब्दी तक की रचनाएं मिल चुकी हैं। इनमें जिनवृत्त चौपई सबं मशुल है जो संबत् १२४४ (१२६७ ई.) में रची गयी थी। इसी मकार म० सफलकीरिं, मझ जिनवृत्ता, महारक मुवनकीरिं, झानभूषण, सुत्रचन्द्र, हीदल, बूचराज, उक्झरसी, परह चादि विदानों का बहुतसा माचीन साहित्य इन मंडारों में प्रारत हुया है। जैन विदानों द्वारा क्लिक हुये हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्य इन मंडारों में प्रारत हुया है। जैन विदानों द्वारा क्लिक हुये हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्य इन मंडारों के बहुति साह के चित्रीराज इत इच्चावस्था के चित्रीराज है। प्रव्यास इत्यास है। इच्चीराज इत इच्चावस्था से स्वास के विदान के विदान स्थास की एक ही रचना में एक से स्विच्य भाषाओं का प्रयोग भी करते वे। वसंबन्द्र प्रवन्ध इस हिंसे खण्डा वताहरण कहा जा सकता है।

१. वैक्षिये काससीयासची हारा सिसे हुये Jain Granth Bhandars in Fajsthan का बतुर्य परिचिष्ठ ।

स्तयं प्रथकारों द्वारा शिक्षे हुवे प्रंथों की सूल प्रतियां

जैन विद्यान् श्रंथ रचना के व्यवितिक स्वयं भंभों की प्रतिक्षिपयां भी किया करते थे। इन विद्यानों हारा किला गये शंधों की पायकुक्षिपयां राष्ट्र की घरोहर एवं व्यमुख्य सम्पत्ति है। ऐसी पायकु-क्षिपियों का प्राप्त होना सहन बात नहीं है लेकिन जयपुर के इन भंडारों में हमें स्वयं विद्यानों हारा विद्या हुई निल्म पायकुक्षिपियां प्राप्त हो चुकी हैं।

सूची की कः सं. यक्ष्म	मंचकार कनककीति के शिष्य सदाराम	प्र'य नाम पुरुषार्थ सिद्धयुपाय	किपि सं वत् १५०७
१०४२	रत्नकरन्द्रश्रावकाचार भाषा	सदासुख कासलीवाल	१६२०
શ્ જ	गोम्मटसार जीवकांद भाषा	पं. टोडरमल	१८ वी शताब्दी
२६ २४	नाममाला	पं० भारामल्ल	१६४३
REXR	वंचमंगलपाठ	खुशालचन्द काला	१८४४
*844	शीसरासा \iint	जोधराज गोदीका	f-sk=
kaca	मिध्यास्य संदन	वस्तराम साह	१⊏३x
प्रकरम	गुरका	टेकचंद	-
አ _ε χ _ω	परमात्म प्रकाश एवं तत्वसार	बाल् राम	
\$088	द्यीयातीस ठाणा	नहारायमल्ल -	१६१३

गरकों का महत्व

शास्त्र अंडारों में इस्तिक्षित मंथों के श्रांतिरिक्ष गुटके भी संगह में होते हैं। साहिरियक रचनाचों के संस्तान की दृष्टि से ये गुटके बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इनमें विविध विषयों पर संस्तान किये हुए कभी कभी ऐसे पाठ मिलते हैं को अच्यत्र नहीं मिलते। मंथ सूची में आये हुवे बारह मंडारों में १८० गुटके हैं। इनमें सबसे अधिक गुटके में अंडार में हैं। आधिकांश गुटकों में पूजा स्तेत्र एवं कथायें ही मिलती हैं लिकन मत्येक संवार में इक्ष गुटके ऐसे भी मिल जाते हैं बिलने माचील एवं अवक्षय पाठों का संवद होता है। ऐसे गुटकों में इक्ष जुटके ऐसे भी मिल जाते हैं बिलने माचील एवं अवक्षय पाठों का संवद होता है। ऐसे गुटकों में का मा, ज, ज एवं ट अंडार में ब्यक्षा संवक्षत है। १२ वी शताव्यी की हिन्दी रचना जिलहर चौपई का मंडार के एक गुटके में ही प्राप्त दुई है। इची तरह अपनं शो कितती ही क्यायें, अवक्षित्र कात्र गुप्त होत् की उपनं माचान प्राप्त प्राप्त में कितती ही क्यायें, अवक्षित्र होता है। एक एक गुटकों में मिली हैं। हिन्दी वदों के संवक्षत के वो ये रक्षत्रात जोत है। अधिकांग हिन्दी विद्यानों का पद साहित्य इनमें संकलित किया हुआ होता है। एक एक गुटके में कभी तो २००, ४०० पद संगह किये हुये मिलते हैं। इन गुटकों में ही येतिहासिक सामगी उपलब्ध होती है। इन्हाविक्षयां, इन्स्त, गीत, वंशाविक, वादशाईों के विदरण, नगरों की वसायत चार्च समी इनमें होती है। इन्हाविक्षयां, इन्स्त, गीत, वंशाविक, वादशाईों के विदरण, नगरों की वसायत चार्च समी इनमें

ही निकते हैं। प्रत्येक शारत भंडार के व्यवस्थापकों का करांच्य है कि वे व्यपने यहां के गुटकों की बहुत ही सम्हाल कर रखें जिससे वे नष्ट नहीं होने पार्वे क्योंकि हमने देखा है कि बहुत से मंडारों के गुटके बिना बेडनों में क्ये हुये ही रखे रहते हैं और इस तरह धीरे धीरे कर्ने नष्ट होने की मानों व्याहा देवी जाती है।

शास्त्र भंडारों की सुरचा के संबंध में :

राजस्थान के शास्त्र मंदार अर्त्यायक महत्वपूर्ण हैं इसिलये उनकी सुरक्षा के प्रश्न पर सबसे पहिले विचार किया जाना चाहिये। छोटे छोटे गांवों में जहां जैनों के एक-एक दो-दो घर रह गये हैं वहां उनकी सुरक्षा होना अर्त्यायक कठिन है। इसके अतिरिक्त करनों की भी यही दशा है। वहां भी जैन समाज का शास्त्र मंदारों की ओर कोई ध्यान नहीं है। एक दो आजकल खपे हुये शंव मिलाने के कारण इस्तिलिल प्रंथों की कोई स्वाध्याय नहीं करते हैं, दूसरे वे लोग इनके महत्व को भी नहीं समझते हैं। इसलिये समाज को इस्तिलिल प्रंथों की सुरक्षा के लिये ऐसा कोई उपाय हुं दना चाहिये जिससे उनका उपयोग भी होता रहे तथा वे सुरक्षित भी रह सकें। यह तो निश्चित ही है कि छपे हुए प्रंथ मिलाने पर इन्हें कोई पढ़ना नहीं चाहता। इसके अतिरिक्त इस और रूपिन होने के कारण आगे आने वाली सम्तित तो इन्हें पढ़ना नहीं चाहता। इसके अतिरिक्त इस और रूपिन होने के कारण आगे आने वाली सम्तित तो इन्हें पढ़ना नहीं चाहता। इसके अतिरिक्त इस और रूपिन होने के कारण आगे आने वाली सम्तित तो इन्हें पढ़ना ही भूल जावेगी। इसिलिये यह निश्चित सा है कि अविष्य में ये शंव केवल विद्वानों के लिये ही उपयोगी रहेंगे और वे ही इन्हें पढ़ना तथा देखना अधिक पसन्द करेंगे।

प्रंथ मंडारों की पुरका के लिये हमारा यह पुकाव है कि राजस्थान के कभी सभी जिलों के कार्यालयों पर इनका एक एक संमहालय स्थापित हो तथा वर प्रान्त के सभी शास्त्र मंडारों के प्रंथ वन संमहालय में संमहीत कर लिये जायें, किन्तु अदि किसी किसी उपजिलों एवं करनों में भी जैनों की कच्छी बस्ती है तो उन्हीं स्थानों पर मंडारों को रहने दिया जाये । जिलेबार यदि संमहालय स्थापित हो जायें तो वहां रिसर्च स्कालक स्थापित हो जायें तो वहां रिसर्च स्कालक स्थापानी से पहुंच कर उनका वर्ष्योग कर सकते हैं तथा वनकी प्ररक्षा का भी पूर्यावः भवन्य हो सकता है। इसके क्षातिरक राजस्थान में जयपुर, ध्वलपर, भरतपुर, नागौर, कोटा, वृंदी, जोषपुर, वीकानेर, जैसलानेर, हंगएपर, मतापगढ़, वांसवाडा क्यादि स्थानों पर इनके बढ़े संमहालय स्लोकत देवे वार्षे तथा अनुसम्भान प्रेमियों को वन्ते देवने एवं पहने की पूरी प्रविचार्य वीज में तथा अनुसम्भान प्रेमियों को वन्ते देवने एवं पहने की पूरी प्रविचार हा वार्षे तो वे हस्तकीलत के प्रंथ किर भी प्रारक्षित रह सकते हैं अन्यथा वनका प्ररक्षित रहना बड़ा कितन होगा।

वायुर के भी कुछ शास्त्र मंत्रारों को बोक्फर कन्य मंत्रार कोई विशेष कच्छी स्थिति में नहीं हैं। जयुर के कब तक हमने १६ मंत्रारों की सूची तैवार की है लेकिन किसी मंत्रार में बेहन नहीं हैं वो कहीं किना पुढ़ों के ही शास्त्र रखे हुने हैं। हमारी इस कसावधानी के कारण ही सैकड़ों मंत्र कपूर्ण हो गये हैं। यदि जयुर के शास्त्र मंत्रारों के मंत्रों का संग्रह एक केन्द्रीय संग्रहालय में कर लिया जावे तो कस स्क्रम्य इसारा च्यू संमाहस्त्रम्य व्ययपुर के दर्शनीत्र स्थानों में से मिना जानेगा । प्रति वर्ष सेक्स् भी संच्या में मीच मिचाची प्रामेंने ख़ौर केन सावित्य के विविध विष्णे पर कोज कर सकेंगे । इस संबद्धावय में इसकों की पूर्य क्षरण का न्यान रक्ष वाने और इसका पूर्ण प्रवन्थ एक संस्था के छात्रीन हो । जाता है जयपुर का जैन समाज हमारे इस निवेदन पर ध्यान देगा और शास्त्रों की सुरक्षा एवं उनके क्योग के बिस्ने कोई निरिचत योजना बना सकेगा ।

ग्रंथ सची के सम्बन्ध में

प्रंथ सूची के इस भाग को हमने सबीग सुन्दर बनाने का पूर्ण प्रयास किया है। प्राचीन एवं अज्ञात मंत्रीं की मंत्र प्रशस्ति एवं लेखक प्रशस्तियां ही गई हैं जिनसे विद्वानों को उनके कर्ता एवं लेखन-काल के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी मिल सके। गुटकों में महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है इसलिये बहुत से गुड़कों के पूरे पाठ एवं शेष गुड़कों के उल्लेखनीय पाठ दिये हैं। प्रंथ सूची के अन्त में प्रंथानु-कमिणका, प्रथ एवं ग्रंथकार, प्राम नगर एवं उनके शासकों का उल्लेख ये चार परिशिष्ट दिये हैं। शंधानुक्रमणिका की देखकर सुन्नी में आये हुये किसी भी शंध का परिचय शीघ मालूम किया जा सकता है क्योंकि बहुत से प्रंथों के नाम से उनके विषय के सम्बन्ध में स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती। प्रंथानुकम-णिका में ४२०० मधों का उल्लेख आया है जिससे यह स्पष्ट ही जाता है कि मंथ सूची में निर्दिष्ट प सभी मंथ मूल मंथ हैं तथा रोष उन्हीं की प्रतियां हैं। इसी प्रकार मंथ एवं मंथकार परिशिष्ट से एक ही म अकार के इस सुनी में कितने मंथ आने हैं इसकी पूर्ण जानकारी सिल सकती है। ग्राम एवं नगरों के महिशिष्ट में इस भंकारों में किस किस माम एवं नगरों में रचे हये एवं लिखे हुये मंग्र संग्रहीत हैं यह बाला जा सकता है। इसके श्रांतिरिक ये नगर कितने प्राचीन थे एवं उनमें साहित्यिक गतिविधियां किस अकार पतानी भी इसका भी हमें जाभास मिल सकता है । शासकों के परिशिष्ट में राजस्थान एवं भारत के विभिन्न राजा, महाराजा एवं बावसाहीं के समय एवं धनके राज्य के सम्बन्ध में कुछ ३ परिचय प्राप्त ही जाता है । पेतिहासिक तथ्यों के संकलन में इस प्रकार के उल्लेख बहुत प्रामासिक एवं सहावपर्क सित हीते हैं। प्रस्तावना में प्र'य संदारों के संविध्त परिचय के अतिरिक्त चन्त में ४६ प्रहात मंबी का परिचय भी दिया गया है जी इन में बीं की बानकारी भारत करने में सहायक सिद्ध होगा। मस्ताहता के साथ में ही एक काजात एवं सहत्वपर्धा प्र'थों की सन्त्री भी ती गई है इस प्रकार गंथ सन्त्री के इस भाग में करूप सचियों से सभी तरह की अधिक जानकारी देने का पूर्ण प्रयास किया है जिससे पाठक अधिक से कांकिक बास करा सकें। मंत्रों के नाम, प्रंशकर्ता का बाप, उनके रचनाकाल, भाषा आदि के साथ-साथ जबके साथि सन्त साम पूर्णेंद्रः श्रीक २ देने का प्रयास किया गया है फिर भी कमियां रहना स्वाभाविक है। इसबिसे बिद्धानों से इसारा स्वार होई अपनाते का अनुरोध है तथा यदि कहीं कोई कमी हो तो हमें स्वक्रिय करने का कह कर जिससे महिन्य में हन कमियों को दूर किया जा सके।

भूत्यबाद समर्पग

हम सर्व प्रथम क्षेत्र की प्रवच्च कारिणी कमेटी एवं विशेषतः उसके मंत्री महोदय
भी केशरलालजी बच्ली को घन्यवाद हेते हैं जिन्होंने मंत्र स्पी के चतुर्ध माग की क्ष्यविक्त करका कर
समाज एवं जैन साहित्य की ओज करने वाले विशासिकों का सहाय उपकार किया है। केड़ कमेटी हारा
जो साहित्य शोध संस्थान संवालित के रहा है वह सम्पूर्ध कैन समाज के किये क्ष्यकरपृष्ठिय है एवं हुए
नई दिशा की ओर ले जाने वाला है। अविष्य में शोध संस्थान के कार्य का कुछेर भी विस्तार किया
जानेगा देसी हमें कारण है। मंत्र स्पान में उल्लिखन सभी शास्त्र मंत्रार के व्यवस्थाएक महोदयों की एवं
विशेषतः भी नथमलजी वज, समीरमलजी खावड़ा, पूनसचंदनी सोनाणी, इन्स्ट्लाखनी पापड़ीवाल
एवं सोहनलाकनी सोगाणी, चानूपचंदनी दीवाण, भंदरतालजी न्यावहीर्ष, राजमलची गोचा, भी०
पुल्तालिहनी, कपूरचंदनी रावका, चादि सक्जानों के हम पूर्ण वामारी हैं जिन्होंने हमें मंत्र मंत्रार
की स्पियां बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया एवं चल भी समय समय पर, मंत्रह के मंत्र विश्वकृत में
सहयोग देते रहते हैं। अद्ये पंच चैनसुलदासती न्यायतीर्ष के मृति हम कुत्रकालि हो प्रचित्रकाली स्पार्थन करते
हैं जिनकी सतत भरणा एवं मार्ग-दर्शन से साहित्योद्धार का यह कार्य विद्या वा रहा है। हमारे सहयोगी
भाव सुनाच देती के भी हम सम्वचाद दिये विना नहीं रह सक्कत जिनका मंत्र सुन्दी की होतार करने में हमें
पूर्ण सहयोग मिला है। जैन साहित्य सदन देहती के ज्यवस्थापक पं सरावन्यनी शास्त्री के मी हम हम्बयोगी

सन्त में स्वादर्शीय हा. बृद्धिदेवरारणजी सा. समयाल, सम्यक् क्रिन्दी विभाग कारी विश्व-विद्यालय, बृराणसी के इस पूर्ण सामारी हैं जिल्होंने मृथ सूची की सूमिका लिखने की क्या की है। बाक्टर हा. का हमें सबैव सार्थ-दर्शन निखना रहता है जिसके लिये उनके हम पूर्ण क्रतक है।

महाबीर भवन, जयपुर दिनांक १०-११-६१ कस्तूरचंद कासलीवास शब्दुव्जंद न्यायुटीके

प्राचीन एवं अज्ञात रचनाओं का परिचय

१ अमृतवर्मरस काव्य

श्रावक धर्म पर यह एक कुन्यर एवं सरस संस्कृत काव्य है। काव्य में २४ मकरण हैं अझरक गुराचन्य्र इसके रचयिता हैं बिन्होंने इसे सोहट के पुत्र सावसदास के पठनार्थ सिसा था। स्वयं म बकार ने जपनी मरास्ति निम्न मकार खिसी है—

पट्टे श्री इंदुइंदाचार्ये तत्पट्टे श्रीसहस्रकीर्ति तत्पट्टे श्रीष्ठमुयनकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री गुरु-रत्नकीर्ति-तत्पट्टे श्री श्रुणचन्न्यूवेसहिदिपितसहामंथ कर्मकृषार्थं लोहट मुत पंडित श्री सावस्रवास पठनार्थ-।। काञ्य की एक प्रति व भंडार में हैं। प्रति कागुद्ध है तथा उसमें प्रथंस २ प्रम्न नहीं हैं।

२ बाज्यात्मकं गाथा

इस रचना का दूसरा नाम पट्पद छरपय है। यह भट्टारक सहमीचन्द्र की रचना है जो संभवतः महारक सक्वकीर्ति की परम्परा में हुये थे। रचना खपश्रंश भाषा में निवद है तथा चन्चकोटि की है। इसमें संसार की नश्यरता का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया गया है। इसमें २८ पद हैं। एक पद तीचे केबिये—

विरक्षा कार्यात पुणो विरक्षा सेवंति अपपणो सामि, विरक्षा ससहावरणा परहव्य परस्पुहा विरक्षा। ते विरक्षा कमि अन्ति विकिव परवच्यु ए इव्हिं, ते विरक्षा ससहाव करहि कह ग्रियमण्डि पिछहिं।। विरक्षा सेवहिं सामि यिन्तु णिय देह वसंतव, विरक्षा जाणहि अप्यु ग्रुख वेयग् गुग्यवंतः। अग्रा पनाग्रा दक्षह सहिवि सरवय कुल उत्तमु जियन, जिग्रा एम पर्यग्द णिख्यिन वह गाह भविण क्षपक विग्रन ।

इसकी एक प्रति न भंडार में सुरक्षित है। यह प्रति आपार्थ नेसियन्द्र के पढ़ने के लिये किकी गई की।

३ भाराधमासार प्रबन्ध

आरायनासार प्रवन्ध में शुनि प्रभाचंद्र विराचित संस्कृत कथाओं का संप्रह है। शुनि प्रभा-चन्त्र देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। किन्तु प्रभावन्द्र के शिष्य थे शुनि क्यानंन्दि जिनके द्वारा विर्वित 'क्यू-मान पुराण' का परिचय चागे दिया गया है। प्रभाचन्द्र ने प्रत्येक कथा के चन्त्र में अपना परिचय दिया है। एक परिचय देखिये—

> श्रीमृत्तसंघे वरभारतीये गच्छे वक्षात्कारगयोति रम्ये । श्रीकुं वकुन्यास्वसुनीन्द्रवंशे जातं प्रभाचन्द्रमहायतीन्द्रः ॥

देवेन्द्रचन्त्राकेसम्पर्धितः तेतः ममाचन्त्रस्तिरवरेषाः । बातुमहार्वे रचितः सुवावयैः काराधनास्त्ररक्षामधन्यः ॥ तेनक्रमेयीव मया स्वरावस्या रक्षोकैः मस्तिहे रचनितंत्रते च । मार्गेज किं मातुकरक्षाये स्वक्षीक्रया गच्छति संबैक्षेति ॥

चाराधनासार बहुत सुन्दर कथा ग्रंथ है। यह चभीतक अप्रकाशित है।

८ कवि वरसम

क अंबार में हरिवरण्यास कृत हो रचनायें उपबच्य हुई हैं। एक विदारी सतसई पर हिन्दी गय टीका है तथा दूसरी रचना कवि वस्त्तम है। हरिकरणदास ने कृत्योपासक प्रायानाय के पास विदारी सतदाई का कान्यवन किया था। ये श्रीनस्य पुरोहित की जाति के ये तथा 'मोहन' उनके कामचवाता थे जो बहुत ही उदार मकृति के थे। विदारी सतसई पर टीका इन्होंने संवत् १८३४ में समाप्त की थी। इसके एक वर्ष परचान् इन्होंने कविवस्त्रम की रचना की। इसमें काव्य के तक्यों का वर्णन किया गया है। पूरे काव्य में २८४ पर्या है। संवत् १८४२ में वित्ती हुई एक प्रति क भंबार में सुरक्ति है।

४ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला माना

देवीसिंह झावडा १८ वी शताब्दी के हिन्दी आपा के विद्यान थे। ये जिनदास के पुत्र थे। संवत् १७६६ में इन्होंने भावक मानोदास गोलालारे के बागह वरा उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला की बन्दो-वद रचना की थी। मूल प्र'य प्राकृत भाषा का है और वह नेमिचन्द्र !मंडारी हारा रचित है। कवि नरवर निवासी थे जहां कुमें वंश के राजा बन्नसिंह का राज्य था।

उपदेश सिद्धान्तरत्नमाका भाषा हिन्दी का एक सुन्दर श्रंब है जो पूर्वांतः अकाशन योग्य है। पूरे श्रंब में १६८ पद्य हैं जो होहा, चौचह, चौचोका, गीतावंद, नाराच, सीरठा चादि बन्दों में निवद है। कवि ने श्रंब समाप्ति पर जो बपना परिचय दिया है वह निन्न प्रकार है—

> वातस्त्व गोती स्परो, संचई सम्ब्व बबान। गोबाखारे सुभनती, माघोदास सुजान॥१६०॥

रीपा

महाकठिन माहत की बांती, बगत माहि मगडें सुसदानी। वा विभि विता यनि सुमावी, मावा बंद माहि व्यक्तिवादी।। वी विनदास सञ्च कपु भाषा, बंदेबवास सावा, साला। देवीस्वय नाम सब बावे, कवित माहि क्रिया भीते राजेश्र

गीता खंदु म

भी विकासकः व्यक्तिमासकाः त्यक्ताः संदिष्टं करीन सब् सुक्तिकंडा क्यकुत्मृतिकः सुक्त्यतिकः विविकतीः।। विकास्य विकासकः स्वाप्तिकः सुक्त्यतिकः विविकतिः।। विकास्य विकासकः सुक्ति। विवासकः विकासकः विकासकः विकासकः विकास

दोहा

सुविवान मृत्यूपती, क्रम्यंत्र अवतंत् । किर्मितं वेत प्रवीन मति, राजव क्रम् वंस् ॥१६आ वाक राजव क्रम् वंस् ॥१६आ वाक राजव क्रम् वंस् ॥१६आ वाक राज्यं में से सिकामं सुन, वह इत्यार सुनीत ॥१६॥ सम्बद्धे चर कर्यन्त्रं, संवत् विक्रमराज । मार्यवं द्वीदे एकाव्सी, राजिदन सुविध समाज ॥१६६॥ प्रांच कियो पूरन सुविध नत्यर नार संमार । वे समस् वाको, क्रम्यं के स्वा क्रम्यं वाको, क्रम्यं क्रम्यं स्वा

चीकेला -

सावन विद् की तीज चादि सी चार ज्यो वह प्रंथ । भावन विद एकादिश तक तो परमपुर्य को पंथ ।। एक ब्राह्मित , माठ विना में क्रिकी क्षमायक चालि । पद क्रुक्ति , क्रुक्त विवाहति , बोध्य सदा सुख बांगि ।१९६४॥

इति क्वदेशसिद्धंतिरस्त्रमासा माथा ।।

६ बोम्मटबार टीका

गोल्मटसार की यह संस्कृत टीका चा॰ सक्क्यभूष्ट्रया द्वारा विरचित है। टीका के प्रारम्भ में क्रिकिकार ने टीकाकार के विषय में खिला है वह निन्न अंकार है.—

"अय गोम्मटलार प्र'य गाया चेय दीका करखाटक मापा में है उसके अनुसार सकतानूषण मैं संस्कृत टीका बनाई सो विकिथ हैं।"

टीका का नाम मुख्युक्तिका है जिसका, द्वीक्ष्युका है मंग्रका काल के की करिता किया है:--

सुद्धिः विकारं ः जयानीत् त्तेति वैर्णीयनिर्दिते । दीक्षां सुक्रावितरकः स्वेति विद्यारीयिकामार्थिती

सेकिन समयचन्त्राचार्य में की पोल्मिसीर पर संस्कृत टीकेर बिजी श उसका नाम भी मन्द-मनोपिका ही है। 'मुख्यत संस्था ने क्लंकिंगाची में १२२३ तक ही पाया कुन्तु किया है, सेकिन समुद्र के 'क' मयबार में संमित्त इस प्रति में बार संक्षी मूर्यय दिया है। इसकी बिह्नानी द्वारा विस्तृत सोव होती चाहिये। टीका के संगत में किंटि टीकिकिस किया है वह संस्तृ रेप्टूर्स के है।

विक्ताविक्षपुरम् विकाती व प्राचीनवेशि रश् दरार्पप्रति वर्षे प्रति संपुत्तस्वती (१४०६)

टीका का आदि साग निस्त मकोर हैं:--

भीमद्रभतिहत्त्रभावस्याद्यादेशासं ने गुर्भेक्तितिक्याचि प्रमासक्य व्यक्तिस्यानि प्रमासक्य व्यक्तिस्य स्थानिक्य विकार स्थानिक्य स्य

अन्तिम माग

रे. देखिये पुरातन जैन बास्य सूची प्रस्तामना पेन बन

कार्तिके चारिति पद्मे जबोदरबा राम दिने। शुक्ते च इस्तनकृत्रे योगी च प्रीति नामनि ॥ ४॥ श्रीमच्छीमुक्सचे च नंचान्नाये ससद्गये। वलात्कारे जगन्तमे गरके मारस्वताविषे ॥ ६॥ शीमक दक् दास्य स्रोरम्बयके भवत्। पद्मादिनंदि .दित्वाख्यो भद्भारकविश्ववागः॥॥॥ तत्पट्टां भोजमात्त हैं चंद्रांतरच शुभाविक। तत्पदस्योभवच्छीमान् जिनचंद्राभियोगणी ॥ ८ ॥ तत्पट्टी सद्गुर्खीय को महारकपदेश्वरः। पंचाचाररतो नित्यं प्रभाचन्द्रो खिरोन्द्रयः ॥ ६॥ तत्रिष्यो धर्मचन्द्रश्च तकमांबुधि चंद्रमा। तदान्नाये भवत भव्यास्ते वयर्यते यथाकमं ॥१०॥ पुरे नागपुरे रम्ये राजी महाद्वानके। पाटणीगोत्रके धुर्वे संग्डेतवातान्वयभूषशे ॥११॥ दानादिभिग्र गाँच कः स्पानामदिचस्यः। तस्य मार्या भवत् शस्ता खुणाश्री चामिधानिका ॥१२॥ तयोः पुत्रः समास्यातः पूर्वतास्यो विचारकः। राज्यमान्यो जनैः सेन्यः संघमारघरंघर ॥१३॥ तस्य भार्यास्ति सत्साध्वी पर्वतश्रीति नामिका। शीकादिगुणसंपन्ना पुत्रत्रयसमन्विताः ॥१४॥ प्रथमो जिनदासाख्यो गृहभारश्चरं घरः। तस्य भार्या भवत्साध्वी जीणादेवविषयाणा ॥१४॥ दानादिगुणसंयुक्ता दितीया च सुहाराणी। प्रथमायास्तु पुत्रः स्थात् तेजपाको गुणान्वितो ॥१६॥ द्वितीयो देवदशाख्यो गुरुभक्तः प्रसन्नधीः। पतिष्रता गुर्खेयुका भावविवासिरीति च ॥१७॥ पितर्मको गुर्योपुँको होलानामावृतीयकः। होकादेवा च तदुभावां होतात्री द्वितीविका ॥१८॥ विकापि द्त्रं निक्कि सुभक्तिः। सिद्धान्तरास्त्रभिवं हि गुम्पटं।।

धर्मादिचंद्राय स्वक्रमैद्यानय । हितोक्तये श्री सुखिने नियुक्तये ॥१६॥

७ चन्द्रनमस्यागिरि कथा

चन्दनमलवागिरि की कथा हिन्दी की प्रेम कथाओं में प्रसिद्ध कथा है। यह रचना मुनि भद्र-सेन की है जिसका वर्णन उन्होंने निम्न प्रकार किया है—

सम उपकारी परसगुर, गुण खबर दातार, बंदे ताके बरण जुग, सबसेन मुनि सार ॥३॥ रबना की भाषा पर राजस्थानी का पूर्ण प्रभाव हैं। बुद्ध पंच पाठकों के खबलौंकनार्थ नीचे दिये जा रहे हैं:---

सीतल जल सरवर भरे, कमल मधुप माणकार । पणघट पांगी भरण की, सार बहुत पणिहार ॥

× × × × × × × × × • चंदन श्वावत देखि करि, उठि दियो सनमान । उतरी श्वापणी धाम है, इस तुम होई पिछान ॥

रचना में कही कही गावांयें भी उद्धृत की हुई हैं। एव संख्या १००० है। रचनाकाल एवं लेखन काल दोनों ही नहीं दिये हुये हैं लेकिन प्रति की प्राचीनता की दृष्टि से रचना १० वी राताब्दी की होनी चाहिये। आधा एवं रौली की दृष्टि से रचना सुन्दर है। भी मोतीलाल में मेनारिया ने इसका रचना काल सं. १६०४ माना है। इसका दूसरा नाम कॉलकापंचमी क्या भी मिलता है। अभीतक भदसेन की एक ही रचना उपलब्ध दृष्टि है। इस रचना की एक सचित्र प्रति चमी दाल में ही हमें अद्यारकीय रात्त्र अंबार इंगरपुर में प्राप्त दृष्टि है।

८ चारुदत्त वस्त्रि

यह कल्यायाकीर्ति की रचना है। ये महारक सकलकीर्ति की परम्परा में होने वांते सुनि देव-कीर्ति के शिष्य थे। कल्यायाकीर्ति ने चाकदत्त चरित्र को संवत् १६२२ में सभाप्त किया था। रचना में

१. राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ सं० १६१

२ राजस्थान के जैन शास्त्र मंडारों की संब सुनी आंग २ पू० सं० २३६

सेठ चारुद्त के जीवन पर प्रकारा डाला गया है। रचना चौपई एवं दूहा छन्द में है लेकिन राग भिन्न भिन्न है। इसका दूसरा नाम चारुदत्तरास भी है।

कत्यायकीर्ति १७ वी शतान्त्री के विद्वान् थे। अब तक इनकी पारवेनाथ' रासोः (सं० १६६७) बावनी^२, जीरावित पारवेनाथ स्तवनः (सं०) नवमह स्तवन (सं०) तीर्थेकर विनती^३ (सं० १७२३) खादी-स्वर^३ क्याबा खादि एचनार्थे मिल सुकी है।

६ चौरासी जातिजयमास

ब्रह्म जिनदास १४ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान् थे। ये संस्कृत एवं हिन्दी होनों के ही प्रगाट विद्वान ये तथा इन दोनों ही भाषाओं में इनकी ६० से भी अधिक रचनायें उपलब्ध होती हैं। अवपुर के इन भंडारों में भी इनकी अभी कितनी ही रचनायें मिली हैं जिनमें से चौरासी जातिजयमाल का वर्षन यहां दिया जा रहा है।

चौरासी जातिजयमाल में माला की बोली के उत्सव में सम्मिलित होने बाली ८४ जैन जातियों का नामोल्लेख किया है। माला की बोली बढाने में एक जाति से दूमरी जाति बाले व्यक्तियों में बढी उत्सुकता रहती थी। इस जयमाल में सबसे पहिले गोलालार अन्त में चतुर्थ जैन श्रावक जाति का उल्लेख किया गया है। रचना ऐतिहासिक है एवं इसकी भाषा हिन्दी (राजस्थानी) है। इसमें कुल ४२ पश्च हैं। श्रद्ध जिनदास ने जयमाल के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है।

> ते समिकत बंतह बहु गुए जुत्तहं, माल सुणो तहमे एकमनि । बहा जिनदास भासे पितुष प्रकासे, पदई गुरो जे धन्मे धान ॥४३॥

इसी चौरासी जाति जयमाला समाप्त ।

इति जयसाल के खागे चौरासी जाति की दूसरी जयसाल है जिसमें २६ पद्य हैं बौर वह संभवतः किसी खन्य कवि की है।

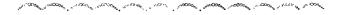
१० जिनदत्त्वीपई

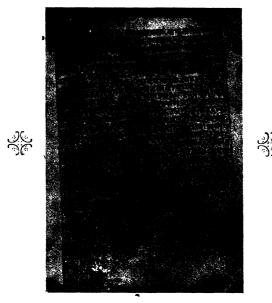
जिनदत्त चौपई हिम्दी का व्यादिकालिक काव्य है जिसको रल्ह किन ने संबन् १२४४ (सन् १२६७) भादवा सुदी पंचमी के दिन समाप्त किया था।

१. राजस्यान जैन शास्त्र भंडारों की ग्रंथ सूची भाग २ 🍃 पृष्ठ ७४

वे. " भाग ३ प्रक्ष १४१

^{¥. &}quot; " " 1988 १५२





रल्ह कींय द्वारा संवन १३५४ में राचित हिन्दी की ऋति प्राचीन कृति जिनद्ग चौपई का एक चित्रः— पान्कुलिपि जयपुर के दि० जैन मन्दिर पाटोदी के शास्त्र भरकार में मंत्रहीत है । (इसका विस्तृत परिचय प्रग्तावना की प्रष्ट संख्या ३० पर देखिये)





्र वी शनाब्दी के प्रसिद्ध साहित्य सेवी महा पंडित टोडरमलजी द्वारा रांचन एवं लिग्बित गोम्मटसार की मृल पायडुलिंग का एक चित्र । यह प्रन्थ जयपुर के दि॰ जैन मंदिरपाटोदी के शास्त्र भगडार में मंग्रहीत हैं। (सूची क. सं. ६७ वे. सं. ४०३)



संबत् तेरहसे चडबरयो, भादव सुदिपंचमगुरु दिवयो । स्वाति नक्षत्त चंद्र तुलहती, कबइ रल्ड पणवइ सुरसती ॥२८॥

कवि जैन धर्मावलम्बी थे तथा जाति से जैसवाल थे। उनकी माता का नाम सिरीया तथा पिता का नाम काते था।

> जइसवाल कुलि उत्तम जाति, बाईसइ पाडल उतपाति । पंचऊलीया त्रातेकवपूतु, कवइ रल्डु जिणद्त् चरित् ॥

जितदत्त चौपई कथा प्रधान काव्य है इसमें कविने कपनी काव्यत्य शक्ति का क्रियिक प्रदर्शन न करते दुवे कथा का ही मुन्दर रीति से प्रतिपादन किया है। प्रंथ का व्याधार पं. लाखू द्वारा बिरियत जिल्लावन्तवरित (सं. १२७४) है जिसका उल्लेख स्वयं प्रंथकार ने किया है।

मइ जोयड जिनदत्तपुरासु, लाखु विरयड शहसू पमाण ॥

प्रंथ निर्माण के समय भारत पर अलाज्यीन खिलजी का राज्य था। रचना प्रधानतः चौपई इन्द में निवद है किन्तु वस्तुवंध, दोहा, नाराच, अर्धनाराच आदि इन्दों का भी कहीं २ प्रयोग हुआ है। इसमें कुल एवं ४४४ हैं। रचना की भाषा हिन्दी है जिस पर अपभंश का अधिक प्रभाव है। वैसे भाषा सरत एवं सरस है। अधिकांश शब्दों को उकारान्त बनाकर प्रयोग किया गया है जो उस समय की परन्परा सी मालूम होती है। काञ्य कथा प्रधान होने पर भी उसमें रोमांचकता है तथा काञ्य में पाठकों की उत्सुकता बनी रहती है।

काव्य में जिनदत्त मगध देशान्तर्गत बसन्तपुर नगर सेठ के पुत्र जीवदेव का पुत्र या। जिनेन्द्र भगवान की पूजा व्यर्षना करने से प्राप्त होने के कारण उसका नाम जिनदत्त रखा गया था। जिनदत्त व्यापार के लिये सिंघल व्यादि द्वीपों में गया था। उसे व्यापार में ब्युल लाभ के व्यतिरिक्त वहां से उसे व्यनेक व्यत्नीकिक विद्यार्थे एवं राजकुमारियां भी प्राप्त दुई थीं। इस प्रकार पूरी कथा जिनदत्त के जीवन की सुम्दर कहानियों से पूर्ण है।

११ ज्योतिषसार

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है ज्योतिषसार ज्योतिष शास्त्र का मंब है। इसके रचयिता हैं भी इपाराम जिल्होंने ज्योतिष के विभिन्न मंगों के ज्याचार से संवत् १७४२ में इसकी रचना की थी। कवि के पिता का नाम तुलाराम था और वे शाहजहांपुर के रहने बाले थे। पाठकों की जानकारी के लिये मंथ में से हो उद्धरण दिये जा रहे हैं:--

केदरियों चौथो भवन, सपतमव्समी जान। पंचम घरु नोमी भवन, येद क्रिकोण बलान।।६॥ तीजो ब्सटम न्यारमों, घर दसमी कर लेखि। इनकी उपत्री कद्दत है, सर्वप्रंथ में देखि।।७॥ बरप लग्यो जा श्रंस में, सोह दिन चित बारि। वा दिन उतनी घडी, जुपल वीते लग्नविचारि ॥४०॥ लगन लिखे ते गिरह जो, जा पर वैठो श्राय। ता घर के मूल सुफल को की जे मित बनाय ॥४१॥ १२ जानार्योव टीका

आचार्य ग्रुअचन्द्र विरचित झानाएाँव संस्कृत भाषा का प्रसिद्ध प्रस्थ है। स्वाध्याय करने वालों का प्रिय होने के कारण इसकी प्राय: प्रत्येक शास्त्र भंडार में हस्तिविख्त प्रतियां उपलब्ध होनी हैं। इसकी एक टीका विद्यानन्ति के रिष्य श्रुतसागर द्वारा लिखी गई थी। झानाएाँव की एक अन्य संस्कृत टीका जयपुर के अ भंडार में उपलब्ध हुई है। टीकाकार है पं. नयविलास। उन्होंने इस टीका को मुगल सम्राट अक्दर जलालुहीन के राजस्य मंत्री टोडरमल के मुत रिपिदास के श्रवणाय एवं पठनार्थ लिखी थी। इसका उन्लोख टीकाकार ने प्रस्थ के प्रत्येक अध्याप के श्रंत में निम्न प्रकार किया है:—

इति शुभचन्द्राचार्यविर्राचित झानार्यावमूलसूत्रे योगाऽदीपाधिकारे पं नर्यावलासेन साह पामा तत्पुत्र साह टोडर तत्पुत्र साह रिपिदासेन स्वश्रवणार्थ पंडित जिनदासीयामेन कारापितेन द्वादराभावना प्रकरण द्वितीयः।

टीका के प्रारम्भ में भी टीकाकार ने निम्न प्रशस्ति लिखी है-

शास्त्रन् साहि जलालदीनपुरतः प्राप्त प्रतिग्रोदयः । श्रीमान् सुगलवंशारादद-शरीर-विश्वोपकारोद्यतः । नान्ना कृष्ण् इति प्रसिद्धिरभवन् सन्दात्रधर्मोन्नतेः । तन्मंश्रीरवर टोडरो गुण्युतः सर्वोभकाराधितः ॥६॥ श्रीमन् टोडरसाह पुत्र निपुण्ः सद्दान्तिवर्गाणाः । श्रीमन् श्रीरिषिदास धर्मानपुणः शासोन्नतिस्वश्रिया । तनाहं समवादि निपुण्यो न्यायाण्यलीलाह्ययः । श्रोतं वृतिस्मता पर सुविषया हानार्यावस्य सन्द्रदं ॥७॥

उक्त प्रशस्ति से यह जाना जा सकता है कि सम्राट श्रकवर के राजम्य मंत्री दोडरमल संभवतः जैन थे। इनके पिता का नाम साह पाशा था। स्वयं मंत्री टोडरमल भी कवि थे और इनका एक अजन "अब नेरो मुख देखूं जिनंबा" जैन भंडारों में कितने ही गुटको में मिलता है।

नविकास की संस्कृत टीका का उल्लेख पीटर्सन ने भी किया है लेकिन उन्होंने नामोल्लेख के व्यतिरक्त और कोई परिचय नहीं दिया है। पं. नयविकास का विशेष परिचय अभी खोज का विषय है। १३ खेमिखाइ चरिए—महाकवि दामोदर

महाकवि दामोदर इत शेमियाह चरिए अपभ्रंश भाषा का एक सुन्दर काव्य है। इस काव्य में पांच संधियां हैं जिनमें भगवान निम्नाथ के जीवन का वर्षान है। महाकवि ने इसे संवन् १२८७ में समाप्त किया था जैसा निन्न दर्वाई छन्द (एक प्रकार का तोड़ा) में विया हक्या है:— बारहसयाइं सत्तिसियाइं, विक्कमरायही कालहं । पमारहं पट्ट समुद्धरणु, खरवर देवापालहं ।।१४४॥

दामोदर मुनि सुरसेन के प्रशिष्य एवं महामुनि कमलमद्र के शिष्य थे। इन्होंने इस प्रथ की पंडित रामचन्द्र के खादेश से रचना की थी। प्रथ की भाषा मुन्दर एवं लिखत है। इसमें घत्ता, दुवई, वस्तु खंद का प्रयोग किया गया है। कुल पर्यों की संख्या १४४ है। इस काव्य से अपभ्रंश भाषा का शनै: शनै: हिन्दी भाषा में किस प्रकार परिवर्तन हुआ यह जाना जा सकता है।

इसकी एक प्रति ज भंडार में उपलब्ध हुई है। प्रति अपूर्ण है तथा प्रथम ७ पत्र नहीं हैं। प्रति सं० १४८२ की सिसी हुई है।

१४ तस्त्रवर्शन

यह मुनि शुभवन्द्र की संस्कृत रचना है जिसमें संचित्त रूप से जीवादि द्रव्यों का सन्तस्य वर्णित है। रचना छोटी है श्रीर उसमें केवल ४१ पश्च हैं। प्रारम्भ में प्रथकत्ता ने निम्न प्रकार विषय वर्णन करने का उन्लेख किया है:—

तरकातत्वस्थरूपक्षं सार्व्यं सर्व्यगुणाकः । वीरं नत्वा प्रवस्येऽहं जीवन्नव्यादिसन्त्र्यं ॥१॥ जीवाजीविमदं नृत्वयं युग्ममाहु जिनेश्वरा। जीवन्त्रव्यं द्विधातत्र गुद्धाशुद्धविकत्पतः ॥२॥

रचना की भाषा सरल है। प्रंथकार ने रचना के अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है:---

श्री कंजकीर्त्तिसह वैः शुभेंदुमुनितेरितै । जिनागमानुसारेण सम्यक्त्वव्यक्ति-हेतवे ॥५०॥

मुनि शुभचन्द्र भट्टारक शुभचन्द्र से भिन्न विद्वान हैं। ये १७ वी शताब्दी के विद्वान ये। इनके द्वारा लिली दुई श्रभी हिन्दी भाषा की भी रचनायें मिली हैं। यह रचना ज भंडार में संप्रहीत है। यह आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिली गई थी।

१५ तस्त्रार्थस्त्र भाषा

प्रसिद्ध जैनाचार्थ उमास्वाभि के तस्वार्थसूत्र का हिन्दी पथमें अनुवाद बहुत कम विद्वानों ने किया है। अभी के भंडार में इस प्रंव का हिन्दीपयानुवाद मिला है जिसके कत्तां हैं श्री बोटेलाल, जो अलीगढ प्रान्त के मेहराांव के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम मोतीलाल था। ये जैसवाल जैन थे तथा काशी नगर में खाकर रहने लगे थे। इन्होंने इस प्रंय का प्रधानुवाद संवत् १६३२ में समाप्त किया था।

होटेलाल हिन्दी के अच्छे बिद्धान थे। इनकी अब तक तत्त्वार्थसूत्र भाषा के खितिरक्त और रचनायें भी उपलब्ध दुई हैं। ये रचनायें चौबीस तीर्थंकर पूजा, पंचपरमेश्वी पूजा पश्चं नित्यनियमपूजा हैं। तत्त्वार्थ सूत्र का भादि भाग निम्न प्रकार है। मोच की राह बनावत जे। अरु कर्म पहाड करें चकचूरा, विरवसुतस्य के झायक है ताही, लिब्ज के हेत नर्मी परिपूरा। सम्यग्वरान चरित झान कहे, याहि मारग मोच के सूरा, तत्व को अर्थ करो सरधान सो सम्यग्दर्शन मजहूरा।।१।।

कवि ने जिन पद्यों में अपना परिचय दिया है वे निम्न प्रकार हैं:---

जिलो श्रलीगढ जानियो मेह्नाम धुधाम । मोतीलाल सुपुत्र है ह्रोटेलाल सुनाम ॥१॥ जैसवाल कुल जाति है श्रेणी वीसा जान । वंश इच्याक महान में लयो जन्म भू श्रान ॥२॥ काशी नगर सुश्राय के सैनी संगति पाय । उदयराज भाई ललो सिलरचन्द गुण काय ॥२॥ इंद भेद जानों नहीं श्रोर गणागछ सोय । केवल भक्ति सुधमें की वसी सुहृदय मोय ॥४॥ ता प्रभाव या सुत्र की इंद मतिहा सिद्धि । भाई सु अवि जन सोवियो होय जगत प्रसिद्ध ॥४॥ मंगल श्री श्रदेत है सिद्ध साध चपसार । तिन तुति मनवच काय यह मेटो विघन विकार ॥६॥ इंद बंध श्री सूत्र के किये सु बुधि श्रतसार । मूलमंथ कूं देलिके श्री जिन हिरहै धारि ॥४॥ कृतसास की श्रष्टमी पहलो एक निहार । श्रवसार उत्त सहस्र दो संगत रीति विचार ॥४॥ कृतसास की श्रष्टमी पहलो एक निहार । श्रवसार अस्तर उत्त सहस्र दो संगत रीति विचार ॥६॥

इति इंदबद्धसूत्र संपूर्ण। संबत् १६४३ चैत्र कृष्णा १३ बुधे।

१६ दर्शनसार भाषा

नवमत नाम के कई विद्वान हो गये हैं। इनमें सबसे प्रसिख १८ वी शताब्दी के नयमल बिलाला थे जो मूलतः खागरे के निवासी थे किन्द बाद में होरापुर (हिएडीन) खाकर रहने लगे थे। उक्त बिद्वान के खातिरिक्त १६ वीं शताब्दी में दूसरे नथमल हुये जिन्होंने कितने ही मंथों की भाषा टीका लिली। हरीनसार भाषा भी इन्हीं का लिला हुआ है जिसे उन्होंने संवन् १६२० में समाप्त किया था। इसका उल्लेख स्वयं कवि ने निस्न प्रकार किया है।

> बीस ऋधिक उगणीस से शात, श्रावण प्रथम चोथि शनिवार । कृष्णपत्र में दर्शनमार, भाषा नथमल लिली सुघार ॥४६॥

दर्शनसार मूलतः देवसेन का प्रंथ है जिसे उन्होंने संवत् ६६० में समाप्त किया था। नथमल ने इसी का पद्यानुवाद किया है।

नश्रमल द्वारा लिखे हुये श्रम्य प्रंयों में महीपालचरितभाषा (संवन् १६१६), योगसार भाषा (संवन् १६१६), परमात्मप्रकार भाषा (संवन् १६१६), रतनकरण्डश्रमकाचार भाषा (संवन् १६२०), पोडरा- कारणभावना भाषा (संयन् १६२१) ऋष्टाहिकाकथा (संयन् १६२२), त्नत्रय जयसाक्ष (संवन् १६२४) उल्लेखनीय हैं।

१७ दर्शनसार भाषा

१८ भी एवं १६ थी शताब्दी में अयपुर में हिन्दी के बहुत विद्वान होगये हैं। इन विद्वानों ने हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत के मंत्रों का हिन्दी गद्य एवं पण में अनुवाद किया था। इन्हीं विद्वानों में से पंश्रीवजीलालजी का नाम भी उल्लेखनीय है। ये १८ भी शताब्दी के विद्वान ये और इन्होंने दर्शनसार की हिन्दी गद्य टीका संवन् १८२३ में समाप्त की थी। गद्य में राज-स्थानी शैली का उपयोग किया गया है। इसका एक उदाहरण देखिये:—

सांच कहतां जीव के उपरिलोक दूषो वा तूषो। सांच कहने वाला तो कहें ही कहा जग का भय करि राजदंड छोडि देता है वा जूंबा का भय करि राजमनुष्य कपडा पटिक देय है ? तैसे निंदने बालें निंदा, स्तृति करने बाले स्तृति करो, सांच बोला तो सांच कहें।

१८ धर्मचन्द्र प्रबन्ध

धर्मचन्द्र प्रवन्ध में ग्रुनि धर्मचन्द्र का संचित्र परिचय दिया गया है। ग्रुनि, महारकों एवं विद्यानों के सम्बन्ध में ऐसे प्रवन्ध बहुत कम उपलब्ध होते हैं इस दृष्टि से यह प्रवन्ध एक महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक रचना है। रचना प्राकृत भाषा में है विभिन्न छन्दों की २० गायायें हैं।

प्रबन्ध से पता चलता है कि मुनि घर्मचन्द्र भ० प्रभाचन्द्र के शिष्य थे। ये सकल कला में प्रवीण एवं च्यागस शास्त्र के पारगामी विद्वान थे। भारत के सभी प्रान्तों के श्रावकों में उनका पूर्ण प्रमुख था और समय २ पर वे च्याकर उनकी पूजा किया करते थे।

प्रवन्ध की पूरी प्रति पंथ सूची के पृष्ठ ३६६ पर दी हुई है।

१६ धर्मविलास

धर्मविलास ब्रह्म जिनदास की रचना है। कवि ने चपने आपको सिद्धान्तचक्रवर्ति आ० नेमि-चन्द्र का शिष्य लिखा है। इसलिये ये भट्टारक सकलकीर्ति के अनुज एवं उनके शिष्य प्रसिद्ध विद्वान ब्र० जिनदास से भिन्न विद्वान हैं। इन्होंने प्रथम मंगलाचरण में भी आ० नेमिचन्द्र को नमस्कार किया है।

भव्यकमत्तमार्थहं सिद्धजिण तिहुपनिद सद्पुज्जं । नेमिशसिं गुरुवीरं पण्मीय तियशुद्धभोवमह्यां ।।१॥

र्षथं का नाम धर्मपंचर्षिशतिका भी है। यह प्राकृत भाषा में निवद है तथा इसमें केवल २६ गाथायें हैं। संथ की कल्तिम पुण्यिका निस्न प्रकार है। इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रकर्त्याचार्यश्रीनेमिचन्द्रस्य प्रियशिष्यत्रद्धां अनदासविराचितं धर्मपंच- विश्वतिका नाम शास्त्रसमाप्तम् ।

२० निजामशि

यहाँ प्रसिद्ध विद्वान् नहा जिनहाम की कृति है जो जयपुर के 'के' भरकार में उपलब्ध हुई है। रचना छोटी है और उसमें केवल ४४ पद्य हैं। इसमें चौबीस तीर्थंकरों की स्तृति एवं अन्य शलाका महापुरुषों का नामोल्लेख किया गया है। रचना स्तृति परक होते हुये भी आध्यात्मिक है। रचना का आदि अन्त भाग निस्न प्रकार है:—

श्री सकल जिनेश्वर देय, हूं तहा पाय करू सेव। हवे निजामिण कहु सार, जिम चपक तरे संसार॥१॥ हो चपक मुणे जिनवाणि, संसार श्रायिर तृ जाणि। इहां रह्मा निर्हे कोई थीर, हवे मन टर करो निज धीर॥२॥ ग्या श्रादिस्यर जगीसार, ते जुगला धर्म निवार। ग्या श्रादिस्यर जगीसार, ते जुगला धर्म निवार। ग्या सीमव भव हर स्वामी, ते जिनवर मुक्ति हि गामी। ग्या सीमव भव हर स्वामी, ते जिनवर मुक्ति हि गामी। ग्या सीमव निवार जानेंद्र, जिने मोड्यो भव नो कंद्र॥४॥ ग्या मुमति सुमति दातार, जिने रण मुमी जिल्यो मार। ग्या पद्माम्म जगिवास, ते मुक्ति त्या निवास॥४॥ ग्या सुमार्य जित जगीसार, जमु पास न रहियो भार। ग्या सुंपार्य जित जगीसार, जमु पास न रहियो भार। ग्या संप्रमम जगीवांह, गुंजिन त्रिमुवन कियो स्थानद् ॥६॥ ग्या चंद्रमम जगीवांह, गुंजिन त्रिमुवन कियो स्थानद् ॥६॥

× × × ×

ए निजामिण कहि सार, ते स्वयत सुख भंडार। जे तपक सुणे ए चंग, ते सौच्य पाये व्यमंग॥ १३॥ श्री सकतकीर्ति गुरु ध्याउ, सुनि मुवनकीर्ति गुणगाउ। ब्रह्म जिनदास भऐसार, ए निजामिण भवतार॥ १४॥

२१ नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

यह स्तोत्र वादिराज जगन्नाथ कृत है। य भट्टारक नरेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य ये तथा टोडारायसिंह (जयपुर) के रहने वाले थे। अंव तक इनकी श्वेताम्बर पराजय (केवलि सुक्ति निराकरण), सुख निधान, चतुर्विराति संधान स्वोपक्ष टीका एवं शिव साधन नाम के चार प्रथ उपलब्ध हुये थे। नेमिनरेन्द्र स्तोत्र डनकी पांचवी कृति है जिसमें टोडारायसिंह के प्रसिद्ध नेमिनाथ मन्दिर की मृतनायक प्रतिमा नेमिनाथ का स्तवन किया गया है। ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। रचना में ४१ झन्द हैं तथा अस्तिम पद्य निस्न प्रकार है:—

> श्रीमन्नेमिनरेन्द्रकीर्विरतुकं चित्तोत्सवं च कृतान्। पूट्यनिकमवार्जितं च कलुपं भक्तस्य वे जर्दतान्॥ डढ्य्त्या पद एव शर्मदेपदे, स्तोत्नहोः''''''''। शाश्वन् ख्रीजगदीशन्मिलहादे प्रायः सदा वर्षतान्।।।४१॥

उक्त स्तोत्र की एक प्रति में संग्रहीत है जो संवत् १७०४ की लिखी हुई है।

२२ परमात्मराज स्तोत्र

महारक सकलकीर्ति द्वारा चिरचित यह दूसरी रचना है जो जयपुर के शास्त्र मंडारों में उप-लच्य दुई है। यह सुन्दर एवं भावपूर्य स्तोत्र है। किये ने इसे महास्तवन लिखा है। स्तोत्र की भाषा सरख एवं सुन्दर है। इसकी एक प्रति जयपुर के के भंडार में संप्रहीत है। इसमें १६ पद्य हैं। स्तोत्र की पूरी प्रति प्रंथ सूची के ग्रष्ठ ४०३ पर दे दी गयी है।

२३ पासचरिए

पासचरिए त्रपभ्रंश भाषा की रचना है जिसे कवि तेजपाल ने सिवदास के पुत्र घूपलि के लिये निवद की थी। इसकी एक कपूर्ण प्रति – भरवार में संप्रहीत है। इस प्रति में – से ७७ तक पत्र हैं जिन में चाठ संधियों का विवरण है। चाठवीं संधि की चन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इयसिरि पास चरित्तं रहवं कह तेजपात सार्यादं ऋगुसंभिषसुहहः वृचित्तं सिवदास पुत्ते ग सन्गनगात हीजा सुपसायण तन्मए गुर्ग्णं अरविंद दिक्ता छाट्टमसंबी परिसमत्तो ॥

तेजपाल ने प्रंथ में दुवई, पत्ता एवं कडवक इन तीन छन्दों का उपयोग किया है। पहिले पत्ता फिर दुवई तथा सबके अन्त में कडवक इस कम से इन छन्दों का प्रयोग हुआ है। रचना अभी अपकाशित है।

तेजपाल १४ वी शताब्दी के विद्वान थे । इनकी दो रचनाएं संभवनाथ चरित एवं वरांग चरित पहिले प्राप्त दो चुकी हैं।

२४ पार्श्वनाथ चौपई

And the second

पार्श्वनाथ चौपई कवि सालो की रचना है जिसे उन्होंने संवत् १७३४ में समाप्त किया था।

कवि राजस्थानी विद्वात ये तथा क्याइटका मान के रहने वाले थे। इस समय ग्रुगल बादराह झौरंगजेब का शासन था। पारवनाथ चौपई में २६८ पश हैं जो सभी चौपई में हैं। रचना सरस भाषा में निवद है।

२५ पिंगल छन्द शास्त्र

खन्द शास्त्र पर माखन कवि द्वारा लिखी हुई यह बहुत सुन्दर रचना है। रचना का दूसरा नाम माखन खंद विलास भी है। माखन कवि के पिता जिनका नाम गोपाल या स्वयं भी कवि ये। रचना में दोहा चौबोला, खप्पय, सोरठा, मदनमोहन, हरिमालिका संलघारी, मालती, डिल्ल, करहंचा समानिका, मुजंगत्रवात, मंजुआपिखी, सारंगिका, तरंगिका, भ्रमरावलि, मालिनी श्रादि कितने ही इन्दों के लक्षण दिये हुये हैं।

साखन कवि ने इसे संवन् १८६३ में समाप्त किया था। इसकी एक अपूर्ण प्रति 'का' भण्डार के संबद्द में है। इसका आदि भाग सूची के ३१० प्रष्ठ पर दिया हुआ है।

२६ पुरस्यासम्बद्धाः कोश

देकचन्द १≖ वीं शताब्दी के प्रमुख हिन्दी कवि हो गये हैं। श्रवतक इनकी २० से भी श्रधिक रचनार्थे प्राप्त हो चुकी हैं। जिन में से कुछ के नाम निम्न प्रकार हैं:—

पंचरसेष्ठी पूजा, कर्मदहन पूजा, तीनलोक पूजा (सं० १८२०) सुट्टिट तरंगिणी (सं० १८२०) पटचकरवाण पूजा, व्यसनराज वर्णन (सं० १८२०) पटचकरवाण पूजा, पटचसेर, पूजा, इरहाच्याय सूत्र गय टीका, अध्यास बारहलढी, आदि। इनके पद भी मिलते हैं जो अध्यास रस से स्रोतमोत हैं।

टेकचंद के पितासह का नाम दीर्पचंद एवं पिता का नाम रामकृष्ण था। दीपचंद स्वयं भी धच्छे विद्वान् थे। कि क्षयदेक्षवाल जैन थे। ये मुक्ततः जयपुर निवासी थे लेकिन किर साहिपुरामें आकर रहते लगे. थे। पुरुवाक्तवकमाकोरा इनकी एक और रचना है जो अभी जयपुर के 'कू' भरडार में प्राप्त हुई है। किव ने इस रचना में जो अपनापरिचय दिया हैं वह निम्न प्रकार हैं:—

> दीपचन्द साधर्मी भए, ते जिनधर्म विषे रत थए। तिन से पुरस तृष्णुं संगपाय, कर्म जोन्य नहीं घम सुद्दाय ॥ ३२ ॥ दीपचन्द तन तें तन भयो, ताको नाम हली हरि दीयो। रामकृष्णु तें जो नन थाय, हठीचंद ता नाम घराय ॥ ३२ ॥ सो फिर कर्म उदे तें जाय, साहिपुरे यिति कीनी जाय। तहां भी बहुत काल बिन कान, लोयो मोह उदे तें जानि ॥

×

•

×

साहिपुरा धुमयान में, कलो सहारो पाम । धर्म लियो जिन देव को, नरभव सफल कराय ॥ एप उमेद ता पुर विषे, करें राज बलवान । तिन अपने गुजबलवकी, आरि शिर कीहनी आमि ॥ ताके राज धुराज में ईतिमीति नहीं जान । ध्वत्रलं पुर में धुलवकी तिष्ठे हरप जु आनि ॥ करी कथा इस मंथ की, खंद बंध पुर माहि । मंथ करन कछू बीचि में, धाकुल उपजी नाहि ॥ १३॥ साहि नगर साह्ये भयो, पायो धुम अवकास । पूरण मंथ मुल तैं कीयो, पुरुषाम्ब पुरुषवास ॥ १४॥ ।

. चौपई एवं दोडा छन्दों में लिला हुआ एक सुन्दर मंग्र है। इसमें ७६ कथाओं कां संमह है। कवि ने इमे संवर् १८२२ में समान्त किया था जिसका रचना के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख है:—

> मंबन् ऋष्टादश सत जांनि, उपरि बीस दोय फिरि क्यांनि । फागुण सुदि ग्यारसि निसमांहि, कियो समापत उर हुल साहि ॥ ४४ ॥

भारम्भ में किंव ने लिखा है कि पुरवास्त्रव कथा कोश पहिने प्राक्त भाषा में निवद था लेकिन जब उमे जन साधारण नहीं समम्मने लगा तो सकल कीर्ति चादि विद्वानों ने संस्कृत में उसकी रचना की। जब संस्कृत समम्मना भी प्रत्येक के लिए क्लिप्ट होगवा तो फिर चागरे में घनराम ने उसकी वचनिका की। टेकचंद ने संभवतः इसी व विनिक्ता के आधार पर इसकी छन्दोबद रचना की होगी। कविने इसका निस्त प्रचार उल्लेख किया है:—

साधर्मी धनराम जु अए, संसक्षत परवीन जु थए।
तों यह मंग्र आगरे थान, कीयो वचनिका सरत बसान।।
जिन पुनि तो बिन स्वस्त होय, गए। यर समके और न कीय।
तो माकृत में करें बसान, तब सब ही युंति है गुरुखानि॥३॥
तब फिरे जुमि ही नता लई, संस्कृत बानी सुति ठई।
फेरि अलप बुध झान की होय, सकल कीति आदिक जीय॥
तिन यह महा युगम करि लीए, संस्कृत बाति सरत जु कीए॥

२७ वाहसाबना

पं० रहपू अपभारा भाषा के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं। इनकी प्रायः सभी रचनावें अपभारा

भाषा में ही मिलती हैं जिनकी संख्या २० से भी अधिक हैं। कवि १४ वी शताब्दी के विद्वान थे और मध्यप्रदेश-प्वालियर के रहने वाले थे। वारह भावना कवि की एक मात्र रचना है जो हिन्दी में लिली हुई मिली है लेकिन इसकी भाषा पर भी अपभ्रंश का प्रभाव है। रचना में ३६ पद्य हैं। रचना के अपने में कवि ने ज्ञान की अगाधता के बारे में बहुत सुप्तर राब्दों में कहा है:—

कथन कहाया झान की, कहन सुनन की नांहि। आपनहीं मैं पाइए, जब देखें घट मांहि॥ रचना के कुछ सुन्दर पण निस्न प्रकार हैं:—

संसार रूप कोई वस्तु नांही, भेदभाव श्रकान । ज्ञान दृष्टि धरि देखिए, सब ही सिद्ध समान ॥

× × × × × × × × = मं कराबों धरम करि, किरिया घरम न होय। घरम जुंजानत वस्तु है, जो पहचाने कोय॥
× × × × × × ×

करन करायन न्यान नहिं, पढ़ि ऋर्थ बल्सनत और । ग्यान दिष्ठि विन ऊपजै, मोहा तणी हु कोंर ।।

रचना में रह्यू का नाम कहीं नहीं दिया है केवल प्रंथ समाध्ति पर "ईर्त श्री रह्यू कृत वारह भावना संयूच्" लिला हुम्बा है जिससे इसके। रह्यू कृत लिखा गया है।

२८ सुवनकीतिं गीत

सुवनकीति भट्टारक सकलकीति के शिष्य थे और उनकी मृत्यु के पश्चान ये ही भट्टारक की गृही पर बैठे। राजस्थान के शास्त्र भंडारों में भट्टारकों के सम्बन्ध में कितने ही गीत मिले हैं उनमें बूचराज एवं भ० ग्रुभचन्द द्वारा लिखे हुये गीत प्रमुख हैं। इस गीत में बूचराज ने भट्टारक सुवनकीति की तपस्या एवं उनकी बहुभुतता के सम्बन्ध में गुणानुवाद किया गया है। गीत ऐतिहासिक है तथा इससे सुवन कीति के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जानकारी मिलती है। बूचराज १६ वी शताब्दी के प्रसिद्ध बिद्धान थे इनके द्वारा रची हुई अवतक पांच और श्वनार्य मिल जुड़ी हैं। पूरा गीत अविकल हर से सूची के प्रष्ट ६६६-६६७ पर दिया हुआ है।

२६ भूपालचतुर्विशतिस्तोत्रटीका

महा पं॰ ब्याशाधर १२ वीं शताब्दी के संस्कृत भाषा के प्रकारक विद्वान् थे। इनके द्वारा किसे गये कितने ही मंथ मिलते हैं जो जैन समाज में बड़े ही ब्यादर की टप्टि से पढ़े जाते हैं। ब्यायकी भूपाल चतुर्विशांतिस्तोत्र की संस्कृत टीका कुळ समय पूर्व तक ब्याप्य थी लेकिन ब्यब इसकी २ प्रतियां जयपुर के ब्य अंबार में उपलब्ध हो चुकी हैं। ब्याशाबर ने इसकी टीका ब्यपने प्रिय शिष्य विनयचन्द्र के लिये

१ विस्तृत परिचय के लिए देखिये ढा॰ कासलीवाल द्वारा लिखित बूचराज एवं उनका साहित्य-जैन सन्देश शोधांक-११

की थी। टीका बहुत सुन्दर है। टीकाकार ने विनयचन्द्र का टीका के कान्त में निम्न प्रकार उल्लेख दिया है:—

उपराम इव मूर्तिः पूतकीर्तिः स तस्माद्। खजिन विनयवन्द्रः सरुवकोरैकचन्द्रः॥ जगदसृतसगर्भाः शास्त्रसन्दर्भगर्भाः। श्रुचिचरित सहिष्णीर्यस्य घिन्वन्ति वाचः॥

विनयचन्द्र ने कुछ समय परचान् श्राशाधर द्वारा लिखित टीका पर भी टीका लिखी थी जिसकी एक प्रति 'श्र' भरडार में उपलब्ध हुई है। टीका के बन्त में "इति विनयचन्द्रनरेन्द्रविरचित्रभूपाल-स्तोत्रसमात्रम्" लिखा है। इस टीका की भाषा एवं रौली श्राशाधर के समान है।

३० मनमोदनपंचशती

कवि व्रत्त अथवा ब्रत्रपति हिन्दी के प्रसिद्ध किव होगये हैं। इनकी मुख्य रचनाओं में 'कृषण-जगावन चरित्र' पहिले ही प्रकारा में आचुका है जिसमें तुलसीदास के समकालीन किव अब्ध गुलाल के जीवन चरित्र का खित सुन्दरता से वर्णन किया गया है। इनके द्वारा विरिष्त १०० से भी खिषक पद् हमारे मंग्रह में हैं। ये अवांगढ के निवासी थे। पं० बनवारीलालजी के राज्दों में ख्रत्यित एक आदर्शवादी लेवक थे जिनका धन संचय की ओर कुछ भी ध्यान न था। ये पांच आने से अधिक अपने पास नहीं रखने ये तथा एक घन्टे से अधिक के लिये वह अपनी दुकान नहीं सोलते थे।

छत्रपति जैसवाल थे। अभी इनकी 'सनमोदनपंचराति' एक और रचना उपलब्ध हुई है। इस पंचराती को कवि ने संबन १६१६ में समाप्त किया था। कवि ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है:──

भीर भये श्रसरीर गई पट सत पन बरसिंह । प्रघटो विक्रम देत तनी संबत सर सरसिंह ।। इनिसहसत बोडराहि पोप प्रतिपदा उजारी । पूर्वापांड नक्षत्र श्वर्क दिन सब सुबकारी ॥ वर बृद्धि जोग मिश्रत इहमंथ समापित करिबियो । श्रतुपम श्रसेष श्रानंद घन भोगत निवसत थिर थयो ॥

इसमें ४१२ पय हैं जिसमें सबैया, दोहा खादि इन्दों का अयोग किया गया है। कवि के शब्दों में पंचराती में सभी स्टुट कवित्त है जिनमें भिन्न २ रसों का वर्धन है—

सकलासिबियम सिद्धि कर पंच परमगुर जेह। तिन पद पंकज कौ सदा प्रनमीँ धरि मन नेह।। नहिं खिथकार प्रबंध नहिं फुटकर कथित्त समस्त। जुदा जुदा रस बरनऊं स्वादो चतुर प्रशस्त।।

मित्र की प्रशंसा में जो पद्य लिखे हैं उनमें से दो पद्य देखिये।

सित्र होय जो न करें चारि बात कीं। उद्घेद तन धन धर्म मंत्र अनेक प्रकार के।। दोष देखि दावें पीठ पीके होय जस गावें। कारज करत रहें सदा उपकार के।। साथारेल सिंते नहीं स्वारंध की प्रीप्ति आके। जब तब वचन अक्रासत वथार के।।
दिल को वदार निरवाहै जो ये दे करार। मति की छुठार गुनवीसरें न बार के।।१९६॥
धर्मतरेंग बाहिक मधुर जैसी किसनिस। धनलरकम की कुवैरवामि घर है।।
गुन के बधाय कुंजैसे कंक्य सावर कुं। दुल तम कृषि कुंदिन हुंगहर है।।
स्वारज के सारिवे कुंहज वह विधना है। मंत्र के सिखायवे कुंमानों छुरगुर है।।
ऐसे सार मित्र सी न कीजिये जुवाई कमी। धन मन तम सब बारि देना वर है।।१४॥।

इस तरह मंनमीद्रम पंचराती हिम्दी की बहुत ही सुन्दर रचना है की शीव ही प्रकाशन बीग्ब है।

३१ भित्रविलास

मित्रविकास एक संग्रह ग्रंथ है जिसमें कवि धासी द्वारा विरायित विभिन्न रणनाओं का संकलन है। धोसी के पितों का नाम बहालसिंह वा। कवि ने अपने पिता एवं अपने भित्र भारामले के आग्रह से मित्र विकास की रचना की थी। ये भारामल संभवतः वे ही विद्वास है जिन्होंने क्शेंनकथा, रीलकथा, शानकथा आदि कथायें लिली हैं। कवि ने क्से संवत् १७८६ में समाप्त किया या जिसका उत्लेख ग्रंथ के अपने में निम्म प्रकार हुआ है:—

कर्म रिपु सो तो चारों गित मैं बसीट फिरची, ताही के मंसाद सेती चासी नाम पायी है। भारांपल मित्र वो बहालंसिह पिता मेरी, तिकंकीसहाय सेती मंच ये बकावी है।। को मैं भूल चूक जो हो सुधि सो सुधार लीजो, मो वै छुपा दृष्टि कीज्यो भाव ये जकावी है। दिगनिष सतजान हरि को चतुर्थ ठान, फागुख सुदि चौथ मान निजगुख गाथी है।।

कृति ने में व के प्रारम्भ में वर्णनीय विषय का निम्म प्रकार उस्तेस किया है:--

सित्र विकास सम्बद्धाल्यैन, वरनु वस्तु स्वामार्थिक ऐन । प्रगट देखिये लोक मैसार, संग प्रसंद व्यनेक प्रकार ॥ शुद्ध काशुम मन की प्राचीत होंचे, संग क्षारंग तकी कल सीच । पुद्रगंत वस्तुं की निरायय टींक, इस क्ष्म करनी है सहकीय ॥

सित्र विश्वीस की भाषा धर्च शैली दीनों ही सुन्दर है तथा पाठकी के सन की शुनापने वाली है। प्रंय प्रकाशन वीन्य है।

चासी कवि के पद भी सिक्रतें 🖁 ।

३२ रागमांला-स्यामिश

राग रागनियों पर निवद रागमींसी श्याम मिंश की एक मुन्देर क्रीत है। इसका दूसरा नाम

कासम रिकंक विवास भी है। स्थानसिम कागरे के रहने वाले ये लेकिन उन्होंने कासिमवां के संरक्ष-खात में जाकर बाहीर में इसकी रचना की थीं। कासिमवां उस समय वहां का क्यारे एवं रिकंक शासक या। किये ने निम्न शब्दों में उसकी मरांसा की है।

> कासमस्तान सुजान कृपा कवि पर करी। रागनि की माला करिव की चिंत घरी।

होहा

सेल लांन के वंश में उपत्यी कासमलांन। निंस दीपना ज्या चिन्द्रमा, दिन दीवक ज्या मार्न।। कविं वरने कविं लांन की, सी वरनी नहीं जांव। कासमलांन सुंजान की चीन रही लविं छाय।।

रागमाला में भैरीराग, मासकोशाराग, हिंदोसनाराग, श्रिपकराग, शुणकरीराग, रामकली, सिततरागिनी विलायतरागिनी, कामीव, नड, केदारी, श्रासावरी, मक्हार श्रादि रागरागिनयों का वर्षन किया गया है।

रयामिश्र के पिता का नाम चतुंमुं ज सिंश यां। किंवि नै रचतीं के व्यन्त में निम्न प्रकार वर्णन किया है—

> र्सवन् सीरह्से करवे, उपर बीते दोह। फासुध कुरी सनोदसी, सुनौ सुनी सन कोह।।

सीरदा

पोधी रची साहौर, स्थाम धागरे नगर के। राजघाट है ठौर, पुत्र चतुरमुज मिल्ले कैं।

इति रागमाला मंथ स्याममिश कृत संपूरण ।

३३ इन्मविकृष्यजी को रासी

यह तिपरवास की रचना है। रासों के प्रांतम्म में महाराजों भीमच की पुत्री कविनायों के क्षेत्रस्य के वर्षेत है। इसके परचार कविनायों के विचाह का मस्ताव, भीमक के पुत्र कविना द्वारा शिक्ष-काल के सांच विचाह करने का मस्ताव, शिक्षुपास को निमंत्रण तथा उनके सदस्यक विचाह के लिये मस्ताव, रुक्तियकी का कृष्ण के पत्र विकास सम्वेदा निजयाना, कृष्णकी द्वारा मस्ताव स्वीकृत करना तथा सद्तवस्त के साथ भीमनगरी की श्रोर प्रस्थान, पूजा के वहाने रुक्मिणी का मन्दिर की श्रोर जाना, रुक्मिणी का सौन्दर्ग वर्णन, श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणी को रथ में बैठाना, कृष्ण शिशुपाल युद्ध वर्णन, रूक्मिणी द्वारा कृष्ण की पूजा एवं उनका द्वारिका नगरी को प्रस्थान श्रादि का वर्णन किया गया है।

रासो में दूहा, कलरा, त्रोटक, नाराच जाति छंद श्रादि का प्रयोग किया गया है। रासी की भाषा राजस्थानी है।

नाराच जातिछंद

आर्याद भरीए सोहती, त्रिमवणरूप मोहती। रूपं मर्पात नेवरी, सुचल चरण घुघरी।। मन मन्दे मनक माल, अवण हंस सोमती। रतन हीर जडत जाम, बीर ली अनोपती।। मत्तमले ज वंद स्र, सीस पूल सोहए।। सोसन में रलहार, जडित कंठ में रुली। अवंध में रलहार, जडित कंठ में रुली। अवंध मोति जडित जोति, नाकिड जलाहुली।

३४ लग्नचन्द्रिका

यह ज्योतिष का प्रंथ है जिसकी भाषा स्थोजीराम भौगाणी ने की थी। कवि आसेर के निवासी थे। इनके पिता का नाम कंबरपाल तथा गुरू का नाम पं० जैंबन्दजी था। अपने गुरू एवं उनके शिष्यों के आमह से ही कवि ने इसकी भाषा संबन् १८७४ में समाप्त की थी। लग्नचन्द्रिका ज्योतिष का संस्कृत में अच्छा प्रंथ है। भाषा टीका में ४२३ पदा हैं। इसकी एक प्रति भेंत भंडार में सुरित्तत है।

इनके लिखे हुये हिन्दी पद एवं कवित्त भी मिलते हैं:-

३५ लब्धि विधान चौपई

लिब्स विधान चौपई एक कथात्मक कृति है इसमें लब्धिविधान अत से सम्बन्धित कथा दी हुई है। यह अत चैत्र एवं भादन मास के शुक्त कु की प्रतिपंदा, द्वितीया एवं नृतीया के दिन किया जाता है। इस अत के करने से पापों की शान्ति होती है।

चौपई के रचयिता हैं कथि भीषम जिनका नाम प्रथमवार सुना जा रहा है। कवि सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। ये खरडेलवाल जैन थे तथा गोधा इनका गोत्र था। सांगानेर में उस समय स्वाध्याय एवं पूजा का खुन प्रचार था। इन्होंने इसे संवत् १६१० (सन् १४६०) में समाप्त किया था। दोहा और चौपई मिला कर पर्धों की संख्या २०१ है। कवि ने जो अपना परिचय दिया है यह निम्न प्रकार है:—

संवत् सोलहसै सतरी, फागुण मास जबै कतरी।
जजल पालि तेरसि तिथि जांण, ता दिन कथा गढी परवाणि ॥६६॥ •
बरतै निवाली मांहि विस्थात, जैनकमें तसु गोधा जाति।
यह कथा भीषम कवि कही, जिनपुरांण मांहि जैसी लही॥६७॥
सांगानेरी वसै सुभ गांव, मांन न्यरित तस बहु लंब नाम।
जहि कै राजि सुली सव लोग, सकल वस्तु को कीजे भोग॥६६॥
जैनक्षमं की महिमां वस्थी, संतिक पूजा होई तिह्मणी।
आवक लोक बसे सुजांण, सांम्म संवारा सुर्यो पुराण॥६६॥
ब्याठ विधि पूजा लिएश्वर करें, रागदोप नहीं मन मैं घरें।
दान चारि सुपात्रा देय, मनिष जन्म कौ लाहौ लेख॥२००॥
कडा वंध चौपई जांसि, पूरा हुवा दोइसै प्रमाण।
जिनवासी का बन्त न जास, भवि जीव जे लहें सुखवास॥२०१॥

३६ वर्ड मानपुराख

इसका दूसरा नाम जिनरात्रित्रत महात्त्य भी है। मुनि पद्मनित् इस पुराया के रचिता है। यह प्रंथ दो परिच्छेदों में विभक्त है। प्रथम सर्ग में ३४६ तथा दूसरे परिच्छेदों में २०४ पद्म है। मुनि पद्मनित् प्रभाचन्द्र मुनि के पट्ट के थे। रचना संवत् इसमें नहीं दिया गया है लेकिन लेखन काल के आधार से यह रचना १४ वीं शताब्दी से पूर्व होनी चाहिए। इसके क्यतिरेक ये प्रभाचन्द्र मुनि संभवतः वेही हैं जिन्होंने क्याराधनासार प्रवन्य की रचना की थी और जो भ० देवेन्द्रकीर्त के प्रमुख शिष्य थे।

३७ विषहरत विधि

यह एक बायुर्वेदिक रचना है जिसमें विभिन्न प्रकार के विष एवं उनके मुक्ति का उपाय बतलाया गया है। विषहरन विधि संतीय वैद्य की इन्ति है। ये मुनिहरय के शिष्य ये। इन्होंने इसे कुछ प्राचीन मंत्रों के बाधार पर तथा अपने गुरु (जो स्वयं भी वैद्य ये) के बताये हुए झान के बाधार पर हिन्दी पद्य में तिलक्कर इसे संवत् १७४१ में पूर्य किया था। ये चन्त्रपुरी के रहने वाले थे। मंद्य में १२७ दोहा चौपई छन्द है। रचना का मारन्थ निम्न प्रकार से हुआ है:—

व्यथ विषद्दरन शिस्त्रते--

दौहरा — श्री गनैस सरस्वती, सुमरि गुर चरननु चितलाय । षेत्रपाल दुखहरन की, सुमति सुबुधि बताय ॥

भीपई

श्री जिनचंद शुवाच बलांति, रच्यौ सोभाग्य ते यह हरष मुनिजान । इन सील दीनी जीव द्या जांति, संतोष वैद्य लह तिरहमनि ॥२॥

३८ व्रतकथाकोश

इसमें जत कथाओं का संग्रह है जिनकी संख्या २० से भी अधिक हैं। कथाकार पं० दामो-दर एवं देवेन्द्रकीर्ति हैं। दोनों ही धर्म चन्द्र सूर्र के शिष्य थे। ऐसा माल्स पहता है कि देवेन्द्रकीर्ति का पूर्व नाम दामोदर या इसलिये जो कथायें उन्होंने अपनी गृहाधावस्था में लिखी थीं उनमें दामोदर कत लिख दिया है तथा साधु बनने के पश्चात् जो कथायें लिखी उनमें देवेन्द्रकीर्ति लिख दिया गया। दामोदर का उल्लेख मथम, पह, पकादरा, बादरा, चतुर्दरा, एवं एकविंशति कथाओं की समान्ति पर आया है।

क्या कौरा संस्कृत गण में है तथा आपा, मान एवं शौली की द्रष्टि से सभी कथायें उच्चस्तर की हैं। इसकी एक अपूर्ण प्रति अ भंडार में सुरक्षित है। इसकी दूसरी अपूर्ण प्रति अंथ संख्या २४४३ पर देखें। इसमें ४४ कथाओं तक पाठ हैं।

३६ व्रवस्थाकोश

भंड़ारक सक्काफीति १४ मी शासाब्दी के प्रकांड विद्वान थे। इन्होंने संस्कृत भाषा में बहुत प्रंथ लिखे हैं जिनमें भाविषुराण, धन्यकुमार चरित्र, पुरायस्सार संग्रह, यरोधर चरित्र, वर्द मान पुराण भावि के माम उल्लेखनीय हैं। अपने जबरदस्त प्रभाव के कारण उन्होंने एक नई भट्टारक परम्परा थे। कम्म विश्व जिसमें न० जिसवास, सुवसकीति, ब्रामसूषण, शुभ्यपन्त जैसे उच्चकीटि के विद्वान हुये।

अतस्था कोरा अभी उनकी रचनाओं में से एक रचना है। इसमें अधिकांश कथायें उन्हीं के द्वारा विरचित हैं। कुछ कथायें अभ्र पंडित तथा रत्नकीर्ति आदि विद्वानों की भी हैं। कथायें संस्कृत पश् में हैं। भर संकक्षकीर्ति ने सुनन्धदशमी कथा के अन्त में अपना माभीन्सेल जिम्म प्रकार किया है:—

> चसमगुरा समुद्रान, स्वर्ग मोलाय हेतून । प्रकटित शिवमार्गान, सद्गुरुन् पंचपूज्यान्।।

त्रिमुबनपतिभव्वैस्तीर्धनाथादिञ्जस्यान् । जगति सकसकीर्त्या कंस्तुवे तद्व ग्राणाप्त्यै ॥

प्रति में २ पत्र (१४२ से १४४) बाद में लिखे गये हैं। प्रति प्राचीन तथा संभवतः १७ वीं रातान्दी की लिखी दुई है। कथा कोरा में कुल कथाओं की संख्या ४० है। ४० समोसन्स

१० वी शताब्दी में जबा गुलाब हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि है। इनके जीवन पर किंव ज्ञायति ने एक मुन्दर काव्य शिक्षा है। इनके पिता का नाम इल्ला था जो चन्दवार के राजा कीर्ति के आजित थे। ज्ञा गुलाल स्वांग भरना जानते थे और इस कला में पूर्ण प्रवीस थे। एक बार इन्होंने मुनि का स्वांग भरा और य मुनि भी वन गये। इनके द्वारा विरिवत अब तक म रक्षाएं उपलब्ध हो चुकी हैं। जिसमें केपस किया (संबद्ध १६६४) गुलाल पच्चीसी, ज्ञागालन किया, विवेक चौपई, इरिस्स कागवास चरित्र (१६४१), रहाविधीन चौपई वर्ष धमस्वकर के नाम उल्लेखनीय हैं।

'समीसरए।' एक स्तोत्र के रूप में रचना है जिसे इन्होंने संबत् १६६० में समाप्त किया था। इसमें भगवान भहावीर के समवसरए का वर्षांत्र किया गया है जो ६७ पर्यों में पूर्व होता है। इन्होंने इसमें अपना परिचय देते हुव जिला है कि वे जयनन्दि के शिष्य थे।

> स रहसे ऋडसठिसमें, माथ दसे सित पद्ध । शुक्रास ऋड भनि गीत गति, जयोनिन्द पद् सिद्ध ॥६६॥

४१ सोनागिर पच्चीसी

यह एक ऐतिहासिक रचना है जिसमें सोनागिर सिद्ध चैत्र का संक्रित वर्णन दिया हुआ है। दिगम्बर विद्वानों ने इस तरह के चेत्रों के वर्णन बहुत कम लिखे हैं इसेलिये भी इस रचना का पर्याप्त महत्व है। सोनागिर पहिले दितया स्टेट में था अब वह मध्यमदेश में है। कवि भागीरथ ने इसे संवत् १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४ को पूर्ण किया था। रचना में चेत्र के सुख्य मन्दिर, परिक्रमा एवं अन्य मन्दिरों का भी संक्रिय्त वर्णन दिया हुआ है। रचना का अन्तिम पाठ निन्न मकार है....

मेला है जहा को कातिक सुद पूनी को,
हाट हू बजार नाना भांति जुरि आए हैं।
भावधर बंदन को पूजत जिनेंद्र काज,
पाप मूल निकंदन को दूर हुसै धाए है।।
गोठे जैंड नारे पुनि दान देह नाना विधि,
सुर्ग पंच जाइवे को पूरन पद पाए है।

कीजिये सहाह पाइ आए हैं भागीरथ, गुरुन के प्रताप सौन गिरी के गुण गाए हैं।।

दोहा

जेठ सुरी चौदस भली, जादिन रची बनाइ। संवत् ष्यष्टादस इकिसठ, संवत् लेड गिनाइ॥ पढे सुनै जो भाव घर, खोरे देइ सुनाइ। मनवंद्यित फल की लिये, सो पूरत पद को पाइ॥

४२ हम्मीररासो

इस्पीररासो एक ऐतिहासिक काञ्य है जिसमें महेरा कवि ने शिक्षमाह का बादशाह काता कहीन के साथ मगडा, महिभासाह का भागकर रायुवस्मीर के महाराजा हम्मीर की शरण में काना, बादशाह कातावहीन का हस्मीर की महिमासाह को छोड़ने के लिये बार २ समम्माना एवं अन्त में काला-जरीन एवं हम्मीर का भयंकर युद्ध का वर्णन किया गया है। कवि की वर्णन शैली सुन्दर एवं सरल है।

रासो कब और कहां तिला गया था इसका कवि ने कोई परिचय नहीं दिया है। उसने केवल अपना नामोल्लेल किया है वह निस्त प्रकार है।

> मिले रावपति साही धीर ज्यौ नीर समाही। ज्यों पारिस कौ परिस वजर कंचन होय जाई।। ज्ञालादीन हमीर से हुजा न होस्यौ होयसे! कवि महेस यम उचर वे सभासहै तस परवसें।।

श्रज्ञात एवं महत्वपूर्ण यंथों की सूची

क्रमांक	मं, सू. क.	प्रंथ का नाम	प्रंथकार	माषा मं	थभंडार	रचना का	ल
₹.	¥3=\$	श्चनंतव्रतोद्यापनपूजा	द्या ० गुरा षंद्र	स•	Ħ	१६३०	
₹.	४३६२	श्रनंतचतुर्दशीपूजा	वां तिदास	सं०	•	×	
₹	२८६४	अभिधान रत्नाकर	धर्मचंद्रगरिए	सं०	¥	×	
٧.	\$358	अभिषेक विधि	लक्ष्मीसेन	सं०	জ	×	
¥.	ree	श्रमृतधर्मरसकाव्य -	बुराचंद्र	सं०	अ	१६ वीं व	।तान्दी
٤.	४४७१	अष्टाहिकापूजाकथा	सुरेन्द्रकीर्शि	सं •	q	१= % १	
٥.	२५३५	श्राराधनासारप्रबन्ध	प्रभाचंद्र	सं०	2	×	
۶.	६१६	श्राराधनासारवृत्ति 🗸	पं० ग्राशाधर	सं०	स	१३ वीं व	तान्दी
٠٤.	****	ऋषिमरडलपूजा	ज्ञानभूषरा	# •	•	×	
१ ٠.	8850	कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा	नसितकी र्ति	सं०	w	×	
₹₹.	२४४३	कथाकोश	देनेन्द्रकीर्सि	सं०	च	×	
१२.	XXXE	कथासंप्रह	नलितकीति	सं०	41	×	
₹₹.	xxxe	कर्म चूरत्रतोद्यापन	लक्षीसेन	सं∙	ख	×	
₹¥.	३६२६	कल्याग्रमंदिरस्तोत्रटीका	देवतिलक	सं०	4	×	
₹₹.	३६२७	कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका 🖊	पं० भागाचर —	सं०	¥	१३ वीं	20
१६.	***	कलिकुरडपार्श्वनाथपूजा	प्रभा वं द्र	4 •	¥	१५ कों	"
₹ ७ .	२७४=	कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचूरि	वारित्रसिंह	सं०	¥	१६ वी	99
₹5.	そとのき	कुरडलगिरिपूजा	भ० (वश्वभूषरा)	सं०	घ	×	
₹€.	२०२३	कुमारसंभवटीका	कनकसागर	सं•	¥	×	
₹•.	**=*	गजपंथामरहत्तपूजनविधान	भ॰ क्षेमेन्द्रकीत्ति	सं•	स	×	
₹₹.	२०२८	गजसिंहकुमारचरित्र	विनयजन्द्रसूरि	सं०	2	×	
२२.	3= 36	गीतबीतराग	श्रमिनव बादकीर्ति	ŧi o	q	×	
₹₹.	११७	गोम्मटसार्क्म कायबटीका	कनकनन्दि	सं०	寄	×	
₹¥.	११=	गोम्मटसारकर्मकायब्टीका	ज्ञानभूषरा	सं•	45	×	
۹٤.	13	गोन्मटसारटीका	सक्लभूषस्य	सं०	46	×	
₹.	3542	चं दनपष्ठी व्रतकथा	सुवसेन	सं•	म	×	
₹७.	30 VE	षंद्रमनकाञ्यपंश्विका	प्र यानींद	€i•	अ	×	

	—Xe—							
क्रमांक व	ां. स्∙क	. शंथकानाम	प्रथकार	भाषा श्रंध	मंडा र	रचना कार	7	
₹=.		चारित्रशुद्धिविधान	सुमतिब्रह्म	सं॰	4	×		
₹€.	¥ 	ज्ञानपंचर्वि शतिकात्रतोद्यापन	भ० सुरेन्द्रकीर्ति	सं•	4	×		
₹°.	*478	ण्मोकारपैँतीसीव्रतविधान	कमककीसि	सं •	8	×		
₹₹.	717	तत्ववर्णंन	शुभवंद	सं•	भ	×		
₹२.	XXX£	त्रेपनिकयोद्यापन	देवेन्द्रकी लि	सं०	ध	×		
\$ \$.	४७०५	दशलक्ष्मतपूजा	जिनचन्द्रसूरि	सं •		×		
₹¥.	४७०६	दरालचणव्रतपूजा	मस्लि भूषरा	सं०	8	×		
₹¥.	४७०२	दशलचणत्रतपूजा	सुमति सागर	ŧi•	8	×		
₹€.	४७२१	द्वादशत्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्र कीर्त्ति	सं•	श्र	१७७२		
₹७.	४७२४	द्वादशत्रतोद्यापनपूजा	पद्मन ^{दि}	र्स •	Ħ	×		
₹4.	४७२५	,, ,, ,,	जगत्को लि	सं०	व	×		
₹€.	७७२	धर्मप्रश्नोत्तर	विमलकोर्ति	सं०	अ	×		
¥o.	र१४२	नागकुमारचरित्रटीका	प्रभाचन्द्र	सं•	2	×		
٧٤.	858	निजस्मृति	×	सं०	3	×		
٧٦.	35=8	नेमिनाथपूजा	सुरेन्द्रकीर्शि	सं०	भ	×		
¥₹.	*=5\$	पंचकल्याण्कपूजा	,,	सं०	斬	×		
Y¥.	१९७१	परमात्मराजस्तोत्र	सकलकीति	44 0	ध	×		
¥X.	१४२८	प्रशस्ति	दामोदर	सं∘	ष	×		
¥€.	१११८	पुरा ग्ग्सार	श्रीचंदमुनि	सं ०	म	१०७७		
Yu.	ሂሄሄ፡	भावनाचौतीसी	भ० पद्मनन्दि	सं०	ध	×		
¥5.	F # 0 Y	भूपालचतुर्विशतिटीका	प्राचाधर	सं•	म	१३ वीं शत	गर्दी	
¥€.	४०५६	भूपालचतुर्विशतिटीका	विनयसंद	सं॰	#	१३ वीं	77	
٧o.	४०५७	मांगीतुंगीगिरिमंडलपूजा '	विद्वसूषस	सं•	•	१७४६		
4 2.	५३ =१	मुनिसुव्रतछंद	प्रभावंद	सं० हि	q	×		
¥ ? .	કહક	मूलाचारटीका	वसुनंबि	न्ना॰ सं	4	×		
¥₹.	2323	यशोधरचरित्रटिप्पण	त्रमा र्वद्र	सं०	म	×		
¥¥. <u>₹</u>	२६८३	रत्नत्रयविधि	बाशायर	सं•	4	×		
XX.	7834	क् पमञ्जरीनाममाला	√स्पनंद	सं•	घ	\$\$XX		
¥Ę.	२१४०	बद्ध मानकाव्य	बुनिपद्मनंदि	ૡં∙	Ħ	१३ वीं	**	

क्रमांक	मं. सू. क.	प्रंथ का नाम	मंथकार	भाषा प्रंथ	भंडार	रचना काल
٤o.	47EX	बाग्भट्टालंकारटीका	वादिराज	सं॰	ष	१७२६
¥5.	XXXO	वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनंदि	सं∙	4	×
X٤.	***	शरदुत्सवदीपिका	सिंहनदि	सं •	ष	×
ę۰.	४≒२६	शांतिनाथस्तोत्र	गुराभद्रस्यामी	सं•	眶	×
44.	¥१० ७	शांतिनाथस्तोत्र	सुनिभद्र	सँ०	ष	×
\$? .	* \$ 5 \$	षणवतिचेत्रपालपूजा	विद्यसेन	सं•	घ	×
Ę ŧ.	XXE	षष्ट्रयधिकशतकटीका	राजहंसोपा ध्याय	ۥ	4	×
ξ¥.	१८२३	सप्तनयावबोध	सुनिने त्रसिंह	सं•	q	×
۴ĸ.	₹ ¥€७	सरस्वतीस्तुति	माशा धर	सं•	व	१३ वीं 😕
₹₹.	3838	सिद्धचक्रपृजा	प्रभावद्	सं•	*	×
₹ ७.	१६७१	सिंहासनद्वात्रिशिका	क्षेमकरमुनि	सं•	₹	×
٤٣.	इंद १ द	कल्याणक	समन्तभद्र	भा•		×
₹€.	3638	धर्मचन्द्रप्रवन्ध	धर्मचन्द्र	সা•	व	×
٥٠.	800X	यत्या चार	धा ० वसुनंदि	সা•	श्र	×
٠१.	१८३६	श्रजितनाथपुराण	विजयसिंह	ध प•	व	१४०४
७ २,	€8X8	कल्याणकविधि	विनयसर	ब प•	व	×
⊌ ₹.	XXX	चूनडी	,,	"	u	×
6 ¥.	28==	जिनपूजापुरं दरविधानकथा	धमरकीति	अ प•	ष	×
७ ٤.	XX\$6	जिनरात्रिविधानकथा	नरसेन	धर-	ष	१७ वीं
٧Ę.	२०६७	योमिणाहचरिड	सदमगादे र	धप•	ष	×
<i>७७</i> .	२०६८	गोमिणाहचरिय	दामोदर	ध प•	व	१२८७
95.	४६०२	त्रिंशतजिनच उबीसी	महरासिह	श प०	व	×
ve.	4 846	दशलक्षणक्या	पुराभद्र	श्चप०	म	×
٩٠.	२६८८	दुधारसविधानकथा	विनय चं द	धप∙	च	X muse
٩٤.	¥8#4	नन्दीश्वरजयमाल	कनककीति	ध प•	Ħ	×
= ۲.	२६८८	निर्करपंचमीविधानकथा	विनयचंद	सप•	4	×
≈ ₹.	3415	पासच िय	ते नपाल	ध्रप •	3	×
۹¥.	XXSE	रोहिणीविधान	गुएभद्र	धप॰	ष	×
4 ٤,	२६८३ "	रोहिणी चरित	वेव नंदि	धप•	u	१५ की

			—₹ ₹—			
क्यांक	मं. स्. व	. प्रथानाम	प्रंथकार	माषा श्रं	वभंडार	रचना कास
εĘ.	२४३७	सम्भवजिखणाहचरिड	ते जपाल	#1 T +	4	×
49.	ሂሂሂሂ	सम्यक्त्वकौमुदी	सहरापाल	स प०	¥	×
55,	२६८८	सुखसंपत्तिविधानकथा	विमलकोस्ति	ध व॰	9	×
۶ ٤.	358%	सुगन्धद्शमीकथा	"	वा०	ध	×
ۥ.	* 3 E ?	श्रंजनारास	धर्मभूषगा	हि॰ प•	4	×
٤٤.	¥\$¥6	श्चवनिधिपूजा	ज्ञानभूषस्	हि॰ प•	2	×
٤٦.	२५०५	श्रठारहनातेकीकथा	ऋषिलालचद	हि॰ प॰	Ħ	×
€₹.	₹ 00₹	अनन्तकेळ्प्पय	धर्मचन्द्र	हि॰ प॰	ऋ	×
€¥.	¥3={	भनन्तव्रतरास	ब्र॰ जिनदास	हि॰ प•	#	१४ वीं
€ ₹.	४२१५	श्चईनकचौदालियागीत	विमलकी नि	हि॰ प॰	¥	१६ = १
€ €.	४७६७	चादित्यवारकथा	रायमल्ल	हि॰ प•	8	×
€७,	****	द्यादित्यवारकथा	वादिषन्द्र	हि० प•	घ	×
€ 5.	x36 2	चा दीश्वरकासमवसरन	×	हि॰ प॰	ध	१६६७
86.	₹0}•	श्चादित्यवारकथा	सुरेन्द्रकीर्ति	हि॰ प॰	घ	१७४१
₹••.	५६१५	श्चादिनाथस्तवन	यल्ह	हि०५●	可	१६ वी
₹• ₹ .	****	श्राराघनात्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकः ति	हि० प०	4	×
₹०₹.	३८६४	ऋा रतीसंग्रह	ब॰ जिनदास	हि॰ प॰	Ħ	१५ वी शताब्दी
१०₹.	₹800	उपदेश ञ् तीसी	जिनहर्ष	हि॰ प॰	#	>.
₹o¥.	***	ऋषिमंडलपूजा	मा० गुरानदि	हि॰ प॰	Ħ	×
१०५.	58.Ro	कठियारकानडरीचौपई	×	हि॰ प•	Ħ	१७४७
१०६.	६०४२	कविस	भगरदास	हि॰ प॰	3	१८ वी शताब्दी
₹ • ७.	404 %	कवित्त	बनारसीदास	हि॰ प॰	3	१७ वी शताब्दी
₹05.	23 FX	कर्मभूरव्रतवेलि	मुनिसक्लचंद	हि॰ प॰	4	१७ वीं शताब्दी
₹•€.	4405	कविवल्लभ	हरिचरगादास	हि॰ प॰	9	×
₹₹•.	३६६४	कृपणञ्ज्द	चन्द्रकीलि	हि॰ प॰	झ	१६ वी शताब्दी
१११.	****	कृष्ण्इक्मिणी बेलि	पृथ्वी राज	हि० प•	\$	\$440
११२.	२५५७	कृष्ण्यास्त्रिकमणीमं गता	पदमभगत	हि० प०	4	१ 58•
११३.	***	गीत	पल्ह	हि॰ प॰	•	१६ वीं शसाब्दी
22×-	\$= \$ ¥	गुरुवंद	गुभवंद	हि॰ ए॰	Ħ	१६ वीं शताब्दी

क्रमांक	मं.स्.क.	श्रंथ का नाम	मंथका र	माषा प्रथम	बार	रचना कात
ttx.	483 7	चतुर्दशीकथा	डालूराम	हि॰ प॰	₹	१७६५
224.	4450	चतुर्विरातिछप्पय	युक् की सि	हि॰ प॰	47	0005
११७.	४५२६	चतुर्विशतितीर्थकरपूजा	नेमिसंदपाटनी	हि॰ प॰	*	१ ==•
₹₹4.	** **	चतुर्विशतितीर्थं करपूजा	सुग नचंद	हि॰ प•	4	१६२६
118.	२५६२	चन्द्रकुमारकीवार्त्ता	प्रतापसिंह -	हि॰ प॰	অ	\$5¥\$
१२०.	२५६४ ्	चन्द्रनमलयागिरीकथा	बतर	हि∙ प∘	¥	१७•१
१२१.	2441	चन्दनमत्तयागिरीकथा	भद्रसेन	हि॰ प•	म	×
१ २२.	१५७६	चन्द्रप्रभपुराण	हीरानास	हि॰ प॰	4	* \$3\$
१२३.	१ %७	चर्चासागर .	बम्पालाल	हि॰ ग॰	¥	×
? २४.	₹ ¥¥	चर्चासार	पं० शिवजीसास	हि॰ ग॰	*	×
१ २४	२०५६	चारुदसचरित्र	कल्यासकीरित	हि॰ प•	4	१६६२
१२६.	48 84	चितामणि जयमास	ठक्कु र सी	हि॰ प॰	电	१६ वी शताब्दी
170.	* 6 6 %	चेतनगीत	मुनिसिहनंदि	हि॰ प॰	₩.	१७ वीं यतान्दी
१२८.	2808	जिनचौबीसी भवान्तररास	विमलेन्द्रकीरित	हिं• प॰	4	×
१२६.	५५०२	जिनदत्त्वीपई	रस्हकवि	हि॰ प॰	q	₹ ₹¥
₹₹0.	***	ज्योतिषसार	कुपाराम	हि॰ प॰	च	१७६ २
१३१.	₹∘ ₹ १	हानवावनी	मतिशेक्द	हि॰ प॰	Z	१५७४
१३२.	४८ २६	ट डाणागीत	बूचराव	हि॰ प॰	u	१६ वी सत्तक्वी
१३३.	3,₹	तत्वार्थस्त्रटीका	कनकर्वीत	हि॰ ग॰	8	१८ वी "
₹ ३ ٧.	३ ६८	तत्त्वार्थसूत्रटीका	पांडे वयव न्त	हि॰ ग॰	₩.	१८वी 🥠
₹ ₹ ¥.	₹ <i>७</i> ४	तत्त्वार्थस्त्रटीका	राजमस्म	हि॰ ग॰	at .	१७ वी 🤧
१३६.	₹७5	तत्त्वार्थस्त्रभाषा	शिक्षरचंद	हि॰ प॰	4	१६ वी "
₹₹७.	४६२७	तीनचौबीसीपूजा	नेमी चंद पाट रा ी	हि॰ प॰	零	१८६४
१३८.	4004	तीसचौबीसीचौर्फ्	स्याम	हि॰ प॰	76	\$wve
₹₹€.	455 ?	तेईसबोलविवरख	×	हि॰ प॰	₹.	१६ वी शताव्यी
tvo.	3505	दर्शनसारभाषा	नवमस	हि॰ प॰	*	127.
१४१.	<i>\$4</i> 80	दर्शनसारभाषा	चिवजीशास	हि॰ म॰	4	? £?\$
१४२.	***	देवकीकीटास	बूलकरलकासबीक	स हि॰ प॰	u	×
₹¥₹.	¥ \$ 5	द्रव्यसंप्रह्माचा	बाबा दुलीचंद	हि॰ ग॰	4	1844

कमोक पं.सं.क. प्रथ का नाम प्रथकार भाषा प्रथमंडार रचना काल						
tvv.	4448	द्रव्यसंप्रहर्भाषा	हेमराज	हि•ग०	蚜	१७३१
tvx.	**• 3	नगरी की बसापतका विवरण	×	हि•ग०	q	×
₹¥ Ę .	२६०७	नागमंता	×	हि॰ प॰	4	१ =६३
₹¥७.	¥446	नागश्रीसङ्माय	विनयशंद	हि॰ प॰	म	×
₹¥ 4 ,	5 ? ?	निजामणि	व्र० जिनदास	हि॰ प०	寄	१५ वी शतान्दी
₹¥€.	****	नेमिजिनं दृव्याहलो	बेतसी	हि० प०	म	१७ वी "
११०.	२१४६	नेमीजीक।चरित्र	ग्रा शन्द	हि० प०	म	१८०४
१४१.	x 3 £ 2	नेमिजीकोमंगल	विषयभूषरम्	हि॰ प०	घ	१६६८
१४२.	\$< \$ ¥	नेमिनाथछंद	शुभवद	हि० प०	घ	१६ वी 🦡
₹ ¥ ₹.	* X5XX	नेमिराजमतिगीत	हीरानंद	हि॰ प•	4	· ×
११४.	२६१४	र्नोमराजुलव्याहलो	गोपी कृ ष्ण्	हि० प=	¥	१८६३
१ १ १ १	X ¥ 3 €	नेमिराजुलविवाद	व० ज्ञानसागर	हि० प०	घ	१७ वी "
१४६.	468 4	नेमीश्वरकाचीमासा	मुनिसिहनंदि	हि॰ प॰	85	१७ वी "
१५७.	४≒२१	नेभिश्वरकाहिंडोलना	मुनिरत्नकीनि	हिं० प०	ख	×
₹¥ = .	35 28	नेमीरवररास	मुनिरत्नकोत्ति	हि० प∙	स्त्	×
१४६.	₹₹40	पंचकल्यासकपाठ	हरचंद	हि॰ प॰	হ্	१ =२३ `
₹€0.	2103	पांडवचरित्र ं	लाभवर्द्ध न	हि॰ प॰	2	१७६=
१६१.	¥240	पद	ऋविद्यावलाल	हि॰ प॰	q	×
१६२.	१४३६	परमात्मप्रकाशदीका	स्रानचंद	हि॰	4 5	१= 3 <i>६</i>
१६३.	艾に着の	प्रमु न्नरास	कृष्णराय	हि॰ प॰	•	×
१ ६४.	¥38 ×	पार्व नाथचरित्र	विरवभूषगा	हि॰	ध	१७ वी ,,
१ ६४.	¥380	पार्व नाथ चौपई	पं० लाखो	हि॰ प•	ε	\$ 10 \$ Y
१६६.	3=48	पार्वञ्चद	ब ० लेखराज	हि॰ प॰	म्र `	रे६ बी 🔐
१६७	३२७७	पिंगलव्हं दशास्त्र	मालनकवि	हि० प•	ब	१ = ६ ३
१६⊑.	२६२३	पुष्यास्त्रवकथाकोश	टेकचद	हि० प०	41	1894
१६६	***	बंधुउद्यसत्ताचौपई	श्रीनाल	fgo qo	ē	t==t
٤w٠.	X=XE	बिहारीसतसईटीका	कृष्णराव	हिल्प•	ख	×
१७१ .	X 6 0 C	विद्यारीसतसुईटीका	हरचरगादाम	हि॰ प॰	#	₹ ⊏ ₹ ¥
१७२.	2860	मुबनकी तिगीत	बुचराज	हि॰ प॰	4	१६ वीं "
		-	-	-		••

कर्मा	क ग्रं.स्	क. प्रथं का नाम	मंदकार	मार्चो	प्रैंबर्गे है ।र	रंचना व	विश्व
१७३	. २२४५	मंगलकलशमहार्मुानचतुष्पदी	रंगविनयगरिष	हि॰ प॰	मं	tütk	
१७४	. ३४५६	मनमोदनपं चराती	खत्रपति	हि॰ प॰	4	1614	
१७५.	. 4084	मनोहरमन्जरी	मनोहरमिश्र	हि॰ प॰	È	×	
₹७६	. ३८६४	महा बीर ञंद	षुभचंद	हि॰ प॰	ù	१६ वॉ	*
१७७	. २६३८	मान्तुं गमानवति चौपई	मोहनविजय 🥕	हि॰ प॰	ä,	×	
₹७=	. 48=4	मानविनोद	मानसिंह	हि॰ प॰	ě.	×	
309	\$3×6	मित्रविलास	वासी	हि॰ प॰	÷	1000	
₹50.	\$6X=	मुनिसुन्नतपुराण	इन्द्रजीस	हि॰ प॰	T T	१नदर्श	
₹5₹.	२३१३	यशोधरचरित्र	गारवदास	हि॰ प॰		१४८१	
₹⊏₹.	२३१५	यशोधरचरित्र	पन्नानान	हि॰ न•	•	1643	
१⊂?,	* \$ \$ \$	रत्नावलित्रतिविधान	व ० कृष्ण्यस	हि॰ प॰	मं	१६ कीं	
₹ 5 ¥.	१४०१	रवित्रतकथा	बयकीति	हि॰ प•	ä	१७ वी	ù
१ 5%.	€0३८.	् रागमाला	् श्याममिश्र	हि• प॰	3	१६०२	
१=६.	₹ X£.	राजनीतिशास्त्र	जसुराम	हि॰ प॰	**	×	
१८७.	₹ ₹६⊏	राजसमारं जन	गंगादास	हि० प॰	Ħ	×	
१८५.	६०५५	रुक्मणिकुष्णजीकोरास	तिपरदास	हि॰ प॰	3	×	
१ ≤€.	२६८६	रैदव्रतकथा	व्र० जिनदास	हि॰ प॰	₩.	१६ वीं	*
₹€ 0	६०६७	रोहिएगिविधिकथा	बं सी दास	हि॰ प॰	ε	१६९४	
₹€ ₹.	*666	लग्नचन्द्रिकाभाषा	स्योजीरामसोगागी	हि॰ प॰	ज	×	
१६२.	₹ 0 द ₹	लव्धिविधानचौपई	भीषमकवि	हि॰ प॰	z	१६१७	
₹€₹.	xext	लहुरीनेभीश्वरकी	विश्वभूषव	हि॰ ४०	ε	×	
168.	६१०५	बसंतपूजा	भजयराज	हि• प०	ਣ	१८ वीं	,
₹€¥.	** \$6	वाजिदजी के ऋडिक्स	वाजिद	हि॰ प•	व	×	
₹€€.	₹₹₹	विक्रमचरित्र	मभयसोम	हि॰ प॰	¥	१७२४	
१६७.	ませをえ	विजयकीर्त्तिऋंद	शुभवंद	हि• प•	44	१६ बी.	
₹₹ =.	३२१३	विषहरनविधि	संतोषकवि	हि॰ प॰	ख	१७४१	
₹€€.	२६७४	वैदरभीविवाह	पेमराज	हि॰ प॰	α	×	
₹••.	\$00Y	षटलेश्या वेलि		हि॰ प॰	*5	ţuş.	
२०१.	4805	शहरमारोठ की पत्री	f	हि॰ ग॰	u	×	

कर्माव	त्रं. स्. ।	ह. प्रंथका नाम	मंथका र	भाषा	मंथभं दा र	रचना काल
₹•₹	XXEn	शीकरास	बुखकी लि	हि॰ प॰	ब	1911
२०३	***	शीवरास	व • रायमलादेवः	पूरिहि० प०	भ	१६ बी
₹•¥	3588	शीक्रयस	विजयदेवसूरि	हि॰ प॰	ष	१६ वीं
₹•\$	२७०१	श्रेखिकचौपई	ह्न गावेद	हि• प॰	4	१८२६
7.5	2485	श्रेणिकचरित्र ५ दा १३।त	विजयकीर्ति	हि० प∙	4	१ =२•
₹•७	५३६२	समोसरण	ब• गुलाल	हि• प•	भ	१६६ =
₹•=	117 5	स्यामक्त्रीसी	नंददास	हि॰ प॰	4	×
₹•€	२४३=	सागरदत्तचरित्र	हीरकवि	हि॰ प॰	4	१७२४
₹₹•	1784	सामाचिकपाठभाषा	तिनोकचंद	हि॰ प•	4	×
211	₹ % •€.	इम्मी ररासो	महेशकवि	हि०प•	ङ	×
282	teex.	इ रिवंशपुरा ग	×	हि॰ ग॰	च	१६७ १
711		होलिका चौपई	ड्र"बरकवि	हि॰ प॰	ख	१६२६



- 1



भट्टारक सकलकीति कृत यशोधर चरित्रकी मचित्र प्रति के दी सुन्दर चित्र



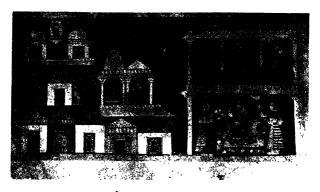
यह सचित्र प्रति जयपुर के दि० जैन संदिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भरकार में संप्रदीत है। राजा यशोषर दुःस्वप्त की शांति के लिये अन्य जीवों की बिल न चढा कर स्वयं की बिल देने को तैयार होता है। रानी हाहाकार करती है।

दूसरा चित्र धगले पृष्ठ पर देखिये]





चित्र नं० २



जिन चैत्यालय एवं राजमहल का एक दृश्य (प्रथ सूची क. सं. २२६४ वेष्टन संख्या ११४)

राजस्थान के जैन शास्त्र भगडारी

ग्रन्थसूची

विषय-सिद्धान्त एवं चर्चा

१. इप्रथेदीपिका—जिनभद्रगसिः। पत्र मं०४७ मं६८ नकः। बाकार १०४४ हे इक्षः। आचा-प्रकृतः। विषय-वैत निद्वतन्तुः। रचना कान् ४। वेषन काल ४। बपुर्सः। केटन संस्था २। प्राप्तिः स्थान चुन्नव्दारः।

विशेष-गुजराती मिश्रित हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

२. ऋथप्रकाशिका—सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० २०२ । बा० ११६ ४० इंच । या० राजस्थानी (ढूंडारी गय) विषय-निदान्त । र० कान सं० १९१४ । ले० कान 🗶 । पूर्ण । २० मं० ३ । प्राप्ति स्थान क्र मण्डार ।

विशेष---उमास्वामी कृत तत्वार्थ सुत्र की वह विशद व्याक्या है।

- ३. प्रति संट २ । पत्र सं० ११० । ले० काल × । वे० सं० ४ द । प्राप्ति स्थान मन्त्रभण्डार ।
- ४. प्रति सं०३ । पत्र सं०४२७ । ले० काल मं०१६३५ आसोज बुदी ६ । वे• सं०१=१६ । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

विशेष---प्रति सुन्दर एवं बाकर्वक है।

४. ब्राइक्स प्रकृतिवर्णानः । पत्र सं०४२। ग्रा०२×६ इ'व । भा० हिन्दी (नव)। विवय-माठ कर्मों का वर्णन। र० काल ४। ले० काल ४। प्रपूर्ण। प्राप्ति स्थान स्व मण्डार।

विशेष---कालावरेसारि भाठ कर्मों का विस्तृत वर्सन है। साथ ही पुरुत्यानों का भी श्रन्छ। वियेवन किया गया है। सन्त में ब्रतों एवं प्रतिशासों का भी वर्सन दिवा हुआ है।

- ६. ऋष्टकश्रिक्तिलिय्सीलः.....ादत्र सं∘ ७ । झा• दX्र इंच । आः० हिन्दी । विचय–झाठ कर्मीका वर्षात्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्वाके सं० रंपद । प्राप्ति स्थान स्व वण्डार ।
- कार्त्तरम्बक्षन् '''''''| वज तं०२। बा०१२४५६ इंच। बा०संस्कृतः। विषय–तिद्धान्तः।
 काल ४। ते० काल ४। दूर्लावे० तं०१८६२। प्राप्ति स्थान का बण्डारः।

विशेष —सूत्र मात्र है। सूत्र संख्या ८५ है। पांच प्रध्याय है।

स. ऋद्रंभवचनस्यास्थाः।पत्र सं०११। बा० १०४४ देवं वाभागसंस्कृत । र० काल ४ । की• काल ४ । पूर्णावे के सं०१७६१ । प्राप्ति स्थान ट थण्डार ।

विशेष---प्रत्य का दूसरा नाम चतुर्दश सुत्र भी है।

ऋष्यार्गस्त्रमञ्जूत्र""" ×। पत्र सं० १३ । मा० १०, ४४ डंव । भा• प्राकृत । विषय–मागम ।
 र० काल ४ । ते० काल सं० १०२० । सपूर्ता। बे० सं० ६०६ । प्राप्ति स्थान का भष्यार ।

विशेष-- छठा पत्र नहीं है। हिन्दी में टब्बा टीका दी हुई है।

- १०, आरतुरप्रत्यास्यानप्रकीर्यक् विषय–प्रागम । र०कान ∨ । ने०कान × । वै०को ०२६ । प्राप्तिस्थान च अध्दार ।
- ११. ऋगश्रविक्रमंगी—जेसियम्ब्रायायं । पत्र सं∘ेशः बाल ११ र्दू× १. रू इ'वः। आल्यास्तारः विषय–मिद्रान्त । र०काल् ×ालेल कालसं० १८६२ वैशास्त्र सुदी दापूर्णा । वै०सं० १८२ । प्राप्ति स्थान जा कण्यारः ।
 - १२. प्रतिसंठ २ । पत्र सं० १३ । ले० काल 🗴 । वे० सं० १८८३ प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।
 - १३. प्रति सं०३। पत्र सं०२१। से० कास ×। वे० सं०२६४। प्राप्त स्थान व्य भण्डार।
- १४. आयामसिक्रमंती......ा धव सं०६ । स्ना०१२ \times ५३ हेच । भा० हिन्दी । विषय-गिदास्त । र०काल \times । ते०काल \times । वे० सं०२०१४ । प्राप्ति स्थान ऋ भण्डार ।
- १५. म्हाश्रव्यवर्षीन***** भाग पत्र सं०१४ । मा०११६ ४६ इंच । भाग् हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रण्कान 🗴 । तेण्काम 🗴 । पूर्ण । वैण्सं०१६० । प्राप्ति स्थान २६ भण्डार ।

विशेष-प्रति जीर्ग शीर्ग है।

१६. प्रति सं०२। पत्र सं०१२। ले॰ काल ×। दे॰ सं०१६६। प्राप्ति स्थान आरु अध्दार।

१७, इक्कीसठास्मृष्यर्चा—सिद्धसेन सूरि । वत्र सं०४ । ब्रा०११४४३ ड'व । घा० प्रकृत । विवय—सिदान्त । र०कान ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वै० सं०१७६६ । प्राप्ति स्थान ट क्ष्वार ।

विशेष --प्रन्य का दूसरा नाम एनर्सविश्वतिस्थान-प्रकरण भी है।

विक्षेत्र---स्निची टञ्चा द्रीका संहित है।

१६. इत्तराध्यसनभाकादीका'''''''''''' । प० सं० ३ । झा० १०×४ इ'च । झा० हिन्ती । विषय-मागम । र० काल × । ने० काल × । सपूर्ण । वे० सं० २२४४ । माति स्थान का भण्यार ।

विजेय--- प्रत्य का प्रारम्भ निम्न प्रकार है।

परम स्थान दया करू, बाला पूरण काज : चानीने निर्माण नष्टुं, चानीने गरापार 11 १ ।। धरम यान दाता सुग्रुं, ध्रहनिस च्यान वर्षेत्र । वासी वर देशी सरस, विषम हार विषयेत्र ।। २ ॥ उत्तराध्यमन चानमा हास विषयेत्र ।। २ ॥ वत्र पत्र कुर च्या, कर्तृं वात पति बणुकार ।। ३ ॥ वत्र वाह कर सांभनों, ऐ प्रविकार धनुवा ।। ३ ॥ निश्च विकार परिसरी, सम्म च्यो सालस पुट ।। ४ ॥

ग्रागे माकेत नगरी का वर्शन है। कई डाले दी हुई हैं।

- २०. उदयसत्त्राशंधप्रकृति वर्धन \cdots ा। पत्र सं० १ । मा० ११imes१ । ना० संस्कृत । निषय-नियान्त । र० काल imes । ने० काल imes । धपूर्ण । ने० संल १६४० । प्राप्ति स्वला imes अध्वार ।
- २१. कर्ममन्थसत्तरी****** । पत्र सं०२६। म्रा०१४४ इ.च.। मा० प्राकृतः। विषय-विद्यालः। र॰ काल ४। ले० काल सं०१७६६ माह बुदी १०। पूर्ण। वै० सं०१२२। प्रासिस्थान व्याथण्डारः।

विशेष---कर्म सिद्धान्त पर विवेचन किया गया है।

२२. कर्ममकृति—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं∘१२। बा०१०६ं×४५ं इंच। मा० शक्ता। विवय– सिंद्रक्तार०काल ×। ने०काल सं०१६व१ संगतिर गुरी १०।पूर्णावे०सं०२६७। प्रातिस्थान का नण्डार।

विभेष--पांडे डालू के पठनार्थ नागपुर में प्रतिलिपि की गई थी । संस्कृत में संक्षित टीका दी हुई है ।

प्रशस्ति—संवत् १६८१ वरचे मिति गागसिर वर्षि १० कुन दिने श्रीमन्नागपुरं पूर्णीकृता पाँडे डालू पठनार्थं लिखितं तुरजन पुनि सा० धर्मदासेन प्रवत्ता।

२३ प्रति सं०२। पत्र सं०१७। ते॰ काल ×। वे॰ सं॰ बध् । प्राप्ति स्वान का मन्दार।

विशेष--संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है।

२४. प्रति सं० ३ | पत्र सं० १७ । ते० कात × । वे० सं० १४० । प्राप्ति स्वात का सम्बार । विशेष---संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है । २४. प्रति सं०४ । यत्र म०१२ । मे०काल सं०१७६२ । अपूर्ण । वे०मं०१६६२ । ऋ अण्यार । विकेष---मद्रारक जनसकीति के सिच्य कुलावन ने प्रतिसिधि करवार्ष्यो ।

२६. प्रतिसंदशः। पत्र संदर्शः। से॰ काल संदर्ग-२ फाल्युन बुदी ७ । वे॰ संदर्शनः। सः सम्बद्धाः

षिश्रेष---इसकी प्रतिलिपि विश्वानिद के क्रिय्य प्रवेराम मधूनचन्द ने रुडमल के लिये की थी। प्रति कं बोनों सोर तथा ऊपर नीचे संस्कृत में संक्षित टीका है।

े २० अ. प्रति सं०६ । एक सं० ७७ । मे० काल मं० १६७१ प्राचार मुदी २ । वे० मं० २६ । सा अध्यार । विशेष——प्रति संस्कृत टीका सहित है। मालपुरा में भी पार्श्वनाथ चैन्यालय में प्रतिनिधि हुई तथा ग० १६६७ में सुनि मन्यकीति ने प्रति का संस्थीधन किया।

२६. प्रति सं०७ । पत्र सं०१६ । ले० काल सं०१ ६२३ ज्येष्ठ बुदी १८ । ते० सं०१०४ इ. । अण्यार । २६. प्रति सं०६ । पत्र सं०१३ । ले० काल स०१ ६१६ ज्येष्ठ सूदी ६ । ते० सं०६१ । दा अण्यार ।

३०. प्रति सं⊂ ६ । पत्र सं०११ । ले॰ काल x । वे० सं० ६१ । छ भण्डार ।

विभोष--संस्कृत में संकेत दिये हुये हैं।

३१. प्रति सं० १०। पत्र सं० ११। ते० काल ८। वे० सं० २५१। क्रू जण्डार ।

विजेष---१५६ गावार्ये हैं।

३२. प्रति सं०११ । पत्र सं०२१ । ले० काल सं० १७६३ वैशास्त्र सुदी ११ । वे० सं०१६८ । ज कच्चार ।

विक्षेय—सम्बाधनी में पं॰ रूवा महान्मा ने पं॰ जीवाराम के शिष्य मोहनलास के पठनार्थ प्रतिस्तिर्ण की थी।

३३. प्रति सं०१२ । पत्र सं०१७ । ले० काल 🔀 । वे० मं०१२३ । व्य अध्यार ।

३४. प्रति सां० १३ । पत्र सं० १७ । ले० का० सं० १६४४ कार्तिक बुदी १० । वे० सं० १२६ । स्य जनवार ।

> देश. प्रति सं०१४ । पत्र सं०१४ । ले॰ काल सं०१६२२ । वे० सं०२१४ । का अण्यार । विशेष—कृत्वावन में राव सूर्वतेन के राज्य में प्रतिभिषि हुई वी ।

३६. प्रति सं० १४ । यत्र सं० १६ । ते० काल 🗙 । वै० सं० ४०४ । स्व मण्यार ।

३७. प्रति सं ६ १६ । पत्र मं ० ३ से १८ । ते० कास 🗴 । धपूर्ण । वे० सं० २८० । स्व भण्डार ।

के. प्रति संc १७। पत्र संc १७। में काल × । देव मं • ४०५ । का भण्डार ।

३६. प्रति संट १६ । पत्र संट १४ । लेंट काल × । बैट संट १३० । स्र भण्डार ।

१०. प्रति अंद १६ । पत्र संव ६ में १७ । मेंव काल संव १७६० । अपूर्ण । देव मंत्र २००० । हा भंडार ।

विशेष —कुवाबती नगरी में राहर्यनाच वैस्पालय में धीमात कुवसिंह के विजय राज्य में प्राण्यार्थ उवस्त्रुवरण के प्रशिष्प पंज तुससीवास के क्षिप्य त्रिलोकजूबरण ने मंगोधन करके प्रतिनिधि की । प्रारम्भ के तथा बीच के कुछ पत्र मही है। प्रति मंसकृत टीका सहित है।

४९. प्रति सं⇒ २०। पत्र सं०१६ में ४६। ते० काल ×ा बपूर्शा। वै० सं०१६८६। ट अच्छार।

विशेष---प्रति प्राचीन है। गुजराती टीका महित है।

४२. कर्ममकृतिटीका—टीकाकार सुविविकीचि । पत्र तं० २ से २२ । बा० १२×४३ इंच । भा० मंग्युत । विवय-तिकाता । र० काल ४ । मे० काल सं० १०२२ । वे० सं० १२४२ । वक्सी । का अध्वार ।

विशोष--टीकाकार ने यह टीका अ॰ ज्ञानसूचला के सहाय्य से लिखी थी।

प्रदे. कर्मीक्कृतिः...................................। पत्र सं∘ १० । बा० द्रॄं ४४६ँ इंच । बा० हिन्दी । र० काल > । पूर्ण । वे० सं० २६४ । का जच्चार ।

yर्थ. क्षत्रैप्रकृतिविधान—क्वारसीदास । पत्र सं० १६ । प्रा० न $\frac{1}{2}$ \times Y_{0}^{1} इंच । भा० हिन्दी एछ । स्वक्-सिदान्त । र० कास \times । से० कास \times । सपूर्त्त । वै सं० ३७ । इ क्ष्यार ।

४४. कर्मीवेपाकटीका—टीकाकार सकत्वाचीर्थि । यत्र सं०१४ । मा०१२४६ इ'व । भा० संस्कृत । विवय-क्रियान्त । र० काल ४ । से० काल सं०१७६६ मायाद पूरी ४ । पूर्व । वे० सं०१४६ । क्रा भण्डार ।

विशेष--कर्गविषाक के यूलकर्ता प्रा० नेविचन्द्र हैं।

४६. प्रति सं०२ । पत्र सं०१७ । ले• काल 🗴 । वे सं०१२ । घ मण्डार ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

प्रेक. कर्म्यसम्बद्धम् — देवेण्यस्त्रिः। पत्र सं० १२ । मा० ११×६ रंप । मा० प्राप्तः । विषय-सिद्धम्तः। ए० कास \times । से० कास \times । दे० सं० १०१ । क्षा कामारः।

विश्वेष--वावासी पर किया में सर्व दिया हुआ है।

४=. क्ल्प्सिद्धान्तमप्रदः......पत्र सं०१२ । या०१०×४ इत्त्र । आ० प्राक्त । विषय-सायम । र० काल ⋋ । ते० काल ≻ । पूर्ण । वै० तं० ६६६ । इस अध्यार ।

सर्थ—तिराह कालह । पर्यश्वार कालह निगण्ड ममयह गर्मायहार यसी विहिती स्वसंग् भगवंत भी सहावीर विहु मानेकरी सहित इ जिहुंता ने अगी उमिज जगण्ड नेहरिगो गाम परियवतायह । इहा वकी लेड जिंखनानी हूं वह संकमाविरपर्द । सन्द जिंगी वलाह से केमाविरप्द । सन्द पर्योग काल कि स्वार्ण संतर्ष हुँ हो भंगीविर्द सन्द उस्त्रीम काल विराण संतर्ष हुँ ने भंगाविर्द सन्द उस्त्रीम काल विराण संतर्ष हुँ ने भंगाविर्द सन्द उस्त्रीम काल विराण संतर्ष हुँ ने भंगाविर्द सन्द ने से भंगा सावार्ष महित कि हित हुँ । महित्य काल गृति सावार्ष माने सावार्य माने सावार्ष माने सावार्य माने सावार्ष माने सावार्य मा

संस्कृत में श्लोक नवा प्राकृत मे कई जगह गावाएँ दी है।

४६. कल्पसूत्र (श्रिक्स् कारुक्तसम्)[™] ""'।पत्र सं० ४१। आ०१०×४६ इ.च.।भा० प्राकृतः। विषय–भागमः। र०काल 太।ने०काल ≿।वे० मं० ६०६ ।पूर्णः। कामण्डारः।

. विशेष--हिन्दी टन्दा टीका सहित है।

 χ ६. कल्यसूत्र — अनुबाहु। पत्र सं०११६ । द्वा०१० χ ६ च । सा०शाङ्कः । विषय-प्यागन । र० काल χ । ले० काल सं०१८६ । प्रपूर्ण । वे० सं०३६ । ह्वा अण्डार ।

विशेष---- र रात्या ३ रा पत्र नही है। गावामों के नीचे हिन्दी में मर्थ दिया हुआ है।

४०. प्रति सं ८२। पत्र सं० ४ से ४०२। ले० काल ×। मपूर्या। वै० सं० १९८७। ट मण्डार।

विज्ञेष—अति संस्कृत तथा गुजराती छाया सहित्य है । कहीं २:८००मा टीका सी दी हुई है | बीच के कई 'यत्र नहीं हैं । ________ : २००० चुल स्थान

- . १. कृत्यसूत्र— अङ्गबाहु। पत् मं०६। झा०११४४६ इ.च.। झा० प्राकृतः। विषय-साणमः। र०ना ४। ल०का मं०१५६० प्रासीत सुसी ६। पूर्ण। वै०सं०१६४६। ट मण्डारः।
 - ४२, प्रति सँ० २। पत्र मं० द ने २७४ । ले० काल ४ । बसूर्या। वे० सं० १८६४ । ट अच्छार। विशेष—संस्कृत टीका सहित है । गावाकों के उपर अर्थ दिया हमा है ।
- ४३, कल्पसूत्र टीका—समयमुन्दरोषध्यायः। पत्र सं०२४, । प्रा०६×४ इत्वः। भाषा-संस्कृतः,। विषय–प्रायमः। र०कालः ⋋ः। ले०कालः सं०१७२५ कार्तिकः। पूर्णः। वै०सं०२ दः। क्रायध्यारः।

विजेषः — चूलकर्णमर याम मे प्रंपंतीरवन। हुई थी। टीकाकानाम करलताहै। **सारक याम में पं∘** भाग्य विद्याल ने प्रतिक्षित की थी।

- . ४४. कल्पसूत्रपृत्तिः......ापत्र सं० १२६। आ।० ११४४६ दंव। आ।० प्राक्तता विवयस्म प्राप्तमा र०काल ≾ाले काल ≾ा अपूर्णा वेश सं०१०१८ । द्वाभण्डार।
- ४४ कल्पसूत्र """ । पत्र सं० १० मे ४४। घा० १०६४४६ इ.च । आवां–प्राकृत । विवय– सामा । र० काल ⋌ाले काल ⋌ासपूर्ण । वे० सं० २००२ । व्यायम्बार ।

विशेष-संस्कृत मे टिप्परण भी दिया हुआ है।

४ . चपक्षासारवृत्ति — साधवचन्द्र त्रै शिखदेव । पत्र सं∘ ६७ । सा॰ १२४७ है इंच । सा० गंग्कृत । विवय–सिदान्त । र०कास शक सं॰ ११२५ वि० सं० १२६० । ते०काल सं० १८६६ वैद्याल बुवी ११ । पूर्ण । वे० सं. ११७ । का सन्दार ।

विशेष-प्रथ के मूलकर्ता नेमिकन्द्राचार्य है।

- ४७. प्रति संट २ । पत्र सं० १४४ । ले० काल सं० १६५५ । वे॰ सं० १२० । क मण्डार ।
- ४.न. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०२ । ते० काल सं० १०४७ प्राचा**ड बुदी २ । इ अ**ण्डार ।

विशेष-अट्टारक सुरैन्द्रकॉलि के पठवार्थ जवपुर मे प्रतिलिपि की गयी थी।

- ४६. स्रप्यासार---टीका'''''' ''''। पत्र मंग्दरी प्राठ १२ । प्राठ १२ ईसी मार्गसेस्का। विवय-सिंडास्तारण्कास × । तेण्कास × । प्रपूर्णा १० संग्रीहरू सक्तामधारा ः
- ६०. क्यासारभाषा—पंठ टोडरमेका । पंत्र मं० २७३। बां० १३८८ इ.च. आ० हिली। विवय-सिद्धाला । र०काल सं० १८१६ माच सुदी थू। ले०काल १६४६ । पूर्ण । वृं० सं० ११६ । क्र अण्यार ।

विशेष---भप्तासार के मूलकर्ता बाचार्य नैसिकार हैं। जैन सिखान्त का यह सपूर्व क्रम्प है। महा पं-टोडरजनकी की गोमहुसार (श्रीव-काम्ब बीर कर्मकुष्य) सिख्यसार और क्षप्रसुखार की टीका का नाम सम्बक्तान विगका है। इन तीनों की जाया टीका एक बन्य में श्री मिलता है। भूति उत्तम है।

- ६१. शुक्षम्थानयर्थाचन । विषय– विद्याला। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वे०मं० १०३। व्यामक्यार।
 - ६२. प्रति सं०२। ले॰ काल 🗙 । बै॰ सं० ५०४ । व्य भण्डार ।
- ६६. गुण्धानकसारोहसूत्र—रस्त्रोसर । पत्र सं०१ । आ० १०४४ ; डांच । आ० संस्कृत । विचय-सिद्यास । र०काल ४ । ने०काल ४ । पूर्ण । वे०सं० १३५ । छ भणार ,
 - ६ ४. प्रति स्रें० २ । क्य सं० २ १ । वे० काल सं० १७३४ मानोज बुरी १४ । वे० न० ३७६ । इङ्गण्डार । विवेद—संस्कृत टोकासकृत ।
- ६ अ. गुरुक्श्यानचर्चा $\cdots \cdots \cdots$ । यत्र नं ०३। आ ०२ \wedge ८ ζ प्रंच। आ ० हिन्दी। विषय-विद्यान्त । र०काल imes। ले०काल imes। वे०र्म० १३६०। अपूर्ण। का अध्वार।
 - ६६. प्रति सं ० २ : पत्र सं ० २ मे २४ । वे० सं० १३७ । ह अक्टार ।
 - E.o. प्रति संब ३ । पत्र सं० २२ मे ४१ । झपूर्ण । ले० काल ० । वे० संत १३३ ह अवडार ।
 - **६द. प्रति सं**८ छ । पत्र सं० ७ । मे० का० संः ११६३ । वे० सं० ४३६ । **व** अण्डार ।
 - ६६. प्रति सं०४ । पत्र सं०१४ । मेरु का 🗴 । केर्न ० २३६ 🙉 भण्डार ।
 - ७०. प्रति सं० ६ | पत्र सं० २६ | ले॰ कोल ंा वे० सं० ३४६ । स्व अप्यार ।
- **७१. शुक्तस्थानचर्या—चन्त्रकीर्ति** । पत्र सं∘ ३६। झा० ७४७ ड'ब । आर० हिन्दी । विषय–निदानत । र•कान ≿ । ने०काल ≭ । वै॰ सं॰ ११६ ।
- ७२. ग्रु**यस्थानचर्या** एवं चौबीस ठाएा चर्चाःःःः। पत्र संत्रः। झात्र १२.४६ इ.च.। भात् संस्कृतः। विषय-सिद्धान्तः। रक्कार्यः। संत्रकार्यः। मूपूर्णः। वेत् संत्र २०११ । इ. मण्डारः।
- ७४. गुण्स्वानमेश्वः । पन मं०३। ला०११४५ इंच। भाग संस्कृतः। विषय-पिदान्तः। १० कान x। सपूर्णः। वै० न०१६३। वर भव्यतः।
- ्कं . गुरुक्कालमार्थेला """" । पत्र सं०४ । कारू द≾६० इ.सं । भारू हिन्दी । विक्य-सिद्धान्त र• कास × । के० कास × । पूर्ण । वे० सं०४३७ । का भण्डार ।

७७. गुव्यस्थानवर्षानं ""पुत्र सं० २० साँ० २०४६ इति । मार्ग्सर्वेते । विषय-सिद्धकतः । २० नास 🔀 से० काम 🗡 स्रवृत्ती । वै० सं० ७८ । व्यानव्यारः ।

विशेष---१४ गुलुस्वामी का वर्शम है।

- ७≔<u>गुर्याम्यालयर्थील</u> । पत्र सं० ११ से ३१ । द्या० १२४४ 'ह'च। था० हिन्दी। विषय-मिदान्तार० काल ४ । ले० काल ४ । ब्रपूर्ण। वे० सं० १३६ । इक्त अण्यार।
 - ७६. प्रति स्ट २ । पत्र सं० व । ते० काल सं० १७६३ । वै० सं० ४६६ । का भण्डार ।
- न्दः गोस्मद्रसारः (जीवकावकः `—्का० नेश्मचन्द्रः। पत्र सं०१३। बा०१३४६ इंच। आ०-प्राकृतः। विषय-सिद्धान्तः। र० काल ४ । ने० काल सं० १४४७ बावादः सुरी ६। पूर्णः। वै० सं०११८। अर्थाच्यारः।
- प्रवास्ति—संवत् १४१७ वर्षे प्राचार युक्त नवस्या बीमूलवंवे संख्यासाथ बलास्कारकके सरस्वतीवष्ण श्रा कृष्कृ दावार्यान्वयं सहारक श्री प्रधानित्व देवास्तारपृष्ट् भट्टारक श्री शुलकंद्रदेवास्तारपृष्टे भट्टारक श्री जिनकंद्रदेवास्त-श्तिप्य गृति श्री मंदलावार्य राजवीति देवास्तित्वाय गृति हेवर्षेत्व तामा सद्यानाचे सहस्ववास्त्रम् लाग् देवहा शर्म्य श्रव्ही तत्त्वन मा॰ भागा तद्भावी प्रशासस्तत्त्वना सा॰ भावको द्वितीयं समरवो सुतीय जास्त्रा एते सम्मवनित्व नेत्विक्वा तस्य जानपाताय गुनि श्री हेमबंद्राय समस्या प्रदत्त ।
 - म. प्रति सं०२। पत्र मं० ७। ले० काल 🗙 । वे० सं० ११६४। द्वा अवटार ।
 - द्भरः प्रति स् ० दे । पत्र सं० १४६ । से० काल सं० १७२६ । वे० सं० १११ । आ अध्यार ।
- ⊏ ३. प्रतिसं० ४ । पत्र मं० ४. से ४ ⊏ । ले० काल सं० १६२४ । चैत्र शुदीर । धपूर्वा वे० म०१२ ⊏ । क. भण्डार ।

विशेष--हरिश्चन्द्र के पूत्र सुमपथी ने प्रतिलिपि की बी।

- मध्यः प्रति सं 🗷 । पत्रः सं० १२ । ले० कास 🗙 । प्रपूर्ता । वै० सं० १३६ । 😘 भण्डार ।
- न्ध्रः प्रति सं० ६। पत्र सं० १८। वे॰ काल ×। वे॰ सं॰ १३६। स अण्डार।
- स्दै, प्रति संट ७ । पत्र सं० ३७ ४ । ले॰ काल सं० १७३ व आलंगों तूरी ४ । वे० सं० १४ । व्य सम्बद्धाः

विकेच--प्रति टीका सहित है। श्री वीरवास ने धनवरावाँद में प्रतिसिंधि की थी।

स्थाः प्रतिक्षितं सः। वर्षं संगंधरं। संगंधितं संगं १८६६ व्यावर्धि सुरी ७। वेग्संग देवेग । क्रमण्यार : र कार है स्मृत् प्रति संव है। यह संव ७७। तेव काल संव १०३६ चेत्र बुदी है। तेव संव ७६। च अध्यार।

म्ह. प्रति सं०१०। पत्र मं०१७२-२४१। मे० काल 🗴 । प्रपूर्मा । वे० सं०६०। 🖷 अण्डार ।

६०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २० । सं० काल 🗴 । श्रापुर्गो । के० सं० ८४ । श्रा अध्यार ।

ं ा**६१. गोम्मटसारटीका — संकल्पभूषका** । पत्र मं०१८३८ ८ सा०१२६ँ८७ इ.च. । भा० संस्तृत । विक्यय-सिद्धान्त । र०काल सं०१४७६ कॉनिक मृती १६ । ले० काल मं०१६८४ । पूर्ता । वे० मं०१४० । क कच्चार ।

विशेष-वाबा दुलीचन्य में पम्मालाल नीधरा में प्रतिनिधि कराई । प्रति २ वंदरशो में बंधी है ।

' ६२ प्रति सं**० २ । पत्र** सं० १३१ । लेज कॉल ५ । वेज सं० १३७ । क भण्डार ।

६३. गोध्यदसारटीका—धर्मचन्द्र 'पश्र सं०३३। प्रा०१०.८१ देव' व । भा० सं०इत । निषय— सिकल्कः। र०काल \times । ले०काल \times । पूर्ण। नै०सं०१३६। क्र अध्यार।

विशेष—पण १६१ पर आचार्य वर्षणम् इत शिका की प्रशस्ति का आग है। नागपुर नगर (नागीर । में महेमदर्श्वी के सामानकाल में गांगहा यादि चांदवाड़ गोत्र वाने आवको ने अहुएत धर्मचन्द्र की यह प्रति लिखकर प्रशासकी थी।

. १४. गोम्बटसारकृत्ति—केशनवर्शी। पत्र सं० ४३०: प्रा० १०५ \times ४६ दंब। भा० संग्रतः र० काल \times । न० काल \times । पूर्ण। ते० सं० ६६६। स्म भण्यारः।

विशेष---मूल गावा सहित जीवकाष्य एवं कर्मकाष्य की टीका है। प्रति स्रथसकट द्वारा अंशोधन है। 'र्थक-गिरफर की पोवी है' ऐसा जिल्ला है।

£.स. गोमसटलारवृत्तिः '' ''' । पत्र तं० ३ सं ६१२ । झः० २०३,४४६ इंच । मा० संस्कृत । विषय-सिखान्त । र० काल ८ । ने० काल ८ । सपूर्ण । वै० पं०,१२३व । स्त्र भण्यार ।

. ६.दे. प्रति सं ८ २ । पत्र सं० २१४ । ले० काल 🗴 । वे० सं० वर्ष । 💥 भण्डार ।

६७. गोस्मदसार (जीवकायड) आवा—पंत्र टोडरसका । पत्र संग् २२१ मे २६४ । आर् ६५×६ इंच । बार्ग हिन्दी । विषय-सिदान्त । राज्याल × । लेल काल × । प्रपूर्ण । लेल संल ४०३ । का अस्टार ।

> विशेष — पंडित टोडरमलजी के स्वयं के हाथ का लिखा हुया यं व है। जनह २ कटा हुया है। टोका का माम सम्बक्तमनविद्यका है। प्रवर्धन—योग्य ।

हरू, प्रति संट २ । यत्र संट ६७ । लंड काल X । सपूर्ण । वेड संड ३७४ । व्य आस्टार स

शिक्षामा एवं क्वी]

a.e. प्रति व्यंत २ । त्रेत्र मंत्र ६११ । जेत्र कार्त सेंत्र ११४८ भारती सुरी १५ । वेत्र वेत्र १४१ । क भण्यार ।

१८०. प्रति सं० ३। पत्र मं० ११। ले० काल 🔆 । प्रपूर्ण । ते० सं० १२६४। 🖼 व्यवसार ।

है.हे. प्रतिसंदर्भ । पत्र मं० १७६ । ने० काल सं० १८८५ मात्र सुदी १४ । तेश सं० १८ । गंजपार ।

विशेष- -कानूराम साह तथा मन्तालाल कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी बी

१०२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२६ । लंभ काल 🗴 । प्रपूर्ण । वै० सं० १४६ । 🖝 प्रवृत्तार ।

त्रिकेष - २७४ में भागे १४ वनों वर गुरास्थान भावि वर संत्र रचना है ;

^{₹८३} प्रतिसं० ६ । यत्र सं० १३ । ते० काल 火 । वे० सं० १६० । क्र-भण्डार ।

विशेष---वेदल वंत्र रचना ही है।

१०४. गीम्मटसार-भाषा—पं० टोखरमला। पत्र तं० २१३। बा० १४८१० इ.च.। बा० हिस्ती। विषय-सिद्धान्तः। ग० काल सं० १०१० माथ सुवी ४। स० काल सं० १९४२ भारता सुवी ४। पूर्व विंक सं० १४१। इ. भारता ।

विशेष-----विश्वसार तथा क्षप्रमासार की टीका है। गर्यकालाल मुंबरसाल पांड्या ने प्रंच की प्रसित्तिविष करवायों।

१०४ प्रति सं०२। पत्र मं०१११०। ते० कात सं०१८५७ सामाम् सुदी प्रं। वे० सं० प्रदेश व वं अभ्यारः।

१०६. प्रति संद ३ । पत्र सं∘ ६७१ में ७६५ । ने॰ काल 🗴 । सपूर्ण । वे॰ सं∘ १२६ । ज अवकार 4

रैटफ. प्रसि संघ छ। पत्र संग्यादा निक्ताल मंग्रीयक वैसाल सुवी है। बायूर्वा के बंब २२१८ । इंभणवार ।

विभेष-----वित बढ धाकार एवं सुन्दर निन्मार्ट की है तथा वर्षानीय है। कुछ पत्रों पर बीच में कालूकां चीमाकार दिने हैं। बीच के कुछ पत्र नहीं है।

१००. गोम्मटसारवीठिका-भाषा—पण्टोहरसस्सः । वत्र तं॰ १२ । सा॰ ११४७ इ.च । सा॰ क्षियो । विषय-सिदान्त । र० समस् ४ । ते॰ सम्स ४ । सपूर्तः । वै॰ तै॰ २३२ / क्षः मन्दारः । · 與]

१०६. बोम्मटसारटीका (जीवकावड)***** गा पण तं र २६४। झा १३४८% इ.च.। मा० कंस्कुत । विषय-सिद्धान्त । र० काल ४। तं० काल ४। सपूर्ता । वे० सं० १२६। ज भण्यार

विवीच--टीका का नाम तत्वप्रविधिका है।

१९०. प्रति संब २ । पत्र संब १२ । ले० काल 🗡 । प्रपूर्ण । वे० म० १३१ । अप्र अधिरार ।

१११. गोस्मटसारसंदृष्टि—पंटटोइरसला। पत्र सं० =६। घा०१५×७ ३ वा। आर्टीस्पी। विषय—सिद्धान्तारककात्र ×। लंगकात्र ×। पूर्णावेक संग्रहरात्र प्राधारा

११५. प्रति सं ०२। पत्र मं०४६ मे २०४ । मे • काल - । अपूर्ण । वे० सं० ५३६ । च संकार ।

११६ - गोम्मटलार (कर्मकायक) — नेसिचण्ड्राचीयं। पत्र सं०११६। मा०११८४, इत्या भाग प्राक्तया विश्वय—सिकास्तार - काल्याराके काल्यां०१८८४ चीत सुदीपा पूर्णाविरुमे० दराचामण्डारा

११४. प्रति सं० २ । पत्र मं० १८६ । ले० काल । अपूर्ण । वे० मं० ८२ । स अण्डार ।

११४. प्रति सं० ६ : पत्र सं० १६ । ले॰ काल 🗴 । ब्रयूर्ग । वे॰ सं० ६६ । व्य भण्डाः :

१५७. प्रति संक ४ । पत्र संग १०। संग्यास संग्रहभर मेत्र बुदी १८। समूका । वेग्संग्रहस्य। इ.सम्बद्धाः

विशेष--- महुः एक मुरेग्द्रकीर्ति के विद्वाल स्त्रान सर्थसुक के अध्यक्षणार्थ अटीरिश नगर मे प्रतिनिधि की गर्छ।

१९७. गोल्सटसार (कसैकारड) टीका- कलकाति । पन सं० १०। घा०११६८८,४,५ ज नः मा० संस्कृष । विवय-विद्यान्त । रं० कात ८ । सं० कास ४ । पूर्ण । (तृतीय मधिकार तक) । वै० सं० १३४ । क जनवर ।

११६. गोर्माष्टलार (कर्मकावक) टीका—अष्ट्रारक झान-भूवसा। पन मं०४४। का०११६ ८० हं च । आकृसंस्कृत । विवय-विद्यान्त । र० काल अः। ने० काल मं० ११५७ माथ मृदी ४ः। पूर्वी । वं० सं० ११४। क् अव्योर ।

विक्रेय---सुमतिकीर्ति की सहाव्य से टीका लिखी बयी बी ।

रैरै ६. प्रसि सी०२ । पन सं००३ । से० काल सं० १६७६ कालुक्क जुलै १० । वे० सं०१३ हा इस मच्चरा

१२०. प्रति संद है। पत्र संव २१। सेव नमस्य 🔀 सपूर्ण। देव संव ५४७। इस सम्बद्धर। 🔻 👵

१२१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५१। ले० काल ×। वै० सं० २५। स अच्डार।

१२२. प्रति सं० प्र । पत्र सं० २१ । ते० काल सं० १७४ । वे० सं० ४२० । वा भण्डार ।

१२६. नोम्मटसार (कर्मकारक) आदा—पंक डोक्स्सला। यम संक ६१४। सार १९४८ व्यंत आति हिन्दी गर्वा (द्वारी)। विषय-सिद्धान्त । रक्षान ११ वी सनावती। नेक्षान संक ११४६ ज्येष्ठ सुदी या। पूर्णा वेक संक १९०। का नव्यार।

विशेष---प्रति उत्तम है।

१२४. प्रति संद २ । एवं संद २४० । लेंच्याल 🗙 । वेद्यां १४८ । 🕿 भण्डार ।

विशेष-संदृष्टि सहित है।

१२ ४. गोम्सटसार (क्रमेंकावड) आक्षा—हेसराज । यम सं०५२ । बा०६८५ इंच । भा० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल सं०२०१७। ले० काल सं०१७८८ योग सुवी १० । पूर्ण । वे० मं.१०५ । क्रमण्डार ।

विशेष——शरन साह धानन्यरामजी खण्येलवाल ने पूछ्या किस ऊपर हेमराज ने गोम्मटलार को देखा कै क्षयोपसम माफिक पत्री में जबाव लिखने कप वर्षाकी दासना लिखी है।

१२६. प्रति संट २ । पत्र सं० ८ १ ।। ले० काल सं० १७१७ बासोज बुदी ११ । वे. मं. १२६ ।

विशेष—स्वपठनार्च रावपुर में कल्याए। यहादिया ने प्रतिक्षिप करवादी थी। प्रति जीशं है। हेमराज १८ वीं शताब्दी के प्रथमशब के हिस्ती गय के बच्छे विदान हुये हैं। इन्होंने १० में प्रथिक प्राकृत व मंस्कृत रचनाओं का हिन्दी गय में क्यांतर किया है।

१२७. गोम्मटसार (क्रमेकाबढ) टीका'''''' । पत्र बं∘१२ । बा०११३,४५ इ'व । भा०संस्कृत । विवय–सिद्धान्त । र० काल × । ते० काल × । ब्रपूर्ण । वे० सं० द३ । व्य भण्डार ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

१ (इ. प्रति सं०२ । पत्र सं०६ ८ । ले० काल सं० 🗙 । वे० सं०६ १ । क्र अण्डार ।

१६६. प्रति स० ३ । पत्र सं० ४व । से० काल 🗴 । दे० सं० ६१ । छ भण्डार ।

विशेव---धन्तिम पुष्पिका निम्म प्रकार है:---

इति प्रायः श्रीष्ठसट्टबारयुष्टाष्ट्रश्राक्षण्टाकाण्य निःश्रवस्त्रमेरएएश्रेष्ट्रस्य सिक्सिता । श्री नेमिश्वन्दसैदान्ती विरवितसमेत्रइतिशंबस्य टीका सम्राप्ताः । 88]

१३०. गौतसकुलक-पौतस स्वासी। पत्र सं० २ । झा० १०४४ (इ'व । झा० प्राकृत । दिवय-सिकान्त ।'र० कास 🗴 । ले० कास 🗴 । पूर्ण । वै० सं० १७६६ । ट मण्डार ।

विजेष--प्रित ग्रजराती टीका सहित है २० पद्य हैं।

विशेष-संस्कृत टीका सहित है।

१३२. चतुर्वरास्च्र-------। पत्र सं०१। सा०१०×४ दंव। भा०प्राकृतः। विषय–सिद्धान्तः। र•काल×। ने०काल×। पूर्शः। वे०सं०२६१। स्त्र पण्डारः।

१३३, चतुर्दरासूत्र—विनयचन्द्र सुन्नि। पत्र सं० २८। मा० १०±४४ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय—सागम । र०कास ×। ले०काल सं०१६८२ यौचदुरी १३। यूर्ण। वै०सं०१८२। इट भण्डार।

१२४. चतुर्दरांगवाश्चिवरस्य। पत्र सं० ३। मा॰ ११४६ इंच। भा॰ संस्कृत। विवय-मानवारः काल ×। ते॰ काल ×। मपूर्स्ता वे॰ सं॰ ५१४। ख मण्डार।

विज्ञेष---प्रत्येक ग्रंग का पद प्रमाशा दिया हुआ है।

१३४. चर्चाशतक— छानतराय। पत्र सं०१०३। घा०१११५×८ इ.च.। प्रापा–हिन्दी (पय) । विषय– विद्धालत । र∙काल १८ वी सताब्दी । ले०काल सं०१८२६ घाषाढ बुदी ३। पूर्ण। वे० सं०१४६। कः प्रण्डार ।

विशेष---हिन्दी गन्न टीका भी दी है।

१३६. प्रतिसं०२ । पत्र सं०१६ । लंग्काल सं०१६३७ फालुए। सुदी१२ । वेग्सं०१४० । का सम्बद्धाः

१३७. प्रति सं०२ । पत्र सं०३० । ते० काल 🗴 । वे• सं०४६ । प्रपूर्ण । स्व मण्डार ।

विशेष---टब्बा टीका सहित ।

१२८. प्रति सं०४ । पत्र सं०२२ । ले॰ काल सं०१६३१ मंगसिर सुदी २ । वे० सं०१७१ । क मण्डार ।

१६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल-८ । वे० सं० १७२ । क अपदार ।

१४०. प्रतिसंव ६ । पत्र सं० ६४ । सं० काल संः १६३४ कार्तिक मुदी ८ । वे० सं० १७३ । इक वण्यार । विशेष--नीले कामको पर लिको हुई है। हिन्दी मक केंब्बिक में में हुई है।

१४१. प्रति सं ८ ७। पत्र सं० २२। ते० काल सं० १९६८। वे० सं० २८६। मा मण्डार । विशेष--- निम्न रचनामें और हैं।

प्रकार बावनी — वानतराय — किस्ती

२. युरु विनती -- भूधरदास -- "

३. बारह भावना - नवल - ,

४. समाधि मरग् - "

१४२. प्रति सं० = । पत्र सं० ४६ । ते० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४६३ । ट अच्छार ।

विशेष---गुटकाकार है।

१४३. चर्चाबर्खन— । पत्र सं० द१ से ११४ । मा० १०३×६ इक्च । माचा हिन्दी। विषय—सिकान्त । र० नान × । नं० नाल × । ब्रपूर्ण । वै० सं० १७० । कः वर्ष्यार ।

१४४. चर्चासंब्रह्णः । पत्र सं० २१ । बा० १० ४६ रखाः वादा हिन्दीः। विषय-विद्यान्तः। २० कात्र × । ते० कात्र × । ब्रपूर्णः। वे० सं० १७६ । इह प्रथ्यारः।

१४४. चर्चासंब्रह्णः । पत्र सं०३। बा०१२४६६ दञ्ज। भाषा संस्कृत-हिन्दी। विषय सिद्धांत। र०काल ×। ते०काल ×। पूर्या। वे० सं०२०४१। इस मण्डार।

१४६. प्रति संट २ । पत्र सं० १३ । ले० काल 🗴 । वै० सं० ८६ । ज भण्डार ।

विशेष--विभिन्न धावायों की संकलित वर्षाधों का वर्णन है।

१४७. चर्चासमायान---भूथरदास । यत्र सं० १३०। मा० १०×५ दखा। माथा हिन्दी। विचय-तिदांत । र० काल सं० १८०६ माथ सुदी ५ । ले० काल सं० १८६७। पूर्ण । वे० सं० ३८६ । द्वा मण्डार ।

१४८. प्रतिसं २२ । पत्र सं० ११०। ले० काल सं०१६०८ प्रायाद बुदी ६। वै० सं०४४३। छ। मण्डार ।

१५६. प्रति संद ३। पत्र सं० ११७। ले० काल सं० १८२२। बे० सं० २६। का जण्डार।

१४०. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६। ते० काल सं० १६४१ वैशाल सुदी १। वे० सं० १०। सा भंडार।

१४१. प्रति सं० ४। यत्र सं० ६०। ते० काल सं० १६६४ चैत सुवी १४। वे० सं० १७४। स अंडार।

१४२. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३४ से १६६। से० काल ×। अपूर्ता। वे० सं० ५३। इह अच्छार।

हैकके प्रति सं० ७) तम् हो प्रकृतिक काल सं० १८६२ पीच सुदी १२। दे० सं० ११७। हा सम्बार । हिस्सेच-जवनत्तर विवाही सहास्ता संवासाल ने सवाई जयपुर ने प्रतिनियों की थी।

१४४८. वर्षासार—पं० शिवजीकाका पत्र सं० १२३ । प्रा० १०६४४. इ.ख. । प्राथा हिन्दी । विवय— सिद्धान्त । र०काल−× । से० काल × । पूर्ता । वे० सं० १४६ । इ. प्रण्यार ।

हैं क्षेत्र, व्यव्यक्तित्रः''''''। पत्र क्षे० १६२। झा० व×४ है इखा। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। सपूर्त्त। वै० स्थं० १४०। ह्यू भष्यार।

१४६. चर्चासागर*****। पत्र सं० ३६। म्रा० १३ \times १२ूँ इक्य। भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल \times । सपूर्ण । वै० सं० ७६६। द्धा भण्डार ।

हैश्रक, चर्चासागर—चंपालाल । पत्र सं० २०४ । प्रा० १२%६६ छ। भाषा-हिन्दी गय । विषय-विकास के १० कस्स सं० १९१० । वेठ काल सं० १९२१ । पूर्ण । वेठ सं० ४२६ । छ चन्कार ।

विशेष---प्रारम्भ में १४ पत्र विषय सूची के झलग दे रखे हैं।

१४८. प्रति संट २ । पत्र संव ४१० । लेट काट संट १६३८ । वेट संट १४७ । क भण्डार ।

१४६. चौदहगुस्त्यानचर्चा-काल्यराज । पत्र सं० ४१ । घा० ११×५१ ६ छ। प्रा० हिन्दी गर्छ । { राजस्यानी } विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६२ । छाणचार ।

१६०. प्रति सं०२। पत्र सं०१-४१। ले० का० 🗴 । वै० सं० ६६०। द्या भण्डार ।

१६१. चौद्दसार्गसा""" । प० सं० १०। सा० १२×१ इका। भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०कास × । ते०कास × । पूर्ण । वे० सं० २०३६ । इत्र जण्डार ।

१६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । ने० सं० १८४५ । ट अण्यार ।

१६२. चौबीस्टास्प्राचर्चा-विभिष्नप्रास्त्रयं। पण सं० ६। मा० १०१४४६ इस् । आसा–प्राहत । विषय-विद्याला । र० काल × । ते० काल । सं० १८२० वैशाल सुरी १०। पूर्ता । वे० सं० १४७ । क अध्वार ४

१६४. प्रति सं० २ । यत्र सं० ६ । ते० काल 🗴 । प्रपूर्ण । ते० सं० १५१ । 🖝 मन्दार ।

१६४, प्रति सं०३। पत्र सं० ७। ते० काल सं० १०१७ पीप बुदी १२। वे० सं० १६०। इत अध्वार।

विक्रोहरू-पं॰ देश्वरदास के किया क्याचन्द्र के प्रश्नार्थ नरायगा गाम में प्रस्व की प्रश्निनीपि की ।

१६६. प्रक्ति स्तं० ४ । एव सं० ११ । ते० काल सं० १९४६ कार्किक दुवि ४ । वे० सं० ५१ । स अंडार ।

[, १७

विशेष-प्रति संस्कृत टीका महित है। भी महतवाद की खिष्या धार्या बाई धीलभी ने प्रतिविधि-कराई । १६७. प्रति सं ४। पत्र सं० २२। के काल सं० १७४० ज्येष्ठ हुदों १३। वे० सं० ४२। का अध्यार । विशेष-प्रेष्टी मानांसहजी ने ज्ञानावरगीय कर्म लयार्थ पं० प्रेम से प्रतिविधि करवायी । १६८. प्रति सं० ६। पत्र सं० १ से ४३। वे० काल ४। प्रपूर्ण। वे० सं० ६३। का अध्यार । विशेष-मंस्कृत टब्बा टीका सहित है। १४वी गाथा ते क्रव प्रारम्भ है। ३७५ गाथा तक है। १८६ प्रति सं० ७। पत्र सं० ४८। तक सं० ४८। काल ४। वे० सं० ४४। काल प्रदार ।

विभेष-प्रति सम्कृत टब्बा टीका सहित है। टीका का नास 'प्रपंसार टिप्पमा' है। प्रानन्दरास के पठनार्च टि'राम निस्था नया।

> १७०. प्रति सं० द्वापत्र सं० २४ । ने० का० सं० १६४६ चैत सुदी २ । ने० सं० १६६ । इक अंडार । १७१. प्रति सं० ६ । प्रय सं० ७ । ने० काल × । ने० सं० १३४ । इक् अण्डार । १७२. प्रति सं० ० । प्रय सं० ६२ । ने० काल × । ने० सं० १३४ । इक् अण्डार । १७३. प्रति सं० १४ । प्रय सं० ४३ । ने० काल × । ने० सं० १४४ । इक् अण्डार । निजेव-२ प्रतिसों का सिश्रसा है ।

१.**०४. प्रति** सं० १८। पत्र सं० ७ । ने० काल 🗴 । बै० सं० २८१ । ज भण्डार ।

१७% . प्रति संट १३ । पत्र मं० २ से २४ । ले० काल मं० १६६४ । कार्तिक बुदी ४ । स्पूर्णाः के० स॰ १८१४ । ट मण्डार ।

विशेष-मंग्हत टीका सहित है। मन्तिम प्रशस्ति:--मंबत् १६२४ वर्षे कार्तिक बुदि ४ बुद्धवामरे श्रीचन्द्राष्ट्री महास्थाने थी राज्येनाव बैखालये वौबीम ठाले प्रत्य संयूर्ण भवति।

> १७६. प्रति सं० १४ । यत्र सं० २२ । ने० काल सं० १८१४ चैत बुदि २ । वे० सं० १८१६ । ट अण्डार । प्रसस्ति-संवत्सरे वेद समुद्र सिद्धि चंद्रमिते १८४४ चैत्र कृष्णा नवस्यां सामवासरे हृड्यती वेसे सराह्मस्पूरे

नट्टारक थी मुरेन्द्रकीति नेदं बिद्द छात्र सर्व सुकाह्मयाध्यापनर्थ लिपिकृतं स्थायेना चन्द्र तारकं स्थीयतायिवं पुस्तकं। १७७. प्रति साट १४ | पत्र मं≎ ६६। ले० का० सं० १८४० मात्र मुदी १४। वे० सं⊜ १८९७। ट भच्यार।

थिनेव--नेस्पना नगर में ऋष्ट्रारक मुरेन्द्रकीरित तथा खात्र विद्वाल् तैजपाल ने प्रतिलिपि की । १७८म∴ प्रति संट १६ १ पत्र संट १२ । सेंट काल ४ । वेट संट १८ मध्य प्रवार । विशेष-५ पत्र तक वचींगे है इससे मागे निक्षा की बातें नवा कुटकर स्तोक हैं। बीबीस तीर्थकूरों के चिह्न भारि का वर्णन है।

ैঙ≗. चतुर्विशति स्थानक-नेसिचन्द्राचार्य। पत्र सं०४६। झा०११×५ ड**ळा।** आ० प्राकृत। विषय-सिद्धात । र०काल × । ने०काल × । पूर्णावै०सं०१६५ । द्व अण्डार ।

विजेष-संस्कृत टीका भी है।

१८८. **चतुर्विशति गुर्गाश्यान पीठिका " """।** पत्र सं० १८। प्रा० १२४५ दक्क । भाषा संस्कृत । विषय-पिदान्त । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० सं० १६२५ । ट भण्डार ।

१००१ - चौबीस ठासा चर्चा****** । विषय-सिदाना । र**्काल** × । कंक्काल × । अपूर्सी । वे० सं० १६६४ । इस अध्वार ।

१८६२, प्रति संठ २ । यत्र मं० ३२ से ५१ । झा० ११६ूं×५६ इक्का । भाषा संस्कृत । ले० वान न० १००१ ताय सुदी १० । वे० मं० १९६६ । झपूर्ण । इस अच्छार ।

विशेष-पं रामवरमेन बास्मानगरमध्ये लिखितं ।

१=३. प्रिनि संट ३। पत्र मंट ६३। ले० काल 🗴 । वै० म० १६= । 🛪 भण्डार ।

१८४. चौबीस ठागा चर्चा बुलिग्गः। यत्र सं० १२३। श्रा० (१३/५ इञ्च। भ्राया संस्कृतः विषय-विद्वाल राजकात्र ४। तेजकात् ४। पूर्णा विजयंत्र २२६। ऋ भण्डारः।

१८.४. प्रतिसंठ २ । पत्र मं०१४ । ले० काल सं०१ ८८४ केठ सुदी ३ । सपूगा। वे० म० ७०० । ऋसण्डार ।

१८६. प्रति सं० ३। पत्र मं० ३१। ले० काल 🔀 । बे० सं० १५५। क भण्डार ।

१८० प्रति सं० ४। पत्र सं० ३७। ले॰ काल सं० १८१० कालिक बुदि १०। जीर्सा-ऑर्मा। वे० सं० १४६। इस मण्डार !

विशेष—पं∘ ईस्वरदास के शिष्य तथा शोभाराम के गुरुभाई नगवद के पठनार्थ मिश्र गिरधारी वे डारा प्रतिनिधि करवायी गर्ड । प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१८८ , चौबीस ठाएा चर्चा पत्र मं० ११ । घा० ६ं ४८ इक्ष । भाषा हिन्दी । विषय-तिदात । ६० काल ४ । तं० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ४३० । व्य भव्दार ।

विशेष-समाप्ति में बन्ध का नाम 'इक्बीस ठारमा' प्रकररम भी लिखा है।

६८६. प्रति सं २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८२६ । दे० सं० १०४७ । द्वा अपडार ।

- १६०. प्रति संट दे। पत्र सं० १। ले० काल ×। प्रपूर्ण । वे० सं० २०३६ । ऋ भण्डार ।
- १६%. प्रति सं० ४ । पत्र मं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ३८२ । ऋ भण्डार ।
- १६१. प्रति सं ४ । यत्र सं० ४० । ले० काल 🔀 । वै० सं० १४० । क मण्डार ।

विशेष-हिन्दी में टीका दी हुई है।

- १६३, प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल 🗙 । वे० सं० १६१ । क भण्डार ।
- १६५. प्रति झांट ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल 🔀 । सपूर्ण । वै० सं० १६२ । क भण्डार ।
- १६४. प्रति संट = । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १६७६ । वे० सं० २३ । सह सण्डार ।

विशेष-वेनीराम की पुस्तक से प्रतिलीपि की गई।

- १८६. हिस्यालीसठागाचाचा "........। पत्र सं०१०। बा०६१,४४१ हंव। आगासंस्कृत। विशय-मिदान्त । र०काल-४। ले०काल सं०१=२२ सावाद बुदी१।पूर्ण। वं०सं०२६६। आयासंस्कृत।
- १९७८ जन्मुद्धीपफलः''''''''। पत्र सं∘ २२ । मा॰ १२६ै×६ इ'व । भाषासंस्कृत । विषय– सिटान्त । र०काल ∷ । से० काल सं०१=२६ वैत सुदी ४ । दुर्सा वै०सं०११५ । ऋ। भण्डार ।
- १६६. जीवस्वरूप यस्तिः'''''''''। पत्र सं०१४ । झा०६×४ इंच । झावा प्राकृत । र०काल × । ल ऽकाल - । झपूर्ण । वे० सं०१२१ । स्न भण्डार ।

विशेष---श्रन्तिम ६ पत्रों में तत्व वर्गान भी है। गोम्मटसार में ने लिया गया है।

- १६६. जीवाचारविचार $\cdots\cdots\cdots$ ापत्र तं०४। प्रा०६ \times \vee दै इंच। भाषा प्रकृत। विवय-मिदान्त। र० काल् \times । ते० काल् \times । प्रपूर्ण। वे० सं० = ६। क्या घण्यार।
- २८६. प्रतिसंठ२ । पत्र सं०६ । ले० काल सं०१०१६ मंगसिर बुदी १०। वै० सं०२०५ । कः भण्डार ।
- २०१ जीवसमास्टिप्प्याः..................। यत्र सं०१६ । सा०११×५ इंच । आया शक्तुन । विषय— सिञान्त । र०कास × । ते०कास × । पूर्वा । वे०सं०२३५ । स्र प्रथ्वार ।
- २०२. जीवसमासभाषा \cdots ापत्र सं०२ । सा०११ \times ५ इंगः भाषा प्राकृत । विषय-निज्ञन्त । र०काल \times । ने०काल सं०१ च १ वे०सं०१६७१ । द्वाच्यार ।
- २०२. जीवाजीबिबयार \cdots । यत्र सं०२२। जा० १२ \times ५ इ.स.। भावा संस्कृतः। विश्वस्मितासः। र०कास \times । ते० कास \times । वै० सं०२००४। द्वः अध्यारः।

२०४. जैन सन्।चार सार्थायह सामक पत्र का प्रस्युचर—बाबा बुलीचन्द्र। पत्र गं० २४। बा० १२४७ है देव। भागा किन्दी। विषय-वर्षा समाधान। र०काल गं० १६४६। ने० काल ४। पूर्ण। वै० गं० २०६। के सण्डार।

२०५८ प्रति साः २ । पत्र सं० २६ । ले० काल 🔀 वे० सं० २१७ । व्ह अण्डार ।

२०६. ठार्यागसूत्रापत्र सं०४ । झा० १०है८४० इंग्च । भाषासंस्कृत । विषय⊸प्रापस । र∙काल ४ । ले०काल । सपूर्या । वे० सं०१६२ । इस अच्छार ।

२०७. तरककोस्तुम—पंत्रपक्ताला सघी । पत्र मंत्र ४२७ । घा• १२४७} दश्च । आपा हिन्दी । विवय–सिकान्त । र० का० ४ । ले० काल मंत्र ११४८) पुर्ण । वंत्र मुठ २०४ । क्रु मण्डार ।

विक्रीप-सह ग्रन्थ तत्वार्थराजवानिक की हिन्दी गत्र टीका है। सह १० प्रध्यायों में विश्रक्त है। इस प्रिः में ४ मध्याय तक हैं।

२०८. प्रति सं०२ । पत्र मं० १४३ । ते० काल मं० १६४४ । वे० मं० २७२ । क भण्डार ।

विशेष-५वे अध्याय से १०वे अध्याय तक की हिन्दी टीका है। तवा अध्याय अपूर्ण है।

२८**६. प्रति सं० ३। पत्र** स० ४२८ । र० काल सं० १६३४ । ले० काल × । वे० सं० २८० । हु अंटार विशेष—राजवर्गिक के प्रथमाध्याय की हिन्दी टीका है ।

२१०. प्रति सं०४ । पत्र सं०४२ = मे ७७६ । ले० काल 🔀 । प्रपूर्ण। वे० सं०२४१ । द्वाचकार । विकोष-तीसरातथा चीवा प्रथ्याय है। तीसरे प्रथ्याय के२० पत्र ग्रनम ग्रीर है। ४७ ग्रनगणी मे सुवीपत्र है।

२११. प्रति संब ४ । पत्र मं० १०७ में ८०७ । ते० काल ⋌ । ते० सं० २४२ । क मण्डार ।

विदोष-४, ६, ७, ८, १, १०वें बध्याय की भाषा टीका है।

२१२. तच्चदीपिका—ापत्र सं०३१। ग्रा० ११ $\frac{1}{2}$ \times ६३ आगा हिन्दी गरा। विषय–भिद्धान्त। र० दाल \times । ने० काल \times । पूर्ण। वे० सं० २०१४। का अण्डार।

२१३. तत्त्ववर्धन— शुभाषान्द्र । पत्र स०४ । म्रा०१० $_{c}^{2}$ \times ४ $_{c}^{2}$ दश्च । सापा संस्कृत । विषय-विदात र० काल imes । पूर्ण । वै० सं० ७६ । व्य सण्डार ।

वियोग-भाषार्थ नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी।

२१४. तत्त्वसार— देवसेन । पत्र सं० ६ । मा० ११४४ ई रख । भावा प्राकृत । विवय-निद्धान्त । र० काल ४ । मे० काल सं० १७१६ पीच बुदी ४ । पूर्ण । वै० मं० २२४ ।

विशेष-पं० विहारीदास ने प्रतिनिधि करवायी थी।

२१४. प्रति सं८ २ | पत्र सं० १३ । ते० कॉल ४ । श्रेष्ठां । वे० सं० २६६ । क मण्यारे । विशेष−हिन्दी वर्ष मी दिया हुमा है । चन्तिम पत्र नहीं है ।

२१६. प्रति संघ ३ । पत्र संव ४ । सेव काल 🗶 । वैव संव १८१२ । ट मण्डार ।

वर्ष- तस्वसारमाथां-पम्नाकाल चौधरी। पत्र सं० ४४। ग्रां० १२६४५ रखा। माला हिन्सी। विषय-निदाननारै० कोलंसं० १६३१ वैद्याल बुद्दी ७ । ते० कोलं ४ । पूर्णा वे० सं० २६७ । क्र मण्डार ।

वियोध-देवमेन कुस नस्वसार की हिन्दी टीका है।

२१८. प्रति सं• २ | पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वै० सं० २६८ । क अण्डार ।

२९६. तस्वार्धवर्षसः......) पत्र सं०३६ । झा०१३२/४%, दक्का भाषासंस्कृत । विषय-सिद्धांत । १०गल र । ले०काल ४ । केपूर्ण । वे० सं०१२६ । चाप्रफार ।

विशेष-केयल प्रथम सध्याय नक ही है।

२२०, तस्वार्थवाध— पण सं०१०। धा०१२ $\frac{3}{6}$ ×५ $\frac{3}{6}$ ६ळा। भाषा संस्कृतः विषय—सिद्धान्तः। २० कान \times । ने० कान \times ।। ने० सं०१४०। ऋ अवदारः।

विशेष-पथ १ में भी देवमेन कृत भालापपद्धति दी हुई है।

२२१. तस्त्वार्थनोध— सुध्यस्म । पत्र सं० १४४.। मा० ११.४१ रखः । सारा-हिन्दी पद्यः । विषय-विद्यात । र०काल सं० १८७१ । ने०काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० २१७ । च्या मण्यार ।

२२२. तत्त्वार्थवोधः ''''। पव सं० ३६। आ।० १०५४५ द्वाः। भावाहिन्दी स्थः। विषय–सिद्धालः। र∘काल ४। ने० काल ४। प्रदुर्णः। वै० सं० ५६९। च मध्यारः।

९२६. तस्वार्धवर्षेषुः'''''। पत्र सं०१०। ग्रा०१३×५२ दश्चः। आचासंस्कृतः। विषय–मिद्धान्तः। र्षे कालः \times । श्रेण कालः \times । श्रेपूर्णः। वै० सं०३५। ग्रासम्बारः।

विशेष-प्रवस बध्याय तक पूर्या, टीका सहित । प्रत्य गोमतीलालजी भीसा का मेंट किया हुआ है ।

१९५८. सरकार्थमोधिनीटीका—। पण सं० ४२ । घा० १३×४ $\frac{1}{2}$ हक्का | जावा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । **१० काल ×**। ले**० काल सं० १९५२ जवम वैद्यास सुवि ३ । पू**र्ण । वे० सं० ३६ । वा अध्वार ।

विसेय-यह बन्ध नीमतीभासणी भौंसा का है। व्लीक मं० २२४ ।

२२४. तस्वार्थरहाप्रसादर—प्रसाचन्द्र । पर गं० १०६० । या० १०६० ४५ हैं आहे । साचासंस्कृत । विषय—सिद्धान्त । १० क्षेक्षं ×ा के काल सं० १६७६ क्षेत्रोज कृषी ४ । वे० सं० ७२ । व्यं वेण्यार ।

विनेति-अंत्रावश्य संहारक वर्णवंत्र के विषय थे। प॰ हरवेष के लिए प्रंथ बनाया था। संयही कंवर ने जोशी यंगाराव से प्रतिक्रिय करवायी थी।

र्म्प्सं, असि सीट २ । पन सेंड ११७ । कै॰ काल सं॰ १६३३ आवर्षा बुदी १० । के॰ सं॰ १३७ । का अवसार । २२७. प्रति संट ३ ! पत्र सं० ७२ । । ले० काल 🗵 । ब्रपूर्णा । वे० मं० ३७ । का मण्डार । विजेष— कालस पत्र नहीं है ।

न्दर, प्रति संद ४ । पत्र संद १ । लेद काल ४ । प्रपूर्ण । वैद संद ११ ३८ अध्यार । विशेष-धानिम पृत्यिका— इति तत्त्वार्ण रालप्रभाकरसन्त्रे मृति श्री धर्मचन्द्र विष्यः श्री प्रभावनदेव विर-विते ब्रह्मचैत साधु हावादेव देव आवना निमित्ते मोक्ष पदार्थं कथनं दवम सुत्र विवाद प्रकरस्स समासा ॥

. २२६. तत्त्वार्थराजवार्तिक—अट्टाक्कंकदेव । पत्र मं० ३६० । घा० १६४७ इझ । भाषा- मंस्कृत । विषय-सिदास्त । र० काल × । से० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० मं० १०७ । ऋ भण्यार ।

विशेष---इस प्रतिकी प्रतिलिपि सं०१५७८ वाली प्रति मे जयपुर नगर मे की गई थी।

२३०. प्रतिसांठ२ । पत्र सं०१२२० । लिंजनाल सं०११४१ आरादामुदी ६ । ते० स०२३ । इ. मण्डार ।

विशेष-सहस्राप्य २ वेष्ट्रनी में है। प्रथम वेष्ट्रन मे १ में ६०० तथादूसरे में ६०१ में १०२६ तक पश्चा प्रति उत्तम है। मुल के नीचे हिन्दी कर्ष भी दिया है।

> २३१. प्रति सं०३। पत्र सं०१२। ले० काल र । वै० मं०६४। स्र भण्डार । विशेष-मूलमात्र ही है।

२३२, प्रतिसंदर्भ । पत्र मंदर्भ वाले काल संदर्शक पोष मुदी १३। वेट महिन्दर । इस्मण्डार ।

विशेष-जयपुर में म्होरीलाल भावमा ने प्रतिलिपि की ।

२३३ प्रति संदर्धापत्र मंग्राके काल 🗵 । अपूर्णावेण मण्डारा

२३५, प्रति संब ६ । पत्र संब १४४ से २१० । लेक काल ४ म्बिपूर्ण । वेब सक् १२७ । च्यू प्रवार । २३४. तस्वायेराजवातिकमापा """। पत्र संब १२२२ । झाव १२४८ इक्का । जाया-क्रियी सद्य । विषय-मिद्राला । रक्ष्मण ४ । लेक काल ४ । स्पूर्ण । वेब संब २४४ । क्यू मण्डार ।

२३६, तत्त्वार्ववृत्ति—पंट योगदेव । पत्र मं० १७ । मा० ११२४७६ इझ । भाषा-संस्कृत । विषय⊸ सिद्धान्त । रचनाकाल × । ले० काल सं० १९४६ चैल बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २५२ । इ. भण्डार ।

विशेष-वृक्ति का नाम मुख्योध वृक्ति है। तस्वार्य सूत्र पर यह उनम टीका है। पं० योगदेव कृम्भनगर के निवासी ये। यह नगर कनारा जिले में है।

२३७. प्रति सं**२२। पत्र सं०१४७। ते० काल ×। वे० स०२५२।** ज्या अण्डार ।

२३८. तस्यार्थसार— ऋसूसचन्द्राचार्थ । पत्र सं० ४० । घा० १२ \wedge ४ इखा प्रावा संस्कृत । विचय \sim सिदान्त । र० काल imes । कं० काल imes । पूर्ण । कं० सं० २३६ । कः घण्डार ।

विभोष—इस ग्रन्थ मे ६१ = ज्लांक है जांद श्राध्यायों मे विज्ञक्त है। इतमे ७ तस्थो का वर्णान किया गया है। २३६. प्रति सं०२। पत्र सं०४४। ले० काल 🗴 । वै० मं० २३६। क अच्छार ।

२४०. प्रति संट ३। पत्र संठ ३६। ले० काल ×। बै० मं० २४२। क मण्बार।

२४१. प्रति सं ८ ४ । पत्र मं० २७ । ले० काल 🗴 । वे० मं० ६५ । स्र भण्डार ।

२४२. प्रति सं८४ । पत्र सं०४२ । ले॰ काल × । वे॰ सं०६६ । इङ् भण्डार । विलेप-पुस्तक दीवान ज्ञानवन्द की है ।

न्ध्र३. प्रति संट ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वै० सं० १३२ । स्वामण्डार ।

२४४. तस्वार्थसार दीपक—अ० सकलकीति । पत्र मं∘ ११। मा० ११४४ इक्का सावा— सम्बन्ध विषय-सिद्धाल । र०काल x । मे०काल ४ । पूर्ण । वै०मं०२०४ । का अच्छार ।

विशेष-भः सकलकीति ने 'नत्वार्थमारदीपक' में नैन दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का वर्शन किया है। 'रजना १० ग्रन्थायों में विभक्त है। यह तत्वार्धसूत्र की टीका नहीं है जैसा कि इसके मात्र ने प्रकट होता है।

२५४. प्रति संट २ । पत्र संट ७४ । लेट काल सर्ट १६२८ । वेट संट २४० । व्ह अण्डार ।

२५६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६६। नं० कानः सं० १०६४ आसोण सुदी २। दे० सं० २४१। इइ. १। पदार १

विशेष--- महात्मा ही गुनन्द ने प्रतिनिधि की ।

२४७. तस्यार्थसारहीपक्रभाषा—पत्रशक्षाल चौधरी। पत्र सं० रद६। पा० १२३४५ रह्य। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-निदाल । र०काल सं० १९३७ ज्येष्ठ बुढी ७। लं०काल 🗴। पूर्णा बै० सं० २६६।

विशेष---जिन २ ग्रन्थों की प्रशालाल ने भाषा लिखी है सब की सुवा दी हुई है।

२४८. प्रतिसंद २ । पत्र संब २८७ । येव काल x । वेव संव २४३ । का अध्यार ।

२४६. तत्त्वार्थसूत्र— उसाश्याति । पत्र मं०२६ । सा०७×३६ डक्कः । मात्रा—संस्कृतः । विवस— सिदालः । र०कासः × । स०कासः सं०१४६= भावसः सदी ६ । पूर्णः । वै० मं०२१६६ (कः) का अध्यारः ।

विशेष---नाल पत्र है जिन पर स्वेत (रजन) सकार है। प्रति प्रवर्शनी में रखने योग्य है। तत्त्वार्थ क्रूव समानि पर भन्तामर स्तोत्र प्रारम्भ होता है लेकिन यह सपूर्ण है।

प्रवस्ति—सं० १४४८ श्रावस्य मुद्दी ६।

२.४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६६६ । बे० सं० २२०० च्या अण्यार ।

विभोष—प्रति स्वर्णाकारों में है। पत्रों के कितारों पर सुम्बर बेले हैं। प्रति दर्शनीय एवं प्रवर्णनी के रखावें थोष्य है। नवान प्रति है। सं॰ १६६६ में ऑहरीलानजी नंदनालजी भी बालों ने बतोबापन में प्रति लिखा कर पदाई।

> २४१. प्रति सं० ३। पत्र त० १७। ते० काल imes। ते० तं० २२०२। क्यू अण्डार। विभोय-प्रति ताहपत्रीय एवं प्रदर्शनी योष्य है।

ब्रा सन्दार ।

२ थ्रद. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । तै० काल × । वै० सं० १८१४ । क्यं मण्यार । २४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ते० काल सं० १८८८ । वे० सं० २४६ । क्य भण्यार । २४४. प्रति सं० ६ । पंत्र सं० वेद । ते० काल सं० १८८६ । वे० सं० वे१० । क्य भण्यार । २४४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६ । ते० काल ४ । सपूर्णा । वे० सं० वे४४ । क्य भण्यार । २४६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ११ । ते० काल सं० १८९७ । वे० सं० वे६२ । क्य भण्यार । विशेष- हिन्दी में धर्म विया हुमा है ।

२५७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ने० काल × । ने० सं० १०७४ । इस प्रण्डार ।
२५८. प्रति सं० १० । पत्र सं० १४ । ने० काल × । ने० सं० १०३० । इस प्रण्डार ।
विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । पं० प्रमीचंद ने सलदर ने प्रतिनिर्पर की ।
२५६. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १४ । ने० काल × । ने० स० ६४ । इस प्रण्डार ,
२६०. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २८ । ने० काल × । स्पूर्ण । ने० सं० ७७७ इस प्रण्डार !
विशेष—पत्र १७ से २० तक मही है ।

२६१. प्रति संट १३ | पत्र सं०६ मे ३३ । ले॰ काल x । सपूर्ण । वेर सं०१००६ । इस अध्वार । २६२. प्रति सं०१४ । पत्र सं०३६ । ले॰ काल सं०१६६९ । वे० सं०४० । इस अध्वार । विशेष—संसक्ति टीका सहित ।

२६३. प्रति संट १४) पत्र सं० २०। में ० काल 🗡 । वे० मं ० ४८ । ऋ मण्डार । २६४. प्रति संट १६) पत्र सं० २४ । में ० काल स० १८२० चेत्र बुदी ३ । वे० स० ६१६ । विकेष---सेवियत हिन्दी धर्म दिया हुमा है ।

२६ ६. आसि सं० १७ | पत्र सं० २४ | लं० काल ४ | वे० सं० २००६ | का सम्झार |
२६६. प्रति सं० १६ | पत्र सं० ११ से २२ | ले० काल ४ | धपूर्णा | वे० सं० १२३४ | का सम्झार |
२६७. प्रति सं० १६ | पत्र सं० १६ ले० कील सं० १६६६ | वे सं० १२४४ | का सम्झार |
२६६. प्रति सं० २० | पत्र सं० २४ | ले० काल ४ | वे० सं० १२४१ | का सम्झार |
२६६. प्रति सं० २१ | पत्र सं० ६ | ले० काल ४ | वे० सं० १२४१ | का सम्झार |
२७०. प्रति सं० २२ | पत्र सं० ६ | ले० काल ४ | वे० सं० २१४६ | का सम्झार |
२७१. प्रति सं० २३ | पत्र सं० १ | ले० काल ४ | वे० सं० २१४६ | का सम्झार |
२०१. प्रति सं० २३ | पत्र सं० १२ | ले० काल ४ | वे० सं० २१४६ | का सम्झार |

विशेष---मंस्कृत टिप्पस सहित है । फुलबंद विदेशवर्था ने प्रतिनिर्दि की ।

२.... प्रति संद २४ । पत्र संद १० । लेव काल संद १६ वे, संद २००७ । श्रा भण्डार । २०४ प्रति सं ० २६ । पत्र सं० ६ । ले० काल 🗴 । बापूर्शा । वै० सं० २०४१ । का अण्डार । विशेष-संस्कृत टिप्पसा सहित है। २७४. प्रति सं० २७। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १००४ ज्येष्ठ सुरी २। बै० सं० २४६। क अण्डार। विशेष-प्रति स्वर्णाक्षरों में है। शाहजहानाबाद वाले श्री ब्लबन्द बाकलीबाल के पुत्र श्री ऋषभदाम दीलतराम ने जैसिहपुरा में इसकी प्रतिलिपि कराई थी । प्रति प्रदर्शनी में रखने योग्य है । २७६. प्रति सं २२६। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १६३६ आदवा सुदी ४। वै० मं० २५६। क अवहार । - us. प्रति सं २६। पत्र सं० १०। ने० काल ×। वे० सं० २५१। क मण्डार । २७८. प्रति अंट ३८। पत्र संव ४४ । लेव काल संव १६४४ वैद्याखनदी ७। वैवर्सव २५०। क भण्डार । २७६. प्रति संट ३१। पत्र सं० २०। ले० काल 🔀 । वै० सं० २५७। 🕿 भण्यार । २८०. प्रति स्व ३२ । पत्र सं० १० । ले० काल 🔀 । वै० सं० ३७ । रा भण्डार । विशेष---महवा निवासी पं० नानगरामने प्रति लिप की थी। २८१. प्रति सं ३३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३८ । श भण्डार । विशेष---सवाई जयपूर में प्रतिलिपि हुई थी । पुस्तक चिम्मनलाल बाकलीवाल की है । २६२. प्रति सं० ३४ पत्र मं० हा ने० काल 🗴 । वे० सं० ३६। मा भण्डार । २-३. प्रति सं २ ३४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८६१ माध बढी ४ । दे० सं० ४० । रा भण्डार । २८४. प्रति सद ३६। पत्र सं० ११। ने० काल 🗵। वै० सं० ३३। घ मण्डार। रमध् प्रति सं० ३७ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ३४ घ अपहार । विशेष--हिन्दी टब्बा टीका सहित है। २६६. प्रति संट ३६ । पत्र सं० ७ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ३४ । छ अध्यार । २८७. प्रति संब ३६ । पत्र संब ४६ । लेब काल 🔀 । सपूर्ण । वेब संब २४६ । 🕿 आपहार । विशेष---प्रति संस्कृत टीका सहित है। २८८. प्रति सं० ४०। पत्र सं० १३। ते० काल ×। वे सं० २४७। अन् अप्यार। २. अति सं० ४१। पत्र सं० व से २२। ले० काल 🗶 । अपूर्ण । वे० सं० २४८। अ अवदार । बहुत. प्रति संव प्रदे । पत्र संव ११ । सेव काल 🗴 । बैठ संव २४३ । 🕿 प्रतार ।

विशेष--- मकामर स्तोष भी है।

२६२. प्रति सं• प्रष्ट । पत्रसं• १५ । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० २५१ । क अण्डार । २६३, प्रति संक प्रश्ना पत्र संक ६६। तेक काल 🗴 । देव संव २५२ । क्र अण्डार । विश्वीय-सत्रों के ऊपर हिन्दी में सर्च दिवा हवा है। २६४. प्रति सं । प्रदापत्र सं ० १०। ले व काल x । वे० सं० २५३। क भण्डार । २६४. प्रति संo ४७। पत्र संo ३६। तेo काल 🗴। वेo संo २५४। ऋ भण्डार । २६६. प्रति सं ७ प्रदायत्र सं० १२। से० काल सं० १६२१ कालिक बदी ४। वे० सं० २४४। क्र अंडार REO. प्रति सं अध् । पत्र सं ० ३७ । से० काल 🗵 । वै० सं० २५६ । उह अध्वार । ने**६८. प्रति सं० ४०।** पत्र सं० २८। ते० काल × । वे० सं० २५७ । ऋ भण्डार । २६६. प्रति संब ४१ । पत्र संब ७ । लेव काल x । प्रपूर्ण । वेव सं २४० । इन भण्डार । ३००. प्रति सं ० ६२ । पत्र सं ० ६ से १६ । ते० काल × । प्रपूर्श । वे० सं० २५६ । क्र भण्डार । ३०१. प्रति सार्थ ४३ । पत्र सं• ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० ं० २६० । अस् अण्डार । 30 र. प्रति सं0 ४४ । पत्र सं० ३२ । ले० काल 🗴 । वे० सं० २६१ । 🗷 भण्यार । विशेष---प्रति हिन्दी मर्थ सहित है। ३०३. प्रति सं ध्रम् । पत्र सं ० १६ । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० सं० २६२ । उट भण्डार । ३०%. प्रति संo ४६। पत्र संo १७। ले० काल ×। मपूर्ण। वै० संo २६३। उर भण्डार। ३८४. प्रति संक्र¥का पत्र संक्र १८। सेक्र काल ×। वेक्संक्र २६४। इट भण्डार। विशेष--केवल प्रथम प्रथ्याय ही है । हिन्दी प्रर्थ सहित है । विशेष--संकिप्त हिन्दी पर्य भी दिया हवा है। ३०७. प्रति सं० ४६। पत्र सं० ६। ले॰ काल × । मपूर्ण । वे० सं० १२६ । च अण्डार । देव्य. प्रति संव ६०। पत्र संव १७। लेव काल संव १८८२ फायुन सुदी १३। जीगी। वेव संव १३०। क अव्हार । विशेष--- भूरलीधर ध्रम्याल जोवनेर वाले ने प्रतिलिपि की । ३०६. प्रति सं0 ६१। पत्र सं० ११। ले॰ काल सं० १६४२ ज्येष्ट्र सदी १। वे० सं० १३१। का अण्डार। देश. प्रति संब ६२ । पत्र संब ११ । लेव काल संव १८७१ जेठ सूदी १२ । वेव संव १३२ । च अंडार ।

> ३११. प्रति सं० ६३ | पत्र सं० १६ | ले० काल सं० १६६६ | वे० सं० १३४ | च्या अण्डार | विषेत — डाजूलाल सेठी ने प्रतिसिधि करवायी | ३१२. प्रति सं० ६४ | पत्र सं० १६ | ले० काल × | वे० सं० १३३ | च्या पडार | ३१३. प्रति सं० ६४ | पत्र सं० २१ ते २४ | ले० का० × | प्रपूर्ण | वे० सं० १३४ | च्या अण्डार | ३१४. प्रति सं० ६४ | पत्र सं० १४ | ले० काल × | वे० सं० १३६ | च्या पण्डार | ३१४. प्रति सं० ६७ | पत्र सं० ४२ | ले० काल × | प्रपूर्ण | वे० सं० १३६ | च्या पण्डार |

विशेष--रम्या टीका सहित । १ ला पत्र नहीं है ! 398 सकि संब ६८ । यत्र संब ६४ । लेव काल संब १६६३ । वैव संब १३८ । व नव्हार । विशेष--क्रिन्दी टब्बा टीका सहित है। 310. प्रक्रि संव हर । यह संव ६४ । तेव काल संव ११६३ । वेव संव ४७० । च अण्डार । विशेष--हिन्दी टब्दा टीका सहित है। 3१८. प्रति सं० ७० । पत्र सं० १० । के • काल × । वे० सं० १३६ । ऋ अच्छार । विशेष---प्रथम ४ पत्रों मे तत्वार्य सूत्र के प्रवम, प्रथम तथा दशम प्रधिकार है। इससे प्रागे भक्तानर स्तोत्र है। ३१६. प्रति सं ७ ७१। पत्र सं० १७। ले० काल 🔀 । वे० स० १३६। 🕱 भण्डार। ३२०. प्रतिसं **७२ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं३**८ । ज अण्डार । ३२१. प्रति सं ७ ७३ । पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६२२ फायुन सूदी १४ । वे० सं० ८८ । ज भण्डार। 3 २२ प्रति सं८ ७४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १४२ । अरु अध्यार । 323. प्रतिसंट ७४ । पत्र सं० ३१ । लें॰ काल × । बैठ सं० ३०४ । अरु अध्यार । ३२४. प्रति सं० ७६। पत्र सं० २६। ले॰ काल 🔀 । बे॰ सं॰ २७१। का अध्वार। विशेष-प्रवासाल के प्रत्यार्थ लिखा समा हा । ३३४. प्रति सं० ७७ । रत्र सं० २०। ले० काल सं० १६२६ चैत सदी १४ । वे० सं० २७३ । वा अंडार विशेष---मण्डलाबार्य भी चन्द्रकीति के शिष्य ने प्रतिलिपि की बी । 33E. प्रति सं० ७८। पत्र सं० ११। ले० कास X | वे० सं० ४४८। हा भण्डार। 33 ७. प्रति स्रंट का । पत्र संच ३४ । लेक काल 🗴 । वेट संट ३४ । विश्लेष-प्रति टब्बा टीका सहित है। ३३८. प्रति सं० ८०। पत्र सं० २७। ले॰ काल ×। वे॰ सं॰ १६१४ ट अण्डार। ३३६. प्रति सं० दर । पत्र सं० १६ । ते० काल 🔀 । वे० सं० १६१६ । द अध्यार । 3 थेठ. प्रति संट ⊑रे । पत्र संब २० । सेव कास ४ । देव संव १६३१ । ज अध्यार । विशेष--हीरासाल विदायनया ने गोरुलाल पांड्या से प्रतिलिपि करवायी। पुस्तक सिसामीचन्द सावडा लजांची की है। केश्वर, प्रति संव करें। पत्र संव प्रवे। लेव काल संव १६३१। वेव संव १६४२। ह अध्यार ।

विश्वेच — प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है। ईसरदा वाले ठाकुर प्रतापसिहकी के जकपुर प्राथमन के समय समाई रामखिह ती के शासतकाल में जीवसालाल काला ने जकपुर में हमारीसाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की। वेश्वेर, प्रति सांच क्या । पत्र संच के से १८ । तेन काल ४ । प्रपर्यों । वेन संच २०६६ । विशेष---वतुर्व सध्याय से है। इसके धाने किकुण्डपूजा, पार्वनायपूजा, क्षेत्रपालपूजा, क्षेत्रपालस्तीत्र तथा विन्तावरितुरुजा है।

. २४२. तत्त्वार्थे सूत्र टीका अनुतसागर । पत्र सं० २४६ । घा० १२४४ ६ छ। भाषासंस्कृत । विषय— निकाल । र० काल ४ । ले० काल सं० १७३३ प्र० आवशा सुदी ७ : वे० सं० १६० । पूर्ण । इस मण्डार ।

र्विशेष—श्री श्रुतसागर सूरि १६ वी सताब्दी के संस्कृत के घच्छे विद्वान वे। इन्होंने १८ से श्री साधक ग्रंबों की रवना की विसमें टीकाएँ तथा छोटी २ कथाएँ भी हैं। श्री श्रुतमागर के ग्रुर का नाम विद्यानंदि था जो अद्रारक परानंदि के प्रशिष्य एवं देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे।

३५४४. प्रति सं**०२ । पत्र** संब ३१५ । ले० काल सं०१७४६ फागन सुदी १४ । सपूर्णा। वे० सं०२५५ । इक्र अध्यार ।

विशेष--- ३१५ से माने के पत्र नहीं हैं।

३५४. प्रति सं० ३ । पत्र मं० ३५३ । ले० काल-× । वे० मं० २६६ । क अण्डार ।

३४६ प्रति सं० ४। पत्र सं० ३१३। ने० काल-×। वे० मं० ३३०। त्रा भण्डार।

३४७. तत्त्वार्थसृत्र वृत्ति—सिद्धसेन गिष्णा पत्र मं० २४६। ग्रा० १०५४५६ इ'व । भाषा-भंग्द्रन । विवय-सिद्धान्त । र० काल× । ने० काल-× । प्रपूर्ण । वै० सं० २४३ । क्र भण्डार ।

विशेष--तीन बध्याय तक ही है। ग्रागे पत्र नहीं हैं। तत्वार्थ सुत्र की विस्तृत टीका है।

३४८. तस्वार्थसूत्र वृत्तिःःःःःःःः। पत्र सं० १३। बा० ११४४. इक्रः। माथा-संस्कृतः। विषय-मिद्यांन्तः। र० काल-×। ने० काल-सं० १६३३ फाषुण् बृद्धी ४ । पूर्णः। वे० सं० ५८ । खा भण्डारः।

वितेष-मालपुरा में भी कनककौत्ति ने भाने पठनार्थ मु॰ जैसा से प्रतिलिपि करवायी।

प्रवस्ति — संबर् १६३३ वर्षे फाग्रुण माते कृष्ण पने पंचमी तिथी रविवारे श्री मालपुरा नवरे । भ० श्री १ श्री श्री श्री चंद्रकीत्ति विजय राज्ये ब० कमलकीत्ति लिखापितं घारमार्थे पठनीया तु मू० जेसा केन लिखितं ।

देशके. प्रति संट २) पत्र सं० ३२० । ले॰ काल सं० १९५६ फाग्रुगा मृती १५ । तीन ग्रस्थाय तक पूर्णा के॰ सं० २५४ । का अध्यार ।

विशेष---बाला बस्ता सर्मा ने प्रतिलिपि की थी। टीका विस्तृत है।

२ थर. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ ४ से ४६३ । ले० काल—× । ब्रपूर्णा वे० सं० २४६ । इद भण्डार । विशेष—टीका विस्तृत है ।

३ क्षरे. प्रति संब ४ । पत्र संब ६३ । लेव काल संव १७६६ । वेव संव १०४४ । इस भण्डार ।

३४२. प्रति सं०४ । पत्र सं०२ से २२ । ले॰ काल-× । अपूर्ण । वे॰ सं०३२९ । 'का' भण्डार ।

३४३, प्रति सं० ६। पत्र सं० १६। ले० काल-×। ब्रपूर्गा। वे० सं० १७६३। 'ट' भण्डार।

३४४. तस्वार्थसूत्र आया-पं स्वासुत कासस्तीवास । पत्र सं ० ३३३ । बा० १२३४.५ इका। प्राया-हिन्दी गवा। विवय-तिदालत । र॰ कास सं० १११ फाइस बुदि १०। ते० कास-४ । पूर्ण । वे० सं० २४४ । क भण्डार ।

F 34

विस्तेष---मह तरवार्श्वतूत्र पर हिन्दी गद्य में सुन्दर ठीका है ।

२५%. प्रतिसंट २ । पत्र सं० १५१ । ले० काल सं० १६४२ व्यावसा सुदी १५ । वे० सं० १४% । का नव्यार ।

३.५६. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०२। ले० काण सं० १९४० मंगसिर बुदी १३ । वे० मं० २४७। कः भण्डार।

३४.७. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ६६ । ते० काल सं० १९१५ भावता मुदी ६ । वे० मं० ६६ । अपूर्ण । स्व भण्डार ।

३४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०० । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० सं० ४२ ।

विशेष--पृष्ठ ६० तक प्रथम प्रध्याय की टीका है।

३४६. अति सं० ६। पत्र सं० २८३। ले॰ काल सं० १६३५ साह मुदी ६। वे० सं॰ ३३। इस अण्डार

३६०. प्रति सं० ७ । पत्र मं० ६३ । ले० काल सं० १६६६ । वैं० सं० २७० । क अण्डार ।

३६१. प्रति संब = । पत्र संब १०२ । लेव काल x । वेव संव २७१ । क भण्डार ।

३६२. प्रति सं०६। पत्र मं०१२८। ने०कास सं०१६४० चैत्र बुदी दावै० सं०२७२। इह अध्यार । विकेद-स्क्रीरीलालकी सिन्दकाने प्रतिसिधि करवार्षी

३६३. प्रति सं० १०। पत्र सं० १७। से० काल सं० १९३६। वै० सं० ५७६। चा भण्डार। विकोय----मांगीलास श्रासास ने सह प्रन्य लिखवाया।

३६४. प्रति सं०१२ । पत्र सं०७१ । ने॰ काल १८१४ बाबाइ मुदी ६ वे० सं०११ । ऋ अवकार । विशेष—मोतीलाल गंगवाल ने पुस्तक बढाई ।

६६६. वरवार्थं सूत्र टीका—पं∘ जयचन्य खावड़ा। पत्र सं∘ ११ मा । १३ ४७ इखा सावाहिन्दी (गय)। र० काल सं∘ १६४६। ले० काल ×। पूर्णावै० सं० २४१। क सण्डार।

३६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६७ । ले० काल सं० १८४६ । वे सं० ४७२ । ख अण्डार ।

१६८. तरवार्थ सूत्र टीका—पांडे जयसंत । पत्र सं० ६६ । या० १२४६ इझ । आया–हिन्दी (गर्य), । विषय–सिद्धान्त । र० काल imes । से० काल सं० १८४६ । वे० सं० २४१ । क्षु अध्यार ।

विशेष---शन्तम पाठ निम्म प्रकार है :---

केइक जीव प्रचीर तक पनि सिक्षः है केइक जीव उर्ज सिक्ष है इस्तादि ।

इति भी जनसम्भानि निश्चित कुम की गुजानोधि टीका पाँचे क्यावंत कुत संपूर्ण समस्ता । भी सवार्ष के करूने से वेन्यूक राज्यसम्भा ने प्रतिकृतिय की । ३६६. तस्वार्थसूत्र टीका—चा० कतककीर्ति ।पत्र तं० १४१ । झा० १२६४५६ इस । भाषा हिन्दी { सक्तं) । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । सपूर्ण । वै० तं० २६६ । इर अच्यार ।

विकोप—तत्वार्थसूत्र की श्रृतसागरी टीका के साधार पर हिन्दी टीका लिखी गयी है। १४४ ने माने पत्र नहीं है।

३७०. प्रति संट २ । पत्र सं० १०२ । ले० काल 🗴 । वै० सं० १३८ । आस अण्डार ।

३७१. प्रति सं० ३ | पत्र सं० १८१ । ले॰ काल सं० १७६३ । चैत्र सुरी १ । वे॰ सं० २७२ । ब्रा अण्यार । विशेष—सालकोट निवासी ईपवरलाल अजमेरा ने प्रतिलिपि की थी ।

3.७२. प्रति सं⇔ प्र। पत्र सं०१६२। ले• काल ×। वे० सं०४४६। व्य मण्डार।

३७३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३६ । ले० काल सं० १६११ । वे० सं० १६३६ । ट मण्डार ।

विशेष--वैद्य ग्रमीचन्द काला ने ईसरदा में शिवनारायण जोशी से प्रतिलिपि करवायी।

३७४. तत्त्वार्थसूत्र टीका--पं० राजसङ्गा । पण् नं० ५ से ४८ । घा० १२४५ इक्च । माथा-हिन्दी (गदा) । विषय-सिद्धाला । र० काल ४ । ने० काल ४ । ग्रपूर्ता । वै० तं० २०६१ | । क्य मण्डार ।

३७४. तस्यार्थसुत्र भाषा — छोटीलाल जैसवाल । पत्र सं० २१ । घा० १३×४ है इक्का । भाषा हिन्दी पद्या विषय-सिंडान्त । र० काल सं० १६३२ आसीज बुदी वा ले० काल सं० १६४२ आसीज मुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० २४४ । इक्काबार ।

३७६. प्रति सं०२ ! पत्र सं०२०। ले० काल 🗴 । वे० सं०२६७ । 🖝 भण्डार ।

३७७. प्रति संट ३। पत्र सं० १७।। ले॰ काल 🗴। त्रै० सं० २६८। 🖝 मण्डार।

३७८., तस्वाश्रंसूत्र आया—शिकरणन्त्र । पत्र सं०२७ । घा० १०३४७ इक्का । आया—हिन्दी पद्य । विषय—सिदान्त । र०काल सं०१६६ । ले०काल सं०१६५३ | पूर्ण । वे०सं०२४म । क अण्यार ।

े ३७६. तत्त्वार्थसूत्र आपा'''''' । पत्र सं० ६४ । म्रा० १२४७ इक्का भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धांत । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वै० सं० ४३६ ।

३८०. प्रति सं०२ । पत्र सं०२ से ४६ । ले० काल सं०१८५० वैद्याल बुदी १३ । प्रपूर्ण । वे० सं० ६७ । इस भण्डार ।

३८१. प्रति सं०३। पत्र सं• १६ | ले० काल 🗴 । वे० सं०६८ । स्व भण्डार ।

विशेष--द्वितीय अध्याय तक है।

३ स्तर. प्रति संब्धार में के देशों के काल संग्रह्म कुछाए बुधी १४ । के संब्धार ३ स्त्री संब्धार । ३ स्त्री, प्रति संब्धार पत्र संब्धार के रुधाले काल ×ावेब संब्धार । वा सम्ब्रार ।

३८४ प्रति सं २ ६ । पत्र सं० ४६८ से ८१३ । ले० काल सं० 🗙 । सपूर्ण । के० सं० २६४ । क अण्डार ।

३८८. प्रतिसं०७ । पत्र सं०८७ । र० काल~ × । ते० काल सं०१६१७ । ते० सं०५७१ । व भण्डार ।

विशेष--हिन्दी टिप्पश सहित ।

३८६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे• सं० ५७४ । च भण्डार ।

विशेष---पं॰ सदामुखजी की वयनिका के प्रमुसार भाषा की गई है।

३८७. प्रति सं• ६। पत्र सं० ३२। ले० काल ×। वै० सं० ५७५। च अण्डार।

३---- प्रति सं ०१० ! पत्र सं० २३ । ते० काल 🗴 । वै० सं० १=४ । 藏 भण्डार ।

३-मध्.तत्त्वार्थेसूत्र भाषा'''''''''।। पत्र सं० ३३। प्रा० १०×६ हुं इखा भाषा-हिन्दी पद्यः। विषय-सिदास्त । र०काल × । से०काल × । अपूर्णः । वे० सं० मन्द ।

विशेष---१५वां तथा ३३ मे भागे पत्र नहीं है।

३६०. तस्त्रार्थसूत्र भाषा''''''''' । पत्र सं० ६० से १०८ । सा० ११×४ टुइका। भाषा⊸× । हिन्दी। र० नाल ∵ाले० नाल सं० १७१६ । सपूर्ण। नै० सं० २०६१ । अद्र मण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १७१६ मिति श्रावण मुदी १३ पातिसाह घोरंगसाहि राज्य प्रवर्तमाने इदं तत्वार्ष साहत्रं गुजानामंत्र प्रत्य जन बोधाय विद्वया जयवंता इतं साह जगन™™पठनार्थं बालाबोध वचनिका इता। किमर्थं सुत्रारणां। पूलसूत्रं सतीव गंभीरतर प्रवर्तत तस्य प्रयं केनापि न धवबुध्यते। इदं वचनिका दीपमालिका इता कव्यित अध्य इमां रठित ज्ञानो≔द्यातं अविष्यति। लिलापितं साह विहारीदास लाजांनची सावडावासी झामेर का कम्मेलय निमित्त लिलाई साह भोला, गोधा की सहाय ने लिली है राजधी जैतिकटुरानध्ये लिली जिहानाबाद।

> ३६१. प्रति संट २ । पत्र संट २६ । लेट काल संट १८६० । वेट संट ७० । इस अण्डार । विजय-हिन्दी में टिप्परण रूप में प्रपंदिया है ।

३६२, प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । र० काल × । ले० काल सं० १९०२ घासोज बुदी १० । ते० सं० १६८ । अरु अध्यार ।

क्तिय--टब्बा टीका सहित है। हीरासाल कासलीवाल फागी वाले ने विजयरामणी पांड्या के मन्दिर के वास्ते प्रतिलिंगि की थी।

३६३. त्रिभोगीसार—नेसिचन्द्राचार्य। पत्र सं०६६। बा०६६४४; इकाः प्राचा—प्राकृतः। विषय— सिद्धांत । र०काल ४ । ले०काल सं०१=४० सावन युदी ११। पूर्ता। वै० सं०७४ । स्व प्रच्यार ।

विभेष--सालवन्त टोंग्या ने सवाई जक्पुर में प्रतिलिपि की ।

३६४. प्रति सं०२। पत्र सं०५६। ले० काल सं०१६१६। प्रपूर्ण। वे० सं०१४६। च अच्छार। विवेष---वींड्रियालकी गोघा ने प्रतिलिपि की।

१६४. प्रति सं० २ । पम सं० ६१। ले० काल सं० १८७६ कालिक सुदी ४ । वै० सं० २४ । का सम्बाद । विमेय----अ० वीमकीर्ति के विष्य गोवर्द्धन ने प्रतिविद्यि की बी । ३६६. क्रिशंगीसार टीका—चिमेकलिंग् । पत्र सं० ४८ । बा० १२×४३ इक्का । कावा—संस्कृत । विषय— स्रिद्धान्त । र० काल × । ने० काल सं० १८२४ । पूर्ण । वै० सं० २८० । इ. सम्बार ।

विक्षेष--पं० महाबन्द्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की वी।

३६७. प्रति सं०२। पत्र सं० १११। ले० काल ×। बै० सं० २०१। क अण्डार।

३६८. प्रति सं २ ३ । पत्र सं० १६ से ६५ । ने० काल 🗵 अपूर्ण । वे० सं० २६३ । छ अण्डार ।

३६६, द्रॉलैंकालिकसूत्र्यःःःः। पत्र सं०१८ । झा०१०५ै४४४५ इक्च। भाषा–प्राकृत । विषय–झानस र०काल ४ । ले०काल ४ । झपूर्णी वै० सं०२२५१ । इस भण्डार ।

प्रेण्ण. दश**बैकाबिकस्य टीका** ^{..........}। यत्र सं०१ मे ४२ । प्राठ १०६×४६ ड**ळा**। भाषा संस्कृत । विषय–मामम । र० काल × । ले० काल × । सपूर्ण। वैठ सं० १०६ । छ अण्डार ।

४०**१. हरूपसंबर्—नेशियनहायार्थ**।यत्र सं०६। ग्रा०११×४२ दश्चा भाषा–प्राप्टन ।र० काल् ्र। ते**० काल** सं०१६३५ माच नुरी १०।पूर्णावे० सं०१-५। काभण्डार।

प्रशस्ति—संवत् १६३५ वर्षके माघ मासे शुक्लपक्षे १० तिथी।

४०२. प्रति सं २ र । पत्र सं० १२ । ते० काल × । वै० मं० ६२६ । श्रा भण्डार ।

४०३. प्रति सं०३ । यत्र सं०४ । ते० काल सं०१ थ४ । समाज बुदी १३ । बे० स० १३१० । स्त्र जण्डार ४०**५. प्रति** सं०४ । यत्र सं०६ से ६ । से० काल ×। स्रपूर्ण । वे० सं०१०२५ । स्त्र अण्डार । विकोष— सम्बद्धीका समिता।

४०४. प्रति संव ४। पण संव ६। तेव काल ×। वैव मंव २६२ ।श्च अवडार ।

४०६. प्रति सं०६ । पत्र सं०११ । ले० काल मं०१८२० । ते० सं०३१२ । इक भण्डार ।

विशेष---हिन्दी मर्थ सहित ।

४०७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८१६ भाइवा सुदी ३ । वे० सं० ३१३ । क अण्डार ४० च. प्रति सं० घ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८१४ पीय सुदी १० । वे० सं० ३१४ । क अण्डार । ४०६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८४४ श्रासना दृदि १ । वे० सं० ३१४ । क अण्डार । विचेष-संक्षिप्त संस्कृत टीका सहित ।

४१०. प्रति खं० १०। पत्र सं० १३। ने० काल सं० १८१७ ज्वेष्ठ बुदी १२। वे० सं० ३१५। क भण्डार।

४११. प्रति संट ११ । पत्र सं०६। ले० काल ×ा वे∙ स० ३१६। क भण्डार।

प्रहेर. प्रति संट १२ । पत्र सं० ७ । ते० काल x । वे० सं० ३११ । क भण्डार ।

विश्वेष---माबाओं के नीचे संस्कृत में छावा दी हुई है ।

४१**३. प्रति सं०** १३। पत्र सं० ११। ले**० काल सं० १७८६ ज्वेह**. बुकी स । वे० सं० स्६ । का अण्डार ।

विशेष---संस्कृत में पर्वीक्काची सब्द विके हुने हैं। टॉक में पार्ववाम पौरक्तव मे पं॰ हूंगरती के शिष्य पैनराज के पठनार्व प्रतिविधि हुई।

```
भारत प्रति संट १४ । पत्र संट १२ । सेट काल संट १८११ । वेट संट २६४ । सा अवसार के
           श्रम प्रतिकां देश । पत्र सं० ११ । ते० काल × । वे० सं० ४० । धा अण्डार ।
           विशेष-- संस्कृत में पर्यायवाची सब्द दिये हमे हैं।
           ४१६. प्रति सं० १६। पत्र सं० २ से का के० काल ×। अपूर्ण । वै० सं० ४२। घ भण्डार।
           ४१७. प्रति सं०१७ । पत्र सं०३ । ले० काल × । वै० सं०४३ । च भण्डार ।
           विशेष--हिन्दी टव्या टीका सहित है ।
           प्रश= प्रतिकां० १≒ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ३१२ । का मण्डार ।
           विशेष---संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं।
           प्रश्≥. प्रति सं० १६ | पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३१३ । ऋ मण्डार ।
           ४२०. प्रति संव २० । पत्र सं • १ । ते० काल × । वे० सं • ३१४ । क भण्डार ।
           प्र२१. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ३५ । ते० काल × । वै० सं० ३१६ । क भण्डार ।
           विशेष--गंस्कृत और हिन्दी धर्ष सहित है।
           ४२२, प्रति सं० २२ । पत्र सं० ७ । ते० काल × । वे० सं० १६७ । च मण्डार ।
           विशेष---संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं।
           ४२३. प्रति सं० २३ । पत्र सं० ४। ले० काल × । वै० सं० १६६ । आ अण्डार ।
            ४२४. प्रति सं० २४। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १८६६ द्वि० आवाद सूदी २। वे० सं० १२२ ३
छ भण्डार ।
           विशेष--हिन्दी में बालावबोध टीका सहित है। पं॰ बतुर्भु ज ने नागपूर ग्राम में प्रतिनिधि की थी।
            ४२४. प्रति सं० २४। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १७८२ भारवा बुदी ६। वे० सं० ११२। छ भण्डार।
           विशेष--हिन्दी टब्बा टीका सहित है। ऋषमसेन सतरगच्छ ने प्रतिलिपि की थी।
            भ्रम्बद्धः प्रति संब २६। यत्र संब १६। सेव काल 🗴 । वैब संब १०६। आ भण्डार ।
            विषोध---टब्बा टीका सहित है।
            भ्रष्टकः प्रति सं० २७ । पत्र सं० ४ । ले० काल × ) वे० सं० १२७ । स्न भण्डार ।
            ध्र-. प्रति सं०२ ⊏ । पत्र सं०१२ । ले० काल × । वे० सं०२०६ । ब्राप्त प्रव्हार ।
            विशेष---हिन्दी सर्च भी दिवा हमा है।
            ४२६. प्रति सं० २६ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० २६४ । का अपदार ।
            ४३०. प्रति संव ३०। पत्र संव ७। तेव काल ×। वेव संव २७४। द्वा प्रवहार ।
            ४३१. प्रति सं० ३१। पत्र सं० २१। ले० काल ×। वे० सं० ३७० । व्या प्रव्यार ।
            विवीय---हिन्दी अर्थ सहित है।
            ४३२. प्रति सं० ३२ । पत्र सं० १० । ते० काल सं० १७८४ पीय सूदी ३ । ते० सं० ४६४ । स्व अवहार ।
```

िवंत्रेय---प्रति टब्बा टीका सहित है। सीलोर नगर में पारवेनाथ चैत्यालय मे मूलसंघ के श्रंबावती पट्ट के अट्टास्क जगतकीत्ति तथा उनके पट्ट में अ० देकेटकीर्ति के धान्नाय के शिष्य मनोहर ने प्रतिक्षिप की थी।

४३३. प्रति संट ३३। पत्र संट १४। लेट काल ×। बैट संट ४८४। वा मण्डार।

विश्रोध--- २ पत्र तक द्रव्य संग्रह है जिसके प्रथम २ पत्रों में टीका भी है। इसके बाद 'सज्जनियसवस्त्रभ' मस्लिपेशाचार्य कृत दिया हुया है।

४३४८ प्रतिसं० ३४ । पत्र सं० ४ । ते० काल सं० १६२२ । वे० सं० १६४६ । ट अण्डार । विशेष---संस्कृत में पर्यायवाची शब्द विये हुये हैं ।

४२६. द्रव्यसंब्रह्यंति—प्रभाषम्द्र । पत्र मं० ११ । ब्रा० ११ ई.४५ दक्ष । भाषा-संकृत । विषय-सिद्धान्त । र० नाल × । से० काल सं० १०२२ मंगसिर बुर्वा १ । पूर्ण । वै० सं० १०५३ । क्य भण्डार ।

विशेष-महाचन्द्र ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

प्रदेखः प्रिति संव २ । पत्र संव २ ४ । लेव्काल मंग १९४६ पीष सुधी ३ । वेव संव ३१७ । कः भण्डार । ४३ म. प्रिति संव ३ । पत्र संव २ ते ३२ । लेव्काल संव १७३ *** । अपूर्णा वेव संव ३१७ । कः भण्डार विशेष—स्थानार्थे कनक्कीर्तिने फाणपुर में प्रतिमिधि की थी ।

४३.६. प्रति सं∙ ४ । पत्र सं० २ ४ । ले० काल सं० १७१४ डि० श्रावण बुदी ११ । वे० सं० १६⊏ । व्यापकार ।

विशेष—मह प्रति जीधराज गोदीका के पठनार्थ हमसी भावमा जोबनेर वालो ने सांगानर में लिखी।

४४७. द्रव्यसंग्रहकृत्ति — ज्ञादेव । पत्र सं० १०६ । या० ११५४.५ इक्ष । आया-संस्कृत । विषय− सिद्धान्त । र∙काल ४ । से॰ काल सं० १६३६ मासीज बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ६० ।

विश्वेदा—इस प्रत्यं को प्रतिलिपि राजाधिराज भगरंतदास जिजयराज मार्नाबह के शासनवान में शालपुरा में श्री वस्त्रप्रम चैत्यालय में हुई थी।

प्रशस्ति—कृतनाविषयो नवभदिने पुज्यनकाने सोमवासरे संवन् १६३५ वर्ष सासोज वदि १० शुभ दिन
राजापिराज अगवंतदास विजयराज मार्गानव राज्य प्रवर्तमाने मारुतुर वास्तव्यं क्षी चंद्रजजनाव चैत्यालये श्री मुजन वे
नंग्रान्नाचे वक्त त्याराणे सरस्वतीमच्छे श्रीहुं वह याणायांच्ये अ० धोषधानंदिवस्त्तवहुं भन्धां गुजवन्द्र
रेवास्तत्यहुं भन्धी विजयन्द्र वेवस्ततप्तृ मेन्धां प्रभावन्द्र वेवास्तिस्त्रव्य मंन्धी धार्माचन्द्रवेवास्तिस्त्रव्य मंन्धी स्वावन्तिस्त्रव्य मंन्धी स्वावन्तिस्त्रव्य मंन्धी प्रवर्तिस्त्रव्य मंन्धी स्वावन्तिस्त्रव्य मंन्धी विजयन्ति विकास्त्रवाम्त्रव्य केवास्त्रविष्ठा स्वावन्ति स्वावन्तिस्त्रव्य मार्गिति विकास विकास

सिद्धान्त एवं वर्षा]

४४१. प्रति सं∘ २ । पत्र सं∘ ४० । ले० काल × । वे० सं० १२४ । इस भण्डार । ४४५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १८१० कालिक बुदी १३ । वे० सं ३९३ । क

Marie |

४४३. प्रति सं०४ । पत्र सं०६६ । ले० काल सं०१८०० । वे० सं०४४ । 🕱 भण्डार ।

४४४. प्रति सं० १ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १७६४ श्रवाढ बुदी ११ । वे० स० १११ । इद अथकार ।

४४४. द्रव्यसंसहटीका """। पत्र सं० ५८ । ब्रा० १०४४) इश्रा । भाषा-संस्कृत । र० काल 🗙 । तेर काल सं० १७३१ माथ बुदी १३ । वै० सं० ५१० । का मण्डार ।

विशेष--टीका के प्रारम्भ में लिखा है कि बार नेनिकार ने मालवदेश की भारा नगरी में नीजदेव के सामनवान ने श्रीपाल संदेलदवर के आश्रम नाम नगर से <u>मोमा</u> नामक श्रावक के लिए द्रध्य-संग्रह की रचना की थी।

४४६. प्रति सं०२ । पत्र सं०२४ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण ।वे० सं० ६४६ । 🖦 भण्डार ।

विर्णप--टीका का नाम बृहद् द्रव्य संग्रह टीका है।

४४.५. प्रति संट ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७७६ पीप सुदी ११ । वे० सं० २६४ । का भण्यार । ४४.८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६७० भाववा सुदी ४ । वे० सं० ६४ । सा भंवार ।

विशेष—नामपुर निवासी संबेलबान जातीय सेठी गौत्र वाले सा <mark>ऊदा की भावां उत्स्वदे ने</mark> पत्य बतोधा-पन में प्रतिलिपि कराकर बढाया।

प्रप्तरः प्रति सट ६६। ले० का० सं० १६०० चैत्र बुवी १३। वै० सं० ४५। **घ भण्डा**र।

४.४०. द्रव्यसमह आया """" पत्र सं०११ । प्रा०१०६ ४४६ इक्का । भाषा-स्हिन्दी। विषय— सिदान्त। र०काल × । ते०काल स०१७७१ सावस्य बुदी १३ । पूर्णा | वे०सं० ६६ । ऋस्र मण्डार ।

विशेष-हिन्दी में निम्न प्रकार अर्थ दिवा हुन्ना है।

गाथा--दब्ब-संगहमिरां मुरिएरणाहा दोस-संवयचुरा मुद्रपुष्णा ।

संध्येतु तत्तुनुत्तधरेता सेमिनंद मुसिसा भसियं जं।।

पर्य- भो मुनि नाथ ! भो पंडित कैने हो तुम्ह दोष संचय नुति दोषिन के खुसंचय कहिए तमूह तिनतें चुरित हो । नया नेमिचंद्र मुनिना मणिलं । यन् द्रव्य संवह इसं प्रत्यक्षी भूता में खुही नेमिचंद पुनि लिन खु कहारी यह द्रव्य सपह वास्त्र । ताहि सोधयंतु । ती थी हुंकि कि सी हूं। तनु नुत्त धरेला तन् कहिये चौरों ती सूत्र कहिये । सिदात ताकी खुधारक हों । खाल्य बास्त्र किर संयुक्त हो खुनेनिचंद्र मुनि तेन कहारी खुद्रव्य संग्रह वास्त्र ताकी औ. पंडित सोधी ।

इति भी नेमिचंद्राचार्य विरचितं द्रव्य संग्रह बालबीध संपूर्ण।

संबद् १७७१ बाकि १६३६ प्र० भावसा मासे कृष्णपने सुवोदस्यां १३ बुधवासरे लिप्पकृतं विद्यावरेस स्वातमार्थे ।

४४१. प्रति सं≎ २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २६३ । व्यू अण्डार ।

४४२ प्रतिसंट ३ । पत्र सं०२ से १६ । ले० काल सं०१ ८३५ ज्येष्ठ सुपी ८ । वे० सं०७७४ । ऋ अण्डार ।

विशेव--हिन्दी सामान्य है ।

४४६, प्रति सं० ४) पत्र सं० ४ = । ले० काला सं० १८१४ मंगसिर बुवी ६ । वे०सं० ३६३ । का अध्वार विशेष—धर्मार्थी रामचन्त्र की टीका के प्राधार पर भाषा रचना की गई है ।

४४.५४. प्रति सं० ४. । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १४.५७ ब्रासोज बुदो ⊏ । वे० सं० ⊏⊏ | सामण्डार ४४.४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ४४ । राजण्डार ।

प्रेश्च६. प्रति सं०७। पत्र सं०२७। लेश्काल सं०१७४३ श्रावण बुदी १३। वेश्सं०१११ । छ। सम्बार।

> प्रारम्भ — बालामानुरकाराव रामकन्द्रं ए सभाषया । द्रस्यसंग्रहमाश्यस्य व्यास्यानेको वितन्यते ।।१॥ ४४७. द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतेषमर्थि । पत्र सं० १६ । बा० १२×४६ दब । भाषा—पुत्रराती ।

निर्पि हिन्दी । विवय-छह द्रव्यों का वर्शन । र॰ काम 🗴 । ले॰ काल सं॰ १८०० माघ बुदि १३ । वे॰ मं॰ २१/२६२ 👼 मच्दार ।

४४८. द्रव्यसंग्रह आया—पद्मालाल चौधरी। पत्र सं०१६। मा० ११५८३ई इक्का आया–हिन्दी। विषय—स्क्रह स्थ्यों का वर्षात । र० काल ४ । के० काल ४ । पूर्ण। वे० सं०४२। घ्र अध्यर।

४४.६. द्रव्यसम्ब्र आया— जययन्द ह्यावड्डा। पत्र सं० ११ । मा० ११ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$ इंव । भाषा-हिन्दी गया। विषय- खद्द क्ष्यों का वर्शना र० काल सं० १८८३ । सावन दुदि १४ । ले० काल \times । पूर्ण। वै० सं० १०१२ । इस मण्यार।

४६०. प्रति सं०२ । पत्र सं०३६ । ले० काल सं०१८६ साबगाबुदी १४ । वे० सं०३२१ । क भण्यार ।

> ४६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४१ । ले० काल ४ । वे० सं० ३१ ∈ । कः मण्डार । ४६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० १९५८ । ट भण्डार । विवेद—पत्र ४२ के बाने प्रथमसंबद्द पद्य में हैलेकिन वह ब्रपूर्ल है ।

४६२. द्रव्यसंब्रह आचा—जयवन्य छावडा। पत्र सं० ४। मा० १२४५ इझ। आया हिन्दी (पक्ष) विचय-छह इन्यों का वर्शन। र० काव \times । ते० काव \times । पूर्ण। वे० सं० ३२२ ; क सच्चार।

४६६. प्रति सं०२। पत्र सं०७। ते० काल सं०१६३६। वे० सं०३१८। क्रुन्नास्ताः। ४६४. प्रति सं०३। पत्र सं०३०। ते० काल सं०१८३२। वे० सं०३१८। क्रुन्नप्दार। विषेष--- हिन्दी गठ में भी सर्व दिया हुसा है।

४६४. प्रति सं०४ । पत्र सं०४ । ले० काल सं०१८ ए० कालिक बुदी १४ । वे० सं० ५६१ । च मण्यार ।

विशेष--पं • सदासूस कासलीवाल ने जयपुर में प्रतिकिपि की है ।

प्रद्द, प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४७ । ते० काल × । वे० सं० १६४ । स्तु सम्बार । विशेष---हिन्दी गद्य में भी प्रयं दिया गया है ।

४६७. प्रति सं०६। पत्र मं०३७। ले० काल ×। वे० सं०२४०। स्क्र मण्डार।

४६६. ब्रुट्यसंग्रह् आवा—वावा दुक्तीचस्ट् । पत्र सं० ३६ । ग्रा० ११×५ इक्ष । नावा-हिली गण । प्रियस-इक्र डब्यों का वर्णन । र० काल मं० १६६६ बासोज मुदी १० । ले० काल × । पूर्व । वे० सं० ३२० । क्स अच्छार ।

विशेष--जयचन्द खाबड़ा की हिन्दी टीका के प्रमुसार बाबा दुलीचन्द ने इसकी दिल्ली में भाषा लिखी थी।

४६६. ब्रुब्यस्यक्ष्य बर्णनां पत्र मं∘ ६ ते १६ तक । ब्रा० १२४५ इक्का । जावा—संस्कृत । विषय-खब्र् टब्यों का लक्ष्या वर्णना । र० काल ४ । ले० काल सं० १६०४ सावन बुदी १२ । ब्रुपूर्ण । वे० सं० २१३७ । ट प्रंबार ।

 χ 90. धवल \cdots िष्ण । यत्र सं०२०। धा०१३ χ ० दश्चा। बाया–प्राकृत । विषय-जैनासम । र० कान χ । ले॰ कान χ । अपूर्ण। वे॰ सं०३ χ ०। इस भण्डार।

प्रअ.९. प्रति सं०२ । पत्र सं०१ में १वा ने॰ काल × । प्रपूर्णा वै० सं०३ ४१ । कृत्रकडार । विजेष—संस्कृत में सामान्य टीका भी दी हुई हैं।

४७२. प्रति सं २ ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३५२ । क भण्डार ।

४७३, सन्दीसूत्रः'''''''''''पत्र सं०६ । ग्रा॰ १२४४६ ईचा त्राणा-त्राकृत । विदय-ग्रामन । र० काल ४ । ने० काल नं० १५६० । दे० मं० १६४६ । ट वण्डार ।

प्रशस्ति—मं० १५१० वर्षे श्री वरतराज्ये विजयराज्ये श्री जिनवन्त्र मृरि पं० नवसबुद्रगस्ति नामा देश ? नस्यु शिष्में वी. पुरस्ताम गरिएभि निवेखि ।

विशेष---पं • महाचन्द्र के पठमार्थ प्रतिशिपि की गयी थी।

४७४. प्रति संब २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८२३ । पूर्वा। वे० सं० १०४० । आयु अध्वतर । विलेष— क्रियों में पर्यविषाहमाहै।

प्रथ६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ ते ५ । ले० काल ४ । झपूर्ण । वै० सं० १७६ । वा अध्वार । विशेष—किनी में सर्व दिया हवा है ।

४७७. नवतस्य मकर्या—सस्प्रीवक्षभ्र । पत्र सं० १४ । बा० ६५/४५ हवा । माया–हिल्दी । विषय– १ तस्यों का वर्षान । र० काल सं० १७४७ । ते० काल सं० १००१ । वै० सं० । 2 भव्यार ।

विकेष--दो प्रतियों का सम्मिक्स है। राजवचन्द शस्तावत ने शस्त्रिसंह के शासनकाल में प्रतिसिधि की ।

प्रथम, लहुबुर्स्सक्यों व """" । पन सं∘ १,। पनः महै×४१ रखाः भक्ताः हिस्साः विषय-जीव क्षजीव प्रावि ६ तस्यों का वर्णनः। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्णः। वे० सं० ६०१। कृषण्डारः।

विशेष--जीव श्रजीव, पूष्प पाप, तवा श्राधव तस्व का ही वर्शन है।

१९५६. तजनरात वचिका — पङ्गाखाल चौघरी। पत्र सं० ५१। मा० १२४६ इ.स.। आवा हिन्दी। विषय–६ तत्त्वों का वर्णतः। र० कृत्वः सं० १६२४ मायादः सुदी ११। ते० कालः ⋋ापूर्णः। वे० सं० ३६४। क अध्यरः।

प्रस**ः नवतक्वविवार**''''''''''''। वत्र सं० ६ सं २४। झा० १४४ रखा। भाषा हिन्दी। विषय–६ तस्यों का वर्णन । र० काल ४ । के० काल ४ । धपूर्ण | वै० सं० २४६। ञा भण्डार।

% परि. निजस्युति—जयतिस्रकः । पत्र मं० ४ ते १३ । धा० १०×४ (ड#ा। भाषा संस्कृत । कियस– सिकान्त । र०कान्त × । ते० कान् × । धपूर्ण । वे० तं० २३१ । ट भण्डार ।

विशेष---श्रन्तिम पुष्पिका--

इत्यामिकाचार्यश्रीजयतिककरचितं निजस्तृत्वे वंध-स्वामित्वाश्यं ३कररामेनश्चतुर्थः । संपूर्णाट्वं ग्रन्थः । ग्रन्वाग्रन्थः १६० त्रमार्थाः केतरतिरां श्री तयोगच्छीयः पंडित रत्नाकर पंडितः श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री सीभाग्य-विजयगिषु तन्त्रिक्यः वृक्ष्मस्विवजयेवः । पंक्षणाताल ऋषभवन्यः कां प्रस्तकः है ।

अन्न २. निकासमार-मा० कृत्यकुन्य । पत्र सं० १००। मा० १०६/४६ दश्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धांत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४३ । घा भण्डार ।

विश्लेष - यदि संस्कृत टीका सहित है ।

प्रदर्श नियससार टीका—गद्मप्रभसलचारित्रेव । पत्र नं० २२२ । मा० १२६्×७ इक्ष । भाषा— संस्कृत । दिवस-विद्यासा । र० काल × । ले० काल सं० १८३८ मात्र दुवी १ । पूर्णी | वे० सं० ३व० । क भण्डार ।

४८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५७ । लेव काल संव १०६६ । वेव संव ३७१ । वा अण्डार ।

प्रस्थ. निरवाससीसूत्रः**** । पत्र सं० १३ से ३६ । आ०१०×४ इका। आवा–आकृत । विषय्--प्रावस । र० कास × । से० कास × । सपूर्ण । वे० सं० १६६ । च प्रण्यार ।

४५६. पञ्चपरावर्तनः ""। पत्र मं० ३। बा० ११४६ई दक्का। भाषा—संस्कृतः। विषय-सिद्धान्तः। १० काल ४। ते० काल ४। पूर्णः। वे० सं० १०३०। क्रा ब्राह्माः।

विशेष---जीवों के द्रव्य क्षेत्र झावि पञ्चपरिवर्तकों का वर्णत है।

१९७५, **प्रति** सुंद्र २ । यत्र सं० ७ । ले॰ काल 🗴 । हे॰ सं० ४१३ । **क्र** आपकार ।

४६६६ - पद्मोतंत्रह् — म्हा० नेक्षिमान्द्र । प्रत्र चं० २६ से २४६ । झा० १८८४६ इस्र । आया–आकृत संसद्भ । विक्रय-विक्रमण्ड । र० कुल ४ । क्षेत्र ४ । क्रमुक्स । वे० सं० ४०० । क्रम्यमुक्त ।

ब्रिद्धास्त एषं चर्चा]

प्रस्थः प्रतिसंश्या पृत्र संश्वर । तेश्काल संश्वर कृतिक बुदी सावेश संश्वर । आर सण्डार ।

> विशंष--ज्वयपुर नगर में रलज़्ज़ियाणि ने प्रतिहिति की श्री। क्की क्की हिनी वर्ष मी विवाहमा है। प्र8.c. प्रति सं० ३। पत्र सं० २०७। ते० काल 🗵 । वे० सं० १०६। व्य जण्डार।

प्रदर्श, पञ्चासंबहकुत्ति— व्यवस्यव्यव्दः । पत्र सं० १२० । बा०१२४६ इचा । बादा—संस्कृत । विषय— सिदात । र०काल ४ । ले०काल ४ । बसूर्या | वे०सं० १०८ । व्यवस्थार ।

> विजेष---नवम अधिकार तक पूर्ण । २४-२४वां पत्र नवीन सि**का हुमा है** । ४६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०६ से २४० । से० काल × । झपूर्ण । वे० सं० १०६ ऋ अध्वार । विजेष--केवल जीव काण्ड है ।

४६३. प्रति सं०३। पत्र सं०४५२ से ६१४ । ते० काल ×। अपूर्णा वे० सं०१९०। का सम्यार। विशेष-कर्मकाच्य नवमां प्रधिकार तक । बुलि-रचना पार्म्बनाय मन्दिर त्रित्रकूट में साथु तांगा के सह-दोग ने की थी।

प्रदर्भ प्रति संब्धः। यत्र संब्धः मध्ये ७६६ तकः। लेव काल संब्धः कृष्णुकः सुदी २। त्रपूर्णः। वैक संव्यवस्थान

विशेष---बुन्धावती में पार्श्वभाष मन्दिर में धीरंगश्राष्ट् (धीरंगजेब) के शासनकाल में हाडा वंशीत्पन्न राव भी मार्गबह के राज्यकाल में प्रतिक्षिप **इर्ष** थी।

४६६. आहि सं० क। पत्र सं० ७४ ते २१४ । ले० काल × । यपूर्ण । ते० सं० ६४ । जा भण्यार । ▼ ४६६. पंचसंगढ टीक्का— व्यक्तिसदाति । पत्र सं० ११४ । सा० ११४५६ दश्च । व्यक्ता संक्ता । विपय-सिदान्त । र० काल सं० १०७३ (सक्) । ते० काल सं० १६०७ । पूर्वा । ते० सं० २१४ । व्यापदार ।

विशेष---प्रत्य संस्कृत वद्य और पद्य में सिका हुआ है। प्रत्यकार का परिषय निम्न प्रकार है।

श्रीमाषुरस्यामनषषु तीनां संबोऽनवद् वृत्त विसूचितानाम् । हारो मौस्मानिवतापहारी सूत्रामुसारी स्वीसरिव सुन्न: ।। १ ।। साधवसेनगर्गीगरानीयः युद्धतमीऽजित तत्र जिनीयः।
प्रविस्त सरवरतीय सर्थाकः श्रीमित सियुपतावकर्मकः।। २।।
विष्यस्तरत्य महासनीऽनितयतिमोशाविनामग्रगी।
रेतच्छास्त्रमध्येषकःमैतमितिप्रस्थापनापाइतः।।
वृत्रारस्मरवंतिवारग्रह्याः मर्गापुर्वस्थापेषकारोवतः।
दुव्रारस्मरवंतिवारग्रह्याः भीतीतमोश्रुतमः।। ३।।
यवत्र तिद्यात्मत् विरोधियद्य म्राह्म निराह्मत्य कलं पवित्रं।। ४।।
प्रकृति लोका स्नुपकारियमार्व निराह्मत्य कलं पवित्रं।। ४।।
प्रमत्य केवलमर्थनीयं यावस्थितं तिष्ठतिपुक्तपंत्तौ ।
तावदरायाविरमणास्त्रं स्थाप्तुकं कर्मनिरासकारि।।
विस्तात्मत्रिकंत्रमं सहस्य कावविद्यः।
मस्त्रिकाणुरे जातिमयं शास्त्रं मनोरमं।। १।।
इत्यीमतानिकृता नैस्तार तथानाव्यः।

২০০. प्रति सं०२ । पत्र सं०२ १ । ने० काल मं० १७६६ माघ बुदी १ । ने० नं० १०७ । इस मण्डार ২০१. प्रति सं०२ । पत्र सं०१ ५० । ने० काल मं०१७२४ । ने० सं०२१६ । इस मण्डार । विजेष— जीर्लमिति हैं।

५०२, प्रकासंबद्ध टीका—। पत्र सं०२६। आ०१२ $imes १२ \times 1 imes 1$ काल imes 1 ले० काल imes 1 काल imes 1 ले० काल imes 1 अपूर्ण। वे० सं०३६६। का अध्यार।

≵०३. पंचासितकाय— कुन्यकुन्दाचार्य। पत्र सं० ५३ । प्रा० ६८५ ४ इत्र । भाषा प्राकृत । विषय– सिद्धन्त । र०काल ⊀ । ले० काल सं० १७०३ । पूर्ण । वे० नं० १०३ । क्रा भण्डार ।

४०४. प्रति सं० २ | पत्र मं० ४३ | ने० काल मं० १६४० | वे. मं० ४०४ | क्ष भण्डार |
४०४. प्रति सं० ३ | पत्र मं० ४३ | ने० काल मं० १६४ । वे० मं० ४०३ | क्ष भण्डार |
४०६. प्रति सं० ४ | पत्र मं० १३ | ने० काल मं०१६६६ | वे० मं० ४०३ | क्ष भण्डार |
४०७. प्रति सं० ४ | पत्र मं० १३ | ने० काल ४ | वे० मं० ३२ | क्ष भण्डार |
४०७. प्रति सं० ४ | पत्र मं० ३२ | ने० काल ४ | वे० मं० ३२ | क्ष भण्डार |
४०७. प्रति सं० ४ | पत्र मं० १६ | ने० काल ४ | वे० मं० १६७ | क्ष मण्डार |
४०६. प्रति सं० ७ | पत्र मं० १६ | ने० काल ४ | वे० मं० १६७ | क्ष मण्डार |
४०६. प्रति सं० ७ | पत्र मं० ११ | ने० काल मं० १७२४ घाषाद वृदी १ | वे० मं० १६६ | मृ भंदार |

४१०. प्रति सं० ६। पत्र सं० २५ | ते० काल x । घपूर्ण । वे० सं १६६ । क मण्डार ।

४११. पंचास्तिकाय टीका—कासृतचन्द्र सूरि । पत्र सं० १२४ । धा० १२६८७ ६ छा । मावा संस्कृत विषय-सिद्धान्त । र० काल 🗴 । ने० काल सं० १९३६ आवरा बुदो १४ । पूर्ण । वै० सं० ४०५ । 🖝 अच्छार ।

४१२. प्रतिसंट २ ! पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १४८७ बैद्याला मुदी १० । वै० सं० ४०२ । क अपनार ।

४१३. प्रति सं०३ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । ले० सं० २०२ । चामण्डार ।

४१४. प्रति सं ८ ४ । पत्र मं० ६० । ते० काल मं० १६४६ । वै० मं० २०३ । व अण्डार ।

४१४. प्रति संc ४ | पत्र मं० ७४ । ने० काल सं० १४४१ कालिक बुदी १४ । वे० सं० । व्य भण्डार ।

प्रशस्ति—चन्द्रपुरी वास्तस्ये सब्धेलवालान्यये सा. फहरी भागी घमला तथोः पुत्रवाषु तस्य भागी धनीमरि नाम्या पृत्र मा. होजु आर्था सुनस्त तस्य दामाद सा. हंमराज तस्य भ्राता देवपति एवै पृत्तक पंचान्तिकायात्रियं लिखायां कृतकृपरागस्य कर्माध्यार्थं दर्तः ।

४१६. पद्मास्तिकाय भाषा—पंठ डीरालम्द । पत्र सं० ६३ । मा० ११४८ दक्ष । माषा—हिन्दी पद्य । विषय–निद्रान्त । र० काल स० १७०० ज्येष्ठ सुदी ७ । ने० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ४०७ । इक प्रव्हार ।

विशेष---जहानावाद में बादजाह जहांगीर के समय में प्रतिनिधि हुई।

४९७. पद्मास्तिकाय भाषा—पांडे हेमराज । पत्र सं० १७५। घा० १३४७ दश्च । जाषा—हिन्दी गरा । विषय—पिडात । र० काल ८ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ४०६ । क भण्डार ।

४१८. प्रति सं०२। पत्र सं०१३५। ने० काल सं०१६४७। वे० सं०४०८। क अण्डार।

४१६. प्रति सं० ३। पत्र मं० १४६। ने० काल ×। वै० सं० ४०३। क्र भण्डार।

४२०. प्रति संव ४ । पत्र मं० १४० । ते० काल सं० १६४४ । वे० सं० ६२० । वा भण्डार ।

४२१. प्रति सं ० ४ । पत्र सं० १४४ । ले० काल सं० १६३६ ब्रायाद सुदी ४ । वे० सं० ६२१ । स्व भण्डार

४२२. प्रति संट ६ । पत्र सं० १३६ । र० काल × । त्रे० संट ६२२ **स** भण्डार ।

४२२. पद्धारितकाय आषा— बुधजन। पत्र सं० ६११ । घा० ११४४ है इ**व्र**ा प्राधा–हिन्दी गछ। विषय–सिद्धांत । र० काल सं० १८६२ । ले० काल ४ । दे० सं० ७१ । स्कृषण्डार ।

४२४. पुरस्यतस्यचर्षा— । पत्र सं०६ । झा० १०६४४६ इक्काः भाषासंस्कृतः । विषय–सिद्धान्तः । र०काल सं०१००६१ । ले०काल ४ । पूर्णः । वै०सं०२०४१ । ट मण्डारः ।

. १२.४. बंध **उदय सत्ता चौपई-भीकाल** । पत्र सं० ६ । मा० १२²८५ ६ इब । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-निदान्त । र**० काल सं० १८**०१ । ते० काल 🗶 । वे० सं० १९०५ । यूर्स । ट अण्डार ।

विशेष----प्रारम्भ ।

विमल जिनेश्वरप्रसामु पाय, मुनिसुतत कूं सीस नवाय । सतकुरु सारव हिरवे थरू, बंध उदय सत्ता उक्कं ॥ १॥ क्रान्तिम - इंप उद्दे बसा बसारी, प्रन्य विभंगीसार ते जाएि।

हुत धचुत सुधा रतु नाया, अरथ बुदि मैं कर्ष बनाया। १२ ।।
साहित राम पुमक बुध वर्ष, सगर पण्डेवर माही लही ।
पुम उत्तरत वर्षी के नाहि, आवक कुस गंगवाल कहाति ।। १३ ।।
काल पास के पंकित सबी, नैरावनक के विच्या म थयो ।
नगर पण्डेवर नाहि गयो, सादिनाय पुम वर्षाया दियो ।। १४ ।।
पाउकर्स ने विच्या अयो, सादिनाय पुम वर्षाया दियो ।। १४ ।।
सीतल जिनक् करि परियाम, स्वपर कारणा ते कहे बनाया ।। १४ ।।
सेवत् सकरासे का कहा, स्वयर सवसासी उत्तर लहा।।
पत्रत सुरात प्रम सब्स होस, पुन्य वंथ बुधि वह होय ।। १६ ।।
।। इति भी उर्दे कंथ मना समामाः।।

इससे आगे चौबीस ठाएा की चौपाई है--

प्रारम्भ---देव धर्म गुरु ग्रन्थ पद बंदौँ मन वच काय ।

ग्रुश्याद्यानि परिग्रन्थ की रचना कहू बग्गसा।

श्चम्तिम-इह निधि जस गुणस्थान की रचना वरणी सार।

भूल चूक जो होय तो, बुधिजन लेहु मुधार ा

छठि मंगसिर कृष्ण की लावा नगर मकार ।

उगरगीसे ग्रह पाच के साल जाय श्रीलाल ।।

।। इति सम्पूर्ग ॥

४०६. अगवदीसूत्र-पत्र सं० ४०। घा० ११×१५ दश्च । भाषा-प्राप्टन । विषय-धार्यम । र σ संत्र \sim हे ले काल \times । पूर्ण । वे० सं० २२०७ । क्यू अण्डार ।

४२७. **भावनिर्मगी—नेमियन्त्रवार्य** । पत्र मं० ५१ । का० ११/५ इ**छ । भावा प्रा**तृत । नियय-सिदात । र० काल × । ते*० काल* × । पूर्ण । वे० सं० ५५६ । क भण्डार ।

विशेष--प्रथम पत्र द्वारा लिखा गया है।

४२.इ. प्रति सं०२ । पत्र सं० ४४ । ले० काल मं० ६०११ माथ मुदी ३ । वे० सं० ५६० । कः भण्डार । विजेव----पं० रूपकन्त ने सन्य की प्रतिलिपि जसपुर में की थी ।

६२६. आबद्धियका आया—। यत्र सं• २१८ । या॰ १२ $, J_2^*$ । आया-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । १० काल \times । ते॰ काल \times । पूर्वी । वे॰ सं॰ १६७ । क्र-भण्डार ।

१६०. सर्यक्ररंडिकाः****। पत्र सं० म । मा० १६ $\times v_0^2$ हक्ष १ आया-प्राकृत । विषय-सिद्धन्त । १० काल \times । तेन काल प्र । पूर्वी । वेन सं० ६म ।

विशेष--शावार्य शिवकोटि की झाराधना पर अमितिगति का टिप्परग है।

४२१. सार्वाखा व गुर्खस्थान वर्धन—। पत्र सं० ६–४४ । घा० १४८४ ६%। भाषा प्राकृत । विषय— मिद्रात । र० काल ⋉ । से० काल ⋉ । घपूर्खा । वै० सं० १७४२ । ट मण्डार ।

४३२. आर्थीणा समास-। पत्र सं० ३ सि १६। मा० ११६ \times १. इक्का भाष-।त्राहतः । विषय-विद्धान्त र०काल \times । सपूर्णा विषय-रिक्षान्त प्रथमित अध्यार ।

विशेष--संस्कृत टीका तथा हिन्दी ग्रर्थ सहित है।

. १३३. रायपसेसी सूत्र—। पत्र सं० १४३ । प्रा० १०४४ ी स्था । भाषा–प्रकृत । विषय–प्रागम । र० कान ४ । ते० काल सं० १७६७ प्रासीज सुदी १० । वे० सं० २०३२ । ट मण्यार ।

विशेष—पुत्र राती मिथित हिन्दी टीका सहित है। सेमसागर के विष्य लाससागर उनके विष्य सक्स्यसागर ने स्वपटनार्थ टीका की। गायाओं के उपर छाया वी हुई है।

४२४. स्निधसार—नेभिषण्डायार्य । पण सं० १७ । मा० १२४४ इक्का आया-आकृत । विषय-भिज्ञान । र०काल ४ । से०काल ४ । अपूर्ण । वे०सं० ३२१ । च अण्डार ।

विशेष--- ५७ में भागे पत्र मही है। संस्कृत टीका सहित है।

४३४. प्रति सं• २ । पत्र सं० ३६ । मे० काल × । ब्रपूर्ण । तै० सं० ३२२ । **स् अण्डार** ।

४६६. प्रति सं० ३ | पण सं० ६५ । ले० कोल सं० १८४६ । ते० सं० १६०० । ट भण्डार ।

४६७. लिक्सिसर टीका—। पत्र सं०११७ । स्रो०११×६ इखः । भाषा संस्कृतः । विषय-सिद्धान्तः । र०नोन × । ने०काल सं०१६१६ । पूर्वाविक सं०६३६ । क्र. भष्टारः ।

४२ ≒. **सब्धिसार आपा--पं≎टोडरसला।** यप नं॰ १००। घा॰ १३×८ द**ला। आपा-**हिन्दी। विषय-पिठात। र० कास ×। ले॰ काल १६४६। पूर्णावै० सं॰ ६३६। क जण्डार।

४३६. ब्रसिसंट २ । पत्र सं० १६३ । ले० काल × । वै∙ सं० ७५ । वा भण्डार ।

४४७. **लब्धिसार सप्यासार भाषा**—पंठ टो**डरम**ला । पत्र सं० १०० । झा० १४ \mathbf{x} ६ $\frac{1}{4}$ इ**छ** । बाबा—हिनी गर्त । विषय–सिद्धान । र० कल \mathbf{x} । ते० काल \mathbf{x} । पूर्ण । वे० सं० ७६ । हा अध्डार ।

४४१. **सञ्ज्यार ज्यामार संदष्टि—पं**ठ टोडरमल । पत्र सं० ४६। मा० १४४७ इ<u>जा माणा</u> हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १८२६ वैत बुदी ७ । वे० सं० ७७ । सामग्रार ।

विमेच-कासूराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

४८४-६. विषासस्त्रम् — । प० सं० ३ से ३४ । सा० १२ \times ४६ इखा। आस्या । विषय-स्थाय । २० कल्प \times । ते० काल \times । स्रपूर्ण। वे० सं० २१३१ । ट अच्छार ।

४४२. विशेषसत्तात्रिमंती— बा० नेमिचन्द्र । यम तं०६। बा०११४४५ देखा भाषा— त्राकृत । विषय–विद्यात । र०कास ४ । ते० काल ४ । पूर्वावै० तं०२४२ । वद सर्वार । ४४४. प्रति सं०२ । पत्र मं०६ । ले० काल × । वे० सं०३४६ । द्याभण्डार

४४४. प्रति सं०३ । पत्र मं०४७ । ते• काल सं०१६०२ घासीज बुदी १३ । धपूर्ला। वे० मं०६५४ । इस भण्डार ।

विकोष—-३० मे ३४ तक पत्र नहीं हैं। जयपुर में प्रतिलिपि हुई।

४४**४. प्रति स**० **४।** पत्र सं० २०। ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० ८४४ । ऋ भण्डार ।

विशेष--केवल ग्राधव जिसकी ही है।

४४७. प्रति संट ४ । पत्र संट ७३ । लेट कोल ⋉ । श्रपूर्ण } वेट संट ७६० । इस भण्डार ।

विशेष--दो तीन प्रतियों का सम्मिश्रगा है।

विषोष-पट लेज्याका पर दोहे हैं।

४५६. पर्च्याधिक शतक टीका—राजरंसोपाच्याय । पत्र मंऽ ३१। बा० १०६ै. ४ इक्षा । भावा संस्कृत । विषय—मिद्रात । र० काम मं० १५७६ भादवा । न० कान मं० १५७६ घ्रयारन दृवी ६ । पूर्णा । वे० मं० १३५ । च भण्वार ।

विशेष----प्रजस्ति निम्न प्रकार है।

धीमज्जडकढाभिक्षो गोत्रे गौत्रावर्तमिके, सुधावकिशरारत्न देल्हास्थो समभूतपुरा ।। १ ।।

स्वजन-जनभिननद्रस्तत्तनूजो वितंद्रो, विवुधनुमुदनन्द्रः सर्वविद्यासमुद्रः ।

जयित प्रकृतिभद्रः प्राज्यराज्ये समुद्रः, सल हरिसा हरीन्द्रो रायचन्द्रो महीन्द्रः ॥ २ ॥

तदंगजन्माजिनजैनभक्तः परोपकारव्यसनैकाकः सदा सदाबारविचारविज्ञः सीहगराज सुकृतीकृतजः ॥ ३॥ श्रीमान-अपानकतप्रदीप, समेदिनी सङ्गाठ पाननीय । नेवाहसंख ग्रग्नादचान, तत्वपुरज्वनग्राणप्रधान ॥ ४॥

भार्यावद्यपुर्गिरार्या करमार्द्रपतिवता, कमलेव हरेस्तस्य याम्त्रामागे विराजते ॥ ६ ॥

तन्तुत्रोभखचंडोतित भव्यस्वयद्भ इवापरः निर्धयो निरक्तंत्रश्च निःकुरंग. कलानिधिः । नन्यान्यर्थनया नया विरिचना श्रीराजहंसाभियोषाच्यायं गत्यष्टिकम्य विमलाकुनिः सिधूनां हिता । वर्षे नंद पुनिवुषंद्र सहितं सावाच्यमाना बुषे । मामे भारपदे सिकंदरपुरे नंद्याब्विरं भूतने ॥ ७ ॥

स्वच्छे अरतरगच्छे श्रीमार्ग्यनदत्तसूरिसंताने । जिनतिसक्सूरिमुगुरो शिष्य श्रीहर्षनिलकोऽश्रुत् ॥ ८ ॥ तन्त्र्यस्येन कृतेर्य पाठकमुख्येन राजहंसेन षट्ट्यधिकसत्तप्रकरग्गटीका नंग्रास्थिरं मह्या ॥ ६ ॥

इति वच्छविषकशतप्रकरगृस्य टीका इतां श्री राजर्हसोपाध्यायैः ।। समयहंसन लि० ।।

मंत् १५७६ ममये ग्रमहरण बदि ६ रविवासरे तेलक श्री मिखारीदामेन लेखि ।

४.४०. स्**लोकवर्षिक — का० विद्यानन्दि** । पत्र सं० १४८४ । आ० १२ \times ७६ । आ० संस्कृत । विद्यय— सिदात । र० काल \times । नै० काल १८४४ श्रावस्म बुदी ७ । पूर्ण । वै० सं० ७०७ । क्रू जण्डार । षिषोष—यह तस्यार्थमुत की बृहद् टीका है। पन्नालाल चौधरी ने इसकी प्रतिसिपि की थी। ग्रन्थ तीन वैष्टनों में बंघा हुमा है। हिन्दी अर्थ सहित है।

४.५१. प्रति सं०२। पत्र सं०१०। ले॰ काल \times । वे॰ सं० ७८। स्त्र मण्डार। तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम सम्पास की प्रथम सूत्र की टीका है।

४५२. प्रति सं० ३। पत्र सं० म०। ने० काल 🔀 । व्यपूर्ण । ने० सं० १९५ । व्या अण्डार ।

४.४२. संबद्धणिसूत्र''''''' पत्र सं०३ से २६ । घा० १०८४ दश्च। बादाप्रकृत । विषय–कानम । र०काल ⋉ । से०काल ⋉ । क्यूर्सा । वै० सं०२०२ । सामध्यार ।

विशेष—पत्र सं०६, ११, १६ से २०, २३ से २४ नही है। प्रति सचित्र है। वित्र सुन्दर एवं दर्शनीय है। ४. २१ और २८वें पत्र को छोड़कर सभी पत्रों पर चित्र हैं।

४.४४. प्रति सं०२ । पत्र सं०१० । ले० काल 🗴 । वै० सं०२३३ । छ भण्डार । ३११ गायायें हैं ।

४४४. संप्रदृष्धी वालायबोध — शिवनिधानगणि । पत्र सं∘ ७ से ४३। झा० १०६४४६ । आया— प्राहन-हिन्दी । विषय-मागम । र० काल ४ । ते० काल ४ । ते० सं० १००१ । इस सम्बर्गर ३

विशेष--प्रति प्राचीन है।

 \pmb{x} ४६, सत्ताह्वार \cdots ापन सं० २ से ७ तक । म्रा० म $\frac{1}{2}$ \times ४६ दश्च । माया संस्कृत । विषय-सिद्धांत र० काल \times । मपूर्ण । वे० सं० ३६१ । वा मण्यार ।

४४७. सत्तात्रिमंती—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं॰ २ ने ४० । द्या० १२४६ दश्च । बाद्या प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । सपूर्ण । वै० सं० १८४२ । ट मण्डार ।

४.४.म. सर्वार्धसिद्धि—पूज्यपाद । पत्र सं० ११८ । घा० १३४६ दञ्च । मापा संस्कृत । विषय–सिद्धांत र० काल ४ । ले० काल सं० १०७६ । पूर्ण । वै० सं० ११२ । घा अच्छार ।

४.४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६८ । ते० काल सं० १९४४ । वे० सं० ७६८ । का अण्डार ।

४६०. प्रति सं० ३। पत्र सं०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८०७। इड अण्डार।

४६१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२२ । ले० काल × । वे० सं० ३७७ । च भण्डार ।

४६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७२ । ते० काल 🔀 । वै॰ सं० ३७८ । जः भण्डार । विशेष-चतुर्यं भ्रष्याय तक ही है ।

४६३. प्रति सं०६ । पत्र सं०१ – १३३, २०० – २८३ । ले० काल सं०१६२४ माघ सुवी ४ । के० सं०२७६ । वामव्यार ।

निम्नकाल और दिये गये हैं---

सं० १६९२ नाव खुक्का ७–६ कालाबेरा में श्रीनारायण ने प्रतिसिधि की थी। सं० १७१७ कार्तिक सुदी १३ बद्धा नाषु ने बेंट में विद्या था। भण्डार ।

MORIT I

¥देश्चे. प्रति संo ७ । पत्र संo १८२ । ले० काल × । दै० सं∘ १८० । च भण्डार । ४६४. प्रति संo ⊑ । पत्र संo १४६ । ले० काल × । दे० संo द४ । छ भण्डार ।

४६६, प्रति सं०६ । पत्र सं०१२४ । ने० काल सं०१८८२ व्यंष्ठ बुदी २ । ने० सं०८५ । क्यू कण्डार । ४६७. प्रति सं०१० । पत्र सं०२७४ । ने० काल सं०१७०४ वैद्याल बुदी १ । ने० सं०२११ । घ

४६८. सर्वार्थसिद्धि भाषा—अवयन्द झावडा । पत्र सं० ६४३ । मा० १३८७ है इक्का भाषा हिन्दी विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १८६१ चैत सुदी ५ । ले० काल सं० १९२६ कॉलिक मुंदी १ । पूर्ण । वे० सं० ७६६ क भष्णार ।

> ४६६. प्रति सं०२ | पत्र सं०३ १८ | ले० काल ४ | वे० सं०८०० | क्र भण्डार | ४०००. प्रति सं०३ | पत्र सं०४६० | ले० काल सं०१६१७ | वे० सं०७०४ | च मण्डार | ४०१. प्रति सं०४ | पत्र सं०२७० | ले० काल सं०१८८३ कार्लिक बुदी २ | वे० सं०१८० | ज

४७२. सिद्धान्तकार्यसार—पंटर्द्यू। पत्र सं० ६६ । खा० १३ ८० इंच । भाषा झाझा । शियय– सि**द्धान्य । र० काल ⋉ । ने० काल सं० १६**४६ । दूर्सा वै० सं० ७६६ । इस अण्डार ।

विशेष---यह प्रति सं० १५६३ वाली प्रति से लिखी गई है।

१७३. प्रति सं०२ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ८०० । च भण्डार ।

विशेष--यह प्रति भी सं॰ १४६३ वाली प्रति मे ही लिखी गई है।

१७४. सिद्धान्तसार माया—। पत्र सं० ७५। मा० १४%७ इक्षाः भाषा हिन्दीः। विषय-निद्धान्तः। र०कातः 🗴। ते०कातः 🗴 । सूर्यो। वे०सं० ७१६। च मण्डारः।

४७४. सिद्धान्तसेसम्बद्धःःः। पत्र सं०६४ । सा०६% र $\frac{1}{2}$ इक्ष । भाषा हिन्दी । विषय-िद्धान । र० काल \times । सपूर्ण । वै० सं० १४४० । इस भण्डार ।

विशेष-वैदिक साहित्य है। दो प्रतियों का सम्मिश्रस है।

% ५६. सिद्धान्तसार दीपक—संकलकीर्ति। पत्र सं०२२२। सा०१२x५६ छ। भाषा संस्कृतः विषय—सिद्धान्त। र०कालx। ले०कालx। पूर्वावै० सं०१६१।

४००, प्रति सं०२ । पत्र सं०१ तथा ते० काल सं०१ त२६ पीच बुती ८०। वे० सं०१ १८ त। इस अंडार। विशेष---पं० चोलचन्द के शिष्य पं० किशानदास के वाचनायें प्रतिलिपि की गई थी। ४०६ प्रति सं०१ पत्र सं०१ ४५। ते० काल सं०१ ४६२ । वे० सं०१ ३२ । इस अग्डार। ४७६, प्रति सं०१ । पत्र सं०२३६ । ते० काल सं०१ ८३२ । वे० सं०८ ०२ । इस अग्डार। विशेष----स्लोचराम पाटनी ने प्रतिलिपि की थी।

≱मदः प्रति संदर्शपत्र संव १७६ । लेव काल संव १६१३ । बैबालासुदी ६ । वेव संव १२६ । घ्र मण्डार । विशेष--शाहजहानाबाद नगर में लाला शीलापति ने प्रत्य की प्रतिलिपि करवाई थी।

४**二९. प्रति सं**० ६ । पत्र सं० १७३ । ले० काल सं० १८२७ वैशास बुदी १२ । वे० सं० २६२ । इन भण्डार ।

विशेष-कही कही कठिन शब्दों के मर्थ भी दिये हैं।

४.च.२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७६-१२४ । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० सं० २४२ । छः अध्वार । ४.च.३. सिद्धान्तसारशेषकः'''। पत्र सं० ६ । घा० १२×६ इखः । आषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।

र० काल 🔀 । ले० काल 🔀 । पूर्णा। वे० मं∙ २२४ । स्व भण्डार ।

विशेष-केवल ज्योतिसाक वर्णन वाला १४वां ग्रधिकार है।

४८४. प्रति सं २ । पत्र सं० १८४ । ले० काल × । वे० मं० २२५ । स्न भण्डार ।

४८४ - सिद्धान्तसार भाषा—नथमल विलाला । पत्र सं० ८० । बा० १३ र्रू ४६ इब । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १८४५ । ने० काल × । पूर्णावे के सं० १२४ । च भण्डार ।

४म६. प्रति सं० २। पत्र सं० २५०। ले० काल ×। वै० सं० म५०। क भण्डार ।

विशेष-रचनाकाल 'क' मण्डार की प्रति में है।

४०७. सिद्धान्तसारसंग्रह—धा० नरेन्द्रदेव। पत्र सं० १४। घा० १२×४५ डक्क । साथा संस्कृत । विषय-मिद्रान्त । र**० काल ×**। ले**० काल ×। प्रयुगो । वै० सं० ११९४। घर सण्डार** ।

विशेष--नृतीय अधिकार तक पूर्ण तथा चतुर्थ अधिकार अपूर्ण है।

थ्यम. प्रति संa २। पत्र सं• १००। ले० काल सं० १८६। वे० सं• १६४। का अण्डार।

थन्दः प्रति सं० १। पत्र सं० ५४ । ल० काल सं० १०३० भंगिमर बुदी ८। वे० मं० १५० । ज्य भंडार विशेष---पं० रामकट ने बन्य की प्रतिकिपि की थी ।

४६०. सुत्रकुर्तामा"'' पत्र सं०१६ से ४६। झा०१०४४३ डक्स | भाषाप्राकृत | विषय–झागम | र०काल ४ | ले०काल ४ । झपूर्ण । वे०सं० २३३ । ट भण्डार :

विशोष—प्रारम्भ के १५ पत्र नहीं है। प्रति संस्कृत टीका सहित है। कहन में पत्र दीमकों ने सा लिये है। बीच में मूल गांचाये हैं तथा ऊरर नीचे टीका है। प्रति श्री मुककुतांगदीपिका पांडयमाध्याय।

विषय-धर्म एवं ऋाचार शास्त्र

- **४६.१. अहाईसमूल्यायुवर्योन** पत्र सं०१। ब्रा०१० $\S \times \mathbb{R}$ श्र श्रव्यः। भाषा-संस्कृतः। विषय-मृतिन्तर्यत्रकातः। र०कातः \times । पूर्णः। वैष्टुन सं०२०३०। क्या भण्डारः।
- ४६२. स्थानगारभासीस्त पंठ आशाधर । पत्र सं० २७७ । घा०११, ४ इझा। भाषा-संस्तृत । विषय-पृतियसंवर्णन । र०काल सं० १६०० । ले०काल सं० १७७७ साय सुदी १ । पूर्णा वे० सं० ६३**१ । इस** भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वापन टीका सहित है। बोली नगर में श्रीमहाराज। कुवातसिहनी के शासनकान में माहजी रामवृद्धकों ने प्रतिलिशि करवायी थी। मं० १८२६ में पं० सुकाराम के शिष्य पं० केसव ने ग्रन्थका मंशोधन किया था। २२ में १६१ तक नशीन पत्र है।

४६३. प्रति सं २ २ । पत्र सं० १२३ । ले० काल 📈 । ये० सं० १८ । ग भण्डार |

४.६४. प्रति साँ० ३ । पत्र सं० १७७ । लेंठ काल सं० १९४३ कालिक सुदी ४ । वेटसं० १९ । নুখण्डार ।

४६४. प्रति सं०४। पत्र सं०२ ७। ले० काल x। वै० सं०४६७। इत्र भण्डार।

विज्ञेय—प्रति प्राचीन है। पं० माधव ने ब्रन्थ की ब्रनिचिष की थी। ब्रन्थ का दूसरा नाम 'धर्मामृनसूनि संबह' भी है।

୬೬६. इस्तुभवप्रकाश-—दीपचन्द् कासकीवाला । पत्र मं० ४४० । स्राकार १२×५,ँ इझा । साधा-हिन्दी (राजस्थानी) गद्याः विषय–धर्मा र० काल मं० १७६१ पीप पुरी ४ । ले० काल मं० १८१४ । सपूर्णा । वे० सं० १ । इपच्छार ।

ye. प्रतिसंट २ । पत्र संट २ से ७४ । लेट काल × । ग्रपूर्गा वेट संट २१ । छ भण्डार ।

१९६८. कालुभवासन्द \cdots ापत्र सं० ५६। घा०१३ $\frac{1}{2}$ \times ६ डक्क। भागा-हिस्दी (गद्य)। विषय-धर्म। रुकाल \times । ले॰ काल। पूर्ण। वे० सं० १३। क्र भण्डार।

झ्रमुताश्चर्मरसकाव्य—गुणुष्पनदृदेव । पत्र सं० ३ ते ६६ । झा० १०५ँ×४५ँ मागा-संस्कृत । विषय-माबार बास्त्र । र० काल ×। ते० काल सं० १६०५ पीव मुदी १ । सपूर्यो । वे० मं० २३४ । का सण्डार ।

विश्रोप----प्रारम्य के दो पत्र नहीं हैं। बन्तिम पुष्पिका:--हति श्री गुगग्वन्द्रदेवविरविश्रसमृतधर्मरसकाय्य क्यावर्गानं व्यावकततीमकपर्या चतुर्विद्यति प्रकरण संपूर्ण । प्रगस्ति निम्म प्रकार है---

पट्टे भी कुंबकुंबाबायें तरस्ट्टे श्री सहस्त्रकोत्ति तरस्ट्टे निमुबनकोत्तिदेवभ्ट्टारक तरस्ट्टे श्री पद्मनंदिदेव भट्टारक तरस्ट्रे श्री जबकोत्तिदेव तरस्ट्टे श्री सत्तिनकोत्तिदेव तरस्ट्टे श्री गुरुरतकोत्ति तरस्ट्टे श्री १ गुराबकादेव भट्टारक धर्म एवं व्याकार शास्त्र] [४६

विर्धान महातथ्य कर्मकथार्थ। लोहटपुन पंडितथी सावलदास पठनार्थ। धनिस्तीत्र्यसावण्डुक्तकसन वर्मेजप्रवेशकालार्थ। चन्द्रप्रभ वैद्यानयं मात्र मासे कृत्युक्त पूच्यनकार्थ पर्विति दिने १ सुककारे सं० १६=५ वर्षे वैरागरमाध्ये नौधरी चन्द्र-मेनिसहायं नन्युत वनुर्धुन जनायनि परमरामु लेसराज फाता पंच सहाविका। सुन्नं प्रवृत्तु ।

६००. श्वासमिश्चास—शानतराय। पत्र सं∘ ७३ । प्रा॰ १०६ ४६ दृह्या । भाषा-हिन्सी (पश्च) विगय–धर्म। र० काल सं० १७=३। ये० काल सं० १९२ ⊏। पूर्ण। ये० सं० ४२ | क्र अण्डार।

विशेष-रचना संवत् सम्बन्धी पद्य-"ग्रमा वस् जैल सितंध"

भन्य प्रवस्ति के अनुसार खानतराव क पुत्र ने उक्त प्रत्य की मूल प्रति को आप्त्र को बेचा तथा उसके पान न वह मूल प्रति जगतराव के हाथ में प्रायो। ग्रन्य रकता खानतराय ने प्रार्टन की वी किन्तु बीच ही में स्वयंवान हाजाने के कारण जगतराय ने संवत् १७८४ में मैनपुरी में ग्रन्य को पूर्ण किया। श्रामम विलास में कवि की विविध रकताओं को मंत्रह है।

- 5 : १. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६५४ । वै० सं० ४३ । का भण्डार ।
- ६०२. श्राचारसार—बीरलंदि । यत्र सं० ४६ । बा० १२.११, इख । आया—संस्कृत । विषय-प्राचार शास्त्र । र० २.ल. ४ । ले० काल सं० १०६४ । पूर्ण । वे० सं० १२७ । श्रा भण्डार ।
 - ६०३. प्रति संट २ । पत्र संव १०१ । लेव काल 🔀 । वैव संव ४४ । वह भण्डार ।
 - ६०४. अति सं ०३। पत्र स०१०६। ले० काल 🗴 । ग्रपर्मा । वै० सं ०४ । छ भण्डार ।
 - ६०४. प्रति संट ४ । पत्र सं० ३२ से ७२ । ले० काल 🗡 । ब्रपुर्ण । वे० सं० ४०४ । ऋ भण्डार ।
- ६०६. आयारमार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र मंग्यार पार्व ११% र इक्का भाषा-हिन्दी । विषय-पात्रारामस्य । रणकार मंग्रहर वैद्याल बुदी ६ । लेणकार ४ । वेणमंग्य ५ । क्षार्य । क्षार्य ।
 - ६०७. प्रति संट २ । पत्र सं० २६२ । ले० काल० 🖂 । वे० सं० ४६ । क भंडार ।
- ६० माराधनासार देवसेन । पत्र सं०२०। घा०११८८ । भाषा-प्राफ्त । विषय-धर्म । र० काल-१०वी अनाव्दी । वं०काल ४ । ब्रपुर्ण । वं० वं०१७० । व्याभण्डार ।
 - ६०६. प्रति सं०२। पत्र मं०६४। ने०कान 🗡। वे० मं०२२०। 🖼 भण्डार । विकेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है
 - ६१०. प्रति सं ०३ । पत्र मं० १० । ले० काल 🗡 । वै० सं० ३३७ । ऋ भण्डार
 - ६११. प्रति संदर्भ । पत्र संदर्भ । लेव काल × । वैव संव २८४ । सा भण्डार ।
 - ६१२. प्रतिसंद्धापत्र मैं० ६। ले० काल ×। वे० सं० २१५१। ट भण्डार।
- ६१२, काराधनास्यास्य आया—पकालाकभ्योधरी । पत्र गं०१६ । द्वा०१०४५ उक्का । आया—हिन्दी । त्रियय—धर्म । र० काल सं०१२३१ वैत्र दुवी ६ । ले० काल ४ । पूर्णावे० सं०६० । क अध्वार ।

विशेष--लेखक प्रशस्ति का भंतिम पत्र नहीं है।

६१४. प्रति सं २ । पत्र सं० ४० । ले॰ काल × । वे॰ सं० ६८ । क भण्डार ।

६१×. प्रति सं० ३ | पत्र सं० ५२ । ते० काल ४ । वे० सं० ६९ । क भण्डार ।

६१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० मं० ७५ । क भण्डार ।

विशेष--गाथायं भी है।

६९७. व्याराघनासार आया.....। पत्र सं०१६। ब्रा०११×१ द्वाः। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। १० काल ८। ले० काल × । पूर्वा वे० सं० २५२१। ट अच्छार।

६१८. काराधनासार बचनिका—वाबा दुलीचन्दापन सं०२२। झा०१२९८८ द्वा। भाषा⊸ हिन्दी गद्यः। विषय—वर्षः। र० काल २०वी सताब्दी। ते० काल ⊠ापूर्णः। वे० मं०१८३। द्वाभण्डारः।

६१६. आराधनासार मृत्ति—पंठ ऋाशाधर । पत्र सं० ६ । झा० १०८४ है इंच । आपा-सम्द्रन । विषय-वर्ष । र० काल १३वी सताव्दी । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १० । स्त्र अध्यार ।

विशेष--- मृति नयबन्द्र के लिए ग्रन्थरबना की थी। टीवा का नाम ग्राराधनामार वर्परा है।

६२८. **आहार के कियालीस दोव वर्णन—भैया भगवतीदास** । पत्र सं० २ । मा० ११ - ७१ डक्ष । भाषा-कियी । विषय-माबारलास्त्र । र० काल सं० १७५० । ले० काल × । पूर्ण । बे० सं० २०४ । मु. भण्डार ।

६२**१. उपदेशरक्रमाक्षा— धर्मदासगरि**। पत्र सं० २०। प्रा० १०×८ ग्रै। भाषा– प्राकृत । विषय– धर्म । र०काल × | ले०कल सं० १७४५ कार्लिक द्वी ७ । पूर्ण | वे० सं० द२६ । आद्र मण्डार ।

See. प्रति संट क्। पत्र सं∙ १४ । ले० काल ४ । वे० सं० ३४८ । व्य भण्डार ।

विशेष--प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है।

६६२. **उपदेशरक्रमाला — सकलभूष्ण**ा पत्र मं०१२६ । आर०१४८४ **: इक्ष**। भाषा-संस्कृत। विषय-स्थर्म। र० काल सं०१६२७ श्रावण मुदी ६। ले० काल सं०१७६७ श्रावण मुदी १८। पूर्ण। वं० सं०११। इस सम्बद्धार।

विजेप---जयपुर नगर मे श्री गोपीराम बिसाला ने प्रतिलिपि करवाई थी।

६२४. प्रति संa २ । पत्र संa १३६ । में व वाल 🗴 । वैव संa २७ । ऋ भण्डार ।

६२.५. प्रति संव २ । पत्र संव १२६ । तेव काल संव १७२० ध्रावणा मुत्ती ४ । वेव संव २८० । इत्र भण्डार । ६२६. प्रति संव ४ । पत्र संव १६६ । तेव काल संव १६६६ कालिक सूत्री १२ । ध्रपूर्ण । वेव संव ६४६

विशेष—पत्र र्स० ६० से ६३ तथा १०० नहीं है। प्रणस्ति में निम्नप्रकार विस्ता है—''शेरपुर की समस्त आवगगी ज्ञान कर्यासा निमित्त इन सास्त्र की भी पार्वनाथ निमित्त अध्यार में रखवाया।'' ६२७. प्रति संदर्भ । पत्र सं• २५ से १२३ । ले० काल 🗙 । ने० सं० ११७५ । का भण्डार ।

६२.**.. प्रति सं०६ ।** पत्र सं०१३ द । ले० काल × । वे० सं०७७ । क भण्डार ।

६२६. प्रति सं०७। पत्र सं०१२८। ले० काल 🔀 । बै० सं० ६२। इस भण्डार।

६३८. प्रति संद क्षः । पत्र मं० ३६ से ६१ । ले॰ काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० संप व३ । इक अण्डार ।

६३१. प्रति सं ० ६ । पत्र सं ० ६४ सं १४५ । ले • काल × । बपूर्ण । वे० सं० १०६ । इट्स भण्डार ।

६३२. प्रति सं ०१८। पत्र सं० ७२। ले० काल 🗵 । अपूर्ण । वे० सं०१४६ । छ अण्डार ।

६३३. प्रति सं८ ११। पत्र सं० १६७। ले० काल सं० १७२७ ज्येष्ठ बुदी ६। वे० सं० ३१। का अण्डार

६३४, प्रति सुंट १२ । पत्र संट १८१ । लेट काल 🗴 । बेट संट २७० । स्न भण्डार ।

६३**४. प्रति**संट १३ | पत्र सं०१६५ । ले० काल सं०१७१० फा**पुरा सुदी १**२ । वे० सं०४४२ । इस भण्डार ।

६२६. अपदेशसिद्धांतरत्नमाला—भंडारी नेमिचन्द्र। यत्र सं०१६। प्रा०१२८७६ हम्रा। भाषा— प्राकृतः। विषय—पर्मः। र०काल ⊀ा ने०काल सं०१६४३ प्रापाकृ मुद्दा ३। पूर्णः। वे०सं० ३=। क मण्डारः।

विशेष--मंस्कृत मे टीका भी दी हुई है।

६३७. प्रति संट २ । पत्र मं० ६ । ले० काल 🗵 । के० सं० ७६ । कः भण्डार ।

६३ ≒. प्रति संट ३ । पत्र सं०१ दाले काल सं०१ द३४ । त्रे० सं०१ २४ । घमण्डार ।

विजय-संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये है।

६२६. उपदेशसिद्धान्तरस्रमास्ता भाषा—आगण्यन्यः। पत्र सं० २८। आ० १२४८ इक्रा। भाषा— जिल्ही। विषय-धर्म। र० काल सं० १**९१२ आणारु बुदी २।** लंग काल ४। पूर्ण। वे० सं० ७५६। **का भण्डार्**।

विशेष—-यन्थ को सं०१६६७ में कालृगम पोल्याका ने लरीदा था। यह ग्रन्थ पट्कर्मोपदेशमासाका हिन्दी प्रमुखाद है।

६४०. प्रति सं ० २ । पत्र मं० १७१ । ले० काल मं० १६२६ ज्येष्ठ सुदी १३ । वे० सं० ८० । क भण्डार

६४१. प्रति सं०३ । पत्र सं०४६ । ले० काल 🔀 । वे० सं० हरे । का अण्डार ।

६४२ प्रति सं ० ४ । पत्र मं० ७३ । ले० काल सं० १६४३ सावगा बुदी ३ । वे० सं० ८२ । क प्रंडार ।

६४३. प्रति संब्धापत्र संब्धाले काल 🗴 । वेब्संब्ह्या का अण्डार ।

६४४. प्रति सं०६। पत्र सं०१२। ले० काल 🔀 । वे० सं० ६४। क भण्डार।

६४४. प्रति संट ७ । पत्र सं० ४४ । ले० काल x । वे० सं ८७ । अपूर्ण । क अण्डार ।

६४६. प्रति संट ६ । पत्र संठ १६ । ले० काल 🗴 । बै० संठ ६४ । इ. मण्डार ।

६४७. प्रति संc ६ । पत्र मं० ४६ । ले० काल × । वै० संo ८४ । क भण्डार ।

६४ म. चपदेशसम्भासाभाया—वात्रा तुसीचन्द्र । पत्र सं० २०। प्रा० १०३ ४७ इक्ष । माया–हिन्दी । विषय–वर्ष । र०काल सं० १९६४ फासुस, सुदी २। दूर्स । वे० सं० ६४ । क्र भण्डार । ६४६. उपदेश रजनाका आंचा—देवीसिंह कामदा । पत्र सं० २०। बा० ११६५७६ इस । आपा— हिन्दी पद्य । र० काल मं० १७६६ मादना बुदी १ । ले० काल प्र। दुर्श । वे० सं० ६६ । क अण्डार ।

विशेष---नरवर नगर में ग्रन्थ रचना की गई थी।

६४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ८८ । का अण्डार ।

६४१. प्रति सं ०३ । पत्र सं०१६ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ६६ । क भण्डार ।

६४२. अपसर्वार्थे विवरण्— युपायार्थे । पत्र मं०१। प्रा०१० $\frac{3}{4} \times V_{\phi}$ दक्कः । भागा—संस्कृतः । विवय— धर्मः । र० कालः \times । पूर्णः । वै० सं० ३६० । का अण्डारः ।

६४६. **उपासकाचार दोहा— आःचार्य लदमी चन्त्र** । पत्र मंग्र २७ । आर्थ ११५४ दक्का । मापा— अपफ्रांत्र । विषय—आयक धर्म वर्णान । रण्याल × । मेश्याल मंग्र १४४४ कार्तिक मुदी १४ । पूर्णा । वेश्याल प्रस्त । आर्थालकार ।

विज्ञेष— प्रंथ का नाम श्रावकाचार भी है। पंज्ञकमण के पठनार्थ प्रतिनिधि की गर्टथी। विस्तृत पञ्चित तिसन प्रकार है:—

स्वस्ति नवन् १४४४ वर्षे कार्तिक सुदी १४ मोमे थ्रो मूलमंत्रे सरस्यतीयच्छे बलात्वारगणे भ० थियानदी पट्टे भ० मन्तिकृत्वम् तिच्छित्व पंडित लक्ष्मण पठनार्थे दृहा आवकावार शास्त्रं समाप्ते । ग्रंथं म० २७० । दोही दी संस्था २२४ है।

E ky. प्रतिसं०२ । पत्र मं०१४ । ले० काल 火 । ते० म०२४८ । ऋ। भण्डार ।

Syy, प्रति अरं≎ ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल ४ । वे० सं० १७ । ऋ अण्डार ।

६ ५६. प्रक्ति संब्धः । पत्र संब्धः । लेक काल 🗙 । वेव संव्दरः। ऋ भण्डारः।

६४७. प्रति मं० ४ । पत्र मं० ७७ । ले० काल > । वे० मं० ६९५ । ऋ भण्डार ।

६४८ . **उपासका चार********** पत्र तं∘ ६४ । प्राः १३८/८ ६ इखा। भाषा~संस्कृत । विषय~श्रावक धर्मवर्णात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण (१५ परिच्छेद तक)वे० सं० ४२ । चाभण्डार ।

\$प्रदे. उपासकाध्ययन'''''''''। पत्र मं∘्रि१४-३४१ । स्रा०्११½,४५ इक्का। भाषा-संस्कृतः। विषय-धावार सास्त्रः १२०कोल ४ । ले० काल । अपूर्णा। वै० सं०२०६ । इस भण्डारः।

विशेष-हीरानन्द की प्रेरणा में मबाई जयपुर में इस ग्रन्थ की रचना की गई।

६६१. **क्रशीक्षकं**डन — जयक्काज । पत्र गं॰ २६। घा० १२×०३ । भाषा–हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल सं० १६३० । ने० काल × । पूर्षा । नै० नं० ४११ । **क्र**सम्बार ।

[xa

६६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ने० कात × । ने० सं० १२७ । इन मण्डार ।

६६३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३८। ले० काल 🔀। वे० सं० १७६। ह्यू मण्डार।

६६४, किवाकलाप टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र मं० १२२ । मा० ११¦४४¦ । भाषा-संस्कृत । विषय– भावक धर्म वर्गोन । र० काल ⋉ । ले० काल ⋉ । पूर्ण । वै० मं० ४३ । इस भण्डार ।

> ६६६' प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ने० काल सं० ११४६ चैत्र मुदी १ । वे० सं० ११४ । क्क अंडार । ६६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं १७६४ भादना मुदी ४ । वे० सं० ७४ । च भण्डार । विलेष---प्रति सर्वार्ड जयपुर में महाराजा जयसिंहजी के जाननकाल में चन्द्रप्रभ चैरवानव में लिली गई थी ।

६६ म. प्रति सरंट ३ । पत्र संट २०७ । नेट काल संट १५७७ बैशास बुदी ४ । देट मंट १८८७ । ट भण्डार ।

विशेष—'प्रशस्ति संग्रह' में १७ पृष्ठ पर प्रशस्ति छप चुकी है।

६६६. क्रियाकलाप """। यत्र सं०७। आ० १ $\frac{1}{4}$ \times $\frac{1}{4}$ रक्का। भाषा—संस्कृतः। विषय-आवक धर्म वर्गान । र० काल \times । ते० काल \times । अपूर्ता । वै० सं० २७७। ह्यू सण्डार ।

६००. कियाकलाप टीका''''''' पत्र सं०६१। मा०१३४५ दक्का। भाषा-मंस्कृत । विषय-आवक पर्मवर्गान । र०काल ४ । ले०काल सं०१४३६ भाववा बुदी ४ । पूर्णी वे०सं०११६ । क्र भण्डार ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

राजाधिराज मांजीगडुर्गे श्री सुलतानगयामुहीनराज्ये बन्देरीदेनेमहानेरखानध्याधीयमाने वेसरे ग्रामे वास्तव्य कायस्य पदमसी तत्त्रुज श्री राणी लिखितं।

६७१. प्रतिसं०२ । पत्र सं०४ से ६३ । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्शा वे० सं०१०७ । उप भण्डार ।

६७२. क्रम्याक्रतापष्ट्रतिः'''''। पत्र नं∙६६ । प्रा०१०४४ ६ऋ। भाषा–प्राकृत । विषय–श्रावक धर्मवर्गान । र०काण ४ । ते० काल सं०१३६९ कासूसासुदी ४ । पूर्मीवे नं०सं०१८७७ । ट भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

६७६. क्रियाकोच भाषा— क्रिशलसिंह ! पत्र सं० ०१। सा०११८५ ६ इ.स.। भाषा—हिली पद्यः। विषय–आंवक भन्ने वर्षान । र०काल सं०१७०५ मादवासुदी १५।ले०काल ≿।पूर्णः |वे०सं०४०२।इस मण्डारः |

६७४. प्रति सं० ९। पत्र सं० १२६। ले० काल सं० १८३३ मंगसिर सुदी ६। वे० सं० ४२६। इप भग्यार। ६७४. प्रति संब है। यन संव ४२। तेव काल 🗴। प्रपूर्ण। वेव संव ७४६। 🛍 अध्यार।

६७६. प्रति सं० ४। एव सं० ६०। ते० काल सं० १६६५ प्रात्मात् बुढी १०। वे० सं० ६। मा अंडार विशेष-स्थानामणी साह ने प्रतिक्षिप करवामी थी।

६७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ से ११४ । ले० काल सं० १६८८ । स्पूर्ण । वे० सं० १३० । सः भण्डार ।

६७८. प्रति सं०६। पत्र सं०६७। ले० काल 🗙 । वे० सं०१३१। 🖝 भण्डार ।

६७६. प्रति सं० ७ । तत्र सं० १०० । ले० काल 🗴 । सपूर्ता । वे० सं० १३४ । स अध्वार ।

६८०. प्रतिसं०६ । पत्र सं०१४२ । ले०कान सं०१८५१ मंगसिर बुदी १३ । ते० सं०१९५ । इद्यासकार ।

ैं ६⊏१. प्रतिसं**० ६ । पत्र** सं० ६६ । ले० काल सं०१६५६ ब्रायाद मुदी६ । वे० सं०१६६ । इद प्रथमार ।

विशेष--प्रति किशनगढ़ के मन्दिर की है।

६८२. प्रति सं०१०। पत्र सं०४ से ६। ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० २०४। ज भण्डार ।

६८३. प्रति सं०११ । पत्र सं०१ से १४ । ले॰ काल 🗵 प्रपूर्ण । वै॰ सं० २०८७ । ट भण्डार ।

विशेष---१४ से मागे पत्र नहीं है।

६८८**४, किवाकोरः********। यद्य सं०५०। सा० १०१४४ _५ इ**व**ा भाषा-हिन्दी। विषय-श्रावक धर्म सर्गत । र०काल × । ले**०** काल × । सपूर्ण । वै० सं०६०६। क्या अव्यार ।

६८%. कुगुरुसाक्या \cdots ापत्र सं०१। झा० ६ \times ४ 3 दक्षा आया-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल \times । त्रं० काल \times । पूर्यो। वे० सं०१७१६। अभ्यकार।

६८६. समावक्तीसी—जिनवस्त्रस् ξ । पत्र सं०३। स्रा॰ ८५×४ दखा भाषा—हिन्दी। विदय- धर्मारः काल \times । से० काल \times । पूर्ती वे० सं०२१४१। इस अध्यार |

६८७. चेत्र समासप्रकरियाः***। पत्र सं० ६। मा० १० $imes Y_4^*$ । भाषा–प्राकृत । विश्य-पर्म । र० काल imes । ले० काल सं० १७०७ । पूर्ण । वै० सं० ६२६ । का भण्डार ।

६८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले॰ काल 🗵 । वे॰ सं॰ 🗡 । 🖼 भण्डार ।

६८६. च्लेनसमासटीका—टीकाकार दरिभक्रमूरि । यत मंग ७ । आ० ११ \times ४५ । माया—संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वै० सं० ६३० । द्वा अच्छार ।

६६८ नाम्सलार \cdots ापत्र संग्या | प्रार्थ ११ $\frac{1}{2}$ \times ५ $\frac{1}{4}$ माषा-हिन्दी | विगय-धर्म । रंग्काल \times । लेग्काल \times । पूर्ण । वेश्व संग्य ५६६ । **या मध्या** ।

६६१ च**उसरस्य क्रकरस्यः*****। पत्र सं०४ । आर०११४४ <mark>दश्चः । आस्त-प्राह</mark>तः । विषय-वर्मः। र० काल ४ । पूर्णः। वै० सं०१ वर्ष**ः। का अध्वार**ः। मार्क्भ —सावक्कोमविरद जिकत्ताण पुण्यन प्रपदिवती ।
रवित धस्तय निवणावण तिविष्ण गुणु धारणा वेव ॥१॥
वारितस्त विसोही कीरई सामाईमण किलहहूव ।
सावज्ये प्ररक्षीमाणं वज्यणा तेवलात्त्वत्र ॥२॥
दसलुमारिवसीही वज्योता स्वल्यण्या तिज्यव्या ॥३॥
प्रव्याप प्रमुण किलाण्य स्वर्ण तिज्यवर्ष ॥३॥
व्यन्तिम—मदणानावाद्या तिक्यण्य भावाज कृण्यं तिच्य ।
समुहाज निरणु बंधन कृष्णं विक्यान मंदान ॥ ६०॥
ता एवं कायक्यं दुहेह निक्यंपि संकिलसंगि ।

प्रमुहाऊ निरापु बंधव कुराई निक्वाव गंबाव ।। ६० ।। ता एवं कायव्यं बुदेहि निक्वीप संक्तिसेनि । होई तिक्कालं सम्मं प्रमंकिते सेनि मुगदफलं ।। ६१ ।। बवरंगो जिराज्यको नकत चवरंगतरस्य मनि नक्कां । बवरंगत्रवच्छेत नकत हाता हारित कम्मो ।। ६२ ॥ इ श्रजीब पत्रीयमहारि बीरंकहं तमेव प्रमन्तयमां। भाग सुति संभम बंभं कारस्यं निक्कुद सुहास्यं ॥ ६२ ॥

इति नउसरता प्रकरतां संपूर्णं । लिक्सितं मिलिवीर विजयेन मुनिहर्वविजय पठनावें ।

६६२. चारभावना'''''''। पत्र सं०६। झा०१०३×६३। आवा—संस्कृत । विसय—धर्म। र० काझ imes संग्राम imes । वे॰ सं०१७६। क्र भण्डार।

विशेष---हिल्बी में सर्व भी दिया हमा है।

६६२. चारित्रसार—श्रीसवामुं उराय । यत्र सं० ६६ । झा० २ $\frac{3}{6}$ \times ४६ इक्का । भाषा—संस्कृत । विषय-सावार धर्म । र० काल \times । ते० काल सं० १४४४ जैदाल कुली १ । दूर्म । वे० सं० २४२ । का जन्मार ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

इति सकलागमसंबमसम्पन्न श्रीमञ्जिनसंबमहारक श्रीपावपद्मप्रासादासारित व्यतुरमुदोगपाराबार पारमधर्मनजयम्बामुक्टमहाराजदिरचितं भाननासारसंबहे चरित्रसारे बनागारभम्मेसमस्तः ॥ सन्य संबंधा १०५० ॥

सं० १५४६ वर्ष बैशाल वर्ष ४ भीमवासरे भी जूनसंवे नंबान्नाये बनात्कारमणे सरस्वतीयच्छे श्रीकुंद-कुंदावार्यात्र्यं अट्टारकश्रीत्पर्नादिदेवाः तत्यहुं अट्टारक भीखुनकग्रदेवाः तत्यहुं अट्टारकश्रीजिनकग्र देवाः तन् तिष्य प्राचानं भी मुनिरत्नक्षीतिः तदाद्यान्नाये कर्ण्यत्वान्तात्र्यं प्रजनेरामोत्रे सह वाग्या आर्था मन्योवरी तथोः पुत्रा साह दावर आर्था तक्त्मी ताह बर्ष्टुन प्राचा बामातयोः पुत्र साह पूत (?) साह ऊदा प्राची कर्मा तबोः पुत्रः साह दामा साह योगा आर्थी होत्ती तकोः पुत्री रत्यनन क्षेत्ररावता. बर्क्टु आर्था बेता तथोः पुत्र हरराज । सा. जात्वप साह तेजा प्राची व्यवसित् पुत्रचीत्रादि प्रभुतीनां हरेखा कन्ये सा. अर्जुन वृद्धं चारित्रसारं वास्त्रं निकान्य सत्यात्रय बार्थनार्दवाय प्रदर्श विश्वतं व्यविक्रक्ता । ६६४. प्रति सं०२ । पत्र सं०१४१ । ले॰ काल सं०१६३५ झावाढ सुदो ४ । वे॰ सं०१५१ । क्र भण्डार ।

विशेष--वा० दुलीचन्द ने लिखवाया ।

६६.४. प्रति सं०३ । पत्र सं०७७ । ले० काल सं०१४०५ मंगसिर बुदी २ । वे० सं०१७७ । इर सम्बद्धार ।

६६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५५ । ने० काल 🗴 । ने० सं० ३२ । व्याभण्डार ।

विक्षेष--कही कही कठिन शब्दों के ग्रर्थ भी दिये हुये हैं !

६८७. प्रति सं**८ ४** । पत्र सं०६३ । ले० काल सं०१७६३ कालिक सुदी ६ । वे० सं०१३४ । इत्र अण्डार ।

विशेष-सीरापुरी में प्रतिनिधि हुई।

६६८. चारित्रसार आधा—सन्नालाला । पत्र मं० ३७ । बा० १२% ६ । आधा—हिन्दी(गय)। विषय-धर्म । र०काल मं० १८७१ । ले०काल 🗴 । ब्रपूर्ण । वै० मं० २७ । ब्राभण्डार ।

६६६. प्रतिसं**०२** । पत्र मं०१६६ । ले**०** काल मं०१६७७ धामील मुदी ६ । वे० मं०१७६ । इक मण्डार ।

ও০০. प्रति संठ ३। पत्र सं० १३६। ले० काल सं० १६६० कालिक बुदी १३। वे० सं० १७६। इक मण्डार।

७०१. चारित्रसार''''''' पत्र सं० २२ मे ७६ । ग्रा० ११४४ । आया-संस्कृत । विषय-प्राचारशस्त्र र० काल ४ । ले० काल सं० १६४३ ज्येष्ठ बुदी १० । ग्रपूर्सा । वे० सं० २१६४ । ट अण्डार ।

विशेष--- प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सं॰ १६४३ वर्षे शाके १५०७ प्रवर्तमाने ज्येष्ठमाने क्रमणुरके वशस्यां तिथी सामवामरे पानिसाह श्री धकः स्वरराज्यंप्रवर्तने पोथी लिखिनं माधौ तन्त्रुवः जोसी गोदा विखितं मालपुरा ।

७०२. चौबीस दयडकभाषा—दौक्रतराम । पत्र मं \circ ६। म्रा॰ ६ $\frac{1}{2}$ \times $\frac{1}{2}$ । भागा—हिन्दी । विषय— धर्म । र \circ काल १८वी शताब्दि । ले \circ काल सं \circ १८४७ । पूर्ण । वें० सं \circ ४४७ । ख्रा मण्डार ।

विकोष-लहरीराम ने रामपुरा में पं० निहालचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

७०३. प्रति संट २ । पत्र संट ६ । ले० काल × । वे० संट १८६६ । ऋ अण्डार ।

७८४. प्रति संद ३। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १९३७ फायुरा सुवी ४। वै० सं० १५४। क भंडार।

७०४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ते० काल × । ते० सं० १६० । क भण्डार ।

७०६. प्रति संब्धापत्र संब्दाले काल 🗴 । वेव मंव १६१ । 🕸 भण्डार ।

७०७. श्रति सं०६। पत्र सं०४। ले० काल ×। वे० सं०१६२। इस भण्डार।

७०८. प्रतिसं• ७ । पत्र सं०६ । ले० काल सं०१८१८ । वे० सं०७३५ । च अच्छार ।

७८६. प्रति सं० ⊏। पत्र सं० ४। लें० काल ४। वे० सं० ७३६। वा भण्डार। ७१०. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४। ले० काल ४। वे० सं० १३६। छ मण्डार।

विशेष--- ५७ पद्य हैं।

७१४. चौर(शी इयासादना""")पत्र सं०१।क्रा० १४४ रक्का। भाषा–हिन्दी। दिषय–पर्म। १०काल रालेऽकाल ×ापूर्णावै०सं०द ४३।क्कामण्डार।

विजेष-जैन मन्दिरों में वर्तनीय ८४ कियाओं के नाम है।

७१२. प्रति सं०२ । पत्र मं०१ । ने० कान × । वै० मं० ४४७ । व्याभण्डार ।

ऽ१२. **चौरासी खासादना ∵ "'। पत्र सं०१। बा० १०×४५ै[॥] । भाषा–संस्कृत । विदय–धर्म । र० वधन । वे० कान ⋉ । पूर्ण । वे० मं० १२२१ । का भण्डार** ।

विशेष-प्रति हिन्दी टब्वा टीका सहित है।

७२५. चौरासीलाल उत्तर गुराणा । पत्र सं०१ । झा०११६ँ ४४६ँ दक्का भाषा–हिन्दी । विषय– धर्मा रठवाल र । लेठकाल ≾ ! पूरा वैठसं०१२६३ । इद्र भण्डार ।

विशेष-१६००० झील क भेद भी दिये हुए हैं।

७१४. चौसठऋद्धि वर्षानः"।पत्र सं०६। आ०१०×४३ डबा। भाषा–प्राकृत ।विषय–धर्म। र०कान : ।ले०काल ×ापूर्णावै०सं०२४१।चाभण्डार।

७१६. छहडाला— दौलतराम । पत्र तं०६ । झा०१०४६६ रखा। भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० पाल १०वी गताब्दी । ले० काल ४ । यूर्ण । वे० सं० ७२२ । छा मण्डार ।

७ ७ प्रतिसं २ २ । पत्र सं १३ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० १३२५ । ऋ भण्डार ।

७१म. प्रति सं० २ । पत्र मं० रम । ले० काल मं० १८६१ बैशास मुदी ३ । वे० मं० १७७ । क्रभंडार विकोप—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

७१६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६। ले० काल ४। वे० सं० १६६। स्व भण्डार।

विशेष—इसके धरिरिक्त २२ परीषह, पंचमंगलपाठ, महानीरस्नोत्र एवं संकटहरण्डियती आहि भी दी हुई है।

७२० छहडाला — बुधाजन । पत्र मं० ११ । मा० १०४७ दक्ष । भाषा –हिन्दी पछ । विषय–धर्म । र० काल सं० १६४६ । लेट काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १६७ । इट मण्डार ।

७२१. क्रेड्सियर — इन्द्रनंदि । पत्र सं०३६ । प्रा० ६४५ इक्का । आया–प्राहतः । विषय–प्रायक्षितः গালব । र०काल ४ । पूर्णः । वे० सं०१६२ । क्र. अण्डार ।

७२२. जैसागारप्रक्रियाभाषा—बा० दुलीचस्त् । पत्र सं० २४ । धा० १२४७ रख । मादा—हिन्दी विषय-भावक धर्म वर्तत्व । र० काल सं० १६३६ । ते० काल ४ । धार्स्त । वे० सं० २०६ । क्र भण्डार । ७२३. प्रति सं०२ । पत्र सं०६ ४ । ले० कास सं० १९६६ ग्रासीज मुदी १० । वे० सं०२०६ । क भण्डार ।

७२४. ज्ञानानन्कशवकाचार—साधर्मी आहि रायमङ्का पत्र तं∘ २३१ । बा॰ १३४८ स्त्राः। भाषा-हिन्दीः। विषय-माचार सास्त्र । र० काल १=वी शताल्मी। तं॰ काल ४ । पूर्णः। वे० सं० २३३ । क भण्यारः।

७२४. प्रति सं०२ । पत्र सं०१४६ । ले∙ काल ४ । वे० सं०२६६ । अक्त भण्डार ।

७२६. प्रति सं०२ । पत्र सं० ५० । ले० काल ⋉ । अपूर्ण । वे० सं०२२१ । क भण्डार ।

७२.**७. प्रति सं०३ । पत्र** सं०२३२ । ले० काल सं० ११३२ श्रावरण सु**दी १**४ । वे० सं०२२२ । इक भण्डार ।

७२. प्रति सं**० ४ । पत्र सं० १०२ मे २७४ । ले० काल × । वै० सं०** ४६७ । च भण्डार ।

७२**६. प्रति सं**ट ४ | पत्र सं० १०० । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ५६ । च भण्डार ।

७२०. ब्रानर्चितामसिं — मनोहरदासापत्र सं०१० । घा०६३८४६ ट**ब्र**ाभापा−हिन्दीः विषय– धर्मः र०काल × । के**०काल × । सपूर्णः । वे**०सं०१४६३ । द्राभण्यार ।

विशेष--- ५ से ८ तक पत्र नहीं है।

७३१. प्रतिसं०२ । पत्र मं०११। ले० काल सं०१८६८ शावसा सुदी६ । दे० सं०३३ । ग्रापंडार ७३२ प्रतिसं०३। पत्र सं०६ । ले० काल ⋉ । दे० सं०१६० । चाभण्डार।

विशेष---१२८ छन्द है।

७३३. तस्यक्कानतरंगिखी—अट्टारक क्वानभूष्या। पत्र सं०२०। बा०११४५ इक्षः। भाषा–रंस्कृत विषय–धर्मः। र०कान सं०१५६०। ते०कान सं०१६३५ श्रावण मुदी ४। पूर्णः। वे०सं०१८६। क्यः भण्डारः।

७देश्र. प्रति सं०२ । पत्र सं०२६ । ले॰ काल सं०१७६६ चैत बुदी मा बे॰ सं०३३३ । छा भंडार । ७३४. प्रति सं०३ । पत्र सं०३६ । ले॰ काल सं०१६३४ ज्येष्ठ बुदी ११ । बे॰ सं०२६६ । क भंडार ७३६. प्रति सं०४ । पत्र सं०४० । ले॰ काल सं०१८८ । बे॰ सं०२६४ । क भण्डार ।

७३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७० । ले० काल × । वे० सं० २४३ । क भण्डार ।

विशेष-प्रति हिन्दी मर्थ सहित है।

७३ म. प्रतिसंo ६ । पत्र सं० २६ । लेश्काल सं० १७ मर फाष्ट्र सुदी १४ । वेश्सं० ४१३ । আ भण्डार ।

७२६. त्रिवर्शाचार—अञ्चोभसेन । पत्र सं० १०७। आ० ११४५ रञ्च । आषा-संस्कृत । विषय-माबार-पर्म । रुक्ताल सं० १६६७ । लेक कान सं० १८४२ भाववा बुदी १० । पूर्ण । वेक सं० २८८ । क्षा भण्डार ।

विशेष--- प्रारम्भ के २५ पत्र दूसरी लिपि के हैं।

७४८०. प्रति सं०२ । पत्र सं० ८१। ले० काल सं० १८३६ कालिक सुदी १३। वै० सं० ६१। इङ् भण्डार।

विशेष---पंडित बखतराम शीर उनके शिष्य शम्भूनाय ने प्रतिलिपि की की।

७४१. प्रति संद ३ । पत्र सं० १४३ । ले० काल × । वे॰ सं० २८६ । व्य अण्डार ।

७४२. त्रिवर्शाचार। पत्र तं॰ रः । आः० १०६/४४६ इत्रः । आया-संस्कृत । विषय-प्राचार। र० काल ४ । तं० काल ४ । पूर्णावे० ० ७० । स्वासम्बार ।

७४३. प्रति सं० २ | पत्र सं० १५ | ने० काल × | वे० सं० २८५ | अपूर्ण । क भण्डार ।

७४४. त्रेपलिक्याः'''''''''पत्र सं०३। मा०१०४६ इचा भाषा—हिन्दी। विषय—ध्यवक की क्रियाकों का दर्गान । र० काल 🗴 । ले० काल 🙏 पूर्णा वै० सं० ५६४ । चा नष्मार ।

७४४. त्रेपनकियाकोश—दौलतराम । पत्र सं० स्२ । झा० १२४६ दे द्रञ्जा । भाषा—हिन्दी । विषय— बाबार । र०काल सं० १७६४ । से०काल ४ । अपूर्ण । वे० सं० ५ स्४ । व्य भण्डार ।

७४६, दशकक्षपाठःःःः। पत्र सं० २३। ब्रा० मimes३ इक्षा । साथा-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य (ब्रावार) । र० कान imes । ते० कान imes । पूर्ण । वे॰ सं० १६६० । का सण्डार ।

७४७. दरीनप्रतिमास्वरूप'''''''। पत्र सं० १६ । मा० ११६×१६ दश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल \times । लेक काल \times । पूर्ण । वै० सं० ३६१ । इस मण्डार ।

विशेष--धावक की भ्यारह प्रतिमाधों में से प्रथम प्रतिमा का विस्तृत वर्शन है।

७५**८, दशमक्तिः**'''। पत्र सं० ५६ । सा० १२×४ द**ञ्च ।** भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल ×। र० नाल सं० १६७३ घालोज बुदी ३ | वे० सं० १०६ । का अण्डार ।

विशेष—द्या प्रकार की भक्तियों का वर्शन है। अट्टारक प्रधानीय के प्राप्ताय वाले सम्बेलवात जातीय सा० ठाउन यंश्र में उत्पन्न होने वाले साह भीखा ने बन्द्रकीत्ति के लिए मौजमाबाद ये प्रतिनिधि कराई।

७४६. दशलल्याधर्मियरीन—पंटसराहुल कासलीवाल । पत्र संट ४१। झा०१२४६ इखा। भागा-हित्रो गया। विषय-धर्म। र० काल ४। तंठ काल संट १६३०। पूर्ण। वेट संट २६४। इक मण्डार।

विशेष--रत्नकरण्ड भावकाचार की गद्य टीका में से है।

७.४८. प्रति सं०२ । पत्र सं०३१ । ले० काल × । वे० सं०२६६ । इस् भण्डार ।

अक्षरे. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० २६७ । इन भण्डार ।

७४२. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ३२ । ले∙ काल × । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

७५३. प्रतिसं०४ । पत्र सं०२४ । ले॰काल सं०१६६३ कार्तिक सुदी६ । बे॰ सं०१=६ । इद भण्डार ।

विक्षेप-श्री गौविन्दराम जैन शास्त्र लेखक ने प्रतिलिपि की ।

७४४: प्रति संब ६ । पत्र संव ३०। फो० काल संव १६४१ । वेव संव १८६ । इद् अध्यार । विशेष—मन्तिम ७ पत्र वाद में लिखे सबे हैं। ७४४. अति संट ७ । पत्र मं० ३४ । ले० काल 🗴 । । वे० मं० १=६ । छ अण्डार । ७४६. प्रति संट च । पत्र सं० ३० । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० मं० १=६ । छ नण्डार ।

७४७. प्रति संट ६ : पत्र सं० ४२ । ले० काल × । ते० मं० १७०६ । ट मण्डार ।

७४.८. दशलास्त्रध्यक्षितः । पत्र मं०२६। घा०१२ $_{v}^{2}$ ४७ $_{z}^{3}$ दश्च। भाषा-हिन्दी। त्रियय-प्रमी। र०काल imes। ले०काल imes। पूर्णी। वे०मं०५६७। चाभण्डार।

७४६. प्रति सं०२ । पत्र सं०६ । ले० काल 🗴 । वे० सं० १६१७ । ट अण्डार । विरोध — जवाबरलाल ने प्रतिलिधि की थी ।

• ------

७६८. दानपंचारात—पद्मानंदि । पत्र नं० = । प्रा० ११८८ । उक्र । भाषा-पंस्कृत । विषय-भर्म । र०काल × ।ले०काल × ।वे०ं० ३२५ । स्र भण्डार ।

श्री पदार्विद पुनिराश्वित पुनि पुग्गदान पंचायन गनिनवर्गा त्रयो प्रकरण ।। इति दान पंचायन समास ।।

७६१. दानकुत्वः'''''' | पत्र मंश्र ७ । घा० १० ४५ टब्स | भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म | ४० वाल 🙏 ।
ले० काल मंग १७५६ । पूर्ण । वे० मंश्र = २३ । स्था भण्डार ।

े **७६२. दानशीलतप्रभावना**—धर्मसी । पत्र मं०१ । धा० २५/ ४५ दश्च । भाषा—हिन्दी । विषय– वर्म । र०काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० २१४३ : ट भण्डार ।

७६**६. टानशीलतप्रभावनाः**ःः।पत्र सं०६।स्रा०१०४८**८ दश्च।**भाषा-सस्टतः। विषय-प्रसं। र**०काल** 🖈 ।ले०काल 🗡 ।स्रपूर्णावे०सं०६३६ ।स्राभण्डारः।

विशेष—४ ५ पत्र नहीं हैं। प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

७६**५, दानशीलतपभावना'''**ाषत्र सं०१। द्यागरहे हुँ .४ द**श्च**। भाषा–हिन्दी। विषय–घम्। २०काल × | लेककाल × । पूर्णाके पर्कर्षर १२६६ । इय भण्टार।

विशेष---मोती ग्रीर कांकडे का संवाद भी बहुत मुन्दर रूप में दिया गया है।

७६½. दीपमाक्षिकानिर्सीय ******। पत्र मं०१२ । द्वा०१२% ६ डक्का। भाषा−हिन्दी। विषय–धर्म; र०कान ४ । ने०कान ४ । पूर्ण। वे०सं०३०६ । कः भण्डार।

विशेष--- लिपिकार बाख्नुलाल व्यास ।

. ७६६. प्रतिसंट २ । पत्र संट दाले ठकाल \prec । पूर्णावेठ संट ३०४ । स्ट भण्डार ।

७६७. दोंडापाहुड—रामसिंड । पत्र सं०२० । ब्रा०११८४ डब्रा। भाषा–घरभंत । विषय–घावार शास्त्र । र०काल १०वी शताब्दि । ने०काल × । ब्रपूर्ण । वै० सं०२०६२ । ब्रा भव्दार ।

विशेष--कुल ३३३ दोहे हैं। ६ मे १६ तक पत्र नहीं है।

७६८ धर्मचाहनाः ःः।पत्र सं० ⊏।मा० ६२,४७। मात्रा—हिन्दी। विषय—धर्म।र० काल ४। नै० कान ४ |पूर्ण।वे० सं० ३२८। इस मध्यार।

∉६६. धर्मपंचर्विशतिका— व्रद्धाक्षितदासः। पत्र सं०३ । मा० ११६,४४६ दश्चः। भाषा–हिन्दी। विषय–भर्मार०काल १४वी सताव्दी। ले०काल सं०१८२७ पीष बुदी ६। दूर्गावे० सं०१० । द्धा अपदार।

विशेष--प्रत्थ प्रशस्ति की पूष्पिका निम्न प्रकार है---

इति त्रिविषसैद्धान्तिकवककारयांवार्य श्रीनेमिचन्द्रस्य शिष्य व्र श्री जिनदास विरचितं धर्मपंचींवश्वतिका नामणास्त्रं समासम् । श्रीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थीं ।

७००. धर्मप्रदीप्रभाषा—पन्नाताल संधी। पत्र मं० १४। ब्रा० १२×७३ । भाषा—हिन्दी। र० काल मं० १८३५ । मं० काल × । पूर्णा । वै० सं० ३३६ । क मण्डार।

विजय-संस्कृतमूल तथा उसके नोचे भाषा दी हुई है।

७७१. प्रति संट २ । पत्र सं०६४ । ले० काल सं०१८६२ आयोज मुदी १४ । वे० सं०३३७ । कृ भण्डार ।

विशेष--- प्रत्य का दूसरा नाम दशावनार नाटक है। पं० फतेहलान ने हिन्दी गद्य में ग्रर्थ लिखा है।

७७२. धर्मप्रश्नोत्तर—विसलकोर्ति । पत्र मं० ५०। मा० १० $\frac{1}{4}\times V_0^3$ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र०कान × । नं० कान मं० १६१६ फापुन मुदी ५ । का अध्वार ।

विशेष—१११६ प्रम्नो का उत्तर है। ग्रन्थ में ६ परिच्छेद हैं। परिच्छेदों में निम्न विषय के प्रश्नो के उत्तर ह— १. दशलाक्षणिक धर्म प्रश्नोत्तर। २. श्रावकभर्म प्रश्नोत्तर वर्णान। ३. रन्तत्रय प्रश्नोत्तर। ४ तस्य पृन्द्रा वर्णान। ४. कर्म दिशक पृच्छा। ६. सञ्जन चित्त बक्षात्र पृच्छा।

मङ्गलाचरणः :-- नीर्थेशान् श्रीमतो विश्वान् विश्वनाथान् जगर्गुरुन् ।

धनन्तमहिम।रूढान् वंदे विश्वहितकारकान् ॥ १ ॥

चोखचन्द के शिष्य रायमल ने जयपुर में शांतिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

७७३. धर्मप्रहनोत्तर ' ""। पत्र सं०२७ । ग्रा० च;४४ । मापा–हिन्दी । विषय–मर्मे । र० काल ४ । ने० काल सं०१६३० । पूर्ण। वे० सं०४०० । इस भण्डार।

विशेष---प्रत्य का नाम हिलोपदेश भी दिया है।

७७४). धर्मप्रश्लोत्तरी''''''' पत्र सं∘४ में ३४ । झा० ८×६ इक्का आपा—हिन्दी ! विषय— धर्म । र०काल × । ले०काल सं०१६३३ । झपूर्णावै० सं०४९० । चामण्डार ।

विशेष--पं० लेमराज ने प्रतिलिपि की।

७०%, अर्मण्यतीलर आवकाषारमाया—चण्याराम । यत्र मं० १७७ । प्रा० १२४८ रुखा । माधा— हिन्दी । विषय— आवकों के प्रावार का वर्णन है। रकेकाल सं० १८६८ । लेककाल सं० १८६७ । पूर्णा वेकसंक ३३८ । क मण्डार ।

७९७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले॰ काल 🗵 । वे॰ सं० २१८ । व्य भण्डार ।

७.८. धर्मरत्नाकर—संबद्दकर्तापः संगत्ना । पत्र सं०१६१ । मा० १३४७ इक्का । जपा-संस्कृत । विषय-वर्षार० काल सं०१६०० । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं०३४० । का मण्यार ।

विशेष-लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सं० १६६० वर्षे कोश्रासंवे मंदतट प्राप्ते अट्टारक श्रीभूषणा शिष्य पंडित सङ्गल कृत शास्त्र रत्नाकर नाम शास्त्र संपूर्ण। संग्रह प्रत्य है।

७०७६. धर्मरसायन — पद्मलंदि । पत्र सं०२३ । ब्रा०१२ \times १ इक्क । भाषा-प्राकृत । विषय-पर्म । र०काल \times । ले०काल \times । पूर्ण । वे० सं०३४१ । कः भण्डार ।

अम्ब. प्रति संव २ | पत्र संव ११ । लेव काल संव १७६७ वैद्याल बुदी ४ । वैव संव ४३ । व्य भण्डार ।

७८२, धर्मरसायनः पत्र मं∘ स् । आः ११०/४६३ ६आः । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले॰ काल × । अपूर्ण । वै० सं॰ १६६४ । स्र भण्डार ।

थन्न-२, धर्मीक्षंक्युः.......। पत्र सं०१। झा०१०४४ दश्च । आधा-संस्कृत । विषय-वर्म । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ता । के० सं०२१४५ । ट भण्डार ।

७८६. धर्मसंब्रहमायकाचार—पंकोधाबी । पत्र संग्४६ । माग्१२८४ इक्का भाषा-संस्कृत । विषय-श्रावक धर्मवर्णम् । रंग्कासंग्१४४१ । लेग्काल संग्१४४२ कालिक मुदी ४ । पूर्णाविश्संग्१६६ । इक्स सम्बद्धाः

विश्रोष—प्रति बाद में मंशामित की हुई है। मंगलावरण की काट कर दूसरा भंगलावरण लिखा गया है। तथा पुरिका में सिध्य के स्थान में भंतेवासिना शब्द जोड़ा गया है। लेखक प्रशस्ति निम्म है—

 धेयाः । द्वितीय वृत्रः पंचारमुद्धरात्रियानको नेमिदासः तस्य भाग्यं विश्वितानेकथन्मैकायां ग्रुणिक्षिरं इति प्रसिद्धिः तस्युक्षी विरंजीविनां शेक्षारं वंदराय वंदाभियानी । प्रयः सामु केसारुस्य उचेष्ठा जायावीलादिष्ठुएएरलसानिः साम्यो कमलक्षी द्वितीयमनेकप्रतिविद्यान्त्रप्रतालकः । सम्पन्तः सन्यक्षत्रत्वाद्यवात्रतरालकः । संचयित कृत्यार्षः । शस्यति सम्पन्तियान्त्रप्रतालक्षत्रात्रात्रात्रप्रतालकः । संचयित कृत्यार्षः । शस्यत्र नालावीलविनयादिष्ठुएएपावं साधु लाक्षी नाम येथं । तस्योः सुतो देवपूजाविषद्क्षिया कमिलिनिकास-नेनमात्रांव्यायो । जिन्दासः तन्यहिलाधर्मकर्माठे कर्म वीरितनाम । एतेषां मध्येशंचयित स्त्वास्य मार्था जही नाम्ना चित्रपुत्र ग्रांविद्यास्य । व्यापाजितवित्रते दर्द श्री धर्मसंबद्द पुस्तकरंवकं पंडितकीमीहास्वस्योपदेसेन प्रयमतो लोकं अवर्तनार्थं लिखापितं भव्यानां पठनाय । निजकातावरएएकर्मकायार्थं सावन्द्रपत्रकरंवकं पंडितकीमीहास्वस्योपदेसेन प्रयमतो लोकं अवर्तनार्थं लिखापितं भव्यानां पठनाय । निजकातावरएएकर्मकायार्थं सावन्द्रपत्रकरंवतं विद्यान्तित्वताव ।

अन्ध्र. प्रति सं०२। पत्र सं०६३। ले० काल ×। ते० सं०३४४। क भण्डार।

धन्ध्र. प्रति सं**० ३ । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १७**न्६ । बे० सं० ३४२ । इस भण्डार ।

७८६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ते० काल सं० १८८६ चैत सुरी १२ । वे० सं० १७२ । च अण्डार । ७८७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४८ मे ४४ । ते० काल सं० १६४२ वैशाख सुरी ३ । वे० सं० १७३ । च अण्डार ।

७८६. धर्मसंसद्श्यावकाचार'''''' । पत्र सं० ६६ । आ० ११२ \times ४३ इक्क । आपा-संस्कृत । विषय-धात्रक धर्म । र० काल \times । ले० काल \times । वे० सं० २०३४ । च्या अच्छार ।

विशेष----प्रति दीमक ने खाली है।

७६०. घर्मे संसद्धश्रायक।चारः*****। पत्र सं०२ से २७ । झा० १२४५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-श्रावक धर्म । १० काल ४ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वै० सं० ३४१ । इक मण्डार ।

७६१, धर्मश्रारत्त्रप्रदीप "'। पत्र सं० २३। आ० १८४ इक्ष । आया-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र० नाव . । ते० काल ४। प्रपूर्ण । वे० सं० १४६६ । ऋ मण्डार ।

७६२. धर्मसरोबर—जे अराज गोहीका। पत्र सं० ३६। आ० ११३×७३ दश्च । भाषा-हित्दी। विषय-धर्मपदेश। र० काल सं० १७२४ धाषाद सुदी ऽऽ। ले० काल सं० १६४७। पूर्ण। वै० लं० ३३४। क अंडार

> विशेष—नागबद्ध, धनुषबद्ध तथा चक्रबद्ध कविताओं के वित्र हैं। प्रति सं० २ के ग्राधार से रचना संवत् है ७६३ . प्रति सं०२। ले० काल सं०१७२७ कॉलिक नृदी ४ । वे० सं०३४४ । क्र अण्डार ।

विशेष---प्रतिलिपि सोगानेर में हुई थी।

७६४. श्वर्थकार—पंट शिरोमणिदास । पत्र सं० ६१ । घा० १३४७ इत्रा । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल सं० १७३२ बैकाला सुदी ३ । ले० काल 🔀 । प्रपूर्ण । वै० सं० १०४० । इत्र भण्डार ।

७६४. प्रति सं०२। पत्र सं०४७ । ले०काल सं०१६६५ फाग्रुस बुदी ४। वे०सं०४६। ग्र भग्दार।

विशेष-श्री शिवलालजी साह नै सवाई काशोपूर में सोनपाल श्रीसा से प्रतिसिपि करवाई ।

७६६. धर्मासृतस्कृतस्य ह— खाशाघर । पत्र सं०६४ । बा० ११४४३ इख । भाषा–संस्कृत । विषय– बाबारएवं धर्म । र० काल सं० १२६६ । ले० काल सं० १७४७ बालोज बुदी २ | पूर्ण । वे० सं० २६४ ।

विशेष—संबद् १०८७ वर्षे घासीन मुद्दी २ बुधवासरे प्रयं द्वितोय सागरधर्म्म स्कंधः रद्यान्यवयद्ससम्बर् धिकानि बस्वारिशकानि ॥४७६ ॥ छु ॥

धंतमहुतमस्त्रेषी रम मुख्यिं सिमापन्ता ।।
हृंति ग्रसंस्य जीवानिहिंग सन्वदरसी ।। दुग्या गाथा ।।
संगर कडू मिथीभूगवर्णेगमम् कम्मासं ।
एव सर्व्य विदलं वज्जोपन्यापयेगा ।। १ ।।
विदलं जी भी पछा मुहं च पत्तं च दोविषो विज्ञा ।
ग्रह्मावि ग्रम्न पत्तो भूं जिल्लं गोगमाईय ।। २ ।।

इति विदल गाया ॥ श्री ॥

रचना का नाम 'धर्मामृत' है। यह दो आयो मे विश्वक है। एक सागाधर्मामृत तथा दूसरा प्रनागार धर्मामृत।
७६७. धर्मोपदेशपीयूपआवकाचार—सिंहनींद् । पत्र मं∘ ३६ । ब्रा० १०३×४३ ड्या। आया— संस्कृत | विषय–प्राचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १७८५ साघ सुदी १३। पूर्ण। वे० मं० ४८। घ अध्यार।

७६८. धर्मीपेदेशश्रावकाचार—कामोधवर्ष। पत्र सं∘ ३३। प्राट १०५४५ दक्क्ष। भाषा—संस्कृत। विषय—प्राचार शास्त्र। र० काल ४। ने० काल सं० १७६५ माघ मुद्दी १३। पूर्ण। वे० सं० ४६। घ भण्डार।

विशेष--कोटा में प्रतिलिपि की गई थी।

७६६. धर्मीपदेशश्रावकाचार—बद्धा नेसिदत्त । पत्र सं० २६ । पा०१०%४३ दश्च । भाषा-मंस्कृत । विषय-पाचार शास्त्र । र० काल ※ । ले० काल ※ । ष्रपूर्ता । वै० सं० २४४ । छु सण्डार । प्रतिस पत्र नहीं है ।

> ष्पठर, प्रति संट २ । पत्र संट १४ । लेट काल संट १८६६ ज्येष्ठ मुदो ३ । वेट संट ६० । जा भण्डार । विशेष— भवानीचन्द्र ने स्वयटनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

द•१. प्रति सं०३ । पत्र सं०१८ । ले० काल × । वे० सं०२३ । का भण्डार ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

८०३. धर्मापदेशसंग्रह—सेवाराम साह। पत्र सं० २१८। ब्रा०१२४८ इ**छ**। भाषा-हिःदो ! विषय—धर्म। र० काल सं०१८५६ । ले० काल ४ । वै० सं० ३४३ ।

> विशेष—प्रत्य रचनासं० १६६६ में हुई किन्तु कुछ ग्रंग स० १८६१ में पूर्ण हुमा। ८०५. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १६० । ले० काल ४ । वे० सं० ५६७ । च कच्छार। ८०५. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० २७६ । ले० काल ४ । वे० सं० १८६५ । ट कच्छार।

म०६. तरकतुः स्वर्धेत— भूयरदान । पत्र तं०३। का० १२×४३ इक्का । आया-हिन्दी पद्यः। विषय—नरकके दुलों का वर्शन । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्शः। वे० त० ३६४ । का मण्डारः।

विशेष---भूधर कृत पार्ख्यूरागा में से है।

मट७. .प्रति संट २। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० १६६। ऋ भण्डार।

६०६. तरकवर्षीनः''''। पत्र सं० ६ । मा० १०६ै ४१ ६ झा । भाषा-हिन्दी । विषय-नरका का वर्सन । र•काल ४ । ने० काल सं० १८७६ । पुर्सा वै० सं० ६०० । च अण्डार ।

विशेष-सदापुत कासलीवाल ने प्रतिनिधि की ।

६०६. नवकारश्रावकाचार $\cdots\cdots$ । पत्र सं०१४। सा०१० $\frac{2}{6}$ ४४ $\frac{2}{6}$ इ.स. । भाषा–त्राकृत । विषय– श्रावको का ब्राचार वर्सान । र० काल \times । ते० काल सं०१६१२ वैकाल सुदी ११। पूर्ण । वै० सं०६५। इद्यं अण्डार

विशेष—भी पार्वनाथ चौद्यालय में संबेक्सवाल गोत्र वाली बाई तील्हू ने श्री प्रार्थिका विनय श्री को भेंट किया। प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संबन् १६१२ वर्षे बैद्यास सुदी ११ दिने श्री पार्श्वनाथ वैश्वासये श्री मुस्तमेचे सरस्वनी गच्छे सलास्कार-गमो श्रीकुं वहुं वाचार्यान्वये भट्टारक श्री पमांवि देवा तत्पट्टे म० श्री सुमवन्द्रदेवाः तत्पट्टे म० श्री प्रमायन्द्रदेवा तत्-जिप्य मण्डलाचार्यं श्री धर्मबन्द्रदेवा तत्विष्यमण्डलाचार्यं श्री सस्तितकीतिदेवा तदाम्माये स्रदेसवास्नान्वये सोनी गोश्रे बाई नोस्तृ इदं शास्त्रं नवकारे श्रावकाचारं सानावरणी कर्मकार्यं निमित्तं मर्गिका वितिसिरीए दर्मा ।

६९८. लष्टोदिष्टः'''''''। पत्र संव ३ । साव ६४५ इक्का । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । रव वाल ४ । लेंऽ काल ४ । पूर्वा वेव संव ११३३ । इस मण्डार ।

= २१, निजासिंग् = न्नः जिनदास । पत्र सं \circ २। मा \circ = \times ४ इक्षा । भाषा=हिन्दी । विषय=धर्म । \circ काल \times । तुर्थों । वे \circ सं \circ ३६ = । क्र अध्यार ।

६१२, नित्यकुत्यवर्षीन'''''' । पत्र सं० १२ । मा० १२×५३ दश्च । माषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । इक सण्डार ।

द्ध? इ. प्रति सं०२ । पत्र सं०६ । ले० काल × । वै० सं०३ ४६ । इट भण्डार ।

=१४. निर्माल्यद्शेषदर्शन—वा० दुवीचस्य । पत्र सं०६ । मा० १०३% ८३ भाषा-हिन्दी । विषय-भावक धर्म वर्रोत । र०काल ४ । से०काल ४ । सप्रुर्ण । वै० सं०३ ८१ । क भण्डार ।

ष्पर्थ. निर्वासाप्रकृतसुरः***** पत्र सं०६२। झा०६ई ४८३ इका। भाषा-हिन्दी गया। विषय-भर्म। र०काल ४। ने०काल सं०१८६६ वैद्याला बुदी ७। पूर्ण। वै०सं०२३१। जाभण्डार।

विशेप--- प्रदका शाहज में है । यह जैनेतर प्रन्य है तथा इसमें २६ सर्ग हैं।

स्१६. निर्वाखनीदकनिर्धय—नेविदासः। पत्र सं० ११। बा० ११३×७३ इत्र । भाषा-हिनी गद्य । विषय-महावीर-निर्वाख के समय का निर्हाख । र० काल × । ते० काल × पूर्ण । वे० सं० १७ । झ मध्यार ।

िधमे एवं का बार शास्त्र

५१७. पंचपरसेष्ट्रीशुरुगुः****। पत्र सं० ४ । ब्रा० ७ \times ४२ हे हक्क । सावा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल \times । पूर्ण । वे॰ सं० १३२० । ब्रामध्यार ।

क्रिक, पंचपरसेष्ठीगुरायवर्णन—काल्हरास्रः। पत्र सं० ७३ । मा० ४२,४४३ । प्राथा–हिन्दी गच। विषय-व्यरिहंत, सिद्ध, द्रांचार्य, उपाच्याय एवं सर्वसाषु पंचपरसिष्ठियों के ग्रुर्णों का वर्णन । र० काल सं० १०६५ फायुरा युदी १०। ले० काल सं० १०६६ प्रायाद बुदी १२। पूर्णा वे० सं० १७। अक्र मण्डार।

विशेष--६०वें पत्र से द्वादशानुत्रेक्षा भाषा है।

दश्ट. पद्मलंदिपंचविंशतिका—पद्मलंदि। वन तं० ४ ते व ३ । झा० १२३/४५ इक्का । भावा—संस्कृत । विषय—वर्म । र० काल ४ । ते० काल सं० १४व६ चैत सुदी १० । झपूर्यो । वे० सं० १६७१ । इस भण्डार ।

विशेष---नेसक प्रशस्ति अपूर्ण है किन्तु निम्न प्रकार है---

श्री धर्म बन्द्रास्तदास्नाये जैव गोत्रे संदेशवालान्वये रामसरिवास्तव्ये राव श्री जगमाश राज्यप्रवर्तमाने साह सोनवाल

६२०. प्रति सं०२ । पत्र सं०१२६ । ले० काल सं०१५७० ज्येष्ठ सुदी प्रतिपदा । वे० सं०२४५ । अस्र मण्डार ।

विशोष-प्रशासित निम्नप्रकार है-संवत् १५७० वर्षे उच्छे सुदी १ रबौ श्री सूलसंचे बलानकरगणे सरस्वती गच्छे श्री कुंदकुं दावायन्वये म० श्री सकलकीतिस्तिच्छ्य्य म० श्रुवनकीतिस्तिच्छ्य्य म० श्री ज्ञानभूपणः तिच्छ्य्य ब्रह्म तेजसा पठनावं । देखुलि श्रामे वास्तव्ये स्था० शवदासेन लिखिता । सुमं अवतु ।

विषय सूची पर "सं० १६ न ५ वर्षे" लिखा है।

द्दर. प्रति संद ३। पत्र संव ६। लेव काल ×। वेव संव १२। श्रा भण्डार।

दर्र. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६०। ले० काल सं० १८७२। वै० सं० ४२२। इ. भण्डार।

द्दरे. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४१ । ले∙ काल × । वै० सं० ४२० । क भण्डार ।

द्दरप्त. प्रति संब ६ । पत्र संब धरे । लेव काल × । वेव संब ४२१ । क भण्डार ।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है।

⊏२४. प्रतिसं०७ । पत्र सं० ४६ । ले०काल सं० १७४ = माच सुदी४ । वे० सं०१०२ । स्व अध्यार ।

विशेष--- भट्ट बह्मभ ने भवंती में प्रतिलिपि की थी । बहावर्याष्ट्रक तक पूर्ण ।

प-२६. प्रति सं० ⊏ । पत्र सं० १३६ । ले० काल सं० १४७० नाव सुरी २ । वै० सं० १०३ । स अध्यार 1

प्रवस्ति निम्नप्रकार है— संबत् १४७६ माच तुषी २ बुधे श्रीमुलसंवे सरस्वतीगच्छे बसात्कारमणे श्री कुंबर्डुबाबार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनीद देवस्ताराष्ट्रे भट्टारक श्री सकलकीतिदेवास्तत्यद्दे महुररक श्री कुंबर्जितिदेवास्त रक्षातु झाबार्य श्री झानकीतिदेवास्तत्विच्य झाबार्य श्री रत्यकीतिदेवास्तिच्छ्य झाबार्य श्री सवाःकीति उपदेवात् हुंबड् ज्ञातीय बागड़बेशे सागवाड़ युमस्वाने श्री बादिनाय चैत्यालये हुंबड़ ज्ञातीय गांधी श्री वीपट मोर्बी पँवीस्तियोःपुत गांधी राना भागी रामादे सुत हूं गर भागी दाडियदे ताम्यां स्वज्ञानावर्णी कर्म समार्थ सिखस्य इयं पंचींद्यस्थिका रत्ता ।

> स्तर्थः, प्रति सं ० ६ । पत्र सं० २ स्त । ते० काल सं० १६३ स्त्रणाढ़ सुदी ६ । कै० सं० ५४ । घ भण्डार विकोष-स्टैराठ नगर में प्रतिनिधि की गई थी ।

दर्द. प्रति सं० १० | पत्र सं० ४ | ले० काल × | बपूर्ल । वे० सं० ४१८ । क त्रण्डार ।

म्पर्ट. प्रति सं०११ । पत्र सं० ४१ से १४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४१६ । कृषण्डार ।

≒३०. प्रति सं०१२ । पत्र सं० ७६ । ते० काल ×। प्रपूर्ण । वे० सं० ४२० । इस् मण्डार ।

स्देश. प्रति सं० १३ । पत्र सं० दश । ले० काल × । प्रपूर्ता। वे० सं० ४२१ । क मण्डार । स्देश. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं १६८२ पीच बुदी १० । वे० सं० २६० । ज मण्डार

विशेष--- कहीं कही कठिन शब्दों के धर्य भी दिये हैं।

्रेरे. प्रति सं०१४ । पत्र सं०१६८ । ते० काल सं०१७३२ सावसा सुदी ६ । वे• सं०४६ । व्यासण्डार ।

विशेष--पंडित मनोहरदास ने प्रतिलिपि कराई ।

मदेश. प्रति संट १६। पत्र सं० १३७। ले० काल सं० १७३५ कार्तिक सुदी ११। वे० सं० १०६। झ भण्डार।

> म्बर्थः. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ७६ । ले० काल 🗴 । वे० सं० २६४ । ब्यू अण्डार । विशेष—प्रति सामान्य संस्कृत टीका सिक्ति हैं ।

म-२६. प्रतिसं•१म । पत्र सं• ५ मा ले॰ काल सं॰ १५ म् बैशास सुदी १ । वे॰ सं॰ २१२० । ट भण्डार ।

विशेष---१४.६५ वर्षे वैद्याल सुदी १५ सोमवारे श्री काष्ट्रासंघे मात्रार्गाके (मायुरान्वे) पुष्करगरो भट्टारक श्री हेमबन्द्रदेव । तत्र ******।

म्देशः पद्मानंदिपंचर्थिशतिटीकाःःःः। पत्र सं० २०० । झा० १३४४ दक्का । आचा–संस्कृत । विषय– धर्म । र० काल × । ते० काल सं० १९५० भाषवा जुदी ३ । झपूर्ण । वे० सं० ४२३ । क अण्डार ।

विशेष--- प्रारम्भ के ५१ प्रष्ट नहीं हैं।

न्द्रमः पद्मानंदिपविसिधाया—जगतरायः । पत्र सं०१००। मा०११ $^{1}_{*}$ \times $^{1}_{*}$ हक्षः । भाषा-हिन्दी प्राः । र० काल सं०१७२२ फाइएए सुरी १०। ले० काल \times । पूर्णः। वे० सं०४१६ । क्र अध्वारः।

विशेष--प्रत्य रचना औरक्रुजेन के शासनकाल में भागरे में हुई थी।

म्दे६. प्रति स्तं० २ । पत्र सं०१ ७१ । २० काल सं०१ ७४ = । वे० सं०२६२ । व्याश्रण्डार । विशेष---प्रति सुलार है । म्प्रेश- **पद्मानंदिपचीसीभाषा— भन्नालाल क्षिन्ट्**का। पत्र सं०६४१। द्या०१३×०६ स्त्रा। भाषा– क्षिन्देः गद्यः। विषय–धर्मः। र०काल सं०१६१५ मंगसिर दुवी १। ले०काल ×। दुर्गावे० सं०४१६। क्रमण्डार

विशेष—इस क्या की वचनिका लिखना ज्ञानक्ष्म्यों के पुत्र जाँहरीलासकी ने प्रारम्भ की थी। 'सिख स्त्रुति' तक जिखने के प्रधान् प्रत्यकार की मृत्यु होगई। पुत्रः मन्नालाम ने ग्रत्य पूर्ण किया। रचनाकाल प्रति सं० ३ के प्रापार में लिखा गया है।

मध्र. प्रति सं०२। पत्र सं०४१७। ले० काल ×। वे० मं०४१७। क भण्डार।

⊏४२. प्रतिस्०३ । पत्र सं०३५७ । ले० काल सं०१६४४ चैत बुदी ३ । वै० सं०४१७ । क भण्डार ।

म्प्रेट, पद्मानंदिपकीकी भाषा''''''' । पत्र सं० १७ । सा० ११×७ दृद्या । भाषा – हिन्दा । विषय– धर्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वे०सं० ४१⊏ । इद्र भण्डार ।

क्तप्रप्त, पद्मनिदिश्रायकाचार—पद्मनिदि । पत्र सं०४ ते ४३ । झा० ११५ँ×५५ दश्च । ब्राया—संस्तृत । विषय—सावार आस्त्र । र०काल × । ले०काल सं०१९१३ । सपूर्ण । वे० सं०४२६ । क्रमण्डार

६४४. प्रति सं०२ । पत्र सं०१० ते ६६ | ले० काल ४ । प्रपूर्ण । वे० सं०२१७० । ट मण्डार । ६५६. परीवह्वर्णना------ । पत्र सं०६ । झा०१०६४५ दश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं०४४१ । इक मण्डार ।

विशेष-स्तीत्र बादि का संबह भी है।

= ५४७. पुरुक्तीसेयाः'''''''' पत्र सं०२। मा०१०४४ इखा। भाषा-प्राकृत । विषय-पर्स। र० कµल ⋋। ने० काल ×। दे० सं०१२७०। पूर्ण। का मण्डार।

८४८. पुरुषांवेसिद्धः युपाय-व्यकृतचन्द्राचार्यः । पत्र सं० ११ । घा० १२५४५ इझः । आवा-संस्कृत विवय-पर्यः । र० काल × । ते० काल सं० १७०७ मंगसिर मुत्री ३ । वे० सं० ११ । झः मखार ।

विशेष--प्राचार्य कनककीर्ति के शिष्य सदाराम ने फागुईपुर में प्रतिलिपि की थी।

मध्र ६. श्रति स०२ | पत्र सं०६ । ले० काल ×।। वे० सं० ५५ । क्ष्रू मण्डार ।

८.४०. प्रति सं०३ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं०१८३२ । वे० सं०१७८ । का भण्डार ।

म्प्रश्. प्रति सं० ४। पत्र सं० २०। ले० काल सं० १९३४। वे० सं० ४७१। कृ भण्डार। विकेद--- इलोकों के ऊपर नीचे संस्कृत टीका भी है।

क्रथर, प्रति सं० ४। पत्र सं० का ते० काल ×। वै० सं० ४७२। इक मण्डार ।

मध्ये. प्रति सं०६ । पत्र सं०१४ । ते॰ काल 🗙 । वै॰ सं०१७ । छ मण्डार ।

विशेष---प्रति प्राचीन है। प्रन्य का दूसरा नाम जिन प्रवचन रहस्य भी दिया हुआ है।

न्ध्रप्त. प्रतिसंट ७। यत्र भेट २६। लेट काल संट १८१७ मादवा बुदी १३। वेट संट ६६। इङ् भण्डार।

विषय—प्रति टब्बाटीका सहित है तथा जयपूर में लिखी गई थी।

=४४. प्रति सं० ⊑ । पत्र मं० १० । ले० काल × । वै० सं० ३३१ । आ भण्डार ।

म्प्रकृत पुरूषार्थिसञ्जयुषायभाषा—पंट टोडरमला। पत्र संट १७। घाट ११६४५ इक्का आया— हिन्दी। विषय-प्रमारक काल संट १८५। लेट काल संट १८५६। पूर्ण। वेट संट ४०१। इस अध्वार।

च्थ्र प्रति सं०२। पत्र मं०१०५। ले० काल मं०१६५२। वे० मं० ४७३। क्र अण्डार।

⊏४४ म. प्रति संट ३ । पत्र सं० १४ म. | ने० काल सं० १८२७ मंगसिर मुदी २ । वे० सं० ११० । अक्ष भण्डार ।

न्धरः. पुरुषार्थनिद्धस्युपायभाषा—भूषरदासः। पत्र सं०११६। श्रा०११६४८ दश्चः। भाषा— द्वित्तो। विषय-पर्मारः काल सं०१ न०१ भारता सदी १०। ले० काल सं०१८५२। पूर्ण। के सं०४७३। **६**

म्हरु, पुरूषार्थिसिद्ध युपाय वचित्रका—भूषर सिम्नापत्र सं०१३६। मा०१३४७ द्वाामाया— रिसा।विषय–भर्मारु काल सं०१ चर्राले काल ४० पुर्णावेश सं०४०२। इस मण्डारी

प्रदेश. पुरूषार्थातुशासन—श्री गोबिन्द ग्रहु। पत्र सं० ३८ से ६७। बा० १०×६ इ**बः। भाषा**— संस्कृतः। विषय—धर्मः। र० काल × । ले० काल सं० १८५३ भाषवा बुदी ११ । ब्रपूर्णः। वे० सं० ४५ । द्या मण्डारः। विशेव-प्रशस्ति विस्तृत दी हुई है। ज्योजीराम मांवसा ने प्रतिस्थित सी दी।

=६२. प्रति सं०२ । पत्र सं० ७६ । ने० काल × । ने० सं० १७६ । ऋ भण्डार ।

मध्ये. प्रति संव ३ । पत्र संव ७१ । लेव काल × । वेव संव ४७० । क मण्डार ।

=६४. प्रतिक्रमस्या**** । यत्र मं० १२ । धा० १२×५ $\frac{1}{2}$ दख । भाषा=प्रकृत । विषय=किये हुये दोघों की धालोचना । र० काल \times । ले० काल \times । धपूर्स्स । वे० सं० २३१ । च भण्डार ।

८६४. प्रति सं०२। पत्र सं०१३। ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं०२३२ । 🖼 भण्डार ।

म्ह्ह६, प्रतिक्रमस्य पाठः''''' । पत्र सं० २६ । स्ना० १×६ दै इका। भाषा–प्राकृत । विषय किये हुये दोवो की ग्रालीचना र०काल × । ले०काल सं०१ न्दश्च। पूर्या। वै० सं०३ र । ज मण्डार ।

८६७, प्रतिक्रमसम्बुण्णाणा। पत्र सं०६। ग्रा० १८६ इ.च.। भाषा-प्राकृतः। विषय-विशे हुये दोखों की ग्रालोचना। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वे० सं०२२६८। का अण्डार।

=६म्, प्रतिक्रमस्यः**** । पत्र सं० २ से १८ । द्या० ११ \times ५ इक्का । भाषा-संस्कृत । विषय-किसे हुवे दोषों की ब्रालीचना । र० काल \times । ले० काल \times । ब्रपूर्ण । वै० सं० २०६६ । ट अण्डार ।

म्द६. प्रतिक्रमण्सूत्र—(वृत्ति सहित)ःः। पत्र सं० २२ । झा० १२४४६ दक्ष । भाषा-प्राकृत संरकृत । विषय किये हुए दोषों की सालोबना । र०काल × । ते० काल × । पूर्वी । वै० सं० ६० । घ जण्डार । म-७०. प्रतिसारत्यापक कूंथपहेरा—जगहरूष । पत्र सं०४७ । बा० १४४ इक्का । आया–हिली । विषय-धर्म । र० काल ४ । ले० काल सं०१२२ । पूर्ण । वे० सं०११२ । स्र भण्डार ।

विशेष--धौरक्ताबाद में रचना की गयी थी।

स्थरे. प्रत्याख्यान***** । पत्र सं० रे। झा० १०४४ ; दक्का आंचा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्णे । वे० सं० १७७२ । ट अण्डार ।

च. प्रश्नोक्तरआवकाचार """। पत्र सं० २४ । शा० ११४८ दश्च । भाषा—संस्कृत । विषय-प्राचार सास्त्र । र० काल ४ | मे० काल ४ । प्रपूर्ण । वे० सं० १६१८ | ट भण्डार ।

विजेष--प्रति हिन्दी व्यास्था सहित है ।

८०२. प्रस्तोत्तरश्रावकाचारभाषा — जुलाकीदास । पत्र में०१६२ । झा०११८५ इक्क । भाषा — हिन्दी पद्य । विषय–प्राचार झास्त्र । र०काल सं०१७४७ वैद्याख नुदी २ । ले०काल सं०१८६६ संगीसर मृदी ६ । वे० सं०६२ । सभण्डार ।

विशेष—स्योलालजी के पुत्र छ। बूलालजी साह ने प्रतिसिपि वरायी। इस प्रथ वा है भाग जहानाबाद तथा वौषाई देशांग प्रकारित में लिखा गयाथा।

'तीन हिस्से या श्रन्थ की भयं जहानाबाद।

चौबाई जलक्य विषे वीतराग परमाद ॥'

८७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ते० काल सं० १८८५ सावाग मुदी १ । दे० सं० ६३ । रा अध्वार । विकेश—द्योलालकी साह ने सवाई माधोपुर में प्रतिनिधि कराकर बांधरियों के मन्दिर प्रत्य चढाया ।

म ७४. प्रतिसंठ ३ । पत्र स० १४०। लें० काल सं०१ मध्ये पुती ४ । वे० स० ४२१ । इर भण्डार ।

विशेष—भं० १८२६ फाष्ट्रण सुदी १३ को बखतराम गोधा ने प्रतिलिंगि की थो ब्रीर उर्सा प्रति से इस की नकल उदारी गई है। सहस्सा सीताराम के पुत्र लालकर ने इसको प्रतिलिंगि की।

क्र⊌६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २१। ने० काल ×। ने० सं० ६४८। प्रपूर्ण। च भण्डार।

क्ष काल संव १०१। लंक काल संव १६६६ साथ सुदी १२। वेव संव १६६। छ। भण्डार ।

क्राउप्त. प्रति संट ६ । पत्र सं०१२० । लंग काल सं०१६६३ पीष बुदी १८ । वेश मंश १६ । आह अण्डार ।

८०६. प्रस्तोत्तरश्रावकाचार भाषां—पत्रालाल चौधरी । पन सँ० ३४० । छा० १२०४६ इक्का । भाषा—हिन्दी गया । विषय—भाषार सास्त्र । र० काल सं० १६३१ पीच बुढी १४ । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ता । वै० सं० ११८ । क भण्डार ।

==0. प्रति सं० २ | पत्र सं० ४०० | लेज काल सं० १६३६ | वेठ सं० ५१५ । क अण्डार ।

विशेष---धावार्य राजकीति ने प्रतिलिपि की थी।

क्रक्र प्रति सं०२ । पत्र सं०१३० । ले० काल × । मपूर्ण । वे० सं०६४७ । चा भण्डार ।

मन्दर. प्रति सं• ३ । पत्र सं० ३०० । ने० काल 🗵 अपूर्ण । ने० सं० ४८० । रू अण्डार ।

म्म्यः प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३०० । ले० काल × । सपूर्ण । वे० सं० ५१६ । क भण्डार ।

न्मर्सः प्रश्नोत्तारोपासका चार—भन्न सकलकीत्ति । पत्र सं०१२१ । मा०११४४ इक्षः । माषा— संग्इत । विषय—धर्म । र०काल ४ । ले०काल सं०१६६५ काष्ट्रण मुदी १०। पूर्ण । वे० सं०१४२ । क्या भण्डार । विशेष—ग्रन्थायन्य संस्था २६०० ।

प्रवास्ति—संबत् १६६५ वर्षे फाग्रुण मुद्री १० सोमे बिराबदेगे पनवाइनगरे श्री चन्द्रप्रमचेत्वासये श्री काष्ट्रामचेत्वासये श्री काष्ट्रासंचे नंदीतटगच्छे विद्यागरो भट्टारक श्री राममेनान्वये भ० श्रीकार्यमेतेनवेवास्तरपट्टे भ० श्री मिमसेनवेवास्तरपट्टे भ० श्री किश्वयेनचेवास्तरपट्टे श्री स्वाप्तिकारपट्टे भ० श्री किश्वयेनचेवास्तरपट्टे श्री स्वाप्तिकारपट्टे भ० श्री किश्वयेनचेवास्तरपट्टे भ० श्री किश्वये

मम्बर्धाः प्रतिसं०२ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १६६६ पीष सुदी १ । वे० सं० १७४ । इस भण्डार ।

प्यप्य प्रमाण संव ११७ । ले॰ काल सं० १८८ । संगतिर सुवी ११ । वे० सं० १९७ । इस अच्डार ।

विशेष — महाराजाधिराज सर्वाई जयसिंहजी के शासनकाल में जैतराम साह के पुत्र क्योजीलाल की आयाँ ने प्रतिनिषि कराई। प्रत्य की प्रतिलिषि जयपुर में अंबावती (प्रामेर) बानार में स्थित ग्रादिनाथ वैत्यालय के नीव जती तनसागर के लिप्ब मत्रालाल के यहां सवाईराम योधा ने की थी। यह प्रति जैतरामजी के बड़ो में (१२वें दिन पर) क्योजीरामजी ने पाटोदी के मन्दिर में सं० १८६३ में भेंट की।

क्य. प्रति सं ४ . पत्र सं० १२४ । ले॰ काल सं० १६०० । वे० सं० २१७ । का अण्डार ।

. ८६८. प्रतिसं०४ । पत्र सं०२१६ । ले॰ काल सं०१६७६ ग्रासोज बुढी ४ । दे॰ सं०२१९ । इस संब्हार।

विशेस-नानु गोधा ने प्रतिलिपि कराई थी।

प्रणस्ति—संबत् १६७६ वर्षे ग्रासोज वदि शनिवासरे रोहणी नक्षत्रे नोजावादनवरे राज्यश्रीराजाशावस्तिष राज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंवे नेवाम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीयच्छे श्री कुंदकुंदावार्याच्ये भट्टारकभीषप्रवर्तदेवसारस्ट्रे भट्टारकभीशुजवन्तदेवातस्य्ट्रे भट्टारकश्रीजिनवन्त्रदेवातस्य्ट्रे भट्टारकश्रीप्रभावन्त्रदेवातस्य्ट्रे भट्टारकभीश्रमत्त्रदेवसारस्य्ट्रे भट्टारकभीश्रमत्त्रदेवसारस्य्ट्रे भट्टारकभीश्रमत्त्रदेवसारस्य सावकाचारचार्यक्रितिस्य

तद्भार्या सीलतोय-तरिङ्गाली विनय-वागेश्वरी धनसिरि तयोः पुत्राः त्रयः प्रवमगुत्रधर्मधुराधरण् धीरसाह श्री रूपा तद्भार्या दानसीलग्रुणभूष्यणभूष्यतगात्रानान्ना यूत्ररि तयोः पुत्र राजसभा यः गारहारस्वप्रतारिनकरमुकुलिङ्गतशत्रुमुखकुमुदा-कर स्वजः निसाकरमाङ्कादित कुवलयदानगुरा घरगोकुतकरापादप श्री पंचपरमेष्टिचितन पवित्रितवित सकलगुरिए-जनविधामस्थान साह श्री नानूतन्मनोरमाः पंच प्रथमनारंगदे द्वितीया हरसमदे तृतीया सुजानदे चतुर्घा सलालदे पंचम भार्या लाडी । हरलमदेजनितपुत्रा: त्रयः स्वकुलनामप्रकाशनैकचन्द्राः प्रथम पुत्र साह ग्राशकर्ण तद्भार्या ग्रहंकारदेपुत्र नायु । दुतीभार्यालाडमदे पुत्र केसवदास भार्या कपूरदे द्वितीय पुत्र चि० लूएाकरए। भार्या द्वे प्रथमलनतादे पुत्र रामकर्ग द्वितीय लाडमदे । तृतीय पुत्र चि० वलिकर्ण भार्या बालमदे । चतुर्च पुत्र चि० पूर्णमल भार्या पुरवदे । साह धनराज द्विती पुत्र साह श्रो जोधा तद्भार्या जौसादेतयोः पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्रधार्मिक साह करमबन्द तद्भार्या मोहागदे तयो पुत्र वि० दयालदास भार्या दाडमदे । द्वितीपुत्र साह धर्मदास तद्भार्याह्रे । प्रथम भार्या धारादे द्वितीय भार्या लाडमदे तयो पुत्र माह द्रंगरमी तद्भार्या दाष्टिमदे तत्पुत्री हो। प्र० पु० लक्ष्मीदास हि० पुत्र चि० तुलसीदास। जोधा तृतीय पुत्र जिएाचरमानमल-मधुप साह पदारथ तद्भार्या हमीरदे । साह धनराज तृतीय पुत्र दानगुग्।श्रेयाससकल जनानन्दकारकस्ववचनप्रतिपालन-समर्थसर्वोपकारकसाहश्रीरतनशी तद्भार्या हे प्रथम भार्या राजादे हितीय भार्या नीलादे तयो पुत्राश्चन्वारः प्रथम पुत्र क्षपाल तद्भार्या मुप्पारदे तयोःपत्र वि० भोजराज तद्भार्या भावलदे । श्रीरतनसी द्वितीय पुत्र साह गेगराज तद्भार्या गौरादे तयोपुत्राः त्रयः प्रथम पुत्र चि॰ सार्द्गल द्वि० पुत्र चि० निघा तृतीय पुत्र चि॰ मलहदी । साह रतनसी तृतीय पुत्र साह भरवा तद्भार्या भावलदे चतुर्थ पुत्र चि० परवत तद्भार्या पाटमदे । एतेषा मध्ये सिववी श्री नानू भार्या प्रथम नारंगदे । मद्वार्कश्रीचन्द्रकीनि शिष्य ग्रा॰ श्री शुभचन्द्र इदं शास्त्रं व्रतनिमिन्तं घटापितं कर्मक्षयनिमिन्तं । जानवान ज्ञानदाने""

```
도६१. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४६ मे १६४ ) ले० काल 🔀 । प्रपूर्णा। बैठ मं० १६६३ । 🕦 भण्डार ।
도६२. प्रति सं० ७। पत्र सं० १३०। ले० काल मं० १६६२ । प्रपूर्ण। बेठ मं० १०१६ । द्र्य भण्डार ।
विशेष—प्रवास्ति प्रपूर्ण हैं। बीच के जुद्ध एत्र नहीं है। पं० केंजरीलिंह के शिष्य लाल्यन्द ने महास्मा
```

शंभुराम से सनाई जयपुर में प्रतिलिपि करायी। मध्ये. प्रति संट मा पत्र संट १६४ | नेट काल संट १९६२ | वेट संट ५१६ | क्र सण्डार | मध्ये. प्रति संट ६ | पत्र संट ६१ | नेट काल संट १६४६ | वेट संट ५२० | क्र सण्डार |

मध्यः. प्रतिसं०१०। पत्र सं०२२१। ले०काल स०१६७७ पीप सुदी। वे०सं०४१७। क अण्डार।

> स.६६, प्रति सं० ११ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १८८ ^{....}। वे० सं० ११४ । स्त्र सण्डार । विशेष----पं० रूपकन्दने ने स्वपञ्चार्थे प्रतिसिधि की थी ।

मध्यः प्रतिसंट १२ । पत्र सं० ११६ । ते० काल × । ते० सं० ६४ । सा सम्बार । मध्मः प्रतिसं० १३ । पत्र सं० २ ते २६ । ते० काल × । सपूर्ण । ते० सं० ५१७ । कः सम्बार । मध्यः प्रतिसं० १४ । पत्र सं० ६६ । ते० काल × । सपूर्ण । ते० सं० ६१७ । कः सम्बार । ६००. प्रतिसं० १४ । पत्र सं० १२६ । ते० काल × । ते० सं० ५२० । कः सम्बार । ६०१. प्रति सं०१६। पत्र मं०१४५। ले० काल 🗴 । वे० मं०१०६ । 👼 भण्डारे । विशेष—प्रति प्राचीन है। प्रत्तिन पत्र बाव में लिला हुमा है।

६८२. प्रतिसंट १७ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १८५६ साथ सुदी ३ । वे० सं० १०८ । ह्यू भण्डार ।

६०-. प्रति सं० १≈ |े पत्र सं० १०४ | ने० काल सं० १७७४ फायुरा बुरी ६ | वे० सं० १०६ | विशेय—पांचोलाम में चातुर्मास योग के समय पं० सोभागविमल ने प्रतिलिपि की वी | सं० १६२४ ज्येष्ठ मुदी १४ को महाराजा पृथ्वीसिंह के दासनकाल में चासीराम खाबड़ा ने सांगानेर में गोधों के मन्दिर में चढाई |

६०५. प्रति सं० १६। पत्र सं० १६० । मे० काल मं० १८२६ मंगसिर बुदी १४ । वे० सं० ७८ । का मण्डार ।

१८४. प्रति स्टः ०। पत्र सं०१३२। ले० काल ×। वै० सं०२२३। व्य भण्डार।

६०६. प्रति सं०२१। पत्र सं०१३१। ले॰ काल सं०१७४६ मंगसिर बुदी ६। वे॰ सं०३०२। विजेप—महास्मा धनरात्र ने प्रतिनिधि की थी।

६८७. प्रतिसं० २२ । पत्र सं०१६४ । ने० काल सं०१६७४ ज्येष्ठ मुदी २ । ने० सं०१७४ । स्व भण्डार ।

६० म. प्रति सं० २३ । पत्र मं० १७१ । ले० काल सं० १६८ म पौद्य मुद्री ४ । वे० सं० ३४३ । ञ भण्डार ।

> विजेष—अहारक देवेन्द्रकीर्मितदास्त्राये संबेलवालात्यवे पहाड्यासाह श्रीकाल्हा इदं पुस्तकं लिखापितं। १८८६. प्रतिसंट २४ । पण संट १३१ । नेट काल 🗴 । वेट संट १०३ । ट मण्डार ।

६१०. प्रश्तोचरोद्धार ""।पत्र संस्था ४०। ष्रा०-१०र्दे×४२ इन्स । भाषा-हिन्दी। विषय-प्राचार शास्त्र । र० काल-× । ने० काल-मं० १६०४ सावत बुदी ४। ष्रपूर्ण । वे० सं० १६६। द्वर् भण्डार । विशेष-चुरू नगर में स्थीजीराम कोठारी ने प्रतिक्षिप कराई ।

६१२, अशस्तिकाशिका— वात्रकृष्णा । पत्र संस्था १६ । या० ६९ ४४ हु इत्त्र । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल–४ | ले० काल–मं० १५४२ कार्तिक वदी ८ । वे० सं० २७८ | छ भण्डार ।

विशेष--- बस्तराम के शिष्य शंभु ने प्रतिलिपि की बी.।

प्रारम्म—नत्वा गर्गावति देवं सर्व विभा विनाशनं ।
शुद्धं व करुगानावं ब्रह्मानंदानिषानकं ॥१॥
प्रशस्तिकाशिका दिष्या वालकुरुगेन रच्यते ।
सर्ववाशुरकाराय लेकनाय त्रियातिशा ॥ २॥
वर्गुर्शामिय वर्ग्याता क्रमतः कार्यकारिका ॥
लक्ष्यते वर्वविद्याचि प्रवोचाय प्रवस्तिका ॥ ३॥

यस्या लेखन मात्रेगा विद्याकीर्तिपगोपि च । प्रतिष्ठा लम्यते शीध्रमनायासेन धीमता ॥ ४ ॥

- . **६१२. प्रात: किया****** । पत्र मं० ४। प्रा० १२ 4 रं दक्का। भाषा-संस्कृत । विषय-साचार । र० काल $-\times$ । तेर्ण । वेर्ण । वेर्ण सं० १६१६ । π भण्डार ।
- **६१३. प्रायरिचत ग्रंथ** ***** । पत्र सं∘ ३ । सा० १३×६ इन्त । भाषा-संस्कृत । विवय-किये हुए दीषो की मालोकना । र० काल-× । ले० काल-× । मणुर्ण । वै० सं० ३५२ । का मण्डार ।
- ६१४ प्रायश्चित विधि इवकलंक देव । पत्र सं०१०। घा० ६४४ इझा। भाषा— स्कृत । विषय-किये हुए दोषों को झालोचना। र० काल-×। ल० काल-×। पूर्णा वे० सं०३५२। इस भण्डार।
 - £१४. प्रतिसंट २ । पत्र सं० २६ । ले० काल ४ । वे० सं० ३५२ । ऋ भण्डार ।

विशेष --- १० पत्र से झागे झन्य ग्रंथों के प्रयश्चित पाठों का संग्रह है।

- १९६. प्रति संद ३। पत्र संद १ । लेव काल संद १९३४ चैत्र बुधी १। वैद संद १९८ । त्य अण्डार । विशेष—पंद पत्रालाल ने जीवनेर के मंदिर जयगर प्रतिलिपि की थी ।
- £ १७. प्रति संदर्भाले व काल -× । वे० मं० ५२३ । इस् भण्डार ।
- **६१८. प्रति सं० ४ |** ले० काल—सं० १७४४ । वे० सं० २४४ | च भण्डार ।

विशेष-- प्राचार्य महेन्द्रकाति ने मुंबावती (धंबावती) मे प्रतिलिपि की ।

६१६. प्रति सं० ४। ले० काल-सं० १७६६ । वे० मं० ८। व्या भण्डार ।

विशेष---बगर में पं० हीरानंद के शिष्य प चोक्षचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

विशेष--- २२ वां तथा २६ वां पत्र नहीं है |

- **६२१. प्रायरिचत विधि*********। पत्र सं \circ ६ । प्रा \circ $= \frac{1}{2}$ \times \times 1 इक्क । भाषा-संस्कृत । शिषय-चित्रं हये दोषी का परचाताप । र० काल- \times । ले० काल- \times । पूर्ण । वै० सं \circ १२८१ । क्का भण्डार ।
- **६२२. प्रायश्चित विधि भ० एकसी**धे । पत्र सं०४ । द्या० ६४४<mark>. इख । आपा-संस्कृत । विषय–</mark> किये हुए दोषों की आलोचना । र० काल–× । ले० काल–× । पूर्ण । वे० सं०११०७ । द्वा भण्डार ।
 - ६२३. प्रति संट २ । पत्र संट २ । लेट काल × । तेट संट २४५ । च भण्डार ।

विशेष--प्रतिष्ठासार का दशम बध्याय है।

- ६२४. प्रति संव ३ । लेव काल संव १७६६ । वैव संव ३३ । व्य भण्डार ।
- ६२४. प्रायश्चित झास्त्र—इन्द्रनन्दि । पत्र सं०१४। ग्रा०१०,४४, इक्षा आया-प्राहृत । विषय-किये हुए दोवों का परवालाप । र० काल-४। ले० काल-४। पूर्णा वि० सं०१२३। इस भण्डार ।
 - **६२६. प्रावरिचत शास्त्र'''''। पत्र** सं० ६। मा० १०×४' इका। भाषा-गुजराती (लिपि

देवनागरी) विषय-किये हुए दीषों की मालोचना र० काल-×। ल० काल-×। भपूर्ण । वे० सं० १६६०। ट भण्डार ।

- ६२. प्रायश्चित्त समुखय टीका----नेश्मित् । पत्र सं० मः आ० १२४६। भाषा-संस्कृतः । विषय-किये हुए दोवों की मालोचना । र० काल--४ । ले० काल-सं० १६३४ चैत्र बुद्यी ११ । पूर्णः । वै० सं० ११मः । स्व भण्डारः ।
- ६२८ प्रोपध दोष वर्षानः । यत्र सं०१ । ब्रा०१०imes४ ६ द्या । आया–हिन्दी । विषय–स्रावार सास्त्र । र०काल- imes। ते० नं०१४७ । पूर्ण । द्वर्ष भण्डार ।
- ६०६. बाईस ऋभस्य वस्येन—वाबा दुलीचन्द् । पत्र सं० ३२। घा० १० $\frac{1}{2} \times \xi_0^2$ रक्ष । भाषा— हिन्दी नवा । विषय—धावकां के नलाने योग्यपदार्थों का वसीन । र० काल-सं० १६४१ वैशास सुदी ५ । ले० काल- \times । पूर्ण । वे० सं० ५२२ । कः भण्डार ।
- ६२० **बाईस ऋभद्य वर्धन**ं ×ापत्र सं०६। ब्रा०१०×७। भाषा-हिन्दी। विषय-श्रावको केन लाने सोस्य पदार्थों का बर्गना र०काल ∴ाले०काल :पूर्णीवे०सं० ४३३। ब्रामण्डार ।

विशेष---प्रति संशोधित है।

- ६३१. बाईश्च परीपह वर्षोत्त—भूभरतास । पत्र स०६ । धा० ९४४ इक्च । भाषा-हिन्दी (पष्ठ) । विषय-मुनियो द्वारा सहत किये जाने योग्य परीषहो का वर्णात । द० काल १८ वी शताब्दी । ले॰ काल ४ । पूर्ण । वै० सं० ६६७ । क्यू भण्डार ।
- ६२२. बाईस परीवड '™' × ! पत्र सं०६ ! झा० ६×४! भाषा-हिन्दी । विषय-मुनियो के सहने याग्य गरीपहो का वर्रान) र०कल × । ले० काल ×) पूर्ण । वे० सं० ६९७ । ऋ मण्डार ।
- ६३३. बालाबिवेध (समाकार पाठका कार्य) $\cdots \times 1$ पत्र सं०२ । सा० १० \times ४५ । भाषा प्राकृत, हिन्दी । विषय–धर्म । र०काल \times । ते० काल \times । पूर्ण । वे० सं०२=६ । द्वर पण्डार ।

विशेष---मूनि माग्तिक्यचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

- ६२४८ बुद्धि विलास— बल्तराम साह । पत्र सं० ७४ । ग्रा० ७४६ । ग्राण—हिन्दी । विषय—प्राधार शान्त्र । र० काल सं० १६२७ मंगसिर सुदी २ । ले० काल सं० १६३२ । दुर्ली वै० सं० १६६१ । ट मण्डार ।
 - ६३४. प्रति संः २।पत्र संः ७४।ले० काल सं० १८६३।वे० सं० १९४४।ट भण्डार। विजेष----बलतराम साह के पुत्र जीवसाराम साह ने प्रतिलिपि की थी।
- ६२६. ब्रह्मचर्यव्रत वर्षीन ^{...} : × । पत्र सं० ४ । घा० ⊏४५ । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० कान × । ने॰ कान × । ने॰ पूर्ण । ने॰ सं० २३१ । मः भण्डार ।
- ६२७. बोधसार[™]ं ×ापन सं०३७ । मा०१२×४६ प्राथा—हिन्दी विषय—धर्म। र०काल ×। सं०काल सं०१६२ द। काती सुदी ४। पूर्या। वे० सं०१२४ । स्वामण्डार।

विशेष--ग्रन्थ बीसपंथ की ग्राप्नाय की मान्यताबुसार है।

६२५. भगवद्गीता (कृष्णाकुँ न संवाद)ःः । पत्र सं०२२ मे ४६ । मा० ६२४६ इक्ष । भाषा— हिन्दी । विषय—वैदिक साहित्य । र० काल ४ । ले० काल ४ । धपूर्त्य वै० सं० १४६७ । ट मण्डार ।

६२६. अशवसी व्याराचना— शिवाचार्य । पत्र तं० २२१ । झा० ११२,४५३ इखा । नापा–प्राप्टत । विवय-मुनि धर्म वर्शन । र० काल ४ । ते० काल ४ । दुर्श वे तं० ४४६ । क भण्डार ।

> ६४०. प्रति सं०२। पत्र सं०११२। ले० काल 🗴 । वे० सं०४५०। क भण्डार । विशेष---पत्र ६६ तक संस्कृत में गाथाओं के ऊपर पर्यायवाबी शब्द दिये हुए है ।

६४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०३ । ने० काल 🗴 । ने० सं० २५६ च मण्डार ।

विशेष--- प्रारम्भ एवं मन्तिम पत्र बाद में लिखकर लगाये गये है।

६५२. प्रतिसं**८ ४ ।** २६५ । ले० काल × । वे० सं० २६० च भण्डार ।

विजेष--संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये है।

ध्४३, प्रतिसं∘ ४,।पत्र सं०३१ ले० काल ४ । ग्रपूर्णावै० सं०६३ । ज भण्डार । विशेष— कही २ संस्कृत में टोकाभीदी है।

६५४%. भगवती आराधना टीका— अपराजितसूरि श्रीनंदिगए। पत्र सं० ४३४ । झा० १२८६ इ.आ. । भाषा–सस्कृत । विषय–पृति पर्मवर्गन । र०काल ४ । ले०काल सं० १७६३ माघ बुदी उपूर्ण। ३० लं० २७६ | इस भण्डार |

१८४१. प्रतिसंठ२ । पत्र सं०३१४ । लेक्काल मं०१४६७ वैद्याल बुदो ६ ।वे० मं०३३१ । इस मण्डार ।

१८५६. अगवती द्वाराधना आचा—पं०सदासुलाकासलीवाल। पत्र सं० ६०७। प्रा० १२१८.८३ इ.स.। आवा—दिन्दी। विषय—धर्मे। र०काल सं० १६०६। ले० काल 🗴 । पूर्ण। वे० सं० ५४६। क भण्डार।

१४७. प्रतिसं०२ । पत्र सं०६३० । ले० काल सं०११४४ साह बुदी १३ । वे० सं०४६० । इस अभवार ।

६४ ⊏. प्रतिसं०३ | पत्र सं०७२२ । ले०काल सं०१६११ जेण्ठ मुदो ६ । वे सं०६६४ । च भण्डार ।

६४६. प्रतिसंठ ४ । पत्र सं० ५७ से ५१६ । ले० काल सं० १६२६ वैशास्त सुदी १० । प्रपूर्ण । वै•सं० २५३ । का सम्बार ।

विक्षेष--- यह प्रत्य हीरालालजी बगडा का है । जिती १६४२ माथ मुदी १० को आधार्य जी के कर्मदहन सत के उद्यापन में चढ़ाई ।

६४०. प्रति संट ४ । पत्र संट ५६ । लेट काल × । सपूर्ण । वेट संट ३०४ । ज भण्डार ।

६५१. प्रति सं०६। पत्र सं० ३२५। ले० काल 🗴। प्रपूर्श। वे सं० १६६७। द्व अण्डार।

- ६४१. आवदीपक जोधराज गोदीका। पत्र तं० १ ते २७७। झा० १०४५ है इ**छ।** माचा— हिन्दी। विवय-वर्म। २० काल ×। ले० काल ×। घपूर्ण। वै० सं० ६४६। च्या पण्डार।
- ६५२. प्रतिसं०२। पत्र सं०५६। ले० काल-सं०१८५७ पौष सुदौ १४ । झपूर्ण । वे० सं०६५६ । च भण्डार ।
- ६.५३. प्रतिस्ं०३ ।पत्र सं०१ ७३ । र०काल × । ले०काल –सं०१६०४ कालिक सुदी१० । वे०स०२ ४४ । जामण्डार ।
- ६४४, भावनासारसंग्रह—चामुरहराय । पत्र सं०४१। घा० ११४४३ इक्षा । भावा-संस्कृत । विषय-पर्म । र० काल-४ । ते० काल-सं० १४१६ श्रावरा बुदी न । पूर्ता । वे० सं०१८४ । व्याभण्यार ।
 - विशेष-संवत् १५१६ वर्षे श्रावस बुदी प्रष्टमी सीमवासरे लिखितं बाई धानी कर्मक्षयनिमित्तं ।
- ६५५. प्रतिसं०२।पत्र सं०६४। ले०काल सं०१५३१ फाग्रुए। बुदी छः। वे० सं० २११६। ट भण्डार।
 - ध्र्रः, प्रतिसं• ३ । पत्र सं॰ ७४ । ले० काल-× । बपूर्या। वे० सं• २१३६ । ट अण्डार । विशेष—७४ में बागे के पत्र नहीं हैं।
- ६४७. आवसंसह—वेवसेन । पत्र तं० ४१। झा०११४५ इक्का आवा–प्रकृत । विषय–धर्म । र०काल–४ । ने०काल–मं०१६०७ फाएएग वृदी ७ । पूर्ण । नै० मं०२३ । का अण्डार ।
 - विजेष---ग्रंथ कर्ता श्री देवसेन श्री विमलसेन के शिष्य थे। प्रशस्ति निम्नप्रकार है:---
- मंबन् १६०७ वर्षे फागुरा विर ७ दिने वुधवासरे विशासानक्षत्रे श्री ग्रारिनाथबैत्यानये तसकगढ महादुर्गे महाराउ श्री रामचंद्रराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंचे बलात्कारवारी सरस्वतीयच्छे श्री कुंदकुं राषार्याज्ये महारक श्री रायानंदिरेवा तत्त्रहुं भद्रारक श्री सुभवन्द्रदेवास्तरहुं भट्टारक श्री जिनवन्द्रदेवा...........।
- ६५⊏. प्रतिसं०२ । पत्र सं०४४ । ले० काल⊸सं०१६०४ भारता सुदी१४ । वे०सं०३२६ ा का भण्डार ।
 - विशेष--प्रशस्ति निम्नप्रकार है:--
- संबत् १६०४ वर्षे भाइयद सुदी पूरिणमातियौ यौमदिन दातिथा नाम नक्षत्रे धृतनान्नियोगे मुरिताल सनेमसाहिराज्यप्रवर्तमाने निकंदराबादसुमस्थाने श्रीमत्कारुठासंचे मायुरान्वये पुण्करगणे महारक श्रीमत्यकीति देवाः नत्रहें भट्टारक श्रीमुल्पमददेवाः तत्रहें, भट्टारक श्रीभानुकीति तस्य शिक्षणी बा० मोमा योग्य भावसंग्रहस्थ शास्त्रं प्रदत्तं |
 - ६४६. प्रति सं• ३ । पत्र सं० २८ । ले॰ काल-× । वे॰ सं० ३२७ । श्र अण्डार ।
- ६६०. प्रतिसं०४ । पत्र सं०४६ । ने० काल-सं०१६६४ पीच सुदी १ । वे० सं० ४४६ । क मच्चार ।

विकोष---महात्मा राषाकृष्ण ने जमपुर में प्रतिलिपि की थी।

ि धर्म एवं काचार शास्त्र

६६१. प्रति संदर्श पत्र संव ७ से ४५। लेव काल-संव १५६४ फाग्रुए। बुदी ५। प्रपूर्ण। वेत्संत्२१६३। ज्ञाणकारः।

६६२. प्रति सं०६। पत्र सं०४०। ले० काल~सं०१४७१ प्रवाढ ब्दी ११। वे० सं०२१६६। ट अण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति निम्नप्रकार है:--

संवत् १५७१ वर्षे आषाढ बढि ११ आदित्यवारै पेरोजा साहे । श्री मूलसंबे पडितजिखादामेन लिखापितं ।

a 63. प्रतिसं≎ ७ । पत्र सं०६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं०२१७६ । ट भण्डार । विशेष-- ६ से झाने पत्र सही है।

६६४. भावसंग्रह-शतमुनि । पत्र मं० ५६ । आ० १२×५३ उक्क । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म। राज्याल-×। लेव काल-संव १७६२। अपूर्मा । वैवर्मव ३१५। ऋ भण्डार ।

विशेष---बीसवां पत्र नहीं है।

६६४. प्रति सं०२। पत्र सं०१०। ले० काल-×। बपुर्गा। वै० सं०१३३ | स्व भण्डार ।

६६६. प्रति सं०३। पत्र मं० १६। ले० काल⊸सं० १७⊏३। वै० सं० १६६। अङ अण्डार। विशेष--प्रति संस्कृत टीका सहित है।

६६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल- < । वे० सं० १८४१ । ट भण्डार । विशेष--कहीं २ संस्कत मे ग्रर्थ भी दिये हैं।

६६८. भावसंग्रह-पंट बामहेव । पत्र सं० २७ । मा० १२/४ : इज्रा । भाषा-मंस्कृत । विषय-धर्म। र० काल-×। ले० काल-सं०१ द२ द। पूर्मा वै० सं०३१७ । ऋस भण्डार ।

६६६. प्रति सं०२ । पत्र सं०१४ । लें• काल-×ः । अपूर्ण । वे० सं०१३४ । स्व भण्डार ।

बिशेष--पं व बामदेव की पूर्ण प्रशस्ति दी हुई है। र प्रतियों का मिश्रमा है। अन्त के पुष्ठ पानी ने भीगे हुये है। प्रति प्राचीन है।

६७०. भावसंग्रह.....। पत्र सं० १४। ग्रा० ११×५६ इक्का भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काम-× । ले० काल-× । वे० सं० १३४ । सा भण्डार ।

विमेष--प्रति प्राचीन है। १४ में बागे पत्र नहीं है।

६७१. सनोरथसाला..... । पत्र सं० १। म्रा० ८×४ इक्का भाषा-हिन्दी : विषय-धर्म । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ५७० । स्त्र भण्डार ।

१७२. सरकतिबत्तास-पद्मालाका। पत्र सं० ६१। बा० १२×६३ इत्रा। भाषा-हिन्दी। विषय-भावक धर्म वर्शन । र० काल-× । ले० काल-× । प्रपर्श । वे० सं० ६६२ । स अण्डार ।

६७३. सिध्यात्वस्वद्वन---वस्तरास । पत्र सं० ५८ । मा० १४×५३ इख । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-धर्म । र० काल-सं० १८२१ यीच एडी ५ । ले० काल-सं० १८६२ । पूर्ण । वे० सं० ५७७ । क मण्डार ।

६७४. प्रति सं २ । पत्र सं० १७० । ने० काल-× । वे० सं० ६७ । वा भण्डार ।

१७४ प्रति संट ३ । पत्र सं० ६१ । ले० काल-सं० १८२४ । वे० सं० ६६४ । च भण्डार ।

ह७६. प्रति सं०४ । यत्र सं०३७ से १०४ । ले० काल 🗴 । सपूर्या। वै० सं०२०३६ । ट अण्डार । विशेष—प्रारम्भ के ३७ पत्र मही हैं। पत्र फटे हये है ।

९.७७. मित्यात्वरूंडन'''''''।पत्र सं०१७ । झा०११४५, इक्का भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। रंग्काल—४ | ते०काल—४ । झपुर्ण| वे०सं०१४६ । स्व भण्डारं।

विशेष---१७ से झाने पत्र नही है।

६७८. प्रति सं०२ । पत्र सं०११० । ते० काल-× । अपूर्णा | वे० सं०१६४ । इक मण्डार ।

६७६. मूलाचार टीका—स्थाचार्य वसुनिन्द् । पत्र सं०३६८ । प्रा०१८×४ई इस्र । माषा— प्राकृत संस्कृत । विषय—पाचार शास्त्र । र० काल—८ । ले० काल—सं०१८२६ संगतिर बुदी ११ । पूर्ण । के सं०२७४ । इस मण्डार ।

विशेष--जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

६८०. प्रतिसं≎२ । पत्र सं०३७३ । ले० काल-× । वै० सं०१८० । क भण्डार ।

६ चर. प्रतिसंठ ३ । पत्र सं० १५१ । ने० काल— × । ब्रपूर्ण। वे० सं० ५६ ⊏ । इक मण्डार । विजेष — ५१ में द्वाने पत्र नहीहै ।

६८२. मूलाचारप्रदीय—सकलकीति। पत्र सं∘१२६। घा०१२६ँ×६६वा। भाषा–संस्कृत। विषय–मावारवास्त्र।र०काल–×।ले०काल–सं०१६२८।पूर्ण।वै०सं०१६२।

विशेष---प्रतिलिपि जयपुर में हुई थी।

६८६. प्रति संब २ | पत्र संव ८५ । लेव काल-× । बैठ संव ८४६ । स्त्र भण्डार ।

६८४. प्रति सं०३। पत्र सं० ८१। ले० काल-×। वै० सं० २७७। च भण्डार।

६८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५५ । ले० काल-× । वे० सं० ६८ । छ भण्डार ।

६८६. प्रतिसंठ ४ । पत्र सं०६३ । ले॰ काल–सं०१८२० पीप सुदी२ । वे॰ सं०६३ । स्राजककार

विशेष--- पं० चोसाचंद के शिष्य पं० रामचन्द ने प्रतिलिपि की थो ।

६००. प्रतिसंट६।पत्रसं०१००।ले०काल—सं०१०५६ कार्तिक बुदी३। वे० सं०१०१। कामण्डार।

विशेष---महारमा सर्वसुख ने जक्पुर में प्रतिलिपि की थां ।

६८मः. प्रतिसं०७।पत्र सं०१३७।ते० काल-सं०१८२६ चैत बुदी१२। वे० सं०४४५। स्राप्तकारा

६८६. सूलामारभाषा—ऋषभदासः । पत्र सं० २० से ६३ । बा० १०४८ दश्चा । भाषा—हिन्दी । विषय—सामार साक्षत्र । र० काल—सं० १८८८ । से० काल—सं० १८६१ । यूर्गा वे० सं० ६६१ । व्याध्यक्षारः ।

- . १९८० मूला-चार आचा''''''। पत्र सं० ३० मे ६३ । म्रा० १०१ूँ× दश्च । माषा-हिन्दी । विषय-भाषार सास्त्र । र० काल-× । ले० काल-× । मपुर्ण । वै० सं० ४६७ ।
- 8.8(९. प्रति सं०२) पत्र सं०१ से १००, २४६ से ३६०। झा०१०३,४८ इक्का भाषा–हिन्दी। विषय–माचार शास्त्र । र०काल–४ । ले०काल–४ । झपुर्गावै० सं०५ १६६ । इक्र भण्डार ।
 - 8.8.२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ मे द१, १०१ मे ६०० । ले० काल⊸ × । अपूर्णा । ते० सं० ६०० ।
- ६६३. मौस्पैदी—दनास्तीदास । पत्र तं०१। झा०११३८६ इक्का। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल-×। तं० काल-×। पूर्ण। वे० नं० ७६५। इत्र मण्डार।
 - १६४. प्रति सं०२ । पत्र सं४ । ले० काल-> । वे० सं०६०२ । क भण्डार ।
- ६६५. मोचमार्गप्रकाशक—पंटटोडरमल । पत्र म०३२१ । घा०१२५्रै×०६ खा। भाषा–हुंडारी (राजस्थानी) गयः । विषय–धर्मार०काल–×।ले•काल–सं०१६४४ श्रावरणः मुदी१४ । पूर्णा। वे०सं०५⊂३ । क्रमण्डारः।

बिलेष -- दूं डारी शब्दों के स्थान पर शुद्ध हिन्दी के शब्द भी लिखे हुये है।

- EE६ प्रति सं०२। पत्र सं०२८२। ले० काल-सं०१६५४। वे० सं०५८४। क भण्डार !
- **६६७. प्रति सं**०३ । पत्र सं०२१२ । ले० काल-सं०१६४० । वे० सं०५६५ । क भण्डार ।
- ६६८. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० २१२ । ने० काल-मं० १८८८ वैद्याल बुदी १ । ने० मं ६८ । ग भण्डार ।

विशेष-- ख़ाजूलाल साह ने प्रतिलिपि कराई थी।

- EEE. प्रति सं• ४ । पत्र मं० २२८ । ले० काल-× । ते० सं• ६०३ । ऋ भण्डार ।
- १०००. प्रति सं०६। पत्र सं०२७६। ले० काल- × । ते० सं०६५८। च भण्डार।
- १००१. प्रतिसंठ ७ ।पत्र सं०१०१ में २१६ । ने० काल— ४ । प्रपूर्ण । वे० म० ६५६ । चामण्डार ।

१८०**२. प्रतिसं**० ≕ । पत्र सं० १२३ में २२४ । ले० काल – × । प्रपूर्ण । वे० सं० ६६० । च भण्डार ।

१८०३. प्रति संc ६ । पत्र संc ३५१ । ले० काल-× । वैo मंo ११६ । मा भण्डार ।

१००४ - यतिदिनचर्या— देवसूरि । पत्र सं० २१ । मा० १०२४४ - इक्षा । भाषा–प्राकृत । विषय– श्राचार शास्त्र । र०काल–४ । ने०काल–सं० १६६० चैत सुदी १ । पूर्णा । वे० सं० १६२६ । ट भण्डार ।

इति श्री मुविहितशिरोमिगिश्रीदेवसूरिविरिवतः यतिदिनवर्षा संपूर्णा।

प्रयस्तिः—संवत् १६६८ वर्षे चैत्रमाने शुक्लपके नवमीभीमवासरे श्रीमलपाकच्छाभिराज भट्टारक श्री श्री १ विजयमेन क्रुरीभराथ जिक्ति ज्योतिसी उथव श्री शुजाउलपुरे।

१००३. यत्याचार—का० वसुनंदि । पत्र सं ० ६ । बा० १२३×१३ इसा । भाषा-प्राकृत । विषध-

मृति धर्म वर्शान । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्श । वे० सं० १२० । ऋ भण्डार ।

१८०६. रत्नक्रस्डआवकाचार—स्थाचार्य समन्तभन्न। पत्र सं०७। ग्रा० १० $\frac{3}{7}$ \times १ $\frac{1}{7}$ स्त्रा। भाषा—संस्कृत। विषय—प्राचार शास्त्र। र० काल— \times । वे० काल— \times । वे० सं० २००६। स्त्र भण्डार।

विशेष--प्रथम परिच्छेद तक पूर्ग है। प्रंच का नाम उपासकाध्याय तथा उपासकाचार भी है।

१८०७. प्रति संट २ । पत्र संट १४ । लेट काल-× । बेट संट २६४ । इस सण्डार ।

विशेष--कही कही संस्कृत में टिप्पिश्वयां दी हुई है। १६३ व्लोक हैं।

१००⊏. प्रतिसं०३ । पत्र सं०१६ । ले० काल−४ । वे० सं०६१२ । कः भण्डार ।

१००६. प्रति संठ ४ । पत्र सं० २२ । नै० काल—सं० १६३० माह मुदी १० । वे० सं० १४६ । सामण्डार ।

विशेष—कही २ संस्कृत में टिप्पण दिया है।

१८१०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७७ । ले॰ काल-४ । ते॰ सं० ६३० । इक्स प्रखार । १८११. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले॰ काल-४ । सप्पर्ण । ते॰ सं० ६३१ । इक्स प्रधार ।

विशेष-हिन्दी ग्रर्थ भी दिया हुन्ना है।

१८१२. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० ४८ । ले० काल−× । ब्रपूर्ण । ते० सं० ६३३ । इक भण्डार ।

१८२३. प्रतिसं⊂ मः। पत्र सं०३ द–४६ । ले० काल–× । ब्रपूर्णा। वे० सं०६३२ । इक मण्डार । विशेष—हिन्दी प्रर्थसहित है।

१०१४. प्रति सं०६। पत्र सं०१२। ले० काल—×। वे० सं०६३४। इक भण्डार। विलेष — ब्रह्मचारी सरजसल ने प्रतिक्रिप की थी।

१०१४. प्रति सं०१०। पत्र सं०४०। ले० काल-×। वे० सं०६३५। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी में पन्नालाल संबी इत टीका भी है। टीका सं० १६३१ में की गयी थी।

१०१६. प्रति सं०११ । पत्र सँ०२६ । ले० काल-× । वे० सं०६३७ । क अण्डार । विशेष---- हिन्दी टब्बा टीका सहित हैं ।

१०१७. प्रतिसं०१२ । पत्र सं०४२ । ले० काल—सं०११५० । वे० सं०६३⊏ । इक भण्डार । विशेष—हिन्दीटीकासहित है ।

१०१८. प्रति सं०१३ । पत्र सं०१७ । ले० काल-४ । वे० सं०६३६ । इस भण्डार ।

१०१६. प्रति सं० १४। पत्र सं० ३८। ले० काल-×। अपूर्ण। वे॰ सं० २८१। च भण्डार।

विशेष---केवल बन्तिम पत्र नहीं है । संस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है ।

१०२०. प्रति सं०१४ । पत्र सं०२० । ले० काल−४ । अपूर्ण । वै० सं०२६२ । वा मण्डार ।

१०२१. प्रति सं०१६। पत्र सं०११। ते० काल-x। वे० सं० २६३। च मण्डार।

१०२२. प्रति सं०१७। पत्र सं०१। ते० काल-×। वे० सं०२१४। व भण्यार।

१०२३. प्रति सं १८ । पत्र सं०१३ । ले० काल-४ । ते० सं० २९५ । चा मण्डार ।

१८२४. प्रति सं०१६। पत्र सं०११। ले० काल-४। ते० सं०७४०। चामण्डार।

१८२४. प्रति सं८ २८ । पत्र सं० १३ । ले० काल-× । वे० सं० ७४२ । च भण्डार !

१८२६. प्रतिसं०२१। पत्र सं०१३। ले० काल-- × । वे∙ सं०७४३ । च भण्डार ।

१८२७. प्रति संब २२ । पत्र संब १० । लेव काल-× । वेब संब ११० । 63 भण्डार ।

१८२ च. प्रति सं० ३३ । पत्र सं० १० । लेल्काल-× । वै० सं० १४४ । ज मण्डार ।

१८२६, प्रतिसं० २४ । पत्र सं० १६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० १२ । स्क्रभण्डार ।

१०२० प्रति संट २ ४ । पत्र सं०१२ । ले० काल - सं०१७२१ ज्येष्ठ सुदी ३ । वे० सं०१४ = । का भण्डार ।

१०३१. रत्नकरराडआयकाचार टीका—प्रभाचन्द्र ।पत्र सं०४३ ।मा०१०६५४६३ इचा भाषा— संस्कृत ।विषय—मात्रार शास्त्र ।र०काल—४ ।ते०काल—सं०१६६० आवागुबुदी ७ । पूर्णी वे० सं०३१६ । इस भण्डार ।

१०३२, प्रति सं०२ । पत्र सं०२२ । ले० काल-× । वे० सं०१०६५ । ऋ भण्डार ।

१८-२३. प्रति संट ३ । पत्र संट ३१-४३ । लेट काल-× । प्रपूर्ण । वे संट ३८० । ऋ भण्डार ।

१०३४. प्रतिसंट ४ । पत्र सं०३६-६२ । लेल्काल— ४ । प्रपूर्ण। वेल्सं०३२६ । ४६ भण्डार। विशेष— इसका नाम उशस्काध्ययन टीकाभी है।

१०३४. प्रति संबर्धापत्र संव १६। लेव काल-×। तेव संव ६३६। इस भण्डार।

१०३६. प्रति संब ६। पत्र मं०४६। लेक काल-मं०१७७६ फाग्रुगा मुदी ५। वेक मं०१७८। का भण्डार।

विशेष—मट्टारक मुरेन्द्रकीरिन की प्राप्ताय में संबेषवाल जातीय भीता गोजोराज साह खजमतजो वं बंगज साह बन्द्रभाषा की भार्या व्हीबी ने यंथ की प्रतिलिधि कराकर धावार्य बन्द्रकीर्ति के शिष्य हर्षकीर्ति के लिले वर्मेश्रय निमित्त भेट की।

१०२७. रक्षकरण्डभावकाचार—पं० सदासुस्य कासलीवाल । पत्र सं० १०४२ । धा०१२ $\frac{1}{2}$ \times $\frac{1}{2}$ ड्डा । भाषा—हिन्दी (गर्थ) । विषय—धाचार शास्त्र । र० काल सं० १८२० जैत्र बुदी १४ । त्रें काल सं० १६४१ । पूर्ण । वे० मं० ६१६ । इ. भण्डार ।

विशेष--- ग्रंथ २ वेष्टनो में है। १ से ४५५ तथा ४५६ में १०४२ तक है। प्रति सुन्दर है।

१८३८. प्रतिसंठ २ । पत्र सं० ५६६ । से० काल-× । बपुर्गा । वै० सं० ६२० । इह भण्डार ।

१०३६. प्रति मं०३ । पत्र सं०६१ से १७६ । ले० काल – × । प्रपूर्ण । वे॰ सं०६४२ । क भण्डार ।

१८४०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४१६। ले० काल-प्रासीज बुवि = सं० १६२१। वे० सं० ६६६। स्र भण्डार।

> १०४१. प्रति संट ४ । पत्र सं० ३१ । लंग् काल-४ । अपूर्ण । वे० सं० ६७० । च भण्डार । विशेष---नेमीचंद कालक वाले ने लिंका और सदामुलजी डेडाकाने लिंकाया---यह मन्त में लिंका हुमा है।

१८४२. प्रति सं०६। पत्र सं०३४६। ले० काल-x। वे० सं०१८२। छ भण्डार।

विशेष—"इस प्रकार पूलग्रंथ के प्रसाद तै सदानुकदास केदाका का अपने हन्न तै लिक्षि प्रंथ समान्त किया।" मन्तिम प्रष्ट पर ऐसा लिखा है।

१०५३. प्रति सं०७। पत्र सं०२२१। ले० काल—सं०१६६३ कार्तिक बुदी ऽऽ। वे० सं०१६८। कः भण्डार।

१०४४. प्रतिसं०⊏।पत्र सं० ५३६।ले० काल—सं० १६४० वैशास्त्र गुरा६। वै० सं० क्रमण्डार।

विशेष——इस ग्रंथ की प्रतिलिपि स्वयं मदामुलाजी के हाथ में लिखे हुय मं∘ १६१६ के ग्रंथ से सामोद म प्रतिलिपि की गर्ट है। महामुख लेठी ने इसकी प्रतिलिपि की थी।

१०४४. राजकरण्डश्रायकाणार भाषा— नथमला। पत्र मंग्यः स्टाधार ११४४ रखा। भाषा— हम्दायः । विषय–प्राचार शास्त्र । रण्काल—संग्रहस्य माधामुद्री हालेण्याल— ४ । वेश्मण्डर् । पूर्णा। कामण्डार ।

१८४६. प्रति सं०२ । पत्र सं०१० । ले० काल-× । वे० सं०६२३ । क भण्डार ।

१८४७ प्रतिसंट ३। पत्र सं०१४। ले० काल-४। ते० सं०६२१। क भण्डार।

१८४८. रक्षकरण्डआवकाचार—संबीपकालाला। पण सं०४४। प्रा०१०३,४७ दक्षः। भाषा— हिन्दी गद्यः। विषय—प्रावार शास्त्रः। र० काल—सं०१६३१ पीच बुदो ७। सं० काल—सं०१६५३ मंगसिर मुदी १०। पूर्णावे सं०६१४। क भण्डारः।

१०४६. प्रतिसंट २ | पत्र सं∗४० । ले० काल – × । वै० सं६१४ । इक भण्डार ।

१८४०. प्रति सं २ । पत्र सं० २६ । ले० काल-× । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

१०४१. प्रति संट ४ । पत्र संट २७ । लेट काल⊸ ४ । वेट संट १६६ । छ भण्डार ।

१८**४२. रह्मकर्रवडआवकाचार आचा**ः***। पत्र सं०१०१ ! म्रा०१२×५ **रह्म** । भाषा-हिन्दी गण्य । विषय-म्राचार सास्त्र | र०काल-सं०१२५७ । ले०काल-≿ । पुर्ण । वे०सं०६२७ । कुभण्डार ।

१०५३. प्रति संट २ । पत्र सं० ७० । ले० काल-सं० १६५३ । वे० सं० ६१६ । क अण्डार ।

१०४४. प्रति संद ३ । पत्र संद ३५ । लेव्याल-× । वेद्संद ६१३ । का भण्डार ।

१०३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० से १५६ । ले० काल-४ । सपूर्ण । वे• मं० ६४० । इन भण्डार ।

१८४६. रत्नसाला— आचार्य शिवकोटि । पत्र सं०४ । सा०१११,४४, रक्का आया—संस्कृत । विषय—साबार शास्त्र । र० काल---× । ले० काल---× । पूर्ण । वे० सं० ७४ । छु अध्वार ।

विशेष---प्रारम्भः---

3

सर्वज्ञं सर्ववागीयां वीरं मारमदायहं।

प्रसामामि महामोहशांतये मुक्तिप्राप्तये ॥१॥

सारं यत्मर्वमारेषु वंद्यं यद्वंदिलेष्वपि ।

धनेकातमयं वंदे तदहत् वचनं मदा ।।२।।

मन्तिम-यो नित्यं पठति श्रीमान् रत्नमालामिमांपरा।

सशुद्धवरसो नूतं शिवकोटित्वमाप्नुयान् ।।

इति श्री समन्तभद्र स्वामी शिष्य शिवकोट्याचार्य विरिवता रत्नमाला समाप्ता ।

१०४७. प्रति सं०२ । पत्र सं०५ । ले० काल-×। ब्रपूर्श । वे० सं०२११५ । ट भण्डार ।

१८४**८. रक्षणसार—कुन्दकुन्दाचार्य**। पत्र सं०१०। मा०१०_रे×४,े डक्का भाषा–प्राहत । विषय–माचार सास्त्र । र०काल–× । ले०काल–सं १८६३ | पूर्ता | वे० सं०१४६ | ख्रा भण्डार ।

१०४६. प्रति सं०२।पत्र सं०१०।ते० काल-×।वे० सं०१८१०। ट भण्डार।

१८६८. रात्रि भोजन त्याग वर्षान******। पत्र सं० १६ । क्या० १२४४ इक्का । भाषा–हिन्दी । विषय–धाचार सास्त्र । र०काल–× ने०काल–× । पूर्ण । वे०सं० ४६० । चाभण्डार ।

१०६१. राधात्रस्मोत्सवः**** । पत्र सं०१ । स्ना०१२×६ डक्याः साया—संस्कृतः । विषय—धर्मः। र०काल—×। ने०काल—×।पूर्णावै०सं०११४१ । इस सण्डारः ।

१०६२. सिक्तविभाग प्रकरस्याः.....। पत्र सं० २६ । या० १३ ≾७ डख्रा । भाषा–संस्कृत । विषय– प्राचार शास्त्र । र० काल– × | ले० काल– × | पूर्णा वे० सं० ५७ । उत्र भण्डार !

१०६३. **ताधुस्तासाथिक पाठ******* पत्र सं०२। प्रा०१२×७ दक्काः। भाषा–संस्कृतः। विषय–धसं। र•काल–×। ले०काल–सं०१०१४ । पूर्षावै०सं०२०२१। **घर** भण्डारः।

विञेष---प्रशस्ति:---

. १८६४ सगहन मुद्दी १५ सनै बुन्दी नग्ने नेमनाथ चैरवाले लिखिनं श्री देवेन्द्रकर्शन बाचारज सीरोज के पद्ग स्वर्थ हस्ते।

१०६४. प्रति सं०२ । पत्र मं०१ । ने० काल-४ । ने० सं०१२४३ । ऋ मण्डार ।

१०६४. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १ । ले० काल-×। वे० सं० १२२० । ऋ भण्डार ।

१०६६. ताधुसासायिकः । पत्र सं०३ । झा० १९४४ ५ ६ द्वा। भाषा–सम्कृत–हिन्दी। विषय– धर्म। र०काल–×। वे०काल–×। पूर्ण। वे०सं०६४० । कः मण्डार।

१०६७. लाटीसंद्रिता—राजमञ्जापत्र सं०७। घा०११४५ ६ऋ। मापा—मंस्कृत । विषय—घाचार सास्त्र । र०काल—सं०१६४१ । ले०काल—४ । पूर्णावै०सं० प्रम

१०६स. प्रतिसं०२। पत्र सं०७३। ले० काल—सं० १८६७ थैशाल बुदीः……रिववार वै०सं०६६५। इस्त्र सण्डार। •

१०६६. प्रतिसंव ३ । पत्र संव ४६ । लेव काल-संव १६६७ संगसिर बुदी ३ । वेव संव ६६६ । इक संख्वार । विशेष---महात्मा संसूराम ने प्रतिलिपि की थी।

१८७०. बक्रानाभि चक्रवर्षिकी आधना—भूषरदास । पत्र सं०२ । घा०१०४५ इक्रा । सत्रा-क्रिनी पद्य | विषय-धर्म । र०काल-४ । ले०काल-४ पूर्ण । वे० सं०६६७ । इद अण्डार ।

विशेष--पार्खपुरासा में से है।

१०७१, प्रतिसं०२ । पत्र सं०४ । ले॰ काल—सं०१ ययय पीष सुदी२ । वै॰ सं॰ ६७२ । च अण्डार ।

१८७२. बनस्यतिसत्तरी—शुनिचन्द्रसृरि।पत्र सं० ५। मा०१०×४६ दश्चा प्राथा–प्रकृत । विषय-पर्मार०काल-×ाले०काल-×ापूर्णावे०सं० ८४१।इस मण्डार।

१०७३. बसुनेदिशावकाचार—च्या० बसुनेदि। पत्र सं० ५६। सा० १०३८५ इक्का। माया— प्राकृत । विषय-श्रावक पर्स । र० काल-×। ते० काल-सं० १८६२ पीष सुदी ३। पूर्ती वे० सं० २०१ । इस मध्यार ।

विशेष—पांच का नाम उरासकाध्ययन भी है। जयपुर में थी पिरागदास बाकसीवाल ने प्रतिलिपि करामी। संस्कृत में भाषान्तर दिया हुमा है।

१०७४. प्रतिसं०२ ।पत्र सं०५ मे २३ । ले० काल—सं० १६११ पीष सुदी । सपूर्या | वे०सं०६४६ |च्या मण्डार ।

विशेष-सारंगपुर नगर में पाण्डे दासु ने प्रतिलिपि की थी |

१८७४. प्रतिसं०३। पत्रसं०६३। लेश्काल—सं०१८७७ मादवा बुदी ११। वेश्सं०६५२। कि

विशेष---महात्मा शंभूनाथ ने सवाई जयपुरमें प्रतिलिपि की थी। गाथाओं के नीचे संस्कृत टीका भी दी है।

१०७६. प्रति सं०४ । पत्र सं०४४ । ले० काल-×। वे० सं० द७ । इस मण्डार ।

विशेष---प्रारम्भ के ३३ पत्र प्राचीन प्रति के हैं तथा शेष फिर लिखे गये हैं।

१०७७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४१। ले० काल-४। वे० सं० ४५। च ःः।

१०७६. प्रति सं० ६। पत्र सं० २२। ले० काल-सं० १४६८ माववा बुदी १२। वे० सं० २६६। स्रा मण्यार।

विश्वेष—प्रवास्ति— संवत् १५६६ वर्षे साववा बुदी १२ इन विने पुच्यनननेसमृतसिद्धिनामवरयोगे श्रोपवस्थाने मूलसंवे सरस्वतीगच्छे बलात्कारपछे श्री कुन्यकुन्वाथार्थान्यये सहारक श्री प्रभावण्डदेवा तस्य खिच्य मंडलावार्थं धर्मकीत्ति डितीव मंडलावार्थं श्री धर्मबन्द्र एतेषां मध्ये मंडलावार्थं श्री धर्मकीत्ति तत् विष्य श्रुनि वीरसंदिने इदं शास्त्रं निकापितं। पं रामबन्द्र ने प्रतिविद्यि करके सं० १८६७ में पार्वनाथ (श्रीनियाँ) के मंदिर में बढाया ।

१०७६. वसुमेदिकानकाचार भाषा—पत्राक्षाक्ष । पत्र सं०२१८ । बा०१२ई-४७ इक्ष । बाषा— हिन्दी गया । विषय-साथार बास्त्र । र० काल-सं०१६३० कार्तिक बुदी ७ । ले० काल-सं०१६३८ नाह बुदी ७ । पूर्वी | के० सं०६५० । क वच्चार । १०⊏०. प्रतिसं०२ । ले० काल सं०१६३० । वै० सं०६५१ । क भण्डार ।

१०८२, बार्चासंब्रहः ः ः। पत्र सँ० २४ से ६७ । बा० १×४-१ दक्का। शावा–हिन्दी। विषय–धर्म। र०काल ×। ले०काल ×। बपूर्णावे०सं० १४७। इह मण्डार।

१८८२, विद्वालनवोधकः। पत्र सं०२७ । घा०१२१ुं×८६ इक्का आपा—संस्कृत । विषय–धर्म । र०काल × । ले०काल × । प्रपूर्ण । वे०सं०६७६ । क्कमण्डार ।

विज्ञेष--- हिन्दी अर्थ सहित है। ४ धध्याय तक है।

१०⊏३. प्रति सं० २। पत्र सं० ३५२। ले० काल ×। प्रपुर्ण। वे० सं० २०४०। ट भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी मर्थ सहित है। पत्र कम से नहीं है भीर कितने ही बीच के पत्र नहीं है। दो प्रनियों का निजया है।

१०८८: विद्वज्ञानकोधक भाषा—संघी पत्रालाला । पत्र सं०८६०। प्रा० १४४७६ इ.स. । भाषा-संस्कृत, हिन्दो । विषय—पर्म । र० काल सं० १६३६ मात्र सुदी ४ | ले० काल ४ । प्रपूर्ण । वे० सं०६००। इक्ष मेण्यार ।

१०८४. प्रति सं २ । पत्र सं० ४४३ । ते० काल सं० १६४२ घासोज सुदी ४ । वे० सं० ६७७ । चा मण्डार ।

विक्रोष—खाजूलाल साह के पुत्र नन्दलाल ने धपनी माताजी के बतोद्यापन के उपलक्ष में प्रत्य मन्दिर दीवान ग्रमरवन्दजी के में बढाया । यह ग्रन्थ के द्वितीयकण्ड के ग्रन्त में लिखा है

१०८६. विद्वजनवेशिकटीकाः \cdots ापत्र सं० ४४। ग्रा० ११३ \times ७ दश्च। भाषा—हिन्दे। विदय-भर्म। र०काल \times । ते० काल \times । पूर्ण। वै० सं० ६६०। कुमण्डार।

विशेष---प्रथमसण्ड के पाचवें उल्लास तक है।

१०८७. चिंतेकथिलासः'''''' पत्र सं०१ द। ग्रा०१०३४.४ इक्का भाषा-हिन्दी। विषय-ग्राचार शास्त्र । र०काल सं०१७७० फाग्रुण दुवी। ले०काल सं०१८८८ चेत दुवी ३। वे० सं०८२। म्ह भण्डार।

१८००. बृहत्प्रतिकसस्यु*******। पत्र सं०१६। द्वा०१० \times ४६ दश्च। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। र॰ काल \times । ले॰ काल \times । पूर्ण। वे० सं०२१४८। ट भण्डार।

१०⊏६. प्रति सं०२ | ले० काल × । वे० मं० २१५६ । ट मण्डार ।

१८६८. प्रति संट ३ । ले० काल 🗴 । वै० सं० २१७६ । ट भण्डार ।

१०६१. बृह्स्प्रतिक्रमस्युः****। पत्र सं∘ १६ । घा० ११×४-१ दश्च । भाषा-संस्कृत, प्राष्ट्रत । विषय– धर्म । र०कान × । ले०कान × । पूर्ता। के० सं० २०३ । घ्राभण्डार ।

१८६२. प्रति सं०२ । पत्र सं०१४ । ले० काल 🗴 । वे० सं०१४६ । ऋ मण्डार ।

१०६२: बृहस्प्रतिकस्या। पत्र सं० २१। मा० १०५ $\times x_4^2$ इ.स. । प्राशा—संस्कृत । विषय—पर्स। र० काल \times । पूर्ण। वे० सं० २१२२। ट अण्डार।

१०६४. अर्तो के नाम*******। पत्र सं०११ । घा० ६६ ४४ इक्षं । भाषा-हिल्दी । विषय–धर्म। र० कल्प × । ते० काल × । अपूर्ण। वै० सं०११६ । स्त्र भण्डार ।

१८६४. ज्ञतनामावलीः*****। पत्र सं० १२ । मा० ⊏र्द्रै×४ दक्षा। भाषा--मंस्कृत । विषय--धर्म। र० काल सं० १६०४ । पूर्णावे कंसं० २६५ । स्व भण्डार ।

१०६६. जनसंख्या********* । पत्र सं०४ । प्रा०११४५ इक्षः । भग्गा–हिन्दीः । विषय-पर्सः । ग०वान ४ नेऽकाल ४ । पूर्णः । वैठ सं०२०५७ । क्षा भण्डारः ।

विशेष--१५१ बतों एवं ४१ मंडल विधानो के नाम दिये हुये है।

१८६७. ज्ञतसार****** । पत्र सं०१ । ग्रा०१०४४ इक्का। भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म। र०वाल ४ । न०काल ४ । पूर्णावे०सं०६≂१। आद्राभण्डार ।

विशेष---केवल २२ पद्य है।

१८६⊏. <mark>प्रतोद्यापनश्रायकाचार</mark>**** । विषय– ग्रावार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्णा। वे० सं० ६३ । <mark>घ भण्डार ।</mark>

१०६६. ऋतोपवासवर्शन ''''''। पत्र सं० ४७ । सा० १०४१ दक्का । भाषा-हिन्दी। विवय-सावार साम्य । र०काल ४ । के०काल ४ । अपूर्णा । वे० कं० ३३ द । का अध्यार ।

विशेष--- ५७ में झाते के पत्र नहीं है।

१९०० ज्ञतोपवासवर्षीन ''''''। पत्र मं० ४। घा० १२४४ इक्क। भावासंस्कृत। विवय-पावार साहत । र० काल ४। ते० काल ४। सपूर्ण। दे० सं० ४७६। स्म भण्डार।

११०१. प्रति संट २ । पत्र सं० ४ । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० सं० ४७६ । व्या भण्डार ।

१४०२. **वट्डा**वस्यक (लघुनामायिक)—सहाचन्द् । पत्र सं०३ । विषय-प्राचार शास्त्र । र० कान \times । ने० कान सं०१९४० । पूर्ण । वे० सं०३०३ । **स्थ** भण्डार ।

१९८२ पट्चावश्यकविधान—पन्नालाला। पत्र सं०१४। बा०१४८७३ दश्चा। भाषा—हिन्दा। विषय-घाचार बास्त्र । र०काल सं०१६३२। ले०काल सं०१६३४ वैद्याल बुदी ६। पूर्ण। दे०सं०७४४। इस्मण्डार।

> १९०४. प्रति संट २। पत्र सं० १७। लेंग्लास सं० १६३२। वंगसंग् ७४४। इट अण्डार। १९०४. प्रति संट २। पत्र संग २३। लेंग्लास ४। वेगसंग ४५६। इट अण्डार। विशेष—विद्यमन बोधक के तुलीय व पद्मम उत्सास का क्रियो धनुवाद है।

१९८६. षट्कर्मोपदेशरस्त्रमासा (क्षक्रम्मोवस्य) — महाकवि स्मरकीर्त्ति । पत्र सं० २ से ७१। मा० १० $\frac{1}{6}$ × ϵ_0^2 हस्र । आवा-सरभंश । विषय-सावार शास्त्र । र० काल सं० १२४७ । ले० काल सं० १६२२ चैत्र सुत्री १२ । वे० सं० २५६ । च भण्डार ।

विशेष---नागपुर नगरमें सम्बेलवालान्वय पाटनीगीत्रवाले श्रीमतीहरवमदे ने ग्रन्थकी प्रतिलिपि करवायी यी ।

१९०७. षद्कर्मोपदेशरस्त्रमासाभाषा — पांडे सासचन्द्र। पत्र संस्था १२६ । झा० १२४६ इक्षा। भाषा-हिन्दो । विषय-साचार प्रास्त्र । र० काल सं० १८६८ माच सुरी ४ । ले० काल सं० १८४६ शाके १७०४ भाषना मुद्दी १०। पूर्ण । वे० सं० ४२६ । क्या मण्डार ।

विशेष--ब्रह्मचारी देवकरण नै महात्मा मूरा से अयपुर में प्रतिलिपि करवायी।

११० म. प्रति सं०२। पत्र मं० १२६। ते० काल सं०१ ६६६ माघ मुदी ६। दे० सं०६७। घ मण्डार। विवेद---पुस्तक यं० मदामुख दिस्तीवालों की है।

१९०६. पट्संहननवर्णन—सकरन्द पद्मावित पुरवाला । पत्र सं० ६। सा० १०½ ४४६ इत्र । भावा-हिन्दो । विषय-पर्म । र० काल सं० १७६६ । ने० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ७१४ । क भण्डार ।

१११०. पद्भक्तिवर्धनः "ापत्र सं०२२ से २६ । झा०१२×५ दृद्धाः भाषा–मंस्कृतः । विषय– पर्मार० काल × । ते० काल × । झपूर्णः। वे० सं०२६६ । स्व भण्डारः।

११११. वोदशकारसभावनावर्सनवृत्ति—पं० शिवजिवह्नस् । पत्र तं० ४६। मा० ११ \times ५ स्त्रः । भाषा-प्राहृत, संस्कृत । विषय-पर्म । र० काल \times । से० काल \times । पूर्ण । वे० सं० २००४ । स्त्र भण्डार ।

१११२. योडयकारसभावना—पं० सदासुखा।पत्र सं० ८०। झा० १२४७ इत्रा। भाषा हिन्दी गद्य। विषय-वर्षार० काल ४। ले० काल ४। वे० सं० ६९८। इस भण्डार।

विशेष---रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा में से है।

१११२. पोडराकारसम्भावना जयमालः — नयमलः । पत्र नं०२०। झा०११३४७६ इक्षाः गापा-हिन्दी। विषय-भर्मः। र०कालः सं०१९२५ सावन सुदी ४। ले०कालः ४। पूर्णः। वै०सं०७१९। कः प्रपदारः।

१११४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले॰ काल 🗴 । वै॰ सं० ७४६ । 🕸 भण्डार ।

१११५. प्रति सं० ३। पत्र सं० २४। ने० काल 🔀 वे० सं० ७४६। इस मण्डार ।

१११६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०। ले० काल 🔀 । सपूर्ण। वै० सं० ७५०। 🖝 भण्डार।

१११७. पोडराकारण्आवना"""। पत्र सं० ६४ । सा० १६२,×४५ इखा । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ने० काल सं० १६६२ कॉलिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ७५३ । ऋ पण्डार ।

विशेष---रामप्रताप न्यास ने प्रतिसिपि की बी।

१११८. प्रति सं० २ | पत्र सं० ६१ । ने० काल 🗴 । वै० सं० ७१४) 🛊 मण्डार |

१९१६. प्रति क्षं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल 🔀 के की अप्र १-३३ मध्यार ।

११२०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३०। ने॰ काल 🗴। प्रपूर्ल । वै॰ सं० ६६।

विशेष---३० से आगे पत्र नहीं है।

१९२१: योडयकारस्याभावनाग्ग्या पत्र संग्रीः । सार्व १९२५ ८५ ६ स्रां। भावन्त्राहतः । विवय-वर्म । रगकाल \times । सेन्काल \times । पूर्स । वेन्सेन्य ७ ७२१ (क) । कालकारः ।

विशेष--संस्कृत में संकेत भी विये हैं।

११२२. शीक्षनववाहः*****। पत्र सं σ १। मा σ १० $imes Y_{\overline{\sigma}}$ इक्का । भाषा–हिन्ती । निवय–वर्म । रंचलंक्कान imes । ने॰ काल imes । पूर्ण । वे॰ सं σ १२२६ । व्यक्त भष्णार ।

११२३, आञ्चपडिकस्मस्यासूत्र''''''''''''''''''''''''''''''''' र स्था । भाषा-प्राकृत । विषय-मर्म क र० काल imes । ते० काल imes । पूर्ण । वै० से० १०**१ । य जन्यारं** ।

विशेष—पं॰ जसवन्त के पौत्र तथा मानसिंह के पुत्र दीनानाथ के पठनार्थ प्रतिकिन की गई थी। छुजराती। टब्बा टीका सहित हैं ।

१९२४, आवक अतिक अस्तावा— पत्नातकालः चीधरी । पत्र संग्रहर । स्नग्रहरू । स्वापाया— हिन्दी । विषय— सर्प । र० काल संग्रहरू ने साव मुदी २ । ते० काल ४ । यूर्णी । वै० ले० घटतः । कुक्रमधार ।

विशेष--बाबा दुलीचन्दजी की प्रेरणा से शाषा की गयी थी।

११२४. प्रति सं०२ । पत्र सं० ७५ । ते० काल् 💢 । कै० सं० ६६७ । कः भण्डार ।

११२६, आमस्यसम्बर्धन $^{m-1}$ ायस्र सं• र०। का॰ र॰ $\frac{1}{2}$ \times रक्क। सम्ब-संस्कृतः। किनक-आसक्र पर्म। र० काल \times । ले० काल \times । सपूर्ण। वे० सं० ३४६। **का सम्बर्धः**।

११२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ते० काल 🗴 । पूर्ता । वे० सं० ३४७ । 🖷 अन्धार 🛭

११२८. शायकप्रतिक्रमसुः । पत्र सं \circ २४.। शा \circ १० $\frac{1}{4}$ ४४. १%। अग्राम्म । अग्राम । अग

विशेष---प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है। हुक्मीजीवस्त ने ब्रहिपुर में प्रतिनिधि की बी।

११२६, आयक्प्रतिकसस्य। यह सँ० १५। साथ १२४६ इका। बाधा-संस्कृतः। विकय-प्रदे । र० कक्ष्रः ×। ते० काल ×। पूर्वा। दे० सं० १०८। का मकारः ।

१९२० आवस्त्रमाधान — बीरसेन। पण तें ० ७। मा० १२×६ इस्र.। आवस-संस्कृतः। विवय-वर्णः) २० कालः × ३ कें० कालः सं० १८६४ । पूर्णः। ३० सं० १८० ।

विशेष---पं० पश्चालाल ने जयपूर में प्रतिलिपि की थी ।

६०] अर्भ एवं काचार शास्त्र

११३१. आयकाण्यार—क्यमितिसाति । पत्र सं०६७ । मा०१२ \times ५ इक्रा । आया–संस्कृत । विषय– माबार सास्त्र । र०काल \times । ले०काल \times । पूर्ण। वे०सं०६६ \times । कः भण्यार ।

विशेष--कही कही संस्कृत में टीका भी है। प्रन्य का नाम उपासकाचार भी है।

११३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल 🗴 । मपूर्ण । वे० सं० ४४ । च भण्डार ।

११३३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६३। ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वै० सं० १०६ । 🐯 भण्डार ।

१९३४. आ वकाचार—उमास्यामी। पत्र सं०२३। ब्रा०११ \times ५ दश्च। आपा—संस्कृत। विधय— ब्राचार बास्त्र। र०काल imes। ले०काल imes। पूर्णावै० सं०२८६। ब्रामण्डार।

१९६४. प्रति संट२ । पत्र सं०३७ । ले० काल सं० १६२६ प्राथाढ़ सुदी २ । वे० सं०२६० । इप भण्डार ।

११२६. श्रावकाचार—गुणभूषणाचार्यः । पत्र सं∘ २१ । झा० १०६४४६ इ.ख.। भाषा–संस्कृतः । विषय–प्राचार सास्त्र । र० काल ४ । ले० काल सं० १४६२ वैद्याल बुदी ४ । पूर्णावे० सं० १३६ । श्रूप्र भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति :

संबत् १४६२ वर्षे बैद्याल बुदी ४ श्री मूनसंगे बलात्कारमणे सरस्ततागच्छे श्री कु बकु दानार्थात्वयं प्रश् श्री पद्मतान्द देवास्तरस्ट्रे प्रश्नी शुभवन्द्र देवास्तरम्ट्रे भश्मी जिनवन्द्र देवास्तरस्ट्रे भश्मी प्रभावन्द्रदेवा तदान्मायं संबेतवालान्त्रयं साश्मीत्रे संश्वरत्व तस्य भाषीं रोहातस्त्रुव नेता तस्य भाषीं नारमेषे । तरपुत्र मिलदान तस्य भाषीं अमरी दुतीय पुत्र वर्षा तस्य भाषीं वोरबी ततपुत्र नयमल दुतीय स्वीवा साश्मर्रासह एतेषांमध्य इदंशारंगं निलायतं स्मेशस्त्रिमित्तं श्रावकाचार । प्रजिका पदमस्तिरिक्योच्य वार्ष्ट्र नारिंग प्रदाप्ति ।

११३७. प्रति सं० :। पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १४२६ भादवा बुदी १ । वे० सं० ४०१। ह्य 'भण्डार।

प्रसस्ति—संबन् १५२६ वर्षे भोडपद १ पक्षो श्री मूलसंबे भ० श्री जिनवन्द्र त० नरक्षिण लंडेलवालान्त्रयं सं० भारत्य भार्या जैली पुत्र हास्य विकायबतु ।

११३८. आयक्काचार—पद्मानित् । पत्र यं॰ २ ते २६ । या० ११५४ ६ इखाः भाषा—संस्कृतः । विषय— आयार शास्त्र । र० काल 🔀 । ले० काल 🗶 । प्रपूर्णः। वे० सं॰ २१०७ ।

विशेष--- ३६ से धागे भी पत्र नहीं है।

११३६ आमकाचार—चुब्यपाद। पत्र सं०६। घा० ६२/४६ इका। भाषा– संस्कृत। विषय-प्रावार - जास्त्र। र०काल ×। ले०कान सं०१ न्४४ बैशाल सुदी ३। पूर्ण। वे०सं०१०२। च भण्डार।

विशेष---प्रत्य का नाम उपासकाचार तथा उपासकाध्ययन भी है।

११४०. प्रतिसंठ२ । पत्र सं०११ । लेक्काल सं०१८८० पौष बुदी १४ । वेश सं०८६ । इर भण्डार । १९४१, प्रतिसं ० ३ । पत्र सं० ४ । ते० काल सं० १८ ८४ भाषाक दुवी २ । वे० सं० ४३ । च अच्छार १९४२, प्रतिसं ८ ४ । पत्र सं० ७ । ते० काल स० १८०४ । वादवा सुरी ६ । वे० सं० १०२ । द्धा अच्छार ।

११४३. प्रति संब ४। पत्र संव ७। लेव काल ४। वेव संव २१४१। ट मण्डार।

११४४. प्रति सं०६। पत्र सं०६। ले॰ काल ×। वे॰ सं० २१४=। ट अण्डार।

१९४४. आवकाचार—सकत्तकीत्ति । वत्र सं० ६६ । या० न् $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{4}$ इक्का भाषा—संस्कृत । विषय— स्राचार शास्त्र । र० काल × । ते० काल × । स्पूर्ण । वे० सं० २०५८ । स्त्र भण्डार ।

१९४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२३ । ले॰ काल सं० १०४४ । वे॰ सं० ६६३ । क भण्डार ।

११४७ आर्थकाचारआया—पंठ आराचन्द्र। पत्र सं०१६६। घा०१२४८ दक्षा। आया-हिन्दी गसः। विषय-माबार सास्त्र। र० काल सं०१६२२ मायाद सूदी द।ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं०२ द।

विशेष--- प्रमितिगति श्रावकाचार की भाषा टीका है। प्रन्तिम पत्र पर महाबीराष्ट्रक है।

११४५८, श्रोवकाचारः''''। पत्र संस्था १ सं २१ । घा० ११४५ रक्का। भाषा—संस्कृत । विषय-प्राचार शास्त्र । रु. काल ४ । ते०, काल ४ । सपूर्ण । वे० सं० २१∈२ । ट भण्डार ।

विशेष--इससे झागे के पत्र नहीं हैं।

१९४६. आवकाचारः*** । पत्र सं०७ । ग्राट १०१८% इ.स. । भाषा-प्राहत । विषय-माचारशास्त्र । रः नाल × । ले० काल × । पूर्या । वे० सं० १०६ । छ भण्डार ।

विशेष---६० गाथाये है।

्रीप्रः, श्रावकाचारभाषा''' '''। पत्र सं० ५२ से.१३१ । ग्रा० ६ $\frac{1}{4}$ \times ५ इक्र । भाषा-हिन्दी । विषय-साबार शास्त्र । र० काल \times । ले० काल \times । सपूर्श | बे० सं० २०९४ । इस भण्डार ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

११४१. प्रति सं०२ । पत्र सं०३ । लें० काल 🔀 । अपूर्णा वे० स०६६६ । वह अण्डार ।

१९४२. प्रति सं०३ । पत्र सं०१९१ मे १७४ । ले० काल 📐 । ब्रपूर्ण । ते० मं० ७०६ । इस भण्डार ।

११४६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ११६। ले० काल सं० १६६४ भादवा बुदी १। पूर्ण । वे. सं० ७१०। कः भण्डार।

विशेष—पुराञ्चला कत श्रावकाचार की भाषा टीका है। संबत् १५२६ चैत मुदी ५ रविवार को यह । यन्त्र जिहानाबार वैसिहपुरा में लिखा गया था। उस वैति से यह प्रतिकिति की गयी थी।

१९४४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०८ । ले० काल 🗙 । सपूर्ता । बे० मं० ६८२ । व्य भण्डार ।

१९४४. शुरक्कासकर्याल \cdots ा पत्र सं० व । सा० ११३ \times ७३ हक्काः आवार्—श्लि । विषय-धर्म । र० काथ \times । ते० काथ \times । पूर्व । वे० सं० ७०१ । क अध्वार ।

१६४६. प्रति सं०२। पत्र सं०८। ते० काल 🗴 । वे० सं० ७०२। क भण्डार।

११४७. स्वस्त्रकोकियोता''''''। पत्र सं०२। सा०१×४ द्रवा। मापा—संस्कृत । विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्णे। वे० सं०१७४० । ट अण्डार।

११४६. समुद्धार्मभेदः ""। पत्र सं० ४। मा० ११४१ हज्जः। भाषा-मंस्कृतः। विषय-सिद्धान्तः। र० कालः ४। ले॰ कालः ४। मधुर्षः। वै० सं० ७६६। क्र अच्छारः।

११६०. **सम्बेदशिसर महात्स्य — दीकित देवदन्त**। पत्र मं० ८१ । मा० ११×६ ठ**छ।** भाषा-संस्कृत । र० काल सं० १६४४ । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० सं० २८२ । **डा** भण्डार ।

११६१. प्रति सं० २ । पत्र सं• १४७ । ले॰ काल 🗵 । वे॰ सं॰ ७६५ । 🖝 भण्डार ।

११६२, प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० । ले० काल 🗴 । ध्रपूर्ण । वे० सं० ३७५ । च भण्डार ।

१९६३. सम्मेदशिखरमहाल्य — लाखचन्द। पत्र सं∘ ६४ । झा०१३४४ । भाषा–हिन्दी (पद्य)। विदय–धर्म। र०काल सं०१८४२ कामुरा सुदी ४ । ले०काल ४ । पूर्ण। वे०सं०६९० । क अण्डार।

विशेष---भट्टारक श्री जगतकीर्ति के शिष्य लालचन्द ने रेवाड़ी मे यह ग्रन्थ रचना की थी।

११६५. सम्मेदशिकासहारूय—मन्धुलकाला। पत्र सं० १०६। घा० ११×४६ दश्चा भाषा— हिन्दी। विषय-भर्म। र०काल ×। ते०काल सं० १६४६ घातोज दुदी १०। दूर्स। वे० सं० १०६६। द्वा अपकार।

विशेष---रचना संवत् सम्बन्धी दोहा---

बान वेद शशिगये विक्रमार्क तुम जान । अस्विन सित दशमी सुद्धुरु ग्रन्थ समापत ठान ।।

लोहाबार्य विरचित ग्रन्य की भाषा टीका है।

११६४. प्रति सं०२ । पत्र सं०१०२ । ते० काल सं०१ स्वयं चैत मुदी २ । वे० सं०७ स्वाग प्रधार । ११६६. प्रति सं०३ । पत्र सं०६२ । ते० काल सं०१ स्वयं तुनी १५ | वे० सं०७६६ । इस् अध्यार ।

विशेव-स्योजीरामजी भावसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की ।

११६७. प्रतिसं**० ४ ।** पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १६११ पीष बुदी १५ । वे० सं० २२ । आ अच्छार ।

११६⊏. सम्मोदशिखरविलास—केशारीसिंह। पत्र सं∘३। झा० ११६ूँ४७ इखा। मादा—हिन्दी। विषय—मर्ग।र० काल २०वीं बसाल्दी।ले० काल ४। पूर्ण।ते० सं० ७६७। क्र प्रवतर। ११६६. सम्मेदशिसर विश्वाया—देवालका । पत्र सं० ४ । मा० ११३/४७३ स्था । भाका-हिनी पत्र । विवय-धर्म । ए० काल १०वीं शताली । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० १६१ । सा अध्यार ।

११७०. संसारस्यरूप वर्षेत्र \cdots ापत्र मं० ४ । ब्रा० ११×४५ दश्च । माषा—संस्कृत । विषय—वर्षे । र० काल \times । प्रार्थ । वे० सं० ३२६ । का भण्डार ।

१९७४: सानारधर्माञ्चन—पं० ज्याशाधर । पत्र मं० १४३ । आ० १२६/४७६ दक्ष । आपा—संस्कृत । विषय-आवकों के प्राचार धर्म का वर्णन । र० काल सं० १२६६ । लं० काल सं० १७६६ प्रावता बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २२८ । का क्षकार ।

विजय-प्रति स्वोपक संस्कृत टीका सहित है। टीका का नाम भव्यकुमुद्दवन्द्रिका है। महाराजा सवार्ठ जर्यासकर्गों के शासनकाल में ऋषेर में महारमा मानकी ने प्रतिविधि की बी।

१२७२. प्रति सं०२ । पत्र सं०२०६ । लेक काल सं०१ सब१ फागुला सुदी १ । वेक सं०७७४ । क भण्डार ।

विशेष--महात्या राधाकृष्ण किशनगढ वाले ने सवाई जवपूर में प्रतिलिपि की ।

११७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ने० काल 🖂 । वै० मं० ७७४ । 🐔 अण्डार ।

१९७४. प्रति सं० ४ । पत्र मं० ४७ । ले० वाल 🗵 । वे० मं० ११७ । घ मण्डार ।

विशेष---प्रति संस्कृत टीका सहित है।

११७४. प्रति संबर्धापत्र मंब्र ५७ । लेब काल 🔀 । वेब संबर्धार । घ मण्डार ।

विशेष—४ में ४० तक के पत्र किमी प्राचीन प्रति के है बाकी पत्र दुवारा लिखाकर प्रन्य पूरा किया सवाहै।

११७६. प्रति सं०६ । पत्र सं०१४६ । ले॰ काल सं०१६६१ आयवानुसी ४ । वे॰ सं०७६ । छ। भण्डार ।

विश्रीय —प्रति स्थोपज टीका महित हैं । सामानेर में नोनदराम ने नेमिनांथ **वैत्यालय** में स्वप्रकार्य प्रति-नित्रि की थीं ।

११७७. प्रतिक सं०७ । यत्र सं०६१ । ले० काल सं०१२२८ फायुक्त सुद्धी २० । वे० सं०१४६ । जा भण्डार ।

विशेष---प्रति टब्बा टीका सहित है । रविवक्ता एवं लेखक दोनो की प्रशस्ति है ।

११७८ प्रति सं ० ६ । पत्र सं ० १४० । ले० काल × । वे० मं० १ । का भण्डार ।

विमेष--प्रति प्राचीन एवं शुद्ध है ।

११७६. प्रतिसं**० ६। पत्र सं० ६६। ने० काल सं० १**४६५ फाग्रुव्य सुदी २। वे० सं०१८ । स्प्र भण्डार।

विशेष-प्रवास्ति--- अच्छेलवालक्ष्ये अजनस्वोत्रे पांड ठीका तेन इदं धर्मासूतनामोपक्रयवनं झावार्य नेनिवरताय दत्तं । अन्न प्रजाबन्द्र देवस्तुत जिल्ला भेन धर्मक्रान्ताये । **११८०. प्रति सं**०१० | पत्र सं०४१ | नै०काल × । अपूर्ण | वे०सं०१८ क**ा** स्रामण्डार । ११८९. प्रति सं०११ | पत्र सं०१४१ | ने०काल × | वे०सं०४४६ | स्रामण्डार |

विशेष-स्वोपन्न टीका सहित है।

११८२. प्रति सं २ १२ । पत्र सं० १६ । ते० काल 🗴 । वै० सं० ४५० । 🛍 भण्डार ।

विशेष---मूलमात्र प्रति प्राचीन है,।

१९६३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १६६ । ते० काल सं० १४६४ कामुला सुवो १२ । वै० सं० ४०० । व्या सम्बद्धार ।

विश्रेष-प्रश्नितः संवत् १५६४ वयं फाल्युन सुबी १२ रिवशसरं पुनर्वपुनक्षके शीमुलनंवे नन्दिसंगे बलास्कारमत्ते सरस्वतीयच्छे श्री कुन्वकुन्वावायांन्वये म० श्री पयानिव तरपट्टे श्री शुभवन्द्रदेवातराष्ट्रे म० श्री जिनवन्द्र देवातरपट्टे म० श्री प्रमाचन्द्रदेवतत्तिय्यमण्डलाचार्ये श्री श्रीवन्द्रदेवास्तत्पुत्वयिष्याचार्यः श्री नेमियन्द्रदेवास्तिरियं भर्मीवृतनामाशाधरआवकाचार्यत्ते । श्रीवन्द्रदेवास्तिरियं भर्मीवृतनामाशाधरआवकाचारतीका अध्यकुसुद्रचिद्रकानाम्नी लिखापिनास्परनार्यं ज्ञानावरणाविकमेलयार्थं व ।

११८४. प्रति सं० १४। पत्र सं० ४०। ले० काल 🗴 । ब्रपूर्ण । वे० सं० ४०६। व्य भण्डार !

विशेष--संस्कृत टिप्परए सहित है ।

११८६४. प्रति सं०१४ । पत्र सं०४१ । ले० कालं 🗴 । ब्रपूर्ण । वे० सं०१६६५ । ट भण्डार ।

११≅६. प्रति सं०१६। पत्र सं०२ से ७२। ले० काल सं० १४९४ भावना मुदी १ । प्रपूर्ण। वे० संख्या २**११०। ट अप्यार।**

विकोष--प्रथम पत्र नहीं है । लेखक प्रशस्ति पूर्ण है ।

१९८७. सातस्यसनस्याध्यायः.....। पत्र सं० १। प्रा० १०४५ दश्च । भागः –हिन्दी । विषय–धर्म । र• काल ४ । ते• काल सं० १७८० । पूर्ण । वे० सं० १८७३ ।

विशेष—रूपमञ्जरी भी वी हुई है जिसके ग्राठ पद्य है।

११सम्. साधुदिनवर्षा''''''' । पत्र संग्रु६ । आ० १२/४४२ इख्र । आपा–प्राकृत । विषय–प्राचार इ.सत्त्र । र० काल ४ । के० काल ४ । पूर्ण । के० सं० २७४ ।

विशेष-श्रीमत्तपीगरो श्री विजयवानसूरि विजयराज्ये ऋषि रूपा लिखितं ।

११८६. सामायिकपाठ---वहुमुनि । पत्र सं०१६ । मा० ८४१ दश्च । भाषा-प्राकृते, संस्कृत । विषय--धर्म । र०कात × । ले०काल × । पूर्ण। वे०सं० २१०१ । इस भण्डार ।

विशेष--धन्तिस पुष्पिका निम्न प्रकार है--

इति श्रीबहुमुनिविरिवर्तं सामधिकपाठ संपूर्ण ।

१९६०. साम्प्रविकपाठ'''''' । पत्र सं०२४ । ब्रा० ०२४६ एकः । भाषा-प्रकृत । विषय-पर्म । ६० काल × । ले० काल × । ब्रपूर्ण । वे० सं०२०६६ । ब्रा कच्छार । १९६१. प्रति संट २ । पत्र संट ४६ । नेट काल 🔀 । पूर्णा | नेट संट १६३ । 🖦 भण्डार । विशेष---संस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

१९६२. प्रति संट ३ । पत्र संट २ । लेट काल × । वेट संट ७७६ । क अण्डार ।

१९६२. सामाधिकपाठ " "। पत्र सं० ४०। मा० ११ $\frac{1}{2} \times v_{\pi}^{1}$ इक्षा । मावा-संस्कृत । विवय-धर्म । रे॰ काल \times । ने॰ काल सं० १९४६ कालिक दृदी २ । पूर्ण । वे॰ सं० ७७६ । इस भण्डार ।

११६४ . प्रतिसंट २ । पत्र सं०६ माल ० काल सं०१ मध्य । वे० सं०७७७ । इस अण्डार । विजेष--- उदयबन्द ने प्रतिसिधि की थी ।

१९६६ - प्रतिसंट ३ । पत्र संट १ । लेट काल ४ । बपूर्णी। वेट संट २०१७ । इस अण्डार । १९६६ - प्रतिसंट ४ । पत्र संट २६ । लेट काल ४ । वेट संट १०११ । इस अण्डार ।

११६७. प्रति संo ४ । पत्र संo ६ । लेंo काल × | वेo संo ७७८ | क अव्हार |

११६≂. प्रति सं०६ । पत्र सं०५४ । ले० काल मं० १०२० कालिक बुदी २ । वे० सं० ६५ **। का** भण्डार ।

१९६६ - सामाधिक पाठ''''''' पत्र सं० २५ । ब्रा० १०४४ इका। भाषा–प्राकृत, संस्कृत । विषय– धर्म । र० काल × । ल० काल सं० १७३३ । पूर्ता। वे सं० ⊏१४ | इक्र भण्यार ।

१२००. प्रतिसंठ२ । पत्र सं०६ । ले० काल सं०१७६० ज्येष्ठ सुदी ११ । वे० सं०६१५ । क भण्डार ।

> १२०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ते० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० सं० ३६० । 🗃 अण्डार । विभेष---पत्रो को चुकों ने सालिया है ।

१२०२. प्रति सं० ४ | पत्र सं० ६ | ले० काल ४ | प्रपूर्ण | वे० सं० ३६१ । च भण्डार । १२०३. प्रति सं० ४ | पत्र सं० २ से १६ | ले० काल ४ | प्रपूर्ण | वे० सं० ५१३ | क भण्डार । ...

१६०४. सामायिकपाठ (लाघु)। पत्र सं०१। प्रा०१०३/४ १ द्वा। माया—संस्कृत । विषय-पर्म। १० काल ×। ते॰ काल ४। पूर्णावे संक देवदा च प्रख्यार।

> १२०४८ प्रति संठ२ । पत्र सं०१ । ते० काल ४ । ते० सं०२ व्हः च अध्यार । १२०६८ प्रति संठ३ । पत्र सं०३ । ते० काल ४ । ते० सं०७१३ क । च अध्यार ।

१२०७. सामाधिकपाठभाषा—सुध महाचन्द् । पत्र सं० ६ । म्रा० ११×५ रे इंड । जापा—हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०० । च अण्डार ।

विशेष--- औहरीलाल कृत ग्रालोचना पाठ भी है।

१२०८. प्रति सं०२ । वन सं०७ । ले॰ काल सं०१६४४ सावन नुनी ३ । वे० सं०१६४१ । ट भण्डार । १२**०६. साद्याविकदाढयाचा— अक्यूब्य झावया** । पत्र सं∘ ⊏२ । सा० १२¦८४ ह**ञ्च**। भाषा— हिन्दी गद्या विषय—सर्म। र०काल × । ते०काल सं० १६३७ । दुर्ख। दे० सं० ७८० । स्त्र सण्डार ।

१२१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल मं० १६५६ । ते० सं० ७८१ । द्वा अण्डार ।

१२११. प्रति सं० ३ । पत्र मं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० ७८२ । छा भण्डार ।

१२१२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६। ने० काल ×। वे० मं० ७=३। श्रा भण्डार ।

१२१३. प्रति सं० । पत्र सं० २६ । ते० काल सं० १६७१ । वे० सं० ६१७ । इस भण्डार ।

विभोष--श्री केशरलाल गोधा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

१२१४. प्रति सं ६ ६ । पत्र सं०३१ । ने० काल सं०१ ८७४ फायुग्ग मृदी६ । वे० सं०१८३ । ज अथवार।

. १२१४. प्रति संट ७ । पत्र सं० ४४. । ले० काल सं० १९११ आरमीज मुदी ८ । त्रै० मॅ० ४६ । स्र अध्यार ।

१२९६. सामाविकपाठभाषा— भ० श्री तिसोध्यन्द । पत्र सं०६४ । बा०११८४ ऽख । भाषा≔ हिन्दी। विषय–भर्म। र० काल सं०१=६२ । ले० काल ⊠ । पूर्णा। वे० सं०७१० । च भण्डार ।

१२१७. प्रतिसंठ२ । पत्र सं० ७१ । तंशकाल मंश्राहर मावन बुदी १३ । येश संश्यार । च अच्चार ।

१२१८. सामाविकपाठ भाषा''''''। यत सं∘ ४५ । बा० १२८६ ट बा। भाषा-हिस्सी गर्यः। विषय-धर्म। र० काल ४ । ने० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ सुदी २ । दूसगा वै० सं० १२८ । आर. मण्डारः।

विभेष—जक्युर में महाराजा जर्बामहजी के शामनकाल में जती नैशासागर तराभच्छ वाले ने प्रतिनिधि की थीं।

१२१६. प्रक्तिसां०२ । पत्र सं०५ ८ । ते० काल सं० १७४० वैद्यास्त सुदी ७ । वे० सं०७०६ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मासावलदास वगद वालं ने प्रशिक्षिपि की थी। संस्कृत अध्यवाप्राकृत अन्दो का प्रथं दिवा हुआ। है।

१२२०. **काळानिकराठ भाषः**'''''। पत्र सं०२ ने ३। घा०१११ैं,×१३ दक्का भाषा⊸हिन्दी। किस्स-पर्सार० काल ×। ने० काल ×ां बदुर्ली। ने० सं०६१। क भण्डार।

१२२१. प्रति सं०२ । पत्र सं०६ । ले० काल 🗴 । वे० सं०८१६ । 🖼 भण्डार |

१२२२. प्रति सं०३ । पत्र सं०१४ । ते० काल 🗴 । सङ्गूर्ण । वे० सं०४८६ । 🐞 अध्वार ।

१९२३. स्वामाकिकावामामा """। पत्र सं० ६०। घा० ६×४५ दक्का । मात्रा-हिली (हुंबारी) विश्वस-वर्म । रचनाकाल × । ने० काल सं० १७६३ मंगसिर मुदी न । ने० मं० ७११ । च भण्डार । १२२४. सारसमुख्य —कुलाअतु । पत्र गं० १५ । बा० ११×४६ इत्र । 'माया-मंस्कृत । विधय-वर्म । र० काल 🖈 । ले० काल सं० १६०७ पीय बुदी ४ । वे० सं० ४५६ । डा मण्डार ।

विभेष---मंडलाबार्य धर्मबन्द के निष्य ब्रह्मभाऊ बोहरा ने ग्रन्थ की प्रतिनिधि करवायी थी।

१२२४. साबयधम्म होहा—मुनि रामसिंह। पत्र मं० = । मा० १०६४४६ इक्ष । माषा-मपप्रंक ।' विषय-माबार सास्य । र० काल × । वे० काल × । वे० मं० १४१ । पूर्ण । च्या भण्डार ।

विशेष---प्रति सति प्राचीन है।

१९२६, सिद्धों कास्थलप"""।पत्र सं०३ स्। प्रा०४×३ दक्षाः भाषा—हिन्दीः। विषय–धर्मः। र०नगलः । ले०काल ×ापूर्णः। वे०सं० ६५४ ।इर प्रण्डारः।

१२२**७. पुरुष्टितर्गिगोभाषा—ेटकचन्द्र** । पत्र नं० ४०४ । बा० १५×६१ ट**ब** । भाषा—िहन्दी । विषय—पर्मार० काल नं० १८६८ नावण मुदी ११ । नं० काल नं० १८६१ भादवा मुदी ३ । पूर्णा । वे० सं० ७५७ । अर्थभण्डार ।

विशेष---सन्तिम पत्र फटा हुआ है।

१२२८. प्रति सं०२ । पत्र मं०६०। ले०काल ४ । वै० मं०६१४ । इस पण्डार । १२२६. प्रति मं०३ । पत्र सं०६११। ले०काल मं०१६४४ । वे० मं०६१। इस पण्डार । १२३०. प्रति सं०४ । पत्र मं०३६१ । ले०काल मं०१८६३ । वे०मं०६२ । गांपण्डार । विलेष—स्योताल साह ने प्रतिलिपि की थी ।

१२३१. प्रति संट ४:।पत्र मॅं० १०४ से १२३ । लेऽ काल ४:। अपूर्णा विकस्त १२७ । घमण्डार) १२३२. प्रति संट ६ ।पत्र मॅं० १६६ । लेऽ काल ४:।वेऽ मॅ० १२० ।घमण्डार ।

१२३३. प्रति संठ ७ । यत्र स० ५८५ । ले० काल सं० १८६८ आसीज सुदी ६ । वे० सं० ८६६ । ऋ भण्डार ।

विशेष---२ प्रतियो का मिश्रमा है।

१२३४. प्रतिसां ० ६ । पत्र सं० १०० । ले० काल सं० १९६० कालिक बुदी ४ । वै० सं० ६६६ । क भण्डार ।

१२३४. प्रति संट ६ । पत्र सं० २०० । ले० काल 🖂 । अपूर्णा। वे० स० ७२२ । घ भण्डार ।

१२३६. प्रतिस् ०१०। पत्र सं०४३०। ले० काल सं०१६४६ चैन बुदी = । वे० सं०११। स भण्डार।

१२३७. प्रति सं०११। पत्र सं० १३१। वे० काल मं०१८३६ फायुरा बुदी ४। वे० मं०८६। अन् भक्टार।

१२३६ स. सुरृष्टिकरंगिश्वीभाषा ''' । पैत्रं मं∘ ५१ में ५७ । झा० १२३ ४७३ डक्क । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल ४ । मे० काल ४ । स्पूर्श । वे० सं० ६६७ । इर मण्डार ।

धिमें एवं चाचार शास्त्र

£4]

१२३६. सोर्नागरपद्मीसी—आगीरथापत्र सं० द । झा० ५३×४<mark>, इख्रा । आपा−हि</mark>न्दी । विषय— धर्म । र० काल सं० १व६१ ज्येष्ठ सुदी १४ । ले० काल × । वे० सं० १४७ । छु अण्डार ।

१२४०. सोकहकारणभावनावर्णन—पंठसदासुख। पत्र सं०४६। आ० १२८० दश्च। भाषा— हिन्दी। विषय—पर्य। र० काल ⋉ाले० काल ⋉ापूर्णाके० सं०७२६। च भण्डार।

१२४१. प्रति सं०२ । पत्र सं० ५३ । ले० काल 🗵 । वे० सं० १८८ । 🗷 भण्डार ।

१२४२. प्रति सं०३ । पत्र सं०५७ । ले॰ काल सं०१२२७ सावगा बुदी ११ । वै० सं०१८८ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे गरोशीलाल पांच्या ने फागी के मन्दिर मे प्रतिनिधि की थीं।

२२.४२२. प्रति सं०४ । पत्र सं०३१ सं६६ । ले० काल स०१६५६ माहसुदी २ । प्रपूर्ण। वै० गं० १६० । **छ भण्डार** ।

· विशेष----प्रास्त्रभ के ३० पत्र नहीं है । सुन्दरलाल पांच्या ने चाटसू म प्रतिलिपि की थीं ।

१६५४८ सोलहकारसभावना एवं दरालक्स धर्म वर्धन--पंट सदासुख । यव मं० ११४। नाटन ११३×६ दख । भावा-हिन्दी । विवय--पर्म। र० कान 🔀 । ते० कान मं० १६४१ मॅगसिर मुदी १३ । पूर्ण। वे० सं० १४। ता भवार ।

१२४४. स्थापनानिर्धाय****** पत्र सं०६। झा०१२४६ दश्च। भाषा-मंस्कृत ।विषय-धर्म। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्णा दे० सं०६००। इस भण्डार ।

विशेष---विद्वजनवीधक के प्रथम कांड का प्रष्टम उल्लास है। हिन्दी टीका महित है।

१२५६. स्वाध्यायपाठः''''''। पत्र मं०२०। म्रा०१०५६ हे दश्च । भाषा-श्राष्ट्रत, संस्कृत । विषय-धर्म । र०काल \times । श्रेण । वे० सं०२३। जा भण्यार ।

१२४७. स्वाच्यायपाठआया \cdots ापत्र सं०७ । सा०११ $\frac{1}{2}$ \times ७ $\frac{1}{2}$ सा $^{-}$ श्रिय $^{-}$ पर्म। र०काल \times । ते०काल \times । पूर्ण। ते० सं० ४४२ । क्राज्यार।

१२४**८. सिद्धान्तधर्भोपदेशमाला'''''''''''''''''''''''''''''' १००११८८३ हक्ष**ाभाषा-प्राकृतः। विषय– धर्मः। र०कालः ≿ाले०कालः ≿ापूर्णः। वे०सं०२२१ । **स्न भष्टार**ः।

१२४६. **दुषडाथसर्पियाकालहोष—मायाकभन्य** । पत्र सं०६ । भाषा-हिन्ती । विषय–धर्म । र० काल ⋌ । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ता । वे० सं० ⊏५५ । कृषण्डार ।

विशेष---बाबा द्लीचन्द ने प्रतिनिधि की थी।



विषय--श्रध्यात्म एवं योगशास्त्र

१२४० - ऋभ्यास्मतरंगिरशी—सोसदेव । पत्र सं०१० । आ० ११४४६३ इक्का आपा–संस्कृत । विषय– अध्यान्म । र० काल ∷ । ले० काल ⋉ । पूर्णावे ० सं०२० । इक्क अध्यार ।

> १२.४१. प्रति संट २ । पत्र सं॰ ६ । ले० काल सं॰ १६३७ भादवा बुढी ६ । वे० सं० ४ । कु मण्डार । विजयः उत्पर नीचे नथा पत्र के दोनों भ्रोर संस्कृत में टीका लिखी हुई है ।

१२-४२. प्रतिसंठ३ । पत्र सं०६ । ले०काल सं० १६३ स् आधाड बुदी १०। दे• सं० ६२ । उत्त भण्टार ।

िश्रंष —प्रति मंस्कृत टीका महित है। विवुध फतेलाल ने प्रतिलिपि की थी।

१२४६. ऋभ्यासमपत्र—जयचन्द्र छ्वावद्या । पत्र सं०७। झा० १८४ डचा। भाषा-हिन्दी (गवा)। र॰ काल १८वी जनावतो । ले० काल ८ | पूर्ण । वे० सं०१७ | क्रभण्डार ।

१२४४. ऋभ्यासमञ्जीमी—सनारसीदासः । पत्र सं०२ । मा०६४४ इक्षः । माना-हिन्दी (पदा)। विषय-प्रध्यानः । र०कालः १७वी बातालीः । ले०कालः ४ । पूर्णः । वै० सं०१३६६ । इस अच्छारः ।

१२४४. ऋष्यास्म बारहलङ्गी—कवि सुरत । पत्र सं०१४ । आ० १ $\frac{1}{8}$ ४६ इक्ष । भाषानहिन्दी (पत्र) । विषय-प्रभ्यास्म । र० काल १७वीं बनास्त्री । ने० काल \times । पूर्ण । वे० सं०६ । क भण्डार ।

१२**५६. अध्याहुड् — कुन्द्कुन्द्राचार्य** । पत्र सं० १० मे २७ । आ० १०४५ **१वा ।** आवा-प्राकृत । विषय-सम्बन्ध्यास्य । २० काल ४ | मे**० काल ४ । अपूर्ण । वे० सं० १०२३ । आ** अण्डार ।

विशेष--प्रति जीर्ग है। १ से ६ तथा २४-२५वां पत्र नहीं है।

१२४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ने० काल सं० १६४३ । वे० सं० ७ । क मण्डार ।

१२,४८० आष्ट्रपाहुकुभाषा—जयजन्द छ।बढ़ां । पन सं० ४३०। आग० १२,४८० हुइडा। आषा–हिन्दी (गय)। विषय—अध्याम्म । र०काल सं० १०६७ भाषवा मुदी १३। लंगकाल ४ । पूर्णा। वे० सं० १३। क भण्डार । विशेष —मूल प्रत्यकार आचार्यकृतकृत है।

१२.४६. प्रति सं • २ । पत्र सं०१७ मे २४६ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं०१४ । क भण्डार ।

१२६०. प्रति संट ३ । पत्र सं० १२६ । ले० काल 🗡 । । वे० सं० १४ । का अण्डार ।

१२६१. प्रति सं०४। पत्र मं०१६७। ले० काल 🖂। वे० सं०१६। वह भण्डार।

१२६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३३४ । ते० काल सं० १६२६ । वे० सं० १ । क अध्यार । १२६३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४४१ । ते० काल सं० १६४३ । वे० सं० २ । क अध्यार । १२६४. प्रति संद ७ । पत्र सं० १६५ । ले० काल 🗶 । वै० सं० ३ । घ भण्डार ।

१२६४. प्रति संब्धापत्र मं०१६३ । लेब काल मं०१६३६ ब्रामील सृदी१५ । देव संव्हार भण्डार ।

विश्वेष——६९ पत्र प्राचीन प्रति है। ⊏≕ से १२३ पत्र फिर लिलावे संघंटे नपा१२४ से १६३ नक के पत्र किसीकन्य प्रति के हैं।

१२६६ प्रति संब ६ । पत्र मं० २४३ । ले० काल मं० १६५**१** स्रापाढ बुदी १४ । दे० म० ३६ । इर भण्डार ।

१२६७. प्रति सं०१०। पत्र मं० १६७ | ते० काल . । ते० सं० ५००। च भण्डार ।

१२६ म. प्रति सं०११ । पत्र सं०१८५ । लेश काल सं०१८० सायत बुदा १ । वेश स०३६ : अक्त सण्डार ।

१२६६. आसम्बान—वनारसीहास । पत्र मंग्यार व्ही.४ टक्क म्यापार्मालयी (१७)। विवय-आस्मीवतन । रणकान , '। नेणकान ×। नेणमंग्य १९७६ । ऋ सण्डार ।

१२.७०. आस्मप्रवोध—कुमारकवि पत्र सं०१३ । आर०१०१×८१ र**श्च** । भाषा–संस्कृत । विषय– अध्यक्तिम । र० काल ⋋ । ले० काल ⋋ । पूर्ण । वे० सं०२४० । आस्त्र भण्डार ।

१२७१. प्रति संट २ । पत्र सं० १४ । लेल काल 🙏 । वेल सं० ३६० (क) स्न भण्डार ।

१६७६. **कारसमंबोधनफाटय******** । पत्र गं० २७ । सा० १० .४) टक्का भाषा-भवभंग । विषय-क्रान्सस्य । र० काल × । ने० काल × । पूर्णावे कंप १६५४ । का भण्यार ।

१२,७३, प्रति संट २ । षत्र सं० ३१ । ले० काल 🔍 । सपूर्ण । वे० स० ५२ । इ. भण्डार ।

१२७४८ आस्मर्सवीधनकाव्य—ज्ञानभूषण । पत्र म०२ मे २६ । सा०१०) र ुट्छ । भाषा— संस्कृत । विषय-सम्पारम । र० काल् ∧ । मे० काल् ∧ । अपूर्ण । वे० नं०१६=७ । इस भण्यार ।

१२७४. श्रात्मावलोकन---वीपचन्द कामलीवाल । पत्र मं ० ६६ । श्रात १११८.८६ । श्रापा-

१२७४. ज्यात्मावलाकन — रापचन्द्र कामलावाला । पत्र में० ६६ । आ० ११६..१६ रश्च । आपा-हिन्दी (गर्च) । विवय-प्रध्यात्म । र० कान 🔀 । ने० कान में० १७०४ राष्ट्रम बुदी । वे० में० २१६ । इस अण्डार ।

विशेष--वृन्दावन में दयाराम लच्छीराम ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिनिधि की थी।

१२७६. व्यास्मानुशासन—गुग्नभद्राचार्य। पत्र म०४२ । श्रा० १०.४ ट≋ । भाषा–संस्हन । विषय–ग्रप्णासम । र०कान ⋋ । ते०कान ⋋ । ते० सं० २२६२ । पूर्ण । जीर्ण। इद्य भव्डार ।

108

१२७०६ प्रति मंद २ । पत्र सं० ७४ । ते० काला सं० १५६४ मापाक बुदी मा विकर्त २६६ । का भण्डार ।

१२,७८८. प्रति संट ३ । पत्र सं० २७ । ले० कालासं० १८०० मावसामुदी ४ । वै० सं० ३१५ । ऋप भण्डार ।

१६७६. प्रति संद ४ । पत्र संद ३१ । लेव काल 🔨 ! तेव संद १२६८ । 🖼 भण्डार !

विभेष---प्रति जीर्सा एवं प्राचीन है।

८२८०. प्रति सं्ट ४ । पत्र सं०३४ । ले० कास × । बपूर्ण । वे० सं०२७० । इस अच्छार । १२८१. प्रति सं०६ । पत्र सं०३६ । ले० काल ∞ । वे० सं०७१२ । इस अच्छार ।

१२ ६२. प्रति संट ७ । पत्र संव २५ । नेव काल 🗴 । नेव संव ७६३ । 🖼 भण्डार ।

१२८६२, प्रति संट ६ । पत्र संब २७ । लेव काल : । सपूर्ण । वेव संव २०६६ । ऋ सण्डार । १२८४, प्रति संट ६ । पत्र संव १०७ । लेव काल संव १६४० । वेव संव ४७ । क सण्डार ।

१९६४ प्रात सं०६ । पत्र मंत्र १०७ । लंब काल मंत्र १६४० । बेट मंत्र ४७ । कं भण्डार ।

१२८४. प्रति संट १८ । पत्र संत ४१ । ने० काला सं० १८८६ । वैठ सं० ४६ । वैठ अण्डार ।

१२८६६. प्रतिसंट ११ । पत्र संब ३६ । ले० काल 🔀 । वे० सं० १४ । 🚓 भण्डार ।

१२८७, प्रसित्संट १२ । पत्र संब्धः । लेव्यक्तामा संब्धः चित्रस्था स्थापः । वेव्यंव ४३ । इत्यापः । प्रशास

विद्योग—िहर्स्य ग्रवं महित है। पहिने संस्कृत काहिन्दी ग्रवं तथा फिर उसका भावार्थ भी दिया हुग्रा है। १०≂⊏. प्रति संट १३ | पत्र सं० २३ | ले० काल्य सं० १७३० भाववा गुडी १२ । वे० स० १४ | क सम्दार |

विशेष- -प्रमालाल बाकर्लावाल ने प्रतिनिधि की था।

१२=६. प्रति सं०१४ । पत्र मॅ०४६ । ले०काल सं०१६७० फाग्रुन मुदी २ । वं०मं०२६ । च भण्डार ।

१२६०, प्रति संब १४ ! पत्र मं० १६ । ते० काल मं० १६६५ मंगविर मुदी ५ । वै० नं० २२० । व्य भण्डार ।

विशेष---मंडलाबार्य धर्मचन्द्र के शासनकाल में अतिसिपि की गबी थी।

१२६१. व्यक्तिसञ्ज्ञसासनदीका—प्रभावनद्वाचार्य। पत्र सं० ४७। झा० ११८४ इक्कः। मापा-संस्कृत । विषय-मध्यास्य । र० काल × । ने० काल सं० १८६२ काञ्चस्य सुदी १०। दूर्षः। वे० सं० २७ः। चः भण्डारः।

> १२६२, प्रति संवर् । पत्र संवर्ष्ण १०३। तेव काल संवर्ष्ण १९०१। वेव संवर्षण १६ । इस सम्बार । १२६३, प्रति संव ३। पत्र संवर्षण स्थानेव काल संवर्षण भ्रमित्र सुदी १४। वेव संवर्षण १३। इस्

मण्डार ।

विशेष---वृत्दावती नगर में प्रतिलिपि हुई।

१२.६४. प्रतिसं०४ । पत्र सं०४ २ । ले० काल मं० १८३२ बैशाल बुदी ६ । वे० सं०४० । इस भण्डार ।

विशेष--सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई।

१२६४. प्रति संट ८ । पत्र संठ ११० । ले० काल यं० १६१६ झाबाढ मुदी १ । वे० सं० ७१ । विकोष---साह तिहुसु स्रप्रवान गर्ग गोत्रीय ने सन्य की प्रतिकिपि करवायी ।

१२६६. **फारमानुशासनभाषा---पं० टोडरमल** । पत्र सं० ८७ । प्रा० १४८७ **ऽक्ष** । भाषा-हिन्दी (गदा) विषय---मध्यास्य । र० काल ४ । ने० काल सं० १८६० । पूर्ण । वे० सं० ३७१ । **क्य भण्डार** ।

> **२२६७. प्रति सं**ट २ । पत्र मं० १८६ । लं० कान सं० १६०८ । त्रे० म० ३६६ । **द्या अ**ष्टार । विशेष—प्रति सन्दर है ।

१२६८. प्रति संट है। पत्र संट १४८। लेट काल ्रा वेट सट ३६८। ऋ भण्डार।

१२६६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १६६३ । वे० सं० ४३४ । आस्र भण्डार ।

१२००. प्रतिसंत्र ४ । पत्र सं०२३६ । ले॰ काल सं०१६३० । वे० सं०१० । कः भण्डार । विशेष---प्रभाव-दावार्यकत संस्कृत टीका भी है ।

१३०९. प्रति संठ६ । पत्र सं०३ - प्राप्त कल सं०१६८० । दे० सं०प्रहाक मण्डार । १३७२. प्रति संठ७ । पत्र सं०१ र । ते० काल सं०१ ८६६ कालिक सुदी ४,। दे० सं०प्राप्त

भण्डार ।

भण्डार ।

१३०३. प्रति संट ⊏। पत्र सं० ७ । लेट काल ्रायपूर्णा | लेट संट ४४ । इट अम्बरार । १३०४. प्रति सट ६ । पत्र संट ६६ से १०२ । लट काल्य ४ । प्रपूर्णा | लेट संट ४६ । इट अप्टार । १३०४. प्रति संट १० । पत्र संट १ लेट काल्य ८ । प्रपूर्णा | लेट संट ४७ । इट अपडार । १३०६. प्रति संट ११ । पत्र संट १४१ । लेट काल्य संट १६३३ च्ये 8 सुद्री ⊏ । लेट संट ४६ । इट

विशेष---प्रति संशोधित है।

१३८७. प्रति सं०१२। पत्र सं०६७। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० सं०१६। का भण्डार। १३८म. प्रति सं०१३। पत्र सं०६१ से १६४। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० सं०६०। का भण्डार। १३०६. प्रति सं०१४। पत्र सं०७१ से १म६। ले० काल सं०१ स्१४ कालिक सुदी ३। प्रपूर्ण। १३१०. प्रति सं०१४। पत्र सं०६६ से १४३। ले० काल सं०१६२४ कालिक सुदी ३। प्रपूर्ण।

१२११. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ६० । ले० काल 🗴 । सपूर्ती । वे० सं० ११५ । 📦 अध्यार । १३१२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८५४ प्रायाद बुदी १ । वे० सं० २२२ । ज भण्यार । विशेष---रायचन्द साहवाद ने स्वाठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१३१३. प्रति सं०१ ६ । पत्र सं०१४ । ले० काल × । प्रयूक्ता। वै० सं०२१२४ । ट भण्डार । विकोष—१४ में प्रापे पत्र नहीं है।

१३१४. ऋाध्यास्तिकताथा— अटलह्मीयन्द्रायत्र गंवत्र गंवर्षाः १०४४ इका। आवा—प्रयप्ने सः। विषय-प्रध्यास्त्र । रंक्काल ४ । वेककाल ४ । पूर्णा विकस्य प्रधार ।

१६१**४. कार्लिके**बानुमेदा—स्वासी कार्लिकेबा । यन सं०२४ । बा०१२×५ ६**वा** । आया–प्राक्त । विषय–प्रध्यान्त । र०काल × । सं०काल सं०१६०४ | पूर्णावेग ने० सं०२६१ । **ब्रा**मण्डार ।

१३१६. प्रति सं०२ । पत्र सं०३६ । ले० काल ⊠ । वे० सं०६२० । श्राप्तार ।

विजेष--संस्कृत में पर्यायवाची शब्द विये हैं । १८६ गायाये है ।

१३१७. प्रतिसद ३ । पत्र सं०३३ । लं०काल ८ । वे० मं०६१४ । इस मण्डार । विशेष— २८३ गाषाये है ।

१३१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल ४ । वै० सं० ६४४ । क भण्डार । विशेष —संस्कृत में पर्यायवाचा शब्द विये हैं।

१३१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४८ । ले० काल मं० १८८८ । वै० सं० ८४५ । क अण्डार ।

विजेष---मंस्कृत में पर्यायवाची शब्द है।

१३२०. प्रति सं० ६ । पत्र मं० २० । ले० काल 🐦 । भपूर्ण । वे० सं० ३१ । सा मण्डार ।

१३२१. प्रति सं २ ७ । पत्र सं० ३४ । ने० काल 🔏 । अपूर्ण । ते० मं० ११४ । 🖝 भण्डार ।

१३२२. प्रतिस्ट्यापत्र मंद ३७। लेद काल मंद्र १६४३ मावसामुदी ४। वेद संद ११६ । 🖝

HOST !

१३२३. प्रतिसंद ६ । पत्र सं०२६ में ७५ । वे० काल सं०१६६६ । प्रपूर्ण । वे० सं०१९७ । अङ्

भवडार । भवडार ।

१३२४. प्रतिसंट १८ । पत्र मं० ४० । ले० कालासं० १८२४ पीप बुदी १० । ते० सं० १९६ । क

विजेष-हिन्दी मर्थ भी है। मुनि रूपचन्द ने प्रतिलिपि की थी। .

१३२४. प्रति सं० ११। पत्र सं० २६। ने० काल मं० ११३६। वे० सं० ४३७। च भण्डार।

्र३२६. प्रतिसंट १२ । पत्र सं∘ २३ । ले० काल 🗷 । ग्रपूर्ण | वे० सं० ४३८ । ऋ भण्डार |

१३२७. प्रति सं०१२ । पत्र मं०३६ । ले० काल मं०१८६६ सावरामुदी ६ । वे० सं०४३६ । च

मण्डार ।

रिदेश्यः, प्रतिसंदर्भ रे । पत्र संश्रेष्ट । मेश्यास संश्रेष्टर मावसा मुदी है । वैश्वसंश्रेष्ठ । चा भण्डार । **१३२६. प्रति संट १४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६५६ । वे० सं० ४४२ । सा अफ़्टार !** विशेष--मंस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये है।

१३३०. प्रति सं०१४। पत्र सं०४६। ले० काल सं०१८८१ भारता बदी १०। वै≉ सं०८०। छ भक्डार ।

. १३३१. प्रति संद १६ | पत्र संव ६३ | लेक काल 📐 | वैव संव १०७ । ज भण्डार । विभेष---मंस्कृत में टिप्परा दिया हथा है।

१३३२. प्रतिसंव १७ । पत्र संव १२ । लेव काल र । सपुर्मा । वैव संव ६६ । आर. भण्डार ।

१३३३, प्रक्ति स्बंट श्चापत्र संब ६ । ये० साल ८ । ये० संब ५२४ । अरु मण्डार ।

१३३४, प्रति सं ६ १६ । पत्र सं० १०० । लेव काल । अपूर्ण । वेव संव २०६१ । ट भण्डार । विशेष--- ११ से ७४ तथा १०० में ग्रामे के पत्र नहीं है।

१३३४ प्रतिसंट ३० । पत्र सं० ३० मे ६८ । ले० काल ्। अपूर्ण । वे० सं० २००६ । ट भण्डार । विशेष---प्रति संस्कृत टीका महित है ।

१३३६. कार्त्तिकेयानप्रेकाटीका पत्र गं० १८। आ० १०३ . व इक्का भाषा-संस्कृत । विषय-श्रध्यात्म । र० कान ⋌ । ले० काल ्.ा श्रपुर्गा दे० मं० ७३२ । ऋ भण्डार ।

> १३३७. प्रति संबर्धापत्र मंब ६१ मे ११०। लेव काल 🔀 । अपूर्णा वेब सब ११६। हा भण्डार । १०२८, कार्शिकयानुप्रेसाटीका--शुभचन्द्र । पत्र स० २१० । आ० ११२/४ इक्क । भाषा-सन्दर्भ ।

विषय--- प्रध्यान्म । रु काल सं ०१६०० माघ बुदी १०। ले० काल म०१६५८। पूर्ण । वै० गं० ६८३। क भण्डार ।

?338. प्रक्रिसंट २ । पत्र संब ४८ । लेब काल 🗸 । वेब संब १५५ । सपूर्ण । क्र अण्डार ।

१३४८ प्रति संद ३ । पत्र संव ३५ । लेव काल । अपूर्णा विवसंव ४४१ । सा अण्डार ।

१४४१. प्रति संद ४ । पत्र संद ५१ में १७२ । लेद काल संद १८३२ । अपूर्ण । वेद सद ४४३ । च अक्टार ।

१३४२, प्रति संब ४ । पत्र संब २१७ । नेव काल गंव १६५६ ग्रामोज मुदी १२ । वेब संब ७६ । छ AVETT 1

विश्रंय-सवाई जबपुर में संप्योसिह के शासनकाल में चन्द्रप्रभू चैत्यालय में पंज बोखबन्द के शिर्य रामचन्द ने प्रतिसिपि की थी।

१३४३, प्रति संद ६ । पत्र संव २८६ । नेव काल सब १८६६ प्राचाद सूर्वा ६ । वेव संव ४०५ । स्व मण्हार ।

१३४४. का**लिकेबानुप्रसाभाषा-- जयचन्द् छाबड़ा** । पत्र मं० २३७ । ग्रा० ११८८ इक्का भाषा-हिन्दी (गदा) ! विषय-अध्यास्म । र० काल सं० १८६३ मावसा अवी ३ । ल० काल सं० १०२६ । पूर्श । वे० सं० ८४६ । क्रामण्डार ।

१३४४. प्रति सं०२ । पण सं०२ = १ वे० काल 🗴 । वै० सं०२४६ । हा जण्डार । १३४६. प्रति सं०३ । पण सं०१७६ । वे० काल सं०१ = ३ वे० सं०१४ । राजण्डार । विशेष—कालुराम शक्त ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१३४७. प्रति संव ४। पत्र संव १०६। लेव काल 🗴 । अपूर्ण । वैव संव १२० | 🕸 अण्डार ।

१३४८. प्रति संब्धायत्र संब्धायत्र संब्धायत्र । के मण्डार ।

१३४६. कुरालागुर्विभिष्मबक्कुसस्यं ****** पत्र सं० ८ । आ० १०४४ दक्कः । भाषा-प्रकृतः । विषय-ग्रम्थान्स । र०कालः ४ । वै०कालः ४ । वै०कं० १६८३ । टक्क्यारः ।

विशेष--प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

इति कुशलाणुवंधिष्रञ्भुक्षणं समत्तं । इति श्री चतुत्रारणः टवार्य । इसके प्रतिरिक्त राजमृत्यर तथा विजयदान सूरि विरक्ति ऋषभदेव स्तुतियां सौर हैं ।

१३४१. प्रति सं०२। पत्र सं०३। ले० काल 🗙 । वै० सं० ५४१ । 🖷 अण्डार ।

१२४२. चतुर्विश्रध्यान''''''' पत्र मं∘ २ । झा० १०×४६ डक्का। भाषा–संस्कृत। विषय–योग। २० काल ८ | ने० काल ४ | पूर्णावे० सं० १४१ । **४६ अथवार।**

१३४३. विद्विलास—दीपचन्द्र कासलीवाल । पण सं० ४३। मा० १२४६ इ.स. । माया-हिन्दी (गष) विषय-मध्यात्म । २० काल ४ । ले० काल सं० १७७६ । पूर्ण । वे० सं० २१ । स सम्बार ।

१६५% . जोगीरासो — जिनदास । पत्र सं०२ । मा०१०६ \times ४६ दक्का । भाषा—हिल्सी (पक्ष) । विषय— प्रध्यास । र० काल \times । मे० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । का सम्बार ।

१६४४. झानवर्षस्—साह दीपखरद् । पत्र तं० ४० । झा० १२६४४६ हका । भाषा-हिन्ते (प्रध) । विवय-प्रध्यास्य । र० काल ४ । ते० काल ४ । वै० तं० २२६ । क बच्चार ।

१३४६. प्रति सं०२। पत्र सं०२४। मे० काल सं०१८६४ सावरण सुदी ११ । वे० सं० २०। घ भण्डार।

विशेष---महत्तमा उम्मेद ने प्रक्रिलिप की थी। प्रति दीवान समरवन्दजी के मन्दिर में विराजमान की मर्द।

१२.५७. आहाल बाब नी—वतारसी दास्रः । पत्र सं०१०। मा०१२.५५ दक्कः । भाषा—हिन्दी। विषय— प्रध्यास्य । र०काल ×। के०काल ×। पूर्वा। वे०सं०५२१। स्व व्यवस्य ।

१२४८. झानसार—सुनि पद्मस्सिद् । पंत्र सं० १२ । मा० १०६४४६ इस्र । त्रावा–प्राकृत । विषय— बध्यात्म । र० काल सं० १००६ सावत्य सुदी ६ । ते० काल × । पूर्वी । वै० वं० २१० । क्र अध्वारः ।

```
₹0€ ]
```

MOSTS !

भण्डार ।

भण्डार ।

क मंग्डार ।

ि धर्म एवं ऋाषार शास्त्र

```
विशेष-रचनाकाल वाली गाया निम्न प्रकार है-
                 सिरि विकामस्सव्यावे दशसमञ्जासी चुंयमि वहमारोह
                 सावग्रसिय गुवमीए श्रंवयगुपरीम्मकयं मेथं ।।
           १३४६. ज्ञानार्खय--शभवन्द्राचार्य । पत्र सं० १०४ । ब्रा० १२३×४३ इक्क । भाषा-संस्कृत ।
विषय-योग । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १६७६ चैत्र बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २७४ । 🖘 अध्हार ।
           विजेष--वैराट नगर मे श्री चतरदास ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवागी थी।
           १३६८. प्रति सं०२ । पत्र सं०१०३ । ले० काल सं०१६४६ भाववा सूबी १३ । वे० सं०४२ । ऋ
           १३६१. प्रति सं  ३। पत्र सं  २०७। ले काल सं  १६४२ पीष मुदी ह । वे ० सं ० २००। क
           १३६२. प्रति सं ८ ४। पत्र सं० २६०। ते० काल 🔀 । अपूर्ण । वै० मं० २२१। क भण्डार ।
            १३६३. प्रति सं ध्रापत्र सं ०१०८। ले० काल 🗴 । वे० सं० २२२ । व्ह भण्डार ।
            १३६४. प्रति संट ६। पत्र संट २६४। लेट काल संट १८३५ प्रावाद मुदी ३। वेट संट २३८। क
           विशेष--- प्रन्तिम प्रधिकार की टीका नहीं है।
            १३६४. प्रति संट ७ । पत्र सं० १० से ६२ । ले० काल ८ । मपूर्ण । वै० सं० ६२ । सा भण्डार ।
           विशेष---प्रारम्भ के १ पत्र नहीं है।
           १३६६. प्रति संट द। पत्र सं० १३१। ले० काल ×। वे० सं० ३२। घ अण्डार।
           विशेष--प्रति प्राचीन है।
           १३६७. प्रति संब है। पत्र संब १७६ से २०१। लेव काल 🗴 । प्रपूर्ण । वेव संव २२३। इस अण्डार ।
           १३६८. प्रति संट १०। पत्र संब २६८ | लेव काल × । वेव संव २२४ । प्रपर्ता । 🗷 भण्डार ।
           विशेष---धन्तिम पत्र नहीं है। हिन्दी टीका सहित है।
           १३६६. प्रति सं० ११। पत्र सं० १०६। ले॰ काल 🗴। ते॰ सं० २२४। 🖝 मण्डार।
           १३७०. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ४४ । ले० काल 🔀 । ब्रपूर्ण । वे० सं० २२४ । 🕿 भण्डार ।
           १३७१. प्रतिसं० १३ । पत्र सं० १३ । ले० काल 🔀 । प्रपूर्ण । वे० सं० २२६ । 🖝 भण्डार ।
           विशेष--प्राशायाम प्रधिकार तक है।
           १३७२. प्रति सं० १४। पत्र सं० १४२। ले॰ काल सं० १८८६। वे० सं० २२७। इस अवहार।
           १२७२. प्रति सं०१४। पत्र सं०१४०। ते० काल सं०१६४८ ब्रासोज बुबी = । वे० सं०१२४।
```

विशेष---लक्ष्मीबन्द्र वैदा ने प्रतिलिपि की थी।

१३७४. प्रति सं०१६। पत्र सं०१३४। ले० काल 🗴 । वे० सं०६४। 🐯 मण्डार।

[tous

विशेष---प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत में संकेत भी दिये हैं।

१३७४. प्रतिस्ंट१७ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं०१ स्यय साथ सुदी ४ । वे० सं०२ स्था भण्यार ।

विशेष--बारह मावना मात्र है।

१२.७६. प्रति संट १⊏ । पत्र सं∘ १७ । ले० काल सं∘ १५ ⊏१ कायुग् सुदी १ । वै० सं∘ २५ । ज भण्डार ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

नंवत् १५८१ वर्षे फागुण सुद्दा १ तुभवार दिने । स्रथ श्रीमुलसंचे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्द-कुन्दाचार्यान्वयं महारक्ष श्रीपचनन्विदेवा तत्वहें महारक्ष श्रीधुमचन्द्रदेवा तत्वहें वितिन्द्र्य महारक्ष्मीवनचन्द्रदेवा तत्वहें सकलविद्यानिभानयमस्वाच्यायध्यानतदशरसक्लशुनिजनमध्यलस्थातिद्वामहारक्ष्मीश्रवावन्त्रदेवा । स्रांवर्ष गण् स्वानत् । कुरमवंने महाराजाधिराजपुष्वीराजराज्ये सर्च्यलवासम्बये समस्तगोठि पंचायत सास्त्रं ज्ञानार्गव तिसापितं वैपनिक्यानं वर्तनिवर्गवाइ धनाइदाणु चटापितं कम्मेक्षयनिमतं ।

१३७७. प्रति सं०१६। पत्र सं०११६। ले० काल 🗴 ।। वे० सं०६०। क्रु अण्डार।

१२७८. प्रति संट २०। पत्र सं० १०४। ले० काल ×। बे० सं० १००। ह्या अण्डार।

१२५६. प्रतिसं०२१। पत्र स०२ से ७३। ले० काल सं० १५०१ माघ बुदी ३। प्रपूर्ण। दे० सं० १५३। का मध्यार ।

विशेष-- ब्रह्माजनदास ने श्री मनरकीर्ति के लिए प्रतिलिपि की थी।

१३ स्ट. प्रति संट २२ । पत्र सं० १३४ । ते० काल सं० १७८६ । वे० सं० १७० । आर्थ आप्यार । १३ स्थार, प्रति संठ २३ । पत्र सं० २१ । ते० काल सं० १६४१ । वे० सं० १६६२ । ट नण्यार । विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित हैं।

१३८८ - प्रति सं०२४ । पत्र सं०६ । ले० काल सं०१६०१ । प्रपूर्ण । वे० सं०१६६३ । ट्र अण्डार । विशेष—अति संसकृत गण टीका सहित हैं ।

१३८३. ज्ञानार्योषागद्यदीका—श्रुवसागर। पत्र सं०१४ । प्रा०११८४ ६०६। भाषा-संस्कृत। विषय-योग। र०काल ४। ले०काल ४। पूर्णाके०सं०६१६। इस मण्डार।

१३८४. प्रति सं∘ २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं∙ २२४ । क भण्डार ।

१३८६. प्रति सं०३। पत्र सं०६। लेश्काल सं०१८२३ माच सुदी १०। वेश्सं०२२६। क भग्वार।

१६८६. प्रति सं• ४ । पत्र सं० २ से ६ । ले० काल 🗴 । सपूर्ण । वे० सं० ३१ । 🖼 अध्यार ।

्र क्र**कारम एवं योगारा**स्त्र

705

१३६६. प्रति सं० ६। पत्र सं० २ ते १२। ले० काल 🗴। प्रपूर्ण । वे० सं० २२१। 🖝 अण्डार ।

१३८६६. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० १२ । ते० काल सं० १७८५ भारता। वे० सं० २३० । क भण्डार । विजोब—पंरासवन्त्र ने प्रतिलिपि की थ्री ।

१३६०. प्रति सं०६ । पत्र सं०६ । ले० काल × । वे० सं० २२१ । स्र भण्डार ।

१३६१. द्वानार्यवदीका—पं० नय विलास । पत्र सं० २७६ । सा० १३४८ दश्च । भाषा–संस्कृत । विवय—योग । र० काल ४ । ले० काल ४ । पर्ण । वे० सं० २२७ । क मण्डार ।

विशेष--- अस्तिम पृष्टिपका निम्न प्रकार है।

इति शुभवनदावार्यविराचतयोगप्रदीपाधकारे पं । नर्यावलामेन माह पाशा तस्तुव साह टोडर तस्कुलकमन-दिवक्तरसाहकविषासस्य श्रवसार्थं पं । जिनदायो धर्मनाकारापिता मोक्षप्रकरण समान्तं ।

१३६२ प्रति संट २ । पत्र संव ३१६ । नेव काल × । । वैव संव २२६ । क भण्डार ।

१३६३. ज्ञानार्योकटीकाआया— लब्धिकसलगर्या । पत्र मं० १४६ । प्रा० ११४६ । द्वा० भाषा— हिन्दी (पदा) । विषय—योग । र० काल मं० १७२८ मालोज मुदी १० । ले० काल मं० १७३० वैशाल मुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १९४ । क्षा अध्यार ।

१३६४: इवानार्यावसाया—जवचन्द्र छावडा । पत्र मं∘ ६६३ । मा० १३८७ इक्ष । भाषा–हिन्दी (यद्य) विचय-योग । र० काल मं० १०६६ माथ मुदी ४ । ले० कान ⋌ । पूर्ला । वे० लं० २२३ । इर मध्यार ।

१३६४. प्रति सं०२ | पत्र सं० ४२० । ले० काल × । वै० सं० २२४ । का अण्डार ।

१६६६. प्रति सं०३ । पत्र मं० ४२१ । ले० काल मं० १८८३ सावस्य बुदी ७ । वे० मं० ३४ । न अध्यार ।

विक्षेत--- जाह जिहानाबाद में संतुताल की प्रेरणा में आचा श्वना की गई। कालूरामजी माह ने मोनपाल मांक्ता से प्रतिसिधि कराके वौषरियों के मन्तिर में बढाया।

१३६७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४०८। ले० काल 🗵 । वे० सं० ५६५। 🗤 अण्डार।

१३६म. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०३ से २१६ । ते० काल 🗴 । अपूर्श । के० सं० ५६६ । च अच्छार ।

१२६६. प्रति सं०६। पत्र नं० २६१। ले० काल सं०१६११ जासोज युवी व । अधूर्ण। वे० सं०५६६। २६ भव्यार।

विशेष---प्रारम्भ के २६० पत्र नहीं है।

१४००. तक्त्ववोधः''''''। यच सं०३। घा० १०×५ डख्ना आया-संस्कृत | विषय-धाव्यास्म | र० काम × । ते० काम सं०१ ८०१ । पूर्ण । ३० सं०३ ६० । सामध्यार । १५८१. त्रथोर्षिशतिकाः'''''। पत्र सं०१३ । बा० १०३/४४६ इक्का । नाग-संस्कृत । विषय-सम्बास्य । र०काल × । ने०काल × । पूर्ता | वे०सं०१४० । चामण्डार ।

१४८२. प्रोत्पादुङ्कभाषा*****। पत्र तं० २६ । घा० १० है-४८ है इक्का । माया-हिन्दी (गर्क) । विषय-. प्रथ्यास्य । र०काल ४ । ते० काल ४ । पूर्वा । वे० तं० १८३ । क्क्स मध्यार ।

विशेष---अष्टपाहुड का एक भाग है।

१४०३. द्वादशभावना द्रष्टान्तः.....। यत्र सं० १ । सा० १० \times ४६ दक्ष । जाया-प्रजराती । विषय-सन्दारम । र० काल \times । ले० काल सं० १७०७ वैद्यास बुदी १ । वै० सं० २२१७ । स्त्र प्रण्डार ।

विशेष---जालोर में श्री हंसकुशल ने प्रतापकुशल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१४०४. द्वाद्शभावनाटीका*****। पत्र सं० ६। झा० ११% ८ ६८। शावा-हिन्दी । विषय-झध्यहम । र० काल 🔀 | ले० काल 🛴 । अपूर्ण | वे० लं० १६४५ । ट सम्बार |

विशेष--कृत्दकृत्दायार्थं कृत मूल गाथायें भी दी हैं।

१४८४. द्वादशासुत्रेम्साः*****। पत्र सं० २०। झा० १०३४४ इ**ख**। भाषा-प्राक्ततः। विषय-प्रध्यास्त्रः। र० काल ४। ने० काल ४। सपूर्णः। वे० सं० १६८५। ट मण्डारः।

१५०६. द्वादरानुमेचा—सक्तकोति । पत्र सं०४। मा०१०३८५ इखः। भाषा–संस्कृतः। विषय— ब्रध्यान्यः। र०कालः ४। त०कालः ४। पूर्णावे कंटन्४। इस मध्यारः।

१५०७. द्वाइरानुमेचाः'''''''' पत्र मं० १। घा० १० $imes Y_{\pi}^2$ दक्का। भाषा-संस्कृत । विषय-प्रध्यास्य । १० काल imes। ने० काल imes। पूर्ण। वे० सं० ८४ । इत्र मण्डार ।

१५: ८. प्रतिसंट २ । पत्र सं०७ । ने० काल 🗴 । वे० सं०१६१ । सः भण्डार ।

१५०६. द्वादशानुप्रेचा—कविष्यमः पत्र सं० ८३। प्रा० १२३/४५ इक्षाः नामा—हिन्दी (पष्ट) । विषय—प्रध्यास्य । र० काल सं० १६०७ मावदा बुदी १३। से० काल ४ । पुर्छ। वे० सं० ३६। क भण्डार ।

१४१०. द्वादराानुप्रेषाः — साद् भाल् । पत्र तं० ४। प्रा० ६ $\frac{1}{4} \times v_3^2$ दक्का । भाषा-हिन्दी । विषय-प्रध्यात्म । र० काल imes । ने० काल imes । पूर्ण । वै० सं० १९०४ । द्व भण्डार ।

१४११. द्वादरातुप्रोकाः*****। पत्र सं० १३। प्रा० १०imes४ ६ द्याः भाषा-हिन्दीः । विषय-प्रध्यात्मः। र० कालimes। से० कालimes। पूर्वाः वे० सं० ५२०। कः मण्डारः।

१४१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ६३ । 🚜 भण्डार ।

१४१३, पद्धातस्वधारखाः***** । पत्र सै०७। मा०६३,४५६ दक्षः । नाया-संस्कृतः । विषय-योगः । र०कालः × । ते०कालः × । पूर्णः । वै०सं०२२३२ । का जव्यारः ।

त्रप्रधातम एवं योगशास्त्र

₹\$c]

t

१६४१ क्षेत्र क्षत्रकृतिको '''''' पत्र-सं० ४.।. प्रा० १० $\frac{1}{4}$ × $\frac{1}{4}$ दक्षः। भाषा—हिन्दीः। विषय—प्रध्यातम् । र० काल × । पूर्णः। वै० सं० ४३१ । क्षः, भण्यारः।

विसेष--भूषरदास कुत एकी भावस्तोत्र भाषा भी है।

१४१४. परमात्मपुरास् — दीपकास्द्राः पत्र सं० २४ । मा० १२४६ इका। भाषा-हिन्दी (नव)। विषय-प्रध्यास्य । र० काल × । ले० काल सं० १⊏६४ सावन सुरी ११ । पूर्ण । घ मण्डार ।

विशेष---महात्मा उमेद ने प्रतिलिपि की थी।

१४१६. प्रति सं०२ । पत्र सं०२ से २२ । ले० काल सं०१६४३ प्रासोज बुटी २ । सपूर्णा । वे० सं०६२ । चाभण्यार ।

१४१७. परमात्मप्रकाश—योगीन्द्रदेव । पत्र मं॰ १६ मं १४४ । घां० १०४६ १ इत्र । आपा— प्रकाश | विषय-मध्यातम । र०काल १०वी शताब्दी । ले॰ काल सं॰ १७६६ प्रामीज मुदी २ । बपूर्ण । वे० मं० २०६३ । का मध्यार ।

विशेष-स्थालचन्द चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी।

१४९ **=, प्रतिसं २। पत्र सं० २**७। ते० काल सं० १६३५। वे० सं० ४४५ । कृप्रण्डार । विभेष्य संस्कृत में टीका भी है।

१४९६. प्रति संट ३ । पत्र सं॰ ७६ । ते० काल सं० १६०४ श्रावसा बुदी १३ । वे० सं० ५७ । घ अण्डार । संस्कृत टीका सप्तित हैं ।

विक्षेष--प्रत्य सं० ४००० श्लोक । प्रन्तिम ६ पृष्ठो मे बहुत बारीक लिपि है ।

१४२०. प्रति संब ४ । पत्र संब १४ । लेब्बल × । अपूर्ण । वेब्बल ४३४ । क्र अध्वार । १४२१. प्रक्रिसंब ४ । पत्र संब २ से १४ । लेब्बल × । अपूर्ण । वेब्बल ४२४ । क्र अध्वार ।

१४९६२ प्रति,संट ६ । श्रव संट २४ । लेक्साल 🗴 । प्रपूर्मा । वेट संट २०६ । चाभण्डार विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची सब्द दिये हैं ।

१४२२. प्रति सं०७ । पत्र सं०१६ । ते० काल 🗴 । घपूर्णा । वे० मं०२१० । च अध्यार । १४२४. प्रति सं०६ । पत्र सं०२४ । ते० काल सं०१६३० वैसास बुदी ३ । वे० मं०६२ । ब्या अध्यार ।

विशेष—जयपुर में शुनवन्त्रजों के शिष्य चोक्षवन्द तथा उनके शिष्य 'पंग्रामवन्त्र ने प्रतिलिपि की । संस्कृत में पर्यायवाची शब्द भी दिये हुए हैं |

१४२४. परतासमञ्चाराटीका — अञ्चलकातृत्वार्थः। यत्र सं० ६६ से २४४ । बा० १०३,४४ इक्का । भावता-संस्कृतः । विषय-सम्बद्धार । र०कालः ४.। तं० कालः ४.। बसूतः । वे० सं० ४६३ । क्र जपदार । १४२६. प्रति सं० २ । यत्र सं० १३६० से०कालः ४.। वे० सं० ४४३ । क्र अवदार । १४२७. प्रति-संट ३। यत्र मं०१४१। ते० काल सं०१७६७ पीच सुदी ४। वे सं०४४४। व्य भण्यार।

विशेष---मायाराम ने प्रतिलिपि की थी।

१४२८.. परमात्सप्रकाशाटीका—ज्ञाहादेव । पत्र सं॰ १६४ । प्रा०११४५ इक्का । माणा-संस्कृत । विषय-प्रध्यात्म । रुकाल 🗴 । ते० काल 🗴 । पूर्ण । वै० सं०१७६ । ऋष् भण्डार ।

> १४२६, प्रति सं०२ । पत्र स०८ ने १४६ । ले० काल 🗴 । प्रपूर्णी । वे० सं०८ ३ । 度 अण्डार । विभेष—प्रति सचित्र है ४४ वित्र है ।

१४२०. परमात्सप्रकाश्टीकः। "∣पत्र सं०१६३ । घा०१९,ं×७ इक्रा। आषा—संस्कृतः। विवय– प्रध्यात्म । र० काल ×। ले० काल सं०१६५ विक श्रावस्तु सुदी १२ | पूर्णावै० सं०४४७ । इस अण्डारः।

१४२१. परमात्मप्रकाराटीका ··· | पत्र सं० ६७ | त्रा० ११४४३ दश्च | भाषा-संस्कृत | विषय-भ्रष्यात्म | र० काल × | ते० काल सं० १८६० कार्तिक सुवी ३ | पूर्ण | वे० सं० २०७ | च नण्डार |

१४३२. प्रति सं० २ । यत्र सं० २६ ने १०१ । ते० काल × । घरूर्ल । वे० सं० २०⊄ । च मण्डार । १४३२. परमात्मप्रकाशाटीका ∵ः । यत्र सं० १७० । घा० ११५×४३ वचा । गाया-संस्कृत । विषयं-प्रध्यात्म । र० काल ⋌ । ते० काल सं० १६६६ मंगसिर सुदी १३ । पूर्ल । वे० सं० ४४६ । क मण्डार ।

विशेष-लेलक प्रशस्ति कटी हुई है। विजयराम ने प्रतिलिपि की थी।

१४२४. परमात्मप्रकाशभाषा—दौलतराम । यत्र सं० ४४४ । छा॰ ११×६ । काषा—हिन्दी । विषय— यच्यात्म । र० काल १८वी शताब्दी । ते० नाल सं० १६६६ । पूर्वी । वे० सं० ४४६ । क अण्डार ।

विशेष--- मूल तथा ब्रह्मदेव कृत नस्कृत टीका भी दी हुई है।

१४३.४. प्रति सं० २ | पत्र सं० २३० से २४२ | ते० काल × । सपूर्या | वे० सं० ४३६ | क अण्डार । १४३६. प्रति सं० ३ | पत्र सं० २ ८७ | ते० काल सं० १६४० | वे० सं० ४३७ | क आण्डार | १४३७. प्रति सं० ४ | पत्र स० ६० ने ११६ | ते० काल × | सपूर्या | वे० सं० ६३६ | वा अण्डार |

१४३ = . प्रीत सं ० ४ । पत्र सं ० ३२४ । ले० काल 🗴 । वे० सं ० १६२ । छ भण्डार ।

१४२६. परमास्त्रप्रकाशवास्त्रावेशियांनीटीक्का≔—स्तानवस्त् । पत्र सं०२४१ । स्ना०१२६४५ दश्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सम्प्रमास्य । र० कास सं०१६३६ । दुर्गावै० सं०४४ = । क्र सम्बार ।

विशेष—यह टीका मुस्तान मंश्री पार्वनाथ चैत्यालय में लिखी गई थी इसका उल्लेख स्वयं टीकाकार ने किया है !

रैक्ष्रेणः परमाक्तमकार्यभाषा— नथमका। यत्र संग्रही माणः ११-द्रे×७ रखः । भाषा-हिन्दी (यदा)। विषय-प्रध्यासः । रंग्यासम्बद्धाः १६१६ सैत्र बुदी ११ । तेृण्यासम्बद्धाः पूर्णः । देशसम्बद्धाः । स्वर्णासः

> १४४६ - प्रक्रि-संव २ । पत्र संव १८ । सेव काला संव १९४६ । वेव संव ४४१ । क्राध्यक्षार । १४४२ - प्रति संव २ । पत्र संव १० । वेव संव ४४२ । क्राध्यक्षार ।

१४४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से १५ । ले० काल म० १६३७ । वे० सं० ४४३ । क अण्डार ।

१४४४. परशात्मत्रकाराभाषा—सूरकाशान खोसवाल । पत्र सं० १४४ । बा० १२६४० स्था। आषा—हिली (गवा)। विषय—सध्यास्म । र०काल सं० १०४३ झावाढ बुरी ७। ले०काल सं० १६४२ संगसिर बुदी १०। पूर्वी विकलं∘४४४ । क अच्यार ।

है क्षेप्रेस्ट. परमात्मप्रकाशसाचा......। पत्र सं०६५ । सा० १३×५ दश्च । भावा-हिन्दी । विचय-सम्बास्य । र० काल × । ने० काल × । दे० सं०११६० । स्त्र भण्डार ।

१४४६. परमात्मप्रकाशभाषाः.....। पत्र सं∘ ११ । मा० ११४८ इक्का। भाषा-हिन्दी। विषय-क्राध्यास्य । र०काल × । ने०काल × । पूर्णा। वे०सं० ६२७ । चः भण्डार ।

१४४७. परमात्मप्रकाशभाषा''''''। पत्र सं० ६३ से १०६ । सा० १०४४१ दश्च । भाषा-हिन्दी । विवय-सध्यात्म । र० काल ४ । ने० काल ४ । सपूर्ण । वे० सं० ४३२ । कु सण्डार)

१४४८. प्रवचनसार—धाचार्य कृत्यकुम्द् | पत्र सं० ४७ । ग्रा० १२४४३ हका । भाषा-प्राकृत । विषय—धष्यास्त्र । र० काल प्रथम शताब्दी । ले० काल सं० १६४० माथ मुदी ७ । पूर्णा | वे० मं० ५०८ । क भण्डार । विषये —संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१४४६. प्रति संब २ । पत्र संब ३६ । लेव काल ४ । वंब संब ५१० ।

१४४०. प्रतिसंब ३ । पत्र सं०२० । ले० काल मं०१८६६ भादवाबुदी ४ । वे० मं०२३८ । च भण्यार ।

> १४४६१. प्रति संट ४ । पत्र सं०२ ⊏ । ने० काल ⋌ । प्रपूर्ण । । वे० सं०२ ३६ । चामण्डार । विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१४४२, प्रति सं०४ । पत्र सं०२२ । ले॰ काल मं०१८६७ बैद्याल बुदी ६ । वे० सं०२४० । च मण्यार ।

विषोष---परागदास मोहा वाले ने प्रतिनिपि की थी।

१८४३, प्रति संब ६। पत्र संब १३। लेव काल 🗵 | वेव संव १४६। जा भण्डार |

१४४५. प्रवचनसारटीका—चस्तवक्ट्राचार्थ । पत्र मंग्र ६७ । झाण् ६४५ इत्र । भाषा-मंस्कृत । विवय-सम्प्रास । रण्काल १०वी सतास्त्री । लेण्काल 🗙 । पूर्ण । वेण मंग्र १०६ । च्या प्रण्डार ।

विशेष-टीका का नाम तस्वदीपिका है।

१४४४. प्रति संब २ । पत्र संब ११८ । लेव काल 🖂 । वेव संव ८५२ । 🖦 मण्डार ।

१४ ६. प्रति संc ३ । पत्र संo २ से ६० । ले० काल 🔀 । प्रपूर्ण । वै० संo ७८५ । 🖼 भण्डार ।

१४४७. प्रतिसं⊂ ४ । पत्र सं० १०१ । ले० काल ४ । वे० सं० ८१ । ऋ मण्डार ।

१४४ स्. प्रति संठ ४ । पत्र सं० १०६ । ले० काल सं० १६६६ । वे० सं० ५०७ । कु अध्यार । विकेष--- महास्था देवकर्स ने जसनगर में प्रतिथिपि की थी । १४४६. प्रतिसंठ६ । पत्र मं०२३६ । ले० काल सं०१६३६ । वे० सं०५०६ । कृषण्डार । १४५०. प्रतिसंठ७ । पत्र मं०६७ । ले० काल 🗶 । वे०सं०२६४ । कृषण्डार ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

१४६१. प्रति संट ≔ापत्र संट २०२ । ले॰ काल संट १७४७ फाग्रुसा बुदी ११ । वे॰ संट ५११ । इस् भण्डार ।

१४६२ प्रतिसंठ ६ । पत्र सं०१६२ । ले० काल सं०१६४० भादवा बुदी ३ । वे० सं०६१ । जा भण्डार ।

विशेष---पं० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी |

१४६३. प्रवचनसारटीका ***** । पत्र मं० ४१ । सा० ११×६ इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—प्रध्यक्ष । र० काल × । सपुर्ण । वे० सं० ५१० । इक् भण्डार ।

विशेष --- प्राकृत में मूल संस्कृत में छाया तथा हिन्दी में प्रर्थ दिया हुआ है।

१४६४. प्रवचनसारटीका " " । पत्र मं० १२१ । ग्रा० १२४४ दश्च । भाषा—संस्कृत । विषय— प्रथ्यास्म । र०काल ्रा ने०काल मं०१६५७ प्रावाड चुदी ११ । पूर्ण । वै० मं०५०६ । कृभण्डार ।

१५६५. प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति " ""। पत्र सं० ५१ मे १३१ । घा० १२४५ है इस्र । भाग-संस्कृत । विषय-प्रध्यात्म । र० काल ४ । वे० काल सं० १७६५ । घपूर्ण । वे० सं० ७६३ । इस्र अध्वार ।

विशेष—प्रारम्भ-के, ५० पत्र नहीं हैं। सहाराजा जर्यासह के शासनशाल में नेवटा में सहारमा हरिक्रम्स ने प्रतिविधि की थी।

१४६६. प्रवचनमारभाषा —पांड हेमराज । पत्र सं० ६३ मे ३०४ । मा० १२४६ हुँ इक्का । साधा-हिन्दी (गळ) । विषय-मध्यास्म । र० काल सं० १७०६ माय मुदी ४ । ले० काल स० १७२४ । सपूर्णा । वे० सं० ४३२ । व्यासण्डार ।

विशेष--सागानेर मे प्रोसकाल गूजरमल ने प्रतिलिपि की थी।

१४६७. प्रति सं०२। पत्र सं०२६७। ने० काल सं०१६४३। ने० सं०५१३। क भण्डार।

१४६८. प्रति सद ३। पत्र सं० १७३। ले० काल 🗴। ते० सं० ४१२। क भण्डार।

१४६६. प्रति सं०४ । पत्र सं०१०१। ले० काल सं०१६२७ फाछुए। बुदी ११ । वे० सं०६३ । ख भण्डार ।

विशेष--प॰ परमानन्द ने दिल्ली में प्रतिलिपि की थी।

१४७०. प्रतिसंद ४ । पत्र संद १७६ । लेव्काल संद १७४३ पीच सुदी २ । वेट संद ४१३ । उट सम्बार ।

१४७१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २४१ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० ६४१ । च अण्डार ।

१४७२, प्रति संदर्धापत्र संबर्धात्र संवर्धात्र काल संवर्धात्र कालिक बुदी २ । वेव संवर्धश्रे । इद् भण्डार ।

विशेष---लवारण निवासी ग्रमरचन्द के पुत्र महात्मा गरोश ने प्रतिलिपि की थी।

१४७३. प्रवचनसारभाषा—जोधराज गोदीका । पत्र सं० २०। धा०११४५ दक्षा । भाषा–हिन्दी (पद्य) | विषय–प्रम्यासम् । र०काल सं० १७२६ । से०काल सं० १७६० घावाड सुदी १४ । पूर्ण। वे० सं० ६४४ । व्याभण्डार ।

१४७४. प्रवचनसारभाषा— बुग्दाबनहास । पत्र सं० २१७ । झा० १२६४१ इक्का । भाषा–हिन्दी । विषय–धध्यानम् । र०काल ४ । ले०काल सं० १६३३ ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्णा । वे० सं० ४११ । क भण्डार ।

विशेष--- प्रन्थ के प्रन्त में वृत्दावनदास का परिचय दिया है।

१४७४. प्रवचनसारभाषा****। पत्र सं० ६६ । ब्रा० ११. ६ है हक्क । भाषा-हिल्दी । निषय-ब्रध्यास्म । र० काल \times । स्रपूर्ण । वे० सं० ५१२ । क्रभण्डार ।

१४७६. प्रति संट २ । पत्र सं० ३० । ले० काल ् । अपूर्ण । वे० सं० ६४२ । च भण्डार । विशेष—मन्तिम पत्र नहीं है ।

१४७७. प्रवचनसारभाषा \cdots ा पत्र सं० १२ । आ० ११ र ϵ_3 इक्का । आषा-क्रिन्दी (गण्र) । विषय- सम्भारम । र० काल \times । के० काल \times । सपूर्ण । वे० मं० १६२२ । द्राभण्डार ।

१५५६. प्रवचनसारभाषा*****। पत्र सं० १४४ में १६४ । घा० १६३८७३ इक्ष । माषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-मध्यारम । २० काल ४ । ले० काल सं० १६६७ । घपूर्ण । वे० मं० ६४४ । च भण्डार ।

१५७६. प्रवचनसारभाषा'''''''। पत्र सं० २३२ । झा० ११ .५ डक्का । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय— क्रम्यास्म । र०काल ४ । वे०काल सं० १६२६ । वे० सं० ६८३ । च भण्डार ।

१४८०. प्रासायासशास्त्र''''''। पत्र गं∘६ | घा०६5,४४ डक्का । भाषा–मंस्कृत । विषय–योगशास्त्र । र०काल ४ । ते०काल ४ | पूर्णा। वे०सं०६४६ । इध भण्डार ।

१५५२ त्वाह आवना—रङ्घू । यत्र सं० ५ । प्रा० ५ $\frac{1}{2}$ ६ ड्रज्ञ । आपा-हिन्दी । विषय-प्रध्यात्म । र० काल \times । पूर्ण । वे० सं० २४१ । छः भण्डार ।

विशेष—लिपिकार ने रह्यू कृत बारह भावना होन। लिखा है। प्रारम्भ—मुजवस्त निश्चल सदा श्रमुभाव परजाय। स्कॅदरूप जो देखिये पुदगल तरहो विभाव।।

१५८२. बारहस्रावनाः*****। पत्र सं०१ ५। प्रा०६ $\frac{2}{5}$ \times ५ इक्का। भाषा-हिन्दी । विषय-चिन्तन । र०काल \times । से०काल \times । प्रपूर्ण। वे० सं०५२६। कः मण्डार ।

१५८३. प्रतिस्ट २ । पत्र सं•१ । ले० काल × । वे० सं०६८ । सू मण्डार ।

 1 ४८४. बारहभावता—भूषरदास । पत्र सं० १। ग्रा० ६ 1 ४४ इ**छ** । भाषा–हिन्दी । विषय–चिंतन । र० काल \times । ने० सं० १२४७ । स्राभण्यार ।

विशेष---पादर्वपुरासा से उद्धूत है।

१४८४. प्रति संट २ । पत्र संट ३ । लेट काल ४ । वेट संट २५२ । सा भण्डार ।

विशेष-इसका नाम चक्रवित्त की बारह भावना है।

१४८–६ बारहभावना— नशलकिथि। पत्र सं०२। झा० ⊏≻६ इक्का। भाषा–हिन्दी। विषय–वितन। र०काल ×। ले.०काल ×। पूर्ण। वे०मं० ४३०। इक्कमण्डार।

१४८०. बोधप्रासृत—स्माचार्य कुंदकुंद् । पत्र सं०७ । मा० ११×८ हुन्न । माषा—आकृत । विद्यय-मध्यारम । र०काल 🗸 । ले०काल × । पूर्ण । वे०सं० ५३५ ।

विशेष---सस्कृत टीका भी दी हुई है।

१४८८. अववैराग्यशतकः.....। पत्र सं० १४ । मा० १०४६ इक्क । भाषा-प्राकृत । विषय-मध्यास्य । र० काल ४ । ते० काल सं० १८२४ काष्ट्रस् सुरी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४४५ । का मण्डार ।

विशेष---हिन्दी अर्थ भी दिया है।

१४८६ - भावनादार्धिशिका """। पत्र सं० २६ । आ०१० \times ४२ इक्क । भाषा-संस्कृत । विषय- प्रध्यास्म । र० काल \times । ने० काल \times । पूर्ण । वे० स० ११७ । क्क भण्डार ।

विशेष—िनम्न राठो का संग्रह ग्रीर है। यतिभावनाष्ट्रक, प्रग्रनांन्दपंचीवश्चतिका ग्रीर तस्वार्थसूत्र। प्रति स्वर्णाक्षरों में है।

१४६०. भावनाद्वार्त्तिशिकाटीकाः'''''। पत्र सं० ४६ । मा० १० \times ५ ६क्स । भावा-संस्कृत । विषय-प्रध्याक्ष । र०काल $<math>\times$ । पूर्णा । वे० सं० ५६८ । क्र प्रष्टार ।

१४६१. भावपाहुड— कुन्दकुन्दाचार्थ। पत्र सं० १। धा० १४×४६ दश्च । भाषा–प्रकृत। विषय– प्रध्यान्य। र० काल \times । ल० काल \times । पूर्वा वे० सं० ३३० । ज्ञाभण्डार।

विशेष---प्राकृत गाथाको पर संस्कृत स्लोक भी हैं।

१४६२ - सृत्युमहोत्सवः''''''। पत्र सं०१। मा०११५४ दृद्धः। भाषा—संस्कृतः। विषय्-मध्यात्वः। र०कालः \times । वे०कालः \times । पूर्णः। वे०सं०३४१। इस भण्डारः।

१४६६. मृत्युसहोत्सवभाषा—सदामुखा। पत्र स० २२ । घा० ६३-४ १ इखा। भाषा–हिन्दी । विषय– प्रध्यात्म । र० काल सं० १६१० माणाड मुदी ४ । से० काल ४ । दुर्गा । वे० सं० ८० । ख भण्डार ।

१४६४. प्रति सं०२। पत्र सं०१३। ले० काल ×। वै० सं०६०४। इन मण्डार।

१४६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल 🗴 । वे० सं० १८४ । ह्यु भण्डार ।

१४६६. प्रति सं०४। पत्र सं०११। ले० काल ४। वे० सं०१८४। छ मण्डार।

१४६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल ४ । वै० मं० १६४ । स⊾ भण्डार ।

१४६८, योगविदुप्रकरण-न्या० हरिभद्रसूरि । पत्र सं० १२ । घा॰ १०४४, रख । भाषा-संस्कृत । विषय-योग । र० काल ४ । से० काल ४ । धूर्ण । वे० सं० २६२ । ठा मण्डार ।

१४८६. योगभक्ति ''''''। पत्र सं०६। द्वा० १२४५, दंचः भाषा–प्राकृतः । विषय–योगः । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्णा वे० सं०६१४ । इक्स भण्डारः ।

१४००. योगाशास्त्र—हेसचन्द्रसृदि। यत्र सं०२४। बा०१० \times ४२ डंव। माषा—संस्कृत। विषय— सोग। र०काल \times । ले०काल \times । पूर्णीवे० सं०६६३। इस मण्डार।

१४८१. योगशास्त्रः******। पत्र सं०६४ । मा०१०४४ दृदंव । आषा-संस्कृत । विषय-योग। र०काल \times । ले० काल सं०१७०५ माबाढ़ बुदी १०। पूर्ण। वे० सं० २२६ । छा भण्डार।

विशेष-हिन्दी में धर्य दिया हुआ है।

१४८२. योगसार—योगीन्द्रदेव । पत्र सं० १२ । बा० १४४ इक्क । आराम-अपन्न शः । विषय− अभ्यास्म । र०काल ४ । ते०काल सं०१६०४ । बपूर्ण । वे०स० ६२ । इस भण्डार ।

विशेष--- मुखराम छ।बड़ा ने प्रतिलिपि की थी।

१.४०३, प्रति सं०२ । पत्र सं०१७। लं० काल सं०१६३४। वे० मं०६०६। क भण्डार ! विशेष — संस्कृत छापा सहित है।

१५८४. प्रति सं• ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल 🗴 । वे० मं० ६०७ । कृ सण्डार ।

विशेष--हिन्दी धर्य भी दिया है।

१४०४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल मं० १८१३ । ते० मं० ६१६ । कु अण्डार ।

१४८६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ३१० । कु भण्डार ।

१४०७ प्रतिसं०६ । पत्र सं०११ । ले० काल सं०१ स्वरूप चैत्र मुदी ४ । वे० सं० २ स्र । च सम्बद्धार ।

१५८८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० । ते० काल सं० १८०४ घासीज बुदी ३ । वे० सं० ३३६ । व्य अच्छार ।

१४०६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४ । ले० काल 🗵 । अपूर्ण । वे० सं० ४१६ । आ भण्डार ।

१४१०. योगसारक्षापा—नस्त्रामा । पत्र सं० ५७ । मा० १२३,४४३ इका। भाषा⊣हिन्दी । विषय— झम्मान्य । र० काल सं० ११०४ । ते० काल ४ । पूर्णी । वै० सं० ६११ । क्र भण्डार ।

विशेष---प्रागरे में ताजगञ्ज में भाषा टीका लिखी गई थी।

१४११. बोगसारमाथा—पत्नालाल चौधरी। पत्र सं० ३३ । मा० १२४७ इक्क । मावा-हिन्दी (नक)। विषय-मध्यात्म। र० काल सं० १९३२ सावन मुखी ११। ले० काल ४ । पूर्ण। वे० सं० ६०१। क जण्डार। १४१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ६१० । 🖚 मण्डार ।

१४१३. प्रति सं ३। पत्र सं० २८। ले॰ काल 🗴। वे॰ सं॰ ६१७। 🖝 मण्डार।

१५१४. योगसारभाषा — पंठ बुधजन । पत्र सं० १०। झा० ११×७३ इखा । नाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-अप्यारम । र० काल सं० १८६५ सावण सुदी २। ले० काल × । पूर्ण | वे० सं० ६०८ | कृष्णकार |

१४१४. प्रति सं०२। पत्र सं०१। ले० काल 🗴 । वै० सं० ७४१। च भण्डार।

१४१६. योगसारभाषा''''''''''' पत्र सं०६। मा०२१४६ $rac{1}{2}$ दश्च। भाषा-हिली (पद्य)। विषय-प्रस्थास्य। र०काल imes। ले०काल imes। सपूर्यो। के०सं०६१०। क्रमण्डार।

१४१७. योगसारसंब्रह्णःःः।। पत्र सं० १०। ब्रा० १०imes४६ दश्च। भाषा—संस्कृत । विषय—योग । र० काल imes। ले० काल सं० १७५० कालिक मुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ७१। ज्ञ भण्डार ।

१४१८. रूपस्थध्यानवर्षीनः****। पत्र सं० २। मा० १०५४५५ दश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-योग । र० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ६५६ । क भण्डार ।

'धर्मनायंस्तुवे धर्ममयं सद्धर्मसिद्धये ।

धीमता धर्मदातारं धर्मचक्रप्रवर्त्तकं ॥

१४१६. लिंगपाहुङ् — आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं०११ । मा० १२४६ दक्का । भाषा-प्राक्त । विषय-सम्पारम । र०काल 🗴 । ले०काल सं०१८६५ । पूर्ण । वे०सं०१०३ । छः अध्वार ।

विशेष--शील पाहुड तथा गुरावली भी है।

१४२०. प्रति सं०२। पत्र सं०२। ले० काल 🔀 । प्रपूर्ण। वे० सं०१६६। ४६ अध्वार।

१४२१. बैराग्यरातक—भर्मुहरि । पत्र सं•७ । मा०१२ \times ५ दक्का । भाषा—संस्कृत । विषय— प्रध्यात्म । र०काल \times । से०काल \times | पूर्ण । वे० सं०३३६ । च भण्यार ।

१४२२. प्रति सं०२ । पत्र सं०३८ । ले० काल सं०१८८५ सावरा बुदी ६ । वे० सं०३३७ । च भण्डार ।

विशेष-बीच में कुछ पत्र कटे हुये हैं।

१४२३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २१। ले० काल ×। वै० सं० १४३। व्य अण्डार।

१४२४. बटपाहुड (प्राञ्चत)—काचार्व कुन्दकुन्द्। पत्र सं०२ से २४। बा० १०४४३ हवा। प्रापा-प्राकृत। विषय-बप्पालः। र०काल ×। से०काल ×। सपूर्णः। वे०सं०७ । का बच्चारः।

१२२४. प्रति सं०२ । पत्र सं०५२ । ले० काल सं०१ ८५४ मंगसिर सुदी १५ । वे० सं०१ ८८ । इस भणकार ।

१४२६. प्रति सं०३ । पत्र सं०२४ ६ ले॰ काल सं०१८१७ माय बुदी ६ । वे॰ सं० ७१४ । क्र

विशेष---नरायस्मा (जयपुर) में पं • रूपमन्दजी ने प्रतिलिपि की थी।

१४२७. प्रति सं८ ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८१७ कालिक बुदी ७ । वे० सं० १६५ । इस सम्बार ।

विशेष-संस्कृत पद्यो में भी भर्य दिया है।

१४२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १ । ते० काल 🗴 । वे० सं० २८० स्व मण्डार ।

१४२६. प्रति सं०६। पत्र सं० ३४ । ले० काल × । वे॰ सं० १६७ । स्र भण्डार ।

१४६०. प्रति संट ७ । पत्र सं० ३१ से ५५ । ले० काल 🗴 । धपूर्ण । वे० सं० ७३७ । उक्त भण्डार ।

१४३% प्रति सं० ⊑ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । ब्रपूर्ण । वे० सं० ७३⊏ । ऋ भण्डार ।

१४३२. प्रति सं०६ । पत्र सं०२७ से ६४ । ले० काल 🔀 । प्रपूर्ण । बे० सं० ७३६ । क्र अण्डार ।

१४३३. प्रति संव १०। पत्र संव १४। लेव काल ×। वेव संव ७४०। क्र भण्डार ।

१४३४. प्रति सं० ११। पत्र सं० ६३। ले॰ काल 🗴। वे॰ म॰ ३५७। च भण्डार।

विशेष---प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१४२४ प्रतिसं २१ । पत्र सं०२०। ले० काल सं०१४१६ चैत्र बुदी १३। वे० सं०१८० । इय सभ्यार ।

१४३६. प्रति सं०१३। पत्र सं० २६। ले० काल ×। वे० सं० १८४६। ट भण्डार।

१४३७. प्रति सं०१४ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं०१७१४ । वे० सं०१८४७ । ट भण्डार ।

विशेष---नथनपुर मे पार्खनाथ चेंत्यालय में ब्र० सुखदेव के पठनार्थ मनोहरदास ने प्रतिलिधि की थी।

१४.दे≔. प्रति सं०१४. । पत्र सं०१ से ८३ । ते० काल ४ । सपूर्णा वे० सं०२०८५ । टअण्यार । विषेव—निस्न प्राप्तत है– दर्शन, सुत्र, चारित्र ! चारित्र प्राप्तत की ४५ गाया से सागे नहीं है। प्रति

प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है।

१४२६. षट्पाहुडटीकाः ••। पत्र सं० ४१ । झा० १२४६ इक्का । भाषा–संस्कृत । विषय–सध्यात्म । र०काल × । ते०काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६ । क्का सण्डार ।

१४४०. प्रति सं०२ । पत्र सं०४२ । से० काल 🗴 । दे० सं० ७१३ । वह अण्डार ।

१४४१. प्रतिसंट ३ । पत्र सं०४१ । ले∘काल सं०१८८० फाग्रुण सुदी ⊏ । वे॰ सं०१९६ । स्व प्रकार ।

विशेष---पं ॰ स्वरूपचन्द के पठनार्थ भावनगर में प्रतिलिपि हुई।

१४४२ प्रतिसं०४ । पत्र सं०६४ । लेश्काल सं०१८२५ ज्येष्ठ सुदी १०। वेश्सं०२५८ । स्व कच्चार । १४४२. वटपाहुढटीका—श्रुतसागर । पत्र सं० २६५ । आ० १०३ \times ५ इंग्र । आवाः—पंकात । विषय— सम्यास्य । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ७१२ । क सम्बार ।

१४४४. प्रतिसं०२ । पत्र सं०२६६ । ले॰ काल सं०१८६३ माह बुदी ६ । वे॰ सं०७४१ । उर भण्यार ।

१४४४. प्रतिसंद ३। पत्र सं०१४२। ले० काल सं०१७६५ माह बुदी १०। वै० सं०६२। छ। भण्डार।

विशेष--- नर्रासह भग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी।

ः ४४६, प्रति स०४ । पत्र सं०१११ । ले॰ काल सं०१७३६ द्वि० चैत्र सुदी १४ । वे० सं०६ । स्व विशेष—श्रीलालचन्द के पठनार्थमाभेर नगर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१४४७. प्रति सं० ४। पत्र सं० १७१। ले॰ काल सं० १७६७ श्रावण मुदी ७। वे॰ सं॰ ६८। स्म भण्यार।

विशेष—विजयराम तोतूका की धर्मपत्नी विजय धुन्नदेने पंग्नोरचनदास के लिए सन्व की प्रतिलिधि करायी थी।

१४४ म् संबोधक्य इत्स्वावनी — द्यानतराय । पत्र सं० ४ । मा• ११४५ ६ का । माया –हिन्दी । विषय – प्रभ्यात्म । र॰ काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ सं० ६६० । चः मध्यार ।

१४४६. संबोधपंचासिका—गौतसस्वासी । पत्र सं ४ । सा० ८×४३ रख । आवा-प्राकृत । विवय-प्रध्यान्य । र० काल × । ते० काल सं० १८४० वैशास सुरी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । ज् अव्यार ।

विशेष--बारापुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

१४४०. समयसार—कुन्यकुन्दाचार्ये। पत्र सं०२३। प्रा०१०४४. इक्षा भाषा–प्राइतः। विषय– षप्पातमः। र०कालः ४ । ले०कालः सं०१४६४ फापुरा मुदी १२ । पूर्णा। वृतः सं०२६३ सर्वभवितः। वे० सं०१८६१। इदामण्डारः।

विश्रेष-प्रशास्ति—संवत् १५६४ वर्षे फालुनमाते गुक्राते १२ डादशीतियौ रवीवाकरे पुनर्वशुनकाने क्षे पूलसंथे नंदिसंथे बलात्कारगरो सरस्वतीगच्छे श्रीकृत्यकृत्वाबार्यान्यये श्रष्टारकभीषप्रमन्दिदेवास्तरपट्टे म० श्री ग्रुभचन्द्र-देवास्तरपट्टे म० श्रीजनचन्द्रदेवास्तरपट्टे स्व

१.४.४१. प्रति सं०२ । पत्र सं०४० । ते० काल × । वे० सं०१ म । च्या भण्डार ।

१४४२. प्रति सं • ३। पत्र सं • २६। ले • काल ×। वै० सं • २७३। ऋ भण्डार।

विशेष — संस्कृत में पर्यायान्तर दिया हुमा है । दीवान नवनिषिराम के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिप की गर्दै थी।

१४४३. प्रति संट ४। पत्र सं० १६। ले॰ काल सं० १६४२। वे० सं० ७३४। क अण्डार।

१४.४४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४६ । से० काल 🗴 । वे० सं० ७३४ । क मण्डार ।

विशेष--गथाधों पर ही संस्कृत में अर्थ है।

१४४४. प्रति सं०६। पत्र सं० ७०। ले० काल 🗴। वे० सं० १०८। घ मण्डार।

१४,४६. प्रति संट ७ । पत्र सं० ४१ । ले॰ काल सं० १८७७ वैशास बुदी ४ । वै॰ सं॰ ३६६ । च भण्डार ।

विज्ञेष--संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं।

१४६७. अति सं० म । पत्र सं० २६ । ले॰ काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६७ । च अण्डार ।

विशेष--- दो प्रतियों का मिश्रण है। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

रेक्क्ष्र≒. प्रति संट ६ । पत्र संट ६२] लेट काल × । वेट संट ३६७ क । च भण्डार ।

विशेष--संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये है ।

१४४६. प्रति सं० १०। पत्र सं० ३ से १३१। ले॰ काल 🗴 । सपूर्ण । वे॰ सं॰ ३६६ । च भन्दार ।

विशेष-संस्कृत टीका सहित है ।

१४६०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ८४ । ले॰ काल 🗴 । सपूर्ण । वे॰ सं॰ ३६८ क । 🖷 भण्डार ।

विशेष-संस्कृत टीका सहित है।

१४६१. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० ३७० । च भण्डार ।

१४६२. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल ४ । वे० सं० ३७१ । च भण्डार ।

विशेष--संस्कृत टीका सहित है।

१४६३. प्रति सं०१४ । पत्र सं०३३ । ले० काल सं०१४६३ पीष बुदी ६ । दे० सं०२१४० । ट

मण्डार ।

१४६४. समयसारकलशा—समृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० १२२ । घा० १४×४३ दश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धम्यात्म । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १७४३ घासोज मुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १७३ । स्त्र मण्डार ।

प्रसारित—संवत् १७४३ वर्षे प्रासोज मासे युक्काको द्वितिया २ तिषौ गुरुवासरे भीमकामानगरे भीक्षेता-म्बरसाखायां श्रीमद्विज्यगच्छे प्रट्वारक भी १०५ श्री कल्याखसागरसूरिजी तत् खिष्य ऋषिराज भी अयवंतजी तत् खिष्य ऋषि लक्ष्मखेन पठनाय लिपिचक्रे शुभं भवत् ।

१५६४. प्रति सं०२। पत्र सं०१०४। ले॰ कान सं०१६६७ घाषाव सुदी ७। वे॰ सं०१३३। घर सम्बर्गः।

विशेष---महाराजाधिराज वर्षासङ्जी के वासनकाल में बामेर में प्रतिलिधि हुई थी। प्रशस्ति निम्म प्रकार है-संवत् १६६७ वर्षे प्रवाह वदि सतस्यां युक्तासरे महाराजाधिराज थी जैसिहजी प्रतापे संवादतीमध्ये निकाहतं संबी जी मोहनदासजी पठनार्थं। निकितं जोसी सालिराज। १४६६, प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । क्य प्रण्डार । १४६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० सं० २१४ । क्य प्रण्डार । १४६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० ७३६ । क्य प्रण्डार । विशेष — सरल संस्कृत में टीका दी है तथा नीचे घलोकों की टीका है । १४६६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२४ । ले० काल × । वे० सं० ७३७ । क्य प्रण्डार । १४७८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १८६७ भादना सदी ११ । वे० सं० ७३६ । क्य

भण्डार !

विशेष—जबपुर में महास्मा देवकरण ने प्रतिनिधि की थी। १४७१. प्रति सं० ⊏।पत्र सं० २३। ते० काल ×।वे० सं० ७३६। का मण्डार। विशेष—संस्कृत टीका भी शी हुई है। १४७२. प्रति सं० ६।पत्र सं० ३४। ते० काल ×।वे० सं० ७४४।का मण्डार।

विशेष--कलको पर भी संस्कृत में टिप्पण दिया है।

१४७३. प्रति सं०१०। पत्र सं०२४। ले० काल ×। वे० सं०११०। च भण्डार। १४७४. प्रति सं०११। पत्र सं०७६। ले० काल ×। बपूर्ला वे० सं०३७१। च भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है परन्तुपत्र ४६ से संस्कृत टीका नहीं है केवल स्तोक ही हैं। १४७४. प्रति सं०१२ । पत्र सं०२ से ४७ । ते० काल ४ । प्रपूर्णा । वे० सं०१७२ । चः घष्टार । १४७६. प्रति सं०१३ । पत्र सं०२६ । ते० काल सं०१७१६ कार्तिक सुदो २ । वे० सं०११ । इद

भण्डार ।

1

विशेष--उज्जैन में प्रतिलिपि हुई थी।

१५७७. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ५३ । ले० काल imes । वे० सं० ५७ । ज मण्डार । विशेष—प्रति टीका सहित है ।

१४७८ - प्रतिसं०१४ । पत्र सं०३ ६ । ले॰ काल सं०१६१४ पौष बुदो ६ । वे० सं०२०४ । उन्न भण्डार ।

विशेष---बीच के ६ पत्र नवीन लिखे हुये हैं।

१४७६. प्रति सं० १६। पत्र सं० १६। ते॰ काल ४। वै० सं० १६१४। ढ अण्डार। १४८०. प्रति सं० १७। पत्र सं० १७। ते० काल सं० १०२२। वै० सं० १६६२। ढ अण्डार। विशेष—का० नेतलीवास ने प्रतिलिपि की थी।

१४८२. समयसारटीका (कात्मरूवाति)—कामृतवम्द्राचार्वे। पत्र सं॰ १३४। बा॰ १०३४४ई इक्ष वादा-संस्कृत । विषय-प्रप्यात्म । र० काल × । ले॰ काल सं॰ १६३३ माह बुदो १ । पूर्ण । वे॰ सं॰ २ । का मध्यार । अध्दार ।

भण्डार ।

१४८≒२. प्रति सं०२ । पत्र सं०११६ । ते० काल सं०१७०३ । वे० सं०१०४ । इस मण्डार । विशेष—प्रवस्ति–संवत् १७०३ मार्गसिर कुरुशाण्ट्यां तियौ बुद्धवारे लिक्षितेयम् । १४८६३ प्रति संट ३ । पत्र सं०१०१ । ते० काल ४ । वे० सं०३ । इस मण्डार ।

१४८८८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० ते ४६ । ले० काल ४ । वै० सं० २००३ । द्या मण्डार । १४८८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल स० १७०३ बेघाल बुरी १० । वै० सं० २२६ । द्य

विशेष---प्रशस्ति :-सं० १७०३ वर्षे वंशास कृष्णादशस्या तिथी लिखितम् ।

१४८६. प्रति संट ६। पत्र सं० ३१६। ले० काल सं० १६३६। वे० स० ७४० । क भण्डार । १४८७. प्रति संट ७। पत्र सं० १३६। ले० काल सं० १६५७। वे० सं० ७४१। क भण्डार । १४८८. प्रति संट ८। पत्र सं० १०२। ले० काल सं० १७०६। वे० नं० ७४२। क भण्डार ! विशेष—भगवंत दुवे ने सिरोज ग्राम मे प्रतिसिपि की थी।

१४८८. प्रति सं⊂ ६ । पत्र सं० ५३ । ले० काल ४ । वे० सं० ७४३ । क भण्डार ।

१४६०. प्रति सं० १०। पत्र सं० १६५। ले० क.ल imes। वे० सं० ७४५। क भण्डार। विशेष—प्रति प्राचीन है।

१४६१. प्रति सं०११ । पत्र सं०१७६ । ले० काल सं०१६४ ८ बैशास सुदी ४ । वे० सं०१०६ । घ

विशेष—मकबर बादशाह के शासनकान में मानपुरा में लेखक मृति श्रेताम्बर मुर्गन जेशा ने प्रतिलिपि की की | नीचे निम्नलिखित पीस्त्रयां मीर लिखी हैं—

> 'पांडे खेतु सेठ तत्र पुत्र पाडे पारमु पांधी देहुरे। भाली सं० १६७३ तत्र पुत्र बीसाखानन्द कतहर।

बीच में कुछ पत्र लिखवाये हुये है।

१४६२ - प्रति सं०१२ । पत्र सं०१६८ । ले० काल मंग् १६१८ माथ मुदी १ । वे० सं० ७५ । ज मण्डार ।

विशेष--संगहीं प्रभालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी। ११२ मे १७० तक मीले पत्र है।

१४६६. प्रति सं०१६। पत्र सं०२४। ले॰ काल सं०१७३० संगसिर सुदी १४। दे० सं०१०६। का मण्डार।

१४६४. समयसार वृत्तिः ।। पत्र सं० ४ । मा० ५ $^2_{\chi}$ ४१ इक्कः । भाषा–प्राकृत । विषय–प्रध्यास्म । र० कालः ४ । मे० कालः ४ । प्रपूर्णः । वे० सं० १०७ । घ मध्दारः ।

रिहर्स. समयसारटीका......। पत्र सं० ८१। घा० १०६/४५ इञ्च। प्राचा—संस्कृत । विवय—प्रध्यास्म । इ० काल ४ | ले० काल ४ । प्रपुर्ण । ने० सं० ७६६ | इ. भण्डार । का भण्डार ।

NOSIS |

१४९६. समयसारनाटक—बनारसीदास । पत्र सं० ६७। बा० ६५४६ इक्ष । जाजा-हिन्दी । विषय-सम्पारम । र०काल सं० १६६३ बालोज सुदी १३। ले०काल सं० १८३८ । पूर्ण । वे० सं० ४०६ । क्य भण्यार ।

१४.६७. प्रतिसं०२ ।,पत्र सं० ७२ । ले० काला सं०१ ८६७ फाग्रुस सुदी ६ । वे० सं०४०६ । आप भण्डार ।

विशेष--मागरे में प्रतिलिपि हुई थी।

१४६६.. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । जे० काल ४ । सपूर्यों । ते० सं० १०६६ । का भण्यार । १४६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल ४ । सपूर्यो । ते० सं० ६५४ | का मण्यार । १६००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ ते ११४ । ते० काल सं० १७=६ काष्ट्रण सुदी ४ । ते० सं० ११२६

१६०१ प्रति सं०६ । पत्र सं०१ स्४ । ले० काल सं०१६३० ज्येष्ठ बुदी १५ । वे० सं० ७४६ । क भण्डार ।

विशेष—पद्यों के बीच में सदानुख कासलीवाल इस्त हिन्दी गद्य टीका भी दी हुई है। टीका रचना सं० १६१४ कॉलिक सुदी ७ है।

> १६०२. प्रति सं० ७ । पत्र स० १११ । ले० काल सं० १६४६ । वे० सं० ७४७० । स्न अण्डार । १६०३. प्रति सं० म । पत्र सं० ४ से ४६ । ले० काल × । वे० सं० २०म । स्न अण्डार । विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं ।

१६०४. प्रति सं०१ । पत्र सं०६७। ले० काल सं०१६६७ माघ मुदी ६ । वे० सं०६४ । रा अण्डार। १६०४. प्रति सं०१० । पत्र सं०३६६ । ले० काल सं०१६२० वैद्याल सुदी १ । वे० सं०६४ । स

विशोष—— प्रति गुटके के रूप में हैं। लिपि बहुत सुन्दर है। झक्षर मोटे है तथाएक पत्र में ५ लाइन झीर प्रति लाइन में १ - झक्षर हैं। पद्यों के नीचे हिन्दी धर्म भी है। विस्तृत सूचीपत्र २१ पत्रों मे है। यह ग्रन्थ तनसुक्क सोनों का है।

१६८६, प्रति संट ११ । पत्र सं० २० से १११ । ले० काल सं १७१४ । प्रपूर्श । वे० सं० ७६७ । उट प्रकार ।

विशेष-- रामगोपाल कायस्य ने प्रतिलिपि की थी।

१६०७. प्रतिसं०१२ । पत्र सं०१२२ । ले० काल सं०१६४१ चैत्र सुदी२ । वे० सं०७६ मा अरुपार अरुपार

विशेष--म्होरीलाल ने प्रतिलिपि कराई थी |

१६० . प्रति सं० १३ । पत्र सं० १०१ । ते० काल सं० १६४३ अंगसिर बुदी १३ । वे० सं० ७६६ । क भण्यार ।

```
148 ]
                                                                      ि छाध्यातम एवं योगशास्त्र
           विशेष--- लक्ष्मीनारायसा वाह्यसा ने जयनगर में प्रतिलिपि की थी।
           १६८६. प्रति संट १४। पत्र संव १६०। लेव काल संव १६७७ प्रथम सावता मुदी १३। वैव संव
७७०। क भण्डार।
           विशेष--हिन्दी गद्य में भी टीका है।
           १६१०, प्रति सं १४। पत्र सं० १०। ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० सं० ७७१ । इस मण्डार ।
           १६११. प्रति सं०१६। पत्र सं०२ से २२। ले∙ काल ×। प्रपूर्ण। वे० सं०३५७। इत भण्डार।
           १६१२. प्रति संद १७। पत्र संव ६७। लेव काल संव १७६३ मायाद सुदी १४। वैव संव ७७२।
क्ष भण्डार ।
           १६१३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८३४ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं० ६६२ । प
भण्डार ।
           विशेष---पांडे नानगराम ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि कराई।
           १६१४. प्रति सं०१६ । पत्र सं०६० । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० सं०६६५ । 🖼 भण्डार ।
           १६१४. प्रति सं०२०। पत्र सं०४१ से १३२। ले॰ काल 🗴 । अपूर्ण। वे॰ सं॰ ६६५ (क)। 🖘
भण्डार ।
           १६१६, प्रति सं ० २१ । पत्र सं ० १३ । ले० काल × । वे० सं० ६९५ (स) । च भण्डार ।
           १६१७. प्रति सं० २२ । पत्र सं० २६ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ६९५ (ग) । च भण्डार ।
           १६१८. प्रति सं०२३ । पत्र सं०४० से ५०। ले० काल सं० १७०४ ज्येष्ठ सुदी २ । ब्रपूर्ण । वे०
सं०६२ (म) । छ भण्डार ।
           १६१६. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १८३ । ले० काल सं० १७८८ प्राथाड बूदी २ । वे० सं० ३ । ज
MARIE |
           बिबोच--मिण्ड निवासी किसी कायस्य ने प्रतिलिपि की थी।
           १६२०. प्रति संट २४ । पत्र संव ४ से न१ । लेव काल × । प्रपूर्ण । वैव संव १५२१ । ट अण्डार ।
           १६२१. प्रति सं० २६ । पत्र सं० ३६ । ले॰ काल 🔀 । प्रपूर्ण । वै॰ सं० १७०६ । ट अध्हार ।
           १६२२. प्रति सं० २७ | पत्र सं० २३७ | ले० काल सं० १७४६ | वै० सं० १६०६ | ह अपहार ।
           विशेष-प्रति राजमञ्जूकत गद्य टीका सहित है।
            १६२६. प्रति सं० २८। पत्र सं० ६०। ले० काल ×। वे० सं० १८६०। ट प्रण्डार।
            १६२४. समयसारमाषा--जयचन्द् छाबङ् । पत्र सं० ४१३ । मा० १३×८ इस । भाषा-हिन्दी
(गच) । विषय-प्रध्यात्म । र० काल सं० १८६४ कार्तिक बुदी १० । ले० काल सं० १९४६ । पूर्ण । वै० सं० ७४८ ।
क भण्डार ।
```

१६२.४. प्रति सं०२। पत्र सं०४६। ले० काल 🗵 वे० सं०७४६। क्र अण्डार। १६२६. प्रति सं०३। पत्र सं०२१६। ले० काल 🗵 वे० सं०७४०। क्र सम्बार। १६२७. प्रति सं०४ । पत्र सं० ३२४ । ले० काल सं०१ ८८३ । वै० सं०७४२ । क सम्बार । विशेष—सदासलजी के पुत्र रुयोचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२ =. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१७ । ले० काल सं० १८७७ घ्रावाढ बुदी १५ । वे० सं० १११ । घ भण्डार ।

विशेष—वेनीराम ने लखनऊ में नवाब गणुरीह बहादुर के राज्य में प्रतिलिपि की । १६२६. प्रति संठ ६। पत्र संठ ३७५। लेठ काल संठ १९५२। वेठ संठ ७७३। क भण्डार।

१६३०. प्रति संट ७। पत्र सं० १०१ से ३१२। ले० काल ×। वे० सं० ६६३। च मण्डार।

१६३१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३०५ । ले० काल 🗙 । वे० सं० १४३ । जा भण्डार ।

१६३२. समयसारकलशाटीका ""। पत्र सं० २०० से ३३२। मा० ११<mark>७</mark>४४ **१ळ**। भाषा–िस्वी।.

विषय-प्रध्यातमः । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १७१५ ज्येष्ठ बुदी ७ । सपूर्णः । वे० सं० ६२ । छ्यु मण्डारः ।

विशेष—मंध मोक्ष सर्व विशुद्ध ज्ञान भीर स्याद्धाद कुलिका ये चार श्राधकार पूर्ण है। योव श्राधकार नहीं है। पहिले कलशा दिये है फिर उनके नीचे हिन्दी में अर्थ है। समयसार टीका स्लोक सं॰ ५४६५ हैं।

१६३२. समयसारकत्तशाभाषा''' "। पत्र सं० ६२। झा० १२×६ इखः। भाषा-हिन्दी (गत्त)।

विषय-अध्यातम । र० काल \times । ले० काल \times । अपूर्ण । वे० सं० ६११ । च भण्डार ।

१६३४. समयसारवचिनका......। पत्र सं० २६ | ले० काल 🗴 | वे० सं० ६६४ | च भण्डार |

१६३४. प्रति सं०२ । पत्र सं०३४ । ले० काल × । वे० सं०६६४ (क) । च भण्डार ।

१६३६. प्रति सं०३। पत्र सं०३६। ले० काल ×। वै० सं०३६६। चा भण्डार।

१६३७. समाधितन्त्र—पूज्यपाद् । पत्र सं० ४१ । मा० १२६४५ इक्का । भाषा-संस्कृत । विषय-योग शास्त्र । र० काल 🗙 | ले० काल 🗶 | पूर्ण | वे० सं० ७५६ । क्ष भण्डार ।

१६३ ज्ञ. प्रतिसं∙ २ । पत्र सं०२७ । ले० काल × । वे० सं०७ ५ ज्ञा । व्याप्त भण्डार ।

१६३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६३० बैशाल सुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० ७५६ । क मण्डार ।

१६४०. समाधितन्त्र \cdots ा पत्र सं॰ १६ । बा॰ १०imes४ ६ द्वा । भाषा—संस्कृत । विषय—योगशास्त्र । र० काल imes । ले॰ काल imes । पूर्ण । वे॰ सं॰ ३६४ । का सण्डार ।

विशेष--हिन्दी भर्य भी दिया है।

१६४१. समाधितन्त्रभाषा*****। पत्र सं० १३८ से १६२ । झा० १० χ ४५ इझ । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-पोगशास्त्र । र० काल χ । ले० काल χ । झपूर्स । वे० सं० १२६० । इस भण्डार ।

विशेष---प्रति प्राचीन है। शीच के पत्र भी नहीं हैं।

१६४५. समाधितन्त्रभाषा—मायाकचन्द्रा पत्र सँ०२६ । बा० ११८५ इक्का । भाषा-हिन्दो विषय-मोगशास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्या । वै० सँ० ४२२ । ब्रा मध्यार ।

विशेष---मूल ग्रन्थ पुज्यपाद का है ।

```
१२६ ]
```

अध्यात्म एवं योगशास्त्र

१६४२. प्रति संब २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १६४२ । वे० सं० ७५५ । क भण्डार ।

६६४४. प्रति सं०३ । पत्र सं०२ द । ले० काल 🗴 । वे० सं० ७५७ । 🗞 भण्डार ।

विशेष--हिन्दी प्रर्थ ऋषभदास निगोत्या द्वारा शुद्ध किया गया है।

१६४४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल 🗴 । वे० सं० ७६ । क भण्डार ।

१६४६. समाधितन्त्रभाषा-नाथूराम दोसी । पत्र सं० ४१४ । बा० १२_४८७ इ**ब** । जाषा-हिन्दी ।

विषय—योग। र० काल सं० १६२३ चैत्र सुदी १२ । ले० काल सं० १६३ ८ । पूर्ग। वे० सं० ७६१ । क भण्डार।

१६४७. प्रति सं०२ । पत्र सं०२१० । ले० काल 🗴 । वे० सं०७६२ । का भण्डार ।

१६४८. प्रति संट ३ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १६४३ द्वि० ज्येष्ठ बुदी १० । वे० सं० ७८० ।

क्ष भण्डार ।

१६४६. प्रति संव ४। पत्र संव १७४। लेव काल 🗙 । वेव संव ६६७। च भण्डार ।

१६४०. समाधितन्त्रभाषा--पर्वतभर्मार्थी । पत्र सं० १८७ । मा० १२५×५ **इक्र । भाषा-**गुत्रराती

लिपि हिन्दी । विषय-योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्श । वे० सं० ११३ । घ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र दुबारा लिखे गये है। सारंगपुर निवासी पं∘ उधरण ने प्रतिलिपि की थी। १६४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४⊏ । ले० काल सं० १७४१ कालिक सुदी १ । वै० सं० ११४ । घ

भण्डार ।

१६४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४१ । ते० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८१ । इन् भण्डार ।

१६४३. प्रति संc ४। पत्र संc २०१। लेट काल ×। वेट संc ७८२। इस भण्डार।

१६४४. प्रति संट ४ । पत्र संट १७४ । लेट काल संट १७७१ । वेट संट ६६८ । च भण्डार ।

विशेष-समीरपुर में पं॰ नानिगराम ने प्रतिलिपि की थी।

१६४४. प्रति सं०६। पत्र सं०२३२। ले० काल ४। प्रपूर्ण। वे० सं०१४२। छ भण्डार। १६४६. प्रति सं०७। पत्र सं०१२४। ले० काल सं०१७३४ पीच सुदी११। वे० सं०४४। ज

अक्टार ।

विश्रेष----पाण्डे ऊषोलाल काला ने केसरलाल जोशी से बहिन नाथी के पठनार्थ सीलोर में प्रतिसिधि कर-वासी थी। प्रति ग्रटका साइज है।

१६४७. प्रति संब्दापत्र संब्दा । पत्र संब्द्धाले विकास संब्द्धाले सुदी १३ । वेब संब्द्धाला । अस्वितार ।

१६५८ समाधिमरसुः । पत्र सं०४ । मा० ७१४६३ इश्वा भाषा-प्राकृत । निषय-मध्यात्म । 'र० काल x । ते० काल x । पूर्स | वै० सं० १३२१ |

१६४६. समाधिनस्याभाषा—शानतराथ । पत्र सं० ३ । झा० $- e_2^* \times Y_2^*$ इख । भाषा—हिन्दी । विषय-प्रध्यासम् । र० काल \times । ते० काल \times । पूर्ण । बे० सं० ४४२ । ख अण्डार ।

> १६६०. प्रति सं०२ । पत्र सं०४ । ले० काल × । ले० सं०७७६ । ऋप भण्डार । १६६१. प्रति सं०३ । पत्र सं०२ । ले० काल × । ते० सं०७६३ । ऋप भण्डार ।

१६६२. समाधिमस्याभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १०१ । बा० ' रिप्रैर्ध स्त्रा । माषा— क्रिन्दी। विषय-मध्यासम् । र० काल × । ले० काल सं० १६६३ । पूर्ण | वे० सं० ७६६ । क मण्डार ।

विशेष——बाबा दुलीचन्द का सामान्य परिचय दिया हुमा है । टीका बाबा दुलीचन्द की प्रेरेखा से की गई थी।

१६६३. समाधिमरस्पभाषा—सूर्चंद् । पत्र सं० ७ । प्रा० ७३,४५, े डब्रा । भाषा-हिन्दी । विषय— प्रध्यात्म । र० काल \times । ले० काल \times । वे० सं० १४७ । क्ष मण्डार ।

१६६४: समाधिमरणभाषा''''''। पत्र सं०१३ । मा०१३३×५ इक्का भाषा-हिन्दी। विषय-मध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्णा । वै० सं० ७०४ । क्व मध्यार ।

१६६४. प्रति सं०२। पत्र सं०१४। ले० काल सं०१८८३। वे० सं०१७३७। ट भण्डार।

१६६६. समाधिमरणस्वरूपभाषा''''''। पत्र सं० २५ । झा० १०६×५ इक्ष । माषा-हिन्दो । विषय-प्रध्यास्म । र० काल \times । ले० काल सं० १८७८ मंगसिर बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४३१ । क्ष मण्डार ।

१६६७. प्रति सं०२ । पत्र सं०२ ५ । ले० काल सं० १ द द ३ संगसिर बुदी ११ । वे० सं० द ६ । ग भण्डार ।

विशेष---कालुराम साह ने यह ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियों के मन्दिर में चढाया।

१६६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले॰ काल सं० १८२७ । ते॰ सं० ६९१ । च भण्डार ।

१६६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६३४ भादवा सुदी १ । वे० सं० ७०० । च भण्डार ।

१६७०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८८५ भाववा बुदी ८ । वे० सं० २३६ । ह्य भण्डार ।

१६७१. प्रतिसं०६। पत्र सं०२०। ले॰ काल सं०१८५३ पीय बुदी १। वे॰ सं०१७४। ज भव्हार।

विशेष---हरवंश लुहाड्या ने प्रतिलिपि की थी।

१६७२. समाधिशतक—पुरुषपाद् । पत्र सं० १९ । द्वा० १२×५ ६६३ । आया–सस्कृत । विवय– प्रष्यारम । र० नाल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ७६४ । इद्य अण्डार ।

१६७३. प्रति सं०२। पत्र सं०१२। ले० काल ×। वे० सं०७६। ज भण्डार।

विशेष--प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१६७४. प्रति सं०३ । पत्र सं०७ । ले०काल सं०१६२४ वैशास बुदी६ । वै० सं०७७ । ज मण्डार ।

विशेष-संगही प्रमालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१६७४. समाधिरातकटीका—प्रभावन्त्राचार्य । पत्र तं० ४२ । या० १२ ुँ-४६ रखः । भावा-संस्कृत । विवय-प्रप्यात्म । र० काल 🗴 । ते० काल सं० १६३४ आवरास सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ७६३ । क भण्डार ।

१६७६. प्रतिसंट २ । पत्र संट २० । लेट काल 🔀 । वेट ः 🔳 ७६४ । क भण्डार ।

१६७७. प्रति सं२ ३ ! पत्र सं० २४ ! ले० काल सं० १९४= फायुरा बुवी १३ ! वे० सं० ३७३ ! ख विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ! जयपुर में प्रतिलिधि हुई थी !

१६७८. प्रति स० ४। पत्र सं० ७। ले० काल 🗴। वे० सं० ३७४। घ भण्डार।

१६७६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २४। ले० काल ×। वै० सं० ७८५। क सण्डार।

१६८०. समाधिशतकटीकाः''''''। पत्र सं० १५ । झा० १२ \times ५, इक्क । भाषा-संस्कृत । विषय-स्रध्यात्म । र०काल imes । ले०काल imes । पूर्णा । वे० सं० २३४ । इस्र भण्डार ।

१६=१. संबोधपंचासिका—गौतसश्वासी । पत्र सं० १६ । झा० ६५ ४४ दख । भाषा–प्राकृत । विवय-म्रज्यात्म । र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । इक मण्डार ।

विशेष--संस्कृत में टीका भी है।

१६=२. सबोधपंचासिका—रह्यू । पत्र सं० ४ । आ० ११×६ दख । भाषा—पपभंस । र० काल × । ने० काल सं० १७१६ पौष सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २२६ । व्या मण्डार ।

विशेष---पं० बिहारीदासजी ने इसकी प्रतिलिपि करवायी थी। प्रशस्ति--

संबत् १७१६ वर्षे भिती पौस विदि ७ सुम विने महाराजाधिराज श्री जैसिहजी विजयराज्ये साह श्री हंसराज तत्पुत्र साह श्री गेपराज तत्पुत्र त्रयः त्रयम पुत्र साह राहमलजी । द्वितीय पुत्र साह श्री विलक्सी तृतीय पुत्र साह देवसी । जाति सावडा साह श्री रायमलजी का पुत्र पवित्र साह श्री विहारीदासजी लिखायते ।

दोहडा-पूरव श्रावक कौ कहे, गुएा इकवीस निवास।

सो परतिस पे स्विये, ग्रंगि विहारीदास ।।

लिखतं नहात्मा हूं गरसी पंडित पदमसीजी का चेला खरतर गच्छे वासी मीजे मोहाणात् मुकाम दिक्की मध्ये। १६⊏३. संबोधशातकः—द्यानतराय । पत्र सं० ३४। घा० ११४७ दश्च ! भाषा-हिन्दी । विषय-प्राच्यासम्। र० काल ४। ते० काल ४। पूर्णी। वै० सं० ७८६। इक भण्डार।

विशेष---प्रथम २० पत्रों में चरचा शतक भी है। प्रति दोनों घोर से जली हुई है।

१६८४. संबोधसत्तरीः''''''। पत्र सं०२ से ७। ब्राट् ११४४६ दश्चा भाषा-प्रकृत । विषय− क्रम्यास्य । र०काल ४ । ले०काल ४ । ब्रपूर्ण । वे०सं०८ । इब्र भण्डार ।

१६८४. स्थरोदयः'''''''। पत्र सं०१६। आ०१० \times ४२, दश्च । आधा-संस्कृत । विषय-योग। र०काल \times । लेक काल सं०१८२ मंगसिर सुदी १५। पूर्ण। वे० सं०२४१। स्त्र अण्डार।

१६८६. स्वानुभवदर्पस्—नाझूराम । पत्र सं० २१ । घा० १३४८६१ इझा। आया हिन्दी (गव)। विषय—सम्पारम । र० काल सं० १६४६ चैत्र सुदी ११ । ने० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १८७ । झु मण्डार ।

१६८७. हठयोगदीपिका \cdots । पत्र सं० २१। मा० ११×५५ दश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-मोग । र० काल \times । से० काल \times । संपूर्ण । वे० $\frac{1}{2}$ \times ४४४। च अण्यार ।

विषय-न्याय एवं दर्शन

7241H

१६८८. खध्यात्मकसलसार्शयह—कवि राजसङ्गा । पत्र सं० २ से १२ । **का० १०४४**} इ**ह्य ।** माषा-संस्कृत | विषय-जैन <u>वर्धतः</u> । २० काल ४ । ले० काल ४ । महूर्स | वे० सं० १९७४ । **व्यायकार** ।

१६स्ट. आष्ट्रशती—आकर्तकदेव । पत्र सं० १७ । मा० १२×४१ इक्स । आथा-संस्कृत । विश्वय∞ जैन दर्शन । र० काल × । ले० काल सं० १७१४ मंगसिर बुदी = । पूर्ल । वै० सं० २२२ । का अध्वार ।

विशेष-देवागम स्तोत्र दीका है । पं॰ सुखराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६६०. प्रति सं०२ । पत्र सं०२२ । ले० काल सं०१ व ७५४ फाग्रुन सुदी ३ । वे० सं० १५६ । उक्क भण्डार ।

१६६१. ऋष्टसहस्त्री—साचार्य विद्यानस्ति । पत्र सं॰ १६७ । मा० १०×४३ दश्च । मापा-संस्कृत, । विदय-जैनदर्शन । र० काल × । ले० काल सं० १७६१ मंगसिर सुदी ४ । पूर्ण । वे० स॰ २४४ । स्र सम्बरार ।

विशेष—पेदागम स्तोत्र टीका है। लिपि सुन्दर है। सन्तिम पत्र पीखे, निश्वा गया है। पं॰ वोसायन्त्र ने सपने पटमार्थ प्रतिनिधि कराई। प्रशस्ति—

भी भूरामल संघ मंदनमणिः, भी कुन्यकुन्यान्यये श्रीवेशीगण्यन्यपुस्तकविषा, भी वेवसंबाहस्यी संबन्धवे चंद्र रांभ मुनीदुमिते (१७६१) मार्गशीर्यमाले शुक्रपते पंबस्यां तियौ चोत्रवदेश विदुषा शुर्म पुस्तकम्बसहरूयाससम्बन् ऐन स्वकीयप्रवनार्यमामतीकृतं ।

> पुस्तकमष्ट्रसहरूया वं चोलचंद्रेण धीमता। ग्रहीतं शुद्धमावेन स्वकर्मक्षमहेतवे।।१।।

१६६२. प्रति सं० २। पत्र सं० ३६। ले० काल 🔀 । मपूर्ण । वै० सं० ४०। 🖝 मण्डार ।

१६६३. आसपरीक्या-विद्यानित्रः । पत्र सं०२४७ । बा०१२४४३ इका। साया-संस्कृतः । क्रिक्य-जैन न्याय । र०काल ४ । ते०काल सं०१६३६ कार्तिक सुरी ६ । पूर्णः । वे०सं०४६ । क्रथमारः ।

विशेष--लिपिकार पन्नालाल चौधरी । भीगने से पत्र विपक गये हैं।

१६६४. प्रति सं० २। पत्र सं० १४। ते० काल ×। वे० सं० १९। क मध्यार । विशेष-कारिका मात्र है।

१६६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल 🗴 । बै० सं० ३३ । प्रपूर्ण । च अण्डार ।

१६६६. ऋाप्तमीमांसा—समन्तभद्राचार्य। पत्र सं० त्र । द्वा० १२५४५ इक्का । भाषा–संस्कृत । विषय—जैन न्याय । र०क.ल ४ । ले० काल सं० १६३५ स्राचाद सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६० । क भण्डार ।

विशेष---इस ग्रन्थ का दूसरा नाम 'देवागमस्तोत्र सटीक श्रष्टशाती' दिया हथा है ।

१६६७. प्रति सं०२। पत्र सं०१०१। ले० काल 🗴 । वै० सं०६१ । कृ मण्डार ।

विशेष---प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१६६८ प्रति सं०३। पत्र सं०३२। ले० काल ×। वे० सं०६३। क भण्डा(।

१६६६, प्रति सं**८ ४ । पत्र सं० १८] ले० काल × । वे० सं० ६२ । क** भण्डार ।

१७००. च्यासभीसांसालंकृति—विद्यानन्दि । पत्र सं०२२६ । घा०१६४७ इखा । भाषा—संस्कृत । विद्यय—स्यास । र०काल ४ । ले०काल सं०१७६६ भादवा सदी १४ । वे०सं०१४ ।

विशेष— इसो का नाम म्रष्ट्याती माध्य तथा म्रष्टसहस्री भी है। मालपुरा प्राम में महाराजाधिराज राजसिंह और के शासनकाल में चतुर्भुज ने ग्रन्य की प्रतिकिति करवायी थी। प्रति काफी बड़ी साइज की है।

१७०१. प्रति सं २ । पत्र सं० २२४ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ८६६ । क भण्डार ।

विशेष-प्रति बड़ी साइज की तथा मुन्दर लिखी हुई है। प्रति प्रदर्शन योग्य है।

१७८२, प्रतिसं०३ । पत्र सं०१७२ । झा० १२×४ दृद्धा। ले०काल सं० १७५४ श्रावण सुरी १०। पूर्णावै० सं०७३ । इक मण्डार ।

१७०३, द्याप्तभीमांसामापा— जयचन्द् छ।वड़ा। पत्र सं० ६२। झा० १२×५ दश्च। भाषा-हिन्दी। विवय-स्थाय। र० काल सं० १८६६। से० काल १८६०। पूर्ण। वे० सं० ३६५। द्या मण्डार।

१७८४. ऋशलापपद्धति—देवसेन । पत्र सं० १० । बा० १०६४५ ६ऋ । भाषा—संस्कृत । विषय— दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १० । ऋ भण्डार ।

> विशेष—१ पृष्ठ से ४ पृष्ठ तक प्राभृतमार ४ से ६ तक सप्तभंग ग्रन्थ ग्रीर हैं। प्राभृतसार—मोह तिमिर मार्लंड स्यिजनन्दिपंच शाक्तिकदेवेनेदं कथितं।

१७०४. प्रतिसंव २ । पत्र संव ७ । लेव्काल संव २०१० फायुसाबुदी ४ । वेव संव २२७० । इस अभ्यार ।

> विकोय — मारम्भ में प्राप्ततसार तथा सतभंगी है। जयपुर में नायूलाल जज ने प्रतिलिपि की थी। १७०६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले॰ काल ४। वे॰ सं० ७६। इक मण्डार। १७०७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ११। ले॰ काल ४। वपूर्ण। वे॰ सं० ३६। च मण्डार। १७०८. प्रति सं० ४। पत्र स० १२। ले॰ काल ४। वे॰ सं० ३। च मण्डार। १७८६. प्रति सं० ६। पत्र सं० १२। ले॰ काल ४। वे॰ सं० ४। इस मण्डार। विकोय — मुलसण के माजार्थ नेमिक्फ के पठनार्थ प्रतिसिधि की गयी थी।

१७१०. प्रतिस्त ८। पत्र सं०७ से १४। ले० काल सं० १७=६ । ब्यूप्सी । वै० सं०४१४। त्र भण्डार।

१७११. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १० ले० काल 🔀 । वै० सं० १६२१ । ट भण्डार ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

१७१२. ई.स्वरवाद '' ''' । पत्र सं०३ । झा० १०×४६ इक्का । आधा—संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । पूर्ण । वे० सं०२ । इस अण्डार ।

विशेष - किसी न्याय के ग्रन्थ से उद्धृत है ।

१७२३. गर्भयडारचकः—देवनंदि । पत्र सं०३। झा०११४४६ इक्का भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शनार०काल ४ । के० काल ४ । पूर्ण | वे० सं०२२७ । यह मण्डार।

१७१४. ज्ञानदीपकः*****। पत्र सं०२४ । आ०१२imes१०१४. द्वश्च । आथा–हिन्दी । विषय-न्याय। र०काल imes। ते०काल imes। यूर्ण। वे०सं०६१ । ज्ञानकार ।

विशेष-स्वाध्याय करने योग्य ग्रन्थ हैं।

१७१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल 🗴 । बे० सं० २३ । स्क्रु भण्डार ।

१७१६, प्रति संट ३ । पत्र संट २७ से ६४ | लेट बाल संट १८५६ चैत बुदी ७ । प्रपूर्श । वेट संट १५६२ । ट भण्डार ।

विशेष--- धन्तिम पृथ्पिका निम्न प्रकार है।

इसो ज्ञान दीपक श्रुत पढो सुरुो वितधार। सब विद्या को मुल ये या विन सकल झसार।।

इति ज्ञानदीपक नामा न्यायश्रुत संपूर्ण ।

१७९७. झानदीपकश्चिष \cdots पत्र संबद्धा मान्ह $\xi_{x}^{*} \times x$ इक्का भाषा-संस्कृत । विषय-स्थाय । र• काल \times | ने॰ वाल \times । पूर्ण | वे॰ संब २७६ । क्क भण्डार ।

विशेष---प्रारम्भ-

नमामि पूर्णिविद्गू पं नित्योदितमनासूतं । सर्वाकाराभाषिभा शक्त्या लिपितमीश्वरं ।।१।। ज्ञानदीयकमादाय सृत्ति कृत्वासदासरै: । स्वरस्नेकृत संयोजयं ज्वालयेद्वतराबरै: ।।२।।

१७५≔. तर्कप्रकरस्य '' '' । पत्र सं० ४० । सा० १०४४३ इक्काः भाषा—संस्कृतः । विषय⊸याय । र० काल × । से० काल × । सपूर्यो । वे० सं० १३५≂ । क्याभण्यार ।

१७१६. तर्कदीपिकाः ''''। पत्र सं० १४ । सा० १४×४६ दक्काः आषा—संस्त्रतः । विषय—स्याय । र० काल × । ले॰ काल सं० १८३२ माह सुदां १३ । वे॰ सं० २२४ । ज सम्बार । १३२] [न्याय एवं दर्शन्

१७२८. तर्कप्रसाया '' '''' | पत्र सं० ६ से ५०। झा० ६"८४५ इक्का भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल 🗙 । ले० काल 🗴 । सपूर्ण एवं जीर्यो । वै० सं० १६४५ । द्ध भण्डार ।

१७२७. तर्कथाषा—केटाव सिश्रा पत्र सं०४४। झा०१०४४ ॄ इक्का आया—संस्कृत । विषय⊷ स्थास । र०काल × । ने०काल × । वे०सं० ७१। इस मण्डार ।

१७२२. प्रति सं०२। पत्र सं०२ से २६। ते० काल सं०१७४६ भादवा बुदी १०। वै० सं०२७३। इक्ष अच्छार।

१७२३, प्रति सं०३ । पत्र सं०६ । घा० १०४४ ३ इच्चाले० गल सं० १६६६ ज्येष्ठ बुदी २ । वे० सं०२२४ । जामण्यार ।

१७-४. तर्कभाष।प्रकाशिका-चालचन्द्र । पत्र सं॰ ३४ । मा० १०४३ इक्का। भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र०काल ४ । ले०काल ४ । वे०स०४११ । काणघ्डार ।

१७२४. तर्करहस्यदीपिका—गुरूपसमूरि । पत्र सं० १३४ । मा० १२४५ इक्कः । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल ४ । ले० काल ४ । मपूर्णा । वे० सं० २२६४ । का भण्डार ।

विशेष--- यह हरिभद्र के पड्दर्शन समुख्य की टीका है।

१७२६. तर्कसंमह— कश्मेभट्ट। पत्र सं०७। ग्रा० ११६-४६ दक्षः। भाषा-संस्कृतः। विषय-न्यायः। र०कालः 🗙 । ले०कालः 🗙 । पूर्णः। वे०सं० ६०२। 👽 भण्डारः।

१७२.७. प्रतिसं०२ । पत्र सं०४ । ले०काल सं०१६२४ भादताबुदी ५ । दे०सं०४७ । ज

भण्डार ।

हवा है।

अण्डार ।

निकोष-रावल मूलराज के शासन में लच्छीराम ने जैसलपुर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१७२८, प्रतिसंठ ३ । पत्र सं०६ । ले० काल सं०१८१२ माहसुदी ११ । वे० सं० ४८ । उत्र अध्यार ।

विशेष—पोथी माराकचन्द खुहाड्याकी है। 'लेखक विजराम पौष बुदी १३ संवत् १८१३' यह भी लिखा

रुउन्ह. प्रति संट ४ । पत्र सं० द । ले० काल सं० १७६३ चैत्र सुधी १४ । वे० सं० १७६४ । द्व प्रकार ।

विशेष—मामेर के नेमिनाथ चैरयालय में ऋहारक जगतकीर्ति के शिष्य (छात्र) दोदराज ने स्वपठनार्ध प्रतिलिंगिकी थी।

१७३८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८४१ मंगसिर बुवी ४ । वे० सं० १७६८ । उर

विशेष---चेला प्रतापसागर पठनार्थ ।

१७३१. प्रति सं० ६। पत्र सं० १। से० काल सं० १०३१ | वे० सं० १७८१ | द्व प्रच्यार । विषोय-सवार्द माथोपुर में महारक सुरेन्द्रकीति ने अपने हाच से प्रवित्तिपि की । श्वाय एवं दर्शन] [१३३

मोट—उक्त ६ प्रतियों के प्रतिरिक्त तर्कसंयह की ख्य मण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ११व, १८व१, २०४६) क्य भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७४) च्य मण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३६) ज भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४६, ४६, ३४०) ट मण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १७६६, १८व२) ग्रीर हैं।

१७३२. तर्कसंबद्धटीकाः ""|पत्र सं०६ | ब्रा० १२६/४६ इक्का | आया-संस्कृत |विषय-न्याय | र०काल × । ले०काल × |पूर्ण |वै०सं०२४२ |का अण्डार |

१७३३. तार्किकशिरोसिय्—रघुनाथ । पत्र सं० ८ । आ० ५ \times ४ इक्क । आपा—संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल \times । पूर्ण । वे० सं० १५६० । का मण्डार ।

१७२४. दशैनसार—देवसेन । पत्र संर ४ । प्रारं १०३४४३ स्त्र । माण-प्राकृत । विषय-स्त्र्यन । $\sqrt{A}\mathcal{C}$ र० काल संर ६६० माथ मुदी १० । ले० काल \times । पूर्ण । वे० संर १८४८ । स्त्र मण्डार ।

विशेष---ग्रन्थ रचना धारानगर में श्री पाद्यनाथ चैत्यालय में हुई थी।

१७३४. प्रतिसं०२ । पत्र सं०२ । ले० काल सं०१६०१ साथ सुदी ४ । वे० सं०११६ । आह् भण्डार ।

विशेष—पं० बस्तराम के शिष्य हरवंश ने नेमिनाथ चैरवालय (गोघों के मन्दिर) अवपुर में प्रतिलिधि की थी।

१७३६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं• २८२। जा मण्डार।

विशेष---प्रति संस्कृत टब्वा टीका सहित है।

१७३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ३ । व्य मण्डार ।

१७३ म. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १०५० भाववा बुदी म । वे० सं० ४ । स्म मण्डार।

विशेष--- जयपुर में पं॰ सुखरामजी के शिष्य केसरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

१७३६. दरीनसारभाषा—नयमल । पत्र सं० ८। बा० ११४५ इखा। भाषा—हिन्दी एक । विषय— ६० तेल दर्शन्। र० काल सं० १६२० प्र० श्रावरा बुदी ४। ते० काल 🗴 । पूर्णे। वे० सं० २६५। क मण्डार।

१७४०. दर्शनसारभाषा—पं० शिवजीसाला। पत्र सं० २८१। मा० ११४८ इस्त्र । भाषा–हिन्सी ।/ (गदा)। विषय–<u>र्दा</u>त्। र० काल सं० १६२३ माघुसुदी १०। ले० काल सं० १६३६। पूर्ण। वे० सं० २६४। इक्र भण्डार।

१७४२ - द्विजयचनचपेटा। पत्र सं०६ । झा० ११×५ इ.ख. । भाषा—संस्कृत । विषय—स्याय । ए० काल × । ते० काल × । वे० सं०६ २०२ । इस मध्यार ।

१७४४. प्रति सं २२ । पत्र सं०४ । ले० काल 🗴 । वे० सं०१७६६ । ट भण्डार ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

१७४४. **नवचक — देवसेन।** पत्र सं० ४४। मा० १०३%७ इ**छ। भाषा-प्राकृत। विषय-सात नयो** का क्सॉन। र० काल ×। ले० काल सं० १९४३ पौच सुरी १४। पूर्सा। वे० सं० ३३४। कु भण्डार।

वियोष—-प्रत्य का दूसरा नाम सुलवोषार्य माला पद्धति भी है। उक्त प्रति के प्रतिरिक्त क मण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ३५३, ३५४, ३५६) च छ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १७७ व १०१) प्रीर हैं।

१७४६ . नयचक्रभाषा—हैमराज । पत्र सं० ११ । बा० १२ फ्रे४४ ; इख्र । भाषा—हिन्सी (गर्व) । विदय—सात नयो का वर्सन । र० काल सं० १७२६ फाग्रुस्स सुदी १० । ले० काल सं० १६३ – । पूर्सा वि० सं० ३४७ । क. भण्डार ।

१७४७. प्रति संट २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १७२६ । वे० स० ३५८ । क भण्डार ।

विशेष—७७ पत्र मे तत्त्वार्थ सूत्र टीका के ब्रनुसार नय वर्णन है।

सीट — उक्त प्रतियों के प्रतिरिक्त क, इड, उन, भन्न भण्डारों में एक एक प्रति (वे० सं० ३४४, १८७, ६२३, ६१) कम्मलः भीर हैं।

१७४८ म्. नयचक्रभाषा \cdots । पत्र सं० १०६ । प्रा० १० $rac{1}{2} \times 4 rac{1}{2}$ इक्षा । भाषा -हिन्दी । र० वाल imes । के काल सं० १८४६ प्राचाढ बुदी ६ । पूर्ण । बै० सं० ३५६ । क भण्डार ।

१७४४. नयचकभावप्रकाशिनीटीका — निहालाचन्द् क्रमवाला । पत्र सं० १३७ । मा० १२८७, इ.स. । भाषा – हिन्दी (गय) । विषय – न्याय । र० काल सं० १८६७ । ले० काल सं० १८४४ । पूर्वा । वे० सं० ३६० । स्क्रमण्डार ।

विशेष—यह टीका कानपुर केंट में की गई थी।

१७४०. प्रति सं०२ । पत्र सं०१०४ । ले० काल 🗴 । वे० सं०३६१ । क भण्डार ।

१७४१. प्रति संट ३ । पत्र सं० २२४ । ले० काल सं० १६३८ फाग्रुसा सुदी ६ । वे० सं० ३६२ । क

भण्डार ।

विशेष-जयपुर में प्रतिसिप की गयी थी। लाग्नी में लिए ह्या छाड़ा बारि

977 र १९४२. स्यायकुमुदचन्द्रीहय—अट्ट अवलंकदेव । पत्र सं० १४। मा० १०२४४ई इश्च । आपा— संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्णी वै० सं० ५७ । का मण्डार ।

विशेष— 98 १ से ६ तक न्यायकुषुबच्छोदय ५ परिच्छेद तथा सेष प्रकों में महुनक्तंकस्यसांकानुस्मृति प्रव-वैन प्रवेश है।

१०७४ २. प्रति संट२ । पत्र सं०३ ६ | ले० काल सं० १८६४ पीच सुदी ७ | वे० सं०२ ७० । इद कण्डार ।

विशेष---सवाई राम ने प्रतिलिपि की थी।

न्याय एवं दशन] ₹ **१**३₽

१७४४. न्यायक्रमदचन्द्रिका--प्रभाचन्द्रदेव । पत्र सं० ४८८ । मा० १४६×१ श्रा । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल 🗙 । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वै० सं० ३६६ । क मण्डार । स्त्री पतः न्यनी शरून म विशेष—महाकलंक कृत न्यायकुषुद्रचन्द्रोदयुकी टीका है ।

१७४४. न्यायदीपिका-धर्मभूषगायति । पत्र सं० ३ से ८ । बा० १०३×४६ इक्क । भाषा-संस्कृत ।

विषय-न्याय । र० काल ⋉ । ले० काल ⋉ । पूर्ण । वै० सं० १२०७ । ऋ मण्डार । नोट---उक्त प्रति के प्रतिरिक्त क अण्डार में २ प्रतियां (वे॰ सं॰ ३६७, ३६८) घ एवं **स** अण्डार में एक २ प्रति

(वे० सं० ३४७, १८० , च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १८०, १८१) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५२) भीर है।

१७४६. न्यायदीधिकाभाषा—सदासस्र कासलीवाल । पत्र सं० ७१ । मा० १४×७३ इ**छ** । भाषा-हिन्दी | विषय-दर्शन । र० काल सं० १६३० । ले० काल स० १६३८ वैशाल सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । क HOELL I

१७४७. न्यायदीपिकाभाषा-संघी पश्चालाल । पत्र सं० १६० । मा० १२३×७५ इख । भाषा-हिन्दी। विषय—स्याय । र० काल सं० १६३५ । ले० काल सं० १६४१ । पूर्णा वे० सं० ३६६ । का भण्डार ।

१७४८. न्यायमाला-परमहंस परित्राजकाचार्य श्री भारती तीर्धमृति । पत्र सं० ६६ से १२७। मा० १०३×५३ दश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १६०० सावरा बुदी ५ । मपूर्ण । वे० सं० २०६३। इस भण्डार।

१७४६. स्यायशास्त्र : ... । पत्र सं० २ से ४२ । आ० १०३×४ इब । भाषा-संस्कृत । विषय-स्याय । र० काल × । ले॰ काल × । झपूर्ण । वे० सं० १९७६ । ऋ। भण्डार ।

> १७६०. प्रति सं०२। पत्र सं०४। ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं०१६४६ । ऋ भण्डार । विशेष--किसी न्याय ग्रन्थ में उदधत है।

१७६१. प्रति संट ३ । पत्र संट ३ । लेट काल 🗴 । पूर्ण । बैट संट ४४ । उत्र भण्डार ।

१७६२. प्रति संव ४। पत्र संव ३। लेव काल 🔀 । अपूर्ण। वेव संव १८६०। ट अण्डार।

१७६३. न्यायसार---माधवदेव (लदमरादेव का पुत्र) पत्र सं० २८ से ८७ । भार १०३×४३ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल सं० १७४६ । अपूर्ण । वे० सं० १३४३ । इस भण्डार ।

१७६४. स्यायसारः। पत्र सं० २४ । चा० १०×४५ इक्कः । भाषा-संस्कृतः । विषय-न्याय । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्शा। वै० सं० ६१६ । 🖼 भण्डार ।

विशेष---धागम परिच्छेद तर्कपूर्ण है।

१७६४. न्यायसिद्धांतमञ्जरी-जानकीनाथ । एव सं० १४ से ४६ । बा० ६३×३३ इस । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । र० काल 🗶 । ले० काल सं० १७७४ । मधुर्ती । वे० सं० १५७८ । 🖼 भण्डार 1

१७६६ न्यायसिद्धांतमञ्जरी—भट्टाचार्यं चृद्धामिया । पत्र सं० २८ । ग्रा० १३%६ दश्च । माषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४३ । ज मण्ड.र ।

विशेय-सटीक प्राचीन प्रति है।

१७६७. न्यायसूत्र''''''' पत्र सं० ४ । या० १०imes४ हक्क्षः । आषा—संस्कृतः । विषयimesयागः । र० कालः imes । पूर्णः । वे० सं० १०२१ । का सण्डारः ।

विशेष-हैम व्याकरण में से न्याय सम्बन्धी सुत्रों का सब्रह किया गया है। भ्राशानन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१७६म. पट्टरीति—विष्णुभट्ट। पत्र सं० २ से ६। ब्रा० १०३४३१ दश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० कात ४ । ले० काल ४ । षपुर्स | वे० सं० १२६७ । व्य भण्डार ।

विश्रोष----म्रान्तिम पुष्पिका-- इति सामर्थ्य वैषर्म्य संग्रहोऽयं कियानपि विष्युभट्टे: पट्टरीत्या बालस्युत्पत्तये इत्तः । प्रति प्राचीन है ।

१७६६. पत्रपरीचा—विद्यानंदि । पत्र सं०१४ । या० १२६/४६ इक्कः । भाषा—संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल × । सपूर्ण । वै० सं० ७८६ । इस मण्डार ।

१७७०. प्रति सं०२।पत्र सं०३६। ले० काल सं०१६७७ घासोज बुदी १।वे० सं०१६४६। ट भण्डार।

विशेष--शेरपुरा मे श्री जिन चैत्यालय में लिखमीचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१७७१, पत्रपरीक्षा—पात्र केशारी । पत्र सं० ३७ । झा० १२२४ १ इब्र । आवा—संस्कृत । विषय— न्याय । र० काल ४ । से० काल सं० १६३४ झालोत सुरी ११। पूर्ण । वै० सं० ४४७ । क पण्डार ।

१८७२, प्रति सं०२ । पत्र सं०२० । ले० काल 🔀 । वे० सं०४ ५० । का भण्डार ।

विशेष--संस्कृत टीका सहित है।

१७७२, परीज्ञासुल—सास्पिक्यनीद्। पत्र सं०४ । झा० १०४४ रखः । भाषः—संस्कृत । विषय– न्यास । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वै० सं०४३६ । क मण्डार ।

१७७४. प्रति सं०२ । पत्र सं०१ । ले॰ काल सं०१८६६ भाववा सुदी१ । वे॰ सं०२१३ । च भण्यार ।

१७७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ से १२६ । ते० काल imes। सपूर्ण । वे० सं० २१४ । च प्रण्डार । विशेष—संस्कृत टीका सहित हैं ।

१७७६. प्रति सं०४ । पत्र सं०६ । ले० काल 🗵 । वे० सं०२=१ । छः मण्डार ।

१७७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६०= । वे० सं० १४४ । ज भण्डार ।

ले**बान** काल बाब्टे ब्योम क्षिति निधि मूमि ते माद्रमासगे)

१७अ८. प्रति संट ६। पत्र संट ६। लेट काल 🗴। वेट संट १७३६। ट मण्डार।

१७७६. परीज्ञासुस्रभाषा—अध्यबन्द छात्रज्ञा । पत्र सं० २०६ । द्वा० १२४७ ई दक्ष । माया-हिन्दी (तदा) । विषय—त्याव । र० काल सं० १८६३ मायादः सुदी ४ । ते० काल सं० १८४० । पूर्यो । वे० सं० ४४१ | क अध्यार ।

१७=०. प्रति संः २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वै० सं० ४५० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर मक्षरों में हैं। एक पत्र पर हाशिया पर मुन्दर वेलें हैं। बन्य पत्रों पर हाशिया कें केवल रेकायं ही दी हुई हैं। लिपिकार ने मन्त्र अपूरा छोड़ दिया प्रतीत होता है।

१७८२. प्रति सं०३। पत्र सं०१२४। ले० काल सं०१६३० मंगसिर सुरी २। वे० सं०४६। व अण्डार।

१७६२. प्रति सं०४। पत्र सं०१२०। बा०१० $\frac{1}{4}$ \times १ $\frac{1}{4}$ इक्का ने० काल सं०**१**८७८ शावरा दुवी १। पूर्ण। के० स०५८। क्र भव्वार।

१७८३, प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१८ । ते० काल × ! वे० सं० ६३६ । च भण्डार ।

१७८८ ४ प्रति सं०६ । पत्र सं०१८ १ । ते० काल सं०१८१६ कार्तिक बुदी १४ । वै० सं०६४० । वा भण्डार ।

१७≔५. पूर्वसीसांसार्वेत्रकरण-संबद्ध—जोगाज्ञिभास्कर। पत्र सं० ६। घा० १२५ू×६६ इ**छ** । भावा–संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्वी । वै० सं० ५६ । जा भण्डार ।

१७८६, प्रमास्त्तयतत्त्वालोकालंकारटीका—रलप्रश्रसूरि । पत्र सं० २८८ । झा० १२४४३ स्**व ।** प्राया-संस्कृत । विषय-दर्शन । र०कान ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० ४६६ । क सम्बार ।

विशेष--टीका का नाम 'रत्नाकरावतारिका' है । मुलकर्त्ता वादिदेव सुरि है ।

१७८० प्रसास्मितीय"""। पत्र सं०६४ । झा०१२३,४४ डब्स् । आषा—संस्कृत । विवय-दर्शन । र∙काल र । ते> काल × । पूर्स | वे० सं०४६७ | क्र अण्डार |

१७म्म. प्रमाण्यरीज्ञा—च्या० विद्यानंदि । पत्र सं० ६६ । मा० १२४५ इच्छा । नावा—संस्कृत । विषय—स्याय । र० काल ४ । ते० काल सं० १६३४ झासोन सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । का सम्बार ।

१७८६. प्रति सं०२ । पत्र सं०४८ । ने० काल × । वे० सं०१७६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है। इति प्रमाशा परीक्षा समाप्ता। निविराणाढमासस्यपक्षेत्यामलके विभी तृतीयार्था प्रमाणास्य परोक्षा लिक्तिता सञ्जू ॥१॥

१७६०. प्रसाश्यरीचाभाषा—भागण्यन्य । पन सं० २०२ । मा० १२३४७ इक्ष । माषा—हिन्सी (नवा) । विषय—न्याय । र० कात सं० १९१३ । ले० काल सं० १९३६ । पूर्ण | वे० सं० ४९९ । कृ बच्चार ।

१७६१. प्रति संट २ । पत्र सं० २१६ । लेंब काल 🗴 । वे० सं० ५०० । क मण्डार ।

१७६२. प्रमास्यप्रमेयकलिका—नरेन्द्रसंन । यत्र सं॰ ६७ । बा॰ १२४५३ इवा । बाला-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल ४ । ते० काल सं॰ १६३व । पूर्ण । वे० सं० १०१ । क्र जयबार । े १७६३ प्रमास्त्रमीमांसा—विद्यानन्दि । पत्र मं∘४० । मा० ११२,४७३ इत्र । मापा—संस्कृत । विद्यय—स्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ता। वे०सं० ६२ । क मण्डार ।

१७६५, प्रसास्त्रीमांसा'''''' पत्र सं० ६२। झा० ११३४८ इक्का भाषा-संस्कृत । विषय-स्याय । र• काल 🗙 । से० काल सं० ११५७ श्रावण सुरी १३ । पूर्ण । वे० सं० १०२ । क भण्डार ।

१७६४. प्रसेयकमलसार्गरह—च्याचार्य प्रसाचन्द्र । पत्र म० २०६ । प्रा० १३४५ इक्क । भाग-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० कान × । ने० कान × । बपूर्ण । वे० सं० ३७६ । का भण्डार ।

विशेष---पृष्ठ १३ ८ नथा २७६ मे स्रागे नही है।

१७६5. प्रति सर्वट २ । पत्र संबद्धका । लेव काल संब १९४५ ज्येष्ठ बुदी १, । वेव संव १०३। क फंकार ।

> १८६७: प्रति संठ ६ | पत्र सं० ६६ । ले० काल × । प्रयूगाः वै० ग० ४०४ । कः मण्डारः । १७६मः, प्रति संठ ४ । पत्र सं० ११मः । ले० काल × । वे० सं० १६१७ । ट भण्डारः । विशेष—४ पत्रों तक संस्कृत टीका भी है । सर्वेज्ञ सिद्धि संगदेक्वादियों के लप्डन तल है । १७६६. प्रति संठ ४ । पत्र स० ४ से ६४ । प्रा० १०,४६ टक्काः ले० काल र । प्रयूगां । वे० सर

२१४७ | ट अण्डार । १८००, प्रतेयस्त्रमाला—ग्रानस्तरीर्थ । पत्र मं॰ १४६ । घा॰ १२×४ डच्च । भाषा-सस्त्र । विस्तान

विशेष---परीक्षामुख की टीका है।

१८८१. प्रति संट २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल सं० १८८ । ते० सं० २३७ । पत्र प्रकार । १८०२. प्रति संट ३ । पत्र सं० २३। ले० काल सं० १७६७ साथ बुदी १०। वे० स० १०१ : छ् सम्बार ।

विजेष---तक्षकपुर मे रत्नऋषि ने प्रतिलिपि की थी।

न्याय । र० काल × । ले० काल मं० १६३४ भादवा सूदी ७ । वे० मं० ४६२ । क भण्डार ।

१८८३. वालाबोधिनी— रॉकर असित । पत्र सं०१३। घा००४४ इक्का) भाषा⊸संस्कृत । (वयय-स्वास । १० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्वा। वै० सं०१३६२ । का भण्यार ।

रैप्पर्धः भावदीपिका — कुष्ण्या शर्मा । पत्र सं०११ । झा०१३imes६५ । आया — संस्कृत । विषयः — व्याद्या । र०काल imes। वे० काल imes। धपूर्णं। वे० सं०१ ६६५ । ट अध्यार ।

विशेष---सिद्धानमञ्जरी की स्याख्या वी हुई है।

६८०५. सहाविद्याधिटम्बल''''''। यज सं० १२ से १६ । आ० १०६ ४४६ उद्या। भाषा—संस्कृत । विवय-न्याय। र० काल ४। से० काल सं० १४१३ फागुरा सुदी ११। ब्रमूर्ण। वै० सं० १६८६। क्या भण्डार।

विजेष--संबद् १४४३ वर्षे फायुटा सुरी ११ सोमे सखेह बीपसानसम्बे एतत् पत्रास्ति जिनिसान सम्पूर्णीय । १८०६. युक्त्यनुशासन—काचार्ये ससन्तभन्न । पत्र सं० ६ । घा० १२६४७६ इझ । शाषा—संस्कृत । विषय—साथ । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ६०४ । क भण्यार ।

१८०७. प्रति सं०२। पत्र सं० ४। ले० काल 🗴 । ६०४ । कृ मण्डार।

१८० च. युक्त्यनुरा।भनटीका—विद्यानन्दि । पत्र सं०१६६ । बा० १२६४५ दश्च । माषा⊸संस्कृत । विदय—स्याय । र०काल ४ । ने०काल सं०१६३४ पीत्र सुरी ३ । पूर्ण । वै० सं०६०१ । क्र भण्यार ।

विशेष-सावा दुलोचन्द ने प्रतिलिपि कराई थी।

१८८६, प्रतिसंठ २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० ६०२ । का सण्डार ।

भ्यारेक, प्रति संव ३। पत्र संव १४२। लेव काल संव १६४७। वेव संव ६०३। क अण्डार।

१८(१, बोतरागस्तोत्र—स्वाट हेमचस्ट्र । पत्र सं०७ । घाठ १११,४४३ इ.स. । प्रापा-संस्कृत । निगय-दर्शन । र० काल ४ । ले० काल सं० १४१२ झामोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २४२ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—िवश्रकृट दुर्ग मे प्रतिनिधि की गर्ड वी । संवत् १४१२ वर्षे प्रामोज सुदी १२ दिने श्री विजकूट इतंद्री-तवतः ।

ंद(२. नीरडार्जिशतिका—हेबचन्द्रसूरि । यत सं० ३३ । घा० १२×४ दश्च । आषा—संस्कृत । विषय– दशन । र० कान ⋉ । ले० कान ⋋ । घरूर्ण । वै० सं० ३७७ । इस मण्डार ।

विशेष---३३ में झारे पत्र नहीं है।

श्चर्के, पहुद्शीनवार्त्ता'''' | पत्र सं० २६ । झा० च×६ इक्का | भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन | र०काल । ने०काल × । झपूर्ण । वै० सं० १४१ | ट भण्डार ।

१८१४. पट्ट्रोसिवचार.....। पत्र सं० १०। मा० १०३/४४ है इ.स.। भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र०काल ४ | सं० काल सं० १७२४ माह बुदी १०। पूर्ण । बैठ सं० ७४२ । क मण्डार ।

विशेष---सागानेर में जीवराज गोदीका ने स्वपटनार्थ प्रतिलिपि की थी। क्लोकों का हिन्दी प्रवर्थ भी दिया हम्रा है।

्रि? ४. यहर्शनेतसमुख्य — हस्भिद्रसृति । पत्र सं०७ । मा०१२३ ४५ इ.व. । विषय – दर्शन । र० काल ६ | न० काल ⋉ । पूर्ण । दे० सं०७०६ । इक अध्यार ।

१८१६. प्रति सं०२। पत्र सं०४। ले० काल × । वै० सं०६ ≈ । घ अण्डार।

विमेष--प्रति प्राचीन गुद्ध एवं संस्कृत टीका सहित है।

१=१७. प्रति संट ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल 🔀 । वे० सं० ७४३ । 🖝 भण्डार ।

१६९६. प्रतिसं० ४ । पत्र सं०६ । ले॰ काल मं०१५७० मादवासुदी २ । दे० मं० ३६६ । इस भष्टार ।

१८१६. प्रति सं०५। पत्र सं०७। लेश् काल 🗙 । वे० सं०१ ६६४। ट प्रण्डार ।

१८२०. यहब्दरीलसमुखश्चित्तान्यसम्बद्धाः नगर्यस्तरसम्बद्धाः यत्र सं० १८४ । मा० १३४८ इंच । माया-संस्कृतः । विषय-वर्णनः । ए० काल ४ । ते० काल सं० १९४७ डि॰ वायवा सुसी १३ । दुर्शः । वे० सं७ ७११ । कृ सन्दारः । १८०१. पढ्दरोतसमुख्यटीका''''''| पत्र सं∘ ६० | घा० १२३४५ १'व । भाषा-संस्कृत । विषय-वर्षात् । रु०काल × | के०काल × | पूर्ण | के० सं० ७१० । क भण्डार |

१८२२. संश्विप्तवेदान्तरास्त्रपक्षिया | पत्र सं० ४६ | घा०१२४४, इ.च. | भाषा-संस्कृत । विषय-वर्षन । १० काल ४ | ले० काल सं० १७२७ | वे० सं० १६७ | व्या मण्डार |

१८२३. समनवाबनोध—मुनि नेत्रसिंह। पत्र सं०६। घा०१०४४ इत्व। प्राथा—संस्कृत। विषय— वर्षान (सस नयों का वर्षान है)। र० काल 🗙 । से० काल सं०१७४४ । पूर्ण। दे० सं०२४६। इस अध्वार।

प्रारम्भ -- विनय-पृति-नयस्याः सर्वभावा भूविस्था।

जिनमतद्वतिगम्याः नेतेरेषा सुरम्याः ॥ उगक्कतपुरुगद्दासंस्थ्यमाना सदा मे । विदधतु सुक्रुपाते ग्रन्थ प्ररम्पमाणे ॥१॥ साददैशं प्रणस्यादौ सप्तनयावबोधनं

बं श्रुत्वा येन मार्गेश गच्छन्ति मुधियो जनाः ॥१॥

इसके पश्चात् टीका प्रारम्भ होती है । नीयते प्राप्यते धर्योऽनेनेति नयः स्तीज प्रापसे इति वचनान ा

मन्तिम- तत्पुष्यं मुनि-धर्मकर्मनिधनं मोक्षं फलं निर्मलं ।

सब्धं येन जनेन निश्वयनयात् श्री नेन्त्रिधोदितः ।। स्याद्वादमागौष्पयियो जनाः ये श्रोप्यति शास्त्रं मृनयावदोधं । मोर्च्यात चैकांतमते मृदोधं मोक्षं गमिष्यंति सुक्षेन शस्याः ।।

इति श्री सप्तनयावबोधं शास्त्रं मुनिनेतृसिहेन विरवितं शुभं वेयं ।।

१६२४. समयदार्थी पत्र सं॰ ३६। बा॰ ११×१ इंच। प्राया-संस्कृत। विषय-वेन मतानुसार सात पदार्थी का वर्धन है। से॰ काल × । र० काल × । प्रपूर्ण। वे॰ सं॰ १८८। स्र अध्यार।

१८२४. सप्तयदार्थी—िरावादित्य । पत्र सं० ४ । प्रा० २०%४४, इ.च । प्राचा—सस्कृत । विषय— देशीयक न्याय के घनुसार सस पदार्थों का वर्णन । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ११६३ । ट अपदार । विशेष—अवपुर में प्रतिसिद्धि की थी ।

१८२६. सम्मतिवर्क—मूलकर्ता सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सं० ४६ । झा० १० \times ४३ इ.च. । भाषा—संस्कृत । विषय-न्यात । र० कान \times । ते० कान \times । सपूर्ण । वे० सं० ६०३ । क्यू भण्डार ।

१८२७. सारसंप्रह—बरहराज । पत्र सं० २ से ७३ । बा० १०६४३ इंच । बाया—संस्कृत । विषय— वर्षन । १० काल ४ । ते० काल ४ । ब्रपूर्स । वे० सं० ६५१ । कः प्रच्यार ।

१७२म. सिद्धान्तमुक्ताबलिटीका—महावेषभट्ट। पत्र सं० १६ । या० ११८४३ इंगः। सावा— संस्कृतः। विषय—पाप। र० काल ४ । ते० काल सं० १७४६ । वे० सं० ११७२। द्या वण्डारः।

विशेष---जैवेतर प्रम्य है।

[twt

१८२६. स्याद्वादचूतिका.....। पत्र सं० १४। मा० ११३४६ इ'व । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-दर्धन । र० काल ४। ले० काल सं० १६३० कार्तिक बुदी ४। वे० सं० २१६। म्यू सप्टार ।

विशेष---सागवाहा नगर में बहा तेजपाल के पठनार्च लिखा गया था। समयसार के कुछ पाठों का श्रंश है।

१८२०. स्थाद्वाद्वसञ्जरी — सक्तियेग्रासूरि । पत्र मं॰ ४ । झा॰ १२३४५ इ'च । आया-संस्कृत । विषय-वर्शन । र० काल ४ । के० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० दश्य । च्या सम्बरार ।

१८८२ । प्रति सं०२ । पत्र सं० ४४ मे १०६ । ले० काल सं० १४२१ माथ सुदी ४ । सपूर्ण । दे० सं० ३६६ । का मण्डार ।

१८३२. प्रति सं०३ । पत्र सं०३ । ब्रा॰१२×५२ इ.च । ले० काल 🗴 । पूर्वा वे० सं० ८६१ । स्त्र सण्डार ।

विशेष--केवल कारिकामात्र है।

१८३६. प्रति सं ८ ४ । पत्र सं० ३० । से० कास 🗴 । अपूर्ण । वै० सं० १६० । आ अध्यार ।



विषय - पुरासा साहित्य

१८२४. काजितपुरास्य — पॅडिताचार्यकारुस्पसित्। पत्र सं०२७३। घा०१२८५३ इक्का। मध्य-सैन्स्कतः । विषय-पुरास्तः। र०कालासं०१७१६। से०कालासं०१७८६ ज्येष्ठसुदी ६। पूर्ला। वे०सं०२१८। का मध्यार।

अशस्तिः—संबद् १७५६ वर्षे सिती जेस्ट सुदी १ । जहानाबादमध्ये लिखाधितं द्वावार्य हर्यकीर्तिजी मयाराम स्वपटनार्थं ।

१८३४. प्रति सं०२। पत्र सं०१६। ले० काल 🗙 । त्रपूर्ण । वे० सं०१७। छु भण्डार ।

विशेष---१६वें वर्ज के ६४वें क्लोक तक है।

१८६६ । काजतनाथपुराग्—िवजयसिंह । पत्र सं∘ १२६ । मा० ६१×४ इख । भाषा–यप्त्र सः । विषय–युराग् । र० काल सं० १४०४ कार्तिक सुदी १४ । ले० काल सं० १४८० चैत्र मुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २२८ । का सम्बद्धार ।

विशेष--सं० १५८० में इब्राहीम लोदी के शासनकाल मे सिकन्दराबाद मे प्रतिलिपि हुई थी।

१८२७. व्यनन्तनाथपुरास्य—गुराभद्राचार्यः पत्र संग्रहः । मागः १०६८५ इञ्चः । मागः—संस्कृतः । विवय—पुरास्यः । र०कासः ४ । ते०काल संग्रहे १८६५ भादवानुसी १० । पूर्सावे० संग्रहः । अभवारः ।

विशेष--उत्तरपुराख से लिया गया है।

१८२०. श्वागामीनेसंटरालाकापुरुषवर्धानः ""। पत्र सं० ८ तं २१ । ग्रा० १२ ! ४६ ६ इत्र । माणः हिन्दी । विषय-पुरासा । र० काल × । के० काल × । कपूर्ता । वे० सं० ३८ । इत्र मण्डार ।

विभेव-एकसी उनहत्तर पुष्य पुरुषों का भी बर्सान है।

१-२६. कारिपुरास्स — जिलसेनावासं। यज्ञ सं० ४२७ । घा० १०;४४ दश्च। माया-संस्कृत । विचय-पुरासा। र०काल ४ । ले०काल सं० १५% अर्था हुस्तं। वै० सं० ६२ । का मण्यार ।

विशेव--जयपुर में पं० खुशालबन्द्र ने प्रतिलिभि को थी।

रैन्छ०: प्रति सं० २ । पत्र सं० ४०६ । ले० काल सं० १६६४ । वे० सं० १५४ । ऋ भण्डार ।

१८४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० । ते० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० २०४२ । अप अध्डार ।

१८४२. प्रति सं०३ । पत्र सं०४८१ । ते० काल सं०१६५० । ते० सं०४६ । क मण्डार ।

१८६३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४३७ । ले० काल × वे० सं० १७ । क भण्डार ।

विमोष--देहसी में सन्तलानजी की कोठी पर प्रतिशिषि हुई थी।

१८८४ - प्रति सं०४ । पत्र सं०४ ७१ । ले॰ काल सं० १६१४ वैशाख सुदी १० । वे॰ सं०६ । घ भण्डार ।

बिसेष--हाथश्स नगर मे टीकाराम ने प्रतिलिधि की थी।

° १८४४. प्रतिसार ६। पत्र सं०४६१। से० काल सं०१८६४ चैत्र सुदी ४ । वे० सं० ६४०। आह भण्डार।

विशेष—मेठ पराराम ने ब्राह्मरण स्वामलाल गौड़ से ध्यने पुत्र पौतादि के पठनार्थ प्रतिलिरि करायी। प्रयस्ति काफ़ी बड़ी है। अरतल्यक का नक्शा भी है जिस पर सं॰ १७६४ जेठ शुदी १० लिखा है। वहीं कही कठिन सबसे का संस्कृत में धर्ष भी दिया है।

१८८५ . प्रति संट ७ । पत्र सं० ४१६ । ले० काल ४ । जीर्रा। वे० सं० १४६ । व्या अण्डार ।

१८५७ प्रतिसंब्दायत्र सं•१२६। ले॰ काल सं०१६०४ मंगासर बुदी टावै॰ सं०२५२। स्मा भण्यार।

१८८५८. प्रतिसंट १ पत्र संब्ध १०। केव काल संब्ध १८०४ पीष बुदी ४। वेव संब्ध ४५१। अस्य सम्बद्धाः

विशेष--नैरगमागर ने प्रतिलिपि की थी

१८४६. प्रति सं १०। पत्र मा २०६। लेव काल 🔀 । अपूर्ण । वैव संव १८८८ । ट अण्डार ।

विशेष— उक्त प्रतियों के मितिरिक्त इस मण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०४२) का मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४,४) का भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६) चामण्डार में ३ सपूर्ण प्रतियां (वे० सं० २०, ३१, ३२.) आह भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६८६) स्प्रीर है।

१८४०. श्रादिपुरास टिप्सस्—प्रभावण्ड्रा पत्र सं०२७ । झा०११३४५ इ**का। भाषा-संस्कृतः ।** विवय-पुराखार० काल ४ । ले० काल ४ । झपुर्सावै० सं०६०१ । इप्रमण्डार ।

१८४१. प्रति सं २२। पत्र सं० ७६। ले० काल 🔀 । मपूर्ण । वै० सं० ८७० । ऋ भण्डार ।

१८४२. ऋ।दिपुराखिटिप्पस्-प्रश्नाचन्द्र । यत्र सं० ५२ से ६२ । बा० १०५४६६ इखा । भाषा-संस्कृत । विषय-पुरास्स् । र० काल × । ले० काल × । बपूर्यं । वै० सं० २१ । च भण्डार ।

विशेष-पृदादन्त कृत आदिपुराख का टिप्पख है।

१न्द्ररे. श्वादिपुराण्—सहाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ३२४ । धा० १०६४ ५ ६ छ। नावा—प्रपर्शंखः। विषय—पुराखः । र० काल × । ले० काल सं० १६३० मादवासुदी १० । पूर्णः। वे० सं० ४३ । कृत्रकारः।

१म्४४: प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६६ । हेर बाह्य 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० ३ । हा सम्बर्धर ।

विशेष — वीज में कई पत्र वृद्धि हैं। प्रति क्षेत्रधीन हैं। सङ्ग्रह व्यवहाल ने पंत्रमी ब्रह्मोझापनार्थ कर्मकान विभिन्न यह प्रत्य लिखाकर महास्था क्षेत्रचन्द्र को मेंट किया।

१मध्य- प्रति संक है। अक्राईक वेक्क्राकेर सम्बद्धाः अतिमहर्त्वतः वेक्राईक यह । कृतमहार ।

१८८४ ६. प्रति सं० प्र¦पत्र सं० २९४ | ले० काल सं० १७१६ वे० सं० २६३ | का अण्डार | विशेष——कही कही कठिन शब्दों के धर्मभी दिये हुये हैं |

१८६४ ७. क्यादिपुरासु—पंट दौलतरास । पत्र सं० ४०० । प्रा० १४८६ र इत्र । सावा-हिन्दी गया । विषय—पुरासु। र० काल सं० १८२४ । ले० काल सं० १८६३ माध सुदी ७ । पूर्णावे र सं० ४ । रामण्यार ।

विशेष-कालूराम साह ने प्रतिलिपि कराई थी।

१८५८. प्रति सं०२ । पत्र सं०७४६ । ले० काल 🗴 । वे० सं०१४६ । छ मण्डार ।

विशेष--- प्रारम्भ के तीन पत्र नवीन लिखे गये हैं।

१८४६ प्रतिसंट ३ । पत्र सं० ५०६ । ले॰ काल सं० १८२४ ग्राप्तोज बुदी ११ । वे० सं० १४२ । इक्ष अच्छार ।

विगेष—उक्त प्रतिसों के प्रतिरिक्त ग मण्डार में एक प्रति (वै० नं० ६) इक भण्डार में ४ प्रतिया (वे० सं० ६७, ६८, ६८, ७०) चा भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ११८, ११६) इत मण्डार मे एक प्रति (वे० नं० १५५) केबा फ मण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ८६, १४६) और है। ये सभी प्रतिया मपूर्ण हैं।

१८६०. उत्तरपुरास्य — गुस्सभावी । पत्र सं०४२६ । घा०१०×५ रंगः। भाषा—संस्कृतः। विषय— वरास्य । र०काल × । मे०काल × । पूर्सा। दे०सं०१३० । घा भण्डार ।

१८६१. प्रति संट २ । पत्र संट ३८३ । ले० काल स० १६०६ ग्रासीज सुदी १६ । वेठ संट ८ । घ

क्षणार। विशेष—भीच मे २ ग्रष्ट नये निवाकर रखे गये हैं। काष्टासंधी माषुगन्ययी भट्टारक श्री उदरमंत हो बर्दा प्रवास्ति सी हुई है। जहांबीर बारवाह के सालवकाल में चीहराणारायान्तर्गत सलाउपुर (सनवर) के तिजारा नामक जाक में बी साविताय चैपालय में श्री गोरा ने प्रतितिषि की थी।

१८६२, प्रति संट ३ । पत्र सं० ४४० । ले० काल सं० १६३५ बाह मुद्री ४ । वं० सं० ४६० । इस् अभ्यार ।

विशेष—संस्कृत मे संकेतार्थ दिया है।

१६६३. प्रति स्न०४। पत्र सं० ३०६। से० काल सं० १६२७। वे० सं० १। छ भण्डार।

विशेष—संवार्द जयपुरसे महाराजा कृष्यीसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई । सार हेमराज ने संतावराम के शिष्य बस्तराम को भेंट किया । कठिन सम्यों के संस्कृत में सर्च भी दिये हैं ।

१८६४. प्रतिसं० ४ । पन सं० ४४३ । मे० काल सं० १८८८ सावरा सुदी १३ । वे० सं. ६ । इद अच्छार ।

विशेष-सांगानेर में नोनदराम ने नेमिनाय चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

१८६४. प्रतिसं०६ । यत्र सं० ४८४ । ^{के} काल सं०१६६७ चैत्र बुदी ६ । वे॰ सं० ८३ । इर सम्बद्धार ।

विवीच---भट्टारक जयकीर्रंत के किया बहुमक्त्यास्त्रमागर ने प्रतिनिधि की बी ।

१८६६, ऋति सं० ७। यह सं० २१६६। हे० काल सं० १००६ कालुक्क सुनी १०। हे० सं० ३२४। का मण्डार।

विकोष---पांडे गोर्डन ने प्रतिस्तिपि की थी । सही कही कठिन कक्टो के सर्व भी दिये हुई हैं ।

१⊏5७. प्रति संट⊏ । पत्र सं० ३७२ । ले० काल सं० १७१८ बादवासुदी १२ । वे० सं० ३७०२ । स्राभणकार ।

विशेष---उक्त प्रतियों के प्रतिथिक का, का फीर का अध्वयर में एक-एक मिल (के सं० ६२४, ६७३,७७) भीर हैं। सभी प्रतिया प्रपूर्ण हैं।

१८६६ . उत्तरपुराण्टिप्पयः—प्रश्नाचन्द्र । पत्र सं० १७ । घा० १२४१) इत्र । सामा-संद्याचा विषय-पुराण् । र०कान सं० १०६० । ते०काल स० ११७१ भादवानुदी ४ । पूर्णे । वे०सं० १४४ । सा सम्बद्धः ।

विशेष---पृष्यदन्त कृत उत्तरपुरास का टिप्पसा है। वेखक प्रक्रस्ति---

श्री विक्रमादित्य संबत्सरे वर्षाशासदीस्विषक सहस्त्रे बहाशुरास्त्रविषयरशासारतेमसेदातात् परि-नाय पूनिटिप्राग्नावावनोत्र्य कृतमिर्व समुख्यिटिप्स्तं । श्रवस्तवसीतेन श्रीवद् श्रवस्त्रकारमस्त्रश्रीसंघाषार्य सत्कवि विप्येत् श्रीवन्द्रशृतिमा मिन्न दौर्वज्ञानेकृतिरुद्राज्यविवनियः श्रीनोषयेवस्य ॥ १०२ ॥

इति उत्तरपुरागाटिप्रशाकं प्रभावन्त्रावार्यीवरिवर्त्तसमान्तं ।। स्य संवत्सरैस्मिन् श्री गृपविक्रमादित्यगतास्य संवन् १५७५ वर्षे भावता युदी ५ बुद्धविन कुन्कांगानदैने मृतितान सिकंदर पुत्र कुन्तितानवाहिष्ट्रराज्यप्रवर्तमाने श्री काह्य-संवे मायुराज्ये पुत्रकरान्ते अञ्चारक त्रीयुक्तप्रदृष्टिवदाः तवान्तर्यः वैक्षवाद्यः वर्षे जन्मसी पृत्रः चौ० टोडरसल्यु इवं उत्तरपुराग्यं टीका किसारितं । युनं प्रवतु । स्वकृत्यं वर्षातं लेकक पाक्रस्तोः ।

क्ष्यद्वर प्रति स्टंट २ । क्षत्र व्हं० दश । के० काल × । के० सं० १४४ । का अध्यार ।

ंविश्रेय-—श्री वर्यासहरेवराज्ये श्रीश्रद्धारानियासिया परापरमेष्ट्रियालकोर्वाजितासलपुष्यानराक्ततासिलसल कलंकेन श्रीसत् प्रभावन्द्र पंडितेन महापुरास टिप्स्एकं सतस्यविक महत्वत्रय प्रमासं कृतमिति ।

१८७०. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वै० सं० १८७६। ट मण्डार।

१८७१: उत्तरपुराग्यभाषा— खुराालाष्यन्य । पत्र संग् ११० । मा० ११४८ रखा । माया-हिन्सी पृष्ट । विषय-पुराग्य । र० काल संग् १७६६ मंगसिर सुदी १० । ते० काल संग् १६२८ मंगसिर सुदी ४ । पूर्ण । वे० संग् छे५ । क मध्यार ।

विशेष — मबस्ति में खुशानत्रन्य का १३ पद्धों में बिस्तृत परित्रव दिवा क्रिकार्ट । बहुप्रवस्ताल ने जयपुर में प्रतिसिधि की थी।

१८७२. प्रतिसं०२ । पत्र सं०२२० से०काल सं० और ६६३ **है हिल्ला** हुनी १ ८ हे॰ सं०७ । श

विशेष---गासूरास साह ने:प्रक्रिक्षिप करहाती ही ।

^{१९५} १८०३. प्रतिसं०३ । पत्र सं०४१५ । ले० काल सं०१८६ मंगलिर सुदी १ । वे० सं०६ । च सम्बार ।

१८७४. प्रति सं० ४। पत्र सं० १७४। ते० काल सं० १८५८ कार्तिक बुदी १३। वे० सं० १८। क भण्यार।

१८७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४०४ । ले० काल सं० १८६७ । वे० सं० १३७ । मः भण्डार ।

विशेष—च भण्डार में तीन अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ४२२, ४२३, ४२४) धौर हैं।

१००६. उत्तरपुरम्कुभाषा—संघी पक्रालाल । पत्र सं० ५६३। म्रा० १२% द इक्ष । भाषा-हिन्दी गण । विषय-पुरास्त । र० काल सं० १६३० माचाइ सुदी ३ । ले० काल सं० १६४५ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० ७४ । क भण्डार ।

१८०७. प्रति संट ३ । पत्र सं० ५३५ । के० काल 🗴 । धपूर्ण। वे० सं० ६० । क्ट भण्डार। विशेष— ५३४ वांपत्र नही है। कितने ही पत्र नवीन लिखे हवे हैं।

१८७८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६६। ले० काल 🗵 । वे० सं० ६१। इह भण्डार।

विशोष——प्रारम्भ के १६७ पत्र नीलं रंग के है। यह संशोधित प्रति है। इक मण्डार में एक प्रति (वे॰ सं०७६) चामण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ५२१, ५२४) तथा छः भण्डार में एक प्रति सौर है।

१०८६. चन्द्रप्रभदुराण्—हीरालाल । पत्र सं० ३१२ मा० १३×५ इक्क । भाषा—हित्यी पद्य । विशय— पुराल् । र० काल सं० १९१३ भादवा बुदी १३। ले० काल × । पूर्ण । वे० मं० १७६ । क भण्डार ।

१८८८. जिनेन्द्रपुराया-अहारक जिनेन्द्रभूषया। पन सं० ६८०। घा० १८४६ डब्रा। भाषा-संस्कृत । विषय-पुराया। र० काल ४ । ले० काल सं० १८४२ फाग्रुया वृदी ७ । वे० सं० १४ । वर अध्यार ।

विश्रोय—जिनेन्द्रभूषस्य के प्रक्षित्य बह्महर्षसागर के भाई थे। १९५ प्रधिकार है। पुरास्प के विभिन्न विषय हैं।

१८८८ - त्रिषष्टिस्मृति — सदापंडित काराधिर । पत्र सं०२४ । प्रा०१२ \times ४, दश्च । आधा-संस्कृत । विवस-पुराख । र० काल सं०१२६२ । लंक्काल सं०१६१ सक्त सं०१६८० । पूर्ण । वे० सं०२३१ । स्थ भण्डार ।

विजेष—नलकच्छपुर में श्रीनेजिनचैरयालय में ग्रन्थ की रचनाकी गई थी। लेखक प्रशस्ति विस्तृत

् १८८२, त्रिषष्टिरासाकापुरुषयर्जनः """ पत्र संग्रेशः । साग्र १०;४४ दृश्यः । माषा-संस्कृतः । विषय-पुरासाः । रणकाल ४ । लेककाल ४ । स्रृत्सं । वेश्लं । १९१४ । ट मण्डारः ।

ं विशेष---३७ से बागे पत्र नहीं हैं।

81

१त्त्रदे. नेसिनाधपुराय्-भागचन्त्र । पत्र सं० १६६ । सा० १९६४८ रख । माना-हिन्दी सख । विवय-पुराया । र० काल सं० १६०७ साथन बुदी ४ । ते० काल 🗴 । पूर्व । वे० सं० १ । क्ष मच्चार । १ स्मर्थ, नेसिनाधपुरास्य — क्र॰ जिनदास । पत्र सं॰ २६२ । सा॰ १४×४३ इका। भाषा–संस्कृत । विषय—पुरास्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्सावै० सं०६ । इद मण्डार ।

१८८८ . निमिपुरास्स् (हरिबंश भुरास्तु) – जझाने मिदला। पत्र सं०१६०। झा०११४४ हुँ इचा भाषा – सं-कृत। विषय – पुरस्सः। र०काल ४ । ले०काल सं०१६४७ ज्येष्ठ मुदी११ । पूर्साओं से सं०१४६ । उद्य मण्डार ।

विशेष--लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

संवन् १६४७ वर्ष ज्येष्ठ सुदी ११ बुधवासरे श्री मूलसंवे नंद्यान्ताये बलात्कारमणे सरस्वतीयच्छे श्रीकुन्दकुन्दा-वार्यान्वये भट्टारक श्रीरपानित्व दंशतराष्ट्रों ४० श्रीकुभक्ट्रदेवा तराष्ट्रों ४० श्रीकिनवन्ददेवा तराष्ट्रों ४० श्रीक्रभक्ट्रदेवा द्विनीय शिष्य मंदलावार्थ श्री रम्नकीतिदेवा तत्रिक्ष्य मंदलावार्य श्रीवदमीवन्द्रदेवा तराष्ट्रों मंदलावार्थ श्रीवदमीविदेवा दिनीयशिष्य मंदलावार्थ श्री रमावन्द तदामाने सगरवालान्वये प्रिणियांगे ने साह जीएण तत्य भाषी ठाष्ट्रपति तथे पुत्रा-राव । प्रथम पुत्र सा. नेता तथ्य भार्या श्रामाही । सा. श्रीएण द्वितीय पुत्र सा. जेता तस्य भार्या वाधाही तथी पुत्रा- वव प्रथम पुत्र सा. देददाल तस्य भार्या माताही तथी: पुत्रात्रयः प्रथमपुत्र वि० सिरवंत द्वितीयपुत्र वि० माना स्त्रतियुत्र वि० चतुरा । द्वितीयपुत्र नाह त्या तस्य भार्या माताही तथी: पुत्रात्रयः प्रथमपुत्र वि० सिरवंत द्वितीयपुत्र वि० भारा स्त्रतियुत्र सा. मानु तस्य भार्या नाम्यति तथो पुत्री द्वी प्रवस पुत्र सा. वीगा तस्य भार्या मात्र । तथो पुत्र वि० धर्मदास द्वि० पुत्र व० मोहनदास । सा. श्रीणातस्य नेतुप्रयुत्र सा. मह्यात तस्यभार्या उदाही सुतीयपुत्र सा. टमा तस्य भार्या मिरावस्त्री मरा त्रीएण तस्य पंत्रमपुत्र सा. साधु तस्यभार्या होसाही तथोपुत्र सा. टमा स्वरत्य स्वर्य सार्य मपुत्रनेतं सार्य स्वरिवयुप्तास्य क्षात्रस्य स्वर्य सार्य सार्य स्वर्य सार्य सार्य स्वरत्य स्वर्य सा. साधु तस्य सार्य होसाही तथोपुत्र सा. टमा तस्य भार्या मिरवस्त्रही । मर्युगेनंद सार्य इतिवयुप्त सार्य साम्य स्वरत्य होसाही तस्यस्त्रम्य विश्वस्य विश्वस्त सार्य सार्य मन्दिका चारित श्री योग्य षटापितं ज्ञानवराणीकमंक्यवितिनंतः

१८८६ प्रति सं०२। पत्र सं०१२७। ले० काल सं०१६६३ ग्रासोन सुदी ३।वे० सं०३८७। इत भण्यार।

विशेष---लेखक प्रशस्ति वाला पत्र विलकुल फटा हुमा है।

१८८७ प्रतिसंद ३ । पत्र संद १४७ । लेटकाल संद १६४६ माघ बुदी १ । वेट संद १८६ । अप अध्यार ।

विशेष—-यह प्रति सम्बायती (सामेर) में महाराजा मानसिंह के शासनकाल में नैमिनाथ चैद्धालय से तिली गई थी। प्रशस्ति प्रपूर्ण है।

१८६६ प्रतिस्ट ४। पत्र सं०१८६ । लेक्सल सं०१८३४ पीच बुदी १२। वेक्स०३१। ह्या सन्धार।

विशेष — इसके मिनिरिक्त का सक्यार में एक प्रति (वै० सं॰ २३६) ह्य सक्यार में एक प्रति (वै० सं॰ १२) तथा का सक्यार में एक प्रति (वै० सं॰ ११३) सौर हैं।

सम्बार ।

. १८८६ वदापुरास् — रिविवेहाचार्य । वन सं० ८०६ । मा० ११४५ इक्षः । माया-संस्कृतः विवय-पुरास्त । र० काल ४ । ले० काल सं० १७०८ वैत सुवी ६ । पूर्ता । वे० सं० ६३ । व्य मण्डार ।

> वितीय—टोटा प्राप्त निवासी साह कॉव्यभी ने प्रतिसिधि कराकर पं० श्री हवं नस्याए को भेट किया। १८८०. प्रति सं०२। पत्र सं०१६४। ले० काल सं०१८८२ प्राप्तीय बुदी १। वे० सं०५२। ग

विशेष---जैतराम साह ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवाई थी।

१८६१. प्रति सं०३ । पत्र मं० ४४४ । ते० काल मं० १८८४ आदवा बुदी २२ । वै० मं० ४२२ ' इक्कामचार ।

ं १८६२ प्रति संदर्भापत्र संदर्भ । लेक काल संदर्भ स्वरूप मुदी १०४ केण्में १८२ । छ।

विशेष--- चौधरियों के चैत्यालय में पं॰ गोरधनदास ने प्रतिलिपि की थी।

् १८८६ ५ प्रति संदर्भ। पत्र संदर्भाते काल संदर्श सोज मुदी । वेट संदर्श स्त्र । स्वर्भार ।

. विशेष--- प्रश्नवाल जातीय विसी श्रायक ने प्रतिलिपि को थी।

्र समके प्रतिरिक्त का भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ४२६) तथा व भण्डार में दो प्रतिया (वे० सं० ४२३, ४९४) और है।

१८६४. **पोगुप्राय (रामपुराय) — अष्टारक सोमसे**न । पत्र सं० १२० । मा० ६३८४ इक्ष । माथा— अ**श्वास १ विषय-मुराया । र० काम सक सं० १६५६ आवरा सुरी १८। ले० काम मं० १८६८ प्रायाद मुरी १८। पूर्वी । वे० सं० २४ । का भण्डार ।**

े रैस्स्टेश-प्रशिक्षिण २ । पण मंग् ३५३ । जेन्याल संग्रह्म प्रवेष्ठ बुदी ऽऽ । वेन्यान ४२५ । क्र

विक्रोच—योगो महेन्द्रकीर्तिके प्रसाद से यह रचना की गई ऐसा स्वयं लेखक ने सिन्धा है। लेखक प्रशस्ति कटी हुँहैं है।

१८६६ प्रति सं० के। पत्र सं० २००। ले॰ काल सं० १८३६ बैशाल सुद्धी ११। वं० सं० ८। इस् विभारः।

> विशेष---धावार्यरत्वकीलिके विषय नेमिनाव ने सांगनिर में प्रतिक्रिये को थी। १८८७. प्रति संc ४ । पत्र सं- २१७ । ने॰ काल सं॰ १७६४ धाक्षांत्र बुदी १३ । ने॰ सं॰ ३१२ ।

विशेष-सामानर में गोबों के मन्दिर में प्रतिनिध हुई।

. . . . 4

ि १४६

१८६८. प्रति सं० ४। पत्र सं० २१७। ले॰ काल सं० १७६४ मासीज बुदी १३। वै॰ सं॰ ३१२। व्य अण्डार।

विशेष--सांगानेर में गोधों के मन्दिर में मदूराम ने प्रतिलिपि की थी।

इसके मतिरिक्त क भण्डार में २ प्रतियां (वे॰ सं॰ ४२४, ४२६) व्य भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ २०४) तथा छ भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ४६) भीर हैं।

१८६६. पदापुरास्म — अरुधर्मकीितः । पत्र सं०२०७ । घा० १२×६६ दश्च । आवा-संस्कृतः । विवय-पुरस्सः । र०काल सं०१६३५ कार्तिक सुदी १३ । वै०सं०३ । ह्यः प्रण्यारः ।

विशेष--जीवनराम ने रामगढ नगर मे प्रतिलिपि की थी।

१६००. पद्मपुरासा(उत्तरस्वस्ड)....... | पत्र सं० १७६ । झा० १४४ दृद्धा। भाषा–संस्कृत । विवय–पुरासार काल × । ले० काल × । धपूर्णी वै० सं० १६२३ । ट भण्डार ।

विशेष---वैद्याव पद्मपुरामा है। बीचके कुछ पत्र चूहोंने काट दिये हैं। प्रन्त में श्रीकृष्ण का वर्णन भी है।

१६०१. पदापुरास्यभाषा—पंठदौलतराम । पत्र सं∘ ४६६ । मा० १४४७ इच्चा आया-हिन्दी गण । र० काल सं० १⊏२३ माघ सदी १ । ले० काल सं० १६१ स । पूर्स | वे० सं० २२०४ । इस अध्वार |

विशेष---महाराजा रार्मासह के वासनकाल में पं विविद्यानिकी के समय में मोतीसाल गोदीका के पुत्र श्री प्रमुदक्द ने हीरालास कासलीयाल से प्रतिलिपि कराकर पाटीदी के मन्दिर में चढाया।

१६०२. प्रति सं०२। पत्र सं० ४४१। ले॰ काल सं० १८८२ खासीज सुवी ६ । वै० सं० ४४। श भण्डार।

विशेष--जैतराम साह ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवायी थी ।

१६०३, प्रति सं० ३। पत्र सं० ४५१। ले० काल सं० १८६७। वे० सं० ४२७। इस अध्दार।

विशेष—इन प्रतियों के प्रतिरिक्त का मण्डार में दो प्रतियां (वै० सं० ४१०, २२०३) का प्रौर ता मण्डार में एक एक प्रति (वै० सं० ४२४, ५३) चा मण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० ५५, ५६) चा स्वीर जा मण्डार में दो तथा एक प्रति (वै० सं० ६२३, ६२४, व २५२) तथा का मण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० १६, ५८) स्वीर हैं।

१६०४. पद्मपुरासुभाषा— खुराालुचन्द् । पत्र सं० २०६ । झा० १०४४ दक्ष । आया—हिन्दी पत्र । विषय-पुरासु । र० काल सं० १७६३ । ले० काल 🗴 । झपुर्स । वे० सं० १०६७ । द्वा अध्यार ।

हैं १८०४. प्रति सं०२। पत्र सं०२०६ से २१७। ले॰ काल सं०१८४५ सावरण बुदी ४८। वै॰ सं० ७८२। का सण्डार।

> विशेष----प्रत्य की प्रतिक्षिपि महाराजा प्रतायसिंह के शासनकाल में हुई थी। इसी मण्डार में (वे॰ सं॰ ३४१) पर एक प्रपूर्ण प्रति और है।

१६०६ - पायडवपुराएा— अङ्गारक शुभचन्द्र । तत्र सं०१७३ । झा०११४५ इ.झा । आपा—संस्ता । विवय—पुराएा । र० काल सं०१६० च । ते० काल सं०१७२१ फाग्रुल बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं०६२ । इय भण्डार । विवय—प्रत्य की रचना श्री साकवाटपुर में हुई थी । पत्र १३५ ०या १३७ बाद में सं०१ च ६ में पुन.

सिसी गये हैं।

भण्डार ।

१६०७. प्रति सं०२ । पत्र सं०३०० । ले० काल मं०१८२६ । वैः मं०४६५ । कः मण्डार । विशेष— प्रत्य बहामीपाल की प्रेरणा से लिखा गया था। महावन्द्र ने इसका संशोधन किया। १६८८. प्रति सं०३ । पत्र सं०२० । ले० काल सं०१६१३ चैत्र बुटी १० । वै० सं०४४४ । क

विशेष-एक प्रति ट भण्डार में (वे॰ सं॰ २०६०) और है।

१६०६. पायडवपुरासा— अरु श्रीभूषसा । पत्र सं० २४६ । घा० १२४५ इ.इ. । भागा—संस्कृत । विषय—पुरासा । र० काल सं० १६५० । ले० काल सं० १६०० मंगसिर बुटी ६ । पूर्ण । वे० मं० २३७ । इस मण्डार । विशेष—लेखक प्रकारित विस्तृत हैं । पत्र बटकसो है ।

^{हे} हरे**० पांगडबपुराण्—यराःकीत्ति ।** पत्र तं∘ ३४० । मा० र०१×४३ डक्का। भाषा–प्रकाश श विषय—पुराख् । र०काल × । ते०काल × । प्रपूर्ण । वे० तं० १६ । का मण्डार ।

्रे**६१२. पायडलपुराग्रभाषा — जुलाकी दास**ापत्र सं०१४६ । द्वा०१३८६ ३ दयः , भाषा-जिल्लाः पद्या | विषय-पुराग्र**ा र० काल सं०१७४**४ | ले० काल सं०१६२ | दूर्गा विकसं०४६२ । द्वा सम्बद्धार ।

विशेष-- मन्तिम १ पत्रों में बाईस परीयह वर्णन भाषा में है।

क्स भण्डार में इसकी एक अपूर्ण प्रति (वे॰ सं० १११६) और है।

१६१२. प्रति सं० २ | पत्र सं० १६२ | ले० काल सं० १८८६ | वे० मं० ४५ । रा भण्यार ।

विशेष-कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी।

१९१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०० । लेल काल 🗴 । वे० सं० ४४६ । क्र भण्डार ।

१६१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४६ । ले० काल × । वे० सं० ४४७ । कु भण्डार ।

. १६१४. प्रति सं ० ४ । पत्र सं० १४७ । ले० काल सं० १८६० मंगसिर बुदी १० । तर सं० ६२६ ।

१६१६ वारखंबपुराण्—यंत्रालाल चीघरी। पत्र सं॰ २२२। प्रा॰ १३८८ इसः। भाषा-हिन्ती सकः। विषय-पुराण्। रे॰ काल सं० १६७३ वैद्याल बुदी २। से॰ काल सं० १६३७ योग बुदी १२। पूर्णा १३० सं० ५६३ छ संबद्धर

रैं ६९७. प्रति सं०२ । पत्र सं०३ २०। ले॰ काल सं०१६४६ कार्तिक मुद्दो १४। के॰ मं०४६८। इ. मच्चार ।

विशेष---रामरत्न वाराश्चर् ने प्रतिलिपि की थी ।
अभवार में इसकी एक प्रति (वे॰ सं॰ ४४०) और है।

१६१न. पुराग्यासार—श्रीचन्द्रमुनि । पत्र सं० १०० । द्या• १०-६×५ इवा । सावा-चंत्कतः । विवय-पुराग्य । र० काल सं० १०७७ । ने० काल सं० १६०६ स्रावाद सुरी १३ । दूर्ण । वे० सं० २३६ । इस मण्यार ।

विशेष--श्रामेर (श्राम्रगढ़) के राजा भारामल के शासनकाल में प्रतिनिधि हुई भी ।

१६१६. प्रति सं८२ । पत्र सं०६६ । ले० काल सं०१४४३ फाल्गुल नुदी १०। वै० पं०४७१ । उर्फ भण्यार ।

१६२०. पुराग्मसरसंबद्ध—अ० सकलकी शि । पत्र सं० १४६। आ० १२×४३ इका। सावा-यंस्कृत । विषय-पुराग् । र० काल 🔀 ते क काल सं० १८५६ संगतिर बुदो २ । पुर्ला । वे० सं० ४६२ । क सम्बार ।

१६२१. बालपदापुरास्स —पं प्रभावाल वाकलीवाल । पत्र सं०२०३ । मा०व×४३ दवा । ध्रावा-हिन्दी पत्र । विषय-पुरास्स । र०काल × । ले०काल सं० १६०६ वैत्र सुदी १४ । पूर्स । वे० सं० ११३६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--लिपि बहुत सुन्दर है। कलकते में रामप्रधीन (रामादीन) ने प्रतिलिपि की थी।

१६२२. आगवत द्वार्शम् स्कंध टीका $\cdots \cdots$ । पत्र सं० ३१ । घा० १४%७३ इक्ष । भाषा-संस्कृत । 4व्यय-पुराता । र० काल \times । ते० काल \times । धपूर्ण । दे० मै० २१७६ । ट भण्डार ।

त्रिशेष---पश्रो के बीच में मूल तथा ऊपर नीचे टीका दी हुई है।

१६२३. भोगवतसहापुरास्स् (सप्तसन्तर्कष्ठ)****** । पत्र सं० ६७ । बा० १४३८७ इक्का । भाषा— संस्कृत । विवय-पुरास्स् । र०काल ४ । ले० काल ४ । सूर्ण । वे० सं० २०६६ । ह घण्डार ।

१६२४. प्रति सं०२ (षष्टम स्कंघ)''''''| पत्र मं०६२। ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । बै० सं०२०२६ । ज्ञामण्डार ।

विशेष——बीच के कई पत्र नहीं हैं।

१६२४. प्रति सं० ३। (पक्कम स्कंघ) ··· ···। पत्र सं० ६३। ले० काल सं० १६३० चैत्र सुरी १२। वै० सं० २०६०। ट अण्डार।

विशेष---चौबे सरूपराम ने प्रतिनिधि की थी।

१६२६. प्रति स०४ (ब्राष्ट्रम स्कंघ)......। पत्र सं∘११ से ४७ । ले० काल ×ा बपूर्या। दे० सं∘ २०६१ । ट भण्डार ।

१६२७. प्रति सं० ४ (तृतीय स्कंघ)। पत्र सं॰ ६७ । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वै० सं॰ २०६२ । ट मध्यार ।

विशेष--६७ से भागे पत्र नहीं हैं।

वै० सं० २८८ से २०६२ तक ये सभी स्केष श्रीधर स्वामी कृत संस्कृत होका सहित हैं।

१६२म. आगवतपुराखाः....ं पत्र सं० १४ से ६६ । आ ० १०३×६ ६ छा। चार्चा-संस्कृतः। विस्थिय-ंर्युरोत्ता । रःकालं×। से० काल ×। अर्थूर्ली। वे० सं० ११०६ । ट अंथ्यारं ।

विशेष---६०वां पत्र नहीं है।

१६२६. प्रति सं०२ । पत्र सं०१६ । ले० काल 🗴 । वे० मं० २११३ । ट भण्डार ।

विशेष--द्वितीय स्कंध के तृतीय प्रध्याय तक की टीका पूर्ण है।

१६६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० से १०५ । ले∙ काल × । प्रपूर्ण । वे॰ मं॰ २१७२ । ट भण्डार । विशेष— नुतीय स्कंध है ।

१६६१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० मं० २१७६ । ट भण्डार । विशेष—प्रपम स्कंष के द्वितीय प्रध्याय तक है ।

१६३२. सिक्षनाथपुरायः — सकलकी चिं। पत्र सं०४२। मा०१२४४ डब्रा। माया–संस्कृत। विषय– चरितार०काल ४.। ने०काल १६६६। वे० सं०२०६। इर मण्डार।

विशेष---इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ मं॰ ८३६) ग्रीर है।

१६३३. प्रतिसंट२ । पत्र संट३७ । ले**०** काल संट १७२० माह सुदी १४ । वे० सन् ४.७१ । क

भण्डार |

१६३५. प्रति सं०३ । पत्र सं०४७ । ने० काल सं०१६६३ मंगमिर बुदी ६ । तै० म० ४७२ ।

विशेष-- उदयवन्द सुहाहिया ने प्रतिलिपि करके दीवारण श्रमरचन्दजी के मन्दिर में रखी।

१६६३ ४. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८१० फाग्रुगा मुदी ३ वि० स० १३६ । स्व

१६३६. प्रति सं०४ । पत्र सं०४ ६ । ले० काल सं० १८८१ सावसः मृदी ८ । वे० सं०१३६ । स्व

१६३७. प्रति सं०६। पत्र सं०४४ । ले० काल मं०१८६१ मावशा मुद्दी ८। त्रे० मं० ४८७ । **इ**स्

भण्डार । भण्डार ।

भक्डार ।

विशेष--जयपुर में शिवलाल गोध। ने प्रतिलिपि करवाई थी।

१६३ म. प्रतिसं०७ । पत्र सं०३१ । ले० काल सं०१ ८४६ । वे० सं०१२ । छ अण्डार ।

१६३६. प्रतिसं०६ । पन सं०३२ । ले०काल सं०१७८६ चैत्र सुदी ३ । वे० मं० २१० । 新

भण्डार ।

१६४०. प्रति सं०६ । पत्र सं०४०। ले०काल सं०१८६१ भावता बुदी ४। वे०सं०१५२ । इप अच्छार ।

विशेष--शिवलाल साहू ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी।

१६५१. सक्किताअपुरायुआया—सेवारास पाटनी । पत्र सं० ३६ । झा०१२८७३ दश्च । भाषा— हिन्दी नचा। विवय—परित । र० काल × । ते० काल × । सपूर्ण । वे० सं० १८६ । क्य अप्यार ।

१९४२. सहापुरायु (संसित)***** । पत्र सं• १७ । घा० ११×४३ रख । माथा—संस्कृत । विषय— पुराया । र० काल × । के० काल × । बपूर्ण । वै० सं• १०६ । क मण्डार । १६४३, सहापुराग् —िजिनसेनाचार्य । पत्र सं० ७०४ । घा० १४% दश्च । जाता-संस्कृत । विषय-पुराग । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ७७ ।

विशेष—ललितकीति कृत टीका सहित है।

घ भण्डार में एक ब्रपूर्ण प्रति (वे॰ सं॰ ७८) भौर है।

१६५४: सहायुरास्य — महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं∘ ११४ । बा० १३,४४३ दश्च । आया—बप्पन्नंत । विषय—पुरास्। र० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वै० सं० १०१ । इस सम्बार ।

विशेष-बीच के कुछ पत्र जीर्ग होगये हैं।

१६४४. मार्करडेयपुरासाः ''''' । वन सं० २२। मा० ९४३ इक्का । भावा-संस्कृत । विषय-पुरासा । र० काल ४ । ले० काल सं० १८२६ कार्तिक बुदी ३ । पूर्स । वै० सं० २७३ । क्का मण्डार ।

विशेष--- ज भण्डार में इसकी दो प्रतियां (वै० सं० २३३, २४६,) झौर हैं।

१६४६. मुनिसुन्नतपुराया— महाचारी कृष्यादासा । पत्र सं० १०४ । सा० १२४६ इक्षा । भाषा— संस्कृत । विषय-पुराया । र० काल सं० १६६१ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल सं० १८६१ । पूर्ण । वे० सं० ५७८ । क अण्डार ।

१६४७. प्रति सं०२। पत्र सं०१२७। ले० काल 🗙 । वे० सं०७ । 😅 भण्डार ।

विशेष--कवि का पूर्ण परिचय दिया हुमा है।

१६४८. मुस्सिम्बतपुराग् —इन्द्रजीत । पत्र सं० ३२। मा० १२४६ दख । भाषा-हिन्दी पत्य । विश्वय-पुराग् । र० काल सं० १६४५ पीच बुदी २। ने० काल सं० १६४७ प्राथात बुदी १२। वे० सं० ४७५ । का अण्डार । विशेष—रतनलाल ने वटेप्पर में प्रतिलिपि की थी ।

१६४६. सिंगपुरागु'''''''। पत्र सं० १३। घा॰ ६×४५ इक्षा । माथा—संस्कृत । विषय—जैनेतर पुरास्त । र॰ काल \times । पूर्ण । वै॰ कं० २४७ । ज मण्डार ।

१६४०. वर्द्धमानपुराण्—सकलकीर्ति । पत्र सं॰ १४१ । मा॰ १०६४५ **१ वा । वाया**—संस्कृत । विषय—पुराण् । र॰ काल imes । ते॰ काल सं॰ १८७७ स्नासोज युदो ६ । पूर्णः । वे॰ सं॰ १० । क्या वण्यार ।

विशेष--अयपुर में महात्मा शंभुराम ने प्रतिनिपि की थी।

१६४१. प्रति सं०२। पत्र सं०१३०। ले० काल १८७१। वे० सं०६४६। क सण्डार।

१६४२. प्रतिसंव ३। पत्र संव ६२। लेक्काल संव १८६८ सावन सुदी ३। वेक संव ३२८। ख नम्बार।

> १६४६. प्रति सं० ४। पन सं० ११६। ते० काल सं० १२६२। वे० सं० ४। क्य कच्चार । विशेष—सांपानेर में पं० गोनवराम ने प्रतितिषि की वी । १६४४. प्रति सं० ४। पम सं० १४६। ते० काल सं० १८४६। वे० सं० १। क्य कचार ।.

१३३३] [पुराण साहित्य

१६.४.४. प्रति सं०६। पत्र सं०१४१। लेश्काल सं०१७८५ कार्तिक बुदी४। तेश्सं०१४। ज मध्यार।

१६४६. प्रति सं २ ७। पत्र सं० ११६। ले० काल 🗴 । वे० सं० ४६३। व्य अण्डार ।

विशेष---धा॰ गुभवनद्रजी, बोखबन्दजी, रायचन्दजी की पुस्तक है। ऐसा लिखा है।

१६.४७. प्रति सं० = । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १६३१ । वे० सं० १६६१ । ट अण्डार । विशेष— सवाई माभोपुर में अ० सरेन्ट्रकीलि ने श्राविनाच चैत्यालय ने लिखवायी थी ।

१६४ म. प्रति सं०६। पत्र सं०१२३। ले० काल सं०१६६ मादवा मृदी १२। वै० सं०१ मध्य

्रथ्य - प्रात संबंधा पत्र संबंधा स्वयं स्वयं प्रदेश संबंधा स्वयं मुद्रा १२ । वंब संवर्धाः स्वयं स्वयं स्वयं स् टामण्डार ।

विशेष—वागड महादेश के सागपत्तन नवर में अ० सकलवन्द्र के उपदेश से हुबडकानीय बजियाणा गोत्र वाले साह आका आर्थी बाई नाथके ने प्रतिलिलिपि करवायी थी।

इस सल्य की घमीर च भण्डार में एक एक प्रति (वे॰ मं० ८६, ३२६) व्याभण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ३२, ४६) मीर हैं।

१६४६. बर्द्धमानपुरास्य-पं वेद्यारीसिंह। पत्र सं० ११०। सा० ११४८ दक्षः। आसा-स्टिश गर्यः विषय-पुरास्य। र० काल सं० १८७६ फासुस सुदी १२। ले० काल 🗴 । पूर्वा | वे० सं० ६४७।

विशेष——बालवन्दजी छ।वड़ा दीवान जयपुर के पीज शानवन्द के झाशहपर इस पुरागकां भाषारनना की गई।

च जम्बार में तीन क्यूपी प्रतियां (वे० सं०६७४,६७४,६७६) छ्रं मण्डार में एक प्रति (वं० सं०१४६) और हैं।

१६६०. प्रति सं०२ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १७७३ । वे० सं० ६७० । का अण्डार ।

१६६१. वासुपृक्यपुराग्ाापत्र संग्रहामा० १२६ू× न दश्चाभाषा-हिन्दीगछा। विषय-पुरासा; र**्काल ×**। लेन्काल ×। पूर्णा। वैग्लंग्रह्म । इस सम्बार।

१६६२. विसलनाथपुरासु---जबाकुम्पादासः । पत्रः सं० ७४ । प्रा० १२.४४३ इखः । मावा-संस्कृतः । विचय-पुरासुः । र० काल सं० १६७४ । ले० काल सं० १८३१ वैद्याल सुदी ४ । पूर्णः । वे० सं० १३१ । इस मण्डारः ।

१६६२. प्रति सं०२ । पत्र सं०११०। लेश्काल सं०१८६७ चैत्र बुदी ८। वेश्सं० ६६ । घ्र क्षम्बार ।

१६६%. प्रति सं≎ ३ १ पत्र सं०१०७ । ले∘ काल सं० १६६६ ज्येष्ठ दूवी ६ । वे० सं० १८ । छ्र सम्बार ।

किसेय-पायकार का बाम वर्ण कृष्णाजिच्छा भी विया है। प्रशस्ति निन्न प्रकार है---

र्तवत् १६२६ वर्षे ज्येष्टमाते इन्युपके भी वेषणका महत्तवरे भी धाविनाव वेष्यसक्षे भीमत् काष्टासंबे नंदीतटमच्ये विकासको सङ्कारक भी सावतेनात्त्रवे सहस्कृत्येस ४० श्री समञ्जूषण तरस्ट पर भी वसकींत्त वर श्री नगलावज स्थिति राष्ट्रियों की केशवसेन तत् तिष्योताच्याय की विश्वकीर्ति तत्तुरु शा॰ श॰ की बीपकी बहुत की राजवागर युक्ते तिक्तितं स्वज्ञानावर्णं वर्मक्षयार्थं। श्र॰ की १ विश्वसेन तत् विष्य मंद्रलाचार्य की १ जवकीर्ति पं॰ बीपकव्य पं॰ स्थापंद युक्ते सारम पठनार्थं।

१६६४. शानितनाधपुरासः—महाकवि च्रशागा । पत्र सं०१४२ । मा०११४५ रह्या । भाषा—संस्कृत । विषय-पुरासः । र०काल शक संवत् ६१० । ले०काल सं०१४५३ भाववा बुदी १२ । पूर्णा । वै०सं० ६९ । च्या भणवार ।

विशेष-प्रशस्ति—संवन् १४१३ वर्षं भारता विदि वारीस रवी मण्डे ह श्री गंधारमध्ये निवित्तं पुरतकं लेखकः

गठकतं विशंभीयात् । श्री भूतसंवे श्री कुंबकुत्वावार्व्यात्वये सरस्वती गच्छे बलास्कारगणे भट्टारक श्री पधानंदिवेवास्तरहें

मट्टारक श्री गुअवन्द्रवेवास्तरहें भट्टारक जिनवन्द्रवेवाद्धिय मंद्रणावार्य्य श्री रालकीत्तिवेवास्तिच्छ्य ब.क लाला पठनावें
हुवं न्यातीय श्रेक हांगा भार्य्या मंद्रपित श्रुत श्रीष्ट धना संक बावर संक सोमा श्रीष्ट धना तस्य पुत्र वीरसाल माक बनावे

नयी गुनः विद्यावर द्वितीयः पुत्र थर्मधर एतेः सवैः श्रान्तिपुरासं लक्षान्य पात्राय वत्तं ।

ज्ञानवान ज्ञानदानेन निर्भयोऽभयवानतः। प्रप्रदानात् मुखी नित्यं निर्ध्यांची भेषजाद्भवेत ॥१॥

१६६६. प्रति सं०२ । पत्र सं०१४४ । ले० काल सं०१=६१ । वे० सं०६=७ । क अध्वार । विशेष—इस ग्रन्थ की क, ब्यू स्रोर ट अध्वार में एक एक प्रति (वे० सं०७०४, १६, १८३४) और हैं।

१८६७. शान्तिनाथपुरास्— खुशास्त्रचन्द् । पत्र सं० ५१। प्रा० १२३/imesदशान्त्राचा—हिन्दीपस्रा। प्रवय—पुरागा। र०कालimes। लेककालimesपूर्या। वे०सं० १५७। क्क्ष्मण्डार।

विशेष---उत्तरपुराख में से है।

ट भण्डार में एक बपूर्ण प्रति (वे० सं० १८६१) और हैं।

१६६≔. हरिवंरापुरास्य — जिनसेनाचार्यः। पण सं∘ ११४ । सा० १२४४ **६वा**ः स्वाचा—संस्कृतः। विषय-पुरास्य । र०काल सकसं० ७०१ । ले०काल सं० १८३० माचसुदी १ । पूर्णः। वे०सं० २१६ । **व्या**धकारः।

विशेष—२ प्रतियों का सम्मिश्रस्य हैं। अचतुर तगर में पं॰ ड्रंगरती के पठनार्श्व सन्य की प्रतितिपि की मर्दै की।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे॰ सं॰ ६६६) और है।

१६६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२४ । ले० काल सं० १८३६ । वे० मं० दथ्र । 🕿 सण्डार ।

१६७० प्रश्निसंह ३ । प्रयासंह २ चण्डा से० काल संहरत ६० ल्यास सुकी १ । से० संहर १२२ । सा सम्बार ।

विकोष---गोपानम नगर वें सामां नीमात्रमर के प्रक्रिकिय की की ।

पराण साहित्य

है ७९ र प्रति संब्ध । पत्र संब्दिश । से १४२ से ४१७ । लेव काल संब्द्ध १६२४ कालिक मुदी २ । स्रपूर्ण । वेव संब्ध ४४७ । व्यापनार ।

विशेष-श्री पूरणमल ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ४४६) झौर है।

१६. श्रित सं० ४ । पत्र सं० २०४ में ३१३, ३४१ में ३४३ । ले० काल सं० १६०३ कालिक बुदी १६ । अपूर्ता वेल सं० ७६ । छत्र भण्डार ।

१९७६. प्रति सं०६ । पत्र सं०२४३ । ले०काल सं० १६५३ चैत्र बुदी २ । वे० सं०२६० । स्व अच्छार ।

वियोग----महाराजाधिराज मानसिंह के शासनकाल में मागानेर में मादिनाय चैत्या त्य में प्रांतिलिय हुई ची। लेकक प्रवस्ति भपूर्ण है।

उक्त प्रतियों के मतिरिक्त का मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४४ है) ह्यू मण्डार मंदा प्रतिया (वे० सं० ७६ में) और हैं।

१९७४. हरिबेशपुरास्—ज्ञहाजिनतास । पत्र मं०१०८ । द्या०१११५५ इञ्चाः भाषा—मंत्कृतः। विषय—पुरास्य । र० काल × । ले० काल सं०१८८० । पूर्सः। वे० मं०२१३ । द्या अध्वारः।

है ६७४८ प्रति संव २ । पत्र संव २ ५७ । लेव काल संव १६६१ द्यामोत्र बुदी ६ । वे० स० १३१ । घ सम्बद्धार ।

विशेष—देवपङ्गी शुक्तस्याने पश्चेनाय वैत्यालये काष्ठासंधे नंदीतटगज्छे विश्रायमे रामसंसान्वश्रे… भ्राचार्यं कस्यारणकोत्तिना प्रतिलिपि कृतं ।

> १९७६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४६ । ते० काल सं० १८०४ | वे० सं० १६३ | घ अण्डार । विवीय—वेहली में प्रतिसिपि की गई थी । लिपिकार ने महस्मदबाह का बामनकाल होना निक्षा है ।

> १६७७. प्रति सं० ४। पत्र सं० २६७। में ० काल सं० १७३०। वें ० सं० ४४८। च मण्डार।

१६७५⊏. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० २४२ । ले० काल सं० १७⊏३ कालिक सुदी ४ । वे० सं० ६६ । स्व कम्बार ।

विशेष—साह मल्युक्तपन्तजी के पठनार्य बाँसी ग्राम में प्रतिसिदि हुई थी। इन् जिनदास भन्न मक्त्रकीति के विषय है।

१६७६.प्रति सं०६। पत्र सं० २६६। ले० काल सं० १४३७ पीय बुदी ३। के० सं० ३३३ । का मण्डार।

विषेष-प्रश्नस्ति--सं॰ १५३७ वर्षे पीच बुदौ र सोसे श्री मूलसंघे बलात्कारणले मरस्वतीयच्छे श्री

पुराख साहित्य] [१४७

कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० सकलकीत्तिदेवा भ० भ्रुवनकीत्तिदेवाः भ० भी ज्ञ|नभूवरोत शिष्यमुनि जयनंदि पठनार्थे । ह्रंबड् ज्ञातीय------।

१८८८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१३ । ते० काल सं० १६३७ माह बुदी १३ । वे० सं० ४६१ । स्म मण्डार ।

विशेष---ग्रन्थ प्रशस्ति विस्तृत है।

उक्त प्रतियों के प्रतिरिक्त क, स्कृष्यं का भण्डारों में एक एक प्रति (वै० सं० ८४१, ८०६, ९७) मोर हैं।

१९८८९. इरिवंशपुरासा—श्री अपूषसा। पत्र सं० ३४४ । या० ११४५ इ**वा**। भाषा—संस्कृत । विषय— पुरासा। र० काल ४ । ले० काल ४ । यदुर्गा। वे० सं० ४९१ । व्याभण्डार ।

१६८८. हरिबंशपुरास्—भः सकलकीचि । पत्र सं०२७१ । मा०११३८४ दश्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पुरागः । र०काव ≿ । ले०काल सं०१६४७ चैत्र सुदी १०। पूर्णः । वे०सै० ८४० । क्र मण्डारः ।

विशेष--लेखक प्रशस्ति फटी हुई है।

१६≔३. हरियंशपुरासा—धवला। पत्र सं० ५०२ से ५२३। घा० १०×४-१ दश्चा भाषा—धपन्नंश। विषय—पुरासा। र० काल ×। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वै० सं० १६६६ | इस अध्वार।

१९६म४. इरिबंशपुराग् — यशाकी सि । पत्र सं∘ १६६ । मा० १०३४४३ दश्च । माथा—सपन्न स । विषय—पुराग् । र०काल ४ । ले०काल स० १४७३ । काषुस्य सुदी ६ । पूर्वा | वे०सं० ६६ ।

विशेष---तिजारा ग्राम में प्रतिलिपि की गई थी।

श्रथ संवत्सरेऽतिस्मिन् राज्ये संवत् १४७३ वर्षे काल्युगि श्रुदि ६ रविवासरे श्री तिजारा स्थाने । झलाव-लक्षां राज्ये श्री काष्ट्र। धरुग्रां ।

१६=४. हरिवंशपुराया—सहाकवि स्वयंभू । पत्र सं० २० । घा० १४४५ । भाषा—घपभ्रं ग । विषय— ■ पुराया । र० काल ४ | ले० काल ४ । घपुर्या । वै० सं० ४५० । च घण्डार ।

१६८६. हरिबंशपुराणुआषा—दौलतराम । पत्र सं० १०० से २०० । घा० १०४८ दश्च । माषा— हिन्दी गवा । विषय—पुराणु । र० काल सं० १८२६ चैत्र सुदी १४ । ले० काल × । प्रपूर्ण । दे० सं० १८ । स क्षणार ।

१६८. प्रति सं०२ । पत्र सं० १६६ । ने० काल सं० १६२६ भाववा सुदी ७ । ने० सं० ६०६ (क) क मण्डार ।

१६८८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४२१। ते० काल सं० १६०६। वे० सं० ७२६। च अच्चार। १६८६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७०६। ते० काल सं० १६०३ वासीज सुवी ७। वे० सं० २३७। ह्र अच्चार।

विशोध — उक्त प्रतियों के प्रतिरिक्त छा भण्यार में तीन भतियां (वे० सं०१३४,१४१) इस, तथा सः मण्डार में एक एक प्रति (वे० सं०६०६,१४४) और हैं। १६६०. हरिवंशपुरायाभाषा—सुष्रास्त्रचन्द्र। पत्र सं० २०७ । प्रा०१४४७ इक्का आषा−हिन्दी पक्ष । विषय-पुराया । र० काल सं० १७८० बैशास्त्र मुदी ३ । ले० काल सं० १८६० पूर्ण । वे० सं० १७२ । इक्स अभ्यार ।

विशेष—दो प्रतियो का सम्मिश्रण है।

१६६९. प्रति सं०२ । पत्र सं०२०२ । ले० काल सं०१६०५ पौष बृदी ८ । प्रपूर्ण । वै० मं०१५४ । इद्यूपण्डार ।

विशेष---१ से १७२ तक पत्र नहीं हैं। जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

१६६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३४ । ले० काल 🗵 । वै० स० ४६६ । व्या भण्डार ।

विशेष--- धारम्भ के ४ पत्रो में मनोहरदास कृत नरक दुख वर्णन है पर धपूर्ण है।

विशेष---एक प्रपूर्ण प्रति । (वै० सं० ६००) और है।

१९६४. हरिबंशपुरासभाषा***** । पत्र स० ३६१ । ग्रा० ६३,४४, डख्र । भाषा-हिन्दी गख (राजस्थानी) । विषय-पुरास्तु । र० काल × । ले० काल सं० १६७१ आसोज बुदी ८ । पूर्णा । वै० स० १०२२ । स्त्र भण्डार ।

विशेष---प्रथम तथा चन्तिम पत्र फटा हुआ है।

श्वादिशाग—पय कथा सम्बन्ध सीलीयइ छई । तेसां कालेगां तेमां समाग्में समयो सगवंत महानीरे रायोहे समोत्तरीये तेहीज काल, तेही ज समड, ते भगवंत श्री बार वर्द्धमानं राज्यही नगरी प्रावी समोसर्गा । ते जिसा छर वीतराम वडतीस प्रतिवाद करी सिहत, परंतीस वयन वस्यों करी सोभित, वडदहग्रह माथ छनीस सहस परंदर्धा । स्रेनेक श्रीवक जीव प्रतिवाधता श्रीराजयही नगरी पायो समोसर्या । तिथारं वनसाली प्रावी राजा श्री नेरिएक कत्तर । व्यावस्त्र विद्या । सामी घाज श्री वर्द्धमान प्रावी समोसर्या छ । तेशिक ते वात सामली नई वधानर्यो पायो । राजा प्राप्त महार्व्धवत यक्त । वावश्रीक सोमलं करावरण लागा । ते कि सामा गलीसा कीषड । यदि प्रानंद मेरि उद्धती जय जयकार वड यद । भवीक लोक समलांद प्रावंद रिख्या। धन भन भन स्वत्र वावश्री वावश्री वावश्री वेश्व हो स्वत्र वेशक सिवाएक हस्ती सियागरी उपरि छड्ड । मायई सेत छत्र पराप्त । उन्नद पास वामर डालइ छड । वंदी जया कह्म वार करह छहं । मंत्र वेशक सह घट । याव छल्ड वाजित वालते । क्तुरेनिती सेना सत्र करी । राय रांखा मंडलीक सुक्तव्यती सामंत वडरासिया........

एक ऋन्य उदाहरशा- पत्र १६०

तिस्मी धनोध्यान उहेमरण राजा राज पाले खर्द। तेह राजा नइ भारस्मी राष्ट्री छह। तेह नउ आव शर्म्य उपरि बस्प उद्यार क्या तेहनी कुषि तें कुंगर पर्स्मा राज्य हो ने नाम बुम्कीत जास्मित्र । ते पुणु कुमर जास्मे तिस समान खर्द। इस करता ते कुंगर जोवन मूरिया। तिशार्द पिताई तेह नई राज बार बाय्य । तिशार्द तेग जाना नुष्य नोपवता काल मसिक्नमई खर्द। बसी जिस्स नउभने बस्मु करहे छहे।

पत्र संख्या ३७१

नागली थे नरक गई थी। तेह नी कथा सांभलवं। तिगी नरक माहि थी। ते जीवनीकित्तयं। पखरं मरी रोइ सर्प थयः । सर्थन्त्र रमिण द्वीपा माहि। पख्ड ते तिहा पार करिया लागवः। पछई बली तिहां वकी मरण पार्यो। बीजें नरक गई तिहा तिन सागर धायु भोगवी। खेदन भेदन तारन दुख भोगवी। बती तिहां वकी ते निकलिन्यः। ते जीव पछड चंपा नगरी माहि चांडाल उद घरि पुत्री उपनी तेहा निचकुल धवतार पान्यवं। पछड़ ते एक बार वन माहि तिहां जबर वीणीया लागी।

श्चन्तिस पाठ-पत्र संस्या ३८०-८१

श्री नेमनाथ तिन त्रिभवण तारणुहार तिल्ली सांभी विहार क्रम कीयउं। पद्ध र देस विदेस नगर पाटलाना भवीन सोन प्रवोधीया। वलीतिल्ली सांभी समिन्द ज्ञान चारित तप संपनीयद दान दीयद। पद्ध र पिरनार माच्या। निहा समोसर्या। पद्ध र स्थान लोक संबोध्या। पद्ध र सहस वरस धाउप भोगवीन इंदस धरुप ममाण देह जाल्या है। हिंगी पर इंपागा दोन गया। पद्ध र एक मासउ गरया । पद्ध र जनाय जोग धरी नहः। समो सरए त्यान कीयद। निवार हो सांचित्र वया। तिहा पद्ध मोन सिद्ध थया। तिहा प्रवच मोन सिद्ध थया। तिहा प्राच मोन सिद्ध थया। तिहा प्राच आप सिंह नाग्या। वली पाद सई खत्रीस सांध साचई पूकति गया। तिली सामी धवन ठाम लावन तिहान गुक्क निजयम बीची न गाई। ईसा सुकतासवी भागी यथा। हिन इंरोक चा सुगमार्थ तिली खदः। जे काई विच्छ वात निवारणी होंद ते भोध तिराती कीययो। वली सामनी सांचित्र वे काई मह धाराणी बुच वकी। हरवंस कथा माहि स्थ कोट खद्द लीवीयद होंड। ते मिन्दानि पहक या गयी।

संबन् १६७१ वर्षे प्रासीज मासे कृष्युप्के प्रष्टमी तिथी। लिखित मुनि कान्हकी पाडलीपुर मध्ये। विज्ञ ···· शिष्यमी प्रार्थी सहजा पठनार्थं।



काव्य एवं चरित्र

१९६४. व्यक्तकुवरित्र--नाबूराम । पत्र सं० १२। सा॰ १२४७ इक्ष । मापा-हिन्दी। विवय-जैनाबार्स व्यक्तकुको जीवन कथा। र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ६७६ । का मण्डार ।

१६६६, स्थक्तक्कचरित्रः*****। पत्र सं०१२। झा०१२६ँ×द इक्का माषा-हिन्दीगछ। विषय-चरित्र। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्णावे नंतरं २। इक मण्डार।

१६६७. द्यसङ्शतङः*****। पत्र सं० ६। द्या० १० $\frac{1}{6}$ \times Y_{ϕ}^2 इत्र । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । r_{ϕ} काल \times । ते० काल \times । पूर्ण । वे० सं० २२६ । उत्र जनवार ।

१६६६. सञ्जबसंदेशाख्यप्रबन्धः *** । यत्र सं० ६ । द्या० ११३४५ इक्षः । आया-संस्कृतः । विषय-काव्यः । र० कालः ४ । ते० कालः सं० १७७६ । पूर्ता । वे० सं० ३१६ । ज मण्डारः ।

१६६६. ऋषभनाधचरित्र— भे० सकत्तकींचि । पत्र सं० ११६ । बा० १२×१३ इब । आया—संस्तृत । विषय-प्रयम तीर्षेक्कर श्रादिनाथ का जीवन चरित्र । र० काल ×। ले० काल सं० १४६१ पीय बुदी ऽऽः पूर्ण । वं० सं० २०४०- । ब्राभण्यार ।

विशेष---प्रत्य का नाम बादिपुराल तथा वृषभनाथ पुराल भी है।

प्रशस्ति — १५६२ वर्षे योच बुदी ऽऽ रवी । श्री मुलसंबे सरस्वतीगच्छे बसास्कारमाने श्रीकृन्दकृत्वाचार्यः न्यये ४० श्री ६ प्रमाचन्द्रदेशाः २० श्री ६ पद्मनिदिदेशाः २० श्री ६ सकतक्षीतिदेशाः २० श्री ६ शुवनक्रीतिदेशाः २० श्री ६ प्रमाचन्द्रदेशाः २० श्री ६ विजयकीत्तिदेशाः २० श्री ६ शुवनव्यदेशाः २० श्री ६ मुमतिक्रीतिदेशाः स्वविराचार्य श्री ६ चंदक्षीतिदेशस्तर्शिष्य श्री १ श्रीवंत ते शिष्य बह्य श्री नाकरस्येदं पुस्तकं पठनार्थं ।

> २०००. प्रति सं०२। पत्र सं०२०६। ले० काल सं०१६८०। वे० सं०१४०। ऋ मण्डार । इस भव्यार में एक प्रति (वे० सं०१३४) और है।

२००१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६० । ले० काल शक सं० १६६७ । वे० सं० ५२ । का अण्डार । एक प्रति वे० सं० ६६६ की झीर है ।

२००२. प्रति सं० ४ । पत्र मं० १६४ । ले० काल सं० १७१७ फाछुण बुधी १० । वे० सं० ६४ । इक सम्बार ।

२००३, प्रतिसं० ४.। पण सं०१८२ । ले० काल सं०१७८३ ज्योष्ट बुदी६ । दे० सं०६५ । इस् अभ्यार । काव्य एवं चरित्र] [१६१

२००४. प्रति सं०६ । यत्र सं०१७१ । ले॰ काल सं०१८४५ प्र॰ श्रावण सुदी द । दे॰ सं०१०) इक्र मण्डार ।

विशेष--- विमनराम ने प्रतिलिपि की थी।

२००४. प्रतिसंo ७ । पत्र संo १०१ । ले० काल संo १७७४ । वे० संo २०७ । का मण्डार । इसके प्रतिरिक्त का मण्डार में एक प्रति (वे० संo १७६) तथा ट भण्डार में एक प्रति (वे० संo २१०३) और हैं।

२००६. ऋतुसंहार—काक्षिदास । पत्र तं० १३ । प्रा० १०×२३ इंव । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १६२४ प्रास्तोज सुदी १० । वे० सं० ४७१ । व्य सम्बर्गर ।

विजेष-- प्रश्वस्ति—संवत् १६२४ वर्षं प्रश्वति मृदि १० दिने श्री मलपारगच्छे महुारक श्री श्री भी मानदेव मृदि तर्जागयमावदेवेन लिखिता स्थतेतवे ।

२८०७. करकरकुचित्रि—सुनि कनकासर । पत्र सं० ६१ । मा० १०३/×५ इक्का । सापा—पपप्रधा । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १५६५ फाग्रुसा दृदी १२ । पूर्सा । दे० लं० १०२ । का कण्डार ।

विशेष--लेखक प्रशस्ति वाला धन्तिस पत्र नहीं है।

२०८८. कारकष्टुचरित्र—भ० गुअचन्द्र । पत्र सं० ८४ । झा० १०४५३ इझ । आषा-संस्कृत । विषय-वात्त्र । र० काल सं० १६११ । ले० काल सं० १६५६ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २७७ । झा अच्छार ।

विशेष- प्रशस्ति—संतत् १६५६ वर्षे मागसिर मुहि ६ भीमे सोअंता (सोजत) ग्रामे नेयनाथ चैत्यालये श्रीमत्त्राष्ट्रामये अ० थी विश्वमेन तत्रहुं भ० श्री विद्यानुषण् तत्त्रीच्या अष्ट्रारक श्री श्रीभूषण् विजिरामेस्तत्विच्या इ० नेमकागर स्वतन्तेव विश्वितं।

मानार्यावराचार्य श्री श्री चन्द्रकीत्तिजी तत्तिष्य मानार्य श्री हर्षकीत्तिजी की पुस्तक ।

२००६. प्रति सं०२। पत्र सं०४६। ले० काल 🗴 । वे० सं०२६४। व्य भण्डार।

२०१८. कविप्रिया—केशवदेव । पत्र सं०२१। ब्रा० १४६ इक्का आवा-हिन्दी। विवय-काल्य (ऋकार) । र०काल 🗴 । ल०काल 🗴 । प्रश्नुणी। वै० सं०११३ । क्वर अण्डार ।

२०११. कादम्बरीटीकाः......। पत्र सं॰ १४१ से १८३। धा० १० $\frac{1}{4}$ ४५ है इखा। भाषा-संस्कृत । विषय-काव्यः। र॰ काल ×। ले॰ काल ×। प्रपूर्ण । वै॰ सं॰ १६७७। छा भण्डार ।

२०१२. काट्यप्रकाराकारीक *****। पत्र सं० द२ । सा० १०६ XY_2^2 इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काट्य । र० काल X । से० काल X । सपूर्ण । वे० सं० ११७८ । स्त्र भण्यार ।

विशेष--टीकाकार का नाम नहीं दिया है।

२०१३. किरातार्जुनीय-सहाकवि भारवि । पत्र सं०४६। बा०१०[‡]८४३ इ.च । मावा-संस्कृत । विवय-काम्य । र०काल × । के०काल × । सपूर्ण | के० सं० ६०२ | का सम्बार |

ि काट्य एवं चरित्र

AGR]

२०१४. प्रति सं०२। पत्र सं०३१ से ६३। ले० काल 🗴 । ब्रपूर्ण । वै० सं०३५ । स्त्र अण्डार । विकोष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२०१४. प्रति सं०३ । पत्र सं० ८७ । ले॰ काल सं० १५३० भाववा बुदी ८ । वे॰ सं० १२२ । क

भण्डार ।

२०१६. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८४२ भादवा बुदी । वे० सं० १२३ । क

विशेष--सांकेतिक टीका भी है।

विशेष---श्रति मक्षिनाय कृत संस्कृत टीका सहित है।

इसके म्राजिरिक इस मण्डार में एक प्रति (वैश्वंश्टिक) स्व मण्डार में एक प्रति (वेश्वंश्टिक) स्व भण्डार में एक प्रति (वेश्वंश्यः) तथा छ भण्डार में तीन प्रतियां (वेश्वंश्यः) २५१, २५१, २५१) मीर है।

२०२०, कुमारसभय—सद्दाकवि कालिदास । यत्र सं॰ ४१ । बा० १२×४ , इंच । भाषा-संस्कृत । विक्यम्-कृषमा । र० काल् × । ले० काल सं० १७व३ मंगसिर सुदी २ । दूर्ता । वे० सं० ६३६ । का भण्डार ।

विशेष-पृष्ठ विपक जाने से धक्षर खराब होगये हैं।

२०२१. ब्रिति सं० २ । पत्र सं० २३ । से० काल सं० १७१७ । वे० सं० १०४५ । जीर्सा । स्त्र अध्वार । २०२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । से० काल 🗴 । वे० सं० १२५ । इत्र अध्वार । स्रष्टम सर्ग पर्यंत ।

इनके मिहिस्कि का एस कुभण्डार में एक एक प्रति (वे० सं०११६०, ११३) चा भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं०७१, ७२) का मण्डार में दो प्रतियां (वे० सं०१३८, ३१०) तथा ट मण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं०२०१२, ३२३, २१०४) मीर हैं।

२०२३. कुमारसंभवटीका—कनकसागर। पत्र सं० २२। प्रा० १०×४३ इंव। भाषा—संस्कृतः। विषय-काव्य। र० काल ४। वे० काल ४। पूर्यां। वै० सं० २०३६। ऋ मण्डार।

विशेष---प्रति जीर्श है।

२०२४. सृत्र-चुड़ामसि—वादीअसिंह। पत्र सं० ४२। झा०११४४३ इ.च.। माया-संस्कृत । विवय-काष्य । र०काल सं० १६८७ सावश बुझी १ । पूर्वी । वै० सं० १३३ । इ. मच्चार ।

विशेष-इसका नाम जोबंधरः वरिश्र भी है ।

२०२४. प्रति सं०२। पत्र सं०४१। ते० काला सं०१ घटर प्रावदाः दुवी ६। दे० स०७३। ख भव्यसः।

विशेष--वीवान ग्रमरमन्वजी के मानुसाम वैश्व के पास प्रतिसिध की की।

च भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वै० सं० ७४) और है।

२०२६. प्रति सं०३ । पत्र सं०४३ । ते० काल सं० १६०५ माय सुदी थे। दे० सं०३३२ । इस् भण्यार ।

२०२७. खण्डमशस्तिकाब्यः''''' । मन सं०३ । भा० = २४१ ३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्यः । २० काल ४ । ले० काल स० १८७१ प्रयम भादवाबुदी ४ । पूर्णः। वे० सं०१३१४ । इस मध्यारः।

विशेष—संवाईराम गोधा ने जयपुर में अंवानती बाजार के आविनाम चैत्यालय (सन्वर पाटोबी) के प्रतिनिधि की थी।

ग्रन्थ में कुल २१२ स्लोक हैं जिदमें रखुकुलमिए। श्री रामचन्द्रजी की स्तुति की गई है। असे प्रारम्भ मे रणुकुल की प्रयंक्षाफिर दशरथ राम व सीता स्नादि का वर्शन तथा रावए। के मारने में राम के पराक्रम का वर्शन है। स्रत्यिम पुरिषका—कृति श्री खंबप्रचरित काव्यानि संपर्णा।

२०२८. गजसिंहकुमारचरित्र-विनयचन्द्रसूरि । यत्र सं० २३ । बा० १०६४४६ इझ । ब्राच-थंन्कन । विवय-चरित्र । र० काल 🗴 । ते० काल 🗴 । ब्रपूर्ण । वे० सं० १३५ । 👺 वयबार ।

२०२६. ग्रीतगोविन्स्— जयदेव । पत्र सं० २ । बा० १६५×७३ इंच । आला–संस्कृत । विषय– काल्य । र०काल × । ले० काल × । बक्सी । वै० सं० १२२ । क्र सम्बार ।

विशेष---भालरापाटन में गौड़ ब्राह्मण पंडा भैरवलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२०३०. प्रति सं० २ । पत्र सं• ३१ । लै० काल सं० १८४४ । वै० मं० १८२६ । द मण्डार ।

विवेष---अष्टारक सुरंत्वकीति ने प्रतिकिपि करवायी थी ।

इसी भण्डार में एक प्रपूर्ण प्रति (वे॰ सं॰ १७४६) ग्रीर है।

२०३१. गोतमस्थामीचरित्र—मंद्रक्तांचार्यं श्रीधर्मचन्द्रापत्र सं० ४३। ब्रा० ६३-४५ इक्षाः श्रावा— सम्कृत विषय-चरित्र । र० कालं सं० १७२६ ज्वेहं द्ववी २। ले० कालं ४ । दूर्णः। वै० सं० २१ । क्षा प्रखारः।

२०३२. प्रति सं०२ । पत्र सं∙६० । ते० काल सं०१ ⊏३६ कालिक सुदी १२ । वै० सं०.१३२ । क्र अभ्यार ।

२०३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । से० काल सं० १८६४ । वे० सं० ५२ । ह्यु अध्वार ।

२०३४ प्रति सीं ७ ४ । पत्र सीं ँ र्र्ष । सीं कौलं सं० १६०६ कालिक सुदी १२ । दे० तं० २१ । स्क्र सम्बद्धार ।

२०३४. प्रति संब ४ । पत्र संब ३० । सेव काल 🗴 । वेव संव २५४ । क्वे अव्हार ।

२०२६ मीत्रसंबाधि बीरिकायि - कांब्राह्म कोसरी । वन तं० २०० । बां० १३४४ इसा । सावा-हिन्दी । विवयं बीरन । र० कीर्न ४ । वें० कीर्न वें १६४० मेनसिर हुवी ४ । दूर्वी । वे० तं० १३३ । क सम्बर्धर । विकेय - मुक्तन्वकर्ता बांबार्स वर्षकर हैं । रचना तंत्रत् १४२६ दिवा है जी होते करीत वही होता । MORIE I

२८२७. सटकारेस्काध्य-सटकारे । पत्र सं०४ । सा० १२४५ है इसा । प्राथा-संस्कृत । विषय-काल्य । रंग्काल ×्रालेश्काल सं०१ इ४ । पूर्ता । वेश्वसं०२३० । स्र प्रण्यार ।

विशेष---वन्पापुर में भादिनाथ वैत्यालय में प्रन्थ लिखा गया था।

द्धा और व्य भण्डार में इसकी एक एक प्रति (वे० सं० १४४८, ७४) और है।

२०३८. चन्दनाचरित्र— अरु शुभाचन्द्र । पत्र सं०३६ । बा०१०४६३ इडा । आया-संस्कृत : विषय—वरित्र । र०काल सं० १६२४ । लेश्काल स०१८३३ आदवा दुदी ११ । पूर्वा वेश्तं० १८३ । का सम्बार ।

. २०३६. प्रतिसंठ२ ।पत्र सं०३४ । ले० काल सं०१६२४ माह बुदी ३ । वे० सं०१७२ । क मण्डार ।

१०४०. प्रतिस्त० ३ । पत्रसं० ३३ । ले० काल सं०१६६३ द्वि० श्रावसा। वे० मं०१६७ । स्ट अभ्यार ।

२०४१. प्रति सं०४ । पत्र सं०४० । ले०काल सं०१६३७ माहबुदी ७ । वं० नं० १४ । छ

विशेष--सांगानेर मे पं० सर्वाईराम गोधा के मन्दिर में स्वपठनार्थ प्रतिनिपि हुई थी।

२०४२, प्रतिसंब्धापत्र संब्द्धाः त्रिकाल संब्द्धाः प्रदास्यास्यास्यास्य । वेश्यं ४ ५६ । इर् अण्यार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ स॰ ५७) ग्रीर है।

२०४३. प्रति सं०६। पत्र मंग १६। लेक काल सं० १६३२ मंगसिर बुदी १। वेक मंग ५०। प्र मण्यार।

२०४४: चन्द्रमभचरित्र—चीरनदिः। पत्र स० १२०। सा० १२×५ इ.च.। माषा-सस्कृतः। विषय-चरितः। र० कालः × । ते० कालः सं० १४ न्हः पीत्र सुर्वे। दे० सं० ६१। इस प्रवारः।

विशेष---प्रशस्ति बपूर्ग है।

े २०४४. प्रति सं०२। पत्र सं०१८६। लेशकाल सं०१६४१ मंगसिर बुदी १०। वेशमंश १७४। इ. मण्यार।

२०४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८७ । ले॰ काल, सं० १५२४ भारता बुदी १० । वे० सं० १६ । घ सम्बार ।

विशेष---प्रतिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

की मरलेडक यमे विदुध मुनि बनानंदर्शदे प्रसिद्धं रूपानामिति वाषुः सक्तरुश्विमल्खालनेक प्रवीस्तु सध-व्यस्तास्त्रपुत्री जिनवर वचनाराथको दानस्थास्तेनवं वास्कान्यं निजकरितिकातं चन्द्रनाथस्य सार्वं सं० १४२४ वर्षे प्राथवा वर्षी ७ प्रम्य विविद्यं कर्मक्रवानिमत्तं।

[RAK

२०४७. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ४७ से ७४ । लेश्काल सं० १७८५ । स्प्रूपर्स । वैश्वांश्र २१७७ । ड मण्डार ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

संवत् १५८५ वर्षे फागुण दुवी ॥ प्रविवासरे श्रीसूलवंत्रे ज्ञलकारमञ्जे श्री कुनकृत्यावार्यानये अहारक श्री पर्यादिवेवा तत्पट्टे अहारक श्री देवेन्द्रकीत्तियेवा तत्पह्ने अहारक श्री अञ्चववकीतिश्रीवातत्पट्टे अहारक श्री सहस्रकीति वेवातरिकास्य वर्षे संवयित इर्षे सास्त्रं ज्ञानास्त्रराह्मो कर्मक्या विशिक्त किकास्मवा क्रीकुरवारस्यानो

इन प्रतियों के प्रतिरिक्त का अण्डार में एक प्रति (वै० लं० १४१) का प्रवंट मण्डार में दो प्रतियां (वै० लं० १०, वव) ज अण्डार में तीन प्रतियां (वै० लं० १०६, १०४, १०४) का प्रवंट मण्डार में एक एक प्रति (वै० लं० ११४, २१६०) और हैं।

२०४८. चन्द्रप्रभक्तात्र्वपंत्रिका—टीकाकार गुर्खनिन्द । पत्र सं० ६६। झा० १०४४ इंच । मावा-संस्कृत । विवय-काव्य । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । वे० सं० ११ । छा अपडार ।

२०४६. चंद्रप्रभवरित्रपश्चिका """। पत्र सं० २१ । झा० १०३४४ हु इस्र । भाषा-संस्कृत । विषय-वरित्र । र० काल ४ । ले० काल सं० १४६४ धासोज सुवी १३ । त्रै० सं० ३२४ । इत भण्यार ।

२०४०. चन्द्रप्रभचरित्र—यशास्त्रीस्ति । पत्र सं॰ १०६। बा॰ १०२४६ दश्च । माषा-व्यपन्नंबा । वियय-व्याठवं तीर्यक्कर चन्द्रप्रभ का जीवन चरित्र । र० कास ४ । से० काल सं० १६४१ पीच सुदी ११ । पूर्ता । वे० मं० ६६ । का मण्डार ।

विशेष-प्रथ संवत् १६४१ वर्षे पोह खुदि एकादशी बुधवासरे काष्ट्रासंचे मा...... (अपूर्ण)

२०४१. चन्द्रप्रभचरित्र—भद्गारक शुभवन्द्र। यत्र सं० ६५ । या॰ ११×४६ दश्च । यावा-संस्कृत । विवय-वरित्र'। र॰ काल \times । से० काल सं० १८०५ कालिक बुदो १०। पूर्ण । वै० सं० १। व्या प्रध्यार ।

२०४२. प्रति सं०२। पत्र सं०१६। ले॰ काल सं०१८६० कार्तिक सुदी १०। वे० सं० ७३। क्रु अच्छार।

२०४३. प्रति सं०३। पत्र सं०७३। ले०काल सं०१८६४ जेठ सुदी ८। वे० सं०१६१। क्रां भण्यार।

इस प्रति के प्रतिविक्त हा एकं ट भग्याद में शक् एक पति (के० सं ४ ८, ३१६६) और हैं।

२०४४. चक्कास्मानिक - इन्दि सायोदर (किन्द वर्णक्य) १०४०तं ६४८ । वा० १०६/४४३ इक्कार्य नावा-संस्कृत । विवय-चरित्र १.२० काम संस्थ ४५२७ सम्बन्ध सुदी ३ १ से० काम इंग्न १००१ सक्यान सुदी १ । पूर्व । वे॰ सं॰ १८ । का स्थार । विशेष---पादिमाग-

35 नमः । श्री परमात्मने नमः । श्री सरस्वत्यै नमः ।

श्रियं चँद्रप्रभो नित्यां बंद्र दश्चन्द्र लांखनः ।

्रिया 😝 यय कुमुदवंद्रीवश्वंद्रप्रभो जिनः क्रियात् ॥१॥ कुशासनवची चूडजगतारगहेतते ।

तेन स्ववाक्यसूरीस्नैद्धं मपोतः प्रकाशितः ॥२॥ युगादी येन तीर्थेशाधर्मतीर्थः प्रवस्तितः । तमहं वृषमं वंदे वृषदं वृषनायकं ॥३॥ चकी तीर्धकरः कामो मुक्तित्रियो महावली । शांतिनाषः सदा शान्ति करोत् नः प्रशांति कृत् ।।४।।

यन्त्रिय भाग---

सूमुन्नेत्रा बल (१७२१) शशधरांक प्रमे वर्षेऽतीते नवमिदिवसेमासि भाद्रे सुयोगे।

रम्ये ग्रामे विरचित्रमिदं श्रीमहाराष्ट्रनाम्नि नामेयरचप्रवरभवने भूरि शोभानिवासे ।। ६५॥

रम्यं चतुः सहस्राशि पंचदशयुतानि वै

धन्द्रयैः समास्यातं स्लोकेरिदं प्रमासातः ।। ६६।।

इति श्री मंडलस्रिश्रीमृष्ण् तत्रदृगच्छेश श्रीधर्मचंद्रशिष्य कवि दामोदरविरिधते श्रीवन्द्रप्रभ वरिते निर्वाम गमन वर्गानं नाम सप्तविवाति नामः सर्ग ॥२७॥

इति श्री चन्द्रप्रभचरितं समाप्तं । संबत् १८४१ श्रावशा द्वितीय कृष्णापक्षे नवस्यां तिथौ सामवासरे सवाई जयनगरे जोधराज पाटोबी कृत मंदिरे सिसतं पं • बोसचंद्रस्य शिष्य सूरगरामजी तस्य शिष्य कर्त्यारगदासस्य तत शिष्य स्पृक्षालचंद्रेश स्वहस्तेनपूर्णीकृतं ।।

२०४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६२ । ले॰ काल सं० १८६२ पौष बूदी १४ । वे॰ सं० १७५ । क संस्थार ।

अपदार ।

२०४६. प्रति सं०३ । पत्र सं०१०१। ले॰ काल सं०१८३४ प्रवाड सुदी २ । ते० सं०२४४ । ह्य

विशेष---पं० बोसबन्दजी शिष्य पं० रामबन्द ने ग्रन्थ की प्रतिनिर्ण की थी।

२०४७. चन्द्रप्रभाषरित्रभाषा---जयवन्द् आवड्रा । पत्र सं ० ६१ । मा० १२ रू ६ । नावा-हिन्दी । विवय-चरित । र॰ काल १६वी शताब्वी । ले॰ काल सं॰ १९४२ ज्येष्ठ सुदी १४ । वे॰ सं॰ १६५ । क अच्छार ।

विशेष--केवल दूसरे सर्ग में बाबे हुये त्याय प्रकरता के बसोकों की भाषा है।

दसी अध्यार में तीन प्रतियां (वै॰ सं॰ १६६, १६७, १६०) बोर है।

١.;

7 ...

काव्य एवं चरित्र ी

२०४८. चाक्क्यक्क्यहित क्रस्त्रक्तांचिता पत्र सं०१६। घा०१० $\frac{1}{6}$ ४४६ दश्च । आया-हित्यी। विषय-संठ चास्त्रत का चरित्र वर्णैन। र० काल सं०१६६२। ले॰ काल सं०१७३३ कालिक बुदी ६। प्रपूर्श। वै॰ सं०८७४। क्या वण्यार।

विशेष — १६ से बागे के पत्र नहीं हैं। बन्तिस पत्र मौजूद है। बहादुरपुर वास में पं॰ बसीचन्द ने प्रकि-निर्मित की जी।

बादिशान--- ॐ नम: सिट ब्यः श्री सारदाई नम: ।।

शादि जनमादिस्ततु स्रीत श्री महाचीर ।
श्री गौतन गण्यर नमु विल भारति गुण्यंभीर ॥१॥
श्री भूतसंघमहिमा पण्यो सरस्वतिगद्ध मृ गार ।
श्री सक्तकोत्ति गुरु समुक्काम मंगुश्रीपयमंदि भवतार ॥२॥
तस गुरु भारत श्रुभाति श्री देवकोति मुनिराय ।
चारवत्त थोर्थतिस्मा प्रबंध रचु नमी पाव ॥३॥

ातम-- " """ भट्टारक सुबकार ।।

सुलकर सोर्भाग मति विचक्षरण वदि वारण केशरी । भद्रारक श्री पद्मनंदिचरसकंज सेवि हरि ॥१०॥ एसह रे गद्ध नायक प्रशामि करि देवकीरति रे मूनि निज ग्रुह मन्य घरी। धरिषित्त बरसे निम क्ल्यासकीरति इम मसौ। बारुदत्तकुमर प्रबंध रचना रविमि बादर पशि ॥११॥ रायदेश मध्य रे भिलोड डंवसि निज रचनाथि रे हरिपूर निहसि हसि धमर कुमारनितिष्ठां धनपति वित्त विलसए । प्राशाद प्रतिमा जिन प्रति करि सकुत संबए ।।१२।। स्कृत संवि रे व्रत वह भावरि वान महोहबरे जिन बुजा करि करि उद्दव गान गंध्रव् चन्द्र जिन प्रासावए । बावन सिवार सोष्ठामसा ध्वज कनक कमक विमासह ।।१३।। गंडप मध्य सम्बद्धसा सोह भी-जिम विवरे महोहर हम बोहिन 🔻

बोहि जिनमन प्रति उन्नत मान्तुंत्रसिक्रास्त्रप् । रिद्धां विजयबद्ध विस्तात सुन्दर जिन्तुस्तन इक्षपालए ।।१४।। सहां चौमासि रे रचनां करि

सेनावांसा पिर यासी सनुसरि ।
सनुसरि सासी सुक्त पंत्रमी श्रीष्ठ चरणस्य सरि ।
करवाणकीरति कहि सञ्जन स्वसी साहर करि ॥१॥॥

बोहा—सादर बहा संघ जीतिंग विनय सहित सुसकार । है देखि चास्यरूप नो प्रयंध रूपमे मनोहार ।।१।। मणि सुर्थि। सादर करि याचक निदिय दान । इ.हो तसुरी एवं से तहि समर दीपि सहसान ।।२।। इस्ति भी चास्यरूप गर्व समासः ।।

विश्लेष—संवत् १७२१ वर्षे कास्तिक वदि ६ गुरुवारे सिक्तितं बहाबुरपुरवासे श्री वितामनी चैत्यालये अट्टा-रक श्री १ धर्म्यभूवरण सर्पष्टं मट्टारक भी १ देविब्रकीसि तदक्षित्व प्रशिवंद स्वहस्तेन विविद्धं ।

।। श्री रस्तु ।।

२०४६. चाक्दणचित्रि—भारासङ्का पत्र सं० ४०। झा० १२४८ इक्षा । माया-हिन्दा । वियय-चरित्र । र०काल सं०१६१६ सावन बुदी ४ । ले०काल ४ १ पूर्णी । वे० सं० ६७६ । इस्र मण्डार ।

२०६०. चारुदत्ताचरित्र—वहबताला । पत्र सं० देशः सा० १३२४८ दक्षः । आया-हिन्ती गण विषय-चरित्रः। र०काल सं० १६२६ साथ युदी १। ले०काल ४। वे० सं० १७१। छ अपकारः।

२०६२. प्रति सं०२ । पत्र सं०११६ । ते॰ काल सं०१७६६ काष्ट्रण बुदी ४ । ते० सं०२५५ । इस कस्तार ।

२०६२. प्रति सं०३ । पत्र सं०११४ । लेश्काल सं०१६२६ आधरवासुदी १२ । देश सं०१६४ । इस सम्बार ।

> का जच्चार में एक प्रति (वे० सं० ११) स्तिह है। २०६४: प्रति सं० ४। इस मृं० ११२। है। क्षण ×) है। हो। २६। घ जच्चार। विशेष-क्षण क्षण्येल है। क्षण २ कहा क्षणिक सम्बन्धिक हुने हैं। २०६४: प्रति स्व० ४। पण सं० ११४: के० क्षण × १ है। कंग क्षर ११ क वच्चार। विशेष-प्रयम तथा सन्तिम पण करें क्षित होते हैं।

काव्य एवं चरित्र]

२०६६. प्रति सं०६ । पत्र सं०१०४ । ले० काल सं०१८६४ पीप सुदी १४ । वै० सं०२०० । अर्थ अथवार ।

२ ६७. प्रति सं०७ । पत्र सं०६७ । ले०काल सं०१६६३ चैत्र बुदी ४ । वे०सं० १०१ । च सम्बार ।

विशेष--- महात्मा शम्भूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

२०६८. प्रति संट = । पत्र संव १०१ । लेव काल संव १८२४ । वैव संव ३४ । ह्य अण्डार ।

२०६६. प्रति सं ०६। पत्र सं०१२३। ले० काल 🗙 । वे० सं०११२। ब्या भण्डार।

२८७२. जम्बूस्यामीचरित्र— पं०राजसङ्गः । पत्र सं०१२६ । झा०१२५४५, इक्का । भाषा-संस्कृतः । विषय-चरित्र । र०काल सं०१६३२ । ले०काल ४ | पूर्णः । वै०सं०१६५ । कः अध्वारः ।

विशेष---१३ सर्गों में विभक्त है तथा इसकी रचना 'टोडर' नाम के साधु के लिए की गई थी।

२८७१. जन्यून्यामीचरित्र—विजयकीर्ति । पत्र सं०२०। झा०१३४८ इक्का बाया–हिन्दी पर्या। विषय–चरित्र । र०काल सं०१८२७ फाग्रुन बुदी ७ । ले०काल ४ । पूर्वा। वे० सं०४० । ज अथकार ।

२८७२. जन्त्र्यामीचरित्रभाषा—पद्मालाल चौधरी। पत्र सं०१८३। मा० १४३/४५ इक्स । भाषा—हिन्दी गयः। विषय-चरित्र। र०काल सं०११३४ फाग्रुण सुदी १४। ले०काल सं०१६३६। वे० सं०४२७। इस अच्छारः।

२०७३. प्रति सं० २। पत्र सं० १६६। ले० काल 🗵 । वे० सं० १८६। क अण्डार।

२०७४. जम्मूस्वाभीचरित्र—नाधूराध्न । पत्र सं०२८ । धा० १२५४८ इक्स । भाषा-हिन्दी यक्ष । विषय-चरित्र । र०काल imes। ले०काल imes । वे०सं०१६९ । ह्यू भण्डार ।

२०७४. जिनचरित्र''''''। पत्र सं॰ ६ से २०। मा० १० \times ४ दक्कः। अस्या-संस्कृतः। विषय-परित्रः। र॰ काल \times । से० काल \times । प्रपूर्णः। वे० सं० ११०५। इद्याध्यारः।

२०७६. जिनवत्त्तचरित्र—गुराभद्राचार्थे । पत्र सं० ६४। घा० ११४४ इक्ष । प्राथा-संस्कृत । विषय-वरित । र० काल ४ । ते० काल सं० १४६४ ज्येष्ठ बुढी १ । पूर्ण । वे० सं० १४७ । क्षा सम्बार ।

२०७७ प्रतिसं०२ । पत्र सं०३२ । ले० काल सं०१ द१६ माघ सुदी ४ । ३० सं०१ द६ | इ. सम्बार ।

विशेष---लेखक प्रशस्ति फटी हुई है।

२०७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ते० काल सं० १०३३ कासुरा सूबी १ । वे० सं० २०३ । क अध्यार ।

२०७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१ । ले॰ काल सं० ११०४ वासोच सुदी २ । वे० सं० १०३ । च क्रम्बार । े दे≎ द०. प्रति सं• ४ । पत्र सं• ३४ । ते० काल सं० १८०७ मंगसिर मुदी १३ । वे० सं० १०४ । व मण्डार ।

विष्येय—यह प्रति पं० चोखचन्द्र एवं रामबंद की थी ऐसा उल्लेख है।

क्क् अण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे॰ सं॰ ७१) और है।

२०=१. प्रतिसं०६ । पत्र सं०५७ । ते० काल सं०१२०४ कालिक बुदी १२ । वे० सं०३६ । व्य प्रकार ।

विशेष-भोपीराम बसवा वाजे ने फागी में प्रतिलिपि की थी।

२८ स्ट. प्रति सं०७ । पत्र सं०३ स्। ले० काल सं०१७ स्३ मंगसिर बुदी सा वे० मं०२४३ । स्य भण्यार ।

२०⊏३. क्रिमदत्त्वचित्रभाषा—पद्मालालाचीघरी । पत्र सं० ७६ । मा० १३८४ इक्च । साया–हिन्दी वर्षः । विषय–चरित्र । र० काल सं० १८३६ साथ सुदी ११ । ले० काल ४ । पूर्णा विरुध नं० १६० । क सण्डार ।

२०८४. प्रति सं०२ । पत्र सं०१ • । ले० काल × । वे० सं०१६१ । क अण्डार ।

२००६४. जीवंधरचरित्र—सङ्गारक शुभचन्द्र। पत्र सं०१२१। मा०११ $\times x_2^3$ इखा भाषा—संस्कृत। विवस—विरित्र। र०काल सं०१४६६। ले०काल सं०१८५० फाग्रुस नुदं १४। पूर्ण। वे०सं०२२। द्व्य सम्बार।

इसी मण्डार में २ मपूर्ण प्रतियां (वे० सं० म७३, म६६) झीर है ।

रं≎म्ह. प्रति सँ० २ । पत्र सं० ७२ । से० काम सं० १०३१ भादवा बुदी १३ । वे० सं० २०६ । क मण्डार ।

वियोग-संबंधक प्रशस्ति फटी हुई है ।

२००० - प्रति सं०३ | पत्र सं०१ ७ । ले॰ काल सं०१६६ काग्रुण बुदी दा दे० मं०४१ । इङ् सण्डातः।

विशेष—संबाई बयनगर में महाराखा जनतींसह के शासनकाल में नेमिनाव जिन नैत्यालय (गोधों का मनियर) में नक्तराय कुम्परान् ने प्रतिसिधि की बी ।

२०८८ मित सं०४ । पत्र सं०१०४ । लेश्काल सं०१८८० ज्येष्ठ बुदी ४ । वं० सं०४२ । छ त्रच्यार ।

२० मध्य प्रति संबद्धाः पत्र संबद्धाः तिल्काल संबद्धाः सुदी २ । वेब संबद्धाः अध्यादाः । अध्यादाः

२०६०. जीवयंप्रपारितं नायाका विकासाा वर्ष सं∘ ११४। मा० १२३×६३ इसा भावा-हिन्दी। विकास-परिता १२० काल सं० १२४०। ले० काल सं० १२४६। पूर्ण । ते० सं० ४१७। का सम्बद्धाः

मण्डार ।

२०६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी १ । वै० सं० ४४६ । च भण्डार ।

२०६२, प्रति संद 3 । पत्र संद १०१ मे १५१ । लेव काल 🗴 । बपुर्शी । वेव संव १७४३ । ट भण्डार ।

२०६३, जीबंधरचरित्र--पन्नलाल चौधरी । पत्र सं० १७० । ग्रा० १३×५ इक्कं । भाषा-हिन्दी गद्य । विश्वय-परित्र । र॰ कोल सं० १९३४ । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ सं॰ २०७ । का भण्डार ।

> २०६४. प्रति संट २ । पत्र संठ १३५ । ले॰ काल 🗴 । वे॰ संठ २१४ । 🖝 भण्डार । विजेव---शन्तिम ३५ पत्र चुहीं द्वारा खाये हुये हैं।

२८१४. प्रति सं ३ । पत्र सं० १३२ । ले० काल 🗴 । वे० सं० १६२ । छ भण्डार ।

२०६६. जीवंधरचरित्रःःः। पत्र स० ४१ । झा० ११३४८ इखा । भाषा-हिन्दी गर्ख । विषय-वरित्र । र० काल × । ने० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२६ । स्त्र भण्डार ।

२०६७. शोमिणाहचरित-कविरम अबुध के पुत्र लदमगुद्देव। पत्र सं॰ ४४। बा॰ ११×४ई दश्र । भाषा-मपभंश । विषय-वरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५३६ शक १४०१ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । का MURIT I

२०६८. गोमिगाह चरिय-डॉमीहिट। पत्र सं० ४३ । धा० १२×५ इख । भाषा-अपभ्रंश । विवय-काव्य । र० काल सं० १२८७ । ले० काल सं० १४८२ भादवा सुदी ११ । वे० सं० १२५ । स्व भण्डार । वा० कि न्जे

विशेष--- चंदेरी में भावार्य जिनचन्द्र के शिष्य के निमित्त लिखा गया।

२०६६. त्रेसठराताकापुरुषचरित्र.....। पत्र सं० ३६ से ६१। ग्रा० १०३×४३ इंच । माचा-प्राकृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ता । वे० सं० २०६० । श्रा अण्डार ।

२०००. दर्घटकाञ्य'''''' पत्र सं० ४। मा० १२×५ इखा। भाषा-संस्कृत । विषय-काम्य । र० काल × 1 ले० काल × । वै० सं० १८५१ । ट भण्डार ।

३००१. द्वाश्रयकाव्य-हेमचन्द्राचार्य । यत्र सं० ६ । बा० १०×४} दश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्याः र० काल 🗴 । ले॰ काल 🔀 । पूर्ण । बै० सं० १८३२ । ट भण्डार । (दो सर्ग हैं)

३००२. द्विसंघानकाव्य---धनस्त्रतः। पत्र सं० ६२ । सा० १०३×५३ इस्र । भाषा-संस्कृतः। विषय--काव्य । र० काल 🔀 । ले० काल 🔀 । प्रपूर्ण । वै० सं० ८५३ । 🖼 भण्डार ।

विशेष---वीच के पत्र टूट गये हैं। ६२ से बागे के पत्र नहीं हैं। इसका नाम राधव पाण्डवीय काल्य भो है।

३००३. प्रति सं०२। पत्र सं०३२। ले० काल 🗴। बपूर्ण । वे० सं०३३१। क अण्डार। ३००४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ते० काल सं० १५७७ माववा बुदी ११ । वै० सं० १५८ । क

विशेष---गौर गोत्र वाले भी बोऊ के पूत्र पदारथ ने प्रतिलिपि की बी ।

३००४. द्विसंधानकाव्यदीका — सिम्बस्थण्यः। पत्र सं० २२। प्रा० १२३×५३ दश्च। भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल ×। से० काल × पूर्ण। (पंचम सर्गतक) वे० सं० ३३०। क मण्डार।

३००६. द्विसंधानकाञ्यटीका — लेमिचन्द्र । पत्र सं० ३६१ । विषय-काव्य । भाषा-संस्कृत ।र० काक्र × । ले॰ काल सं० १६४२ कालिक सुदी ४ । यूर्ण । वे० सं० ३२६ । क नण्डार ।

विशेष-इसका नाम पद कौमुदी भी है।

३००७. प्रतिसंठ२ । पत्र सं०३ ४ मा । ले० पाल सं०१८७५ माघ मुदी मा वे० सं०१४७ । क अभ्यार ।

 ३०० म. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १५०६ कालिक सुदी २ । वै० नं० ११३ । घ सम्बार ।

. विशेष — लेखक प्रशस्ति प्रपूर्ण है। गोपाचल (ग्वालियर) में महाराजा हुगरेंद्र के शासनकाल में प्रतिलिधि की गई थी।

३००६. द्विसंघानकारुयटीका "" "। पत्र सं० २६४ । मा० १०१४ - दश्च । भाषा-सम्कत । विषय-काम्य । र० काल 🗴 । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ३२८ । क सम्बार ।

३०१०. घन्यकुमारचरित्र — आा•गुगुश्रद्धः । पत्रः सं० १३ । धा० १०४५ इक्काः। भाषा-सस्कृतः। विषय-चरित्रः। र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्णः। वै० सं० ३३३ । कःभण्डारः।

३०**११. प्रति सं०२** । पत्र सं०२ से ४४ । ले० काल सं०१४ ६७ आसोज मुदी १० । अपूर्ण। के० सं• ३२४ । क भण्डार |

विशेष—दूरू गांव के निवासी सम्बेलवाल जातीय ने प्रतिलिपि की थी। उस समय ६६ (अयपुर) पर सब्दोराय का राज्य लिखा है।

३०१२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । मै० काल सं० १६५२ द्वि० ज्येष्ठ बुदी ११ । बै० सं० ४३ । छ

शन्दार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रवस्ति दी हुई है । स्नामेर में स्नादिनाथ चैत्यालय मे प्रतिनिधि हुई । लेखक प्रशस्ति अपूर्व है।

२०१३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६०४ । वे० सं० १२८ । व्याप्रास्तार ।

३०१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० सं० ३६१ । का अध्यार ।

नै०१४. प्रति सं०६ । पत्र सं०४८ । से० काल सं०१६०३ प्रादवा मुदी ३ । वे० सं०४५८ । स्ट सम्बार ।

विशेष---बाविका बीवायी ने ग्रन्थ की प्रतिनिधि करके मुनि श्री कमलकीशि को भेंट दिया था।

२०१६. धन्यकुमारचरित्र—म० सकत्तकीचि । पत्र तं० २०७ । मा० ११४४३ दवा । माया—संस्कृत । विचय-चरित्र । र० काल × । ने० काल × । सनूर्य । दे० तं० ६३ ! का बच्चार ।

विशेष--- चतुर्व अधिकार तक है

३८१७. प्रसि सं०२ । पत्र सं०३६ । ले० काल सं०१ बप्र० बाचाक बुदी १३ । दे० सं०२ ५७ । व्य जण्डार ।

विशेष--- २१ से ३६ तक के पत्र बाद में लिखकर प्रति को पूर्ण किया गया है।

३०१८, प्रतिसं०३ । पत्र सं०३३ । ते० काल सं० १६२४ माय सुसी १ । ते० सं० ३१४ । क्य भण्डार ।

३०१६. प्रति सं०४ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १७८० आवरण सुवी ४ । स्पूर्ण । वे० लंक ११०४ । स्प्रभण्डार ।

विशेष---१६वां पत्र नहों है। इ॰ मेथसागर ने प्रतिलिपि की की।

३०२०. प्रतिसंदर) पत्र संदर्भाते कालास कर १०१३ मादवा बुदी का विकसंदर्भाह्य अण्डार।

विश्रोष—देविगरि (दौसा) में पं॰ बस्तावर के पठनार्थ प्रतिक्षिप हुई। कठिन शब्दों के हिन्दी में प्रपं विथे है। कृत ७ मधिकार है।

३०२१. प्रति सं०६। पत्र सं०३१। के॰ काक 🗴 । वे॰ सं०१७। स्न मण्डार।

३०२२. प्रतिसंठ ७ । पत्र सं० ७६ । ले॰ काल सं० १६६१ वैद्याल सुदी ७ । वे० सं० २१८७ । ट मण्डार ।

विशेष--संवत् १६२१ वर्षे वैदास सुदी ७ पुष्पनक्षने वृषिनाम क्षेत्रे गुरुवासरे नंगान्नाये बलात्कारयसे सरस्वती गच्छे।

३०२३. धन्यकुमारचरित्र— त्र० नेसिद्चा। यत्र सं०२४ । सा०११ \times ४३ इंच। काया-संस्कृत । विषय-चित्र । र०काल \times । ते०काल \times । पूर्ण | वे०सं०३३२ । कु अच्छार |

विशेष---प्रति प्राचीन है।

२०२४ - प्रतिसं०२ । पत्र सं०४२ । ले० काल सं०१ **६०१ पीच कुसी** ३। वे० सं० ३२७ । क अण्डार ।

विशेष--फोजुलाल टोग्या ने प्रतिसिपि की थी।

३०२.४. प्रतिसं०३ । पत्र सं∙१ माले० काल सं०१७१० श्रावसासुदी ४ । वे० सं० च६ । स्य अच्छार ।

विशेष---भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति ने धमने शिष्य मनोहर के पठनार्थ जन्य की प्रतिक्रिपि की थी।

्र दे०२६. प्रति सं० ४ । पण सं० १८: । ले० काल सं० १८:१६ फासूस्क बुद्धी ७ । वे० सं० ८७ । स्व सम्बार ।

विज्ञोद- सवाई वक्यूर में प्रतिविद्या हुई की ।

६०९कः जन्यकुमारचरित्र—कुमायाचेत् । नकः तंत्रः ६० । स्थाः, १४४०० कःचः । अव्यानहिन्दी एषः । विचय-चरित्रः। रकःकातः अत्रोते कःकातः अत्रान्ति । ते वे देशकः । काःचकातः । ६०२६. प्रति सं०२ । पत्र सं०३ ६। ले० काल × । वै० सं०४१२ । बामण्डार । २०२६. प्रति सं०३ । पत्र सं०६२ । ले० काल × । वै० सं०३३४ । क मण्डार । ३०३०. प्रति सं०४ । पत्र सं०३६ । ले० काल × । वै० सं०३२६ । क मण्डार । ३०३१. प्रति सं०४ । पत्र सं०४४ । ले० काल सं०१६६४ कार्तिक दुरी ६ । वै० सं०४६३ । ब

सम्बार। ३०३२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ त । ले० काल सं० १८५२ । वे० स० २४ । के भण्डार। ३०३३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६६ । ले० काल ४ । वे० सं० ४६४ । व्य भण्डार। विणेष— संतोषराम छावडा मौजमाबाद वाले ने प्रतिलिपि को थी । प्रत्य प्रणति काफी विस्तत है।

हनके सर्वितिक स्वाचार में एक प्रति (के सं- १६४) तथा छ मीर मन भवार में एक एक प्रति (के सं- १६६ व १२) घीर हैं।

२०२४: अन्यकुमारचरित्रः***। पत्र सं०१८ । घा०१० \times ८- डझः । भाषा-हिन्दी । विदय-क्या । र०कास \times । ले०काल \times । प्रपूर्ण । वे० सं०२२३ । इस् अध्डार ।

३०३४. प्रति सं० २ । पत्र सं• १८ । ते० काल 🗴 । प्रपूर्ण। वे० सं० ३२४ । 😸 भण्डार ।

२०६६. धर्मरामाभ्युत्य—सहाकवि इत्त्विन्द् । पत्र सं \circ १४३ । स्रा \circ १०२ $\chi_{\chi_{\chi}}$ इक्ष । आषा—संस्कृत । विषय—काष्ण । र \circ काल \times । ते \circ काल \times । पूर्णी । वे \circ मं \circ ११ । स्र्रा अवहार ।

२०२०. प्रति सं०२ । पत्र सं०१ द७ । ले० काल सं०१६३ द कालिक मुदी द । वे० सं०३४ द । क भण्यार ।

विशेष--नीचे संस्कृत में संकेत दिये हुए हैं।

३०३८. प्रति सं० ३ । पत्र सं• ८५ । ले० काल 🗴 । वे० सं० २०३ । घ्रा भण्डार ।

विशेष—इसके मतिरिक्त का तथा का भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १४८१, ३४६) फ्रांट है।

दै०२६. घर्मशर्माभ्युत्यदिका—यदाःकीर्त्ता।पत्र सं०४ मे ६६ । मा०१२८४ इझा। भाग— संस्कृत । विषय—काम्य । र० काल ⋉ । ले० काल ⋉ । सपूर्णावे० सं० ⊏४६ । इस मण्डार ।

विशेष-टीका का नाम 'संदेह ब्वांत दीपिका' है।

२०४०. प्रति सं०२। पत्र सं०२०४। ले० काल सं०१६४१ ब्रावाड बुदी १। पूर्ती। वे० सं०३४७। क मण्यार।

विशेष——कः भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ३४६) की धौर है।

२०४१. नकोषयकाञ्य—माणिज्यस्रि । पत्र सं∘ २२ से ११७ । मा० १०×४ ई इक्ष । आपा–संस्कृत । विषय–काष्य । र० काल । ते० काल सं० १४४१ प्र० काष्ट्रत बुदी द । सपूर्श । दे० सं० १४२ । स्र अध्वार ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

संबत् १४४५ वर्षे प्रथम फान्युन वदि ८ शुक्के लिखितमिदं श्रीमदर्गहिलक्तने ।

३०४२. ललोड्यकाब्य—कालिदासा। पत्र सं∘ ६ । धा॰ १२४६३ इ'व । भाषा—संस्कृत । विचव– काव्य । र० काल ४ । ते० काल सं०१ दश्धापूर्ण। वै० सं०१४३।। इद्य अण्डार ।

३०४३. सबस्त्रकाठ्य * ·····। पत्र सं०२ । आ०११ \times ५३ इंव । आपा-संस्कृत । विषय-काष्य ः र॰ काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं०१०६२ । इत्र अण्डार ।

विशेष-विक्रमादित्य के नवरत्नों का परिचय दिया हुआ है।

३.४४. प्रति सं०२ । पत्र सं०१ । ले॰ काल × । वे॰ सं०११४६ । आर अण्डार ।

३०४४. नातकुमारचरित्र—सिक्षिपेण सूरि। पत्र सं० २२। धा० १०६×६६ संव । मावा-संस्थत । विषय-चरित्र। र० काल imes। से० काल सं० १४६४ भादवा सुदी १४। पूर्ण । वे० सं० २३४। **धा मण्डा**र।

विशेष--लेखक प्रशस्ति विस्तृत है।

संबत् १९६५ वर्षे भारवा सुरी १५ सोमदिने थी भूतसंवे नंद्यान्नार्थ बलात्कारणारी सरस्वतीगच्छे कुँचकुँचा-बार्यान्वये म० भी पमनंदिवेदा त० भ० भी धुमबन्द्रदेवा त० भ० भी जिनबन्द्रदेवा त० भ० भी अभावन्द्रदेवा तदाम्नावे अप्येतवालान्वये साह विख्यसस तद्भावं जमवादे त० साह सांगा दि० सहसा हुत कुँचा सा० सांगा भार्या सुहवदे दि० भूरं नारदे तृ० मुरताव्यदे त० सा० धासा, धरापाल भासा भार्या हंकारदे, धरापाल भार्या भारादे । दि० सुहायदे । सहसा मार्या स्वच्यदे त० सा० पासा दि० महिराल । पासा भार्या मुख्यादे दि० पाटमदे त० काल्हा महिराल "महिषादे । कुँचा भार्या बादायुंद तस्यपुत्र सा० दासा तद्भार्या दाविमदे तस्यपुत्र नरसिंह एतेयां मध्ये धासा मार्या सहसारत्य ति भवत्ववार्यो भी पमर्मवद्भारा ।

दै०४६. प्रतिसं०२ । पत्र सं०२४ । ले॰ काल सं०१ ८२६ पौष सुदी ४ । दे॰ सं० ३६**४ । क** मण्यार ।

२०४७. प्रसि संट २ । पत्र सं० २ ४ । ले॰ काल सं० १००६ चौत्र बुदी ४ । वै॰ सं० ४० । घ मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १ पत्र नवीन लिले हुवे हैं। १० से ११ तथा २२वां पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं। सन्त में निन्न प्रकार लिला है। पांडे रामकन्द के मार्थे पथराई पोषी | संबत् १८०६ चैत्र वदी ४ सनिवासरे विक्री।

३०४८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७ । ते० काल सं० १५६० । वे० सं० ३५३ । 🖝 अण्डार ।

३०४६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २४ । ते० काल सं० १६४१ माथ बुदी ७ । वे० सं० ४६६ । व्य वष्टार ।

> विशेष---तक्षकमढ मे कत्याणुराज के समय में बार मोर्चात ने प्रतिलिपि कराई थी । १०४०. प्रति संरु ६ पण संरु २१ । लेर काल 🔀 । ब्रपूर्ण । वेर संरु १८०७ । ट अप्यार ।

्रे०५१. सम्मक्कमस्चिरित्र—पं० धर्मधर्। पत्र सं० ५५। मा० १०१८४ इ.च.। माया-मंग्कृत । विचय-चरित्र। र०काल सं० १५११ श्रावरा सुदी १५। मे०काल सं० १६१६ वैद्याल सुदी १०। पूर्ता। वे० सं० २६०। का संग्वार।

दै०% . नागकुमारचरित्र'''''''। पत्र तं॰ २२ । घा० ११×५ इ'व । आया-संस्कृत । विषय-चरित्र । र• काल Xा ले॰ काल सं॰ १८११ मादवा बुती द । पूर्णा। वै॰ सं० द । ज भण्डार ।

दै०४दै. नास्यकुमारव्यस्तिद्दीका—टीकाकार प्रभावन्द्र । यत सक २ से २० । बाव १०४८ई इ'व । काचा-संस्कृत । विषय-वरित्र । रक्काल ४ । लेक्काल ४ । ब्रपूर्ण । वेक्संव २१८८ । ट भव्यार ।

विशेष---प्रति प्राचीन है। सन्तिम पुब्लिका निम्न प्रकार है---

श्री जयसिक्वेवराज्ये श्रीमद्वारामिवासिनो परापरमेष्ट्रिप्रमारगोपाजितमलपुष्पनिराक्कतास्त्रिकक्लेकेन श्रीमदाभा-कृत्वरक्षितेन श्री मत्त्रंवामी टिप्स्एकं वृतमिति ।

२०४४. नागकुमारचरित्र—उदयक्ताला । पत्र सं०३६ । ग्रा०१३×८ इश्वा । आया-क्रिन्दा । त्रयय-चरित्र । र०कास × । ले०कास × । पूर्वा । ते० सं०३४४ । क्र भण्डार ।

३०४४. प्रति सं०२। पत्र सं०३५। ले० काल ×। वे० सं०३५५। का अध्यार।

ं देट४६. नागकुमारचरित्रभाषा***** पत्र सं०४५ | घा०१३४६ दश्चा भाषा-,हन्यी । त्रवय-वृदिवार० काल ४ | ते० काल ४ | पूर्ण । दे० सं०६७७ | इस भव्दार ।

३०४७. प्रति सं०२ । पत्र सं०४० । ले० काल 🗴 । वे० सं०१७३ । छ अण्डार ।

दे०४म. नेकिसी का चरित्रधासान्द्र। पत्र सं० २ से ४ । मा० ६४४३ रखा । माथा-हिस्सा । शंबाय-चरित्र । र० कास सं० १८०४ फाग्रस सुदी ४ । से० काम सं० १८४१ । प्रपूर्ता । दे० सं० २२४७ । स्त्र सम्बर्सः ।

विशेष-सन्तिम साग---

नेम तस ताल सघर मध्ये रे रहा। ज कट मालो।

बरत पाल्ये साल सारे सहस बरसना घाव।।

सहस बरतना आवल पूरा जिल्लार करुडी चीरुडी।

साठ नर्म कीया चक्कुरा पांच सक्त तास सघात पूरा जो।

मंद्रस रे- विक्रोनर फालुल माल मंक्कार।

सुद्र पंचनी, समीदार रे-कोंगो चरित उदारा।।

कीयो चरत उदार सारायंत इस वाली हाझे प्रकृतंत।

चन र सहस्त पिरानंदा च्या जेन लह नेम जिल्लांचा।।१२।।

हित बी नेमली को चरित समालाः।

र्ष ॰ १०११ केसाले भी भी जीकरात की लिखतं कल्पाराजी राजवड कच्चे । बाचे नेमिकी के नव जब दिये हुये हैं।

. 240

२१४६. नेसिनाय के दरासव"""। पत्र सं० ७ । घा० ६ \times ४६ हत्त्र । सावा-हिन्दी । विवय-बारण । र० काव \times । ले० काल सं० १६१८ । वे० सं० २४४ । का यण्डार ।

२१६०. ने भिद्वतकाच्य—सहाकवि विक्रमा । पत्र सं०२२ । द्या०१३४५ ६०० । त्राचा—संस्कृतः । विषय—काब्यार०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्यावै० सं०३६१ । क्राभण्डार ।

विशेष --कालिदास कृत मेघदूत के श्लोकों के मन्तिम चरण की समस्यापूर्ति है।

२१६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३७३ । आ अपडार ।

२१६२. नेमिनाथचरित्र—हेमचन्द्राचार्चे । पत्र सं०२ से ७८ । घा० १२४४६ दशाः नाषा-संस्कृतः । विषय-काव्यः । र० काल × । ले० काल सं०१४८१ पीच सुदी १ । घपूर्णः । वे० सं०२१३२ । ट भण्डारः ।

विशेष---प्रथम षत्र नही है।

२१६३. नेमिनिर्वाया—महाकवि बागुभट्ट। पत्र सं० १०० । मा० १३×५ दश्च। आषा⊸संस्कृतः । विषय-नेमिनाय का जीवन वर्णन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वै० सं० ३६० । क्र अण्डार ।

२१६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४४ । ले॰ काल सं० १८२३ । बे॰ सं० ३८८ । क मण्डार ।

विशेष--एक प्रपूर्ण प्रति क भण्डार में (वे सं ३८६) ग्रीर है।

२१६४. प्रति सं०३। पत्र सं०३४। ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं०३८२ । 🕸 मण्डार ।

२१६६. नेमिनिविष्णिंजिक।''''' । पत्र सं० ६२ । धा० ११६्×४ इ.च । भाषा—संस्कृत । विषय— काश्राःरः काल × । से० काल × । ब्रपूर्णः । वे० सं २६३ इप अध्वारः ।

विशेष-- ६२ से भागे पत्र नहीं हैं।

प्रारम्भ-धत्वा नेमिश्वरं चित्ते लब्ध्वानंत चतुष्ट्यं ।

कुर्वेहं नेमिनिर्वाशमहाकाव्यस्य पंजिका ॥

२१६७. नैवधचरित्र—हर्यक्रिया पत्र सं०२ से २०। मा० १०३×४३ इंच । माया-संस्कृत । विषय— काष्य । र० काल \times । ले० काल \times । मयूर्य । ते० सं० २६१ । ह्यू मध्दार ।

विशेष--पंचम सर्ग तक है। प्रति सटीक एवं प्राचीन है।

२१६८. पद्मावरित्रसार \cdots ापत्र सं॰ १। सा॰ १० \times ४ $\frac{1}{2}$ इंव । भाषा-हिन्दी । विषय-वरित्र । र॰ काल \times । सपुर्तावै॰ सं॰ १४७ । द्वा अध्वार ।

विशेष-पराप्रासा का संक्षित भाग है।

२१६६. पर्यूष्यमुक्तपः स्माप्त सं० १०० । सा० ११३ ×४ इ.च.। बागर-संस्कृत । विषय-वरित्र । २० काल × । ते० काल सं० १६६६ । सपूर्ण । वै० सं० १०६ । स्म सम्बर्णः ।

विशेष--- १३ वा तथा १५ से ११ तक पर्य नहीं हैं। श्रुतस्कंध का दवा सम्माय है।

प्रशास्ति—तं ॰ १६९६ वर्षे मुनतासामध्ये सुक्षावक सोतू तत् बच्च हरसी शत् सुता मुनकस्ती मेयुबु बडाइहे बच्च तेन एवा प्रति पं॰ बी राजकीतिमस्त्रियां विहरेर्पयता स्वयुत्वाय । रिशकः परिसिष्टपर्वे******। पत्र सं० १६ ते स०। सा० १०३८४४, इंच। जाया—संस्कृत। विषय— चरित्र। र० काल ४ । ते० काल सं० १६७३। समूर्स्स | वे० सं० १६६०। क्य अपदार।

विशेष--६१ व ६२वां पत्र नहीं है । वीरमपुर नगर मे प्रतिक्षिप हुई थी।

२१७१. पवनदूतकाव्यः—वादिचन्द्रसूरि । पत्र सं० १३ । धा० १२×५३ इंच । भाषा–मंन्कृत । विषय–काष्य । र० काल × । ले० काल सं० १९५५ । पूर्ण । वे० म० ४२५ । क्र अध्यार ।

विशेष—सं० १९५५ में राव के प्रसाद से भाई दुलीचन्द के बदलोकनार्थ ललितपुर नगर मे प्रतिलिपि हुई।

२१७२. प्रति सं २ । पत्र सं० १२ । ने० काल 🗴 । ने० सं० ४५६ ! क भण्डार ।

२१७३. पारडवचरित्र — जालबर्द्धन । पत्र सं० १७ । मा० १०३,४४३ इ.च । भाषा-किसी पत्र । विषय-वरित्र । र**०**काल सं० १७६६ । ले० काल सं० १८१७ । पूर्ण । त्रे० सं० १९२३ । ट. भण्डार ।

२१७४. पार्श्वनाथचरित्र—शादिराजसूरि। पत्र सं० १६। मा० १२८५ इ.च.। आणा-संस्कृत। विदय-पार्श्वनाय का जीवन चरित्र। र० काल शक सं० ६४७। ले० काल सं० ११७७ फायुरा दुर्दा १। पूर्ण। प्रत्यस्त जीर्या। वे० सं० २२५६। इ. सम्बार।

विशेष--- पत्र फटे हुवे तथा गले हुवे हैं। ग्रन्थ का दूसरा नाम पार्स्वनुरासा भी है।

प्रशस्ति निस्न प्रकार है---

ांवन् १५७७ वर्षे फाल्युन बुदी ६ श्री सूनसंघे बलात्कारगरी सरस्वतीयच्छे नंचान्नाये अहारक श्री व्ययनंदि तत्त्वृ अहारक श्री शुप्रचंद्रदेवात्त्तरहें अहारक श्री शुप्रचंद्रदेवात्तरहें अहारकश्रीप्रमाण्डदेवास्तरान्त्रयं माधु गांत्रे साह काश्रिल तस्य मार्था कांचलदे तथी: पुत्रः चर्चिषधान कल्यकुश्रः साह बखा तस्य मार्था पदमा तथी: पुत्र पंचाइक् तस्य मार्था वातारदे सवीपुत्रः ः चाह दुलह एते नित्यं प्रयामंति ।

२१७४. प्रति सं०२ । पत्र सं०२ रालि० कान × । धपूर्णा। वे० सं०१०७ । स्र अध्यार । विशेष—२२ से सामे पत्र नहीं हैं।

२१७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १४६४ काल्युरा सुदो २ । वे० सं० २१६ । आह ४७वर ।

विशेष---लंबक प्रशस्ति वाला पत्र नहीं है।

२१७७७. प्रति सं०४ । पत्र सं०३४ । ने०काल सं०१ रच्छ१ थेत्र सुवी१४ । ने० सं०२१६ । च सम्बार ।

> २९७८. प्रति सं० ४(। पण सं० ६४। ले० काल न० १६६४ आयाझा । वे० सं० १६। इद पण्डार । २९७६. प्रति सं० ६। पण सं० ६७। ले० कम्म सं० १७६४। वे० सं० १०४। इस अपदार । विशेष-कम्मणानी में सारिताम वीचालया ने गोंडांग ने प्रतिनिधि की की के

२१८०. पार्वनायचरित्र—अङ्ग्रेरक संख्वकीर्तिः । पत्र सं० १२०। धां०११४५ इ'व । बावा— संस्कृत | विषय-पार्वनाय का जीवन वर्षान । र० काल १५वीं शताब्दी | क्षे० काल सं० १८८८ प्रयम वैणास सुद्री ६ । पूर्ण | वे० सं० १३ | का यण्डार ।

२१=१. प्रति सं०२ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १=२३ कॉलिक बुदी १० । वे० मं० ४६६ । इक मण्डार ।

२१८२, प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६१ । ने० काल सं० १७६१ । ने० सं० ७० । स्न प्रण्यार । २१८३, प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७४ से १३६ । ने० काल सं० १८०२ कालुल बुदी ११ । सपूर्ण । ने० सं० ४४६ । क्र प्रण्यार ।

विशेष-प्रशस्ति--

संबत् १८०२ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्णपत्ने एकावसी बुवे निम्नतं श्रीजयपुरतगरसम्प्रेयुश्रावक-पृथ्यप्रभावक- 🖵 श्रीदेवगुरुभक्तिकारक श्रीसम्यक्तवृत्वद्वावश्रवकारक साठ श्री बीस्तरावणी पठनार्षं ।

२१८५८ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ से २२६ । ले० काल सं० १८४४ मंगसिर सुरी २ । प्रपूर्ण । वे० सं० २१६ । च भण्डार ।

विशेष---प्रति दीवान संगृही ज्ञानवन्द की थी।

२ (८४) प्रति सं०६ । पत्र सं०८६ । ले० काल सं० १७८५ प्र० वैशाख नुदी ८ । वै० सं०२१७ । च भण्डार ।

विशेष---प्रति खेनकर्मा ने स्वपठनार्थ दुर्गादास से लिखवायी थां।

२१८६. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १८५२ श्वावरण सुदी ६ । चे० सं० १५ । छ। मण्डार ।

> विशेष—पं∘ वर्गोजीराम ने सपने शिष्य नौनदराम के पठनार्थ गंगाविष्यु से प्रतिनिधि कराई। २१८७, प्रति सं∘ ⊏। पत्र मं∘ १२३। ने॰ काल ×। पूर्या। दे॰ सं∘ १६। द्या प्रण्डार। विशेष—प्रति प्राचीन है।

२१८८. प्रतिसंध ६ । पत्र सं० ६१ से १४४ । लेक काल सं० १७८७ । प्रपूर्ण । वेश सं० १६४५ । इ. सम्बद्धाः

विशोच—इसके प्रतिरिक्त का अण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १०१३, ११७४, २३६) क तथा घ्र अण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ४६६, ७०) तथा का अण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ४४६, ४४६, ४४७, ४४०) व्यासमा ट अण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० २०४, २१०४) और हैं।

२१ सक. पार्यनाथचरिक—रर्प्यू । पत्र सं० ८ से ७६ । प्रा० १०६ ×१ इ.च.। भाषा—प्राप्ताः । विक्या—मित्राः ११० कस्त्रः × । से० कस्त्रः × । प्रमुरीः। वै० सं० २१२७ । ट भण्डारः ।

२१६०. पार्यनाथपुरायः—भूषरदास । यत्र सं० १२ । बा० १०६४ ५ इता । प्राया-हिन्दी । विवय-पार्यक्रमम का जीवन क्योंन । र० कार्य सं० १७६६ बायांव सुदी ५ । से० काल सं० १८३३ । पूर्ण । वे० स० ३५६ । का स्वकार । t=0]

िकाठ्य एवं चरित्र

١,

रिश्टरे. प्रतिस्थं २ । पत्र संबद्धाले कालसंब १९२६ । वेब्सं ४४७ । इस अण्डार । विकोच—सोन प्रतियांधीर हैं।

२१६२. प्रति सं०३। पत्र सं०६२ । ते० काल सं० १८६० माह बुदी ६ । वे० सं०५७। म

भण्डार ।

२१६३. प्रति संब्धापत्र संब्धः। तेव काल संब्धः ६३। तेव संब्धः। उट्ट भण्डारः।

२१६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३८ । ले॰ काल सं० १८६४ । वे० सं० ४५१ । इट भण्डार ।

२१६.४. प्रति सं०६ । पत्र सं०१२३ । ले∙ काल सं०१८८१ पीष सुदी १४ । वे० सं०४ ५३ । उक भण्डार ।

२१६६. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४६ से १३०। ते० काल सं० १६२१ सावन बुदी ६। वे० सं० १७४। ह्य अच्यार।

२१६७. प्रति संट ⊑ । पत्र संट १००। सेट काल संट १८२०। वेट संट १०४। म्ह भण्डार । २१६⊏. प्रति संट ६ । पत्र संट १३०। लेट काल संट १८४२ कानुसा बुदी १४। वेट संट १०। व्य

भण्डार ।

विशेष—जवपुर मे प्रतिलिपि हुई थी। सं०१ ८५५२ में क्लाकरण गोधाने प्रतिलिपि की। २१६६. प्रति सं०१०। पत्र सं० ४६ से १५४। ले॰ काल सं०१६०७। प्रपूर्ण। वे० सं०१८४। स्म अध्यार।

२२००. प्रति सं०११ । पत्र सं०६२ । ले० काल सं०१ न्ह्हि घाषाढ बुदी १२ । वे० सं०१ न । व्य भण्डार ।

विशेष--फतेहलाल संबी दीवान ने सोनियों के मन्दिर में सं० १६४० भादवा सुदी ४ को चढाया।

इसके प्रतिरिक्त का अण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ४४४, ४०६, ४४७) ग्रातया च अण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ६६, ७१) का अण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ४४६, ४४२) च्या अण्डार मे ४ प्रतियां (वे० सं० ६२०, ६२१, ६२२, ६३२, ६३४) का अण्डार मे एक तथा जा अण्डार में २ (वे० सं० १४६, १, २) तथा ट अण्डार में वो प्रतियां (वे० सं० १८१८, २०७४) और हैं।

२२०१, प्रशुस्तवरित्र—पं• महासेनाचार्यै । पत्र सं० ४६ । मा० १०द्वै×४६ दश्च । मागा–संस्कृत । विवय~वरित्र । र०कान × । ते० काल × । सपूर्ण । वे० सं० २३६ । च प्रष्टार ।

२२०२. प्रति सं०२। पत्र सं०१०१। ले॰ काल ×। वे॰ सं०३४५। व्या अण्डार।

२२०३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११० । ते० काल सं० १४१४ ज्वेष्ठ बुदी ४ । वे० सं० ३४६ । स्थ भण्यार ।

वियोय—संवत् १४१४ वर्षे ज्येष्ठ दृषी चतुर्वीकि ग्रुप्ताको सुम्लकने श्रीमुलसंचे नंद्यास्त्राके वसास्कारताचे सरस्वतीरच्ये श्रीकुंबकुंदावार्वान्यचे व० श्रीचमार्विदेवास्तरपट्टे २० श्रीगुमचन्द्रेवास्तरपट्टे २० श्रीजिनार्वेट देवास्तररष्ट्रे २० श्री प्रभावन्त्रदेवास्तिष्ठित्य मंडलावार्य श्रीवर्षवन्द्रदेवास्तदान्नाये रामवरनगरे वीचंद्रप्रमवैत्यासये व्यवेत-वालाव्यये कांटरावालगोने सा० वीरमस्तद्रमार्या हरपन् । तस्तृत्र सा० वेता तद्भार्या वीस्त्रा तस्तुत्री द्वी प्रथम साह दानां द्वितीय साह पूना । सा० दामा तद्भार्या गोगी तथोः पुत्रः सा० वोदित्र तद्भार्या हीरो । सा० पूना तद्भार्या कोइन तथोः पुत्रः सा० वरहत्य एतेषां मध्ये जिनपूजापुरदरेख सा० वेतास्थेन इदं श्री प्रवृक्त वास्त्रवित्यास्य झानावरखीकर्म्य समावित्या

२२०४. श्रयुग्नचरित्र—झाचार्य सोमकीर्ति। पत्र सं० ११४। घा० १२४४३ हक्षा । माणा—संस्कृत ! विद्यय-चरित्र। र० कान सं० १४३०। वे० काल सं० १७२१। पूर्त्ता। वे० सं० १४४। क्षा भण्डार।

विशेष—रवना संवत् 'ऋ' प्रति में से है। संवत् १७२१ वर्षे प्रासीज विद ७ शुझ दिने लिखितं मावह (प्रापेर) मध्ये लि आरि प्रावार्थ भी महोचंद्रकोत्तिजी । लिखितं जीसि श्रीघर ॥

२२०४. अति स० २ । पत्र सं० २४५ । के० काल सं० १८८६ संपक्षिर सुधी ४ । वे० सं० १११ । अ भण्डार ।

विशेष--लेखक प्रशस्ति प्रपूर्ण है।

भट्टारक रलभूषरा की सान्नाय में कासलीवाल गोत्रीय गोवटीपुरी निवासी श्री राजसालजी ने कर्मोंदव 🕏 ऐलिवर्ड स्राक्ट हीरालालजी से प्रतिसिधि कराई ।

२२०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२६ । ले० काल × । शपूर्शी । वै० सं० ६१ । वा अण्डार ।

२२०७. प्रति सं० ४। पत्र सं० २२४। ले० काल सं० १८०२। वै० सं० ६१। घ अण्डार।

विशेष—हांसी (कांसी) वाले भैया श्री डमझ सम्बन्ध स्राक्क ने ज्ञानावर्शी कर्म क्षयार्थ प्रतिविधिं करवाई थी । पंज जयरामदाल के शिष्य रामचन्द्र को सम्र शु की गई ।

२२० म.प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११६ से १६५ । ले० काल सं० १८६६ सावन सुदी १२ । वै० सं० ४०७ । इक प्रथमतः ।

विशेष--- निरुपतं पंडित संगहीजी का मन्दिर का महाराजा श्री सवाई जगतसिंहजी राजमञ्ये सिली पविख गोर्द्ध नदासेन म्राप्तार्थ ।

२२०६. प्रति संट ६ । एवं सं० २२१ । ले॰ काल सं० १८३३ आवशा बुदी ३ । वे० सं० १६ । छ। भण्यार ।

.विशेष--पंडित सकाईराम ने सामानेर में प्रतिस्थिप की थी । वे सा० रत्नुकीर्तिजी के शिष्य थे।

२२४८. प्रति संघण । यथ संगरुर । लेग्काल संगर्द मार्गनीये सुदी १० । केग्स्य । अस्त्र भाषारा ।

विशेष---वसतराम ने स्वपठनार्थ प्रतिक्रिप की बी ।

्र २२११. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २७४ । ते० काल सं० १८०४ भाववा बुरी १ । वे० सं० २७४ । व्य

विशेष--- सगरचन्दजी चांदवाड़ ने प्रतिलिपि करवासी यी।

. इसके व्यक्तिरिक्त क्य अच्छार में तीन प्रतियां (वेश संश्व ४१६, १४८, २०८६ तथा क अच्छार में एक प्रति (वेश संश्व १०८०) घोर है।

२२१२. प्रश्युक्तव्यरित्रः । यत्र सं० ४०। या० ११ \times ४ इंच। भाषा–संस्कृत । विवस–वरित्र । ए० काल \times । ते० काल \times । सपूर्ण। वे० सं० २३४ । व्य अध्यार ।

२२१३, प्रयुक्तचरित्र—सिंहकवि । पत्र सं॰ ४ से ८६ । सा० १० 3_2 ४४, दंव । भाषा-सप्रशंस । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । सपूर्ण । वे० सं० २००४ । का मण्डार ।

२२१४. प्रयुक्तचित्रभाषा—समालाला । पत्र सं० १०१। मा० १३×५ इझ । भाषा-हिन्दी (गण)। विषय-वरित्र । र० काल सं० १८१६ ज्येष्ठ हुदी ५ । ले० काल सं० १८३७ वैशास बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४६४ । इ. भष्यार ।

२२१४. प्रति सं०२ । पत्र सं०३२२ । ले० काल सं०१६३३ मंगसिर सुदी २ । वै० सं०४०६ । क्र कच्चार ।

२२१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७० । ले० काल 🗴 । वे० सं० ६३८ । च अण्डार । वियोष—र्यामता का पूर्ण परिचय दिवा हुमा है ।

२२१७. प्रशुक्तव्यरित्रश्राषाः......) पत्र सं० २७१ । मा० ११३,४७३ इक्का भाषा-हिन्दी गण । विषय-वरित्र । र॰ काल ४ । सें॰ काल सं० १२१६ । पूर्ण । वे॰ सं० ४२० । का सम्बार ।

२२१८. भ्रीतिकरचरित्र— ज्ञरु नेसिब्सः । पत्रः संग्रदा साग्रदर्भ इंच । साधा-संस्कृतः । विषय-चरित्रः । रुग्कालः ४ । लेश्कालः संग्रदर्भ संगतिर दृदी २ । पूर्णः वैश्वः संग्रदरः ।

२२१६. प्रति सं०२ । पत्र सं०२३ । ले० काल सं०१८६४ । वे० सं० ४३० । कृ भण्डार ।

२२२०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल 🔀 । बपूर्ण । बे० सं० ११६ । सा अण्डार ।

विशेष--- २२ से ३१ पत्र नहीं हैं। प्रति प्राचीन है। दो नीन तरह की लिपि है।

रररर. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८१० वैद्याल । वे० सं० १२१ । आस अध्यार । २०२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६७६ प्र० श्रावसा सुदी १० । वे० सं० १२२ । आस अस्थार ।

२२२३. प्रतिसं०६ । वय सं०१४ । ले॰ काल सं०१८३१ शावसा सुदी ७ । वेट सं०११ । स्र कच्चारः

विशेष---पं० बोलकम्ब के शिष्म पं० रामधन्त्रती ने नमपुर में प्रतिसिधि की थी। इसकी दो प्रतिस्था का बच्चार में (वे० सं० १२०, २८६) और हैं। २२२४, प्रीतिकरचरित्र—जोघराज गोदीका। पत्र सं० १०। घा० ११४८ ६ छ। सामा-हिन्दी। वयय-वरित्र। र०काल सं० १७२१। ले०काल ४। पूर्ण। वे० सं० ६०२। छ। सम्बार।

२२२४. प्रति सं०२ । पत्र सं०११ । ले० कास 🗴 । वे० सं०१४१ । 👺 भण्डार |

२२२६. ४ति संट ३ : पत्र सं० २ से ६३ । ले० काल × । प्रपूर्ण । वै० सं० २३६ । छ अवहार ।

२२२७, अनूनाहुचरित्र—स्क्रानित्। पत्र सं०२२। झा०१२४४३ इंब। माया-संस्कृत। विवय-वरित्र। र०काल ४। ले०काल सं०१६२७। पूर्ण। वै० सं०१२८। झा मण्डार।

२२२८, प्रति सं०२ । पत्र सं०३४ । ले∙ काल × । वे० सं० ४४१ । क मण्डार ।

२२२६. प्रति संट ३ । पत्र सं० ४७ । ले॰ काल सं० १६७४ पीय सुदी द । वै॰ सं० १३० । स्व सम्बार ।

विशेष---प्रथम पत्र किसी दूसरी प्रति का है।

२२३ . प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १७८६ वैशाख बुदी १ । वे० सं० १५८ । चा अण्डार ।

विशेष---महात्मा राधाकृष्ण (कृष्णगढ) किशनगढ वालों ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

२२३% प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० ३७ । छ्रु मण्डार ।

विशेष-विश्वतराम ने प्रतिलिपि की थी।

२२३२. प्रति सं०६ । पत्र सं०२१ । ले० काल सं०१ अध्३ मासोज सुदो १० । वे० सं०११७ । का अण्डार ।

विशेष-क्षेमकीर्ति ने बौली ग्राम में प्रतिलिपि की बी।

२२३३. प्रति मं० ७। पत्र सं० ३ से १५ । ने० काल 🗴 । प्रपूर्श । वै० सं० २१३३ । ट मण्डार ।

२२३४, अद्भवाहुचरित्र - त्याकाककि । पत्र सं० ४८ । बा० १२६४८ इ**वा** । नापा-हिन्दी । विवय-वरित । र० काल ४ । से० काल सं० ११४८ । पूर्ण । वे० सं० ११९ । कु पण्यार ।

२२३४. अद्भवाहुचरित्र—चपारास । पन सं• १८ । सा• १२३४८ ६ खा । मापा-हिन्दी गवा । विवय-वरित्र । र० काल सं• श्रावरा सुदी १४ । ते० काल ४। वे॰ सं• १६४ । हा वण्डार ।

२२३६. अञ्चलहुचरित्र'''''''। पत्र सं० २७। धा० १३×८ इस । आया-हिन्दी। विषय-चरित्र । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०४ । द्वा जच्चार ।

२२३७. प्रति सं०२ । पत्र सं०२ = । बा०१३४८ दश्च । मादा-हिन्दो | विदय-परित्र । र० काव ×। वे० काव ×। पूर्ण । वे० सं०१६६ । ब्रु बच्चार ।,

२२२व. अरतेरावीयवः****। पक सं० १ । बा० ११×४५ द्वा । वाया-दिन्दी गव । विषय-वरिष । एक स्व × । पूर्व । वे० दं० १५६ । क्व स्वस्तर ।

े ए२३६. अविष्यवृक्तवरित्र—पंत्र कीधर्। पत्र संत्र १००। बात्र २३४४३ इस्र । नाया-संस्कृत । विषय-वरित्र । रक्ताल 🔀 । केल्काल 🔀 । पूर्ण । वेल्संत्र १०२ । व्या मण्यार ।

विशेष--- प्रतिसम् पत्र फटा हुमा है। संस्कृत में संक्षिप्त टिप्प्रसा भी दिया हुमा है।

२,२४०. प्रतिसं**०२। पत्र** सं०६४। ले० काल सं०१६१४ माघबुदी ६। वे० सं०५५३। क

मण्डार ।

विकोष—प्रत्य की प्रतिनिधि तक्षकगढ में हुई थी। लेखक प्रवस्ति वाला मन्तिम पत्र नहीं है। २२४१. प्रति स्तं २ १। पत्र सं० ६२। ले० काल सं० १७२४ वैशाख बुदी १। वे० सं० १३१। ख

भण्डार ।

विश्वीय—मेडना निवासी साह श्री ईसर सोगामों के बंध में में सा० राडवन्द्र की भार्यी रहणादे ने प्रति-विश्विक स्वाकर मंडलावार्य श्रीभूपण के शिष्य करवन्द को कर्मक्षयार्थ निमित्त दिया।

२२४२ . प्रतिसंठ ४ । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १६६२ जेठ मुदी ७ । वे० सं० ७४ । घ भण्डार ।

विशेष--- झजमेर गढ मध्ये लिलितं झर्जुन-ुत जोशी सूरदास ।

दूमरी स्रोर निम्न प्रशस्ति है।

ं हरसार मध्ये हाजा श्री सावलदास राज्ये सब्बेलवालान्वय साह देव भार्या देवलदे ने ग्रन्य की प्रांतिलिपि करवामी थो।

ः २२४२ - प्रति सं० ४ । पण सं० ३५ । ले॰ कस्त सं० १०३७ झसोज सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ५६५ । इक्साच्यार ।

विनेष---लेखक पं० गोवद्ध नदास ।

RRअअ. अति सं• ६। पत्र सं• ⊏६। ते॰ काल ×। वे॰ सं॰ २६३। चा अण्डार।

२२४४. प्रति सं०७। पत्र सं०५०। ले० काल ×। वै० सं०५१। प्रपूर्ण। छ्रु अण्डार।

विशेष-- कही कही कि हान्हों के मर्थ दिये गये है तथा मन्त के २४ पत्र नही लिखे गये है ।

२२४६. प्रति सं०⊏। पत्र सं०६४। ले० काल सं०१६७७ प्रावाढ सुदी २। वे० सं० ७७ । इय कर्ष्टारः।

विशेष-साधु लक्ष्मेश के लिए रचना की गई थी।

.. ररेक्षणः अति संबद्धायत्र संव ६७ । लेव काल संव १६६७ आसोज सुसी ६ । वेव संव १६४४ । ट वध्यार ।

विशेष—मामेर में महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी। प्रशस्ति का अधितम पत्र नहीं है।

२२४म. अविष्यदत्तचरित्रआया—पद्मालाल चौधरी । पत्र चं० १००। झा० ११३४७६ ईच । आक्ट-क्रिकी (वर्ष) । विश्वक-व्यरित्र । रू. स्त्रन सं० १८६७ । ते० कान सं० १८६० । वृक्षे । वै० क्रं० ४४४ । स्त्र नव्यर । बाव्य वर्ष परित्र] [१०३

२२४६. प्रति सं०२। पत्र सं०१६४। ले० काल 🗙 । वे० सं० ४४४। क भण्डार।

२२४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० ४४६ । क भण्डार ।

२२४१. भ्रोज प्रयन्थ—पंहतप्रकर बङ्गालाः पत्र सं०२६ । सा०१२५४५ इंच । मावा—संस्कृतः। विषय—काम्यः । र०कालः \times । ले०कालः \times । पूरों । वे० सं०४७७ । इत्र प्रष्टारः।

२२४२. प्रति स०२ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १७११ घासोज जुदी ६ । वे० सं० ४१ । घपूर्ण । स्र सम्बद्धार ।

२२४३. सौसवरित्र—अटरज्ञवन्द्र। पत्र स०४३ । घा०१०४५ इक्का प्राथा—संस्कृत । विषय≔ वरित्र। र०काल ४.। ते० पाल सं०१६४६ फाग्रुण दुदी १ । पूर्णावे० सं०४६४ । क्क सम्बर्गर।

२२४४. संगलकलशमहामुनिचतुष्पदी—रंगविनसगिषा । पत्र सं० २ से २४ । सा० १०४४ इ**छ** १-प्राचा-हिती (राजस्थानी) विषय-चरित्र । र० काल सं० १७१४ श्रावसा मुदी ११ । ले० काल सं० १७१७ । सपूर्णः । वे० नं० =४४ । इस सम्बार ।

> विशेष-भोतोड़ा ग्राम में श्रो रंगविनयगिंश के शिव्य क्यामेर श्रुनि के वाचनार्थ प्रतिसिधि की गयी थी र राग भन्यासिरी-

> > एह वा मुनिवर निसदिन गाईवड, मन सुधि ध्यान लगाइ। पुष्प पुरूषणा युग पुरातां सतां पातक दूरि पुलाइ ॥१॥ ए० ॥ शांतिचरित्र थकी ए चउपई कीभी निज मति सारि। मंगलकलसमुनि सतरंगा कह्या ग्रुण मातम हितकारि ॥२॥ ए० ॥ गक्ष करतर ग्रंग वर ग्रुख आगलंड श्री जिनराज सुरिंद । तसु पट्टबारी सूरि विरोवग्री भी जिनरंग मूर्तिव ॥४॥ ए० ॥ तासु सीस मंगल सुनि रायन्त चरित कहेउ स सनेह । रंगविनय वासक मनरंग सु जिन पूजा फल एह ।।५।। ए०।। नगर धभयपुर प्रति रलिग्रामणुउ जहा जिन गृहचउसाल । मोहन मूरति बीर जिएांदनी सेवक जन सुरसाल ॥६॥ ए० ॥ जिन मनइबलि सोवत घणी जूला देवल ठाम । जिहा देती हरि सिद्ध मेह महद्द पूरद बंखित काम ।।७।। ए०।। निरमल नीर भरवर्ष सोहइं बर्गु ऊंग्र महेह्बर नाम। भाप विभाता अगि भवतरी कीचउ की मृति कामु सदा। ए॰ ।। जिहां किए। भावक समुख विरोमणी घरम गरम नउ जाता । मी नारावणुदास सराहिवद मानद जिलावर प्रात्म ।।१।। ए० ।।

सासु तराह सासह ए बाउपह कीपी जन उझात 1
सिपकन उद्धान ने हां मास्त्रियन निद्धा हुक्क ताल ।।१०।। ए० ।।
सालारा नायक और प्रसार पी कजी वडीय प्रमारा ।।
सरिएस्यां सुरिएस्य ने नर मानवु धारवाई ताह करवारा ।।११।। ए०।।
ए संबंध सरस रस हुए। मरब आस्त्र निर्माय सिक्स स्त्रारा ।।११।।
एह वा प्रीकर निर्माय मन रजी दगनियन सुककार ।।११।। ए०।।
एह वा प्रीकर निर्माय मन रजी दगनियन सुककार ।।११।। १२।।

इति श्री मंगलकलसमहामुनिवजयही संयुक्तिमयमत् लिखिता श्री संवत् १७१७ वर्षे श्री मासीज सुसी विजय दसमी वासरे श्री वीतोडा महाबामे राजि श्री परताप्तिहजी विजयराज्ये वाचनाचार्य श्री रंगविनयगरिंग लिब्स सिंबत दमामेद श्रीन मारसभेयते सुनं मवतु । कल्वास्त्रमस्तु लेखक पाठकयोः ।।

२२४ ४. सद्दीपाक्त चरित्र—चारित्र भूषसः । तत्र तं ४१। सा० ११६४५ दश्च । भाषा-संस्कृत । विवय-चरित्र । र०काल सं० १७३१ श्रावरः सुदी १२ (छ)। ले०काल सं० १०१८ कालुग सुदी १४। पूर्णावे० सं० ११६ । छामध्यार ।

विशेष---जाँहरीलाल गोदीका ने प्रतिलिपि करवाई।

२२४६. प्रति सं•२ । यत्र सं•४६ । ने० काल ४ । वे० सं०५६१ । इक भण्डार ।

२२४७. प्रति सं०३ । पत्र सं०४२ । ले० काल सं०१६२८ फाल्गुए। सुदी १२ । वे० सं०२७१ । स्व सक्तार ।

विशेष--रोहराम वैद्य ने प्रतिलिपि की थी।

२२.५०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५५। ले॰ काल 🗵 । वे॰ सं० ४६। छु अवडार ।

२२४६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४५ । ले॰ काल ४ । वे॰ सं० १७० । छ भण्डार ।

२२६०. मदीपाक्षचरित्र— अध्यक्षतित्वि । पत्र सं∘ ३४ । घा० १२४६ दृश्चः । आया—संस्कृत । शिवय—वरित्र । र०काल × । ले०काल सं० १०३६ आयवादुरी ६ । पूर्ण । वे० सं० १७४ । कुमण्डार ।

२२६१. महीपासच्यितमाया— नयमका। पत्र सं०६२ । मा०१३४१ इच्च । भाषा—हिन्दी गर्छ। विद्यत—विद्या १८० काल सं०१६१६ । ले० काल सं०१६३६ आवसा सुदी ३ । वे० सं०५७४ । कृषध्यार ।

विशेष-पूलकर्ता चारित यूवस ।

२२६२. प्रति सं० २ । पण सं० ४६ । ते० काल सं० १६३५ । वे० सं० ४६२ । क मण्डार । विशेष—प्रारम्भ के १५ नये पण लिखे हुये हैं ।

कवि प्ररिषध—नमक्त सहातुक काधसीयास के बिच्च थे। इनके पिताबह का नाम दुलीचन्द सवा पिता का नाम विक्चन्य या। २२६३. प्रति सं० ३। पण सं० ५७। लेव काल सं० १२२१ व्यावरा सुवी ७। पूर्ण। वे० सं० ६६३। व्यावस्थार।

२०६५. मेघदून कालिदास । पत्र सं० २१। मा० १२४५६ दश्च । नापा-संस्कृत । विषय-काव्य । १० काल ४ । ते० काल ४ | मपूर्ण । वे० सं० ६०१। क सम्बरार ।

२२६४. प्रतिसं०२ । पत्र सं०२२ । ले∘ काल ४ : वे॰ सं०१६१ । जा मण्डार ।

विजेष---प्रांत प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है। पत्र जीर्रा है।

२२६६. प्रति स०३ । पत्र सं• ३१ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे॰ सं० १६८६ । ट अच्छार ।

विशेष--प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है।

२२६७. प्रति सः ४ । पत्र सं०१ मा लेश्काल सं०१ न्यूथ वैद्याल सुदी २ । वेश सं०२००५ । इर अच्छार ।

२२६८. मेघदूनटीका—परमहंस परिजाजकाचार्य 1 पत्र संग्धाः । माग १०३४४ इ**जा** । आया— संस्कृत । विषय-काष्य । २० काल संग्धार भावता सुवी ७ । पूर्ण । वे० संग्धार ।

२२६६. यशानितसक चन्यू—सोम्बदेव सूरि। पत्र सं०२४४। बा०१२ $\frac{1}{6}$ \times ६ इक्षः। आवा-संस्कृत गव पय। विवय-राजा यशोभर का जीवन वर्णन । र० काल सक सं० 4 \times १ ले० काल \times । सपूर्ण। वे० सं० 4 \times १। का अध्वरः।

विशोध--- कई प्रतियों का मिश्ररण है तथा बीच के कुछ पत्र नहीं हैं।

२२७०. प्रति संट २। पत्र सं॰ ४४। ले॰ काल सं० १६१७। वे० सं० १८२। स्न अध्वार।

२२.७१. प्रतिस् ०३ । पत्रसंग्देश । लेग्कालसंग्देश ४० फाएएए सुदी १४ । वेग्संग्देश ६ । इस अच्छार ।

विशेष-करमी गोधा ने प्रतिलिपि करवाई थी। जिनदास करमी के पुत्र वे।

२२७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल ४ । वै० सं० ५६१ । कु मण्डार ।

२२७३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४४६। ते० काल सं० १७४२ मंगलिर बुदी ६। वे० सं० ६४१। क सम्बार।

विशेष—यो प्रतियों का मिश्रस्स है। प्रति प्राचीन है। कहीं कहीं किन सब्यों के सर्व दिये हुसे है। संबादती में नेमिनाव वैत्यालय में घ० जगत्कीति के किय्य पं॰ दोदराज के पठनार्थ प्रतिकिपि हुई वी। २९७४. प्रति सं० ६। पत्र सं॰ १०२ से ११२। ने॰ काल प्राप्तपुर्ता। वै० सं॰ १८०८। ट

तन्त्रातः। १९०४: करास्तिकाचचन्यू दीका-भृतकात्तरः। पन तं० ४०० १ मा० १२%६ १वा । नाना-संस्कृतः। निजन-कम्पः। १० काल %। ते० काल तं० १७१८ मालोग सुधी १० । पूर्णः। वे० तं० ११७ । वा सम्पारः। विकेष-भूतकातं कोवनेत सूरि। २२७६. बरास्तितसकाचन्युरीका''''''। पन सै० ६४६ । बा० १२३% ७ इक्क । आवा-संस्कृत । विषय-काव्य । रे० काल 🗶 । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वे० सं० १८८ । क मण्डार ।

२२७७. प्रति सं०२। पत्र स॰ ६१०। ले० काल ×। वै० सं० ४८६। क अण्डार।

२२७८. प्रति मंट ३। पत्र संट ३०१। लेट काल × वेट संट ४६०। क अण्डार।

२२७६. प्रति सं०४ । पत्र सं०४०६ से ४५६ । ले० काल सं०१६४ द। प्रपूर्ण। वै० सं०५६७ । का सम्बर्गः।

२२८०. धरोधरचरित—सहाकवि पुस्पदस्त । पत्र तं० ६२ । बा० १०४४ ड≡ । सावा—सपन्न स । विषय—विषय । र० काल ४ । ले० काल तं० १४०७ सालोज मुदी १० । यूर्ण । वे० तं० २५ । इस सम्बार ।

विश्व - संवक्षरेसिसन १४०० वर्षे झ्यांनिमाने गुक्रवसे १० तुषवासरे गरिमन वन्त्रपूरीवृर्गहांतीपुरिवरावसाने महाराजाधिराज्यसमस्तराजावसीनेव्यमस्त विस्तजीवत्त उद्योसक मृरिजायुनहयुत्ताहिराज्ये तहिजदराज्ये श्वीकाहाः
सैवें माधुरान्वेये युक्तराज्ये महारक भी वेदसेन देवास्तरहुं अहारक भी विस्तजनेन देवास्तरहुं अहुराक श्रीधमंतन देवास्तरहुं महारक श्री आवनेन देवास्तरहुं महारक श्री सहत्रकाति देवास्तरहुं अधुत्तकीति देवास्तरहुं अहुराक श्रीधमंत्रने देवास्तरहुं अहुराक श्रीधमंत्रने देवास्तरहुं अहुराक श्रीधमंत्रने स्वार्गित देवास्तरहुं अहुराक श्रीधमंत्रने श्रीधमंत्रने देवास्तरमुं अहराक श्रीधमंत्रने स्वार्गित देवास्तरहुं अहुराक श्रीधमंत्रने श्रीधमंत्रने देवास्तरमुं अहराक श्रीधमंत्रने देवास्तरमुं अहराक श्रीधमंत्रने स्वार्गित विस्तरमुं स्वार्गित स्व

२२८२१. प्रति सं०२ । पत्र सं०१४ । ले० काल सं०१६३६ । वे० सं०४६८ । कृषण्डार । विशेष—कहो कही संस्कृत में टीकाभी दी हुई हैं।

२२८२. प्रति सं० ३ । यत्र सं० ६० से ६८ । ले० काल सं० १६२० भादो''''। प्रपूर्ण । वै० सं० २८८ । व मध्यार ।

विक्षेय—प्रतिविधि झामेर मे राजा भारमल के झालनकाल मे नेबीश्वर चैत्यालय में की यई थी। प्रशस्ति अपूर्ण है।

१२८२ मिल सं०४ । पत्र सं०६३ । ले० काल सं० १८१७ घासोज सुवी २ । वे० सं०२८६ । च्य अच्छार ।

२२ च ४ . प्रति सं० ४ । पत्र सं० द १ । ले॰ काल सं० १६७२ मंसियर सुदो १० । वे॰ सं० २८७ । च अच्चार ।

कुरून्थ. प्रति संब ६ ! एवं संव कह ! में व काम X.1 वेव संव दृश्य ! स अध्यार !

देवम् ६ सकोधरणरिय—अ० संस्त्रक्षीरिया । जन ते० थे१ । आ० १०६० १ स्व । जारा तरेस्व । विषय-राजा मतीचर का जीवन वर्शन । र० नाल × । ते० नाल × । यूर्त गिके ते० १४४ । व्या जर्मार । २२०७. प्रति सं० १ । पत्र सं० ४६ । ते० काल 🗴 । वै० सं० ५६६ । क भण्यार ।

न्दम्म, प्रतसं २ ३ । पत्र सं०२ से ३७ । से० काल सं०१७६४ कालिक सुदी १३ । प्रपूर्ण । वैद सं०२ पर । च मच्चार ।

२८-८. प्रतिसं २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६२ धासोज सुदी ६ । वै० सं० २८६ । वर्ष भण्यार ।

विशेष-पं नोनिधराम ने स्वपठनार्थ प्रतिनिधि की थी।

२२६०. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ५६ । ले∘ काल सं० १६५५ मासोब सुदी ११ । वै० सं० २२ । इङ् कम्बार ।

२२६१. प्रतिसंग्धः । यम संग्रेदा संग्यालयः १०६५ पाछ्यासुसी १२ । वैग्संग्रेट । वा सम्बद्धाः

> ५२६२. प्रति सं०६ । पत्र सं०६५ । क्षेत्र काल × । वे० सं०२४ । क्ष्र्यम्बत्र । विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२२६२. प्रति सं०७ । पत्र सं० ४१। कै० काल सं० १७७१ चैत्र युदी ६। दे० सं० २५। इत् मध्यार।

निर्वेष----प्रवेस्ति-- संवस्तर १७७१, वर्षे मिती वैत्र दुर्गे ६ संबसवार । सहारक-विरोध्त सहारक श्री वी १०८ । श्री देनेन्द्रकीर्तिनो सस्य प्रामानिकावि माचार्य श्री क्षेत्रकीर्ति । पं० बोसकाव ने बसई प्राप्त में प्रतिस्थिए की श्री--यन्त में यह धौर सिक्का है---

संबत् १३%२ वेसी भौते प्रतिष्ठा कराई लाडका में तदिस्यी ल्हीडलाजसा उपजो ।

२२६४. प्रति सं० म । पत्र सं० २ से ३८ । ले॰ काल सं० १७८० घावाड बुदी २ । घपूर्ण । वे॰ बं॰ २६ । ज भण्यार ।

२२६४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ते० कास 🗙 । वे० सं० ११४ । स्व सम्बार ।

नियोप---प्रति समित्र है। २७ भिन्न हैं, गुगसकालीन प्रवाद है। पं० गोवर्ड नजी के शिष्य पं० टोडरमल के लिए वेडिडियोप करवार्ड थी। प्रति वर्डनीव है।

२२६६. प्रति सं०१० । पत्र सं०१२। सै० काल सं०१७६२ वेह सुधी १४ । सपूर्ण । ३० सं० ४६३ । सामकार ।

विशेष-माचार्य शुभवन्त्र ने टॉक में प्रतिक्षिप की थी 🌃 🗥 🗥 .

च नम्बार में एक प्रति (वे० सं० १०४") क नम्बार में वो प्रतिस्व (वे० सं० १०६, १८०) बोर है। वेश्वरूक वरी वरिष्य क्षित्रक कार्यक्ष वेद्यानीओं । पंत्र सं० ७०। बांठ ११४४६ हक्षेत्र । वांवा-संस्कृत १ विषय-वरिष्य । १० काल अंभे के काल सं० १०३६ वीच बुता १२ । वे० वं० १०५ के क्षावर १

स्टब्स्क स्टब्सिक संट में प्रति संव हम् । लेल काल संट १४६४, सावन सुदी हरे । वेट संट १४२ । स இது இருந்து இருக்கு இருக்கு இருக்கு வருக்கு வருக்கு வருக்கு வருக்கு வருக்கு வருக்கு வருக்கு வருக்கு வருக்கு வரு विशेष-वह ग्रन्थ पौमसिरी से बाचार्य भ्रवनकीति की शिष्या बायिका मृक्तिश्री के लिए दयासन्दर से मुख्यम्या तथा बैसास सुदी १० सं० १७८५ को मंडलावार्य भी सनस्तकोत्तिजी के लिए नायरामजी ने समर्पित किया। विश्ह. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ते० काल × । वै० सं० ८४ । घ मण्डार । विशेष---प्रति नवीन है। भ्दे००. प्रति सं० भू। पत्र सं० ६४। से० काल स० १६६७। वे० सं० ६०६। क अण्डार । विशेष-मानसिंह महाराजा के शासनकाल में प्रामेर में प्रतिलिपि हुई। 1594 भ १११ भ वे वर् १ मित सुंदर्भ भावप संदर्भ । लेव काल संव १ द ३३ मीप, सुदी १९ । वे वृत्संव २१ । छ मन्दार । × . : .04 विशेष-समार्थ-अस्पर् से पं • समार्थ-मे ने नेमिनाम चैत्यालय मे प्रतिलिपि की मी । २३०२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७६ । ते० काल सं० भादवा बुदी १० वि० सं० ६६ । व्य भण्डार । 🛬 🐃 . विशेष---शेवहमलकी:के प्रद्वार्थ पांडे बोर्डमनहास ने प्रतिलिपि कराई थी । महासूनि ग्रस्सकीत्ति के उपदेश के सत्थकार ने यन्य की रचनाकी थी। 31344 ंके के कार्**ेर के अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति । वस्ति ।** विका-करियानाता काल अस से काल संक १०३६ न प्राप्ती । वेश संक १७२ ताला । २३८% प्रति संट २ । पत्र संट १२ । लेट काल १८२४ । वेट संट १६५ । क्टं भव्यतः 🗗 🚁 🤻 🕬 २३८४. प्रतिस्त्रं के के प्रकार के करे हैं। इस के कि काल संबंध रहे । अपर्या के लेंब हुन । उन there & Breener ... विशेष---लेखक प्रशस्ति धपुर्श है। २३०६. अकि सं ४ । पत्र सं ्र२ । मेश्र माल 🗙 । है ् सं ः २१३६ । ह अण्डार । ः क्षित्र प्रथम पत्र नुवीन लिखा गुमा है। हर एक पत्र का का का का का का २३०७. वरोधरचरित्र-परतादेव । पत्र सं० १ से २० । त्याल १०%४६ द्वा । साहा-संस्कृतः। निवयु-वृदिव ६९० काल ४ १ ते० काल ४ । सपूर्ण । जीर्ण । वे० तं० २५१ । च अव्यार ∤ा २३८८. वरोधरचरित्र—वासवसेन । पत्र तं० ३१ । बा० १२×४६ इम्र । आवा-संस्कृत । विवय पिद्वित्वरिय । रें काल सं १४६५ नाम सुरी १२ । पूर्ण | हें सं २०४ । या सम्बार ।

नंबाह्नाचे श्रीकृंदकुंदावार्यान्वये अट्टाइक श्रीपपानींब देवास्तानाट भ श्री प्रश्नवन्ददेवस्तानाटी सूर्व श्री विहासन्दरेवास्त-राष्ट्री य० थी मुमाबद्भवेवास्त्वानमाने खंडेलहालान्यने होशीयोभे या. तिहुत्या तुम्झार्य होली त्योप्रवास्त्रयः मधम साक इसर दितीय टोहा तृतीय सा. उत्हा इसरभायां प्रक्रापणी तृत्योः पुत्राः चृत्यारः पृत् सार कोहद द्वितीय सा. प्रणा तृतीय ता. ऊपर पचुर्ण सा. देवा सा. लोहट आयां लीलतारे तथीः पुत्राः पंच प्रयम पर्यवास द्वितीय सा. भीरा हतीय सूका चतुर्व होना पंचम राज्ञा सा सूका आया मुलासिर तथीपुत्र नगराज साम उपर मार्था उपनिश्त तथीः पुत्रो दो प्रयस साला हिताय खरहय- साँव देश भावा शोसिर तेयो पत्र अनित कि धर्मदास भावा धर्मश्री किरेजी धीरा भावा रसावी सा टीही भाके हैं बृहद्भीला केवी सुहार्क्य तरपुंत्रदान पुष्य बीलवान 'ता. नाल्हा तद्भीवी' नेवंका श्री सार्व उत्हा आया बाली तयोः पत्र सा. डालु सञ्चार्या डलसिरि 'पतिवामध्ये' बनुविधदान' वितरशीयार्कनित्रिय बार्शनधानस्य हार्या प्रति-पालक शावधानेमः जिल्लाकाप्रशंहरेता सदरारुपयेकानियांहरेन संपपति साह श्री शोहानामधेवेन दर्वः वास्त्रं जिल्लाका जनम-पात्राय घटापितं ज्ञानाकवर्षे कर्मक्षयः निसिक्तं ६६ े २३१०. प्रति से व रे १ पत्र से वेश । ले काल से १६६० बैशांस बुदी १६ । वे से प्रहे । क ् विशेष---मिश्र केश्वत ने प्रतिनिपि की थी । ् देवे११८ वृशोधर्वादित्रःः । पत्र संव १७ ते ४४ । प्राव ११×४६ हमा । भाषा-संस्कृत । विश्वयन्त बरित्र । र० काल 💢 । ले० काल 🔀 । झपूर्स । बे० सं० १६६१ । ঘ मण्डार । ्राम्य प्रमुख्य होते हरे. प्रतिस्तृति हे स्वयानं के द्वारा अस्ति काल अस्ति व वह के व कालार स्वयान प्राप्त प्राप क्रमात्रातः व्यक्तिके वेदा व्यक्तिके स्थापन स्थापन स्थापन संश्वासके वार्षके वार्षके वार्षके व्यक्ति व्यक्ति वार्षके व विद्यय-अधिक । स्व मामानां व इक्षव शायता सदी ६२ । के काल संव १६३० मंगलिय सुवी १९१ वर्षा । के संवर्ध Regions, he summer in many make his or in the rolls from whom the Bir auf feiter mit ber beite २३१४. यशोधरचरित्रभाषा—साशालचंद । पत्र सं० ३७ । बा० १२×४३.इक.१. बाह्यालक्षित्री.प्रक.६. विषय-परित्र। र० काल सं० १७८१ कालिक सुदी ६। शे० काल सं० १७६६ झासीज सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० tore i at mart ! or to the and a supply and a reference निती मासीज मासे शुक्काक तिथि पहिंचा वार सनिवासरे सं १७१६ खिनवा । वे श्रुवासोवी सुर खिल्वेन सिविक्तं पं क्षान्तान्त्वंद्वाची कृतिकातात्र्वी के देहरे पूर्ण कृतिकां के 1955 का 1955 कि 1958 के 1958 विवासी विवर्धा की देखस दिवासी आब्द्र के अपने हैं अन्तर है

্ত্র নালাল স্থান ১৯৯১ চন শিক্ষা দ্বিদ্ধানী সুদ্ধান কর্ম দ্বিদ্ধানী শ্রামন্ত্র করে। ১৯৮৫৮ চন ১৯৮৫ চন ১৯৮৫ চন ১৯ শ্রামনে চুক্তবালাক্ষ্ম । মুখ্য মুখ্যে মুখ্য মুখ্যে মুখ্য মুখ্যা মুখ্য হয় করে। ১৯৮৪ চন ১৯৮৪ চন ১৯৮৪ চন ১৯৮৪ চন वॅदेश्≭. वंशीवं≮वरित्र—पत्रालाला । पत्र तं॰ ११२ । ब्रा॰ १३८५ इक्सा । त्रावा—हिन्दी गणा । विषय—वरित्र । र०काल सं० १९३२ सावन बुदी ऽऽ | ले०काल ४ । पूर्त्त । वै० सं० ६०० । का पच्चार ।

विशेष--पृथ्यदेत इत यशोधर चरित्र का हिन्दी अनुवाद है।

३३१६, प्रति संs २ । प्रत्र संs ७४ । तेव काल × । वेव संव ६१२ । क भण्डार ।

२३१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल 🗴 । वे० सं० १६४ । छ अण्डार ।

२०१६. यशोधरवस्त्रि— शुतसागर । पत्र सं०६१ । झा० १२४६ हवा । जावा—संस्कृत । विवय— वरित्र । १० काल × । ले० काल सं०१४६४ फाग्रुल सुवी १२ । पूर्ण । वे० सं०५६४ । क मन्दार ।

५३००. यहाँ।धरव्यरित्र— अहारक ज्ञानकी चि । पत्र नं०६३ । सा०१२४४ दश्च । नापा-संस्कृत । विषय—वरित्र । र०काल सं०१६४६ । ले०काल सं०१६६० साक्षोत्र दुवी ६ । पूर्ण । वे०सं०२६४ । का भण्डार ।

विशेष—संवत् १९६० वर्षे प्रातीजमाते कृष्णुग्ये नवस्यातियो सोमवासरे प्रादिनायर्थेयालये मोजमावाद वास्तव्ये राजाधिराज महाराजार्थाभामात्त्रपराज्यस्वते श्रीमुलसंवेबलास्त्रारगणे स्वास्त्रायेसस्वतीमञ्चे श्रीमुलसंवेबलास्त्रारगणे स्वास्त्रायेसस्वतीमञ्चे श्रीमुलसंवेबलास्त्रारगणे स्वास्त्रायेसस्वतीमञ्चे श्रीमुलसंवेबलास्त्रारगणे सहस्तराष्ट्री महारक श्री विजयन्द्रदेवा तत्यहे श्रीमुलसंवेस्त्र हित्तस्वामायो स्वेवत्रस्त्रये राज्यस्वयस्त्र विश्वस्त्रयाचे स्वेवत्रस्त्रयाच्याचे स्वास्त्रयाचे सामग्री नोलां पुत्र चया अवस्त्रय सामग्री नामग्री नोलां पुत्र चया अवस्त्रय सामग्री नामग्री नोलां पुत्र चया अवस्त्रय सामग्री नामग्री नामग्री वहुरंगि तह्यस्त्रय स्वयस्त्रय स्वयस्त्रयाचे सामग्री नामग्री न

. २६२१. प्रति सं०२। पत्र सं०४६। ले॰ काल सं०१५७७। वे॰ सं०६०६। कक्षण्यार । विवोय — महा मतिसागर ने प्रतिलिपि की थी।

२२२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४८ । ते० काल सं० १६५१ मंगसिर बुदी २ । बै० सं० ६१० । क्र

विशेष—साह श्रीतरमल के पठनार्थ जोशी जणवाय ने मीजमाबाद में प्रतिमिषि की वी | · · · · · · · व क जण्डार में २ प्रतियां (वै० संं ६ ६०७, ६०६) और है] ं

२३२३. यशोधरचरित्रटियंश्यं—प्रशांचेषुं । पत्र संव १२ । सा० १०३८४६ इस । वाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल ४ । ते० काल संव ११८५४ वीच कुंदी ११ । पूर्ण । वे० संव ६७६१ । स्व प्रवर्णाः । काव्य एवं व्यरित्र] [१६३

विमेष--पुण्यरंत कृत यशोधर वरित्र का संस्कृत टिप्पण है। वादशाह बावर के शासनकाल में प्रतिसिधि की गई थी।

२३२४. रघुबंशमहाकाटय---महाकवि कालिहास । पत्र सं० १४४ । बा० १२६ ४५ हवा । मावा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । बायूर्स । वे० सं० ६४४ । ब्या मध्वार ।

> विशेष—पत्र सं० दर से १०५ तक नहीं है। पंषम सर्गतक कठिन शब्दों के सर्व संस्कृत में दिये हुये हैं। २३२५. प्रति सं०२। पत्र सं०७०। ले० काल सं०१ दश्भ काती बुदी ३। वै० सं०६४३। ऋ

विशेष-कडी ग्राम में पांड्या देवराम के पठनार्थ जैतली ने प्रतिलिपि की थी।

भण्डार ।

२३२६. प्रति सं ३ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १८४४ । वै० सं० २०६६ । आ अवडार ।

२३२७. प्रति सं० ४। पत्र सं० १११। ले० काल सं० १६८० भाववा सुदी द। वे० सं० १६४। स्व भण्डार।

२३२८. प्रति सं० ४। पत्र सं० १३२। ते॰ काल सं० १७८६ मंगसर सुदी ११। दे॰ सं० १४४। व्यक्तकार ।

विशेष—हाशिये पर चारों भोर शस्त्रार्थ दिये हुए हैं। प्रति मारीठ में पं॰ मनन्तकीर्ति के शिष्य उदयराव ने स्वपठनार्थ तिस्त्री थी।

२३२६. प्रति सं०६। पत्र सं०६६ से १३४। ले॰ काल सं० १६६६ कॉलिक बुदी ६। सपूर्या। वै॰ गं०२४२। छ भण्डार।

२३३०. प्रतिसं•७ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं०१ ⊏२ ⊏ पीच बुदी ४ । वै० सं०२४४ । उङ् भण्डार ।

२५३१. प्रति सं० मा पत्र सं० ६ से १७३। ले॰ काल सं॰ १७७३ मंगसिर सुदी ४ । सपूर्ण । वै॰ सं॰ १६६४। ट भण्डार ।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है तथा टीकाकार उदयहर्ष है।

हनके वातिरिक्त का अध्यार में ध प्रतियां (के सं॰ १०२८, १२६४, १२६४, १८६४, १८६४, १८६४) का अध्यार में एक प्रति (के सं० १४४ [क])। क अध्यार में ध प्रतियां (के सं० ६११, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२४, १२४, १२४)। च अध्यार में को प्रतियां (के सं० २८६, २६०) का बीर ट अध्यार में एक एक प्रतियां (के० सं० २६३, १८६६) और हैं।

२३३२ रघुपंशदीका—मक्किनाथसूरि। तम तं०२३२ । सा० १२×५६ इस । वाया-संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ते०काल × । वे० तं०२१२ । ज वण्यार ।

दे देदेरे. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ से १४१ । ते० कास × । प्रपूर्त । वे० सं० ३६८ । वा प्रव्हार ।

े २३३५ रचुनमञ्जूका पृष्ट सुमति विजयम्मि । यत्र सं० ६० से १७६ मा० १२४५३ स्त्र । साथा - संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल ४ । साम्रार्थ । वै० सं० ६२७ ।

विवोष---टीकाकाल--

निविषहरस श्रीस संवत्सरे फाल्युनसिलैकादस्यां तिथी संपूर्णा श्रीरस्तु संगल सदा कर्तुः टीकायाः । विकृतः पूर में टीका की गयी थी ।

२३२ ४. प्रति सं०२ । पत्र सं० ४४ से १४७ । ले० काल सं०१८४० चैत्र सुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० इस्टर । इक अच्छार ।

विशेष-प्रमानीराम के शिष्य पं० शम्भराम ने ज्ञानीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

विशेष---इक् भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ६२६) ग्रीर है।

२३२६. र**फुबंशटीका—समयसुन्दर** । पत्र सं०६ । मा०१०१,४४ इक्का आया-संस्कृत । विषय-काम्य । र०काल सं०१६२२ । ले०काल ४ । सपूर्ण । वे० सं०१ तथ्र भव्य भव्यार ।

विशेष—सम्प्रमृत्दर इन्त रधुवंश की टीका द्वयार्थक है। एक प्रर्थतो वही है जो काव्य का है तथा दूसरा प्रार्थ जैनाटीइकोख से हैं।

२३२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से ३७ । ते० काल ४ । प्रपूर्ण । वे० सं० २०७२ । ट भण्डार । २३२८. रचुकंसटीका—गुर्याविजयगद्धि । पत्र सं० १३७ । ध्या० १२४५३ दश्च । आया–संस्कृत । विषय-काल्य । र० काल ४ । ते० काल ४ । वे० सं० २६ । व्य भण्डार ।

ं विशेष- सरतरगच्छीय वाचनाचार्य प्रमोदमाशिग्यगशिग के शिष्य संस्थवनुस्य श्रीमत् जयसोमगशि के शिष्य प्रशासनयगशि ने प्रतिसिधि की थी।

२३३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ६२६ । इह मण्डार ।

इनके प्रतिरिक्त का अच्छार में दो प्रतिया (वे० सं० १३४०, १०८१) प्रीर हैं। केवल का अच्छार की त्रित ही कुछ्यिनसम्पर्शिकी टीका है।

२३**५०. रामकृष्याकारुय — दैवह पं० सूर्य**। पत्र सं० ३०। मा० १०% दक्का। भाषा-संस्कृत । विषय-काल्य। र०काल ×। मे०काल ×। मपूर्ण। वे० सं० १०४। द्वा मण्डार।

२२४१. रामचन्द्रिका—फेशबदासा । पत्र सं० १७६ । झा० ६४५३ हझा । माषा-हिन्दी । विधय-काव्य । र० काल × । से० काल सं० १७६६ भावता वृदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ६५५ । क्र मण्डार ।

२२४२. वरांगचरित्र—अ० वर्द्धमानदेव। पत्र मं० ४६। घा० १२४१ दश्च । जावा-संस्कृत । विचय-राजा वरांच का जीवन चरित्र । र० काल 🗙 । ते० काल सं० १४६४ कालिक सुदी १०। पूर्णः वे० सं० ३२१। वा सच्दारः

नियोग-महास्त्रि---

सं॰ १५९४ वर्षे वाके १४४९ कार्तिवमासे युक्तग्रेत रामीदिवसे वानैत्वरतासरे वान्द्रानस्त्रे मंक्स्पेने, वाक्षा नाम बहानगरे राव थी पुर्वेतीय राज्यवर्तमाने कवर वी प्रराणनक्षमताचे थी वान्तिवृत्व जिनवेत्वासये बीसून- तंत्रे ब्ह्नास्वरहायो. स्प्रस्त्वतीयको भी कुंक्नुवास्त्रां स्वत्र हैं स्वत्र स्वत्र कि क्षास्त्रस्य है कर भी स्वाहत्य है कर भी स्वाहत्य है स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्

२२४२ - प्रति सं०२ । पद्ध सं०६४ । ते० काल सं०१८६६ आसमा सुकी: १४ । के० सं०६६१ । क भण्डार ।

२२४४ . प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८६४ मंगसिर सुदी द । दे० सं० ३६० । अप भण्डार ।

२३४४. प्रति सं०४। पत्र सं०५६ । ले॰ काल सं०१८३६ फाग्रुए। सुवी१। वे॰ सं०४६ । स्क् भण्डार।

विशेष--- जमपुर के नेभिनाय चैत्यालय में संतोषराम के शिष्य वस्तराम ने प्रतिसिपि की थीं।

२३४६. प्रतिसं० ४ । पत्र सं०७६ । ले० काल सं०१८४७ वैद्याखा सुदी१ । वे० सं०४७ । इद भण्डार ।

विशेष—संगावती (संगानर) में गोवों के वैध्यालय में पं० सवाईराम के शिष्य नौनिषराम ने प्रति- धिष्य की पी।

२२४७. प्रति सं०६। पत्र सं० ३६। ले० काल सं०१६२१ आयाद सुदी ३। दे० सं०४६। इस भण्डार।

विशेष--जनपुर में चंद्रप्रम चैत्यासम में एं० राम्रचंद ने प्रतिक्रियि की बी 🖟

२.२४६. वरांगचरित्र—अर्गुं हिरि । पत्र सं० २ से १० । घा॰ १२ $^1_i \times x$ इक्ष । आया-संस्कृत । विषय-वर्गत्र । २० काल \times । के० काल \times । बहुर्ग । वे० सं० १७१ । क्ष अपर्वार ।

विशेष---प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं।

२२४०. वर्डमानकाव्य—सुनि श्री पद्मलेष्टि । यत्र सं० ४० | मा० १०%४ दखः । वृक्षा—संस्कृत । विषय-काष्य । र० काल × । ले० काल सं० १४१६,। पूर्ण । वे० सं० ३६८,। बद्ध समुद्राहा ।

इति श्रो वर्ड नान कवानतारे जिनग्रानिवतसहात्त्वप्रवर्षके मुनि भी प्रमाहि विश्वेष्ठा सुसूत्रामा विने भा वर्ड माननिर्वारणसन्त नाम द्वितीय परिच्छेदः २२.४१. वर्डमानकथा—जयमित्रहल । पत्र तं० ७३ । ग्रा० १३.४५ दवा। भाषा-पपत्रंगः । विवय-आवन्य । र० काल × । ते० काल सं० १६६५ वैद्याल सुत्री ३ । पूर्ण । वे० सं० १४३ । घ्र भण्डार ।

विशेष---प्रशस्ति-

२६४२. प्रति सं०२ । पत्र सं० ४२ । ले० काल ४ । वे० सं० १६५३ । ट भण्डार ।

२३४३. बर्द्धमानचरित्र''''''। पत्र सं०१६६ से २१२ । आः० १०४४३ दश्च । माषा∹संस्कृत । विवय-चरित्र । र०काल ४ । ले०काल ४ । प्रपूर्ण । वे०सं०६८६ । इस मण्डार ।

२३४४. प्रति सं०२। पत्र सं०६१। ले० काल 🗶। प्रपूर्ण। वे० सं०१६७४। स्त्र भण्डार।

२३४४. बर्द्धमानचरित्र— केशरीसिह। पत्र सं०१८४। मा०११४४ ६ऋ। भाषा-हिन्दी पर्वा विषय-चरित्र। र०काल सं०१८६१ से०काल सं०१८६४ सावन बुदी २। पूर्ता। वे०सं०६४८। स्क्रभण्डार।

विशेष--सवासुखजी गोधा ने प्रतिलिपि की थी।

. २५४६. विकमचरित्र—याचनाचार्य समयसोत । पत्र सं० ४ ने ४ । झा० १०४५ इझ । माधा-हिन्दी । विषय-विकमादित्य का जीवन । र० काल सं० १७२४ । तं० काल सं० १७८२ धावसा बुदी ४ । सपूर्ण । वे० सं० १९४ । का मण्डार ।

विशेष--उदयपुर नगर में शिष्य रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२३४७. विद्रश्वसुखसंडन—बौद्धाचार्य घर्महास । पत्र सं० २०। घा० १०३४५ इक्षः । आया— संस्कृत । विषय-काल्य । २० काल ४ । ते० काल सं० १०५१ । पूर्ण । वे० सं० ६२७ । का पण्डार ।

२३४ म. प्रति संट २ । पत्र संट १ म । लेट काल × । वेट संट १०३३ । का अध्दार ।

२३४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० ६५७ । क भण्डार ।

विशेष-जयपुर मं महाबन्द्र ने प्रतिनिधि की थी।

२३६०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४ । ले॰ काल सं० १७२४ । वे० सं० ६४८ । क अच्छार ।

विशेष-संस्कृत में टीका भी दी है।

२३६१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले॰ काल ४ । वे॰ सं॰ ११३ । छ भण्डार ।

विषोष---प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

प्रथम व अन्तिम पत्र पर गोल मोहर है जिस पर निका है 'श्री जिन नेवक साह वादिराज जाति सोगार्छा पोमा दुत । २३६२, प्रतिसं०६ । पत्र सं०४७ । ते० काल सं १२१४ वैण युवी ७ । वै० सं० ११४ । स्व सम्बार ।

विशेष--गोघों के मन्दिर में प्रतिलिपि हुई थी।

२३६३. प्रतिसं०७ । पत्र सं०३३ । ले० काल सं०१ ८८१ पीप बुदी ३ । वै० सं०२७८ । आ अध्यार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है।

२३६४. प्रति सं• मः । पत्र सं० २० । लें० काल सं० १७४६ संगक्तिर बुदी मः । वै० सं० ३०१ । आप अच्छार ।

विशेष--प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२३६४ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३ ६ । ते० काल सं० १७४३ कालिक बुदी २ । वै० सं० १०७ । व्य अध्यार ।

विशेष---प्रति संस्कृत टीका सहित है। ठीकाकार जिनकुशलसूरि के शिष्य क्षेत्रचन्द्र गिए हैं।

इनके प्रतिरिक्त क्क्षामण्डार में २ प्रतियां (वे॰ सं॰ ११३, १४६) क्या मण्डार में एक प्रति (वे॰ सं[‡] १०७) प्रीर है।

२३६६. विद्यायमुख्समंडनटीका—विनयरका। पत्र सं० ३३। घा० १०६×४३ इका। भाषा-संस्कृत । विषय—काव्य । टोकाकाल सं० १५३५ । ते० काल सं० १६८३ घासोज सुवी १०। वे० सं० ११३। छ मध्यार ।

२३६७. विश्वारकाव्य—कालिदास । पत्र सं०२ । मा०१२४५३ इंग । माया-संस्कृत । विवय-काव्य । र०काल × । ले०काल सं०१०४६ । वै० सं०१०५३ । इस मध्यार ।

विशेष--जयपुर में चण्डप्रम चैत्यालय में भट्टारक सुरेन्द्रकीलि के समय में लिखी गई थी।

२३६८. राषुप्रसुप्तप्रस्थ-सम्बद्धन्दरास्ति । पत्र सं० २ से २१ । बा० १०३/४५ इंब । बाबा-हिन्दी । विवय-प्रीहस्स, संबुद्धनार एवं प्रसुन्त का जीवन । १० काल × । से० काल सं० १६१६ । बपूर्त्त । वे० गं ७०१ । इस्प्रस्ता ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

तंत्रत् १६५६ वर्षे विजयसम्यां भीस्तंत्रतीर्मे श्रीहुरूसरतराण्याभीभार श्री विक्षीयित पातिसाह जलालहीन प्रकारसाहित्रवत्तपुगन्नपानग्वपारक श्री ६ जिनवन्तपुरि सूरस्वराणां (सूरीभाराणां) वाहिसनस्वस्तरस्वापिता पात्रार्वशीजिनीतहसूरियुर्गरिकराणां (सूरीस्वराणां) विष्य पुरुष पंत्रित सकत्तवन्तपारी ताण्यस्य वा॰ समयपुणस्वास्तिया भोजेससमेद वास्त्रार्थे नानायित सास्त्रिवाररसिक सौ॰ सिवरीय समस्यर्थनमा स्तः श्री संक्षप्रसानप्रसाने प्रवशः संकः। ें पृष्ठिक, रहिनिक्कावधित्र--काजितात्रसम्हि । पण सं० १६६ । सा० ६३/४३ इस । गाया-संस्कृत । विषय--वरिष । र० कास × । ते० कास × । सपूर्ण । वे० सं० १०२४ । इस मण्डार ।

बिमोष---१६६ से मागे के पत्र नहीं हैं।

२९७०. प्रति सं०२। यत्र सं०६ से १०१। से० काल सं०१७१४ पीष बुवी १४। प्रपूर्ण। वे० "०१६२०। इ. मण्यार।

२२७१. शान्तिनाथबरित्र—अहारक सकतकीति । वन वं० १९४ । बा० १२४५३ इवा । माना-संस्कृत । विवय-चरित्र । रंथ काल अ । केण काल संग् १७०६ चैत्र सुत्री ४ । सपूर्तः । के, संग् १२६ । व्यापकार ।

२६७२. प्रति सं० २। पत्र सं० २२६। ने० काल 🗴। वे० सं० ७०२। 🖝 भण्डार।

विशेष--तीन प्रकार की लिपियां हैं।

रेश्चिरे प्रति की० रे । पत्र की० २२१ । ते० काल सं०१८६३ माह बुदी ६ । वे० सं० ७०३ । इस् सम्बार ।

विश्वेय---विविश्वं ग्रुरजीरमञ्जल समाई वयनगरमध्ये वासी नेवटा का हास संगही मालावता के यन्त्रिय सिक्षी । सिकान्यतं चंपारामजी खावडा सवाई जयपुर मध्ये ।

२२.७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८७ । ले० काल सं० १.२६४ फाग्रुस हुदी १२ । वे० सं० ३४१ । च कथार ।

विशेष-वह प्रति क्योजीरामजी दीवान के मन्दिर की है।

२३ ७४. प्रति सॅ॰ ४ । पत्र सं॰ १४६ । ले॰ काल सं॰ १७६६ कार्तिक सुदी ११ । वे॰ सं० १४ । छ। सम्बद्धाः

विशेष--सं• १८०३ फेड बुदी ६ के दिन उदयरात ने इस प्रति का संशोधन किया था।

२३७६ महि संब ६ । पत्र सं० १७ से १२७ । से० काल सं० १८८६ वैद्यास सुदी २ । मपूर्ण । वे० सं० ४६४ । स्व मण्डार ।

विसेष--- महात्वा पन्नाताल ने सवाई जयपुर में प्रतिसिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त सं, का तथा द मण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १३, ४८६, १८२८) और है।

२३५७. शास्त्रिअद्वर्षेपर्द्र—सर्तिसागर। पत्र सं∘ । प्रा० १०६४४६ दश्चः । भाषा–हिन्दी । तिवय— वरित्र । र० काल सं० १६७८ प्राप्तीत्र बुदी ६ । से० काल ४ । प्रपूर्ण । वे० सं० २१४४ । घर अच्छार ।

विशेष---प्रथम पत्र ग्राधा फटा हुया है।

२३७८. प्रति संब २ । पत्र संव २४ । तेव काल 🗴 । वेव संव ३६२ । व्य अवसार ।

२२७६. शासिमद्र चौचर्डुःःःः। यत्र तं ρ ४ । मा σ $\pi \times \xi$ इ.सं । जाया-हित्यो । विवय-चरित्र । रक्तक्त \times । क्रक्तं । देन सं σ २६० ।

विक्रीय---रवना में ६० पद्य हैं तथा अबुद्ध मिकी हुई है । धन्तिम पाठ नहीं है ।

HICKS-

श्री सांसर्ग बाक्क सुमस्यि वर्द्ध मांन विनर्वदं । अलीइ विषन दुरोहरं सामै प्रमानंद ।।३॥

२६=०. सिद्धुपासायधा—सद्यक्तिक साम्रो । पत्र संव ४६ । धान १११६५५ इसा । नापा-संस्कृत । विषय—कान्य । र० काल × । ते काल × । सपूर्ण । वे० स० १२६६ । च्या सम्बार ।

२३८१. प्रति सं⊳ २ । पत्र सं० ६३ । ते॰ काल × । वै॰ सं० ६३४ । स्व अध्यार ।

विशेष---पं० लक्ष्मीबन्द के पठनार्थ प्रतिसिधि की गई थी।

. २३८२. शिष्टुपासस्य टीका—पश्चितास्युरि। पत्र सं०१४४। या०११६४४३ इकः। माथा— संस्कृत । विषय-कृष्ट्य । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वे० सं०१३२ । व्यापस्थार ।

विशेष--- ह सर्व हैं। ऋषेक सर्व की पत्र संस्था धलग है।

२३६३. प्रति सं०२ । पत्र सं०१७ । ले॰ काल 🗴 । वै॰ सं०२७६ । ज्ञा भण्डार ।

विशेष--केवल प्रवंग सर्ग तक है।

२३८४. प्रति सं०३ । पत्र सं० ५३ । ते० काल × । वे० सं० ६३७ । आह अण्डार ।

२३८४. प्रति सं०४ । पत्र सं०६ से १४४ । से० काल सं०१७६६ । झपूर्ण । वे० सं०१८४ । आ अध्यार ।

२३=६. अवस्प्रयुषस्—नरहरिसष्टु । पत्र सं० २५ । सात्र, १२३×६ इक्का । वाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । के० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५३ । इस वस्तार ।

विशेष---विदम्धमुखमंडन की व्यास्या है।

प्रारम्थ-द्यों नमी पार्श्वनाषाय ।

हरवंक्च किमंब किम तब कारता तस्य बांदीकता इत्यं कि बारजन्मगोक मन पार्वदाक रे स्थावित तातः । कृष्यति वृक्षताविति विद्यासकुं सत्यं कता-माकाने जवति प्रसारित कर स्वंदरमामणी ।।११। यः साहित्ययुर्वेकुर्वरक्कीर रस्त्याक्वरंबतः । कृष्यते सैवायम् प्रमायुर्व्या विकायुव्यवंक्यमुक्ताम्या ।।२।। प्रकाराः सेतु बृक्को विकायुव्यवंक्ये । सवापि मत्कृतं भावि युक्कं क्षुत्रस्य-वृक्षयं ।।१।।

धन्तिम पुष्पिका—इति श्री नरहरम्हृबिरचिते अवसामूवसी चतुर्वः परिच्छेदः संपूर्णः ।

मण्डार ।

I TIMEN

९६०. जीवासचरित्र--मानेसित्स्य ।यत्र सं० ६८ । धा० १०३४१ इंच । कावा-संस्कृत । विवय-चरित्र । **१० काल सं० १४८१ । ते० काल सं० १६४३ । पूर्व** । वे० सं० २१० । छा प्रचार ।

विक्षेष---लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है। प्रशस्ति---

> २३ प्रम. प्रति सं०२ । पत्र सं०६६ । ते० काल सं०६ प्रभः । ते० सं०६२६ । क्र अध्वार । २३ प्रति सं०२ । पत्र सं०४२ । ते० काल सं०१ प्रभः ज्वेष्ठ सुदी३ । वे० सं०१६२ । क्र

विश्वेष---मालवदेश के पूर्णांसा नगर में धादिनाय चैत्यालय में उत्त्व रचना की गई थी। विजयराम ने सक्कपुर (टोडारार्बासह) में धपने पुत्र वि॰ टेकचन्य के स्वाध्यायार्थ इसकी तीन विन में प्रतिनिधि की थी।

यह प्रति पं॰ सुसलाल की है। हरिदुर्ग में यह ग्रन्थ मिला ऐसा उल्लेख है।

२३६०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३६। ले० काल सं० १८६५ मासोज सुदी ४। वे० सं० १६३। स

विशेष—केकड़ी में प्रतिलिपि हुई थी।

२३ ६१. प्रति सं०४ । पत्र सं०४ २ से ७६ । ले० काल सं०१७६१ सावन सुदी ४ । वे० सं० अरु सम्बार ।

विशेष---वृत्वावती में राय बुधसिंह के शासनकाल में प्रत्य की प्रतिलिपि हुई थी।

२३६२. प्रति सं०६ । पत्र सं०६० । से० काल सं० १८३१ फायुरा बुदी १२ । वे० सं०३८ । क्र भव्यार ।

विशेष-स्वाई जयपुर में खेताम्बर पंडित मुक्तिविजय ने प्रतिलिपि की थी।

२३६३. प्रति संब्धापत्र संब्धः । लेव काल संब्धः दिन् चुनी १४ । वेव संब्धः उर्धा ज

भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में पं॰ ऋषभवास ने कर्मकवार्ष प्रतिनिधि को भी । २३६४: प्रति सं० द । पत्र सं० ४४ । से० काल सं० १८२६ माह सुदी द । वे० मं० ६ । व्य अध्वार । विशेष—पं॰ रामकरवी के शिष्य सेवकराम ने कवपर में प्रतिनिधि की थी ।

२३६४. प्रति सं०६ । पत्र सं०४ वाले काल सं०१६४४ आववासूदी १। वे० सं०२१३६ | ट मण्यार ।

[**२०१**

बाव्य एवं चरित्र ी

विशेष—हनके प्रतिरिक्त का मण्डार में २ प्रतियां (के तं० २३३, २४६) का, हा तया का मण्डार में एक एक प्रति (के० सं० ७२१, ३६ तवा न्द्र) और हैं।

२३६६. श्रीपास्त्रचरित्र—अ० सकस्त्रकीचि । पत्र सं० ११ । बा० ११×४६ स्त्र । मापा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल ४ । ले० काल सक सं० १६१३ । दुर्सा । वे० सं० १०१४ । क्य मण्यार ।

विशेष--बहुप्रवारी मास्त्रकवंद ने प्रतिनिधि की थी।

२३६.७. प्रति सं०२ । पत्र सं०३२ ८ । ले० काल सं०१७६५ फायुन बुदी १२ । वै० सं०४० । इङ् मण्यार ।

विशेष---ताररापुरु में मंडलाबार्य रत्नकीति के प्रक्षिच्य विष्णुरूप ने प्रतिलिपि की बी।

२३६६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल ४ । वे० सं० १६२ । जा अण्डार ।

विशेष---यह ग्रन्थ विरंजीलाल मोठ्या ने सं० १६६३ की भादवा बुदी द को चढाया था।

२३६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ (६० से बद्द) लेक्काल 🗴 । पूर्ण । वै० सं० ६७ । अर्थ सम्बद्धार ।

विशेष--पं० हरलाल ने वाम में प्रतिलिपि की थी।

२४८०. श्रीपालाचरित्रः****। पन सं० १२ से ३४। सा० ११ $\frac{1}{4}$ × $\frac{1}{4}$ हक्का । जाया-संस्कृत । विषय-वरित्र । र० काल × । से० काल × । सपुर्यो । वै० सं० १६६३ । इस जम्बार ।

२४०१. श्रीपालचित्रग्र \cdots । पत्र सं० १७ । आ० ११३ \times ५ इक्ष । आया—सप्रभंत । विषय-चरित्र । ए० काल \times । से० काल \times । सपूर्यों । वे० सं० १६६६ । द्वा अध्यार ।

२४०२. श्रीपालचरित्र—परिशक्षा । यम सं० १४४ । मा० ११४८ हंच । भाषा-हिन्सी (पदा) । विचय-वरित । र० काल सं० १६४१ । मायाड बुदी द । से० काल सं० १९३३ । पूर्ण । वे० सं० ४०७ । ब्हू सम्बार ।

२४०३ . प्रति सं०२ । पत्र सं०१६४ । ले० काल सं०१८६८ । वे० सं०४२१ । क्या प्रवार । व्यटन्ट . प्रति सं०३ । पत्र सं०५२ से १४४ | ले० काल सं०१८५६ । वे० सं०४०४ । क्युर्टा । क्य

भक्डार ।

विशेष---महात्मा ज्ञानीराम ने जवपुर में प्रतिलिपि को वी। दीवान शिवचन्दवी ने प्रत्व लिखवाना था। २५०४. प्रति सं० ४। पण सं० १६। ले॰ काल सं० १८८६ पीच दुवी १०। वै० सं० ७६। स भण्यार।

विशेष---प्रम्य धागरे में प्रालमगंज में लिखा था।

२४८६. प्रति स०४ । पत्र सं०१२४ ॉले॰ काल सं०१≪६७ वैद्याला सुदी ३ । वे० सं०७१७ । ॐ त्रच्यार ।

विशेष--- नहारमा कालूराम ने सवाई जबपुर में प्रतिनिधि की बी ।

307

J. 6 ...

मुक्त मुद्दि सुंद दे । पुत्र सुंद १०१। लेव काल संद १८१७ बालीज बुदी ७। वेव संद ७१६। व

२४० मा बुदी २। वे० सं० ६०२। ले० काल सं० १८६२ माय बुदी २। वे० सं० ६८३। चू

मण्डार ।

. ...

२५०६. प्रतिसंबद्धापत्र संबद्धा सेक काल संक १७६० पीच सुदी२ |वेक संक १७४ | छ। १०११ - १९९१ - -

विशेष-पुटका साइज है। हिएए में प्रतिविदि हुई थी। सन्तिम १ पत्रो में कर्मप्रकृति वर्णन है जिसका रूप स्थापन स्थापन क्षेत्र क्षेत्र के स्थापन क्षेत्र के स्थापन स्थापन

्राप्ति स्वि है। यज सं∘ १३१। ले॰ काल सं० १८८२ सायन बुदी ४। वे० सं० २२८। उक्त रहा का का

भण्डार । विशेष—दो प्रतियों का मिश्रसा है।

विश्वीय—इनके वितिरिक्त का सण्डार में २ प्रतिया (वे० सं० १०७७, ४१०) या सण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०४) का सण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ७१४, ७१०, ७२०) छ, सा बौर ट सण्डार में एक एक विति वे० सं० २१४, २२६ और १६१व) और हैं।

२४१९. श्रीपालावरित्रः मार्गं पत्र सै० २४ । मा० ११६४८ हवा । भाषा-हिन्दी गरा । विषय-वरित्र । २० काम 🗴 । सैंग काम सै० रैन्टर्श पूर्ण । वै० सै० १०३ । घ अव्यार ।

२४१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ७०० । क भण्डार ।

२४१३. प्रतिसं०३ । पत्र स० ४२ । लेश्काल सं०१६२६ पीव मुदीद । वेश्सं० ८०। स अभ्यार ।

देश्वरिश्च. प्रति सं० ४ । पत्र सं∙ ६१ । के० काल सं० १६३० फाग्रुस मुदी ६ । वे० स० ६२ । वा मध्यार ।

२४१४. प्रति स्ं०४ । पत्र सं०४२ । ते० काल सं०१६३४ फाग्रुन बुदी ११ । वे० सं०२५६ । अ अभ्यार ।

विशेष--- समालाल पापडीवाल ने प्रतिक्रिप करवायी थी।

२४१६. प्रति सं०६। पत्र सं०२४। ते० काल ×। वे० सं०६७४। का प्रकार। २४१७. प्रति सं०७। पत्र सं०३३। ते० काल सं०१६३६। वे० सं०४४०। का प्रकार।

२४१८. श्रीपासकरित्र.....। पृतु सुं० २४ | सा्० ११६% = हुन्नु । आणा- हिन्दी | विषय-वरित्र । र० काल × । ले∙ काल × । बपूर्शा। वै० सं० ६७५ ।

> विशेष--- २४ से आगे पत्र नहीं हैं । दो प्रतियों का मित्रम् हैं है २४१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वै० सं० ८१ । ग अण्डार ।

विशेष--कालूराम साह ने प्रतिनिपि की बी ।

२४२०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ते० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० सं० ६८४ । 🔻 मण्डार ।

२४२१. श्रेतिकचरित्र""" पत्र सं० २७ से ४८। धा० १०×४३ दश्च । भाषा-प्राकृत । विषय-वरित्र । र० काल × । ले० काल × । बपूर्ल । वै० सं० ७३२ । इन भण्डार ।

२४२२. श्रेशिकचरित्र--- म० सकलकीस्ति । पत्र सुं० ४६ । मा० ११×१ इत्र । भाषा-संस्कृत । विवय-वरित्र। र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । मपूर्ण । वे० सं० ३५६ । 🖷 मण्डार ।

२४२३. प्रति सं०२ । पत्र सुं० १०७ । ले॰ कालु सं० ६५३७ क्र्यूलुकु सुदी । प्रपूर्ण । वे० सं० २७ । छ भण्डार ।

विशेष-वो प्रतियो का मिश्र्रा, है।

२४२४. प्रति सं० के। पत्र सं० ७० ६ से० कास् 🗙 । के० सं० २व । 📺 मण्डार ।

विशेष-दो प्रतियों को मिलाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है।

२४२४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८१। ले० काल सं० १८१८ । वे॰ सं॰ २६। ह्यू अण्डार ।

२४२६, अशिक्षादित्र-- स० शुस्त्रनद्द । पत्र सं० ८४ । सा० १२४५ इंब । सावा-संस्कृत । विवय-वरित्र । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १ ५०१ ज्येष्ट्र बुद्दी ७ । पूर्श । वे० सं० २४६ । व्या मृष्णार ।

विशेष--टोंक में प्रतिलिपि हुई थी। इसका दूसरा नाम मविष्यत् पद्मनामपुराण् भी है

२४२७. प्रति सं २ २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १७०८ चैत्र बुदी १५ । वे० सं० १६४ । स क्ष्ण्यार ।

> २४२८. प्रति सं०३ । पत्र सं०१४६ । ले० काल सं०१६२६ । वे० सं०१०५ । घ भण्डार । २४२६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १३१। ले० काल सं० १८०१। वै० सं० ७३४। 🛎 मण्डार। विशेष---महात्मा फकीरदास ने लखुराौती में प्रतिसिपि की बी।

२४३०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४६ से० कास सं० १५६४ मानूब सुदी १० । वे० सं० ३४२ । च

मण्हार । २४३१. प्रति सं०६। पत्र सं० ७४। ले॰ काल सं॰ १८६१ श्रावरण बुबी १। वे॰ सं० ३५३ 🕊

मच्डार ।

विशेष--- वयपुर में जदयचंद खुहाड़िया ने प्रतिलिपि की थी।

२४२२. अधिकवरित्र—सहारक विजयकीर्ति । पत्र संग् १२६। माग् १०४४६ इंब । भाषा-हिन्दी। विषय-वरित्र । रण्काल संग् १८२० कावुस बुदी ७ । लेण्काल संग् १६०३ पीय सुदी ३ । पूर्ण । वैण्सं० ४३७ । का कथार ।

विशेष---प्रत्यकार परिश्वय--

विजयकीर्त अट्टारक जान, इह माचा कीची परमाण । संवत सठारास बीच, काप्रण बुदी साते सु जगीस ॥ बुध्यार इह पूरण मई, स्वाति नक्षण बुद्ध जोग सुवर्ष । गोत पाटणी है युनिराय, विजयकीर्त्त महारक याथ ॥ तसु पटमारी श्री युनिजानि, बब्बान्यानपु गोत पिछाणि । विकासकर्मीर्त्तारिपराज, नितर्ज्ञत साचय सातम काज ॥ विजयसृति विधि दुतिय सुजाण श्री बेराव देश तसु प्राप्त । सर्वेचन्य सहारक जान, ठोल्या गोत वरच्यो प्रमिराम । मल्यलेड विधासण मही, कारंजय पट सोमा नहीं ॥

२४३३. प्रति सं०३ । पत्र सं० ७६ | ले० काल सं०१ यय ३ ज्येष्ठ सुदी ४ । वे० स० यह । स सम्बद्धाः

विशेष---महाराजा श्री जयसिंहजी के शासनकाल में जयपुर में सवाहराग गोधा ने धारिनाण जैत्यालय ने प्रतिलिपि की थी । मोहनराम चौचरी पांड्या ने प्रत्य सिक्साकर चौधरियों के जैत्यालय मे चढ़ाया ।

२४३४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० व६ । ले॰ काल 🗙 । वे॰ सं॰ १६३ । छ भण्डार ।

२४३४. क्रोसिक्षपरिक्रमाद्याः......। पत्र सं० ५५। ग्रा० ११×५६ इ.च.। भ्रापा-हिन्तीः विषय-वरिषा १० काल 🗴 । से० काल 🗴 । ग्रपुर्ता । वै० सं० ७३३ । इस् मण्डार ।

२४३६, प्रति सं० २ | पत्र सं० ३३ से ६४ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण | वे॰ सं० ७३४ । 🖝 भण्डार ।

२४३७. संभवजिद्यासाहणस्वि (संभवनाथ परित्र) तेजपासः । पत्र सं० ६२ । मा० १०४५ इंच । प्राचा-सपत्रं सः । विषय-परित्र । र० काल 🗴 । ते० काल 🗴 । वै० सं० ३६५ । च जप्यार ।

२४२६. सागरदणचरित्र—हीरकवि । पत्र सं॰ १६ से २० । घा० १० $\times v_{\pi}^2$ इंच । आया-किसी । विषय-वरित्र । १० काल सं० १७२४ घासोज सुदी १० । ले॰ काल सं० १७२७ कालिक बुदी १ । प्रपूर्ण । वे० सं० <8x। प्र अध्यार ।

वियोध-प्रारम्भ के १७ पंत्र नहीं हैं।

ढाल पबतालीसमी गुरुवानी---

1729 संवत् वेद युग जारणीय मुनि शक्षि वर्ष उदार ।। सुग्रुरण नर सांभलो० ।। मेदपाढ माहे निक्यो विजद दशमि दिन सार ।। १ ।। सुगुराः गढ जालोऱइ युग तस्युं लिखीउए प्रधिकार । ब्रमृत सिथि योगइ सही श्रयोदसी दिनसार ।। ६ ।। सु० भाइव नास महिना घली पूरल करवी विचार। भविक नर सांभ्रलो पचतालीस ढाले सही गाथा सातसईसार ।। ७ ।। सु० सूंकइ गच्छ लायक यती वीर सीह जेमाल। गुरुं भांभरण श्रुत केवली थिवर ग्रुखे चोसाल ।। 🗷 ।। सु० समरथियर महा मुनी सुंदर रूप उदार । तत विष भाव धरी भग्रह सुग्रह तग्रह झाधार ।। ६ ।। सु० उछी अधिक्यों कह्यो कवि चातुरीय किलोल। मिथ्या दुःकृत ते होज्यों जिन सासद चउसास ।। १० ।। सु० सजन जन नर नारिजे संभली लहइ उल्हास । नरनारी धर्मातिमा पंडित म करो को हास ।। ११ ।। सु० दुरजन नइन सुहाबई नहीं भावद कहे दाय। मासी बंदन नादरइ प्रसुचितिहां चलि जाय ।। १२ ।। सु॰ प्यारो लागइ संतमइ पामर चित संतोष। दाल भली २ संभली विते थी दाल रोष ।। १२ ।। सु० भी गच्छ नायक तेजसी जब लग प्रतपो भाग्य । हीर मुनि बासीस बद हो ज्यो कोडि कल्यारण ।। १४ ॥ सु० सरस ढाल सरसी कवा सरसो सह ग्रधिकार । होर मुनि गुरु नाम भी घारांद हरक उदार ।। १५ ।। सु०

इति श्री ढाल सागरवत्त चरित्र संदूर्णः। सर्व गाया ७१० संबद् १७२७ वर्षे कार्तिक बुदी १ दिने लोम-भासरे लिखतं भी धन्यशी ऋषि भी केसवजी तत् शिष्य प्रवर पंडित पूज्य ऋषि श्री ४ मामाजातदेतेवासी लिपिकृतं श्रुनिसावलं प्रात्मार्थे। जोधपुरमञ्जे। सुनं भवतु ।

रथरेट. सिरियासचरिय—पंक नरसेन। पत्र संक ४७। बाक ६६४४६ इ.च.। नावा-मपत्र सः। विषय-राजा श्रीपाल का जीवन वर्षांन । रक्ष्मल ×। तेक्काल संक १६१४ कार्तिक सुदी ६ । पूर्वा । वेक संक ४१०। व्यासम्बद्धार

विश्लेष-प्रिन्तम पत्र जीर्रा है। तक्षकगढ नगर के बादिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

२४४७०. सीताचरित्र—कवि रासचन्द (बालक)। पत्र सं० १००। झा० १२४८ इख । भाषां⊸ ँ क्विची पद्य । विषय-वरित्र । र० काल सं० १७१३ मंगसिर मुद्री ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० ७००।

विशेष---रामचन्द्र कवि बालक के नाम से विख्यात थे।

२४४१. प्रति सं०२ | पत्र सं०१ काल × । वै० सं०६१ । हा भण्डार ।

२४४२ - प्रति सं०३ । पत्र सं०१६६ । ले० काल सं०१ यय कालिक बुदी १ । वे० सं०७११ । अर अथ्यार ।

विशेष---प्रति सजिल्द है !

२४४२२. सुक्कमालचरिक— श्रीघर । पत्र सं० ६४ । घा० १०४४ है इक्का। भाषा–घपत्रंपा । विषय– सुकुमाल सुनि काजीवन वर्सीन । र० काल × । बेर० काल × । सपूर्सा वि० सं० २८६ । खाधण्डार ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

२४४४. सुकुमालाचरित्र— अरु सकलकोत्ति । पत्र सं∘ ४४ । आ ० १०४४६ दश्च । भावा–संस्तृत । विषय–वरित्र । र० काल ४ । ते० काल सं० १६७० कार्तिक सुदी ⊏ । पूर्ण । वे० सं० १४ । व्या मण्डार ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

संबन् १६७० शाके १४२७ प्रवर्तमाने महामागत्वप्रकातिकमाने बुद्धन्य प्रध्या तियौ सोमवामरे नागपुरमध्ये श्रीचंद्रप्रवर्तालये श्रीमुत्तसंव बलात्वराग्ये सरस्वतीयच्छे श्रीचंद्रप्रवादायांचये भट्टारकभीरपर्गदिदेव। तत्यहें भ० श्रीप्रमंददेव। तत्यहें भ० श्रीप्रमंददेव। तत्यहें भ० श्रीप्रमंदिव। तत्राच्ये स्थित्यवे स्थापाये स्थापाये स्थाप्य त्याप्य प्रमंदिव। त्याप्य स्थाप्य त्याप्य त्याप्य त्याप्य प्रमाप त्याप्य त्याप्य त्याप्य प्रमाप त्याप्य स्वराप्य स्वर्प त्याप्य स्वर्पा स्वर्प व्यव्य स्वर्पाय स्वर्पाय स्वर्पाय स्वर्पाय स्वर्प स्वर्प व्यव्य स्वर्पाय स्वर्प स्वर्पाय स्वर्पाय स्वर्प्य स्वर्पाय स्वर्यं स्वर्य स्वर्पाय स्व

२४४४. प्रति सं०२ । पत्र सं०४ मा ने० काल सं०१७ मा वे० सं०१२४ । इस मण्डार । २४४६. प्रति सं०३ । पत्र सं०४२ । ने० काल सं०१ मध्य नुदी १४ । वे० सं०४१२ । इस मण्डार ।

200

विशेष---महात्मा राधाकृष्णा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

२४४७. प्रतिसं०४ । पत्र सं०२६ । ले० काल सं०१६१ वे० सं०३२ । छ अण्डार ।

विशेष---कहीं कहीं संस्कृत में कठिन शब्दों के सर्थ भी दिये हुए हैं।

२४४⊏. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १८४६ ज्येष्ठ बुदी ४ । वे० सं० ३४ । छू अव्यार । विशेष—सांगानेर में सवाहराम ने प्रतिसिधि की थी ।

२४४६. प्रति सं०६। पत्र सं०४४ । से० काल सं०१६ पौत्र बुदीऽः। वै०सं० ८६। स्र भण्डार।

विशेष--- पं० रामचन्द्रजी के शिष्य सेवकराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

इनके प्रतिरिक्त **छ, क, छ,** भ, सवाद्य भण्डार में एक एक प्रति (वै० सं० ६६४, ३३, २, ३३४) स्रोर है।

२४४०. सुकुमालचरित्रभाषा—पं० नाथुबाल दोसी । प्रत्न सं० १४३ । घा० १२३४४३ हता। भाषा—हिन्दी गण । विषय-चरित्र । १० काल सं० १६१८ सावन सुदी ७ । ले० काल सं० १६३७ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ८०७ । क अण्डार)

विशेष--- प्रारम्भ में हिन्दी पद्य में है इसके बाद वसनिका में हैं।

२४४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० दथ । ले० काल सं० १६६० । वे० सं० द६१ । उन मण्डार ।

२४४२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६२। ले० काल 🗙 । वे० सं० ६६४। 🖝 भण्डार |

२४४२. मुकुमालचरित्र—हरचंद रांगवाला । पत्र सं० १४२। मा०११४४ इक्ष । भावा-हिली पद्य । विषय-चरित्र । र०काल सं० १६१८ । ते० काल सं० १६२६ कालिक सुदी १४ । पूर्वा । वे० सं० ७२० । च भण्डार ।

२४४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७४ । ले० काल सं० १६३० । वे० सं० ७२१ । व अण्डार ।

२४४.स. सुकुमालचरित्र......) पत्र सं०३६। घा०७ \times ५ इ.ख.। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल \times । ले० काल सं०१८३३। दूर्या। वे० सं० ६६२। इर भण्डार।

विशेष-फतेहलाल भावसा ने जयपूर में प्रतिलिपि की थी। प्रथम २१ पत्रों में तत्वार्थसूत्र है।

२४४६. प्रति सं०२। पत्र सं०६० से ७१। ले॰ काल ×। अपूर्ण। वै॰ सं० ५६०। इन अण्डार।

२४४७. पुत्रतिधान—कवि जनलाश्च। पत्र सं० ४१। बा०११३४५, इजा । शाया-संस्कृत। विवय-चरित्र । र॰ काल सं०१७०० घालोज सुदी १० । ले॰ काल सं०१७१४ । पूर्ण। वै० सं०१९६। खा अकार।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

```
. tom
                                                                                     कारुय एवं चारित्र
                 संबद् १७१४ फाल्युन सुदी १० बीजाबाद ( मोजबाबाद ) मध्ये श्री ब्राहीश्वर जैत्यासये लिखितं पं
     वामीवरेसा ।
                 २४४८. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१। बे० काल सं० १८३० कालिक सुदी १३। वे० सं० २३६। व
     मुखार ।
                 २४४६. सुदर्शनचरित्र---भ० सकलकीचि । पत्र सं० ६० । आ० ११×४५ इक्क । भाषा- संस्कृत ।
    विवय-वरित्र । र० काल 🗴 । ले॰ काल सं० १७१५ । प्रपूर्ण । वे॰ सं॰ 🖘 प्र भण्डार ।
                 विशेष--- ५६ से ५० तक पत्र नहीं हैं।
                 प्रशस्ति निम्न प्रकार है-
                संबत १७७५ वर्षे मात्र शुक्लैकादश्यांसोमे पुरुकरज्ञातीयेन मिश्रजयरामेगोदं सुदर्शनचरित्रं लेखक पाठकयोः
    श्वर्भ भ्यात ।
                नेप्रहर. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ६४ । ले० काल 🗴 । सपूर्ण । वे० सं० ४१४ । च भण्डार ।
                २८६९. प्रति सं० ३। पत्र सं० २ से ४१। ते० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० सं० ४१६। च भण्डार ।
                २४६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५० । ते० काल × । वे० सं० ४६ । छ मण्डार ।
                २४६३. सदर्शनचरित्र-- ऋग्र मेक्सिटक्त । पत्र सं० ६९ । ग्रा० ११×५ इश्व । भाषा-संस्कृत । विषय-
    चरित्र । र∙काल × । ले० काल × । पूर्वा। वे० सं० १२ । स्त्र भण्डार ।
                २४६४. प्रति सं० २ | पत्र सं ६६ | ते० काल ×। ते० सं० ४ | ऋ भण्डार !
               विकोष---प्रशस्ति अपूर्वा है। यथ ५६ से ५० तक नवीन निसे हए है।
               न्ध्र£क्ष. प्रति सं०३ । यत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४२ फायुगा बुदी ११ । वे० सं० २२६ । स्व
    संबद्दार ।
               ·विसेष---साह मनोरच ने मुकंबदास से प्रतिनिधि कराई थी।
               नीचे- सं० १६२६ में अवाह बूबी १ को पंo सुलसीदास के पठनार्थ ली गई।
               २४६६. प्रति सं०४ । पत्र सं०३ ६ । ले॰ काल सं॰ १६३० चैत्र बुदी ६ । वे० सं०६२ । व्य
    अण्डार ।
               विक्रेय---रामचन्द्र ने अपने शिष्म सेवकराम के पठनार्थ सिसाई।
                २४६७. अति सं० ४ । पत्र सं० ६७ । ले॰ काल 🗴 । वै० सं० ३३१ । का अध्यार ।
               व्रक्ष्यः. ब्रिति संबद्धाः पत्र संबध्धः । ते काल संबद्धः कातुन सुवी २ । वे संव २१६६ । ट
    Megic :
               विशेष--लेखक प्रशस्ति विस्तृत है।
```

२०६

२४६६. सुरर्शनचरित्र—सुमुजु विद्यानदि । यत्र तं० २७ मे ३८ । प्रा० १२५४६ इस । माषा-संस्कृत । विदय-चरित्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । प्रपूर्ण । वै० सं० ८६३ । क भण्डार ।

२४७८. प्रति सं०२ । पत्र सं०२१६ । ले० काल सं०१६१६ । वे० सं०४१३ । च भण्डार ।

२४७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल 🔀 । प्रपूर्ण । वै० सं० ४१४ । च अण्डार ।

२४७२, प्रतिसं०४ । पत्र सं०७७ । ले० काल सं०१६६५ भाववा बुदी ११ । वे० सं०४ ६ । छ् भण्डार ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

म्राप संवत्तरिति श्रीपृति (श्री नृपति) विक्रमादित्यराज्ये गताव्य संवत् १९६४ वर्षे भावौँ दुदि ११ पुर-वासरे हृध्णारके मर्ग लागुरदुर्ग गुभस्याने प्रश्वातिगजपतिनरपतिराजत्रय मुद्राधिपतिश्रीमन्साहिसलेमराज्यप्रवर्तमाने श्रीमत् काष्ठामंथे माधुरगच्छे पुष्करगागे लोहाचार्याच्ये श्रष्टारक श्रीमलयकीत्तिदेवास्तरपट्टी श्रीष्ठणभद्रदेवातत्पट्टी श्रष्टारक श्री भानुकीनिदंवा तराष्ट्री स्ट्रारक श्री कुमारश्रीणस्तदान्नाये इस्वाकृषे जैसवालान्वये अकुराशिणात्रे पालंब सुभस्याने जिनवेत्याच्ये मावार्यग्रमकीतिना पठनार्थ लिक्षितं ।

२४७३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १८६३ वैशाल बुदी ४ । वे० सं० ३ । म भण्डार ।

विशोय—वित्रकृटेगढ़ में राजाधिराज रांखा श्री उदयिवहनी के शासनकाल में पार्वनाथ वैद्यालय में म० जिनवन्द्रदेव प्रभावन्द्रदेव ग्रांदि शिष्यों ने प्रतिलिपि की । प्रशस्ति श्रपूर्ण है ।

२४७४. प्रति सं ६ । पत्र सं० ४५ । ले॰ काल 🗴 । वे॰ सं॰ २१३६ । द्व अण्डार ।

२४७४. सुन्दरीलकरित्रः****। पत्र सं० ४ से ४६ । सा० १९ $_{2}^{4} \times V_{2}^{2}$ देखा। भाषा-संस्कृत । विषय-चरित । र० काल imes । ते० काल imes । सपूर्ण । वै० सं० १९६८ । आर अध्वार ।

> २४७६. प्रतिसं०२ । पत्र सं०३ से ४० । ०ले काल ४ । अपूर्णावे० सं०१६६४ । ऋस अण्डार । विशेष—पत्र सं०१,२,६ तथा ४० से अपने के पत्र नहीं हैं ।

२४७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल 🗴 । बपूर्ण । वे० सं० ८५६ । इस मण्डार ।

२४७८- सुदर्शनचरित्र''''''। पन सं० ४४ । आ ० १३४८ दक्कः । भाषा-हिन्दी गष्टा विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ता । वे० सं० १६० । इद भण्डार ।

२४७६. सुभौसवरित्र—अश्वरतनचन्द् । यत्र सं० ३७ । झा० ६३४४ इक्का। भाषा—संस्कृत । विषय-सुभौस वक्कपत्ति का ओवन वरित्र । र०काल सं० १६६३ आववासुदी ४ । ते०काल सं० १६४० ! पूर्ण । वै० सं० ४४ । इक्ष भण्डार ।

विशेष—विवुध तेजपाल की सहायता से हेमराज पाटनी के लिये प्रत्य रचा गया। पं० सवाईराम के खिप्य नौनदराम के पठनार्थ गंगाविष्णु ने प्रतिलिधि की वी। हेमराज व अ० रतनवन्द्र का यूर्ण परिचय दिया हुमा है। 336] ाशाम । हार रेप्ट्र के प्रति संव रे. पत्र संव रेप्र 1 से काल संव रेप्टर वेद्मल सुद्धि १ विव संव १४१ । व ्र विशेष हेमराज पाटनी के लिये टोजराज की सहायता से ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी। २४८१. हनुसच्चरित्र—त्र> खिता। पत्र सं० १२४। मा० १०३×४३ दश्च। भाषा–संस्कृत। विषय-वरित्र । र० काल × । ले॰ काल सं० १६८२ वैद्याख बूदी ११ । पूर्ग । वे० सं० ३० । ऋ भण्डार । ₩ 1 = 2 . Is . T विशेष-- मृगुक-खपूरी में श्री नेमिजिनालय में ग्रन्य रचना हई। प्रशस्ति निम्न प्रकार है---संवत् १६८२ वर्षे वैद्यासमासे वाहलपक्षे एकादश्यांतियौ काव्यवारे । निस्तापितं पंडित श्री शावल डदं वास्त्रं लिखितं जीधा लेखक ग्राम वैरागरमध्ये । ग्रन्थाग्रन्थ २००० । २४६२. प्रति सं०२ । पत्र सं०६४ । ले० काल सं०१६४४ चैत्र बुदी ४ । वे० सं०१४६ । ऋ शक्दार । २४८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १५२६ । वे० सं० ५४६ । क भण्डार । २४८४. प्रति संव ४ । पत्र संव ६२ । नेव काल संव १६२८ वैशास सूदी ११ । वेव संव ८४६ । क 7 24 4 2 3 3 4 4 २४ म. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १००७ ज्येष्ठ सुदी ४ । वे० सं० २४३ । स्व विशेष--तुलसीदास मोतीराम गंगवाल ने पंडित उदयराम के पठनार्थ कालाबेहरा (कृष्यपद्वत) में प्रति-लिपि करवायी थीं -१४८६: प्रतिर्व्स**० ६। पत्र** सं० दर। ले० काल सं० १८६२। वै० सं० **६६**१ वा अध्यार। २४८७. प्रति सं० ७। पत्रं सं० ११२। ने० काल सं० १५८४। वे० सं० १६०। छ भण्डार। · *** विशेष ← लेखक प्रशस्ति महीं है 4 २४८८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३१ | लें० कॉल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० सं० ४४४ । 🕶 अवडार । विशेष-र-प्रति प्राचीन है। १ को प्राप्त स्थापिक भीते सैं और स्थाप से व वह में सेव साल 🔀 भे वेव सेव १व कि भण्डार 🕆 विशेष--प्रति प्राचीन है। * 12 * ा १६००० । अप्रदेशक प्रति संद १० । पत्र संव ६७ ५ सेव काल संस १६३३ कॉलिक सुरी ११ | हेव संव १०८ स । व्य सम्हार । . 人名英阿萨马 "我们还一定一家的女,""这个 विशेष--- लेखक प्रशस्ति काफी विस्तत है। अट्टारक पचनंदि की ग्राम्नाय में संदेशवाल जातीय साह गोत्रोत्पन्न साधू श्री बोहीय के बंध में होने वाली बाई सहसालदे ने तीसहकारण व्रतीबापन में प्रतिसिप कराकर बढाई।

रप्रदेश प्रति सं ८११। पत्र सं० १०१। ते० काल सं० १६२६ मंगतिर सुवी ४। वे० सं० १४७। स्रो संस्थित कि राज्यक राज्यामा । ते क्या राज्यक राज्यक हो। वे० हो उनके । हागावन्त्रीय विक्री अधिक

न्नावकर राज्यक्षिक्याके के बाह्य विश्व कार्या में हैं बीच बीच में प्रतिसिधि कार्या किया गाँउ रीमा पार कार्यहमां नापर कार राज्य के अपने कार्या के कार्या कार्या कार्या कार्या के कार्या के स्वता के स्वता कार्या कार्या कार्या के स्वता के स्

प्रशासक के प्रतिकृति के प्रति

२४६४, प्रति संब २ । पत्र संब ४१ । तेव काल संब १८२४ । वेव संक्ष १९४६ मिक्क विकास है हिंगी। २४६६, प्रति संब २ । पत्र संब ७५ १ किया काल संब १९४५ । सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद्ध स्थाप

भृष्डार । १ १ म १ १

भण्डार ।

ा १८८१ । १८८४ १८८४ में १८५४ ६ने १८८६ एक गीए ५ ६३ विशेष—साह कालुराम ने प्रतिनिधि करवायी थी।

र १९०३ को स्वर्धन है. से स्वरूप के सुक्र कुछ है। हैस्स के स्वरूप स्वरूप से स्वरूप से स्वरूप से स्वरूप से स्वरूप से 1 सीचे कियाना स्वरूप स्वरूप से सामीर का स्वरूप से साम से से साम स

विशेष—सं १८५६ मंगसिर बुदी १ शनिवार की शुवालाल्यी वंती वालों के पढ़ीं पर संबीची वे मन्दिर में यह बन्य मेंट किया गया।

्राप्त प्राप्त स्थितम् प्रति संव ४। पत्र संव ३०। लेव काल संव १७६१ कालिक सुनी ११। वेव संव २०३। क

विशेष-वनपुर ग्राम में वासीराम ने प्रतिलिपि की थी।

२४६६. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४०। ले० काल 🗴 । वे० सं० १६६ । छ भण्डार ।

२४००. प्रति सं० ७। पत्र सं० ६४ । ते काल्या । प्रपूर्ण । वे० सं० १४१ । मा अण्डार ।

विशेष---भ्रन्तिम पत्र नहीं है।

२.४०१. हारावति—महामहोपाध्याः । पत्र सं० १३। मा० ११%६ इत्र । आया-संस्कृत । विवय-काण्य । २० काल ४ । ले० काल ४

रेश्र०२. होलीरेसुकाचरित्र—पं० जिल्लाचे पण सं० १६। मा० ११×५ रखा। नाया-संस्कृत । विवय-चरित्र । र० काल सं० १६०८ । ते० काल सं० १६०८ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १५ । फा जम्बार ।

विशेष---रवनाकाल के समय की ही प्राचीन प्रति है प्रत: महत्वपूर्श है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

स्वस्ति श्रीमते वांतिनायाय। संवत् १६०६ वर्षे ज्येष्ठमाते गुक्रस्ते द्यामीतियौ गुक्रसार हस्तनकात्रे श्री रिक्तस्त स्वास्तानगरे तेरपुरनाम्नि श्रीवांतिनायाजनवैत्यालये श्री धालमसाह साहिमालम श्रीवल्तमसाहराज्यप्रवर्तमाले श्रीवृत्तसंव वास्तानगरे तेरपुरनाम्नि श्रीवांतिनायाजनवैत्यालये श्रीध्रमान्य साहिमालम श्रीवल्तमसाहराज्यप्रवर्तमाले श्रीवृत्तसंव वास्तानगरे वास्तानाम्य साहिमालम् श्रीवित्यस्त स्वास्तान्य स्वास्तान्य साहिमालम् श्रीवित्यस्त स्वास्तान्य स्वास्तान्य स्वास्तान्य स्वास्तान्य स्वास्तान्य स्वास्तान्य साहिमालम् साहिमालम्य साहिमालम् साहिमालम् साहिमालम् साहिमालम् साहिमालम् साहिमालम् साहिमालम्य साहिमालम्य साहिमालम्य साहिमालम्य साहिमालम्य साहिमालम्य साहिमालम् साहिमालम् साहिमालम्य साहिमालम् साहिमालम् साहिमालम्य साहिमालम् साहिमालम्य साहिमालम् साहिमालम्य साहिमालम्

२.४०३. प्रति सं०२ । पत्र तं०२०। ते० काल ४ । वे० तं०३६ । स्र्यायण्डार । २.४०४. प्रति सं०३ । पत्र तं०४४ । ते० काल तं० १७२६ माप मुदी ७ । वे० तं० ४५१ । चा मण्डार ।

विशोष——गह प्रति पं • रायम् के द्वारा कृष्वावती (बून्दी) मे म्यग्रनार्थ वन्द्रप्रभु चैत्यान्य मे लिखी गई थी। कवि विनवास रायथंभीरगढ के समीप नवसक्षपुर का रहने काला था। उसने शेरपुर के शान्तिनाय भैत्यालय में सं॰ १६०८ में उक्त प्रत्य की रचना की थी।

> २.४०४. प्रति सं०४ । पत्र सं०३ से ३४ । ले० काल 🗵 । सपूर्ण । वे० सं०२१७१ । ट भण्डार । विशेष—प्रति प्राचीन है ।



कथा-साहित्य

२५८६. इत्रक्तलेकदेवकथा''''''। पत्र सं \circ ४ । द्वाः १० \times ४३ दश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रः काल \times । ले॰ काल \times । सपूर्ण । वे० सं \circ २०५६ । इ. अपदार ।

२.४०७. ऋत्त्वयिभिमुष्टिकाविधातम्भतक्षा''''''। पत्र सं० ६। सा० २२×६ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-कवा । र०,मार्ल × । ले० काल × । बपूर्ण । वै० सं० १८३४ । ट भण्यार ।

्र्रेश्र्यः आठारहनाते की कथा—ऋषि लालावन्द्र। पत्र सं० ४२। आ० १०४६ इक्का। माषा— हिन्दी। विषय—कथा। र० काल सं० १८०५ माह सुदी ४। ले० काल सं० १८८३ कालिक बुदो ८। वे० सं० ६६८। का भण्डार।

विशेष---धन्तिम भाग-

संबत घठारह पचडोतर १८०५ जी हो माह सुदी पांचा गुरुवार। भराय मुहुरत सुभ जोग मैं जी हो कथरा कहारे सुवीचार ।। धन धन ।।४६६।। श्री चीतोड तस्हटी राजियो, जी हो ऋषि जीनेश्वर स्याम। श्री सीध दोलती दो घरणी जी हो सीध की पूरी जे हाम ।। माहा मुनि० धन० ।।४७०॥ तलहटी भी सींगराज तो, जी हो बहुलो खब परीवार ! बेटा बेटी पोतरा जी हो अनधन अधीक अपार ।। माहा मुनि० धन० ।।४७१।। श्री कोठारी काम का धएी, जी हो छाजड सो नगरा सेठ। था रावत सुरात्मा स्पोखह दीपता जी हो झोर बाण्या हेठ ॥ माहा झुनी० धन० ॥४७२॥ भी पुन्य मग छगीडवी महा जी हो भी विजयराज वांसांसा। पाट परागर मांतर जी हो ग्रुए। सागर ग्रुए। बाए। ।। माहा मुनी० धन० ।।४७३।। संभागी सीर सेहरो जी हो साग मुरी कल्याए। परवारा पूरो सही जी हो सकल वातां सु बीयाए।। माहा मुनी० धन० ।।४७४॥ धी बीजबेगरी गीडवोधराी जी हो भी भीम सागर पुरी पाट। श्री तीलक सुरंद बीर जीवज्यो जी हो सहसग्रुगों का याटै ।। माहा सुनी० घन० ।।४७५।। साथ सकल में सोमतो जी हों ऋषि लालबन्द सुसौंस ! घठारा नता चोबी कवी जी हो ढाल भगी इसतीस ।। माहा मुनी० धन० ॥४७६॥ ईती भी वर्मउपदेस बाठारा नाता वरीत्र संपूर्ण समाप्ता ।।

क्षित्रतु चेती सुवकुवर जी भारज्या जी भी १०६ भी भी भी भागाजी तत् सत्तरणी जी भी भी बगडजा . भी रामकुवर जी। भी सेवकुवर जी भी वंडनरणाजी भी दुरहडी मरातां सुरातां संपूर्ण।

संबत् १८८३ वर्षे साके वर्षे मिती ग्रासोज (काती) वदी द में दिन नार सोमरे। ग्राम संग्रामगडमध्ये संदूर्ण, चोचासो तीजो कीचो ठाए। १।। की थो छो जदी लखीइ छ जी। श्री श्री १०८ श्री श्री मासत्या जी क प्रसाद सकोइ छ सेकूली।। श्री श्री मासत्या जी यांचवाने प्ररथ। प्रारक्ता जी वाचवान ग्रास्थ ठाएए।। ६ ।।

२४८६. स्थनत्त्वसुर्वेशी कथा—नद्या झानसागर। वत्र सं० १२ । या० १०%१ इझ । आवा-हिन्दी। विवय-कथा। १० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ४२३। द्या अध्यार।

२.४१०. श्रनन्तचतुर्देशीकथा—सुनीन्द्रकीचि । पत्र सं० १ । झा० ११×४ इझ । आषा-प्राकृत । विषय-कथा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३ । च मण्डार ।

२.४११, क्यानन्तचतुर्दैशीक्याः''''''। पत्र सं० ३। झा० १.४६ दक्षा आया-संस्कृत । विषय-क्या। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण | वै० सं० २०५ । स्कृषण्डार ।

२.५१२. श्रनस्तक्रतियानकथा—सदनकीत्ति । पत्र सं०६ । या० १२८५ इक्क । जापा–संस्कृत । विषय—कथा । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वे०सं०२०५६ । ट मण्डार ।

२४१३. व्ययनन्त्रवर्षाः शुनसागर् । पत्र सं०७। सा०१० \times ४५ दश्च। भाषा-संस्कृतः। विषय-कथाः। र०काल \times । ले०काल \times । पूर्णः। वै०सं०६। स्व जण्डारः।

विशेष-संस्कृत पद्यों के हिन्दी ग्रर्थ भी दिये हुये हैं।

इनके प्रतिरिक्त साभण्डार में १ प्रति (वै० सं०२) क भण्डार में ४ प्रनिया (वे० सं०६, १०, ११) इस मण्डार मे १ प्रति (वे० सं०७४) मीर हैं।

२४**१४. श्रमन्तन्नतकथा—अ० पद्मानन्दि**। पत्र सं०४। झा० ११×५ इक्च। आषा⊸संस्कृत । विषय– कथा। र० कान ×। ने० कान सं०१७६२ सावन बुदी १। वे० सं०७४। छ सण्डार।

२४१४.श्रनस्तक्षत्र्या******। पत्र सं \bullet ४ । स्राठ ७२/२५ इ**श्च** । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र \circ काल imes । क्षेर्ण । वे \circ सं \circ ७ । इन्न भण्डार ।

२.५१६. प्रति संट२ । पत्र संट२ । लेट काल 🔀 । झपूर्गा । वेट संट२१८० । ट भण्डार ।

२४१७. व्यनन्तक्रवाः****। पत्र सं॰ १०। मा० ६×३ डब्रा । मायाः-संस्कृत । विषय-कथा (जैनेतर) र० काल ×। ले० काल सं० १०३० भाववा सुवी ७ । वे० सं० १४७ । ह्यू भवडार ।

√ेर¥रैं... व्यनन्तक्रकम् — खुराक्षवन्य । पत्र सं० ४ । मा० १०×४३ इक्का । साया—हिन्दी । तिषय— कवा । र० काल × । ते० काल सं० १८३७ ग्रासोज बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६९६ । व्या मण्डार ।

रिश्र

२.४१६. कांजनचोरकथा***** पत्र सं० ६। बा० वर् \times \times र्दु इख । आया-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल \times । ले० काल \times । बपूर्त । वे० सं० १९१४ । ट अण्डार ।

२.४२०. ऋषाढपकादशीसहास्त्र्य**** **। पत्र सं०२ । सा०१२% ६ इक्राः । नाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल imes । ले०काल imes । पूर्णे । वे० सं०११४६ । का मण्डार ।

विशेष---यह जैनेतर ग्रन्थ है।

२४२१. श्रष्टांगसस्यर्दशं नकथा—सकत्नकीत्ति । पत्र सं० २ से ३६ । प्रा० ७६४६ इत्र । मापा-गंस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । से० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२१ । ट मण्डार ।

विशेष--कुछ बीच के पत्र नहीं हैं। भाठों भङ्गों की भलग २ कवायें हैं।

२४२२. श्रष्टांगोपास्थान—पंश्येभाषी । पत्र संश्रेद । झा०१२६४४, इखा। भाषा—संस्कृत । विदय—क्या । र॰ काल ४ । तेश काल ४ । पूर्णावेश संश्रेद । इस अध्यार ।

२४२३. ब्राष्टाहिकाकथा—अ० शुभवंद्ग । पत्र सं० ८ । प्रा० १० \times ४५ दृश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-तथा । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ३०० । का अध्वार ।

विशेष—क्य जण्डार में ३ प्रतियां (वै० सं० ४०५, १०७०, १०७२) बा जण्डार में १ प्रति (वै० सं० ३) क्र जण्डार मे ४ प्रतियां (वै० सं० ४१, ४२, ४३, ४४) च जण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० १४, १६, १७, १८, १६, २०) तथा छ जण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) और हैं।

ॅ२×२४: ऋष्टाह्विकाकथा—नथसस्य । पत्र सं०१८ । मा०१०३×१ इख्र । भाषा-हिन्दी गणः । विषय-कथा । र० काल सं०१६२२ फाग्रुल मुदी ४ । ने० काल × । पूर्वा वे० सं०४२४ । इस भण्डार ।

विशेष-पत्रों के चारों भोर बेल बनी हुई है।

दसके प्रतिरिक्त क भण्यार में ४ प्रतियां (वै० सँ० २७, २५, २६, ७६३) ग्राभण्यार में १ प्रति (वै० सं०४) क भण्यार में ४ प्रतियां (वै० सं०४४, ४६, ४७, ४८) च भण्यार में ४ प्रतियां (वै० सं०५०६, ४१०, ४११, ४१२) तथा छ भण्यार में १ प्रति (वै० सं०१७६) भीर हैं।

इसका दूसरा नाम सिद्धचक व्रतकथा भी है।

२.४२४. ब्यष्टाह्यकाकौमुदी'''''''। पत्र सं० ४ । सा० १०४४ ३ दश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-क्या । र० काल ४ । ने० काल ४ । सपूर्ण । वै० सं० १७११ । ट मण्डार ।

२५२६. ऋष्टाह्मिकान्नतकथाः'''''''। यत्र सं० ४३ । सा० १०%६३ दक्ष । आया-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल \times । से० काल \times । समूर्यो । वे० सं० ७२ । कृत्र सम्बार ।

२४२७. स्टाहिकाजतकथासंध्रम्—गुराचनस्स्रि । यत्र तं० १४। या० २ $\frac{1}{2}$ र्र्यः इक्षः। भाषा—संस्कृतः। विषय-कथा। २० काल \times । ले० काल \times । पूर्वः। वै० तं० ७२। छ प्रण्यारः।

२४२.स. कारोकरोहियोकथा-- श्रुतसागर । पत्र सं० ६ । बा०१०१.४१ इझ । आया-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल ४ । ले० काल सं०१ ८६४ । प्रयो । वे० सं०३५ । इस्र अण्डार ।

र्रश्य स्थानिकरोहिस्गीत्रतकथाः.....। पत्र सं० १८ । मा० १०६४५, इक्का । सावा-हिन्दी गर्छ । विदय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण | वे० सं० ३६ । इक् पण्डार |

्रध्दे०. काशोकरोहियोजितकथा******। पत्र सं०१० । झा० ८२,४६ इंच। भाषा-हिन्दी गयः। र० काल सं०१७८४ पीप बुदी ११। पूर्ण । बे० सं०२८१। ऋ भण्डार।

२४३१. खाकाशपंचमीव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ६ । झा० ११३,४६५ रंव । भाषा-संस्कृत । विचय-कथा । र० काल × । ते० काल सं० १६०० श्रावसा सुदी १३ । पूर्ल । वे० सं० ५१ । क भण्डार ।

२.४३२. द्य कारापंचभीकथा***** पत्र सं० १ से २१। आ० १० \times ४५ दंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कवा । र० काल \times । ले० काल \times । अपूर्ण । वे० सं० ५० । ङ मण्डार ।

२४३३. खाराधनाकथाकोष****** पत्र सं० ११८ से ३१७ । ग्रा० १२×५३ दश्च । भाषा-संग्रहत । विषय-कथा । १० काल × । के० काल × । खपूर्ण । वै० सं० १९७३ । खा मण्डार ।

विकोष— आप भण्डार में १ प्रति (वै० सं० १७) तथा ट भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २१७४) और है तथा दोनों ही अपूर्ण हैं।

२१२४: बारधनाकवाकोरा''''''''''' पत्र सं० १४४। बा० १०१×५ इ'च। आपा-संस्कृत । विषय-क्या । र० काल × । ले० काल × । बसूर्या । वै० सं० २०६ । व्य वण्डार ।

विशेष--- = ४वी कथा तक पूर्ण है। ग्रन्थकर्त्ता का निम्न परिचय दिया है।

श्री प्रवसंगे बरभारतीये गच्छे बनास्कारगरोति रन्ये । श्रीकुंबकुंदास्वपुनीप्रवंशे जातं प्रभाजन्यमहायतीन्द्रः ।।१।। देवेंद्रबंदार्कसम्मान्तिन तेन प्रभाजन्यपुनीश्वरेशा । धनुवहार्ये रावित सुवान्येः धाराजनासारश्वाप्रवन्धः ।।६।। तेन क्रमेशीव स्था स्वसनस्या स्तानैः प्रसिद्धैर्दनानगर्वते सः । मार्गन क्रि बाकुकरप्रकाशे स्वलीलया गच्छति सर्वलीकः ।।।।।

प्रत्येक कथा के अन्त में परिचय दिया गया है।

२४२४. श्वाराधनासारमधंध-प्रभावन्द्र । पत्र तं॰ १४६ । या० ११४४ इ.च. । भाषा-संस्कृत । विषय-कवा । र० काल × । ले० काल × । स्रपूर्ण । वै० सं० २०६५ । ट अण्डार ।

विशेष--- १६ से माने तथा बीच में भी कई पत्र नहीं है।

२४२६. च्यारामसीभाकमः।'''''। पत्र सं०६। मा०१० \times ४३, दंग। प्रावा-संस्कृत । विवय-कवा। र० काल \times । पूर्ण (वै० सं० ८३८। च्या प्रम्बार ।

विशेष--जिन पूजाफल क्यायें हैं।

प्रारम्भ---

सन्बदा श्री महावीरस्वामी रावगृहेपुरे समयासर्वृत्वाने भूवो प्रुत्य विकामिये ॥१॥ सद्धर्ममूलसम्परस्वं नैमेत्यकरलो सता । यतम्बमित तीपेवा वक्तिदेवासिपर्वेदि ॥२॥ वेवपूजादियोराज्यसंबदं सुरसंपर्वं । निर्वेशिकसांबापि सन्तर्ते निर्वेशे क्षतः ॥३॥

मन्तिम पाठ---

यावर् वी पुते राज्यं नाम्ना यलयपुंतरे |
विचानि सफले तावरकरिष्यामि निजं जनु ॥७१॥
पूरि नत्ना गुरे गरवा राज्यं जिल्ला निजाने ।
प्रारानयोभयानुको राजेश्वतपुण्यंद्वे । १६॥
प्रधात वर्षसिद्धातं संविक्तपुण्यंद्वे । १६॥
प्रधात वर्षसिद्धातं संविक्तपुण्यंद्वे ।
एवं संस्थापयामास ग्रीनराजी निजे पर्षे ॥७७॥
गीतायांवे तत्रारानयोभाग्ये द्रण्युक्तये ।
प्रविक्तिपदं प्रायत् द्रष्टसत्त्युल्युक्तये ।
प्रविक्तिपदं प्रायत् द्रष्टसत्त्युल्युक्तये ।
विचयदाविप स्वर्यस्यदं प्रायत्वेरं ॥७६॥
तत्रस्थुश्या क्रमादेती नरता सुदता वराव ।
एवं भोरतीयंक्रव्यमको फलवाक्यं पुंतरं ।
कार्यस्तरूक्तपुण्यो क्रमादेती मरता सुदता वराव ।
पूर्व भोरतीयंक्रव्यमको फलवाक्यं पुंतरं ।
कार्यस्तरूक्तपुण्यो क्रमादिवा प्रमासका ॥६१॥
।। इति जिनक्षवा विचये बारायवां शाक्या संपूर्णः।

संस्कृत वस संस्था २८१ है।

२५२≒. ऋष्यसंबंधकमा—सभयचन्द्रायि । पत्र सं∘ ४ । सा० १०४४३ रंव । यापा–प्राकृत । विचय—कथा । १० काल ४ । ते० काल सं० १६६२ ज्येष्ठ तुरी १ । पूर्ण । वे० सं० द४० । का अध्वार ।

> विशेष—धार्यवरात्मप्रस्ता सीवेरा समयवंदगशिराय माहरणचन्द्रप्रारां महाक्यं प्यारकरसर् ॥१२॥ इति रिस्त संबंधे छ ॥१॥

श्री श्री पॅ० श्री श्री सार्यादविजय मुनिमिलींख | श्री किहरोरमध्ये संवत् १६२२ वर्षे अठ वदि १ दिने | २४२६. श्रीचयदानकसा—झ०नेश्रियत्त | पत्र सं०६ | ग्रा०१२% ६ इंच | भाषा-संस्कृत । विषय-कथा। र०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । सपूर्या । वै० सं०२०६१ | टामस्वार |

विशेष--- २ से ५ तक पत्र नहीं हैं।

२४४०. कठियारकानकरीचौपई—सानसागर । पत्र सं० १४। झा० १० \times ४५ इंच । आपा-हिन्दी । विषय-कथा । २० काल सं० १७४७ । ते० काल \times । पूर्य | वे० सं० १००३ । का भण्डार ।

विशेष---ग्रादि भाग।

थी गुरुम्योनमः ढाल जंबुद्धीप ममार एहनी प्रथम—
युनिवर बार्बसुहिस्तिक्या इक ब्रवसरइ नयइ उजेरणे माविवारे ।
बरण करण बतथार प्रश्माण मागर बहु परिवारे परिवस्थाए ॥१॥
वन वादी विश्राम लेह तिहां रह्या बोह शुनि नगर पठाविया ए ।
यानक मांगण काज युनिवर मान्हता महानदः बरि माविवा ए ॥२॥
नैठानी कहे ताम विष्य पुन्हे केहनास्यै काजे माल्या इहां ए ।
मार्वसहस्तिना सीच मन्हे सां श्राविका उचाने पुरु से तिहाए ॥३॥

श्रन्तिम---

सत्तरे सैताले समै म. तिहां कीघो चौमास ॥ मं० ॥
सदयुरु भा परसाद ची म. पूगी मन की बास ॥ म० ॥
मानवागर सुख संपदा म. जित सागरतािश लोस ॥ मं० ॥
सापुतराग युरुषाधवां म. पूरी मनह चगीत ॥
दिन पट क्या कोस ची म. पदीवो ए सिकार ।
मिंद को उद्यो नावीयो मं. निष्ठा युक्द कार ॥
नवमी दाल सोहामजी मं० गीडी राम युरंग ।
मानवागर कई सोमली दिन दिन वचती रंग ॥ १० ॥

इति श्री सील विषय कठीबार कानवरी चौपई संपूर्ण ।

कवा-साहित्व]

२४४१. कथाकोरा—हरिवेद्याचार्य । पत्र सं० ४६१ । बा० १०४४ ई इंच । जावा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल सं० १८६ । ले० काल सं० १४६७ पोष सुधी १४ । वे० सं० ६४ । व्य वण्डार ।

विशेष--संघी पदारच ने प्रतिलिपि करवायी थी।

२.४४२. प्रतिसं०२ । यत्र सं०३१८ । घा०१०४५ दृष्टांचाले० काल१८३३ मादवाबुदीऽऽ।वै० गं०६७१ । क अथ्यार।

२४४३. कथाकोश---धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३६ से १०६ । झा० १२४५३ इंच । आषा-संस्कृत । विषय-कथा । ए० काल ४ । ले० काल सं० १७६७ झवाड बुदी ६ । सपूर्या । वे० सं० १६६७ । इस सम्बार ।

विशेष-- १ से ३८, ५३ से ७० एवं ८७ से ८६ तक के पत्र नहीं हैं।

लेखक प्रशस्ति---

संबत् १७६७ का प्रासादमासे कृष्णुपक्षे नवस्मा शनिवारे प्रविभारको गरीतस्याहाजी ग्रहमदस्याहजी महाराजाियराज राजराजेस्वरमहाराजा श्री उभैतिहजी राज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसंवेसरस्वतीमञ्जे बलात्कारगरी नंबास्माये कुंवकुंदाचार्यान्वये मंडलाचार्य श्रीरत्नकीत्तिजी तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीश्रीयहेल्क्सीत्तिजी तत्पट्टे मंडलाचार्य्य श्रीश्री श्रीरत्नकीत्तिजी तत्प्रहे मंडलाचार्य्य श्रीश्री श्री श्री श्री १०० श्री प्रमंतकीत्तिजी तदास्माये बहुप्यारीजी किसनदासजी तत् शिष्प पंडित स्मतारामेग् वतक्याकोवास्य श्रीस्वस्थानां ।

२,४४४. कथाकोश (आराधनाकथाकोश)—त्र० नेभिवृत्तः । पत्र सं० ४६ से १६२ । सा० १२,६४६ ंव । भाषा-संस्कृतः । विषय-कथा । र० काल × । ते० काल सं० १८०२ कालिक बुदी ६ । झपूर्णः । वे० सं० २२६६ । इत्र अच्छारः ।

२४४४. प्रति संव २ । पत्र संव २०३ । तेव काल संव १६७४ सावन बुदी ११ । वैव संव ६८ । क भण्डार ।

विशेष---लेखक प्रशस्ति कटी हुई है।

इनके प्रतिरिक्त इक मण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) च मण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३४) इङ् मण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६४, ६५) और हैं।

२.४५६. क्रम्याकोशाः.....। पत्र सं०२४ । प्रा०१२imes१३ इंच । आया—संस्कृत । विषय—कथा। र० काल imes1 ले० काल imes1 प्रपूर्ण । वै० सं०४६ । चुमण्यार ।

विशेष—— च मण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० १७, १०) ट मण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २११७ २११०) मीर हैं।

२.४४७. कथाकोरा*****। पत्र सं०२ से ६८ । झा०१२ \times ५३ इंच। आषा-हिन्दी। विवय-कवा। र०कास \times । ते० कास \times । स्रपूर्ण। वै० सं०६६। क अध्वार।

र्रेप्रेट्स- कंबीरलस्रोगर-नार्रेचन्द्रं । पत्र सं δ १ | मां० १० ξ \times ४ ξ दश्च । माया-संस्कृत । विषय- * कया । र० काल् \times । सैं δ कैले \times । पूर्ण । वे δ सं δ १२१४ं । का मध्येर ।

विशेष---वीच के १७ से २१ पत्र हैं।

्रेटेंटेंट. कंबोर्समह—क्रम्बासानसंतर । पत्र सं० २५ । बा० १२×६६ इझ । मात्रा-हिन्दी । विषय-क्या । र० काल × । ते० काल सं० १८५४ बैगाल बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । ख्र अध्वार ।

नींम कथां	पंत्रं	पश संख्या
[१] त्रैलोक्य तीज कथा	१ंसे ३	५२
[२] निसल्याष्ट्रमी कथा	४ से ७	44
[३] जिन रात्रिवत कया	७ से १२	e 5
[४] मष्टाह्मिका वत कथा	१२ से १४	ХZ
[४] रक्षत्रधन कथा	१४ से १६	6 €
[६] रोहिंगी बत कथा	१६ से २३	£X
[७] मार्वित्यवार कथा	रेवे से २५	₹७

२४४०. कथासंग्रह्णःःः। पत्र सं०३ से ६ । मा०१० \times ५ है इस्र । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय-क्या । र०काल imes । ले०काल imes । वै० सं०१२६३ । प्रपूर्त । क्य पण्डार ।

२.४८१. कथासंबद्धः'''''| पत्र सं∘ १४ । घा० १२४७३ इंच। भाषा–संस्कृत हिल्दी। विषय–कथा। र०काल ४ । ते॰ काल ४ । पूर्ता। वै० सं० ११ । क मण्डार |

विशेष--- जत कथायें भी है। इसी अध्डार में एक प्रति (वे० सं० १००) और है।

> २.४४३. प्रेति सं ६ २ । यत्र सं० ७६ । ते० काल सं० १४७८ । वे० सं० २३ । सा मण्डार । विशेष—३४ कथाओं का संग्रह है ।

२५४४. प्रति सं०२ । पंत्र सं०२ । ते० काल 🗴 । धपूर्ता। वे० सं०२२ । स्त्र भण्डार । विशेष—निम्म कथार्थे हो हैं ।

- १. पीडशकारणकया- नयप्रभदेव ।
- २. रत्नत्रयविधानवर्था--राजकीति ।

क्क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७) और है।

२४४४. कथबन्नाचौपई—जिनचंद्रस्रि । पत्र सं०१४ । झा०।१० रॄ४४३ रंड । आषा-हिन्दो (रातस्थानो)। निषय-कथा। र०काल सं०१७२२ । ले०काल सं०१७६२ । पूर्णा। वे० सं०२४ । स्त्र अण्डार । विकोस—चयनविजय ने क्रमण्यत में प्रतिनिधि की थी।

२४४६. कमीविपाकः''''' पत्र संग्रेटः । झा० १०४४ ईच | आया—संस्कृतः । विवय–कता । र० काल ≿ । ले० काल संग्रेटः संगतिर दृषी १४ । वै० संग्रेटः १ छ अण्डारः ।

विशेष---श्रन्तिम पृष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्री सूर्यारुगसंबादरूपकर्मविपाक संपूर्ण ।

२४४७. कबलाचन्द्रायस्त्रतकथा******। प्राव सं०४ । घा०१२४५ इक्का भाषा-संस्कृत । विषय-तथा। र०काल × । ले०काल × । पूर्सी वैक सं०३०४ । कार्मण्डार ।

विशेष—क अध्वार में एक प्रति (वै० सं० १०६) तथा का अध्वार में एक प्रति (वै० सं० ४४२) स्रोर है।

२४५८. कृष्णुरुक्तिस्योमिंगळा—पदसमगत् । पत्र सं० ७३ । झा० ११ड्रै४५३ इंच । आया-हिन्दी । विषय-कथा । र॰ काल ४ । ले० काल सं० १८६० । वै० सं० ११६० । पूर्ण । इस अण्डार ।

विशेष---श्री गरोशाय नमः । श्री युरुष्यो नमः । श्रव रूपमिए संगल लिसते ।
श्रीरतकिर श्रीकृम्प की जी, तीयो ह्युरी बुलाय ।
पावा लाय्यो प्रमयोजी, बहां बढ़ा रूकमणी जादुराम ।
क्या करी हरी अगत पे जी, पीतामर पहराय ।।
श्रायादि हरि सगत ने जी, पुरी दुवारिका माहि ।
रूपमिए संगल युरी जी, ते समरापुरि जाहि ।।
नरनारियो संगल युरी जी, ते समरापुरि जाहि ।।
नरनारियो संगल युरी जी, हरिषरण जितलाम ।
वै नारी हं द्र की सपखरा जी, ने नर केंद्र जाय ।।
व्याह केल आगीरिव जी बीता सहसर नाव ।
गावती अमरापुरी जी पाव(व)न होव सब गांव ।।
कोते राखी क्लाधी तथी जी, वेसकीर करोबी कवाग ।।
वोते राखी करमी तथी जी, वेसकीर करोबी कवाग ।।
वोते सांगल परायह करो जी, सत को सवद विचारि ।
वीवा वीवो हरी अपया ने जी, कथीयो करण प्रसारि ।।

युक्त मोचिंद में विनवा जी, व सीमनासी जी दैन। तन मन तो सामै बरा जी, कराजी गुरां की जी सेन।। पुरु गोविंद बताइया जी, हरी वापै वहमंड। पुरु गोविंद के सरने साथे, होजो कुल की लाज सब पेनी। कुल्ए कुपा तें काम हमारो, भएता पदम यो तेनी।)

पण ४० - राग सिंधु।

सिसपाल राजा बोलियो जो मुस्सि वे राज कवार । जो जांदु जुध धायसी, तो भीत बजाऊ सार ।। ये के सार भार कर वेरला, जास्तु वहें धनार । गोला जालि धनेक छूटै सारमां री मार ।। काहसतीस फोजे भली पर धाय मुस्सिज्यों राज्य के बार ।। मूर बतलाहमाह जी.......

मन्तिम---

रुकमरिए जी मंगल संपूर्ण ।।

संवत १८७० का साके १७३५ का भाइपदमासे गुक्कपके पंचम्यां चित्राभीमनक्षत्रे द्वितीयचरागे तुमालक्ष्यं समाप्तोयं।। शुभं।।

२४४६. कौ मुदीकथा—काचार्य धर्मकीर्ति । पत्र तंत्र ३ मे ३४ । आत्र ११४४ हक्ष । आया— संस्कृत । विषय-क्या । रुकाल ४ । लेल्काल संत्र १६६३ । प्रपूर्ण । वेल्मं ०१३२ । क्रमण्डार ।

विशेष--- बहा इंगरसी ने लिखा। बीच के १६ से १० तक के भी पत्र नहीं है।

२४६०. क्याल गोपीचंद्रकाः....। पत्र सं०१६। आ० १×६३ इक्क । आवा–हिन्दी पद्य । त्रियय-क्या । र० काल \times । ते० काल \times । दूर्वी वे० सं०२ स्थ्र । आह आव्यार ।

विशेष--- अंत मे और भी रागिनियों के पद विथे हुये हैं।

२४६१. चतुर्वशीविधानकंषाः''''''। यन तं० ११ । झा० द×७ इंथ । आया–संस्कृत । विषय⊸कथा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वै० सं० द७ । च अध्यार ।

२२३

२४६२. चंद्रकुंबर की बार्जु—सतापसिंह । पत्र सं० ६ । मा० ११४४६ इ.च.। भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—कथा। र० काल ४ । ले० काल सं० १८४१ मादवा। पूर्णा। वै० सं० १७१। आर मण्डार ।

विशेष-- ६६ पद्य हैं। पंडित मन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

मन्तिम---

प्रतापसिष घर मन बसी, कविजन सदा सुहाइ। जुग जुग जीवों चंदकुवर, बात कही कविराय।। २६।

्र २५६३. चन्दनसत्त्वागिरीकथा—अद्रसेन। पत्र सं० ६। मा० ११×५६ इंच। भाषा-हिन्दो। थियय-कथा। र०काल ×। ते०काल ×।पूर्ण। वै०सं० ७४। झुमण्डार।

विशेष-प्रति प्राचीन है। बादि बंत भाग निम्न प्रकार है।

प्रारम्भ-- स्वस्ति श्री विक्रमपुरे, प्रसामी श्री जगदीस ।
तन मन जीवन सुक करसा, पूरत जगत जगीस ॥१॥
वरदाइक श्रुत देवता, मति विस्तारसा मात ।
प्रसामी मन चरि भोद सीं. हरै विचन सैवात ॥२॥

मम उपकारी परमग्रुक, गुरु मक्तर दातार। बंदे ताके चररा जुग, भद्रमेन मुनि सार।।३॥

कहां चन्दन कहा मलयगिरि, कहां सायर कहां नीर। कहिये ताकी वारता, सराो सबै वर वीर ॥४॥

काहय ताका वारता, सुराा सब वर वार ।।४।। अन्तिम-- कुमर पिता पाइन छुवै, भीर लिये पुर संग ।

> ब्रांसुन की घारा खुटी, मानो न्हावस गंग ।। १८६॥ दुख खु मन में सुख भयो, मागौ विरह विज्ञोग ।

कच्छ जोहि पुष्पवल होई, दिवता संजोगो हवड एव ।।१८८।।

कुल १८८ पद्य हैं। ६ कलिका हैं।

रश्रद्धः चन्यसमञ्जयाधिरिकसा—जूत्तर । पत्र सं० १० । श्रा० १० ¦४४ इ.ख.। आया—हिन्दो । विषय—कथा। र० कास सं० १७०१ । ते० काल ४ । पूर्णा वै० सं० २१७२ । खा सण्डार ।

बन्तिम डाल---डाल एह्बी साम्रनुसु ।

किन माहाबरत राज ही इत राजीहि सोइ बतर सुजारा ।। धनुकरमङ सुज प्रामीयाकी, पास्त्रो समर विभागः ॥ १ ॥ गुरावंता साधनम् ॥

बुखा दान सील तप भावना, व्या रे घरम प्रधान ।। सुषद्द चित्त जे पालद जी पासी सुख कल्यारा ।। २ ।। ग्रुरा॰ ।। स्रतियाना गुरा गावता जी जावह पातिग दूर ।। भली भावना भावइ जी जाइ उपसरग दूर ।। ३ ॥ ग्रुस्ए० ॥ संमत सत्रासइ इकोत्तरइ जी कीधो प्रथम स्रभास ।। वे नर नारी सांभलो जी तस मन हाइ उलास ।। ४ ।। गुरा० ।। राखी नगर सो पावसो जी वसइ तहां सरावक लोक ।) देव गुरा नारा गाया जी लाजइ सघला लोक ।। ५ ।। गुरा० ।। गुजराति गच्छ जाएगीयइ जी श्री पूज्य जी जसराज ।। **भावारइ करो सोभतो जी सं......वीरज रूपराज ।। ६ ।। गुरा**० ।। तस गछ माहि सोभता जी सोभा थिवर सूजारा ।। मोहला जी ना जस घरा। जी सीव्या बुद्धि निधान ।। ७ ।। गुरा ० ।। बीर वचन कहइ वीरज हो तस पाटे धरमदास ।। भाऊ विवर वरवासीयइ जी पंडित गुराहि निवास ।। ६ ।। गुरा ।। तस सेवक इस वीनवइ जी चतर कहइ चितलाय।। प्रसामसाता प्रसाता भावसूजी तस मन वंश्वित थाय ।। ६ ।। गुगा • ।।

।। इति श्रीचंदनमलयागिरिचरित्रसमापतं ।।

२.५६४. चन्दनपष्टिकथा— त० श्रुतसागर। पत्र सं०४ । आ0.22 ६ दक्ष । भाषा $-i r_{T^{-1}}$ । विषय—कथा। र० कथा। र० कथा । र० कथा \times । ते० कथ्य \times । दे० सं० \times । दे० सं० \times । दे० । दे० । दे०

विशेष--- अक्त भण्डार में एक प्रति वे॰ सं॰ १६६ की और है।

२५६६. चन्युनसिक्षिक्ष्या''''''। पत्र सं०२४। बा०११×५ इ.च.। आषा-संस्कृत । विषय-कथा। र॰ काल ×। तुर्था। वै० सं०१ द। घ अण्डार।

विशेष--प्रत्य कथायें भी हैं।

२८६७. चन्दनचिक्रतकथाभाषा — खुरातचंद काला। पत्र तं० ६। प्रा० ११ \times ४ ζ इंच। विषय-कवा। र० काल \times । ते० काल \times । पूर्ण। वे० तं० १६८। क मण्डार।

- २.४६म. चंत्रहंसकी कथा—टीकस । पत्र त० ७० । बा० १.४६ इंच । सावा⊸हिन्दी । विषय–कथा । १० काल तं० १७०६ । ले० काल तं० १७३३ । दुर्ला। वै० तं० २० । च मध्यार ।

विश्लेष--इसके मतिरिक्त सिन्दूरशकरण एकीभाव स्तोत्र मादि मौर हैं।

२२४

२४६६. चारमित्रों की कथा— काजवराजा। पत्र सं∘ ४ । बा० १०६/४४ इंब । भाषा–हिली। विषय–कथा। र० काल सं० १७२१ ज्येष्ठ सुदी १३ । ले० काल सं० १७३३ । दुर्ली वै० सं० ४५३ । चुभव्यार ।

२.४.७०. चित्रसेन इध्याः......... पत्र सं०१६ । प्रा० १२.४.५ इ.च । भाषा—संस्कृत । विषय—क्या। र०कान x । ले०काल सं०१६२१ पीष बुदो २ । पूर्ण । वे० सं०२२ । व्याभण्डार ।

विशेष---श्लोक संख्या ४६५।

र्रें ४९१. चौश्राराथनाञ्चोतरुकथा—जोधराज । पत्र सं० ६२ । ब्रा० १२६४७३ इ'च । ब्राया– हिन्दी । विषय-कथा। र० काल × । ते० काल सं० १९४६ मंगसिर सुदी ⊏ । पूर्ता । वे० सं० २२ । घ बण्डार ।

विशेष--सं० १८०१ की प्रति से लिखी गई है। जमनालाल साह ने प्रतिलिपि की थी।

सं०१ ८०१ चाकस्'' इतना कोर लिखा है। मूल्य- ५) ≥)।।) इस तरह कुल ५।।≥ लिखा है।

.% ७२. जयकुमार \mathbf{g} लोचनाक्या \cdots ः पत्र सं॰ १६। प्रा॰ ७ \mathbf{x} ० दं इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल \mathbf{x} । पूर्ण। वे० सं० १७६। ह्यू भण्डार।

२४७३. जिनगुणसंपत्तिकथा"""। पत्र सं०४ । मा०१०३,×४ रक्का। नाषा-संस्कृत । विषय⊸ कथा। र०काल ×। ले०काल सं०१७=४ वैत्र दुदी १३ । पूर्णावे०सं०३११ । ख्रामण्डार ।

विषेष—क भण्डार में (दे० सं०१ ८६ ६) की एक प्रति ग्रीर है जिसकी अवयुर में मांगीलाल बज ने प्रतिलिपि की थी।

२.४.७४. जीवजोतसंहार— जैतरासा। पत्र सं∘ ४ । बा० १२४८ ६'व । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय– कथा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्णावे कंग्रं ७७६ । इस भण्डार ।

विशेष-इसमें कवि ने मीह भीर चेतन के संप्राम का कथा के रूप में वर्रान किया है।

२.४७४. ब्येष्टिलनवरकथाः......। पत्र सं०४ । म्रा०१३८४ इ'च । भाषा—संस्कृत । विषयः—क्या । २०कान ४ । ते०कान ४ । पूर्ण । वै०सं०४०३ । स्राप्यकार ।

्रविकोष---इसी भण्डार में (वै० सं० ४८४) की एक प्रति झौर है।

रह. बयेष्ठजिनवरकथा— जसकीर्त्ति । पत्र सं∘ ११ से १४ । मा∘१२×५० इंब । भाषा— हिन्दी । विषय—कथा। १० काल ४ । ले० काल सं० १७३७ घासीज बुदी ४ । प्रपूर्ण। वे॰ सं० २०८० । छा भण्डार ।

विशेष--असकीति देवेन्द्रकीति के शिष्य थे ।

२४७७. डोलामाङ्ग्या चौषई — कुरालकाभगियाः पत्र सं० २८ । सा० ५४४ इक्षः । आया— हिन्दी (राजस्वामी)। विषय-कवा। र०कान ×। ते०कान ×। पूर्णः । वै० सं० २३६ । क अध्वारः। २.५५-- . दोस्तासाक्यीकित्यातः । पत्र सं० २ ते ७०। सा०६८-६ँ इ.च.। माषा-हिन्दी। र् विषय-कमा। २०काल ४ । ते० काल सं० १६०० सावाद सुदी ८ । सपूर्ण। वे० सं० १५६१ । ट सम्बार।

विशेष---१, ४, ५ तथा ६ठा पत्र नहीं है।

हिन्दी गंध तथा दोहे हैं। कुल ६०० दोहे हैं जिनमें डोलासारू की बात तथा राजा नल की विपक्ति स्नाबि का दर्शन है। सन्तिम आग इस प्रकार है—

माक्ष्मती पीहरने कावद लिक्षि शोहित नै सीख सोनी। ई माति तरवत को राज करें हैं। मारूजी की कूं क कंबर मिक्क्षमत्ता स्वेष जी हुवा। मालवता की कूं कि कंबर बोरभाता जी हुवा। दोन कंबर दोला जी क हुवा। दोला जी की मारूजी को भी महादेव जी की किरना सुम्रमर जोड़ो हुई। लिक्क्षमत्ता स्वंप जी कंबर सुंग्रीलाद कुखाहा की चाली। होला सुंराजा रामरूजंब जी ताई पीढ़ी एक सोवस हुई। राजाबिराज महाराजा श्री सवाई ईसरीसिहजी तीडी नीडी एक सी बार हुई।

पत्र ७७ पर कुछ शृंगार रस के कवित्त तथादोहें हैं। बुधराम तथारामचरण के कवित्त एवं गिरधर की कुंडलियों भी हैं।

२४७६. दोलासारुणी की बात $\cdots\cdots$ । पत्र सं० १। मा० e_{χ}^{2} ४६ इक्कः। भाषा-क्रियी पराः। त्रियय-कवाः। र० काल \times । ने० काल \times । मपुर्यः। वे० सं० १४६० । Z भण्डारः।

विशेष--- ५२ पद्य तक गद्य तथा पद्य मिश्रित है। बीच बीच मे दोहे भी दिये गये है।

्र-२.८८०, सामोकारसंत्रकथा''''''। पत्र सं०४२ मे ७१। घा०१२र्-४६ इंच। भाषा–हिल्ती । विषय– कथा। र० काल ४ | ने० काल ४ | मपुर्यो | ने० सं०२३७ | क्रथण्डार ।

विशेष--- सामोकार मन्त्र के प्रभाव की कथाये हैं।

२.४८२१. त्रिकाल चौबीसीकथा (रोटतीजकथा)— पं० क्याज्ञदेव । पत्र सं०२। द्वा० ११३ \times १३ इ.स. । भाषा—संस्कृत । विषय—क्या । र॰ काल \times । ते० काल सं० १८२२ । पूर्वा वे० सं० २६६ । उप्र मण्डार ।

विशेष--इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ३०८) की छोर है।

२४८२. त्रिकालवीबीसी (रोटतीज) कथा—गुणुनन्दि । पत्र सं०२। प्रा०१०६४४ इ°व। भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल् ४ । ते० काल सं०१८६ । पूर्ण । वे० सं०४८२ । क्रा प्रवार ।

२.४.≒३. त्रिलोकसारकथा''''''। यत्र सं०१२ । सा०१०३,४ इंच । भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र०काल सं०१६२७ । ते०काल सं०१ द४० ज्येष्ठ सुरी७ । पूर्वावे सं०३ द७ । इस सम्बरा

विशेष--लेखक प्रशस्ति---

सं० १८५० शाके १७१४ मिती ज्येष्ठ खुक्का ७ रिविदिने तिस्वाधित यं० जी श्री आगण्यन्वजी साल कोटे पथारमा ब्रह्मचारीजी शिवसागरजो चेलान लेवा । दक्षण्याकर उं आई के रादि हुई सुवादार तकूजी आग्यो राजा जी की फते हुई । लिखितं गुरुजी मेघराज नगरमध्ये ।

२.५८५८. दुत्तात्रवः*****। पत्र सं०३६। झा० १२३,४६३ दुक्का। भाषा—संस्कृत। विषय—कवा। र० र० काल \times । ते० काल सं०१६१४। पूर्ण। वे० सं०३४१। व्याष्ट्रास्यः।

े २४ - ४. दशिनकथा — भारासङ्घ । पत्र सं० २३ । छा० १२ \times ७ दे दश्च । भाषा -हिन्दी पद्य । विषय - कथा । र० काल \times । से० काल \times । पूर्ण ! वे० सं० ६०१ । छा अध्यार ।

विशेष—इसके प्रतिरिक्त इद अण्डार में एक प्रक्षिः (के. सं० ४१४) क अण्डार में १ प्रति (के. सं० २६३) इद अण्डार में १ प्रति (के. सं० ३६) च अण्डार में १ प्रति (के. सं० ५८६) तथा ज अण्डार में ३ प्रतिया (के. स० २६५, २६६, २६७) प्रीर हैं।

२४८६. दर्शतकश्चाकोशाः'''''। पत्र सं०२२ से ६०। ब्रा०१०३४४५ दश्च । आषा-संस्कृत । विषय-कया । र० काल imes । ले० काल imes । सपूर्षी। वे० सं०६ न श्चि अण्डार ।

२.४८८७. इ.स.मुर्लोकी कथा''''''। पत्र सं० ३१ । झा० १२४४३ इ.खा। आया-हिन्दी। विषय—क्या। र०काल ४ । ते०काल सं० १७४६ । पूर्ण। वै० सं० २१० । इम्मण्यार।

२४८८. दशस्त्रक्षणुकथा — लोकसेन । पत्र सं०१२ । मा०२३४४ इंव । भाषा–संस्कृत । विषय–क्या । र०कास imes । ले०कास सं०१८२० । पूर्ण । वै०सं०३४० । इस मण्डार ।

विशेष-घ अण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ३७, ३८) और हैं।

२५८६. दशक्तच्यक्तथाः.....। पत्र संo १ । आह्o ११imes४ इंग्र । आग्छा-संस्कृत । विषय-क्या । रoकाल imes। पूर्ण । वैoसंo २१३ । इद्य भव्दार 1

विशेष—क भण्डार में १ प्रति (१० सं० ३०२) की और है।

२४६०. दरासाच्याजनकथा—अवसागद्र । पत्र सं० ३ । बा० ११८५ इ.च. । मावा-संस्कृत । विश्वस-कथा । र० काल × । ने० काल × । कुर्खा,। वे० सं० ३०७ । च्हा प्रचाह । ्र १९१९. द्वालकशा—आरामङ्कापत्र सं∘ १८। ता॰ १९१४८ दक्का प्राचा-हिन्दी पद्यः विषय-कवा १८० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्णा वै० सं० ४१६ । का सम्बार ।

ं विशेष—इसके प्रतिरिक्त का भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६७६) का भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६०४) का भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३०४) का भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १००) तथा जा भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २६०) और हैं।

२४६२, दानरीज्ञतपभावनाका चोडाल्या—समयमुन्दरगिषा । पत्र सं०३। स्ना०१०४४¦ दंव । भाषा-क्रिती । विषय-क्या । र०काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० ⊏३२ । स्नाभण्डार ।

विशेष—म्ह्सी अण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २१७६) की सौर है। जिस पर केवल दान सील तप भावना ही दिया है।

२४.६३. देवराजवरुद्धराज चौपई — सोभदेवसूरि । पत्र सं०२३। आ।०११.४५३ इखः । भाषा – हिन्दी। विषय-कमा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वे०सं०३०७। इट भण्डार।

२४६४. देवलोकनकथा \cdots ायत सं०२ मे ४। घा० १२४६ इंदा। आधा-संस्कृत । विषय-कथा। र० काल \times । ले० काल सं० १६४३ कार्तिक सुदी ७। ध्यूर्सा । वे० सं० १६६१ । व्या भण्डार।

२४६४. द्वादशनतकथा —पंज काञ्चदेव । पत्र सं० ७ । बा० १ \times ५३ दक्ष । आषा-संस्कृत । विषय—कवा । र० काल imes । ले० काल imes । पूर्ण । वे० सं० २२५ । कु भण्डार ।

विशेष-छ भण्डार में दो प्रतियां (वे॰ सं॰ ७३ एक ही वेष्ट्रन) और हैं।

्र २.४६६. द्वादशानतकथासंग्रह्— नहाचन्द्रसागर । पत्र सं०२२ । द्वा०१२ \times ६३ दक्कः । भाषा-हिन्दी । २०काल \times । ले० काल सं०१२५४ वैद्यास्त सुदी ४ । पूर्ण। वै० सं०३६६ । इद्यू चण्डार ।

विशेष---निम्न कथायें और हैं।

२४६७ द्वादशक्तकथाः*****। पत्र सं॰ ७। झा० १२ \times ५ दश्च । आचा-संस्कृत । विषय-कथा । र ϵ काल imes । ते० काल imes । पूर्ण । वे० सं० २०० । इस अध्यार ।

विशेष---पं • अभ्रदेव की रचना के आधार पर इसकी रचना की गई है।

स्य अवडार में ३ प्रतियां (वे॰ सं॰ १७२, ४३६ तथा ४४०) और हैं।

र्प २४६८. धनदत्त सेठ की कथा......। पत्र तं० १४ । बा० १२१४७१ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल सं० १७२४ । ते० काल ४ । वै० तं० ६८३ । ब्रा अच्छार ।

२४६६. अझाकथानकः*****। पत्र सं॰ ६ । सा॰ ११ $\frac{1}{4}$ \times ५ इक्क । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा। र॰काल \times । ने॰काल \times । पूर्ण। वै० सं० ४७ । घ भण्यार।

 V^{-2400} . धक्तासात्तिमद्रचौपर्र् $^{-----}$ । यत्र सं० २४ । बा० = \times ६ इक्क । माया-हिन्दी । विषय-क्या । र० काल \times । बे० काल \times । ब्रपूर्ता । वे० सं० १९७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सवित्र है। सुगलकालीन कलाके ३० सुन्दर चित्र है। २४ से झागे के दत्र नहीं हैं। प्रति स्रथिक प्राचीन नहीं है।

२६०१. धर्मेषु**द्विचौपई— लाक्षचन्द्र । पत्र सं∘ ३७ । द्या० ११३,×४**‡ इख्र | विषय—कया । प्रावा— जिन्दी पत्र । र० काव सं० १७३६ । ले० काल सं० १०३० मावता सुरी १ । पूर्ण | वे० सं० १० । स्त्र भण्यार ।

विशेष — सरतरगण्छपति जिनचन्द्रपूरि के शिष्य विजैराजनित्त ने यह ढाल कही है । (पूर्ण परिचय दिवा हुया है ।

२६२२. घर्मे बुद्धिपापबुद्धिकथा****** पत्र सं०१२। झा०११४५ द्रञ्चः। जाया-संस्कृतः। विषय-कथा। र०कालः ४। ने०कालः सं०१८५५। पूर्णः। वे०सं०२१। स्व भण्डारः।

९६०३. घर्मेचुद्धिसन्त्रीकथा—बुन्दाबन । पत्र सं० २४ । सा० ११४५६ इक्षा । भाषा-हिन्दी पछ । विषय-कथा । र० काल सं० १६०७ । ते० काल सं० १६२७ सावरा बुदी २ । पूर्ण । बे० सं० ३३६ । क मण्डार ।

नंदीश्वरकथा— भेट शुभवन्द्र । पत्र सं० ६ । धा० १२imes६ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—कया । र० काल imes । से० काल imes 1 पूर्ण । बे० सं० ३६२ ।

विशेष-सांगानेर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई बी।

क्ष् भण्डार में १ प्रति (वै० सं० ७४) सं० १७८२ की लिखी हुई ग्रीर है।

२६०४. नंदीन्यरविधानकथा—दिविद्या पत्र तं∘ १३ । झा०११९ै४५ इक्का भाषा-संस्कृत । विषय-कत्रा।रे०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्णावे० तं० ३६५ । कृतक्षार ।

२६०६. नंदीकारविधालकवां*****। पत्र सं०३। धा०१०६ \times ४६ इंच। भाषा—संस्कृत । विषय—कथा। र०काल \times । त्रे०काल \times । पूर्वा । वे० सं०१७७३। ट भण्यार ।

२६०७. लागमंता $\cdots\cdots$ पत्र सं० १०। सा० १२×५ दृदं । प्राचा—हिन्दी (राजस्थानी)। विषय-कथा। र० काल imes। से० काल imes। पूर्वी। वे० सं० ६६६। प्राचम्बद्धार । विशेष---धादि ग्रंत भाग निम्न प्रकार है।

भी नागमंता लिस्पते---

नगर हीरापुर पाटस भएगियड, माहि हर केशरदेव। नमिए करइ वर नाम लेई नइं, करइ तुम्हारी सेव ।।१।। करइ तुम्हारी सेवनइ, वसिगराइ तेडावीया। काल कंकोडनइं तित्यगिक्त यर, धवर वेग बोलावीया ॥२॥ नाद नेद आरांद अधिका, करइ तुम्हारी सेव। नगर हीरापुर पाटमा भगीयह, माहि हर केशरदेव ।।३।। राउ देहरासर बइठउ, ग्रागो निरमल नीर। डंक गयउ भागीरथी, समुद्रह पहलइ तीर ॥४॥ नीर लेई डंक मोकल्यव लागी मृति घरावार । मापं सवारय पडीउ लोभइ, समुद्रई पहलेपार ॥४॥ सहस्र धारुधासी जिहां देवता. जाई तिराविन पडठउ । मंगा तराउ प्रवाह व भायउ, राउ देहरा सरवइ छउ ।।६।। राम मोकल्या छे वाडीये, मारो सूर ही जाइ। भारो सुरही पातरी, भारो सुरही भाइ ।।७।। बारो सुरही भाइ नइ, बारो सुगंधी पातरी। आकतुल छीनइ पाषची, करि क्ल बीर सुरातडी ।।५।। जाइ बेउल करगाउ, केवडी राइ मच कूंद जू सारी। पुष्फ करंडक भरीनइ, आयो राइमो कल्याख़इ बाडी ।।१।)

* 64-

एक कामिए प्रवर बाली, विखोही भरतार । उंक तराइ बिर बरसही, ताल्ह्एा प्रमी संवारि ॥ ताल्ह्एा प्रमीय संवारि, गुक्त प्रिय मरइ बावूटइ । बाजि लहरि विव वंधालिड, ताल्ह पवस नइ उठड़ ददन करइ मुझ बाह हुउं सु सनेहा टाली । विखोही भरतार एक कामिए घर बाली ॥३॥ डाक्संडा कस बावही, बहु कांसी भसकार । चंद्र रोहिगो जिम मिलिर्ज, तिम चग्र मिली मरतार नह्।।
तिल्प गिरोग्रज तूठज बोलह, प्रमीयविष गयज छंत्री।
ढंक तरग्रह शिर बूठज, जिठ्ठ नाह हुईं मन संती।।
पू'च संगलक खाजह,.....।
बहु कांसी अभकार डाक छंडा कल वाजह।।
हित श्री नागमंता संपूर्णम् । ग्रन्यायन्य २००७

पोथी आ० मेरकीर्ति जी की ।। कथा के रूप में है । प्रति प्रशुद्ध लिखी हुई है ।

२६०८. नागश्रीकथा—ज्ञद्वानेसिद्त्तः । पत्र सं०१६। सा०११३४४ इंच । सावा-संस्कृतः । विषयः— कया । र० काल ४ । ने० काल सं०१८२३ चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वे० सं०३६६ । क्र सण्यार ।

विजय—इक्षी प्रण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३६७) तथा आप प्रण्डार में १ प्रति (वे० सं० १०६) को स्रोर है।

ज भण्डार वाली प्रति की गरूढमलजी गोधा ने मालपुरा में प्रतिबिधि की थी।

्र २६०६. नागश्रीकथा—िकरानर्सिह । यत्र सं० २ ७५ । झा० ७३×६ डंच । भाषा—हिन्दी । विषय— गत्या। र० काल सं० १७७३ सावरण सुरी ६ । ते० काल सं० १७८५ पीच बुरी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । इस् भण्डार !

विशेष---- ओबनेर में सोनपाल ने प्रतिलिपि की थी। ३६ पत्र से झागे महवाह चरित्र हिन्दी में है किन्तु सपूर्ण है।

२६१०. जिःशल्याष्ट्रमीकथा******। पत्र सं०१। झा०१०%४३ इक्का। भाषा⊸संस्कृतः। विषय—क्या। र० काल ×। ते० काल × पूर्णा। वे० सं०२११७। का अध्यार।

२६११. निशिभोजनकथा—मद्यानेशिट्स । पत्र सं०४० मे ११ । घा० $- c_{i}^{i} \times c_{i}^{i}$ इक्का । आया—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल \times । से० काल \times । धपूर्ण । वे० सं०२०५७ । का अण्डार ।

विशोष — सा अप्यार में १ प्रति (वे० सं० ६८) की घीर है जिसकी कि सं० १८०१ में बहाराजा ईश्वर सिंहजी के शासनकाल क्रें जसपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

२६१२. निशिमोजनकमाः.....। यम सं० २१। सा० १२×६६ द्वा । नाया-हिन्दी यद्य । विषय-कथा । १० काल \times । ते॰ काल \times । पूर्वा । वै० वं० ३०३। स्त मण्डार ।

२६११. नेसिक्याहुको'''''''। पन सं० ३। झा० १०%४ इंच । जावा—हिन्दी । निवय—कथा। र० कास × । ते० कास × । सपूर्ती । वे० सं० २२४४ । का जम्बार । विशेष---आरम्म--

नस्सरीपुरी राजियाहु समदिजय राथ थारो। तस नंदन थी नेमजी हुं सावल वरण सरीरी।। वन धन धरे थी ज्यो तेव राजसदरसण करता। यालदरनासै जीनमो सो सोरजी हु हुतो।। समदनजजी रो नंद खतेरों ले धादण जी। हुतो सावली हुं औ रो नमें क्ल्याण सुपावणों जी।।

प्रति प्रशुद्ध एवं जीर्ग है।

र्थहर्थः नेमिराजलस्याहलो—गोपीकुस्या। यत्र सं०६ । घा० १०×४ दृदश्च । आया-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल सं०१ दश्दि प्र० सावरण सुदी ४ । ले० काल × । धपुर्या। वे० सं० २२४० । व्या अध्वार।

प्रारम्भ---

श्री जिल्ला चरता कमल नमी ममी घलागार । नैमनाच र ढाल ताले ब्याहुव धहुं मुखदाव ।। हारामती नगरी मली सोरक देस मफार । इन्ह्युरी सी ऊपमा चुंदर बहु विस्तार ॥ चौडा नो जोजला तिहां लावा वारा जाला । साकि कोठि चर माहि है काहर बहुत्तर प्रमाला ।।२॥

धन्तिम---

राजल नेम तर्गो व्याहलो औ गावसी को नरनारी। मर्ग ग्रुग्ण सुरगसी भलो जी पावसी सुख प्रपार ॥

कलश---

प्रथम सावस्य चोष सुकती वार मंगलवार ए । संबद्ध प्रठारा बरस तरेसिंठ मांग चुल मुक्तार ए । श्री नेम राजस क्रसन गोपी तास चरत बस्तानह । सुतार सीका ताहि ताहि जासी कही कथा प्रमास्य ए ॥

इति श्री नेम राजल विवाहली संपूर्ण।

इसमे बागे नव अब की ढाल दी है वह प्रपूर्ण है।

२६१४. पंचास्थान—विष्णुहार्मी। पत्र सं०१। झा०१२६४४६ दश्च। भाषा–संस्कृत। विषय⊸ कमा। र०काल ×। ले०काल ×। सपूर्णै। कै०सं०२००६। इस मध्यार।

विशेष--केवल १३वां पत्र है। इस सम्बार में १ प्रति (के० सं० ४०१) अपूर्ण और है।

२६१६, परसरासकथा''''''। पत्र सं∘६ । स्ना० १०६/४४ दे इक्का। भाषा-संस्कृत । विषय-कथा। र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्णावै० सं०१०१७ । क्या भण्डार ।

२६१७ पल्यविधासकथा—स्तुरालचन्द्र। पत्र सं०२(। मा०१२×५ इक्कः। भाषा–हिन्दी पत्र । विदय–कवा। र०काल सं०१७६७ फाप्टुन बुदी १०) पूर्ण। वै०सं०२०) स्क्रभण्डार ।

२६१=, परुप्रविधानव्रतोपास्थानकथा---श्रुतसागर। पत्र सं०११७। मा०११५४ १ इब्रा । मावा-संस्कृत | विषय-कथा । र०काल ४ | ले०काल ४ | पूर्ण । वै० सं०४४४ | क मण्डार |

विशोष — स्व भण्डार में एक प्रति (वै० सं० १०६) तथाज मण्डार में १ प्रति (वे० सं० ⊏३) जिसका ं ले० काल सं० १६१७ जाले है और हैं।

२६१६. पात्रदानकथा— ब्रह्म नेमिद्ता। पत्र सं० ५ । मा० ११×४३ द≋ । मापा—संस्कृत । विषय— कथा । र० काल × । लं० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ । इस सण्डार ।

विशेष - श्रामेर मे पं० मनोहरलालजी पाटनी ने लिखी थी।

२६२८. पुरयाश्रवकथाकोरा — सुसुद्धे रामचल्द्र । पत्र सं० २०० । आ० ११×४ इंच । आया–सस्कृत । विषय–कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४६६ | क्र भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४६७) तथा छ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६६, ७०) स्रोर है किन्तुतीनों हो सपूर्या है।

२६२१. पुरायाश्रवकथाकोश---हैंग्लतराम । पत्र सं० २४८ । बा० ११३%६ इक्का आचा-हिन्दी गया | विषय-कथा । र० काल सं० १७७७ भादवा मुदी ४ । ले० काल सं० १७८८ मंगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ३७० । का मण्डार ।

विशेष--- महमवाबाव में भी समयमन ने प्रतिलिपि की थी। इसी मण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ४६३, ४०६, =६५, =६६, =६७) तथा क भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० ४६३, ४६४, ४६४, ४६६, ४६६, ४६६, ४६६) तथा च भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६३४) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७७) ज मण्डार में १ प्रति (वे० सं० १३) क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २६६) तथा ट मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६९) मौर है।

२६२२. पुरुषाश्रवकथाकोशः """। पत्र सं० ६४ । आर० १६×७३, इक्का। साथा–हिन्दी। विषय–क्या। १० काल × । ले० काल सं० १५८४ ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण। वै० सं० ५५ । साम्पदार ।

विशोध——कालूराम साह ने श्रन्थ की प्रतिशिषि जुझालबन्द के पुत्र सोनपाल से कराकर वीधरियों के सींदर में जडाई। इसके मितिरिक्त कर भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४६२) तथा जा भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६०) [धपूर्ण] मीर हैं। ्र ६६२६. पुरुषाश्रवकथाकोशा—टेकचन्द्र । पत्र सं० ३४१ । झा० १११,४८ इक्ष । भाषा–हिन्दी पत्र । विषय—क्या। र० काल सं० १६२६ । ले० काल ⋉ 1 पूर्ण। वै० सं० ४६७ । कं मण्डार।

२६२४. पुरुषाश्रवकथाकोराकी सूची। पत्र सं०४ । द्रा० १. दे४५ इख । भाषा-हिन्दी। विषय-कवा। र०काल ४ । से०काल ४ । पूर्णावे० मं०३४६ । स्राभण्डार।

२६२४. पुष्पांजलीव्रतकथा—शुलकीर्ति । यत्र सं० १ । द्वा० ११८५ दक्क । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल ४ । ले०काल ४ । दूर्ला । वै० सं० ६४६ । द्वा भण्डार ।

विशेष—-गभण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५६) झौर है।

२६२६, पुष्पांजक्षीक्षनकथा—जिनदास । पश सं०३१ । प्रा०१० रॄं×संृहस्र । भाषा-संस्कृत । विषय—कथा। र०काल × । ले०काल सं०१६७७ फागुल दूरी ११ । पूर्साकै० सं०४७४ । सः भण्यार ।

विशेष—सह प्रति बागड देश स्थित घाटसल नगर मे थी वामुपूर्य चेत्यालय मे ब्रह्म ठावरमी के लिएय मखदाल ने लिखी थी ।

२६२७. पुष्यांजलीव्रतिविधानकशाः ""। पत्र तं∘ ६ से १० । ग्रा० १०%८ दुंदश्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा। २० काल × । ले० काल × । ग्रपुर्ण | वै० सं० २२१ । च भण्डार ।

र्ज्दद्र=. पुष्यांजलोब्रतकथा—खुराालचन्द् । पत्र सं०६ । द्वा०१२४४१ दश्च । भाषा-हिन्दी यदा । विषय-कवा । र०काल × । ले०काल सं०१९४२ कालिक बुदो ४ । पूर्मा । वे० सं०६०० । स्त्र भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) की धीर है जिसे सहात्मा जोशी पन्नालाल ने जयगुर में प्रतिलिपि की थी।

२६२६. जैतालायकीकी***** । पत्र सं० ४४ । मा० = र्ूर इक्का । भाषा-मंस्कृत । विषय-कथा । र॰ काल \times । सपूर्ण । वै० सं० २४० । चा भण्डार ।

र् २६३८. भक्तामरस्तोत्रकथा—नथमला। पत्र सं० ८६। बा० १०६४४ इंच। भाषा-हिस्दी। दिपय-कथा। र०काल सं० १८२६। ले०काल सं० १८४६ फाल्युरण बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० २५४। क मण्डार।

विशेष-च भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं० ७३१) भौर है।

र् २६३१. भक्तामरकोत्रकथा—विनोदीलाल । पत्र सं०१४७ । मा० १२३४७ रेड्य । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-क्या । र० काल सं०१७४७ सावन सुरी २ । ले० काल स०१६४६ । प्रपूर्ण । वे० सं०२२०१ । प्रप्रथमार ।

विशेष—वीचकाकेवल एक पत्र कम है।

इ.सके प्रतिरिक्त क भण्डार में २ प्रतियां (वे॰ सं० ४१६, ४४४) छ भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० १८१, २२६) तया क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १२६) की ग्रीर है कथा साहित्य]

र्च्ह्रेट्र. आकामरस्तोत्रकथा—पत्रालालाचौष्यो । पत्र सं० १२० । सा०१३४४ इक्का । आवा-हिन्दी । विषय—कवा । र० काल सं० १६३१ फाग्रुण सुदी ४ । ले० काल सं० १६३० । प्रूर्ण । वै० सं० ४४० । क भण्यार ।

२६३३. भोजप्रबन्ध '''''' पत्र सं०१२ से २४ । घा० ११६ै४४} इंच । भाषा–संस्कृत । विषय– कथा। र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे॰ सं०१२४६ । इस मण्डार ।

विशेष--- इक्त भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ५७६) की और है।

२६३४. सधुकैटभवध (सहिबासुरवध)'''''' । पत्र सं० २३ । घा० प्रदूर४ई डक्क । भाषा-संस्कृत । विवय-कवा । र० काल ४ । के० काल ४ । घर्षणी । वै० सं० १३४३ । का मण्डार ।

२६३४. मधुमालती स्थान्न चतुर्यु जदाम । पत्र सं० ४८ । ग्रा० २.४६५ इंच । सापा-हिन्दी । विषय-कवा । र० काल \times । ले० काल सं० १६२८ फाग्रुण बुदी १२ । ग्रुर्ण । वे० सं० ५८० । क्र भण्डार ।

विशेष---पय सं०६२ द। सरदारमल गोधाने सवाई जयपुर में प्रतिलिशि की थी। यन्त के ४ पत्रों मे म्दुति दी हुई है। इसी भण्डार में १ प्रति [यपूर्ण] (के० सं० ४ द०१) तथा १ प्रति (के० सं० ४ द०२) की [यूर्ण] भीर हैं।

२६२६. सृगापुत्रचउढाला''' | पत्र सं०१ । झा०६र्\४४ इक्का। भाषा–हिन्दी। क्षिय-क्का। र०काल ४ | लंककाल ४ | पूर्णावे०सं० ६३७ । इत्र भण्डार ।

विशेष---मृगारानी के पुत्र का चौढाला है।

२६३७. साथवानलाइधा—च्यानन्द्। पत्र सं०२ से १०। प्रा०११×४३ इक्षः । भाषा–संग्रहतः । विषय–कथा) र०काल × | ले०काल × । प्रपूर्णः | वै०सं०१ =०६ । द्वः भण्डारः ।

र६६८. सानसुंगमानवतिचौषई— सोहनविजय । पत्र सं० २६ । प्रा० १०४८ १ इया । भाषा हिन्दी पय । विषय-कवा । र०काल ४ । वे०काल सं० १६५१ कासिक सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५३ । क्र भष्वार ।

विशेष-प्रादि घंतभाग निम्न प्रकार है-

ग्रादि---

श्वयम जिस्तेष वश्वेषुते, सञ्चल्द करी लीन । धामम प्रुण सोइसकर, स्रति सारव थी लीन ॥१॥ यान पान सम जिनकर, तार्र्ण भवितिष तांच । धाम तर्या तारे सवर, मेहने प्रणानि होड ॥२॥ भावे प्रण्युं भारती, वरवाता मुविलाम । बावन सकरर की भरती, सबय समानो जास ॥३॥ शुक्त करया केई शनि चका, एह वीजे हनी शक्ति। किम मुकाइ तेहना, पद नीको विषे अक्ति।।४।

ग्रन्तिम-- पूर्ण काय मुनीबद्र सुप वर्ष, बुद्धि मास शुनि पक्षे है । (भागे पत्र फटा हुआ है) ४७ ढाल हैं।

२६३६. सुकाविक्रियतकथा— श्रुतसागर् । पत्र सं०४ । प्रा०११४५ इ.च । भाषा–संस्कृत । विषय– कवा । र० काल्र × । ले० काल सं०१८७३ पौष बुदो ४ । दूर्मा । वे० सं०७४ । इद भण्डार ।

विशेष--यति दयाचंद ने प्रतिनिपि की थी।

२६४८. मुक्तावित्रज्ञतकथा—सोमप्रभः। पत्र सं०११ । या०१०३४४३ ६ च । भाषा–संस्कृत । विदय-कथा। र० काल ४ | ले० काल सं०१ द४५ सावत मुदी २ । वे० मै० ७४ । छ, मण्डार ।

विशेष-अयपुर में नेमिनाथ चैत्यालय में कानूलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

२६५१ सुक्ताविविधासक्या'''''। पत्र सं० ६ से ११ । आ० १०४५ हुँ सं । भाषा- ग्रपन्नं सः। विषय-कथा। र० काल ४ । ले० काल सं० १४४१ फाल्युन सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० १९९८ । व्या भण्डार ।

विश्वेद —संवत् १४४१ वर्षे फाल्युन मुदी ४ श्रीमूनसंये बलात्नारमणे सरस्वतीयच्छे श्रीणुराबुंदाबायांत्वये महारिक श्रीप्यानंदिवेव। तत्पहुं महारिक श्रीयुप्तबंद्रदेवा तत्तिच्य प्रुनि जिनवण्द्रदेवा खंडेलवालान्वये भावसागोत्रे संवती खेला भार्यी होली तत्पुत्राः संवती चाहड, भासल, कालू, जालप, लखमण तेवा मध्ये संवती कालू भार्या कौलसिरी तत्पुत्रा हेमराज रिवमदास तैने री साह हेमराज भार्या हिमसिरी एलं रिव रोहिल्गीयुन्ताव्यक्तियानकं लिखायतं।

०६४२. मेघमालाजनोषापनकथाः ः । पत्र सं० ११ । मा०१२×६३ इ.च.। भाषा–संस्कृतः । विषय–कथा। र० काल × । ते० काल × । पूर्णा वै० सं० ⊏१। घ भण्डारः ।

विशेष--च भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ २७६) ग्रीर है।

२६५३. सेघमालाझतकथा " " । पत्र सं० १ । मा० ११४५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-तथा । र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्ण । वै०सं० २०६ । इस अण्डार ।

२६४४. मेष्रमालाश्रतकथा— खुराालाचंदा पत्र सं०५ ।⊾ग० १००,४४५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल ४ । तं० काल ४ । पूर्वी । वै० सं० ४८९ । क भण्डार ।

२६४४. मौतिव्रतकथा—्गुराशद्रः पत्र सं०४ । मा०१२×४३ इंच । माषा–संस्कृतः । विषय– कदा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ता | वे०सं०४४१ । का मण्डारः । २६४६ मीनिव्रतक्षा''''''। पत्र सं०१२ | झा०११३४५ इ.च.। मामा–संस्कृत । विषय–कमा। र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्ण। वे०सं० ⊏२ | च मण्डार ।

२६४७. यमपालमातंगकीकथाः'''''। पत्र सं०२६ । झा० १०४१ इ'चः माषां⊸संस्कृतः । विषय⊸ कथा । र० काल ४ ; ले० काल ४ । पूर्णः । वै० सँ० १४१ | आह्र मण्डारः ।

विशेष—इस कमा से पूर्वपत्र १ से १ तक पध्यय राजा इष्टांत कमा तथापत्र १० से १६ तक यंच नमस्कार कथादी हुई है। कही २ हिन्दी धर्यभी दिवा हुआ है। कथायें कथाकोश से ली गई है।

्रवें ६४८. रज्ञावंधनकथा—नाधूरामः। पत्र तं० १२। मा० १२३४८ इ'च। मावा–हिन्दी गणः। विषय-कथा। र०काल ४ । ते० काल ४ । पूर्णा वे० तं० ६११। द्वां मध्यार।

२५४१. रह्मावन्धनकथा^{……}।पत्र सं०१। घा० १०३८५ इ.च.। भाषा—संस्कृत ।विषय—क्या। र०कान ४.।ले०काल स. १८३५ सावन सुदी २.।वे० सं० ७३ । इह भण्डार ।

२६४८. रज्जन्नयगुगुकथा—पं० शिषकीलाखः । पत्र सं० १०। बा० ११५४५६ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० २७२ । ब्हा भण्डार ।

विशेष--- स्व मण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १५७) और है।

२६४% रजनयविधानकथा—श्रुतसागर। पन सं० ४ । ग्रा० ११३,४६ इ'च। जावा-संस्कृत । रिवय-कथा। र० काल ४ । ये० काल सं० ११०४ मावस्य बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ६५२ । क्र कम्बरार।

विशेष--- छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७३) और है।

२६४२. रह्माविक्रततस्था—जीशी रामदास । पत्र सं० ४ । मा० ११ \times ४ है इ'व । माथा—संस्क्रत । विषय—कथा । र० काल \times । ले० काल सं० १६६६ । पूर्ण । बे० सं० ६३४ । क्र मच्यार ।

२६४३. रविश्रवकथा— श्रुतसागर। पत्र सं०१६। मा० ६५% ६ इंच। प्राथा—संस्कृत । विषय—कवा । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्णा वे० सं०१६। आर प्रधार।

र्≪६४४. रविज्ञतकथा— देवेश्यकीर्श्वाः। पत्र संश्रीः। धार ६४३ इंचा भाषा—हिल्यीः। विषय— कया। रुकाल संश्रीः प्रथम प्रयेष्ठ सुरी हो लेक काल ४। पूर्वा। वेश लंश २४०। क्कं बच्चारः।

ॅर्ने६४४. रिविज्ञतकथा— भाऊकिया। पत्र सं०१०। घा० ६३४६३ इ.च.। भाषा—हिन्दी पछ । विषयं— क्या। र० काल ४ | से० काल सं०१७६४। दूर्सा वैं० सं०६६० | इद्र मध्दार |

विशोग—इं अण्डार में एक प्रति (वै० सं० ७४), अं अण्डार में एक प्रति (वै० सं० ४१), अक्र अण्डार में एक प्रति (वै० सं० ११३) तथा ट अण्डार में एक प्रति (वै० सं० १७५०) और हैं। २६५६. राठीडरतनसदेशदरोच्सी " ""। पत्र सं०३ से दा झा०६५४४ इंचा जाया-हिन्दी • [राजस्वाणी] विषय-कथा। र०काल सं०१५१३ वैद्याचा सुक्का ६। ले०काल ४। सपूर्णा वे० सं०१७७। का जम्बार।

विशेष---ग्रन्तिम पाठ निम्न प्रकार है----

दाहा---

साविजीउयया श्रीया आगे साम्ही आर्दे ।

सुंदर सोचने, इंदिर लड्ड बचाद ।।१।।

हुया धविल मंगल हरण वधीया नेह नवल ।

सुर रतन सतीयां सरीस, मिलीया जाद महल ।।२।।

श्री सुरमर कुरउचरे, वेकुंठ कीभावास ।

राजा रमलायरतली, चुन श्रविचल जस वास ।।३।।

पक वैद्यालह तिथ नवमी पनरीतर वरस्स ।

वार सुकल डोयाविहद, हीद्र तुरक वहस्स ।।

बोढि मसी सिडीयो जगे, रासो रतन रसाल ।

सूरा पूरा संजलड, भंड मोटा मूपाल ।।१।।

दिली राउ वाका उजेग्सी रासाका ज्यार तुगर हिसी कपि बात कैसी।। इति श्री राठोडरतन महेस दासोत्तसरी वचनिका संपूर्ण ।

्रदिश्रकः राजिओजनकथा—भारासङ्घा पत्र सं∘ दा झा० ११२ूं×द इंचा भाषा-हिन्दी पर्णा विद्य-कथा। र० काल × । से० काल × । पूर्णा वै० सं० ४११ । इस मण्डार ।

२६४८. प्रति सं • २ । पत्र सं • १२ । ले० काल 🗴 । वे० स० ६०६ । च अण्डार ।

विशेष-इसका दूसरा नाम निशिमोजन कथा भी है।

्रिस्थः रात्रिभोजनकथा—किरानसिंह। पत्र सं० २४ । झा० १३×४ इंच । भाषा-हिन्दी पत्र । विषय-कवा । र० काल सं० १७७३ श्रावरा सुरी ६ । ते० काल सं० १६२८ भारवा बुदी ४ । पूर्वा । वे० सं० ६३४ । इ. सन्धार ।

विशेष—मा अध्कार में १ प्रति और है जिसका ले॰ काल सं॰ १८८२ है। कान्नुराम साह ने प्रतिलिपि कराई वी।

२६६०. रात्रिओ जनक्षया******* । पत्र सं॰ ४ । मा॰ १०३ \times ४ इंच । अस्या-संस्कृत । विषय-क्या । र० काल \times । से॰ काल \times । सपूर्ण । वे० सं॰ २६६ । इस सम्बार ।

विशेष--- अपवार में एक प्रति (वे॰ सं॰ १६१) और है।

ì

١

२६६१. रात्रिभोजनवीपई......। पत्र सं० २ । झा० १०४४३ इख । माया-हिन्दी । विषय-कवा । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० ६३१ । झा मण्यार ।

२६६२. ह्रपक्षेतचरित्रः.....।पत्र सं०१७। झा०१०४४ई इ'च। भाषा--संस्कृत। विषय-कवा। र०काल ×ाते०काल ×।पूर्ण।वै०सं०६६०।इठ थण्डार।

रे६६३. रैद्वतककथा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं०६ । प्रा०१०४५ इंच । प्रावा–संस्कृत । विषय–कवा। र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्ण । वै० सं०३१२ । का सण्वार ।

२६६४. प्रतिसं०२ । पत्र सं०३ । ले॰ काल सं०१६३४. ज्येष्ठ बुदी १.। वे॰ सं० ७४ । इद अच्छार।

विशेष---लश्कर (जयपुर) के मन्दिर में केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की बी।

इसके प्रतिरिक्त क्वा नण्डार में एक प्रति (वै० सं० १०५७). तथा का मण्डार में एक प्रति (वै० सं० ६६१) को और हैं।

२६६६. रैदल्यतकथाः.....। पत्र सं० ४ । बा० ११×४३ हंच । बाया-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वै० सं० ६३६ । क अध्यार ।

विशेष——इन्न मण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ३६४) की है जिसका ले० काल सं० १७८४ झालोज सुदी ४ है।

२६६६. रोहियीज्ञतकथा—ब्धाचार्य आलुकीर्च। यत्र सं०१ । वा० ११३×४३ इंच। आवा-सस्तृत । विषय—क्या । र० काल × । ले० काल सं०१ ८६६ और सुदी १ । वे० लं० १०६ । व्या प्रव्यार ।

विकोष——इसी मण्डार में एक प्रति (वै॰ सं॰ ५६७) इड्र मण्डार में १ प्रति (वै॰ सं॰ ७४) तथा आर मण्डार में १ प्रति (वै॰ सं॰ १७२) और हैं।

२६६७. रोहिस्पीझतक्क्या********** । पत्र सं०२। सा०११४८ इ'व। आया—हिन्दी। विषय—कया। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्वा वैक सं०६६२। इस अच्छार।

विशेष—क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६६७) तथा क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६५) जिसका ने० काल सं० १८१७ वैद्याल युवी ३ और हैं।

२६६८. क्षम्भिविधानकथा—पं० काओहेन । यत्र सं० १ । बा॰ ११८४३ ६ सा । साया-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल ८ । ले० काल सं० १६०७ भारता सुदी १४ । दूर्स । वे० सं० ३१७ । व्य गण्डार ।

विवोष---प्रसस्ति का संक्षित निम्न प्रकार है---

संबत् १६०७ वर्षे भाववा सुरी १४ सोमवासरे श्री ब्रादिनायचैत्यालये तक्षकगढमहादुर्गे महाराउ

भीरामचंदराज्यप्रवर्तमाने भी मूलसंवे बलहकारगरो सरस्वतीगच्छे कुंदकुं दावार्यान्ववे """मंदलावार्य धर्मचन्द्राम्नावे अध्येसवालान्ववे प्रवमेरायोत्रे सा. पद्मा तद्मार्था केलमदे """ सा. कालू इरं क्या """ मंदलावार्य धर्मचन्द्राय वर्त ।

२६६६. रोहियोविधानक्या। यत्र सं० द । बा० १० \times ४३ दश्च । आया-संस्कृत । विषय-क्या । र० काल \times । ले० काल \times । यूर्ण । वे० सं० ६०६ । व्य अण्डार ।

२६७०. लोकप्रत्यारूयानघंमिलकथाः "ापत्र सं∘ ७। झा०१०×५ इंच। भाषा–संस्कृत । विषय– क्या। ले० काल ⋌। र० काल ⋌। पूर्ण। वै० सं० १० ४०। इस मण्डार।

विदोष--- इलोक सं० २४३ हैं। प्रति प्राचीन है।

२६७१. वारिवेशः मुनिकथा—जोघराजगोदीका। पत्र सं०४ । या० ६८५ इ.च. भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल ४ । ले०काल सं०१७६६ । पूर्ण । वे०सं०६७४ । इर मण्डार।

विशेष -- बुहामल विलाला ने प्रतिलिपि की गयी थी।

े २६७२. विक्रमचीबीलीचौपई—अध्ययनन्दसूरि। पत्र सं० १३। झा० १४४३ दंव। भाषा-हिन्दी। विषय—कया। र०काल सं०१७२४ झावाड बुदी १०। ले० काल ४ । पूर्ण। वे०सं० १६२१। ट भण्यार।

विशेष--- मतिसुन्दर के लिए ग्रन्थ की रचना की थी।

२६७३. विद्युकुमारमुनिक्या— जुनसागर । पत्र सं० ४ । मा० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१० । च्या भण्डार ।

२६५४: विद्याकुमारमुनिक्शा""। पत्र तं० ४। प्रा०१० \times ४२ इ.च । माया—संस्कृत । विषय—कवा। र॰ काल \times । तं० काल \times । पूर्ण। वे॰ सं०१७४ । स्त्र मण्डार।

. २६७४. वैदरभीविवाह—पेमराज्ञ । पत्र सं०६। मा०१०×४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल ×। ते०काल ×। पूर्ता। वे० सं०२२५४। का मण्यार।

विशेष-भादि धन्तभाग निम्न प्रकार है-

दोहा—

जिला घरम माही बीपता करी घरम सुरंग।
सी राधा राजा रालीड ठाल भवडु रंग।।१।।
रंग चिलुराथ न भावती किंवता करी विचार।
यदता सवि युक्त संपर्ध हुरस भान हानड आव।।
युक्त मामले हो रंग महल ने निस भार पोसी सेजजी।
दोष मानला उरुच्या जालीनवार विद्योराङ्ग मेहनी।।

भी भी नितम - पारण के कवनाय सुजाल के विवरमी वेस्वार ।		
सुल अनंता भीगिया बेले हुवा ब्रह्मगार ॥	•	***
्र 🚈 💢 : अवान देई वाक्ति लीयों होता तो जय असकार 🕍 🧸 😁 🔑		
पेमराज ग्रुट इस कर्गी, मुक्त क्या बत्काल १६ :	r-¢	
्रमण् प्रति के सामनी वैदरम् त्या विवाह ।		
भएए। तास वे सुव संपंचे पहुत्या मुक्त मकार । इति वैदरमी विवाह संपूर्ण ।।		P-1
ग्रन्थ जीर्सा है। इसमें काफी ढालें लिखी हुई हैं।		
,२६७६ व्रतकथाकोशशुतसागर । पत्र सं० ७६ । बा० १२४४३ इ.व.। भाषा-संस्कृत	a i	विषय

कया। र॰ काल् × । ले॰ काल × । भ्रमूर्या। वै॰ सं∘ म्७स्,। इस भण्यार । . २६००, प्रति सं० २ । पत्र सं० १० | ले॰ काल सं० १६४७ कालिक सुद्धी ३ । ते० सं० ६७ । इस् भण्यार ।

प्रयक्ति—संबद् १६४७ वर्षे कालिक सुदि ३ बुधवारे दर्द पुस्तक लिखायत भीनंदकाहासंवे नदीतरमञ्ज्ञे नियागरी भट्टारक श्रीरामसेनान्वये तदपुक्रमें भट्टारक श्रीतीमकीलि तरपृष्ट में० घर्षाः क्रीति तरपृष्ट में० भवी उदयसेन तरप्त्र होगाररण्यीर भ० श्रीतिभुवनकीति तद्विष्य ब्रह्मवारि और नदवल दर्द पुस्तका लिखायित संकेषदंशकातीय कासवीवाल गाने साह केशव भागी लाही तरपुत्र ६ बृहर-पुत्र कीनी कार्या जमनारे । डि. पुत्र अवसी तस्य भागी से करे तु० पुत्र इसर तस्य भागी सहकारदे, वर्षा पुत्र साम प्रवास के करे तु० पुत्र इसर तस्य भागी सहकारदे, वर्षा पुत्र नाम तस्य भागी नावस्य प्रवास के स्वर् पुत्र के क्षाकृश्यानामध्ये ब्रह्म श्री नदीहारी जानावर्णीकर्मकायार्थं निलास्य प्रदत्तं । तसका तवमन वर्षतांवर ।

संबद् १७४१ वर्षे माहा सुदि ५ सोमवासरे भट्टारक थी ५ विश्वतेन तस्य शिष्य मंडलावार्य श्री ३ जय-कीत्ति पं० वीरेपांद पं० वयाश्रेद कुक्ते ।

२६७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७३ से १२६ । से० काल १४८६ कारिक सुदी २ । प्रयुक्त । वे० सं० १४ । इस अध्यार ।

्र६७६. प्रति सुठ ४ । पत्र संग्नान । लेक्काल संग्रुपुर काग्नुपुर्दी १ । वेश संग्रुपुर भण्डार ।

इनके प्रतिस्ति क मण्यार में 'र'प्रतिष्ठें' (वें सं० ६७६') के प्रण्यार में १ प्रति (वे० सं० ६००) तथा ट मण्यार में २ प्रतियां (वे० सं० २० 'छंडे, '२१७०) और हैं।

२६६०. जसकायकोस्थ-मंत्रे भागीवर । तमं सं र हi सांत्र १२% कर्षमः। मान्यिसंस्त्रः। विषय-क्या । र र कास \times । तेर कास \hat{x} ो पूर्व \hat{a} े वें \hat{a} े वें \hat{a} े कें \hat{a} े क्यार्ट \hat{a} े

२६५२. ज्ञतकथाकोरा—सकलाकीर्त्ति । पत्र तं० १६४ । आ० ११४५ ६ऋ । आषा—संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । धपुर्या | वे० तं० ८७६ | इस भण्डार ।

विशेष—क्षु मण्डार में १ प्रति (नै० सं० ७२) की और है जिसका ले० काल सं० १६६६ सावन नुदी ५ है। ब्वेताम्बर क्रुव्योराज ने उदयपुर में जिसकी प्रतिनिधि की थी।

२६८२. ब्रतकथाकोरा—देवेन्द्रकीचि । पत्र सं० ८६ । घा० १२४५ दश्च । भाषा—संस्कृत । विषय— कथा । र॰ काल ४ । ते॰ काल ४ । प्रपूर्ण । वे० सं० ८७७ । छा मण्डार ।

विशेष—वीच के बनेक पत्र नहीं हैं। कुछ कथायें पं० दामोदर की भी हैं। क भण्डार में १ प्रपूर्ण प्रति (वे० सं० ६७४) मीर है।

२६ न्द्रे श्रेतकथाकोशः '''''। पत्र सं०३ से १०० । घा० ११४५३ इंच। भाषा–संस्कृत थपश्रंशः । विषय–कथा। र०काल ४ । ले०काल सं०१६०६ फाग्रुण दुवी ११ । घपूर्ण। वे० सं० ८७६ । इत्र भण्यार ।

विशेष—भीच के २२ से २५ तथा ६५ से ६६ तक के भी पत्र नहीं है। निस्न कथाओं का संग्रह है—

१. पृष्पांजलिविधान कथा।

- संस्कृत पत्र ३ मे ४
- २. श्रवसद्भादशीकथा-चन्द्रभूषसा के शिष्य पं० श्रभ्रदेव " " ५ से ८

चन्तिम-चंद्रभूषण्शिष्येण कथेयं पापहारिग्णे। सस्कृता पंडिताभ्रेण कृता प्राकृत सुत्रतः।।

- रत्नत्रयविधानकथा—पं० रत्नकीर्त्त "" संस्कृत गद्य पत्र द से ११
- ४. बोडराकारसाकथा—वं० अभ्रदेव ं "" .. पद्य .. ११ से १४
- ४. जिनरात्रिविधानकथा^{.....}। ... १४ से २६
- २६३ पद्य हैं। इ. मेघमालाव्रतकथा।
- . मेघमालाव्रतकथा.....। "गद्य "२६ से ३१
- दशलाक्षिककथा—लोकसेन। "", ,, ,, ३१ से ३५
- ्राप्ताव प्रवास क्षेत्र क्षेत्र
- १०. रत्नत्रयविधि--- आशाधर "" , गद्य , ४३ से ५१

प्रारम्भ-- श्रीवर्ड मानमानस्य गौतमावीश्वसद्गुरूत् ।

रत्नत्रयविधि वस्ये यथाम्नामुविशुद्धये ॥१॥ 🛚 🖄

क्रन्तिम प्रशस्ति— साथो मेडितवानवंशसुग्णैः सज्जैनवृदामसोः । मासास्थरमपुतः प्रतीतमहिमा श्रीनानदेवोऽभवत् ॥१॥ कथा-साहित्य] [२४३

यः सुक्कादिपदेषु मालवपतेः सात्रातियुक्तं शिवं । श्रीसल्लक्षगुयास्वमाश्रितवसः का प्रापयन्नः श्रियं ॥२॥ श्रीमत्केशवसेनार्यवर्धवाक्यादुपेयुषा । पाक्षिकश्रावकीशावं तेन मालवमंडले ।। सह्मक्षरापुरे तिष्ठन् गृहस्थावार्यकुंजरः । पंडिलाकाधरी अक्त्या विज्ञमः सम्ययेकदा ।।३।। प्रायेग राजकार्येऽवरुद्धम्मीशितस्य मे । भाद्र किविदनुष्टेयं व्रतमादिश्यतामिति ॥४॥ ततस्तेन समीक्षो वै परमागमविस्तरं। उपविष्टंसतामिष्टस्तस्थायं विधिसत्तमः ॥१॥ दिष्टुः तेनान्येश्च यथाशक्तिर्भवभीतैरनृष्टितः । ग्रंथो बुधाशाधारेगा सद्धर्मार्थमधी कृत: ।।६।। ८३ १२ विक्रमार्कञ्चकीत्यग्रद्वादशाब्दशतास्यये । दशस्यापश्चिमे कृष्णे प्रथतां कथा ११७११ पत्नी श्रीनागदेवस्य नंद्याद्धम्में सा नायिका । थासीव्रत्नत्रयविधि चरतीनां पुरस्मरी ॥५॥ m इत्याशाधरविर्ज्जिता रत्नत्रयविधिः ११. पुरद्रविधानकथा''''। संस्कृत पद्य १२. रज्ञाविधानकथा। प्रथ से प्रद १३. दशलक्ष्याजयमाल-रइध्रु। ५६ से ५८ १४. पस्यविधानकथा। संस्कृत पद्य ४८ से ६३ १४. धनथमोश्रतकथा-पं० हरिचंद्र । ग्रपभ्रं श ६३ से ६६ धगरवाल वरवंसि उप्पश्लाहं हरियंदेल । भक्तिए जिल्लुक्स्एपंस्तवेबि पक्षित्र पद्धविवाखंदेसा ।।१६॥ १६. चंद्नषष्ठीकथा--६६ से ७१ १७. मुखावलोकनकथा ७१ से ७४ १८. रोहिसीचरित्र-

द१ से द४

१६. रोहिसीविधानकथा--

					ı.	कवा-सम्बद्ध
	२०. अस्यनिधिविध	। निक्या 🐪 🗥	<u>.</u> '	संस्कृत	दर्शे दव	
	२१. मुकुटंसप्तमीकथ	ां " पं० अभ्रदेव "	971 W - 3	,,	दद से दह	
	२२. मौनव्यतविधान	—रत्नकी न्त ः	S. Page	संस्कृत गद्य	६० से ६४	
		कथ ा प त्रसेन '				[भपूर्ग]
P\$1	संबत् १६०६ वर्षे फाल ं,	(, mp . , , ,	,			
	२६८४: अतकथाकोशः	dà-4jə- 6#	1 मा क १२ × 3	र इञ्चाभाषा	–संस्कृत । विष	य–कथा। र०
। म ×। ने	० काल × । पूर्णावे० ∗	सं० ६२ । छ्यं मण्डार	1			
	२६८४. व्रतकथाकोश-	— सुरााताचंद । पत्र	सं० ५६ । अप	ा० १२ १ ×६	ड≅ा। भाषा∽ि	रन्दी। विषय–
या । र० व	गल सं०१७=७ फागुन वृ					
	विशेष१८ कथार्थे हैं।					
	इसके मतिरिक्त घ भण्डा	ਰ ਜੋ ਸਭ ਸ਼ਹਿ (ੈੈ.	¥- 00 \		c ()	
: अध्यक्तर वे	१ प्रति (वे० सं०१७०	:\enganain (406()	भण्डार स १ प्र	ात (व० स०	६८६) नथा
	२६८६. जतकथाकोश			। इझा भाषा	-हिन्दी। निप	य~कथा∣र०
। स	० काल × । भ्रपूर्सा । वे०		खार। ' ः			
	विशेषनिम्न कवामीं	ना संग्रह है				
	नाम	कर्ता	,		विशेष	
	च्येष्ठजिनवर व्रतकेथा ं -	ं खुशासचंद		, ţo	काल सं० १७०	; 2
	श्रादित्यवारकथा				, ×	
	त्रपुरवित्रतकथा—ं "				<u> </u>	
	सप्तपर्यमस्थानवर्तकथा-	- खुशासचन्द			,	
	मुकुटसप्तमीकथा	, , ,,	\$ ·	· . 46.	कॉले सं० १७०	; 3
	अस्यनिधित्रतकथा-	ெ த கட்	٠.,			
	षोडराकारसम्बतकथाः	ernyy ar s	L. f., Express			
	मेघमाताव्यतकथा	"				
	बन्दनवच्ठीव्रतकथा-	. ,,	•	14 67 4 1/5/4		
	तविधविधानकथा	, ,,		36 + 7 ts eq		
	जिनपूजापुरवरकथा-	, n	arriz	` /* B	·	
				- st		

नास कर्ता विशेष् पुष्पांजसिम्रतकथा-- खुरास्रवन्द --बाकाशपंचसीकथा-- " र० कास सं ० १७६५ सुकावसीम्रतकथा-- " --

पृष्ठ ३६ से ५० तक दीमक लगी हुई है।

२६८७, ज्ञतकश्रासंब्रह्णामा पत्र सं०६ से ६०। शा०११३/४५६ दक्षा आया-संस्कृत | विषय-कवा। र० काल 🔀 । ते० काल 🔀 । श्रपूर्वी। वे० सं०२०३६ । ट जण्डार |

विशेष-- ६० से भागे भी पत्र नहीं हैं।

ं २६८८. ज्ञतक्षासंमx*****। पत्र सं० १२३। बा० १२xपु हक्षा आया-संस्कृत क्षपभंस । विषय- ं क्या । र० काल x । ते० काल सं० १४१६ सावरा बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ११० । का सम्बार ।

विशेष---निम्न कथाओं का संग्रह है।

नाम क	र्ता	भाषा	विशेष
सुगन्धद्शमीत्रतकथा।		धपम्रं श	
द्यनन्तव्रतकथा ।		**	-
रोहिएवित्रतकथा—	×	*	_
निर्दोषसप्तमीकथा—	×	29	_
दुधारसविधानकथामुनिविन	यचंद् । 🕝	99	
सुखसंपत्तिविधानकथाविमतः	कीर्चि ।	,,	• -
निर्भरपञ्जमीविधानकथाविन	यचंद्र ।	" –	-
पुष्पांजलिबिधानकथा—पं० हरि	अन्द्र ।	,,	: -
अवराद्वादशीकथापं० अभ्रदे	4 1	,,	_
षोडशकार एविधानकथा - "		,,	_
शुतस्कंधविधानकथा "		99	_
रुक्मियाीविधानकथा— अत्र	सेन।	**	_

प्रारम्भ — जिनं प्रशास्य नेमीशं संसारार्णवसहरकं।
सुनिवृश्चित्रविरंतं वहने मन्यानां बोधकारकां।।

धन्तिम पुष्पिका- इति वृत्तमेन, निरम्भिता नरदेव कार्यप्रिता कविमाणि विधायकवा समाप्त ।

पल्यविधानकथा	×	_	संस्कृत	-
दरासक्याविधानकथा	होक्से न		"	_
· चन्द्रनषष्ठीविधानकथा	×		ग्रपञ्च रा	
जिनरात्रिविधानकथा	×	-	•	
जिनपूजापुरंदरविधानकथा-	~श्रमरकीर्त्त	_	"	
त्रिचतुर्विशतिविधान	×	_	संस्कृत	
जिनमुखावलोकनकथा—	×		,,	_
शीलविधानकथा	×		"	
ब्रज्यविद्यानकथा	×		39	_
सुस्रसंपत्तिविधानकथा—	×		"	_

सेवक प्रशस्ति—संवत् १४१६ वर्षे भावरण बुदी १४ श्रीमूलसंथे सरस्वतीमच्छे बलात्कारवारी ४० श्रीपध-नैविदेवा तस्युट्टे ४० श्रीषुभवन्द्रदेवा तस्युट्टे ४० श्रीकिनचन्द्रदेवा । भट्टारक श्रोपधानीदि शिष्य धूर्ति सदनकीति शिष्य ४० नर्रावह निमित्ते । संकेवनासान्यये दोसीयोत्रे संबी राजा भावी देउ तुपृत्व श्लोखा आर्या गर्शोपुत्र कातु वदमा धर्मा ब्रास्तः कर्मकार्यो इदं शास्त्रं लिकाप्य ज्ञान पात्रावतं ।

२६८८. व्यतकथासंबद्धःःः। पत्र सं∘ ८८ । घा०१२८७°, दश्चः । जाया–संस्कृत । विषय–कथा । र०काल × । ते०काल × । पूर्णावे० सं०१० । कः चण्डार ।

विशेष---निम्न कथाओं का संग्रह है।

द्वादशवतकथ	पं० अभ्रदेव।	संस्कृत	
कवलचन्द्रायस्त्रतकः	या	**	
चन्द् नषष्ठी व्रतकथा-	- खुशासचन्द् ।	हिन्दी	
नंदीरवरव्रतकथा		संस्कृत	
जिनगुणसंपत्तिकथा-	-	39	
होली की कथा—	ब्रीतर ठोतिया	हिन्दी	
रैदन्नतकथा	म ० जिनदास	,	
रत्नावतिव्रतकथा	गुखनंदि	,,	

२६६०. व्रतकथासंग्रह—जञ्जनहतिसागर । पत्र सं०२७ । ग्रा०१०४४२ । भाषा—हिन्दी । विषय— कथा । र०कास × । ते०कास × । पूर्णा। वे०सं०६७७ । क्र. सथ्यार । ्र २६६१. व्रतक्षभासंप्रहुः। पत्र सं ४ ४ । मा० द×४ इक्ष । माथा-हिन्दी । विषय-कथा। र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७२ । क मण्डार ।

विशेष---रवित्रतं कथा, प्रष्टाश्चिकावतन्त्र्या, षोडशकारणुवतकथा, दशलक्षरांत्रतकथा इनका संग्रह है पोडश-कारणुवतकथा गुजराती में है।

२६६२. व्रतस्थासंब्रहः*****। पत्र सं० २२ से १०४ । आः० ११×४६ दश्चा। भाषा-हिन्दी । विषय-कया। र० काल \times । ले० काल \times । सपूर्ण। वै० सं० ६७६ । कः भण्यार ।

विशेष--- प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं हैं।

२६६३, बोडशकारत्यविधानकथा—पं० क्षाभ्रदेव । पत्र सं० २६। भा० रे०१४४६ इस्र । भाषा— संम्कृत । विषय—कथा । र० काल ४ । ने० काल सं० १६१० भादवा सूरी ४ । वै० सं० ७२२ । कृ मण्डार ।

विशेष—इसके धत्तिरिक्त धाकाबायंचमी, रुक्तिससीक्याएवं धनंतप्रतक्याके कर्ताकानाम पं॰ मदनकीर्ति है। ट भण्डार में एक प्रति (वें० सं॰ २०२६) और हैं।

२६६४. शिवरात्रिडद्यापनविधिकथा— शंकरभट्ट । पत्र सं० २२ । मा॰ ६४४ इझ । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा (जैनंतर) । र० काल ४ । ले० काल ४ । मपूर्त्य । वे० सं० १४७२ । इस भण्डार ।

क्रिनेव-- ३२ से बागे पत्र नहीं है। स्कंधपुराएए में से है।

र् २६६४. शोलकथा—आरामझा पत्र सं०२०। प्रा०१२४७, इक्स । आपा-हिन्दी पदा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पर्सा । वे० सं०४१३ । का अध्यार ।

विकोष—इसी अण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० ६६६, १११६) क अण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६२) घ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १००), क्क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७०००), क्क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८०), का भण्डार में एक प्रति (ले० सं० १६६७) झोर हैं।

२६६६, शीक्षोपदेशमाला—मेरुशुन्दरमधि। । पत्र सं० १३१ । झा० ६४४ इंच । आषा-गुजराती लिपि हिन्दो । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । सपूर्ण । वै० सं० २६७ । हर अध्वार ।

विशेष-४३वी कथा (धनश्री तक प्रति पूर्ण है)।

२६६७. सुकसप्तति " ""। पत्र सं०६४ । झा० ६६ँ ४४५ै इंच। भाषा—संस्कृत : विषय—कवा। र०काल \times । ले० काल \times । सपूर्ण। वै० सं०३४५। चुमण्डार।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

२६६८. आवराहादशीखपाक्यान''''''। पत्र सं० ३। बा० १०३/४४,१ इ'च । जावा-संस्कृत । विवल-कथा (जैतेतर) । र० काल × । तेर्० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६८० । का अध्वार । र्ह£ ६. कुमक्याक्राद्वरीकिक्या। तत्र सं०६०। छा० १२×५६ व । मात्रा–संस्कृत नषा विषय⊸ कत्या । रुकास X | सेठकास X | सपूर्ण | वै०सं० ४११ । क्रमण्डार ।

२७००. श्रीपालकस्याः'''''। पत्र सं०२७ । स्रा०११ \times ७३ इंच। भाषा-हिन्दी । विषय-कत्रा। र०
कास \times । से० काल सं०१६२६ सैवाल स्वी ७ । पूर्ण। वे० सं०७१३ । क भण्डार।

विशेष-इसी अध्दार में एक प्रति (वे० सं० ७१४) धौर है।

२७०१, श्रेष्णिक चौपर्ट— क्वांगाचैद । पत्र सं०१४ । झा०६५ ४४ , दंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कवा । र० काल सं०१ ८२६ । पूर्ण। वै० सं०७६४ । छा मण्डार ।

विशेष--कवि मालपूरा के रहने वाले थे।

ध्रय श्रेरियक चौपई लीखते---

साहिताब बंदी जगदीत । जाहि बरित ये होई जगीत । हुजा बंदी ग्रुट निरमंब । भूला अध्य दीकाराग्य पंव ।११। तीजा साबु सबै का पाइ । चीचा सरस्वती करी सहाय । जहि लेवा से तब बुधि होत । करी चीपई मन गुधि जोई ॥२।। साता हुनने करी सहाई । अस्थर होग्य सवारो माई । लेशिक चरित बात में नहीं । जैसी जाग्री चीपई नहीं ॥३।। राज्या समें बनना जाग्या । धर्म जैनि धेवै मनि स्राणि । राज्या धर्म बनावे बोध । जैन पर्म की कार्ट कोष ॥४।।

पत्र ७ पर-दोहा---

जो भूठी मुल ये कहै, बरावीत्या दे दोस । जे नर जासी नरक मैं, मत कोइ बाराी रोस ॥१५१॥

की पर्द-- कहे जती इक साह सुजाए। । वामए। एक पक्यो प्रति प्रास्ता ।
ज़ इ की पुत्र नहीं को प्राय। तमें न्यील इक पास्यो जाय ।।५२।।
वेटो करि राक्यो निरताइ । दुवैंच पाव एक पे द्वाइ ।
वांमएी सही जाइयो पूत । पत्नी थावे जाए। स्वच्य ।।५३।।
एक दिवस वांक्या विचारि । पाएं। नेवा वाली नारि ।
पास्ए। वासक मेल्ली तहां। न्यील ववत ए साखी बहां।।४४।।

श्रन्तिम-

भेदभलो जाएगे इक सार। जे सुशित्सी ते उत्तरै पार। हीन पद सक्षर जो होय। जकी सवारी ग्रुशिवर लोय।।२८६।। मैं म्हारी बृधि सारू कही ! गुणियर लोग सवारी सही । जे ता तको कहै निरताय। सूक्ता सगला पातिग जाइ।।२६०।। लिखिबा बाल्यो सूख नित लही, जै साधा का ग्रुग यो कही। यामै भीलो कोइ नहीं, हुगै वैद चौपइ कही ।।६१।। वास भलो मालपूरो जाग्जि। टौक मही सो कियो वसाग्रा। जठै बसै माहाजन लोग। पान फूल का कीजै भोग।।६२।। पौरिए छतीसौँ लीला करै। दुख ये पेट न कोइ भरै। राइस्यंध जी राजा बसारिए । बीर चनाहन राखे भारिए ।।६३।। जीव दया को प्रधिक सुभाव । सबै भवाई साथै डाव । पतिसाहा बंदि दीन्ही छोडि । बूरी कही भवि सुरी बहोडि ।।१४।। धनि हिंदवाएरो राज वसारिए । जह मैं सीसोची सो जारिए। जीव दया को सदा वीचार। रैति तस्मैं राखे प्राधार ॥६४॥ कीरति कही कहा लगि जागि । जीव दया सह पालै झागि । इह विधि सगला करें जगीस। राजा जीज्यों सौ घर बीस ।।१६।। एता बरस मै भोलो नहीं । बेटा पोता फल ज्यो सही । दुखिया का दुख टालै झाय । परमेस्वर जी करै सहाय ।।१७।। इ पुन्य तर्णी कोइ नहीं पार । वैदि सलास करें ते सार । वाकी बुरी कहै नर कोइ। जन्म बापली चालै खोड ।।६ वा। 🏄 संबत् सौलह सै प्रमाख । उपर सही इतासौ जाख । े निन्यारावे कह्या निरदोष । जीव सबै पावे पोष ।। ११।। भादव सुदी तेरस सनिवार । कहा तीन से वट प्रथिकाय । इ सुलाता सुन्न पासी देह । माप समाही करै सनेह ।।३००।।

इति श्री श्रेरिक चौपह संपूर्त्य भीती कालिक दुवि १३ सनीसरवार कर्के सं० १८२६ काडी बासे लीखतं क्यतसागर बांचे जहने निम्सकार नमोस्तं बांच ज्यो थी।

२७०२, स्तापरसस्थानकथा—साचार्य चन्द्रकीति । पत्र सं०११ । मा० ६३४४ इंब । बावा— संस्कृत । विषय-कथा । र० काल ४ । ते० काल सं० १६८६ मालोज बुदी ११ । पूर्व । वे० सं०३५० । व्य कथार ।

कथा-साहित्य

NAO }

२७०३, सहस्यसनकथा—स्थाचार्य सोसकीश्वि । पत्र सं० ४१ । या० १०३×४५ इंच । आवा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल सं० १५२६ माव सुदो १ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ६ । स्त्र अण्डार ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

२७०४. प्रति सं०२ । पत्र सं०६४ । ले० काल सं०१७७२ श्रावसा बुदी १३ । वे० सं०१००२ । इस अफ्तार ।

प्रमस्ति— सं० १७७२ वर्षे श्रावरामासे कृष्यापसे त्रयोदस्यां तिथी धर्कवासरे विजेरामेरा लिपिचके धक्तवरपुर समीपेषु केरवाधामे ।

्रिक्ट्स, प्रति संव ३ । पण संव १४ । लेव काल संव १०६४ आदवा मुदी ६ । वेव संव ३६३ । चा अच्चार ।

विशेष—नेवडा निवासी महात्मा होरा ने जयपुर में प्रतिनिधि की थी। दीवाल संगही समरवदनी सिन्दूक। ने प्रतिनिधि दीवाल स्योजीराम के मंदिर के लिए करवाई।

२.७०६, प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १७७६ माघ मुदी १ । वे० सं० ६६ । मः मण्यार ।

विशेष--पं नर्रासह ने श्रावक गोविन्ददास के पठनार्थ हिण्डीन मे प्रतिलिपि की थी।

२७८७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६४ । ले॰ काला सं० १६४७ घासोज मुदीह। वे॰ सं० १११ । व्य अभकार !

२.७०८. प्रतिसंब ६ । पत्र सं० ७७ । ले॰ काल सं० १७४६ कार्तिक बुदी ह । वै० सं• १३६ । रू. अभ्यार ।

विशेष--पं॰ क्यूरबंद के वाचनार्थ प्रतिनिधि की गयी थी।

इनके प्रतिरिक्त घमण्डार में एक प्रति (वे० सं०१०६) इन् भण्डार में एक प्रति (वे० सं०७४) कीर हैं।

२७०६. सप्तस्यसनकथा— भारासङ्घापक तं० ६६। प्रा०११२/४५ इंचा प्रावा–हिन्दीपदा। विवय—कवा। २० काल सं०१६१४ प्राचित सुदी१०। पूर्णावे० सं०६ ६६६। चामध्यर।

विशेष---पत्र विपके हुये हैं। अंत में कवि का परिचय भी दिया हुआ है।

२७१०. सप्तव्यसनक्याआया \dot{m} । पत्र सं० १०६। मा० १२×८ इ'व । माया-हिन्दी । विषय-१४। १. २० कल् × । ते० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७६३ । क सम्बार ।

> विशेष--सोमकीति इस सप्तम्मसनकथा का हिन्दी प्रमुखाद है। या मण्डार में एक प्रति (बैठ संठ ६८९) ग्रीर है।

२७११, सम्मेदशिकारसङ्गातक-ताक्षणकः । पत्र सं० २६ । सा० १२४६ ह'व । बाग-हिन्दी । विवय-कवा । र० काल सं० १८४२ । ले० काल सं० १८८७ सायाड दवी''' । वे० सं० ८८ । रा पण्डार ।

विशोध — लाल क्ष्य महारक व्यवकीरित के सिध्य थे । रेवाड़ी (पक्काव) के रहते वाले थे और वहीं लेखक ने इसे पूर्ण किया।

२७१२, सम्यक्त्यकोसुदीकथा—गुत्याकरसूरि । पत्र सं॰ ४८ । मा॰ १०४४ इ'व । माषा-संस्कृत । विवय-कथा । र० काल सं० १४०४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । च मण्डार ।

२७१३, सम्यक्त्यकीमुदीकमा—स्वेता। पत्र सं० ७६। झा० १२४५३ इ'व। आषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ४। ले० काल सं० १८३३ माच सुरी ३। पूर्ण। वे० सं० १३६। खा सम्बार।

विशेष— स्न अध्डार में एक प्रति (वै० सं० ६१) तथा का मण्डार में एक प्रति (वै० सं० ३०) प्रीर है।

२७१४. सम्यक्त्यकौमुदीकथा*****। तत्र सं०१३ से ३३ । घा० १२×४६ वं । सावा-सस्कृत । विषय-कथा। र०काल ×। ते० काल सं०१६२५ माय बुदी ६ | घपूर्ण । वे० तं०१६१०। ट मण्डार ।

. २७१४. सम्यक्त्यकोमुदीकवा"""। यत्र सं० = ६। मा० १०३४४ इ'व । मावा-संस्कृत । विषय-कवा। र० काल ४ । ले० काल सं० १६०० चैत सवी १२ । पूर्ण । वै० सं० ४१ । व्याप्रकार ।

विशोल-संबत् १६०० में खेटक स्थान में बाह धानम के राज्य में प्रतिनिधि हुई। ह० धर्मदास प्रमुवास गोयल गोतीय महलागापुर निवासी के बंध में उत्पन्न होने वाले साथु श्रीदाल के पुत्र मादि ने प्रतिसिधि कराई। लेखक प्रमुद्धि ७ प्रमु लम्बी है।

२७१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ से ६० । ले० काल सं० १६२८ वैद्याल सुद्धी ४ । अपूर्या । वे० सं० ६४ । का अण्डार ।

श्री हूं गर ने इस ग्रंथ को ब्र॰ रायमल को मेंट किया था।

स्रथ संबर्धरेस्मिन श्रीतृपतिविक्तमादित्यराज्ये संवत् १६२८ वर्षे प्रेयमारे क्रम्शुएसपंत्रमेषिने भट्टारक श्रीभानुकीतितदात्नाचे धगरवात्माच्ये मितालपोचे साह दासू तस्य भागी मोली तसीपुत्र सा. योपी सा. वीपा । सा योपी तस्य नार्या नीयो तसो पुत्र सा. भावन साह उवा सी. भावन भागी दृरदा शही तस्य पुत्र तिपरवाच । साह उवा तस्य भावीं नेषनही तस्यपुत्र हूं वरसी सास्य-क्रम्यकः कीमदो ग्रंप ब्रह्मचार रामनंब्रह्मदात् पठनार्थं कानावर्णी कर्मक्रविद्ध । युगं भवतु । लिक्ति जीवारमन पोपालवास । जीवन्त्रप्रमु वैत्यालये प्रहिष्टुरमध्ये ।

् २०१८, प्रति सं०२ । पत्र सं०६४ । ले० काल सं० १८२१ नाम सुदी ४ । वे० सं०७४४ । क भव्यार ।

विशेष---फार्फ्राम साह ने जयपूर नगर में प्रतिलिपि की थी।

इसके प्रतिरिक्त का सम्बार में २ प्रतियां (वे० सं० २०६६, ६६४) छ सम्बार में एक प्रति (वे० सं० ११२), क सम्बार में एक प्रति (वे० सं० ६००), क्ष सम्बार में एक प्रति (वे० सं० ६७), सः सम्बार में एक प्रति (वे० सं० ६१), क्ष सम्बार में एक प्रति (वे० सं० ३०), तथा ट सम्बार में २ प्रतियां (वे० सं० २१२६, २१३०) [वोनों सपूर्त | मौर हैं।

२७१६. सम्यक्तकोसुरीकवासाया—वितोदीलाला । पत्र सं० १६० । घा० ११४५ इंच । आषा— हिन्दी पद्य । विवय-कथा । र० काल सं० १७४६ । ले० काल सं० १८६० सावन बुढी ६ । पूर्ण । वे० सं० ८० । स सम्बार ।

२७२०, सम्यक्त्यकोमुद्दीकथामाथा—जगतराय । पत्र सं०१४१ । बा०११४४३ इ.च । आया-हिन्ती पद्य । विषय-कथा । र० काल सं०१७७२ माय सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं०७४३ । क मध्यार ।

२७२१. सम्बन्धस्यक्तेष्ठद्रीकथाभाषा—जोधराज गोदीका । पत्र सं० ४७ । बा० १०५ ४७५ इंच । नाषा-हिन्दी । विवय-नना । र० काल सं० १७२४ फाग्रुल बुवी १३ । लं० काल सं० १८२४ ब्रासोज बुदी ७ । दूर्स । वै० सं० ४३४ । का मध्यार ।

विकोद---नैनसागर ने श्री गुलावर्षयजी गोदीका के वाचनार्थ सवाई जबपुर में प्रतिस्थि की थी। सं॰ १८६८ में पोची की निखराविन दिवाई पं॰ खुक्यालशी, पं॰ ईसरदासजी गोदीका सूं हस्ते महास्था फलाह्ने साई र० १) दिया।

२७२२. प्रतिसं०२ । पत्र सं०४६ । तेश्काल सं०१६६ साम बुदी २ । देश सं०२११ । स्व प्रम्यार ।

२७२३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६४। ले० काल सं० १८८४। वे० सं० ७६८ । क भण्डार।

२७२४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६७। ते॰ कात सं० १८६४। वे० सं० ७०३। च मण्डार।

२०२४. प्रतिसं०४ । पत्र सं०४४ । ते० काल सं०१८३५ चैत्र बुदी १३ । वे० सं०१० । सः अध्यार ।

्रस्यके प्रतिरिक्तः चामचार में एक प्रति (वै० वं॰ ७०४) ट मच्चार में एक प्रति (वै० सं० १५४३) स्रीर हैं। २७२६. सम्यक्त्वकोप्रदीक्षाचा........ पत्र सं० १७४ । म्रा० १०३४७३ दंव । मापा-हिसी । विवन-क्या । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ७०२ । च अण्यार ।

२७२७. संबोगपंचतीकथा—धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३। ध्रा० ११३ \times १३ दंब । आया-संस्कृत । विषय-क्या । र० काल imes । ते० काल सं० १८४० । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । द्वा सम्बार ।

विशेष--- इक भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ८०१) भीर है।

२७२८. रासिसद्रधकानीचौपई—जिनसिंहसूरि। पत्र सं० ४१। मा० ६४४ रंच। नाया-हिन्दी। विषय-कथा। र॰ काल सं० १६७८ मासोज बुदी ६। ले॰ काल सं० १८०० चैत्र सुदी १४। सपूर्ण। वै० सं० ८४२। क भण्डार।

विशेष -- किशनगढ में प्रतिलिपि की गई थी।

२७२६. सिद्धचककथा''''''। पत्र सं० २ से ११ । घा० १०४४६ इंच । बादा-हिन्दी । विषय-कथा । १० काल ४ । ले० काल ४ | प्रपूर्ता । ने० सं० ६४३ | इस बण्डार ।

२७३०. सिंहासन बत्तीसी.......। पत्र सं०११ से ६१। प्रा०७ x^2 है व । भाषा-हिन्दी। विषय-क्या। र० काल x। ते० काल x। प्रपूर्ण। के० सं०१४९७। ट्र मण्डार।

विशेष--- ५वें श्रध्याय से १२वें श्रध्याय तक है।

२७३१. सिंहासनद्वात्रिशिका—सेसंकरमुनि । पत्र सं० २७ । घा० १०४४६ इ'व । माषा-संस्कृत । विषय-राजा विकमादित्य की क्या । र० काल ४ । से० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० २२७ । स्व वण्डार ।

विशेष---प्रति प्राचीन है। श्रन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

श्रीषिकमादित्यनरेस्वरस्य चरित्रमेतत् किविभिनिबद्धं । पुरा महाराष्ट्रपिष्ट्रभाषा मयं सहारवर्यकरंनरागाां ।। क्षेमंकरेग् धुनिना वरपद्यमद्यवेषेनपुक्तिकृतसंस्कृतवयुरेगा । विवनोपकार विससत् प्रमुक्तीतिनायमके विरादयरपंवितकृषिहेतु ।।

२७३२. सिहासनद्वात्रिशिका******। पत्र तं० ६३ । बा० १४४ ईव । भाषा-संस्कृत । विषय-कवा । १० काल × । ते० काल सं० १७६८ पीच सुवी ४ । पूर्ण । वै० सं० ४१९ । व्य मण्यार ।

विशेष---लिपि विश्वत है।

२७३३, युकुमालयुनिकवा'''''' । पर्वसं०२७ । बा०११३×७३ इ.च । भाषा-हिन्दी गवा । विषय-कथा । र० काल × । ते ० काल सं०१८७१ बाह बुदी १ । दूर्ष । वे० सं०१०३२ । व्याभण्यार ।

विशेष-- बयपुर में सदासुकाओ गोधा के पुत्र सवाईराम गोधा ने प्रतिलिपि की बी।

२७३५. सुराम्बदरासीकम्।***** । यत्र सं \circ ६। प्रा \circ ११ $\frac{1}{2}$ \times \circ $\frac{1}{2}$ इं व । मावा-संस्कृत । विषय-कथा । र \circ काल \times । पूर्ण । वे॰ सं \circ \circ \circ 2 । कु मण्डार ।

विशेष--- उक्त कथा के चतिरिक्त एक और कथा है जो अपूर्ण है।

२७६४. सुगन्धदरासीझतक्षा—हेसराज । पत्र सं० ४ । सा० म्हे×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कवा । र० काल × । तं० काल सं० १९०५ आवस्स सुदी ४ । पूर्ण । दे० सं० ६९४ । का भण्डार ।

विशेष---भिष्ड नगर में रामसहाय ने प्रतिलिपि की थी।

प्रातम्भ---भय सुगन्धदशमी ब्रतकथा जिख्यते--

नीपर्द— वर्ड मान बंदी सुलदाई, ग्रुर गीतम वंदी वितलाय ।
सुगन्यवसमीप्रत सुनि कया, वर्ड मान परकासी यथा ॥१॥
पूर्ववेस राजप्रह गांव, अंगिक राज करें प्रमिराम ।
नाम चेलना गृहपटरांती, चंदरीहिस्सी रूप समान ।
नुप सिहासन वैठी कदा, वनमाली कस स्थायो तदा ॥२॥

शन्तिम--- सहर गहे बोड तिथ बात, जैनथर्म को करैंप्रकास ।।
सब श्रावक वत संग्रम घरे, दान पूजा सो पातिक हरें ।
हेमराज कवियन याँ कही, विस्तृत्रान परकासी सही ।
सो नर स्वर्ग ध्रमरपति होय, मन वच काय मुनै जो कोय ।।३६।।
इति कया संप्रत्यम

बोहा— श्रावरण श्रुका पंचमी, चंद्रवार श्रुम जात । श्रीजिन श्रुवन सहावनी, तिहां निसा वरि प्यात ।। संबद् विक्रम श्रुप को, इक नव बाठ सुवान । ताके ऊपर पांच लीब, लीजे चतुर सुवात ।। वेस श्रदावर के विचे, जिंद नगर श्रुम ठाम । ताही मैं हम रहत है, रामसाय है नाम ।।

२७२६. सुद्यवस्थ्यसम्बर्धिमाकी चौपई— सुनि केशव। पत्र तं० २७। बा० १४४३ इंच। साथा-हिची। विचय-कथा। र० काल सं० १६१७। ले० काल सं० १६३७। वे० सं० १६४१। ट सम्बरः।

विशेष--कटक में जिला नया।

२०२७. सुद्रशैनसेठकीडास (कथा) । पत्र सं० १ । घा० ६२,४४३ इंच । आचा–हिन्दी । विचय-कथा । र० काल × । ते० काल × । पूर्वी । वे० सं० ६११ । झा कण्डार । ् २०३६. सोमहासाँबारिवेद्यक्षयाः......। वत्र तं० ७। सा० १०×१३ ईच । भाषा-नेस्हत । विषय-क्या । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वै० तं० ५२३ । व्य अच्यार ।

२०२६. स्रोधान्यपंत्रमीकवा —सुन्द्रिकायाणि । वन सं० १ । मा० १०४४ इ'व । जाग-संस्कृत । विषय-कमा । २० काल सं० १६२६ । के० काल सं० १८११ । पूर्ण । वे० सं० २**१६ । वर कवार** ।

विशेष--हिन्दी में भर्य भी दिया हुआ है।

२०४८०. हरिवंशवर्षान् \cdots ापत्र तं॰ २०। वा० १० $\frac{1}{6}$ \times ४३ हंच। वाचा-हिन्दी। विषय-कवा। $\frac{1}{6}$ र॰ काल \times । बंगुर्सा । वे० सं० द ३६। का सम्बार।

२०४१, होलिकाक्रया''''''। पत्र सं० २। सा० १०३/५५ इंच । सावा-संस्कृत । विषय-कथा। र० काल \times । तं० काल सं० १६२१। पूर्वा। वै० सं० २६३। क्रा वण्यार ।

२७४२. होलिकाचौपई—हुंगरक्षि । पत्र सं० ४ । बा० ६×४ इंच । जाला-हिली पद्य । विषय-क्या । र० काल सं० १६२६ चैत्र बुदी २ । ले० काल सं० १७६८ । ब्रपूर्ण । वे० सं० १५७ । ब्रु अच्चार ।

विशेष ---केवल मन्तिम पत्र है वह भी एक ग्रोर से फटा हुमा है। मन्तिम पाठ निम्न प्रकार है---

सोलहसइ गुरातीसइ सार चैत्रहि वदि दुतिया बुधिवार।

नगर सिकंदराबादगुराकरि घागाध, वायक भंडरा श्री खेमा साथ ॥६४॥

तासुसीस द्वार मित रली, मण्यु चरित्र गुरासांमली।

जे नर नारी सुरास्यइ सदा तिह घरि वहुसी **हुई संवदा** ॥६५॥

इति भी होतिका चउपई। मुनि हरचंद विविद्या । क्षेत्रव् १७१८ वर्षे*********भागरामध्ये लिपिहतं ॥ रचना में कुल ८५ पक्ष हैं। चीचे पत्र में केवल ६ पक्ष हैं वे श्री पूरे नहीं हैं।

२०४३ : होलीकीकमा—झीतर ठोलिया। एव सं०२ । मा० ११३/४६३ इंच। जाया-हिली। विवय-क्या। २० काल सं०१६६० कारण सर्वी१४। ले० काल ४ । पूर्ण। वै० सं०४४८ । इस अस्थार।

२७४४. प्रति सं०२ । पत्र सं०४ । ले० काल सं० १७५० । वे० सं० ६५६ । क्र अण्डार ।

विशेष---लेखक मौजमाबाद [जयपुर] का विवासी था इसी गांव में उसने प्रंथ रचना की थी।

२०४४. प्रति सं०३। पत्र सं०८। ते० काल सं०१८८३। वे० सं०१८। म अण्डार।

विशेष--कासूराम साह ने प्र'य लिखवाकर चौषरियों के मन्दिर में चढाया ।

२.७४६. प्रति सं०४। पत्र सं०४। ते० काल सं०१८२० फासुण बुधी १२। दे० सं०१६४२। द्व २.ण्डार।

विशेष--पं रामचन्द्र ने प्रतिक्षिपि की बी।

२७४७. होबीक्या—बिनसुन्द्रस्त्रि । यत्र सं० १४ । मा० १०३x४३ इंच । माथा—संस्कृत । विषय-कवा x । र० काल x । ते० काल x । पूर्ण । वे० सं० ७४ । क्षु मण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में इसके ब्रतिरिक्त ३ प्रतियां वे० सं० ७४ में ही और हैं।

२०% भन्न. होलीपर्यक्रमा''''''। पत्र सं•३ । सा० १०×४३ इंच । नावा–संस्कृत । विषय–क्या । र० काल × । ते० काल × । पूर्णावे० सं• ४४६ । इस जण्डार ।

२.७४६. प्रति सं०२ । पत्र सं०२ । ते० काल सं०१ ८०४ माघ मुदो ३ । ते० सं०२ ८ स्व भव्यार ।

विशेष---इसके स्रतिरिक्त क भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ६१०, ६११) ग्रीर हैं।



व्याकरगा-साहित्य

२७४०. श्रमिटकारिकाः****। पत्र सं० १। मा० १०३×५ $\frac{1}{2}$ इंब । जावा-संस्कृत । विषय-ध्याकरत्ता । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्वा । वे० सं० २०३३ । इस सम्बार ।

२७४१. प्रति सं०२ । पत्र सं०४ । लं० काल 🗴 । वे० सं०२१४६ । ट भण्डार ।

ै २७४२. श्रमिटकारिकावसूरि''''''। पत्र सं० ३। घा० ,१३४४ इ'व । आवा-संस्कृत । विषय-स्थाकरण । र०कान \times । ते० कान \times । तूर्ण । वै० सं० २५० । स्य भण्डार ।

२७४३. स्वयंयप्रकरस्यःःःः। पत्र सं०६। मा० ११ $\frac{1}{6}$ ४५२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-व्याकरस्य । र०कान \times । त्रंगं। वे० सं० २०१८ । स्त्र मण्डार ।

२०४४. व्यवस्यार्थः******। पत्र सं० ८ । म्रा० ५ \times ६ 4 : त्र । भाषा-संस्कृत । विषय-स्थाकरणः । र० काल \times । ले० काल सं० १८४८ । यूर्णः । वे० सं० १२२ । मृत्र मण्डारः ।

> २.७४.४. प्रति सं०२ । पत्र सं०२ । ले० काल ⊠ । प्रपूर्श । वे० सं०२०२१ । ट प्रष्टार । विशेष—प्रति दीमक ने लारली है ।

२७४६. उषादिस्त्रसंपदः — संब्रहरूपी – उष्टब्ख्युत्तः । पत्र सं० ३८ । धा० १०४५ इंच । बाषा – संस्कृत । विषय-व्यावरए। १० काल ४ । ले० काल ४ । यूर्ण । वे० सं० १०२७ । इस अध्वार ।

विशेष-प्रति टीका सहित है।

२०४७. उपाधिज्याकरस्याः.....। पत्र सं• ७ । सा० १०४४ इ.च । माना-संस्कृत । विवय-व्याकरस्य । र० काल × । ते० काल × । पूर्स । वै० सं० १८७२ । इस मण्डार ।

२०४८. कातन्त्रविश्रमसूत्रायकृरि—कारिप्रसिद् । पत्र सं०१२। प्राठ १० $\frac{1}{2}$ ×४२ इंका आवा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल \times । ले० काल सं० १६६६ कार्तिक सुवी ५ । पूर्ण । वे० सं०२४७ । व्या भण्डार ।

विशेष-धादि धन्त भाग निम्न प्रकार है-

नत्वा जिनेंद्रं स्वगुरुं च भक्त्या तत्सत्त्रसादाससुसिद्धिशक्त्या । सत्त्वंत्रदायादवचूरिएमेतां सिक्षामि सारस्वतसूत्रगूक्त्या ॥१॥ प्रायः प्रयोगायुक्तें याः किलकांतंत्र विश्रमो । वेषु मो दुष्कृते श्रेष्ठः शास्त्रिकोऽपि यया जड़ः ।।२।) कातंत्रसूत्रवितरः सञ्ज साप्रतं । यसाति प्रसिद्ध इह चाति लरोगरीयात् ।। स्वस्थेतरस्ये च मुबोधविवद्धं नार्यो । ऽरंस्वर्र्य ममात्र सफलो निस्तन प्रयातः ।।

द्यन्तिम पाठ---

गीति

बाणां अर्था डेंडुमिते संक्वति धवलक्कपुरवरे समहे । श्रीकारतरगणपुष्परसृदिवापुष्टप्रकारसणाः 1)१।। श्रीकितमाणिक्याभिषपुरीणां सकलसार्वभीमानां । पट्टे करे विजयिषु श्रीमिजिनचं हसूरिराजेषु ।।२।। वाचकमतिमद्रमणोः शिष्यस्तदुपास्यवासपरमार्थः । चारित्रसिहसापुर्यद्यववच्चणियिह सुगमा ।।३।। सिक्ताकां मतिमाणास्तृतं प्रकानतरेन किविचपि । तस्तम्यक् प्रकार हो स्वीच स्वपरोपकाय । ४।।

माचार्य श्रीरतनभूषएसाण्यस्य पंडित केसवः वेनेयं लिपि कृता मारमफलार्षं । सुभं भवतु । संवत् १९६६ वर्षे कार्तिक सुदी १ तिथौ ।

२७४६. कातन्त्रद्वीका******। यत्र सं० ३। झा० १०३×४३ इ'व । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरस्य । र० काल × । से० काल × । सपूर्ता । वे० सं० १९०१ । ट सम्बार ।

विशेष--प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२७६०. कातन्त्रक्षपमालाटीका—दौर्गिसिंह। पत्र सं० ३६४। बा० १२ $\xi \times v_{\chi}^2$ इंच। प्राया—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल \times । ने० काल सं० १६३७। पूर्ण । वे० सं० १११। क्र प्रयादाः ।

विशेष--टीका का नाम कलाप व्याकरण भी है।

२.७६१. प्रति सं०२ । यत्र सं०१४ । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० लं०११२ । क् मण्डार । २.७६२. प्रति सं०३ । यत्र सं०७७ । ले० काल 🗙 । प्रपूर्ण । वे० लं०६७ । च मण्डार ।

२७६२ कालक्यसमाझार्ष्ट्रीयः'''''। यत्र सं० १४ ते नः । झा०१४४ इंव । जाया-संस्कृत । विवय-व्याकरण् । र०काल ४ । ते०काल सं० १४२४ कालिक सुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० २१४४ । ट जण्डार । प्रवास्ति—संबत् १५२५ वर्षे कार्तिक सुरी १ दिने औ टॉक्यतने सुरवास्त्रमलावरीनंराज्यप्रवर्तमाने वी सूनतंत्रे बलात्कारगणे सरस्वतीयच्छे श्रीकुंरकुंवाबायांन्वये महारक श्रीयमांदिदेवास्तरग्हे महारक श्रीकुमवंददेवात्तरहें अहारकश्रीजनवन्द्रदेवास्तर्गाच्य ब्रह्मतीकम निर्मत । संबेलवासान्यवे पाटणीगोत्रे सं० पन्ना मार्या पनधी पुत्र सं. दिवराजा, दोवा, मुलाममुतवः एतेवांमध्ये सा. दोवा इदं पुस्तकं ज्ञानावरणीकर्मक्षयांनिमतं लिखान्य ज्ञानपोत्राय वसं ।

२७६५. कातन्त्रब्याकरस्या—िशाववर्सी। पत्र सं० ३५ । सा० १०४५३ इंच । माणा-संस्कृत । विश्वय-व्याकरसुः । र० कान × । ते० कान × । स्रपूर्ण । वै० सं० ६६ । चः यणसरः ।

२.७६५. कारक श्रीक्रया[…] "।पत्र सं०३। ग्रा०१०३४.५ इंचा शाला-संस्कृतः । विषय-स्थाकरणः । र०कान ४ । ते०काल ४ । पूर्णः ।वे० सं०६५४ । इस भण्डारः ।

२७६६. कारकविवेचनः......। पत्र सं० ८ । घा० ११×५३ इ'च । मादा-संस्कृत । विवय-म्याकरसः । र० कात ×। ते० काल × । पूर्सा । वे० सं० ३०७ । जा भण्यार ।

२७६७. कारकसमास्रकर्याः $= 10^{-1}$ वन सं० ४ । आः० ११ \times ५ दंव । माषा-संस्कृत । विषय-व्याकरस्य । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्स । वे० सं० ६६३ । इस सम्बार ।

२०६६. कुद्दस्तपाठ '' '' । पत्र सं०६ । स्रा०६२,४१ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्थाकरण । र \bullet काल imes । सपूर्ण । वे० सं०१२६६ । क्या अण्डार ।

विशेष-- तृतीय पत्र नहीं है। सारस्वत प्रक्रिया में से है।

२७६६. ग्रायावठ—वादिराज जगस्त्राव । यत्र मं० ३४ । घा० १०३,४४६ इ.चं । भाषा–संस्कृत । विषय-स्थाकरण । र०काल 🗴 । से० काल 🗴 । पूर्ण । वै० सं० १७६० | ट मण्डार |

२०७०. चंद्रोन्मीलन """। पत्र सं० ३०। मा० १२४५६ इ.च.। माया-संस्कृतः। विषय-माकरसः। २०कास ४। ते०कास सं० १६३५ कापुन बुदी १। पूर्वा । वे० सं० ६१। सा मध्यार।

विशेष-सेवाराम बाह्यस ने स्वपठनार्थ प्रतिनिधि की थी।

२७७१. जैनेन्द्रव्याकरण्—देवनन्दिः। पत्र सं॰ १२६। म्रा॰ १२४३ इंच। भाषा-संस्कृतः। विषय-व्याकरण्: र०काल 🗴 । ते०काल सं० १७१० फायुण् सुदी ६। पूर्णः | वे०सं० ३१।

विशेष—मं व का नाम पंचाध्यामी भी है। देवनन्ति का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है। पंचवस्तुतक। सीलपुर नगर में श्री भगवान जोशी ने पं० श्री हर्षतैया श्रीकरवास्तुके किये श्रतिक्षिप की थी।

संबद् १७२० मालोज बुधी १० को पुत्रः अधिकरूपीरण व हर्षको साह श्री कृष्णा वयेरवाल द्वारा ग्रॅट की नयी थी। २०४०२. प्रतिसं०२ । पत्र सं०३१ । ले० काल सं०१६६३ फासुन सुदी १ । वे० सं०२१२ । क भक्तर ।

२०७६२, प्रति सं० ३ । यत्र सं० ६४ ने २१४ । ले० काल सं० १६६४ माह बुदी २ । धपूर्ण । वे० सं० २१३ । का सण्डार ।

२०७४ . प्रतिसं०४ । पत्रसं०६०। ले०काल सं०१८६६ कासिक मुदी ३। वे०सं०२१०। क सम्बार।

विशेष-संस्कृत में संक्षित संकेतार्थ दिये हुये है । पन्नालाल भौसा ने प्रतिलिपि की थी ।

२००४. प्रति संट ४ । पत्र संव ३०। लेव काल संव १६०८। वेव संव ३२८। ज भण्डार।

२०७६. प्रति सं०६ । पत्र सं०१२५ । ले० काल सं०१८८० वसाला सुदी१४ । वे० सं०२०० । व्य मण्डार ।

विशेष— इनके ब्रतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२१) व्य भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० ३२३, २८८) ब्रोर हैं। (वे० सं० ३२३) वाले ग्रन्थ में शोमदेवसूरि कृत ताव्यागीव विश्वका नाम की टाका भी है। २७७७ जैनेन्द्रमहानुष्ति—स्प्रस्थानंदि। पत्र सं० १०४ में २३२ । था० १२५% ६ इब्र। भागा—

संस्कृत | विषय-व्याकरणः | र० काल 🗶 | ले० काल 🗶 | प्रपूर्णः | वे० सं० १०४२ | घ्र भण्डार |

• २७७६ प्रति सं०२ । पत्र सं०६० । ले० काल सं०१९४६ भादवा बुदी १० । वे० सं०२११ । क भण्यार ।

विशेष--पन्नालाल चौधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी।

२०७६. तक्कितप्रक्रिया ***** । पत्र सं॰ १६ । घा० १०४५ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरत्। १ र०काल ४ । ते० काल ४ । पूर्त । वे० सं० १६७० । इस अच्डार ।

२०५०. घातुपाठ--- हेमचन्द्राचार्यः । पत्र सं०१३। मा०१०४८ दृद्धः । भाषा-संस्कृतः । विषय-स्थाकरसः । र०कालः ४ । ले०कालः सं०१७६७ श्रावसः सुदी ४ । वे०सं०२६२ । इद्याग्रहारः ।

२०८२. घातुपाठः*****। पत्र सं॰ ४१। मा०११४६ इखा। आगा-संस्कृत। विषय-व्याकरण्। र० काल 🗵 ले॰ काल 🗡। प्रसूर्णी 🗝 तै० १९०। इस अध्यार।

विशेष---धातुभों के पाठ हैं।

२७=२. प्रति सं०२ । पत्र सं०१७ । ने० काल सं०१४१४ फाग्रुए। सुदी १२ । वे० सं० १२ । स्व भण्यार ।

विशेष--- आचार्य नेमिचन्द्र ने प्रतिसिपि करवायी थी ।

इनके प्रतिरिक्त का भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ १२०३) तथा स्वा सभ्धार में एक प्रति (वे० सं० २६०) प्रीर हैं। २७=३. झानुरूपावक्ति******।पत्र सं∘ २२ । सा॰ १२×१३ इक्का । माया-संस्कृत । विषय-स्थाकरण । १० काल × । ने० काल × । सपूर्ण । वे० सं० ६ । का सम्बार ।

विशेष---शब्द एवं धातुओं के रूप हैं।

२७८४, धातुप्रत्ययः***** पत्र सं० ३। आ० १०४४) इक्काः भाषा—संस्कृतः। विषय-स्थाकरस्य । र० काल \times । त्रेल काल \times । त्रेल \times

विशेष-हेमशब्दानुशासन की शब्द साधनिका दी है।

२.७८८४. पंचसंघि *****। यत्र सं० २ से ७ । झा० १०४४ दक्ष । जावा–संस्कृत । विषय–व्याकरसा। रंकाल ४ । ते० काल सं० १७३२ । अपूर्ण । वे० सं० १२६२ | ऋ अण्यार ।

२:८६, पंचिकरणुशास्तिक-पुरेश्वराचार्ये । यत सं० २ से ४ । झा० १२४४ इक्का । आया-संस्कृत । विषय-स्थाकरणु । र० काल ४ । ते० काल ४ । सपूर्ण । वे० सं० १७४४ । ट मण्डार ।

२७=७. परिभाषासूत्र***** । पत्र सं० १ । मा० १०३/२४३ इक्का । माथा-संस्कृत । विषय-व्याकरस्य । र० काल × । ले० काल सं० १४३० । पूर्ण । वै० सं० १६५४ । ट मण्डार ।

विशेष--अंतिम पृष्पिका निम्न प्रकार है---

इति परिभाषा सूत्र सम्पूर्ण ।।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सं॰ १५३० वर्षे श्रीक्षरतरगच्छ्रेशीजयसागरमहोपाघ्यायशिष्यश्रीरत्तवन्द्रोपाघ्यायशिष्यश्रीक्तवाझगरितन विक्रिता बाचिता च ।

२.७--- परिभाषेग्दुरोलर—नागोजीसट्ट । पत्र सं०६७ । घा० १×३५ दक्क । माया-संस्कृत । विषय-व्याकरसः । र० काल \times । ते० काल \times । पूर्तः । वै० सं० ४६ । क्व अध्वारः ।

२७=६. प्रति सं०२। पत्र सं० ५६। ते० काल 🗴 । वे० सं० १००। ज अण्डार।

२०७६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११२ । ले० काल 🗴 । वै० सं० १०२ । जा भण्डार ।

विशेष--दो लिपिकर्ताझों ने प्रतिलिपि की थी । प्रति सटीक है । टीका का नाम भैरवी टीका है ।

२.७६१. प्रकियाकौमुदी'''''''। पत्र सं० १४३ । ब्रा० १२४५ इक्क । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । १० काल 🗡 । ते० काल 🗡 । प्रपूर्ण । वै० सं० ६५० । च्या मध्वार ।

विशेष---१४३ से झाने पत्र नहीं हैं।

२७६२. पाखिकीबट्याकरण्—पाखिकी । पत्र सं० ३६ । सा० ८३/८३ ६८० । साथा-संस्कृत । विषय-व्यक्तरस्य । र० काल × । वेठ काल × । सपूर्ण । वेठ सं० १६०२ । इर सम्बार ।

विशेष--- प्रति प्राचीन है तथा पत्र के एक सोर ही लिखा गया है।

ि डयाकर ग्रा-साहित्य

252

े २७६६, प्राकृतरूपमाला—भीराममट्ट सुत वरदराज । पत्र सं० ४७ । झा० ६३,४४ ६ ख्रा । भावा— प्रकृत । विषय-व्याकरस्य । र०कात ४ । ले०काल सं० १७२४ झावाड बुदी ६ । पूर्या । वे०सं० ४२२ । क सम्बार ।

विशेष--- आवार्य कनककीरिंत ने द्रव्यपुर (मालपुरा) मे प्रतिलिपि की थी ।

र्ण्डः प्राकृतरूपमाला''''''। यत्र सं० ३१ रे ४६ । भाषा-प्राकृत | विषय-व्याकरण । र० काल 🗙 । से० काल 🗙 । प्रपूर्ण । वे० सं० २४६ । च भण्डार ।

विशेष--संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये है।

२७६४. प्राकृतन्त्राकरस्या—पंडकवि । पत्र सं० ६ । या० ११२/४५३ दक्ष । आया-संस्कृत । विषय-व्याकरस्य । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४ । क्य अध्वार ।

२.७६६. प्रति सं २ । पत्र सं ० ७ । ले० काल सं ० १८६६ । वे० सं ० ५२३ । क भण्डार ।

२७६७. प्रति सं०३ । पत्र सं०१६ । ले० काल सं०१ = २३ । वे० सं० ४२४ । कृ भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५२२) ग्रीर है।

२.७६८ प्रति सं० ४। पत्र सं० ४०। ले॰ काल सं० १८४४ मंगसिर सुदी १५। वे॰ सं॰ १०८। छ्र अण्डार।

विशेष-जमपुर के गोधों के मन्दिर नेमिनाथ चैत्सालय मे प्रतिलिति हुई यो।

२७६६. प्राक्ततस्युरपत्तिदीपिका—सौभाग्यगायि । पत्र सं० २२४ । झा० १२३४६ इझ । मावा— संस्कृत । विषय—स्याकरस्य । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ प्रासीज सुदी २ । दूसी । वे० सं० ४२७ । क मध्यार ।

२.५००. साध्यपदीप—कैटबट । यत्र सं०३१। प्रा०१२ $_{2}^{3}$ ४६ इंच। भाषा–संस्कृत । विषय–स्थाकरण । र०काल \times । वे०काल \times । प्रपूर्ण । वे० सं०१४१। ज मध्यपर ।

२८०१. रूपमालाग्यःः। पत्र सं० ४ ते १०। झा० ८ $\{x \times x = x \mid x$ शासा-संस्कृत । विषय-व्याहरसा । x० काल x । सपूर्ता । वे० सं० $\{x \in x \mid x \in x \mid x \in x \mid x \in x \in x \}$

विशेष-धातुश्रों के रूप दिये हैं।

इसके म्रतिरिक्त इसी मण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३०७, ३०८) भीर हैं।

२८०२. अञ्चन्यासकृतिः*****। पन सं० १२७। मा० १०४४३ इंच। माथा-संस्कृत | विचय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । सपूर्ण । वे० सं० १७७६ ट मध्यार । व्याकरण-साहित्य] [२६३

२८०३. समुहरसर्गेष्ट्रसिः''''''। यन सं०४ । बा० १०३,४५ इक्क । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरसा । र०कान × । से०काल × । पूर्श । वे०सं०१६५८ । ट प्रष्टार ।

२८०४. लाधुशाब्दैन्दुरोलर $\cdots\cdots$ । पत्र तं० २१४ । झा० ११३ \times ४,५ इख । आया-संस्कृत । विषय-ध्याकरण । र० काल \times । पे० काल \times । पूर्ण । वे० सं० २११ । ज अध्वार ।

विशेष---प्रारम्भ के १० पत्र सटीक हैं।

२८०४. लघुसारस्वत—अनुभूति स्वरूपाचार्य। पत्र सं॰ २३। प्राः ११८५ इक्का भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरणः। र॰ काल ४। ते॰ काल ४। पूर्णः। वै॰ सं॰ ६२६। आ मण्डारः।

विशेष-इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ३११. ३१२, ३१३, ३१४) और हैं।

२८०६. प्रति संट २ ।। पत्र सं० २० । झा० ११६०% हुः हा ले० काल × । पूर्णा के० सं० ३११ । च मण्डार ।

२८८७. प्रतिसं०३ । पत्र सं०१४ । ले० काल सं०१८६२ माद्रपद शुक्का दावे० सं०३१३ । अर भण्डार ।

विशेय-इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे॰ सं॰ ३१३, ३१४) झौर हैं।

६८०८. लघुसिद्धान्तकौसुदी—वरदराज । पत्र सं० १०४। बा० १०४४ई दश्च । जाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल ४ । वेल काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १६७ । स्व अण्डार ।

२८८६. प्रति सं०२। पत्र सं० ३१। ले० काल सं०१७८६ ज्येष्ठ बुदी ५। वे० सं०१७३। ख भण्डार।

विशेष--भाठ भध्याय तक है।

च मण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३१५, ३१६) झौर हैं।

२८१०. लघुसिद्धान्तकीस्तुअः'''''' । यत्र सं० ४१। द्या०१२४५६ दखा। मापा-संस्कृतः। विषय-व्याकरसा। र०काल ×। ले०काल ×। प्रपूर्स। वै० सं० २०१२। ट मण्डार।

विशेष--पाशिनी व्याकरण की टीका है।

२८९१, वैद्याकरणभूषण्—कोहसभट्ट। पत्र सं० ३३। घा० १०४४ इक्षा । साया-संस्कृता | विवय-व्याकरण्। र० काल ×। ते० काल सं० १७७४ कालिक पुरी २। पूर्ण | वे० सं० ६०३। क्र भण्यार |

२८१२. प्रति सं०२ । यत्र सं०१०४ । से० काल सं०१६०५ कालिक बुधी २ । दे० सं०२८१ । क भण्डार ।

२.५१३, वैटबाकरराज्यूचया......। पत्र सं०७ । घा०१०३,४४, रखा। भाषा—संस्कृत । विषय⊸ व्याकररा∣ र० काल × । ते० काल सं०१६६६ पीत्र सुवीद । पूर्या | वै० सं०६ २ । इस मध्यार | us }

. वद्धरेप्ट. प्रति सं०२। वच सं०४। ले० काल सं०१८६६ वैत्र बुदी ४। वै० सं०३२४। च संस्थार।

विशेष---मारिएक्यचन्द्र के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी।

२६२४. डवाकरसाः""। पत्र सं० ४६। झा० १०६४.५६ इझ। भाषा—संस्कृत। विषय-व्याकरसा। दैक काल ×। पर्वावे के सं० १०१। इड अपदार।

२८१६, ठ्याकरण्टीका''''''। पत्र सं०७। झा० १०४४३ इक्का प्रापा-संस्कृत । विषय-व्याकरण् । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वै० सं० १३६ । इस पण्डार ।

२०१७, ब्याकरणभाषाटीका**** । पत्र सं∘ १८ । घा० १०४५ इक्क । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-व्याकरण | र०काल ४ । ते०काल ४ । प्रपूर्ण | वै०सं० २६८ । छ भण्डार ।

२८१८. शब्दशोभा —कवि नीलकंठ । पत्र सं० ४३। मा० १०३४६ इस । माया-संस्कृत । विषय-व्याकरस्य । र० काल सं० १६६३ । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वै० सं० ७०० । इ. मण्डार ।

विशेष---महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

२८६६. हास्ट्रहराबक्ती*******। पत्र सं०८६ । झा०६४४ इ.ख.। भाषा—संस्कृतः । विषय–व्याकरणः । र०काल × । ते०काल × । पूर्ता। वै०सं० १३६ । ऋ भण्डारः ।

२८२०. शब्द्रस्पियी—आयार्थ वरहिच । पत्र सं० २७ । झा० १०१४३३ इखा । आया-संस्कृत । विवय-व्याकरसा। र० नाल ४ । ने० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ६१२ । ब्यू सम्बार ।

२८-२१. शब्दानुसासन—हैमचन्द्राचार्थ। पत्र सं० ३१। ग्रा० १०४४ इक्का भाषा—संस्कृत। विषय—स्याकरसा १ र० काल × । ते० काल × । सपूर्सा । वे० सं० ४८८ । स्राभव्यार ।

२८२२. प्रति सं०२ ।। पत्र सं०१० । घा० १०३×४३ दक्षा । ले० काल \times । प्रपूर्ण । वे० लं० १६८६ । घर वण्डार ।

विशेष—क मण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० ६०१, ६०२, ६०२, ६०२, ६०३, (क) ६०४, ४२६) तथा का मण्डार में एक प्रति (वे० सं० १९०६) और है।

रम्परेत. राज्यानुसासनवृत्ति—हेमचन्द्राचार्यं। पन सं० ७६ । झा० १२४४३ दश्च । आया–संस्कृत । विषय-स्थाकरणः। र० काल ४ । ते० काल ४ । बपूर्णः । वे० सं० । २२६३ । इस प्रष्टारः ।

विषोष--ग्रन्थ का नाम प्राकृत ब्याकरण भी है।

र⊏२४. प्रतिसं०२ । पत्र सं०२०। ते० काल सं०१८६६ चैत्र चुदी ३ । वे० सं०५२५ । क्र

विशेष-सामेर निवासी पिरायदास महुमा वाले ने प्रतिनिर्दि की थी।

ब्बाकरण-साहित्य]

२८२४. प्रतिसं०३ । पत्र सं०१८ । ले०काल सं०१८६ चैत्र बुदी १ । वै० सं०२४३ । च भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३३१) और है।

२८२६. प्रतिसं० ४ । पत्र सं०८ । लें०काल सं०१४२७ चैत्र बुदो ८ । वे० सं०१६४० । ट भण्डार ।

प्रवास्ति—संवत् १५२७ वर्षे चैत्र वदि ६ भीमे गोपाचलदुर्गे महाराजाधिराजभीकीतिसिहरैवराज-प्रवर्तमानसमये श्री कालिवास पुत्र भी हरि बहा।

२०२७. शाकटायन ज्याकरण्-शाकटायन । र मे २०। घा० १४x४ $\frac{1}{4}$ इ**छ**। माषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण् । र० काल \times । ते० काल \times । यपूर्णं । वे० सं॰ ३४०। घ मध्यर ।

२८५८. शिशुबोध—काशीनाथ । पत्र सं०६। घा० १०४४३ इखः। भाषा—संस्कृतः। विषय-व्याकरसः । र० काल ४ । ले० काल सं०१७३६ माघ सुदी २ । वे० सं०२८७ । छः मध्दारः।

प्रारम्भ-भूदेवदेवगोपालं, नत्वागोपालमीश्वरं ।

कियते काशीनाथेन, शिशुबोधनिशेषतः ।।

२८२६. संक्राप्रक्रिया****** पूर्वन सं०४ । द्या०१०३४४३ दक्काः प्रापा—संस्कृतः। विषय⊷ध्याकरतः। र०काल × । ते०काल × । पूर्तः। वै०सं०२८६ । क्षा यण्डारः।

२६३० सम्बन्धविवन्नाः****। पत्र सं०२४ । या० ६६X४३ दश्च । भाषा-संस्कृत । विवय-ध्याकरण् । र० काल X । ले० काल X । वै० सं०२२७ । ज भण्डार ।

२८६१. संस्कृतसञ्जरी \cdots ा पत्र सं० $\mathbf v$ । बा० ११ $\mathbf x$ ४, ६ व्या । भाषा—संस्कृत । विषय—स्थाकरए। १० काल $\mathbf x$ । ते० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० ११९७ । स्था मण्डार ।

२८३२. सारस्वतीभातुपाठ*****।पत्र सं० ५ । झा० १०३८४५ इख्राः आषा—संस्कृतः । विषय— ज्याकरस्य । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्यः ।वै० सं० १३७ । ख्राभण्डारः ।

विशेष--कठिन शब्दों के धर्य भी दिये हुये हैं।

. २८६३. सारस्वतपंचसंधि" ""। पत्र तं०१३। सा०१०४४ इक्षा आवा-संस्कृत । विवय-स्थाकरण । १० काल × । ते० काल सं०१८५५ माच सुदी ४। पूर्ण । वै० सं०१३७। क्ष्र अध्वार ।

२८६४. सारस्यतप्रक्रिया— कानुस्रृतिस्वरूपाचार्य। पण सं० १२१ से १४४। घा० ८३४४६ इझ । प्रावा-संस्कृत | विषय-स्वाकरण । र० नाल ४। के० काल सं० १८४६ । स्रपूर्ण । वे० सं० १३६४। इस मण्डार । २८३४. प्रति सं० २। पण सं० १७। के० काल सं० १७८१ | वे० सं० १०१। इस मण्डार । ्यत्र ६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ द १ । ले० काल सं० १ द ६ । वे० सं० ६२१ । का मण्डार । २ य २ ७ . प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १ द ३ १ : वे० सं० ६४१ । का मण्डार । वियोव — चोलचंद के शिष्य कृष्णुदाल ने प्रतिलिपि की थी ।

े २८८२ ८. प्रति सं०४ । पत्र सं०६० से १२४ । ले० काल सं०१८२ ८ । अपूर्ण। वै० सं०६८४ । अर्थ अभ्यक्षर ।

बाई (बस्सी) नगर में प्रतिलिपि हुई थी।

२. इ.स. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४३। ले० काल सं० १७१६। बै० सं० १२४६। स्त्र भण्डार। विकोष---बन्दसागरगाग ने प्रतिलिपि की बी।

२८५०. प्रति सं०७ । पत्र सं०४७ । ले० काल सं०१७०१ । वे० सं०६७० । ऋ मण्डार । २८४१. प्रति सं०८ । पत्र सं०३२ से ७२ । ले० काल सं०१८४२ । क्रमूर्ण । वे० सं०६३७ । ऋ

भण्डार ।

भण्डार ।

١

२८४२ प्रति सं ६ ६ । पत्र सं ० २३ । ले० काल 🗡 । ब्रपूर्ण। वै० सं० १०४५ । ऋद सण्डार । विशेष—चन्द्रकीर्ति इत संस्कृत टीका सहित है ।

२८८४२. प्रति सं०१०। पत्र सं०१६४। ले० काल सं०१६२१। ते० सं०७६०। क अण्डार। विशेष---विमनराम के पटनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

६८४४. प्रति सं०११। पत्र सं०१४६। ले॰ काल सं०१८२०। वे॰ सं०७८१। क सण्डार। ६८४४. प्रति सं०१२। पत्र सं०६। ले॰ काल सं०१८४६ माघ सुदी१४। वे॰ स॰ २६८। स्व

विशेष—पं०जगरूपदास नेदुलोचन्दके पठनार्थनगर हरिदुर्गमे प्रतिलिपिकी थी ।केवल विसर्ग सैंथितकहै।

२८८६ प्रतिसं०१३ । पत्र सं०६४ । ने० काल सं०१८६४ श्रावस सुदी ४ । वे० सं० २६६ । इस मण्डार ।

२८४७. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७***। वे० सं० १३७ । छ अण्डार । विशेष—दुर्गाराम सर्मा के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

 व्याकरया-साहित्य]

2६७

१०वर, १६१६, १६६, १२व.६, १२वर, १२वर, १६६०, १२६०, १८६०, १८६८, १२८८, १२०४, १३०१, १३०२) स्त्र मण्डार में ७ प्रतियां (वे सं० २१६, २६६) च मण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ११६, १२०, १२१) क मण्डार में १४ प्रतियां (वे० सं० न२१, न२२, न२३, न२४, न२६, न२७, न२७, न२०, न२६, न३१, ते न३न, न३६) च मण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ३६६, ४००, ४०१, ४०२, ४०३) क्य मण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० ३६६, ४००, ४०१, ४०२, ४०३) क्य मण्डार में ६ प्रतियां (वे वं० १३६, १३७, १४०, २४०, २४४, ६७) क्य मण्डार में ६ प्रतियां (वे वं० १३१, १४०, २४०, २४४, ६७) क्य मण्डार में ३ प्रतियां (वे वं० १२१, १४०, २२२) क्य मण्डार में १ प्रतियां (वे० वं० २०) तया ह मण्डार में ४ प्रतियां (वे० वं० १८६०, २१००, २२४) क्य मण्डार में १ प्रति (वे० वं० २०) तया ह मण्डार में ४ प्रतियां (वे० वं० १८६०, २१००, २०२२) क्या स्वरूप में १ प्रति (वे० वं० २०)

उक्त प्रतियों में बहुत सी अपूर्ण प्रतियां भी हैं।

२८४०. स्नास्कतप्रक्रियाटीका—सहीश्रट्टी। पत्र सं० १७ । मा० ११४५ रखा। शाया-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । से० काल सं० १८७६ । पूर्ण । के० सं० द२४ । क सम्बार ।

विशेष---महात्मा लालबन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२.८५१' संह्राप्रक्रिया'''''''। पत्र सं०६ । सा०१०३,४५ इंच । प्रापा–संस्कृत । विषय⊸याकरहा। र०काल ४ । ने०काल ४ । पूर्या | वे०सं०३०० | स्वापण्डार |

२८४२. सिखडेमतन्त्रवृत्ति —जिनप्रभसूरि । यत्र सं० ३ । षा० ११४४३ इक्का । आषा-संस्कृत । विषय-व्याकरस्य । र० काल । ले० काल सं० १७२४ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्स । वे ग्सं० ज अण्डार ।

विशेष-संवत् १४६४ की प्रति से प्रतिलिपि की गई थी।

२८४३. सिद्धान्तकौसुरी—अट्टोजी दीक्षित । पत्र सं० ६ । प्रा० ११×५३ ६ छ । नापा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल \times । ले० काल \times । सप्रश्री । वे० सं० ६४ । ज मण्डार ।

२५४४. प्रति स०२ । पत्र सं०२४० । ले० काल × । वै० सं०६६ । ज भण्डार ।

विशेष---पूर्वार्ट है।

२८४४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १७६। ने० काल 🗴। ने० सं० १०१। जा मण्डार।

विशेष--- उत्तरार्द्ध पूर्ण है।

इसके प्रतिरिक्त जा नप्यार में २ प्रतियों (वे॰ सं॰ ६५, ६६) तया द्व मध्यार में २ प्रतियों (वे॰ सं॰ १६६४, १६६६) घोर हैं।

२०.४६, सिद्धान्तकोष्ठुदी'''''''। पत्र सं० ४३ । झा॰ १२६४६ इंच । जाया-संस्कृत । विषय-व्याकरस्य । र० काल × । प्रपूर्ण । वे० सं० ०४७ । क मण्यार । विशेष—स्रतिरिक्त क, च तथा ट प्रचार में एक एक प्रति (वै० सं० स्४८, ४०७, २७२) और हैं। २८४७. सिद्धान्तकोमुदीटीका ""। पत्र सं० ६४ । सा० ११३४६ इंव । भाषा-संस्कृत । विषय— व्याकरण । र० काल ⋉ । ले० काल ⋉ । पूर्ण | वै० सं० ६४ । ज प्रण्डार ।

विकोध-पत्रों के कुछ ग्रंश पानी से गल गये हैं।

२८४८. सिद्धान्तवनिद्रका—रासर्वद्राक्षमः । पत्र तं॰ ४४ । ग्रा० १६४१६ दश्च । भाषा–संस्कृतः । विषय–अयकरस्य । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० तं० ११४१ । द्या मण्डारः ।

२८४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले॰ काल सं० १८४७ । वे० सं॰ १९४२ । श्रा अण्डार ।

विशेष-कृष्णगढ मे भट्टारक सुरैन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी।

२५६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ । लेंग् काल संग् १६४७ । वेग्संग् १६४३ । का मण्डार ।

विशेष—इसी सम्बार में १० प्रतिया (वै० सं० १६३१, १६४४, १६४६, १६४६, १६४७, १६४ ϵ , ६०७, ६१७, ६१८, २०२३) और है।

२८६१. प्रति सं० ४ । पत्र सं६४ । सा० ११६५×१३ इंच । ले० काल स० १७६४ स्रवाद बुदी १४ । वै० सं० ७८२ । क्र भण्डार ।

> २६६२. प्रति सं०४ । पत्र सं०४७ । ते० काल मं० १६०२ । वे० सं० २२३ । स्व अध्वार । विकोय—इसी अध्वार मे २ प्रतियां (वे० सं० २२२ तथा ४०६) और है ।

रम्भदेरे. प्रतिसंग् ६ । पत्र संग्रह । ले॰ काल संग्रध्यर चैत्र बुदी श्वेश्मं १० । इस् सम्बार । विशेष— इसी वैक्रन में एक प्रति और है ।

रम्परिः प्रतिसं०७ । पत्र संध्यः। ले० काल सं०१ ८६४ आयाग् बुदो ६ । वे० सं०३ ५२ । जा भण्यार ।

विशेष—प्रथम वृत्ति तक है। संस्कृत में कही सन्दार्थ भी है। इसी अवदार में एक प्रति (वे० सं० ३१३) भीर है।

इसके प्रतिरिक्त का मण्डार में ह प्रतियां (वै० सं० १२८५, १६४५, १६४५, १६५५, १६५५, १६५५, १६५५, १६५५, १६५५, १६५५, १६५५, १६५५, १६५५, १६७, अर्थ मण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० १२९, १२६५, १२६७) प्रमूर्ण | का मण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० १९६, १६६७) प्रमूर्ण | का मण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० ११६) तथा ज मण्डार में ३ प्रतियां (वै० सं० ११६) तथा ज मण्डार में ३ प्रतियां (वै० सं० ११६) तथा ज मण्डार में ३ प्रतियां (वै० सं० ११६) तथा ज मण्डार में ३ प्रतियां (वै० सं० ११६) तथा ज मण्डार में ३ प्रतियां (वै० सं० १४६) का जन्यार में १ प्रतियां (वै० सं० १४६) तथा ज मण्डार में १ प्रतियां (वै० सं० १४६)

ये सभी प्रतियां सपूर्ण है।

198

२८६४. सिद्धान्तचनित्रकाटीका—सोकेशकर ।पत्र सं०१७। ता० ११३४४३ इंच । जाया-संस्कृत । विषय-स्थानरस्य । र० कास 🗙 । ते० कास 🗙 । पूर्ण । वे० सं० ८०१ । क अच्यार ।

विशेष--टीका का नाम तत्त्वदीपिका है।

र्द्धः प्रति सं⁄२। पत्र सं०६ मे ११। ले॰ काल 🗴 । सपूर्णा। वै॰ सं॰ ३४७ । आर सम्ब्रार । विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२८६७. सिद्धान्तचिद्रकाबृत्ति—सदानन्दगस्य। पण सं० १७३। घा० ११४४६ दश्च। मादा-संस्कृत । विषय-व्याकरस्य। रः काल ×। से० काल ×। वे० सं० ८१। द्वः मण्यार।

विशेष-टीका का नाम सुबोधिनीवृत्ति भी है।

२८६८ प्रतिसं०२। पत्रसं०१७६। ले॰ काल सं०१८५६ ज्येष्ठ बुदी ७। वे॰ सं०३५१ । ज सम्बर्गः।

विशेष---पं० महाचन्द्र ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

२८६६. सारम्यतनीयिका—चन्द्रकीसिस्प्रि । पत्र सं० १६०। प्रा० १०४४ इंच । जावा-संस्कृत । विवय-व्याकरमा । र० वःल सं० १६४६ । ले० काल × । प्राणी । वै० सं० ७१४ । का जच्चार ।

> २८.उट. प्रतिसंट २ पत्र सं०६ से ११६। से॰ काल सं०१६५७। वै॰ सं०२६४। क्क् लच्चार। विशेष--- वट्टकीलि के विषय हर्वकीति ने प्रतिलिपि की थी।

२८७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७२ । ले० काल सं० १८२६ । के० सं० २८३ । क्र अवहार ।

विशेष---मुनि चन्द्रभारा खेतसी ने प्रतिलिपि की थी। पत्र जीर्स है।

२८०२. प्रति सं० ४ पत्र सं० ३। ले० काल सं० १६९१। वै० सं० १६४३। ट जन्हार ।

विशेष—इनके श्रीतिरिक्त का चासीर टामच्यार में एक एक प्रति (वै॰ सं॰ १०४४, ३६० तचा २०६४) सीर है।

२८७३. सारस्यतदशाध्यायोः****। पत्र सं० १०। घा० १०३४४६ दक्ष । जाला-संस्कृत । विश्वन-व्याकरस्य । र० काल × । ते० काल सं० १७६० वैद्याख दुवी ११ । वे० सं० १३७ । द्वा प्रव्यार ।

विशेष -- प्रति संस्कृत टीका सहित है। कुम्स्तुदास ने प्रतिलिपि की बी।

२८७५. सिद्धान्तचन्त्रिकाटीका***** । यत्र सं० १६ । सा० १०%४६ इक्ष । माया-संस्कृत । विषय-व्यक्तरत । र० काल × । वे० काल × । यसर्थ । वे० सं० व४९ । क्र प्रवार । ्रेरूक्ष्यः सिद्धान्तविन्दु-श्रीमञ्चसून्त सरस्वती । पत्र सं०२६ । सा० १०१४६ इ.च. । सावा-संस्कृतः । विषय-व्याकरस्य । २० काल ४ । से० काल सं०१७४२ सासोज बुदी १३ । पूर्ण । दे० सं०६१७ । इस सन्वारः ।

विशेष-—इति श्रीमरररमहंस परिद्याजकावार्य श्रीविश्वेषय सरस्वती भगवत्याद शिष्य श्रीमधुद्भुदन सरस्वती विरिचितः सिद्धान्तविषुत्समातः ।। संवत् १७४२ वयं ग्राधिननाथं कृष्णुपदी त्रयोदस्या बुधवासरे बगरूनाम्निनगरे मिश्र श्री स्थामसस्य पुत्रेण अगवशान्ना सिद्धान्तविदुरतेखि । युभगस्य ।।

्रस्कर, सिद्धान्यसंज्विका—नागेशसट्ट। पंत्रसं∘ ६३ | प्रा०१२८xx३ इंच। भाषा—संस्कृत | विवय-व्याकरणः। र० काल × | ते० काल × | स्पूर्णः | ते० सं०३३४ | अः भण्डारः |

२८०७. सिद्धान्तमुक्कायसी—पचानन अष्ट्राचार्य। पत्र सं० ७०। प्रा० १२४१ है इ.च.। माया— संस्कृत। विषयं-स्थाकरण। र० काल × । ने० काल सं० १८३३ भारता बुदी ३। वे० सं० ३०८। ज भण्डार।

२६८५ . सिद्धान्तमुकावस्त्री $\cdots\cdots$ । पत्र सं०७०। प्रा०१२ \times १ $^2_{\gamma}$ इंब। भाषा-संस्थृत। विषय-स्थाकरस्य। र० काल \times । ले० काल सं०१७०४ चैत सुदी ३। पूर्ण। वे० सं०२ ६। प्राभव्यार।

ेरिक्ष्ट. हैसनीयुडंदृङ्किः """ विषय सं १४ । प्रा० १०४४ इ.च । आया-संस्कृत । विषय-स्माकरण । रं काल × । ते० काल × । प्रमुर्त । वे० सं ० १४६ । प्रमु अध्वार ।

्र स्प्रम् । हेमस्याकरसमृत्यास्त स्थापन्य वार्षः । पत्र तं र २४ । द्वार १२४६ इ व । आया-संस्कृत । विवय-स्थाकरसा । रंग्यकार) । तेर्ग्यकार) पूर्णः । वेर्ग्यक्तर । ट्वार्थकार ।

२६८२ हेसीच्याकरण्-हेसचन्द्राचार्य । यत्र सं० ६३। घा० १० \times ४३ इंच । आवा-संस्कृत । विषय-व्याकरण् । र० काल \times । से० काल \times । स्पूर्ण । बे० सं० ३५६ ।

विकोच---वीच में श्रविकांश पत्र नहीं हैं। प्रति प्राचीन है।



कोश

२८८२, इसलेकाधेथ्वतिसंबरी—सहीच्चयग्र कवि । पत्र सं० ११ । झा० १२४५३ इंच । माया— संस्कृत । विषय-कोश । र० काल 🗴 । के० काल 🗴 । बे० सं० १४ । इर मण्डार ।

२८८३ स्रोतेकाधैश्वतिसङ्घरीः*****। पत्र सं०१४ । स्रा० १०४४ इ.च । आषा-संस्कृत । विषय-कोसा । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । सपूर्ण । वे० सं०१८१ । ट मण्डार ।

विशेष-- तृतीय प्रधिकार तक पूरी है।

्रस्त ४. क्यतेकार्थसञ्जरी—तन्ददास । पत्र तं० २१ । बा० तर्द्र ४३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय– कोश । र० काल × । ले० काल × । बपूर्ण । वे० सं० २१६ । आ, भण्डार ।

२८८४. व्यत्तेकार्थशत-भट्टारक हवैकींचि । यत्र सं० २३ । बा० १०३४४३ इंच । बाया-संस्कृत । विषय-कोश । २० काल ४ । से० काल सं० १६६७ वैशास वृदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १४ । क्र मण्डार ।

२०८५ ह च । केश्वर्यसम्बद्धः स्वाद्यं । पत्र सं० ४ । मा० १०४५ ह च । काश्वर्यस्कतः । विषयः कोशः । र० काल \times । ले० काल सं० १६६६ सवाद वृदी ४ । पूर्णः । वे० सं० ३० । कृ शब्दारः ।

२८८५ व्यक्तिकार्वसंग्रहः*****। पत्र सं० ४१। या॰ १०४४ है इंची वीषा-संस्कृत । विषय-कोसः। र०कात ४ । ते०काल ४ । प्रपूर्ण । वे० सं० ४ । चाभण्यार ।

विशेष-इसका दूसरा नाम महीपकोश भी है।

२८८८, ऋसियानकोष—पुरुषोत्तसम्बन्धः। पत्रसंग् ३४ । सा० ११५४६ इ.च.। भाषा—संस्कृतः। विवय—कोसः। र०काल 🗴 । के०कोल 🗴 । पूर्णः। वै०सं० ११७१ । इस सम्बारः।

२८८६. स्रमिथानर्षितासियानंसिमाला— हेर्सचन्द्राचार्षं । पत्र तं∘६। सा० ११४४ इंच । साथ-संस्कृत । विषय-कोस । र० काल × । ते० काल × । यूर्ण । वे० तं० ६०४ । स्र वण्यार ।

विशेष-केवल प्रथमकाण्ड है।

२०८०. प्रतिसंक्ष्यापय संक्ष्यभू। लेक्काल संक्ष्यकाराम् सुवी१०। वेक्संक्ष्यः । इक् अभ्यारः।

विशेष-स्वोपन्न संस्कृत टीका सहित है। महाराएग राजसिंह के शासनकाल में प्रतिनिधि हुई थी।

कोश

रैम्बर्टर प्रति सं०३। पत्र सं०६६। लेश्काल सं०१८०२ ज्येष्ठ सुदी १०। वेश सं०३७। का कम्बार।

वियोष-स्वीपञ्चवृत्ति है।

२८६२. प्रतिसं० ४ । पण सं० ७ ने १३४ । ले० काल सं० १७६० झासोज सुदी ११ । घपूर्ण । वै० सं० ४ । चाजण्यार ।

२००६ ३. प्रतिसं० ४. । पत्र सं० ११२ । ते० काल सं० १६२६ प्रावाळ बुदी २ । वे० सं० ०१ । जा सम्बार ।

२८६४. प्रति सं०६ । पत्र सं ४६ । ते० काल सं०१६२ वैद्याला सुदी १३ । वे० सं०१२१ । जा प्रथार ।

विशेष--पं० भीमराज ने प्रतिलिपि की थी।

रस्थ्यः अभिधानस्क्राकर—धर्मचन्द्रसस्थि । पत्र सं०२६ । सा० १०४४ ३ इ'च । आया-संस्कृत । विवय-कोस । र० काल ४ । ते० काल ४ । सपूर्ण । वे० सं०६२७ । का सण्डार ।

२८६६. इस्तिभानसार—र्षे० हिस्तजीलाला। पत्र सं०२३ । सा०१२४४,३ इंस । माग-संस्कृत । विचय-कोगा। र०काल × । ते० काल × । पूर्वा। दे० सं०द । स्व भण्डार ।

विशेष-देवकाण्ड तक है।

२८६७. स्वसरकोश--- समर्रीसह । पत्र सं० २८ । या० १२%६ डांव । सावा-संस्कृत । विषय-कोश । १० काल ४ । ते० काल सं० १८०० ज्येष्ठ सुरी १४ । पूर्ण । वे० सं० २०७५ । स्त्र मण्डार ।

विशेष--इसका नाम लिंगानुशासन भी है।

विष्य मण्डार । विषय मण्डार । विषय मण्डार ।

२६००. प्रति सं० ४ : पत्र सं० १६ से ६१ । ते॰ काल सं० १६६२ झालोज सुवी १ : स्पूर्ण । वे० वै० ६२१ । इस प्रथमार ।

२६०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ते० काल सं० १६६४ । दे० तं० २४ । क प्रवसार । - अ०००. प्रति सं० ६ । उप सं० २३ ते ६० । ते० च्या लंक

ं २६००. प्रति सं०६ । पत्र सं०१३ से ६१ । ले० काल सं०१ ८२४ । वे० सं०१२ । बसूर्धा आहार ।

२६०३, प्रतिसं०७ । पत्र सं०१६ । ले० काल सं०१ मध्य भाषाोज नुवी १ । वै० सं०२४ । इत् भण्यार ।

विशेष-प्रवमकाण्ड तक है। प्रन्तिम पत्र फटा हुमा है।

२६०४. प्रतिसंद्रः । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १८८३ मासीज मुदी ३ । वे० मं० २७ । अक्ष्मणारः।

विशेष---जयपुर मे दीवारण ग्रमरवन्दजी के मन्दिर में मालीराम साह ने प्रतिलिपि की वी।

२६०४, प्रति संब्हायत्र संब्दा तिक काल संब्हित कासिक बुदीदा वेक संव्हेश्या आह्न भण्डारा

विशेष—- ऋषि हेमराज के पठनार्थ ऋषि भारमञ्ज ने जयदुर्थ में प्रतिलिपि की बी। सं०१ ८२२ झावाड सुदी २ मे ३) कुठ देकर पं० रेवतीसिंह के शिष्य रूपवन्द ने व्वेतास्वर जती से ली।

२६०६, प्रतिसं० १०। पत्र सं०६१ से १३१। ले० काल सं०१८३० आवाद बुदी ११। अपूर्णी। वे० सं०२६५। इद मण्डार।

विशेष — मोतीराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की बी।

२६०७ प्रति सं०११। पत्र सं०६४। ले० काल सं०१६६६ वैशाल सुदी १४ । वे० सं०३४४ । ज भण्डार ।

विजेष—कही २ टीका भी दो हुई है।

२६८म्. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १७६६ संगतिर सुदी ५ । वे० सं० ७ **। स्थ** सम्बार ।

विशेष-विशेष तंशोद्भव श्री महीधर श्री कीर्तिसहदेव की ग्राजा से टीका लिखी गई ।

२६१०. प्रति स० २। पत्र सं० २४१। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० स० ७। च मण्डार।

२६११. प्रति सं0 है। पत्र सं0 ३२ । सं0 काल × । वे० सं० १८८६ । ट भण्डार ।

विशेष---प्रथमसम्ब तक है।

२६.१२. यकाइवरकोशा— इत्यस्यक्ष । तत्र सं० ४ । सा० ११८५३ इ.च.। भाषा-सम्कृत । विषय-कोशः । र०काइव ४ । लेक काल ४ । पूर्णावे० सं० ६२ । क. मण्डार ।

२६१३. प्रतिसां०२ । पत्र सं०२ । ले० काल सं०१८८६ कालिक मुदी ४ । वे० सं० ४१ । च प्रभार ।

२.६१४. प्रति संठ ३ । पत्र मं०२ । ले॰ काल सं०१६०३ चैत बुर्दा६ । वे० मं० १४५ । ज भण्यार ।

विशेष---पं • सदास्वजी ने अपने शिष्य के प्रतिबोध।र्थ प्रतिनिधि की थी।

२६१४. एकाक्सरीकोरा—वरकवि । पत्र सं०२ । प्रा०११ $\frac{1}{7}$ \times १ $\frac{1}{7}$ इंव । भाषा—सम्बन्न । विषय— कोदा । र०काल \times । ने०काल \times । पूर्ण। वै० सं०२०७१। इस भण्डार ।

२.६१६. एकाइसरीकोश''''''। पत्र सं० १० । झा० ११८५ डंच । माषा–संग्इत । विषय–कोश । र० काल ⋉ । से० काल ⋉ । सपर्णावे० सं० १३०० । इस मण्डार ।

स्टरि∿. एकः इत्तरासमाला '''''। पत्र सं०४ । घा० १२५% ८ इ.च.। भाषा- संस्कृत । विषय-कोणः। र०काल × । ते०काल सं०१ ट०३ चैत्र चुर्गा है । पूर्णा वे० सं०११४ । ज अध्यार ।

विश्वेष —सवाई जयपुर में महाराजा रायसिंह के शासनकाल में भ० देकेंद्रकीर्ति के यमय में पं॰ सदानुक्तवी के शिक्ष करीलाल ने प्रतिस्थिप को थी।

२६१८. त्रिकारडरोपसूची (झमरकोश)—अमरसिंह। पत्र स० २४। झा० १८२४%, इ'च । माना-चंत्रका | निषय-कोश। र० काल ४ । ने० काल ४ । पूर्व । वे० सं० १४१ । च कच्छार ।

वियोज—समरकोश के काण्यों में आये वाले सब्दों की स्लोक संख्या दी हुई है। प्रत्येक स्लोक का ब्रार्टक्रिक अंत भी वियाह्या है।

इसके मतिरिक्त इसी भण्डार मे ३ प्रतियां (वे॰ सं॰ १४२, १४३, १४५) ग्रीर है।

202

२६१६. त्रिकायकरोगाभिधान—की पुरुषोत्त्रमदेव । पद सं०४३ । बा०११८५ इंच । शावा— संस्कृत । विषय–कोशा । र०काल ⋉ । ले०काल ⋉ । युर्णावै० सं० २०० । क सम्बद्धार ।

२६२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल 🗙 । वे० सं० १४४ । च मण्डार ।

२६२१. प्रति संव ३। पत्र संव ४५ । लेव काल संव १६०३ आसीज बुदी € । वेव संव १८६ |

विशेष---वयपुर के महाराजा रामसिंह के शासनकाल में पं॰ सदाधुनाजी के शिष्य फ्लोहनाल ने प्रतिसिधि की थः।

२६२२, नाससाला— धनंजय।पत्र सं०१६। घा० ११४४ इ.च. भाषा-संसकृतः । विषय—कीसः। र०कान ४ । ते०काल ४ ।पूर्णावे०सं०६४७ । इत्र भण्डारः।

२६२३. प्रतिसं०२ । पत्र सं०१३ । केश्काल सं०१८३७ फायुण, सुदी १ । दै० सं०२८२ । इद भण्डार ।

विशेष---पाटोदी के मन्दिर में खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

इसके श्रतिरिक्त स्त्र भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १४, १०७३, १०८६) श्रीर हैं।

२६२४. प्रति सं०३ । पत्र सं०१४ । ले० काल सं०१३०६ कालिक बुदी द । वे० सं०६३ । इत अभ्यार ।

विशेष--- क मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३२२) और है।

२६२४. प्रतिसं० ४ । पत्र सं०१६ । ते० काल सं०१६४३ ज्येष्ठ सुदी ११ । ते० सं०२४६ । इस भण्डार ।

विशेष---पं० भारामझ ने प्रतिसिपि की थी।

इसके प्रतिरिक्त इसी अण्डार में एक प्रति (वै० सं० २६६) तथा ज अण्डार में (वे० सं० २७६) की एक प्रति भीर है।

२६२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७ । ते० काल सं० १८१६ । वे० सं० १८४ । स्व अण्डार ।

२६२७. प्रतिसं०६ । यत्र सं० १२ । ले॰ काल सं०१८०१ फाइएए सुदी १ । वे० सं०१२२ । का भण्डार ।

२६२८. प्रति सं०७ । पत्र सं०१७ से ६६ । ते० काल 🔀 । सपूर्या । वे० सं०१६०६ । ट नण्यार । विशेष—स्वके स्रतिरिक्त का यण्यार में ३ प्रतियां (वे० सं०१०७३, १४, १०६६) क, इड्ड तथा आर अण्यार में १-१ प्रति (वे० सं०३२२, २६६, २७६) और हैं। २६२६. जासमाला''''''''' पत्र सं० १२ । सा० १०×५३ ईच । भाषा—संस्कृत । विवय-कोव । र० . काल × । से० काल × । सपूर्य । ये० सं० १६२८ । द्व सप्यार ।

२६६०. नाससाला—चनारसीदास । पत्र सं०१४ । झा० प×१ इत्र । जाया—हिन्दी । विषय कोस । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वै० सं०१४ । स्व भण्डार ।

२६३१ बीजक,(कोश)........। पण सं∘ २३ । बा० ६५×४५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कोस । देशकाल × । लेशकाल ×) पूर्ण। वेश संश्र १००४ । का मण्डार।

विशेष-विमलहंसगरिए ने प्रतिलिपि की थी।

२६३२. मालमञ्जरी—संददास । पत्र सं० २२ । घा० द×६ इ.च । भाषा–हिन्दी विषय–कोष । र० काल × । ले० काल सं० १ द×३ कालुए। सुदी ११ । दुर्स। वे० सं० ४६३ । इक पण्डार |

विशेष--चन्द्रभान बज ने प्रतिलिपि की थी।

२६३३. मेदिनीकोशः । पत्र सं०६४ । मा० १०३×४६ दंव । भाषा–संस्कृतः विसय-कोशः । र० कालः × । स्वर्शः वैक सं०४ ५२ । क्रायण्डारः ।

२६३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वै० सं० २७८ । च भण्डार ।

२६३४. रूपसञ्जरीनाममाला—गोपालदास सुत रूपचन्द्र । पत्र सं० ८ । ग्रा० १०४४ हज्ञा। प्राचा—संस्कृत । विषय—कोणः । र० काल सं० १६४४ । ले० काल सं० १७८० चैत्र सुदी १० । पूर्ता । वे० सं० १८७६ | क्या प्रकार ।

विशेष--प्रारम्भ में नाममाला की तरह श्लीक है।

२६६६. **लघुनासमाला**— हर्षकी सिस्**रि**। पत्र सं०२३। बा० ९×६३ इ**ब**ा भाषा—सन्दतः। विषय— कोबा। र० काल ×। ले० काल सं०१८२८ ज्येष्ठ बुदी १। पूर्णा ३० स०११२। जाभव्यार ।

विशेष-सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी।

२६३७. प्रति सं०२ : पत्र सं०२० । ते० काल × वे० सं०४६८ । व्य भण्डार ।

२६३ ⊏. प्रति सं०३ । पत्र सं० ⊏ से १६,३७ से ४६ । ले० काल × । प्रपूर्ण। वे० सं०१५०४ । ट जम्बार ।

२६३६. किंगानुरासनः*****। पत्र संग्रंशासः १०%४३ इका। आवा-संस्कृतः । विषय-कोकः । १० काल × । से० काल × । सपूर्ता। वे० संग्रं१ । इस सण्डारः ।

विशेष--- १ से बागे पत्र नहीं हैं।

२६४०, सिंगालुशासन—है स्वयन्त्र । यय सं० १० । बा० १०×४३ १० । आया-संस्कृत । विषय-कोस । र० कास \times । ले० कास \times । पूर्ण । वे० सं० ६० । अर अध्वर ।

विशेष-कहीं २ शन्दार्च तथा टीका भी संस्कृत में दी हुई हैं।

२६४१. विश्वप्रकाश-स्वैद्याज महेरवर। पत्र सं० १०१। ब्रा० ११४४६ दक्षा । जाण-संस्कृत। विषय-कोच । र० काल ४ । ले० काल सं० १७६६ प्रासीज सवी ६ । पूर्ण । वै० सं० ६६३ । क प्रण्यार ।

२६४२, प्रति सं०२ । पत्र सं०१६ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ३३२ । क मण्डार ।

२६४३, विश्वकोचन—धरसेन । पत्र शं० १२ । आ० १०३ \times ४३ इक्ष । आपा—संस्कृत । विषय— कोश । र० काल imes । ले० काल सं० १५६६ । पूर्ण । वै० सं० २७४ । स्व अध्वार ।

विशेष--- ग्रन्थ का नाम मुक्तावली भी है।

२६४४. विश्वक्षोचनकोराकीराब्दानुकमियाका""" विष सं० २६। मा० १०४५ ईव । आवा-संस्कृत । विषय-कांस | र० काल × । ले० काल × । पूर्ण | वे० सं० ८८७ | इस अध्यार ।

२६५४. शतकः*****। पत्र सं०६। घा० ११×४३ ६ द्वा। आषा-संस्कृत । विषय-कीश । र० काल \times । अपूर्ण। वे० सं०६० । क अध्यार ।

२८४६. राज्यप्रभेद व भातुमभेद—सकत वैद्य जूडामणि श्री सहैश्वर। पण सं∘ १६ । घा० २०×५३ इंत । भाषा-संस्कृत । विषय-कोषा । र० काल × । ते० काल × । बसूर्या । वै० सं० २७७ । खा मण्डार ।

२६५७. शब्दरह्म \cdots ापत्र सं०१६६ । सा०११ \times ५३ ६८८ । आया-संस्कृत । विषय-कीस । ८० काल \times । ले० काल \times । अपूर्ण । वे० सं०३४६ । आयार ।

२६४८. शारदीनासमाला"""। पत्र तं॰ २४ ते ४७ । मा॰ १०३८४३ रक्क । आपा-संस्कृत । जियम-कोश । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । सपूर्ण । वै० सं० १८३ । क्यू पण्डार ।

२६४६. शिलोञ्ज्यकोश-—कवि सारस्वत । पत्र सं० १७ । ग्रा० १०३४५ इक्का | जावा-संस्कृत । /वयत-कोशः । २० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । (तूर्वीयकंड तक) वै० सं० ३४३ । ज्यु प्रण्डार । विशेष—-रवना समरकोश के साधार पर की गई है जैसा कि कवि के जिस्स पद्धों से प्रकट है ।

> कनेरमहॉलहस्य कृषिरेवालि निर्मला । श्रीचन्त्रदाएई भूगलामंलियानुवासनम् । पद्मानिबोधयसम्बर्गः साल्वासि कृत्ते कृषिः

> > तस्तौरभनभस्वंतः संतस्तन्वन्तितद्युणाः ॥

लूनेव्यमरसिहेन, नामलियेषु वालिषु। एष वाष्ट्रमयवप्रेषु शिलोंछ क्रियते मया।)

२६४०. सर्वाश्वसायनी—अहुबरहृषि । पत्र सं०२ से २४। मा० १२४४ इक्का । त्राना-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल ४ । ले० काल सं० १४६७ संगतिर दुवी ७ । म्यूर्ण । वे० सं० ११२ । स्व संप्यार । विशेष—हिंसार पिरोज्यकोट में रुप्रकृतिसम्बद्ध के देवसुंदर के पट्ट में श्रीजिनदेवसूरि ने प्रतिमिधि को थी ।



ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान

२६४१. द्वारिहंत केवली पाशा'''''''''। पत्र सं∘१४ । द्वा० १२४६ दंव । माया-संस्काः । वयय-ज्योतिकः । र०कालः सं०१७०७ सावनः सुदी ४ । ते०कालः ४ । पूर्णः। वै० सं०३४ । कंभण्डारः ।

विशेष---ग्रन्थ रचना सहिजानन्दपुर में हुई थी।

२६५२, ऋदिष्ट कर्ता। तम सं० ३। झा० ११४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विनय-ज्योतिष • काल ४। ते• काल ४। यूर्ण । वै० सं० २५६। सा मण्डार ।

विशेष---६० स्लोक हैं।

२६५२, च्यस्टिष्टध्याय''''''''' । पत्र सं० ११ । झा० = ४५ । आवा – संस्कृत । विषय – ज्योतिय । र० काल × | ते० काल सं० १६६६ यैदाला सुदी १० । पूर्ण | वे० सं० १३ । ख सम्बार ।

विशोष---प० जीवसाराम ने शिष्य पत्रासाल के लिये प्रतिलिपि की । ६ पत्र से झागे भारतीस्तीत्र दिया हुमा है।

२६४४. द्यवजद् देवश्ली***** । पत्र सं०१०। प्रा००८४ इंच। प्रापा-संस्कृत। विषय-वाकुत सास्त्र।र०काल × । ते०काल × । पूर्ण।वै०सं०१४६ । स्र प्रण्यार।

२६.४.४. उच्चायह फक्का****** । पत्र सं० १। झा० १०३.४७३ इंच । माया-मॅस्कृत । विषय-ज्योतिक र०काल ४ । ने०काल ४ । पूर्ण | वे०सं० २६७ । स्न प्रवहार ।

२६४६. करवा कौत्हला****** । पत्र सं० ११ । घा० १०३×४३ ६'व । भाषा-संस्कृत । विवय-ज्योतिय । र० काव × । ते० कात × । पूर्ण । वै० सं० २१४ । ख मच्चार ।

२६४७. करत्वक्सायाः......। पत्र सं० ११ । झा० १०६४४ ६'व । भाषा-प्राकृत । विषय-ज्योतिव । र०काल ४ । ने०काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १०६ । क अध्वार ।

विशेष-संस्कृत में पर्यायवाची सन्द दिये हुए हैं । मारिएक्यचन्द्र ने बृत्वावन में प्रतिलिपि की ।

२६४न. कर्षुरेचकः—। पत्र सं० १। बा० १४-३×११ इ'व । भाषा-संस्कृतः। विषय-ज्योतिषः। र० काल ×। ते० काल सं० १०६६ कार्तिक बुदौ ४ । पूर्णः। वै० सं० २१६४ । ब्रा अध्वारः।

विशेष---वक सवली नगरी से प्रारम्भ होता है, इसके वारों और देश वक है तवा उनका फल है। रंक बुवास ने जवपुर में प्रतिक्षित्र की वी। २६४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले॰ काल सं० १८४० । वे॰ सं॰ २१६६ का भण्डार । विकोष— मित्र भरणीपर ने नागपर में प्रतिकित्ति की थी ।

२६६०. कर्मराशि फक्स (क्रमै विवाक)******** पत्र सं० ३१। ग्रा० बहे×४ इंब। भाषा-संस्कृत विवय-ज्योतिया र० काल × । ले० काल × । पर्यो × । वे० सं० १६५१। इस मध्यार ।

२६६१. कसे विषाक फल्ला \cdots ापत्र संo ३। साo १० \times \vee ई इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष रे• कास \times । सेo कास \times । पूर्ण। वे॰ संo १३। इस भण्डार।

विशेष---राशियों के अनुसार कर्मों का फल दिया हुआ है।

२६६२. कालज्ञान—| पत्र सं॰ १। म्रा०६ \times ४ दंदः । सापा—संस्कृत । विषय—ज्योतिय । र० काल \times । ते॰ काल \times । पूर्ण । वे० सं॰ १८१६ । का भण्डार ।

२६६२). कालक्कान******। पत्र सं०२ । प्रा०१० हे×६२ इंच। आया–संस्कृत। विषय–ज्योतिय। र०काल ×। ले०काल ×।पूर्त्ताके सं०११६६। इस अध्यार।

२६६४. कौतुक लीलावती''''''। पत्र सं॰ १। ब्रा० १०२ \times ५ दंव । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिक । र० काल \times ले० काल सं० १०६२ । वैशाल सुदी ११। पूर्ण । वै० सं० २६१ । स्न मण्डार ।

२६६४. च्रेत्र ध्यवहार......। पत्र सं॰ २०। मा० ब्रे-४६ इ'व । जाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ते० काल ×। मपूर्ण । वै० सं० १६६७ । ट मण्डार ।

२६६६, गर्भेमनोरमा'''''। पत्र सं०७। सा०७२/४५३ इ'व । भाषा—संस्कृत । विषय-च्योतिष । र० काल 🗶 । ले० काल सं०१८८८ | पूर्व | वे० सं०२१२ । अस्त अध्वार |

२६६७. सर्गसंहिता—सर्गेऋषि । पत्र सं० ३ । आ ० ११×४६ इ'च । आपा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष र०काल × । ते०काल सं० १८८६ । सपूर्ण । वै० सं० ११६७ । इस अध्यार ।

२६६ म. प्रहृत्शावर्षील """। पत्र सं०१ राष्ट्रा १८४४ इ.चाभाषा—संस्कृतः । विषय⊸ज्योतिषः । २० कालः ×ाते० कालः सं०१ स्६६ । पूर्णावै० सं०१७२७ । टामण्डारः ।

विशेष--प्रहो की दशा तथा उपदशामों के मन्तर एवं फल दिये हुए है।

२६६६. ब्रह्मस्त्र^{.......}।वत्र सं∘६ । मा०१०-१४५ इ.च. । भाषा⊸संस्कृतः । विषय⊸ग्योतिषः । र० काल × । ले० काल × । सपूर्णः । वे० सं० २०२२ । ट. मण्डारः ।

६६५०. प्रहलायस—गरोश हैयक । पत्र सं०४ । झा० १०६४५ हेया । आया—संस्कृत । विषय— व्यक्तिय । र० काल ४ । से० काल ४ । सपूर्ण । वे० सं०४४ । इस सम्बद्धार । २६७८. चन्द्रनाडीस्थिनाडीकथण-----। तथ सं॰ १–२६। सा० १० \times ४५ इंच । नावा-संस्कृत । ए० काल \times । से० काल \times । सपूर्ण । वै० सं॰ १६८। क सन्द्रार ।

विशेष--इसके झागे पंचवत प्रमाख लक्षरा भी हैं।

२६७६. चसत्कार्चितासिष्यः***। पत्र सं० २-६। मा० १०४४ है इ.च.। माषा-संस्कृतः विवय-ज्योतिषः । १० काल × । ते० काल सं० × । १८१६ फासुस्य इसी ४ । पूर्णः । वै० सं० ६३२ । व्य सम्बारः ।

२६८०, व्यसलकारविष्सामधिः''''''। पत्र सं०२६। प्रा०१०४४ इ'व। भाषा-संस्कृतः। विषय-ज्योतिष । र०काल × । से०काल × । पूर्णः | वे०सं०१७३० । ट मण्यारः।

२६८१, इदायापुरुषतक्ष्याः """।यत्र सं०२ । झा० ११×४४ है इ.च.। साया-संस्कृत । विषय-सापुडिक बास्य । र० काल ४ । से० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० १४४ । इद्व सम्बद्धार ।

विशेष--नौविधराम नै प्रतिलिपि की थी।

२६८२. जन्मपत्रीमहिषिषारः*****। पत्र सं∘ १। मा० १२×४६ इंच। माना–संस्कृत। विषय– ज्योतियः। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० २२१३। इस अध्यारः।

२६५३. जन्मपत्रीविचार"""। पत्र सं० हे । सा० १२×५३ इंच । माया-संस्कृत । विवय-ज्योतिय र० काल \times । ले० काल \times । पूर्व । वे० सं० ६१० । का सम्बार ।

२६८४. जन्मप्रदीय—रोसकाचार्ये । पत्र सं० २-२०। झा० १२४५३ १ व । नावा-संस्कृत । विवय-ज्योतिय । र० काल ४ । ते० काल सं० १-३१ । स्पूर्ण । वै० सं० १०४८ । व्हा सम्बार ।

विशेष--शंकरभट्ट ने प्रतिलिपि की थी।

२.६८६४, अस्मम्प्रक्त """। यत्र सं०१ । धा०११-है४४-है इंव । आया–संस्कृत । विषय⊸ज्योतिव । र०काल × । ते०काल × । पूर्ता | वे०सं०२०२४ । इस सम्बद्धार ।

२६८०७. ज्ञातकपद्धति—केशाव । यत्र सं०१० । मा०११×५३ इ'व । मावा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष १० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं०२१७ । ज्ञा जम्बार ।

२६.मम. जातकपद्धति''''''। पण्तैः २६ । झा० म×६२ूँ। जापा—संस्कृतः । र०कासः × । ले० कालः × । सपूर्वं | वे० सं०१७४६ । इटकम्बारः |

विशेष--- प्रति हिन्दी टीका सहित है।

श्रद्ध]

स्थल्यः, आवकासरस्य—दैवसङ्गे ढिराजा। पत्र सं०४३। मा०१०३४५३ इंच। जावा-संस्कृत।. विकय-ज्योतिक। र० काल ×। ते० काल सं०१७३६ मादवासुदी१३। पूर्ण। वे० सं० ≒१७। का भण्यार।

विशेष---नागपूर में पं॰ सुसनुशलगरिं। ने प्रतिनिधि की थीं।

२६६०. प्रति सं०२। पत्र सं०१००। ते० काल सं०१८४० कार्तिक मुदी ६। वे० सं०१४७। स जन्मार।

विशेष--- भट्ट गंगाधर ने नागपुर में प्रतिलिपि की थी।

२६६१. जातकास्त्रकार******। पत्र सं०१ से ११ । घा० १२४४ इंच । बाया-संस्कृत । विषय-ज्योतिय । र०काल 🗶 । ते०काल 🗶 । घडर्षा । वे०सं०१७४४ । ट मण्डार ।

२६६३. प्रति सं०२ । पत्र सं०३४ । ले० काल × । वे० सं०१५४ । ज मण्डार ।

विशेष---प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२६६४. ज्योतिषमस्प्रिमाला***** कैराव । पत्र सं० ४ से २७ । बा० ६३८४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० २२०४ । क्यू मण्डार ।

२६६४. अ्योतिषक्तप्रधं थ"""। पत्र सं०१। घा० १०३/४४ है इ'च। भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिय र०काल ४ । के०काल ४ । पूर्ण। के० सं०२१४ । ज अध्वार ।

२.६६६. ज्योतिकसारआं पा—क्रपाराम । पत्र सं∘ ३ से १३ । ग्रा॰ ६१×६ इ.चा । आया-हिन्दी (पद्य) । विषय-ज्योतिक । र॰ काल × । ले॰ काल सं॰ १८४१ कालिक बुदी १२ । ग्रपूर्ण । वे० सं॰ १४१३ । अभ्यार |

विशेष-फतेराम वैद्य ने नोनिधराम बज की पुस्तक से लिखा।

द्यादि भाग---(पत्र ३ पर)

प्रय केंद्रिया त्रिकीए। वर की मेद---

केंदरियो बोयो अवन सपतम दसमो जान ! पंचम प्रक नोमों भवन येह निकोश क्वान ॥६॥ तीजो यसटम स्वारनो खर दसमो बर सेलि । इन को उपने कहत है सबै प्रंय में देखि ॥७॥ सन्तिम---

बरण लम्मो जा प्रसास से सोई वित बित भारि। वादिन उतनी मही जुपल बीते लम्म विवारि।।४०।। लगन लिखे ते सिरह जो जा पर बैठो श्रास। तापर के फल सुफल को कीचे लिंत बनाय।।४१॥

इति भी कवि कुपाराम कुत भाषा ज्योतिवतार संपूर्ण ।

२६६७. ज्योतियसारलप्रचिन्द्रका—काशीनाथ। पत्र सं० ६३। बा०६२,४४ इंच। बाया-संस्कृत।विषय-ज्योतिय। र०कान ४। से०कान सं०१=६६ पौष पुत्ती २ पूर्ण। वे०सं०६३ [स्र प्रफार।

२६६८. क्योतिपसारसूत्रटिप्यम् — नारचन्द्रः। पत्र सं०१६। घा०१०×४ इक्का नावा—संस्कृतः। विवय-ज्योतिषः। र० कालः ×। ते० कालः ×। पूर्तः। वे० मे० २०२। का मण्डारः।

विशेष---मूलग्रन्थकर्ता सागरचन्द्र हैं।

२६६६. ज्योतिषशास्त्रः****। पत्र सं०११। स्ना०५४४ दक्कः। त्राथा-संस्कृतः। विषय-ज्योतिषः। २०कालः 🗙 । ने०कालः 🗡 । पूर्णः। वै०सं०२०१। क्रमण्डारः।

३०००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ते० काल × । वै० सं० ४२१ । व्य मण्डार ।

२००१, ज्योतिषशास्त्रः****। पत्र सं० ५ । घा० १०×५ है इक्का । आषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । के० काल × । सपूर्ण । वे० सं० १६०६५ । ट जण्डार ।

३००२. च्योतिषरास्त्रः*****। पत्र सं० ४८ । सा० १८६३ इक्का। ज्ञाया-हिन्दी। विषय-ज्योतिष । र० काल ४ | ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ सुदी १४ । दुर्सा। वे० लं० १११४ । **स्त्रः अभ्यार** ।

विशेष--ज्योतिष विषय का संग्रह ग्रन्थ है।

प्रारम्भ में कुछ ब्यक्तिमों के जन्म टिप्पशा दिये गये हैं इनकी संख्या २२ है। इनमें मुख्यक्य से निम्न नाम तथा उनके जन्म समय उल्लेखनीय हैं---

महाराजा विश्वनसिंह के तुन महाराजा जयसिंह जन्म सं० १७४४ संगसिर
महाराजा विश्वनसिंह के द्वितीय पुत्र विजयसिंह जन्म सं० १७४७ चैत्र तुरी ६
महाराजा सवाई जयसिंह की राखी गोंकि के पुत्र
राजवन्त्र (जन्म नाम फॉक्स्पन) सं० १७१५ फाइख दुवी २
दीलदाराजी (जन्म नाम केवराज) सं० १७४६ सावाद दुवी १४

14.

२००२. ताजिकसञ्जावया****** । वाज्यात्म ११×४३ इंच । आवार्-संस्कृत । विषय- ं क्योतिक । रंककाल × । सेककाल संब्द्र १ तुर्गा | देकसंब्द्र २ १४ । इस अध्यार

विशेष-वडा नरायने में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे जीवरगराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२००४ तात्कालिकचन्द्रशुभाशुभक्तलः ""। पत्र सं∘३। झा० १०१,×४१ दक्क। नाया–संस्कृता विकय-ज्योतिका र० काल × | ते० काल × | पूर्ण। वे० सं० १२२। इद्र भव्यार।

३००४ त्रिपुर्यभयुद्धर्ते******। प्रान् सं०१। प्रान् ११×४ इकाः माषा–संस्कृतः।विषय–ज्योतिषः। १० कासः × । से० कासः ×।पूर्णः | वै० सं०११८८। इत्रः वण्यारः ।

३००६. त्रीतोकस्यप्रकाशः ''''''। पत्र सं०११ । घा०११×४. दश्च । भाषा–संस्कृतः । विषय–ज्योतिषः । १० कासः × । ले० कालः × । पूर्णः । वे० सं०६१२ । च्या मण्डारः ।

विशेष—-१ से ६ तक दूसरी प्रतिके पत्र है। २ से १४ तक वाली प्रतिशाभीन है। दो प्रतियो का सम्मिश्रण है।

२००७. दशोठनसुहूर्सः \cdots । पत्र सं०३ / झा० ७३ \times ४ इक्कः । आधा-संस्कृत । विषय-ज्योतिय । र० काल \times । ते० काल \times । पूर्वः। वै० सं०१ ७२४ । इस अध्यारः।

२००६. नक्तृत्रियार******। पत्र सं० ११ । सा० स \times १ $^{\prime}_{i}$ इक्कः । भाषा-हिन्दी । विज्य-ज्योतिय । १० काल \times । ते० काल सं० १ स्६स । पूर्ण । ते० सं० २७६ । भूभ भण्डार ।

विशेष--- श्रींक भादि विचार भी विये हुये हैं।

निम्नलिखित रचनायें धीर हैं---

सञ्जनमकारा दोहा— कवि ठापुर हिन्दी [१० कविस]

मित्रविषय के दोहे— हिन्दी [४४ रोहें है]

रक्कराश्चाकल्य — हिन्दी किं॰ काल सं॰ १६६७]

वित्रोय—माल विरमीका सेवन बताया गया है विसके साथ लेने से क्याधसर होता है इसका वर्शन वैद्योहों में कियागया है।

२००६. नक्षत्रवेषपीक्षाज्ञानः ""। पत्र तं॰ ६ । प्रा० १०६ $\times Y_v^2$ दश्च । भाषा--संस्कृत । विषय-स्थातिक । ए० काल \times । पूर्वा । वे० सं० वहर । इदा सम्बाद ।

दै०१०. नक्षणसात्रः''''''। पत्र सं० ३ से २४। मा० १८६ई दश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिक | द० काल × । ते० काल सं० १००१ भॅगसिर हुदी ८ । सनुर्यं । ते० सं० १७३६ | स्त्र स०कार ३०११. नरपतिजयवर्थी —नरपति । यत्र सं० १४० । घा० १२३४६ ईव । वावी-संस्कृत । विवय-ज्योतिव । र० काल सं० १४२३ वैत्र सुदी १४ । ते० काल 🔀 घपूर्यी । वै० सं० ६४६ । **व्यासम्बद्धाः** ।

विशेष-४ से १२ तक पत्र नहीं हैं।

३०१२. नारचन्द्रक्योतिषशास्त्र—नारचन्द्र। पत्र सं० २६। मा० १०४४३ ६वा। वाया-संस्कृतं। विवय-ज्योतिय। र० कास ×। सं० कास सं० १६१० मंगीसर वृदी १४। पूर्छ। वै० सै० १७२। व्या अध्यार।

३०१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल 🗴 । वै० सं० ३४४ । 🖼 मण्डार ।

२०१४. प्रति सं०३। पत्र सं०३७। ते० काल सं०१ ८६४, फाग्रुस सुदी ३। वै० सं०६४ । स्व भण्डार।

विशेष--प्रत्येक पंक्ति के नीचे धर्ष लिखा हुमा है।

३०१४. निमित्तक्षान (अद्रवाहु संहिता)—अद्रवाहु । पत्र सं० ७७ । बा० १०३४५ ६वां । वार्षान संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ते० काल × । यूर्ण । वे० सं० १७७ । व्य वण्डार ।

२०१६. निर्वेकाध्याययुक्ति ''''''। पत्र सं० १२ । झा० न×६३ इक्का नावा–संस्कृत । विषय–ज्योतिय | र० काल × । से० काल × । झपूर्स । वै० सं० १७४६ । ट भण्डार |

विशेष---१८ से झाने पत्र नहीं हैं।

२०१७. नीलकंठताजिक—नीलकंठ। पत्र सं०१४। बा०१२imes दश्च। भाषा—संस्कृत | विषय— ज्योतिक। र० कान imes। मेर कान imes। प्रप्ति। वे० सं०१०४०। **का कष्यार।**

3०१८. पञ्चागप्रदेशिः $\cdots \cdots$ । पत्र सं० १० । सा० ८४४ इ'व । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिय । रंककाल \times । पूर्ण । वै० सं० १७३५ । ट्र मण्यार ।

३०१६. पंचांग-चरह । छ भण्डार ।

विशेष---निम्त वर्षों के पंचाग हैं।

संबत् १०२६, ४२, ४४, ४६, ४६, ४६, ६१, ६२, ६४, ७१, ७२, ७३, ७४, ७६, ७७, ७६, ७८, ६०, १८, १३, १७, १६ ।

२०२०. पंचांगा \cdots ा पत्र सं० १३ । बा \circ ७ $\frac{1}{2}$ \times १६ ंच । जावा-संस्कृत । विषय-ज्योतिच । र \circ काल \times । ते \circ काल सं \circ १६२७ । यूर्ण । वे \circ सं \circ , २४७ । क्ष जप्यार ।

२०२१. पंचीगसाधन—गंधीरा (केरावपुत्र)। पत्र तं∘ ४२। झा॰ ६×४ ६'व । नावा–संस्कृत । विवय-ज्योतिव । र० कस्तर ×ाले ० काल सं० १८०२ । के० तं० १७३१ । द्व संख्याद । २०२२. परविषयार्***** पत्र सं० १ । सा० ६ $^{\circ}_{v} \times Y_{v}^{s}$ इस्र । माया-हिन्दी । विषय-शकुन शास्त्र b. ए० काल \times । युर्ण । वे० सं० ६५ । ज सम्बार ।

२०२३. परुयविषार''''''। पत्र सं०२। प्रा० $\xi_{\pi}^{1} \times \xi_{\pi}^{2}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-शक्तुनशास्त्र। २० काल \times । पूर्ण। वे० सं०१३६२। बद मण्डार।

२०२४. पाराशरी'''''''। पत्र सं०३ । मा० १२ \times १२ दंव । भाषा—संस्कृत । विषय—क्योतिष । र० काल \times । के० काल \times । पूर्ण । वै० सं०३२२ । जा भण्यार ।

२०२४. पारागरिसङ्गलरं कनीटीका******। पत्र सं०२३ । झा०१२४६ इक्षाः भाषा-संस्कृतः। विषय-म्पोतिषः। र०कालः ४ । ते०कालः सं०१≈३६ स्राक्षोत्र सुदी २ । पूर्णं वै० सं०६३३ । इत्र सम्बारः।

२०२६ पाशाकेषकती— गर्गेश्चानि । पत्र सं० ७ । मा० १०३,४ इ.च । आया—संस्कृत । विषय–निर्मात सारुत्र । र० काल ४ । ते० काल सं० १०७१ । पूर्वा | वे० सं० ६२४ । च्यु प्रण्डार ।

विशेष--प्रत्य का नाम शकुनावली भी है।

२०२७. प्रति सं० २ | पत्र सं० ४ | ले० काल सं० १७३ म | जीर्सा | वे० सं० ६७६ | ऋ अण्डार | विशेष—ऋषि मनोहर ने प्रतिलिपि की थी | श्रीचन्द्रसूरि रिचत नेमिनाथ स्तवन भी दिया हुया है | २०२८ मित सं० ३ | पत्र सं० ११ | ले० काल × | वे० सं० ६२२ | ऋ भण्डार |

२०२६. प्रतिसं० ४ । पत्र सं०६ । ले० काल सं०१८१७ पीप मुदी १ । वे० सं०१९८ । छ। भण्डार ।

विश्रोष—निवासपुरी (सांगानेर) में चन्द्रप्रभ वैत्यालय में सवाईराम के शिष्य नौनगराम ने प्रतिलिधि की थी।

३०३०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० स० ११८ । छ् भण्डार ।

दै०२१. प्रति सं०६। पत्र सं०११। से० काल सं०१८६६ वैशाख बुदः १२। वे० सं०११४। छ्र मण्डार।

विशेष---देयाचन्द गर्गने प्रतिलिपि की थी।

२०३२. पाशाकेवली — ज्ञानभारकर । पत्र सं० ४ । प्रा० १४४, इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय— निमित्त शास्त्र । र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्ण । वे० सं० २२० । च भव्डार ।

३०२२. पाशाकेबक्ती''''''' पत्र सं०११। झा० १४४३ इखा। भाषा—सस्कृत । विषय—निमित्तसास्त्र । र०काल ४ । वे०काल ४ । पूर्ण। वे०सं०१६४६ । इस सम्बद्धार ।

२०२४. प्रति सं०२। पत्र सं०६। ले० काल सं०१७७५ फाग्रुग बुदी १०। वे० सं०२०१६। ध्र सण्डार। विशेष---पंडि बसाराम सोनी ने ग्रामेर में मित्रामा बैस्सालय में प्रतिकिपि की थी।

1 350

इसके स्रतिरिक्त का भाष्टार में ३ प्रतियां (वै० सं० १०७१, १०६६, ७६६) इस भण्टार में १ प्रति (वै० सं० १०६) इस भण्डार में ३ प्रतियां (वै० सं० ११६, ११४, ११४) द्या मण्टार में १ प्रति (वै० सं० १६२४) स्रोर हैं।

६०३४. पाशाकेवली''''''। पत्र सं० ४ । मा० ११३८४ ६का । माया-हिन्दी विषय-निमित्तछात्त्र । र० काल ४ । ले० काल सं० १५४१ । पूर्वा । वे० सं० ३६४ । का मण्डार ।

विशेष---पं० रतनचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३०३६. प्रति सं०२ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं०२५७ । जा भण्डार ।

३०३७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल 🗙 । वै० सं० ११६ । व्या भण्डार ।

३०३८. पाशाकेबल्ली'''''''। पत्र सं०१। मा० ६४४ इक्का। भाषा—हिन्दी। विषय–निमित्त शास्त्र । र०काल ×ाने०काल ×|पूर्ता|वे०सं०१ स्पर्का अभकार।

३:३६. पाशाकेबली'''''''। पत्र सं० १३ । मा० प्र्रे×४,६ इखा । माषा—हिन्दी गर्छा। विषय—निमित्त नास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १व५० । मपूर्ला । वै० सं० ११व । इक् मण्डार ।

विशेष-विश्वनलाल ने जयपूर में प्रतिलिपि की थी। प्रथम पत्र नहीं हैं।

३०४०. पुरस्वरण्**विधिः''''''। वन सं० ४ । द्या० १०**४४३ इंच । माया-संस्कृत । विषय-ज्योतिच । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३४ । इस अध्यार ।

विशेष--प्रति जीर्गा है। पत्र भीग गये हैं जिसमे कई जगह पढा नही जा सकता।

२०४१. प्रश्नचृहामिष्युःःःःः। यत्र सं॰ १३। मा॰ १४४ $\frac{1}{4}$ इख्रा। भाषा-संस्कृतः। विषय-ज्योतिषः। र० काल \times । देशं सं॰ १३६६। इदा भण्डारः।

३८४२. प्रतिसं०२ । यत्र सं०१६ । ले० काल सं०१८०८ आसोज सुरी १२ । अपूर्ण । के० सं० १४४ । इट्र अण्डार ।

विशेष---तीसरा पत्र नहीं है विजैराम ग्रजमेरा बाटस वाले ने प्रतिलिपि की थी।

३०४३ प्रश्नविद्याः''''''। पत्र सं०२ ते ४.। आा० १०×४ दश्च । भाषा–संस्कृत ≀विषय–ज्योतिष ∤ र० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण। वै० सं० १३३ । इद्व चण्डार ।

२०४४. प्रश्नविनोवः'''''''' पत्र सं०१६ । घा०१०४४३ ईच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिक । र०काल ४ । पूर्वावे० सं०२६४ | इत्र सम्बारी

२०४४. प्रश्नमनोरमा—सर्गे। पत्र सं० २ । मा० १३४४ इक्का आया—संस्कृत । विवय—स्वोतिष । र• काल ४ । ते॰ काल सं० १६२८ भाववा सुदी ७ । दे॰ सं० १७४१ । ट बच्चार ।

३८४७. प्रश्नसुरानावक्षिरसङ्गः । पत्र सं०४ । मा०६२४५ इंच । भाषा-हिन्दी । विवय-क्योंतिक । र०काल × । ते० काल × । पूर्वी । वे०सं०४६ । सः मण्यार ।

३०४ ⊏. प्रश्नाविति******। पण सं०७। मा०६ ४३ १ इंच। भाषा—संस्कृतः। विषय ज्योतिषः। र० कालर ४। ते० काल ४। प्रपूर्णः। वे० सं०१ व्हणः। इस अण्डारः।

विशेष---धन्तिम पत्र नहीं हैं।

२०४६. प्रश्नसार् \cdots ापत्र संullet ११। प्रा० १२ ξ \times ६ इंत्र । भाषा-संस्कृत । विषय-राकुन सास्त्र । १० काल π ० १६२६ फाछुरा बुदी १४। वै० संullet २३६। ज भण्डार ।

३०४०. प्रश्नसार—हमप्रीय। पत्र सं०१२। प्रा०१(xx', इ'य। भाषा–संस्कृत। विषय-शकुन सास्त्रा। र०काल x। ले०काल सं०१९२६। वै०सं०३३३। जा मण्डार।

विशेष--पत्रों पर कोष्ठक वने हैं जिन पर ग्रेक्षर लिखे हुये हैं उनके ग्रन्तसार शुमाशुभ फल निक्लता है।

२०४१. प्रश्तोत्तरमाणिक्यमाला—संग्रहकर्तान० क्वानसागर । पत्र सं० २७ । घा० १२४४३ इ'च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल ४ । ते० काल सं०१८६० । पूर्ता वे० सं० २६१ । स्व भण्यार ।

देत्र २२. प्रति सं०२ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं०१ द६२ चैत्र बुदी १० । झपूर्स । वे० सं०१ १० । विशेष—भन्तिम पूर्ण्यका निम्न प्रकार है ।

इति अपनोत्तर माणिक्यमाला महाप्रत्ये महारक श्री करलारिकद मणुकरोपमा इ० ज्ञानसागर संबर्हाते श्री जिनमाश्रित अथनोथिकार: ।। असम पत्र नहीं है ।

६०४६ै. प्रस्तोत्तरमालाः'''''। पत्र सं० २ से २२ । झा० ७१ँ४४१ै इ'च । भाषा-हिन्दी । विषय⊸ ज्योतिय । र० काल × । ते० काल सं० १९६४ । झपूर्ण । वै० सं० २०१८ । इस प्रस्तार ।

विशेष--श्री बलवेव बालाहंडी बाले ने बाबा बालपुकुन्द के पठनार्थ प्रतिनिपि की थी ।

दै०४४. प्रतिसं० र ।पत्र सं० ३६ ।ले० काल तं०१⊏१७ प्राप्तोग सुदी ४ ।वे० सं०११४ | अव जण्डार ।

२०४४. अवीनीयाक्य''''''। पत्र सं० ४। छा० ६ \times ५६ हंच। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिय। ६० काल \times । पूर्वा। २० सं० १२व२। छा अच्छार।

विशेष---सं० १६०५ से १६२६ तक के प्रतिवर्ष का अविका पाल विया हुया है।

. २०४६. सङ्ख्ली''''''। पत्र सं०११ । चा॰ १४६ इ'च । सामा-हिन्दी । विदय-ज्योतिच । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं०२४० । इद्र सम्बार ।

ितीय-सेच वर्जना, सरसना तथा विजसी धादि चयकने से वर्ष करा देखने सम्बन्धी विचार दिये हुने हैं। २०५७. भाष्टती-पद्मनाभ । पत्र सं० ६। घा० ११×३२ इंच । बादा-संस्कृत । विचय-ज्योतिय । र॰ कान × । ते॰ कान × । पूर्ण । वै॰ सं० २६४ । च मण्डार ।

२०४६. प्रति संट २ । पत्र संट ७ । तेट काल 🗴 । वेट संट २६४ । 🖷 अध्यार ।

२०४६. शुवनदीपिका***** । पत्र सं० २२ । मा० ७६ ४४ ई. इ. व. त्रावा-संस्कृत । विषय-ज्योतिक । र० काल ४ । ते० काल सं० १९१४ । पूर्ण । वै० सं० २४१ । जा मण्डार ।

३०६०. सुबनदीपक—पद्मप्रससूरि । पत्र सं० ५८ । झा० १०३,४५ इ.च । आदा–संस्कृत । विषय– उथो तेषः र०काल ४ । ते०काल ४ । तूर्ण । वै० सं० ८६५ । झा अच्छार ।

विशेष -प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२०६१. प्रति संद २। पत्र सं० ७। ते० काल सं० १८४९ कालुए। सुदी १०। वे० सं० ६१२। स्वा भण्डा । विकोर—स्वालकार ने प्रतिलिपि की थी।

३०६२. प्रति सं १ १ पत्र सं० २०। ले० काल 🗴 । वे० सं० २६६ । च मण्डार ।

विशेष--पत्र १७ से भागे काई भन्य ग्रन्थ है जो अपूर्ण है।

२०६२. सृगुमेहिना......। पत्र सं० २० । सा० ११% ७ इ.च । श्राचा-संसक्त । विषय-स्थातिव । र० कात 🗴 । ते० कात 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । क्र शब्दार ।

विशेष---प्रति जीर्ग है।

३०६५. सुदूर्णविस्तानसिंगः ः । पत्र सं०१६ । सा०११४५ इ.च । माषा—संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल ४ । ले०काल सं०१६६६ । सपूर्ण) वै० सं०१४७ । स्व यण्डार |

२०६४. शुकूरीं गुकायली ''''''''। पत्र सं० ह। धा० १०४४ ३ क' व। भाषा–संस्कृत । विषय⊸ज्योतिय । र०कान ४ । ते०काल सं० १०१६ कार्तिक बुदी ११ । पूर्वा वेठ सं० १३६४ । इस अच्छार ।

२०६६. ब्रहुर्त्तमुक्तावली—परमहंस परिवासकाचार्ये। पत्र सं० ६। सा० १३ \times ६५ दंव। वाला-संस्कृत । विवय-क्योतिय। र० काल \times । के० काल \times । पूर्ण । वे० सं० २०१२ । का क्षवार ।

विमोच--सब कासी के मुहूर्त का विवरण है।

२०६७. प्रति सं०२ । पत्र सं०६ । ते॰ काल सं०१८७१ वैद्याल दुवी १ । वे॰ सं०१४८ । स्व सण्डार । दे०६८. प्रति सं० दे। पत्र सं० ७। ले॰ काल सं॰ १७६२ मार्गशीयं बुदी ३। ज मण्डार।* विवेष—सवास्ता नगर में युनि चोकाचन्द ने प्रतिनिधि की थी।

दै०६६. सुदूर्णसुक्ताविका****** । तन् संन् १४ से २६ । बान् ६३४४ इंच । सामा-हिन्दी, संस्कृत । विषय-ज्योतिच । र० काल メ । ते० काल メ । बपूर्ण । वे० सं० १४६ । स्व प्रण्यार ।

२०७० सुदूर्तसुकावकी'''''। पत्र सं० १ । झा० १०४४ ३ इ.च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिय । र•काल × । ते॰ काल सं० १०१६ कॉलिक बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १३६४ । इस प्रकार ।

२०७१. मुहूर्चतीपक— सहादेश । पत्र सं० ⊏ । सा० १०४५ ६ व । भाषा—संस्कृत । विषय–ज्योतिय । र०काल ४ । ते०काल सं० १७६७ वैशास बुदी ३ | पूर्ण । वे० सं० ६१४ । छ। क्षत्रकार ।

विशेष--पं० हूं गरसी के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

दै०७२. सुदूर्णसमहः'''''।पत्र सं० २२ । झा० १०३,४४ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काला × ।ते० काल × । सपूर्णावे कंतर १४० । सा भण्डार ।

विशेष--वर्षा धाने के सक्षाएों एवं कारएों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। ज्लोन सं० ३४९ है।

३०७४. प्रति सं०२ । पत्र सं० ३५ । लं० काल सं० १८६२ । वे० सं० ६१५ । ऋ भण्डार ।

२०७४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल 🔀 । अपूर्मा । वे० मं० १७४७ । ट भण्डार ।

२०७६. योगफला™।पत्र सं०१६ । धा०६}४३, डचः। भाषा–सस्कृतः। विषय–⇒थोनियः र० काल ×।के∘काल ×। धपूर्ताः वे०सं०२०३। चुभण्डारः।

३०७७. रत्नदीपक—गरापति । पत्र सं० २३ । घा० १२०४ इच । भाषा-संस्कृत , विषय-ज्योतिष । र• काल × । ले॰ काल सं० १६२६ । पूर्ण । वे० सं० १६० । स्व भण्डार ।

२०७२, रन्नदीयक ''''''। पत्र सं० १ । या० १२ \times ४, दंव । माया- मंस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल \times । ते० काल सं० १०१० । पूर्ण । वे० सं० ६११ । झ भण्डार ।

विशेष--जन्मपत्री विचार भी है।

२०७६. रमलशास्त्र—पं० चिंतास्रिया । पत्र सं०१४ । घा० ८×६ दश्च । भाषा⊣संस्कृत । विषय— ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । सपूर्णा, वे०सं०६४४ । इस्मण्डार ।

२०८०, रसस्यास्त्र \cdots ापत्र तं॰ १६ । घा० १imes६ इ.स. । सारा-हिन्दी । विषय-निमित्त सास्त्र र० काल imes । पूर्ण । दे० तं॰ ५२२ । का सण्डार ।

व्यातिष एवं निमित्तक्रान

३ म. १. रसल्लाहाल। पत्र सं० ४ । झा० ११×४ इक्का । आया-हिन्दी गणा । विषय-निमित्तकास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० ११६ । छ भण्यार ।

विशेष----प्रादिनाथ चैत्यालय में घाचार्य रतनकीत्ति के प्रशिष्य सवाईराम के शिष्य नौनदराम ने प्रतिलिपि की थी।

३० = २. प्रतिसं०२ । पत्रसं०२ से ४४ । ले० कास सं०१ ८७ = श्रापाढ बुदी ३ । श्रपूर्ण । वे० मं०१४६४ । टक्षण्डार ।

२०=२. राजादिफला \cdots \cdots । पत्र सं \circ ४ । ध्रा \circ १ ξ \times ४ ६%। । अपवा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र \circ

३० क.४. राहुफल्लः \cdots ापत्र सं० द । स्ना० १३,४४ इ.सा । भाषा हिन्दी । विषय \sim ग्योतिष । र० काल \times । ले० काल सं० १ द०३ ज्येष्ठ सुरी द | पूर्ण । वे० सं० ६६६ | स्व भण्डार |

२०=४. रुद्रक्कान *****। पत्र सं०१। आ० ६ $rac{1}{2}$ imes १ व । आषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल imes । ले० काल सं०१७५७ चैत्र । पूर्ण । वे० सं०२११६ । द्या सण्डार ।

विशेष--देधसाग्राम में लालसागर ने प्रतिलिपि की थी।

२०-६. सप्रचित्रकाभाषा''''''। पत्र सं० द । झा० द×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । सपूर्यो । वे० सं० ३४द । ३६ भण्डार ।

२०=७. स्त्रप्तरास्त्र—वर्द्धमानसूरि। पत्र सं०२। प्रा०१०imes४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-ज्यातिय। र०काल imes1 से०काल imes1 पूर्ण। वे० सं०२१६। स्त्रभण्डार।

३०≔⊏. लाघुआरोतक—अष्ट्रीत्पला । पत्र सं०१७ । आरा० ११४५ इ'व । साथा—संस्कृत । विवय— ज्यानिय । र० काल ४ । ले० काल ४ । वे० सं०१६३ । का अण्डार ।

३ः⊏६. वर्षेबोधः'''''। पत्र सं० ५०। सा० १०६ँ×५ इ'व । भाषा–संस्कृत । विषय–अ्योतिक र०काल ×। ते०काल ×। प्रपूर्ण। वै•सं० ⊏६३। इस भण्डार।

विशेष-- प्रन्तित्र पत्र नही है। वर्षफल निकालने की विधि दा हुई है।

३-६०. विवाहरो।थनः''''।पत्र सं०२ । प्रा०११४१ इंव । भाषा—संस्कृत । विषय-ज्योतिक र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्शा वे⊌ सं०२१६२ । च्या भण्डार ।

३०६१. बृहज्जातक — अष्ट्रीत्पतां ृपत्र सं० ४ । मा० १०३,×४ ॄर्श्वा । भाषा—संस्कृत । विषय— ज्योतिय । र०काल × । क्रे०काल × । पूर्ता। वै० सं० १००२ । ट मण्डार ।

विशेष--- मट्टारक महेन्द्रकीलि के शिष्य भारमञ्ज ने प्रतिसिपि की थी।

अ्योतिष एवं निस्तक्रांन

THE]

दैश्टर, बट्वैवासिका—बराहसिंहर । पत्र सं०१। झा०११४४३ इस । प्राचा-संस्कृत । विषय-ज्योसिक । र०काल ४ । ले० काल सं०१७६६ । वृत्यें। वे०सं०७३६ । क्र पण्डार ।

३०६३. षट्पंचासिकाष्ट्रीच — अट्टोरपल । पत्र सं० २२ । बा० १२४६ इक्का शाया–संस्कृत । विषय-अवीतिक । र० काल ×ा ते० काल सं० १७८६ । प्रपूर्ण । वै० सं० १४४ । क्या मण्डार

विशेष—हेमराज मिश्र ने तथा साह पूरणमज ने प्रतिलिधि की थी। इसमें १,२,६,११ पत्र नहीं हैं।

३०६४. शकुनविचार $\cdots\cdots$ । पत्र सं० १। धा० ६J×४ χ^2 इंच। जाया-हिन्दी गर्छ। निषय-यकुन सास्त । र० काल \times । लेंक काल \times । पूर्ण | नेक स० १४८ | छ भष्डार ।

विशेष--- ५२ प्रक्षरों का यंत्र दिया हुआ है।

३८६६. प्रति सं०२ । पत्र सं०४ । ले० काल सं०१ ६६६ | वे० सं०१०२० । स्र भण्डार ।

विशेष-पं । सदासुखराम ने प्रतिलिपि की थी।

देश्दर्भः राक्कतावली — गर्गा। पत्र सं॰ २ से ४। ब्रा॰ १२% ४,३ द्ववः। भाषा-संग्कृतः। विषय-अभीतिकः। र॰कालः \times । ले॰कालः \times । समूर्णः। वे॰ सं॰ २०४४ः। ब्राः भण्डारः।

विशेष— इसका नाम पाशाकेवली भी है।

३०६⊏. प्रति सं०२ । पत्र सं०६ । ले० काल × । वै० सं०११६ । आध्र भण्डार

विशेष---भ्रमरचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

२०६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८१३ मंगीसर मुदी ११ । प्रपूर्ण । ये० सं० २०६ । का अच्छार

३१००. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३ से ७ । ले० काल × । अपूर्गा । वे० सं० २०६८ । ट भण्डार ।

३१८१. राकुनावली— कवजन् । पत्र सं०७। प्रा० ११ \times ४ $\frac{1}{2}$ कं । भाषा-हिन्दी । विवय-शहुन साहत । र०काल \times । लेककाल सं०१८६२ सावन सुदी ७। पूर्या | वेकसं०२४८ । जा जब्दार

३१०२. शकुनावली " ""। पत्र सं॰ १३ । मा० म्द्रै \times ४ इंच । भाषा-पुरानी हिन्दी । विषय-शतुन सास्त्र । र० काल \times । के० काल \times । सपूर्ती । वै० सँ० ११४ । क्ष पण्डार

· १९०३. प्रति संट २ । पत्र सं० १६ । ले॰ कालासं० १७६१ सावन बुदी १४ । वे० सं० ११४ । इङ् प्रच्यार । विकोष—रामबन्द्र ने उदबगुर में राला संग्रामसिंह के बासनकाल में प्रतिविधि की थी। २० कमलाकार वक्र हैं जिनमें २० नाम विये हुये हैं। एक ४ से माने प्रस्तों का फल दिया हमा है।

३१०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ३४० । अन्न अण्डार

३९०४. राष्ट्रनावली ······। पत्र सं० ५ से द। झा०११४५ इंच। नावा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। र० काल ४। ले० काल सं० १८६०। झपूर्ण। वै० सं० १२५६। व्यायण्डार।

२१०६. राकुलाबली******* । प्रांति १२ । प्रांति १२ ४ ६ व । भाषा-हिन्दी प्रवः । विषय-सङ्कत्रवास्त्र । $\mathbf x$ काल $\mathbf x$ । तेल काल संत्र १८०८ प्रासीज तुदी द । पूर्णावेल संत्र १६६६ । द्वा मण्डार ।

विशेष-पातिशाह के नाम पर रमलशास्त्र है।

३१०७. शातश्चिरहृष्टिक्वियार************ पत्र सं०१। घा० १२ \times १ इत्र । भाषा-संस्कृत । विकथ-ज्योतिय । र०काल \times । मे०काल \times । पूर्ण । वै० सं०१८४६ । इस मण्डार

विशेष--द्वादश राशियक में से शमिश्वर हृष्टि विचार है।

३१० द. शीब्रवोध—काशीनाथा। पत्र सं०११ से ३७ । झा० द्र्ये×४३ इंच। माया—संस्कृत। विषय–उथोतिय। र०काल ×। ले०काल ×। ब्रपूर्श। वे०सं०१६४३। का मण्यार।

३१०६. प्रति सं०२। पत्र सं०३१। ले० काल सं०१८२०। बै० सं०१८६। स मण्डार।

विशेष--एं माश्यिकचन्द्र ने बोढीग्राम में प्रतिलिपि की थी।

३११०. प्रतिसंट ३ । पत्र संट ६८ । लेट काल संट १८४८ घासील सुदी६ । वेट संट १३६ । इद भण्डार।

विशेष--संपतिराम खिन्दूका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

२१११. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७१। ले॰ काल सं० १८६८ प्रायाङ बुदी १४। वे॰ सं० २४५। ह्य

विशेष---आ० रत्नकीर्ति के शिष्य पं० सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी।

इनके बतिरिक्त का मण्डार में ४ प्रतियां (वे॰ सं॰ १०४, १०४६, १४४१, २२००) ह्या मण्डार में १ प्रति (वे॰ सं॰ १८०) छन्, सक्त तयांट भण्डार में एक एक प्रति (वे॰ सं॰ १३६, १६२ तया २११६) प्रीर हैं।

३११२. शुभाशुभयोग *****। पत्र सं०७ । घा० ६३,४४ इंच। प्राया–संस्कृतः । विषय–ज्योतिय । र०काल ×। ले०काल सं०१८७५ पीच सुदी १०। पूर्ण । वे० सं०१८८ । आह प्रच्छार ।

विशेष--पं० हीरासाल ने जांबनेर में प्रतिसिपि की बी।

१९१३. संक्रांतिफक्षःःःः।पत्र सं०१। छा० १० \times ४ इंग। आथा–संस्कृत। विषय–ज्योतिक। र०काल \times । ते०काल \times । पूर्ण। के० सं०२०१। स्वाभव्यार।

३११४. संक्रांतिकतः । विषय-ज्योतिय । १० काल $\times \mathbb{R}^2$ सं । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिय । १० काल \times । ते० काल सं० १६०१ भाषवा बुदी ११ । वे० सं० २१३ । जा भण्डार

३१९४, संक्रांतिवर्णनः। पत्र सं०२ । मा०१८४३ इंच। भाषा—संस्कृत । विषय⊸ज्योतिय । इ.क.स्तर × । ते०काल × । पूर्ण । वे०सं०१६४६ । व्यापण्डार

३११६. समरसार—रामबाजिये । पत्र सं० १८ । घा०१२४४ इंच । आया—संस्कृत । विषय— उच्चोतिय । र०काल सं० १७१३ । पूर्ण । वै० सं० १७२२ । ट मण्डार

विजेप--योगिनीपुर (विल्ली) में प्रतिलिपि हुई । स्वर शास्त्र से लिया हुया है :

३१९७. संबदसरी विचार************ पत्र सं∘ २। आ० १४६१ इंच । आषा-हिन्दी गद्य । विषय-उसोतिय । र०कान ४ । ते०काल ४ । पूर्ण । वे०सं० २०६। यह सण्डार

विशेष-सं १६५० से सं २००० तक का वर्षफल है।

३११५ सामुद्रिकलाक्या """। यत सं०१ सः । आ०६ \times ४ इ'व । आपा—संस्कृत । विषय—ितिसल सास्त्र । स्त्री पुरागे के अंगों के ग्रुमाकुम लक्ष्या आदि दिये हैं। र० काल \times । ल० काल सं०१ ४६ इपीय मुत्री १२ । पूर्णा | वे॰ सं०२ द१ । अर्थाप्र

देश है. सामुद्रिकविचार****** । पत्र सं०१४ । आर० ०६०४६६ इ.च.। भाषा–हिन्दी । विषय–निमिक्ता। शास्त्र । र०काल × | ले०काल सं०१७६१ पीप बुदी ४ । पूर्ण। वे०स ०६० । अस्माप्टार ।

- २१२०. सामुद्रिकशास्त्र--श्रीनिधिसमुद्रः। पण २०११। आ० १२४४३ टंच । भाषा-संस्कृतः। विषय-नि.मसः। र० काल ×। ने० काल ×। पूर्णः। वै० स० ११६। ह्व भण्यारः।

विशेष-अंत में हिन्दी मे १३ श्रुङ्गार रस के दोहे हैं नथा स्त्री पुरुषों के ग्रगों के लक्षरण दिये हैं।

३१२१. **सामुद्रिकशास्त्र''''''।** पत्र सं०६ । आ०१४४४ इंव) भाषा-माङ्कतः । विषय-निमिक्तः । र०काल ≿ । ले०काल ४ | यूर्णां वि०सं०७६४ | ऋ मण्डारः ।

विशेष-- पृष्ठ = तक संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द विशे है ।

३१२२. सामुद्धिकशास्त्र''''''' । यन सं०४१ । या० ⊏र्',४४ इ.च । भाषा-संस्कृत । विषय-निमिक्त । र०कान ४ । ते०कान सं०१=२७ ज्येष्ठ सुत्री १० ! मपूर्ण। वे० सं०११०६ । वस मण्डार ।

विशेष-स्वामी चेतनदास ने गुमानीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। २, ३, ४ पत्र नहीं है।

३१२३. प्रति सं०२। पत्र सं०२३। नं० कान सं०१७६० फाग्रुस बुवी ११। प्रपूर्स | वे० सं० १४६। इस भण्डार |

विशेष-बीच के कई पत्र नहीं है।

788

२१२४. सासुद्रिकशास्त्र ***** ; पत्र नं० ६ | घो० १२४४३ है व । आया-संस्कृत । विषय-निमित्त । र० काल २ | नं० काल सं० १६६० | पूर्ण | वे० सं० दहर | इद्र सण्डार ।

२१२४. प्रति सं०२। पत्र सं० ४ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० सं० ११४७ । इस अण्डार ।

, ३१२६. सामुद्रिकशास्त्र " "। पत्र सं० १४ । झा० द×६ इंच । आवा–हिन्दी पद्य । विषय–निमित्त । र० नाल र । ले० काल सं० १६०व झालोज बुदी व । पूर्ण । वे० स० २७७ । स्म अण्डार ।

३१२७. मार्र्य्यो******। प्राठ १२४४। प्राठ १२४४६ इ'व । आपा-अपप्रश्ने स । विषय-ज्योतिय रुकताल ४ । लेकताल लेक १७१६ भावता बुदी द । अपूर्ण । वैश्लेक ३६६ । व्यायण्यार ।

विशेष-इमी भण्डार में ४ ब्रपूर्श प्रतिया (वे० सं० ३६४, ३६४, ३६६, ३६७) और है।

५१२८. मारावली'''''''। पत्र सं०१। बा०११×३६ इंच। भाषा-संस्कृतः। विषय-ज्योसियः। र० काल \times । प्रेणः। कं० सं०२०६४.। इत्र अण्डारः।

दश्दिह. सुर्यग्रमनिश्चिः "ं। पत्र सं० ४ । मा० ११३,४४३ इ'च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र. नान ४ । नेऽ काल ४ । पूर्ता । वेऽ सं० २०४६ । इस भण्डार ।

विशेष - जैन ग्रन्थानुमार सूर्धचन्द्रगमन विभि दी हुई है । केवल गिएल भीग दिया है ।

३१६.. सोमङस्पत्ति '' ''' । पत्र सं० २ । बा० ५६% ४ इ'च । जाया—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० कारा . । वरु काल सं० १००३ । दूर्सा । वैठ स० १३०६ । ज्या अध्वार ।

६५३६. स्थप्तविचार \cdots ं। यत्र सं०१। धा०१२ \times ६३ र न । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्तसास्त्र । र० कान \times । कि कान सं०१८५०। पूर्ण। के सं०६०६। **अ भण्डार** ।

३१६२. स्वयनाध्याय '' ''''। पत्र सं० ४५ छा० १० \times ४३ इंब । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त साम्य । र० काल \times । ले० काल \times पूर्ण । वै० सं० २१४७ । क्य मण्डार ।

३१६२. स्थप्ताथली —देखनिन्। पण सं०३ । झा० १२ ४७ र्ट्डाचा भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त वान्त । र०काल × । ले०काल सं०१६ ४० भाषवासुदी १३ । पूर्णा । वै० सं० च ३६ । का अण्डार ।

३१३४. प्रति संट २ । पत्र संट ३ । लेट काल 🗴 । तेट संट ब३७ । 🕸 भण्डार ।

२५२४. स्वप्ताविक्तःःः । पत्र सं०२। म्रा०१० \times ७ इंत्र। भावा-संस्कृत । विषय-निमित्तवास्त्र। र० काल \times । से० काल \times । स्रपूर्ण। के० सं० २५४। क्र भण्डार।

. ११६६. डोराइमानः'''ापत्र सं०१३ । आर०१०४५ इंचामाया—संस्कृत । र०काल ४ । ले० काल ४ । समूर्यावे० सं०२०४५ । इस भण्डार ।

विषय-ग्रायुर्वेद

३१३७. व्याजीकीरसमञ्जरी """। पत्र सं० ४ । वा० (१५४४६) इ.च । सावा-संस्कृत । विषयं-वासुर्वेद । र० काल ४ । ते० काल सं० १७६६ । पूर्ण । वे० सं० १०४१ । व्य भण्डार ।

३१३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल imes । वे० सं० १३६ । ळ मण्डार)

विशेष---प्रति प्राचीन है।

३११६. श्रजीर्धे मज़री—काशीराजापत्र संग्री माग्र० १०६४ ४ इक्का माषा–संस्कृत । विषय– सायुर्वेद | रक्काल × । लेक्काल × । पूर्णावेठ संग्रहे । स्वामण्डार ।

३१४०. ऋजूतसागर \cdots ापत्र सं० ४०। ब्रा० ११३ \times ४ $\frac{1}{2}$ इंच। भाषा–हिन्दी। तिपय-ब्राणुर्वेद। र० काल \times । संपूर्ती। वै० सं० १२४०। ऋ सध्वार।

३१४१. चस्रुतसागर—महाराजा सवाई प्रतापसिंह । पत्र सं० ११७ में १६४ । घा० १२¦्८०३ इ'च । घाचा—हिन्दी । विषय—मापूर्वेद । र० काल × । ते० काल × । घपूर्स । वे० स० २६ । इ. भण्डार ।

विकोष--संस्कृत ग्रन्थ के ग्राधार पर है।

३१४२. प्रति सं०२ । पत्र सं० ५३ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० सं० ३२ । क भण्डार ।

विशेष--संस्कृत मूल भी दिया है।

क भण्डार में २ प्रतियां (वे॰ सं॰ ३०, ३१) बपूर्ण भीर हैं।

३१४३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४ से १५०। ले० काल 🗴। प्रपूर्ण । वे० सं० २०३६। ट भण्डार ।

रे१४४८ व्यर्थप्रकारा—स्वेकानाथ । यत्र सं० ४७ । घा० १०५४८ ६ च । माया-संस्कृत । निषय-धायुर्वेद । र० काल ४ । ले० काल सं० १६८४ सावग्र बुदी ४ । पूर्यो । वे० नं० ८६ । झा मण्डार ।

विकोष--- धायुर्वेद विषयक ग्रन्थ है। प्रत्येक विषय को शतक में विभक्त किया गया है।

२१४४. व्यक्तियकेणक—व्यक्तियक्ति । पत्र सं० ४२ । बा० १०४४) इ'ल । भाषा-सस्कृत । तियस— बायुर्वेद । र०काल ४ । ले० काल सं० १८०७ भाववा बुवी १४ । वे० सं० २३० । छ भण्वार ।

३१४६. कायुर्वेदिक तुरुकों का संगहः ""। यत्र सं० ११ । बा० १०४४३ इंच । आया–हिन्दी । विवय–कायुर्वेद । र० काल × । ने० काल × । प्रपूर्ण । वे० सं० २३० । झु जण्डार ।

देश्क्ष. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६३ । ज मण्डार ।

३१४८.. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ ते ६२ । ते० काल × । ब्रपूर्ण । वै० सं० २१८१ । ट जप्यार । विवोध — ६२ ते धारो के भी पत्र नहीं हैं।

३१४६. स्तायुर्वेदिक तुस्त्रे \cdots ा पत्र सं० ४ से २०। सा० ८ \times ६ इंब । जावा-संस्कृत । विषय-साय्वेद । २० काल \times । ले० काल \times । सुपूर्व। वे० सं० ६५ । क सम्बार ।

विशेष-आयुर्वेद सम्बन्धी कई नुस्से दिये हैं।

३१४०. प्रति सं २ २ । पत्र सं० ४१ । ते० काल 🗙 । वै० सं० २५६ । सा मण्डार ।

विशेष---एक पत्र में एक ही नुस्सा है।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० २६०, २६६, २६६) भीर हैं।

२१४१. ऋायुर्वेदिकसंथ''''''। पत्र सं० १६ । झा० १०२/४५ इक्का । माथा—संस्कृत । विषय—सायुर्वेद । र० काल ४ । ले० काल ४ । सपूर्वो । वे० सं० २०७६ । ट वण्डार ।

३१४२. प्रतिसं०२ । पत्र सं०१ ६ से ३० | ले० काल 🗙 । अपूर्ण । वै० सं०२०६६ । ट अच्छार ।

३१४३. च्युर्वेदसहोदधि— युक्तदेव । पत्र सं० २४ । मा० १२४४३ दख । भाषा-संस्कृत । विषय-मायुर्वेद । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्श । बे० सं० ३५४ । स्व मण्डार ।

३१४४. कसपुट—सिद्धनाशार्जुन । पत्र मं० ४२ । मा० १४४६ इस्र । मापा-संस्कृत । विषय-प्रापुर्वेद एवं सन्त्रकास्त्र । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० १३ । घ सम्बार ।

विशेष--- प्रत्य का कुछ भाग फटा हुया है ।

२१४४. करुपस्थान (करुपठवास्था)*****। तम सं० २१ । सा० ११३×१ १७ । नापा-संस्कृत । विषय-सायुर्वेद । र० काल \times । ले० काल सं० १७०२ । यूर्ण । वे० सं० १०६० । $\mathbf z$ मण्यार ।

विशेष--- सुश्रुतसंहिता का एक भाग है। अन्तिम पुष्पिका निन्न प्रकार है---

इति सुश्रुतीयायां संहितायां कल्पस्थानं समान्तं ।।

२१४६. कालाक्कान******। पत्र सं०३ से १६ । बा० १०४४ है इंच। जावा—संस्कृत हिन्दी। विषय— बायुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। बायुर्वे[वे० सं०२०७८ । का जमकार।

३१४७. प्रति सं० २ | पत्र सं० ४ । से० काल × । वे० सं० ३२ | आ अध्यार ।

विशेष--केवल ब्रष्टम समुद्देश है।

३१४.प. प्रति सं०३। पत्र सं० १०। ते० काल सं० १८४१ मंगसिर सुदी ७। वै० सं० ३३। इत सम्बार। विशेष—-विवद शाम में सेमणन्य के लिए प्रतिकिपि की गई वी। कुछ पत्रों की टीका भी दी हुई है। ३१.स. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ते० काल 🗙 । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

११६०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वै० सं० १६७४ । ट भण्डार ।

३१६१. चिकित्सांजनम्—उपाध्यायविद्यापति । पत्र सं∙ २०। षा० ६४८ इ'च । आदा-संस्कृत ।

बिषय- ब्रायुर्वेव । र० काल ⋉ । ले० काल सं० १९१५ । पूर्णा वे० सं० ३५२ । स्नामण्डार ।

३१६२. चिकित्सासार******। पत्र सं० ११ | प्रा० १३४६३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-प्रायुर्वेद । र० काल ४ | ते० काल ४ | प्रपूर्ती | वे० सं० १६० | इस् भण्डार |

३१६३. प्रति सं०२ । पत्र सं०५ – ३१ । । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० सं०२०७६ । ट भण्डार ।

३ व्हर्भ, खुमाधिकार'''''। पत्र सं०१२ । या० १३ ४६३ इक्का। भाषा—संस्कृतः । विषय-सायुर्वेदः । र०कालः 🗡 तिन्नकालः 🗡 । पूर्यः । वै०सं०१ व११ । टः भण्डारः ।

३१६⊻, अवस्त क्याः**** । पत्र सं० ४ । झा० ११४४ ; इक्का । माषा हिन्दी । विषय–द्यापुर्वेद । र० काल ४ । ले० काल ४ । सपूर्ण । वै० सं० १०६२ । ट मण्डार ।

३१६६. क्यरचिकित्सा''''''। पत्र सं० ५ । झा० १० ई.४ ४ हुंच । आचा–संस्कृत । विषय–प्राप्तुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ला। वे० सं० १२३७ । इद सम्बरार ।

३१६७८ प्रति सं०२ । यत्र सं०११ से ३१ । ले०काल × । झपूर्णा । ले० स०२०६४ । ट मण्यार । ३१६८८. ब्लारतिसिरभास्कर—चामुंडराय । पत्र सं०६४ । झा०१०×६३ इंग । भागा-मंस्कृत । विवस–सायुर्वद । र०काल × । ले०काल सं०१८०६ माह सुदी १३ । ले० सं०१३०७ । ऋष मण्यार ।

विजेष--माभोपुर में किशनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

३१६६ त्रिशती—शाङ्कभारः । पत्र सं०३२ । या० १०३/४५ इ.च.। शाला—संस्कृतः । विषय⊸यायुर्वेदः। र०कालः × । ले॰ कालः × । वे॰ सं॰ ६३१ । इस मण्डारः ।

> ३१७०. प्रति सं० २। पत्र सं० ६२। ले॰ काल सं० १६१६। वै० सं० २५३। का मण्डार। विशेष---पद्य सं० ३३३ है।

३१७१. नहनसीपाराविधि"""" पत्र सं० ३ । मा० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सामुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्शः । वै० सं० १३०१ । इस मण्डार ।

देश्परः नाबीयरीक्ता''''''। पत्र सं०६ । सा० ११×५ दःच । भाषा—संस्कृतः । विषय—साशुर्वेद । १० काल × ३ से० काल × । दुर्खः । वे० सं० २३० । क्या सम्बारः ।

Ł

139

३९७३ निषंदुः। पत्र सं०२ से बदायत्र सं०११×४ । जावा—संस्कृतः। विवंय-काशुर्वेदः। र० काल × । ने० काल × । प्रपूर्वं । वे० सं०२०७७ । इस सण्डारः।

३१७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ से ८६ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वै० सं० २०६४ । 🖼 अण्डार ।

३१७४. पंचप्ररूपग्रा*****। पत्र सं० ११ । मा० १०४४ है इक्का । भाषा-संस्कृत । विषय-मायुर्वेद । १० काल × । ले० काल सं० १४१७ । मपुर्ते । वै० सं० २०६० . ट भण्वार ।

विशेष---केवल ११वां पत्र ही है। ग्रन्थ में कुल १५८ श्लोक है।

प्रवास्ति—सं० १५५७ वर्षे ज्येष्ठ बुदी ६ । देवगिरिनगरे राता सूर्येशक्क प्रवर्त्तमाने का आहु लिखिलं कर्म-धार्यानीमनं । का जालप जोषु पठनार्थं दत्तं ।

१९७६, पण्यापण्यविचार $\cdots\cdots$ । वत्र सं० ३ से ४४ । आ० १२ \times ४,५ इखा । भाषा-संस्कृत । विषय- प्रापुर्वेद । र० काल \times । ले० काल \times । प्रपूर्ण । दे० सं० १९७६ | 2 भण्डार ।

विशेष—स्त्रोकों के ऊपर हिन्दी में धर्य दिया हुआ है। विवरीन पथ्यापथ्य प्रधिकार तक है। १६ से धार्थ के पत्रों में दीमक लग गई है।

३१९७०. पाराविधि*******। या॰ ६५४४६ इंच । आया-हिन्दी । विषय-प्राप्तुर्वेद । र० काल \times । ले॰ वाल \times । पूर्ण । वे॰ सं॰ २६६ । स्र अध्वार ।

२१७८. आवप्रकाश-मानसिक्षः । पत्र सं०२७५ । द्वाः १० $^{\circ}$ \times \times $^{\circ}$ दुवः । भाषा-संस्कृतः । विषय-प्रापुर्धर । २० कान \times । ते० कान सं०१८६१ वैद्यालः सुदी ६ । पूर्णः । वे० सं०७३ । आह्र सम्बर्धर ।

विशेष---मन्तिम पुष्टिपका निम्न प्रकार है।

इति श्रीमानमिश्रलटकनसमयश्रीमानमिश्रभावविर्यासती भावप्रकाशः संपूर्ण ।

प्रशस्ति--संबत् १८८१ मिती वैशाख शुक्रा १ शुक्री लिखितमृषिस्मा फतेचन्द्रे स् सवाई जयनगरमध्ये ।

२१४६. आषप्रकाश ***** । पत्र सं०१६ । बा०१००% $\times Y_0^2$ दक्षा | नाया-संस्कृत । विषय-कायुर्वेद । र०काल \times । ते०काल \times । पूर्यो । वै० सं०२०२२ । का मध्यार ।

विशेष---श्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है-

इति भी ज्यु पंडित तनयदास पंडितकृते त्रिसंतिकायां रसायन वा जारण समास ।

२१८०० आवर्समङ्*******। पत्र सं०१०। मा०१०२४६३ इक्का|आवा-संस्कृत। विषय-मायुर्वेद। र०काल ×। ले०काल ×। सपूर्ती। वै०सं०२०६६। द्वासध्यार। ३१८८२. सबलविनोद—सबलपाला । पत्र सं०१४ से ६२ । धा० ८३४३३ ६का । माया—संस्कृत । विवय-सायुर्वेष । र० काल x । से० काल सं०१७६४ ज्येष्ठ सुदी १२ । धपूर्या । वे० सं०१७६८ । जीर्मा । का क्लकार ।

विक्रीय-पत्र १५ पर निम्न पुष्पिका है-

इति श्री मदनपाल विरक्ति मदनविनीदे श्रपादिवर्गः ।

पत्र १८ पर--- वो राज्ञां मुर्खातमकः कटारमङ्गस्तेन श्रीमदनपृषेश निमितेन प्रन्येऽस्मिन् नदनविनोदे नटादि पंचमवर्गः। सेखक प्रशस्ति---

ज्येष्ठ चुक्का १२ ग्रारी तरिने लिल्ल्या वाजी विश्वकेन परोवकाराये । संवत् १७६४ विषवेश्वर सिन्नयोल्या जबनपालविर्याचेत ववनविनोदे निष्टे प्रवास्ति वर्गश्चार्यकाः ।।

३१८२. संत्र व भौषधि का तुस्त्वा*******। प्राप्त सं०१। प्राप्त १०४५ देव। प्रापा–हिन्दी। विषय– स्राप्त्रव। र०काव ४। ते०काल ४। पूर्ण। वै०सं०२६६। स्राप्त्रार।

विशेष---तिल्ली काटने का मनत्र भी है।

३१६६३, साथननिदान—साथव। पत्र सं० १२४। झा०१८४४ इंव। भाषा—संस्कृत । विषय— साथनेद। र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्णीवै० सं० २२६४ । का मण्डार।

> २१ स्प्रः, प्रति सं०२ । पत्र सं०१ ४४) ने० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० सं०२००१ । ट अण्डार) विशेष—पं० ज्ञानमेरु कृत हिन्दी टीका सहित है ।

श्चन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है---

इति श्री पं॰ ज्ञानमेरु विनिर्मितो बालबोधसमाप्तोकरायों मधुकीय परमार्थः ।

पं विश्वासास ऋषभवन्द रामवन्द की पुस्तक है।

हसके प्रतिरिक्त का भण्यार में ३ प्रतियां (वै० सं० २०६, १३४४, १३४७) सा भण्यार में दो प्रतियां (वे० सं० १४६, १६४) तथा जा भण्यार में एक प्रति (वे० सं० ७४) और है।

३१८.स. सानविज्ञोद्---भानसिंह्। पत्र सं॰ १७। त्रा० ११५/२५ इकाः भाषा--संस्कृतः। विषय-सासुर्वेदः | र०कालः ×। ले०कालः ×। सपूर्याः वै० सं० १४४ । इत मध्यारः।

प्रति हिन्दी टीका सहित है। १७ से झागे पत्र नहीं हैं

३१८६. युडिझान—क्योतिवाचार्य देवचन्दा । यन सं०२ । या० १०४४६ रखा । मापा−हिन्दी । विवय-बाधुर्वेद क्योतिव । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्व । वे० सं०१ ८६१ । व्याचकार । ३१८०. योगचिन्तामिण्— अनुर्सिद्द। पत्र सं∘१२ से ४८ । झा० ११८५ दखा भाषा-संस्कृत । विषय– आपुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्णावै० सं० २१०२ । ट भण्डार ।

विशेष--- पत्र १ से ११ तथा ४८ से मागे नहीं हैं।

द्वितीय धिषकार की पुष्पिका निम्न प्रकार है-

इति श्री वा. रत्नराजगिए मंतेवासि मनूसिहकूते योगींचतामिए बालावबोधे चूर्णाधिकारो द्वितीय: ।

३१८८. योगचिन्तामणि"""। पत्र सं० ४ । आ० १३×६ दश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सामुर्वेद । र० काल \times । के० काल \times । सपूर्ण । वे० स० १८०३ । ट भण्डार ।

३१८६. योगचिन्तामियाः....। पत्र सं०१२ से १०४ । बा० १०५ै×४३ इक्का। भाषा–संस्कृत । विषय–प्रापुर्वेद । र०काल ×। ते०काल सं०१८४४ ज्येष्ठ दुदी ७ । स्पूर्यो । वै० सं०२०८३ । ट भण्डार ।

विशेष---प्रित जीर्रा है। जयनगर में फतेहचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई बी।

२१६०. योगचिन्तामियुःःःः। पत्र सं०२००। धा०१० \times ४३ ६८०। भाषा—संस्कृत। विषय— धापुर्वद। र०काल \times । ले०काल \times । प्रपूर्य। वे०सं०१२४६। अध्र यण्डार।

विशेष-दो प्रतियों का मिश्रसा है।

२१६१. थोगाचिन्तामसिवीजकः*****। पत्र सं०५। बा \circ ६ $\frac{1}{2}$ \times ५ $\frac{1}{2}$ =1 भाषा-संस्कृत । विषय-मार्थेंद । र \circ काल \times । ले \circ काल \times । पूर्ति । वे \circ सं \circ ३५६ । का चण्डार ।

२१६२. योगिचिन्तासिय्— उपाध्यात्र हवैकीर्तिः । पत्र तं० १५६ । प्रा० १०६४५३ हःच । आषा— संस्कृत । विषय-मायुर्वेद । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० तं० ६०४ । द्वा सण्डार ।

विशेष--हिन्दी में संक्षित धर्य दिया हुआ है।

३१६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२८ । ले० काल 🔀 । वे० सं० २२०६ । 🖦 अण्डार ।

विश्लेष--हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

३१६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १७८१ । ते० सं० १६७८ । का भण्डार ।

३१६४. प्रति सं०४। पत्र सं०१४६। ले० काल सं०१८३४ आवाढ बुरी २। वे० सं०८६। आइ अम्बराः विशेष—हिन्दीटच्याटीका सहित है। सांगानेर में गोधो के चैरशालय में पं०ईश्वरदास के चेले की पुस्तक

सं प्रतिनिधि की थी। ३१६६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२४। ले० काल सं० १७७६ वैद्याल सुदी २। वे० सं० ६६। ज भण्डार।

विसेय--मालपुरा में जीवराज वैद्य ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की बी |

३९६७. प्रति सं०६। पत्र सं०१०३। ले० काल सं०१७६६ ज्येष्ठ बुदी ४। सपूर्ण। वे० सं०६८। का अध्वार।

विशेष--प्रति सटीक है। प्रथम दो पत्र नहीं हैं।

देश्यः, खोगशत—बररुचि । पत्र सं० २२ । ध्रा॰ १३४८ दश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-घायुर्वेद । र॰ काल ४ । ले॰ काल सं० १६१० ध्रावरा सुदी १० । पूर्ण । वे॰ सं० २००२ । ट मण्डार ।

विषीय—प्रापुरेंद का संग्रह पंच है तथा उसकी टीका है। चंपावदी (चाटमू) में पं० शिवचन्द ने स्थास चुनीमाल से लिखनाया था।

देश्हर. योगशतटीका'''''''। पत्र सं०२१ । ध्रा०११है×३है इंच । साथा-संस्कृत । विषय-सायुर्वेद । र०काल × । ते०काल × । पूर्ण । वे०सं०२०७६ । इत्र अध्वार ।

विशेष---पं० विनय समुद्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । प्रति टीका सहित है ।

३२०१. योगशतकः''''''''। यत्र सं०७६ । मा० ११५/४४३ रंच । आया-हिन्दी । विषय-साकुर्वेद । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वे० सं०१४३ । सा अध्वार ।

२२०२. रसमञ्जरी—शास्तिनाथ । पत्र सं० २२ । सा० १०४६ ३ इखा । आपा—संस्कृत । विषय-भामुर्वेद । र० काल ४ । केल काल ४ । सपूर्ण । केल सं० १८५६ । ट अण्डार ।

२२०२**. रसमञ्जरी—राार्क्र** घर । पत्र सं० २६ । घा० १०३४१ देव । घापा—संस्कृत । विषय-श्रापुर्वेद । र० काल ४ । ले० काल सं० १९४१ सावन बुर्वा छ । गूर्ण । वे० सं० १६१ । स्त्र प्रण्टार ।

नियोष---पं॰ पत्रानास जोवनेर निवासी ने जयपुर में विन्तामसिंगों के मन्दिर में शिष्य जयवन्ट्र के पठ-नार्ष प्रतिसिंप की थी 1

२२०४. रसप्रकरणः'''''। पत्र सं० ४ । मा० १०१×४३ इखः । भाषा-हिन्दी । विषय-मापुर्वेद । र० काल ४ । ले० काल ४ । म्रापूर्ण : बे० सं० २०३४ । जीर्गा । ट भण्डार ।

१२०४. रसप्रकरस्यु****** । विषय-प्राप्तुर्वेद । १० काल × । ते० काल × । ब्रपूर्ण । वे० सं० १३६६ । इस अध्वार ।

३२०६. रामविनोद्—रामवन्द्र । पत्र सं० २१६ । मा० १०१४४३ इ.च । माषा–हिन्दी पता । विषय–मानुवेंद । र० काल सं० १६२० । ले० काल ४ । मपुर्सा बे० सं० १३४४ । इस मण्डार ।

विशेष-शाक्त धर कृत वैश्वकसार ग्रन्थ का हिन्दी पश्चानुवाद है !

€e∮]

२२०७. प्रति सं० २। पत्र सं० १६२। ले० काल सं० १८४१ बैशास सुदी ११। वै० सं० १६३। ख भण्डार।

विशेष--जीवस्त्रालजी के पठनार्थ भैंसलाना ग्राम में प्रतिनिधि हुई थी।

३२८६. प्रति सं० ३ ! यत्र सं० ६३ । ले० काल ४ । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

३२८६. प्रति सं ८ ४। पत्र सं० ३१। ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वै० सं० १८८२। ट भण्डार ।

विशेष-इसी अण्डार में ३ प्रतियां अपूर्ण (वे॰ सं॰ १६८६, २०१८, २०६२) और हैं।

३२१०. रासाथिनिकशास्त्र """। यत्र सं० १२। घा० १६/४६३ द्वा । भाषा-हिन्दी । विवय-मायुर्वेट । र० काल \times । से० काल \times । प्रपूर्ण । वे० सं० ६६८ । वा भण्यार ।

३२११. लहमणोस्सव — क्रमरसिंहास्मज श्री लहमण् । पत्र सं० २ से बट । बार ११६४ रज्ञा । भागा-संस्कृत । विषय-बायुर्वेद । र० काल 🔀 । ले० काल 🔀 । सूत्रुर्ण । वे० सं० १०६४ । क्रा लण्डार ।

३२१२. लङ्कनपथ्यनिर्धावः****। पत्र सं०१२ । सा० १० $\frac{2}{3}$ \times १ इ.स. । आधा-संस्कृत । विषय- $\frac{2}{3}$ \times १ र० काल \times । वे० काल सं०१६२२ पीच सुरी २ । पूर्ण । वे० सं०१६६ । स्व भण्डार ।

विशेष - प० जीवमलालजी पन्नालालजी के पठनार्थ लिखा गया था।

२२१२ विषहरनिष्यि-संतोध कथि। पत्र सँ० १२ । सा० ११×५ इक्का। भाषा-हिन्दी। विवय-सापुर्वर। र० काल सं० १७४१। ले० काल सं० १८६६ साव सुदी १० । पूर्ण। वे० सं० १४४। छ अण्डार।

तिस रिव वैद घर संडले जेड़ मुक्त स्वाम ।
चंद्रापुरी संबद गिनी चंद्रापुरी मुक्तम ॥२७॥
संबत यह संतोच कृत तादिन कविता कीन ॥
ससि मनि विर विव विजय तादिन हम विका जीन ॥२६॥

३२१४. वैद्यकसार******। पत्र सं० ५ से ४४। झा० ६४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-बायुर्वेद । र० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ३३४ । च भण्डार ।

३२१४. वैद्याजीवन-स्त्रोतिस्थराज। पत्र सं०२१। ग्रा०१२×४३ इक्का। भाषा-संस्कृत। विषय-ग्रापुर्वेद। र०काल ×। वेठकाल ×। पूर्ता | वेठतं०२१४७ । का मध्यार |

विशेष --- ५वा विलास तक है।

३२१६. प्रति सं०२ । पण सं॰ २१ से ३२ । ले० काल सं०१ ८३६ । वे० सं०१ ५७६ । इस भण्डार । ३९१७. प्रति सं०३ | पत्र सं० ३१ । ले॰ कान सं० १८७२ फागुए। वि॰ सं० १७६ । स्व मध्यर ।

विशेष-इसी अण्डार में दो प्रतियां (वै॰ सं॰ १८०, १८१) ग्रीर है।

३२१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६८१ । इस मण्डार ।

३२१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५३ । ले० काल 🗴 । वे॰ सं॰ २३० । 🕱 भण्डार ।

३२२०. श्रैदाजीबनमन्य******। पत्र सं०३ ने १६ । झा०१० ¦४४ इंच। भाषा –संस्कृत । विषय− ब्राप्टुवेंद । र०काल ×। ते०काल ×। सपूर्या । वै० सं०३३३। च भण्डार ।

^{*} विशेष-—धन्तिम पत्र भी नही है।

३२२१. वैद्याजीवनटीका---क्ट्रसट्ट।पत्र सं० २४। ग्रा॰ १०४४ इक्षः। भाषा- संस्कृतः। विषय-ग्रायुर्वेदः। र•कालः ४। ते०कालः ४। ग्रपूर्तः। वे० सं० ११६६। क्या मध्यारः।

विशेष-इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० २०१६, २०१७) और हे)

३२२२२. वैद्यमनोत्सव — नयनसुस्तः । पत्र सं∘ ३२। झा० ११×५५ ६ का । भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-- आपूर्वेद । र०काल सं०१६४६ झायाढ सुदी२। ने०काल सं०१०५३ ज्वेष्ठ सुदी१। पूर्ण। वे० स० १०७६। इत्र भण्डार।

> देश्दर्श. प्रति सं०२ । यत्र सं०१६ । ले० काल सं०१८०६ । वे० सं०२०७६ । ऋ भण्डार । विशेष— इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं०११६५) ग्रीर है ।

३२२४. प्रति संट ३ । पत्र संव २ मे ११ । लेव काल 🗴 । प्रपूर्ण । वेव संव ६८० । क्र भण्डार ।

२२२४. प्रति सं**८ ४ । पत्र** सं० १८ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

३९२६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६२ सावरण बुदी १४ । ते० सं० २००४ । ट भण्डार ।

विशेष—पाटरण में मुनिमुक्त कैरवालय में महारक सुमेन्द्रशीत के शिष्य पं॰ चम्पाराम ने स्वयं प्रतिनिधि की भी।

२२२७. वैद्यवस्त्रभः'''''। पत्र सं०१६ । मा०१०२४५ इक्षा साथा—संस्कृतः । विषय-प्रायुदेदः । र०कालः × । ते०कालः सं०१६०१ । पूर्याः वे०सं०१ च

विशेष--सेवाराम ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

३२२८. प्रति सं• २ । पत्र सं• १ । ले॰ काल × । वे॰ सं॰ २१७ । स्त भण्डार ।

२२२६. वैद्यकसारोद्धार—संग्रहकत्तां श्री हर्षकीत्तिसूरि । पत्र सं० १६७ । सा० १०४४ इक्षा । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रायुर्वेद । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १७४६ मालोज बुदी = । पूर्ण । वै० सं० १=२ । स्व अक्षार ।

विशेष—भानुमती नगर में श्रीगजकुशलगरिए के विषय गरिएसुन्दरकुशक ने प्रतिलिधि को थी । प्रति हिन्दी मञ्जूषद सहित है।

३२३०. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ४६ । ले॰ काल सं॰ १७७३ माथ । वे॰ सं॰ १४६ । ज भण्डार।

विशेष-प्रति का जीर्गोद्धार हथा है।

३२३१. वैद्यासृत—साखिक्य अट्ट! पत्र सं० २०। झा० १४८ इंत्र! मापा—संस्कृत । विश्वय— बायुर्वेद) र० काल ४ । ने० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० सं० ३५४ | का मण्डार ।

विशेष--मारिएक्यभट्ट श्रष्टमदाबाद के रहने वाले थे।

३२३२. वैद्यविनोह******* पत्र सं०१८२ । झा०१०३,४८३ दश्चा । मापा-हिन्दी । विदय-झायुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वे० सं०१३०६ । इस अध्यार ।

३२३३. वैद्यविनोद्—अट्टरांकर।पत्र सं०२०७। घा००३४४३ ६ऋ। भाषा–संस्कृत।विद्यस्-प्रत्युवेद।र०काल ×।जे०काल ×।ग्रपुर्लीवे०सं०२७२ ।ऋप्रस्पार।

विशेष-पत्र १४० तक हिन्दी संकेत भी दिये हुये हैं।

३२३४. प्रति सं ०२। पत्र सं०३४। ले० काल 🔀 । अपूर्ण। वे० सं०२३१। 🕿 भण्डार।

वर्देश्. प्रति सं०३ । पत्र सं०११२ । ले॰ काल सं०१८७७ । वे० सं०१७३३ । ट भण्डार ।

विशेष--लेखक प्रशस्ति-

संबत् १७४६ बैकाक मुदी ४। वार चंडवासरे वर्ष वाके १६२३ पातिमाहकी नी गंगजीवजी महाराजाजी श्री जयसिंहराज्य हाकिन की जदार सानभन्दुलाकांजी के नायबरूजमसां स्याहीजी श्री स्वाहमालमजी की तरफ मियां साह्यजी प्रमुलफतेजी का राज्य श्रीमस्तु केल्याएक। सं० १८७७ शाके १७४२ प्रवर्तमाने कार्तिक १२ पुरुवारलिखितं मिश्रलालजी कस्य पुत्र रामनारायएो पठनार्थं।

३२३६, प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ से ४६ । ले० काल ४ । प्रपूर्ता | वे० सं० २०७० । ट मण्डार । ३२२७. शाङ्क धरसंहिता—शाङ्क चर । पत्र सं० १६ । धा० ११४५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय— प्रापृदेद | र० काल ४ । से० काल ४ । प्रपूर्ता वे० सं० १०६५ | का मण्डार ।

विशेष---इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वै॰ सं॰ ८०३, ११४२, १५७७) बीर हैं।

३२३८. प्रति सं० २। पत्र सं० १७०। ले० काल ×। वे० सं० १८६। स मण्डार। विशेष-स्मी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २७०, २७१) भीर है।

३२३६. प्रति सं० ३ । यत्र सं० ४-४० । ले॰ काल ४ । ब्रपूर्ण । वे॰ सं० २०६२ । ट मण्डार । ३२४०. शाक्त धरसंहिताटीका —नाडमक्ष । यत्र सं० ४१३ । आ० ११४४, दंव । माया-संस्कृत । विवय-बायुर्वेद । र० काल ४ । ले॰ काल सं० १६१२ पोष सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० १३१४ । का सम्बार ।

विशेष--टीका का नाम शार्क्स धरबीपिका है । अन्तिम पूज्यिका निम्न प्रकार है-

वास्तव्यान्यग्रकाश वैद्य श्रीकार्वासहारमजेनाढमस्त्रेन विरिवतायान शार्क्स धरवीपिकामुत्तरस्त्रव्ये नैत्रप्रसावन कमीविष ढाणिकारच्यायः । प्रति सुन्दर है ।

> ३२४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ते० काल 🔀 । ते० सं० ७० । जा भण्डार । विशेष---प्रथमसम्बद्ध तक है जिसके ७ धम्याय हैं।

२२४२. शासिद्दोत्र (अध्योषिकित्सा)—नकुल पंडित । पत्र सं∘ ६ । सा० १०४४३ इंच । गाया— संस्कृत हिन्दो । विषय-माणुर्वेद । र०काल × । ले०काल सं० १७४६ । दूर्ण । वे० सं० १२३६ । का जण्डार ।

विशेष-कालाडहरा में महारमा कुशलसिंह के आरमज हरिकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी।

३२,४३२ . सालिहोत्र (क्यश्विषिक्तसा)******** । पत्र सं०१६ । प्रा०७३,४४६ इक्का । प्राण-संस्कृत । विषय-सामुर्वेद । र०काल × । ले०काल सं० १७१६ प्रापाढ सुदी १ । पूर्णा । जीर्णा । दे० सं०१२६३ । इस अभ्यार ।

दैर४४. सम्तानविधि"""। पत्र सं० ३०। झा० ११%४५ इक्का आधा–हिन्दी। विषय–झायुवॅद । ६० काल ×ा ले० काल ×। झपुर्सी वै० सं० १६०७। ट सम्बार ।

विशेष-सन्तान उत्पन्न होने के सम्बन्ध से कई बुस्ते है।

३२५४ ६. समिपातनिद्⊺न ''''''' पत्र सं० र । आ ० १०४४ ३ इ.च । आचा–संस्कृत । विषय-प्रायुधंद । १० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३० । इस जण्डार ।

३२४६. सिक्रपातिवहानचिकित्सा-चाह्यदास । पत्र सं०१४ । मा०१२४४६ इत्य । आया-संस्कृत । विषय-मायुवंद । र०काल ४ । ते०काल सं०१८३६ पीय सुदी १२ | पूर्ण । दे०सं० २३० । छ सम्बार ।

विशेष--हिन्दी अर्थ सहित है।

३२५% अभियातकलिका******* पन सं॰ १ । बा॰११३८५३ १ व । जावा-संस्कृत । विक्य-बायुर्वेद । र० काल ४ । ते० काल सं० १८७३ । पूर्ण । वे० सं० २८३ । ख वक्टार ।

विशेष---वीवनपूर में पं॰ जीवरादास ने प्रतिलिपि की बी।

३२४८. सप्तविधि******। गत तं॰ ७ । प्रा० =६४४१ १'व । प्राथा-हिन्दी । विषय-प्राप्तुर्वेद । र० काल × । ते० काल × । प्रपूर्ण । वे० तं० १४१७ । घ्य वण्डार ।

२२४६. सर्वेज्यसमुख्यवर्षेण् """। यत्र सं॰ ४२। आ० ६ \times १ इंब । भाषा-संस्कृत । विषय-धानुवेद । र० काल \times । ते० काल सं० १८८१ । पूर्ण । वै० सं० २२६ । आ नण्डार ।

३२,४७. सारसंप्रहु*****। पत्र सं०२७ से २४७। मा०१२×४,६ इंब। आया-संस्कृत। विवय-प्राप्टुवेंदार० काल ×। ले० काल सं०१७४७ कॉसिका प्रपूर्णी वै० सं०११४६। ख्रामण्डारा

विशेष--हरिगार्विद ने प्रतिलिपि की थी।

३२४१. सालोक्तररासः। यत्र सँ० ७३। घा० ६४४ ६ व । भावा-हिन्दी । विषय-वायुर्वेद । १० काल ४ । ले० काल सँ० १८४३ घालोज बुदी ६ । पूर्वी । वै० सै० ७१४ । व्या भण्डार ।

३२×२. सिद्धियोगः'''''। पत्र सं० ७ ने ४३ । म्रा० १०×४३ ह'व । आशा-संस्कृत । विश्वय-म्रायुर्वेद । र० काल × । ते० काल × । अपूर्ता । वै० सं० १३५७ । स्त्र अध्यार ।

३२४३. ६रवैकल्पःःःः। पत्र सं॰ Y। मा॰ ४ ξ XY ६'व । भाषाः—हिन्दी । विषय-भाषुर्वेद । र॰ काल X। तुर्ग । वै० सं॰ १८१६ । का मण्यार |

विभेष---मालकांगडी प्रयोग भी है। (प्रपूर्ण)



विषय-छंद एवं त्रलङ्गर

३२,४४. कासरचंद्रिका \cdots ापत्र संज्धाः। यात्र १२ \times ४ $\frac{3}{2}$ इंच। आधा-हिन्दी पर्धाः विषय-संद्र कामक्ट्रार । रंक्ताल \times । सेठकाल \times । स्मूर्ण | वेठसंठ १३। जनपदार ।

विशेष---चतुर्य ग्रधिकार तक है।

३२**४४. व्यक्तंकारसाकर—इतिपतराय बंशीधर** । पत्र सं∙ ५१ । सा० ⊏्रे×४- इंच । भाषा– हिन्दी | **विद्य-सलङ्कार** । र०कल × | ले०काल × । पूर्ण । वै० सं० ३४ । क मण्डार ।

३२४६. कालक्कारहत्ति —किनवर्द्धन सूरि । पत्र सं०२७। प्रा०१२४८ इ'चः। भाषा–संस्कृतः | विषय–र**स सलक्कार**। र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्णः | वे०सं०३४ । कः भण्डारः ।

३२.५ क. **काल क्कारराश्त्र '''''**। पत्र सं० ७ से १९२ । घा० ११० ४ इंच । भाषा –संस्कृत । विषय– स्रलक्कार । र० काल × । ते० काल × । सपूर्ण | वे० सं० २००१ । इस अध्यार ।

विशेष--- प्रति जीर्स कीर्स है। बीच के पत्र भी नहीं है।

३२.४६. कविकर्षेटी****** । यत्र मं∘६। बा॰१२.४६ इ'च। भाषा–संस्वतः । विषय–रम ग्रवहार। र०कास × । ते०कास × । ब्रपूर्णावै० मं०१०५७ । ट मण्डार।

विशेष---प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३२६०. कुबलायानन्द '''''' । पत्र सं०२०। ऋषा०११४५ इ'च। भाषा–संस्कृत । विषय–सलङ्काः । र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्णा। वै०सं०१७६१ । ट भण्डार ।

३२६१. प्रति सं०२। पत्र सं०५ । ले• काल × । वे० सं०१७६२। ट अण्डार।

३२६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ते० काल × । प्रपूर्ण । ते० सं० २०२४ । ट भण्डार ।

३२६३. कुबलबानन्द— कप्पय दीक्षित । पत्र सं०६०। मा०१२imes६६ माथा—संस्कृत । विषय— भसक्कार। र०काल imes। ते०काल सं०१७४३। पूर्ण। वै० सं०१४३। क्या प्रण्डार।

विशेष--सं० १८०३ माह बुदी ५ को नैरासागर ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

अदे एवं अवद्वार]

३२६४. प्रति सं०२ । पत्र सं०१३ । ले॰ काल सं०१८६२ । वे॰ सं०१२६ । इस मण्डार ।

विशेष--जयपुर में महात्मा पन्नालाल ने प्रतिलिधि की बी ।

३२६४. प्रति सं०३ । पत्र सं० =० । ले० काल सं० १६०४ बेबाब सुदी १० । वे० सं० ३१४ । अर भण्डार ।

विशेष--पं० सदासुब के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिसिधि की थी।

32EE. प्रति में 8 । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८० ह । वै० सं० ३० ह । ज अपहार ।

३२६७. कुलल यानन्दकारिका*****। पत्र सं०६ । घा० १०×४३ इ'व । आर्था−संस्कृत । विवयन मतकार । र०काल × । ले०काल सं०१० १६ १६ मायात सुदी १३ । पूर्ण । वे०सं० २०६ । इत यण्डार ।

विशेष-पं कृष्णदास ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । १७२ कारिकार्ये हैं।

इट्इन, प्रतिसं० २ । यत्र सं० द । ले० काल × । वै० सं० ३०६ । उत्र अण्डार ।

विशेष-हरदास भट्ट की किताब है रामनारायन मिश्र ने प्रतिलिपि की थी।

३२७० प्रति सं०२ । पत्र सं०१३ । या० १०-है√४ इ'व । भाषा–संस्कृत । विषय-ससङ्कारकास्य । र०काल ४ । ले०काल सं०१६०६ कालिक बुदी ६ । वै० सं०६१ । व भष्यार ।

विशेष-रूपचन्द साह ने प्रतिनिधि की थी।

३२.७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल 🗴 । बपूर्गा । वै० सं० ६२ । च भण्डार ।

३२७२. छंटानुसासनवृत्ति—हेमचब्द्राचार्ये । यत्र सं० द । सा० १२४४ ई इंच । माया—संस्कृत । विषय—संद्यास्त्र । र० काल × । ते० काल × | पूर्ण । वै० सं० २२६ / । इस सम्बार ।

्रवानार्यं श्रीहेमचन्द्रविरचिते व्यावर्णनानाम सष्टमाञ्चाय समातः । समातीयप्रन्यः । श्री धुवनकीति विषय प्रकृत श्री जानभूषण् योग्यस्य सन्यः निस्मतं । गु.> विनयमेरुणां ।

३२.ऽ३ छंदीहातक—हर्षेकीचि (चंद्रकीचि के शिष्य)। यत्र सं०७। सा०१०६४४६ रंव। आपा—संन्कृत क्रियी । विषय—खंदबात्य । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वे० सं०१ टबर । क्रा जव्यार ।

१२.७४. क्षंदकोश—रक्षरोक्षर सूरि। पत्र सं० ११। आ० १०४४ इ'व। आपा-संस्कृत। विषय— खंदवास्त्र (२० काल ×। ते० काल ×। ब्रपुर्ती। वै० सं० १६४। क कच्चार । ३२७<u>४. खुंदकोतः</u>'''''। यद सं०२ से २५ । द्या०१०४४} इ'च। द्याया-मंस्कृत । विषय-स्त्रंद खास्त्र । र० काल ४ । के० काल ४ । प्रपूर्ण । वे० सं०६७ । च अण्डार ।

३२.७६. संदिताच्याखंद"""। पत्र सं०७। प्रा०६ \times ४ इंच। भाषा-प्राकृत । विषय-स्वद सास्त्र। र०काल \times । से० काल \times । वै० सं०४४७ । द्या भण्डार ।

३२.७०. दिशत्त्रहांदुशास्त्र—साक्षनकवि । पत्र सं० ४६ । झा० १३.४४ ; इ.च.। आपा-हिन्दी । विषय—खंदरास्त्र । र०काल सं० १६६३ । ते०काल ४ । सपूर्ण वे० सं० ६४४ । इस अण्डार ।

व्याविभाग-- श्री गरीशायनमः श्रय पिगल । सबैया ।

मंगल श्री पुरुदेव गरीश क्रियाल प्रपाल गिरा सरसानी । धंदन के यद पंकत्र पावन माखन छंद विनास बखानी ॥ कोविद बूंद वृंदिन को करपटुम का मधु का काम निधानी । सारद दें हु मधुष निसोतल मुक्द सस मुखारस बाली ॥१॥

वेंड्डा— पिंगल सामर छंदमिए वरण वरूत बहुरङ्क ।

रस उपमा उपमेय ते मुंदर प्ररथ तरत ।।२।)

तार्त रच्या विचारि के नर वासी नरहेत ।

उदाहरण बहु रसन के वरण मुमति समेत । ३।।

विमल वरण भूषन कलित, बानी लांतत रसाल ।

मदा गुकवि गोपान कीं, श्री गोपाल कृपाल ।।४।।

निन मृत मालन नाम है, उक्ति श्रुक्ति त होन ।

एक समें गोपान कवि, नामन हरिशह दीन ।।१।।

पियल नाग विचारि मन, नारी बोनीहि प्रकास ।

मया गुमति मों कीनिये, मालन स्रंव विलास ॥६।।

दोहरागीत — यह पुक्ति श्री गोपाल को मुख श्रई सासन है जये । पद सुपल नंदन सुनिये जर सुनित बादी है तसे । धार्ति निम्न पिगल सिंदु मैं मनमीन ह्वौ करि संविदयों । मणि कांद्रि श्रंद विलास मावकं कविवस से विवसी करसी ।।

T 378

दें।हा---

हे किंव जन सरवज्ञ हो नित दोधन कच्च वेह । भूम्पी भ्रम ते ही बढ़ां जहां तोधि किन लेहु ।। दा। संवत बसु रस लोक पर नवतह सा तिथि मास । सित वासा श्रीत दिन रच्यो माखन छंद विलास ।। ६।।

पियल छंद में दोहा, चीकोला, छत्यम, भ्रमर दोहा, सोरठा सादि किस्तने श्री प्रकार के छंदों का प्रयोग किया गया है । जिस छंद का लक्षरण लिखा गया है उसको उसी खंद में वर्णान किया गया है। सन्तिम पत्र भी नहीं है।

३२७६. पिगक्कशास्त्र— नागराज । पत्र सं० १०। झा० १०४४३ इंच । झाथा-संस्कृत । विषय-श्रंदशास्त्र । र० काल \times । के० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ३२७ । का अध्वार ।

३२७६ पिंगलरास्त्रः****। पत्र सं॰ १ से २०। झा॰ १२४६ ईव । माषा-संस्कृत । विषय-छंद गान्त्र । १० काल ४ | ले॰ काल ४ | सपूर्ता । वै० सं॰ ६६। इस अध्वार ।

३२८ः . पिंगलाशास्त्र। पत्र सं० ४ । मा० १०३४४३ श्रम् । भाषा – संस्कृतः । विषय – स्वेदलास्त्रः । र० काल ४ । स० काल ४ । म्रपूर्णः । वै० सं० १९६२ । स्वर सम्बरारः ।

३-८१. पिंगलळंदराान्त्र (छन्द रक्लावली)—हरिराजवास । पण नं० ७ । घा० १३%६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-छन्द सास्त्र । र० काल सं० १७१५ । ते० काल सं० १८२१ । पूर्ण । वे० सं० १८६१ | ट भण्डार ।

विशेष— संवतकार नव मुनि शशीनभ नवसी ग्रुष्ठ मानि । डिडवाना हढ कूप तहि ग्रन्थ जन्म-थल ज्यानि ।।

इति क्षी हरिरामदास चिरञ्जनी कृत खंद रस्नावली संपूर्ण ।

३२,⊏३. प्राकुतस्रेदकोष—स्क्रपोक्षर । पत्र सं∘ ४.। झा० १३×४.३ इ'व । बाया-प्राकृत । विकय-श्रंदबास्त्र । र०काल × । ते० काल × । पूर्ण। वे० सं० ११९ । आर बण्यार ।

३२६.४. प्राष्ट्रतक्षंत्रकोशः। वर्ष सं० है। धा० १०%५ इ.च । नाया-प्राकृतः । विषय-प्रंतकास्त्र । २० काल 🗴 । के० काल सं० १७६२ थावसा सुदी ११। पूर्ता । के० सं० १०६२ । व्या सम्बार ।

विशेष---प्रति जीर्रा एवं फटी हुई है।

३२, प्रकृतिप्राक्षरास्त्रः x । जिल्लास्त्रः x । जिल्लास्त्रः x । जिल्लास्त्रः । रंग नावा-प्राकृतः । जिल्लास्य x । जिल्लास्य x । पूर्ण । वेल संद्र २१४ व । इत्र प्रवारः ।

३२८०. आषाभूषस्—जसर्थतर्सिंद राठौड़ । पत्र सं०१६ । बा० ६×६ इ.च । नापा-हिली । विषय-धक्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्स । वे० सं० ५७१ । इट मण्डार ।

३२८८. रघुनाथ वितास—रघुनाथ । पत्र सं० ३१ । झा० १०४४ इ'च । भाषा-हिन्दी । विषय-रसालङ्कार । र० काल × । ने० काल × । पूर्वा । वै० सं० ६६४ । च भण्डार ।

विशेष-इसका दूसरा नाम रसत्तरिङ्ग्ली भी है।

३२,**=೬. रह्मसंजुवा'''''''।** पत्र सं∙ १ । घा० ११२,४५३ घंच । भाषा-संस्कृत । विषय-छंदशास्त्र । र०काल × । ते०काल × । घपूर्ण । वे०सं० ११६ । **प**त्र भण्डार ।

३२.६०. रक्तसंजुषिकाः****। पत्र सं०२७ । या० १०३/४५ इ'च । भाषा –संस्कृत । विषय –छंदशास्त्र । २० काल ४ । वे० काल ४ । पूर्या | वे० सं०४४ । स्म भण्डार ।

विशेष--श्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है---

इति रत्नमंजूषिकायां छंदो विचित्यांभाष्यतोऽष्टमोध्यायः।

मञ्जलाबरण-ॐ पंचपरमेष्ठिभ्यो नमी नमः।

३२६१. बास्भट्टालक्कार—बास्भट्ट । पत्र सं०१६ । मा० १०३,४४६ इ.च । भाषा-संस्कृत । विषय-मलक्कार । र० काल \times । ले० काल सं०१६५२ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं०६५ । इस मण्डार ।

विश्रेष---प्रशस्तिसं० १६४६ वर्षे कांत्तिकमामे गुक्रणके तृतीया तिथौ गुक्रवासरे लिसतं पाढं लूग्।
माहरोठमध्ये स्वान्ययो: पठनार्थं।

३२,६२. प्रतिसं०२ । पत्र सं०२६ । ले० काल सं०१६६४ फाग्रुसामुदी ७ । वे० सं०६४३ । क अध्यार ।

विशेष--लेखक प्रशस्ति कटी हुई है। कठिन शब्दों के गर्थ भी दिये हुए है।

३२.६३. प्रतिसं०३ । पत्र सं०१६ । ले॰ काल सं०१६४.६ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे॰ सं०१७२ । स्व मण्डार ।

विशेष--प्रति संस्कृत टीका सहित है जो कि चारों और हासिये पर लिखी हुई है।

इसके प्रतिरिक्त का भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ११६), का भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ६७२), क्षुभण्डार में एक प्रति (वै० सं० १३०१), का भण्डार में दो प्रतिया (वै० सं० ६०,१४३), मा भण्डार में एक प्रति (वै० सं० २१७), का भण्डार में एक प्रति (वै० सं० १४६) मीर है। ३२६४. प्रति सं०४। पत्र सं०१। लेश्काल सं०१७०० कार्तिक बुदी ३।वैश्र सं०४४। का जण्डार।

> विशेष--- ऋषि हंसाने सादड़ी में प्रतिसिपि कराई बी। इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० १४६) घीर है।

३२६४, वाश्मट्रालक्कारटीका—वाविराज। पत्र सं० ४०। घा० ६३×५३ ६ व । भाषा-संस्कृत। विषय-धलक्कार। र० काल सं० १७२६ कालिक बुदी ऽऽ (दीपावली)। ले० काल सं० १८११ वाबका सुदी ६। दूर्ण वै० सं० १५२। का पत्रार।

विशेष--टीका का नाम कविचन्द्रिका है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

संवरसरे निषद्दगववशायांक्युक्ते (१७२६) दोपोरस्वावशिवशं सपुरौ सचित्रे । लम्मेऽलि नाम्नि च समीपिगरः प्रसादात् सङ्कादिराजरिबताव्यविचन्दकेयं ।। श्रीराजसिह्नुपतिजयसिङ्क एव श्रीटाङालकाक्यनगरी ध्रपहित्य तुत्या । श्रीवादिराजवित्रुपोऽगर वागभटोयं श्रीमुजबुस्तिरिङ्क नंदत् पावर्षकर्यः ।।

श्रीमञ्जीममुपारमजस्य बिलनः श्रोराजसिहस्य मे नेवायायवकाशमान्य विहिता टीका शिशूनां हिता। होनाधिकववीयदत्र निवितं तद्व वृद्यैः क्षम्यता गाईस्थ्यविननाच नेवनाधियासकः स्वहतामाञ्चयत् ॥

इति श्री वाग्महालङ्कारटोकायां पोमराजशिक्षपुतवादिराजविर्विताया कविचंद्रिकायां पंचमः परिच्छेदः समातः । सं० १८११ श्रावरा सुरी ६ ग्रुप्तासरे लिखतं महारमीक्पनगरका हेमराज सवाई जयपुरमध्ये । सुभं सूयात् ।। ३२६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । के० काल सं० १८११ श्रावरा सुदी ६ । वे० सं० २१६ । च

३२६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १६६० । वै० सं० ६५४ । क अध्वार ।

३२६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७३१ । वे० सं० ६४५ । क भण्डार ।

विशेष—सक्षकगढ में महाराजा मानसिह के शासनकाल में क्ष्येशवालाव्यये सीमाशी गीत्र वाल सम्राट गयासुदीन से सम्मानित साह महिलाभाह पोमा मृत वाविराज की भागी लीहदी ने इस ग्रन्थ की प्रतिविधि करवायी थी !

> ३२६६, प्रति सं० १ । पत्र मं० २०। पे० काल सं० १८६२। वे० सं० ६५६। क अध्वार। ३३८०, प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५३। वे० काल ४ । वे० सं० ६७३। क अध्वार।

देदे०१. बाग्भष्टालङ्कार टीकाः'''''' वन सं०१३ । धा०१०४४ इंव । प्रावा—संस्कृत । विषय— सलङ्कार । र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्ण (पंचम परिच्येद तक) वै० सं०२० । इस भव्यार ।

विशेष--प्रति संस्कृत टीका सहित है।

६२०२. कुक्तरक्राकर—अङ्ग केदार। पत्र सं० ११। घा० १०४४ इ'व । आवा-संस्कृत । विषय-स्त्रंद खास्त्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्णे । दे० सं० १८५२ । द्वा मण्डार ।

३३०३, प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६८४ । वे० सं० ६८४ । क अण्डार ।

वियोय—इनके प्रतिरिक्त इस मण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४०) ख भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २७४) इस भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १७७, वे०६) और है।

३२०८, प्रचरताकर—कालिदास । पत्र सं०६ । धा०१०×५ इ'व । भाषा-संस्कृत । विषय-छंद शास्त्र । र० काल × । से० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ । त्य भण्डार ।

३३०४. बुत्तरह्माकर \cdots । पत्र सँ०७ । सा०१२ \times ५३ धंव । भाषा-संस्कृत । विषय-छंदशास्त्र । र०काल \times । ते० काल \times । पूर्णी। वै० सं०२-६५। ज्ञासण्डार ।

३३०६. श्चरक्राकरटीका—सुन्ह्या किया पत्र सं० ४०। घा० ११४६ दश्चा माषा-मंस्कृत । विषय-संस्कारत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वै० सं० ६६८ । इ. मण्डार ।

विशेष-सुकवि हृदय नामक टीका है।

३२०७. शुक्तरज्ञाकर छंदटीका—समयमुन्दरगयि। । पत्र सं०१। घा० १०९/४६९ इ.च.। आगा— संसक्त । विषय—संद्रवास्त्र । र० काल × । के० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२१६ । स्त्र प्रधार ।

३२,०८. अनुत्वोध—कालिदास । पत्र सं०६ । सा०८×४ ६ व । भाषः—संस्कृत । विषय–छंदशास्त्र । रःकाल × । लंककाल × । पूर्णावेक सं०१५६६ । इद भवदार ।

विशेष--- प्रष्टमग्य विचार तक है।

≷२०६. प्रतिसं०२ । पत्र मं०४ । ले० काला सं०१६४६ काष्ट्रमा मुदी है । वे० सं०६२० । इस अथ्डार ।

विशेष--पं • डालूराम के पठनाथं प्रतिलिपि हुई थी।

३३१०. प्रति सं०३। पत्र सं०६। ले० काल 🗴 । वे० सं०६२६। 🖘 भण्डार।

विशेष--जीवराज कृत टिप्पए। सहित है।

३२११. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८९१ ध्वानगा बुडी ६ । वे० सं० ७२५ । अर भण्डार ।

देदेश्य. प्रति सं०४ । पत्र सं०४ । लें०काल सं०१८०४ ज्येष्ठ सुर्वी ४ । वे० सं० ७२७ । भण्यार ।

विशेष---पं॰ रामचंद ने फिलती नगर मे प्रतिलिपि की बी।

बंद एवं जलक्कार] [११४

३३१३, प्रति सं०६ । पत्र सं०६ । ले॰ काल सं०१७८१ चैत्र मुदी १ । वे० सं०१७८ । स्प्र अध्यार ।

> विशेष---पं॰ मुखानन्द के खिष्य नैनमुख ने प्रतिलिपि की थी। प्रति संस्कृत टीका सहित है। २२१४. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४। ले० काल ४। वे० सं १८११। ट मण्डार। विशेष----मावार्थ विभवकीति ने प्रतिलिपि कराई थी।

इसके प्रतिरिक्त का अण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ६४८, १०७, ११६१) क, क, च घीर ज अण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ७०४, ७२६, १४८, २८७) का अण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १४६, १८७) ग्रीर हैं।

६२१४. शुतकोध—महरुक्ति । पत्र सं० ४ । धा० ११३४४ इ.ख. । भाषा—संस्कृत । विवय—छंदसास्त्र । र० काल ४ । ले० काल सं०१६५६ । वे० सं०२६६ । इक् मण्डार ।

३३१६ अतबोधटीका—सनोहरस्यास । पत्र सं० ६ । झा॰ ११५४५३ इ**वा । भाषा-संस्कृत ।** विषय-ग्रंदशास्त्र । र० काल ४ । के० काल सं० १६६१ सासोज सुवी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६४७ । क मण्डार ।

३३१७. श्रुतकोषटीका'''''''।पत्र सं० ३।बा० ११६ू×४६ इक्का । सावा-संस्कृत । विषय-संद्वासत्त्र । र० कान ⋌ । ले० कान सं० १६२६ संगसर बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६४४ । व्य भण्यार ।

३३१८. प्रति संट २ । पत्र संब ८ । लेव काल 🗴 । वैव संव ७०३ । क भण्डार ।

३३१६. श्रुतको अप्रचि— हर्षको ित्। पण सं००। मा॰ १०३/४५ दक्का। आया⊸संस्कृत । विषय⊸ रिजान्त्र । र०काल × । ले०काल सं०१७१६ कार्तिक सुबी १४ । सूर्ण। वे० सं०१६१ । इस भण्डार ।

विशेष-श्री ५ मुन्दरदास के प्रसाद से मुनिसुख ने प्रतिसिपि की थी।

३३२०. प्रति सं०२ । पत्र सं०२ से १६ । ले॰ काल सं०१६०१ साथ मुदी ६ । प्रपूर्या । दे० सं० २३३ । इट अण्डार ।



विषय-संगीत एवं नाटक

३३२१. श्वकताङ्कनाटक—श्रीसन्सनताला। पत्र सं०२३। बा०१२×८ दखा सापा⊸हिन्दी। विषय—नाटक। र०काल ×। ले०काल ×। प्रपूर्तावे०सं०१। क्रभण्यार।

३३२२. प्रतिसं०२ । पत्र सं०२४ । ते० काल सं०१६६३ कालिक सुदी६ । वै० सं०१७२ । इद मण्डार।

३३२३. **स्थिकान शाकुन्सल — क**ालिहास । पत्र सं∘ ७ । सा० १००४ ४६ इंच । आया–संस्कृत । विषय-नाटक । र० काल × । से० काल × । सपूर्या | वे० सं० ११७० । स्त्र मण्डार ।

३३२४८ **कर्ष्रमञ्जरी—राजरोलर** । पत्र सं०१२ । मा० १२६४४३ दंव । माषा–संस्कृत । विषय– नाटक । र०काल × । ले०काल × । पूर्णा । वै०सं०१८ ३ । ट मण्डार ।

विशोष——प्रति प्राचीन है। मुनि ज्ञानकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ के दोनों ग्रोर द पत्र तक संस्कृत में व्याक्यादी हुई है)

२२२४. क्वानसूर्योदयनाटक—बादिचन्द्रसूरि। पत्र सं० ६२। बा० १०२४४३ दक्ष। भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक। र० काल सं० १६४८ माथ सुदी ८। ले० काल सं० १६१८ । पूर्ण। वे० सं० १८। ऋ भण्यार।

विशेष---धामेर में प्रतिलिपि हुई थी।

३३२६. प्रतिसं०२ । पत्र सं०६४ । ले०काल सं०१ ययध्य माह मुदी४ । वे० सं०२३१ । क अध्यार ।

२३२७. प्रतिसं०३ । पत्र सं०३७ । ले० काल सं०१८६४ प्राप्तोज बुदी६ । वे० सं०२३२ । अर अथवार ।

विशेष—कृष्णगढ निवासी मडात्मा राथाकृष्ण ने जयनगर में प्रतिसिपि की बी तथा इसे संधी ग्रमरचन्द्र दीवान के मन्दिर से विराजधान की ।

३६२.इ. प्रति सं०४ । पत्र सं०६६ । ते० काला सं०१६३४ सावराबुदी ४ । वे० सं०२३० । क भण्यार ।

३३२.६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३ । से० काम सं० १७६० । वे० सं० १३४ । व्यासम्बार ।

विशेष—महारक जगरकीत्ति के शिष्य भी ज्ञानकीत्ति ने प्रतिलिपि करके पं॰ दोदराज को जेंट स्वरूप दी भी। इसके स्रतिरिक्त इसी अण्डार में २ प्रतिस्थं (नै॰ सं॰ १४७, ३३७) झोर है। २२२०. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा--पारसदास निगोत्या। पत्र सं० ४१। ष्रा० १२४८ ईष। भाषा--हिन्दी। विषय-नाटक। र० काल सं० १६१७ वैद्याल बुदी ६। ले० काल सं० १६१७ पीय ११। पूर्श। वे० सं० २१६। क्र पण्डार।

३३३१. प्रति सं०२। पत्र सं०७३। ले० काल सं० १९३६। वे० सं० ४६३। च भण्डार।

३३३२. प्रति सं०३ । यत्र सं०४ मने ११५ । ले० काल सं०१६३६ । प्रपूर्ण । वे० सं०३४४ । उस अध्यार 1

३३३३. ज्ञानसूर्वोदयनाटक आया—आगचन्द। पत्र सं०४१। बा० १३४७३ इजा।आया⊸ हिन्दी। विवय–नाटक। र०काल ४। ते०काल सं०१८३४ | पूर्ण। वे०सं०५६२। खाळवार।

३३३४. हातसूर्योदयनाटक भाषा—अगवतीदास । पत्र सं० ४० । घा० ११३,४७३ इक्ष । माषा— हिन्दी । विषय-नाटक । र०काल × । ते० काल सं० १८७७ भादवा बुदी ७ । पूर्ण । वे०सं० २२० | इ० भण्डार ।

२२२४. ज्ञानस्योदयनाटक भाषा---बस्तावरताल । पत्र सं० ८७ । झा० ११४४.} इक्ष । भाषा--हिन्दी । विषय-नाटक । र० काल सं० १८४४ ज्येष्ठ सुदी २ । ले० काल सं० १८२८ वैद्याल बुदी ८ । वे० सं० ५६४ । पूर्ण । च अण्डार ।

विशेष---जौंहरीलाल खिन्दूका ने प्रतिलिपि की थी।

३३३६. धर्मदरावतारनाटक******। पत्र सं०६६ । झा०११३,४५३, दखा। भाषा–संस्कृत । विषय– नाटक । र० काल सं०१६३३ । ले० काल ४ । वै० सं०११० । ज्ञाभण्डार ।

विशेष—पं॰ फतेहसालजी की प्रेरणा से जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की की । इसका दूसरा नाम धर्मप्रदीप भी है।

३३३७. नलदमयंती नाटक.......। पत्र सं० ३ से २४ । छा० ११४४३ हजा। भाषा—संस्कृत । विषय-नाटक। से० काल ४ । प्रपूर्ण । वे० सं० १९९६ । ट अण्डार ।

३२२८. प्रवोधचन्द्रिका—वैजल भूपति। पत्र सं॰ २६। झा० ६४४३ इका। भावा—संस्कृत। विषय-नाटक। र० काल 🗵 ले० काल सं० १६०७ भाववा बुदी ४। पूर्ण वि० सं० ८१४। इस अध्वरत्।

३३३६. प्रति सं०२। पत्र सं०१३। ले॰ काल 🔀 । वे॰ सं० २१६। मा भण्डार।

२३४०. अविष्यदत्त तिलक्षमुन्दरी नाटक—न्यामतसिंह। पत्र तं० ४४। घा० १३×५३ दश्च । भाषा-हिन्दी। विषय-नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्णी। वे० तं० १६७। छ अण्डार।

३२४१. सद्तपराजय—जिनदेवसूरि। वण सं० ३६। मा० १०३,४४३ दश्च। आया–संस्कृत । विषय-नाटक | र०काल ×। से०काल ×। सपूर्ण | वे०सं० ८८५ | इस सप्यार। विशेष—पत्र सं०२ से ७, २७, २०, इन्ही है तथा ३६ से भ्रांगे के उन्न भी नहीं हैं। 33 ४२. प्रति सं०२ । पत्र सं०४ ४। ते० काल सं०१८ । वे० सं०४ ६७ । क मण्डार ।

१३४२, प्रतिस्०२ । पत्रसं०४४ । त० कालसं०१६२६ । व०स०४६७ । कमण्डार

३३४३. प्रति सं०३ । पत्र सं०४१ । ले० काल ४ । वे० सं०५७⊏ । इस् भण्डार ।

विशेष -- प्रारम्भ के २४ पत्र नवीन लिखे गये है।

३३४४. प्रति संव ४ । पत्र संव ४६ । लेव काल × । वेव संव १०० । छ मण्डार ।

३३४४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६१६ । वे० सं० ६४ । मा भण्डार ।

२२४६. प्रतिसं०६ । पत्र सं०३१ । ले॰ काल सं०१८३६ माह युरी ६ । वे० सं०४ ८ । व्य भण्डार ।

विशेष—सवाई जयनगर में चन्द्रप्रभ चैंद्यालय में पं० बोलचन्द के सेवक पं० रामचन्द ने सर्वाईराम के पठनार्थ प्रतिक्तिप की थी।

३३४७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वै० मं० २०१ ।

विशेष--- प्रमुवाल जातीय मित्तल गीत्र वाले मे प्रतिलिपि कराई थी ।

३६५=. सदनवराजयः****। पत्र सं० ३ से २४ । था० १०४४६ डखा । भागा-प्राकृत । निगय -नाटक । रे० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । ने० सं० १८१५ । आ अण्डार ।

३३४६. प्रति सं०२ । पत्र सं०७ । ले० काल 🔀 । प्रपूर्ण । वे० सं०१८६५ । 🖼 भण्डार ।

२२१४०. मदनपराजय—पं० स्वरूपचन्द् । पत्र सं० ६२। मा० ११२४८ दश्च । भाषा-हिन्दो । विषय-नाटक । र∙काल सं० १६१६ मंगसिर सुदी ७ । ले० काल ४ । पूर्ण | वे० सं० ४७६ | क्र भण्डार ।

२२.४१. राशमाला''''''। यत्र सं० ६ । शाः क्र्यू \times १ इक्षः। भाषा—संस्कृतः। विषय—सङ्गीतः। रक्ततः \times । लेक्कालः \times । श्रपूर्णः। वेकसं०१२७६ । क्याभण्डारः।

३२,४२. राग रागनियों के नास****** । पत्र सं० ६ । प्रा० ६ र्४,४६ इक्का । भाषा-हिन्दी । विषय⊷ सङ्गीत । र०कान ४ । तेरुकान ४ । पूर्णावेर सं० ३०७ । भूत भण्डार ।



विषय-लोक-विज्ञान

३२,४२. ऋडाई द्वीप वर्षोतः''''''। यत्र सं० १०। मा० १२,४६ इक्का । मावा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान-जन्द्वीप, भातकोत्रकण्ड, पुष्करार्ट्टीय का वर्सान है। र० काल ४। ते० काल सं० १६१४ । दूर्सा । वै० सं० ३ । क्रा भण्डार ।

३३४४. श्रहोंकी ऊंबार्ट एवं कायुवर्धन"""। यत्र सं०१। घा० पर्×६३ इक्षा। सावा-हिन्दी यद्य। वियय-नक्षत्रों का वर्धन है। र० काल × । ते० काल × । पूर्ण। वै० सं० २११०। का सम्बार।

३२,४४. चंद्रप्रक्राप्तिः''''''। यज्ञ सं० ६२ । सा० १०३,४४६ दश्च । सावा-प्राकृत । विषय-चन्द्रमा सन्बन्धी वर्णन है। र० काल ×। ले० काल सं० १६६४ भाववा बुदी १२ । पूर्ण | वे० सं० १६७३ ।

विशेष - अस्तिम पृष्टिपका-

इति भी चन्द्रपण्णससी (चन्द्रप्रज्ञप्ति) संपूर्णा । लिखतं परिप करमचंद ।

३३४६. जम्बृद्धीपप्रक्षप्ति— ने सिचन्द्रचार्थ । पत्र सं० १० । सा० १२४६ इक्का आधा-प्राकृत । गर्ग विषय - जम्बूबीप सम्बन्धी वर्सान । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ फाल्युन मृदी २ । पूर्ण । वे• सं० १०० । च भण्डार ।

विशंष--मधुपुरी नगरी मे प्रतिलिपि की गयी थी।

देश्रेश्यः तीनलोककस्वतः। पत्र तं० १६। ता० १०१% ७ इझा । आवा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान-तीनलोक वर्णन । र०काल ४ । क्षे०काल ४ । पूर्ण । वै० सं० १४० । ३६ अण्डार ।

३२४.म. तीनलोकवर्णन"""। यत सं०१४४ । मा० ६ दे×६ दक्का । माणा-हिस्बी गया । विषय-लोक विकाल-तीन लोक का वर्णन है। र० काल × । ले० काल सं०१ स्६१ सावरण नृदी २ । पूर्ण। वे० सं०१० । का भण्डार।

विशेष--गोराल व्यास उपियावास बाले ने प्रतिसिधि की थी। प्रारम्भ में नैमिनाय के दश भव का वर्णन है। प्रारम्भ में लिखा है-- हुंबार देख में सवाई अयुपुर नगर स्थित मावार्य क्रियोगिए भी वर्धावानक स्वामी के शिष्य पंज सवानुक के शिष्य भी पंज फतेहलाल की यह पुस्तक है। भाववा सुदी १० संज १९११।

१२४६. तीनसोकचार्टे****** पत्र सं०१ । घा० ४×६६ दश्च । भाषा–हिन्दी । विषय-लोकविज्ञान । र०काल × । ते०काल × । पूर्ण । वे० सं०१३४ । इट अध्वार । ३२०] [लोक विज्ञान

विशेष—पिलोकसार के झाबार पर बनाया गया है । तीनलोक को जानकारी के लिए वड़ा उपयोगी है। -३३६०. जिलोकचित्र——। झा० २०×३० इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सोकविकान ।र० काल × ।ते० काल सं० १५७५ । पूर्ता ।वै० सं० ५३६ । इस भण्डार ।

विशेष-कपड़े पर तीनलोक का चित्र है।

२२६१. त्रिलोकदीपक—बासदेव । पत्र सं० ७२ । आ० १६८७ ; इखा । आवा—संस्कृत । विषय— लोकविकाल । र० काल ४ । ले० काल सं० १८५२ प्रावाद सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० ५ । ज अण्डार ।

विशेष--- ग्रंथ सचित्र है । जम्बद्वीय तथा विदेह क्षेत्र का चित्र सुन्दर है तथा उस पर वेल बूटे भी है ।

३३६२. **अिक्षोककार— ने** सिचंद्राचार्य । पत्र सं० ६१ | ष्रा० १३×५ इ'च । भाषा–प्रकृत । विषय— कोकविज्ञान । र० काल × । ते० काल सं० १८६६ मंगसिर बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ४६ । छ्रा प्रण्डार ।

विशेष — यहिले पत्र पर ६ चित्र है। पहिले नेमिनाय की मूर्ति का चित्र है जिसके बार्ड शोर बलभद्र तथा दाई स्रोर सीकृष्ण हाथ जोड़े खड़े है। तीसरा चित्र नेमिचन्द्राचार्य का है वे लक्टी के सिंहासन पर बैठ हैं सामने लवन्डी के स्टैंड पर प्रत्य है प्रामे पिच्छी और कमण्डलु है। उनके सामे वी चित्र और जिसमे एक चामुण्डराय का तथा दूसरा और किसी श्रोता का चित्र है। दोनो हाथ जोड़े गोडी गांल बैठ है। चित्र बहुत सुन्दर है। इसके सितरिक प्रोर भी लोक-विज्ञान सम्बन्धी चित्र है।

३६३. प्रति सं०२ । पत्र सं०४ ४। ले० काल भंग १८६६ प्रव्हेशास्त्र मुदी ११। वे० सं०२८८। इक भण्डार ।

३३६४. प्रति सं०३ । पत्र सं०६२ । ले॰ काल सं० १०२६ श्रावण, बुदी ४ । वै॰ सं॰ २०३ । ऋ अध्यार ।

३३६४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७२। ले० काल \times । वे० सं० २५६। क भण्डार। विशेष—प्रति सचित्र है।

३३६६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६८। ले० काल 🗴 । वे० सं० २६०। कः मण्डार । विशेष----प्रति सचित्र है। कई पुष्ठो पर हाशिया में सुन्दर विवास है।

३३६७. प्रतिसं८६ । पत्र सं०६६ । ले॰ काल सं० १७३३ माह सुदी ५ । वे० सं० र⊏३ । क भण्डार ।

> विषेष----महाराजा रामसिंह के शासनकाल में वसवा में रामचन्द काला ने प्रतिलिधि करवाधी थी। २३६८: प्रति सं० ७। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १५४३। वे० सं० १९४४। ट अच्छार। विषेष----कालशान एवं ऋषिमंडल पूजा भी है।

लोक विश्वान] [३२१

इनके झितिरिक्त क्य अपदार में २ प्रतियां (वै० सं० २६२, २६३,) च मण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १४७, १४८) तथा अर भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४) और है।

३३६६. क्रिलोकसारदर्पेयाकथा— लक्क्सेन । पत्र सं०३२ से २२८ । घा० १९४४) इ'व । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-लोक विज्ञान । र०काल सं० १७१३ चैत सुदा ४ । ले०काल सं०१७४३ ज्येष्ठ सुदी ११ । सदसीं। वे० सं०३६० । इदा भण्डार ।

विशेष---लेखक प्रशस्ति विस्तृत है। प्रारम्भ के ३१ पत्र नहीं है।

३३७०. प्रति सं०२ । पत्र सं०१३६ । ले० काल सं०१७३६ द्वि० चैत्र बुदी ४ । वे० सं०१ ८२ । अक्ष भण्डार ।

विशेष --साह लोहट ने मात्म पठनार्थ प्रतिलिपि करवायी थी ।

३२.७१. त्रिलोकसारभाषा—पंठ टोडरम्ला। पत्र सं० २०६। प्रा०१४४७ दक्षा भाषा—हिन्दी गचा। विषय-लीक विज्ञान । र० काल सं० १०४१ । ले० काल ४ । पूर्णी। वे० सं० ३७६। द्या अण्डार ।

३३७२. प्रति सं०२ । पत्र सं०४४ । ते० काल 🗙 । धपूर्ण । वे० सं०३७३ । 🖼 भण्डार्।

३३७३. प्रति सं०३ । पत्र सं०२१६ । ले० काल सं०१६६४ । वे० सं०४३ । ग मण्डार ।

विशेष---जैतराम साह के पुत्र कालूराम साह ने सोनपाल आँसा से प्रतिलिपि कराकर चौधरियों के मन्दिर में चढाया ।

> ३३७४. प्रति सं०४ । पत्र सं०१२५ । ले० काल × । वे० सं०३६ । स्र भण्डार । ३३७४. प्रति सं०४ । पत्र सं०३९४ । ले० काल स०१९६६ । वे० सं०२ ८४ । इक भण्डार ।

विशेष-सेठ जवाहरलाल सुगनचन्द सोनी धनमेर वालों ने प्रतिलिपि करवायी थी।

३३७६. त्रिक्षोक्रसारभाषाः.....। पत्र सं∘ ४४२ । घा० १२३,४८ इंच । भाषा-हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । ते० काल सं०१६४७ । पूर्णीवे० सं०२६२ । क्र अध्यार।

३२७७. जिलोकसारआया......। पत्र तं० १०८ । झा० ११६ँ४७ इ'च । आया-हिन्दी । विचय-लोक विज्ञान । र०काल ४ । से०काल ४ । मपूर्ण । वै० सं० २११ । क अण्डार ।

विशेष-भवनलोक वर्णन तक पूर्ण है।

३३७८. त्रिलोकसारभाषा******* पत्र तं॰ १४० । घा॰ १२४६ इ'व । मापा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र॰ काल 🗴 । के॰ काल ४ । बपूर्त्त । वै॰ सं॰ ४८३ । च भण्डार ।

३३.७६. त्रिकोकसारभाषा (वणनिका) ******। पत्र सं० ३१० । सा० १०३.४७३ दंव । माषा-।हन्दी गद्य । विषय-स्तोक विकास । र०कास × । से०कास सं० १०६४ । वे० सं० ०४ । सः कण्यार । ३६८०. त्रिक्षोदसारपृत्ति—साध्यत्यन्त्र त्रैबिद्यदेव । पत्र सं०२४० । झा० १३४८ ६'व । भाषी— संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल ४ । ले० काल सं०१६४४ | पूर्ण । वै० सं०२८२ । क भण्डार ।

३३ = १. प्रति सं०२ । पत्र सं०१४२ । ले• काल × । वे० सं०१६ । छ भण्डार ।

३३=२. त्रिलोकस्यरदृष्टि'''''''। पत्र सं०१० । घा०१०४१११ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-नोक विकास । र०काल ४ । ले०काल ४ । घपुर्शावेल सं०⊏ । उत्त सम्बार ।

३२,⊏३. जिल्लोकसारहृत्ति'''''' । पत्र सं०३७ । आ ०१२ है.४.५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सोक विज्ञान । र०काल × । ले०काल × । सपूर्ता। वे०सं०७ । ज मण्डार ।

३२,८% क्रिकोकसारकृति***** । वत्र सं० २४ । ग्रा० १०४५ हुँ च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल ४ । से० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० सं० २०३३ । ट जच्चार ।

३२,⊏४. त्रिलोकसारवृत्तिः****। पत्र सं• १३ । घा० १३×६ इ'च । त्राया—संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । के० काल × । घनूर्स । वे० सं० २१७ । घा वण्डार ।

विशेष---प्रत प्राचीन है।

३३=६. त्रिलोकमारसंहष्टि—नेमिचन्द्राचार्थ। पत्र सं०६३ । सा०१३३,४= इ'च। भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । र०काल ४ । के०काल ४ । पूर्णावे० सं०२=४ । का भण्डार ।

विशेष-मुं व श्रमालाल भीरीलाल एवं चिमनलालजी की प्रेरगा से ग्रन्थ रचना हुई थी।

३२६८८. त्रिलोक्तवर्णन"""। यत्र सं०३६ । प्रा०१२४६ इ'व । साथा–ससकत । विषय⊸नोकविज्ञान र०काल ४ । लेऽकाल सं०१०१० कार्तिक सुदी३ । पूर्णीवे सं०७७ । इस सम्बद्धार ।

विशेष—गाषाये मही है केवल वर्णनमात्र है। लोक के वित्र भी हैं। बालुद्धीय वर्णन तक पूर्ण है मगवानदाक्ष के पठनार्थ अवपुर में प्रतिक्षित हुई थी।

३३८६. त्रिलोक्क्याँन******।पत्र सं०१४ से ३७ । सा०१०६०८३ इंच। भाषा-क्राकृत । विषय-सीक विकास । र० काल ४ । शॅ० काल ४ प्रमुखी ।वे० सं० ७६ । स्व अध्वार ।

३३६०. त्रिलोकवर्णान ... । एक ही लम्बे पत्र पर । ले० काल × । बे० सं० ७४ । सा मण्डार ।

विशेष—सिद्धक्रिया से स्वर्ग के विमन्न पुरुष कुछ ६३ पृदक्षों का सुद्धित सुर्पण है। वित्र १४ छुट ८ इंच लम्बे तथा ४३ इंच बीड़े एव पर दिये हैं। कही कहीं पीछे कपड़ा भी विश्वका हुआ है। मध्ययोक का वित्र १४१ छुट है। वित्र सभी विल्ह्यों से बने हैं। करक वर्णन नहीं हैं।

३३६१. प्रति संट २ । पत्र सं० २ से १० । ले० काल 🗴 । बपूर्श । वै० सं० ६२७ । का अण्डार ।

३३६२. त्रिलोकवर्णन*****। पत्र सं॰ ४ । मा० १७४१२ देव । जाया-प्राकृत, संस्कृत । विषय-नोक विज्ञान । र०काल ४ । से०काल ४ । पूर्या । वै० सं० ६ । जा अध्यार ।

३३६३. त्रैजोक्यसारटीका—सहस्रकीर्ति । पत्र सं० ७६ । आ ० १२×५३ इ.च. । आया-प्राकृत, संस्कृत । विषय-सोक विकास । र०काल 🗙 । ले०काल 🗙 । पूर्णा । वै० सं० २०६ । उक्त सम्बद्धार ।

३३६४. प्रति सं०२ । पत्र सं० ५४ । ले० काल 🗴 । वै० सं० २८७ । क मण्डार ।

३३६५. भूगोलिनिमीगु***** पत्र सं०३। झा०१०×४६ इ'व। भाषा-हिन्दी । विषय-सौक विज्ञान। र०काल ४ । ले०काल सं०१५७१। पूर्णावै०सं० ६६६ । इद्र अण्डार।

विकोय—पंग ह्यांगम गरिए वाचनार्य शिक्षितं कोरटा नगरे संग्र १४७१ वर्ष । जैनेतर भूगोस है जिसमें सतपुण, डापर एवं नेता में होने वाले प्रवतारों का तथा जब्बुद्धीय का वर्शन है ।

३३६६. संघयसाटपत्र--------। तत्र सं०६ ने ४१ । ब्रा०६३०४ इंच । आया-प्राकृत । निवय-लोक विज्ञान । र०काल ४ । ले०काल ४ । सपूर्ता । वे० सं०२०३ । ख भण्डार ।

विशेष — संस्कृत में टब्बाटीकादी हुई है। १ से ४,१४,१४,१४।२० से २२,२६। २० से ३०,३२, ३४,३६ तथा ४१ से आ से स्वति हैं।

३२६७. सिद्धांत श्रिक्षोकक्षीयक—वास्त्रेषः । पत्र सं∘ ६४ । झा० १३८५ इ'व । भाषा⊸संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल ⋉ | ते० काल ⋉ | पूर्णः । वै० सं० ६११ | इस्र मण्डार ।



विषय- सुमाषित रवं नीतिशास्त्र

देहें<ि श्रक्तसन्द्वार्ताः'''''। पन सं• २०। झा० १२४८ दूं इंच । माया-हिन्दी । विषय-मुनापित । १० काल ४ । ने० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० ११ । क भण्डार ।

३३६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ते० काल × । वे० सं० १२ । क भण्डार ।

रे४००. **उपदेशक्ष्मीसी—जिनह**र्ष। पत्र सं०४। प्रा०१०×४२ १ वः । भाषा—हिन्दी। विवय— सुभावित। र०काल ×। ले०काल सं०१८३६। पूर्ण। वे० सं०४२८। स्र भण्डार। विशेष—

प्रादम्भ-श्री सर्वज्ञम्यो नमः । प्रथ श्री जिनहर्षेण बीर वितायांम्पदेश छत्रीसी कामहमेव लस्थते स्थात् ।

जिनस्तुति---

सक्त रूप वामे प्रभुता ध्राप्त थूंप,
पूप छाया माहे है न जगवीय खुं।
पुष्प हि न पाप हे नसित हे न ताप हे,
जाप के प्रताप कटे करम प्रतिसमुं।)
झान की धंगज पुंज सूख्य बुदा के निकुंज,
ध्रतिसम् चीतिस पुरीत क्वन ये तिसमु ।
ध्रैसे जिनराज निनहर्ष प्रसाम उपदेश,
की खरिसी कही सम्ह एसतीसमु ॥१॥

भविरत्व कथन---

की खंतिसी कही सबंद एसतीसयु ।।१।।

धरे जिन काविगीन ताहु परी प्रमार तोते,

तो प्रतीगति करी जी रही उन्नित है।

तु तो नहीं वेतता है जालों हे रहेगी दृद्ध,

मेरी २ कर रहाी ज्याप रित मानी है।।

झान की नीजीर खोल देखन कनहे,

तेरी मोह याक ये मंगी वकालों प्रज्ञानी है।

कहें जीनहर्ष दह तन सतीयी बार,

कावद की ब्राडी कीचू रहे जी हा पाली ।।२।।

श्रन्तिम--- धर्म परीका कथन सबैया---

धरम धरम कहै नरम न कोठ लहे,

भरम मैं भूलि रहे कुल कड कीजीये |
कुल कड खोरे के जरम फंद तोरि के,

सुमति गति फोरि के मुजान दृष्टि दीजीये ।।

दया कप सोइ धर्म धर्म से कटे है मर्म,

भेद जिन घरम पीमूच रस पीजीये |

करि के परीक्या जिनहरण घरम कीजीये,

कसि के कसोटी जैसे कंचला क सीजीये !। दूधा

प्रथ प्रंथ समाप्त कथन सवैया इकतीसा

मई उपदेस की खतीशी परिपूर्ण चतुर नर

है जे याकी मध्य रस पीजीये।

मेरी है प्रलपमित तो भी मैं कीए कवित,

कविताह सी ही जिन प्रन्य मान लीजीये।।

सरस है है वकारण जीऊ धवसर जारण,

दोइ तीन थाके भैया सवैया कहोजीयो।

कहें जिनहरम संवत ग्रस्स सोकु दीजीयो।।

इस्स भी उपदेस खतीशी संपूर्ण।

संवत् १०३६

गविंड पुछेरे गविंड झा, कवाए असे री देखा। संपत हुए तो घर सतो, नहीतर अलो विदेश ॥ भूरविंत तो सुहांमणी, कर भीहि गंग प्रवाह। मांडल तही प्रवारी पांणी झवग झवाह।।।।।

३४०२. कर्ष्ट्रप्रकर्याः****। पत्र सं० २४ । झा० १०×४ ईव । आवा-संस्कृत । विषय-सुमापित । २० काल × । से० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६३ । विशेष-१७१ पद्य हैं। धन्तिम पद्य निम्न प्रकार है-

श्री बज्जसेनस्य पुरोहित्रयष्टि सार प्रबंधस्कुट सदगुणस्य । शिष्येसा बक्ते हरिलेय मिष्टा सुसाबनी नेमिचरित्र कर्ता ॥१७६॥

इति कर्पदाभित्र सभावित कोशः समाप्ताः ।।

देश्र० ३. प्रति सं०२ । पत्र सं०२०। ले० काल सं०१६४७ ज्येष्ठ सुदी १। वे० मं०१०३। क भण्डार।

३४०४. प्रतिसंठ३ । पत्र सँ० १२ । ते० वाल सं०१७७६ श्रावरा ४ । वे० सं०२७६ । ज मण्डार ।

विशेष--- मूधरवास ने प्रतिलिपि की थी।

३४०**४. कामन्दकीय नीतिसार आया****** । वन सं०२ से १७ । ब्रा०१२४६ इ'न । आया-हि∗दी ग**य** । विषय-भीति । र०काल ४ । से०काल ४ । धुपुर्ण । वे०सं०२६० । अक्र अण्डार ।

> २४०६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ ते ६ । ते० काल 🗙 । प्रपूर्ण । वे० सं० १०६ । प्र्य भण्डार । २४०७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ ते ६६ । ते० काल 🗙 । प्रपूर्ण । वे० सं० ६६ । प्र्य भण्डार ! २४०६. चायाक्यनीति—चायाक्य । पत्र सं० ११ । घा० १०% ८६ इ'च । भाषा-संस्कृत) विषय-

मीतिवास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६६६ मँगसिर हुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ६११। स्र भण्डार । इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ६३०, ६६१, ११००, १६४४, १६४४) स्रोर है ।

३४०६. प्रति सं०२ । पत्र सं०१०। ले० काल सं०१ ८४६ पीप मुद्दी ६। वे० सं०७०। स भण्डार।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७१) भीर है।

देक्ष १०. प्रति सं०३ । पत्र सं०३ ४ । ले॰ काल ४ । घरूर्या। वे० सं॰ १७४ । इक भण्डार । इसी भण्डार में २ प्रतियां(वे० सं०३ ७, ६४७) और हैं।

२ ४४११. प्रतिसं**० ४ । पत्र सं० ६ से १३ ।** ले॰ काल सं० १ वन् ५ संगक्षिर बुद्यो ऽऽ । स्रपूर्ण । ३० सं० ६३ । चासण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६४) सीर है।

देप्रश्रेरः, प्रतिसंव ४ । पत्र संव १३ । लेव कान संव १८७४ व्येष्ठ बुदी ११ । वेव संव २४१ । ज्ञ अभ्यार । इसी अण्डार में ३ प्रतियां (वे॰ सं॰ १३८, २४८, २५०) गीर हैं।

३४१३. चायाक्यनीतिसार—यूलकर्ता-चायाक्य । संग्रहकर्ता-मधुरेश अष्टाचार्ये । पन सं० ७ । भा० १०४४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-नीतिशास्त्र । र० नाल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्वे । वे० सं० ५१० । का अकार ।

३४१४. चायाक्यनीतिभाषाः.....। पत्र सं० २०। घा० १०४६ इक्षा । भाषा-हिन्दी । विषय-नीति सास्त्र । र० काल ४ । से० काल ४ । प्रपूर्ण । वै० सं० १६१६ । ट अण्डार ।

विशेष—६ सभ्याय तक पूर्ण है। ७वें सभ्याय के २ पब हैं। वौहासीर कुण्डलियों का समिक प्रयोग हुआ है।

२५११४. छंदरातक— बुन्दाबनदास । पत्र सं० २६। आ० ११४५ इ'व । आषा-हिन्दी पदा । विषय-गुभावित । र० काल सं० १०६⊏ साथ मुदी २ । ले० काल सं० १६४० मंगसिर मुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० १७८ । क भण्डार ।

२४१६. प्रतिसं०२ । पत्र सं०१२ । ले० काल सं०१६३७ काष्ट्रसासुदी १। वे० सं०१ स क मण्डार :

विशेष--इसी अण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० १७६, १८०) भीर हैं।

२४१७. जैनहातक—भूचरदास । पत्र सं० १७। प्रा० ६४४ इ'व । मापा-हिन्दी । विषय-सुमाषित । र० काल सं० १७=१ पौष मुदी १२ | लें⊅ काल x | पूर्णी । वै० सं० १००६ । ऋ भण्डार ।

२४१८. प्रति सं०२। पत्र सं०११। ले॰ काल सं०१६७७ फायुन सुदी ४। वै॰ सं०२१८। क मण्यार।

३४१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । से० काल ४ । वे० सं० २१७ । क अण्वार ।
विशेष—प्रति नीने कानजों पर है। इसी अच्छार में एक प्रति (वे० सं० २१६) धीर है।
३४२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ने० काल सं० १८८० । वा अण्डार ।
१४२१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ने० काल सं० १८८६ । वे० सं० १४८ । म्न अण्डार ।
विशेष—स्मी अण्डार में एक प्रति (वे० सं० २८४) धीर है जिसमें कर्म ख्रतीसी पाठ भी है।
१४२२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३ । ने० काल सं० १८८२ । वे० सं० १८४० । ट अण्डार ।
विशेष—स्मी अण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६४१) धीर है।

३४२३. ढालाग्युः''''''| पत्र सं० प्र। सा० १२ \times ७६ इक्कः । भाषा-हिन्दी । विषय-सुन्नापित । र० काल \times । पूर्ण । दे० सं० २३४ । इक्क मध्यार ।

- देश्वरक्ष, तत्त्वधर्माष्ट्रतः'''''। पत्र सं० ३३ । बार ११४९ इ.च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल ४ । ते० काल सं० १६३६ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वै० सं० ४६ । इत्र मण्डार ।

विशेष---लेखक प्रशस्ति--

संबत् १६३६ वर्षे ज्येष्टमासे शुक्करले दशस्यांतियाँ बुधवासरे विज्ञानक्षत्रे परिधयोगे प्रता दिवसे। वायोग्यर चैत्वालये । चंपावतिनामनगरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगरो श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्ये भ्रष्टा० पथनन्दिदेवास्तरपट्टे म० श्री शुभवन्द्रदेवास्तरपट्टे म० श्री जिनचन्द्रदेवास्तरपट्टे म० श्री श्रामचन्द्रदेवास्तरपट्टे म० श्री जिनचन्द्रदेवास्तरपट्टे म० श्री श्रामचन्द्रदेवास्तरपट्टे मठलाचार्यं श्री धर्म्म (चें) ह्र देवास्तरपट्टे मठलाचार्यं श्री लिक्तवकीर्ति देवास्तरपट्टे मठलाचार्यं श्री चन्द्रस्तराम्ययं मसावक्ष्य गोच साह् हरलाज आर्या पुत्र द्विप प्रथम समृत् द्वितिक पुत्र मेचराज । साह समृत् भार्या समृत्यादं तत्र पुत्र लिक्षमी-देवा । साह समृत् भार्या समृत्यादं तत्र पुत्र लिक्षमी-देवा । साह मेचराज लस्य भार्यो द्विय प्रथम आर्या लाडमचेद द्वितीक प्रथमः। यपूर्यः ।

३४२४. प्रति सं०२ । पत्र सं०३० । ले० काल ४ । ब्रपूर्ण । वे० सं०२१४४ । ट मण्डार । विवेष—३० से क्रागे पत्र नहीं हैं ।

प्रारम्भ---

बुद्धारमरूपमापन्नं प्रणिपरधं ग्रुरो गुसं । तत्वपममीपृतं नाम वस्ये संक्षेपतः ।। धर्मे श्रुते पापमुदीत नाणं धर्मे श्रुते पुष्य मुपैति बृद्धिः । स्वर्णापवर्णं प्रवरोध सौक्यं, धर्मे श्रुते रेव न वास्यतान्ति ।।२।।

. १४८६. दशाबोलः'''''' पत्र सं∘ २ । आरं० १०४६ र्इंच । आया–हिन्दी। विवय–मुकापित। र० कास ४ । से० कास ४ । प्रमूर्ण। वे० सं० १९४७ । ट भण्डार।

२४२७. रष्टांतरातकः……। पत्र सं० १७ । घा० १ $\frac{1}{4}$ \times ४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मुभाषित । र० काल \times । त्रेण काल \times । त्रुर्ण । वे० सं० ८५६ । इस भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मर्थ दिया है। पत्र १५ से मान ६३ फुटकर क्लोको का संग्रह ग्रीर है।

देश्रद्रः द्यानतविज्ञास— ग्रानतराय । पत्र सं•२ से १३ । प्रा० १८४४ इ.च । भाषा–हिन्दो । विषय– ुभावित । र० काल × । ले० काल × । सपूर्ता । दे० सं० दे४४ । इस्मण्डार ।

देश्वरः धर्मविलास—धानतराय । पत्र सं० २३४ । प्रा० ११५ँ×७३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सुमाचित । र० काल × । ते० काल सं० १६५८ फाग्रुए। दुवी १ । पूर्ण । वे० सं० ३४२ । क मण्डार ।

देश्वरे०. प्रतिसं०२ । पत्र सं०१३६ । ले० काल सं० १८८१ प्राप्तोज बुदी २ । वे० सं०४४ । ग मण्डार ।

विशेष---जैतरामणी साह के पुत्र शिवलालर्ण। ने नेमिनाय चेत्यालय (बोधरियों का मन्दिर) के लिए विम्मनलाल तेरायंची से दौहा में प्रतिलिपि करवायी थी । ३४३१. प्रति संव ३ । यत्र संव २६१ । लेव काल संव १६१६ । वेव संव ३३६ । का भण्डार । विकोष---सीन प्रकार की लिपि है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ३४०) घीर है।

३४३२. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६४। ले० काल 🗴 । वै० सं० ५१। मः भण्डार ।

३४३३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० १४६३ । ट मण्डार ।

३४३४. नवरक्का (कविष्य)******** । पत्र सं० २ । सा० ८४४ इक्का । साया-संस्कृत । विषय-सुप्राधित । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १३६८ । क्का सम्बर्धाः ।

३४३४. प्रति सं०२। पत्र सं०१। ले० काल 🗴। वे० सं०१७८। च मण्डार।

३४३६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १६३४। वे० सं० १७६। च भण्डार।

विवोध--पंचरत भौर है। श्री विरधीचंद पाटोदी ने प्रतिलिपि की थी।

२४२७. नीतिसार $\cdots\cdots$ । पत्र सं०६। द्या० १०३ \times ५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-नीतिशास्त्र। र०काल \times । ने०काल \times । वे०सं०१०१। इद्यमण्डार।

३४३ स्. नीतिसार—इन्द्रनन्दि । पत्र सं० ६ । मा० ११% ४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मीति नास्त्र । र० काल \times । के० काल \times । पूर्ण । वै० सं० स्ह । का भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ से महबाहुकुत कियासार दिया हुमा है। ग्रन्तिम ६वें पत्र पर दर्शनसार है किन्तु श्रपूर्श है।

२४२६. प्रति सं०२। पत्र सं० १०। ते० काल सं०१६२७ प्रादवा बुदी ४। वै० सं०३८६। क्र भण्डार।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३८६, ४००) झौर हैं।

देक्ष्प्रेo. प्रति संo दे। पत्र सं०२ से ⊏। ले० काल सं० १८२२ भाववासुदी ४. | अपूर्णा वे० सं० देद१ । इक्र पण्डार ।

३४४१. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ३२६। ज अण्डार।

३४४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७६४ । वे० सं० १७६ । व्या प्रण्डार ।

३४४३. जीतिशतक----आर्नुहर्षि। पत्र सं०६। मा०१०२,×५३ दश्चा। भाषा--संस्कृत । विषय-बुआर्थना र०काल × । पूर्णा के०सं० ३७६। इक अण्डार ।

३४४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल 🗙 । वे० सं० १४२ । स्न मण्डार ।

३४४४. नीतिबाक्यासूत —सोमदेव सूरि । पत्र सं० ११। बा० ११×५ इंव । आषा–संस्कृत । विवय-नीतिबास्त्र । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५४ । क्र अध्वार ।

देक्ष्प्रदेः नीतिविनोदः''''''। पत्र सं० ४ | प्रा० ६×४३ दश्चः । माधा−हिन्दी | विदय-मीतिशास्त्र । दं•काल × । ले॰ काल सं० १९१⊏ । वै० सं० ३३५ । क्रा प्रण्डार ।

विशेष---मन्नालाल पांड्या ने संग्रह करवाया था।

देश्रेश्च - नीजस्का। पत्र सं∘ ११ । मा∘ १र्ह्×४ कृष्ट चानाया–संसकृत । विषय–सुपापित । र० काल × । ले० काल × । पूर्णा। वे० सं० २२६ । जनगरा।

२४४५- नीरोरवां बादशाह की दस ताज । पत्र सं० ५ । सा० ४३४६ इ'च । बाला–हिन्दी। विषय– उनदेवा । र० काल ४ । ते० काल सं० ११४६ बैबाल मुदी १४ । पूर्ण | वे० सं० ४० । मू, मण्डार |

विशेष---गरोशलाल पांड्या ने प्रतिलिपि की थी।

दे४४६. पञ्चतन्त्र—पं० विष्णु हार्मो । पत्र सं१ ६४ । घा० १२.४५३ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय— नौति । र० काल × । ले० काल × । ग्रपुर्ला । वै० सं० ६१६ । द्वा भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६३७) और है।

२४४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल \times । ते० सं० १०१ । ख्र भण्डार । विशेष—प्रति प्राचीन है ।

देश्व¥िमित सं० दे। पत्र सं० ५४ से १६६ । ने० काल सं० १८३२ नीत्र मुदी २ | यदूर्ण । ने० सं० १६४ । च मण्डार ।

वियोप---पूर्णचन्द्र सूरि द्वारा संबोधित, पुरोहित भागीरथ पत्नीवाल ब्राह्मण ने सवाई जमनगर (जबपुर) में फूप्नीसिंहजी के शासनकाल में प्रतिलिपि की बी । इस प्रति का जीर्णोद्धार सं० १८१५ फाखुल ब्ली ३ में हुवा था ।

३४४२. प्रति सं ८ ४ । पत्र सं० २८७ । ले० कान सं० १८८७ पीर नुदी ४ । वे० सं० ६११ । च भण्डार ।

विशेष---प्रति हिन्दी प्रर्थ सहित है। प्रारम्भ में संग्ही दीवान ग्रमरभंदजी के प्राप्तह से नयनसुष व्यास के विषय माश्चित्रयक्षन ने पश्चतन्त्र की हिन्दी टीका लिखी।

देश्र×दे. पद्मातन्त्रभाषा''''''। पत्र सं०२२ में १४६ । प्रा० ६×७३ इंच । प्राथा-हिन्दी गय । विषय-नीति । र०काल × । ले०काल × । पपूर्वी वे०सं०१४७६ । ट मण्डार ।

विशेष---विष्णु शर्मा के संस्कृत पश्चतन्त्र का हिन्दी अनुवाद है।

३४४४. पांचवोतः''''''| पत्र सं० ६ । मा० १०४४ इंच । भाषा-पुचराती । विषय-उपदेख । र० कात ×। ते० काल ×। पूर्ण । दे० सं० १६६६ । ट मण्डार । ३४४४. पैंसठबोलः''' '। पत्र सं०१ झा० १०४४) इंब । भाषा–हिन्दी। निषय–उपदेशा । र काल ×। ले० काल ×। पूर्णः। वे० सं०२१७६। ऋष्र मण्डार।

विशेष-श्रथ बोल ६४

[१] घरथ लोभी [२] निरदई मनस होसी [३] विसवासवाती मंत्री [४] पुत्र सुत्रा घरना लीभा [४] नीवा पेषा भाई बंधव [६] ग्रसंतोष प्रजा [७] विद्यावंत दलदी [६] पाखण्डी शास्त्र बांच [६] जली क्रोधी होइ [१०] प्रजाहीरा नगप्रही [११] वेद रोगी होसी [१२] हीरा जाति कला होसी [१३] सुभारक खल छद्र होसी [१४] सुभट कायर होसी [१४] खिसा काया कलेम चल्य करसी दुष्ट बलवंत सुत्र सो [१६] जोबनवंतजरा [१७] धकाल मृत्यु होसी [१=] पूदा जीव घरणा [१६] अगहीरण मनुष्व होसी [२०] अलग मेघ [२१] उस्ल सात बीली ही ? [२२] वचन चूक मनुष होसी [२३] विभवासवानी खत्री होसी [२४] संया [२६] [२६] [२७] [२=] [२६] ग्रस्तकीया न कीथी कहसी [३०] भाषकी कीथी दीव पैला का लगावसी [३१] प्रसुद्ध साथ अससी [३२] गूटल दया पालकी [३३] भेष भारांबैरागी होसी [३४] ग्रहंकार हे व मूरल वरणा [३४] मुरजादा लोग गऊ त्राह्मण [३६] माता पिता गुरुदेव मान नहीं [३७] दुरजन मु सनेह होसी [३६] सजन उपरा विरोध होसी [३६] पैला की निवा घरणी करेसी [४०] कुलवंता नार लहोसी [४१] वेसां भगतरण लज्या करसी [४२] प्रफल वर्षा होसी [४३] बाज्या की जात कुटिल होसी [४४] कवारी चपल होसी [४४] उत्तम घरकी स्त्री नीच सुहोसी [४६] नीच षरका रूपवंत होसी [४७] मुहमाय्या मेव नहीं होसी [४८] घरतो में मेह बोड़ो होसी [४६] मनस्यां में नेह बोड़ो होसी [४०] बिना देख्यां चुगली करसी [४१] जाको सरलों लेसी तासू ही द्वेष करी सोटी करसी [४२] गज हीला बाजा होसासी [४३] त्याइ कहा हान क लेसी [५४] झवंबैसा राजा हो [५५] रोग सोग घरणा होसी [५६] रतवा प्राप्त होसी [४७] नीच जात श्रद्धान होसी [४८] राडजीग घरा। होसी [४९] ग्रस्थी कलेस गरावरा [६०] अस्त्री सील हीरा वरा होसी [६१] सीलवंती विरली होसी [६२] विष विकार धनो रगत होसी [६३] संसार चलावाता ते दुखी जारण जोसी ।

।। इति श्री पचावश बील संपूरक ।।

१४४६. प्रकोधसार—यहास्कोरितायत्र सं०२३। झा॰ ११४४३ इ'च। प्राया—संस्कृता। विषय— सुभावित। र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्णान वे०सं०१७४ । इद्य भण्डार।

विशेष-संस्कृत में मूल अपश्रंश का उल्या है।

३४४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० ४६५ । क मण्डार ।

284

३४४८. प्रश्नोत्तर स्त्रमाला—तुत्रसीदास । पत्र सं०२। धा०६५ँ×३३ इ'व । भाषा—पुत्रसती । त्रिवय—स्वास्ति । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं०१९७० । ट मण्यार ।

३४४६ प्रस्तोत्तरहमालिका—स्थापेषर्ये । पत्र सं०२। प्रा०११४४३ वंच । माषा-संस्कृत । विवय-सुवाषित । र० काल 🗴 । ते० काल 🗴 । पूर्ण । वै० सं० २०७ । घर भण्डार ।

३ ४६०, प्रतिसं०२ । पत्र सं०२ । ले॰ काल सं०१६७१ मंगसिर मुदी ४ । वे॰ सं०४,६ । अक्र अभवार ।

३४६१. प्रति सं०३ । पत्र सं०२ । ले० काल × । वे० सं०१०१ । छ भण्डार ।

३४६२. प्रति सं०४ । पत्र सं०३ । ले० काल 🗴 । वे० सं०१७६२ । ट भण्डार ।

३,४६३, प्रस्तावित स्त्तोकः'''''। पत्र सं० ३६ । ग्रा०११,४६१, दंदा भाषा—संस्कृत । विषय— सुमाचित । र०काल × । ते०काल × । पूर्णः। वे०सं० १,१४ । क मण्डार ।

विशेष--हिन्दी ग्रर्थ सहित है। विभिन्न ग्रन्थों में से उत्तम पद्यों का मंग्रह है।

३५९६४. **बारहलहीः......सूरत ।** पत्र सं०७ । घा० ६४६ इंच । आपा-हिल्दी । विषय-पुशापित । **१०** काल × । ने० काल × । पूर्ण । वै० सं० २५६ । स्क्र पण्डार ।

३४६४. बारहस्त्रकी ''''''। पत्र सं०२०। मा० ५ \times ४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—मुभाषित। रक्काल \times । लेक काल \times । पूर्णी वेक सं०२४६। मा भण्डार।

२४६६. बारहत्त्वही—पार्श्वदास । पत्र सं० ४। ग्रा॰ १४४ इ.च । भाषा-हिल्पै । विवय-नुभाषित । र॰ काल सं॰ १८१६ पोष वृद्धी १ । ते॰ काल ४ । पूर्वी । वै॰ सं० २४० ।

३४६७. बुधजनवितास— बुधजन। पत्र सं०६४ । झा०११×४ इंव । माथा—हिन्दी । विदाद— संबद्द । र०काल सं०१८६१ कालिक सुरी २ । ले० काल × | पूर्ण । वे० सं०६७ । ऋ प्रण्डार ।

२४६ द. शुधकान सत्साई — शुधकान । पत्र सं॰ ४४। धा॰ $- \times \times_{i}$ इंच । प्रापा $- [ह्न्यो | विषय - सुप्रायित । र॰ काल सं॰ ६५७६ ज्यष्ठ हुदी <math>- | \hat{n} |$ ० काल सं॰ १६८० माघ हुदी २ | पूर्ण | वे० सं॰ ४४४ | धा लखार |

विशेष--७०० दोहों का संग्रह है।

२४६६. प्रति सं०२। पत्र सं०२४। ले० काल ×। वे० सं०७६४। ऋ मण्डार। इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं०१४४, ६६४) और हैं।

वैक्ष ७०. प्रति संट ३ । पत्र वं ० ८ । ले० काल × । सपूर्ण । वे० सं० ४३४ । इक भण्डार ।

३४७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ७२१ । व्यं मण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वै० सं० ७४६) और है।

३४७२. प्रति सें० हे । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १६५४ मांवाड सूदी १० । वै० सं० १६४० । ट भण्डार ।

इसी अण्डार में एक प्रति (वे॰ छं॰ १६३२) और है।

३४७३. ब्याजन सतसई —ब्याजन । पत्र सं० ३०३ । ले० काल × । वे० सं० ४३४ । क भण्डार । विशेष-इसी भण्डार में १ प्रति (वे॰ सं॰ ५३६) और है। हिन्दी मर्थ सहित है।

३४७४. ब्रह्मविजास-भैया भगवतीवास । पत्र सं० २१३। मा० १३४४ इ'व । मावा-हिन्छ । विषय-सुभाषित । र० काल सं० १७४५ बैशांख सदी ३ । ले० काल 🗶 । पूर्ण । वै० सं० ५३७ । क मण्डार ।

विशेष-कवि की ६७ रचनाओं का संग्रह हैं।

३४७४. प्रति सं०२। पत्र सं०२३२। सै० काल 🔀 । बै० सं० ४३६। 🕉 मण्डार।

विश्रीय-प्रति सुन्दर है। चौकोर लाइनें सुनहरी रंग की हैं। प्रति गुटके के रूप में है तथा प्रदर्शनी में रखने योग्य है।

इसी मण्डार में एक प्रति (वे॰ सं० ५३८) भीर है।

३४७६. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२०। ले० काल 🗴 । वै० सं० ५३८ । क भण्डार ।

३४७७. प्रति सं० ४। पत्र सं० १३७ । ले० काल सं० १८४७ । वै० सं० १२७ । स्व अण्डार ।

विशेष--माधीराजपुरा में महात्मा जबदेव जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी। मिती माह सर्वा १ सं० १८८६ में गोबिन्दराम साहबडा (छाबड़ा) की मार्फत पचार के मन्दिर के बास्ते दिलाया । कुछ पत्र चन्ने काट गये हैं।

३४७८ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १८८३ चैत्र सदी ह । वे० सं० ६४१ । च भण्डार ।

विशेष--यह ग्रन्थ हक्मचन्दजी बज ने दीवान समरचन्दजी के मन्दिर में बढाया था।

३४७१. व्रति सं० ६। पत्र सं० २०३। ले० काल ×। वे० सं० ७३। का मण्डार।

३४८०. महाचर्याष्ट्रकः....। पत्र सं॰ १६। मा॰ ६३×४३ इखा । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल 🗴 । ले॰ काल सं॰ १७४८ । पूर्ण । वे॰ सं॰ १२६ । सा अण्डार ।

रे8ं-१. सर्ने हरिशतके--- भर्ते हरि । पत्र सं० २० । मा० =३×४३ हजा । भाषा-संस्कृत । विषय--सुभावित । र० बाल 🗴 । ते॰ बाल 🗴 । पूर्ण । वें सैं॰ १३३६ । का मण्डार ।

विशेष---प्रत्य की नीम वातंकार्य वेषको निर्वातंक की है।

इसी मण्डार में α प्रतियां (के० सं० ६४१, ६८१, ६२म, ६४६, ७६३, १०७४, ११३६, ११७३) मीर हैं।

देश्र≃२. प्रतिसं०२ । पत्र सं०१२ से १६ । के० काल ४ । अपूर्ण । वे० सं०५६१ । क भण्डार । इसी भण्डार मे २ प्रतिसां (वे० सं०५६२, ५६३) अपूर्ण और हैं !

३४८८३. प्रतिसं०३ । पत्र सं०११ । ले० काल × । वे० सं०२६३ । च भण्डार ।

३ ४५ स.४. प्रतिसं० ४ । । पत्र सं०२ ६ । ले० काल मं०१ ८ ७४. चैत सुदी ७ । वै० सं०१३ ६ । इर भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं० २८८) ग्रीर है।

३४८-४. प्रतिसं० ४ । तत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० २८४ । उत्त भण्डार ।

विशेष--प्रित संस्कृत टीका सहित है। सुखचन्द ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

३४८६. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४१ । ले० काल 🗴 । वे० सं० १६२ । व्य मण्डार ।

३४८०. प्रति सं०७। पत्र सं० ⊏ से २६ | ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं०११७५ । ट भण्डार ।

३४८==. भावशतक-—श्री नागराजा। पत्र सं० १४ । था० ६४४६ इक्का। भाषा-संस्कृत। विषय--सुभाषित। र०काल ४ । ले०काल सं०१=३= सावन बदी १४ । पूर्ण। वे० सं०४७०। का भण्डार।

२४८६. सनमोदनपंचरातीआषा-छन्नपति जैसवाल । पत्र सं० ६६ । प्रा० ११४५३ इक्ष । आया-हिन्दी पद्या । विषय-सुमापित । र०काल सं० १६१६ । ले०काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । क भण्यार ।

विशेष-सभी सामान्य विषयों पर छंदी का संग्रह है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६६) ग्रीर है।

दे⊻६०. सान बाबनी—सानकवि । पत्र सं०२ । झा० ८६४ ३३ इद्या । प्राथा–हिन्दी । विषय⊸ कृत्राचित । र०काल × । ले०काल × । पूर्या । वे० सं०५१६ । स्त्र प्रष्टार ।

देधदृशः सित्रविकासः—घासी । पत्र सं० देशः । मा० ११८४६ देखाः आषा—हिल्दी पद्यः । विषय⊸ सुनाषितः । र० काल सं० १७६६ काष्ट्रसंसुदी ४ । ले० कालः सं० १६४२ भेत्र बुदी १ । पूर्ता वे० सं० ४७६ । कः भभारः ।

विशेष--लेखक ने यह ग्रन्थ अपने मित्र भारामल तथा पिता वहालसिंह की सहायता से लिखा था।

३५४२. रह्नको प^{……}।पत्र सं∘ कृष्टेणा∘ रे०×४३ इक्का । नावा⊸संस्कृत । विषय⊸युमाधित । र० काल × । ते० काल सं० १७२२ कायुरा युवी २ । पूर्ण । वे० सं० १०३६ । का मध्यार । विशेष-विश्वमेन के शिष्य बलभद्र ने इसकी प्रतिलिपि की यी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० १०२१) तथा व्याभण्डार में एक प्रति (वै० सं० ३४५ का)

भीर है। ३४६३. रह्नाकोष ''''''। पम सं०१४ । मा∘११८५ इक्का । माया–हिन्दी | विषय–सुभाषित । र०

काल 🗶 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वै० सं० ६२४ । क मण्डार ।

निर्वेष---१०० प्रकार की विविध नातों का विचरण है जैसे ४ पुरवार्थ, ६३ राजवंश, ७ संगराज्य, राजायों के गुण, ४ प्रकार की राज्य विद्या, ६३ राज्यपाल, ६३ प्रकार के राजविनीद तथा ७२ प्रकार की कसार सादि।

३४६४. राजनोतिशास्त्रभाषा--जसुराम । यत्र सं० १८ । आ० ४२४४ इ**छ** । भाषा-स्टियो यक्ष । विषय-राजनीति । र॰ काल 🗴 । ले॰ काल 🗴 । पूर्ण । वै॰ सं० २८ । मा भण्डार ।

विशेष--श्री गरोशायनमः ग्रथ राजनीत जसुराय कृत लीखतं ।

दोहा--- श्रस्टर श्रगम श्रपार गति कितहु पार न पाय।

सो मोकु दीजे सकती जै जै जै जगराय।।

ध्याय- वरनी उज्ज्वल वरन सर्न जग श्रसरन सरनी।

कर करूनो करन तरन सब तारन तरनी।। श्विर पर घरनी खन करन मुख संपद करनी। करनी ब्रमुत करन हरन दुख दारिद हरनी।। घरनी त्रिमुल खपर धरन भव भय हरनी।

सकल भय जग वंध झादि वरनी जसु जे जग धरनी ।। मात जे॰ '

को तम धरनी मात जे दीजे बुधि प्रपार !

करी प्रवास प्रसन्न कर राजनीत वीसतार ॥३॥

भन्तिम-- लोक सीरकार राजी भोर सब राजी रहै।

चाकरी के कीये विकलालचन चाइयै।।

किन हुंकी मली बुरी कहिये न काहु गारी।

सटका दे लखन कछुन माप साई है।।

राय के उजीर नमु राल राल लेता रंग।

येक टेक हुं की बात उमरनीवाहिये।।

रीम सीर्म सिर्कु चढाय लीजे जसुराम ।

बेक परापत कु बेते ग्रुन काहीये ॥४॥

३४६.४. राजनीति शास्त्र—देवीदास । पत्र सं० १७। धा० द्र्×६ इ'व । भाषा—हिन्दी पद्य । विवेध—रेखनीते । र० काल ४ । ते० काले सं० १९७३ । दूर्ग । ते० सं० ३४३ । क्र अण्डार ।

वेश्वर्कक लचुचारियुक्य राजनीति—चारियुक्य । पत्र सं०६ । स्ना०१२८४३ दश्रा । मापा-संस्कृत । विवय-राजनीति । र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्ण । वे०सं०३३६ । आ प्रष्टार ।

देश्वरण, कृत्युस्ततसर्ह—किम्ब कृत्यु। पत्र सं० ४ । आरंग १३ दे ५ इ.च. भाषा—हिन्यो पटा। विषय— स्वकाविता। र•काल सं० १७६१ । से०काल सं० १८३४ । प्रणी। ये०सं० ७७६ । इस मण्डार |

३४६=. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० कान × । वे० सं० ६८५ । इन भण्डार ।

देशहर, प्रति सं ३ | पत्र सं ० ६४ | ले० काल सं ० १८६७ । ते० सं० १६६ । छ भण्डार ।

२४००. बृहद् चारिक्यनीतिशांस्त्र आया—सिश्रहासराय । पत्र सं०२० । सा००३ \times ६ इंच । आया—हिस्सी । विषय—नीतिशांस्त्र । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ४५१ । चा घंण्डार ।

विशेष---मारिगन्यचंद ने प्रतिनिधि की थी।

3 yo ? प्रति सं०२ । पर्त्र सं० ४६ । ले० काल 🔀 । अपूर्ण । वे० सं० ४४२ । 🖼 भण्डार ।

३४०२. यश्चिरालक टिप्पेश— अस्तिकाला । पण सं० १ । धा० १०४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय– सुमापित । र० काल ४ । ले० काल सं० १४७२ । पूर्णी। वे० सं० ३४६ । इस भण्डार ।

विशेष---श्रन्तिम पुष्पिका-

इति विष्ठिशतकं समाप्तं । श्री श्रीतःलाभोपाध्याय शिष्य एं • बारू चन्द्रे शलिखि ।

इसमें कुल १६१ यादाओं हैं। ग्रंत की गाया में ग्रन्थकर्ताना नाम दिया है। १६० थी गाया की संस्कृत टीका निल्ल प्रकार है—

एवं सुगमा। श्री नेमिचन्द्र भांडारिक पूर्व युरु विरहे धर्मत्य ज्ञातानाभूत। श्री जिनवक्षभपूरि ग्रुगानश्रुत्न। तत्कृते पिंड विशुद्धवादि परिचयेन धर्मेतस्यज्ञो ततस्तेन सर्वधर्म पूल सम्यक्त्व गुद्धि स्टताहतुमूता। १६०।। संस्था गाया विरच्यां चक्के हात सम्बन्धः।

> व्यास्थान्वय पूर्वाऽबचूरिए रेवासुमतिस्वामकृता । समार्थ जनम फला विज्ञेया वृद्धि चतकस्य ॥१॥

प्रवास्ति— सँ० १४७२ क्षेत्र श्री विक्रमनगरें जी जय सागरीगध्याय विषय श्री रत्नवन्द्रोगध्याय विषय श्री अस्तिलाओ पाच्याय कृता स्वविष्या वा. वारित्रसोर पँ० वस्क वैद्राविभिविष्यपाना विरं नंदतान् । श्री कल्यारां भवतु श्री असग् संबस्य ।

देश्यदे, ग्रुअसीखणणणा वक्त कै० रे। साव न्ह्रै-४४ इ.च.। आवा-हिन्दी गछ। विवय-सुवाबित । र०काल ४ । ते०काल ४ । युर्वी । वे० कै० १४७०। #सं अध्यार ।

केम्प्यू मध्य कर व्यक्त

युमापिय सर्व जीविमास्त	7			A 253
३४०४. प्रति	संह २ । पृत्रु संह ५ ।	के बान अन्ति सं	1 7180K B 1 285	
विहोच १३६	सोस्रो का वर्गन है।	5 C 1 1997 21 C 5 1865	はっさしく 下杯 こしだ	yen, yan gal
३४०४ सज	नवित्तवसम् स्मृङ्गिषे	सा । पत्र मंद्र है। मार् १	१३×१३ दश्च । मावा—सस्	But I Lada-
क्रिस । र० काल × । ले	० काल सं०१८२२ ।	युक्ताव० स० १०२७ ।	1 0 0 1 1 2 1 1 2 1 1 2 1 1 2 1 1 2 1 1 2 1 1 2 1 1 2 1 1 2 1 1 2 1 1 1 2 1 1 1 2 1	
3.४०६ प्रति	सं०२ । पत्र सं०४ ।	लाक काल सक (जरणा	40 (10 0 (11 1	1 -1
३.५८७ प्रति	; सं०३ । यत्र सं∙्र¥	引: 韓のh 野山土 14 日本	४: कोष बुद्धोः _{स्त्रीः} Lत्रेषः सं	
भण्डार । १ १७२७ ।	5 1 48 25 0 H 1 T "	, pr - u, u - p -	3 5 ope 40 . #446	
ु भः ३४०≖ः प्रसि	8 संट∙8 ं स# सं≖ <i>प्र</i>	1.维心业组: 大牛虫。 经	· 佐手・鹿・柏鹿(T	
र १४० € प्र रि	क्षेत्र अपन स्था स्थ) औ० बाल बंध १७४६	१ भाको ज सुदी ६ ं वे <i>र</i> ं-वे	माक इ०४'F स्म
भण्डार ।			ned er er er ende	
विशेष—भट्ट	रिक जगत्कीर्ति के शिष्य	दोदराज ने प्रतिलिपि की	ngi pangangan P ili Barasan	<i>i</i>
1 1 1 1 7 2 -	* · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		。 ११×८ इ.च । मापा~५	16801 11444
وأحر معلوم المساهيا	के बार राजी।	कें सं १६६। व्यासण्डी	rt I	_
3919. 4	जनचित्रवाम	पत्र से ०४ । बार्व १	.०६×४६ इ छ । भाषा—स	(स्कृत) स्वयय ::
मुभाषित । र० काल 🗙 ।	लें काल सें १७४६	। पूर्वी। वे० वे० २०४।	श्च भण्डार	f. c = , c = 7
		ो से॰ कॉल × । वे॰ से	ि १५३ । ज मण्डार । ्डिंड कार्चित्रकों करी	
विगोषप्र	ति संस्कृत टीका सहित			
३४१३. ₹	।जनचित्तवझम —ह र	(बार्लापत्र मे ं ६६ ।	मार्ट १२६×५ ई व (मार्	∏—ाह्नदा । ।वथय- ः:
मुभाषित । र० काल संक	१६०६ ले० काल ≻	्रोपूर्णावे संग्रेपरे	वह मण्डार	
विशेष—ह	श्रु लाल सतीली के रहते	के । जाते विकास	हा नाम प्री <u>तमदोस्</u> या।	बाद में सहारनपुर
चले गये वे वहां मित्रों व		. д. д.	t of allices	
इसी भण्ड	ार में दो प्रतियां (वे॰	सं ० ७२६, ७३०) भीर	81	2
३ ४१४.	सञ्जनचित्तवञ्जम्—वि	हरचंद्र । पत्र सं् ३१ ।	श्राट ११×४७ इचा । नाप	1-हिन्दी । विषय-
सभावित । र० काल सं	० १६२१ कातक सुदा	4 1 do 41d ∨ 1 ¥ d	2257 1	see I
3484.	प्रति सं० २ । पत्र सं०	२६। ले० काल 🗶 । वेद	स्टब्स् । क् मण्डार ।	ra p
स्टाह्म ए । १५४० वर्गाय	हिन्दी पद्य में भी भनुवा	द दिया है।	li Sec.	10 EF PT

३४१६. सद्भाषितावलि—सकलकीत्ति । पत्र सं० ३४। मा० १०५४ ४ इत्र । भावा-संस्कृत । विवय-सुमाषित । र० काल × । ले० काल × । सपूर्ण । वे० सं० ६४७ । क्रा भण्डार ।

विकीय-इसी मण्डार में १ प्रति (वै० सं० १८६८) शीर है।

देश्र्%. प्रति संट २ । यत्र सं≎ २ ४ । ते≉ काल सं∘ १६१० मंगसिर सुरी ७ । वे० सं∘ ४७२ । व्य भण्यार ।

विशेष-- वासीराम यति ने मन्दिर में यह ग्रन्थ बढाया था।

३४१ द. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० १६४६ । ट भण्डार ।

३४१६. सद्भाषितावनीभाषा—पद्मालाल चौघरी।पत्र सं०१३६ ।मा०११४८ दक्का।भाषा— हिन्दी। विषय—सुभाषित । र०काल ४ । ते०काल सं०११४६ ज्येष्ठ बुदी १३ ।पूर्गा वै० सं०७३२ । क मध्यार ।

विशेष-- पृद्वों पर पत्रों की सूची लिखी हुई है।

३४२०, प्रति सं०२ । पत्र सं०११७ । ले० काल सं०१६४० । वे० सं०७३३ । क भण्डार ।

३.४२१. सञ्चायितायक्षीभाषा******। पत्र सं∘ २४, । झा०१२×४३, इंच। भाषा–हिन्दी पदा। विषय–सुवायित । र०काल सं०१२११ सामन सुदी ४ । पूर्ण। वे० सं०१६ । च्यामण्डार।

३४८२, सन्देहसमुख्य — धर्मकलरास् $\{t \mid \text{दव सं<math>\circ t = 1 \text{ sin} \ t \circ \times x^2\}$ इक्का आवा-संस्कृत I विदय-स्वाधित । र \circ काल \times । ले \circ काल \times । पूर्ण । वै \circ सं \circ २७१ । ह्यू भण्डार ।

३४२३. सभासार नाटक—रजुरास । वत्र सं०१४ से ४३ । घा० ४६%८६ दंच । माषा–हिन्दी । विषय-सुप्रापित । र०काल ⋉ । ते०काल सं०१८६१ । घपूर्ण । वे०सं०२०७ । स्र भण्डार ।

विद्येष---प्रारम्भ में पचमेर एवं नन्दीस्वरद्वीप पूजा है।

३४२४. समातरंग '''''। पत्र सं० ३०। मा० ११४४ इखा। नाषा-संस्कृत । विषय-पुभावित । र० काल ४ | ले० काल सं० १८७४ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वै० लं० १०० । इद् मण्डार ।

विशेष—गोधों के नेविनाथ चैत्यालय सांगानेर में हरिबंशवास के शिष्य कुट्युलस्त्र ने प्रतिलिपि की थी। ३४२४. समाश्रक्कार™ा। पत्र सं० ४१। बी० ११४५ इ'च। बाया—संस्कृत हिन्दी। विचय∽ समाचिता। र० काल ×। ते० काल सं० १७३१ कालिक सुवी १ (पूर्य) वे० सं० १८७७।

विशेष--- प्रारम्भ--

सक्तमित्। पाँद श्री श्री श्री सामु विजयगणिष्ट्रसम्योगमः । स्राया समाध्युक्तार वन्य लिक्यते । श्री शृद्धमः वैदास नमः । श्री रस्तु ।। नाधि नंदनु सकलमहीमंदनु पंचाल धनुष मातु तो "" तीर्ती सुवर्श समानु हर गवल स्वामल कुंतलावती विज्ञानिक कुंतलावती विज्ञानिक कुंतलावती विज्ञानिक कुंतलावती विज्ञानिक कुंतलावती विज्ञानिक किंदि के स्वाम क्षेत्र किंदि के स्वाम किंदि किंदि के स्वाम किंदि किंदि के स्वाम किंदि किंद

बिगेष धतीसथ विधान सकलबुराप्रधान मोहांघकारविश्वेदन आगु निमुखन सकलसंदेह श्लैरंक । प्रवेश प्रमेख प्रारित्तरण हृदय भेदक प्रनंतानंत विज्ञान इसिउं प्रपृतु केवलज्ञान ॥३॥ भ्रतितम पाठ---

भवस्त्री पुणा-- १. कुलीना २. सीलवती ३. विवेकी ४. दानसीला ४. कीर्सवती ६. विकामवती ७. गुण्याह्णी ६. उपकारिणी ६. कृतना १०. मर्मवर्षी ११. सोत्साहा १२. संभवभंत्रा १३. क्लेस्सही १४. म्युक्तापीनी १४. सूपात्र तथीर १६. जितिन्द्रिया १७. संमुद्धा १८. म्युपाहारा १६. म्युपात्र तथीर १६. जितिन्द्रिया १७. संमुद्धा १८. म्युपात्र तथीर १६. म्युपात्र तथीर १६. मित्रवािष्णी २२. वितात्रा २३. जीतरोवा २४. म्युपाय्या १४. विनयवती २६. स्कृत्या १७. सीमाम्यवती २६. स्वृत्राक्ष्या १७. सीमाम्यवती २६. स्वृत्राक्ष्या ११. स्वृत्राव्यावरी ११. सुवर्णावरी ३३. स्वृत्राव्यावरी ११. स्वृत्राव्यावरी ३१. स्वृत्राव्यावरी ११. स्वृत्रावर्याचरी ११. स्वृत्रावर्याचरी ११. स्वृत्रावर्याचरी ११. स्वर्याचरी ११. स्वरंपाचरी ११. स्वरंपाचरी

इति समाश्रुकार संपूर्ण ।।

ग्रन्थाग्रन्थ संख्या १००० संवत् १७३१ वर्षेमास कार्तिक सुदी १४ बार सोमवारे लिखतं रूपविजयेन ॥ स्त्री पुरुषो के विभिन्न लक्षस्य, कलाम्रों के लक्षस्य एवं सुत्राचित के रूप में विविध बाते दी हुई हैं।

३१२६. सभाशृङ्कार......। पत्र सं० २० । घा० १०४४३ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-पुत्रावित । 'र० काल ४ । ने० काल सं० १७३२ । पूर्ण । वे० सं० ७६४ । इर अध्यार ।

३४२७. संबोधसत्त्रासुः भीरणंद् । पत्र सं०११। ग्रा०१० \times ४ इंच। भाषा-हिन्ती । विषय- $\frac{f_{ab}}{f_{ab}}$ सुभावित । र० कास \times । ले० काल \times । पूर्ण । वै० सं०१७४६ । द्वा मण्डार ।

मारम्भ--- परम पुरुष पर मन चरी, समरी सार नोकार । परनारच पीछ पर्यक्षम्युः, संबोधसलाला बीसार ॥१॥ भावि सनावि ते मारमा, स्वयब्यु ऐहस्मीनवार । धर्मा विद्वर्षो नीवर्षो, वापष्टु पंत्र्यो ये संसार ॥२॥

भ्रत्तिम— सूरी भी विद्यानंदी जयो भीमङ्गिभूक्ग् मुनिषंद । तसपरि माहि मानिलो, पुरु भी लक्ष्मीयन्द ।। २६ ।। िक्शानि है कार्यात प्रकार प्राप्त प्रमुख्य के कुमल बीक्सपती व्यक्ती वार्याद ।

(१९४५) १९४५ । १९४५ । १९४५ । मुख्या मगुता ए मान्या पीमीये परमानन्द ॥१७॥

११३। ११ १० हित श्री बीरबंद विरिवत संबोधसताणुदुया संपूर्ण ।

११३। ११ १० हित श्री बीरबंद विरिवत संबोधसताणुदुया संपूर्ण ।

११३। ११ १० हित श्री स्टबंद विरिवत संबोधसताणुदुया संपूर्ण ।

११३। ११ १० हित श्री श्री स्वाप्त विराव संवोधसताणुदुया संपूर्ण ।

११३ हित श्री स्टबंद विरिवत संबोधसताणुदुया संपूर्ण ।

११३ हित श्री स्टबंद विरिवत संबोधसताणुद्ध । १३० हित संवोधसताणुद्ध ।

१३० हित संवोधसताणुद्ध । १३० हित संवोधसताणुद्ध ।

क्षण्य प्रभाव विशेष प्राचीन है। क्षेप्रसागर के शिष्य कीतिसागर ने सका में प्रतिसिपि की थी।

३५२६. प्रति संत २। पत्र संत ५ में २७। ने० काल मंत्र १६०३। प्रपूर्ण। वे० संत २००१। ट

भण्डार । विशेष —हर्षकीर्ति सुरि कृत संस्कृत व्यास्था सहित है।

िर्मातकपुर १८ कि.स. १ १४१०, मित संव १ । पत्र संव १ में १४ । तेव काल संव १८७० आवरा मुदी १२ । संपूर्ण विव विकास के उत्पादकार ।

विशेष — हर्षकीति सूरि कृतं संस्कृत व्याख्यो सहित है 1

२४२१ . सिंब्यूरेप्रकरिणेसाथा— बनारसीदास । पत्र सं०२६'। मा०१०३४४१'। मापा हिन्दी । विषय-मुतापित । र० काल सं०१६६१ । तं० काल सं०१६६२ । पूर्ण । वे० सं० च४६ । " 『 में विशेष स्वाधिक भावसा ने प्रतिस्थित की थी ।

ं िंहदेशदेशः प्रतिःसंध शः। यत्र संक १३। से॰ काल ४८। ते०,संक ७१८। च यण्डार हः restar: pvक्रतीः सम्बद्धः में, १,प्रति (ते॰,सं०,७१७.) मोर है।

केश्रदेवे. सिन्दूरमकरणमाथा-लक्षनदुरहास्,। पत्र संक २०७। झा० १२४४८ इक्षा वाषा-हिन्दी। क्रिक्य-चुनामिकः।,हिक काल संव १९६२६। हुक काल संव १६३६। पूर्ण । वे० संव ७६७। क वाष्टार।

देशदेशः प्रति सं०२ । एत् संहु २ मे ३०। ते० कालः सं०१६३७ सावन बुदी ६ । वे० सं० कुरू ३ । इ. मण्डारः।

सभावित एवं नीतिशास्त्र ी

३४.२६. सुभाषितगुक्ताबक्षी \cdots ः। पत्र सं॰ २६ । बा॰ १imes४५ ह**छ** । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । र॰ काल imes। ले॰ काल imes। पूर्णा वि॰ सं॰ २२६७ । बर भण्डार ।

३४३७ द्युजाषितरज्ञपन्दोह—स्वा० स्वसितिगति । तत्र सं०५४। सा० १०४३) इ'व । माषा– संस्कृत । विषय—पुत्राधित । र० काल सं० १०४० । ले० काल × । पूर्ण | वे० सं०१ थ८६ । स्व मण्डार ।

विशेष-इसी मण्डार मे एक प्रति (वै० सं० २६) धौर है।

३४३८. प्रति सं०२। पत्र सं०४४। ते० काल सं०१८२६ भाववा सुदी १।वे० सं०६२१। क अध्यार।

विशेष-संप्रामपुर में महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की बी।

३४.२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ से ४६ । ते० काल सं० १८६२ घ्रासीज बुदी १४ । बपूर्ण । वै० सं० ८७६ । इक प्रफार ।

२१४०. प्रति सं०४ । पत्र सं०७८ । ले० काल सं०१६१० कार्तिक बुदी १३ । वै० सं०४२० । च मण्डार ।

विशेष—हापीराव जिन्दुका के पुत्र वोतोलाल ने स्वपठनार्थपांक्या नायूनाल से पक्ष्यंताथ संविर में प्रतिलिपि करवार्ष्ट थी।

२४४९. सुभाषितरत्नसन्दोहभाषा—पत्नातालाला लोधरी। पत्र सं० १८६। झा० १२३४० हवा। भौवा-किन्दी गव। विषय-सभाषित। र० काल सं० १९३३। ते० काल ४ । वे० सं० ६१६। क प्रकार।

विशेष-पहले भोलीलाल ने १६ अधिकार की रचना की फिर पन्नालाल ने भाषा की ।

इसी मण्डार मे ४ प्रतियां (वे॰ सं॰ ८१६, ८२०, ८१६, ८१६) और हैं।

३४४२. सुआवितार्शेष — शुभ्रवन्त्र । पत्र सं० ३८ । स्ना० १२४५३ रखा । माणा-संस्कृत । विषय-नुमाचित । र० काल × । ते० काल सं० १७८७ साह सुवी १४ । दुर्ग । वे० सं० २१ । व्या सम्बार ।

विशेष---प्रथम पत्र फटा हुमा है । क्षेमकीत्ति के शिष्य मोहन ने प्रतिलिपि की थी ।

का भण्डार में १ प्रति (वे॰ सं॰ १६७६) और है।

३४४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल 🗴 । वै० सं० २३१ । स्व मण्डार ।

इसी मण्डार में २ प्रतियां (वे॰ सं॰ २३०, २६८) बीर हैं।

३.५४४. मुमापितसंबद्दः। पर्वतं ०३१। घा० प×६ इत्रा। जावा-संस्कृत। विषय-सुपापित। र०काल ×। ते०काल सं०१ प×६ वैद्याल युदी ५। पूर्ला वे० सं०२१०२। इत्र जम्बार।

विश्लेष---नैरावा नगर में महारक भी सुरेन्त्रकीर्ति के शिष्य विद्वान रामकन्द ने प्रतिलिपि की भी।

्रद्धी अच्छार में १ प्रति पूर्ण (बै॰ सं॰ २२५६) तथा २ प्रतियां अपूर्ण (बे॰ सं॰ १६६६, १६८०) ॰ कॉर हैं।

३४४४. प्रति सं०२ । पत्र सं०३ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ८८२ । ङ भण्डार ।

३५४६. प्रति सं०३ । पत्र सं०२० । ले० काल 🗴 । वे० सं०१४४ । छ भण्डार ।

३४४७. प्रति सं०४ । पत्र सं०१७ । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० स० १६३ । स्व अण्डार ।

३,४,५८. सुआपितसंग्रहः......। पत्र सं०४ । घा० १०.४४ ई दंव । सामा—संस्कृत प्राकृत । विषय— स्वाचित । र०काल ४ । से० काल ४ । पूर्श । वै० सं० ६६२ । च्या अव्दार ।

विशेष--हिन्दी में टब्बा टीका दी हुई है । यति कर्मचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२४४६. सुभाषितसंग्रहः ःःःः। पत्र स०११ । झा० ७४४ दत्र । भाषा-संस्तृत हिन्दी। विषय− समाषित । र०काल × । ले०काल × । सपूर्णावै० सं०२११४ । इस भण्डार ।

३.५५०. सुभाषितावली — सफलकोर्ति । पत्र गं∘ ४२ । घा० १२ ४५१ इ.च । भाषा-संस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल सं०१७४० संगसिर सुदी ६ । पूर्णावे०सं०१८६ । इस भण्डार ।

३.१४१. प्रति सं ८ २ । पत्र सं० ३१ । ले॰ काल सं० १८०२ योष सुदी १ । वे० २'० २२४ । इप्र कण्डार ।

विशेष--मालपुरा ग्राम में पं॰ नोनिध ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३४४२. प्रति सं०३ । पत्र सं०३३ । ते० काल मं० १६०२ पीच नृदी १ । वे० मं० २२७ । आर् सम्बार ।

विशेष---लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

संबद् १६०२ समये पोष बुदा २ कुक्रवास्तर श्रीमूनमंथे बलात्तराराणे सरस्वतांगच्छे कुंदकुंवाचार्यान्ये अहारक श्री पद्मतंविदेवाः तरस्ट्टे अहारक श्री गुअवन्द्रदेवाः तरस्ट्टे अंडलाचार्य श्रीम्पक्रीत्तियोः तर्दाध्ययो पंचागुवतधारित्यो वीद्देव्यक्षिरि तर्दाध्यान वाद्दं उत्तर्द्धाः तरस्ट्रे अवत्रतान्त्रयो मित्तलयोत्रे साधु श्रीचाने आर्था रयवा तयो पुत्राः त्रयाः प्रथमपुत्र साधु श्री रहमल आर्था पदाराव । हितीय पुत्र चाइमल आर्था पत्रीतिर तयोः पुत्र परात । तृतीय पुत्र विद्याप्तित्यालकान् ऐकाद्या प्रतिमा वारकान जिनवासन समुद्धराण्योरात् साधु श्री कोडना भार्या साध्वी परिमल तयो इदं अन्यं लिबापितं कर्मक्षय निवस्तं । सिक्तिकायस्वनीकान्यवाणिकव्य तराष्ट्र गनेत ।।

प्रतिनिधि कराई ।

३४४३. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० २६ । ते॰ काल सं॰ १६४७ साथ सुदी । दे० तं० २३४ । का प्रकार ।

विशेष---लेखक प्रशस्ति--

अष्टारक श्रीसकलकीर्तिवरिषते सुमाधितरलावनीयग्यसमातः । श्रीमध्यीपयसागरसूरिविजयराज्ये संवत् १६४७ वर्ष माध्यासे सुक्रान्ते सुरुवासरे लीपीकृतं शोष्ट्रीन सुमनस्तु । संस्कर पाठकमी ।

संबत्तर वृष्वीयुनीयतोन्द्रमिते (१७७७) मार्घाचितदवान्यां मालपुरेमच्ये श्रीघादिनाष्यरैत्यालये खुद्धी-कृतोऽयं गुनावितरलावलीयन्य पांडेश्रीतुनसीदासस्य विष्येरा त्रिलोक्त्येत्रं रा ।

ऋ भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० २८१, ७८७, ७८८, १८६४) स्रीर है।

३४४४. प्रति स० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ६१३ । क अण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ५१४) और है।

३४४४. प्रति सं० ६ । पत्र '० २६ । ते० काल सं० १८४६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० २३३ । ह्या अण्यार विशेष—पं० भारणकवन्द की प्रेरणा से पं० स्वरूपवन्द ने पं० कपूरवन्द से जवनपुर (जोडनेर) में

६४.५६. प्रतिसं०७ । पत्र सं०४ ६ । ले० काल सं०१६०१ चैत्र सुदी १३ । वै० सं०६७४ । इस भण्डार ।

विशेष--श्री पाल्हा बाकलीवाल ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी।

इसी अण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ६७३, ६७४, ६७६, ६७७, ६७८) झीर हैं।

३४४.७. प्रतिसं०⊏ । पत्र सं०१३ । ले० काल सं०१७६४ मासोज सुदी ⊏ । वे० सं०३६४ । छा भण्यार ।

३.४.४८८. प्रतिसं≎ ६ । पत्र सं≎ ३० । ले≎ काल सं≎ १९०४ माण बुदी ४ । वे॰ सं॰ १९४ । ज मण्डार ।

३४४६. प्रति सं० १०। पत्र सं० ३ से ३०। ले० काल सं० १६३६ बैकास्त सुदी १६। मपूर्ण। वे० सं० २६३४। ट अण्यार।

विशेष---प्रयम २ पत्र नहीं हैं। नेसक प्रशस्ति प्रपूर्व है।

३४६०. कुष्माकितावाती'''''''। यत्र सं० २१ । झा० ११३४५ दृश्च । आया-नंसकृत । विषय-सुवासितः। र०काल × । ते०काल सं० १८१८ । सूर्यो । वै० सं० ४१७ । च अच्चार ।

विशेष---यह ग्रन्थ दीवान संगही ज्ञानवन्दजी का है।

च मण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४१०, ४१०) का मण्डार में २ सपूरी प्रतियां (वे० सं० ६३४, १२०१) तथाट भण्डार १ (वे० सं० १००१) सपूरी प्रति स्नीर है।

देश्दरिः सुभाषितावतीमापा— पत्रासाता चौघरी । पत्र सं∘ १०६ । मा० १२३,४५ इक्च । आया— हिल्दी । विषय—सुपाषित । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वै० सं० द१२ । कुभव्डार ।

३४६२. सुआषितावलीभाषा—कुलीचन्द्। पत्र सं० १३१ । घा० १२६४४ इ.च । भाषा—हिन्दी । विषय—मुपाषित । र० काल सं० १६३१ ज्येष्ठ सुरी १ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० घद० । इक प्रकार । इसी अच्छार में एक प्रति (वे० सं० घद१) धीर हैं ।

कै.६६८. सृक्तिमुक्तावजी—सोमप्रभाचार्य । पत्र सं०१७ । मा०१२×५३ इंच । प्राया–संस्कृत । विवय-सुनापित । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं०१६६ । इस मण्डार ।

विशेष-इसका नाम सुभाषितावली भी है।

३४६४. प्रति सं०२। पत्र सं०१७। ले० काल सं०१६८४। वे० सं०११७। त्र्य मण्डार।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

संबत् १६=४ वर्षे श्रीकाष्ट्रासंवे नंदीतटगच्छे विद्यागणे अ० श्रीरामसेनाच्ये तरपट्टे अ० श्री विश्वयूषण् तरपट्टे अ० श्री स्थाःकीति बहुः श्रीमेषराज तर्वायाण्यबद्धा श्री करमसी स्वयमेव हस्तेन लिक्तिं पठनायँ।

का सम्बार में ११ प्रतियां (वे॰ सं॰ १६५, ३३४, ३४८, ६३०, ७६१, ३७६, २०१०, २०४७, १३४८ २०३३, ११६३) और हैं।

३,४६६, प्रति सं० ३। पत्र सं०२५। से० काल सं० १९३४ सावन सुवी ६। ने० सं०६२२। ऋ भष्यार। इसी भण्यार में एक प्रति (ने० सं०६२४) धीर है।

> ३४६७. प्रति संc ४। पत्र सं० १०। ले॰ काल सं० १७७१ प्रासोज सुवी २। ते॰ सं० २३४। स्व विकोष—महावारी लेतसी पठनार्थ मालपुरा में प्रतिसिधि हुई थी।

केश्रदेय. प्रति सं० श्र । पत्र सं० २४ । ते० काल × । वे० सं० २२६ । सा अण्डार ।

विशेष—दोवान झारतराम सिंद्रका के पुत्र कुंबर बब्बतराम के पठनार्थ प्रतिसिपि की गई थी । झक्षर मोटे एवं सुन्दर हैं।

इसी अण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे॰ सं॰ २३२, २६८) और हैं।

३.५६६. प्रति सं०६। पत्र सं०२ मे २२। ले० काल × । प्रपूर्णी। वे० सं०१२६। घ भण्यार । विषयेय—श्रति संस्कृत टीका सहित है।

क अवडार में ३ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ८८३, ८८४, ८८५) और है।

३५७०. प्रति सं० ७। पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १६०१ प्र० श्रावण बुदी ऽऽ। वै० सं० ४२१। व भण्डार।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (ने० सं० ४२२, ४२३) और हैं।

३५७१. प्रति सं० ६। पत्र सै० १४। ले० काल सं० १७४६ भारता बुदो ६। वे० सं० १०३। आह् भण्डार।

> विशेष — रैनशाल में ऋषभनाथ चैरयालय में भाषार्थ ज्ञानकीत्ति के शिष्य सेवल ने प्रतितिपि की ची । इसी भण्डार में (बै॰ सं॰ १०३) में ही ४ प्रतियां और है |

३५७२. प्रति सं०६। पत्र सं० १४। ले॰ काल सं०१८६२ पौष सुदी २। ते० सं०१८३। उद भण्डार ।

विशेष--हिन्दी टब्वा टीका सहित है।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं०३६) झौर है।

देश्चरे. प्रति सं०१०। यत्र सं०१०। ले० काल सं०१७६७ मासोज मुदी दावे० सं० द०। स्त्र भण्डार।

विशेष-- धावार्थ क्षेमकीत्ति ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में वे प्रतियां (वे० सं० १६४, २०६. ३७७) तथा त भण्डार में २ सपूर्ण प्रतियां (वे० सं० १६६४, १६३१) और है।

३.५७४. सुकावती***** । यत्र सं∙ ६ । आरं० १०४४, इंच । भाषा-संन्कृत । विषय-सुआवित । र० काल ४ । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वे० सं० ३४७ । व्या भण्डार ।

३.५७४. श्कुटक्शोकसंबद्धः ''''।पत्र सं०१० ने २०।झा०६४८ डंब।भाषा–संस्कृत ।विषय– नुभाषित।र०काल ४ । ले०काल सं०१८८३ । झपूर्या।वै० सं०२५७ । इब भण्डार ।

३.५७६. स्वरोदय—रनजीतदास (चरनदास) । पत्र सं०२ । बा० १३२ \times ६३ इंच । नाया—हिली । युपापित । र०काल \times । ले०काल \times । पूर्णावेठ सं० ५१ । ख्रान्यसर ।

३१.७७. हितोपवेरा—विष्णुरास्ती पत्र सं० ३६। मा० १२३,४५ इक्क । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । र० काल ४। ले० काल सं० १८७३ सावन सुदी १२। पूर्ण । वे० सं० ८५४। क भण्डार ।

विभेष--माश्चिम्पन्द ने कुमार ज्ञानश्रंद्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

२५७६. प्रति सं०२। पत्र सं०२। ले० काल \times । वे० सं०२४६। व्यायण्डार । २५७६. हितोपदेशभाषा \cdots \cdots । पत्र सं०२६। प्रा०५ \times ५ इक्षा भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल \times । ते० काल \times । पूर्ता । वे० सं०२६१। व्यायण्डार ।

३४८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले॰ काल × । वे॰ सं० १८६२ । ट अण्डार ।



વિષય- મન્ત્ર-શાસ્ત્ર

विशेष--पत्र १६ पर पुष्पिका--

इति श्री राजाधिराज गोख काव वंशा केसरीसिंह समाहितेन मनि मंडन मिश्र विरक्षिने पुरंदरमाया नाव जन्य बिह्नत स्वामिका का माया।

पत्र ४२ पर--इति इन्द्रजाल समाप्तं ।

कई तुसर्व तथावशीकरए। ग्रादिभी हैं। कई कीतूहल की सीवार्से हैं। मंत्र संस्कृत मे हैं श्रक्रमेर में प्रतिलाय हुई थी।

२४८२. कर्मदहनञतमन्त्रः''''''। पत्र सं० १० । घा० १०६ँ×४३ दश्चा । माषा—संस्कृत । विषय–मंत्र गान्य । र० काल ४ । ले० काल सं० १६३४ मादवा मुदी ३ । पूर्णी | वै० सं० १०४ । कः मण्डार ।

२४८२ चेंत्रपासस्तोत्र'''''। पत्र सं०४। मा० ८३ \times ६ इंच। माषा—संस्कृत। विषय—मन्त्रशास्त्र। τ ० काल x। ले० काल सं०१६०६ संगसिर सुदी ७। पूर्ता। वे० सं०११२७। इस भण्डार।

विशेष-सरस्वती तथा चौसठ योगिनीस्तोत्र भी दिया हुमा है ।

३४,≒४. प्रति सं०२ । पत्र सं०३ । ले० काल ⋌ । वे० सं०३ ⊏ । त्य भण्डार ।

३४,८४. प्रति सः ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६६६ । वे० सं० २८२ । का अण्डार ।

विशेष---चक्र श्वरी स्तोत्र भी है।

३६≍६. खटाकर्णकल्पः स्त्राभः गत्र सं० ४ । झा० १२ रैं, ४६ इ.च । भाषा- संस्कृत । विषय–मन्त्रवास्त्र र०काल × । ले०काल सं० १९२२ । झपुर्ण। वै० सं० ४४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—-प्रथम पत्र पर पूरुपाक्तुर सब्दासन चित्र है। प्रयंत्र तथा एक घंटा चित्र भी है। जिसमें तीन पण्टे दिये हवे हैं।

३५⊏७. घंटाकर्एसन्त्र'''''''। पत्र सं० १ । सा० १२६ ४४ इंच । आवा—संस्कृत । विषय–मन्त्र । र०काल ४ । ले०काल सं० १६२५ । पूर्ण | वे०सं० ३०३ | इस सम्बार १ ३.५८म-. मंटाकर्षावृद्धिकरूपः सम्मापत सं० १। मा० १०३,४५ इंच । आरा-हिन्दी। विदय-सन्त्र सास्त्र । र० काल ४ | ले० काल सं० १९१३ बैचाल सुरी १ | पूर्णा वे० सं० १४ । घ मण्डार ।

३.५८६. चतुर्विरातियांक्रविधान******* । पत्र सं०३ । मा०११५४५ इंच । आषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रश्चास्त्र । र०काल ४ । से०काल ४ । पूर्ण । वै०सं०१०६६ । का स्वटार ।

३४६०. चित्तासियस्तोत्र''''''। पत्र सं०२ १ झा० ८, ४६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय मन्त्र साक्षत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्वी वैकसं०२८७ । ऋष्ण्डार ।

विशेष--- चक्के श्वरी स्तोत्र भी दिया हुआ है।

३४६१. प्रति सं०२ । पत्र सं०२ । ले० काल × । वे० सं०२४५ । व्य भण्डार ।

२४६२. चिन्तासिय्यन्त्र****** । पत्र सं∘ ३ । झा० १०४४ : इंचा भःगा-संग्रुत । विषय-सन्त्र । र०काल ४ । ले०काल ४ । झपूर्ण । वै० सं∘ २६७ । स्त्र भण्डार ।

२४६२. **वीसठयोगितीस्तोन्न** ावत्र सं०१। मा०११४४० इ.च. भाषा-सम्बतः । विषय-सन्त्रवास्त्र | र०काल × | ते०काल × । पूर्ण | वे०सं०६२२ | द्या अण्डार |

विशेष-इसी अण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ११८७, ११६६, २०६४) और है।

३४६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १८०३ । वे० स० ३६७ । व्य भण्डार ।

३४६४. जैनगायत्रीसन्त्रविधान******। पत्र गं०२। झा०११४५३ इन । भाषा–संस्कृत । विषय– सन्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वै०सं०६०। इस अच्छार ।

३४६६. सामोकारकल्प''''''। पत्र सं० ४ । ग्रा० ५.३४६ इक्षः । माया-मंस्कृतः। विषय-मन्त्रशान्त्रः । र०काल ४ । ले०काल सं० १६४६ । पूर्णः। वे०सं० २६५ । ग्रुभण्डारः।

२४६७. समोकारकरूप ''''''। पत्र सं० ६। घा० ११३४४ इ'व । भाषा—सस्कृत । विगय-मन्त्र सास्त्र । र० काल ४ । ले० काल सं० १६०६ । पूर्स | वे० सं० ३४४ । इस अण्डार ।

- देश्ह्म. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल 🔀 । अपूर्ण । वे० सं० २७४ । स्व भण्डार ।

देश्हर. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६६४। वे० सं० २३२। क अण्डार।

· विशेष--हिन्दी में मन्त्रसाधन की विधि एवं फल दिया हुन्ना है।

३६००. सामोकारपैतीसी*******। पत्र सं०४ । झा० १२×४६ इंच । आशा–प्राकृत व पुरानी हिन्दी । ∵ अविषय–मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० इं० २३४ । क्र भण्डार ।

३६०१. प्रति सं०२ । पण सं०.३ । के० काल 🔀 वे० सं० १२४ । 🔏 अण्डार ।

३६०२. नसस्कारसम्त्र कल्पविभिसिहत-सिंहलियः। पत्र सं० ४४ । या० ११३,४४ ६ व । नाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रदास्त्र । र० काल ४ । ते० काल सं० १६२१ । पूर्ण । वे० सं० १६० । का भण्वार ।

३६०३. लवकारकल्प ·······।पन सं०६ । घा०१×४३ इ'च । भाषा–संस्कृत । विषय–मन्त्रशास्त्र । रे० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं०१३४ । छ भण्डार ।

विशेष-पक्षरों की स्थाही मिट जाने में पढ़ने में नहीं ब्राता है।

३६०४. पंचद्शः (१४) यस्त्र की विधि ***** । पत्र सं०२ । मा०११×५ है दंव । भाषा-संस्कृत । वियय-मन्त्रसास्त्र ! र०काल × । त०काल सं०१६७६ फाग्रुस वृदी १ । पूर्ण । वे० सं०२४ । अर भण्डार ।

३६०**४. पद्मावतीक**ल्प[…] "ावत्र सं०२ मे १०। झा० स×४३ दंवा। आया–संस्कृत । विषय-संव सास्त्र । र०काल × । ले०काल सं०१६६२ । झपूर्ण । वे०सं०१३३६ । इस अण्डार ।

विशेष----प्रशास्ति-- संबत् १६८२ धामावेर्गलपुरे श्री सूलसंबसूरि क्षेत्रेन्द्रकीत्तिस्तंदेतेवासिभिराचार्ये श्री हर्वकीतिभिरेदमन्ति । विरं संबत् पुस्तकम् ।

३६०६. बाजाकीशा \cdots ापन सं० ६। धा॰ १२ \times ५। भाषा-संस्कृत । विषय-मन्वसास्त्र। र॰ काल \times । ते॰ काल \times । पूर्ण । वे० सं० ६३५. व्याभण्यार ।

विशेष--संग्रह ग्रन्थ है। दूसरा नाम मातृका निर्घट भी है।

३६०७. भुवनेरवरीस्तोत्र (सिद्ध सहामन्त्र)—पृष्यीधराजार्थ । पत सं० ६ । मा० १५४४ इंच । भागा-मंस्क्रत । विषय-मन्त्रवास्त्र । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वै० सं० २६७ । जा भण्डार ।

३६०८. भूबला '''''। पत्र सं० ४ । घा० ११है ४५ है ३%। भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल ⋉ । ने० काल ⋉ । सपूर्ता । वे० सं० २६८ । चा भण्यार ।

विशेष—मन्त्र का नाम प्रवस पद्य में 'स्रयातः संप्रवश्यामि भूवलाणि समामतः' साथे हुये भूवल के सामार पर ही जिल्ला गया है।

विशेष--३७ यंत्र एवं विधि सहित हैं।

इसी मण्डार में २ प्रतियां (वे० सँ० ३२२, १२७६) और हैं।

६६१०. प्रति सं०२। पत्र सं०१४६। ले०काल सं०१७६३ वैशाख सूदी १२। वे० सं०५६५। इ. अध्वार। विशेष---प्रति सचित्र है।

इसी भण्डार में १ अपूर्ण सचित्र प्रति (ते० सं० ५६३) और है।

६६११. प्रति सं०३। पत्र सं०३५ । ते० काल ⋉ । वे० मं० ५७५ । क भण्डार ।

२६१२. प्रति सं ८ ४ । पत्र सं ० २८ । ले० काल सं ० १८६८ चैत बुदी *** । वे० सं ० २६१ । च सम्बार ।

विशेष--इसी भण्डार मे १ प्रति संस्कृत टीका सहित (वे॰ सं॰ २७०) मौर है।

३६१३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल 🔀 । वै० सं० १६३६ । ट भण्डार ।

विणेष--- बीजाक्षरों में ३६ यंत्रों के चित्र है। यत्रिक्षि तथा मंत्रों सहित है। संस्कृत टीका भी है। यत्र ७ पर बीजाक्षरों में दोनों क्षोर दो निकलेख सन्त तथा विधि दी हुई है। एक त्रिकोख से बाधूपसा पहिते सड़े हुवे नम्म स्त्रों का चित्र है जिसमें जगह २ सकर लिले हैं। दूसरी क्षोर भी ऐसा ही नम्म चित्र है। सन्त्रिचि है। ३ ने ६ व ६ से ४६ तक यत्र नहीं है। १-२ यत्र यर संत्र संत्र सुची दी है।

३६१४. प्रति संट ६ । पत्र सं० ४७ में ४७ । ले० काल सं० १८१७ ज्येष्ठ मुद्री ४ । प्रपूर्ण । वे० लं० १६१७ । ट भण्डार ।

विशेष-सवाई जमपुर में पं॰ बोसचन्द के शिष्म मुखराम ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति भ्रपूर्ण (वे० मं० १६३१) स्रौर है।

दे६१४. भेरेबपद्मावतीकल्प ·····। पत्र मं०४०। घा० १८४ इंच। भाषा संस्कृत | विद्यय-सःव बास्त्र | र०काल × | ने०काल × । पूर्ष | वे०सं०४,७४। इस्त्रण्यार |

े ६६९६ सन्त्रशास्त्र"'' "| पत्र सं० ६ । सा० ८४६ इंख । भाषा–हिन्दी | विषय–सन्त्रशास्त्र | ४० काल ४ । से० काल ४ । पूर्णा वे० सं० ६३१ । स्व भण्यार |

विशेष---नित्न मन्त्रों का संग्रह है।

१. चौकी नाहर्रासह की २. कामरा विधि ३. यंत्र ४. हतुमान मंत्र १. टिक्डी का मन्त्र १. पनीता मूत व चुकेन का ७. यंत्र देवदल का ८. हतुमान का मन्त्र १. सर्पाकार सन्त्र तथा मन्त्र १०. सर्वकाम सिद्धि सन्त्र (चारों कोमों पर मौरङ्गतेव का नाम दिवा हुमा है) ११. मून काकिनी का सन्त्र ।

३६१७. सन्प्रशास्त्र''''''''| पत्र सं॰ १७ से २७ । घा० ६२×४१ ६ छ । जाया-संस्कृत । विषय-मन्त्र सास्त्र । र० काल imes । ते० काल imes । सपूर्णं। वे० सं० ४०४ । इस्मध्यार ।

वियोध---इसी मण्डार में दो प्रतियां (ते० सं० ५८५, ५८६) और है।

3 2 2

३६१८ सन्त्रसहोद्याचि—पंगसहोद्यारा पत्र संग्रहरा। १९६४ ४ इत्या नापा-संस्कृतः। विवय-सन्त्रसास्त्र। रंग्काल ४ । तेण्कास संग्रहरामा सुरी २ । पूर्णावेण संग्रहरा इत्यास्त्र

३६१६. प्रति सं०२। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० ५८३। इन अण्डार।

विशेष-अन्नपूर्णा नाम का मन्त्र है।

३६२० सन्त्रसंब्रह्सः ""।पत्र सं॰ फुटकर।धा॰ । भाषा-संस्कृतः।विषय-मन्त्र। र० काल ×।ते॰ काल ×।प्रर्शः। वै॰ सं॰ ५६६। कृमण्यार।

विशेष -- करीब ११५ यन्त्रों के चित्र हैं। प्रतिष्ठा श्रादि विश्वानों में काम श्राने वाले चित्र हैं।

३६२१. महाविद्या (मन्त्रों का संग्रह)******* । पत्र सं०२० । ग्रा० ११३/४: इख्र । मावा-मंस्कृत । विवय-मन्त्रशास्त्र । र०काल × । ने०काल × । मनूर्या । वे०सं०७६ । घ जच्छार ।

विशेष--रचना जैन कवि कृत है।

३६२२. यहिस्सीकरपः । पत्र सं०१। मा० १२४६ इ.च.। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-मन्त्र गास्त्र । र०काल \times । ने०काल \times । पूर्ण | ने०मं०६०५। इट पण्डार।

३६२३ यंत्र संत्रविधिफला^{……}। पत्र सं० १४ । सा• ६३४८ इ.च । नाषा-हिन्दी । विषय-सन्त्र सास्त्र । र०काल ४ । ले०काल ४ । सपूर्ण । वै० सं० १६६६ । ट नाष्टार ।

विशेष—६२ यंत्र मन्त्र सहित दिये हुये है। कुछ यन्त्रों के खाली चित्र दिये हुये है। मन्त्र बीजाक्षरों में हैं।

३६२४. वर्द्धमानविद्याकस्य —सिह्नविक्तकः । यत्र सं०६ से २६ । का० १०६४४ इंच । माषा-संस्कृत हिन्दी । विद्यय-मन्त्रशास्त्र । र०काल ४ । सं०काल सं० १४६४ । सपूर्णी । वे० सं० १६६७ । ट मण्डार ।

विशेष---१ मे ४, ७, १०, १४, १६, १६ से २१ पत्र नहीं हैं। प्रति प्राचीन एवं जोर्सा है।

हिन्दी गद्य खदाहररा- पत्र = पंक्ति ५---

जाइ पुष्प सहस्र १२ जाप: । ग्रुगल गउ बीस सहस्र ।।१२।। होम कीजह विद्यालाम हुई ।

पत्र ६ पंक्ति ६-- म्रों कुरु कुरु कामास्थादेवी कामद मार्थाव २ । जब मन मोहनी सुती बहुठी उटी जखारण हाथ जोटिकरि साम्ही मारद । साहरी मक्ति ग्रुप की सक्ति बायदेवी कामास्या सन्दर्श खक्ति मार्काव ।

प्रष्ठ २४— बन्तिम पुष्टिग्का— इति वर्ड मानविवाकरुम्तृतीवाधिकारः ।। क्रथाक्रय १७५ प्रक्षर १६ ६० १४६५ वर्षे सगरकुपकालायां प्रशिद्धक्रपाटकररपर्याये श्रीमतनप्रद्वात्वरदेशीख । पत्र २६- प्रतिकामों के समस्कार हैं। दो स्तीत्र हैं। पत्र २६ पर नालिकेर करूप विया है।

दे६२४. विजयसम्बचिधास****** । दान सं० ७ । द्वार १०३४१ इ.च । भागा-संस्कृत । निषय-मन्त्र वाह्य । र० काल × । तेर काल × । पर्छ । ३० सं० ६०० । द्धा मण्डार ।

विणेष——इसी अण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ५६०, ५६०) सवाच्य अण्डार में १ प्रति (वे० सं० १वे१) और है।

२६२६. विद्यानुसासनः*****। पत्र सं० २००। प्रा० ११×५६ रंग । आया-संस्कृत । र० काल \times । के० काल सं० १६०६ प्र० प्रादवा बुदी २ । पूर्ण | वे० सं० ६५६ । क्र प्रथार ।

विशेष— प्रत्य सम्बन्धित मन्त्र भी है। यह प्रत्य छोटीलालजी ठोलिया के पठनार्थ गं० मांतीलालजी के हारा हीरालाल कामलीवाल से प्रतिलिधि कराईं। पारिश्रमिक २४।-) तथा।

३६२७. प्रति सं०२। पत्र सं०२८४। ले॰ काल सं०१६३३ मंगसिर हुदी ४ । ते० सं०२४। घ मण्डार।

विशेष---गञ्जाबनस बाह्यसा ने प्रतिलिपि की थी।

दे६२.स. यंत्रसंबहु******। पत्र सं∘ ७। प्रा० १३}.४.६. इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-मन्यतास्त्र ; र०काल ×। ते०कारा ×। पूर्ण । वे० सं० ५४६ । च्च भण्डार ।

विशेष-सगभग ३५ यन्त्रों का संग्रह है।

दे६२६. **धटकर्मकसन्।**'''''' पत्र सं० २ । सा० १०३४६ दश्च । भागा—संस्कृत । विषय–स-प्रसास्य ; रिकाल × । ते० काल × । पूर्ण । दे० सं० २१०३ । २ मण्डार ।

विशेष-सन्त्रशास्त्र का ग्रन्थ है।

दे६२०. स्वरस्थितीकरूपःःःः। पत्र सं० २ । सा० १११,४६ इ'च । साथा–संस्कृत । विषय–सन्वनास्त्र । र•काल ४ । ते॰काल ४ | पूर्णः | वे॰सं० ७७० । कः सण्यार ।



विषय-कामशास्त्र

३६३१. कोकशास्त्र'' '''। पत्र सं० १। झा० १०३ \times ५१ इखा। भाषा-संस्कृत । विषय-कोक। र० काल \times । नं० काल सं० १८०३। पूर्या। वे० सं० १९६१। द्व अध्यार ।

विशेष---निम्न विषयों का वर्णन है।

द्वावरणविभि, स्तम्भनविभि, बाजीकरस्, स्यूनीकरस्, गर्जाचान, गर्मस्तम्भन, सुबग्रसन, पुण्याचिनवारस्, ग्रीनिमंग्कारविभि मादि !

३६३२. को कसार '''''''' पत्र सं०७ । आ० १ \times ६३ इंच । सावा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र । रक्त स \times । ले० काल \times । प्रपूर्ण । वै० सं० १२६ । क्र सण्डार ।

३६२३. कोकसार—क्यानन्द्। पत्र सं∘४ । झा० १३६⁄४६६ इंच। मादा–हिन्दी | विषय–काव शास्त्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । धपूर्णा । वे० सं० द१६ । इस मध्यार ।

३६३४. प्रति सं०२। पत्र सं०१७। ले० काल 🗴 । सपूर्ण । वै० सं०३६। 🕷 भण्डार।

३६३४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० सं० २६४। मा मण्डार।

२६२६. प्रति सं०४ । पत्र सं०१६ । ले॰ काल सं०१७३६ प्र० चैत्र सुवी ४ । वै० सं०१४४२ । ट भण्डार ।

विशेष--प्रति जीर्श है। जट्टू व्यास ने नरायला में प्रतिलिपि की थी।

६६२७. काससूत्र—किश्वहाला। पत्र सं० ३२। सा० १० $\frac{1}{2}$ \times ४ $\frac{1}{2}$ सं α । बाषा—प्राकृत। विषय—काम शास्त्र। र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण। वै० सं० २०५। स्त्र भण्डार।

विशेष — इसमे कामसूत्र की गायायें दी हुई हैं | इसका दूसरा नाम सत्तसग्रसमत्त भी है।



विषय- क्रिल्प-क्रास्त्र

३६३८. विरुवनिर्मासुविधिः****। पत्र सं०६। झा०११३४७३ इ'व। भाषा-हिन्दी। विषय-विहर वास्त्र। रे० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४३३। क भण्डार।

३६३६. विश्वतिमारियविधिः****** । पत्र सं० ६ । मा० ११४७३ इ'व । भाषा-हिन्दी । विषय-शिल्प सास्त्र । र० काल × 1 ले० काल × 1 पूर्ण । वे० सं० ५३४ | क्र भण्डार ।

३६५०. विश्वनिर्माण्विष्ठिम्मम्। पत्र सं०३६ । घा० म्ह्रे×६ ृदंव । माषा–संस्कृत । विषय– व्रित्त्वकर्ता[बतिक्का] र०काल × । क्रे०काल × । पूर्णावे० सं०२४७ । च मण्डार ।

विशेष—कापी साइज है। पं० कस्तूप्लयकी साह द्वारा लिखित हिन्दी अर्थ सहित है। प्राप्तन से २ पे ४ २ की सूनिका है। पत्र १ से २५ तक प्रतिष्ठा पाठ के स्लोकों का हिन्दी अनुवाद किया गया है। ज्लोक ११ है। पत्र २६ से ३६ तक बिन्न निर्माणीविधि आचा दी गई है। इसी के साथ ३ प्रतिमाधों के चित्र भी दिये गये है। (वै० स० २/६) च अण्डार। कलशारीपण विधि भी है। (वै० सं० २४८) च अण्डार।

३६४१. वास्तुविज्यासः*****। पत्र सं०३ । घा० ६२४४२ इक्षः । भाषा—संस्कृतः। विषय-शिल्पकनाः। ६० काल ×। ते० काल ×। पूर्णः। वे० सं०१४५ । इद्याध्यारः।



विषय - लत्तरा एवं समीता

३६४२. ब्यागसपरीक्षाः \cdots ापत्र सं०३। घा० ७imes३१ ईव । आवा—संस्कृत । विषय—समीज्ञा। र० काल imes। पूर्णी के सं०१६४४। ट अण्डार ।

दे६४३. र्ह्ण द्वारारोक्सरिय—को भन्नाथापक संब्देशः धाव १४६ इ.च.। भाषा—हिन्दी पद्याः विषय— सक्षराः। रक्ष्मासंब्द्र इत्दर्भ ज्येष्ठ सुदीः माने केव्यसंबद्ध रहिन्द्र साहुरासुदी १०। पूर्याः वैश्वसंव १९३६ । टभण्डारः।

३६४४. छंदकीय कविश्व-- सहारक पुरेन्द्रकीशि । पत्र सं० १ । आ० १२४६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-नक्षण प्रन्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१४ । द अध्वार । प्रान्तम पुष्पिका-- इति श्री खंदकीयकवित्वे कामघेत्वास्ये भट्टारकभीशुरेन्द्रकीतिविर्वावते समङ्गतप्रकरण समस्य । प्रारम्भ मे कमलबंध कविता से विश्व विश्व हैं ।

३६४४. धर्मपरीक्षाआया—वहारथ निगोत्या । पत्र सं० १६१ । मा० १२४५३ इ'व । भाषा-संस्थत हिन्दी गर्व । विषय-समीका । र० कान सं० १७१८ । ते० कान सं० १७४७ । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । स्र मण्डार !

विशेष---संस्कृत मे मूल के साथ हिन्दी गद्य टीका है। टोकाकार का परिचय---

साहु भी हेमराज सुत मात हमीरदे जासि।

कुल निगीत श्रावक धर्म वसरय तक वलागि।।
संवत सतरासे सही स्रष्टादण प्रधिकाय ।

काप्रस्त तम एकादशी पूरस्त अर्द सुनाय।।

धर्म परीक्षा वचनिका सुंदरदाल सहाय ।

साधर्मी जन समिक ने दशरण कृति वितलाय।।

टीका— विषया कै विस पड़वा किरस्त जीव गय।

करें हैं सहुते न जाई दी वे दूली होद नरे।।

नैकार प्रशस्ति— संबद् १७५७ वर्षे पीच शुक्का १२ भृगीवारे विश्वता नगर्वा (दीसा) जिन चैत्यालके जिल सङ्घारक-भीनरेक्कोत्ति तद्यसिन्य ४० (विरवर) कटा हुया।

िलक्षया एवं समीका

444

सम्बार ।

समाप्ताः ।

३६४६. प्रति सं⊂ २ । पत्र सं∘ ४०४ । ले० काल सं० १७१६ मंगीसर सुदी ६ । वै० सं० ३३० । क

विशेष—इति श्री ग्रमितिगतिकृता धर्मपरीक्षा मूल तिहकी बालबोधनामटीका तक्र धर्मार्थी दशरवेन कृता:

३६४७. प्रति सं० ३ | पत्र सं० १३४ । ले० काल सं० १८६६ भादवा मुदी ११ । वे० सं० ३३१ । क भव्यार ।

३६५८ मर्भपरीचा— व्यक्तितिशति । पत्र सं० = ४ । ग्रा० १२४४, इंच । मापा-संस्कृत । विषय-समीला । र० काल सं० १०७० । ले० काल सं० १८६४ । पूर्व । वे० सं० २१२ । व्यापण्डार ।

३६४८.० प्रतिसं०२ । पत्र सं०७५ । ले० काल सं०१ ८ ८ ६ दित्र मुद्री १५ । वै० मं०३३२ । स्त्र प्रथमार ।

विशेष---इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ७८४, १४५) ग्रीर हैं।

३६४०. प्रति सं०३ । पत्र सं०१३१ । ले० काल सं०१६३६ भारता सुदी ७ । वे० मं०३३४ । क

मण्डार ।

३६४१. प्रति सं०४ । पत्र सं०६४ । ले० काल सं०१७८७ माध बुदी १०।वे० मं०३२६ । फ

मण्डार |

३६४२. प्रति सं∙ ४ । पत्र सं∙६६ । ले० काल ४ । वे० सं०१७१ । च भण्डार ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

२६४२२. प्रति सं०६ । पत्र सं०१३३ । ले० काल सं०१६५३ वैद्याल सुदी २ । वे० सं०५६ । इद् सम्बद्धार ।

> विशेष--- अलाउद्दीन के शासनकाल में निल्ला गया है। लेलक प्रशस्ति अपूर्ण है। इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६०, ६१) और है।

३६४४. प्रति सं० ७। पत्र सं० ६१। ले० काल ×। वे० सं० ११५। स्न मण्डार।

विशेष-इसी मण्डार में २ प्रतियां (वे॰ सं॰ ३४४, ४७४) और हैं।

३६१४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७८ । ले॰ काम सं० १४२२ मादवा बुदी १३ । वे॰ सं० २१४७ । इ. अप्यार ।

विशोध—रागपुर में श्री वन्द्रप्रभ वैध्यालय में जमूते लिकवाकर क० श्रीकर्मदाल को दिया। बन्तिय पन पढ़ा हुवाहै। ३६४६. धर्मपरीक्षाभाषा—मनोहरदास स्रोती । पत्र सं० १०२ । बा० १०३४४३ इ.च । सावा-हिन्दी पद्य ! विवय-समीक्षा । र० काल १७०० । ले० काल सं० १८०१ कायुस्स पुरी ४ । पूर्स । वे० सं० ७७३ । का मण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति झपूर्ण (वे॰ सं॰ ११६६) ग्रीर हैं।

३६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १९५४ । वे० सं० ३३६ । क अण्डार ।

३६४८. प्रतिस् ०३ । पत्र सं०११४ । ले० काल सं०१ ८२६ झाषाढ बुदी ६ । वे० सं०४६४ । च भण्डार ।

विशेष-हंसराज ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी। पत्र विपके हुये हैं।

उसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ५६६) धीर है।

३६४६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६३। ले० काल सं० १८३०। वै० सं० ३४५। मा अण्डार।

विशेष-केशरीसिह ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १३६) धीर है।

३६६०, प्रति सं० ४। पत्र सं० १०३। ले० काल सं० १८२४। बैठ सं० ४२। व्या अण्डार।

विशेष -- बलतराम गोधा से प्रतिनिधि की थी।

इसी भण्डार में १ प्रति (वै० सं० ३१४) ग्रीर है।

३६६१. समेपरीकाभाषा—पत्नाताल चौधरी। पत्र संग्वस्थ । साग्र ११४४२ इ'व। प्राच-हिन्दी गर्छ। विषय-समीक्षा । रण्यान संग्र १६३२। सेग्काल संग्र १६४२। पूर्ण। वेग्संग्वर । क्र वण्यार।

३६६२. प्रति सं०२। पत्र सं० ३२२। ले० काल सं० १९३८। वे० सं० ३३७। व्ह अण्डार।

३६६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५० । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ३३४ । 🖝 मण्डार ।

विशेष-इसी मण्डार में २ प्रतियां (वे॰ सं॰ ३३३, ३३४) और हैं।

३६६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६२ । ले० काल 🔀 । वै० सं० १७०७ । ट मण्डार ।

३६६४. धर्मेपरीचारास—ज० जिनदासः। पत्र सं∘ १सः। झा० ११८४४६ दश्चः। माषा–हिन्तीः। विषय–समीक्षा। र०कान ४ । ते०काल सं०१६०२ फाछुरा सुवी ११ । ध्रपूर्ण। वे० सं०६७३। इस सब्धारः।

विशेष-- १६ व १७वां पत्र नही है। श्रन्तिम १८वें प्रम्न पर जीराविस स्तोत्र हैं।

बादिभाग---

धर्म जिल्लेसर २ नमूं ते सार, तीर्णंकर जे पनरमु वांक्षित फल बहू दान दातार, सारदा स्वामिति वली तवुं बुविसार,



युक्त देउमाता श्रीगराधर स्वामी नमसवरूंश्री सकलकीर्ता भवतार, युनि भवनकीर्ता पाय प्रसामन कहिसूं रासहं सार ॥१॥

हुहा--- धरम परीक्षाकरूं निकमली प्रवीयण सुता तहांसार। केह्य जिल्लासा कहि निरमंत्र जिम जांता विचार।।२॥ कनक स्तन मासिक मादि परीक्षा करी लीजियार।

तिम धरम परीबीइ सत्य लीजि भवतार ॥३॥

भन्तिम प्रवस्ति —

श्री सकलकोरतियुद्धप्रशामि मुनिभवनकीरतिभवतार ।

श्री जिल्लास अस्तिक ब्रदु रासकीउ सिक्वार ।।६०।।

धरमपरीकारासनिरमञ्ज धरमतणुं निपान ।

पिं प्रसिष्ठ वे सांभनि तेहनि उरित मित बान ।।६१॥

इति धर्मपरीका रास समाप्तः

संबद् १६०२ वर्षे काष्ट्रण सुद्धी ११ विने सूरतस्थाने श्री शीतलनाथ चैत्यालये ब्रावार्य श्री विनयकीर्ताः पंडित मेचराजकेन लिखितं स्वयमिदं।

३६६६. घमेंपरीकाभाषा''''''। पत्र सं०६ से ४०। ब्रा० ११४८ इ'च। भाषा-हिन्दी । विषय⊷ समीका। र०काल ४ | मै०काल ४ | सपूर्ण। वै० सं०३३२ | क्रमण्डार।

२६६७. मुलंके लक्ष्यः*****। पत्र सं०२ । प्रा०११८ ६ इंच । भाषा-संस्कृत ः विषय-स्क्रम्यस्य । र०काल×। ले०काल×। पूर्णः । वे०सं०५७६ । क्र.भण्डारः।

दे६६६ रक्तपरीचा—रामकवि । पत्र सं०१७ । प्रा०११४४३ इ'च । माया-हिल्दी । विग्रत-सक्तस्स कन्या र०कला× । ले०काल × । पूर्णादेश सं०११० । छ मण्डार ।

इन्द्रपुरी में बानि के क्रिसी जु भामारांव ॥६१॥

विशेष---इन्द्रपुरी में प्रतिलिपि हुई थी।

श्रारम्भ - पुरु गणुपति सरक्वित समरि याते वध हे हुदि । सरस्कुदि जेवह रचो रतन परोझा सुधि ॥१॥ रतन दीपिका ग्रन्थ में रतन परिख्या जान । सबुद वेच परताप ते भाषा वरनो धानि ॥३॥ स्तिस्म - स्त्य परीख्या रंगसु कीन्त्री राम कॉव्ट । ३६६६. रसमञ्जातिका —टीकाकार गोपालसङ्घापत्र सं०१२ । सा० ११४५ इ'व । यावा⊸ संरक्षतः। विषय-लक्षणसन्य । र०काल × । ते० काल × । सपूर्णः। वे० सं० २०१३ । ट जम्हारः।

विषीष---१२ से भागे पत्र नहीं है।

३६७०. रसमञ्जरी—भानुदत्तनिश्रः।पत्र सं०१७ । झा०१२४१३ (दंवा प्राया—संस्कृतः।विवय– सक्षत्रायन्य ।र० काल × ।ते० काल सं०१⊏२७ पीय सुदी १ । दुर्सा | वे० तं० ६४१ । इस सम्बारः ।

३६७१. प्रति सं०२ । पत्र सं०३७ । ते० काल सं० १९३४ झालोज सुधी १३ । वे० सं०२६६ । आ भण्डार ।

३६७२. वकाश्रोतासक्याः'''''''''' पत्र संग्रह । प्राग्दर्श्वर इक्षाः प्रापा-हिन्दी । विषय-नक्षस्य यन्य । रंग्यताल × । तेण्याल × । पूर्वाविक शंग्दर । यह सम्बद्धार ।

३६७३ प्रति संट २। एव सं० ५। ले० काल 🗶 । वै० सं० ६४३ । 🐞 भण्डार ।

६६७४. वकाश्रोतासाम्र्याः.....। तत्र सं० ४ । सा० १२४४ इ.स. । साथा-संस्कृतः । विषय-सक्तरः ग्रन्थ । रं०काल ४ । ले०काल ४ । यूर्णा । वै० सं० ६४४ | इ. अध्यारः ।

३६७४. प्रति सं०२। पत्र सं०४। ते० काल 🗶 । वे० सं० ६४४ । क अण्डार ।

२६७६. न्युक्तारितिकरू—स्ट्रभष्ट् । यत्र सं०२४ । धा०१२६/४५ दक्षा । आया-संस्कृत । विश्वय-सक्षय सन्य । र० काल x । ले० काल x । धपूर्ल । वे० सं०६२६ । क्यू प्रव्यार ।

है६७७. न्द्रज्ञारतिलकः—कालियास । पत्र सं०२। प्रा०१२४६ देखा । आया-संस्कृत । विषय-लक्षसम्बन्धः । र०काल imes । ले० काल सं०१८६७ । पूर्णः । है० सं०११४१ । व्या सम्बग्धः ।

इति भी कालियास इती श्रृङ्गारतिलंक संपूर्णम्

प्रवास्ति— संवत्सरे ससीनकबस्वेंदु मिते प्रसादगुरी १६ त्रवोदस्यां पंडितजी भी हीरानन्दजी तस्त्रिष्य पंडितजी भी चोजचन्दजी तन्त्रिथ्य पंडित विनयवताजिनदावेन लिपोक्स्तं । सूरामसजी या स्नाका ।।



विषय - फागु रासा एवं वेति साहित्य

३६७६. श्रञ्जनारास—रांतिकुराला। पत्र सं∘ १२ से २७ । घा०१०४४ दे दक्षाभाषा–हिन्दी। विषय—क्या। र०काल सं०१६६७ माहमुदी २ । ले०काल सं०१६७६ । घरूर्णा| वे०सं०२ । स्र मण्डार।

विशेष--- प्रतिस प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

रास रच्यू सती सक्कता मह जूनी चउन्हें जोहें रे।
स्रविकुं उद्युटं ले कहां मुख निष्या दोकड होई रे।
संवत् सोलइ सतइ सिंट माहा ग्रुदि नी बीज बलाणु रे।
सोवन गिरिरास माश्रीउ जह सोलड पुरु जाणु रे।
तय गछ नायक ग्रुण निलड विजय मेन सूरी सरगाजद रे।
सात पवाहिण सीच्या जाणे विज वेव सूरी पर छाजह रे।
सात पवाहिण दीच्छ जस महिमा कौरित मिरवस ।
सात प्रेमलदे डीर सरमा देव कह पाटलो स्वत्ति दें।।
विजयकुष्यल पहिल वरू परगारी ग्रुण्डिट रे।
वरण कमल सेवा सही शांतिकुसल दम रास करिड रे।।
स्रविचलकीरित सक्कता जा रिव सस हीडह साहास रे।
पढ़े ग्रुण्डि जे सामनह रहि लक्षिमी तम घर पासह रे।।

३६=०. च्यादीश्वरफारा— इसानभूषणः । पत्र सं∘४० । सा० ११×४ इंच । साथा–हिन्दी । विषय-फाष्ठ (भगवान प्रारिताय का वर्षीत है) । र०कान × । ने०कान सं० १४६२ वैद्याख मुदी १० । पूर्णः । वे०सं० ७१ । इक मच्चार ।

विशेष—श्री मूलसंवे भट्टारिक श्री ज्ञानभूषण् खुक्तिका बाई कल्याग्यसती कर्मक्षयार्थं लिक्तितं । ३६८६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ से ५ । ले० काल × । वे० सं० ७२ । स्वा अव्हार ।

३६=२. कमैशकृतिविधानरास—बनारसीदास । पत्र सं० १६ । ग्रा० ६४४ इंच । भाषा-हिन्दी । विवय-राता । र० काल सं० १७०० । ले० काल सं० १७६४ । प्रूर्ण । वे० सं० १६२७ । ट मण्डार । ३६=३. चन्द्रनवाक्षारासः^{......} पत्र सं० २ । ब्रा० ६३,४४३ इ'च । माया-हिन्दी । निषय-सती चन्द्रनवाला की कथा है। र० काल × । ने० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१६४ । द्वा सण्डार ।

३६८४. चन्द्रलेहारास-सतिकुराल । पत्र सं० २८ । झा० १०×४ इंच । आषा-हिन्दी । विषय-रासा (चन्द्रलेसा की क्या है) र० काल सं० १७२८ झानोच बुदी १० । ले० काल सं० १८२६ झासोज मुदी । पूर्ण । वै० सं० २१७१ । इस अच्छार ।

विशेष—श्वक्वरावाद में प्रतिनिधि की गयी थी। दक्षा जीवों सीवों तथा लिपि विकृत एवं समुद्ध है। प्रारम्भिक २ पण पत्र फटा हमा होने के कारण नहीं लिखे गये हैं।

> मामाइक सुधा करो, त्रिकरण सुद्ध तिकाल। सत्रु मित्र समतायशि, तिमतुटै जग जाल । ३।। मरूदेवि भरवादि मुनि, करी समाइक सार। केवल कमला तिगा वरी, पाम्मो भवनी पार ॥४॥ सामाइक मन सुद्ध करी, पामी द्वांम पकता। तिथ ऊपरिन्दु सांमली, बंदलेहा बरित्र ॥५॥ वचन कला तेह वनिश्चे, सरसंघ रसाल । तीरो जारपु सक्त पड़सी, सोभलतां बुस्याल ।।६॥ संबत् सिद्धि कर मुनिससी जी वद बासू दसम विचार। श्री पश्रीयास मैं प्रेम सूं, एह रच्यी अधिकार ।।१२।। सरतर गरापति मुसकरूंजी, श्री जिन सुरिंद । बडवती जिम साखा खमनीजी, जो घू रजनीस दिएांद ।।१३।। स्युए। श्री स्युएकीरति वर्गाजी, वाचक पदवी धरंत । मंतयवासी चिर गयो जी, मतिवल्लम महंत ॥१४॥ प्रथमत सुसी भ्रति प्रेम स्युंबी, मतिकुसल कहै एम । सामाइक मन सुद्ध करो जी, जीव वए प्रश्नं लेहा जेम ।।१५।। रतनवक्षत्र गुरु सानिधम, ए कीयो प्रथम धम्यास । खसय चौबीस गाहा मछे जी, उग्रुगतीस ढाल उल्हास ।।१६॥ भरो ग्रुरी सुरी भावस्युं बी, गरुबातसा ग्रुस जेह । मन सुध जिनधर्म तें करें जी, त्री मुबन पति हुवै तेह ।।१.७।। सर्व गाया ६२४ । इति चन्त्रलेहारास संपूर्ण ॥

धन्तिम---

३६स्थः, जलागाक्ष्यारास—शानभूष्या । पत्र सं० २ । मा० १०⁸,४४३ इ'च । भाषा-हिन्दी सुजराती । विषय—राता । र० काल ४ । ले० काल ४ | दुर्ख | वे० सं० १६७ । ट मण्डार |

विशेष--- कल छानने की विधि का वर्शन रास के रूप में किया गया है।

्र ३६८६, धक्राशाक्षिमद्भरस—जिनराजसृरि । पत्र त० २६। बा० ७३४४३ इक्र । आपा नहिन्दी । विदय-राता । र० काल सं० १६७२ बालोज बुदी ६। ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १६४८ । का मण्डार ।

वियोष--- मृति इन्द्रविजयगरिए ने गिरपोर नगर मे प्रतिलिपि को थी।

३६८७. घर्मरासा******। पत्र सं०२ से २०। घा० ११४६ इ'व। भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म। र० काल ४। ले० काल ४ | प्रपूर्ण। वै० सं०१६४६। ट मण्डार।

विवोध---पहिला, खठा तथा २० से झागे के पत्र नहीं हैं।

३६८८. **नवकाररास**'''''' पत्र सं०२। झा०१०×४; दश्च। आपा-द्वित्वी । विषय-एामोकार सन्त्र महास्म्य वर्तान है। र० काल ×। ले० काल सं०१ दश्देश फायुण सुदी १२। पूर्गा ∤वे० मं०११०२। इस मध्यार।

३६६६. नेमिनाधरास—विजयदेवसूरि । पत्र सं० ४ । प्रा० १० \times ४३ इक्का । भारा-हिन्दी । विषय-रासा (प्रयान नेमिनाथ का वर्णन है) । र० काल \times । ले० काल सं० १६२६ पीप मुदी ५ । पूर्ण । १० सं० १०२६ । का भण्डार ।

विक्षेष--जयपुर में साहिबराम ने प्रतिलिपि की थी।

. **२६६०. नेमिनाथरास—ऋषि रामचन्द**ा पन सँ० **२। झा० ६**२,४४८, इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-रासा। र० काल x । ले० काल x । पूर्णा वे० सँ० २१४० । छा भण्डार । विषेष—मादिभाग—

सुबकारी सोरठ देते राज कीसन रेस मन मोहीलाल । बीपती नगरी दुवारकाए ।।१। समुख विजे तिहासून सेवा देजी राखी क्रेक ।

बहाराखी मानी जतीए ॥२॥

आरए जन(म)मीया धरिहन्त देव इह चीसट सारे। ज्यारी नेव में बात ब्रह्मचारी वावा समीए।।३।।

भन्तिम---

सिल अपर पत्र बालियो दीठो बीय सुत्रा में निवीड़रे। तिसा अनुसार माफक है, रिवि रामवं जी कीनी जोड रे ॥१३॥

इति लिखतु श्री थी उमाजीरी तन् सोवस्ती छोटाजीरी वेलीह सतु लीखतु पाली मदे। पाली में प्रतिक्रिप हुई वी।

३६६१. नेस्रीश्वरकाग— ब्रह्मरायसङ्घापत्र सं∘ ६ ते ७०। झार १४४ है इ'च। भाषा—हिन्दी। विषय—काष्ट्रार० काल ४। ले० काल ४। प्रपूर्ण। वे० सं० ३६३। इक मण्डार।

३६६२, यंचेत्रिद्वयरासः ""। तत्र सं०३। झा० १×४६ दंत्र। भाषा-हिन्दी। विषय-रासा (पौचीं इन्द्रियों के विषय का वर्णन हैं)। र० काल ×। तं० काल ×। पूर्ण। वै० सं०१३११। इस अप्रवार।

३६६३. प्रत्यविधानरास—अ० शुभ्यन्द्र् । पत्र सं० ४ । झा० द३४४३ इंच । माना– हन्ती । र विषय-रासा । र०काल ४ । ले०काल ४ | पूर्ण । वे० सं० ४४३ । क मण्डार ।

विशेष--पत्यविधानवत का वर्णन है।

३१६४. बंकजूलरास-जयकी सिं। पत्र सं०४ से १७। घा० १४४ इंच। जावा-हिन्दी। विवय-रासा (क्या)। र० काल सं०१६८४। ले० काल सं०१६१३ फाग्रुग्य बुदी १३। प्रपूर्ण। वै० सं०२०१२। ऋ भज्दार।

विशेष--प्रारम्भ के ३ पत्र मही है। प्रन्थ प्रशस्ति--

कवा द्वाणी बंकचूनती श्रीण्क भरी उल्लास । बीरिन वांबी भावमुं पुहुत राजमह वास ।१।। संवत सोल पच्चासीई पूर्जर देस मकार । करप्वलीपुर सोमती इन्ह्रपुरी धवतार ।।२।। नर्रावचपुरा वाणिक वसि बया धर्म मुस्कंच । चेरावित श्री वृज्यांव साथि भवीयण् वृंव ।।३।। काहासंच विचागणे श्री सोमकीत्त मही सोम । विजयसेन विजयांकर धवकीत्त महारामा विजयकर धवकीत्त महारामा विजयकर । रामस्वान महीमोदय चिश्चवनकीत्ति विजयात । रामसूचण महारासे वृज्यां वृज्ञां वृज्यां वृज्यां वृज्ञां वृज्ञां वृज्यां वृज्ञां वृज्यां वृज्ञां व

तस पहि सूरीवरमञ्ज जबकीति जवकार ।
वे सविस्ता प्रवि सांसती ते पाणी भवपार ।।१।।
रुपकुमर रलीया भागु बंकन्द्रल बीडु लाम ।
तेह रास रुप्यु स्वयु जबकीति मुल्लमाम ।।७।।
नीम भाग निर्मल हुई पुरुषको निर्दार ।
सांस्ततां मंगद मांत ये भागु नरतिनार ।।६।।
याद्यसायर नम्न महीचंद सूर जिनमास ।
जबकीति कहिता रहु बंकन्द्रलनु रास ।।१।।
इति बक्यसरास समातः ।

संबत् १६६३ वर्षे काष्ट्रण बुदी १३ पिपलाइ ग्रामे लक्षते भ्रष्टारक श्रीजयकीत्ति उपाच्याय श्रीवीरवंद इद्याशी असवेत बाइ कपुरायानीचास बद्धाशी जसवंत तक्षतं।

३६६४. अविष्यद्त्तरास—ब्रह्मरायमङ्ग । पत्र गं० २६ । प्रा॰ १२ \times द इक्का । माणा-हिन्दी । विषय— रासा-मविष्यदत्त की क्या है । र० काल सं॰ १६३३ कार्तिक मुदी १४ । ने० काल \times । पूर्या । वे० सं६६६ । इप्रमध्यार ।

३६६६. प्रति संट २। पत्र संट ६६ ! लेट काल संट १७८४ । वेट संट १६३० । ट मण्डार ।

> २६६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० १६६ । अक सम्बार । विशेष---पं० खाजूराम ने जयपुर में प्रतिसिधि की थी ।

्रतके सतिरिक्त स्व मण्डार में १ प्रति (वै० सं० १३२) छ प्रण्डार में १ प्रति (वे० सं० १६१) तथा अक्र मण्डार में १ प्रति (वे० सं० १२५) और है।

३६६८. रुकमिणीविवाहवेति (कृष्णुरुकमिणीवेति)—पुण्वीराज राठौड । पत्र स० ४१ से १२१ । घा० ६४६ रंच । जावा-हिन्दी । विवय-वेति । र० काल सं० १६२८ । ले० काल सं० १७११ चैत्र बुदी ४ । सनुर्णा । वे० सं० १६४ । सा अण्यार ।

वियोष——देविगरी में महात्मा जगन्नाथ ने प्रतिनिधि की थी। ६३० पता है। हिन्दी गया में टीका भी दी इर्द है। ११२ फुट ने आगो भ्रन्य पाठ है। वे६६६. शीक्षरासा—विजयदेव सूरि। पत्र ।संक्ष्मिक क्षां धार्मिक क्ष्रिपे हं व । आया-हिन्दी। विवय-रामा। र० काल ×। सेहा,काल,संकृत १६३७,काळ्य पुषी,कोर्चा केकार्यक कीक्षक । स्नायपटार।

संबद् १६२७ वर्षे सामुक्तान्त्रहोत् देश-सुववादेशीवस्तरंत्रवक्ते साम्बद्धीर सीप्तान्तरत्त्रसूरि शिव्य पं० नंदिरंग विश्वतं । उसर्वेसंसंय वासेचाः गोळेनाः क्षीराप्तुनोत्त्रजनकु वासिकस्थानीयान्त्रवासीयान्त्रस्थानीयाः

सन्तिम पाठ निम्ब सर्वाह है किए ए प्राप्त का कर कर कर कर कि है।

े क्षेत्र स्त्र स्त्र है के क्षेत्र के कार्य स्त्राहरू सुर्वस्थित, कार्य है के कार्य कार्य

्र र्राप्तः ३३४७ - ४७७<mark>पीमः पूरीनीहरू:निव्रक्तः भाव</mark>प्राप्ति

कार्यक तथ क्षा मार्थक **, हमामत अग्रहामां कार्य**

्रां प्रस्तरक नेमि **तस्य निय नेस्ट मोडि ।**र्य

परिण सानि हरत याचक **दक्कावीनका** हुन

्र स्टाइट को उट्**रक विद्या पुरस् महानिशास्त्रिकार ।**

ा रास पारश्य मा **त्रिकेतीय हुन्हा, इतिसके समीत** १६३३ व

। असे अवस्थितम्बन्धनारम्बन्धः स

क्षा १००८ । १९ व्यक्तिस्मितः प्राय प्राप्ते साम्प्रतासाम् नित्रा के लहत क्रेक्स मार्गः १००५ । विकल हो यो सुभा पातक सीई, जिम जिन भाष्यद ते सही ॥

t Mark

- . np:h

२१२२ २२ १ १९४१, १८ १ द्वरित् पुरुष कुल्यासहरक दृष्टि न्वेषि स्वताहरका द्वरिकार होत्रा ४०४६

१ प्रत्याच्यासम्बर्ग व्यक्तिम् त्राह्मा विनुद्धः क्षी विष्णुद्धेन्द्रशक्कि स्टब्ट् वा कार ४०० व्यक्ति

-४०४. मुक्तात्रक्वासीरास्त्र-॥ <mark>उसार्याक्षस्मात्रक्वार्यः स्वित्रवीक्ष्म</mark>ात्रकार्यः १ - १ - १ - १११ -

्र प्रकार । १ क्रिक्ट प्रतिकृतिक के असम विकार स्थार के । सिंक स्वेत्रक से क्ष्म क्षमान्त्रक सुन्धार का के के के कि है के के हैं हैं। विकार स्वाप्त के कि स्वाप्त के कि स्वाप्त के कि स्वाप्त के स्वाप

३७०० स्टश्स्तस्य - स्या राज्यहा १९६० **ी फिन्ह गिलिहीस्ट १ मिल्ल** । रिर्म

क्षा ११४ व्हालाक्ष्य के भावता तीन क्षा विकास की कार कि विकास कि विकास कि विकास कि विकास कि विकास की क

३७०२. श्रीपासरास — किलावंगाया । पत्र सं० १०। श्रा० १०×४३ रंग । शाया-हिन्दी । विवेधी-विर् रासा (श्रीपास रासा की कवा है)। र० काल संविद्धिक देशिकी दुसा १३ । श्रीपास रासा की कवा है)। र० काल संविद्धिक किलावं रेशिक केला ४ । पूर्णा । वे० संव ह३०। व्याक्तक १९६० रंगा १९ किलावंगाया किलावंगाया किलावंगाया किलावंगाया केलावंगाया किलावंगाया किलावंगाया किलावंगाया

विशेष--बादि एवं बन्त माग निम्न प्रकार है--

H HERL



श्रीजिताम नमः ।। दाल सिंधनी ।।

सडसीसे प्रशाह किएएरा, जास वसावह नवनिषि पाव । सुबदेवा चरि रिदय मफारि, कहिस्तु नवपदनउ प्रविकार ।। मंत्र जन खद कदर क्रमेक, चिरिए नवकार समज नहीं एक । सिंद्धप्रक-नवदय सुपसाबह, सुस्त पान्यां श्रीपाल नररायह ।। स्राविस्त तप नव पद संजोग, गासित तरीर वयो नीरोण । तास वरित कहुं हित प्राह्मी, नुस्तुक्यों नरनारी मुक वाणी ।।

श्चलिस---

श्रीपाल बरिष निहासनह, सिक्ष्यक नवपद धारि ।
ध्यार्वयह तठ सुक पार्देधरं, जगना जस विस्तार ॥५६॥
श्री गखकरतर पति प्रगट श्री जिनवन्द्र सरोग ।
गरिष बांति हरव बाबक तर्हो, कहर जिनहरव मुशीस ॥५६॥
सबरें बबालीसे समें, बदि चैत्र नेरसि जारा ।
ए रास पाटण मां रच्यो, मुखता सवा करवाला ॥५७॥
इति श्रीपाल रास संपूर्त । पढ मं॰ २६७ है।

३७०३. प्रति संट २ । पत्र सं० १७ । ले॰ काल सं॰ १७७२ भावता बुदी १३ । वै॰ सं॰ ७२२ । इस सम्बार ।

२७०४. षट्लेर**सावेकि---साह लोहट**। पत्र सं० २२ । घा० वर्द्×४३ हंब । माया--ंहन्ता । विषय--सिद्यात । र० काल सं० १७२० घासोज सुदी ६। ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० व० । यह मण्डार ।

२००४. सुकुमालस्वामीरास— ज्रह्म जिनदास । पत्र सं०२४ । घा० १०३८४४ ई. इ. व. भाषा— हिन्दी ग्रुजराती । विषय—राखा (सुकुमाल सुनि का वर्सन)। ने० काल सं०१६३४ । पूर्णा । ३० सं३६६ । आर्थास्वार । भाषार ।

२००६. सुरशंतरास— जहारायसङ्का । पत्र सं० १२ । सा० १२४६ इका । भाषा—हिन्दी । विषय— राता (तेठ सुरर्शन का अर्थोत् है) । र० काल सं० १६२६ । ते० काल सं० १७४६ । पूर्ण । २० सं० १०४६ । इस सम्बद्धाः ।

विशेष---साह लालचन्य कासलीबाल ने प्रक्रिलिपि की थी।

३७०७. प्रति सं०२ । पत्र सं०३१ । ते० काल सं०१७६२ सावरण सुदी १०। वे० सं०१०६ वृद्धार्थ ऋ अच्छार । २७०८. सुभौसयकवर्षिरास—महाजितदास । यत्र सं० १२ । यः० १०३ \times १ रक्ष । भाषा-दिन्यै । विषय-कवा । २० काल \times । ते० कार्क्ष \times । पूर्वि । विषय-कवा । २० काल \times । ते० कार्क्ष \times । पूर्वि । विषय-कवा । २० काल \times

२७०६. हमीररासो—यहेरा कवि । पत्र संब धन । घा० ६४६ इक्ष । प्राथा—हिल्ली । विषय-रास। (ऐतिहासिक) । र० काल \times । ते० काल संब १६६६ घासोज युवी ३ । ब्रपूर्ण । वे० संब १०४ । क कच्चार ।



विषय- गरियत-शास्त्र

MY SEET LESS IT BE

ारण्य २०१०: त्रियतिनामयांस्य — इरदर्षः । पत्र सै० १४ । या० १२%४ इंच । मार्चा-संस्कृत । विचय-विस्तिवसस्य । २० कास X | ते० कास X | पूर्ण । वे० सं० ४० । स मण्डार ।

३७११. ग्राधितवास्त्र \cdots । पत्र सं० ६१। आ० ६ \times ३ $\frac{3}{6}$ इक्षः आवा-संस्कृतः। विवय-गिरातः। रक्षातः \times । प्रेन कालः \times । पूर्णः। वे० सं० ७६। च अच्छारः।

१७१२. ग्रायितसार—हेमराज। पत्र सं०४। मा० १२४८ इक्का आवा-हिन्दी। विषय-गरिएत। र०काल ४। के०काल ४। प्रपूर्ण। वे० स० २२२१। इस अध्वार।

विवोध-हाबिये पर मुन्दर बेलबूटे हैं। पत्र जीर्रा है तथा बीच मे एक पत्र नहीं है।

३७१३. पट्टी पहार्कों की पुस्तक ****** | पत्र सं० ४७। मा० २४६ इझः । आला-हिन्दी । विषय-गिश्यत । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२८ । ट अध्यार ।

विश्व — आरम्भ के पत्रों में लेतों को डोरी बादि झालकर नापने की विश्व दी है। पुनः गत्र १ में ३ तक । सीचो बर्फा समान्नावः । बादि की पांचो भेषियो (पुरिको) का वर्णन है। पत्र ४ में १० तक वालिक्य नीति के स्लोक हैं। पत्र १० से ३१ तक पहाड़े हैं। किसी हैं हाइ प्रदेश के पूरे मुजाबित पद्य है। ३१ में ३६ तक तीन नार के ब्राह बिये हुये हैं। किसन पाठ कीर है।

१. हरिनाममाला-राक्रराचार्य । संस्कृतक के तक।

गोकुलगांवकी सीका— हिन्दी पत्र ४५ तक।

विशेष-- कृष्ण ऊधव का वर्गान .

३. सप्तरतोकीगीता---

पत्र ४६ तक।

४. स्नेडबीसा---

पत्र ४७

(भ्रदुर्ग)

३७१४. राज्युप्रमासुगः....। पत्र सं०२। याः ०३,४४ इखाः भाषा-हिल्दीः विषय गिस्तिकास्त्रः। ४० काल ×ा से० काल ×ापूर्णावे० सं०१४२०। ध्या मध्यारः।

३०१४. स्रीलायतीआया—सोहनसिक्ष । पत्र सं० ८ । सा० ११४६ इ.च. ग्रामा न्हिन्ती । विवय-वस्तितवास्त्र । र० काल सं० १७१४ । न० काल सं० १८३६ फाइस्स बुदी ६ । पूर्ता । वे॰ सं० ६४० । इस अध्वार । विकेष—लेकक प्रवस्ति पूर्स है ३७१६. जीजावतीभाषा-च्यास सञ्चरादास । पत्र सं०३। ग्रा०१८४६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-गण्तिवासत्र । र० काल × । ते० काल × । मुद्रर्थ । के सं० ६४१ । क जच्चार ।

३७१७. प्रति सं०२ । पत्र सं० ५४ । ले० काल × । वे० सं० १४४ । का मण्डार ।

२७१८-. लीलावतीआपा''''''''। पत्र सं०१३ । मा०१२४८ इका। भाषा-हिन्दी। विषय-गरिएत । २०काल × । ले०काल × । मुप्तर्ग । वे०सं०६७१ । चामच्यार ।

३७१६. प्रति सं० २। पत्र सं० २७। ले॰ काल 🗙 । मपूर्ण । वे० सं० १६४२ । ट भण्डार ।

२७२०. लीलावती---भारकराचार्य । पत्र सं∘ १७६ ! बा॰ ११३×५ इ'च । माग-संस्कृत । विषय-गरिएत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३९७ । इस मण्डार ।

विशेष-प्रित संस्कृत टीका सहित सुन्दर एवं नवीन है।

२०२१. प्रतिसं०२ । पत्र सं०४ १ । ले०काल सं०१ ६२२ भारवा बुदी २ । दे०सं० १७० । स्व भण्डार ।

विभेष--- महाराजा जगतसिंह के शासनकाल में मारणकचन्द के पुत्र मनोरषराम सेठी ने हिण्डोन में प्रति-लिपि की थी।

> २ ७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४४ । ले० काल × । वे० सं० २२६ । च मण्डार । विशेष — इसी भण्डार में ४ प्रतिमा (वे० सं० २२४ से २२७ तक) ग्रीर हैं । २ ७२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ते० काल सं० १७६४ । वे० सं० २१६ । म्ह मण्डार । विशेष — इसी भण्डार में २ सपूर्ण प्रतिमां (वे० सं० २२०, २२१) और हैं | २ ७२४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ १ । ते० काल × । सपूर्ण । वे० सं० १६६३ । ट मण्डार ।



विषय- इतिहास

३७२४, **आवार्वों का क्वीरा**''''''। पत्र सं० ६। झा० १२३×४३ इंच । आषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । ते० काल सं० १७१६ । पूर्ण । वे० सं० २६० । स्न अण्डार ।

विकोध-सम्बातन्त सौगाणी ने प्रतिलिपि की थी। इसी बेपन मे १ प्रति घौर है।

्वेश्व२६, स्रंडेलाबालोत्पत्तिवर्शानः \cdots । पत्र सं० ८। आ००४४ दश्च। भाषा-हिन्दी। विषय-द्वितहास । र०काल \times । ने०काल \times । पूर्ण। वे०सं० १४। का भण्डार ।

विशेष--- ५४ गोत्रो के नाम भी दिये हुये हैं।

३७२७. गुविबतीवर्षीन ******। यत सं०५। सा० ६४४ इ'च। भाषा-किन्दी । विगय-इर्तिहास । र०काल × । सं०काल × । पूर्णी वै०सं०५३०। स्त्र भण्डार ।

२७२६. चौरासीजाति की जयमाल—विनोदीलाल । पत्र तः २ । प्रा०११८५ रखा । आषा— हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल सं०१ चध्ये पीव बुरी २ । पूर्ण । वे० सं०२८१ । छू भण्डार ।

२७५०. **स्रुटा च्यारा का विस्तार**। पत्र सं०२। झा०१०१.८४ इ**डा**। भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल ×। ते० काल ×। पूर्णी वै० सं०२१०६। इत्र भण्डार।

३७३१. जयपुर का प्राचीन ऐतिहासिक वयान***** । पत्र सं० १२७। घा० ६४६ इंच । आधा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० कास ४ । ले० कास ४ । स्मूर्ण । वे० सं० १६२६ । ट अण्डार ।

विशेष--रामगढ सवाईमाधापुर भावि वसाने का पूर्ण विवरम् है।

३७३२. जैनवद्री मुडवद्री की यात्रा—अठ छुरेन्द्रकीिसि । पत्र सं०४ । प्रा० १०३४५ इ'च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ३०० । ह्य भण्डार ।

२०६२. तीर्थक्करपरिचयः*****। यन सं० ४। मा० १२×१.५ इ.च । भाषा-हिन्यां । विषय-इतिहास । र० काल × । संपूर्ण । वे० सं० ६४० । का मध्यार ।

२७२४. तीर्थक्करों का अन्तरालः "" पत्र सं० १। प्रा० ११×४२ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल सं० १७२४ प्रासोज सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० २१४२। आह्र अण्डार। २७३४. बृद्वशासकी। यम सं० १। ता० १०% ३ इ'व । नामा-हिन्ती । विषय-इतिहास । र०कान × । ते० काल × । यूर्ण । वे० सं० १३६४ । इस सम्बार ।

बाहुजी दशाल पण्ट नरीब मसकीन ठाट ।

जुगलबाई निराट निरास्सी बिराज ही ।।

बबानीस कर पाक जसी चावी प्राच टाक ।

बडो हू पोपाल ताक गुख्डारे राजहीं ।।
सांधानेर रजबनु देवल दशाल दास ।

पडसी कडाला बसे घरम कीमा जहीं ।।

रैंड वैंडू जनदास तेजानन्द जीधपुर ।

मोहन सु अवलीक धासोपीन वाज ही ।।

गुनर ने नाभोदास विदाध में हरिसिंह ।

चतरदास सिध्यावट कीयो तनकाज ही ॥

विहासी पिरागदास डीडवाने है प्रसिद्ध ।
सुन्दरदास दू सरसू फतेहपुर छाजही ।।
वाबो वनवारी हरदास दोऊ रतीय मैं।

साधु एक मांडोडी मैं नीकै नित्य छाजही ।। सुंदर प्रहलाद दास घाटडेसु छोड़ माहि ।

पूरव चतरश्चन रामपुर छाजही ॥ १॥ निराणदास माडास्थौ सडांग मोहि ।

इकलीद रसातभंतर डाढ चरसादास जानियो ।।

हाडौती गेसाइ जार्सै सालूजी सबस बये | जयोजी भड़ौंच सध्य प्रचाधारी मानियौ ।।

लालदास वायकसो पीरान पटलादास। फोफली मेवाद मोहि टीलोजी प्रमानियो।।

साधु परमानंद इदोखली में रहे जाय। जैमल चुहाएं। भलो सालड हरगानियो ।।

जैमल जोयो कुछाहो बनमानी चोकन्यीस । सांभर भजन स्रो बितान तानियी ।।

मोहन दफतरीस मारोठ चिताई भने । रुवनाय मेडतैस् भावकर ग्रानियौ ।। कालैंडहरै चत्रदास टीकोदास नांगल मैं। भोटवाडै भाभूमांभू लच्च गोपाल धानियौ ।) श्रांबावती जगनाथ राहोरी जनगोपाल। बाराहदरी संतदास चावस्थलु भानियौ।। मांधी में गरीबदास भानगढ माधव कै। मोहन मेवाड़ा जोग साधन सौ रहे है।। टहटदै मैं नागर निजाम हु भजन कियो। दास जग जीवन दौसा हर लहे है। मोहन दरियायीसो सम नागरचाल मध्य । बोकडास संत जुहि गोलगिर भये है।। चैनराम कांग्रौता मे गोदेर कपलमुनि। स्यामदास भालाएगीस चोड के मे ठये है ।। सौंक्या लाखा नरहर भन्दे भजन कर। महाजन खंडेलवाल दादू गुर गहे है।। पूरणदास ताराचन्द म्हाजन सुम्हेर वाली । शांधी में भजन कर काम क्रोध दहे है।। रामदास राखीबाई क्रांजल्या प्रगट भई। म्हाजन डिगाइबस् जाति बोल सहे है।। बावन ही थांभा घर बावन ही महंत ग्राम। दादूपंथी वत्रदास सूने जैसे कहे हैं।। ३।। जै नमी ग्रुर दादू परमातम श्रादू सब संतन के हितकारी। मैं भाषो सर्रान तुम्हारी ।। टेक ।। जै निरालंब निरवाना हम संत ते जाना। संतनि को सरना दीजै, अब मोहि अपनु कर लीजै ।।१।। सबके अंतरयामी, अब करी कृपा मोरे स्वामी अवगति अबनासी देवा, दे चरन कवल की सेवा ॥२॥ जै दादू दीन दयाला काढो जग जंजाला ।

सतिबत प्रानंद में बासा, गावे वसतावरदासा ।।३।।

सोरठ--

राग रामगरी---

सैने पीव क्यू 'पास्ये, मन वंचल मार्ड । सांस मीच मूनी भया मंद्री गढ कार्ड ।।टेका। छापा तिसक बनाय करि नांचे प्रच गांचे । सापल तो समर्थे नहीं, सीरां समकार्व ।।१॥ यगति करे पासंड की, कराश का काचा । कहे कबीर हरि क्यू मिले, हिरदे नहीं साचा ।।२॥

३७३६. देहली के बादशाढों का क्यौरा"''''' पत्र सं० १६ । मा० ५३×४ ६ क्या । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० लं० २६ । का जण्डार

३७३७. पक्काधिकार****** । पत्र संग्रह्मा १९४४३ है इक्का । जाया-संस्कृत । विवय-इतिहास । राज्यान ४ । तेरुकाल ४ । स्रपूर्ण । वेरुसंग्रहिस्स । टामस्वार ।

विशेष--जिनसेन कृत धवल टीका तक का प्रारम्भ से भाषायाँ का ऐतिहासिक वर्रान है।

३७३८. पट्टावली \cdots ः। पत्र मं॰ १२ । आः ० \times ६६ इक्कः । साथा-हिन्दी । विषय-हितहालः । र० काल \times । ले॰ काल \times । पूर्ण । वे॰ सं॰ ३३० । सुरु सण्डार ।

३.७३६. पहाविकि'''''''। पन सं० ४ । प्रा० १०३,४५ दश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इलिहास । र० काल × । ते० काल × । बपूरा । वे० सं० २३३ । ह्रा भण्यार ।

विशेष---सं० ८४० तक होने वाले भट्टारकों का नामोल्लेख है।

३७४०, पहाबक्ति''''''। पत्र सं∗२ । घा० ११३,४५३ इखा। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । सपूर्ता । वै० तै० १५७ । इत्र भण्यार ।

विश्वेष---प्रथम चौरासी नातियों के नाम है। पीछे संवत् १७६६ में नागौर के गच्छ से प्रजमेर का गच्छ निकता उसके महारकों के नाम दिये हुये हैं। सं० १५७२ में नागौर से प्रजमेर का गच्छ निकता। उसके सं० १०४२ तक होने वाले महारकों के नाम दिये हुये हैं।

३०४१, प्रतिष्ठाकुंक्रमपत्रिकाः.....। पत्र सं०१ । धा० २४४६ इत्राः नाषा-संस्तृतः | विषय-इतिहास । र०काल × । से०काल × । पूर्वः । वै० सै०१४५ । क्वा पण्यारः । विभेत-सं० १९२७ फाप्तन मास का कुंकुंग्यन विपलोन की प्रतिहा का है। पत्र कास्तिक दुवी १३ का निका है। इसके साथ सं० १९३९ की कुंकुमपत्रिका छवी हुई शिलर सम्मेद की धीर है।

३०४८२. प्रतिष्ठानामावितः """। पत्र तं० २० । स्रा० १४७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल × । ते०काल × । पूर्ती । वै० सै० १४३ । छ घण्डार ।

३७४३. प्रति सं०२। पत्र सं०१०। ले० काल 🗴 । वे० सं०१४३ । छ भण्डार ।

६ विश्वप्रस्त व्यवास्कारमञ्जूष्योवित्ति******* । पत्र सं०३ । प्रा०११२,४४३ दश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-इतिहास । र०कास × । कं०कास × । पूर्ण । वे०सं०२०६ । ऋ भण्डार ।

२०४८ स. अष्ट्रारक पट्टावित । पत्र सं०१। मा०११×४३ इ.स.। भाषा-िरन्दी । विषय-इतिहास । र०कास \times । वर्ष । वे० सं०१ ०३०। मा अण्डार ।

विशेष--सं० १७७० तक की अट्टारक पट्टावलि दी हुई है।

३७४६, प्रति सं २ । पत्र सं ० ६ । ले० काल × । वे० सं० ११८ । ज भण्डार ।

विशेष-संवत् १-८० तक होने वाले भट्टारको के नाम दिये है।

२०४०, बान्नावर्षानः*****। विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल × । सपूर्य । वै० सं० ६१४ । क प्रण्डार ।

३७४१. रथयात्राप्रभाव---क्रमोलकवंदापत्र सं०३ । बा० १०३४४. टवा भाषा-सस्कृता। विषय-इतिहास । र०काल ४ । से०काल ४ । पूर्णावे० सं०१३० मा क्यू भण्डार ।

विशेष---जयपुर की रथयात्रा का वर्रान है।

११३ पदा हैं- सन्तिम--

एकोर्नाविकातिकाते सहावर्षे मासस्यपञ्चमी दिनेसितः कान्युनस्य श्रीमज्जिनेन्द्र वर मुर्जरशस्याशः मेलायवं अम्बद्र प्रकटे वभूव ।।११२॥

> रथयात्राप्तकायोऽयं कथितो हष्टपूर्वकः नाम्ना मौलिक्यवन्द्रे ए साहागोत्रे या संमुदा ॥११३॥ ।। इति रययात्रा त्रभाव समाता ॥ शुभं जवात ॥

२०४२. राजमस्तिः पन सं० १। मा० १ \times ४५ इ'व। मावा-संस्कृत । विषय-इतिहास । २०काल \times । के०काल \times । मपूर्ण । के० सं० १०१५। का यण्डार ।

विशेष-वो प्रशस्ति (मपूर्ण) हैं ग्रजिका भावक वनिता के विशेषण दिये हुए है ।

1 3.08

३०४३. विक्षप्तिपत्र— हंसराज्ञा । पत्र सं०१ । बा० द×६ ६ वां भाषा—हिन्दी । विषय–इतिहास । र०काल × । ले०कास सं०१ ००७ फाग्रन सरी १३ । पूर्ण । वै० गं० ४३ । उद्ग बग्बार ।

विशेष---भोपाल निवासी हंसराज ने अधपुर के जैन पंचों के नाम अपना विक्रासिपण व प्रतिक्रा-स्य लिखा है। प्रारम्भ---

स्विन्ति भी सवाई जवपुर का सकल पंच साथनीं बड़ी पंचायत तथा खोटी पंचायत का सथा दीवानजी साहिब का मन्दिर सम्बन्धी पंचायत का पण धादि समन्त साथनीं भाइयन को भोपाल का वासी हंसराज की या विज्ञति है सो नीका धवधारत कीन्यो । इतमें जवपुर के जैनो का सच्छा वर्णन है। समरवन्यजी दीवाल का भी नामील्लेख है। इसमें प्रतिज्ञा पत्र (साखडी पत्र) भी है जिसमें हंसराज के स्थायमय जीवन पर प्रकाश पड़ता है। यह एक जन्म-पत्र की तरह गोल सिजटा हुधा लम्बा पत्र है। सं० १६०० फाग्रुन मुदो १३ ग्रुन्वर को प्रतिज्ञा ली गई उसी का पत्र है।

३७४४. शिलालेलसंबद्र"""। यत्र सं० ६ । बा० ११४७ इ'च । भाषा—संस्कृत । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । बपूर्णा | वै० सं० ६६१ । बद्र भण्डार ।

विशेष---निम्न लेखों का संग्रह है।

- १. चाल्य दंशोराश्र पुलकेशी का शिलालेख ।
- २. भद्रवाह प्रशस्ति
- ६. मिल्लवेश प्रशस्ति

३७४४. श्रायक उरपत्तिवर्धीन"""। घम तं० १ । प्रा० ११×२६ इ'च । माषा-हिन्दी । विवय-इतिहास । र०काल × । ते०काल × । पूर्ण । वै० तं० १९०६ । ट मण्डार ।

विशेष--वीरासी गौत्र, वंश तथा कुलदेवियों का वर्गान है।

२०४६. आवकों की चौरासी जातियां $\cdots \cdots |$ पत्र सं०१। भाषा-हिन्दी। विषय-पतिहास। ८० काल \times । ते० काल \times । पूर्व। वे० सं०७३१। यह अध्यार।

३०५०. आयकों को ७२ जातियां ∵ ***। पत्र सं∙२ । धा० १२×४३ इंज । भावा–संस्कृत हिल्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । से० काल × । पूर्ण । ने० सं०२०२६ । का मध्दार ।

विशेष--- जातियों के नाम निम्न प्रकार हैं।

 गोलारांवे २. गोलिंक्याड़े ३. गोलंगूचं ४. लंबेचु ४. जैसवाल ६. संडेलवाल ६. वर्षेलवाल ६. स्वगरवाल, ६. सहस्वाल, १०. ससरवाणोरबाड, ११. बोसलागोरबाड, १२. दुसरवाणोरबाड, १३. जांगडाणोरबाड, १४. परवार, १४. वरहीता, १६. जैसरपोरबाड, १७. सोरदीगोरबाड, १६. व्यावतीगोरंगा, १६. संबड, २०. चुकर २१. वाह्रस्तेत, २२. गहोह, २३. अस्त्रपा कात्री २४. सदास्त्र, २४. प्रजोध्यापुरी, २६. गोरवाड, २७. विद्यलस्वा, २४. क्रवेरा, २४. प्रजास, ३०. वोरवाड, ३४. अवेरवाल, ३४. हर सुत्ता, ३६. नेगडा, ३७. सहरीया, ३०. भोतोडा, ४१. नरसंगपुरा, ४२. नागदा, ४३. वाल, ४४. हुम्ह, ४४. रावक्वाडा, ४६. वरनोरा, ४७. दमग्रधावक, ४२. तंपपावक, ४८. हुम्पर, ४२. तावस्त्राडा, ४६. वरनोरा, ४७. दमग्रधावक, ४२. तंपपावक, ४६. हुम्पर, ४२. तत्वर, ४३. वयत, ४४. वलगारा, १४. कर्मधावक, १६. वरिकर्मआवक १७. वेसर १८. सुवेरज, १८. दस्त्री, १८. क्रवाडी, ६१. गंगरका, ६२. गुनपुर, ६३. तुलाधावक, ६५. कर्मणधावक, १४. हेवगाआवक, ६६. भोगाआवक ६७. सोमनधावक, ६८. वाउदाआवक, ६९. नंगवनीधावक, ७०. पर्णीर्भगा, ७१. वगोरिया, ७२. काक्नतीवाल,

नीट---हमड जाति को दो बार गिनाने से १ संख्या बढ गई है।

३७४८. श्रुतस्कंघ— त्र० हेसचन्द्र । पत्र सं०७ । सा० ११, ४४२ डंन । भाषा–प्राकृत । विषय– इतिहास । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । नै० सं० ४१ । ऋ मण्डार ।

२०४६. प्रति सं०२ । पत्र सं०१० । ले० वाल 🗴 । वे० सं• ७२६ । 🗷 भण्डार ।

२७६०. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल x l वे० सं० २१६१। ट भण्डार।

विशेष--पत्र ७ में झागे श्रुतावनार श्रीधर कृत भी है, पर पत्रों पर इक्षर मिट गये हैं।

् ३.५६१. श्रुताबतार—पं०श्रीधर्।पत्र सं० १। झा० १०×४३ इंव । भाषा–संस्कृत । विषय– इतिहास । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वै० सं० ३६ । इस भण्डार ।

२ ७६२. प्रतिसं०२ । पत्र सं०१०। ले० काल सं०१०६१ पोप मुद्रां१। त्रे० सं०२०१। ऋ भण्यार।

विशेष--वन्यालाल टोंग्या ने प्रतिलिपि की थी।

३७६३. प्रति संट ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ७०२ । इन भण्डार ।

३७६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १ । ले० काल 🗶 । अपूर्गा । वै० स० ३५१ । च भण्डार ।

२०६४. संघपश्वीसी-शानतराय । पत्र सं०६। प्रा०८-४६ इ.च. भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल सं०१८६६ । पूर्ण । वे०सं०२१३ । ज भण्डार ।

विशेष----निर्वागकाण्ड भाषा भैया भगवतीदास कृत भी है।

२७६६. सबरसरवर्णनः.....। पत्र सं० १ से ३७ । बा० १०३४४३ दख । भाषा-हिन्दी । विषय-रिवहास । र० काल × । ते० काल × । सपूर्ण । वे० सं० ७६५ | इन्सप्टार । ३७६७. रयूलशङ्ग का चौसासावर्धीय******। चान १०२४ इ.चेः। जाग-िलीः। विषय-इतिहास । र०काल × । ते०काल × । युर्णावै० वं० २११= । च्याचम्यार ।

ईडर आवा आवसी रे ए देशी

सावरा मास सहावरहो रे लाल जो पीउ होवे पास । घरन करूं घरे भावजो रे लाल हं छ ताहरी दास । बत्र नर भावो हम बर छा रै सुगस नर तू छ प्रास धाधार ।।१॥ भादवड़े पीउ वेगली रे लाल हं कीम करूं सरावारे। धरज कर्ल घर प्रावको रे लाल मोरा खंखत सार ११२०१ भासोजा नासनी चांदर्शी रैसाल फूलतर्गी बीखाइ सेज। रंग रा मत कीजिय रे लाल प्राली होयडे तेज ।।३।। कातीक महीने कामीनि रे लाल जो पीउ होवे पास । संदेसा सबसा भरा रे लाल प्रलगायो केम ११४११ नजर निहालो बाल हो रे लाल घावो मींगसर मास । लोक कहावत कहा करो जी पीउडा परम निवास ।।१।। पीस बालम बेगली रे लाल प्रवडी मज दोस। परीत पनोतर पालीये रे लाल झाशी मन मे रोस ॥६॥ सीयाले बती क्यो दोहलो रे जाल ते माहे बल माह । पोताने घर ग्रावज्यों रे सास दीलन कीजे नाह : ७।। लाल ग्रलाल प्रवीरसं रे लाल खेलए। लागा लोग। तुज विशा मूज नेइहा एकली रे लाल फाग्रुश जाये फोक सदार सुदर पाव सुहामको रे लाल कुल तको मही मास । चीतारया घरे भावज्यो रे लाल तो करस् गेह गाट ।।१।। बीसारयो न बीसरे रे लाला जे तुम बोल्या बोल । बेसाओं तम नेम से रे लाल तो बजउ दोल ।।१०।। केहता दीसे कामी रे लाल काइ करावी बेठ। बीठ बरही हुनै काहा करो खाल बाखी लायो जेठ ११११।

i ioc

सत्ताडों परपुनस्त्रोरे लाल बीच बीच जबुके बीजली रे लाल ।
तुज बीना मुज नैहारे लाल घरम प्रावे बीज ।।१२।।
रे रे सत्ती उतावसी रे लाल सजी सोला सर्मुपार ।
येर बती गंधी मुदरहरे लाल वे खोडी नार ।।११।।
चार घडी नी श्रव खडी रे लाल सायो मात अरलाढ ।
कामण गालो कंत जी रे लाल सत्ती न शाल्यो प्राज ।।१४।।
ते उठी उत्तट घरी रे लाल वालम जोवे सास ।
कूलमढ युद सावेस थी रे लाल रेह बळ्यो योगस ।।१४।।

२०६८. हमीर चौपर्द्द -1 पत्र सं० १३ से २७ । मा० -1 र द्वा । मावा-हिन्दी । विषय-द्दितहास । र० काल \times । से० काल \times । सपूर्ण । वै० सं० १५१६ । π भण्डार । विशेष—रवना में नामोल्लेख कहीं नहीं है। हमीर व मलाउद्दीन के युद्ध का रोचक वर्शन दिया हुन्ना है ।



विषय- स्तोत्र साहित्य

२०६६. द्याकलंकाष्ट्रकः । पत्र सं० १। सा॰ ११ $\frac{1}{2}$ \times ११ ६ व । सापा-संस्कृत । विषय-स्तीत्र । र० काल \times । त्रुर्ल । वे० सं० १५० । क्या सम्बार ।

३७७०, प्रति सं०२ । पत्र सं०२ । के० काल 🗶 । वे० सं०२५ । व्य मण्डार ।

३००१. क्षकलंकाष्ट्रकभाषा—सदाक्षुत्र कासकीवाता । पत्र सं० २२ । बा० ११६४५ इ'व । मावा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल सं० १९१५ श्रावण सुदी २ । के० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० ५ । क मण्यार ।

विशेष--इसी मण्डार में २ प्रतियों (वे॰ सं॰ ६) भीर हैं।

३७०२. प्रति सं०२ । पत्र सं०२ व । ले॰ काल 🗶 । वे॰ सं॰ ३ । स्ट मण्डार ।

२७७२. प्रति सं०२। पत्र सं०१०। ले॰ काल सं०१९११ आवसा सुदी २ । वै० सं०१८७ । ज्या भण्डार।

३७७४. खजितहांतिस्तवनः****। पत्र सं०७। झा० १०४४ इ'व । आपा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल सं० १६६१ झासोज युवी १ । यूर्ण । वै० सं० ३५७ । स्व मण्डार ।

विशेष--प्रारम्भ में भक्तामर स्तोत्र भी है।

३७७४. ऋजितशांतिस्तवस—नन्विषेषा। पत्र सं० १५ । मा० ५१/४४ इंव । मावा-प्राकृत ॥ विषय–स्तवन । र०काल 🗙 । के०काल 🗶 । पूर्ण । वै०सं० क४२ । का मण्डार ।

२००६. श्रानाधीश्चिष्स्वाभ्यायः *** । पत्र सं०१। झा० १३४४ दश्च । सामा-हिन्दी सुवराती । विषय-स्तवन । र०काल ४ । ते०काल ४ । दुर्गा । वे० सं०१६०म । ट सण्डार ।

३०७७. द्यानाषिनिधनस्तोत्र । पत्र सं० २ । सा० १०४४ द्वे इंच । साथा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ने०काल × । पूर्ण । वै०सं० ३६१ । का बच्चार ।

२०७८. छारहुन्तस्तवनः ****) पत्र सं॰ ६ से २४। बा० १०४४ई इ'व । वाषा-संस्कृत । विषक्-स्तवन । र० काल ४। ले० काल सं० १६५२ कालिक सुरी १० । ब्रपूर्य । वै॰ सं॰ १६८४ । छा बण्डार ।

२७७६. दावंतिपारवेजितस्यवन—दुर्वेद्द्रिः। यत सं०२। झा०१०४४३ र व । माया-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ते० काल × । दुर्शः। वे० सं० ३५६ । का वष्टारः।

विशेष--- ७६ पदा है।

३७८०. क्यास्मनिद्दास्तवन—स्त्राक्तर। पत्र सं०२। क्षा० १३४४ इ.च. शावा—संस्कृतः। विषय— र०काल ४। लेककाल ४। पूर्णा वेकस्थार ।

विश्रेष—−२४ क्लोक हैं। ग्रन्थ झारम्भ करने से पूर्व पं० विजयहंस गरिए को नमस्कार किया गया है। पं० जय विजयगरिए ने प्रतिक्रिप की भी।

.. ३७६२. हष्टोपदेश—पूज्यपाद । पत्र सं० ४ । सा० ११३ \times ४३ इंच । सावा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र। र० काल \times । त्रेल काल \times । पूर्ण । वेल सं० २०४ । का सम्बार ।

विशेष--संस्कृत में संक्षित टीका भी हुई है।

३७८३. प्रति सं०२। पत्र सं०१२। ले० काल 🗴 । वे० सं०७१। क मण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में एक प्रति (वै॰ सं॰ ७२) और है।

३७८४. प्रति सं०३। पत्र सं०६। ले० काल 🔀 । वे० सं० ७। घ भण्डार।

विशेष-देवीदास की हिन्दी टब्वा टीका सहित है।

३७=४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० ६० । क भण्डार ।

विशेष--संबी पत्रालाल दूनीवाले कृत हिन्दी अर्थ सहित है। सं० १६३५ में भाषा की थी।

३०८६. प्रक्षिसं० ४ । पत्र सं∘ ४ । तं∘ काल सं∘ १६७३ पीप हुदी ७ । वे० सं∘ ४०८ । इर भक्कार |

विशेष-वेगीदास ने जगरू में प्रतिलिपि की थी।

- ं देश्याः इष्टोपदेशटीका—काशाधर। पत्र सं• ३६ । मा० १२३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोच । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७० । कु भण्डार ।
 - · ३७८८. प्रति सं०२। पत्र सं०२४। ले० काल ×। वे० सं०६१। क भण्डार।
- ः २७८६. इष्टोपदेराभाषा ''''''। पत्र सं०२४ । सा०१२४७३ इ'व । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-स्तीत । र० कास ४ । ते० कास ४ । पूर्ण । वे० सं०६२ । इस्मण्डार ।

विशेष--प्रन्थ को लिखाने व कागज में ४॥=)॥ व्यय हुये हैं।

२७६०. उपदेशसञ्माय-ऋषि रामचन्द् । पत्र सं० १ । घा० १०४५ इक्क । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० १८६० । क्क मण्डार ।

स्तोत्र साहित्य]

३७६१. खपहेशसक्साथ—रंगविकाय । पत्र सं०४ । बा० १०४५ (इंच । माया-हिन्दी । विषय— स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८६ । क्य मण्डार ।

विद्येष---रंगविजय श्री रत्नहर्ष के शिष्य थे।

३७६२. प्रति सं०२। पत्र सं०४। ले० काल 🗵 । अपूर्ण। वै० सं०२१६१ । ऋ मण्डार।

विशेष---३रा पत्र नही है।

३७६३, प्रपेशसम्बद्धान्य-देवादिला। पत्र सं०१। प्रा०१०४४३ दश्वा। मापा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल × । तं०काल × । पूर्ण। वे०सं०२१६२। ध्वा मण्डार।

३७६४. उपसर्गहरस्तोत्र—पूर्वाचरद्वाचार्य । पत्र सं०१४ । बा० ३३४४३ इक्र । आधा-संस्कृत प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १४४३ बासोज सुदी १२ । पूर्वा । वै० सं० ४१ । च मण्डार ।

विद्याय—क्षी बृहद्गण्ड्यं अष्टुारकु गुणुदेवसूरि के विष्य ग्रुणुनियान ने इसकी प्रतिनिधि की थी। प्रति यन्त्र महित है। निम्नलिक्ति स्तोत्र है।

नाम स्तांत्र कर्ता भावा पत्र विशेष १. व्यक्तितरांतिस्तवन— X प्राकृत संस्कृत १ से ६ ३६ माथा विशेष—मावार्थ गोविन्यकृत संस्कृत वृत्ति सहित है।

२. भयहरस्तोत्र-- × संस्कृत ६ से १०

विनेष—स्वोत्र घक्षरार्षं मन्त्र गीमत सहित है। इस स्तोत्र की प्रतिलिपि सं० १४५३ ग्रासोज नुवी १२ को मेदपाट देश में रत्या रायमझ के शासनकाल में कोठारिया नगर में श्री युय्यदेवसूरि के उपदेश से उनके शिष्य में की थां।

3. भयहरस्तोत्र— × " ११ से १४

विशेष—इसमें पार्वपक्ष मन्त्र गभित ब्रष्टास्थ प्रकार के यन्त्र की करुपना मानतुंगाचार्य इत दी हुई है। २७६४, ऋषभदेवस्तुति—जिनसेन । पत्र सं० ७। घा० १०१४ १ व । भाषा—संस्कृत । विषय— स्तोत्र । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वै० सं० १४६ । छ भण्डार ।

२०६६. ऋषभदेवस्तुति—पद्मलिद् । पत्र सं० ११ । मा० १२%६३ इ'च । मावा-प्राहत । विवय-स्तोष । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४६ । द्या सम्बार ।

विशेष--- व व पृष्ठ से दर्शनस्तांत्र दिया हुमा है ! दोनों ही स्तोत्रों के संस्कृत में पर्यायवाची झब्द दिये हुये हैं । ३७६७. ऋषभस्तुति***** पत्र सं० १ । या० १० $\frac{1}{2}$ \times १ इंच । जावा-संस्कृत । विषय-स्तीज । र० काल \times । अपूर्ण । वे० सं० ६५१ । यद कण्डार ।

३७६=. ऋषिसंदलस्तोत्र—गौतसस्वासी । पत्र सं०३। प्रा०६१×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रं• काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ सं०३४ ! ऋ मण्डार ।

३७६६. प्रति सं०२। पत्र सं०१३। ले० काल सं०१८५६। वे० सं०१३२७। द्या भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ३३६, १४२६, १६००) ग्रीर है।

३=००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ते० काल 🗙 । वे० सं० ६१ । क भण्डार ।

विशेष-हिन्दी प्रयं तथा मन्त्र साधन विधि भी दी हुई है।

३८०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० २१ ।

विशेष--कृष्णलाल के पठनार्थ प्रति लिखी गई थी। ख अण्डार मे एक प्रति (वे० मं० २६१) ग्रीर है।

३८०२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल ४ । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष---इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं० २६०) मीर है।

३८०३. प्रति सं० ६। पत्र सं० २। ते० काल सं० १७६८। वे॰ सं० १४। व्य अण्डार।

३८०४. प्रति सं०७। पत्र सं०७६ से १०१। ले० काल 🗴 । वे० सं०१८३६ । ट भण्डार ।

३८०४. ऋषिसंडलस्तीत्र******। यत्र सं०५ । सा०६३४४५ इंच । जापा−संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्ण । वे०सं०३०४ । ऋ मण्डार ।

३८०६. एकाइसरिसोत्र—(तकाराइतर)......। यत्र सं०१ । ग्रा०११८५ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल ४ । ले० काल सं०१०६१ ज्येष्ठ सुरी । पूर्ण। वे० सं०३३६ । इस मण्डार।

विशेष-संस्कृत टीका सहित है। प्रदर्शन योग्य है।

देव•७. यकीआवस्तोत्र—वादिराज । पत्र सं० ११ । वा० १०×४ इत्र । आया–संस्कृत । विषय-स्तात्र । र० काल × । ते० काल सं० १८६३ साथ कृष्णा ६ । पूर्ण । वे० सं० २४४ । व्याजकार ।

विशेष-अमोलकचन्द्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३८) ग्रीर है।

३८०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ११ । ते० काल × । पूर्व । वे० सं० २६६ । स अण्डार ।

३००६ अति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल 🗶 । वे० सं० ६३ । 🖝 भण्डार ।

विशेष---प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

इसी अच्छार में एक प्रति (वे० सं० ६४) भीर है।

३८१०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल 🗴 । वै० सं० ५३ । च भण्डार ।

विशेष-महाबन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी । प्रति संस्कृत टीका तहित है।

इसी मण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वै० सं० १२) और है।

३८८१. प्रतिसंब्धापत्र संब्दाले काल 🗴 । वेब्संब्१२ । स्वाभण्डार ।

३८२२, एकीभावस्तोत्रभाषा—भूषरहासः। पत्र सं०३ । द्वारः १०३४४ ईं इंत्र । सत्ता–हिन्दो पद्यः। विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्णः । वै०सं०३०३६ । द्वासण्यारः।

विशेष-बारह भावना तथा शांतिनाथ स्तोत्र भीर है।

३८१३. एकीक्षावस्तोत्रभाषा—पद्मालाला। पत्र सं०२२। प्रा०१२३४५ इंच। भाषा—हिन्सीं पद्य। विषय—स्तोत्र। र०काल सं०१६३०। ले०काल ४। पूर्ण। वै०सं०६३। क भण्डार।

इसी अण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ६४) धीर है।

३-२४. एकीभावस्तोत्रभाषाः'''''। पत्र सं०१०। झा० ७४४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ते० काल सं०१६१८ | पूर्ण। वै० सं०३५३ । ऋ मण्डार ।

३८६१४. क्योंकारवचिनका******* । पत्र तं०३ । म्रा०१२२४४ इंच। भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०कान ४ । ते०काल ४ । पूर्ण । वै०सं०६४ । कृभण्डार ।

३८८९६. प्रतिसं०२ । पत्र सं०३ । ले० काल सं० १६३६ घासोज बुदी ४ । वे० सं∙ ९६ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७) और है।

३८१७. कल्पसूत्रसिक्षाः'''''। पत्र सं० ४। ब्रा० १०००५ इंव । आवा-हिन्दी । विषय-महात्स्य । ए० काल \times । पूर्वा । वे० सं० १४७ । क्ष अण्डार ।

६८९८. कल्याएक — समन्तभद्र। पत्र सं० ४ । आ० १०३४४६ इक्का आषा-आकृत । विषय-स्तवन । र०काल ४ । से॰ काल ४ । पूर्ण । वै० सं० १०६ । इक्क अध्वार ।

विशेष--- पर

पराविवि चउवीसवि तिस्वयर,

सुररगर विसहर धुव वलरगा।

पुरपु भएमि पंच कस्वास विस्त,

भवियहु शिसुसाह इनकमसा।।

द्मन्तिम---

करि कल्लासपुरज जिथासाहही,

प्रस्मु दिस्यु चित्त श्रविचलं I

कहिय समुच्च एए। ते कविरा।

लिज्जइ इमगुव भव फलं ।।

इति श्री समन्तभद्र कृतं कल्यासक समाप्ता ।।

३८१६. कल्यासमन्दरस्तोत्र—कुसुदचन्द्राचार्थ । पत्र तं० ४ । मा० १०४४ दंव । माया-संस्कृत । विषय—पार्वनाय स्तवन । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० १४१ । क्य मण्डार !

विशेष-इसी भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० सं० ३८४, १२३६, १२६२) झौर है।

३६६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल 🗴 । वे॰ सं० २६ । स्व भण्डार ।

विशेष-इसी अध्वार में ३ प्रतियां भीर है (वे॰ सं० ३०, २६४, २८१)।

३८८२१. प्रतिसंठ३ । पत्र सं०१६ । ले०कान सं०१८१७ माचसुदी १ । वे० सं०६२ । चः भण्डार ।

३ चर-२. प्रति संट ४ । पत्र सं०६ । ले॰ काल सं०१६४६ माह मुद्दी १४ । प्रपूर्णा । वे० सं०२४६ । इद्र मण्डार ।

विशेष--- श्वां पत्र नहीं है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं०१३४) ग्रीर है।

३,⊏२३. प्रति सं० ४,। पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७१४ माह बुदी ३ । वे० सं७ । ४५ अच्डार ।

विशेष—साह जोषराज गोदीकाने स्नानंदराम में सांगानेर में प्रतिक्षिप करवायी थी। यह पुस्तक ओधराज गोदीका की है।

३६२४. प्रतिस्ट६। पत्रसं०१६। ले० काल मं०१७६६। वे० मं० ७०। व्यामण्डार।

विकोप---प्रति हर्षकोत्ति कृत संस्कृत टीका सहित है। हर्पकीत्ति नागपुरीय तनामच्छ प्रधान चन्द्रकीर्ति के तिष्य थे।

३६२४ प्रति संट ७। पत्र मं० १। ले० काल सं० १७४६ । वे० सं० १६६८ । ट अण्डार ।

विशेष----प्रति कत्यारामकारी नाम विनयमागर यृत संस्टृत टीका सहित है। प्रस्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

इति सकलकुमनकुषरबंदचंदचंदरीवप्रीकुपुरचन्द्रमृतिविरचित श्रीकल्याग्यमन्वरस्तोषस्य कल्याग्यमञ्जरी टीका संपूर्ण । दयाराम ऋषि ने स्वारमजान हेतु प्रतिलिपि की थी ।

> हैम्पर्दे प्रति संट म । पत्र गंव ४ । नेव काल संव १८६६ । वेव संव २०६५ । ट अण्डार । विशेष—स्टोटेलाल ठोलिया मारोठ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३.२२७. करुबाह्यसंदिरसोत्रद्विका—पं० चाहास्वर। पत्र सं० ४। सा० १०×४५ इ.च । वत्या—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल \times । सं० काल \times । पूर्ण । वै० सं० ५३१ । च सम्बरा ।

३०२८. करुव्यायार्श्वार्श्वाशुःत्—चेवित्तकः । पत्र सं० ११ । बा० ८३४४३ दश्च । आया-संस्कृतः । विषय—स्तोत्र । र०कान × । तं० कात × । पूर्णः । वे० सं० १० । व्यावस्थार ।

विशेष--दोकाकार परिचय---

भोउकेशनस्त्रास्त्रियः विवयनमञ्जास्त्रास्तरं, प्रवीध्याधमसारपाठकवरा राजन्ति आस्वांतरं । सन्ध्रियः कुणुवाणिवेवतिककः सद्बुव्विवृद्धिश्रवां, ध्रेयोमन्दरसंस्त्रवस्य सुवितो वृद्धिः ध्रियामान्दरसंस्त्रवस्य सुवितो वृद्धिः धर्मावद्युतं ॥१॥ कृत्यास्त्रमंदिरस्तोषवृद्धिः सोधाम्यमञ्जरी । वाच्यवामान्यजनेनंदाक्यं सुव्यः ॥२॥ इति क्षेत्रोमंदिरस्तोषव्यः वृद्धिः ॥२॥ इति क्षेत्रोमंदिरस्तोषव्यः वृद्धिः साधाम्यमस्तरी ॥

३८२६, कल्यास्प्रसिदस्तोत्रटीका " " । पत्र सं० ४ से ११। घा० १०४४६ रखा । नाषा-संस्कृत हु विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । से० काल ४ । धपूर्स्स | वै० सं० ११० । क सच्दार ।

> ३८३०. प्रति सं० २। पत्र सं० २ से १२। ले॰ काल 🔀 । प्रपूर्ण । वै॰ सं० २३३। घा अध्यार । विशेष-कप्यत्यं वीपरी कलेषुं सुन्दरदास वयनेरी मोल लीली । ऐसा प्रत्तिम पत्र पर लिखा है।

३=३१. कल्यायामंदिरसोत्रभाषा—पन्नासासा । पत्र लं∘ ४७ । मा॰ १२३४ १ इस्र । भाषा—हिली । विषय—स्तोत्र । र० काल सं० १६३० । ले० काल ⋉ । दुर्ला | वै० सं० १०७ । इक अभ्यार ।

३८३२. प्रति सं०२। पत्र सं०३२। ते• कात ×। वै० सं०१०८। क भण्डार।

देददेते. कल्यायार्थदिरन्तोत्रभाषा—ऋषि रामचन्द्र । पष सं० ४ । मा० १०४४ ३ दख । जावा— हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । यूर्य । बै० सं० १८७१ । ट मण्यार ।

३८-२४. कल्यास्प्रविरसोत्रभाषा—बनारसीदास । पत्र सं० ६ । बा० ६×३३ ६०० । बावा∽ हिन्दी । र०कास × । ते०कास × । पूर्ण । वे०सं० २२४० । व्यापन्यार ।

३८३४. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । ते० काल × । वे० सं० १११ । क अवहार ।

३-२६. केवलक्कानीसन्माथ—विजयनम् । पण सं० २ । वा० १०×४३ ६०। आपा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । के० काल × । कुर्ता | वे० सं० २१०० । का क्ष्मार । ३८२७. च्हेत्रपालानामावली......। पत्र सं∘ ३ । मा० १०×४ इ.व । नावा-संस्कृत । विवय-स्तोत्र । १० काल × । ते० काल × । पूर्णा । ३० सं० २४४ । व्य अध्वार ।

३८३८'' गीतप्रकम्थ''''''''''''' पत्र सं० २ । झा० १०१%४१ इ'च । आवा–संस्कृत । विषय–स्तीत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ता । वे० सं० १२४ । कु सम्बार ।

विशेष-हिन्दी में वसन्तराग मे एक भजन है।

३८२१८. गौत बीतराग—पंडिताचार्थ क्राधितक्षचार्रक्तिता पत्र गं०२६। ग्रा० १०३४४. इझा। भ्राचा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । नं० काल सं०१८८६ उन्नेष्ठ बुदी ऽऽ। पूर्वा । वे० गं०२०२। ऋ भ्राचार ।

विशेष--जयपुर नगर मे श्री चुन्नीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

गीत वीतराग संस्कृत आवा की रचना है जिसमे २४ प्रवंधों से भिन्न भिन्न राग रागनियों से भगवान झाविताच का पौराशिक झास्थान वरिंगत है। ग्रन्थकार की पंडिताचार्य उपाधि में ऐसा प्रकट होता है कि वे अपने समय के विविद्य विद्यान ये । ग्रन्थ का निर्माश कब हुआ। यह रचना में ज्ञात नहीं हांता किन्तु वह समय निज्यय ही गंवत् रचन से मूर्व है क्यों कि ज्येष्ठ चुरी झमावस्था मं० १८०६ को जयपुरस्थ लस्कर के मन्दिर के पास रहने वाले भी चुनीलालची साह ने इस ग्रन्थ की प्रतिसिधि को है प्रति भुंदर झकरों में लिखी हुई है तथा शुद्ध है। ग्रन्थकार ने ग्रंच की निल्म रागों तथा तालों में संस्कृत गीतों में ग्रंचा है—

राण राणनी— मालव, गुरुर्जरी, वसंत, रामकली, कालहरा कर्णटक, देशासिराग, देशवैराडी, गुराकरी, मालवगीड, ग्रजराग, भैरणी, विराधी, विभास, कालरो ।

ताल- रूपक, एकताल, प्रतिमण्ड, परिमण्ड, वितालो, प्रठनाल ।

गीतों में स्थायी, अन्तरा, संबारी तथा धामोग ये वारो ही चरएा है इस सबसे झात होता है कि अन्यकार संस्कृत भाषा के विद्वान होने के साथ ही साथ अध्ये नगीतझ भी थे।

३८८४०. प्रतिसं०२ । पत्र सं०३२ । ले०काल मं०१६३४ उथेह सुदी द । वे०सं०१२६ । कु कथ्वार ।

वियोष—संवर्षति अगरणन्त्र के तेवक नारिणस्यणन्त्र ने मुरंगयसन की यात्रा के प्रदस्तर पर प्रानन्यदास के वचनातुसार सं• १८६४ वाली प्रति ते प्रतिक्षिप की थी ।

इसी अच्छार में एक प्रति (नै॰ सं० १२६) और है।

३८८१. प्रति सं०३ । पत्र सं०१४ । ले॰ काल × । वै० सं०४२ । सा अण्यार ।

३६५४२. शुर्स्पत्वल \cdots ा पत्र सं०१४। झा०१२४६ इ**ख**। भाषा—संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० लं०१८४६ । Z भण्डार ।

३ - प्रश्ने, गुरुसहस्रतास """। पत्र सं०११। घा०१० ४५ ई व्हाभाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र०कान ४ । ते०काल सं०१७४६ बैदाला बुदी हा पूर्वा थे० सं०२६६ । आह मण्डार ।

३८४४. शोस्मटसारस्तोत्रः.....। पत्र सं० १। ग्रा० ७४५ इत्र । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० १७३ । स्त्र भण्डार ।

३८४४. बरुघरनिसासी—जिनहर्षे । पत्र सं० २ । झा०१०४५ इंच । आया-हिन्दी । विषय– स्नोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । छ भण्यार ।

विशेष-पार्श्वनाथ की स्तुति है।

मादि-- मुख संपति मुर नायक परतिष पास जिखांबा है।

जाकी र्खाव कांति सनोपम उपमा दीपत जात दिखाँदा है।

श्रन्तिम-- सिद्धा दावा सातहार हासा दे सेवक विलवंदा है।

धन्धर नीसाग्री पास वस्ताग्री गुग्री जिनहरष कहंदा है। इति श्री धगधर निसाग्री संपूर्ण ।।

३८४६. चक्रेश्वरीस्तोत्र''''''। पत्र सं०१। ग्रा०१०३४५ इंच। माचा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४। ले०काल ४। ग्रपुर्ण। वे०सं०२६१। स्त्र मण्डार।

३८४७. चतुर्विशतिजिनस्तुति—जिनलाससूरि। पत्र तं० ६। घा० ८×४ई इत्र । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल ×। वे० काल ×। पूर्णा । वै० सं० २८४। इत्र भण्डार।

३-४८. चतुर्विशतितीर्थेह्नर जयमालः'''''। पत्र सं०१। प्रा० १०३४१ इ.च.। आया–प्राकृतः। ्षय–स्तोत्र। र०काल ४। ले०काल ४। पूर्ण। वै०सं० २१४६। का अध्यार।

३८५६. चतुर्विशतिस्तवनः***** पत्र सं० ४ । आ० १० \times ४ इंव । भाषा-सस्क्रत । विषय-स्तोत्र । र० काल \times । त्रे० काल \times । दूर्ण । वै० स० २२६ । का जण्डार ।

विशेष--- १ २वें तीर्थक्कर तक की स्तुति है । प्रस्तेक तीर्थक्कर के स्तवन में ४ पद्य हैं ।

प्रथम पद्म निम्न प्रकार है---

भव्यामोजनिवाधनेकताःस् विस्तारिकामांवभी स्म्यासामजनिर्मदनमहानष्टा पदाभासुरैः। समस्या वैदितपादनविज्ञा संपादयाभोजिमता। रैमासाम जनिमनंदनमहामद्वा पदाभास्रै।।१॥

२=४१. चतुर्विशति तीर्थेक्करस्योत्र—कस्त्रविकायगास्ति । पत्र सं०१४ । द्वा० १२३/४ इ'व । त्राचा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल x । ले०काल x । पूर्वा । के० सं०१४६ । कृतवार ।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है।

पुक्रा दिर्गि ३-५२. चतुर्विरातितीर्थक्करस्तुति—साधनन्दि । पत्र सं० ३ । आ० १२४४.३ इंव । आधा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल ४ । ते० काल ४ । दुर्गा । वे० सं० ११६ । स्थण्यार ।

२८४२. च्युविशति तीर्थद्वरस्युतिः*****। मा० १०३४४३ इ व । भाषा-सन्दृत । विषय-स्तोच । र० काल ४ । ते० काल ४ । ब्यूवर्ष । वै० ती० १२६१ । छः भण्डार ।

३८८४ च्**रुर्तिरातिती वहुरस्तुति**। पत्र सं०३ । झा०१२८५ इंच । आषा-संस्कृत । विषय– स्तोत्र । र०काल ⋉ । वे०काल ⋉ । वे०कं०२३७ । **बाजव्या**र ।

विशेष---प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२०४४ चतुर्विरातितिभिक्करस्तोत्र******* । या तं ११ १४ ४३ इश्च । प्रापा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र कस्त × । ते० काल × । पूर्ण । वै० सं० १९=२ । ट कस्तार ।

विशेष---स्तोत्र कट्टर बीसपन्थी ग्राम्नाय का है। सभी देवी देवताग्रो का वर्शन स्तोत्र में हैं।

देन्द्रदे. चतुम्मदीस्तोत्रः......। पत्र सं०११ । प्रा० ८२,४५ इ**व्व** । भाषा-नंस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ते०काल × । पूर्ण । वे०सं०१४७५ । **व्य** वण्डार ।

३८.४७. चासुबङस्तोत्र-- कुळबीघराचार्च। पत्र सं०२। मा० ८.४४३ इ.ख.। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल 🗶। से० काल 🗶। पूर्ण। वे० सं० १३८१। इत्र प्रचार।

३००१तः, विन्तासस्मिधावर्षनाथ स्वयमातस्ययः । पत्र सं० ४ । मा० ८×३ ६ऋ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । १० काम ४ । पूर्ण । ३० सं० ११३४ । ऋ मण्डार ।

३००४६. जिन्तामधिपार्थनाथ स्तोत्रसंक्रसद्धितः.....। पत्र सं० १०। सा० ११४५ दशाः। भाषा-संस्कृतः। विषय-स्तोत्रः। २० कालः ४ । केल् मासः ४ । पूर्लः। ने० सं० १०६० । दशः अध्यारः।

```
भण्डार ।
                                                                                                रा कार X ! सेर काल में o हददह ! पूर्ण कें स. १०३ व मादार
                             ३=६१. चित्रवंधस्तोत्र """। पत्र मं० ३। मार्गाप्रदेश्रीहिहि ह सम्मात्त्रकात्रहिषय—स्तोत्र ।
रं काल 🗶 | लें व्हाल 🗶 । पूर्वा | वें सं० २४६ । व्या मण्डार |
१९१४ - २१ , १९१४ - ४० , १० वर्ष १९१४ - १० वर्ष १९४४ - १० वर्ष १९४४ - १० वर्ष १९४४ - १० वर्ष १९४४ - १० वर्ष १९४४
                             विशेष--पत्र विपके हये है।
                                                                                                                       THE SE SEC. IS A OF OF 1 TOP 1 X POR OF 1 X POR
        २८६२. चैत्यवंद्रम् " " । पत्र सं० ३ । आ० १२×१३ इछ । आवाक्संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०
२० २०१२, १२२ ११८ ११४ १६६ १ - २४ ११६ १ - २४ ११४ । "११६३-१४४४ ११८ । स्वर
काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वै० सं० २१०३ । ऋ भण्डार ।
                                                                                                        , second be 1 ye . y on of 1 fing 1 x min of 1 . Hit of
                              ३८६३. चौथीसस्तवन....। पत्र मं० १ | आ० १०×४ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०
              काल X । लें० काल सं० १६७७ फागुन बुदी ७ । पूर्मा । बैठ सं० २१२२ । आप्र मण्डार ।
                                                                                                                   1 715 0 # 1 3 F 0 F 0 B 0 F 1 7 F 1 X FIF - F 1 x FIF
                             विशेष--बर्शाराम ने भरतपुर में रहाधीरसिंह के राज्य में प्रतिलिपि की थी।
                              ३म६४. छंदसंप्रहण ""। पत्र म०६। मा० ११३×४३ इक्का। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र•
                                                                                                         I STORE TO LAKE OF OF OF I MP X FIR OF I X FIF OF
काल × । ले० काल × । प्रमां । वे० सं० २०५२ । ऋ भण्डार ।
                                                                          - FRURENS 3-4RARH SIE IN SIE I
                             नाम छंड
                                                                                         नाम कर्ला
                                                                                                   विशेष
विशेष—पंज महासास के पठनाओं घोलोनिय की बहु थी।
                   महाबीर छंद , . . . . . . . . यसचाद , ८ भारक ती । ४ तसे स्वर्धा अ अस्त ही । ४ ० स
                   विजयकीति खुंद
इंस्कर प्रति सह ३१ एक विजयकीति है । इंस्कर १ एक विजयकीति खुंद
                   अंदर्भ अति स्व प्राप्ति के र में के र
   ग्रुरु नामावलि छंड
                                                                       X X X राजे काल प्रकृति पूर्वा बेर्ट संस्कृत प्रवाद क्रिक्ट । का अवस्थात क्रिक्ट स्था अवसार ।
 चन्द्रकोत्ति छंद
                                                                                           1715 of 12 1 (fe of the 1 x 1916 of 1 x 1917 of 1 1 1917)
                                                                                            बरदकीरिन
उद्यक्त विनशतस्त्रीका—शुनुसाधु । सत्र सन् २०६ । मार १०५०६ । स्व १ मार्था नेपा । अभिनाम खेर
                                                                          १ (पान-१११व ) रें क कान X | नें के मार्च X | पूर्वा ) के अ पर १६१ के मण्डार ।
     . माम्म क<del>्रिके विश्वन कारणाश्चित्रक माह्यसम्बद्धित स्वताना ।</del> अस्ति केरिके प्रस्ति । स्वति केरिके प्रस्ति ।
  THE WAR BENT DIRECT THE STATE OF THE PARTY O
```

रु **२-६६. जिल्ह्यरस्तेत्रियःःः।** पत्रे संध ३:। मार्थ ११६४४ इ.च । प्राथा-संस्कृतः । विषय-स्तोत्रः। र०काल ४ । ले०काल संध १८=६ । पूर्ण । वे० संध १०२ । च प्रण्डारः।

विशेष-मौगीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

३८६७. जिनगुरामालाः'''''। पत्रं सं०१८। मा० = \times ६ इक्कः। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल \times । ले०काल \times । पूर्वा। वे० सं०२४१। म्ह भण्डार।

दे**०६**न. **जिनचैरयबन्दनाः**ःः। पत्र सं०२ । प्रा०१० \times ५ इ'च । भाषाः—संस्कृतः । विषयः—स्तनन । र० कालः \times । ते० कालः \times । पूर्णः । वै० सं०१०३ ६९ अद्भाष्टारः ।

्रस्हेर. जिनवरोत्राष्टकः। पत्र सं०१। मा०१०४४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तीत्र। र० काल 🗸। ले० काल 🗴 । पूर्वा वै० सं०२०२६। ट अपद्यार।

् २६-७०. जिनपंजरस्तोत्र''''''' । पत्र सं०२ । ग्रा० ६५/४४,३ इ.च । आपा-सस्कृत । विषय⊸न्तोत्र । र०काल ⋉ । वे०काल ⋉ । पूर्ण । वे०सं०२१४४ । टमण्डार ।

३८-३८ जिनपंजरस्तोत्र—कमलाश्रभावार्थ। पत्र सं∙ ३। घा० ८३.४४३ दश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । से० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० ५६ । स्र भण्डार ।

विशेष-पं० मन्नालाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

३८७२, प्रतिस् ०२ । पत्र सें०२ । ले० काल 🗴 । वे० सं०३० । स भण्डार ।

३८७३, प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वै० सं० २०४ । क्र भण्डार ।

३८७४. प्रति सं ६ ४ । पत्र सं ० ८ । ले० माल 🗴 । वे० सं ० २६५ । अरु भण्डार ।

देन्द्रश्. जिनवरदर्शन — पद्मनंदि । पत्र सं०२ । मा०१०१४ १ ६ ५ । भाषा-प्रावृत । विषय⊸ स्तोत्र । र०काल ४ । ते० काल सं०१ ८६४ । पूर्वा । वै० सं०२०६ । क्र-भण्डार ।

२००६ जिनवास्थीस्तवंने--जगतराम । पत्र सं \circ २ । मा०११ \times ५ इंचः भाषा-हिन्दी । विषय-स्तात्र । र \circ काल \times । ते \circ काल \times । पूर्ण । ते \circ सं \circ ७३३ । च भण्यार ।

३८.००. जिनशतकटीका—रांसुसाधु । पत्र सं० २६। मा० १०३/४४ दुंत । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल 🗴 । के० काल 🗴 । दूर्ण । वै० सं० १६१ । क भण्यार ।

विशेष---मिलिम- इति श्रंषु सांपुषिरचित जिनवातक पंजिकामां वास्वर्शत नाम चतुर्पपरिच्येद समाप्त । २८७८ प्रति संघ २ । पत्र संघ ३४ । ते० कात्र ४ । ते० संघ ४५६ । स्व मण्डार । ३००६. जिनरातकटीका—नरसिंहभट्ट। पत्र सं० ६६ । मा० ११४४३ इ**जा।** वाया-संस्कृत । त्रे विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । से० काल सं० १४६४ चैत्र नुषी १४ । वै० सं० २६ । का भण्डार ।

विशेष-- अकर ब्रह्मदास ने प्रतिनिधि की थी।

३८८०. प्रतिसंठ२ । पण सं०४६ । ले॰ काल सं०१६५६ पीच बुदी १० । वै० सं० २००। क अपटार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतियां (वे॰ सं॰ २०१, २०२, २०३, २०४) भीर है।

३८८८ प्रतिसंट ३ । पत्र सं० ४३ । लें० काल सं० १६१५ भादवाबुदी १३ । वै० लें० १०० । छ। भण्डार ।

३--२. बिनशतकालङ्कार—समंत्रभट्ट। पत्र सं०१४ । आ०१३×७६ इंव । आला-संख्यत । 5 < r < 2। विवय—स्तंत्र। र० काल \times । वे० कं० १२०। ज अण्यार ।

३८८३. जिनस्तवनद्वात्रिशिका******। या ६२,४४१ इ.च.। भाषा–संस्कृत । विषय– स्ताय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वे०सं०१०६६ । ट. भण्डार ।

विशेष—पुजराती भाषा सहित है।

३८८४. जिनस्तुति—शोभनमुति । पत्र सं० १० मा० १०३४४३ इ.च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोष । र० काल ४ । ते० काल ४ । वै० सं० १८७ । ज भण्डार ।

विशेष-प्रति प्रत्वीन एवं संस्कृत टीका सहित है।

२५८४. जिनसहस्रनामस्तोत्र—म्बाशाधर। पत्र सं० ६७। घा० ६४४ ६'व । भाषा-संस्कृत। प्र^{तर} वियय—स्तोत्र। र०काल ४। ते०काल ४। पूर्ण। के०सं० १०७६। व्यापण्डार।

विशेष-- इसी मण्डार में ३ प्रतियां (वै० सं० ४२१, ११२६, १०७६) ग्रीर हैं।

३५=६. प्रति सं०२। पत्र सं०६। ले० काल ×। वै० सं०५७। सा भण्डार।

विशेष---इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७) ग्रीर है।

२८८७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८२३ कार्तिक बुदी ४। वे॰ सं० ११४। च भण्डार।

विशेष-पत्र ६ से बागे हिन्दी में तीर्थकूरों की स्तुति धीर है।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे॰ सं॰ ११६, ११७) ग्रीर है।

३ मम्मम प्रतिसं०४ । पत्र सं०२० । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं०१३४ । इद्र अध्यार । विशेष—क्सी अच्छार में एक प्रति (वे० सं०२ ३०) और है ।

- 077

ा १८०० मा <mark>लेपानकुर प्रति संरूप १ । द्वत्र संरू</mark> १४ । तेतृ कालु संरूप्तर व सामोज बुदी ४ । वेरु सर २म । ज सम्बद्धार ।

विशेष — इंदर्क वर्तिरक्त लच्च सामियङ, लच्च स्वर्यमूरतोष, लच्चक्रवंशमं एवं -वेष्यवंदवा भी है। संकुरतनं रोपए। संकल का विश्व भी है।

के 1977 - विमार्ट, प्रति से दें पर्व सर्व ४६। विठे काल सं १६४३। वे० मंठ ४७ हे वर मण्डार ।

विशेष-स्वेह मोल १६५६ वेपनावर्ष श्रीमूलयंथे ५० थी विधानत्व तत्वह ५० थी मास्त्रमूर्णतारहें पूर्व भी लक्ष्मीबंद तरहें ५० थी विधानत्व तत्वह ५० थी नामस्त्र तत्वह ५० वादिव ह तेपस्त्र तत्वह ५० वादिव ह तेपस्त्र तत्वह ५० वादिव ह तेपस्त्र त्वादिव ह त्यादिव ह त्यादि

विशेष—इसी अण्डार मे ४ प्रतियां (वैट संट १३२, १४३, १८६४, १८६६) और हैं। इस्टर्स प्रति संट २ । पत्र संट १० । लेंड काल ४ । वेड संट ३१ । मुख्यार ।

देमहरू, प्रति संब धापत्र संब निव कार संब १६०३ सामाज मुदी १३। तेव संब १६४। ज मध्यर ।

> विशेष—स्त्री प्रण्डार में एक जाति (बैठ-स००१२ ह) और है। १००० व १००० रहा कर रहा १००० व स्पर्धः, प्रति सिर्ण क्षेत्र पत्र संकर्भव १९३१ सिठ काल ४४ विक संकर्मक प्रकार प्रधान

विगेष — इसी मण्डार में इस प्रति १ वेट मेंट २६७) और है । सीप १८०० ३८६६ प्रति सट ६। पत्र मेंट हैंट वें बेट कास सीट १८५४ । केट संप्यदर्शन का संसर्धर

13 किलोर्च -- इसी मण्डारं में एक प्रति ('बेट क्लंक स्ट्रह,)ग्रोश है हो। 2 हम सीप 2020

देवहथ्य. जिनसहस्रनामस्तीत्र—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सं ० ४ । या० १२०% ७ इत् । बार्थान $\begin{pmatrix} 0 & 0 & 0 & 0 \\ 0 & 0 & 0 & 0 \end{pmatrix}$ सं क्षेत्र के कि उत्तर्भाग के 5 का -0 । की स्वर्धात । देव कि तर्भ ते कि तर्भाव प्रवादात ।

विस्ता प्रति सं०२। पत्र सं०१ कि काल सं० १७२६ प्रीपात बुर्स १ प्राप्त कि सं० स। मा मच्चार १९६४ प्रीपात बुर्स १० प्राप्त के सं० स।

विसीय---पहले गद्य हैं तथा सन्तु हो 💢 है हस्रोहरू ब्रियो हैं । ही हि हर्त 🗸 अध्यक्ष मेहरू - हर्त र

स्तोत्र साहित्य] [३६३

श्रन्तिम पुष्टिका निम्न प्रकार है-

इ.ति श्रीसिद्धसेनदिवाकरमहाकशीश्वरिवरिचतं श्रीसहस्रनामस्तीत्रसंपूर्णा । दुवे ज्ञानवन्द से जोभराज गोदीका ने प्रात्मपरनार्ण प्रतिसिधि कराहि थी ।

३८८६. जिलसहक्रनासस्ते प्रेणः''''। पत्र सं० २६ । सा० ११६ ४५ इ.च.। भाषा-संस्कृत । विषय– स्तोत । र०काल × । ते०काल × । पूर्णः। वे००सं० ⊏११ । क भण्डारः।

३६००. जिलसहस्रतासस्तीत्र " "। पत्र सं० ४। प्रा०१२ \times ४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल \times । त्रे० काल \times । पूर्ण । वे० सं० १३६ । घ मण्डार ।

विशेष — इसके प्रतिरिक्त निस्तपाठ प्रीर हैं- पंटाकरए। संत्र, जिनपंजरसीत्र पत्रों के दोनों किनारों पर मृत्यर बेलबुटे हैं। प्रति वर्शनीय है।

३६०१. जिनसहस्रनासटीका"" ""। पत्र सं० १२१ । झा० १२४५६ इंच । माषा–संस्कृत । विषय– स्तोत्र । र०कान × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६३ । क मण्डार ।

विशेष--यह पुस्तक ईश्वरदास ठोलिया की थी।

३६०२. जिनसहस्रनाभटीका— श्रुतसाग्रर। पत्र सं०१६०। ग्रा०१२ $ilde{x}$ ६ व । भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल $ilde{x}$ । ते०काल सं०१९५६ ग्राचाढ सुरी १४। पूर्ण। वे०सं०१६२। क गण्डार।

३६०३. प्रति सं०२ । पत्र सं०४ से १६४ । ले० काल × । ब्रपूर्स । वे० सं० द१० । इस भण्डार ।

३६०४. जिनसहस्रनासटीका—कामरकोत्ति । पत्र सं० द१। ग्रा० ११४४ इंच । माषा-संस्कृत । नार्जि विषय-स्तोत्र । र० काल ४। ले० काल सं० १५६४ पीच सुदी ११ | पूर्व | वे० सं० १६१ | का मण्डार ।

३६०४. प्रति सं०२। पत्र सं०४७। ले० काल सं०१७२४। वे० सं०२६। घ मण्डार।

विशेष-वंध गोपालपुरा में प्रतिलिपि हुई थी।

३६०६. प्रति सं० ३। पत्र सं० १८। ले० काल 🔀 । वे० सं० २०६। 🖝 भण्डार ।

२६०७. जिनसहस्रनासटीका'''''' । पत्र सं०७ । घा० १२४५ इ'च । ज्ञाया—संस्कृत । विषय⊸स्तोत्र र० काल ४ | ते० काल सं० १व२२ श्रावण् । पूर्ण । वै० सं० १०६ | का वण्डार ।

३६०व. जिनसहस्रनामस्त्रोत्रभाषा — नाष्ट्राम । पत्र सं० १६ । ब्रा० ७४६ इ.च । आषा-हिन्दी । विषय-स्त्रोत्र । र० काल सं० १६४६ । ते० काल सं० १६६४ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २१० । क जण्यार ।

दे£ ८६ जिलोपकारस्परणः'''''।पत्र सं० १३ । प्रा० १२६ ४५ इ.च । जाया-हिन्दी । विषय⊷ स्तोत । र०काल ४ । ते० काल ४ ।पूर्ण । वे० सं० १८७ ।कुमण्डार । ३६१०. प्रति सं २ । पत्र सं ० १७ । ले० काल × । वे० सं ० २१२ । इन भण्डार ।

३ ६११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । च भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में ७ प्रतियां (वे० सं० १०७ मे ११३ तक) ग्रीर है।

३६१२. सामोकाराहिपाठ **** । पत्र सं०३०४ । घा०१२४७६ इंब । माषा⊸प्राकृत । विषय⊸ स्तोत । र०काल × । ते० काल सं०१८८२ ज्येष्ठ सुदी ७ | पुर्णावे अस०२३३ । इर भण्डार ।

विषोष—११८८ बार रामोकार मन्त्र लिखा हुधा है। घन्त में छानतराय कृत समाधि मराग पाठ तथा २१८ बार श्रोमदृष्ट्रमादि वर्द्धभानांतेम्योनमः। यह पाठ लिखा हुधा है।

३६१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २३४ । क भण्डार ।

दे६१४. स्प्रमोकारस्तवनः''''''। पत्र सं० १। ग्रा० ६३/४४, इ'च। माया हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल ४ । ते० काल ४ । दुर्सो । वै० सं० २१६३ । इस मण्डार ।

विषेत--स्तोत्र की संस्कृत में व्याख्या भी दी हुई है। ताता ताती तनेता तनित ननता ताति तातांत सता इत्यादि।

२६९६. तीसचौधीसीस्तवन """। पत्र सं० ११। बा० १२.४१ इ.च.।। भाषा-संत्कृत । विषय⊸ स्तोत्र । र० काल ×। ले० काल सं० १७५६। पूर्ण। जीर्ल। वे० सं० २०६। क्र भण्डार ।

दे६ ९७ दलासीनी सञ्काय """। पत्र सं०१ । प्रा०१ ४.४ ड च । भाषा-हिन्दी । विषय⊸स्तोत्र । र०कान × । ते०काल × । पूर्णा। जीर्णा|वे०सं०२१३७ । इस मण्डार ।

३६१८. देवतास्तुति—पद्मानंदि । पत्र सं०३ । घा०१०४४ दुंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तात्र । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वै०सं०२१६७ । टभण्डार ।

ूर्त वेश्टरे. देवागमस्तोत्र—काचार्य समन्तभन्न । पत्र सं०४ । ब्रा० १२४६३ दंव । भाषा - संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । ले०काल सं०१७१४ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं०३७ । क्रा प्रफटार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३०८) भीर है।

३६२०. प्रति सं०२ । पत्र सं०२७ । ले० काल सं०१८६६ बैशास्त सुदी ४ । पूर्ण । ते० सं०१६६ । वा सम्बार ।

> विशेष--- प्रभयचंद साह ने सवाई जयपुर में स्वयठनार्थ प्रतिलिपि की थी। इसी संप्कार मे २ प्रतियां (वे० सं० १६४, १६४) घीर हैं।

₹ ₹ ₹

३६२१. प्रति संट ३। पत्र सं०६। ले० काल सं०१८७१ ज्येष्ठ मुदी १३। वे० सं०१३४। आह् भण्डार।

३६२२ प्रतिसं० ४ । पत्र सं०६ । ले॰ काल सं० ११२३ वैशाल बुदी ३ । वै० सं०७६ । ज भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में एक प्रति ! वे० सं० २७७) और है ।

दे६२३. प्रतिसं०४ । पत्र म०६ । ले०काल सं० १७२४ फायुन बुदी १० । वे०सं० ६ । आ⊼ भण्डार ।

विशेष---गांडे दीनाजी ने सामानर में प्रतिलिपि की थी। साह जोधराज गोदीका के नाम पर स्थाही पीत दी गई है।

२६२४. प्रति सं०६। पत्र सं०७। ले० स्नाल ×। वे० सं०१ ⊏१। स्व भण्डार।

रेध्२४. देवागमस्तोन्नटीका—स्त्राचार्य वसुसंदि । पत्र सं०२४ । ब्रा॰ १३४४ इंब । आवार والآنون بالمرابط المرابط المرابط

विशेष-प्रशस्ति निस्न प्रकार है-

संबद् १४५६ भाइयद गुदी २ श्री मूलवये नद्यान्नाये बलात्कारमस्ये सरस्वतीयच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री यचनंदि देवास्तराट्टे भट्टारक श्री सुभवन्द देवास्तरपट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तरिकाम्य मुनि श्रीस्तनकीर्ति-देवास्तरिकाम्य मुनि हेमचंद्र देवास्तदान्नायं श्रीचकारमस्याये सम्बेतवालान्वये बोजुवागोत्रे सा. मदन मार्था हरिसिस्ती पुत्र सा. परिसराम मार्था अयी एतैसास्त्रमिन्दं लेकस्थित्वा ज्ञानपात्राय मुनि हेमचन्द्राय भस्त्याविधिना प्रदत्तं ।

३६२६. प्रति संठ२ । पत्र सं०२४ । से॰ काल मं०१६४४ भादवा बुदी १२ । वे० सं०१६० । उत्र भण्डार ।

विशेष--- मुख्य पत्र पानी से बोहे सल सबे है। यह पुस्तक पं० फतेहलालजी की है ऐसा लिखा हुआ है। ३६२७. देवागमस्तोत्रभाषा---जयखंद छाबद्वा। पत्र सं० १२४। प्रा० १२४७ इ'व। भाषा--हिन्दी। विषय-न्याय। र० काल सं० १८६६ वैत्र जुदी १४। ले० काल सं० १६३८ साह सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० २०१। क भण्यार।

> विशेष—इसी सम्बार में एक प्रति (बैठ संग् ३१०) और है। १६२८-- प्रति संग् २ । पत्र संग् ५ से का लेंग्जाल संग् १८६८ । वैठ संग् ३०१ । इस सम्बार । विशेष—इसी सम्बार में एक प्रति (बैठ संग् ३०८) और है।

३६६] [स्तोत्र साहित्य

३६२६. देवासमस्तोत्रमाया " ""। पत्र स०४ । सा०११४७३ इंच । माया-हिन्दी पद्य । विषय– स्तोत्र । रे० काल ४ । त्र्णे । (हितीय परिचंद्रत्य) वे० सं० ३०७ । क मण्डार ।

विशेष--त्याय प्रकरण दिया हथा है।

३६३०. देवाप्रभस्तोत्रवृत्ति—विजयसेनसृत्ति के शिष्य ऋणुआः । पत्र सं०६ । सा०११४८ दक्षः । बाबा-संस्कृतः | विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं०१ ८६४ ज्येष्ठ सुदी द । पूर्णा वै० सं०१६६ । आर अध्यार ।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३६३१: धर्मेचन्द्रप्रकथ-धर्मेचन्द्र । पूत्र सं०१ । प्रा०११ $\times v_0^2$ इंच । आया-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल \times । ते० काल \times । पूर्ण । वै० सं०२०७२ । अर्थव्यार ।

विशेष-पूरी प्रति निम्न प्रकार है-

बीतरागायनमः । साटा छंद---

सब्बगी सददं तिम्राल दिसऊ मध्यस्य वस्तूगदो । विस्सवन्त्रुवरो स म्रा मिलस्य जो ईस भाऊ समी । सम्मदंतराखास्त्रवादिमदोईसो मुस्सीखा गमी पतास्मा त चट्टुउ सविमलो सिद्धो वसं कुरुनम्रो ॥१॥

विज्जुमाला संद---

देवार्णं सेवा काम्रोर्णं बार्णीए श्रंबाडाऊम् । ग्रुक्संदो साराहीसाम् विञ्चमाला सोहीत्रास् ॥२॥

भुजंगप्रयात खंद---

वरे मूलसंघे बलात्कारमण्णे सरस्सत्तिगछे पभंदोपयण्णे । वरो तस्स सिस्सी धम्मेद जीयो बृहो चाक्र्चारिस भूग्रंगजीयो ॥३॥

मार्गाछंद---

सद्मल कलापञ्चीगो लागो परमागमस्म सत्थिम्म । मिठव बाजगा उद्धारो धम्मचवो जन्नो मुरिगुदो ॥४॥

कामावतारछंद---

वताबंदेगाए मध्याज्यहोत्राए। यताबद्दवाए कताबुहमरण ॥६॥ धम्मदुकंदेश सद्धम्मवंदेश सम्मानुकारेश मतिब्बमारेश ॥ १९उ बस्ट्रिस सोमिव तित्वेश वानेश बृहेश संकुज्यमत्तर ॥६॥

द्वानिशस्यत्र कम्लबंधः ।)

भार्याखंद---

कोही लोहीचली मली प्रवर्शण सासणे लीखो । मा प्रमोहिव सीचो मारत्थी कंकणो छेली ॥॥॥

भुजंगप्रयात्तछंद---

सुचित्तो वितित्तो विभामो गईसो सुसीलो सुसीलो सुसीहो विईसो । सुधम्मो सुरम्मो सुकम्मो सुसीसो विराधो विमाधो विचिट्ठो विगोसो ॥१०।३

प्रायखिंद---

सम्मद् संगुगारां समारितं तहे बसु गाराो । बरइ बरावइ धम्मो चंदो प्रविपुण्ण विक्सापो ॥११॥

मौत्तिकदामछंद---

तिलंग हिमाचल मालव मंग वरम्बर केरल कम्पुष्ट मंग ।
तिलाल कॉलग कुरंगवहाल करावम पुज्वर वंड तमाल ।।१२।।
पुपोट मर्थति किरात मकीर युमुक्क तुस्क बराव युवीर ।
मरूपल दक्कण पूरवदेव सुखानवचाल सुकुंम लसेस ।।१३।।
चक्रव गक्रव मुकंकपुलाट, सुबेट सुभोट सुविलव राट ।
सुदेस विदेवह मावह राम, विदेक विचक्कण पूत्रह पाम ।।१४।।
मुवक्कल पीएपमोहरि सारि, रस्पन्नस्स्य सुवह पाम ।।१४।।
मुवक्कल पीएपमोहरि सारि, रस्पन्नस्स्य सेवार मस्योहरसाउ ।।१५॥
मुवक्यल मृति महार विमार, सुपावह गीउ मस्योहरसाउ ।।१५॥
मुवक्यल मृति महीर पवाल, सुपूरव सिम्मल रंगिह बाल ।
चवक्क विजयरि धम्मविचंद बमायठ मक्कहि वार सुनंद ।।१६॥

मार्गासंब-

जइ जरादिसिवर सहियो, सम्मदिद्वि साम बाइ परि ब्रारित । जिराधम्मभवराक्षेत्री विस ब्रंक ब्रंकरी जब्री जब्द ॥१०॥

```
१६८ ] [स्तोत्र साहित्य
```

स्रग्विसीछंद---

वत्त पतिष्ठु बिबाइ उद्धारकं सिस्स सत्याण् वाणामरो मास्यकं । बन्मत्सी रात्यवारा स्मृ कवास्त्रकं वाक्सस्य स्मृ द्वारिस्टियकं ।।१८।। स्वदृह्य सम्मृती भावस्यामावस्, दस्सममा वरा सम्परा पालस् । वाह्य वारिसाहि भूसियो विमाहो, सम्मृबंदो क्रम्मो जिस ईदिम्यहो ।।१८।।

पश्चश्चद्यंद----

तुरहार कागवरसावर वारू विच्व प्रकम जिरावर । वराह कागविह प्रधास सरहा गोयम नद जदवर । वीक्षि प्रवित्तर धम्म सोवि शक्तमप्यनतर । उद्वारी कम्मसीम बणामन्य वातक जसवर । वम्मह सप्य वप्प हरहावर समस्य तारहा तरहा । जय धम्मपुरंपर धम्मवंद सयलसंय मंगलकारा ।।२०।।

इति धर्मचन्द्रप्रबंध समाप्त: ।।

३६३२ नित्यपाठसंग्रहः''''''। पत्र सं॰ ७ । सा० ६२४४ई इक्का । भाषा -सस्कृत हिन्दी । विषय -स्त्रीय । र० काल ४ । में ० काल ४ । महर्सा । वे० सं० ६२० । का भण्डार ।

विशेष----निम्न पाठो का संग्रह है।

बडा दर्शन— संस्कृत — खोटा दर्शन— हिन्दी बुधजन प्रतक्तल वीबीसी— भ × पंचर्यनलगठ— भ करवंद (२ मगल है)

३६२३. निर्वायकारहगायाः'''''। पत्र सं० ४ । मा० ११४४ इ.च । मारा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र• काल × । के॰ काल × । पूर्ण । वे॰ सं० ४६४ । इस मण्डार ।

> विशेष — महावीर निर्वाण करवाएक पूजा भी है | १६९४ : मित संब २ । पत्र संब ४ । सेव्यास ४ । वेव्यास २ ३०२ । इक्र प्रध्वार । १६९४ : प्रति संब १ । पत्र संब २ । सेव्यास संब १ = ६४ । वेव्यास १ वेव्यास १ विशेष — इसी भण्यास में एक प्रति (वेव्यास १ व्यास १ व्यास १ विशेष — इसी भण्यास में एक प्रति (वेव्यास १ व्यास १ व्यास

३ ६३६. प्रति सं०४ । पत्र सं०२ । ले० काल 🗴 । वै० सं०१३६ । 😅 मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार ३ प्रतियां (वे० सं० १३६, २५६, २५६/२) धीर है ।

3520. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वै० सं० ४०३। स्व अण्डार ।

३६३० प्रति सं०६। पत्र सं०३। ले० काल ×। वे• स०१०६३। द कवारा

३६३६. निर्वाशकायदशिकाः । पत्र सं० २४ । ग्रा० १०४५ इक्ष । आया-प्रकृत संस्कृत । विषय-स्तदन । र० काल × | ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६६ । स्त मण्डार ।

३६५०, निर्वासकारङभाषा—भैया अगवतीहास । पत्र सं∘ ३ । सा॰ ६×६ ६ व । माया–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल सं० १७४१ । ले० काल ⋉ | पूर्णी वै० सं० ३७४ । क मण्डार ।

विशेष -- इसी मण्डार मे २ बपूर्ल प्रतियां (वे॰ सं॰ ३७३, ३७४) ग्रीर हैं।

३६५१. निर्वाशासकः प्राप्त २०२४ । मार्०११×७३ इ.च । मार्चा-हिस्वी । विवय-पूजा । र० काल \times । लेर्ज काल \times । पूर्ण । वेरु संरुदेद राष्ट्र मण्डार ।

२६४२. निर्वाणुअक्तिः $\cdots \cdot \mid$ पत्र सं०६। स्रा०६५%५३ डंब । भाषा संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल \times । ले० काल \times । सनूर्ण । वे० सं०२०७४ । द्वः मण्डार ।

विशेष--१६ पद्य तक है।

३६४३. निर्वाशासम्प्रतीस्तोत्र******। पत्र सं०१। प्रा० = ४४६ इंब । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल ४ । से० काल सं० १९२३ प्रासीज बुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० । ज अध्यार ।

३६४४. निर्वास्तिष्ठ ग्राम् । पत्र सं० ३ से ४ । घा० १०४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र∙ काल ४ । से० काल ४ । धपूर्ता । वै० सं० २१७४ । ट भण्यार ।

विशेष--हिन्दी टीका दी हुई है।

३६४४. नेमिनरेन्द्रस्तोत्र— जगलाथ । पत्र सं० ८ । या० ६३४४ इ.च । भाषा-संस्कृत । विषय- अ १५० स्तीत्र । र० काल ४ । से० काल सं० १७०४ भारता बुद. २ । पूर्ण । वे० सं० २३२ ! वर भण्दार ।

विशेष-पं वामोदर ने शेरपुर में प्रतिलिपि की बी।

३६४६. नेमिनाथस्तोत्र—पं≎ शाक्ती। पत्र सं∗१। घा०११×५३ इ'च। बावा–संस्कृत । विषय– स्तोत्र । र०काल × । ते० काल सं०१८⊏६। पूर्या। वै०सं०३४०। का मण्डार।

> विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। इस्रम्भारी स्तात्र है। प्रदर्शन मौम्म है। ३६४७, प्रति सं०२। पत्र सं०१। ले० काल ४। वे० सं०१८३०। ट भण्डार।

३६४स. नेमिस्तवन—ऋषि शिव । पत्र सं०२ । घा० १०३×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल । पूर्णी | वे० सं०१२०६ । का पम्बार ।

विशेष-- बीस तीर्थक्टर स्तवन भी है।

३६५६. नेसिस्तवन—जितसागरगयी। पत्र सं० १। मा० १०×४ इंच । माथा-हिन्दी। विषय-- स्तोत्र । २० काल \times । ले० काल \times 1 पूर्ण । वे० सं० १२१४ । का मण्डार ।

विशेष--दूसरा नेमिस्तवन भौर है।

३६.४०. पक्क रूप्यागुक्तपाठ—हरचंद् । पत्र सं∘ १ । प्राथा-ि,न्दी। विषय-स्तवन । र०काल सं० १८६३ ज्येष्ठ मुद्री ७ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २३८ । छ नम्बार ।

विशेष--मादि मन्त भाग निम्न है---

प्रारम्भ---

कस्यान नायक नमी, कन्य कुरुत् कुलकंद । कस्मय दुर कन्यान कर, बुधि कुल कमल दिनंद ॥१॥ भंगल नायक वंदिके, भंगल पंच प्रकार । वर मंगल मुक्त दोजिये, मंगल चरनन सार ॥२॥

प्रन्तिम-धत्त छंद---

यह मंगल माला सब जनविधि है, सिव साला गल में धरनी ।

बाला बघतस्त सब जगनी,

मुख समूह की है भरनी।।

मन वच तन श्रधान करै गुन,

तिनके चहुंगति दुस हरनी ।।

तातं भविजन पढि कढि जगते,

पंचम गति वामा वरनी ॥११६॥

वोहा---

ब्योम अंकुल न नापिये, गनिये नघवा थार । उडरान मित भू पैंडन्यी, त्यो प्रुन वरने सार ।१११७।। तीनि तीनि वसु चंद्र, संवतसर के संक। जेष्ठ सुक्त सतम दिवस, पूरन पढी निसंक ।११९६।।

।। इति पंचकल्यागुक संपूर्ण ।।

३६५१. पञ्चनसरकारस्तोत्र—काचार्य विद्यानंदि । यत्र सं० ४ । घा० १०३४५३ इंव । आपा-संस्कृत । विदय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल सं० १७६६ काग्रुण । पूर्ण । वे० सं० ३५ । का अवार ।

३६४२. पञ्चसंगलपाठ— रूपचंद् । पत्र सं०६ । मा० १२३/४३, प्रवा भाषा–हिन्दी । विषय– स्तोव । र०काल ४ । ते० काल सं०१८४४ कार्लिक सुदी २ । दुर्गावे० सं०५०२ ।

> विशेष — धन्त में तीस चौबीसी के नाम भी दिये हुये हैं। पं० जुम्यालबन्द ने प्रतिलिपि की वी। इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ६६७, ७७१, ६६०) ग्रीर हैं। ३६४३, प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । से० काल सं० १६३७। वे० सं० ४१४ । क भण्डार। ३४४४, प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३ । से० काल ४ । वे० सं० ३१४ । क भण्डार।

३६४४. प्रति सं० ४ । पत्र मं० १० । ले० राल सं० १८८६ घामोज मुदी १४ । वे० सं∙ ६१८ । व्य सभ्दार ।

विद्याय—पत्र प्रचीयानही है। इसी अण्डार मे एक प्रति (वै० सं० २३६) और है।

२६४६ प्रति संट ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल ४ । वे० सं० १४४ । इद् अण्डार ।
विद्याय—प्रती अण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३६) और है।

३६४७. पंचरतोत्रसंग्रहः*****। पत्र सं० १३ । या० १२४५ इक्का । आया–संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्णः | वे०सं० ११६ । इस्र सण्डार ।

विशेष--पाचों ही स्तोत्र टीका महित हैं।

विशेष-इसी भण्डार में एक प्रति भौर है।

स्तोत्र	टीकाकार	भाषा
१. एकीभाव	नागचन्द्र सूरि	संस्कृत
२. कत्यासमिदर	हर्वकी ति	**
३. विषापहार	नाग व न्द्रसूरि	17
४. भूपालचतुर्विद्यति	धाशाधर	,,
५. सिद्धिप्रियस्तोत्र		**

३६.५६. पंचस्तोत्रसंग्रहः*****। युत्र सं०२४ । ग्रा०६√४ इंच। जावा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० के० काल ×। पूर्वो । वै० सं०१४०० । इस सम्बार ।

३६.४६. यंचरतोत्रद्धीकाः****। यज सं० ५०। आर० २२×८ इंच। त्राया—संस्कृतः। विषय-स्तोत्रः। र० काल ×। पूर्वा वेल सं० २००३। ट त्रच्चारः।

YPR] [WANT AT THE PROPERTY OF THE PROPERTY O

विकाप-भक्तामर, विद्यापहार, स्क्रीअल, कळालाखंबिर, भूपालअतुर्विकाति का शांच स्त्रोहों की टीका है।

ने ६६०, प्रश्लावसम्बद्धस्त्रास्य प्राप्ते हेव । पत्र तंः १५,। त्याः ११,४६६ वळा । मामा-संस्कृत । विस्तृत-स्तांत । रः काल × । तः काल संः १८६७ । पूर्ण । वे० संः १९४४ । द्धा प्रम्यार ।

विशेष---धित्य- प्रस्यायां पश्चवेदतिबक्षितामां पद्मावरक्षकनृतौ मत् किनप्यवेषवित तत्सवं सर्वोचिः शंतव्यं देवताप्रिरिण । वर्षाणां हावसिः क्षतेपितनुतरेरियं कृति वेक्षाले सूर्यविने समान्ता - युक्कांचम्यां वस्याक्षरगण्नातः पंचलगानि वातानिदाविषयकाराणि वातदक्षप्रवेदता.प्राप्तः ।

इति पद्मावत्यष्टकवृत्तिसमाप्ता ।

३६६१. प्रद्याक्षतीस्त्रीलः.....। पत्र सं० १४ । झा० ११६ ४५३ दंत्र । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तात्र । एक काल \times । पूर्ण । वे॰ सं० १३२ । ज भण्डार ।

विशेष--पद्मावती पूजा तथा शान्तिनायस्तोत्र, एकीशावस्तोत्र भौर विषापहारस्तोत्र भी हैं।

३६६२. पद्मावती की ढाल ""। पत्र सं० २। मा० ६ $\frac{1}{4}$ \times ५३ वं । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तात्र । र० काल \times । प्रर्ण । ले०-सं० २१०० । इस भण्डार ।

देह६दे. पद्माश्वतीकृरव्यकः.....। पत्र सं॰ १। झा० ११५ \times १ दक्कः । भाषा-संस्कृतः । विषय-स्तीत्र । र० काल \times । ल० काल \times । पूर्ण । वै०.सं॰ २५१ । व्यामण्डार ।

२०६४. प**द्यावतोसस्रकलाम**ः ^{........}। पत्र सं० १२ । मा० १०×४५**) इ.म. ।** वाषा—संस्कृत । विषय— स्नात्र । र०काल × । ते० काल सं० १९०२ । दूर्ण । तै० सं० १९४ **। इस अध्यार** ।

विशेष -- जान्तिनाथाष्ट्रक एवं पद्मावनी कवच (संत्र) भी विथे हथे हैं।

३६६४. सम्रावतीम्मोत्रः****। यत्र सं॰ ६ । स्रो० ६ $\frac{1}{4}$ ४६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तीत्र । र॰ काल \times । नं० काल \times । पूर्ण । वे० सं० २१४६ । इस्.अप्यार ।

विशेष-इमी भण्डार मे २ प्रतिया (वै०, सं० १०३२, १८६८) झीर है।

३.६६. प्रति संट २। पत्र संट द । सेट काल संट १९३३। वेट संट २६४। स्व भण्डार ।

३६६७, प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २०६ ।, स आपकार ।

३६६८. प्रति सं ८ ४। पत्र सं०१६। ले॰ काल ×। ने॰ सं०४२१। इस आपहार।

३६६६. परमञ्जेतिकोत्र-ज्यासमिदास । पत्र मंग १ । झा० १२३,४६३ .६'व । भाषा-हिल्यो । विषय-स्तोत्र । र० काल × । सन् काल × । पूर्ण । वै० सं० २२११ । झ आस्त्रार ।

३६७०. परमात्सराजनाबन—सङ्घानीहः। पत्र सं० २ । या० ६×४३ इख्रा । सुप्रा-संस्कृतः। विवय— स्तोत्र । र॰ काल × । के० काल × । पूर्ण । वै० सं० १२३ । स्कृतसम्बद्धारः। ३६७१, वस्तानराजस्तोत्र, पुर सुक्काकीर्ति । यह ते हु । मार १०×४ वं व । नावा-संस्कृत । विवय-स्तोत्र । र० काल ४ । ते कुक्का ४ । यूर्वा । वै० तं ० १९४ । या जुल्हार ।

भ्रथ परमारमराज स्तोत्र लिख्नुतो

यवामसंस्तवफलात् महता महत्यप्यक्षी, विशुद्धम इहाक् अविति पूर्वाः । सर्वार्थसिद्धजनकाः स्वविदेकसूति, भक्त्यास्तुवेतस्तिकां,पर्मात्मराजं ।।१।। वद्भवानवज्रहननात्महता प्रयाति, कर्माद्रवोद्धि विष्याः वतनूर्यता च । संतातिनावर्ष्युगाः प्रकटाभवेयुर्भन्त्यास्तुवेतमनिकः परमात्मराजं ॥२॥ बस्यावबोधकसमात्त्रिजगत्मदीयं, भीकेवलोड्यमनंतपुद्धाव्यिमाशु । संतः श्रयन्ति परमाद्रमं भुवनाच्यं वंद्यं , सन्त्यास्तुवेतमन्त्रां परमाद्रमराजं ॥३॥ यहर्भनेनसुनमो मलयोगलीमा, भ्याने निजातमन इह त्रिजगत्पदार्थान् । पश्यन्ति केवलदृशा स्वकराश्वितान्त्रा, भक्त्यास्तुवेत्सनिशं पर्मात्मराजं ॥४॥ यद्भावनादिकरणाद्भवनामानाव, प्रत्युवर्वति कर्मार्पवाभवकोटि जाताः । प्रकारतरेऽविविविधाः सक्ताद्वयः स्पूर्धकृत्यास्तुवेत्वनिवा परमात्मराजं ॥५॥ समाममात्रजपनात् स्मरणाच बस्य, दु:कर्म्मदुर्मलववाद्विमला भवति दबा जिनेन्द्रगराभृत्सुपदं लभंते, भक्त्यास्तुवैतमनिशं परमात्मराजं ॥६॥ यं स्वान्तरेतु विमलं विमलाविबुद्धय, खुक्लेन तस्वमसमं परमार्थरूपं । मर्हत्वदं त्रिजयता शरएां भयन्ते, भक्त्यास्तुवैतमनिशं परमात्मराजं ।।७।। यद्वधानशुक्कपविनासिलकर्मशैलान्, हत्वा समाप्यशिवदाः स्तवधंदनार्खाः । सिद्धासदष्टगुरम्प्रमूषरमाजनाः स्युर्भन्त्यास्तुवेतमनिषां परमात्मराजं ॥=॥ यस्यातये सुवरिएतो विधिनाचरंति, ग्राचारयन्ति समिनो वरपञ्चभेदान् । , बाबारसारवनितान् परमार्थबुद्धपा, भक्त्यास्तुवेत्यनित्रं प्रस्मूह्मराजं ।।६॥ यं ज्ञातुमात्ससुविदो यालपादकाश्च, सन्नीगुपूर्वजलवेर्तयु माति पारं । ्रम्त्यासम्तिष्विवदं प्रतत्त्वक्षीजं, भुक्त्यास्तुवेतमन्त्रां प्रमृह्मुर्गजं ।।१०।। ये साध्यंति वरयोगवलेन नित्यमध्यातम्मार्गिन्दुत्।वन्पर्वृहाहौ । ुश्रीसाधकः , शिव्यतेः, करमं तिरस्यं, भक्त्यास्तुवेतमनिकं परमात्मराजं ।।११।। रागबोषमलिनोऽपि निर्मलो, देहुवान्पि च देह बुन्जित:। कर्मवानपि कुकर्मदूर्गो, निश्चयेन भुवि यः स नन्दतु ॥१२॥

जन्ममृत्युक्तितो भवांतक, एक रूप इह योप्यनेकथा। ैं व्यक्त एव यमिनां न रागिगां, यश्चिदात्मक इहास्तुनिर्म्मलः ।११३।। यत्तत्वं ध्यानगम्यं परपदकर तीर्थनाथादिमेव्यं । कार्मध्ने जानदेहं भवभयमथन अ्येष्टमानदमूल ।। श्रंतातीतं ग्रसाप्त रहितविधिगमा सिद्धसाहश्यरूपं। तद्व दे स्वात्मतत्वं शिवमुखगतयं स्तौमि युक्त्याभजेह ।।१४॥ पठित नित्यं परमात्मराजमहास्तवं यं विवृधाः किलं मे । तेषां चिदात्माविरतोगद्वरो ध्यानी ग्रेगां स्वात्ररमात्स्यः ।।१५।। इत्यं यो वारवारं गुरागरारचनैवंदितः संस्तुतोऽस्मिन सारे ग्रन्थे जिदारमा समग्रराजलिशः मोस्तमे व्यक्तरूपः । ज्येष्ठः स्वध्यानदातास्त्रिलविधिवपुषा हानय वित्तशुद्धयै सन्मत्यैवो धकर्ता प्रकटनिजयुगो धैय्यंशाली च शुद्धः ॥१६॥ इति श्री सकलकीतिश्रद्वारकविरचितं परमात्मराजस्तोत्र सम्पूर्णम् ॥ ३६७२, परसानंदर्णचर्षिशति"" । पत्र मं ०१। घा० १×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तात्र । र • काल × । ले • काल × । पूर्श । वे० सं० १३३ । व्य भण्डार ।

3863. परमानंदस्तोत्र" "। पत्र सं० ३। मा० ७; ×५ डक्का भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल 🔀 । ले० काल 🔀 । पूर्णा वै० सं० ११३० । द्या मण्डार । 38 अप्रे. प्रति संब २ । पत्र संब १ । लेक काल x । वेब संब २६६ । आ अध्यार । ३६७४. प्रति सं०३ । पत्र सं०२ । ले० काल ४ । वे० सं०२१२ । ख अण्डार ।

> विकेष---फुलवन्य विन्दायका ने प्रतिलिपि की थी। इसी अण्डार में एक प्रति (वे० स० २११) सीर है। ३६७६. परमानंदस्तीत्र """। पत्र सं० ३। शा० ११/ ७३ इंच । मावा-संस्कृत । विवय-स्तीत्र ।

र काल × 1 ले काल सं १६६७ फाग्रुसा बुदी १४ । पूर्म | वे० सं ० ४३८ । इस अण्डार ।

विषेष--हिन्दी धर्य भी दिया हुआ है।

३६७७. परमार्थस्तोत्र.....। पत्र सं० ४ । घा० ११५×५2 इ'स । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र• काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०४ । सा भण्डार ।

विक्षेप---सूर्य की स्तुति की गयी है। प्रथम पत्र में कुछ लिखने से शह गया है।

३६.४... पाठसंब्रह \cdots ापत्र सं०३६ | ब्रा० Y_{2}^{*} X४ इंब । ब्रायस-संस्कृत । विषय-स्तीत्र । र० काल X। ल० काल X। पूर्ण । वे० सं० १६२० | **ब्रा सम्बार** ।

निम्न पाठ हैं -- जैन गायत्री उर्फ वजायक्षर, शान्तिस्तोत्र, एकीबाबस्तोत्र, रामोकारकस्प, न्हावराकस्प

३६७६. पाठसंब्रह""ापात्र सं०१०। घा०१२% ध्हेष्ट्या। बाषा–हिन्दी संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र∙वाल ४। ने०काल ४ | बपुर्सा। दे०सं०२०६=। का अध्वार।

६६=२ पाठसंबह—संबहदःची-जैतरास वाक्ता। पत्र तं०७०। सा०११३×७३ इखः। आपा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४६१ । इ. सच्चार ।

३६८९. पात्रकेहररिस्तोत्र ‴ापत्र सं०१७ । झा०१०४५ इंच। आधा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०वाल ⋌ ले०काल ४ । पूर्ण। वे०स०१३४ । **इट गण्डा**र ।

विशेष-- ५० श्लोक हैं। प्र'त प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है।

२६८२. पाथियेश्वरविष्तासिष्ठा '''''' पत्र सं०७ । सा० द्रै×५३ इ'व । मावा-संस्कृत । विषय-स्नोत । र० वाल × । ले० काल सं० १८६० मादवा सुदी द । वै० सं० २३४ । ज जण्डार ।

विशेष -- बुन्दावन ने प्रतिलिपि को थी।

३६८६, पार्थिकेरवर***** । पत्र सं०३। झा० ७३/४४३ इ.च। साथा—संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य। र०काल ४। ने०काल ४। ने०सं०१४४४। पूर्वो । आह्र अध्वरार।

३६=४. पारर्थनाथ पद्मावतीस्ते।त्र==। पत्र सं०३। बा०११ \times ५ इंव। जापा=संस्कृत। विषय=स्तोतः। र०काल \times । ते०काल \times । पूर्ण। वे० सं० १३६। क्क्स प्रष्टार।

३६८४ पार्श्वनाय लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मात्रभ्रक्ते । पत्र सं०१। घा०६४४३ इक्का ज्ञाना—संस्कृत । विवय-स्तोत्र । र०कास ४ । के०कास ४ । पूर्वा । वे०सं० २६४ । स्त्र व्यवहर ।

३६=६. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० ६२। म्ह अण्डार।

३६८०. पारवेनाख एवं वर्द्धमानस्तवन******। पन सं०१। मा०१०४४३ इ'व। माषा-संस्कृत । विषय-स्तोत । र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्ण । वे० सं०१४६ । **इट मण्डार ।**

३.६.८... पार्श्वनाथस्तोत्रः.....। पत्र सं० ३ । सा० १०३/४१६ इ.च. । नाया-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ३४३ । स्रा जण्डार ।

विसेष-सपु सामाधिक भी है।

३६८८. पारर्थनाध्यसीम् """। पत्र सं०१२ । घा० १०४४ हे इ.च । भाषा -संग्यत । विषय⊸सोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ता | वे०सं०२५३ । इद्रा मण्डार ।

विशेष---मन्त्र सहित स्तोत्र हैं। ग्रक्षर सुन्दर एवं मोटे हैं।

दैहह.. पारचैनाधस्तीत्रः'''''। यत्र सं०१। घा० १२००३ इ'च। भाषा- संस्कृतः। विषय-स्तात्रः। दै०काल ×। ते०काल ×। पूर्ता। वे०सं०७६६। इदा भच्छारः।

देह€१. पारवैनाथस्तोत्र। पत्र सं०१। झा०१०हुँ×८ इंच। भाषा-हिन्दा। विषय-स्तोत्र । र• साल ×। ते• काल ×। पूर्ता। वै• सं० १६३। इस भण्डार।

देहेहे- पारवेनाथस्तोत्रदीका'''''। पत्र सं० २ ' मा० ११×५३ इत्र । आषा⊸मन्दृतः विषय⊸ स्तोत्र । रं•काल × । लं•काल × । पूर्णी वि•सं० ३४२ । स्र अध्दार ।

दैश्क्षेत्र पायमेनाथस्तोत्रदीका'''''' । पत्र सं०२ । ग्रा०१०४५ इत्र । भाषा–संस्कृत ; विषय– स्कोत्र । र॰ काल × । ले० काल × । पूर्ण | वै० सं०६६७ | श्राभण्यार ।

देहरक्षः पारर्वनाथस्तोत्रभाषा—द्यानतराया । पत्र स०१ । प्रा० १०४१ है इ.च । भाषा िर्दा। विषय–स्तोत्र । र०काल ४ । के०काल ४ । पूर्ण १वै० सं०२०४५ । स्त्र भण्डार ।

देश्क्ष्य, पाश्चेनाथाष्ट्रकः \cdots ा पत्र संक ४ । धाक १२०,४ इंच । आया ६४३ त । विषय-स्तोत्र । $\mathbf v$ काल $\mathbf x$ । दुर्शा । वेक संक ३५७ । इस भण्डार ।

विशेष--प्रति भन्त्र सहित है।

देह६६. पारवेसहिस्नस्तोत्र—सहासुनि राजसिंह। यत्र स०४। झा०११¦,८०६' व । आया–संस्कृत । विषय–स्तोत्र। र०काल ४ । ले०काल सं०१६८७। पूर्णा। वे०स०७७०। क्र्यभण्डार ।

दे६६७ प्रश्तोचरस्तोचः ""। पत्र सं०७ । प्रा०६ ∧६ इंच। प्राषा—संस्कृत । विषय स्तोष । र∙ काल ४ । लं∘ काल ४ । पूर्ण । वै० सं०१६६ । स्मूषण्डार ।

देहस्य. प्रातःस्मरत्यमंत्रः" "ापत्र सं०१। सा००३×४ इ.च। भाषा–सम्क्रतः। विषय–स्तोत्रः। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्णः। वै०सं०१४०३ । ऋस्यस्थारः।

विशेष--श्री हीरानन्द ने द्रव्यपुर में प्रतिनिधि की थी।

४०००. सक्तासरस्तोत्र—सानतुंगाचार्य । पत्र सं० ६ । घा ० १०४५ इ'च । भाषा-संस्कृत । विवय-स्त्रोत्त । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० १२०३ । का मण्यार ।

> प्रटन्शे, प्रति संव २ । पत्र संव १० । लेव काल सव १७२० । देव संव २६ । इस सम्बार । १९०२. प्रति संव ३ । पत्र सव २४ । सेव काल संव १७४४ । देव संव १०१४ । इस सम्बार । विशेष—हिन्दी सर्प सहित है ।

४००३. प्रति रुंक ४ । पत्र म० १० । ले० काल 🗴 । वे० सं० २२०१ । 🖼 मण्डार ।

विशेष—प्रति ताडपत्रीय है। ग्रा० ५x२ गृंच है। इसके श्रतिरिक्त २ पत्र पुट्टों की जगह हैं। २x१⋛ 'च चौडे पत्र पर रामोकार सन्त्र भी है। प्रति प्रदर्शन योख्य है।

प्रटब्स. प्रति संब्ध: । यन मंग्यार । नेव्यात संव्यात संव्यात । विशेष--- इसी भण्डार में ६ प्रतियां (वेव्यंत ४४१, ६४६,६७३, ८६०,६२०, ६४६,११३४,

२१८६, १३६६) भीर है

प्रत्यक्ष प्रतिसंदर्भ। पण मंद्रभाने काल संद्रश्रमण सुदीन। वैद्रसंदर्भशासः भण्डार।

विशेष —संस्कृत मे पर्धायवाची शब्द दिये हैं। बूल प्रति मधुरादास ने निमसपुर में लिखी तथा उदैराम ने टिप्पम किया। इसी अध्यार में तीन प्रतिया (कै० सं० १२६, २६६, १६६६) और है।

४८८६ प्रतिसंठ ७। पत्र सं०२४ । ले० काल × । वे० सं० ७४ । च भण्डार ।

प्रटब्ध, प्रतिसंट कः । यथ सर्व ६ में ११। तेर्वकाल संव १ क्षक ज्येष्ठ बुद्धी ७ । प्रपूर्ण। वेट संव ४४६ । इस्थव्हार ।

> ंबकंप -- इसी मण्डार में १२ प्रतिमां (बैठ संठ ४३६ से ४४५ तथा ४४७ से ४४०, ४४२) और हैं। ४०८८ प्रति संठ ६। पत्र संठ २५। सेठ काल 🗴। वेठ संठ ७३६। चा मण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका संहित है। इसी मण्डार में ७ प्रतिया (वे० सं० २४३, २४४, २४४, २४६, २४७. ७१८, ७१८) और है।

४००६. प्रतिसंट १०। पत्र सं०६। ले॰ काल सं० १६२२ चैत्र बुदी ६। वे॰ सं० १३४। छ भण्डार।

> निर्मेष — इसी प्रण्यार में ६ प्रतियां (वै० सं० १२४ (४) १२६, २२६) धीर हैं। ४०१०. प्रति सं० ११। पण सं० ७। से० काल ४। वै० सं० १७०। सा मण्यार। विभीय— इसी प्रण्यार एक प्रति (वै० सं० २१४) धीर है।

```
४०६ ] [ स्तोत्र साहित्य
```

४०११. प्रति सं०१२ । पत्र सं०१ । ते० काल × । ते० सं०१७१ । ज्ञ भण्यार । ४०१२. प्रति सं०१२ । पत्र सं०१३ । ते० काल सं०१०७७ पीय सुदी१ । वे० सं०२६३ । व्य विशेष—इसी भण्यार में ३ प्रतियां (वे० सं०२६६ १३६, ४२५) मीर हैं।

प्रदर्शे, प्रति संदर्शे । यत्र संव ३ से ३६ । लेव काल संदर्शे २२ । प्रपूर्ण । वेव संदर्शे १ ट सम्बार ।

विशोष—इस प्रति में ५२ स्त्रोक हैं। पश्च १, २, ४, ६, ७ १, १६ यह पत्र नहीं हैं। फ्रीत हिन्दी व्या-क्या लहित हैं। इसी नण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १६३४, १७०४, १६६६, २०१४) और हैं।

४०१४. आक्तामरस्तोत्रवृत्ति— ज्ञा० रायमस्त । पत्र सं० ३० । क्षा० ११२,×६ इ.च.। नाया-संस्थ्य । विद्यय—स्तोत्र । र०कास सं० १६२६ । लं० काल सं० १७६१ । दूर्सावे अर्था० १०७६ । इस अभ्यार ।

> विकोष— ग्रन्थ की टीका ग्रीवापुर से चन्द्रश्रम चैत्यालय में की गयी। प्रति कथासहित है। ४०१४. प्रति संट २ । पत्र संट ४८ । लंटकाल सट १७२४ ग्रासीज बुदी १ । वेट संट २८७ । अप्र

विशेष--इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं० १४३) और है।

TREEST !

मण्डार ।

४०१६. प्रति सं २ । पत्र सं ० ४० । ले० काल सं ० १६११ । वे० सं ० ५४४ । क भण्डार ।

४०१७. प्रति संबन्ध । पत्र संब १४६ । लेव काल 🗵 । वेव संव ६५ । वा भण्डार ।

विशेष--फतेबन्द गंगवाल ने मन्नालाल कासलीवाल मे प्रतिसिपि कराई।

प्रवर्गनः प्रतिसंव ४ । पत्र संव ४४ । लेव काल संव १७४४ पीप बुदी सः। तेव संव ४४ । इस् अभ्यार ।

४८९६. प्रतिसं०६ । पत्र सं०४७। ले० कालसं० १८३२ पीप सुधी२ । वे०सं० ६६ छ। प्रचार।

विशेष—सांगानेर में पंज सवादिशान ने नेमिनाथ चैत्थालय में ईसरदास की पुस्तक से प्रतिलिपि की बी। ४०२० प्रति संठ७। पत्र सं०४१। ले॰ काल मं०१८७३ चैत्र बुदी ११। वै०स० १५। ज

विकोय—हरिगारासस्य बाह्यस्य ने पं॰ कासूराम के पठनार्थस्रास्य संस्थास्य में प्रतिलिप की थी। ४०२१. प्रतिसंट द।यत्र सं० ४६ । ले॰ काल सं० १६६६ कासुन पुती द।वे॰ सं० २६।स्य सम्बद्धारः।

४०२२, प्रति संब ६ । यव सब ३६ । तेव काल संब १७६१ फाछुरा । देव संव १०६ । या अध्यार । प्र०२३. भक्तामरस्तोत्रदीका—हर्षकीत्रिस्तृरि । यत संव १० । ब्राव १०४५ है इस । आया-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रक्काल ४ । तेव काल ४ । पूर्ण । देव संव २७६ । ब्रा मध्यार ।

> प्रदर्भ प्रति सं २ । पत्र सं ० २६। ले० काल सं ० १६४० । वे० सं ० १६१४ । ट भण्डार । विशेष—इस टीका का नाम भक्तामर प्रवीपिका दिया हुमा है ।

प्रटर्शः भक्तासरस्तीत्रटीकाःणः । पत्र तं∗ १२ । सा० १०४४३ इकाः। भाषा-संस्कृतः । विषय-स्तोत्रः। र० काल ×। ल० काल ×। सपूर्णः । वै० सं∗ १६६१ । ट मण्डारः।

> प्रबन्धः प्रति संव र । पत्र संव १६ | लेव काम × | वेव संव १०४४ । व्या मण्डारे | विशेष — पत्र विपक्षे हुवे है ।

४८२७. प्रतिसं०३ । पत्र सं०१६ । ले० कालासं०१८७२ यौष बुदी १ । वे० सं०२१०६ । का अथ्यार ।

विशेष—सम्नालाल ने शीतलगाथ के वैध्यालय में प्रतिलिपि की थी। इस्री अण्यार में एक प्रति (वै० सं०११६६) और है।

> ४०२६. प्रति सं०४ । पत्र सं०४ ८ । ते० काल ४ । ते० सं०४६६ । क कम्बार । ४०२६. प्रति सं०४ । पत्र सं०७ । ते० काल ४ । ब्रपूर्ण । ते० तं०१४६ । विशेर—- ३६वे काव्य तक है ।

४८२०. भक्तासरस्तेत्रदीकाः*****।पत्र सं०११ । सा०१२५८८ इ.च.। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-स्तात्र ।र०काल ≿ । ले०काल सं०१८१८ चैत मुसी ८ । पूर्णावे० सं०१६१२ । ट. मण्डार ।

> विजेष—सक्तर मोटे हैं। संस्कृत तथा हिन्दी में टीका दी हुई है। संग्रही प्रभाजाण ने प्रतिलिपि की थी। इद्र भक्कार में एक संदुर्ल प्रति (वै॰ कैंट २०६२) और है।

प्र०६१, श्रक्तामरस्तोत्र ऋक्तिमंत्र सहितः'' ''''। पत्र सं० २७ । सा० १०४४ ¦ संव । नावा-संस्कृत । विवय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल सं० १८४६ वैधाल बुबी ११ । पूर्ण । वै० सं० २०४१ । स्म सम्बर्गः । थे!**ं]** [स्थेत सा**श्**

विश्वीय-अभी व्यवस्थायर वे व्यवसूर में अधिविश्वास की यां। अस्तिम २ छुद्व वर उपसर्थ हुए स्तोज दिया हुआते हैं हें क्यों व्यवसर में वैक सिंत (वेन संज १३११) और है।

संकेई रे. ऑसी संकेर । केर्प सं∗ १२ । तेर साम संक १८६३ नेपाण सुद्धी ७ । वेर सं≉ १२६ । आह मन्द्रार ।

विशेष--गोविदगढ मे पुरुषोत्तमसागर ने प्रतिलिपि की थी।

४८३३. प्रति सं०३। पत्र सं०२४। ले॰ काल \times । वे० सं०६७। व्य मण्डार।

विशेष-सन्त्रों के चित्र भी हैं।

४०६४. प्रतिसं०४ । पत्र सं०३१। ले॰ काल सं०१८२ वैशास सुदी ११। वे॰ सं०८१। व्य अभवार ।

विशेष-पं • संदेरिशम के शिष्य शैलाब ने प्रीतिनिधि की थी।

े ४०२४. भक्तामरस्तीत्रमीषी— जर्षथम् ह्याबड्डा। यत्र सं०६४। झा०१२३४५ इ.च. आषा— हिन्दी गया। विदेय—स्तीर्थ। र० कंपन सं०१८५० कंपिक बुदी १२। दूर्सा । दे० सं०४४१।

विशेष-क मण्डार मे २ प्रतियां (वे॰ सं॰ १४२, १४३) और है।

प्रवर्दे . श्रेति संक रे । पत्र संव २१ । कैंव काल मंव ११६० । वेव संव ११६ । के अण्डार ।

४८३७. प्रति सं०३ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १६३० । वे० सं० ६५४ । च अण्डार ।

४०२ म. प्रैंति सं०४ । पत्र सं०२२ : ले० कान सं०१६०४ वैशास्त्र मुदी ११ । वे० सं०१७६ । छ

भण्डार ।

४०६६. अति सं० ३ । पेत्र सं० ३२ । केंब क्षील 🗴 । केंब सं० २७३ । अर अध्वार ।

४०४०. संसीनंदरसीतंत्रांसा— हैसराज ! पर्व मॅ० द । श्री० द्री≫६ इक्का | आंका-हिन्दी । विषय– स्तोत्र । र० काल ≫ । ते० काल ≫ । पूर्ण । वै० सं० ११२५ । इस अध्वार ।

र्केटवेर. प्रतिसं⊙ २ । पेत्र सँ० ४ । ते० कोण स०१ संब४ माघ सुंदी २ । वे० सं० ६४ | बा अण्डार ।

विकोष---वीवान अनरवन्त्र के मन्त्रिर में प्रतिलिपि की गंबी भी।

४८४२. प्रति संब ३ । पत्र संब ६ से १० । लेव काल 🔀 । अपूर्ण । वेव संव ५५१ । 🖝 प्रण्डार ।

४०४२. अकासरकोत्रभाषा—गंकारास । पत्र सं० २ से २७ । का० १२६४४६ रूख । भाषा—गंकृत हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० कास × । ते० कास सं० १०६७ । सङ्ग्रस्त । ३० सं० २००७ । ट अथवार । eite milite 3

[M1

निषेत्र—प्रथम पत्र नहीं है । वहिले कुछ किर प्रजाशन कुछ क्ष्मीका, हेशकात्र कुछ एक, सही २ जाना कका इससे वाले पार्टिक पत्र पहिला है ।

धन्त में किया है— बाहुओं आन्यों राजधी अवेड २ कुम कोकावार्ड, कहू आका नौक्युवारी ने व्यक्ति भागवन्त्रना नती को यह पुस्तक प्राम्पर्व विया मंत्र देवश्रदे का सम्म में सम्बद्धि में महे हुई है

४०४४. भक्तामरस्तौत्रभाषा......। यत्र सं० ६ ते १०। ग्रा० १०४१ हुत्व । जाया-हिन्दी । विषय-म्तोत्र । रं० काल ४ । लं० काल सं० १७६७ । ग्रपूर्ण । वै० सं० १२६४ । ग्रा भव्यार ।

४८४४. प्रतिसं०२ । पत्र सं०६३ । ले० काल सं०१८२८ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं०६३१ । 🛒 अलेकार ।

विशेष---भूधरदास के पुत्र के लिये संभूराण वे सरस्तित भी की व

प्रदर्शत, अति संब है। यम संब १०। मेरे पाक प्रा के श्री कि विशेष में विकास ।

४०४७. प्रति सं० ४। पन र्स० २१। कि साथ र्स० १८६९। के कि १६७। क वन्तर १

विशेष--- अवकृर के पक्ष:संगत ने अस्तिविक् की की व

प्रत्यक्त, प्रति संदर्ध। यत्र संद ३३। तेत्र आवन तेत्र प्रमण्ड वैष शुक्री देश । येत्र संद २६७ ४ आहार।

४०४६. सक्षमकरस्तेकसम्बागः। पत्र कं २ । का० १०६४ ७ है व । प्राया-दिन्दी । विकस-स्तोव । र० कात ४ । ते० कान ४ । वूर्ण । वै० सं० ६५२ । क्ष प्रण्यार ।

४००१०. सूत्राल पंतुर्विकासिकासकोत्र — सूत्राका कार्कि । यतः वर्षे $\sim 2 \frac{1}{8} \times 1 ^2$ दंतः । साता-सं 1 रुतः । विषय-स्तोतः । रं० काल \times । नं० काल सं 1 रुतः । पूर्णः । की० सं 1 र स्व सम्बद्धरः ।

विक्रोच-श्रृत्दी उच्या टीका सक्षित है । आस सम्बार में एक प्रति (वै० सं० ३२३) और है।

४०४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल 🗴 । वे० सं० २६६ । 🚜 भण्डार ।

४०४२. इसति संब ३। पत्र संब ३। मेर कास ×। वेट संब ५७२। इक अण्डार।

विशेष-इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ५७३) है।

प्रत्यते. भूपालचतुर्विशतिटीका — केरिसोक्य । चैत केरे । का क्यूप्रपद्ध हे व । साया-संस्कृत । विषय-स्तोत । रेंक कर्ति ४ १ कैंक कींन से के देशस्य सावेचा वसी २२ । पूर्व । चैक कींक देश का क्यांगर ।

विवोध—की विनयबन्द के पठनार्थ गं० श्रासेसिंद में टीबर बिसी थी। गं० झीरोबर्फ के क्षित्रा कोनेबन्द्र के बठनांचें भीतमींसिंद में प्रीतासिंदि कराई ।

िस्तोत्र साहित्य

प्रश्नेसित किम्म प्रकार है— श्रंपस्थर बयुद्धिकारोम् (१७७०), क्लि मात्रवर इण्युत हावती तियौ मोजमाबादनगरे श्रीमूनसंघे नंबाम्नाये बलात्कारगाये सरस्वतीगच्चे कुंबकुंबाबार्यान्वये महारकोत्तम श्री श्री १०० वेनेन्द्रकीतिची कस्य यास्त्रकारी बुचयो बीहीरामन्वयोकस्य विजयेत वितयस्यत बीक्यम् श्रीस्थायेत स्वयञ्जार्थे तिवितयं पूराम वर्तृविशितका टीका विजयवनस्यार्थमित्यावामप्रविर्शवतामुकास्वत्राविवारे विजेन्द्रस्तरोहीका परिसमाला।

अ मण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ४०) श्रोर है।

४०५४. प्रति सं०२ । यण सं०१६ । ले० काल सं०१५३२ मंगसिर सुदी १०। दे० सं०२३१ । व्य सम्बार ।

विशेष- प्रशस्ति—सं० १५३२ वर्षे मार्ग सुदी १० गुस्तासरे श्रीधाटमपुरसुभस्थाने श्रीवन्त्रप्रभुवैत्यालय लिक्यते श्रीमूलसंथे बलात्कारगरो सुरस्वतीगन्ने कुंबकुंबाचार्यानवेः........

प्र**८४४. भूमालचतुर्विशतिकास्तोत्रटीका**--विनयचन्द्र । यत्र सं०६ । षा०१२×५ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × | के०काल × | पूर्ण । वे० सं०३२० ।

विशेष---श्री विनयक्ष्य नरेन्द्र द्वारा भूगाल बर्तुविवति स्तांव रचागयाथा ऐसा टीका नी पृण्तिकांस विवत्त हुआ है। इसका उल्लेख २७वें पद्य में निस्न प्रकार है।

प्रारम्भ में टीकाकार का मंगलाचरण नहीं है। मूल स्तीत्र की टीका बारम्भ करदी गई है।

प्रश्नक्ष स्वाज्ञ <mark>चीविसीसामा — प्रकालाला चीविसी।</mark> पत्र सं०२४। आर्थ १२६४५ रंब। साया— हिल्बी। विषय— स्तोत्र। र०काल सं०१६३० **चैत्र सुदी** ४। ले०कान सं०१६३०। पूर्णी। वे० सं०४६१। क भक्तार।

इसो भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५६२) ग्रीर है।

४०४७. सृत्युमद्दोस्सवः.....। पत्र सं० १। झा० ११४५ ६ व । भाषा–हिल्बी । विषय–स्तोत्र । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्वी। वे० स० १६३ । मृद्र सण्डार ।

४०४.स. सहविस्तवनः.....। पत्र सं० ३१ ते ७४ । घा० ५.४.५. इ.स. । आया-हिन्दी । विषय-स्तात्र । १० काल × । ते० काल × । सपूर्ण । वै० सं० ५.८.६ । इक सम्बद्धाः । ४०४६. सहर्षिस्तवनः ''''। पत्र सं∘२ । झा०११४५ इ.च.। जाया–संस्कृतः । विषय–स्तीत्र । र० काल × । न० काल × । पूर्णा वैश्वसं०१०६३ । च्या पण्डारः ।

विशेष--- भन्त में पूजा भी दी हुई है।

प्रं0६०. प्रति सं0२ । पत्र सं0२ । लेश्काल सं0१ च के बुदी १४ । वेश्सं०६११ । इस सम्बद्धार ।

विशेष---संस्कृत में टीका भी दी हुई है।

४:६१. सहास्रक्षिञ्चस्तोञ्च \cdots ा पत्र मं \circ ४। सा \circ $=<math>\times$ ४ इं=1 भाषा=संस्कृत । विषय=स्तोत्र । र \circ

४०६२. प्रति सं०२। पत्र सं०६। ने० काल ४। ने० सं०३१४। अप्र अण्डार।

विशेष-प्रति मंस्कृत टीका सहित है।

प्रटब्स्. सहासहर्षिस्तवनटीका******। पत्र सं०२ । सा० ११३४४ ई. इंग । जाया-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०कान ४ । त्रेण कान ४ । दुर्गावेश सं०१४६ । क्या सम्बद्धाः

४०६४ महालद्मीस्तोत्र ***** पत्र सं० रे० । घा० प्रदेश्व ६ च । माषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० कान \times । त्रुर्त । वे० सं० २६५ । क्षा अध्यार ।

प्रदर्शः महालक्ष्मीस्तोत्र****** । पत्र मं∘ ६ से ६ । मा० ६×३-३ दंव । माषा-संस्कृत । विषयः-वैदिक साहित्य स्तात । र०काल × । ले०काल × । ब्रपूर्ण । वै० सं० १७६२ ।

४०६६ महावीराष्टक—आगचन्द् । पन सं०४। मा०११३४६ इ'च । मापा-संस्कृत । विवय-स्तोत । र०काल ४। ल०काल ४। पूर्ण । वै० सं०४७३। क अच्चार ।

विशेष-इसी प्रति में जिनीपदेशोपकारस्मर स्तोत्र एवं मादिनाय स्तीत्र भी हैं।

५८६७. सहिद्वसतोष्र \cdots ः पत्र सं॰ ७। सा॰ १ \times ६ दंव । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल \times । ने० काल \times । पूर्ण । वै० सं॰ १६। अक्र मण्डार ।

४८६६. युगादिदेवमहिक्सतोत्रः****। पत्र सं० २ ते १४ । सा० ११८७ इ.च. । वाया-संस्कृत । विषय-स्तोत्र र० काल × । ते० काल × । सपूर्ण । वे० सं० २०१४ । ड वण्डार ।

विशेष--प्रथम तीन पत्रों में पार्वनाय स्तोत्र रचनायदास इस अपूर्ध हैं । इससे आगे महिन्नस्तोत्र हैं ।

४०७०. राधिकानासमासा'''''''। पत्र सं० १। आ० १०३×४ इ'व । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । दे काल × । ले काल × । पूर्त । वे ० सं० १७६६ । ट मण्डार ।

४०७**१. रामचन्द्रस्तवन**.....। पत्र सं० ११। बा० १०×५ इ**छ। आवा-संस्कृत**ः विषय-स्तीत्रः। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३३ । स्क्रुमण्डार ।

विशेष---मण्तिम- श्रीसनत्कुमारसंहितामां नारदोक्तं श्रीरामचन्द्रस्तवराज संपूरएएम् ।। १०० पद्य है । ४०७२. रासवतीसी--जगनकवि । पत्र सं० ६ । मा० ६ X६ इ'च । भावा-हिन्दी । विवय-स्तोत्र । र० काल 🔀 । लेक काल सं० १७३५ प्रथम चैत्र बुदी ७ । पूर्श । वेक सं० १५१० । ट अण्डार ।

विशेष--कवि पौहकरना (पूष्करना) जाति के थे। तरायसा में जट्टू व्यास ने प्रतिलिपि की थी। ४० अहे. हासस्तवन पत्र सं ० ११ | आ० १०६ ×५ इ.च । आवा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०

काल X | लें • काल X । अपूर्ण | वे ॰ सं ॰ २११२ | ट अण्डार ।

४०**७४. रामस्तोत्र******। पत्र सं० १ । मा० १०**८४ इंब । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तात्र । र० काल 🗴 । ले॰ काल सं॰ १७२५ फायुगा सुदी १३ । पूर्मा । वे॰ सं॰ ६५८ । 🖝 भण्डार ।

विशेष---११ से आगे पत्र नहीं हैं। पत्र नीचे की ओर में फटे हुए है।

विशेष---जोधराज गोदीका ने प्रतिलिपि करवायी थी।

४०७४. साधुशान्तिस्तीत्र । पत्र सं॰ १ । मा॰ १०४४३ इ'व । आवा-संस्कृत । विषय-स्तीत्र । र० काल 🗶 । ले॰ काल 🗶 । पूर्श । वै॰ सं॰ २१४६ । 🖦 भण्डार ।

४०७६. सर्मीस्तोत्र-पद्मप्रमदेव । पत्र सं० २ । मा० १३×६ इश्व । भावा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र। र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वै॰ सं॰ ११३ । आस मण्डार ।

> विशेष---प्रति संस्कृत टीका सहित है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ सं॰ १०३६) ग्रीर है। ४८७७. प्रति सं∘ २ । पत्र सं॰ १ । ते० काल ⋌ । ते० सं० १४६ । का भण्डार ।

विशेष---इसी भण्डार में एक प्रति (दे० सं० १४४) और है।

४७८०. प्रति सं० ३। पत्र सं० १। ते॰ काल ×। ते॰ सं० १६२६ | ट अध्वार }

विशेष--- प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है ।

६०७६. **सस्तीस्तोत्र......**। पत्र सं०४। ग्रा०६×३ इत्र। भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र। ट० काल × । ले॰ काल × । पूर्श । वै॰ सं॰ १४२१ । व्या मध्यार ।

विसेव-ड भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वै० सं० २०६७) और है।

88%

४०८०. सामुस्तीत्र ... । पंत्र सं० २ । बीं० १२×१ इ'व । मावा-संस्कृत । विवय-स्तीत । र० ला वेश्वान × (पूर्ण । वेश्व संश्व ३६६ । स्र अण्डार ।

४०६१, बजार्यज्ञरस्तोत्र। पत्र सं० १ । घा० ६ 💢 ६ इ'व । आवां-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वै० सं० ६६८ । क अव्दार ।

४०८२, प्रति संव २ | पत्र संव ४ | लेव काल × । तैव संव १६१ | व्य अवदार !

विशेष--प्रथम पत्र में हीन का मन्त्र है।

४०८३, वक्क मानवानिशिका-सिकसेन विवाकर । यत्र सं० १२ । मा॰ १२×१६ वंब । नावा-संस्कृत । विषय⊶न्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । बपूर्ण । वे० सं० १८६७ । ट मण्डार ।

४८८४. वर्द्धमानस्तीत्र--व्याचार्व गुराभद्व । पत्र सं० १२ । वा० ४३×७ इत्र । भाषा-नंस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १९३३ श्वासोज सुदी द । पूर्ण । वे० मं∙ १४ । ज भण्डार ।

विशेष-पुरामद्रावार्ध कृत उत्तरपूरामा की राजा श्रीमांक की स्तुति है तथा १३ क्लोक हैं। संबहकर्ता श्री फतंहलाल शर्मा है।

४०८४. वर्द्धमानस्ते।त्र"""। पत्र सं० ४ । आ० ७३×६६ इ'व । आवा-संस्कृत । विवय-स्तोत्र । रं काल × । ले ॰ काल × । पूर्ता। वै० सं० १३२८ । आस अण्डार ।

विशेष--- पत्र ३ से ग्राये निर्वातकात्रह गाया भी है।

४०८६. बसुधारापाठ.....। पत्र मं० १६। मा० ६×१ इ'व । मावा-संस्कृत । विषय-स्तीत्र । ८० काल ×) ल० काल × । पूर्ण । वे॰ सं० ६० । क्क अण्यार ।

४०८७. वसघारास्तोत्र.....। पत्र सं • १६। मा० ११×४ इ'व । भावा-संस्कृत । विषय-स्तोत । र० काल × 1 ते • कास × 1 पूर्ण 1 वे • सं० २७३ । अर अध्यार 1

४०६६. प्रति संव २ । पत्र संव २४ । तेव काल × । प्रपूर्ण । वेव संव ६७१ । क अवहार ।

४०=६. विद्यमानवीसतीर्थेकास्तवन-मृति दीप । पत्र सं० १ । मा० ११×४६ इ.व । जापा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल 🔀 । नै० काल 🔀 । पूर्वी । वै० सं० १६३३ ।

४०६०. विषापद्वारस्तोत्र-धनंत्रवे । पत्र सं ४ । बा० १२३×६ । भावा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रं काल × । ते काल सं ० १८१२ फायुस बूबी ४ । पूर्ण । वे ० सं ० ६६६ ।

विशेष-संस्कृत टीका भी दी हुई है । इसकी प्रतिसिधि पं मोहनवासकी वे अपने किया प्रवानीरामजी के पठनार्च केनकरहाजी की पुस्तक से बसई (बस्ती) नगर में शास्तिनाच बैस्पालव में की बी।

धेड६ १, प्रॉल सं० २) पण सं० ४ । ले॰ काल ४ । वे॰ सं० ६७६ । क भण्डार । ४०६२, प्रति सं० ३ । पण सं० १४ । ले॰ काल ४ । वे॰ सं॰ १४२ । जा भण्डार । विक्येप—विद्यित्तिस्वस्तोण भी है ।

४०६६, प्रतिस्रं०४ । पत्र सं०१४ । ने० वाल × । वै० सं०१८११ । ट मण्डार । विशेष—प्रतिसंख्यत टीका सक्षित है।

४०६४- विषायहारस्तोन्नटीका---नागचन्द्रसूरि । वत्र सं० १४ । बा० १०४४ई दंब । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० कास ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ४ । ब्रा भण्डार ।

১৮০ ছে: प्रति सं०२ । पत्र सं०६ से १६ । ले॰ काल सं०१ ७७० मादवा बुधी ६ । वे० न० स्पर्ध। আম সম্পদ্ধ

विकोष---मौजमाबाद नगर मे पं० चोखचन्द ने इसकी प्रतिलिपि की थी।

४०६६. विवायद्वारस्तोत्रभाषा—पत्नास्तासा । पत्र सं० ३१। मा० १२३×५ ४ व । भाषा—क्षिन्दी । विवय—स्तोत्र । र०काल सं० १६३० काष्ट्रण सुदी १३ । ले० काल × । पूर्णी । वे० सं० ६६४ । क्क प्रधार ।

विकोच-- सी अच्छार में एक प्रति (वे॰ मं॰ ६६५) ग्रीर है।

४०६७. विवायद्वारस्तोत्रभाषा—श्रम्यलकीस्ति । यत्र सं०६ । सा० ६६०४, डांच । भाषा–हिन्दी । विवस–स्तोत्र । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्णा । वै० सं०१४६४ । टुअध्दार ।

प्रदर्शनः बीतरागस्तोत्र—हेसचन्द्राचार्थः । पत्र मं∘ १। ब्रा० ६२,४४ इंच । भाषा—संस्कृतः । विषय— स्तोत्र । र० काल ४ । ते० काल ४ । ब्रपुर्छ । वै० मं० २,५७ । छ भण्डारः ।

४०६६. बीरह्मचीसी******। पत्र सं०२ । सा० १० \times ४३ इंच । साया-संस्कृत । विषय-स्तात्र । ४० काल \times । त्रेण काल \times । पूर्ण । वे० सं०२१४० । का भण्डार ।

प्रश्चितः वीरस्तवनः****। पत्र सं०१। ब्रा०६ $\frac{1}{4} \times 4^{\frac{1}{4}}$ संव| भावा-प्राकृतः | विदय-स्तोतः | २० काल \times । ते० काल सं०१०६। दूर्यः । वे० सं०१२४६। क्रा भण्याः ।

४९०१. वैदासकोत---सद्दस्त । पत्र सं०१ । मा० द×३३ ६'च । आवा-हिन्दी । विदय-स्तंत्र । र०काल × । ते॰काल × । पूर्ण । वे०सं० २१२६ । इस प्रस्टार ।

विशेष-- 'मूल्यो भमरा रे काई भमै' ११ अंतरे है।

४९०२. बट्पाठ—बुधवान । पत्र संः १ । ग्रा० ६४६ इंच । भाषा-हिन्दी । विवय-स्तवत्र । र. काल ४ । ते० काल मं० १५४० । पूर्ण । वे० सं० १३४ । का मध्यार । ४१०३. यटपाठः****। पन सं० १ । घा० ४८६ इ.च । बाद्या-संस्कृत । विषय-स्तीत्र । र० कान ८ । ले० काल ८ । पूर्ण । वे० सं० ४७ । ३६ बच्चार ।

४९०४. शान्तिभोषणास्त्रुति''''''' पत्र सं०२। मा० १०४४६ इ'व । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोव । र० काल ४ । वे० काल सं०१५६१ । पूर्ण । वे० सं० ६३४ । द्वा अव्वार ।

४९०४. शास्तिनाथस्तवन—ऋषि सास्त्रचन्द्रा पत्र सं०१ । घा० १०४४ इ.च.। आया-हिस्ती । विषय-स्तवन । र० काम सं०१८६ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं०१२३४ । इस भण्वार ।

विशेष---गांतिनाथ का एक स्तवन और है।

४१०६. शान्तिनायस्तवनः''''''। पत्र सं० १। या० १०३४४३ इ'च । जाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल ≿ । ले० काल ≾ । दूर्सा । वे० सं० १९४६ । ट मध्यार ।

विशेष--- गान्तिनाथ तीर्थकूर के पूर्वभव की कथा भी है।

मन्निमपद्य---

कुन्दकुन्दाबार्स विनती, शान्तिनाथ ग्रुख हिम मे बरै। रोग सोग संताप दूर जाय, दर्शन दीठा नदनिधि ठाया।।

इति ञान्तिनायस्तोत्रं संपूर्ण ।

४१०७. शान्तिनाथस्तोत्र—सुनिभद्गापत्र सं० १। बा० ६३×४० दश्चा भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोव । र०काल × । ते०काल × । पूर्णावे०सं० २०७० । इस वषदार ।

विशेष-अथ शान्तिनायस्तोत्र तिस्यते---

काधा-

नाना विविजं मवदुःसर्राधः, नाना प्रकारं मोहानिपासं । पापानि दोवानि हरन्ति देवा, इह जन्मसरसं तव सान्तिनार्थं ।।१।। संसारमध्ये निम्यास्विन्ता, निम्यास्वमध्ये कर्मास्तिवंव । ते वंथ क्षेत्रन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मसरसं तव सान्तिनार्थं ।।२।। कामं व कोथं मायाविन्तांमं, वदुःक्यार्थं हह जीव वंधं । ते वंथ क्षेत्रन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मसरसं तव सान्तिनार्थं ।।३।। नोहास्यहीने कठिनस्थवित्, परजीवन्तिया मनस्य व साव्या । ते वंश क्षेत्रन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मसरसं सम्बस्थायं ।।४।। वारिमहोने नरजन्मध्ये, सस्यक्तस्थानं सरिसामीर्थं । से वंश क्षेत्रन्ति देवाधिदेवं, सह जन्मसरसं सरिसामीर्थं । जातस्य तरलां पुलस्य वचनं, हो शालिजीवं बहुजन्महुःलं ।
ते बंध खेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तय शालिनाणं ॥६॥
परस्थाचीरी परदारतेवा, सकादिकशा धजनुवर्वकं ।
ते बंध खेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शालिनाणं ॥६॥
पुत्राणि मित्राणि कवित्रदंदं, इहदंदमध्ये बहुजीवर्वका।
ते बंध खेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शानिनाणं ॥६॥

जयति पठित निष्यं श्री शानिनाषादिशाति
स्तवनमधुरद्वात्त्वी पापतायोगहारी ।
कृतमुनिभद्गं सर्वेकार्येषु निष्यं

इतिश्रीशान्तिनाषस्तात्र संपूर्ण । शुभम् ।।

४९०६. शानितनाथस्तोत्र"""। पत्र सं० २ । सा० ६०८० रचा भाषा- संस्कृत । विषय—स्तीत्र ; ६० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वै० सं० १७१६ । इस भण्डार ।

४१०६, शास्तिपाठ------। पत्र सं०३। बा०११४४, े टंब। भाषा-- संस्कृत । विषय--स्तांत्र : र σ काल imes। मेर्क काल imes। पूर्ण। देक सं०११६। स्त्रू चण्यार ।

४११०. शान्तिविद्यानः*****। पत्र सं० ७ । मा० ११ $^{*}_{v}$ \times ४ $^{*}_{v}$ इंव । भाषा-सम्कृत । विषय-स्तोत्र । एक काल imes । लेक काल imes । पूर्ण । वेक सं० २०३१ । इस सम्बार ।

४९११. श्रीपतिस्तोत्र—चैनसुखश्ची। पत्र सं०६। प्रा० ≒×६, इ'च। मागा-क्रियी। विवय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ता। वे० सं० ७१२। इस सण्डार।

४११२. श्रीस्तोत्रः''''''। पत्र सं०२। सा० ११८५ दक्षा आवा-संस्कृत । तिषय-स्तोत्र । र० काल × । ते० काल सं०१६०४ चैत दुवी ३ । पूर्ण । वै० सं०१=०८ । ट भण्यार ।

विशेष---प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४११६. सप्तनविविचारस्तवन******। पत्र सं०६। घाः १२४६३ इ'च। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तीव। १० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० ३३६ ।

विशेष---३७ पद हैं।

४११४. समयशरखस्तोत्र''''''। पत्र सं० का मा० १२४५३ इंचा माया—संस्कृत । विषय—स्तात्र । र० काल ४ । ले० काल सं० १७६६ कायुन सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २६६ । इद्र मण्डार।

विशेष —हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

Miten-

वृषमाद्यानभिवंदान् वंदित्वा बीरपश्चिमजिनेद्रान् ।

भक्त्या नतीलमांगः स्तोप्ये तत्ममवद्यारगाणि ॥२॥

४११४. समबरार सन्तेत्र—विष्णुसैन सुनि। पत्र म० २ मे ६। घा०११२४६ ६ व । बाषा— संस्कृत । विषय—स्तात्र । र०काल ४ । से०काल ४ । घपूर्ण । वै० मं०६७ । व्या वण्डार ।

४११६. प्रति संट २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे . सं० ७७८ । व्या मण्डार ।

प्रश्यः प्रति सं० ३। यत्र सं० ४। ते० काल मं० १७८५ मात्र नुरी ४। वे० सं० ३०६। व्य भण्डार।

विशेष---पं० देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य पं० मनोहर ने प्रतिनिधि की थी।

प्रश्रद्भ संभवजिनस्तोत्र—सुनि गुरानंदि । पत्र स०२ । मा० ८५ ४६ दक्क । आया-संस्कृत । विषय–स्तात्र । र०काल × । से०काल × । दूर्सा) वे०सं० ७६० । कं भण्यार ।

प्रशिष्ट, सञ्चुदाबस्तोत्र""""] पत्र सं०४३ । झा० १३×८३ इंच । माषा⊸हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल सं०१६८७ । पूर्ण । कै० सं०११४ । च मण्डार ।

विशेष-स्तोत्रो का संग्रह है।

y१२०. समबश्ररगुस्तोत्र—विश्वसेन । यत्र मं \circ ११ । ग्रा \circ १० 2 \times ४ 2 इंच । जाया—संस्कृत । विवय—स्तोत्र । र \circ काल imes । वे \circ काल imes । पूर्ण | वे \circ सं \circ १३imes जण्डार ।

विजेष--सस्कृत स्लोकों पर हिन्दी में प्रर्व दिया हुया है।

४१२१. सर्वेतोअड्रमंत्र'''''''। पत्र सं० २ । आ० ६ \times ३३ इ'व । आया-संस्कृत । विषय-स्तीत्र । र० कान \times । त० कल सं० १०६७ ब्रासोज सुरी ७ । दुर्खा । वे० सं० १४२२ । का भव्वार ।

४१२२. सरस्यतीस्तयल— स्रमुक्ति । पण सं० ३ ने ४ । मा० ११३८४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विवय–स्तवण । र० काल ४ । ते० काल ४ । स्रमूर्या । वे० सं० १२४७ । का अण्यार ।

वियोध---प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं।

र्धाः तमपुष्पका- इति भारत्यामयुकवि इत मयुक्तवन सम्पूर्णतामागतम् ।

४१२३. अति सं०२ । वत्र सं०३ । ते० काल × । वे० तं० १११५ । आ भव्डार ;

स्तोत्र साहित्य

880]

y१३y. सरस्वतीस्तोत्र—बृह्स्यनि । पत्र मं०१। मा० $= \frac{1}{2} \times Y_y^2$ हं च । आवा-संस्कृत । विषय-स्तोत्त (जैनेतर)। र० काल \times । ने० काल मं०१=(2, 1) पूर्ण । ने० मं०१(2, 1) प्रभावार ।

४१२.४. सरस्वतीस्तोच — श्रुतन्यागर । पत्र सं० २६ । झा० १०३,४४ र इंच । भाषा- संस्कृत । विषय स्तवत । र० काल × । ले० काल × । झपूर्ण । वे० सं० १७७४ । ट भण्डार ।

विक्षेष---बीच के पत्र नहीं है।

 $ext{% ४२६.} \ \mbox{सरखतीस्त्रोत्रा<math>\cdots$ ्य पत्र सं०३। म्रा० न $ext{$\mathcal{K}$}$ इंच । माषा-संस्कृत । विषय-स्तीत्र । $ext{$^{\circ}$}$ काल $ext{$\times$}$ । ते० काल $ext{$\times$}$ । पूर्ण । वे० सं० २०६ । क सम्बार ।

४९६७. प्रति सं०२ । पत्र सं०१ । ले॰ काल सं०१ ६६२ । वे॰ सं०४ ३६ । व्य भण्डार । विजेष — रामचन्द्र ने प्रतिनिधि की थी । भारतीस्तोत्र भी नाम है ।

प्रश्रदः. स्ररवतीस्तोन्नमाला (शारदास्तवन)******। पत्र सं∗२। धा०६∴४ इन । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत । र०काल × । लंक काल × । पूर्ण । वे० सं०१२६ । स्र भण्डार ।

४४२६. सहस्रताम (लघु)—स्राचार्यसमन्त्रभद्र । यतः ११३०४ उत्तः भाषा-संस्कृतः। विषय-स्तोत्र । र० काल × । पे० काल सं० १७१४ माम्यित बुती १०। पूर्णा । वे० सं०६। भूम भण्डार ।

विश्रेष—इसके मतिरिक्त मडवाहु विरिचत ज्ञानाकुण पाठ भी है। ४३ श्लाक है। झानरदाम ने स्वय जोधराज गोदीका के पठनार्थ प्रतिनिधि को थी। 'पोषी जोधराज गोदीका की पढ़िवा की छै' पत्र ८ गुरु भागानेर।

४१२०. सारचतुर्विसति ***** । पत्र सं० ११२ । मा० १२४६ । इंब । आया-संस्कृत । विषय-स्त्रात्र । र० काल ४ । ले० काल सं० १८६० पीष मुदी १३ । पूर्ता । वे० सं० २८८ । ज अण्डार ।

विशेष---प्रथम ६५ पृथ्ठो मे सकलकीर्ति कृत श्रावकाचार है।

४९३१. साथंसम्ब्यापाठः**** पत्र गं∘ ७ । मा० १०×४ । इत्य । आत्रा–संस्कृत । विषय-स्त्रोत्र । र०कोल ४ । ते०काल गं∘ १६२४ । पूर्णा वै०सँ० २७६ । स्व प्रधार ।

४१३२. सिद्ध बंदना ''''''। पत्र मंग्या ११४४३ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल 🗶 । तेण्यान संग्रेट पाल्युन मुदी ११ । पूर्सा । वेण संग्रेट । सामग्रार ।

विशेष---श्रीमाशिक्यचंद ने प्रतिलिपि की थी।

४९३३. सिद्धास्तवन'''''''। पत्र सं० ह । झा० दर्दे×६ इख्रा | भाषा–संस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल × । ने० काल × । सपूर्ण । वे० सं० १९५२ । ट मध्यार । ४१३४. सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनंदि । पत्र सं∘ ६ । घा०११४६ इक्चा । पाषा–संस्कृत । विषय– ४. स्तवन । र०काल × । ले०काल सं०१ ८०६ घाडपद बुदी ६ । पूर्ण । वै० सं०२००० । इस प्रण्डार ।

४१३४. प्रति सं०२। एव सं०१६। ले० काल ×। वै० सं० ८०६। क मण्डार।

विशेष---हिन्दी टीका भी दी हुई है।

४१३६. प्रति सं०३ । पत्र सं०६ । ले० काल 🗙 । वे० सं०२६२ । स्व भण्डार ।

विशेष—हामिये में कठिन शब्दो के धर्म दिये हैं। प्रति सुन्दर तया प्राचीन है। सक्षर काफी मोटे हैं। मृति विशासकीति ने स्वपटनार्थ प्रतिस्तिप की थी।

इसी भण्डार में २ प्रविद्यां (वै० सं० २६३, २६८) और हैं।

४१३७. प्रति सं०४ पत्र स०७। ले० काल ×। वे० सं० ८५३। इस भण्डार।

४१२≒ प्रति सं०४ । पत्र सं०४ । ते० काल सं०१ ६६२ प्राप्तीज बुदी २ । घपूर्ण । वे० सं०४०६ । च भण्डार ।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका महित है। जयपुर मे सभयवन्द साह ने प्रतिनिधि की बी।

४१३६. प्रति सं०६। पत्र स०६। ले० काल ×। वै० सं०१०२। छ भण्डार।

विशेष--प्रति संस्कृत टीका सहित है।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३८, १०३) छौर है।

४१४०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४ । ने० कान सं० १८६८ । वे० सं० १०६ । जा अध्दार ।

४१४१. प्रति सं० ६ । पत्र मं० ६ । ले० काल × । ते० सं० १६८ । का अण्डार ।

विश्रोष—प्रति प्राचीन है। समरभी ने प्रतिलिपि की थी। इसी अण्डार में एक प्रति (दे० सं० २४७) भीर है।

प्रश्नेत्र. प्रति संद ६ । पत्र संव ३ । लेव काल 🗙 । बेव संव १८२५ । द्व अध्यार ।

४९४३. सिद्धिप्रियस्तोत्रद्रीका****** । पत्र सं०४ । मा० १३४४ इंच । मावा-संस्कृत । विवय-स्तोत्र । र०काल ४ । ले० काल सं० १७४६ प्रासोज बुदी २ । पूर्ण । वै० सं० ३६ । स्र वस्थार ।

विशेष--- त्रिलोकदास ने बपने हाथ में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

४१४४: सिद्धिप्रयस्तोत्रभाषा—पत्रासास चौधरी। पत्र सं० ३६। सा० १२३×१ इंच । बाया— हिन्दी। विषय—स्तोत्र। रट कान सं० १६३०। से० कान × | पूर्ण | वे० सं० ८०५ | क्र बखार।

४१४४. सिद्धिप्रवस्तोत्रभाषा—नवस्ता । पत्र सं० ८ । या० ११×६ दश्च । माना-हिन्दी । विषय— स्तोत । र० काल × । ते० काल × । पूर्व । वै० सं० ६४७ । कृ वण्डार । ४१४६. प्रति सैं० २। पर्व सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ८५१। क भण्डार।

विंशेष-इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ६५२) और है।

४९४७. सिदिप्रियस्तोत्र """। पत्र सं०१३ । धा०१११,४५ इंचा बाषा⊸हिन्दी। विषय-स्तोत्र । र०काल ×ाकेण्काल ×ापूर्णीके सं०⊏०४ । क्र अध्यार ।

४१४६६ सुरुक्सतोत्र''''''' (यक्षरु १। सा० १०३)४६ इ'व । भाषा–संस्कृत । विषय-स्तीत्र । र० काल ४ | ते० काव ४ | पूर्वाके तं० २०४६ | इस भण्डार ।

878६, बक्षुबारास्तोत्रः ""। एव सं० १० । मा० ६३imes४ इंच । माणा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । 7० काल imes । पूर्ण । वै० सं० २४६ । ज सण्डार ।

विशेष--धन्त में लिखा है- मय चंटाकर्शकरूप लिख्यते ।

४४४८. सींदर्येलहरीस्तोन्न—अट्टारक कारद्भृष्यम् । पत्र मं० १०। या० १२×८} इ'च । भाषा— संस्कृत । विषय–स्तोन । र० काल × । कें० काल सं० १८४४ । दुर्गा । वे० सं० १८२७ । ट भण्डार ।

विकोष—-वृत्यावती कर्बंट में पास्वेताच चैरशालय में भट्टारव मुरेन्ट्रकीलि मामेर वालों ने सर्थमुख के पठनार्थ प्रतिलिपि की भी ।

४९४१. सौँदर्येलहरीस्तोत्र"""। पत्र सं० ७४। घा० ६२,४५३ हात्र । आगा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । से० काल सं० १८३७ प्रादवा बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० २७४ । ज प्रण्डार ।

प्रशेश्चर, स्तुत्तिः.....। यत्र सं०१ । मा०१२ ×१६ च । भाषा–संस्कृत । विषय⊶तदन । र०काल ×। ते०काल ×। पूर्णावे० सं०१० । इस भण्डार ।

विकोध---भगवान महाबीर की स्तुति है। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

प्रारम्भ---

वाला वाला महावाला भर्ता भर्ता जगरत्रम्

वीरी बीरो महावीरोस्स्वं देवासि नमोस्सुति ॥१॥

४१४३ स्तुतिसंग्रह***** । पत्र सं॰ २। मा॰ १०४४ द्वेचा मार्ग-हिल्बी। विषय-स्तोत्र | र० कोल ४। ने० वाल ४। पूर्वी। वै० सं॰ १२४०। आई मध्यार।

४१४८ स्तुतिसंबर्डः । पत्र सं० र से १७ । बा० ११×४ इ.च. । माया-सस्वत । विषय-स्तात्र । रें कॉल × । तें० काल × । सपूर्ण । वे० सं० २१०६ । द्व भण्डार ।

विशेष---पञ्चपरमेष्टीस्तवन, बीसरीर्षेक्करस्तवन प्रादि हैं।

४१४४. स्तोत्रसंग्रह"''' । पत्र सं० १ । ग्रा० ११३/४५ इ'व । ग्रावा–प्राकृत, संस्कृत । विवाद-स्तोत । र० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वै० सं० २०४३ । व्या अण्डार ।

विशेष---निम्नलिक्ति स्तीत्र है।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
१. शान्तिकरस्तोत्र	सुन्दरसूर्य	त्राष्ट्रत
२. भयहरस्तोत्र	×	,
३. लघुशान्तिस्तोत्र	×	संस्कृत
 बृहद्शान्तिस्तीत्र 	×	"
५. ग्रजितशाःन्तस्तोत्र	×	,,

२रा पत्र नहीं है। सभी व्वेताम्बर स्तोत्र है।

प्रश्रेष्ठ, स्तान्नसंबद्धःःःः। पत्र सं० १० । झा० १२४७ है हक्का । आधा-संस्कृत । विषय-स्तोत । र० काल . । त० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३०४ । का अण्डार ।

विशेष---निम्न स्तीत्र हैं।

- १. पद्मावतीस्तोत्र --- 🔀 ।
- २. कलिक्ण्डपूजा तथा स्तोत्र -- ×।
- चिन्तामिं पार्श्वनाथपुजा एवं स्तोत्र -- नक्ष्मीसेन
- Y. पार्श्वनायपुत्रा XI
- ५. सहमीस्तीत्र पद्मप्रभवेत

 $m{y}(x)$. स्तोन्नसंग्रह्णः $\|\mathbf{q} - \mathbf{q} - \mathbf{q}\|$ सं $\mathbf{q} \in \mathbb{R}^n$ $\mathbf{q} \in \mathbb{R}^n$ । त्रिक्त । विषय-स्तोन । रेंक काल \times । लेंक काल \times । प्रपूर्ण । वैक संक १३६६ । का प्रवहार ।

विभेय---निम्न संग्रह हैं- १. एकीमान, २. निवापहार, ३. स्वयंमूस्तीत्र ।

y१४८ - स्तोत्रसंग्रह \cdots ः। यत्र सं० ४६ । ग्रा० ८ $\{x_1$ ६ छा । शया-प्राकृत, संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल x । ले० काल सं० १७७६ कारियक सुवी ३ । दूर्छ । वे० सं० १३१२ । छर अध्यार ।

विजेप-- २ प्रतियों का निश्रता है । निम्न संग्रह है---

१. निर्वासकामाया	≠×	feid
२. बीपालस्तुवि	×	्तंसक्रम

३. पद्मावतोस्तवन मंत्र सहित 💢

४. एकी भावस्तोत्र, ४. ज्वालामालिनी, ६. जिनपञ्चरस्तोत्र, ७. लव्ध्मीस्तोत्र.

पार्श्वनाथस्तोत्र

वोतरागस्तोत्र--- पद्मनंदि संस्कृत

१०. वर्ड मानस्तोत्र × " प्रपूर्ण

११. चौंसठयो(गनीस्तोत्र, १२ शनिन्तोत्र, १३. शारदाष्ट्रक, १४. त्रिकालचौदीमीनाम

१५. पद, १६. विननी (ब्रह्मजिनदास), १७. माता क सीलहस्वप्न, १८. परमानन्दस्तवन १

सुस्तानन्द के शिष्य नैनसुखनं प्रतिलिपि की थी।

४१४.६. स्तोन्नमप्रड""। पत्र मं०२६। ग्रा० ८४७ इ'व । भाषा⊸मंस्कृत । विषय⊸स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्णावे० सं०७६० । व्याभण्यार ।

विशेष---निम्न स्तोत्र है।

१. जिनदर्शनस्तुति, २. ऋषिमंडलस्तोत्र (गौतम गरमधर), ३. लघुटातिकमन्त्र

Y. उपसर्गहरस्तोत्र, Y. निरक्जनस्तोत्र।

४१६०. स्त्रोत्त्रपाठसंग्रहः ""। पत्र तं० २२१ । झा० ११३्×५ इंच । आया–सम्ब्रुत, प्राष्ट्रत । विषय– स्त्रोत्र । र० काल × । ते० काल × । झपुर्गा । वे० सं० २४० । इस भण्डार ।

विशेष---पत्र सं० १७, १८, १६ नहीं हैं। नित्य नैमिक्तिक स्तोत्र पाठों का संग्रह है।

४१६१. स्तोत्रसंग्रहः "ापत्र सं०२७६। ग्रा०१०,८४है इ.च.। भाषा⊸संस्कृत । विषय⊶सोत्र । र०काल × । ले०काल × । श्रपूर्ण । वै०सं०६७ । इत्र मण्डार ।

विशेष--- २४८, २४६वां पत्र नहीं है। साधारण पूजागठ तथा स्तुति संग्रह है।

४,९६२. स्तोत्रसंब्रह् ***** । पत्र सं०१,४३ । ब्रा०११,४६ 'च । आपा—संस्कृत । विषय–स्तोत्र । ८७ क्रस्त × । ने० कान × । ब्रपुर्ण । वै० सं०१०६७ । क्या भण्डार ।

 eta^* ५२ स्तोत्रसंग्रह****** । पत्र सं॰ १२ । सा॰ ७ $\frac{1}{2} \times \ell_{s}^2$ इ'व । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तात्र । र० काल imes । पूर्ण । वै० सं० ३५३ । स्र अध्वार ।

४१६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल 🗴 । वे० सं० ३५४ । द्या भण्डार ।

8764. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं०११ । मा० ६ $2\times$ ४ उंत्र । प्राथा-संस्कृत । विषय-स्तात्र । र० काल \times । ते० काल \times । प्रर्थ । वै० सं०१६० । का अध्यार ।

विशेष---निम्न संग्रह हैं---

भगवतीस्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र, पावर्वनाथस्तोत्र, घण्टाकर्णमन्त्र स्नादि स्तोत्रों का संग्रह है।

४१६६. स्तीत्रसंब्रहः "'ावत्र सं० ८२ । सा० ११६ूँ ४६ इक्का । आया–संस्कृत । डियय–स्तोत्र । र० काल ४ । ते० काल ४ | पूर्ण । वै० सं० ८६२ | इक्क प्रवार ।

विशेष-मन्तिम स्तीत्र प्रपूर्ण है। कुछ स्तीवों की संस्कृत टीका भी साथ में दी गई है।

४१६७ प्रति सं०२। पत्र त० २५७। ले० काल 🔀 । प्रपूर्ण । वे० सं० ८३३। 🕸 अण्डार ।

४१६⊏. स्तोत्रपाठस्रोतह """। पत्र सं० १७ । झा० १३८६ इंच । आया-संस्कृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । के० काल ४ । सपूर्या । वै० सं० ६३१ । क्र अध्वार ।

विशेष--पाठों का संग्रह है।

४१६६. स्तोत्रसंमहः''''''' पत्र सं०६१ । मा०११४८ इंच । भाषा–संस्कृत, ब्राकृत । विषय–स्तोत्र ॥ र०काल ४ । ते०काल ४ | पूर्ण । वे०सं०६२६ | इक्क भण्डार ।

विशेष -- निम्न संग्रह है।

नामस्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
प्रतिक्रमरा	×	प्राकृत, संस्कृत
सामायिक पाठ	×	संस्कृत
श्रुतमक्ति	×	प्राकृत
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्याति	संस्कृत
सिद्धभक्ति तथा धन्य भक्ति संग्रह		সাস্থ্ৰ
स्वयंभूस्तीत्र	समन्तभद्र	संस्कृत
देवायमस्तोत्र	**	संस्कृत
जिनसहस्रनाम	जिनसेनावार्य	**
भक्तामरस्तोत्र	मानसु गाचार्य	,,
कल्यागुमन्दिरस्तोत्र	कुमुदबन्द्र	 »
एकीभावस्तोत्र	वादिराज	
सिविधियस्तात्र	देवनन्दि	
विषा9ह्यास्तीम	धनकुव	. ,,
भूपालवतुर्विद्यतिका	मूपालकवि	**
महिम्नस्तवस	 जबकीर्स्त	
समयबारक स्तोष	विष्युक्तेन	, 35- 50-

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा
महर्षि तवन	×	संस्कृत
ज्ञानांकुशस्तोत्र	×	**
वित्रबंधस्तोत्र	×	19
लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभ देव	**
नेमिनाच एकाक्षरीस्तोत्र	ণঁ• शालि	17
लबु सामायिक	×	"
ब तुर्विशतिस्तवन	×	,,
यमकाष्ट्रक	भ० धमरकीति	**
यमकत्रध	×	**
पार्श्वनायस्तोत्र	×	**
वर्द्ध मःनस्तोत्र	×	"
जिनोपकारस्मरसस्तोत्र	×	"
मह.वीराष्ट्रक	भागवन्द	**
लघुमामायिक	×	,,

४९७०. प्रति सं०२ । पत्र स०१२ ८। ले० क.ल imes । वे० सं० ६२ ६। क भण्डार ।

विशेष--- समिकांश उक्त पाठो का ही संग्रह है।

प्रश्-ेश. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११६ । लंग काल ८ । तेन मंग ६२६ । क्र अध्डार । विकोष—जन्म पाठों के ग्रतिशिक्त निम्मपाठ और है ।

बीरनायस्तवन	×	संस्कृत
श्रीपा र्स्वीजनेश्वर स्तोत्र	×	"

४९७२ स्त्रीत्रसंगहः*** । पत्र सं∘११७ । सा॰१२३४७ इंचः भाषा-संस्कृतः। त्रिषय-स्त्रीतः। र० कालः x । ते० कालः x । पूर्णः। वै० सं०⊏२७ । इ. मध्यारः।

विक्षेष---निम्ब मंग्रह है।

नाम स्तोत्र	कर्सा	মাধা
प्रतिक्रमख्	×	संस्कृत
सामानिक	×	
च क्ति राठसंब ह	×	"
		29

नाम स्तोत्र	কৰ্মা	
तत्वार्वमूत्र	उमास्वाति	संस्कृत
स्वयंग्रस्तोत्र	समन्तभद्र	_

४९७३. स्तोत्रसंप्रहुः ः ापत्र तं०१०। मा० ११२,×७० हत्ना अस्या संस्कृतः। विषय-स्तीय । र०काल × । ते०काल × । पूर्ण । वे०तं० ⊏३०। कः प्रण्यार ।

विशेष---निम्न संग्रह है।

नेमिनाषस्तोत्र सटीक	×	संस्कृत
इय क्ष रस्तवन	×	
स्वयंभूस्तोत्र	×	11
चन्द्रप्रस्थतोत्र	×	27

विशेष---निम्न स्तोत्र है।

कल्यारामन्दिरस्तोत्र	कुमुदबन्द्र	संस्कृत
विवापहारस्तोत्र	धनश्चम	**
सिब्धि प्रयक्तं/च	देवनंदि	_

४९७४. स्त्रोत्रसंग्रह"" । जा सं•२२। या॰ १२३४४५ द'व। जाया-संस्कृतः। विषय-स्त्रीयः। र॰कालः ४। चे॰कालः ४। पूर्णः। वै॰चं॰२३६ः। इस जयदारः।

विक्षेष--निम्न स्तोत्र हैं :

एकी भाव	गदिराज	संस्कृत
सरस्वतीस्तोत्र मन्त्र सहित	×	
ऋषिवण्डलस्तोत्र	×	,,
भक्ताभरस्तोत्र ऋदिमंत्र सहित	×	
हबुगामस्तोत्र	×	•
ज्वासामासि नीस्तो त्र	×	
यसं स्वरीस्तोष	×	,,

. ४९७६. स्तोनसंब्रह्मामा पत्र सं०१४ । ब्रा० ७४४६ इ.च.। भाषा-संस्कृतः। विषय-स्तोत्र। र० काल ४ । के० काल सं०१ धप्रभ माह सुदी १ । पूर्ण। वे० सं०२३७ । ख्रा अध्यार।

विशेष--निम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

ज्वालामालिनी, मुनीरवरों की जयमाल, ऋषिमंडलस्तोत्र एवं नमस्कारस्तोत्र ।

४⁹९७७. स्तोत्रसंब्रह् ^{.....}। पत्र सं०२४। घा०६×४ इ'व । नापा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण | वै० सं०२३६ । इस सम्बद्धार ।

विशेष---निम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

पद्मावतीस्तोत्र	×	संस्कृत	१ से १० पत्र
चक्रे स्वरीस्तीत्र	×	"	११ से २० पत्र
स्वर्णाकर्षण्विधान	महीधर		3 X

४९७६. स्तोत्रसंग्रह" ""। पत्र सं०६१। घ्रा० ७३,४४ इंच। जाया-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० कास ×। पूर्ण। वे० सं० ६६६। इक प्रथमर।

४९७६. स्तोत्रसंप्रह्माम्मा पत्र सं० २७ । मा० १०६/२४३ ईच । माया-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र σ काल imes । ते० काल imes । पूर्व । वे० सं० ६६६ । क्र सम्बार ।

विशेष---निम्न स्तोत्र हैं।

भक्तामर, एकीभाव, विवापहार, एवं भूपालचुतुविवातिका ।

४१८०. स्तोत्रक्षंत्रहः.....। पत्र सं० ३ से ४१ था० ६×६ इंच । भाषा-हित्दी, संस्कृत । विषय्-स्त्रोत । र० काल × । से० काल × । अपूर्ण । वै० सं० =१७ । अर्ज पण्डार ।

४१८२. स्तोत्रसंग्रहः। यत्र सं० २३ ते १४१ । सा० ८×१ रंज । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ते० काल × । सपूर्ता । वै० सं० ८६६ 😝 सण्डार ।

विशेष---निम्न पाठो का संग्रह है।

नाम स्तोच पंचमंगल	कर्सा क्यबंद	भाषा	
कलशरिधि	×	हिन्दी संस्कृत	मपूर्ल
देवसिक्षपूजा	×		
बान्तिपा ठ	×	-	
जिनेन्द्र मस्तित् <u>स्ती</u> म	×	 डिन्दी	

नाम स्तोत्र	कर्षा	:	भाषा
कल्यागुर्मान्दरस्तीत्रभाषा	वनार्सीदाम		हिन्दी
जैनशतक	मूषरदास	**	,,
निर्वाणकाण्डभाषा	मगवतीदास		17
एकी भाषस्तो त्रभाषा	मूषरदास '		,,
तेरहकाठिया	बनारसीदास		,,
वैत्यबंदना	×		33
भक्ताम <i>रस्तोत्र</i> भा या	हेमराज		10
वं चकल्याराष्ट्रजा	×		,,

४१८२, स्तोत्रसंग्रह्णःःः। पत्र सं० ४१। ग्रा० ११८७३ इ'व । साया-संस्कृत-हिन्दी । विवय-स्तोत्र । र० काल 🙏 । ते० वाल 🙏 । पूर्ण । वै० वं० द**११ । क जप्यार** ।

विशेष---निम्न प्रकार संग्रह है।

निर्वाग् <u>य</u> काण्डभाषः	भेया भववतीदास	हिन्दी	बपूर्व
सामायिकपाठ	पं॰ महाचन्द्र	,,	पूर्श
सामायिकपाठ	×	,	श्रपूर्श
र्वं चपरमेष्ट्रीयुर्ग	×		पूर्ण
लघुसामायिक	×	संस्कृत	,,
बार्हभावना	नवलकवि	हिन्दी	,,
द्रव्यसंग्रहमाया	×	,,	मपूर्श
निर्वा ग् काण्ड माया	× .	प्राकृत	पूर्ण
चतुर्विशतिस्तोत्रभाषा	मूषरवास	हिन्दी	*
वीबोसदंडक	बीसतराम	27	,,
परमानन्दस्तोत्र	×	,,	मपूर्ण
भक्तामरस्तोत्र	मानतुं म	संस्कृत	पूर्ण
कस्यारामन्दिरस्तोत्रश्रावा	वनारसीदास	हिन्दी	,
स्वयंभूस्तोत्रभाषा	चानसराव	*	,,
एकी भावस्तीत्र भाषा	. शूपरदास	,	बपूर्श
,बालोचनापाठ	×	,,	
सिक्षित्रयस्तीच	देवनंदि	संस्कृत	
	٠.		-

ः नामं स्तोत्र	क्री	भाषा	
विषापहारस्तोत्रभाषा	×	हिन्दी	पूर्ण
संबोधपंचासिका	×	"	**

प्रश्चिक्ष, स्तोत्रसंसह******* पत्र संबंधित १०५% ७ ६ व । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तीव । ग्र काल्य \times । लेक काल्य \times । पूर्ण । जीर्सा । वैठ संव ६६४ । इक भण्डार ।

विशेष---निम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

नवग्रहस्तोत्र, योग्नीस्तोत्र, पद्मावतीस्तोत्र, सीर्थक्करस्तोत्र, सामाधिकपाठ मादि है।

४१६८६ स्तोजसमङ******। पत्र सं०२६ । सा० १०}४४ (रुंडंच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोच। र•काल ४। ते०काल ४ । पूर्ण। वे०सं० स्६३ । इट भण्डार।

विशेष-- भक्तामर भ्रादि स्तोत्रों का संग्रह है।

प्रश्चरः स्तीलसंब्रहः''''''' पत्र सं०२१। म्रा०द्र-४-१०० । प्राणा-सम्कृतः शब्दः । विषय-स्तरुतः । र०काल ४ । ने०काल ४ । मृतुर्ण । वै० सं०द्दर । इस्मण्डार ।

४१=६. स्तोत्र—माचार्ये जसबंत । पत्र सं०१। घा००३,५ इंचः। भाषा-संस्कृतः। विषय-ः। स्तोत्र। र०काल ×। ल०काल ×। पूर्णा वै०सं० ६११। क भण्यारः।

४१६७. स्तोत्रपूजासंप्रहु***** पत्र सं∘ ६ । ग्रा० ११४४ इ.च.। भाषा-किस्ताः विषय-स्तात्र पूत्राः । र• काल × । ले॰ काल × । प्रपर्ण । वै० सं∘ ६६० । इस अण्डारः ।

४१६मम् स्तोत्रसंबह्ः****** । पत्र सं० १३ । प्राः १०४८ इंचः। भाषा–हिन्दीः थियय–स्तोत्रः। २० काल ४ । ले० काल ४ । प्रारंगि वै० मै० ६६६ । इस सम्बारः।

४१८६. स्तोत्रसंसह******* पत्र सं०७ मे ४७ । सा॰ ६०८, इ.च.। भागः-सम्कृतः विषय-स्तात्र र०कालः ∡ । ने०कालः ४ । सपूर्णः | वे०सं० ८८६ । इ०भण्डारः ।

प्र१६०. स्तात्रसंसह****** । यत्र सं• ६ से १६ । सा० ११८ ४३ हवा भागा-भम्बन । विषय-स्तोत्र । १० काल 🗴 । वे० काल 🗴 । बपूर्ण । वे० सं० ४२६ । चुभव्यार ।

विशेष---निम्न स्तोत्र है।

एकीभावस्तोत्र	वादिराज	मं स्क त
कल्या गमन्दिरस्तोत्र	कुमुदबनद	•
to grant		79
पनि प्राचीन है। मंस्कृत टीकासक्रित हैं।		

प्रश्रेष्ट, स्तोत्रसंसद्धः । पण मं० २ मे ४० । झा० ०४४३ इ.च । जावा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ८ । मे० काल ४ । झपूर्ण । मे० सं० ४३० । च मण्डार ।

४९६२. स्तोत्रसंग्रह्णाणाः। यत्र गं० १४ । ग्रा० ८३.४४३ इ'व । जावा-संस्कृत । विवय-स्तोत्र । र० कात ८ । ने० काल गं० १८४७ प्रवेष्ठ सुती ४ । यूर्णा । वे० गं० ४३१ । च जण्डार ।

विजेष---निम्न संग्रह है।

₹. f	सद्धिप्रयस्त्रोत्र	देव् नंदि	संस्कृत
₹. ₹	त्यारामन्दिर	कुमुदयन्दायार्थ	*
\$ \$	कामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	77

प्र१६६. स्तोत्रसंग्रह.....। यत्र सं० ७ सं१७ । आ० ११×८३ इ.च । आया-संस्कृत । विषय-स्तोच । २० काल ४ । से० काल × । सपूर्ण । दे० सं० ४६२ । च मध्यार ।

प्रशेष्ट स्तोत्रसम्ब्रहः.....। यत्र सं०२४ । मा०१२४७३ इंचानाबा—हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत । विषय-स्तात्र । र०काल × । वे०काल × । यूर्गो | वे०सं०२१६३ । ट भण्डार ।

४९६४. स्तोत्रसंग्रहः......। यत्र सं० ४ ने ३४ । सा० १४५३ इ'च । साथा—मंस्कृत । विषय-स्तोच । रः कान ४ । नः कान सं० १८७४ । सपूर्ण । वे० सं० १८७२ । ट भण्डार ।

प्ररेश्यः स्तानसमिद्याम्मा पत्र संव रथः से ३४ । साव १२४६ इ'च । आवा—संस्कृतः । विषय—स्ताव ॥ र० काल ४ । संव काल ४ । सपूर्णः। वेव संव ४३३ । वा अध्यारः ।

विशेष — निम्न संग्रह है।

मामायिक बडा	*	संस्कृत	धपूर्ख
मामायिक लच्च	×	"	पूर्व
महस्रनाम नचु	×	79	,
सहस्रनाम बढा	×	n	,
ऋषिमंडलस्तोत्र	×	•	,,
निर्वासकाण्डगाया	×	,	*
नवकारमन्त्र	· ×	,	,
बुहद्ने व कार	×	मपभ्र(स	*
बीतरागस्तोत्र	वदानंदि	संस्कृत	
विमर्पजरस्तीम	×	19	

1	🗥 नाम स्तोज 😘	कर्त्ता	भाषा	
	प्यावतीचळ स्वरीस्तोत्र	×	**	**
*< 1 ,	वक्षपंजरस्तीत्र	×	. 39 .	77
	हनुमानस्तोत्र ,	×	हिन्दी	**
	ब डावर्शन	×	संस्कृत	1)
	भाराधना	×	प्राकृत	*

विशेष---निम्नलिखित रहोत्र हैं।

एकी मान, मूपालची बीसी, विवापहार, नेभिगीत भूधरवृत हिन्दी में है।

्र ४१६८. स्तीत्रसंग्रह्****** पत्र सं०७। ग्रा०४६ै×६३ दंव। भाषा—संस्कृत। विषय-न्ताय स्ट काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०१३४। छ अक्टार।

निम्नलिखित स्तोत्र हैं।

नाम स्तोत्र	कर्चा	भाषा
पादर्वनायस्तीत्र	>	संस्कृत
वीर्षावसीस्तोत्र	×	,,

विशेष--ज्योतिषी देशो में स्थित जिनचैत्यो की स्तृति है।

वक्र स्वरीस्तोत्र	×	मं <i>स्कृ</i> त	
जिनपञ्जरस्तोत्र	कमलप्रभ	59	भपूर्गा

- श्री रुद्रपक्षांयवरेगः गच्छः देवप्रभाषायेपदाव्यहंसः ।
- वादीन्द्रबृहामिंग्रिष जैमो जियादसौ कमलप्रभास्यः ।।

8१६६. स्त्रोत्रसंग्रह******। पत्र सं० १४। सा॰ ४५×३५ दंव । सावा-संस्कृत । विषय-स्त्रोत्र । र० क.स. \times । ये० काल \times । ये० सं० १३४। क्क सम्बार ।

	लक्ष्मास्ताच	पराप्रसदक	संस्कृत
•	नेमिस्तो य	×	
	पद्मावतीस्त्रोत्र	×	s 39

स्तोत्र साहित्य ी

४२०० स्तोत्रसंग्रह्णाः । पत्र सं०१३ । सा०१३ रहण्ड् वंव । शावा-संशक्त । निवय-स्तोत्र । ए० काल \times । त्रं काल \times । पूर्ण । वै० सं० ६१ । का पण्डार ।

विशेष---निम्नलिकित स्तीत्र 🖁 ।

एकी भाव, सिद्धिप्रिय, कल्याणामन्दिर, मक्तामर सवा परवानन्वस्तीच ।

४२०१, स्तोजनूजाकंप्रहः''''''। पन सं०१४६ । सा०६३,४६ वं'व । आस्वा–संस्कृतः। विषय–स्तोजः। र०काल × । से०काल × । पर्या । वे०सं०१४१ । सामध्यारः।

विशेष---स्तात्र एवं पूजामी का संबह है । प्रति ग्रुटका साध्य एवं सुन्वर है।

४२०२. स्तोत्रसंग्रह्****** । यत्र सं० ३३ । ग्रा॰ ४३,×६३ इ**वा । श**ावा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । त० काल सं० १६०२ । पूर्ण । वै० सं० २६४ । **ग्रह अध्यार ।**

विशेष-पद्मावती, ज्वालामालिनी, जिनपद्धर बादि स्तोत्रों का संबद्ध है।

४२०३. स्त्रोत्रसंग्रहः***** । पत्र सं०११ ते २२७ । मा॰ ६६४५ ६ व्या । माणा-संस्कृत, प्राकृत । विषय⊶स्तोत्र । र०काल ४ । ले०काल ४ । सपूर्णा वि०सी० २७१ । स्त्र व्यवसर ।

विशेष--- बुटका के रूप में है तथा प्राचीन है।

४२०५. स्त्रीत्रसंग्रहः^{........}। पत्र सं∘१४ । सा•६४६ द**वा** । मादा—सैस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० कान × । ते∘ कान × । पूर्ता । वै० सं∘२७७ । सामध्यार ।

विकोय---भक्तामर, वश्यासामन्दिर स्तोत्र धादि हैं।

मध्यार ।

४२०४. स्तोप्रज्ञय''''''। वन सँ०२१। सा०१०४४ इक्षा।साया—संस्कृत । विषय—स्तोच।र० काल \times ।ते० काल \times ।पूर्ण।वै० सँ०१४४।स्य विषयीः

विशेष--कल्यारामन्दिर, भक्तामर एवं एकी शांव स्तोत्र हैं।

४२०६. स्वयंभूरतोत्र—समन्तभद्राचार्य। यत्र सै० ४१। झा० १२३/४५ इंच । माया-संस्कृत । विवय-स्तोत्र। र० काल ४। ले० काल ४। सपूर्या | वे० वी० ६४० | कृषक्वार ।

> विशेष---प्रति हिन्दी टम्बा टीका सहित है। **स्थान** इसरा नाम जिनवर्त्तुविश्वति स्तोत्र मी है। ५२०७. प्रति सं०२।पत्र सं०१६। ते० काल सं०१७६६ ज्वेह दुवी १३।वै० सं०४३५। च्य

विवोष---कामराज ने प्रतिक्षिप की वी । इसी भण्डार में वो प्रतिक्षां (वै० वं० ४१४, ४१६) क्षीर हैं। े २०६६. प्रति सं० ३। पत्र सं० २४। के॰ काल \times । वे॰ सं० २६। ख भण्डार । ।वशेष-संस्कृत टीका सहित है ।

४२०६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २४। ले० काल ×। प्रपूर्ण । वे० सं० १४४। व्य अध्वार । विशेष—संस्कृत में संकेतार्थ दिये गये हैं।

४२१०. स्थायंश्रुस्तोत्रद्वीका—प्रश्नाचन्द्राचायै । पत्र सं०४३ । झा०११×६ र≋ । जागा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं०१=६१ संगतिर छुदी १४ । दूर्स । वे० सं० =४१ । क अस्त्रार ।

विशेष—प्रत्य का दूसरा नाम क्रियाकलाप टीका भी दिया हुधा है।

इसी अच्छार में दो प्रतियां (वै॰ सं॰ ८३२, ८३१) और हैं।

४२११. प्रतिसं०२ । पत्र सं०११६ । ले॰ काल सं०१२१ पीष बुदी १३ । वे० सं०८४ । अ जण्डार ।

विशेष---वनुसुबलाल पांड्या चौधरी चाटसू के मार्फत श्रीलाल पाटनी से प्रतिलिपि कराई।

४२**१२. स्वयंभूस्तोत्रटीका*********। पत्र संullet २२ । या० १० χ ४५ ईव । भाषा-संस्कृत । विवय-स्तोत्र । रे० काल χ । से० काल χ । सपुर्ण । वै० सं० यदप । स्त्र प्रशाद ।



पद अजन गीत धादि

imes 2२१२. श्रातावातीचोडास्या—श्रिम। पत्र सं २। मा॰ १०४४ दश्च । वाला-स्थि । विषय-जीत । १० काल imes 1 ते॰ सं० २१२१। वा मण्डार।

विशेष—राजा जैसिक ने भववान नद्दावीर स्वामी से अपने आपको सनाय कहा वा उसी पर बार ठावाँ में प्रार्थना की नसी है।

 χ २१%, कामाधीधुनि सक्ताव \cdots । तम सं० ४। बार १० χ ४३ दश्च । नाना-हिन्दी । विचन-गांत । र० कास χ । तेर कास χ । पूर्ण। वे॰ सं० २१७३। का सम्बार ।

प्र२१ द. बहुँतकचीडाक्षियागीत—विश्वस्त विनयः (विनयरंग)। पत्र बं∘ ३। ता० १०४४ हे इ.स. । जावा-हिन्ती । विषय-मीत । २० काल ४। ते० काल १६०१ प्रासीय सुदी १४। पूर्णः। वै० वं० व४४। व्य भण्यारः।

विशेष--बादि धना भाग निम्न है--

पराम्म पर्वामन पर्वामन विनयंती वगरीस ।
साहंतक मुनिवर वरीय मिए पुण्यीय नवीस ॥११।
पौण्यं पुण्योय नवीस ॥११।
पार्व्वित निवस्त सीय मिए पुण्यीय नवीस ॥१।।
पार्व्वित निवस्त सीयत, तम्म ते तारी वित्त कीयत ॥१।।
पित्र नात "एड उपवेसड, निवस्त मानवर मानदीय विसेसड ।
कृतत ते वेव विनानि, सुनिवस्यो मनिवस्त तिम कानि ॥३।।
पार्वा नवरी वरणीया समकापुरि सन्तार ।
पत्र तिहाँ विषद्वारीयत सुवत नाम सुनिवार ॥४॥।
पौण्यं पुण्या प्रस्ता परली"
स्वामन स्वामन ॥१॥।
पार्वित्व वर्षेत्व कर विचान, साहंतक नाम प्रधार क्यान ॥

धसनपाल खादम बसी जी सादिम सेवे निहार । इशि माव ए सवि परिहरी जी, मन समरइ नवकार ॥१६॥ सिला संबारत प्रावरमा जी, सूर किरशा धनि तार । सहइं परीसह साहसी जी, हे, इइ भवना पाप ॥५७॥ समतारस माहि भीलतउ जी, मनेधरतउ सुभ ध्यान । काल करी तिशी पामीयउ जी, मुंदर देव विमान ॥५०॥ सुरग त्या सुख भोगवी जी, परमार्शव उलास । तिहां थी चिव विल पामेस्यइ जी, धनुक्रमि सिवपुर वास ॥५६॥ श्ररहंनक िमते धरइ जी, धंत समय मुभकाशा । जनम सफल करि ते सहो जी, पामइ परम कल्यामा ।।६०।। श्री सरतर गच्छ दोपता जी, श्री जिनचंद मूरिंग्द । जयवंता जग जासीयइ जी, दरसरा परमारांद ॥६१॥ श्री गुरा सेखर गुरा निलंड जी, बावक श्री नयरंग । सासु सीस भावइ मराइ जी, विमलविमय मतिरंग ।।६२।। ए संबंध सुहायउ जी, जे गावइ नर नारि । ते पामइ सुख संपदा जी, दिन दिन जय जयकार ११६३।। इति धरहंनक चउढालियागीतम् समासम् ॥

संबद्ध १६६१ वर्षे कासु सुवी १४ दिने बुधवारे पंडित श्री हवीसिंहगांचांदाव्यकर्षकं (सर्गामांदान्द्रसन् क्यारंगम् निना सेखि। श्री पुरुवचनपरे।

४२१६. व्यादिजिनवरस्तुति—कमलकीचि । पत्र सं० ४ । घा० १०६४४ इंच । भाषा-मुजनती । विवय-मीत । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १८७४ । ट्र भण्यार ।

विषेय-- रो गीत हे दोनों ही के कर्ता कमलकीर्ति हैं।

४२१७. चादिनाथगीत-- युनिहेमसिस् । यत्र सं०१। मा० ६२४४३ हंच। मावा-हिन्दी। विषय-गीत। र० काल सं०१६३६। ले० काल ४। वै० सं०२६३। छ भण्यार।

विशेष---भाषा पर ग्रजराती का प्रमाव है।

४२१म. व्यादिलाध श्रेक्काय"'''''(पत्र मैं०१ । मा० १५४४ इक्का। प्राथा-हिन्दी । विवय-मीत । र० काल × । से० काल । पूर्ण । वै७ सै० वृहेदेक | क्षेत्रकार । प्र-१६. आधीस्यरिक्जित्तिः****। यत्र सै० १ । बा० ६३,४४३ इक्षः। शोषा-हिन्दी। विषय-गीतः। र० काल सं० १५६२। ले० काल सं० १७४१ वैद्यास सुदी ३। सपूर्णः वै० सं० १५७। क्का पण्यारः।

विशेष--- प्रारम्भ के ३१ पदा नहीं हैं। कुल ४५ पदा रचना में हैं।

वन्तिम पच---

पनस्वासिट्ट जिनशूर प्रविचल पद पाथी ।

बीनतदी कुलट पूर्णीयां बासुमस बहि दशम दिहार मिन बैराने इम मर्गीया ॥४५॥

४२२०. कृष्यावासविस्नास—मी किरानसाक्ष । पत्र सं० १४ । झा० द×१३ ६ आ । माथा—हिन्दी । विषय—पद । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वै० सं० १२६ । इक मण्यार ।

४२२२. गुरुस्तवल—भूषारदासः ≀पत्र सं० ३ । घा॰ ८६ूँ×६६ूँ इ'च । बाषा—हिन्दी । विषय-गीतः । रः काल × । लंश्काल × । पूर्वा । वेश्सं० १४५ । क्र-मण्डार ।

४२२२. चतुर्विशासि तीर्थे कुरस्तकन — देमविमकासूरि शिष्यं चार्याद् । पत्रं सं०२ । मा० ५३,४४३ ८ आह् । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । र॰ काल सं०१ ४६२ । कै० काल 🗴 । पूर्वी । वै० सं०१ ८८३ । ट मण्डार । विकेष—मित प्राचीन है ।

४२२२ चरुपाशतक—चरुपाबाई । यत्र सं०२४। सा०१२x=६ इंच । आया—हिली । विषय—स्वः । र०काल x। ते०काल x। पूर्ण । वै० सं०२२३ । क्षा कष्यार ।

विशेष—एक प्रति धौर है। चंपाबाई ने ६६ वर्ष की उन्न में स्थ्यावस्था में रचना की ची जिसके प्रवास म रोग दूर होगदा था। यह प्यारेनान धनीगढ (उ० प्र०) की खोटी बहिन ची।

 γ ः २४. चेताना सरुकाय — सम्बद्धान्त्र । पन सं॰ १ । या॰ २ $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4}$ इंच । वाला — हिन्दी । विचय— नीतः । र॰ कान \times । ते॰ कान सं॰ १०२२ माह सुवी ४ । पूर्ण । वे॰ सं॰ २१७५ । का वण्यार ।

४२२४. चैत्यपरिपाटी''''''। यत सं $^{\circ}$ रे। सा $^{\circ}$ ११३४४३ ५ छ। याचा-हिन्दी । विषय-सीत । र $^{\circ}$ कास \times । तं $^{\circ}$ कास \times । पूर्ण । वे $^{\circ}$ सं $^{\circ}$ १२४१। छा अध्यार ।

४२२६. चैत्यवंदना ******। पत्र सं० ३। बा० ६×८३ दश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र० काल x । मे० काल x । बहुर्सा । वै० सं० २८५ । यह सम्बद्धार ।

४५२% चौकीसी जिललुवि---सेमचंद । एव सं० १ । मा० १०४४ई दश्य । जावा-हिन्दी । विवय-गीत । ए० कास × । ते० कास × । ते० कास सं० १७६४ वैत्र दुवी १ । दुवी । वे० सं० १८४ । क व्यवार ।

४२६मः . जीवीसरीर्वेषुरतीर्वेररिचयः*****। पत्र र्त-१ । धा० १०४४२ रखः । मागा-हिन्दो । विश्व-स्थयन । र० काम × । ने० नाम × । युर्वे । वे० र्वे० २११० । क्षे क्षेत्रोर । प्रेरश्ट, चौबीसतीर्धेक्करस्तुति—ज्ञाहेव । यत्र सं०१७ । द्या०११३,४५६ इंच । आपा-हिन्दी । विचय-स्तवन । र० काल × । ते० काल × । पूर्ता | वे० सं० ६४१ । का मण्डार ।

विशेष---रतनवन्द पांड्या ने प्रतिलिपि की थी।

भ्रु२२०, चौबीसीस्युति*****। पत्र सं०१५ । बा० द×४ इखा । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० कस्त्र सं०१२०० । ते० वाल × । पूर्छ । वे० सं०२३६ । क्ष्म पखार ।

४२३१. चौत्रीसतीर्भक्करवर्णन""। पत्र सं०११ । सा०६३×४३ ६ऋ । आपा-हिन्ती । विषय-स्तवन । र०काल × । के०काल × । पूर्ण । वे० सं०१६०३ । ट अण्डार ।

४२३२. चौबीसतीर्थक्करस्तवन—खुराकरस्य काशतीशाका । पत्र सं० ८ । घा० १४४६ इंच । मापान हिन्दी । विषय-स्तत्रत्र । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४४७ । च सण्डार ।

४२२३२. जल्लाईी—राम्सङ्ख्या।पत्र सं०१।मा०१०३४६२ इंच। माया-व्विमी।विषय-स्तवनः र०काल ४।ते०काल ४।पूर्णावै०सं०१६०।इस मध्यार।

४२२४. जञ्जूकमार सङ्काव """। पत्र सं०१ : घा० १५×४, दश्च । प्राथा-हिन्दी । विद्यय-स्तवत । र०काल × । तेर्थ । वर्ष । वै० सं०२१३६ । का पण्डार ।

४२२४. जयपुर के मंदिरों की बंदना—स्वरूपचंद । पत्र सं० १० । मा० ६४४३ इक्षा आया-हिन्दी । विषय-स्तयन । र० काल सं० १६१० | लै० काल सं० १६४७ । पूर्ण | वे० सं० २७८ । ३६ भण्डार ।

४२३६. जिस्समितः—हर्षकीचि । पत्र सं० १। सा० १२४५ ई. वं । प्राया-हिन्दी ; त्रेयस्-स्त्यन । र०काल ४ । ले॰ काल ४ । पूर्ण । वै॰ सं० १८४३ । इस सम्बार)

४२२७. जिनपचीसीय घन्य संबद्धः ः ा। पत्र गं∘ ४ । याः ८३४६ इ.स.। बाया-हिन्ती। विषय-स्ततन। र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्णी वै०सं०२०४ । इस्माबार ।

४२२८. **ज्ञानपञ्चमीरतयन—समयमुन्दर**। पत्र सं०१। ग्रा० १०४४ ई. इ.च.। थाया-हिन्ती । विषय-स्तवन। र० काल ४। ले० काल सं०१७८४ आवशा सुत्री २। पूर्ण | वै० सं०१८८४ । **छा** सम्बार।

४२३६. स्प्तवही श्रीसन्दिरञीकी····'''। पत्र सं०४ | सा० ७५४४ दळा । जाया-हिन्तो । विषय-स्तवत । र० काल ४ | ते० काल ४ | पूर्वी | दे० सं० २३१ | क ज्यदार ।

४२४०. स्मांस्मीरवाञ्चचोडाल्या******* पत्र सं० २। सा० १०४४ ६'च । आवा-हिन्दी । विषय-गीत । २० काल × । ते० काल × । सपूर्वी । वै० सं० २२६६ । व्या सम्बाह । विशेष---प्रारम्ब- सीशा

सीसा सा विन भेकर दाल---

रमती बरावे भीस नमानी, प्रश्नमी सतपुर पाग रे।
कांम्मरिया मृत्यि ना प्रश्न माता, उसदे मान सवाया रे।।
विवयश वंदो पुनि कांम्मरिया, संसार समुद्र वे तरियो रे।
सवन साझा परिशा मन मुखे, कील रक्षण करि भारियो रे।।
वहतपुर मकरपुन राजा, वहनतेन सत राखी रे।
तस मुत मदन मरम बासुदी, किरत जास कहाखी रे।।

भोजी ढाल सपूर्ण है। मांमारिया रूनि का वर्शन है।

४२४१. समोकारपद्यक्षिती—ऋषि ठाकुरसी। पत्र सं०१। झा॰ १०४४ इ.च.। भाषा-किष्य-। 'नगम-मनोत्र । र०कान सं०१०२० साग्रक मुदी १। ते०कान ४.। दुर्गावे० सं०२१७० । इस मध्यार ।

प्र२प्तरः तलाख् को व्ययसक्त—वार्यायुत्ति । पण सं० १ । वा॰ १०३×४ इ'व । वाका-हिन्ती । ोगय-मात । र० काल × । ने० काल × । पूर्णै । वे० सं० २१७० । का मध्यर ।

प्ररुप्तरे दर्शनपाठ—कुष्यतन। पत्र सं०७। सा० १०×४६ दंव। माया-हिली। विवन-स्तरन। २० काल ् । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २६६। क जन्दार।

४९४. १ देवकी की ढाक्ष-ख्याकरण कासलीवाला। पत्र सं० ४। घा० १०३४४३ इ'व । भाषा-क्रियी । विवय-गीत। र० काल ×। ते० काल सं० १८८६ वैद्याल दुवी १४। पूर्ण । जीर्ण । १० सं० १२४६। का भवार ।

विभेष---प्रारम्भ दोहा---

रह नेमा नामें हुवा सकत् सरथ संजीत । बाठ सहस सकत् घरो गोमकार गझ जोग ॥१॥ सहत घठारा साथ जो प्रजावा बालीस हवार । मोठार पुनिबर विवरंज्या रा सार ॥२॥

बबुदेव राजा डोकरा देवाकीस प्रीमात ।।३।। कर्मन स्व देव का तसा सा राजा के उसहार । कस्त्री मुख्यों भी नेम का सावत संपन्तर प्रसा 5,0

सावर्णा सुध बावरो देस मझतनी नाम । बेमेरशावरा स्वामी जी करावो बीच वीच ॥१॥

SERVIN-

वेच की तलाह भंदल बांदबारे उजी भी नेम जिल्लेसवार।

गन्यला साथा न वेच नर कारवालाया इस प्ररदीतार।।

गन्यला साथा देवती देवी नर उमा रहा छ नगर मीहान रे।

श्वसती ""टाड काथ वालालीर छूटी खे हुद तलील पार रे।।२।।

वनमम बाल सोहाबडी उसस्यी र फल में दुन्ती छे बेहना कायरे।

वनाया माहा तो माब रही रे वेज तो लीवन तीरपत न वायरे।।३।।

दीवकी शी साधान छ दिला करो र पांछा बाइ छ माहीनो माहारे।

सीच फिकर वेदकीर ज्योर मोहतली ए बातरे।।४।।

सासा तो माव्यों भी नेमगीर एतो छहु पारा बावरे।

श्रास्ता माहा साधुं पहेरे जल्ले मी स्वारे दुटा मानरे।।॥।

द्रव्यम---

मरबी तांव छोबो सगता नगर मन्त्रारो, सुहुमांगा शीचे प्रशारे मिंश माशक घंडार। मिंश माशक बहु दीया देवकी सनरा दक्षा काइ न राखी॥ इ.सुकरस ए डान ज भागा तीज चोच इसही ए साखी ए॥६॥

६ति भी देवको की ढाल स॰ ॥०॥ स्त्रभूजी ॥

स्वतस्य सुनीकाल खावता चेतराम ठाकरका वेटा छोटाका से बांच पढें न्यासू जया त्रोग बाचवया । सिर्सा देखाल बुरो १४ सॅ० १८८५ ।

क्षेत्रकी की डाल — रतनचन्दकृत और है । प्रति गम गई है । क्र्र्य ग्रस नष्ट होगये है : पहने में नहीं

र्म्यान्तम---

गुरा गाया जी मारवाड मभार कर जोडि स्तनवंद भरी ।।१०।।

४२४६. द्वीपायनदास्य-गुर्ग्यसागरस्(1)पत्र सं० १। सा० १०३ \times ४३ रख्य। आया-सिन्दी पुज रात्रो । विषय-स्तवन । र० काल \times । शेर काल \times । पूर्ण । वै० सं० २१६४ । क प्रवार ।

४२४०. नेमिनाथ के नवसङ्ख्या—विवोदीकाका। पन सं०१। मा०१६६४६ इका। जाया—हिन्सी विषय-व्यक्ति। र० काम सं०१७७४। ने० काम सं०१८६४ मंगविर पुरी २। वे० सं०१४। म्ह मन्दार। विकेस—वीद में प्रतिकृति हुई वी। कम्मपनी करेतरह गोल विकास हमा है। ४२४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ते० काल 🔀 । ते० सं० २१४३ । ट भण्डार । विशेष—लिस्मा मंगल फीजी दौलतरामजी की कुकाम पुत्र्या के मध्ये तोपखाना । १० पत्र से प्रापे नेमिराखलपखीसी विनोदीलाल इत भी है ।

४२४६. नागश्री सङकाय— विनयचंद् । पत्र लं° १ । मा० १०४४६ दंव । भाषा—हिन्दी । विषय— स्तवन । र० काल ४ । के० काल ४ । मपूर्ण । वे० सं० २२४८ । **व्य मध्यार ।** विनेष—केवल १रा पत्र हैं।

ग्रन्तिम---

प्रापण बांधो बाप भोगवे कोछ पुर कुछ चेचा । संजय लेह गई स्वर्ग पांचमें बजुही नादी न वेरारे ।।११।। आ०॥ महा विदेह मुक्ते जाली मोटी गर्भ वसेरा रे। विजयमंद जिजमर्थ बरायो सब दुक जान परेरारे ।।१६॥ इति नागभी सङकाय कुषामणे सिक्ति।

४२४०. निर्वाणकायङआषा—भैया सगवतीदास । पत्र सं∘ द । सा० द×४ इ'व । माषा–हिन्दी । विदय—स्तृति । र० कान सं० १७४१ । ले० कान × । पूर्ण । वै० सं० ३७ । सः सम्बार ।

४२४१. नेसिसीत—पासचन्द्र । यत्र सं० १ । सा० १२३ \times ४५ इंच । नावा-हिन्दी) विषय-स्तवन । र० कान \times । ज्ञेण कान \times । पूर्ण । वै० सं० १८४७ । स्त्र सम्बद्धार ।

 x_{x} . नेसिराजसतीकी घोड़ीx"। पत्र तं० १। मा० १x इंन। नावाx नित्ते। विदयx स्तोत्र। र० काल x। नेर्प । वैर सं० २१७७। द्या मण्डार।

8२४. ने मिराजसती शीत—व्हीतरसक्ष । पण सं॰ १ । आ० ६ $\frac{1}{2}$ \times ४ इळ । साथा—हिन्दी । विषय—गीत । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वै० सं॰ २१३५ । व्य यण्यार ।

४२४४. नेमिराजसतीगीत—हीरानस्य । पत्र सं० १ । सा० ८३ \times ४ इंच । याषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० २१७४ । का वष्टार ।

बुरतर ना पीर वोहिमोरे, पान्यो नर भवसार । सालद जन्म नहारित मोरे, कांद करपारे जन नाहि विचार ।।१।। नित राषो रे रेमछो ने रंग क सेवोरे बीख बाखो । पुन रनक्यो रे संयम न संगक बेदो रे बित प्राखी ।।२।। स्नित्तंत वेब सरावादयोजी, रे हुर नक्या स्नी साल । वर्ष केववालो माखीन, ए सवकित वे रतन जिस सह्वक ।।३।। 727 "

पहिलो समक्ति सेवीय रे, जे छे धर्मनो मूल। संजम सक्ति बाहिरो, जिए भास्यो रे तुस संडए तुलिक ।।४।। तहत करीन सरदहो रे, जै मास्तो जलनाय। पाचेइ भासन परिहरी, जिम मिलीइ रे सिवपुरनो साथक ।।५।। जीव सहजी जीवेवा बांछिरे, मरुश न वांछे कोइ। भापस राखा लैंखवा, तस वावर रेहण जी मत कोइ ॥६॥ चोरी लीजे पर ताणी रे, तिशा ती लागे पाप। धन कंचएा किम् चोरीय, जिएा बांधइ रे भव भवना संताप क ॥७॥ मजस मकीरत ए। भव रे, पेरे भव दुख ग्रनेक। कुड कहता पामीइ, काइ धाखी रे मन माहि विवेक ॥५॥ महिला संग धुइ हर, नव लख सम जुत । कुरा सुल कारण ए तला, किम काजे रे हिस्या मतिवत ॥६॥ पुत्र कलत्र घर हाट भरि, ममता काजे फोक। जु परिगह डाग माहि छै ते छाडरै गया बहुना लोक ।।१०।। मात पिता बंधव स्तरे, पुत्र कलत्र परवार। सवार्षया सह कौ सगा, कोइ पर भव रे नही राखणहार ।।११।। श्रंजुल जल नीपरै रे, खिसा रे तुटइ शाउ। जाइ ते बेला नहीं रे बाहुडि जरा घालरे थीवन ने भाड ।।१२।। व्याधि जरा जब लग नहीं रे, तब लग धर्म संमाल ! घारा हर वर्ण बरसते, कोइ समर्या रै बाधैगोपाल क ।।१३।। धलप दीवस को पाहुए। रे, सदू कोइए। संसार। एक दिन उठी जाइबज, कवरा जाराइ रे किस् हो प्रवतारक ।११४।। कोघ मान मामा तजी रे, लोभ मेघरड्यो लीगारे। समतारस मनपुरीय नली दौहिलो रे नर प्रवतारक ।।१६।। मार्ग खाडा भन्तमा रे पीउ संजम रसपूरि । सिद्ध बंधू से सड्ड को बरो, इस बोलै सक्षज देवसुरक ।।१७।।

वाल वृगवारही जिया वाइसलमा ।। समयविज्ञहजी रामंद हो, वैरागी माहरों मन लागो हो नेम जियांद सू जावव कुल केरा बंद हो ॥ वाल० ॥१॥

वेब बखा खह ही बुध जीदोबता (देवता)
तेती न बढह बेत हो, कैदक रे बेत म्हायत हो ॥ बाल० ॥२॥
कैदक दोश करह नर नारनह सांगह तेलिंड्यूर हर हो ।
वाके हक बन बातें बातें बात, कक बनवासी करह ॥
(कट) कसट सहह प्रस्तुर हो ॥३॥

तु नर मोझो रे नर माबा तही, तु जम दीनदयान हो ।
भोजोबनवती ए सुंदरी तजीड राजुल नार हो ।।।।
राजन के नारियहों उद्धरी यहतीड मुक्ति मक्तर।
हीरानंद संबेग साहिदा, जो की नब म्हारी बीनतेडा प्रवर्षार हो ।।।।।

प्रदेश्रः नेमिराञ्चलास्त्रकमावः राज्या संव १। झा० ६४४ इंच। आया-हिन्दी। विषय-स्तंत्र। र०काल संव १८४१ वैत्र राने लेक काल ४ । पूर्वा वैक संव २१८४ । इद अच्चार।

8२४.६. पक्कपरमेघ्ठीस्त्यन्—जिलबह्मभ सूरि । पत्रः सं०२ । ज्ञा०११४५ इंत्रः । भाषा-हिन्दी । विवय-स्तवन । र०काल \times । ले०काल सं०१८३६ । पूर्णः। वे० सं०३८८ । प्राप्तारः।

४२.५७. यद्—म्हावि शिवलाला । पत्र तं० १ । झा० १०×४३ इंव । आया-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०कात × । तं०कात × । पूर्ण । वै० सं० २१२० । चर्मच्यार ।

विशेष -- पूरा पर निम्न है -या जग में का तेरा संवे ।।या०।।
जैसे पंछी बीरख बसेरा, बीखरे होय सबेरा ।।१।।
कोडी २ कर धन ओड्या, ले धरती में पाडा ।
धर्मत समै चलल की बेला, ज्यां वाडा राहो खाडारे ।।२।।
ऊँचा २ सहल बेलाने, जीव कह हहा रेला ।
चल गया हंस पडी रही कावा, सेय कलेवर देला ।।३।।
मात पिता यु पतनी रे चारी, तींल धन जोवन खाया ।

करी कमाइ इसा भी बाया. उलटी पुत्री सोइ । मेरी २ करके जनम गमाया, चलता संक न होइ ।।५।) पाप की पोट वर्गी सिर लीनी, हे मूरल भोरा। हलकी पोट करी तु बाहै, तो होय कुटुम्बर्ध न्यारा ॥६॥ मात पिता सत साजन मेरा. मेरा धन परिवारो । मेरा२ पडा पुकारै चलता, नही कछु लारो ।।७।। जो तेरा तेरे संग न चलता, भेद न जाका पाया। मोह बस पदारथ बीराली, हीरा जनम गमाया ।। ८।। श्रांख्या देखत केते चल गए जगमें, प्रावह प्रापुही चलरता । भीसर बीता बहु पछतावे, मासी जु हाथ मसलगा ॥१॥ धाज कर धरम काल कर, याही व नीयत धारे। काल प्रचांगो घाटी पकडी, जब क्या कारज सारे ।।१०।। ए जोगवाइ पाइ दुहेली, फैर न बारू वारी) हीमत होय तो ढील न कीजे, कूद पड़ो निरधारी ।।११।। सीह मुखे जीम मीरगली श्रायो, फेर नइ छुटला हारी। इस दीसदंते भरस मुखे जीव, पाप करी निरधारो । १२।। सुगर सुदेव धरम कु सेवो, लेवो जीन का सरना। रीष सीवलाल कहे भी प्रांगी, ग्रांतम कारज करणा 112311

गडतिम

```
हरस्य. पदसंग्रह्णःःः। पत्र सं० ४१। का ० १२×५ ६ छ । भाषा-हिन्दो । विषय-भनत । २० वस्त्र × । के काल × । प्रपूर्ण । वै० सं० ४२७ । क भण्डार । ४२४६. पदसंग्रहःःः। पत्र सं० १ । ते० काल × । वे० सं० १२७३ । आ मध्यार । विशेष-- विश्व का ताह्य सांवताःः।। इसी भण्डार में २ पदसंग्रह (वै० सं० ११९७, २१३० ) और हैं । ४२६०. पदसंग्रहःःःः। पत्र सं० ६ । ते० काल × । वे० सं० ४०५ । क भण्डार । विशेष-- हसी भण्डार में ११ पदसंग्रह (वै० सं० ४०४, ४०६ के ४९५) तक भीर है । ४२६१. पदसंग्रहःः।
```

४२६२. पदसंग्रह....। पत्र सं० १२ । से० काल 🗴 । वे० सं० ३३ । मा मण्डार ।

विशेष—स्वी सम्बार में २७ परमंत्रह (के० सं० ३४, ३४, १४८, २३७, ३०६, ३१०, २६६, ३००, ३०१ से ६ तक, ३११ में ३२४) और हैं।

नोट--वे॰ मं॰ ३१ व्वें मे जयपुर की राजवंशावलि भी है।

४२६३. पदसंब्रह......। पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १७६६ । ट मण्डार ।

विजेष---इसी अण्डार मे ३ पदसंग्रह (वै० सं० १७४२, १७४३, १७४८) सौर हैं।

नोट--वानतराय, हीराचन्द, भूधरदास, दौलतराम श्राद्ध कवियों के पद हैं।

प्र२६५, यनसंब्रह्ण्णःः। यत्रः सं०३ । सा०१०imes४६ हंच । जाला-हिन्दी । विषय-पद । र० कासimes । ने० कान imes । पूर्ण । वे० सं०१४७ । इह जण्डार ।

विशेष---केवल ४ पद हैं---

- १. मोहितारी सामि अव सिंघुतै।
 - २. राजुल कहै तुमें वेग सिचावे।
 - ३. सिडचक वंदी रे जयकारी।
 - चरम जिल्लोसर जिहा साहिबा
 चरम धरम उपगार बाल्हेसर ।।

प्र२६ ४. पहसंग्रह """। पत्र सं• १२ मे २४ । झा॰ १२×७ इंच । जावा-हिन्दी । विचय-पद । र• काल × । ले॰ काल × । प्रपूर्ती । वे॰ सं॰ २००० । ट जम्बार ।

विशेष---भागवन्द, नयनमुल, यानत, जगतराम, बाह्नराम, जोषा, बुधजन, साहिवराम, जगराम, लास वस्तराम, फ्लांकुराम, सेमराज, नवस, ग्रुथर, चैनविजय, जीवस्त्वास, विश्वपुष्स्य, मनोहुर सादि कवियों के पद हैं।

४२६६. पदसंग्रह—वद्यसम्बन्द्। पन सं०१६। धा• १×६२ दश्च। आपा−हिन्दी। विषय-पद। र०कास ×। ते०कास ×। प्रपूर्ण। वै० सं०१४२६। ड सम्बार।

विवोध---उत्तम के छोटे २ पदोंका संग्रह है। पदों के प्रारम्भ में रागराविवयों के नाम भी दिये हैं।

प्रदेशकः, पहसंसङ्— वर्णकपूरणंग्दापण तं∘ १। सार्व ११३,४४३ दश्चा सावा-हिन्दी । नियस— स्तोत्र । रंकस्त × । तेरुकाल × । दुर्सा । वेरुतं ० २०४३ । द्वासण्यार ।

४२६८. पद्—कैशरगुक्काव । पत्र सं०१ । मा० ७४४३ इ'व । माया-हिन्ती । विषय-गीत । र० काम ४ । ते० काम ४ । पूर्व । वे० सं० २२४१ । का मण्यार । विशेष---प्रारम्भ-

श्रीधर नन्दन नयनानन्दन सांशादेव हमारो जी।

दिलजानी जिनवर प्यारा वो

दिल दे बीच बसत है निसदिन, कबहु न होवत न्यारा वो ॥

प्टेश्क्रक. पदसंबद्ध—चैनसुका। पत्र सं०२ । बा० २४×३३ इ'व । बाया-हिन्दी । विषय-पद । र० काल × । तं० वात्र × । पर्ण । वै० सं०१७५७ । ट भण्यार ।

४२-७०. पदसंसह— जयचन्द्र झावद्या। पत्र छं∘ ४२। झा० ११-४६ है चं। भाषा–हिन्दी विषय– यद्र। र० काल सं० १८-७४ झावाड सुदी १०। ले० काल सं० १८-७४ झावाड सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ८३-७३ क भण्डार।

विशेष--मन्तिम २ पत्रों में विषय सूची दे रखी है। लगभग २०० पदो का संग्रह है।

४२७१. प्रति सं०२ । पंत्र सं०६० । ले० काल सं०१८७४ । वे० सं०४३८ । क भण्डार ।

४२.७२. प्रति सं० ३ । पत्र सं• १ से ४० । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वै० सं० १६६० । ट भण्डार ।

४२७६. **पहसंगह—हेवाजका** । पत्र सं० ४४ । बा० १×६६ ह[†]च । भाषा—हिन्दी । विषय-पद भजन । र० काल ४ । ते० काल सं० १०६६ | पूर्ण । वे० सं० १७११ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति दुटकाकार है। मिनिस राग रार्णानको मे यद दिये हुये है। प्रथम यत्र यर लिखा है- श्री देवसागरनी सं०१ क६ व मेवाक युदी १२। मुकाम सबसे नैराबंद |

४२७४. पदसंग्रह—दौलतराम । पत्र सं०२० । घा०११४७ इ'च । नाषा—हिन्दी । विषय-पद । १० काल × । के० काल × । कपूर्ल । के० सं०४२६ । कः मण्डार |

४९-७४. पर्दर्सनह्— सुध्यत्न । पत्र सं०२६ ते ६२ । सा०११३,४८ इ'व । भाषा–हिल्दी । विषय– पद जनने । र०काल × । ले०काले × । सपूर्ती। वै०सं०७६७ । इस घण्डार ।

४२७६. पदसंबद्द— भागचन्द्रीयण सै०२४। घा०११४७ इ.च.। आया–हिन्दी। विदय-पद द भजनार० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्णीके सै०४३१। इ. मध्यार।

४२७७. प्रति संक २ | पत्र संक ६ | लेक काल 🗶 | बेक संक ४३२ | क्र अध्याद ।

विशेष-धोड़े पढ़ों का संग्रह है।

४९०-द. पर्⊶सत्कृत्वेद् । यत्र तं०१ । सा०६×४६ इ.च । स्रोवा-हिन्से । र०काल × । ते० काल × । पूर्ण। वै० तं०२२४ । इस सम्बार । विशेष -- प्रारम्भ-

पंच ससी मिल मीहियो जीवा,

काहा पानैयों तु धान हो जीवा ।

समको स्यूत राज ॥

४२-७६ - पहसम्रह— संगलाचंद्र। पत्र सं० १०। धा० १०३-४४३ इ.च.। साथा-हिन्दी। विवय-पद न मबन । र० काल ⋉ । ले० काल ⋉ । पूर्णावे० सं० ४३४ । इट सण्डार।

४२=०. पदसंग्रह—साश्चिकचंद् । पत्र सं० ४४ । झा० ११×७ इ'च । त्रावा—हिन्दी । विवय-पद व भवत । र० काल × । नं० काल सं० १९४६ बंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४३० । क अच्छार ।

४२८१. प्रति सं०२। यत्र सं०६०। ते० काल ×। वे० सं० ४३८। इ. अण्डार ।

् ४२=२. प्रति सं०३ । यत्र सं०६ । ते० काल × । प्रपूर्ण । वे० सं०१७१४ । ड अण्डार ।

g=1. पहसंब्रह—सेवक । पत्र सं०१ । आः ०३x४ इंव । आवश्-हिन्दी । विवय-पद । रx=1 के काल x । पूर्ण । वे० सं० २१६० । ट अपदार ।

विशेष -- केवल २ पद है।

४२०४. पदसंग्रह—हीराष्ट्रक्ष्या ना सं० १०। झा० ११४१ इ**छ।** भाषा—हिन्दी। विवस-नद व भजन। र०काल ४। ते० कान ४। पूर्णा वे० सं० ४३३। क्र अण्डार।

विशेष--इसी अण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० ४३४, ४३६) शीर हैं।

४२-४. प्रति संट २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल 🗴 । बै० सं० ४१६ । क ज़म्हार ।

४२८६. पदव स्तोत्रसंबद्धः*****। पत्र सं∙ ६६ । झा० १२२,×६ ६'च । जाया--हिन्दी । विषय--संबद्ध । र०काल ×। ते०काल ×। पर्सा । वे० सं० ४३६ । कः अध्धार ।

विमेष---निम्न रचनाओं का संग्रह है।

in

नाम	कर्त्ता	भाषा	पश्र
पश्चमञ्जल -	, क्पक्त 🗸	ફિલ્લો	٠.
सुष्टुदश तक	जिलदास	,	१ 0
जिनवसमञ्जूष	धेवगराम	29	Y
जिनग्रु राप कीसी	,	,,	-
प्रवमों की स्वृति	भूषरदास	_	-

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
एकीभावस्तोत्र	मृदरदास	हिन्दी	2.4
बजनाभि चक्रवसि की भावन	τ "	"	_
पदसंग्रह	मारिएकचन्द	**	¥
तेरहरं वपनीसी	,,	"	**
हुंडावसर्पिसीकासदोष	**	**	**
भौबीस दंडक	दौलतराम	"	12
दशबोलपचीसी	श्चानतराय	**	१ ७

४९८७. पार्स्वलिमगीत—ह्याज् (समयसुन्दर के शिष्य)। पत्र सं०१ । धा० १००५ इश्व । मापा—हिन्दी। विषय–गीत। र०काल ×। ते०काल ×। पूर्णा | ते०सं०१८६ । इस मण्डार |

४२.स्न. पारर्थनाथ की निशानी—जिनहर्ष। पत्र सं∙ ३। प्रा०१०४४ इंच। भाषा-िं∗री | विषय-स्तवत्र। र०कान ४। ले०कान ४। पूर्ण। वे० मं०२२४७। इस भग्डार।

प्रारम्ब--

सुस संपत्ति दायक सुरनर नायक परतिस पास जिल्लादा है। जाकी छवि कांति भ्रनोपम भोषम दिवनि जाला दिलंदा है।।

धन्तिम---

तिहां सिधावाबास तिहा रे बासा दे मेवक विसवदा है। चयर निसारगी पास बलागी गुरग जिनहर्ष गावदा है।।

वयर गिसार्था पास बलाया प्रेरा जिनहरू ह

प्रारम्भ के पत्र पर कोध, मान, माया, लोभ की मज्भाय दी हैं।

४५८६८ प्रति सं०२ । पत्र सं०२ । ले० काल गं० १६२२ । वे० सं०२१३ । इय अवदार । ४२६०. पार्वे नाथचौ पर्दू—पं० लालो । पत्र सं०१७ । घा०१२२ ४६३ इ.च.। आचा-हिली । विदय-स्तत्रन । र०काल सं०१७३४ कासिक सुदी । ले०काल सं०१७६३ ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्णावे के सं०१६१८ । ट पूर्णार ।

बिद्येष----ग्रन्थ प्रशस्ति--

संबद्ध सत्तरासे जीतीस, कार्तिक शुक्र तथा ग्रुम दीस । नौरंग तथ दिल्ली पुलितान, सबै तृपति वहै विदि प्राख ।।२६६।। नागर जान देख सुभ ठाव, नगर वस्तृहते उत्तम बाम । सब व्यावक पूजा जिनवर्ष, करें मत्ति रावे बहु सर्व ।।२६७।। कर्मक्षय कारण सुबहेत, पहर्वनाथ चौपई सचेत । पंडित लालो लाख सभाव, मेवो धर्म लखो मुभवान ॥२६८॥

प्राचार्य श्री महेन्द्रकोत्ति पार्श्वनाथ श्रीपई संपूर्ण ।

अट्टारक देकेटकीलि के शिष्य पांडे स्थाराम सोनीने बहुारक महेन्द्रकीलि के शासन में विक्री के जयसिंहपुर। के देकर में प्रतिनिधि की थी।

४२६१. पारवेनाथ जीरोञ्चन्दसत्तरी******* । पण सं∘ २ । मा० ६४४ इंच । जागा-हिन्दी पख । विषय-स्तवन । र० काल ४ । ने० काल सं० १७६१ वैद्याल दुरी ६ । पूर्ण । जीर्ण । वै० सं० १०६४ । इस अच्छार ।

 $y \in \mathbb{R}$, पार्श्वनाथस्तवनः । पत्र मैं $t \in \mathbb{R}$ ा शा $t \in \mathbb{R}$ । भाषा $- [t \in \mathbb{R}]$ । विषय $- [t \in \mathbb{R}]$ । के काल \times । पूर्ण । वैं में $t \in \mathbb{R}$ संख्यार ।

विशेष-इसी वेष्टन में एक पार्वनाथ स्तवन भीर है।

प्र२६३ पार्यनाथस्तीत्र***** । पत्र सँ०२ । झा००३४७ ६ व । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तीत्र । २०कान ४ । ने०कान ४ । पूर्या । वे०सँ० ७६६ । इस सम्बद्धार ।

४२६४. बन्दनाजल्बद्दी—विहारीदास । यत्र सं०४। मा० ८ \times ७ ६ व । भाषा-हिन्दी । विद्यय-स्तयन । र०कास \times । पूर्ण । वै० सं०६१३ । व्याचण्डार ।

४२६४. प्रति सं०२ । पत्र सं०४ । ले० काल × । वे० सं०६२ । व्य अण्डार ।

४२६६. बन्द्रनाजसङ्गे—बुधजन । पत्र सं० ४ । धा० १०x४ इ'व । नाया-हिन्दी । विषय्—स्तवन । र० काल x। पूर्ण । वै० सं० २६७ । क मण्यार ।

४२६७. प्रति सं० २ | पत्र सं० ३ | ले० काल × | वे० सं० ५२४ | क अण्डार |

४२६६. बारहलाड़ी एवं पढ़ ''''''''। पत्र तं० २२। बा॰ ५ $\frac{3}{6}$ \times ४ इंच। बाया-हिन्दी । विषय-स्कुट । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्व । वै० सं० ४५। ऋ बच्धार ।

 8^{+} ६६. बाहुबली संबद्धाय—विमलकीर्थि । पत्र सं० १ । मा॰ ६ $\frac{1}{4} \times Y$ इ'व । नाथा- हिन्दी । विचय—स्तोत्र । र॰ काल \times । वे॰ सं० १२४५ ।

विवोष-व्यामसुन्दर इत पाटनपुर सक्काय भीर है।

. ४३००. अक्तिपाठ—पत्राक्षाक्ष चौधरो । पत्र सं० १७६। स्ना० १२×५ इंच । जाया—हिन्ती । विचय— स्तुति । र० काल × । ते० काल × । पूर्ता । वै० सं० ४४५ । क्र जच्चार ।

विक्रेय-निम्न वस्तियां है।

स्वाध्यावपाठ, सिडमिक, श्रुतमिक, वारित्रश्रीक, प्रावार्यभिक, योगभिक, वीरमिक, निर्वाणमिक वीर ं नेवीस्वरमिक।

४३८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०६ । ले० काल × । ते० सं० १४७ । वह मण्डार ।

श्रदे≎२, अस्तिताहः******* । प्रति सं∘ द० । आरा० ११२,×७२, दंब । आरा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ने० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४४६ । इ. अण्डार ।

४२,६२ अजनसंबद्ध— चयन कवि । पत्र सं० ४१ । या० १४४ १ इ.च । त्राया–हिन्दी । विषय–पद । रुकाल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । जीर्णा। वै० सं० २४० । ह्यू पण्डार ।

४२०४. सक्देवी की सब्काय $-ऋषि लालबार्ट्ः । पत्र सं० १ । मार्ग ० द<math>^1$ \times ४ रंख । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल सं० १८०० कालिक बुद्यो ४ । ले० काल \times । पूर्ण | वे० सं० २१८७ । फ्रा पण्डार ।

४२०४. महावीरश्री का चौडाल्या— ऋषि सालचन्द् । पत्र सं० ४ । झा० ६२,४४६ इंच । भागा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । से० काल × । पूर्ता । वे० सं० २१८७ । इत्र मण्डार ।

प्रदेवहं. सुनिसुन्नतिवनती— देवानका। पत्र सं०१। मा०१०३×४६ डऋ। भाषा–हिन्दी। विषय– स्तवनः। र०काल ×। तेर्∘काल ×। पूर्ती। वै०सं०१=६७। का अध्यार।

४२८७. राजारानी सर्कमाय ******। पत्र सं०१। घा० ६५ं×४३ रऋ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ते०काल × । पूर्ण । वै० सं०२१६६ । ऋ अच्छार ।

8 देव... रांबपुरास्तवल \cdots ापन सं०१। बा० १ \times ५५ दंव। बाबा हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल \times । ते० काल \times । पूर्णीवे र्स०१८६६। इस बच्चार।

विशेष--रांडपुरा ग्राम में रचित बादिनाथ की स्तुति है।

प्रदेश्यः विजयकुमार सर्कमाय--- ऋषि सालावन्दः। यत्र सं०६ । झा०१०४४ ३ इ.च.। मापा-हिन्दीः विषय--- स्तवनः। र०काल सं०१ ६६१ । ते०काल सं०१६५२ । पूर्णावे० सं०२१६१ । क्या व्यवहारः |

विशोव — कोटाके रामपुरानें ग्रन्य रचनाहुई। गत्र ४ ने ग्रागेस्यूनमन्न सरकाय हिन्दीमें और है। जिसकार० काल सं-१८६४ कॉलिक युदी१४ है।

४३१०. प्रति सं०२। पत्र सं०४ । ले० काल ×। वे० सं०२१८६ । आ अण्डार ।

४३११. विनतीसंप्रहु******। पत्र सं० २ । झा० १२ \times ४ $^*_{\chi}$ इंब । आषा-हिन्दी । क्विय-स्तवन । र० काल \times । ले० काल सं० १०४१ । पूर्ण । वै० सं० २०१३ । झा गण्डार ।

विशेष---महातमा शम्मूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

४४१२. विनतीसंग्रह—ऋष्यदेव । पत्र सं० ३० । घा० ७३४६ इ'व । आवा--हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल ४ । ले० काल ४ । यूर्ण । वे० सं० ११३१ । का व्यवार ।

विशेष---मासूबह का अगड़ा भी है।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (बै॰ सं॰ ६६३, १०४३) घोर है।

४३१३ प्रति संट २ । पत्र संट २२ । लेट काल × । बेट संट १७३ । आ मण्डार ।

×३१४. प्रति संट ३। पत्र सं० १६। ले॰ काम ×। वै॰ सं॰ ६७८। इन अव्हार।

४३१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ते० काल सं० १८४८ । वै० सं० १६३२ । ट सम्बार ।

प्रदेश्क. बीरभक्ति तथा निर्वाद्यभक्तिः ""| पत्र सं० ६ | आ ० ११×५ इंच । आवा⊸ित्त्वी । विचय− स्तवन । र० काल × । न० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६६७ । क मध्वार |

y३१७०. शीतलानाथस्तवन— ऋषि लालचन्दा । यत्र सं०१ । सा० १×४५ इंच । सावा—हिन्दी । विगय-स्तवन । र० काल \times । मे० काल \times । पूर्ण । वै० सं०२ १३४ । का जन्दार ।

विशेष-- धन्तिम-

पूज्य भी श्री दोनतराय जी बहुयुण घगवाणी । रिवलाल जी करि जोडि बीनवे कर बिर चरखाएंगे ॥ सहर माथोपुर गंबद गंबाबन कातीग सुवी जाणी । श्री सीतल जिन कुण गांवा बति उलाल बाखी ।। सीतल० ॥१२॥ ॥ इति सीतस्रनाथ स्तनन संपूर्ण ।।

४३१८. श्रेयांसरसवन—विजयसालसूरि । पण सं∘ १। बा॰ ११६४६३ इ'व । आणा—हिन्दी । विषय–स्तवन 1 र० काल × । ने० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०४१ । इस अध्वार ।

४२१६. सतियोडी सम्माय—ऋषि स्रज्ञासकाः ती । यत्र सं०२ । बा०१०४४ ई. इ.सा । वाया-हिन्दी युजराती । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्श । जीर्ला । वे०सं०२२४५ । इस्र जस्तर ।

विशेष---मन्तिम भाग निम्न है---

इतीयक सतियारो पुरा कह्या ये सुरा सांभको । उत्तम परास्त्री सजमन जी कहरू:.....।१४॥

विन्तामशि पार्वनाथ स्तवन भी दिया है।

. ४१६०. सम्माव (चौदद वोक्र)—व्यक्ति राष्ट्रपुष्टम् । पत्र सं०१। झा० १०४४३ दश्च । आवा– हिन्दी । विषय–स्तोप । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्वी । वे० सं० ११०१ । व्यावस्थार । धेदे२१. सर्वाधिसिद्धिस्वकाशः "" । पत्र सं०१ । धा०१०×४० हुः च । भाषा –हिन्दी । विषय-स्तरन । र०काल × । ने०काल × । पूर्ल । वे०सं०१४७ । छ्यं मण्डार ।

विशेष--- पर्यू वरा स्तुति भी है।

४३२२. स्टरस्वदीकाष्ट्रकः****** पत्र सं०३ । झा० ६×७३ इ'च । भाषा-हिस्सी । विषय-पूत्रा । र० काल × । से० काल × । पूर्ण । बै० सं० २११ । ऋ पष्टार ।

४३२३. साधुवंदना—माशिकचन्द् । पत्र नं०१ । मा०१०ई×४% दश्च । आपा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०४४ । ट मण्डार ।

विशेष---विताम्बर धाम्नाय की साधुबंदना है। कुल २७ पद्य हैं।

%२२४. साधुर्वदना—पुरवसागर। यन सं० ६। घा० १०४४ इच्च । भाषा-पुरानी हिन्दी । विषय-स्तवन । र॰ काल × । ते० काल × । पूर्णी । वै० सं० ८३६ । च्चा भण्डार ।

४३६४. सारचौबीसीमाचा—पारसदास निगोल्या। पत्र मंग ४००। घा० १५३,४७ टंन । आपा हिन्दी। विवय—स्तुति। रण्काल संग् १६१६ कॉलिक गुरी २। लेण्काल संग् १६३६ चैत्र मुदी ५। पूर्णा । वेण्यत ७६५। क अच्चार।

४३२६. प्रतिसं•र।पत्र सं•५०५ । ले॰ काल सं० १६४६ बैशाल मुदी २ । वे० सं• ७६६ । इस भण्यार ।

४३२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७१ । ले० काल × । ते० सं० द१६ ! क भण्डार ।

४२२८. सीताडाला******। पत्र मंगरे। सा० ६ $\frac{1}{4}$ \times १ दक्कः। भाषा-हिन्दीः। विषय-स्तवनः। र ϵ कास \times । संग्रकान \times । पूर्णा विग्रंव २१६७। इस भण्डारः।

विशेष-फतेहमल इत चेतन ढाल भी है।

४३२६. स्रोलहसतीसञ्ज्ञायः । पत्र सं०१। प्रा०१० $\times s_2^2$ हं त्र । भाषा-हिन्दः । विषय्-स्तवन । र०कास \times । प्रा०कास \times । पूर्णा । वै० सं०१२१६ । क्य मण्डार ।

४६२०. स्यूलअब्रसक्साय******। पत्र सं०१। पा०१०%४ इखः । मात्रा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल imes सं०काल imes । पूर्ण । वे०सं०२१०२ । स्रा प्रकार ।



पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य

४३३१. ऋंकुरोपस्पृक्षिश्च— इन्द्रमंदि । पत्र सं०१४ । झा० ११४४ इक्का । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिद्वादि का विधान । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं०७० । इस भण्यार ।

विशेष--पत्र १४-१५ पर यंत्र है।

४२३२. ऋंकुरोपस्त्रियि— पंठ ऋाशाधर् । पत्र सं० ३ । मा०११×५ दश्च । भाषा–संस्कृत । विषय– प्रतिद्वादि का विषान । र० काल १३वी जताब्दि । ने० कान × । मनूर्स्स । वै० सं० २२१७ । द्या भण्डार ।

विशेष-प्रतिष्ठापाठ में में लिया गया है।

४३३३. प्रति सं० २ । पत्र मं० ६ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वै० सं० १२२ । छ् सण्डार । ।वसेय-प्रति प्राचीन है । २रा पत्र नही है । संस्कृत में कठिन सब्दों का वर्ष दिया हमा है ।

४३३४. प्रति सं ३ । पत्र सं ० ४ । ले० काल × । वै० सं ० ३१६ । ज भण्डार ।

४३३४. ऋंकुरोपस्य्विधि **** । पत्र सं०२ से २७ । झा०११५४४३ इंच। जावा–संस्कृत । विषय– प्रतिक्षदिकाविधान । र०काल ⋉ । से०काल ⋉ । झपुर्या। वै०सं०१ । इस मण्डार ।

विशेष--प्रथम पत्र नहीं है।

४२३६६. काक्रप्रिमजिनचैत्याक्तय जयमालः "''पत्र सं०२६ । झा०१२×७३ इंच। नावा⊸ प्राकृत। निषय-नूजा। र०काल × । ते०काल। पूर्ण। वे०सं०१। च मण्डार।

४३३७. व्यक्तिसश्चित्रचेरवास्त्रवपूत्रा—जिनदासः। पत्र सं०२६। मा०१२×५ इ'च। मावा— संस्कृतः। विषय-पूत्राः। र०काल ×। ते०काल सं०१७६४। पूर्णः। वे०सं०१०६५। ट मण्डारः।

४३३ स. व्यक्तप्रिमजिनचैत्यालयपूर्वा — लालजीत । पत्र संग्रेशः । माग्रेश्४ स्व । मावा — हिन्दी । विषय-पूत्रा । रण्काल संग्रेस्था । लेण्काल संग्रेस्थर । पूर्णः वैग्संग्रेशः च मध्यारः ।

विशेष--गोपाचलतुर्ग (म्वालियर) में प्रतिलिपि हुई थी।

४३३६. आकृत्रिमजिनचैत्यात्र्यपृक्षा—चैनसुकः । पत्र संग्४व । मा० १३×व इ'व । माथा-हिन्दी । विवय-पूजा । र० काल संग् १८३० फाल्युन तुरी १३ । ने० काल × । पूर्या । वे० संग् ७०१ । छा मण्डार ।

> ४३४०. प्रति सं०२ । पत्र सं०७४ । ले० काल ४ । वे० सं०४१ । क्र अध्यार । निरोप—इसी अध्यार में एक प्रति (वे० सं०६) धौर है ।

प्रदेशहर, प्रति सं० है। पत्र सं० ७७। ते० काल सं० १६३३। ते० सं० १०३। ख जण्डार।
विशेष-सूत्री कस्वार में एक प्रति (वै० सं० १०२) और हैं।
 प्रदेशहर, प्रति सं० छ। पत्र सं० ३६। ते० काल ४। ते० सं० २०८। छ जण्डार।
विशेष--सूत्री अच्छार में तो प्रतियां (तै० सं० २०८ में ही) और हैं।
 प्रदेशहर, प्रति सं० छ। पत्र सं० ४६। ते० काल ४। वै० सं० १६६। अ जण्डार।
विशेष--प्रापाद सूत्री १ सं० १६६७ को यह ग्रन्थ रचुनाम वांदवाड़ ने व्यवाय।
 प्रदेश्कर, व्यक्तप्रिमचैदयालायगुजा--मनसङ्गलाल। पत्र सं० ३०। मा० ११४८ ई व । आया-हिन्दी।
विषय-पुजा। र० काल सं० १६३० नाय सुत्री १३। ते० काल ४। पूर्ण। ते० सं० ७०४। व्या नम्मार

नाम 'मनरंग' धर्मध्ये सौ मो प्रति राखे प्रीति । चोईसौं महाराज को ९१० रच्यों जिन रीति ॥ प्रेरकता प्रतितास की रच्यो पाठ सुभनीत । प्राप्त नद्य एकोहमा नाम भगवती सत ॥

रचना संवत् संबंधीयय---

विकाति इक शत शतक पै विकातसंगत अनि । माच गुक्क त्रयोदशी पूर्गा पाठ महान ।।

४२१४४. च्यक्यमिशिपूचा''''''''''' पत्र संश्री । माश्रीर×४६ दश्चा आंचा-संस्कृत । विषय-पूत्रा । दश्काल × । लेश्काल × पूर्ण । वेश्सी० ४० । कृत्रक्यार ।

४३४६. अभक्ववितिश्चिषुताः.....। पत्र सं०१। प्रा०११४६ इंच । आया-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं०३८३ । स्रा अध्वार ।

विक्षेत्र अध्यमान हिन्दी में हैं।

. अदेशेश आध्ययन्त्रियम् आस्तान्यसूत्राम् वानस्यूत्रम् । पत्र संग्धामः ११२/४५ इ.च.। भाषा-हिल्योः । निषय-पूत्रा। रण्काल ४। तेण्याल संग्धासः स्थापः । स्थापः अस्ति अस्ति स्थापः ।

वियोध-भी देव स्वेतास्वर जैन ने प्रतिस्थिप की थी।

धरेशकः व्यक्तविक्रिक्कियातः'''''''। यह संव ४ । वह १२४६ इ.च । सस्य-संस्कृत । विवय-पूजा र॰ काल ४ । ते • काल ४ । पूर्वाः । के संव ३४३ । व्यासमार ।

विशेष--- प्रति जीएँ है । इसी मन्त्राद में एक प्रांत ('वेक संव १८७२) और है ।

४२४८. सदाई (सार्क्डब) द्वीपपूर्वा—अ० शुभवन्द्र । यत्र सं० ११ । घा० ११×६६ स्वर्षाः भाषा-संस्कृत । विषय-पुता । र० काल × । वे० कार × । धपूर्ण । वै० सं० ६५० । वा मण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०४४) और है।

४३४०. प्रति सं०२ । पत्र सं०१५१ । ले० काल सं०१ स२४ **३२७ बुदी** १२ । दे० सं०७ म

MASIK I

विशेष--इसी भण्डार में एक प्रति (वै॰ सं॰ ७८८) और है।

४३४१. प्रति सं ३ । पत्र सं० ८४ । ते० काल सं० १८६२ माव बुदी ३ । वै० सं० ८४० । क

भण्डार ।

विशेष-इसी अण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे॰ सं॰ ५, ४१) धीर हैं।

४३४२. प्रति सं**० ४। पत्र** सं० ६०। ले० काला सं० १८८४ भारतासुदी १। वै० सं० **१३१। छ**

भक्डर।

प्रदेश्दे. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १८६० । वे० सं० ४२ । जा भण्डार । ४३४४, प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८३ । ले० काल ४ । वे० सं० १२६ । आ, भण्डार ।

विश्लेष---विजयराम पांक्या ने प्रतिनिधि की थी।

प्रदेश्श. बादाईहियपूजा---विश्वभूष्यग्नः। यत्र सं०१२३ । सा० १०३२७ई इंब । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ४ । ले० काल सं०१६०२ बैशाल सुदी १ । पूर्ण । वे० सं०२ । च नम्बारः।

प्रनेश्रदः ऋडाईडीपपूजा''''''। यत्र सं० १२३ । झा० ११×१ इक्का । आया-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल सं० १८६२ पीय सुदी १३ । पूर्ल । वे० सं० १०४ । च्या जण्डार ।

विशेष---प्रवादती निवासी पिरागदास बाकलीबाल महुद्या बाले ने प्रतिलिपि की बी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ५३४) और है।

४३४७. प्रति सं**० २ । पत्र सं० १२१ । ले**० काल सं० १८८० । वे० सं० २१४ । स्र भण्डार ।

विशेष-महात्मा जीकी जीवरा ने जोबनेर में प्रतिलिपि की थी।

४२४... प्रति सं०३ । पत्र सं०१७ । ते० काल सं०१८७० कालिक सुरी ४ । वॅ० सं०१२३ । घ व्यवार ।

वंशेष---इसी अध्वार में एकं प्रति [वै० सं० १२२] घीर है।

४१४६. महाहिशिप्जा-हास्राम १पन सं० १६१। पा० १९३४६ ई व । जावा-हिन्दी पक । ८ --विषय-पूजा। ए० काल सं० वीत सुवी ६। ते० काल सं० १६१६ वैसाल सुवी ४ १ पूर्णी। वे० सं० द । इ. मण्डार।

विशेष---शमरबन्द दीवान के कहने से डासूरान शप्तवांक ने नावींराजपूर्व में दूजी रवना नी :

४३६०. प्रति सं०२। पत्र सं०६८। ले० काल सं०१६४७। वे० सं०४०६। च अण्डार । विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतियां वि० सं०४०४, ५०५] घीर है।

४३६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४४ । ले० काल x । वे० सं० २०१ । छ भण्डार ।

४३६२. व्यनस्तवतुर्देशीयूजा—शांतिदास । पत्र सं०१६ । सा० ⊏३४७ इंच । भाषा संस्कृत । विवय-यूजा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं०४ । स्र भण्डार ।

विशेष--- बतोबापन विधि सहित हैं। यह पुस्तक गरोक्षजी गंगवाल ने बेगस्थों के मन्दिर में चढाई थी।

४३६३. प्रति सं०२ । पत्र सं०१४ । ले० काल × । वे० सं०३६६ । स भण्डार ।

विशेष-पूजा विधि एवं जममाल हिन्दी गद्य मे है।

इसी भण्डार मे एक प्रति सं०१=२० की वि० सं०३६०] ग्रीर है।

४३६४. श्रानन्तचतुर्देशीक्षतपूजा*****। पत्र सं०१३। या०१२ \sim ४२, इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-धूजा। र० काल imes। ले० काल imes। पूर्ण। वे० सं०५ \sim ६ अर्थ सण्डार।

विशेष--भादिनाथ से भनन्तनाथ तक पूजा है।

४३६४. ऋजन्तवचतुर्दशीयुजा— श्री भूषग्रा। पत्र सं०१८। झा०१०३४७ इ'व । भाषा–हिन्द । विवय–पूजा। र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । ते० सं०३८ । ज भण्डार ।

> ४३६६. प्रति सं०२। पत्र सं० स्टालेण काल सं०१८२७। वे० सं०४२१। क्या अण्डार। विशेष—सवाई जयपूर में पं०रामकार ने प्रतिलिपि की थी।

४३६७. कानन्तभतुर्देगीपूजा ''''''। पत्र सं•२०। घा०१०३८४ दश्चा भाषा-संस्कृत, हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ४। ते० काल ४। पूर्णावे० सं०४। इस भण्डार।

प्र?६स. क्यसननकिनमूजा— छुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं०१ । झा० १०१,४५२, इक्का आया-संस्कृत । 4 विषय-मूजा। र०काल ४ । ते०काल ४ । ते०सं० २०४२ । टमण्डार ।

४३६६. ऋनन्तनाथपूर्वा— श्रीभूषण्। पत्र सं०२ । या०७×४३ दंव । साया–संस्कृत । विषय⊸ पूर्वा। र०काल × । ले़०काल × ! पूर्णा । वै० सं०२१४४ । इस मण्डार ।

४२.७०. क्यनन्यत्ताबयूजा '''''' । पत्र सं०१। झा० वर्दे ४४ दे दंव । आया–संस्कृत । विषय–यूजा । र० काल × । ते० काल × । यूर्ण । वे० सं० व२१ । क्या भण्डार ।

४६७१. स्रतन्तताशपूजा—सेवा। पत्र तं० ३ । सा० प्रदे×६६ ६ झा। माया—संस्कृत । विषय—पूजा। . र०काल × । ते०काल × । पूर्या वि॰ सं० ३०३ । ज जण्डार । विशेष---प्रथम पत्र नीचे से फटा हुआ हैं।

४२,७२, व्यस्यन्तताब्यूका ""।यन तं० रे। मा० ११×५ इ'व । भाषा–हिन्दीपद्यः। विवय–पूजा। र०कान ×।ने०कान ×।पूर्णावे० त०१६४ । मानण्डारः।

४२,७६, आरमस्त्रमृतपृक्षाः'''''। प्रमं०२ । मा०११×५ इक्का। मावा-संस्कृतः। विवय-पूजा। र० काल ×। न०काल ×। पूर्ता। वे०सं०५,६४ । इस सम्बद्धारः।

विशेष--इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे॰ सं॰ ५२०, ६६५) भीर हैं।

४३७४. प्रति संट २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ मण्डार ।

४३७४. प्रति सं• ३ । पत्र सं• २६ । ले• काल × । वे• सं• २३० । ज मण्डार ।

४२९७६. व्यानस्तप्रतापुत्राः '''। पत्र सं∘ २ । ब्रा॰ १०४५ इंच । भाषा–संस्कृतः । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ता। वे० सं० १३५२ । व्याभण्डार ।

विकेष--जैनेसर पूजा ग्रन्थ है।

४२०७. ऋनन्तक्षतपूज्ञा— अ.० विश्वयक्तीर्त्ता। पत्र सं०२ ; घा० १२४१३ इंचा माया–हिन्दी। विषय–पूजा। र०काल ४ । ने०काल ४ । पूर्ण । वे०सं०२४१। इद्यमण्यार।

imes 2- अस्तरतक्षतपुत्रा-स्ताह सेवारास । पत्र सं० ३। झा॰ $imes \times$ ४ इंच । साथा-हिन्दी । विषय-पुत्रा। र० काल imes। ले० काल imes। पूर्ण। वे० सं० ५६६। आस्र स्वयार ।

४२७६. अध्यतस्त्रप्रवासियः.....। पत्र सं०१६ । आ०१०३४४३ इ.च । आषा-संस्कृतः। विषय-पूजा। र०काल × । ते० काल सं०१६५६ प्रादवा सुवी ६ । पूर्सा | वे० सं०१ । स्व अस्वार |

४२, दःव । आजन्तपुत्राझतमहास्याः'''''। पत्र सं० ६ । बा० १०×४३, इंच । आचा⊸संस्कृत । विचय⊷ पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण | वे० सं० १३६३ । द्या भण्डार ।

प्रश्नेद्रः, क्यनन्तव्रतोषापनपूजा—क्या० गुराचन्द्रः । पत्रः सं०१८ । प्रा० १२ ४५३ इ.च.। भाषा—् संसक्तः । विषय-पूजा। २० काल सं०१६३०। ले० काल सं०१८४५ प्रासीच सुदी ४ । पूर्वा। वे० सं०४९७ । क्या भण्यारः ।

विशेष---धन्तिम पाठ मिन्न प्रकीर है---

इत्याबार्याश्रीवृक्ष्वनद्रविरविता श्रीधनन्तनावब्रतपूजा परिपूर्वा समाप्ता ।।

संबत् १८४४ का- श्रीवनीमाले शुक्काको तिया च चौथि लिखितं पिरागदाल मोहा का जाति दाकलीमाल प्रतापतिहराज्ये सुरेजकीलि महारक विराजमाने सति पं कल्याखंडासतलीयक प्रावाकोरी पंडित कुर्यालयन्त्रे सा इर्र प्रमानकर्ताचारनिक्कापितं १११।

इसी मण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ५३६) और है।

४३६२. प्रति सं०२ । पत्र सं०१६ । ले० काल सं० १६२६ प्रासीज बुवी १४ । वे० सं० ७ । स भण्डार ।

४३ = ३. प्रति सं0 ३। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वै० सं० १२। इन अण्डार।

भेदेन्थ्र, प्रति सं० भ्रापत्र सं० २४ । ले० काल ×ावै० सं० १२६ । छ भण्डार ।

४३८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० २०७ । व्य मण्डार ।

४३८६. प्रति सं०६। पत्र सं०२१। ले० काल ×। वे० सं० ४३२। व्या भण्डार।

विशेष--- २ चित्र मण्डल के हैं। श्री शाकमडगप्र चूहडवंश के हर्ष नामक दुर्गा विशिक ने प्रत्य रचना कराई थी।

४३=७. अभिवेकपाठ"""। पत्र सं० ४ । बा॰ १२×५३ इ'व । भाषा-संस्कृत । विषय-मगवान के मिनिषेक के समय का पाठ | र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । का मण्डार ।

प्र3क्रक्र प्रति सं०२ । पत्र सं०२ से ५७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं०३५२ । अक्र अध्वार ।

विशेष--विधि विधान सहित है।

४३८. प्रति सं०३। पत्र सं०२। ले० काल ×। वे० सं० ७३२। च भण्डार।

४३६०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० १६२२। ट भण्डार।

भवे ६४. व्यक्तिविधि-सदमीसेन । पत्र संव १४ । बाव ११×५ देखा । भाषा-संस्कृत । विवय-जगवान के सभिषेक के समय का पाठ एवं विधि । र॰ काल 🗶 | ले॰ काल 🗶 | पूर्ण | वै॰ सं॰ ३५ | अप अध्हार ।

विभीय--- इसी अण्डार में एक प्रति (वै० सं० ३१) और हैं जिसे कांबराम साह ने जीवनराम सेठी के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। वितामिश पार्श्वनाथ स्तोत्र सोमसेन कृत भी है।

प्रदेशक. अभिषेकविधि...... । पत्र संबद । आव ११×४३ इआ । भाषा-संस्कृत । विषय भगवान कै अभिषेक की विधि एवं पाठ । र० काल 🗙 । ल० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० ७० । 🖘 भण्डार ।

प्रदेश्वे. प्रति सं∘ २ । पत्र सं॰ ७ । ले॰ काल × । वे॰ सं॰ ११६ । सा अण्डार ।

विशेष-इसी अध्डार में एक प्रति (वै॰ सं॰ २७०) और है।

४वे६४. प्रति सं• दे। पत्र सं० ७ । ते॰ काल × । मपूर्ण । वे॰ सं• २११४ । ट अध्वार ।

४३६ श. व्यक्तिवेकविधि । पत्र सं० १ : मा० प्रदे×६ दख । मापा-हिन्दी । विषय-भगवान के स्राधि-वैक की विवि । र॰ काल 🗴 । से॰ काल 🗴 । पूर्ता | वे॰ सं॰ १३३२ । का भण्डार ।

कुमा श्रीष्ठा एवं विधान साहित्व]

४३६६. ऋशिष्टाध्याव"""। पत्र तं∘ ६। सा० ११४% हेव । आवा–प्राकृत । विषय-सल्तेसवा विषि । र० काल ४ । तं∘ काल ४ । पूर्वे । वे० तं० १६७ । च्या सम्बार ।

विशेष---२०३ कुल गावाचें हैं- बन्बका नाम रिट्ठाइ है। जिलका संस्कृत कपल्यर परिकृष्णमा है। बादि भन्त की बावायें निम्ब सकार हैं---

> बलानंत सुरानुरमङ निरम्मुक्यकेरणकंतविद्वरियं । बीरजिल्लाबबुक्तं लम्बिजल मलेमि रिर्ठारं ।।१।। संसारिक वर्षतो बीको बहुमेव निष्ण बोलिसु । पुरकेश कहेवि पावह श्रुहमणु घत्तं ल संबेहो ।।२।।

प्रस्त--

पुरम्म क्यान पानव श्रुवनयु मार्ग ए वस्ता । ।
पुता विक्वकेजहलूलं नारक एव नीस सानिय्यं ।
सुवीन सुमंत्रेसं रहन मस्त्रिकं मुन्ति कीर नीर देहि ॥२०१॥
सूह भूमीलं फलय समरे हाहि विरान परिहालो ।
कहिजह भूमीए समंबरे हातयं बच्छा ॥२०२॥
घटाद्वारह स्किले ने सकीह लच्छारहाउं ।
प्रमीहिरे र्यकं गविजए याहि एं। तच्छा ॥२०१॥
इति परिहाम्यायवास्त्रं समस्त्रम् । ब्रह्मकरता लेकितं ।।जी।। स्र ॥

इसी अध्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ २४१) धौर है।

४२६७. ऋष्टाहिकाजस्माल ***** । प्रत्य संग्धा । प्रश्चा । भाषा-संस्कृत । विषय-सङ्गा ह्यका पर्वकी पूजा । रणकाल × । जेणकाल × । पूर्णा । वेणकंण १०३१ ।

विशेष-वयमाला प्राकृत में है।

४३६६. आष्टाहिकाजयभाका '''''। पत्र सं०४ । या० १३४४३ इ'व । आया-आकृत । विषय-मङ्गानिहास सं की यूजा। र०काल ४ । से०काल ४ । यूर्ण । वै० सं० ३० । क अध्यार ।

विशेष--इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ३१) घीर हैं।

४६६६. खाहाहिकापूजा''''''| गर्न सं० ४। बा०११८५ इखा। नाया-संस्कृत। विषय-महाहिका पर्वे की यूजा। र० काल ४। से० काल ४। पूर्ण। वे० सं० ५६६। खा मध्यार।

विषोध-इसी अध्दार में एक प्रति (वे० सं० ६६०) और है।

४४००. बाह्याब्रिकापूना''''''। पन मै० ११ । याः १०३/४५ हेन्। आया-संस्कृतः । विषय-महाब्रिका पर्वे की पूजा। र० काल ×। के० काल सं० १११३। पूर्णः। वै० मं० १३। क जब्बारः। शिक्षिण---चेवर् ११३३ में इसःक्रम्य की प्रतितिषि कराई जाकर भट्टारक श्री रलकीत्ति की गेंट की गई की। जयवाला प्रकृत में है।

े ४४०९० व्यष्टाहिकापूजाकमा — सुरेन्द्रकीचित् । पत्र सं०६ । झा० १०२ ४ इक्ष । जाया-संस्कृत । विषय व्यष्टाहिका पर्वे की पूजा तथा कथा । र० काल सं०१८११। ले० काल सं०१८६८ प्राथाद मुदी १०। वे० सं०४६६ । व्याप्तथार ।

विशेष--पं व लुकाल बन्द ने जोबराज पाटोदी के बनवाये हुए मन्दिर में अपने हाथ से प्रतिलिपि की थी।

भट्टारकोऽत्रुक्तनवाविकोलि श्रीमूलकये वरसारदावाः ।
गंक्वेहि तत्पहुलुराजिराजि देवेन्द्रकीति समञ्जततक्ष ॥१३७॥
तत्पहुणुर्वाक्तमानुककः श्रीकुंदगुंदान्वस्त्रक्ष्युक्दः ।
महेन्द्रकीनिः प्रव मुवपृष्टे शेमेन्द्रकीतिः पुरुरक्षमेऽतृतः ॥१३२०॥
योऽसूल्येनेन्द्रकीतिः युवि समुरामरक्षाक्त्वारिकवारी ।
श्रीमद्भृष्टारकेंद्री विकासदवगमा अध्यतंत्रे प्रवंद्यः ।
तस्य श्रीकाराजित्यागमञ्जलिषपुट्टः शीमुरेन्द्रकीतिः ।
रेता पृष्णोक्कार प्रवस्त्वातिवा वोषतापार्वज्ञवेः ॥१३२॥

मिति प्रवादमाने गुक्रवजेदशम्याः तिथी संवत १८७८ का सवाई जयपुर के श्रीऋपमदेवजैयाः ये निवास पं व कस्यासावासस्य शिष्य सुस्यानचन्द्री स्व स्वहतेन नियोक्षतं जोषराज पाटोवी कृत जैत्यालये ॥ सुभं भूयात् ॥

इसके प्रतिरिक्त यह भी लिखा है-

मिति माह मुदी ३ सं० १८८८ मुनिराज दोष साथा । बटा मृष्यभंगनजं लघु बाहुविन मात पुरासुं प्रकाशके सम्बा । सामानेतर सुं अट्टारकजी की निर्मया में दिन घड़ां च्यार बळ्या जयपुर में दिन सवा पहर पाउँ मिदरां दर्शन संग्रही का पाटोवी उगहर (वगैरह) मिदर १० की या पाउँ मोहनवाड़ी नंदनालजी की की निर्मंत की निर्मया भंगही विरमोचंडजी झापकी हवेली में रात्रि १ रह्या भोजनकरि साहीवाड रात्रिवास की यो कमेदियरि यात्राप्थारया पराहृत वोली स्री क्ष्यवदेवजी सहाय।

इसी मण्डार में एक प्रति सं०१ प्रवृक्त की (वे॰ सं०५४२) और है।

४४०२. च्यष्ट।हिकापूजा-चानतस्य । पत्र सं०३। मा० द×६२ इकः। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजः। र० काम ×। ते० काम ×। पूर्णा वे०,सं० ७०३। स्र मध्यार।

विगोत---पर्वो का कुछ श्राम जस क्या है।

४४०३. प्रति संब २ । पत्र सं० ४ । ले० काले सं० १६३१ । वै० सं० १ए । क मण्डार ।

् ४४०४. ब्यष्टाहिकापूका'''''''''''' पत्र से॰ ४४ । सा० ११×१३ ६ स्त्र । वाशा-हिन्दी । विषय-प्रहाहिका पर्व की पूजा । र० काल से० १८७६ कॉलिक बुदी ६ । ते० काल से० १६३० | दूरी | वै० से० १० । कृ प्रवास |

४४०६. ऋष्टाह्रिकाव्रतोद्यापन'''''''। पत्र सं० २२ । आ०११×५३ इक्कः । आया-हिन्दी वक्षः। विषय-मष्टान्निका बत एवं पूजा । र० काल imes । ते० काल imes । पूर्णः । वै० सं० १०६ । के सम्बार ।

४४८७. आचार्यं शास्त्रिसागरपूजा—शगवानदास । पत्र सं०४। बा० ११३×६३ दश्च। जावा— हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल सं० १९८४। के० काल ४। पूर्ण । वै० सं० २२२। ह्यं कच्छार।

४४० म. च्याटकोडिमुनियूजा—विश्वभूषया । पत्र तै॰ ४। मा॰ १२४६ इ.स. । माया—संस्कृत । विषय—यूजा । र०कास ४ । ते० कास ४ । यूर्ण । वै० तै० ११६ । इत्र मण्यार ।

४४०६. ऋ।दित्यक्रतपुत्रा-—केरावसैन । यत्र सं० द । बा० १२×५६ इ'व । माया-संस्कृत । विषय-रविवतपुत्रा । र०काल × । के०काल × । यूर्ण । वै० सं० १०० | आह्र मध्यार ।

४४१०, प्रतिसं०२ । पण सं०७ । ते० काल सं०१७८३ व्यावसानुदी ६ । दे० सं०६२ । इस् भण्यार ।

४४११. प्रति सं०३ । पत्र सं०६ । ले० काल सं० १६०५ घासीन सुदी २ । वे० सं०१८० । स्क्र जम्मार ।

४४१२. ऋषित्यक्रतपुत्रा''''''। पत्र सं० १६ से ४७ । सा० ११×५ इक्का । माया-संस्कृत । विषयः-रविवात पूत्रा रे रूकाल 🗶 । सं० काल सं० १७६१ । सपूर्ती । वै० सं० २०६६ । द्व अध्वार (

४४१३. क्यादित्यवारपुत्रा''''''। पर्न सं०१४। मा०१० \times १३ इंच। भाषा-हिन्दी । विषय \sim रीव प्रतपुत्रा । १० काल \times । वे० काल \times । सपूर्ण। वे० सं०१२०। वा सम्बार ।

४४१४ आर्थित्यवारमञ्जूषा*****। पत्र सं॰ १। बा० ११×५ इंच। नावा—संस्कृतः। विषय—रिश्व वयपुजा। र०काव ×। ते०काव ×। वै० सं० ११७। इङ्गणकारः।

४४१४. आदिनाथपूना—रामचन्द्र । पत्र र्ष० ४। सा० १०३×५ इ'च । जाग—हिन्दी । विवय—्तूना । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वै० र्स० ५५० । का जन्मार ।

४४१६. प्रति सं० २ । यत्र सं० ४ । ते० काल × । दे० सं० १६६ । ज्य क्षणार । विजेष---मृती सण्डार में एक प्रति (दे० सं० ११७) गौर है । ४४१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २३२ । ज मण्डार ।

विशेष---प्रारम्भ में तीन चौबीसी के नाम तथा लघु दर्शन पाठ भी है।

४४४६ माविनासपूताः। यत्र सं०४ । सा०१२३,४१३ इंच । भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। ए० काल × । ते० काल × । पूर्ता। वे० सं०२१४६ । का भण्डार ।

४४९६. च्यादिनायपूजाष्टकः $\cdots\cdots$ ापत्र सं० १। प्रा० १०२/×७२ हम्रा । जाया-हिन्दी । विषय-एजा। र० काल \times । ते० काल \times । दे० सं० १२२२ । इस अध्वार ।

विशेष-नेमिनाय पूजाप्टक भी है।

४४२०. **कार्शरवरपू**जा**ष्टकः*******। पत्र सं∘ २। झा० १०३४५ ६'व । भाषा–हिन्दी । विषय–घादि-नाव तीर्यक्कर की यूजा ≀ र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १२२६ । क्स भण्डार ।

विशेष---महावीर पूजाष्ट्रक भी है जो संस्कृत में है।

४४२१- आराजनाविधान''''''। पत्र सं० १७ । सा० १०४४६ इंच । साथा-सस्कृत । विषय-विषय-विधान । र०-काल 🗙 । ले० काल 🗴 । पूर्ण | वे० सं० ४१५ । व्य प्रव्हार ।

विशेष-त्रिकाल चौबीसी, षोडशकारण आदि विधान दिये हुये है।

४४२२. इन्हण्यजपूजा—भः विश्वभूष्या । पत्र सं० ६८ । घा० १२४६ इ.च.। साथा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल सं० १८६६ देशाल बुदी ११ । पूर्ती | वे० सं० ४६१ । का अध्वार ।

विशेष--'विशालकीत्यांत्मज भ० विश्वभूषण विरिवतायां' ऐसा लिखा है।

४४२२. प्रति सं०२ । पत्र सं०६२ । ले० काल सं०१८५० द्वि० वैशास सुदी ३ । वे० सं०४८७ । ऋग सम्बरा ।

विशेष---कुछ पत्र विपके हुये हैं। ग्रन्थ की प्रतिक्तिपि जयपुर में महाराजा प्रतापसिंह के वासनकाल में हुई थी।

४४२४. प्रति सं०३ । पत्र सं०१६ । ते० काल ४ । वे० सं०६६ । इक प्रण्डार । ४४२४. प्रति सं०४ । पत्र सं०१०६ । ते० काल ४ । वे० सं०१३० । इक् प्रण्डार । विकोष—का मण्डार में र सपूर्ण प्रतियां (वे० सं०३४,४३०) और है ।

४४२६. इन्द्रभ्यजनसंडलयूजाः ः । तत्र सं० ६७ । मा० ११२ू×६६ द्या । साथा-संस्कृत । विषय⊸ नैतों एवं उत्सवो पादि के विधान में की जाने वाली यूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६३६ फायुरा सुदी ५ । पूर्णो । वे० सं० १६ । स्त्र मण्डार ।

विशेष—पं॰ पन्नालाल जोबनेर वाले ने क्योजीलालजी के मन्दिर में प्रतिलिपि की । मण्डल की सूची भी वी दुई है। ४४२७. इपवासप्रह्माविधिः'''''। वज सं॰ १। था॰ १०×१ इ'व । भाषा-प्राकृत । विषय-उपवास विचि । र० काल × । के० काल × । वै० सं॰ १२२४ । पूर्ण । वस संबार ।

४४२ स. ऋषिसंदर्शत्को — आवाय गुरामिक । पन तं ११ ते २०। बा० १० ई-४६ इन । नाया-संस्कृत । विषय-विविध्य प्रकार के युनियों की पूजा । र० काल × । ले० काल तं० १६१६ वैद्याल कुवी ४ । नपूर्ण । नै० सं० ६८६ । का अध्यार ।

विशेष--पन १ से १० तक ग्रन्थ पूजायें हैं। प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं।

संबत् १६१५ वर्षे बैदास बदि ५ पुष्तासरे भी भूनसंघे नंदाम्नाये बलात्कारगरो सरस्वतीगण्ये प्रसनिद सुनीन्द्रे सु रिवताभक्तिभावतः । सतमाधिकाशीतिस्लोकानां प्रन्य संस्थस्या ।।प्रन्याप्रन्य ३८०।।

इसी मण्डार मण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ५७२) और हैं।

४४२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । ह्य अण्डार ।

विशेष--- प्रष्टाञ्चिका जयमाल एवं निर्वाशकाष्ट्र धौर हैं। जन्य के दोनों धोर सुन्दर केल डूंटे हैं। भी धर्रादेनाथ व महालोर स्वामी के विश्व उनके वर्शानुसार हैं।

४४३०- प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल 🗴 । वे० सं० १३७ । घ अण्डार ।

विशेष---ग्रन्थ के दोनों घोर स्वर्ण के बेल बू'टे हैं। प्रति दर्शनीय है।

४४३१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ते० काल सं० १७७४ । वे० सं० १३७ (क) वा मण्डार ।

विशेष--प्रति स्वर्णाक्षरों में है प्रति सुन्दर एवं दर्शनीय है।

इसी अण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३६) और है।

४४३२. प्रति सं १ १ पत्र सं १ १ । ते व काल सं १ १६२ । वे ० सं १ १ । इ बच्हार ।

४४३३ प्रतिसं०६। पत्र सं०१२। ले० काल ×। ने० सं०७६। स्क्रमण्डार।

४४३४. प्रति सं०७ । पत्र सं० १६ । ते० काल 🗴 । वै० सं० २१० । व्य अवदार ।

विशेष—इसी भण्वार में एक प्रति (वे० सं० ४३३) प्रीर हैं जो कि जूनसंघ के आवार्य नेनियन्द के पठनायें प्रतिक्षिप हुई थी।

४४२४. ऋषिसंबलपुषा—सुनि झानभूषया । पत्र सं० १७ । मा॰ १०३×५ इव । जावा-संस्कृत । विवय-पूजा । र० काल × । कें० काल × । दूर्ण । वै० सं० २८२ । झ जपदार ।

> अक्ष3६. प्रति सं० रे । यम सं० १४ । ते० काल × । ते० सं० १२७ । हा मध्यार । १४३७. प्रति सं० रे । यम सं० १२ । ते० काल × । ते० सं० ११६९।

विशेष--- अथम पत्र पर सकलीकरण विधान दिया हुआ है।

प्रेप्टेच्यः ऋषिसंडलपूजाः****। पत्र सं०१यः । धा०११६्ँ×४६ इ'च । भाषा-संस्कृतः । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल १७६८ चैत्र पुरी १२ । पूर्णः | वे० सं०४८ । च सम्बारः |

विशेष--- महात्मा मानजी ने झामेर में प्रतिसिपि की बी)

४४३६. ऋषिसंडलपूजाः'''''। पत्र सं∘ ६ । सा० ६५०४६ इसः । नाला-संस्कृतः । विश्य-पूजाः । र०कालः × । ले०कालः सं०१६०० कार्तिक बुदी १० | पूर्णः | वे०सं०४६ । च अध्वारः |

विशेष---प्रति मंत्र एवं जाप्य सहित है।

४४४०. व्यथ्मिंबस्यूजा—दौस्नत क्यासेरी । यत्र सं∘ र । बा∘ र्ड्×६र्ट्र दंव । माया–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ते० काल सं० १६३७ । पूर्ला वे० सं० २६० । उद्गयकार ।

४४४१- कंजिकालतोद्यापनपूजा****। पत्र सं०७। ग्रा०११४४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा एवं विधि। र०काल ४। ले०काल ४। पूर्वा। वे०सं०६४। ख मण्डार।

विशेष--कांजीबारस का वृत भासापुरी १२ को किया जाता है।

४४४२. कंजिकान्नतोद्यापन''''''। पत्र सं० ६। मा० ११३×४ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । मपूर्ण । के सं० ६४ । च भण्डार ।

विशेष--जयमाल अपभ्र'श में है।

४४४३. कंजिकामतोद्यापनपूजा''''' । पत्र सं० १२ । ग्रा० १०३८५ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा एवं विचि । र० कल 🗙 । से० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ६७ । स्कृषण्डार ।

विशेष-पूजा संस्कृत में है तथा विधि हिस्ती में है।

४४४४. कर्मेचूरलतोद्यायन''''' । पत्र सं० २ । मा० ११×५६ इ'व । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । से० काल सं० १६०४ मादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १६ । व मण्डार ।

विक्रीय--इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६०) और है।

४४४४. प्रति सं०२ । पत्र सं०६ । मा०१२×५१ इ.च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । के०काल × । पूर्ण । वे० सं०१०४ । क. मण्यार ।

४४४६. कर्मेच्रकतोद्यापनपूजा—सस्मीसेन । पत्र सं० १०। प्रा० १०४४३ इंच । सावा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० कास 🗶 । से० कास 🗶 । हुर्सो । वे० सं० ११७ । छ सम्बार ।

४४४७. प्रति सं०२ । पत्र सं० = । ले० काल × । नै० सं० ४१३ । का सब्दार ।

```
वृक्षा प्रतिक्षा एवं विधान साहिता ]
```

844

क्षेत्रक्षम् कर्मे बहुतसूजा-या क्षायच्या । सम् सं० २०। सा० १०६ χ ४४ है रंप । जाना-संस्कृत । विषय-कर्मी के तष्ट करने के लिए पूजा । र० काल χ । ले० कान सं० १७६४ कास्तिक बुदी χ । पूर्ण । वे० सं० ११ । ज नण्यार ।

विशेष--इसी सण्डार मे एक प्रपूर्ण प्रति (वै० सं०३०) भीर है।

४४४६. प्रति सं०२ । पत्र सं० म । ते० काल सं०१६७२ घासोज । वै० सं०२१३ । व्यायण्यार । ४४४०. प्रति सं०३ । पत्र सं०२४ । ते० काल सं०१६३४ मंगसिर बुदी १० । वे० सं०२२४ । व्या

विशेष-धा० नेमिचन्द के पठनार्च लिखा गया था।

इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६७) सौर है।

अध्यश्च कर्मोद्द्वपूजा.......। पत्र सं० ११। मा० ११६ ४६ व । माचा-संस्कृत । विवय-कर्मों के नष्ट करने की पूजा। र० काल ४। ले० काल सं० १८३९ मंगसिर बुदी १३। पूर्ण। के० सं० ५२५। का जम्मार । विशेष — इसी अध्यार एक प्रति (वे० सं० ५१३) और है जिसका ले० काल सं० १८२५ भादवा सुदी

१३ है।

भण्डार ।

प्रथम प्रश्निसं०२ । पत्र सं०१ ४ । ते० काल सं०१ ८८८६ मात्र शुक्रकाट । वे० सं०१० । व्य भण्डार ।

विवोष---लेखक प्रशस्ति विस्तृत है।

४४४३. प्रति सं०३। पत्र सं०१६। ले० काल सं०१७०८ श्रावरा सुदी २। वे० सं०१०१। इस् भण्यार।

विशेष-साइटास ने इतिलिपि करवासी थी।

इसी अध्धार में २ प्रतियां (वे॰ सं० १००, १०१) ग्रीर हैं।

४४४४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३ । ले॰ काल × । वै॰ सं० ६३ । जा मण्डार ।

४४४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० १२४ । छ अच्छार ।

विशेष--निर्वागकाण्ड भाषा भी दिया हुमा है। इसी भण्डार में झीर इसी वेष्टन में १ प्रति झीर है।

४४४६. कर्मवहनपूजा— देकचन्द्र । पत्र सं० २२ । झा० ११४७ इ'च । भाषा-हिल्दी । विषय-कर्मी को नष्ट करने के लिये पूजा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वै० सं ७०६ | क्यू मण्डार ।

४४४७. प्रति सं०२। पत्र सं०१४। ते० काल ×। वे० सं०११ । घ प्रण्यार। ४४४⊏. प्रति सं०३। पत्र सं०१६। ते० काल सं०१८८८ फाष्ट्रस्य बुदी ३। वे० सं०४३२। ख

विशेष--इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० १३१, १३३) और है।

मण्डार ।

४४४६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८१। वे० सं० १०३। क भण्डार।

४४६०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६५८ । वे० सं० २२१ । ह्य भण्डार ।

विशेष--- मजमेर वालों के चौबारे जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३६) भीर है }

४४५६१. कलाराविधान — मोहन । पत्र सं०६। आ०११ \times ५३ दक्षः। आषा —संस्कृत । विषय – कल्या एवं अभिषेक स्रादि की विधि । र० काः सं०१६१७ । ले० काल सं०१६२२ । पूर्णा वे० सं०२७ । स्व भण्डार ।

विशोध — मैरवर्षिह के शासनकाल में शिवकर (सीकर) नगर में मटेब नामक जिन मन्दिर के स्थापित करने के लिए यह विधान रचा गया।

मन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

निवित्तं पं पन्नानान प्रजमेर नगर में स्ट्रारकती महाराज थी १०६ श्री रत्नप्रपाजी के दाट स्ट्रारक भी महाराज भी १०६ श्री लिनिवकीत्तित्री महाराज पाट विराज्या वैशाख मुदी ३ में त्याकी दिशा में साथा जोजनेरमुं पंठ होरालानजी पत्रावाल जयबंद उत्तरपा दोलतरानजी लोडा श्रोसवान की होनी में पंडितराज नीगावां का उत्तरपा एक जायगों ११ ताई रह्या।

४४६३. कलराविधि—विश्वभूषस्य । पत्र सं० १० । सा० ६२,४४६ इंच । आया-हिन्दो । विषय– विधि । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ४४६ । अप्र पटार ।

४४६४. कलासोरोपस्यिथि— आयासाधर । पत्र सं० ४ । या० १२४८ इ.च. भाषा—संस्कृत । विषय— सन्यर के शिलर पर कला चढाने का विधि विभान । र॰कान \times । लं० कान \times । पूर्ण । वे॰ सं० १०७ । इस् विध्यार ।

विशेष---प्रतिष्ठा पाठ का ग्रंग है।

४४६४. कलरारोपस्विधि*****। पत्र सं०६। ग्रा०११४५ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-मन्दिर कै शिक्तर पर कलस चढाने का विषान । र०काल ४। स०काल ४। पूर्ण । वे० सं०१२२। इस मध्यार ।

विशेष---इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२२) और है।

प्रश्वद्द, कलशाभिषेक—क्याशाघर। यत्र र्ड०६ । मा०१०५ ×१ इ.च । भाषा—संस्कृत । विषय— क्रिमियेक विधि । र० काल × । ते० काल सं० १⊏३५ भाषवा दृषी १० । पूर्ण । वे० सं० १०६ । क्र अण्यार ।

विशेष--वं व्हास्प्रराम ने विमलनाथ स्वामी के बैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

४४६७. कलिकुरहपार्यनाथपुता— अरु प्रभाषन्द्रापण संव ३४ । बाव १०३^५ (४ ६ व । बायान संस्कृत । विषय-पुता । रुकाल × । ले० काल सं १६२६ चैत्र सुदी १३ । पूर्ण । वै० संव १ का सम्बार ।

विशेष-प्रशस्ति निस्न प्रकार है-

४४६=. कलिकुरद्वपारवैनाथपूजा******। पत्र सं० ७ । बा० १०२४४१ ह व । जाया-संस्कृत । वियय-पूजा । र० काल ४ । ते० काल ४ । यूर्यो । वै० सं० ४१९ । व्या अस्वार ।

89६६. कलिकुरहपूजा''''''। पत्र सं०३। प्रा॰ १० $\frac{2}{8}$ ४५ इ.च । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल \times । प्रां । वे० काल \times । प्रां । वे० काल \times । प्रां । वे० काल \times । प्रां ।

४४७०. प्रति सं०२ । पत्र सं०६ | ले० काल × । वै० सं०१० च । इक्स म्बार । ४४७१. प्रति सं०३ । पत्र सं०४७ । ले० काल × । वै० सं०२५६ । उत्र मकार । और मी पूजायें हैं । ४४७२. प्रति सं०४ । पत्र सं०४ । ले० काल × । वै० सं०२२४ | उद्ग मक्स मकार ।

४४७३. कुरहलगिरियुजा—स० विश्वभूषस्य । पत्र सं० ६ । सा० ११४१ इ'व । जापा—संस्कृत । विषय-कुण्डलगिरि क्षेत्र की यूजा र० काल ४ । लेल काल ४ । यूर्ल । वे० सं० ४०३ । क्ष्र जण्डार ।

विशेष--- रुचिकरगिरि, मानुषोत्तरगिरि तथा पूष्करार्ख की पूजामें भीर हैं।

४४७४. च्हेत्रपालपूजा—श्री विश्वसेत । पत्र सं०२ से २८ । मा० १०३४४ इ'व । जावा—संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल ४ । बे० काल सं० १-७४ जाववा बुदी १ । मपूर्ण । वे० सं० १३३ । (क) क जवदार ।

प्रप्र'र. प्रतिसं०२ । पत्र सं०२०। ते० काल सं०१६३० ज्येष्ठ सुदी ४ । दे० सं०१२४ । आह् भण्यार ।

विशेष---गरोजनाल पांड्या चौचरी बाटसू बाल के लिए एं० मनसुख्यी ने योधों के मन्दिर में प्रतिसिपि की सी। **४४७६. प्रति सं०** ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६१६ बैशाल बुदी १३ । वे० सं० ११८ । अ

भव्यार । ४४७७. स्नेत्रपालपूजाः.....। पत्र सं०६। झा०१११४४ इंब। भाषा-संस्तृत । विषय-जैन बाम्यतानुसार भैरव की पूजा। र० काल 🗴 । ते० काल सं०१८६० फायुण दुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ७६। छा

> क्विमेक्— इसी मण्डार में २ प्रतियां (कै॰ सं० ६२२, १२२६) घीर हैं। ४४७६. प्रति सं० ३। पत्र सं० १३। से॰ काल ×। के॰ सं० १२४। इ. मण्डार। विशेष — २ प्रतियां धीर हैं।

४४८०. कंजिकाब्रतोद्यापनपूजा— युनि लालितकी चिं। पत्र सं० ४ । मा० १२-४४, इंचा भणा— संस्कृत । विवय–पूजा। र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्णावे० सं० ४११ । इस मण्डार ।

४४⊏१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ११० । क भण्डार ।

४४६८ - प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ते० काल सं० १६२६ । वे० सं० ३०२ । स्त्र मण्डार ।

४४८६. कंजिकान्नतोद्यापन*****। पत्र सं०१७ से २१। झा०१०३×५¦ इ'व । भाषा-संस्कृत । विदय-पूजा । र० काल × । से० काल × । सपूर्ण । वै० सं०१ र । क्र भण्डार ।

४४८५. गमपसमंबलपूत्रा—अ० चेमेन्द्रकीचि (तागौर पट्ट)। पत्र सं० ८ । झा० १२८४३ इस्र। मावा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४। ते०काल सं० १९४०। पूर्ण । वे० सं० ३६ । खनण्डार ।

विशेष---धन्तिस प्रशस्ति-

मुक्तसंचे बनात्कारे गण्डे सारस्वतं भवत् । कुन्बकुन्दान्वये बातः श्रुतसागरपारगः ।।१६॥ नागीरिपट्टेषि धनंवकीतिः तत्यदृष्ट्यारी चुन हर्वकीतिः । तत्यदृष्टिवाशिषुत्रपणस्यः तत्यदृर्देमाविषुकीतिमास्यः ।।२०। हेमकीतिमुनेः पट्टे केमेन्द्रावियवाःत्रष्टुः । तस्याक्षया विरचितं गर्व्यवसुत्रवतं ।।२१॥ विदुवा वियजिद्रकः नामयेयेन मोहनः । प्रेमणा यात्राप्रसिद्धयर्षं चैकाह्निरचितं चिर्दं ।।२२॥ जीयादिदं पूजनं च विश्वमूषराव्यप्रुवं । तस्यानुसारतो क्रोयं न च बुद्धिकृतं त्विदं ॥२३॥

इति नागौरपट्टविराजमान श्रीअट्टारकक्षेमेन्द्रकीलिविरिचतं गजपंथमंडलपूजनविधानं समाप्तम् ॥

४४८४. राख्यधरवार्यारवित्यपुत्राः.....।पत्र सं∘ ३। या० १०६४४६ इंव । आवा-संस्कृत [विवय-पूजा | र०काल ४ । ते०काल ४ | पूर्ण । वै० सं० १२१ । क अच्छार ।

विशेष-प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है।

४४८६. ग्राय्थरजयमाला''''' । पत्र सं० १ । मा० ५८५ इ'च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० २१०० । **व्य भण्डा**र ।

४४-२० गराण्यरक्तवयूजा****** । पत्र सं॰ ७ । मा० १०३/४४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० कान × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं॰ १४२ । कः मण्डार ।

> ४४८६. प्रति सं०२। पत्र सं०२ से ७। ले० काल 🔀 । वे० सं०१३४। **क भण्डार।** ४४८६. प्रति सं०३। पत्र सं०१३। ले० काल 🗴 । वे० सं०१२२। द्धा भण्डार।

विशेष--इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० मं० ११६, १२२) और हैं।

४४६०. संस्पेददक्कस्यपूर्वा''''''। पत्र सं∘ २२ । झा०११४४ ६ 'व । भाषा–विषय–पूत्रा । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण। वे० सं०४२१ । इस अध्वार ।

४४६१. गिरिनारचेत्रपूजा— अ० विश्वश्रूषण् । पत्र सं० ११ । ग्रा० ११४४ इंव । बाया—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल सं० १७४६ । ते० काल सं० १९०४ माथ दुदी ६ । गुर्ग । वे० सं० ११२ । द्वा प्रवार ।

४४६२. प्रति सं०२ : पत्र सं०६। ले० काल ×। वे० सं०११६। छ भण्डार।

विशेष--- एक प्रतिभीर है।

४४६३. गिरनारक्तेत्रपूजाः \cdots । यत्र सं० ४। झा० ५ \times ६३ ६२। साथा-हिन्दी । विषय-पूजा । र \bullet काल \times । ते० काल सं० १९६० । पूर्या । वै० सं० १४० । क सण्डार ।

४४६४. चतुर्वरात्रित्वतुत्रा \cdots ंपन सं० १२। प्रा० ११ $\frac{1}{4}$ \times 1 क्षा $\frac{1}{4}$ स्कृत । विषय-पूजा $\frac{1}{4}$ र० काल \times 1 के० काल \times 1 पूर्वर्ग । बै० सं० १५३ । क जन्मार ।

४४६४. चतुर्विशतिजयमास—यति भाषांदि । पत्र सं० २ । बा० १२४४ इ'व । नाया-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० २३६ । स्न सम्बार । ४४६६. चतुर्विशतितीधेक्कस्पूजा......। यत्र सं० ११ । सा० ११४१ ६'च । आया–संस्कृत । विषय-यूजा । र० काल × । तेरु काल × । सपूर्ता । वे॰ सं० १६६ । ज भण्डार ।

विशेष-केवल शन्तिम पत्र नही है।

४४६७. प्रतिसं०२ । पत्र सं०४६ । ले० काल सं०१६०२ बैशाल बुदी १० । वे० सं०१३६ । ज अभवार ।

> ४४६६. चतुर्विशतितीर्थक्करपुत्रा***** । पत्र सं०४६ । म्रा०११४६३ इ.च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वे०सं०१ । सः मण्डार ।

विसेय-वसजी वज मुशरक ने चढाई थी।

४४६६. प्रति सं०२। पत्र सं०४१। ले० काल सं०१६०६। ते० सं०३३१। व्या भण्डार।

४४००. चतुर्षिशतितीश्रेक्करपूजा'''''' । पत्र तं० ४४ । झा० १०३४५ इ'च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४६७ । झ भण्डार ।

विशेष--कड्डी २ जयमाला हिन्दी में भी है।

प्रश्र**ः प्रति सं०२।** पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६०१। वै० सं० १५६। **क्र** भण्डार।

विशेष-इसी अण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वै० सं० १४४) और है।

४४०२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल 🗙 । वे० सं० ६६ । 🖷 भण्डार ।

४४८२३. चतुर्विशतितीर्थक्करपुका— सेवाराम साहा । पत्र सं०४३ । मा० १२४७ १ च । प्राया— हिन्दी । विवय—पूत्रा । र०कान सं०१=२४ मंगसिर बुदो ६ । ले०काल सं०१=५४ कालोज सुदी १४ । पूर्मा । वे० सं०७१४ । क्रा अच्छार ।

विशेष—ऋाष्ट्रराम ने प्रतिविधि की थी । कवि ने स्रपने पिता वस्तराम के बनाये हुए मिध्यास्त्रसंदन स्रीर बुद्धिवतास का उल्लेख किया है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ७१४) मीर है।

४.५०४. प्रतिसं≎ २ । पत्र सं∘ ६० । ले० काल सं० १६० २ झायाद सुदी द । दे० सं० ७१४ । इप भण्डार ।

. प्रश्रं प्रति सं० है। पत्र सं० १२। ले॰ काल सं० ११४० फायुरा बुदी १३। वे॰ सं॰ ४६। ख मण्डर।

> प्रश्नेष्ठ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १वव३ । ते० सं० २३ । ग मण्डार । विशेष---इसी भण्डार में २ प्रक्षियों (ते० सं० २१, २२) और है ।

MORIT I

WINTE !

Medit !

प्रश्रटण, चतुर्विशतिष्काः****। पत्र सं० २० । झा० १२ \times १६ है व । आयो-हिन्दी । विषय-दूजा । ए० काल \times । सं० काल \times । सपूर्ण । वे० सं० १२० । इह सण्डार ।

४४००. चतुर्विशासितीधेक्करपूजा—कृष्यावन । पत्र सं० ११। आ० ११×४३ इ.च । आपा-हिस्सी । विवय-पूजा । र० काल सं० १०१९ कास्तिक बुदी ३ । ते० काल सं० १११४ प्रायाब बुदी ४ । पूर्वी । वै० सं० ७१९ । का अध्यार ।

> विशेष— इसी अण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० ७२०, ६२७) भीर हैं। ४४८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ते० काल × । वै० सं० १४६ । क्र अण्डार । ४४१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ते० काल × । वे० सं० ४७ । इस मण्डार । ४४११. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४६ । ते० काल सं० १९५६ कार्तिक सुदी १० । वे० सं० २६ । ग

प्रश्रेश. प्रति संवक्षा पत्र संवक्षा १४ । तेव काल 🔀 । ब्रपूर्ण । वेव खेव २५ । घा मण्डार । विशेष---बीच के कुछ पत्र नहीं हैं।

४४१२. प्रतिसंट ६। पत्र सं०७०। ले॰ काल सं०१६२७ सावन सुदी ३। वे० लं०१६०। उर भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १६१, १६२, १६२, १६४) और है।
४४१४. प्रति सं० ७। पत्र सं० १०६ । ते० काल ×। वे० सं० १४४। च्यू अच्छार ।
विशेष—इसी अच्छार में ३ प्रतियां (वे० सं० १४२, ५४३, ५४६) और हैं।
४४१४. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४७। ते० काल ×।वे० सं० २०२। इङ्ग अच्छार ।
विशेष—इसी अच्छार में ४ प्रतियां (वे० सं० २०४ ने ३ प्रतियां, २०६) और हैं।
४४१६. प्रति सं० ६। पत्र सं० १७। ते० काल सं० १९४२ वैष शुषी ११ । वे० सं० २६१। उद

प्रश्रंक. प्रति सं० १० । यब सं० ६१ । से० काल X । वे० सं० १८६ । आई अध्यक्तर । विशेष-सर्वशुक्तनी गोधा ने सं० १६०० प्रावदा सुदी ५ को बढाया वा । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं०-१४५) और है । ४४१८. प्रति सं० ११ । यब सं० ११४ । ले० काल सं० १६४६ सावसा सुदी २ । वे० सं० ४४६ । घ

प्रश्रेष्ट. प्रति संट १२। तम संट १४७। तेट काल संट १९१७। वेट संट १७०६। ह अब्बार । विजेष-—ब्रोटेनाल प्रांवका ने स्वयदनार्य सीलाल से प्रतिकिपि कराई थी। **४४९०. चतुर्विशतितीर्थहृरपुजा** — रासचन्द्र । पत्र सं०६०। सा० ११४५१ ६'व । नावा हिन्दी पद्या | विषय-पूजा | र०काल सं०१६५४ । ले०काल x | पूर्ण। वे०सं०५४६ । व्यानण्यार ।

विशेष---इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे॰ सं॰ २१४६, २०६४) ग्रीर हैं।

४४२१, प्रतिसं०२ । पत्र सं०५० । ले०काल सं०१६७१ बासोज मुदी६ । वे०सं० २४ । ग ेष्टार ।

विशेष-सदासुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ २५) धौर है।

४४२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १६६६ । वे० मं० १७ । घ भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० १६, २४) और हैं।

४४२३. प्रति सं० ४ । पत्र_सं० ५७ । ले० काल × । वे० स० १५७ । इक भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे॰ सं॰ १४८, १४६, ७८७) और हैं।

४४२४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० ४४६ । च भव्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १४६, १४७, १४८) ग्रीर है।

४४२४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० २१६ । छ भण्डार ।

विद्योष-इसी अध्वार से ५ प्रतियां (वे॰ सं० २१७, २१८, २२०/३) और हैं।

श्रश्रवह. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० २०७ । जा भण्डार ।

बिबोच — इसी अब्हार में एक प्रति (वे॰ सं० २०८) गीर हैं।

४४२ ७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०१ । ते० काल सं० १८६१ श्रावरा बुदी ४ । ते० सं० १८ । स्न अध्यार ।

विशेष----जैतराम रावका ने प्रतिनिधि कराई एवं नाषुराम रावका ने विजेराम पांड्या के मन्दिर से खडाई थी। इसी अपवार में २ प्रतियां (वे० सं० ५८, १८१) भीर है।

४४२ व. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७३। ते॰ काल सं० १८५२ मायाड मुदी १४। वे० सं० ६४। व कप्तार ।

विशेष--महात्मा जयदेव ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (बै॰ सं॰ ३१४, ३२१) और है।

. अध्ररह. चतुर्विदातितिविद्वहरपूत्रा—नेनीचन्द पाटती । पत्र सं०६०। सा० ११३८४६ इक्षः। आरा-हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल सं०१ त्व० आववा सुदी १०। ले० काल सं०१६१८ सासोज दुदी १२। वे० सं० १४४। कृष्ण्यार |

४४३०. चतुर्विशतितीर्थक्करपूजा—अनरंगकाका। पत्र सं०४१। झा०११×० ६'च। भाषा⊢हिन्ती। विवय-पूजा। र०काल ×। ते०काल ×। पूर्णी वे०सं० ७२१। इस अच्छार।

४४३१. प्रति सं०२। पत्र सं• ६६। ले० काल x । वे० सं० १४३। क अण्डार।

विशेष---पूजा के अन्त में कवि का परिचय भी है।

४४३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० २०३ । छ अण्डार ।

४४.२२. चतुर्विशतितीर्थङ्करपूजा — बस्ताबरलाला । पत्र सं० ४४ । ग्रा० ११३/४४ इंच । आचा – ८०० हिन्दी । विषय-पूत्रा । र० काल सं० १८४४ मंगसिर बुदी ६ । ले० काल सं० १६०१ कालिक मुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४४० । च भण्डार ।

विशेष--तनमुखराय ने प्रतिनिधि की थी।

४४.२४, प्रति सं०२ । पत्र सं०१ से ६६ । ले० काल ४ । प्रपूर्ता | वे० सं०२०५ । इह प्रष्टार । ४४.२४. चतुर्विशतितीथं इत्रपूजा—सुगलचन्त् । पत्र सं०६० । घा०११३,४८ इक्षा । जापा–हिन्ती । विषय–पुत्रा । र० काल ४ । ले० काल सं०१६२६ चैत्र वृदी १ । पूर्ता । वे० सं०५५५ । च्या पण्डार ।

४४.२६. प्रतिसं०२ । पत्र सं∙ ६४ । लें० काल सं∘ १९२६ वैद्याला सुदी ४,। वे० सं० ४.५६ । च भण्दार ।

४४२७. चतुर्विशतितीश्रेङ्करपूत्रा''''''। यत सं∘ ७७ । सा० ११×४.ई इ'च । माषा−हिन्दी । विवय– पूजा । र० काल × । ते० काल सं० १०१६ चैत चुती ३ । पूर्ण । वै० सं० ०२६ । इस मण्डार ।

प्रध्रदे⊏. प्रति सं०२ । पत्र सं०११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं०१५४ । क भण्डार ।

४४३६. चन्दनघष्ठीव्रतपूर्वा—भ०शुभवन्द्र । पत्र सं०१०। मा० ६×६ इंव । मावा-संस्कृत ∤

विषय-चन्द्रप्रभ तीर्थक्कर पूजा । र॰ काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वै० सं० ६८ । अर्फ भण्डार ।

४४४०. चन्त्नपष्टीज्ञतपूजा—चोलाचन्द् । पत्र सं० ⊏ । सा० १०×४६ १त्र । मात्रा—संस्कृत । विषय-चन्द्रप्रम तीर्घक्कर पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वे० तं० ४१६ । स्र प्रस्तार ।

विशेष--- 'बतुर्य पूजा की जयमाल' यह नाम दिया हुया है । जयमाल हिन्दी में है ।

४४४१. चन्द्रनचच्छीक्रतपूजा— स० देवेन्द्रकीर्ति । यत्र सं० ६ । सा० न्द्र४६ इ.च । भाषा-संस्कृत । विषय-चन्द्रप्रस्न की युजा । र० काल ४ । से० काल ४ । युर्ख । वै० सै० १७१ । क्र सम्बार । ४४४४९. जुल्बनमम्ब्रीम्बन्युजाः''''''। पत्र सं०२१। द्या० १२×४ इ.च। भाषा-संस्कृत । विषय-तीर्यक्कर जन्मप्रभ की पूजा। र० का काल ४ । के० काल ४ । पूर्वा। वे० सं०१८०४ । ट सम्बार।

विकेष--- निम्न पूजावें और हैं- पश्चमी बतोद्यापन, नवग्रहपूजाविधान ।

४४४४३. चन्युनवरठीव्रतपूजा.....। पत्र सं०३। द्वा० १२४१३ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-चन्द्रसम तीर्षक्कर पूजा । र० काल × । से० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६२ । छा मण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ २१६३) और है।

४४४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल 🗴 । झपूर्ण । वै० सं० २०१३ । ट भण्डार ।

अध्यक्षः, चन्द्रसम्बद्धीव्रतयुक्ताः*****। यत्र सं० १। बा० ११३×५, दःच । आया-संस्तृत । विषय-चन्द्रतम तीर्षेक्कर पूजा । र० काल × । ते० काल × । बपूर्णः । वे० सं० १५७ । व्य मण्डार ।

विशेष--- ३रा पत्र नही है।

४४४६. चन्द्रभक्षितपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ७ । झा० १०३ ४५ इंच । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ने० काल सं० १८७६ झालोज बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४२७ । व्यामण्डार ।

विशेष--सदासुख बाकलीवाल महुद्रा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

प्रेष्टप्रेशः चन्द्रमञ्जीलनपुत्रा—देवेन्द्रकीचि । पत्र सं० ४ । मा० ११४४३ र झा भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल सं० १७६२ । पूर्ण । वे० सं० १७६ । इस भण्डार ।

> ४५५८ मित सं०२ । पत्र सं०५ । ले० काल सं०१ ८६३ । वे० स०५३० । स्र भण्डार । विशेष—मामेरमें सं०१ ८७२ में रासवन्द्र की लिखी हुई प्रत से प्रतिलिपि की गई थी ।

१९४९६. चमरकारचित्रसम्बेजपुत्रा'''''। पत्र सं०५। घा० ७४६ इंच। भाषा-किन्दीः विषय-पूजा। र०कास ४। ले०कास सं०१६२७ वैद्यास बुदी १३। पूर्णः वे० सं०६०२। स्राभण्यारः।

४४४०. चारित्रशुद्धिविद्यान-स्त्री भूष्या । पत्र सं०१००। घा० १२२४६ इ'न । भाषा-संस्कृत । विषय-पूनि दौला के समृष होने वाले विचान एवं पूजायें । र० काल × । ने० काल सं०१ वदद पीच मुदी द । पूर्ण । कै० सं० ४४५ । का सम्बार ।

> विशेष-इत्तका दूसरा नाम बारहती चीतीसावत पूजा विधान भी है। ४८४१, मृद्धि सं०९। पत्र सं०६१। ते० काल \times । वे० सं०१५२। इस पण्डार। विशेष-लेखक मंगारत कटी हुई है।

४४४२. चारित्रशुद्धिविद्याल—सुमतित्रद्धा । पत्र यं॰ तथ । सा॰ ११३४६ इत्त्र । नाया-संस्कृत । विवय-मुनि रीवा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें। र० काल ४। ले० काल सं० १८३७ वैद्याल सुरी १९। पूर्ण । के० सं० १२३ । स्व अण्डार ।

४४४६३. चारित्रशुद्धिविधान—शुभ्रचलद्वापत्र संग् ६६। झाग् ११६४५ ६ 'दा ब्राचा—संस्कृत । सुनि दीक्षाके समय होने वाले विधान एवं पूजायें। ह० काला×ाले० कालासंग् १७१४ फाल्कुण सुदी ४ । पूर्साः वै० संग्२०४ । जामण्डार ।

बिशेय-नेसक प्रशस्ति--

मंदन् १७१४ वर्षे काष्ट्राणमाने सुक्रमक्षे बउच तिथी सुक्रवासरे । बश्योतास्थाने मुंडनदेशे श्रीकर्णनाय चैरवालये शीवृत्तमये सरम्बतीयमध्ये बलास्कारमणे श्रीकृषकृंदाचार्यान्यये स्ट्रारक भी ५ रत्नवन्द्राः सरम्हे न० हर्षवन्द्राः तदान्नाये बद्धा भी ठाकरशी तरिशय्य ब्रह्म श्री गरावदास तिशय्य ब्रह्म श्री महीदासेन स्वज्ञानावर्णी कर्म क्षायार्थ उद्यापन बारमें चीत्रीमृ स्वहस्तेन लिक्ति।

प्रश्नेष्ठः, विजामिर्सिष्या (वृह्न्)—विद्याभूषस्य सूरिः। पत्र सं०१रः। झा० ६३/४६३ इ'व । भाषा-संस्कृतः। विषय-पूत्राः। र०काल ४ । ले० काल ४ । स्रपूर्तः। वे० सं० ६११ । इस अध्वारः।

विशेष---पत्र ३, ६, १० नहीं हैं।

४४४४. चितासिएिपार्यनाधपूजा (बृहद्)— शुभवन्द्र । पत्र सं० १० । बा० १९३४६ इक्का । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ते० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० ५७४ । द्वा सम्बार ।

४४४६. प्रति सं- २। पत्र सं० ६२। लेक ाल सं० १६६१ पीय बुदी ११। वैक सं० ४१७। स्म भण्डार।

प्रश्रेष्ठ. विश्वतासिंग्यारचैनाथपूत्रा*****। पत्र सं० १। बा० १० $\frac{3}{8}$ \times १ इ'व । बाया-संस्कृत । विषय-पूजा । र०कास imes । ते० कान imes । वे० सं० ११८४ । इस सम्बरार !

> ४४.४८. प्रति सं०२ । यत्र सं०२ । ते॰ काल × । ते॰ सं०२ तः । श भण्डारः । विशेष—निम्म पूर्वार्ये सौर हैं । विन्तासिएस्तीत्र, किन्कुम्बस्तीत्र, कलिकुम्बद्भवा एवं पंचावतीपूजा । ४४.४६. प्रति सं०३ । पत्र सं०१४ । ते॰ काल × । ते॰ सं०२६ । च भण्डार ।

४४६० चिन्तासयियारचे सुख्युका """। यम् सुं० १९ । झा० ११४४६ ६ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुत्रा । र० काल ४ । ते० काल् ४ । पूर्ण । वे० सुं० ५७६ । चा सुख्यार । ४४६१. चिन्तामसिष्पार्वेनसिष्ठाः''''''। पत्र सं० ४ । झा० ११३८४३ इ.च.। भावा–स्स्कृत । चित्रय–पूजा। र∙काल ⋉ । ले० काल ⋉ । पूर्णी। वे० सं० २२१४ । इस भण्डार ।

विकोष--- यज्ञविधि एवं स्तोत्र भी दिया है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं०१ ८४०) धीर है।

 8×8 . चौबहसूजा''''''''''' पत्र सं० १६ । घा० १० \times ७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल \times । पूर्ण । वे० सं० २६६ । ज भण्डार ।

विवोध-ऋषभनाय से नेकर प्रनंतनाथ तक पूजायें है।

%४६६२. चौसठऋदिजूजा—स्वरूपचन्दा पत्र सं० ३५। ब्रा० ११३८५ डंब ! आगा-तिन्दी। विषय—६५ प्रकार की ऋदि धारण करने वाले गुनियोंकी पूजा : र० काल सं० १६१० सावन गुरी ७ । लं० काल सं० १९५१ | पूर्ता | वे० सं० ६६४ । का अच्छार ।

विशेष---इसका दूसरा नाम बृहद्युविविल पूजा भी है।

इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ७१६, ७१७, ७१८, ७३७) ग्रीर हैं।

४४६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६१०। वे० सं० ६७०। क भण्डार।

४४६४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३२। ले० काल सं० १९५२। वे० मं० २९। ग भण्डार।

४४.६६. प्रति सं०४ । पत्र सं०२६ । ले० काल सं०१६२६ फाष्ट्रण मुदी १२ । वे० सं०७६ । घ भग्दार ।

४४६७. प्रति सं० ४। पत्र सं• २४। ले० काल ×। वे० मं० १६३। इह भण्डार।

विशेष--इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ १६४) और है।

४४६=. प्रति सं०६। पत्र सं० = । ले० काल × । वे० सं ७३४ । च भण्डार ।

४४६६. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६२२। वे० सं० २१६। छ भण्डार।

विशेष--इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे॰ सं॰ १४३, २१६/३) और है।

४४७०. प्रति सं० क्षा पत्र सं० ४४ । ले॰ काल × । वे॰ सं० २०६ । जा भण्डार ।

विकोय-इमी भण्डार में ३ प्रतियां (वे॰ सं॰ २६२/२ २६५) प्रीर हैं।

४५७१. प्रति सं०६ । पत्र सं०४६ । ले• काल × । वे० सं० ५३४ । स्व भण्डार ।

ध्य. प्रति सं० १०। पत्र सं० ४३। ले० काल ×। वे० सं० १६१३। ट अण्डार।

४४.७६. द्योतिनिवारण्विधि......ा पत्र सं∘ ३। झा० ११४४ इ.च । आया-हिन्दी । विदय-विभाग । र० काल ४ | ने० काल ४ | पूर्ण । वे० सं० १८७६ । इस वपदार । ४४४४. जम्मू द्वीपपूत्रा—पांडे जिनदास 'पत्र मंग्राट! घा०१०३८६ इ.च.। भावा-संस्कृत । विषय-पूत्रा। र०काल १७वीं सताब्दी। ले०काल सं० १८२२ संगक्षिर सूदी १२। पूर्ता। वे०सं० १८३। क भण्डार।

विशेष---प्रति मकृषिम जिनालय तथा भून, भविष्यत्, वर्तमान जिनपूजा सहित है। पं॰ कोक्सन्त ने माहकन्द से प्रतिलिपि करवाई थी।

४४.७४. प्रति सं०२। पत्र सं०२८। ले० काल सं०१८८४ उग्रेष्ठ सुदी १४। वे० सं०१८। पर

विशेष-भवानीचन्द भांबासा भिलाय वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४४.७६. जस्त्रूस्वाभीयुक्ता ः । यत्र सं∘ १०। सा० त्र५६ इ'व । शाया-हिन्दी । तिथय-प्रतियः केवनी जस्त्रुस्वामी की पूजा । र० काल ४ । ले० काल सं० १६४८ | पूर्ण | के० सं० ६०१ | क्या भण्डार |

४४.५०. जयमाल—रायवस्त् । पत्र सं० १। घा० $a_{\chi}^{2} \times s$ इंब । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रूक काल सं० १८५६ फाछारा मुद्दी १। ते० काल \times । पूर्वी । वे० सं० २१३२ । का वण्डार ।

विशेष-भोजराज जी ने क्शिनगढ में प्रतिलिपि की थी।

४४.७-. जलहरतेलाविधान \cdots ावत्र सं०४।मा० ११ $\frac{1}{2}$ \times ७ $\frac{1}{2}$ इंब। भाषा—हिन्दी । विवयः—विधान : र०काल \times । ले० काल \times । वे० सं० ३२३। इस अध्यार ।

विशेष-जलहर तेले (वत) की विधि है। इसका दूसरा नाम अस्तेला वत भी है।

४४७६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ : ले० काल सं० १६२८ । वे० सं० ३०२ । सा अण्डार ।

४४.=०. जलयात्रापूजाविधान***** पत्र सं०२ ! झा०११% ६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। र०काल × । ते०काल × । पूर्शा | वै०सं०२६३ । उस अध्यार |

विशेष---भगवान के प्रभिषेक के लिए जल माने का विधान।

४४.=१. जलयात्राविधान—महापं० आधाघर । पत्र सं०४ । घा० ११२,४५ इ'व । आया–संस्कृत । विषय–जन्माभिषेक के लिए जल लाने का विधान । र० काल × । ने० काल × । पूर्ती । दे० सं० १०१६ । आर अध्यार ।

४४८२. जलवात्रा (तीर्योदकादशनविद्यान) ***** । पत्र सं० २ । ग्रा० ११८४१ है इंच । आया-संस्कृत । विषय-विधान ! र० काल ४ । से० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १२२ । झु अण्डार ।

विशेष--जलयात्रा के यन्त्र भी दिये हैं।

४४ ⊏४. प्रति सं०२ । पत्र सं०६ । ले० काल सं०१६८३ । वे० सं०१७१ । स्न मण्डार ।

विशेष--धीपति जोशी ने प्रतिलिपि की थी।

% थ्र≒. क्रिनगुरासंपत्तिपूजा''''''। पत्र सं∘ ११ । बा० १२ × १ इंच । माया–संस्कृत । विषय -पूजा । र० कान × । ने० कान × । प्रपूर्ण । ने० सं० २१६७ । इत्र पण्डार ।

विषोय--- ५वां पत्र नहीं है।

्रध्र=६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १९२१ । वे सं० २९२ । सा पण्डार । ४४=७. खिनशुर्म् संपत्तिपुत्रा'''''' । पत्र सं० ४ । सा० ७१,४६३ इ'व । भाषा-संस्कृत प्राकृत ।

विचय-पुत्रा | र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१५ । इस भण्डार ।

४४८मः जिलपुरन्दस्त्रतपुत्रा''''''। पत्र सं०१४। मा०१२४४६ दश्चः। भाषा−संस्कृतः। विषय− पूत्रा १ र०काल ४। ते० काल ४। पूर्णः। वै० सं०२०६। क्रा भण्डारः।

४४८६. जिन्यूजाफतप्राप्तिकथा ""। पत्र सं०४ । घा० १०३८४३ इंव । बाया-संस्कृत । विषय– युवा । र० काल × । ले॰ काल × । युर्ण । वै० सं०४६२ । ख्रा सण्डार ।

विशेष---पूजा के साथ २ कथा भी है।

४४६०. जिनसक्कर (प्रतिष्ठासार) —सहा पं० आशाधर। पत्र सं० १०२। मा० १०२०४ इंच। आषा-संस्कृत। विषय पूर्ति, वेदी प्रतिष्ठादि विधानो की विधि। र•काल सं० १२८५ प्रासीज बुदी स। ले० काल सं० १४६५ माच बुदी स (सक सं० १२६०) पूर्ण। वे० सं० २८। आह्र अण्डार।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

संवत् १४६५ वाके १३६० वर्षे माघ वदि = गुरुवासरे......(प्रमूर्ग्)

४४६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७७ । ले॰ काल सं० १६३३ । वै॰ सं० ४४६ । का अण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति- संवत् १६३३ वर्षे।

प्रथ. स्थान सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८८५ भादवा बुदी १३ । वे० सं० २७ **। ध** भण्डार ।

विशेष — मधुरा मे भौरङ्गजेब के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई।

लेखक प्रशस्ति---

श्रीमूलसंबेषु सरस्वतीयो गच्छे बसारकारणे प्रसिद्धे । सिंहासनी श्रीमलबस्य खेटे युदक्षिणाशा विषये विलीने । धीकुंग्डुंदाबिलयोगनाय पट्टानुगानेकमुनीन्द्रवर्गाः । दुर्वादिनापुन्मवनैकतन्त्रः विद्यापुनंदीस्वरसूरिपुन्धः ।। तदन्वये गीऽमरकोरितान्ताः महारको वास्त्रिकेकम्बन्धः । तस्यापुणिष्यसुम्बन्द्रसूरि श्रीमासके नर्भदरोगमार्था ।। पूर्वी सुनामां पट्टपसनुकर्या सुनर्शकाराम्य नीवकार ।।

४४.६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२४ । ते० काल सं० १६४.६ माववा कु∰ि. ६३ : वैं० सं० २२३ । का भण्डार ।

विशेष--- बंगाल में सकबरां नगर में राजा सवाई मानसिंह के सासनकाल में सावार्य कुन्कुन्य के वला-त्कारगण सरस्वतीनच्छ में महारक प्यानीद के सिच्य प० जुनवन्त्र प० जिनवन्त्र प० कन्त्रकीति की साम्नाय में संवेत-वाल कंशोत्पन्न पाटनीगोत्र वाले साह भी पहिराज, वज्न, करना, कनूरा, नाष्ट्र सादि में से कनूरा ने पोडवकारण वतीधा-पन में पं० भी जववंत की यह प्रति मेंट की पी !

> ४४६४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ११६। ते० काल 🔀 । 🗫 सं० ४२। व्य अध्दार । विशेष—प्रति प्राचीन है।

> > नंचात् संडिक्सवंशोत्यः केस्ह्योन्यासवित्तरः । लेखितोयेन पाठार्थमस्य प्रस्तर्मे पुस्तकं ।।२०॥

४४६४. प्रति सं०६। पत्र सं०६६। ते० काल सं०१६६२ भावता बुदी २। वे० सं०४२५। व्य भण्यार।

विशेष —संवत् १६६२ वर्षे भादयद वदि २ जीपे सर्वेह् राजपुरनवरवास्तरम्यं झान्य,सरनावरकाती पंचोली त्यारगाथाद्वशुत नरसिंहेन निर्मितते ।

क मण्डार में एक प्रपूर्ण प्रति (वै० सं० २०७) च मण्डार में २ प्रपूर्ण प्रतियां (वै० सं० १२०, १०४) तथा स, मण्डार में एक प्रपूर्ण प्रति (वै० सं० २०७) धौर है।

४८६६. जिलसङ्गियाल***** । यस सं० १ । या० १०४४३ इ'स । आया-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७८६ । ट सम्बार ।

४४६७. जिनस्तपन (स्वासिचेक पाठ)****** पत्र सं० १४। ब्रा० १२/४४ इ'व । भाषा-संस्कृत । विवय-पूजा । र० काल ४ | ले० काल सं० १०११ वैद्यास सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० १७७८ | ह भण्यार ।

४४६८. जिनसंहिता.......। यन वं॰ ४६ । दा० ११४८३ इ'व । बाबा-संस्कृत । विषय-पूजा प्रति-हादि एवं प्राचार सम्बन्धी विचान । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । ते० वं० ७७ । खु जच्चार । ४४६६. जिनसंहिता— अद्रबाहु । पत्र सं० १३० । प्रा० ११×४३ दंव । नाषा-संस्कृत । विषय-युका प्रतिकृति एवं प्राचार सम्बन्धी विधान । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० १६६ । क अच्छार ।

४६००. जिनसीहितां— अर्थ्यस्थि । पत्र सं० क्ष्मा ब्राट १२४४ रखाः। माषा–संस्कृतः। विषय— पूजा प्रतिष्ठावि एवं सावार सम्बन्धी विषान । र०काल ४ । ते० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी ११ । पूर्णा । वै० सं० १९७ । क्षमञ्चार ।

विशेष- ५७. ५८, ८१, ८२ तथा ८३ पत्र खाली हैं।

४६०१. प्रति सं०२ । पत्र सं०८ ४ । ते० काल सं०१८४३ । वे० सं०१६८ । कः भण्डार ।

४६०३ जिनसंहिता'' '''। पत्र सं० १००। ग्रा० १२४६ इ'च। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा प्रति-हादि एवं शाखार सम्बन्धी विधान । र० काल ४ । ले० काल सं० १५४६ भाववा बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १६४ । क भण्यार ।

४६०४. जिलसहस्रतासपूजा—धर्मभूषसा । पत्र सं० १२६। आ० १०४४३ दश्च। भाषा-संस्कृत) विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल सं० १९०६ वैशास दुवी ९ । पूर्ण । वे० सं० ४३८ । इस भण्डार ।

विशेष—निष्यमशाना से पं॰ मुखलानजी के पठनार्थ हीरालानजी रेशवाल तथा पचेवर वालों ने किया सम्बार मे प्रतिनिधि करवाई थी।

ग्रान्तम प्रवास्ति— या पुस्तक लिखाँ दिकना लब्बारि के कोटडिराज्ये जीमानमिहजी तत् कंदर फ्टोसिहजी दुनाया रेस्स-वासन्दं बैदगी निमित्तः श्रीसहस्रताम को अंदलजी अंबायों उस्सव करायों । श्री व्हवसदेवजी का मन्दिर में माल निम्मो दरोगा चत्रजुजनी वासी वयरू का गीत पाटसी व॰ ११) वाहजी गरोधवालजी साह ज्याकी सहाय सुंहतो ।

४६०४. प्रति सं०२। पत्र सं० ८७। ले॰ काल ×। वे॰ सं० ११४। क अण्डार।

४६०६. जिनसङ्खनासपूर्वा—स्वक्तप्यन्दविकाला।पन सं० १४,। झा०११४,६३ इच। भाषा— हिन्दी। विषय-पूर्वा।र० कान सं०१११६ साम्रोज सुदी २। ले० कान 🗡 । पूर्ण। वे० सं० स्थ१ । क्रुमण्डार ।

४६०७. जिनसहस्रमामंपूजा-- चैनहुक तुहादिया। पत्र सं० २६। बा॰ १२४६ दश्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० कास ४ १ से० कान सं० १९६६ माह सुरी ४ । पूर्ण । वे० सं० ७७२। इ. मण्यार। ४५०६. जिनसङ्खनासर्ज्ञाः**** । पत्र सं॰ १८ । सा० १३ \times ६ इ'व । भाषा-हिन्दीं । विषय-पूजा । १० काल \times । त्रः काल \times । त्रः सं॰ १२ । का सम्बार ।

४६८६, प्रति स० २ । पत्र सं० २३ । ले॰ काल × ! वै॰ सं॰ ७२४ । च भण्डार ।

४६१०. जिलाभिषे जिल्हां य ****** । पान सं०१० । घा० १२×६ इक्का | वाया-हिन्दी । विवय-प्यित्रेक विघान । र०काल × । ले०काल × । दूर्सी । वै० सं०२११ । इस् वच्चार ।

विशेष--विद्वयत्रनबोधक के प्रथमकाण्ड में सातवें उल्लास की हिन्दी भाषा है।

४६११. जैनप्रतिष्ठापाठ ''''''। पत्र सं०२ से ३५ । प्रा०११३४४३ इ'व । आया-संस्कृत । विवय-विधि विधान । र०काल ⋉ । ले०काल ⋉ । प्रपूर्ण । वै० सं०११६ । चामप्रणार ।

ऽ६१२. जैल।बवाहपद्धति''' '''।यत्र सं० ३४। शा० १२×१ इ'व। आषा-संस्कृत । विषय-विवाह विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१४ । **क** भण्डार ।

विशेष--प्राचार्य जिनसेन स्वामी के बतानुसार संग्रह किया गया है । प्रति हिन्दी टीका सहित है।

४६१३ प्रति सं⊂ २ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० १७ । जा मण्डार ।

प्र६२४. झानपंचिंदातिकाझनोद्यापन—अ० झुरैन्द्रकीर्ति। पत्र सं०१६। झा०१०३/५५ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल सं०१८५७ चैत्र बुदी १। ले० काल सं०१८३ झावाड बुदी ४। पूर्ति। वै० सं०१२२। च भण्डार।

विशेष -- जयपूर में चन्द्रप्रभू चैत्यालय में रचना की गई थी। सोनजी पांख्या ने प्रतिलिपि की थी।

४६२४ . उथे प्रक्रितनवरपूजा \cdots \cdots । पत्र सं० ७ । धा० ११ \times ६३ ६ व । धाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल \times । त्रुशां । वे० सं० ५०४ । का ध्रम्बार ।

िशोय- इसी अण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ७२३) भीर हैं।

प्र६१६. उद्यक्तिसवरपूत्रा''''''। पत्रं सं० १२ । सा० ११२ प्रश्च । स्रावा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल \times । के॰ काल \times । सपूर्ण । वे० सं० २११ । क्या स्वयार $|\cdot|$

४६१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ते० काल सं० १६२१ । वै० सं० २६३ । स भण्डार ।

४६१८. ज्येष्ठजिनवरम्बत्यूक्वा^{भारमा} पत्र सं० १। सा० ११६४५६ इ'स । आधा-संस्कृत । विश्वंध-पूजा । र० काल × । ते० काल सं० १०६० सावाड सुदी ४ । पूर्वी | दे० सं० २२१२ | का अध्वारं |

विशेष—विशान खुकाल ने जोषराज के बनवाचे हुए पाटोदी के मर्नियर में प्रतिक्षिप की। सरहो सुरेन्त्र-फीर्तिजी को रच्यो । ४६१६. सामोकारपैतीसपूका— काक्यराम । पत्र सं०३। मा० १२४५ दशाः। भाषा-संस्कृतः। विषय—सामोकार मन्त्रपुत्रा। र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्तः। वे० सं० ४६६। का मण्डारः।

विशेष--- महाराजा जयसिंह के शासनकाल में ग्रन्थ रचना की गई थी।

इसी अण्डार में एक प्रति (वै० सं० ५७८) और है।

४६६०. प्रति सं०२ । पत्र सं०३ । ले० काल सं०१७६५ प्र० घासोज बुदी १ : वे० सं०३६४ । घर सम्बार ।

४६२१. सामोकारपैतीसीज्ञतिषान— आरा० श्रीदनककीत्ति । पत्र सं० १ । सार १२४५ ६ च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा एवं विद्यान । र०काल ⋉ । ते०काल सं०१०२५ । पूर्णावे० सं० २३६ । अस्मिरा सम्बद्धार ।

विशेष-हूं गरसी कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

४६२२. प्रति सं०२। पत्र सं०२। ते० काल ×। प्रपूर्श। वे० सं०१७४। व्य भण्डार।

४६२३. तस्वार्थसूत्रद्रशाध्यायपूजा—दयाच्यन्त्र । पत्र सं०१ । मा०११४४ इ'च । भषा–संस्वतः । विचय-पूता । र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्णे । वे० सं०४६० । क भष्टार ।

विशेष--इसी भण्डार में एक प्रति वै० सं० २६१। भौर है।

४६२४. तस्वार्थसूत्रदशाध्यायपूत्रा''''''। पत्र सँ०२। मा०११ † ८४ । भाषा-सं $_{\pi}$ त । विषय-पूत्रा । र० काल imes । ले० काल imes । पूर्ण । वे० सं०२६२ । क मण्डार ।

विशेष--केवल १०वें सध्याय की पूजा है।

४६२४. तीनवीबीसीपूजा*****। यक सं० ६८ । प्रा० (१२४६ इ.च.) भाषा-संग्रहतः । विषय-भूत, अविय्यत् तथा वर्तमान काल के चौबीसों तीर्यकुरों की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्या। वं० सं० २७४। इ. भव्यार ।

४६२६. तीनवौबीसीसमुक्ययूजा^{……}।पत्र सं∘ ४। घा∘११३४४ इच। आया⊸६१इत। विषय-यूजा।र०काल ४।ते०काल ४।पूर्णावे०सं० १८०६।ट अथ्यार।

४६२७. तीनचीबीसीपुत्रा— नेसीचन्द पाटनी । पत्र सं०६७। या० ११३४५ ; इंब। आश-हिल्बी। विषय-पूत्रा। र० काल सं०१८६४ कार्तिक दुदी १४। ले० कान सं०१६२२ आदार सुदी ७। पूर्ण। ३० सं०२७४। क मण्यार।

४६२८. तीनचीबीसीपुत्रा**** । पत्र सं∘ १७ । झा० ११४४ इंव आवा-हिन्दी । विषय-पूजा। . १० काल वं∘ १८८२ । ले० काल सं० १८८२ । पूर्ण । वे० सं० २७३ । क अण्डार। ४६२६. तीनचौद्यसिस्युवययुका " ""। पत्र सं०२०। मा० ११३-४४६ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वै० सं०१२५ | इस्र प्रकार ।

४६२०. तीनकोकपुत्रा—टेकचन्द् । पत्र सं० ४९० । प्रा० १२×८ इ'व ३ आया-हिन्दी । विदय-पुत्रा : र० काल सं० १८२६ । ले० का∺ सं० १९७३ । पूर्ण । वे० सं० २७७ । इस्थायार ।

विशेष-- प्रत्य लिखाने में ३७॥-) लगे थे।

इसी मण्डार में २ प्रतियां (वे॰ सं॰ ५७६, ५७७) भीर हैं।

४६३१. प्रति सं० २। पत्र सं० ३५०। ले० काल 🔀 । वे० सं० २४१। 🙉 मण्डार ।

४६३२. तीनकोकपूजा—नेसीचन्द्र।षत्र सं० ८५१। सा० १३४८, देव । प्राथा–हिन्दी। विषय– पूजाः र०काण ४ । ले०काल सं० १९६३ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्णाः वे० सं० २२०३ । स्न सम्बद्धारः।

विशेष-इसका नाम त्रिलीकसार पूजा एवं त्रिलोकपूजा भी है।

४६३३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०वद । ले० काल 🗴 । दे० सं० २७० । क अण्डार ।

४६ बे४. प्रतिसंद ३ । पत्र संब्द्धाले काल संब्द्धः उरोष्ठ सुदी ४ । वेब्संब्द्धः स्वास्थान

विशेष-दो वेष्टनों में है।

४६६४. तीसचौत्रीसीनासम्मम्मा पत्र सं०६ । झा०१०×४ इ'च। भाषा—हिन्दी । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल × । वे०सं० १७६ । च्याच्छार ।

४६६६. तीसवीबीसीपूजा—कुम्हाबन । पत्र सं० ११६ । सा० १०३४७३ इंच । साया-हिन्दी । विवय-पूजा। र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ५८० । च अण्डार ।

विशेष-प्रतिलिशि बनारस में गङ्गातट पर हुई थी।

४६३७. प्रतिसं०२ । यत्र सं०१२२ । ले० काल सं०१६०१ घाषाङ सुदी २ । वे० सं०५७ । अन्न भण्डार ।

४६२६. तीसचीबोसीसमुखयपुत्रा''''''' पत्र सं०६ । मा०८×६१ २ंव । भाषा-हिन्दी । विषय-पूत्रा । र०काल सं०१८०८ । से०काल × । पूर्ता । वे०सं०२७८ । क भव्यार ।

विशेष--- अढाईडीप अन्तर्गत ५ भरत ५ ऐरावत १० क्षेत्र सम्बन्धी तीस बीबीसी पूजा है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ५७१) भीर है।

४६२६. तेरहद्वीपपूजा—सुभवन्द्र । पत्र त० १४४ । ता० १०३४६ इ.च । आया-संस्कृत । विवय-पूजा । र० काल × । ते० काल सं० १०२१ सावज बुधी १४ । पूर्ण । वे० सं० ७३ । स मण्डार । ४६४०. सेरह्र्द्वीपयुक्ता—अ० विश्वाभूषस्य । पत्र सं० १०२ । सा० ११४५ रखः । साया-संस्कृत । विषय-जैन मान्यतानुसार १३ डीपों की पूजा । र० काल ⋉ । ले० काल सं० १८८७ मादवा सुदी २ । वे० सं० १२७ । मह मन्यार ।

विशेष--विजैरामजी पांड्या ने बसदेव ब्राह्मण से लिखवाई बी।

४६४१. तेरहद्वीपयुक्ताः****।पत्र सं०२४। मा० १११४६१ इंच । भावा-संस्कृत । विषय-जैन मान्यतानुसार १३ डीगों की पूजा। र० काल ×। ने० काल सं०१६६१।पूर्ण । वे० सं०४६। का जम्बार।

विशेष - इसी भण्डार में एक श्रपूर्ण प्रति (वे० सं० ५०) भीर है।

४६४२. तेरहद्वीषपूत्रा*****। पत्र सं०२०६ । धा० ११×४ इ.च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूत्रा । र०काल ×। ते०काल सं०१६२४ । पूर्णीवे०सं०४३५ । च्चाभध्यार ।

४६४२ - तेरहद्वीपयुका— जालाबीत । पत्र स० २३२ । सा० १२५/८८ इ.व. । भाषा—हिन्दी । विषय— पूजा । र० काल सं०१८७७ कार्तिक सुदी १२ । ले० काल सं०१६६२ भाववा सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं०२७७ । कृ सम्बार ।

विशेष--गोविन्दराम ने प्रतिसिपि की थी।

४६४४. तेरहद्वीपपूजा*****।पत्र सं०१७६ । मा० ११×७ दव । आवा–हिन्दी । विदय–पूजा । र०काल × । ते०काल × । वे०सं०१ द१ ।च प्रण्डार ।

४६४४. नेरहृद्वीपपूजाः''''। पत्र सं∘ २६४ । झा० ११४७ हुँ हंव । आया-हिन्दी । विषय-पूजा । र∙काल ४ । से० काल स०१६४६ कार्तिक सुदा ४ । पूर्ण । बे० सं०३४३ । जा सम्बार ।

४६४६. तेरहद्वीपपृत्राविषान ""। पत्र सं० ८६ । झा० ११४५३ देव । आया–संस्कृत । तियय– पूना । र० काल × । ते० काल × । प्रपूर्ण । वे० सं० १०६१ । इत्र प्रकार ।.

४६४० त्रिकाल्यचौदीसीपूजा— त्रिशुवनवन्द्रः।पत्र सं०१३। बा०११६४५ दंव। माना—संस्कृत। विषय–तीनो काल में होने यांत तीर्षकुरों की पूजा।र० काल ×।ते० काल ×।पूर्ण।वे० सं० ४७४। इस मध्यार।

विवीष---शिवलाल ने नेवटा में प्रतिलिपि की थी।

४६४=. त्रिकालचौदीशीपूला'''''''। यत्र सं∙ ६ । सा॰ १०४६३ इंच । साथा-संस्कृत । विषय– पूजा । र०का । ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वे०सं० २७८ । क सम्बार ।

४६४६. प्रति सं०२। पत्र सं०१७। ले०काल सं०१७०४ पौत्र बुदी ६। वे०सं० २७१। क जन्मार।

विशेष---वसवा में प्रावार्य पूर्णकड़ में अपने कार कियों के साथ में प्रतिलिप की थी।

४६४०. प्रति सं०३ । पत्र सं०१० । ने० काश सं०१ १६६१ जाववा सुदी ३ । वे० सं०२२२ । आह् अण्डार ।

विशेष-श्रीमती चतुरमती ग्राजिका की पुस्तक है।

४६४१. प्रतिसं०४ । पत्रसं०१३ । ले० कालसं० १७४७ फाल्युन बुदी १३ । वे०सं०४११ । इस् सण्डार ।

विशेष-विद्याविनोद ने प्रतिलिपि की बी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ १७५) और है।

४६४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० २१६२ । ट अवदार ।

 χ ६ χ दे. त्रिकालपूजा \cdots ः। पत्र सं०११। सा०११ χ द्दं सं। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र σ काल χ । ते σ काल χ । पूर्ण। दे σ सं० १६०। इस मध्दार।

विशेष-भूत, प्रविष्यन्, वर्त्तमान के त्रेसठ शलाका पुरुषों की पूजा है ।

४६४४. त्रिलोकस्त्रेत्रपूजाग्ग्ग्गा पत्र सं० ११। सा० ११×५ इंच । आवा-हिरी । विषय-पूजा । र० साल सं० १८४२ । ने० काल सं० १८८६ चैत्र सुत्री १४ । पूर्ण । वै० सं० १८२ । च अध्वार ।

४६४६. त्रिजोकस्थितिनासयपृत्रा \cdots ापत्र सं० १। प्रा० ११ \times ७६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-प्रता । र० काल \times । ते० काल \times । पूर्ण । वे० सं० १२८ । ज अध्यार ।

४६४६. त्रिक्षोकसारपुक्ता—कामयनस्थि । पत्र सं० ३६ । सा०१३३४७ द'व । माया—संस्कृत ∦ विवय-पूजा । र० काल ४ । ते० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वै० सं० १४४ । का मण्डार ।

विशेष---१६वें पत्र से नवीन पत्र जोडे गये हैं।

प्रदेश- त्रिक्षोकसारपूका" ""। यत्र सं० २६० । सा० ११×५ इ.च । आचा-संस्कृत । विषय-यूका । १० काल × । ले० काल सं० १६६० मादवा सुदी २ । पूर्सा । वै० सं० ४६६ । स्त्र प्रण्डार ।

४६४६. बेपनकिसापूजा****** । पत्र सं∘६ । सा० १२×५६ इ.च. । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं०१=२३ । पूर्ण। के०सं० ४१६ । इस मध्यार ।

४६४६. त्रेपनकियात्रतपुत्रा******। पत्र सं० ४ । घा० ११३×४५ इख । माया-संस्कृत । विश्वक-पूजा । र० काल सं० १६०४ । से० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं० २८७ । क मण्यार ।

विशेष--- याचार्य पूर्णचन्द्र ने सांगानेर में प्रतिसिपि की थी 4

४६६०. श्रीकोक्ससारपुका—सुमतिसागर। पत्र सं० १७२। मा० ११६४ ४३ इंच। माया-संस्कृतः। विचय-पुत्रा। र० काल ४। ते० काल सं० १०२६ वादवा दुवी ४। पूर्ता | वे० सं० १३२। क्क् प्रकार।

४६६१. त्रैलोक्यसारमहापूजा.....। पत्र सं० १४४ । आ० १०×४ ई व । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल सं० १९१६ । पूर्गा । वै० सं० ७६ । ख भण्डार । ४६६२. दशलक्ष्याज्ञयमाल--पं० रह्यू । मा० १०×५ इंच । भाषा-मपभंश । विषय-धर्म के दश मैदों की पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २६० । स्त्र भण्डार । विशेष--संस्कृत में पर्यायान्तर विया हमा है। ४६६३. प्रति सं०२ । पत्र सं०६ । ले० काल सं०१७६४ । वे० सं०३०१ । स्नामण्डार । विशेष -- संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है। इसी अध्डार में एक प्रति (वै० सं० ३०२) और है। प्रदृष्ट्रियः प्रति संद है। पत्र संव ११। लेव काल x । वेव संव २६७। व्ह अण्डार । विशेष-संस्कृत में पर्यायवाची शब्द विये हुए है। इसी अण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २६६) भीर है। भ्राम्य प्रति संब भ्रापत्र संब ७ । लेक काल संब १८०१ । वेक संब ६३ । स्व भण्डार । विवेष-बोशी संशालीराम ने टोंक में प्रांतलिप की थी। इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे॰ सं० ६२, ६३/१) ग्रीर है। ४६६६. प्रति संc ४ । पत्र संc ११ । लेव काल × । वेव संc २१४ । ऋ भण्डार । विशेष-संस्कृत में संकेत दिये हुये हैं। इसी अण्डार मे एक प्रपूर्ण प्रति (वे० सं० २६२) ग्रौर है। ४६६७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १ । ते० काल 🔀 । वे० सं० १२६ । स्र अण्डार । विशेष-इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४०) ग्री (है । प्रदिद⊏. प्रति सं०७ । पत्र सं०१ । ले० काल सं०१७०२ फाग्रुगा सुदी १२ । वे० सं०१२६ । छ सण्डार । प्रदृष्ट प्रति सं⇔ द्वापत्र सं० हा ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० ७३ । धर भण्डार । विशेष-इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० १६६, २०२) घौर है। ४६७०. प्रति सं ६ । पत्र सर ४ । लेट काल सं ० १७४६ । वेर सं ० १७० । का भण्डार । विशेष--- प्रति संस्कृत टीका सहित है। इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० २६८, २८५) और हैं। भ्रद्देश. प्रति सं० १०। पत्र सं० १०। ले॰ काल 🗶 | वे॰ सं० १७८६ | ह अवहार ।

. ४६७२. दशल क्याजयमाल — पं० भाव शर्मा। पत्र सं० ६ । मा० १२×४३ इ.च । भावा–प्राकृत । विषय—पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १०११ भाववा मुदी ११ । पपूर्ण। के० सं० २६० । इस भण्डार। विकोय—संस्कृत में टीका वी हुई हैं। इसी भण्डार में एक प्रति (के० सं० ४०१) प्रति है ।

विकोध-इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १७६७, १७६६, १७६४) श्रीर हैं।

४६ ७६. प्रक्ति स्रां० २ । पत्र सं० २ । ले॰ काल सं० १७३४ पीप बुदी १२ । दे॰ सं० ३०२ । सक्र भण्डार ।

विशेष—मनरावती जिले में समरपुर नामक नवर में धावार्ष पूर्णवश्न के शिष्य गिरधर के पुत्र लक्ष्मख ने स्वयं के पढ़ने के लिए मतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (ये० सं० ३०१) और है।

४६७४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६१२ । वै० सं० १८१ । सा अध्यार ।

विशेष-जबपुर के जोबनेर के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी।

% ६६.४. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८६२ भावतासुदी दावे० सं० १५१ । च भण्डार ।

विशेष--संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं।

४६७६. प्रति सं \sim ४ । पत्र सं \sim ११ । ले \circ काल \times । ते \circ सं \sim १२६ । क्य मण्डार । १५५७. प्रति सं \sim ६ । पत्र सं \sim १ । ले \circ काल \times । ते \circ सं \sim २०४ । क्य मण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में एक प्रसि (वै० सं॰ ४८१) ग्रीर है।

४८७८. प्रति सं०७ । पत्र सं०१६ । ते० काल ४ । वे० सं०१७८४ । ट अण्यार ।

विशेष — इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वै० सं० १७६६, १७६०, १७६२, १७६४) मीर हैं।

४६७६. दशलक्षणज्ञयमाला" "। पप सं० ६ । बा० १०४५ ईव । माथा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काव ४ । ते० काव सं० १७६४ फायुरा सुदी ४ । पूर्ण । वै० सं० २६६ । क्र मण्डार ।

> ४६६०. प्रति संट २ । पत्र सं० ६ । ले० काल 🗙 । ने० सं० २०६ । ऋ भण्डार । ४६६१: प्रति संट ३ । पत्र सं० १५ । ने० काल 🗴 । ने० सं० ७२६ । ऋ भण्डार ।

४६=२. प्रति संव ४। पत्र संव ४। सेव काल ४। मधुर्गा | वैव संव २६०। क भण्डार |

विशेष--इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ सं॰ २६७, २६८) और है।

४६ स्ट. प्रतिसं०४ । पत्र सं०६ । ते० काल सं०१ द६६ भावतासुदी ३ । दे० सं०१५३ । च भण्डार ।

४६ मा अवान-प्राह्मत, संस्कृत । विवय-पूजा । र० इसक्र ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० २११४ । इस प्रव्हार । ४६=४. दशलक्ष्याजयमालः****। पत्र सं०६। मा० १०३×४३ इंच। माथा-हिन्दी। विषय-पूजा। ४० काल सं०१७३६ मालोज बुदी ७ | पूर्ण। वे० सं० =४। ख वण्डार।

विशेष--नागौर में प्रतिलिपि हुई थी।

४६८६, हरालक्ष्यज्ञयमालः ।। पत्र सं०७। मा० ११४५ इ'व । भाषा-हिन्दी । विवय-पूत्रा । र• काल ४ । ते॰ काल ४ । पूर्ण । वे० सं०७४४ । च भण्यार ।

४६८०. दशलक्षणपूर्वा—काओदेव । पत्र सं०१ । बा॰ १३४५६ इंव । आया—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ते०काल × । पूर्वा । वे० सं०१०६२ । का मण्डार ।

४६स्स-, व्यालक्ष्यपूर्जा—काश्यक्तित् । पत्र सं०१२। घा०१२४६ इ'व । साया—संस्कृत । विषय∽ पुत्रा । र०काल ४ । ने०काल ४ । पूर्ण । वे० सं०२६६ । इस् सम्बरार ।

४६ म्ह. दशकाक्षणपूजा'''''''। पत्र सं०२। झा० ११×५३ इंच। भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा। इ.क. काल × ! लेक काल × ! पूर्ण। वै० सं०६६७ । इद्र अण्डार।

विशेष-इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ १२०४) ग्रीर हैं।

४६६०. प्रति सं०२ । यत्र सं०१ दाले काल सं०१ ७४७ फाग्रुए बुदी ४ । वे० मं०२०३ । स्ट अभ्यार ।

विशेष-सांगानेर में विद्याविनोद ने पं० गिरधर के वाचनार्थ प्रतिलिपि की बी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं० २६८) ग्रीर है।

४६६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १७८१ । ट भण्डार ।

विशेष--इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ १७११) ग्रीर हैं।

४६६२. दशसम्बर्गपृत्राः ःः। पत्रः सं० ३७ । प्रा० ११ \times १६ इंचः। प्रायः +संस्कृतः। विषय-पूजः। र \circ काल \times । ले \circ काल सं \circ १८६३ । पूर्णः। वे \circ सं० १४ १। पत्र प्रप्यारः।

विषोप--प्रति संस्कृत टीका सहित है।

ध्रे६६६, दशक्कसण्युजा—ग्यानतराय । पत्र सं० १० । घा० प्र2्रे×६२ इ.च. आया-हिन्दी । विषय— युजा । र० काल × । से० काल × । युर्ण । वै० सं० ७२४ । घा जब्दार ।

विशेष---पत्र सं• ७ तक रत्नत्रमपूजा दी हुई है।

४६६४ प्रतिसं०२ । पत्र सं०४ । ले॰ काल सं०१६३७ चैत्र बुदी २ । वे॰ सं० ३०० । इ. अथवार ।

४६६४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १। ने० काल ×। वे० सं० ३००। ज मण्डार।

४६६६, दशक्कमुयापूजा''''''। पत्र सं∗ ३४ । सा० १२३/४७६ ह'व । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० कास × । ने० काल सं० ११४४ । पूर्ण । वै० सं० ५८८ । च भण्यार ।

विशेष---इसी अण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ १८१) और है।

४६६७. प्रति संव २ । पत्र संव २५ । लेव काल संव १६३७ । वेव संव ३१७ । च मण्डार ।

४६६६. दशस्त्रस्यपुर्वा''''''। पत्र सं ० ३ । झा० ११ \times ५ दंव । जावा–हिन्दी । विषय–पूत्रा । र० कास \times । ने० कास \times । प्रपूर्वी । वे० सं० १६२० । ट सम्बार ।

विशेष-स्थापना वानतराय इत पूजा की है ब्रष्टक तथा जयमाला किसी प्रन्य कवि की है।

४६६६. दशाक्षच्यासंदक्षपूर्वा'''''''। पन सं∘ ६३ । सा० ११६,४५३ इंच । माषा-हिन्दी । विषय-द्वना । र० काल सं० १८६० चैत्र मुसी १३ । ते० काल ४ । पूर्ण | वे० सं० ३०३ | इक्रमण्डार ।

४७००. प्रति सं० र । पत्र मं० ५२ । ने० काल 🗴 । ने० सं० ३०१ । 🖝 भण्डार ।

४७०१. प्रति संट ३ । पत्र सं० ३४ । ते० कार मं० १६३७ भाववा बुदो १० । वे० सं० ३०० । क्र

४००२. दशस्त्रक्षमुक्ताभ्युकालस्याम्-सुम्रतिसागर्। पत्र सं० २२ । सा० १०३४४ इंच । मात्रा–संस्कृतः । विषय–पूत्रा। र०काल ४ । ले०काल सं० १०६६ भावता सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । का मण्डार ।

१७०३. प्रति सं०२। पत्र सं०१४। ले० काल सं०१८२६। वै० सं०४६८। द्या अण्डार।

४७०४. प्रति सं०३। पत्र सं०१३। ने०काल सं०१८७६ झासोज गुरी १। वे० सं०१४६। च्याप्तार।

ाः विशेष-सदासुस बाकलीवाल ने प्रतिसिपि की बी।

४७०४. दशक्क स्वाचानतीयापन — जिनच स्तुरि । पत्र संग्रेष्ट – २४ । झा० १०२०४. इ'व । साया-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । के०काल ४ । कपूर्वा । वै० संग्रेष्ट । इस्सायार ।

४८०६. व्हालक्ष्यान्नतेषापन--- मक्किश्वया । पत्र सं० १४ । बा० १२३%६ इ'व । भावा-संस्कृत । विषय-पूजा । १० काल X । ते० काल X । पूर्ण । वै० सं० १२६ । क्ष अस्वार ।

४७०७. प्रति सं २ । पत्र सं • १६ । ले० काल × । वे० सं० ७५ । म्ह अच्छार ।

४७.स. द्राक्षच्यास्तोद्यापनः.....। पत्र सं० ४३। सा० १०८५ ६'च । जावा-संस्कृत । विवय-पूजा। र०कान 🗙 | ने०कान 🗙 | ने०कान 🗶 | ने०कान 🗶 सम्बद्धार |

विशेष---मण्डमविधि भी दी हुई है।

मण्डार ।

४००६. दरासक्याविधानपूजाः'''''। वत्र सं० ३० । सा० १२३,४८ ६ व । आया-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७ । छ। सण्डार ।

विशेष-इसी मण्डार में २ प्रतियां इसी वेष्ट्रन में घीर है।

% ७१०. देवसूजा— इन्द्रतनित् योगीन्द्र । पत्र सं०४ । झा० १० र्रं,४४ इ.च । आया-संस्तृत । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं०१६० । च मण्डार ।

प्र-९१. देवपूजाः'''''|पत्र सं०१२ |सा० ६२,४४३ इंब | श्रत्या–संस्कृत | विषय-पूजा।र० काल × |से० काल × |पूर्ण |वे० सं०१ वर्ष ३ | अर्थणार |

४७१२. प्रति सं०२ । पत्र सं०४ से १२ । ले० काल ४ । म्रपूर्ण । वे० सं० ४६ । घ भण्डार ।

४७१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २०५ । अ अण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०६) और है।

४७१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । च अण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० १६२, १६३) ग्रीर है।

४७१४. प्रशित सं०४ । पत्र सं०६ । ले० काल सं० १००३ पीप बुवी ८ । वे० सं०१३३ । ज अण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १६६, १७८) ग्रीर है।

प्र•१६. प्रति सं०६ । पत्रः सं०६ । ले० काल सं०१६५० प्रायादः बुदी १२ । वै० सं०२१४२ । ट

विशेष--छीतरमल बाह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

४०९७. देवयुजाटीका''''' । पत्र सं० व । सा० १२४५३ र व । ाया—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले⊸ काल स० १नन६ । पूर्ण । वे० सं० १११ । छः भण्डार ।

४७१म. देवयूजाभाषा—जयचन्द छःबड़ाः पत्र सं०१७। घा०१२×११ इंचः भाषा-हिन्दी गद्यः।विषय-पूत्राः र०कालः ≾ाले०काल सं०१८४३ कार्तिक मुदी दः।यूर्णः।वे०सं०११९। द्याभण्डारः।

४७१६. देवसिद्धपूजा''''''। यत्र सं०१४ । झा० १२×४१ दंव । भाषा–संस्कृत । विषय–पृष्टा । र० र०कान × । ते०काल × । पूर्ण । वे० सं०१४१ । च भण्डार ।

विशेष-इसी वेष्टन में एक प्रति और है।

४७२०. द्वादराव्रतपूजा—पं० काओदेव । पत्र सं० ७ । मा० ११×१ इ'च । सावा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । से० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८४ । का मण्डार । ४७२१. द्वावरात्रतोषावनपूजा—देवेल्द्रकीसिः। यच सं० १६। मा० ११.४५३ र व । मावा-संस्कृत । विषय-ंजा । र० काल सं० १७७२ साम बुदौ र । ते० काल 🗴 । पूर्वः । वे० सं० ५३३ । 🖼 मण्डार ।

प्रथम् . प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० कास × । वे० सं० ३२० । अ अध्यार ।

४७२३. प्रति सं०३। पत्र सं०१४। ते० काल ×। वे० सं०११७। इद् भण्डार।

४७२४. द्वादशक्तोधापनपुजा---पश्चानिव । यत्र खं॰ ६। द्वा॰ ७३४४ दंव । वाषा--संस्कृत । विषय--पूजा । र॰ काल ४ । के॰ काल ४ । पूर्ण । वे॰ सं॰ ५६३ । द्वा वण्डार ।

४७-४. द्वादरावतोद्यापनपूत्रा—स० जगतकीत्ति । पत्र सं० १। वा० १०३%६ इत्र । नाषा— संस्कृत । दिषय-पूजा । २० काल × । के० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४६ । च अण्डार ।

४०२६. द्वादशक्तोद्यापन $\cdots \cdots$ । पत्र सं० ४ । मा० ११है \times ४२) इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—यूजा । र० काल \times । ले० काल सं० १८०४ । यूर्ण । वै० सं० १३४ । क्र मण्डार ।

विजेष---गोर्धनदास ने प्रतिलिपि की बी।

४७०७. द्वादशांगपूजा—ढाख्राम । पत्र सं० १६ । मा० ११×६६ इ.च । वाषा-हिन्दी । विवय-पूजा । र० काल सं० १८७६ उन्नेष्ठ सुदी ६ । ले० काल सं० १६६० मावाद बुदी ११ । पूर्ण । वै० सं० ३२४ । क भण्यार ।

विशेष---पन्नालाल चौभरी ने अविक्रिपि की बी।

प्र•९म. हानदारागपुत्रतः''''''। यत्र सं० मा था० ११३,४५२ इ'व । मावा-हिन्दी । विवय-पूजा | र० काल ४ । ते॰ काल बं॰ १८मध् माथ सुधी १५ । पूर्ण । दे० सं० ४६२ ।

विशेष-इसी वेष्टन में २ प्रविद्धां और हैं।

४४२६. द्वाद्यांग्रीया''''''। यन संग्रहामा० १२×०१ इंचा न्नाया—संस्कृत । विषय—यूजा । रुकात ×ायेक काल ×ायूर्सावेक संग्रहाइक सम्बद्धार ।

विशेष---इसी अध्यार में एक प्रति (दे० सं० ३२७) और है।

४८३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ते० काल 🗶 । दे० सं० ४४४ । का सम्प्राद ।

४७३१. घर्मणकपूका—यहो।लब्दि । पण सं० १६ । सा० १२४४३ इ.च.। इस्ला–संलक्ष्यः । विषय— पूजा । र०काल × । ते०काल × । पूर्णा १० सं० ११६ । इस जब्दार ।

४७२२. प्रति सं० २ । वच सं० १६ । ते० कास सं० १६४२ कायुष्य सुदी १० । वै० सं० स्ट । सा भव्यार ।

वियोग----पश्चानास जोवनेर वाले ने प्रतिसिधि की थी।

४४३३. धर्मचकपूजा—साधुरसाम्रहा। पत्र सं० ८ १ मा० ११८४६ इ.च.। भाषा सस्कृत । विवय-पूजा। र० काल × । ले० काल सं० १८८१ चैत्र सुदी ४ । पूर्ता । वे० सं० ४२८ । का वण्डार ।

विशेष--पं० खुशालचन्द ने जोधराज पाटोदी के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी।

४७६४. धर्मण्डसपूजा.....। पत्र सं०१० । सा०१२८४५ द्वांव । आवा-संस्कृत । विषय-पूजा । रं•काल × । ले॰काल × । पूर्ण । बै०सं०५०६ । इदा सम्बदार ।

% ७३६४. स्वजारोपस्"""। पत्र सं०११ । झा०११×५३ इ'च। भा∷ा–संस्कृत । विषय–पूजाविधान) इ.क. काल × । ते० काल × । पूर्ण । वै० सं०१२२ । इट मण्डार ।

४७६७. ध्वजारोपस्यविधि—पं० काशाधर। पत्र सं० २७। झा० १०४४ रू इंचा भाषा-मंस्कृत। विवय-मन्दिर में ध्वजासमाने का विधान। र० काल ×ा ले० काल ×ा श्रुप्तं। खुभण्डार।

8७३६. व्यजारोपस्यविश्विः \cdots ा पत्रः सं० १३ । सा० १० χ ४ χ^2 इंदः । प्राया-संस्कृतः । वय-विषय-मन्दिर में स्वजा लगाने का विधान । २० काल \times । ले० काल \times । पूर्ताः। वे० सं० । इस प्रधार ।

विशेष-इसी मण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४३४, ४८८) और हैं।

४७३६. प्रति सं २ । पत्र सं० ८ । ते० काल सं० १६१६ । वे० सं० ३१८ । ज भण्डार ।

४७४०. ध्यजारोहस्यविधि ******* । पत्र स०द । सा०१०६४७३ इंच । प्राया-संस्कृत । विषय-विषात । र•काल ४ । ले०काल सं०१६२७ । पूर्ण । वे०सं०२७३ । ऋ सण्डार ।

४७४१. प्रति सं०२ । पत्र सं०२ - ४ । ले० क.ल × । झपूर्ण । वै० सं०१८२२ । ट अण्डार ।

प्रेरुप्तर, नन्दीन्धरत्यसाला****** पत्र सं०२ । सा०१५ ४४ दक्षा । शाया-सपभंत । विषय-पूजा । र०काल × । ते० काल × । पूर्ता । वे०सं०१७७६ । ट संश्वार ।

क्षे∿क्षरे. नन्दीर्श्वरवादाला मा पत्र सं०३। सा०११% ५ दश्च। भाषा-संस्तृत । विषय-पूजा । र०काल × । ते०काल × । पूर्ण । वे० सं०१ с७० । ट सम्बार ।

अध्येश्वे सन्दीकरहीयपूका—रझनिन् । पत्र सं०१०। सा०११३४५, दश्च । प्रावा-संस्कृतः । विवय-पूजा। र०काल × । ते०काल × । पूर्णं। वै०सं०१६०। च भण्यार । विवय-मृति ग्राचीन है। े प्रश्नेष्ठ, प्रश्निस्तं २ । पत्र सं०१०। ते० काल सं०१८६ प्रापाढ बुदी ३। वे० सं०१८१। च अच्छार।

विजेय---पत्र बुहों ने सारसे हैं।

४७४६, लम्ब्री-कंटद्वीयपूजा''''''। यम सं०४ । या० म×६६क्रा । माषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ते०काल × | पूर्णा | वै०सं०६०० । का सम्बार ।

विशेष--जयमाल प्राकृत में है। इसी भण्डार में एक मपूर्ण प्रति (दे० सं० ७६७) और है।

४७५७. तन्दीस्प्रद्विष् χ आ—सङ्गला। पत्र सं० ३१। सा० १२४७ रंब। बाधा-हिन्दी। विषय— कृता। र० कास imes से० काल सं० १८०७ पीव बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० १८६। च अच्छार।

४७४८. नन्दीश्वरपंक्षियुवा***** । तत्र सं० १। बा० ११४५६ इ.च. । भाषा-संस्कृत । विषय-पूत्रा । २० काल ४ । ने० काल सं० १७४६ मादवा बुदी १ । यूर्ण । वे० सं० ५२६ । छ अच्छार ।

विशेष---इसी अण्डार में एक प्रांत (वे० सं० ५५७) कौर है।

४७४६. प्रति सं०२। पत्र सं०१६। ले० काल 🗴। वे० सं०३६३। क मण्डार।

४७४०. नन्दीश्वरपंकितृता™ ""। पत्र तं० ३ । ग्रा० १०३८ ४६ दंब । माया–हिन्दी । विदय–पूजा । र० काल × । ते० काल × | ग्रपुर्स | वै० तं० १८८३ । क्या सम्बार ।

४७४१. जन्दीसरपूजा......। पत्र सं०१ । घा० ११×४ इंच । घाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं०४०० । व्य बण्डार ।

विमोच---इसी अम्बार में ३ प्रतियां (वे॰ सं॰ ४०६, २१२, २७४ ले॰ काल सं॰ १६२४) भीर हैं।

४७४२- नन्दीन्यस्प्रज्ञाः''''। यच सं०४। झा० स्ट्रे×६ इंच। भाषा प्राकृत। विषय-पूजा। र० कुल्लान ४। ले० काल ४। पूर्वा दे० सं० ११४२। इस नम्बार।

४७१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ने० कास 🗴 । वे० सं० ३४८ । 🖝 मण्डार ।

४७६४. नन्दीसरपूताः****ः वयः सं० \times । सा॰ १ \times ७ इंयः। वाया-स्वयक्षं सः। वियस-पूजाः। र० काल \times । पूर्णः। वे॰ सं० ११६ । ह्य प्रव्यारः।

विक्रेय-सक्तीयन्य ने प्रतिलिपि की थीं । संस्कृत में पर्यायवाची शस्य दिवे हुये हैं ।

४७४४. नन्दीश्वरपुत्रा......। रच र्तः ११। झा० ६२×४६ इ.च । बाला-संस्कृत, प्राहृत । र० काल ×। के० काल ×। पूर्ण । वे० सं० ११६। ख प्रच्यार ।

. इंग्लेट्स. सम्बन्धियरपूजाः ***। वच तं० २०। वा० १२%८ इ'च । वावा-हिन्दी । विरय-दूबा । र० काल 🗶 । ते० नस्य तं० १६६१ । दूर्व । वै० तं० २४६ । क पच्चार । ४७४७, नम्दीसरअक्तिआवा — पक्तालाल । पत्र सं० २६। झा० ११ई×७ इंच । बाया-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १६२१ । ले० काल सं० १६४६ । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । क्र अण्डार ।

४०५४ म. नम्दीश्वरविधान — जिनेश्वरदासः । पत्र स०१११। म्रा०१३ ४० दुरंब । आया-हिली । विषय-पूजा। र०काल सं०१६६० । ले०काल सं०१६६२ । पूर्णावे० सं०३५० । इस्मण्डारः ।

विशेष--लिखाई एवं कागज में केवल १५) रु० सर्च हुये थे।

४७४६, नम्दीखरव्रतोद्यापनपूजा—नन्दिषेत्। तत्र सं०२०। बा० १२६४६३ ६८। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण । वे० सं० १६२। च भव्दार ।

४७६०. नम्दीश्वरस्रतोद्यापनपूत्रा— घनन्तकीर्ति। पत्र सं∘१३ । घान् प्≟४४ इ'च। धारण-संस्कृत। दिवय-पूत्रा। र० काल ४ । ले० कान सं०१ दप्र७ घागद दुरी ३। घपूर्ण। वे० सं० २०१७ । ट पण्डार।

विशेष--वृसर। पत्र नहीं है। तक्षकपुर में प्रतिनिधि हुई थी।

४७६१. नन्दीश्वरस्रतीधापनपूजाः***। पत्र सं० १। द्वा० ११२,४६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७ । छ भण्यार ।

४७६२. नन्दीश्वरस्रतोद्यापनपूजाः । पत्र सं० २०। सा० द≾६ इ'च । साथा—हिन्दी । विषय— पूजा । र० काल × । ते० काल सं० रेटद६ भारता मुती द । पूर्ण । वे० मं० ३५१ । क भण्यार ।

विशेष-स्योजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी।

४७६६. नम्दीसरपुत्राविधान—टेकचन्द् । पत्र सं०४६ । झा० ८६०४६ ह'च । बाधा–हिन्दी । विकय-पूता । र०काल ४ । ले०काल सं०१८८५ सावन सुरी १० । पूर्ण । वे० सं०१७८ । ऋ वण्यसर ।

विशेष-फ्लोहलाल पापड़ीवाल ने जमपुर वाले रामलाल पहाड़िया से प्रतिसिपि कराई थी।

४७६४ नस्दूससीवितोद्यापनपूजा " " । पत सं०१० सा० स×४ इंच । बाला — बंस्कृत । विषय— पूजा । र०काल × । सं०काल सं०१८४७ । पूर्छ । वे० सं०५६२ । स्व प्रवडार ।

विशेष--इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०३) और है।

४०६४. नवमङ्गुद्धाविषान—भद्गबाढु। पत्र सं०६ मा० १०३४४३ वस्त्र । सम्बन्धः संस्कृतः । विषय— दूता । र०काल 🔀 । ने०काल 🔀 । दूर्शः । वे०सं० २२ । अर्थाधारः ।

प्र•६६ प्रति सं०२। पत्र सं०६: ते० काल ×। वे० सं०२३। जा शक्सार।

विशेष—प्रथम पक पर नवयहका नित्र है तथा किस यह ग्रिशांति के लिख् किस की वें कुर की पूजा करनी वाहिए, यह लिसा है। MAKIE !

प्रकरिक, लवसहयूजाः....। पत्र सै॰ ७ । झा॰ ११३ \times ६३ दश्च । जादा-संस्कृत । विदय-पूजा +र॰ काल \times । ले॰ काल \times । दुर्ग । वै॰ नं॰ ७०१ । का सम्बार ।

विशेष—हसो अच्छार में प्रप्रतियां (वै० सं० ४७४, ४६०, ४७३, १२७१, २११२) ग्रीर हैं। ४७६=. प्रति सं०२। पत्र सं०६। ते० काल सं०११२२ ज्येष्ठ दुवी ३। वै० सं०१२७। ख्र

विशेष-इसी मण्डार में ४ प्रतियो (वे॰ सं॰ १२७) भीर हैं।

४७६६. प्रति सं०३ । पत्र सं०१२ । ते० काल सं०१६८८ कार्तिक बुदी ७ । वै० सं०। २०३ अ भग्दार ।

विशेष-इसी अण्डार में ३ प्रतियां (वे॰ सं॰ १८४, १६३, २८०) श्रीर हैं।

४७७०, प्रति संव ४। पत्र संव ६। लेव काम 🗴 । वैव संव २०१५ । द मण्डार ।

५००१. सवसङ्ग्रह्मा $\sim\sim\sim$ । यन सं॰ २१। सा॰ १×६२ इंच । वासान्हिन्दी। विषस \sim पूजा। र॰ कान \times । ते॰ कान \times । सपूर्ण। वे॰ सं॰ १११६। का सप्टार।

विसेष--इसी सण्डार में एक प्रति (वै० सं० ७१३) ग्रीर हैं।

४७७२. प्रति सं०२। पत्र सं०१७। ले॰ काल ×। वे॰ सं०२२१। ह्या अण्डार।

४७७३. नित्यकुत्यवर्धानः'''''''''' दर सं० १०। झा० १०३,४६ इष । आया-हिन्दी। विवय-नित्य करने योग्य दुशा राठ हैं। र० काल ४। ले० काल ४। सदुर्ल। वै० सं० ११६६। इस बंबदार |

विशेष---देरा प्रष्ठ नहीं है।

प्रथ्यप्र. सित्यक्रिया *** ***। पत्र सं० ६६ । सा० द्रॄं×६ इ'व । भाषा संस्कृत । विवय-नित्य करने **वेशस्य प्रया पाठ । र० कास × । ते० कास × । सपूर्ण । वे० सं० ६६९ । क्य वच्छार ।

विशेष--- मित संशित दिन्दी वर्ष सहित है। ३४,६७, तथा ६० से वाले के पक नहीं है।

४००१. नित्यनियमपूर्वाः**** । वय गं० २६। वा० ६×१ इंच । व्ययस-संस्कृत । विकास-पूर्वा । ए० काल × । वे० काल × । वूर्ण । वे० गं० २०५ । क्र वस्तर ।

विसेष--इसी अण्डार में २ प्रतियां (वे॰ सं॰ ३७०, ३७१) और हैं ।

प्रकार, सनि संव २३ वर्ष सं० है० । ते० काल × । वै० तं० ३६७ । व प्रकार ।

विरोध-- इसी जव्यार में प्र विरोध (है॰ सं॰ १६० से १६६) बीर है।

boss. प्रति सं० के | पण सं० १० | तेन काल सं० १०१३ । केन सं० १२१ | अ अकार |

```
्रिजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य
           ४७०८. नित्थनियमपुत्रा'''''''। पत्र सं० १४ । ग्रा० १०×७ इ'व । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-
पुषा | र॰ काल × | ते॰ काल × । पूर्ण | वै॰ सं॰ ७१२ । का मण्डार |
           वियोच-इसी अध्वार में २ प्रतियां ( वे॰ सं॰ ७०८, १११४ ) भीर हैं।
           अक्ट. प्रति संव २ । पत्र संव २१ । लेव काल संव १९४० कार्तिक बुदी १२ । वेव संव ३६८ । क
           विशेष--इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ३६१ ) झीर हैं।
           प्रथम् , प्रति सं ३ । पत्र सं ० ७ । ले ० काल सं ० १६५४ । वे० सं० २२२ । छ मण्डार ।
           विकोच-इसी भण्डार में ४ प्रतियां ( वे॰ सं॰ १२१/२, २२२/२ ) भीर हैं।
           ४७८१. नित्यनियमपुजा-पं० सदासल कासलीवाल । पत्र म० ४६ । आ० ६३×६३ इछ । भाषा-
हिन्दी गद्य ! विषय-पूजा । र० काल सं० १६२१ माघ सुदी २ । ले० काल सं० १६२३ । पूर्मा । वे० सं० ४०१ । स्त्र
          अब्दर. प्रति सं० २ | पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६२८ सावन मूदी १० | वे० सं० ३७७ । क
           विशेष-इसी मण्डार में एक प्रति (वै० सं० ३७६) भीर है।
           ध्रध्य-३. प्रति सं०३। पत्र सं०२६। ले० काल सं० १६२१ माघ सदी २। वे० सं०३७१। इस
           विश्लेष-इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ३७० ) और है ।
           ४७८४. प्रति सं ८४। पत्र सं ०३५ । ले० काल सं० १६५५ ज्येष्ट सुदी ७ । वे० सं० २१४ । छ
          ४७८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । वे० सं० १३० । स्क अण्डार ।
          विशेष-- इसका पूदा बहुत सुन्दर एवं प्रदर्शनी में रखने बोस्य है।
          अध्यद्द. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४२ । ले॰ काल सं० १६३३ । वे॰ सं० १८६१ । ट अध्यार ।
          थ•द•. नित्यनियमपुत्राभाषा"""। पत्र सं० १६। मा० द३×७ इ'स । भाषा-हिन्दी । विवय-
ूका। र० काल 🗴 । ले० काल सं० १९९५ मादवा सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ७०७ । द्वा भण्डार ।
```

248

संबद्धार ।

भण्डार ।

भक्टार ।

मण्डार ।

MURIT !

विवोध---पत्र फटे हये एवं जीर्स है।

के समय का बनाया हुया भवन है।

४७८६. प्रति संट २ । यत्र संट २८ । ते॰ काल X । पूर्ण । वे॰ संट ४७ । वा मण्डार । विशेष---जयपुर में गुक्रवार की सहेशी (संगीत सहेली) सं॰ १९५९ में स्थापित हुई वी । उसकी स्थापना प्रकेटक. प्रति सं० है। पर्व सं० १२। ते० कास सं० १९६६ प्रावना बुदी १३। वे० सं० ४८। वा सन्दार।

> प्रथ5. प्रति सं० ४। पत्र सं० १७। ते० काल सं० १६६७। ते० सं० २६२। का प्रधार। प्रथ5. प्रति सं० ४। पत्र स० १३। ते० काल सं० १६६६। ते० सं० १२१। वा प्रधार। विशेष- पं० मोतीलालजी सेठी ने गरी यसोदालन्दनी के मन्तिर में चढाई।

४७६२. नित्यनैमिषिकपूजापाठसंमहः''''''''''। पत्र सं०५६ । झा०११×५ इंच। माषा-संस्कृत, हिन्दी। विषय-पूजापाठ। र०कान × । ले०कान × । पूर्छ। वे०सं०१२१। इस मण्डार।

४७६६. लिख्यपूत्रासंग्रहः*****। पत्र सं०६ । झा० १०४४६ इक्का । भाषा-संस्कृत, सपश्रं स । विषय-्रकृत, कृषा । र० काल × । से० काल × । पूरी । वै० सं० १७७७ । ट मण्डार ।

४७६४. जित्यपुत्रासंमह ** ** । प्रांत १ $\frac{1}{2}$ \times १ इंब । जाया-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल \times । ते० काल \times । पूर्श । वै० यं० १६६ । च सण्डार ।

४७६५. प्रति संट२। पत्र सं०३१। ले॰ काम सं०१६१६ बैशास बुदी ११। वे॰ सं०११७। ख मण्यार।

४७६६. प्रति सं०३। पत्र सं०३१। ले० काल ×। वे० सं०१८६८। ट भण्डार।

विषय—प्रति भुतसागरी टीका सहित है। इसी मण्डार में २ प्रतियां (वैं० सं० १६६४, २०६६) मीर हैं।

विक्षेष---इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे॰ सं० १८३, १८४) और है।

and the thirty and the back of the control of

४७६६. निस्यपूजासंब्रह......। पत्र सं० ३६। बा० १०३ू×७ इंच। भाषा—संस्कृत, हिन्दी। विषय— पूजा। र० काल ×ा ते० काल सं० १९४७। धपूर्ण। दे० तं० ७११। द्या मण्डार।

विशोष---पण सं०२७, २८ तथा ३५ नहीं है कुछ पण भीग गड़े हैं। इसी जण्डार में एक प्रति (दे० सं०१६५२) और हैं।

थ्रम०२. जिल्लापुला'''''''''''। यह संव १४ । ब्राव १२×५३ इ.च । ब्रावा-हिन्दी । विवय-पुत्रः । र० काल × । ते० काल × । पूर्ता । वे० संव ३७८ । इ. जण्डार ।

विशेष—क्सी प्रण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ३७२, ३७४, ३७४, ३७४) भीर हैं।

४००३ प्रति सं०२ । पत्र सं० ८ । ले० काल ४ । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—क्सी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३६४, ३६४) भीर है।

४००४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल ४ । वे० सं० १६३ । च भण्डार ।

४००४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ में १८ । ले० काल ४ । ध्रूर्ण । वे० सं० १६४८ । ट भण्डार ।

विशेष—क्षतिस पृथ्यिका निम्म प्रकार है—

इति श्रीमज्जिनवयने प्रकाशकः संग्रहीतविद्वजनयोधके तृतीयकाण्डे पूजनवर्णनी नाम मध्टीस्थास समात ।

४=०६. निर्वायाकस्यायाकस्याः वत्र सं०२। झा०१२४४ इंच। प्राथा—संस्कृतः। विषय-पूजा। र०काल ४। तेरुकाल ४। पूर्या। वै०सं०४२०। सामध्यार।

४८०७. निर्वासकोबपुत्रा****। पत्रः सं० ४.। प्राःगः दः ४८ इक्षाः प्रापा-संस्कृतः, प्राकृतः। विषय-पूत्राः। रंककालः ४.। तेककालः सं० १९६६ सावसः मुदी ४.। पूर्णः । वेकसं० १९११ । इस प्रस्वारः ।

विशेष---इसकी प्रतिलिपि कोकलचन्द पंसारी ने ईक्वरलाल चादवाड़ में कराई थी।

४८०६. निर्वाशिक्षेत्रसंडलपुत्रा—स्वरूपचन्द्।पत्र तं०१६ । झा० १२४७ इक्ष । भाषा–हिन्ती। विषय–पूत्रा।र० काल सं०१६१६ कालिक बुदी१३। ले०कृत्ल ४। पूर्णावे०सं०४६ । सामस्वरा।

> ४८०६. प्रति सं०२। पत्र सं०३४। ले० काल सं०१६२७। वे० सं०३७६। क मण्डार। विजेष—इसी मण्डार में २ प्रतियों (वे० सं०३७७, ३७६) और है।

४८९०. प्रति सं०३ । पत्र सं० २ ८ । ले० कान सं० १०३४ भीष सुदी ३ । बै० सं० ६०४ । वर्ष अभ्यार।

विकोष---जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी। इन्द्रराज बोहरा ने पुस्तक लिखाकर भेषराज खुहा-दिया के मन्तिर में चढाथी। इसी प्रण्डार में २ प्रतियां (वे॰ सं० ६०४, ६०७) फ्रीर हैं।

> ४८९१. प्रति सं० ४। पत्र सं० २६। ते० काल सं० १६४३। वै० सं० २११। आहु भण्डार। विशेष---पुन्दरताल पाँडे वीधरी पाकसूवाने ने प्रतिनिधि की पी। ४८९२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३१। ते० काल ४। वै० सं० २४४। सा पण्डार।

ध्रद्धार्थः निर्वाशास्त्रेत्रपुत्राः''''''। यत्र सं०११। बा०११×७ दंवः भाषा-हिन्दीः। विषय-पूर्वाः र०काल सं०१८७१ । ते०काल सं०१९६६ । पूर्वाः वे०सं०१३०४ । इस सम्बारः।

चिसोच---इसी मण्डार में ५ प्रतियां (ने० सं० ७१०, ६२३, ६२४, १०६८, १०६६) ग्रीर हैं !

४ मरि%. प्रतिसं०२ । पत्र सं०७ । ले० काल सं०१ मध्यम बुदी ७ । वै० सं०२ ६६ । उद कम्बार । [बुटका साइज]

४८८ १४. प्रति सं०३ । यत्र सं०६ । ले० काल सं० १८८४ मंगीसर बुदी २ । वे० सं०१८७ । आस् भण्यार ।

> ४ म् १६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। बपूर्णा। वे० सं० ६०६। च अध्वार। विशेष — दूसरा पत्र नहीं है।

४८१७. निर्वासपुत्रा*****। पत्र सं० १। मा० १२४४ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल \times । त्रें । वे० सं० १७१० । का अध्वार ।

४६६६. निर्शासपुत्रापाठ—सनर्रशस्त्रास्त्राचाव । यत्र सं०३३। सा०१०६४४३ इंच। प्राया—हिल्दी। विषय-पूत्रा। र०कान सं० १६४२ प्राववा बुदी२। ने०काल स० १६६६ वैत्र बुदी३। वै० सं०६२३ आद भण्डार।

४८११. नेसिनाअपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति । यज सं० ४ । या० ६ \times १३ १ द्या । आया-संस्कृत । विवय-पूजा । र०काल \times । ते० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ४६४ । व्या सम्बार ।

प्रद \circ . नेश्विमाश्चपूजा \cdots । पत्र सं० १ । बा० ७ \times ५३ रख । जाया-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल \times । सं० काल \times । पूर्व । कै० सं० १३१४ । खा जण्डार ।

४८२१. नेमिनाथपूजाष्टक—संभूराम । पत्र सं०१ । झा०११६४४३ इ'व । जावा-संस्कृत । विषय— पूजा । र०काल × । ते०काल ×। पूर्ण । वे० सं०१८४२ । इच जण्डार ।

४८२ ४. नेमिनायपूर्वाष्ट्रकः राप्तान सं०१। ग्रा० ६३,४५ इ.च.। जाया-हिन्दी। विवय-पूर्वा। र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्ण। वै० सं०१२२४ । इदा सम्बार।

४=२३. पक्ककस्यायाकपूजा--- सुरैन्द्रकीर्षि । पत्र सं० १६ । सा० ११३/४६ इंच । जाया--संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । से० काल × । पूर्वा । वै० सं० १७६ । क जच्छार ।

> ४८२४. प्रति सं० २ : पन सं० २७ । ते० काल सं० १८७१ । दे० सं० १०६७ । छा जव्यार । ४८२४. पद्माकल्यास्यकपुत्रा—शिवजीकाकः। पन सं० १२१ । का० ८४४ इ.च. । जाया-संस्कृतः।

विषय-पूजा : ए० काल × । के० काम × । पूर्व : दे० छं० १११ । आ अध्यार ।

A Care la contra la como de la Compaña de la como

कोर है।

४८६६. पञ्चकत्यास्यकपुत्रा—कारुणसिंग् । पत्र सं० ३६ । बा० १२४८ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १६२३ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० २४० । ला मण्डार ।

४८२७. पद्धकल्यासाकपूजा—गुराकीर्ति । पत्र तं० २२ । झा०१२×५ इ'व । भाषा–संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल १९११ । पूर्त । वे० सं० ४४ । दा भण्डार ।

४८२२ - पद्धकरूपास्यक्पूजा—वादीभसिंह।पत्र सं०१८। झा०११४५ इ'च। भाषा–सस्कृत। विषय—पूजा।र०काल ४।ले०काल ४।पूर्सावे०सं०५८६।इस मण्डार।

प्रद**्य. पञ्चकल्यास्यकपूजा— छुदशकीति ।** पत्र सं० ७-२६ । घा० ११३/५ इ.च । भाषा-रस्कृत । विवय-पूजा । र० काल 🗴 । के० काल 🗴 । घपूर्स । वे० सं० ४.५५ । द्या भण्डार ।

प्रद**ेः पञ्चकत्यायाक्युला—सुधासागर**ाषत्र सं०१६ । द्वा०११×४३ इ'व । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०६ । इक मण्डार ।

ध्य-देशै. पञ्चकल्यास्यकपूत्राः''''। पत्र सं० १० । झा० १०३४४३ इखा। आषा-संत्रुत। विषय— पूजा। र० काल × । कें० काल सं० १९०६ भारदा सुदी १० । पूर्णी | वै० उं० १००७ । का भण्डार ।

४८६२. प्रति सं०२ । पत्र सं०१०। ले० काल सं०१६१६। वै०सं०३०१। स्न मण्डार। ४८६२. प्रति सं०३ । पत्र सं०७ । ले० काल × । वे०सं०३६४ । इरू मण्डार।

विकोष — इसी भण्डार मे एक प्रति (वै० सं० ३८५) और है।

४८६४ प्रतिसं•४ । पत्र सं०२२ । ले०काल सं०१६३६ साक्षोत्र मुदी ६ । सपूर्णा । वे०सं०१२५ इत्र अध्यक्षार ।

विशेष-इसी मण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० १३७, १८०) और है।

४=३४. प्रति सं०४ । पत्र सं०१४ । ले० काल सं०१६६२ । वे० सं०१६३ । च भण्डार ।

प्रेम्पेर. प्रति सं०६ । पत्र ि०१४ । ले० काल सं०१८२१ । वे० सं०२३६ । स्मण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं०१५५) ग्रीर है।

४८३७. पञ्चकल्याग्रकपूत्रा—कोटेलाला । सत्तकः । पत्र सं०१६ । आ०११४५ इ.च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-पूजा र० काल सं॰ १६१० भाववासुसी १३ । ले० काल सं० १६५२ । पूर्ण। वे० स० ७३० । इस मण्डार । विषोद — खोटेलाल बनारस के रहने वाले वें। इसी मण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६७१, ६७२)

४८-२८. प्रज्ञकल्यासक्युजा—क्यचन्त् । पत्र सं•१०४। सा० १२४६। भाषा–हिन्दी। विषय– पूजा। र० काल 🗡 । ले० काल सं०१८६२ । पूर्सा। वे० सं० ४५७ । स्र अवहार।

४८३६. प्रश्नक्वाश्वकपृता-देकचन्द । पन तं० २२ । मा० १०३×१३ ६ च । माना-हिन्ती । विषय-पूजा ! र० काल सं० १८८७ । ते० काल 🗙 । पूर्ती । वै० सं० ६६२ । 🛍 मण्डार ।

विमोध-श्रेमी मण्डार में २ प्रतियां (दें क्रं १०८०, ११२०) और हैं !

४८४०. प्रति सं०२। पत्र १०२६। से॰ काल सं०१६१४ चैत्र सुदी १। वै॰ सं॰ १०। श

भण्डार ।

४८४१. प्रति संव ३। पत्र सं । २६। लेव काल संव १६४४ माह बसी ११। वेव संव ६७। प

मण्डार ।

विशेष--- किशनलाल पापड़ीवाल ने प्रतिलिपि की बी। इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७)

धीर है। अवदार ।

धम्प्रयः प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३ । ते० काल सं० १६६१ व्येष्ठ सुरी १ । वै० सं० ६१२ । व

प्रदर्भ. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २१४ । छ अण्डार ।

विशेष-इसी वेष्टन में एक प्रति और है।

४८४४. प्रति सं० ६। पत्र सं० १६। ते० काल ×। दे० सं० २६८। ख अण्डार।

४८४४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० १२० । ऋ अवहार ।

प्रदाप्त . प्रति संव द । पत्र संव २७ । लेव काल संव १६२६ । वेव संव ५३६ । का अवहार ।

४८४७. पञ्चकल्यामुकपुत्रा--पन्नासासा । पत्र सं ० ७ । मा० १२×८ ईव । मावा-हिन्दी । विवय-ूजा। र० काल सं० १९२२ । मे० काल 🗙 । पूर्ग । वे० सं० ३८८ । 🛎 अवहार ।

विशेष---नीले कागडों पर है।

ध्रदक्षद, प्रति सं०२। पत्र सं० ४१। ले० काल × वै० सं० २१४। हा सम्बार ।

विशेष--संबीजी के मन्दिर की पुस्तक है।

४८४६. पश्चकस्यागुकपुत्रा—मैरवदास । पत्र सं० ३१ । या० ११३×० इ'व । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र॰ काल सं॰ १६१० भावना सुबी १३ । ते॰ काल सं॰ १६१६ । पूर्वा । वे॰ सं॰ ६१५ । व्य अवदार ।

र काल 🗙 । मे काल 🗙 । पूर्ण । वे ० र्स ० ६६ । सा मध्यार ।

अद्ध¥ ?. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ते० काल सं० १६३६ । वे० सं० १०० । सा अवसार । अंदर्श प्रति संव है। यह ते प्रव शिक काम XI दे वं के इयह | के अवहार |

विशेष-पूती मन्यार में एक अपूर्ण प्रति (वै० तं ० वेव७) और है।

प्रयादि . प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ते० कात × । ते० सं० ६१३ । च भण्डार । विवेष---इसी भण्डार में एक प्रति (ते० सं० ६१४) प्रोर हैं ।

४८.४. पद्मचेत्रपालपूका—गङ्गादास । पत्र तं० १४। घा० १० \times ६ इंच । बाचा—संस्कृत । विचय-पूजा । र०काल \times । ते० काल \times । पूर्ण । वे० सं० १६४ । का नप्यार ।

४८४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ते० काल सं० १६२१ । वे० सं० २६२ । स अण्डार ।

विवय-पूजा। २० काल 🗶 । ले॰ काल सं० १६३५ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे॰ सं० ४२० । जा अध्डार ।

विशेष--- झाचार्य नेलिचन्द्र के शिष्य पांडे हूं गर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

४-४.म. पद्मपरमेष्टीउद्यापन****** । पत्र सं० ६१ । घा० १२.४१ इ.च । त्रावा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १०६२ | ते० काल 🗴 । पूर्ता | वे० सं० ४१० | कृ मण्डार |

४८४६. पक्षपरनेष्टीसमुबस्यूजा.....। पत्र सं०४। झा० ८३%६ई रंच। प्रापा हिन्दी। विषय-पूजा ! र० कास × । ते० कास × । पूर्ण । वै० सं० १६४३ । ट सण्डार ।

४०६०. पञ्चपरसेष्टीपूजा—स० हासचन्द्र । पत्र सं० २४ । प्रा० ११% ४ इंच । भावा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । के० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७७ । इस भण्डार ।

ध्रम्पदेश, प्रति सं०२ । यत्र सं०११ । ते० काल × । ते० सं०१६६ । च प्रष्टार । ध्रम्पदेश, प्रति सं०३ । यत्र सं०१४ । ते० काल × । ते० सं०१४० । च प्रष्टार ।

४=६३ पद्मापरसेष्टीपूजा— सरो। निदः। पत्र सं०३२। मा०१२×४३ इ'व। मादा—संस्कृतः। विवय— पूजा। र०कातः × संःकाल सं०१७६१ कांत्रिक नुदी ३। पूर्णः। वे०सं० ४३६। ब्रामध्यारः।

प्रमाहर, प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४४ । ते० काल सं० १८०३ मंगसिर बुदी १ । वै० सं० ६८ । व्य धम्महर, प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१ । ते० काल सं० १८३१ । वे० सं० १९७ । व्य प्रमाहर । विशेष—ह्यी प्रमाहर में एक प्रति (वे० सं० १९१) और है ।

and the wholes of

४=६७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३२ । ते० काल ४ । वै० सं० १६३ । स भण्डार ।

प्र=६८ पञ्चपरकेप्दीपूजा***** । पत्र सं०१४ । बा०१२४५ । बावा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० कास ४ । ते० कास ४ । दुर्श | वे० सं०४१२ । कु सच्चार ।

४८६६. प्रति सं०२। यत्र तं०१७। ते० काल तं०१८६२ प्राचाड बुग्रै द। वे० तं० १६२। स्म भव्यार।

४८. प्रति सं० ३। एव सं० ६। ते० काल ×। वै० सं० १७६७। ट मण्डार।

४८७१. पश्चपरसेम्द्रीपृजा—टेकचन्यः । यत्र सं॰ १४ । सा॰ १२×४६ दक्ष । जाया—हिन्दी । विवय-पूजा । र० काल \times । ते॰ काल \times । पूर्यः । वै॰ सं॰ १२० । क्षः सन्दारः

४८.७२. पद्धापरमेप्टीपृजा— डाखुरास । पन सं० ३४ । सा० १०३×६ र व । जागा-हिन्दी । निवय-पूजा । र० काल सं० १८६२ संगतिर हुरी ६ । ते० काल × । पूर्ण । ते० सं० ६७० । का अच्छार ।

विशेष-इसी मण्डार में एक प्रति (वै० सं० १०८१) सीर है।

४८-७३. प्रति सं०२ । पण सं०४६ । ते० काल सं०१८६२ ज्येष्ठ सुदी ६ । दे० सं०११ । स भण्डार ।

प्रयागप्त. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ते० काल सं० १६८७ । दे० सं० ३८६ । क अच्छार ।

विशेष--इसी मण्डार में एक प्रति (वै० सं० ३६०) और है।

प्रदक्ष्यः प्रति संव प्र । वत्र संव ४५ । तेव काल 🗴 । वेव संव ६१६ । 🖷 सम्हार ।

४८७७. प्रति सं० ६। १व सं० ६१ । ते० काल सं० १६१३ । वे० सं० १८७६ । ह जब्बार । विशेष-स्वरूपा में प्रतिलिपि हुई वी ।

४८० ज्ञ. पश्चपरनेष्ठीपूजा """। पत्र तं॰ १६ । शा॰ ११४६६ दंव । बाया-हिन्दी । विषय-दुबा । र॰ काल ४ । ते॰ काल ४ । पूर्ता । दे॰ सं॰ १६१ । क भव्यार ।

> प्रकार. प्रति सं० रे। यम सं० २०। ते० कान ×। दे० सं० ६९७। या वण्यार। प्रकार. प्रति सं० दे। यम यं० २०। ते० कान ×। दे० सं० ६२१। स वण्यार। प्रकार. प्रति सं० ४। यम सं० २०। ते० कान ×। दे० सं० ६१६। या वण्यार। प्रकार. प्रति सं० ४। यम सं० ६। ते० कान सं० १६०१। दे० सं० १७१०। ह मण्यार। विवेद-सानवरात कृत राजस्य कृता भी है।

मण्डार ।

् पूजा प्रतिष्ठा एवं विचान साहित्य

प्टब्द्दर, वे**श्वेबंशस्यतिकृता******** प्रस्तातिक हुए । सार्था हिल्दी । विषय-पूजा । र० कैर्केस X (से० कोस X । पुर्व | वै० सं० २२२ । इड सच्यार ।

रुप्त-४. पञ्चसङ्गलपूजाः'''''''' । यत्र संव २१ | बाव स×४ इक्का | भाषा-हिन्दी । विवस-पूजा । र० कीलं × । केंव कालं × । पूर्ण । वैव संव २२४ | का मध्यार ।

भ्रष्टमः पञ्चमासचतुर्दशीक्रतोद्यापनपृज्ञा—सः सुरेन्द्रकीर्ति । तत्र सं∗४ । सा० ११०० १ १०० व्यास्त्रका स्वास्त्रका विषय-पूजा। र० काल सं० १८२६ शास्त्रका सुदी १ । ते० काल ४ । पूर्णा विषय संवस्त्रका । र० काल सं० १८२६ शास्त्रका सुदी १ । ते० काल ४ । पूर्णा विषय प्रकार स्वास्त्रका स्वास

४८८६. प्रति सं० २ | पत्र सं० ४ | ते० काल × | ते० सं० ३६७ | क मण्डार |

ध्रद्भद्रक. प्रति सं०३ । पत्र सं०१ । ले० काल सं०१ दद्द श्रावल सुदी ७ । वे० सं० १९ द । जा जफार)

विशेष—महास्था शम्प्रनाथ ने सवाई वयपुर मे प्रतिनिधि की थी । इसी अध्वार में एक प्रति (वे० सं० १९६६) भीर है।

४ च्याच्या प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ते० काल × । ते० सं० ११७ । छ प्रवटार । ४ च्याच्या प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ते० काल सं० १०६२ आ वस्य बुदी ४ । ते० सं० १७० । ज

विशेष--जयपूर नगर में श्री विमलनाथ चैत्यालय में ग्रह हीरानन्द ने प्रतिलिपि की श्री।

४८६०. पञ्चमीक्रतपूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ४ । मा० १२ \times ६ै इंच । मावा—संस्कृत । विषय— पुजा । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वै० सं० ६१० । क्यू मण्डार ।

४ म्हरी. पक्कमिन्नतोद्यापन-मन्नी इपेकीस्ति। पत्र सं०७ । मा०११४५ इंच । प्राथा-संस्कृत । विषय-पूत्रा। र०काल ४ । ले०काल सं०१ दहन मासोज सुदी ४ । पूर्ण | वे०सं०३१८ । क भण्डार ।

विशंष-शम्भूराम ने प्रतिलिपि की थी।

अन्द£-र प्रतिसं० र । पत्र सं∘ द । ले० काल सं० १६१५ बासोज बुदी ४,। वै० सं० २०० । चा अच्चार ।

४ मध्दे. प्रतिसंक्षे १ । पर्णलंक्ष्याः सार्वे १०३० १६ व । प्राथा-संस्कृतः । विषय-पूजा। र० काल × । ने० काल तै० १८१२ कॉलिक युत्री थ । पूर्वी । वै० सं० ११७ । क्षु प्रव्यार १

विशेष--गाजी नारायन वार्मा ने प्रतिकिपि की थी।

पूजा प्रतिष्ठा वर्ष विधान साहित्य]

प्रमास प्रमास संघ २ । पत्र संघ ७ । लेंग्काल संघ १६०५ बासीच बुदी १२ । देव संग ६४ । आ सम्बार ।

४=६६. प्रति सं०३। पत्र सं०५। ले० काल ×। वे० सं० ३८८। भण्डार।

४८६७. पद्धक्रियुका—टेकचन्द्। पत्र सं० ३३। सा० १२४८ इक्का नावा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ४। ते० काल ४। पूर्णा वे० सं० ७३२। क्का नप्यार।

> श्रमध्यः प्रति सं०२ । पत्र सं०३३ । ते० काल सं०१ ८८३ । ते० सं०६१६ । आह्र अध्यस्य । श्रमध्यः प्रति सं०३ । पत्र सं०२६ । ते० काल सं०१६७६ । ते० सं०२१३ । आह्र अध्यस्य । विकोष—स्थनभर वालों के वीवारे जयपुर में लिखा गया । कीमत ४ ।॥)

४६००. पद्धानैरुपूजा— सानतराय । पत्र सं०६। सा०१२×४३ इता। वाया—हिन्दी। विषय--पूजा। र०कान ×। ते०कान सं०१६६१ कांत्रिक सुदी द। पूर्ती। वे०सं०४४७। इस प्रव्यार ।

४६०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले॰ काल × । वे॰ सं० ३६५ । सः भण्डार ।

४६०२. पद्धमिरुपूका—भूषरद्वास । पत्र सं० ⊏ । मा० ⊏३४४ इ.च । बाबा–हिन्दी । विषय–पूजा । र०काल ४ । ने०काल ४ । पूर्ला । दे० सं० १६४६ । इस अध्यार ।

विशेष— मन्त में संस्कृत पूजा भी है जो सपूर्श है। इसी प्रण्डार में एक प्रति (वे० सं० १९६०) और है। ४९०३, प्रति सं० २ । पण सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १४६ । इह प्रण्डार ।

विकेष--बीस विरहमान जयमाल तथा स्नपन विधि भी दी हुई है !

४६०४. पञ्चमेरुपूजा---बालुराम । पत्र सं०४४ । बा० ११×५ इंच । जावा-फून्दी । विवय-दूजा । २० काल × । ते० काल सं०१६३० । पूर्ण । वै० सं०४१४ । क मच्चार १

४६०४. पक्कमेरुपूजा— युक्तानस्य । पत्र सं० २२ । मा० ११×५ इंच । माषा–हिन्दी । विषय–पूजा ।' र०काल × । ते०काल × । पूर्ण । वै० सं० ३६६ । इस् भण्यार ।

४६०६, पद्धमेल्पृताः''''' । पत्र सं०२ । सा॰ ११४५३ इ'व । माथा–हिन्दी । विषय– पूजा १ र० काल × । ते॰ काल × । पूर्ण। वे॰ सं०६६६ । इस अथवार ।

> प्रह.०७. प्रति सं०२। पत्र सं०५। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० सं०४८७। वा जव्हार। विशेष--- हसी प्रव्हार में एक प्रपूर्ण प्रति (वे० सं०४७६) प्रोर है।

प्रदेशनः शक्रमेहक्यापनयुवा—अश्रत्मवन्त् । पत्र संश्र्ष्ट । आश्र्र्यः हव । आवा-संस्कृतः विवय-पूर्वा । रश्कास 🗴 १ तेश्कास संश्रुप्त १ प्रश्नापन पुरी ॥ पूर्वा । वेश्सं १ २०१ । व्यापनार ।:

प्रदेशक अति सं व ने । यम सं व व । ते व वाल 🔀 । वे व सं व वह । व मन्यार ।

पृष्किक् पृष्कसम्बद्धियुद्धाः ""। पत्र सुंव ४ । सा० १०३% ४ रंव । साला-संस्कृत ३ विषय-पूजा । र० काल ४ । ते० काल सं० १०६६ । दुर्स । वे० स० ११०४ । व्या सम्बदार ।

विशेष---पद्मावती स्तोत्र श्री है।

प्रश्रृष्ट प्रति सं० १ | पत्र सं० १६ | के० काल × | वे० सं० १२७ । च भग्वार ।

विशेष--पद्मावतीस्तोत्र, पद्मावतीकवव, पद्मावतीपटल, एवं पद्मावतीसहस्रनाम श्री है। झन्त मे २ सन्व

जी विषे हुने हैं। महर्गंध निकाने की विधि भी वी हुई है। इसी अच्छार में एक प्रति (वे॰ सं० २०%) भीर है।

४३.१२. मित्र सं०३ । तत्र सं०१ । ते० काल × । सनूर्ण । वे० सं०१ द० । का भण्डार ।

४६१३. प्रति सं∘ ४ । पत्र सं∘ ७ । ले० काल × । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।

अध. इ. प्रति सं क स । पन सं क स । लेक काल × । वैक सं क २०० । जा मण्डार ।

४६**१४. फहालतीसंख्यपूजा**'''''। पत्र त० ३ । सा० ११×१ ६ व । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० कात × । ते० काल × । पूर्व । वै० सं० ११७६ । का नण्डार ।

विवेय---वांतिगंडल पूजा की है।

5 ६१६. पद्माविशान्तिक"" । पत्र तं० १७ । सा० १०३४५ ६ च । त्राया—संस्कृतः । निवस–पूजा । इ.क. बस्कर ४ । के० काल ४ । पूर्वः । वे० तं० २६३ । इत्र जनवार ।

विशेष---प्रति मुख्यस सहित है।

४६१७. पद्मावतीसहस्त्रज्ञास व पूजा****** पत्र सं०१४। सा॰ १०८७ इंच। माथा-संस्कृत। विकास-पूजा। र० कका ४। ते० कास ४। पूर्व। वे० सं०४३०। इन मण्यार।

४६१.स. परविषयानपुत्रा—ससितकीरिता । पत्र सं०७ । मा० ११.४६५ ह'व । जावा—संस्कृत । विकास-सुका । ए० काल × । ते० काल × । पूर्व । वे० सं० २११ । व्याय-वार ।

विशेष--बुशासवन्य ने प्रतिनिधि की बी ।

४६१६. पस्वविधानपूजा—रह्मनन्दि । पव छ० १४ । या० ११×५ इ'व । धावा—संस्कृत । विषय⊸ दूबा । र० काल × । ते० काल × । दूर्ण । वै० सं० १०६५ । इस गण्डार ।

विशेष--गरसिंहदास ने प्रतिनिधि की थी ।

४६२०. प्रति सं० २ | पत्र सं० १ | के० काल 🗴 | वै० सं० २१४ | च अच्छार |

प्रश्रेष्ट्र, प्रति सं०३ । यम सं०६ । ते० काय त० १७६० वेदास बुदी १ । वे० सं०३१२ । सर सम्बार ।

विचेष--व्यक्त सुद्धर (इं.के. मार्च) के ब्युस्मर्क की कारकीयि के अपने के अविकारि वर्ष की ।

पूर्वा प्रतिष्ठा एवं विचाय साहित्यं]

४६.२६. पश्यविद्यालपृज्ञा—क्षणस्वकीर्षिः । या वं∘ १। बा॰ १९४६ एंव । जाया—संस्कृतः । विद्यत-पुता । र० काल x । ते० काल x । दुर्ख । वे० तं० ४६३ । क तव्यार ।

श्चर २, परुपविधानमृत्राः \cdots ः या॰ १०x। x द क्याः भाषा-संस्कृतः । विषय-पूजाः र० कल्यः x। के॰ कल्यः x। कृतः विषय-पूजाः र० कल्यः x। कि॰ कल्यः x। पूर्वा विषय-पूजाः विषयः x।

प्रदेश, प्रति सं०२ । यथ सं०२ ते र । वे० काल सं०१ तरः । समूर्यः । वे० सं०१०१४ । आय सम्बारः ।

विशेष--- रं० नैनसागर ने प्रतिलिपि की थी।

४६२४. यस्यक्षतीयायत्—भ० द्भुअषम् । पत्र सं• १ । मा० १०१,४४३ इ.च. । माण-संस्कृत । विषय-पुत्रा । र० काल × । ते० काल × । दुर्ख । वे० तं० ११४ । स्त्र अम्बार ।

विशेष-इसी मण्डार में २ प्रतियां (के बंध प्रवर्त २०७) और हैं।

श्रह २६. सक्वोपद्रोत्त्रवाञ्जीक्षिणाःःः। एवः सं० ४ । सा० १९४४ हुँ ५ । पाया-सुंस्कृतः। विषय-वृत्रा एवं उपनास निर्मि । १० सूत्र × । वृत्र स्वस्य × । कुर्तः । वै० बुंक ४ व४ । स्व प्रकारः ।

प्रदेशकः पहलेशिक्तृत्वा-स्वाह कोहर । एव एं० २। छात १०३४६ इ.च । नारा-हिल्पी । विषय-पूजा । र० कान × । ते० कान × । पूर्व । ३० यं० १८० । वर कानार ।

संदेशकः पार्व्यवस्थात् वाः पानाः वदः वदं ४ । बार क्रश्रंदे इतंत्र । स्वयन्तियोः विवयन्त्रवाः इत् काव x । तेरु काव x । युर्वे । देरु तेरु १९३२ । स्व प्रकारः ।

४६२६. प्रति सं० २ । यम सं० १ । से० काल × । बपूर्त । वै० सं० ४६१ । क मण्डार ।

विमोच-इसी अध्वार में ३ प्रतियां (वे० सं० १५६, १६६१, १६०३) और हैं।

प्रकृष्टि प्रति सं० २ । प्रमु सं० ४ १ हे० स्था × । हे० सं० ६२३ । सू प्रसूद्ध ।

अंग्रेड्ड, मिन्न झंट्डिएस इंट्रांचेट करवा चंट १८०८ समेन दूसी है। केट वंट २७। सा सम्बार।

विभेव--वं व देवीसामजी ने स्ववस्थार्थ विभाग से अतिविधि कराई वी ।

प्रदेशे. प्रति संव प्रश्चम संव १४ । तेव बात बंब १९९४ मेर सूती १० । तेव बंब १८०६ । ब

्राः . अध्येष्ट- पुरंतराज्योद्यायन''''''। यत्र सं० ६ । सा० ११×५३ इ'च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । १० काल × । ते० काल सं० १९११ सावाद सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७२ । च मण्डार ।

ध्रदेशः पुष्पाञ्चलित्रतपुजा— भठ रतनचन्द्र। पत्र सं० ४ । बा० १०२ू४७३ इ'च । भाषा—संस्कृत । विकास—पुजा | र० काल सं० १६०१। ले० काल × । पूर्ण | वे० सं० २२३ । च भण्वार ।

विशेष—यह रचना सामवाबपुर में श्रावकों की प्रेरशा से भट्टारक रतनवन्द ने मं० १६८१ में निक्षी थी। ४६३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ने० काल सं० १९२४ प्रासोज मुदी १० । ने० सं० ११७ । स्ट

विशेष--इसी भण्डार में एक प्रति इसी केष्ट्रन में भीर है।

४६३७. प्रति सं०३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० सं० ३८७ । व्य भण्डार ।

४६६८. पुष्पाञ्चलिक्षतपुत्रा— स० ह्युअचन्द्र् । पत्र सं०६ । झा० १०×१ ऽंव । आया-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३ । इय अण्डार ।

४६३६. पुष्पाञ्चलित्रतपूजा*****। पत्र सं∘ ६ । मा० १०×४३, इ.च । माया–संस्कृत प्राकृत । र० काल × । ते० काल सं० १८६३ डि॰ श्रावसा सुवी ४ । पूर्सावे० सं० २२२ । व्यायस्थार ।

ं ४६४८. पुष्पाञ्चलित्रतोद्यापन—पंग्गेगाहासः । पत्र संग्दा साग्दर्भः इंच । आया–संस्कृतः । विषय-पूजा । रुकाल ×) लेग्कल संग्रेरद्दिः । पूर्णावेश संग्रेरद्धाः अरुवारः ।

विणेष—गंगादास महारक धर्मजन्द के शिष्य थे। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३३६) धीर है। ४६४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ते० काल सं० १८८२ प्रासीज बुदी १४ । वे० सं० ७८ । स्न

प्रदेशर-पूजाकिया ''''''। पत्र सं०२। आ०११३/४, इ'व। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा करने की विषि का विषान। र०काल 🗴। ले० काल 🔀 । पूर्ण। वे० सं०१२३। ह्यू अध्यार।

४६४२. पूजापाठसंग्रहः*****। विचय-पूजा। रंग्काल 🔀 । लेग्काल 🗡 । स्मूर्णा । वेश्वसंग्रहः । टमण्डार् ।

विकोष--इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०७८) और है।

४८४४. पूजापाठसंग्रहः*****। पत्र सं∘३८ । ग्रा० ७४४१,३ इ.च.। त्राया–संस्कृतः । विषय–पूजाः । २०काल × । ते०काल × । पूर्णः । वे०नं०१३१८ । इत्र अध्यारः ।

विशेष-पूजा पाठ के प्रत्य प्रायः एक ते हैं। ध्रिषकोय प्रत्यों में वे ही पूजार्ये मिलती हैं, फिर भी जिनका विशेष कप से उत्लेख करना धावस्यक है उन्हें यहां दिया जारहा है।

पूजी प्रतिक्षे देव विश्वीन दिल्ली

प्रदर्शेश. मीत सं० २ । पंत्र सं० १७ । तें ० कील सं० १९३७ । वें वर्षे प्रदे । वी विकार ।

विशेष---निन्न पूजाओं का संग्रह है।

- १. पुष्पदन्त जिनपूजा -- संस्कृत
- २. चतुर्विश्वतिसमुख्यपूर्ण 🙀
- रे, चन्द्रप्रसमुखा
- ४. वान्तिनावपुत्रा
- प्र. मुनियुक्तनाथपूजा
- ६. दर्धनस्तोत्र-पद्मनन्दि
- ६. दर्शनस्तोष-पद्मनन्दि शक्
- ७. ऋषभदेशस्तोत्र 🦸 🤫

प्रदश्च, प्रति सं० ३। पत्र से० १०। से० कॉर्स सं० १ंदर्श किंग वैर्थ कुँची है। वै० से० ४१३। का भण्यार।

विशेष— इसी मण्यार में ४ प्रतिर्वा (वै॰ सं॰ ७२१, ७३३, १३७०, २०१७) बीर हैं। ४६४७. प्रति सं॰ ४। पत्र सं॰ १२०। से॰ काल सं॰ १८२७ वैत्र सुवी ४। वै॰ सं॰ ४०१। इक

ने काम सं १०६५

विशेष---पूजामों एवं स्तोजों का संबह है। श्रद्धांच, प्रति संबद्धाः पण संबद्धाः के काल 🔀 । वैव सेव प्रदेश के संबद्धांका

विशेष--- निम्न पुजार्थे हैं।

भण्डार ।

वेलेक्ष विवा नकतीचीपनंदुवी।	रतेनगीमा	ateá
बृहद्वीडवकारसमूजा		*
वेहिनिनगरतवापनपूजा	_	#
विकास चौबीसीपू षा		মান্তব
चन्दन पहित्रसमूमा	विजयकीति	संस्कृत
पश्चपरमेच्डीपूजा	वसोनन्दि	
angelogie:	रं विश्वीतं	4
वशक्तिविषुवा		
AND CONTRACT	٠ يعين ٠	



श्रेद्रश्रद्ध. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १ से ११६ । ते० काल × । मनूर्ग । दे० सं० ४८७ । क अण्यार । विशेष-सुरुष प्रयागितम्य प्रकार हैं---

जिनसहस्रनाम	-	संस्कृत
षोडशकाररापूजा	श्रुतसागर	"
जिनग्रुग्संपत्तिपूजा	भ॰ रत्नवन्द	"
सार कारपञ्जि विश्वतिकापूजा	-	"
सारस्वतमंत्रपूजा	-	**
धर्मवक्रपूजा		,,
सिद्धभक्षपूजा	प्रभावन्द	5>

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे॰ सं॰ ४७६, ४७६) और हैं।

४६४०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २७ ते ४७ । ते० कात ४ । घपूर्णा वै० सं० २२६ । वा मण्डार । विशेष—सामान्य पूजा एवं पाठों का संग्रह है ।

भ्रद्धश. प्रति सं० ६ । यत्र सं० १०४ । ले० काल × । वे० सं० १०४ । छ मण्डार ।

विशेष-- इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० १३६) और है।

४६४२. प्रति संब ६ । यत्र संब १२३ । ते॰ काल संब १८८४ प्रासीज सुदी ४ । वे० संब ४३६ । स्म मण्डार ।

विशेष---नित्य नैमिक्तिक पूजा पाठ संबह है।

प्रध-१३. पूजापाठसंबद्धः.....। यत्र सं०२२ । बा०१२८० इंच । बादा—संस्कृत हिन्दी । विषय-पूता पाठ । र० कास × । से० काल × । पूर्ण । वे० सं०७२० । इस अध्यार ।

विशेष----नक्तामर, तत्वार्यसूत्र मादि पाठों का संग्रह है। सामान्य पूजा पाठोंकी इसी मण्डार में ३ प्रतियां (वै॰ सं॰ स्वर, १९४, १०००) और हैं !

४६.४४. प्रति सं २ । पत्र सं ० म्हा से० काल सं० १६५३ प्रावाह सुदी १४ । वे० सं० ४६ म । क भवार ।

विशेष—इसी मध्यार में ६ प्रतियां (वे॰ सं॰ ४७४, ४७४, ४८०, ४६१, ४६१, ४६३, ४६३, ४६४, ४६१, ४६२) और हैं।

प्रदेश, प्रति सं० है। यत्र सं० ४५ से ६१। ते० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वे० सं० १६६४ । द अवसार १

```
४६४६. पूजापाठसंग्रहु****** । या सं. ४० । या । १२×६ ्व । मावा-हिन्दी । विषय-पूत्रा ।
ं र॰ काल 🗴 । लैं+ काल 🗴 । पूर्ता । वेव सं+ ७३४ । 🖭 मण्डार ।
               विशेष---निम्न पुत्राधों का संग्रह है।
                        षादिनाषपुत्रा
                                              मनहरदेव
                                                                  हिन्दी
                        सम्मेदश्विसरपुत्रा
                  विश्वमानवीसतीर्थक्ट्ररों की पूत्रा
                                                            र० काल सं० १६४६
                        श्रुभव विलास
                                                                         2846
                        [ पदसंग्रह ]
                                                                 हिन्दी
               ४६४७. प्रति स० २ । पत्र संब ३० । संब काल 🗙 । वैव संब ७५६ । 🖝 भण्डार ।
               विशेष-इसी मण्डार में ५ प्रतियां ( वै॰ सं॰ ४७७, ४७८, ४६६, ७६१/२ ) बीर हैं।
               ४६४म प्रति सं० ३। पत्र सं० १६ : ले० काल × । वै० सं० २४१ । स्क्र मण्डार ।
               विशेष--निम्न पूजा पाठ है---
                                 विनती ग्रुस्मों की ---
                           षीस तीर्यकूर जयमाल ---
                                सोलहकारराषुणा --- बानतराब
               धंदश्द. प्रति संव ४। पत्र संव २१। लेव काल संव १८६० फायुगा सूदी २। वेव संव २२०। जा
    मण्डार ।
               ४६६०. प्रति संब ४ । पत्र संब ह ते २२२ । लेव काल 🗙 । प्रपूर्ण । वेव संव २७० । मा मण्डार ।
               विशेष--नित्य नैमिक्तिक पूजा पाठ संग्रह है।
               ४६६१. पुजापाठसंग्रह-स्वरूपचंद । पत्र सं । था० ११×४ इ व । शाबा-हिन्दी । विषय-
   बुका | र० काल × । ले० काल × । पूर्ण | वे० सं० ७४६ | क अवडार ।
```

जगपुर नगर सम्बन्धी चैत्यालयों की बंदना - स्वरूपचन्द ऋदि सिद्धि शतक बहावीरस्तोत्र जिनपञ्चरस्तोत्र विसोकसार चौपई चमत्कारजिनेस्वरपुका

विशेष---निम्न प्रकार संप्रह है ---

प्रदेशन. जूलामकरश्— बनास्वाली। पत्र सं \circ २। ला \circ १० \times ४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विष्यल । र \circ काल \times । ले \circ काल \times । पूर्ण । वे \circ सं \circ १२२ । क्षु ययदार ।

विशेष---पूनक बादि के सक्षरा दिये हुये हैं । बन्तिम पुष्पिकां निम्न प्रकार है---

इति श्रीमदुमास्वामीविरंचितं प्रकरमां ॥

४९६६. पूजासद्दास्त्रविधि****** । पत्र सं०३ । सा०११२४५ इ'च । प्राया—संस्कृत । विषय–पूजा विवि । र० काल × । ले० काल × । पूर्णा वे० सं०२२४ । च अध्वार ।

४६६४. पूजावस्त्रविधि******। पत्र सं०६। मा० ०३×४ इंव। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजाविधि। र०कास ४। ते०काल सं०१०२३। पूर्वी वे०सं०१४०७। कां नण्डार।

४६६४. पूजापांठः****। पत्र सं० १४ । मा० १०३/४४३ इंच । भाषा-हिन्दी नव । विषय-पूजा । र० काल ४ । से० काल सं० १८३६ बैसास मुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १०६ । स्व अष्टार ।

विशेष---माराकचन्द ने प्रतिलिपि की थी । अन्तिम पत्र बाद का लिखा हुआ है ।

४८६६. पूजाविधि ***** गण्या सं०१। मा० १०×४३ दश्चा। भाषा–प्राकृत । तिवस- विधान । र०काल ×। ते०काल ×। प्रपूर्ण। वे०सं०१७६६। इस सम्बद्धार ।

४६६७. पूजाविधि'''''' । पर्वसं ०४ । मार्व१०×४६ इंचा माया-हिन्दी । विषय-विधान । २० काल × । ते० काल × । पूर्तावै० सं०११७ । स्म मंदार ।

४६६८. पूजाष्टक---कीशार्नस्य । पत्रं संवे १ | ब्राव १०३×५ ६वा । मापा-हिन्दी | विषय पूजा । ६० कास × | के० कास × | पूर्ण | वे० संव १२११ | का अध्वार |

४६६६. पूजाष्टक— लोहट । पत्र सं•१। म्रा० १०३४ १ इंचः। भाषा–हिल्दी । विषय-पूजाः र∙ काल ४ । से∙ काल ४ । पूर्णावे नं १२०६ । इस मण्डारः।

४६.७०. पूजाष्टक—काअयवन्द्र । यन सं०१। मा०१०१ ४१ ६ व । माया-हिन्दी । विषय-पूजा । र०कास x । ते०कास x । पूर्ण । वै० सं०१२१० । का मध्यार ।

४६७१. पूजाष्टकः''''''''। पत्र सं०१। प्रा० १०६४४ इखः । सोवी-हिन्दी । विवय-पूजा । र० काला ४ । ते० काल ४ । पूर्णावे० सं०१२१३ । का सम्बर्णा

४६.५२. पूजाष्टकःःःःःःः। पत्र सं०११। मा० $-\epsilon_V^* \times \lambda_Q^*$ दक्षः। जावः, $-\epsilon_V^* \times \lambda_Q^*$ कास \times । ले० कास \times । सपूर्णः। ने० सं०१ न्याः। ए०

४९७३. पूजाष्टक—विश्वभूषसा। पत्र सं०१। सा०१०३४५ ६ व । जावा—संस्कृतः। विषय-पूजा। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ता। वै० सं०१२१२। च्च यण्डार।

४६७४. पूजासंबहः*****। पत्र सं० ३३१। घा० ११४५ इक्का । भाषा-संस्कृत । विषय-नूजा । र० काल × । ने० काल मं० १६६३ । पूर्ण । वे० मं० ४६० से ४५४ । का अध्वार ।

विशेष---निम्न पूजाओं का संग्रह है---

	नाम	कर्सा	भाषा	पत्र सं०	बे॰ सं॰
₹.	कांजीवनोद्यापनमंडलपूजा	×	मंस्कृत	t•	YeY
₹.	श्रुतज्ञान <i>वतोचोतनपू</i> जा	×	हिन्दी	₹•	803
₹.	रोहिसीवतपूजा	मंडलावार्य केशवसेन	संस्कृत	१ २	*93
٧.	दशलक्षम्।द्रतोद्यापनपूजा	×	,,	79	४७१
X.	लब्धिविधानपूजा	×	,,	१ २	¥ 9•
٤.	ध्वजारोपसपूजा	×	,,	**	¥ € €
v.	रोहिसीड्तोचापन	×	**	१ ३	¥ 55
٩,	ध नन्त्रतोद्यापनपू ना	मा∙ गुरा व -द्र	11	ą.	440
٤.	रत्नत्रयद्वतीचापन	×	,,	₹ €	४६६
ŧ0.	श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	×	"	१ २	YĘK
₹₹.	शत्रु अथिनिरिपूजा	भ० विश्वमूषस्	,,	२०	YĘY
१२.	गिरिनारक्षेत्रपूजा	×	,,	२२	743
₹₹.	त्रिलोकसारपूजा	×	"	=	४६२
ţ٧.	पार्वनाषपूजा (नवप्रहपूजानि	ाधान सहित)	n	. १=	445
ŧ×.	त्रिलोकसारपू आ	.×	,,	ţ.	44.

इसी अव्यार में २ प्रतियां (के सं॰ ११२६. २२१६) और हैं जिनमें सामान्य पूजारें हैं । ४८.वर्ष प्रति सं० २ । या र्सं० १४३ । ते० काल सं० १९४६ । के लंज ४७४ । क वच्यार ।

विशेष-निम्न संग्रह हैं-

i **44**

मापा

- Personal Maries

ún

नाम	कर्चा	भाषा
पञ्चपरमेष्टीपूजा		संस्कृत
पश्चकल्या राकपूजा		**
बौसठ शिवकुमारका कांजी की पूजा	ल लितकी लि	**
गराधर व सब पूजा		"
सुगंधदशमीकथा	श्रुतसागर	,
चन्दनपश्चिकथा	,,	**
षो डशकार एवि धानकथा	मदनकोत्ति	,,
नन्दोश्वरविधानकथा	हरिषेश	,,
मेघमालाव्रतकथा	श्रुतसागर	**

४६७६ प्रति सं०३ । पत्र सं०६० । ले० काल सं०१६५६ । वे० सं०४६३ । क भण्डार । विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

नाम	कर्सा	भाषा		
सु ब संपत्तिव्रतोद्यापनपूजा	×	सस्कृत		
नन्दीश्वरपंक्तिपूजा	×	11		
सिद्ध वस पूजा	प्रभा य ःद	**		
प्रतिमासांतचतुर्वशी त्रतोद्यापनपूजा	×	99		
विशेषताराधन्द [जयसिंह के मन्त्री] ने प्रतिनिधि की थी।				
संचुकल्यारा	×	संस्कृत		
सक्लीकरण्यिथान	×	"		
சுவி கூறை நிற முறை (இ _{சு} ந் _ச	Visia Visa 1 mb- 1			

इसी अच्छार में २ प्रतियां (वै० सं० ४७७, ४७८) और है जिनमे सामान्य पूजायें हैं।

४६७७. ब्रतिसं**० ४ । पत्र सं० €। ले० काल ×**ावै० सं० १११ । **स** भण्डार !

विशोष—निम्न पूजाओं का संग्रह है— सिडणक्रपूजा, कसिकुण्डमन्त्रपूजा, झानन्द स्तवन एवं गराघरवसव कम्बास । प्रति प्राचीन तथा सन्त्र विधि सहित है ।

> ४६७म. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२। ते० काल 🗴। वे० सं० ४६४ | क सम्बार | विवेष-इसी मुखार में २ प्रतियां (वे० सं० ४६०, ४६४) ग्रीर है।

थ्या प्रक्रियां है। एवं संक १२। लेंक काल ×। वेक संक २२४। च भण्डार।

विजेष--- मानुषीलर पूजा एवं इक्ष्याकार पूजा का संग्रह है।

४६८०. प्रति सं० ७ । यत्र सं० ५५ मे ७३ । ले॰ काल X । प्रपूर्त । वे॰ सं० १२३ । क्व अवहार । प्रध=१. प्रति संट = । पत्र सं० ३६ से ३१४ । से० काल × । प्रपूर्ण । वै० सं० २४३ । सह मण्डार । ४६८२. प्रति सं० ६ । पत्र सं• ४५ । ले० काल सं० १८०० शायाद सूदी १ । वै० सं• ६६ । **व्य**

भण्डार ।

विशेष--- निम्न प्रजाशों का संप्रह है---

नाम	कर्त्ता	भाषा	পদ
धर्म चक्र मूजा	यशोनन्दि	संस्कृत	₹-१€
नन्दीश्वरपूत्रा		n	\$5-5R
सकलीकरसविधि		n	28-58
ल धुस्व मं मूपाठ	समन्तभद्र	,	₹५-२६
धनन्तवत्रुवा	भीभूवरा	"	94-11
भक्तामरस्तोत्रपूजा	कंशवसेन	n	37-3 6
धावार्य विश्वकीलि की सहाब	मासे रक्षताकी तर्दकी।		

पश्चमी बसप्रजा केशवसेन \$8-YZ

इसी अध्यार में २ प्रतिया (वे० सं० ४६६, ४७०) ब्यौर हैं जिनमें नैमिक्तिक पूजायें हैं।

४६=३. प्रति सं० १०। पत्र सं० ६। ते० काल ×। बपूर्ण । वे० सं० १६३६। ट अण्डार ।

४६८४. पूजासंबह्"""। पत्र सं• ३४। बा॰ १०१×१ इश्व । संस्कृत, प्राहृत । विषय-पूजा । र• काल 🔀 । ले॰ काल 🗶 । पूर्ण । वै० सं० २२१५ । 🕸 मण्डार ।

विशेष--देवपूत्रा, प्रकृतिमचैत्यालयपूत्रा, सिद्धपूत्रा, गुर्वावलीपूत्रा, बीसतीर्वञ्करपूत्रा, क्षेत्रपालपूत्रा, वोतव कारखपूजा, भोरवतनिधियुजा, सरस्वतीयूजा ('ज्ञानभूवख) एवं शान्तिपाठ मादि हैं ।

४६८४. पुकासंप्रहु"" "। पत्र सं ० २ से ४४ । बा० ७३×४३ इ'व । भाषा-प्राक्षत, संस्कृत, हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्छ । वे० सं० २२७ । व जण्डार ।

विशेष--इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ २२=) कीर है।

४६.व. पुजार्सज्ञह् । पत्र सं० ४६७ । बा० १२×५ इख । भाषा- संस्कृत, सबक्ष स. किसी । विवय-संबद्ध । २० काम 🗶 । ते० काम सं० १०१६ । पूर्व । वे० सं० १४० । वह श्रवहार ।

विशेष---निम्म पाठ हैं---

नाम	कर्चा	भाषा	र० काल	लें द काल	দস
रै. बक्तामरपूजा		मं स्कृत			
२. सिढकूटपूजा	विश्वभूषस्य	**	#i o	१८८६ ज्येष्ठ ऱ	ादी ११
वे. बीसतीर्थ क्ट्र रपूजा		"		×	श्रपुर्गा
४. नित्यनियमपूजा		″ संस्कृत हिन्दी		^	ağıı
र. अ नन्तपूजाः	-	संस्कृत			
६. षरावितक्षेत्रपालपूजा	विश्वमेन	,,		ग०१==६	
ज्येष्ठजिनवरपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	"		, , , , , ,	पृथ्वं
 नन्दीश्वरजयमाल 	कनककीत्ति	अपभं श			
६. पुष्पाञ्जलिवतपूना	गङ्गादास	संस्कृत [संडल	न चित्र सहित ∫		
१०. रत्नत्रयपूजा	_	"	` 3		
११. प्रतिमासान्त चतुर्दशीपूजा	ग्रसवराम	,, to 1	राल १८००	লৈ কলে ≯⊨⊃	
१२. रत्तत्रयजयमाल	ऋषभदास बुधदास	,,		» » {=·	
१३. बारहबतो का व्योरा	-	हिन्दी		<i>n</i>	•
१४. पंचमेरुपूजा	देवे-द्रकीर्त्त	संस्कृत		िकाल १⊏२०	
१४. पञ्चकत्यासाक्तूजा	नुधासागर	"	·	10 4017 (C40	•
१६. पुष्पाञ्जलिवतपूजा	गङ्गादास	,,	-	० काल १८६२	
१७. पंचाधिकार		,	"	० काल १८६२	
१८, पुरम्बरपूजा					
११. मष्टाह्मिकाव्रतपूजा					
२०. परमससस्यानकपूजा	बुधासागर				
२१. पल्यविधानपूजा	रलनन्द	n 			
२२. रोहिसीबतपूजा मंडल चित्र सहित	केशवसेन	"			
२३. जिनकुरासंपत्तिपूजा		"			
२४, तौक्यवास्थवतोद्यापम	वसम्बद्धान	"			

,			*
प्या मतिष्ठा एव विवास सा	Rea }	•	. [kto
२४. कर्मभूरवतीचापन	लक्यीसैन	संस्कृत	f xie
२६. सीलहकारण वतीद्यापन	केसवसेन		
२७. द्विपं चक्रयासकपूजा	-	77	
२८. गन्धकुटोपूजा	_	,,	से० काल सं⊕ १८३१
२६. कर्मदहमपूजा			
३०. कर्मदहनपूजा	_	,,	में कास सं १८२६
३१. दशलक्षरापूजा		n	
३२ षोडशकारगजयमाल	रइधू	श भगभं	
३३. दशलक्षराज्यमाल	मावशर्मा	শাস ধ মা হ ুৱ	प्यू र्ण
३४. त्रिकालचौबीसीपूजा	_	नाइत संस्कृत	
३४ लब्बिबिधानपूजा	प्रभ्रदेव		से॰ सास १८१०
३६. मंकुरारोपस्तिविध	माशाघर	n	
३७. रामोकारपॅतीसी	कनककीर्ति	n	
३८. मीनव्रतोद्यापन		"	
३१. बादिवसपूर्वा	_	"	
४०. सतपरगस्यानकपूता	_	**	
४१. मुखसंपत्तिपूजा	_	n	
४२. क्षेत्रपालपूजा		"	•
४३. बोडवाकारसपूजा		n	
४४. चन्दनवहीवतकवा	सुमितसागर	79	ने० कास २०३०
४१ समोकारपैतीसीपूजा	भु तसागर	"	9
४६. प ञ्चमीतवा यम	मसवराम	"	से॰ काल १०२७
		संस्कृत हिन्दी	
advar(r) Mad()		99	
४८. कड्डिकावतोद्यापन	***	99	·
४६. वेचमासात्रतीचापन	`	•	A STATE OF THE STA
५०. पळनीत्रतपूचा		n	
			मर्क काल १०२७

के काल १५१७

हरू } हर, नवप्रह्युका

-- संस्कृत हिन्दी

ड्र. राजध्यपूजा

रक्ष्य सपम्र'स

टब्बा टीका सहित है।

प्रधम्क. पूजासंग्रहम्मामा पत्र सं० १११ । घा० ११६४६३ इ'व । आषा-संस्कृत हिन्दी । विवय-

विशेष--निम्न पूजाओं का संबह है--

र• काल सं० १८६८ क्रिकी धनन्तवतपुजा सम्मेदविसरपुजा र० काल सं० १८१७ निर्वासकीत्रपुत्रा × र० काल सं० १८६७ प**ञ्च**परमेष्ठीपुजा × गिरना**रते**नपुत्रा × वास्तुपूजाविधि संस्कृत × नांदीर्मनसपूजा × बुद्धिविधान देवेन्द्रकीर्ति

४६८८६. प्रति सं०२ । यत्र सं०४ ०। ते० काल ×। वे० सं०१४ । इह सम्बार । ४६८६६. प्रति सं०२ । यत्र सं०८४ । ते० काल ×। वे० सं०१४ । सुत्रमार ।

विशेष--निम्न संग्रह है--

		_	
प ञ्च कतथासाकनंगल	स्पवन्त 🗸	हिन्दी	वंत्र १-३
वस्त्रकाराक्ष्रजा	×	संस्कृत	, ¥-१२
वञ्चपरमेच्डीपूजा	ইক খ ন্থ	हिन्दी	" १३−२६
पञ्चपरमेष्ठीपू गाविषि	यक्षीनन्दि	संस्कृत	n 20-84
कर्मबहनपूजाः	ठेकचन्द	हिन्दी	, 1-11
नन्दी श्रदत्तति चान	97	77	" १२ -२६

प्रदेश. प्रति संव ४। ते काल 🗴। सपूर्ण । वे वं १०६०। ह सम्बद्धाः

पूजा मतिष्ठा दवं विकास साहित्य]

अध्यक्ष, युवायर्थं कमा समझ — व्युशाक्षणम् । पत्र सं० ६० । मा० स×रई इंग । मारा-हिल्पी । ं विदय-दुश । र० काल × । ते० काल सं० १८७६ पीच युदी १२ | युदी | वै० तं० ६६१ । व्यापणार ।

विशेष--- निम्न पूजाओं तथा कवाओं का संबह है।

बन्दनवध्येषुवा, वशनक्षासुवा, पोष्ककारससूत्रा, राजप्रवृत्ता, स्वन्तवसुर्वशीक्षतक्या व पूजा। तप लक्षरस्वा, नेवर्गस्त सर की क्या, सुगन्धवसमीक्षरकया।

४६६२. पूजासंबह—्दीरायम्य । पत्र सं० ११ । बा० ६६/४६६ द व । बाया-हिन्दी । विवय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्वी । वै० सं० ४च२ । क मण्यार ।

४६६६. पूजासंबद्धः........। तत्र सं०६ । बा० ⊏र्रू×७६'व । बावा–हिन्दी । विवय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२७ । ब्राजभार ।

विशेष--पंचमेष पूजा एवं रत्नत्रम पूजा का संग्रह है।

इसी अध्यार में ४ प्रतियां (वे॰ सं॰ ७३४, १७१, १३१६, १३७७) और हैं जिनमें सामान्य पूजायें हैं।

४६६४. प्रति सं०२। पत्र सं०१६। ले॰ काल 🗴 । वे॰ सं॰ ६०। वा भण्यार।

४६६४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४३। ते० काल ×। दे० सं० ४७६। स जपहार।

प्रदर्श, प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६५५ संगक्तिर शुरी २ । वे० सं० ७३ । व्य अध्यार ।

विशेष-- निम्न पूजाओं का श्रंबह है--

वेसपूत्रा, सिर्वपूत्रा एवं सान्तिराठ, वं ववेद, मन्तीत्रर, सोसहकारल एवं वंशतकाल पूत्रा बानतराय करा । ृंधनन्त्रवरुप्ता, राजप्रपूत्रा, सिर्वपूत्रा एवं सारमपूत्रा ।

४६६७. प्रति सं० द्र । पत्र सं० ७६ । ते० काल 🗙 । सपूर्ण । वे० सं० ४०६ 😻 मण्डार ।

४६६६. प्रति सं० ६। यम सं० वथ्। ते० काल ×। वे० सं० ६३७। वा मण्डार।

४६६६. प्रति सं० ७। यत्र सं० ३२। ते० काल ×। दे० सं० २२२। ∰ अच्छार।

४०००. प्रति सं । पत्र सं० १३४ ते कास X | वे तं १२२ । अ अध्याद !

निसेष---पंथवत्यासुक्यूबा, पंथपरोप्डीयूबा एवं निस्थ यूबार्वे है 🕴

2002. प्रति संक ६ १पन वंक केन १ तेन नाम X ! महार्थ । वेन वंक १५३६ व छ समाप ।

१००२. युक्तासंग्रह—राज्ञचन्द्द । पत्र तं० २० । ब्रा० ११२,४५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । १० काल × । वे० काल × । पूर्ण । वे० तं० ४१५ । क सण्डार ।

विशेष--मादिनाय से चन्द्रप्रभ तक की पूजायें हैं।

४००३. पूजासार् ''''''''''' । पत्र सं००० । प्रा० १०४४ ईत्र । भाषा–संस्कृत । विषय-पूजा एवं विधि विधान । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वै० सं०४४४ । द्वामध्यार ।

"ook. प्रति सं०२ । पत्र सं०४७ । ले० काल 🗴 । वे० सं०२२६ । च मण्डार ।

विशेष-स्ती भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३०) और है।

४००४. प्रतिमासान्तचतुर्दैरीप्रतीद्यापनपूजा— कक्षयराम । पत्र स०१४ । प्रा०१०४६ ३ घ । आवा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । से०काल स०१६०० भारवासुरी १४ । पूर्ण । वे०सं०४ ६० । आर् सम्बार ।

विशेष-दीवान तारायन्द ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

४००६, प्रति सं०२। पत्र सं०१४। ले० काल सं०१८०० भादवाबुदी १०। वे० सं०४८४। कः भण्डार।

४०८७. प्रतिसंठ ३ । पत्र सं०१० । ले० काल सं०१८०० वैत्र सुदी ५ । वे० सं०२८५ । स्न भण्डार ।

४००८. प्रतिमासान्तचतुर्देशीव्रतोद्यापनपूजा—रामचन्दा पत्र सं०१२ । घा०१२५४६ इ.च. भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा।र०कास ४ । ले०कास सं०१८०० चैत्र सुदी१४ । पूर्ण।दे० स०३८६ । घा अध्यार ।

विशेष-श्री जयसिंह महाराज के दीवान ताराचन्द श्रावक ने रचना कराई थी।

. ५०० - प्रतिसासान्तचतुर्दशीक्षतीद्यायनपूजाः'''''। पत्र सं०१३ । मा०१०४७३ ६ च । आया– संस्कृतः । विषय–पूजा। र०कान × । के०कान सं०१८०० । पूर्णा | वे०सं०१०० । इस्मण्डार ।

४०१०. प्रति संव २ । पत्र संव २७ । लेव काल संव १८७६ प्रासीज बुदी ६ । वेव संव २३३ । च अण्डार ।

विशेष—सदासुस बाकतीयाल मोहाकाने जयपुर मे प्रतिलिपिकी थी। दीवान समरपन्य नी संगद्दीनं प्रतिलिपिक स्वार्द्धना

४०११ मितिष्ठावृद्दो— अ० श्री राजकीर्षि । पत्र सं० २१ । श्रा० १२४४१ इ.च । आया-संस्कृत । विवय-प्रतिक्वा (विवान) । र० काल × । ते० काल × । पूर्णा | वे० सं० ४०१ क सम्बार ;

४०१६े. प्रतिञ्चापाठ—च्या० बधुनस्थि (कापर नाम जबसेन)। पत्र सं०१६६। मा०११३,४८६े इंब । जावा—संस्कृत। विषय विचान। र०कान ४। ने०काल सं०१६४६ कार्लिक बुदी ११ । पूर्ण। दे० सं० ४८४, । कृत्रण्यार।

विशेष--इसका दूसरा नाम प्रतिष्ठासार भी है।

४८१४. प्रति सं० २। पत्र सं० ११७। से० काल सं० १६४६। वे० सं० ४६७। क अध्वार। विद्योव—३६ पत्रों पर प्रतिहा सम्बन्धी चित्र दिये हुये हैं।

४०१४. प्रति सं> ३। पत्र सं० १४४ । ते० काल सं० १६४६ । वे० सं० ४८६ । क अण्डार ।

विशेष— बातावरून व्यास ने जयपुर में प्रतिक्षिप की थी। घन्त में एक घितरिक्त पत्र पर धक्कुरूवापनार्थः प्रति कारेकाचित्र दिया हुमा है। उसमें धक्कु सिक्ते हुये हैं।

> ४०१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०३ । ने० काल × । पूर्श । वे० सं० २७१ । सामध्यार । विशेष--- प्रत्यिम पूष्यिका निम्न प्रकार है---

द्दति श्रोमस्कुंदकुंदाचार्य पट्टोदयनूषपरिवासिश श्रीवशृतिश्वाचारेश अयसेनापरनावकेन विराचित: । प्रतिष्ठा-सार: पूर्णमणनाः ।

४०१७. प्रतिष्ठापाठ—च्याशाधर। पत्र सं०११६। मा० ११४५३ इ.च.। प्राथा-संस्कृतः। विषय— विधान। र०काल सं०१२८५ ग्रासोज सुरी १५। ते०काल सं०१८८५ आववा सुरी ५। पूर्णः। वे० सं०१२। ख अध्यारः।

४०१ स. प्रतिष्ठापाठ। यत्र सं०१। बा० ६३ गज संवा १०६व वीदा। भाषा-संस्कृत। विषय-विभाग। र०कास ४। से० कास सं०१४१६ ज्येष्ठ बुदी १३। पूर्ण। वै० बं०४०। व्याजस्थार।

विशेष—मह पाठ करड़े पर निका हुमा है। करड़े पर निकी हुई देवी प्राचीन कीजें कम हो मिलती है। यह करड़े की १० रंच जीड़ी पट्टी पर निवटता हुमा है। लेखक प्रयक्ति निस्न प्रकार है—

।।६०।। सदिः ।। वाँ नथी योगरामाय ।। संगतु १४१६ वर्षे व्येष्ठ कुषी १६ तेरस्ति योगयासरे व्यक्तिण गक्षमे वीष्टकृष्णये वीष्पर्यत्रपेरमान्ये वीषुमुखंचे वीषुमुखंचावार्याञ्चये वसारकारपक्षे स्वरस्थतीयच्ये क्ष्युरस्य योरस्पर्यास्य देवाः सरपट्टे वीप्रवादमस्यार सरप्टे वीप्रवादमियदेवाः सरपट्टे वीषुम्बनस्थेवाः।। सरपट्टे प्रकृतस्य वी विश्वनस्थेवाः।। २०१६. प्रति सं०२ । पत्र सं०३४ । ते० काल सं० १८६१ वैत्र बुदो ४ । सपूर्ण । वै० सं०५०४ । अरुप्तार)

विशेष-हिन्दी में प्रथम ६ पद में प्रतिष्ठा में काम ग्राने वाली सामग्री का विवरण दिया हुआ है।

. ४०२०. प्रतिश्वापाठभाषा— बाबा दुलीचंदा पत्र तं∘ २६। सा० ११३,४५ दंवा भाषा—हिन्दी। विषय–विषाम । र० काल ⊠ाले० काल ⊠ापूर्ता| वे० तं० ४०६| क प्रष्टार।

विशेष----सुलकर्ता सामार्थे बसुविन्दु है। इनका दूसरा नाम जयसेन भी दिया हुआ है। दक्षिण् में कुंडुए भागके वैद्या सहस्थायल के समीप रत्निगिरि पर लालाह नामक राजाका बनवाया हुआ विशाल बैत्यालय है। उसकी प्रतिद्वा होने के निमित्त सन्य रथा गया ऐसा लिखा है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४६०) भौर है।

४०२१. प्रतिष्ठाविधि""""। पत्र सं०१७६ से १६६ । झा०११४४ रॄँ इंच। बाया–संस्कृत । विक्य−विधि विधान । र०काल × । से०काल × । सपूर्ण । वे०सं०५०३ । इरू अच्छार ।

४०२२. प्रसिष्ठासार—पं० रिषजीकाला । पत्र सं० १६ । मा० १२४७ इ'च । भाषा-हिन्दी । विषय− चिचि विचान । र०काल ४ । ते० काल सं० १६४१ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ता । वे० स० ४११ । क भण्यार ।

१०२३. प्रतिष्ठासार***** भाग सं० ⊏१। मा० १२३४५ १ व । माषा-संस्कृतः । विषय-विश्वि विभागः। र०कानः ४ । ले० काल सं० १९२७ प्रायाद्य पुदी १० । वे० सं० २=१ । आः मध्दारः।

विशेष---पं व फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी। पत्रों के नीचे के त्राग पानी से नले हुये हैं।

४०२४. शतिष्ठासारसंग्रह— आर्थ बसुनन्दि । यत्र सं० २१ । सा० १३×६ इंच । जाया-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण | वे० सं० १२१ । क्य बण्डार ।

४०२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३४ । ले॰ काल सं० १६६० । वै० सं० ४५६ । आ मण्डार ।

Mo २६. प्रति संब दे। पत्र संब २७। तेव काल संब १६७७। वेव संब ४६२। क अण्डार।

३०२७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६ । ले॰ काल सं० १७३६ वैद्याल बुदी १३ । अपूर्ण । वे॰ सं० ६० । स्र अच्छर।

विशेष--सीसरे परिच्छेद से है।

८०२क. प्रतिष्ठासारोखार™ ™ापत्र तं॰ ७६ । या॰ १०१×४१ इ'च । जावा–संस्कृत । विषय– विषि विषान । ६० काल × । ते॰ काल × । पूर्ण । वे॰ तं॰ २३४ । स् अध्वार ।

४०२६. प्रतिष्ठासृक्षिसंग्रहः....। पत्र तं० २१ । प्रा०१३×६ इ.च । वाषा-संस्कृत । विवय-दिवान । र० काल ×। ते० काल तं० १६४१ । दूर्श । वे० सं० ४६३ । क मध्यार । १०३०. प्रायामिक्काःःःःः। यस सं० ३। द्वा० ६ $\frac{1}{4}$ ×६ $\frac{1}{4}$ इंच। भाषा संस्कृतः। विषय-विषासः। ए० काल \times । श्रेल काल \times । श्रुर्णः। वे० सं० ३७। क्वा क्वम्बक्तः।

४०३१. बाल्यकाकायधोन''''''''' । पत्र सं०४ ते २३ । बा०६×४ ६'व । बाया-हिन्दी । विषय-विधि विधान । र०काल × । ले०काल × धपूर्ण । वे०सं०२६७ । का बच्चार ।

विशेष — आलक के गर्जेमें प्राप्त के प्रचम मास से लेकर दसर्वे वर्ष तक के हर प्रकार के सोस्कृतिक विचान का दर्शन हैं।

2०३२. बीसतीर्थकूरपूजा—धानती स्वत्नतेदा। पत्र सं० १८। सा० १२३०८ इंच। सावा-हिन्दी। विषय-विदेह क्षेत्र के विस्तयान बीस तीर्थकूरों की पूजा। र० काल तं० १८१४ आसीज सुदी १। वे० काल ४। पूर्ण वै० सं० २०६। स्व सम्बार।

विशेष-इसी भण्डार में इसी बैष्टन में एक प्रति और है।

१०३३. बीसतीर्थेकुरपुत्रा :- : : । पत्र सं० १३ । बा० १३×७३ इ'व । भाषा-हिन्दी । विषय-प्रजा । र० काल × । ले० काल सं० १९४५ पीप सुदी ७ । पूर्ण । वै० सं० १२२ । व्ह अव्वार ।

४८३४. प्रति सं०२। पण सं०२। ले॰ काल ×। अपूर्ण। वै॰ सं॰ ७१। सा अण्डार।

४०३४. अक्तामरपूजा— भी क्राजश्रृबखा। यत्र सं० १० । बा० ११८५ इंच। अस्वा–संस्कृत । विवय– पूजा । र० काल × के० काल × । पूर्णे । वे० सं० ५३६ । क वष्यार ।

४०३६. अकामरपूजाल्यापन—भी भूषण्। पत्र तं०१३। बा०११४६ इंच । माना-संस्कृत । विवय-पूजा। र० काल ४ । ते० काल ४ । बचुर्ल । वे० त० २५२। च मच्यार ।

विशेष- १०, ११, १२वां पत्र नहीं है।

४०३७. प्रतिसं०२ । पत्र स०८ । से० कास सं०१८६ प्र०३ व्यक्त सुदी १ । दे० सं०१२२ । ह्य

विशेष-नेमिनाय चैत्यालय में हरबंशनाल ने प्रतिलिपि की थी।

३०२८. प्रति सं० ३ । पण सं० १३ । ते० काल सं० १८६६ भावस पुरी ४ । दे० तं० १२० । स भण्यार ।

४०३६. प्रति सं०४। १४ सं०५ : के० काल सं० १६११ प्राचीज बुदी १२ । वै० सं०५० । मा जन्मार ।

निरोप---वयमाला हिन्दी में है ।

४०४०. अकासरमतीयापनपूत्रा—विश्वकीर्त्ति । पत्र सं० ७ । मा० १०३%६ इ'व । त्राया-संस्कृत । विवय-जूना । र० कास सं० १६६६ । ते० कास 🗙 । पूर्त । वे० सं० १२७ । क बच्चार । विश्वेष--- निधि निधि रस बंद्रोसंस्य संवस्सरीह विश्ववनमसिमासे ससमी मंबवारे ।

नलवरवरदुर्गे चन्द्रनाथस्य चैत्ये विरचितमिति भक्त्या देशवार्मतमेन ।)

४०४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ते० काल × । वे० सं० ४३६ । इन् भव्दार ।

. ५०४२. आकासरसोत्रपूजा***** । पत्र सं० ८ । झा० ११४५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ता । वै० सं० ५३७ । इस सम्बार ।

४०४३. प्रति सं**० २ । पत्र सं० १२ । ले०** काल × । वे० सं० २५१ । च मण्डार ।

४०४४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० ४४४। ६ भण्डार।

१०४४. आद्रपद्युवासंग्रह— द्यासतराय । पत्र सं० २६ ते ३६ । घा० १२३४७३ इ.च.। भाषा— हिन्दी । विवय-पूजा । र० काल 🗙 । के० काल 🗴 । सपूर्ण । वे० सं० २२२ । इट्सप्यार ।

४०४६. आहुपस्पृकास्प्रहरूपः । पत्र सं० २४ से ३६ । ब्रा० १२३×७३ इ'व । भाषा-किन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । से० काल × । ब्रपुर्ल । दे० सं० २२२ । ह्यू अध्वार ।

. १८४७. आंविकिय्वा"""। पत्र सं०१। जा० ११६४४ ३ इ.च.) भाषा-संस्कृतः। विषय-पूजाः। र०कान ४ । ते०कास ४ । पूर्णः। वै०सं०२००७। ट अध्यारः।

. १०४ च- आवनायवीसीव्रतेषायन ''''''''। १० तं∘ ३ । प्रा० १२३४६ इंव । भाषा-संस्कृत । विवय-पूजा । २० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० तं० ३०२ । इस मध्दार ।

४०४६. संदक्षों के विश्व'''''''' । यत्र सं०१४ । या०११४६ इ.च । शाया हिन्दी । विषय-पूजा सम्बन्धी सम्बन्धों का विच । से० काल ४ । बै० सं०१३६ । इस प्रम्बार ।

विशेष---चित्र सं० ५२ है। निम्नलिखत मण्डलों के चित्र है --

१. श्रुतस्कंच (क्लेष्ठ २)	७. ऋषिमंडस (,, ५६)
२. त्रेपनक्विया (कोष्ठ ४३)	न. सतऋषिमंडल (_{११} ७)
३. बृहद्सिद्धथक ("१६)	१, सोलहकारण (,, २४६)
४. जिनबुखसंयत्ति (,, १०१)	१०. चौबीसीमहाराज (,, १२०)
१. सिडकूट (,, १०१)	११. सांतिषक (,, २४)
६. वितामिखिपा र्वनाय (🤋 ५६)	१२. भक्तामरस्तोत्र (- ४०)

```
पूर्वा मतिष्ठा एवं विधान साहित्य ी
                                                                           [ ४२४
       १३. बारहमासकी चौदस (कोश्व १६१)
                                              ३२. बंकुरारीपण
                                                                 (कोह
       १४. पांचमाह की चौदस ( " २४)
                                              ३३. गयघरवलय
                                                                 ( ,, ४= )
       १५. घरातका मंडल
                          ( = 885)
                                              ३४. नवप्रह
                                                                 ( ... E)
       १६. मेचमालावत
                          ( ,, १४० )
                                              ३४. सूगन्धदशमी
       १७, रोहिसीवत
                          (कोष्ठ ६१)
                                              ३६. सारमूतयंत्रमंडल
                                                                 ( .. २= )
       १८. लब्धिविधान
                          ( ,, = ? )
                                              ३७. सास्त्रजीका मंडल ( 🙀 १२)
       १६. रत्नत्रय
                          ( ,, २१ )
                                              ३८. प्रक्षयनिधिमंडल
                                                                 ( " 4%0 )
       २०. पश्चकल्यासक
                         ( ,, १२० )
                                              ३९. घठाई का मंडल
                                                                 (,, 42)
       २१. प्रचपरमेष्ठी
                          ( #35 .. )
                                              ४०, मंद्ररारीपस्
       २२. रविवास्त्रत
                          ( ,, 5? )
                                              ४१. कलिकुंडपार्श्वनाथ
                                                                 ( . = )
      २३. मुक्ताबली
                          (,, =?)
                                              ४२. विमानसृद्धिशांतिक
                                                                ( ,, १०५ )
       २४. कर्मदहन
                          ( m tv= )
                                              ४३. बासठकुमार
                                                                 ( ,, 42)
       २४. कांजीबारम
                          ( w EY )
                                              ४४. धर्मचळ
                                                                 ( ,, १५७ )
      २६. कर्मचर
                          ( " EY)
                                              ४४, लघुशान्तिक
                                                                 (,,-)
      २७ ज्येव्रजिनवर
                                              ४६. विमानशुद्धिशांतिक ( " ६१)
                              ¥£)
      २८. बारहमाहकी पश्चमी ( 😽 ६५)
                                              ४७. खिनवे क्षेत्रपास व
      २६. चारमाह की पश्चमी ( म २५)
                                                  चौबीस तीर्यक्र ( " २४)
      ३०. फलकांदल [पद्ममेह] ( , २४)
                                             ४८. भूतज्ञान
                                                                 ( ,, १४= )
      ३१. पांचवासों का मंडल ( 🚜 २५)
                                             ४१. दशलकारा
                                                                 ( ,, too )
        ४०४०. प्रति सं० २। पत्र सं० १४ | ले० काल 🗴 | वे० सं० १३८ क | सा अच्छार |
```

Ą

४०४१. संद्रपविषि***** पत्र सं०४। सा० १८४६ दंव । वाया-संस्कृत । विवय-विधि विवास । र०कास ४। से०कास सं०१ वध्य । पूर्ण । है० सं०१२४०। च्या प्रवार ।

४०४२. संक्विविधि******** | पत्र सं०१। मा० ११३४५३ इ.च.। जावा-हिन्दी। विषय-विक् विकास । र० काल ४। ते० काल ४। पूर्ण । वै० सं०१८८ । म्ह जन्मार ।

४०१३. सम्बक्षीकृता'''''। यच तं० १६। सा० ११६/४४३ इंच ! माना संस्कृत । विवय-पूजा । रु. मान ४ । से० कंस्त्र ४ । संदूर्त । के० ते० १२१ । सः मच्चार ।

Police State Control of the second control of the second of

2028. सहावीरिनिर्वाशापुत्राः ""। वत्र स० ३। सा० ११ \times ५ ६ व । मावा-संस्थत । विषय-

विकोष---निर्वाशकाण्ड गाया प्राकृत ने भीर है।

≱०४४. महाबोरनिवासकस्यासपुत्रा™ भ मान तन त० १ । बा० ११×५ इंच । कैला-सस्कत । विषय-युवा। १० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० त० १२०० । वर नव्यार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ स॰ १२१६) भीर है।

±०४६ सहाजीरपुद्धा—कृत्यावन । पत्र स०१ । झा॰ द×५३ ६व । मार्चा-हिन्दी । विषय-पूजा । ६० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वै० त०२२२ । इह अच्छार ।

१०४७. सांगीतुक्कीगिरिसंबलपूजा—विश्वभूष्या। पत्र स०१३। सा० १२४१, ६व । भावा— संस्कृत । विषय-पूजा। र०काल स०१७४६। ले०काल स०११४० वैद्याल बुनी१४। पूर्ण। वै० स०१४२। व्य क्षम्बार।

> विशय-प्रारम्भ के १८ पद्यों में विश्वभूषण् कृत शतनाम स्तोत्र है। अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

> > सीमुलसये विनक्रियाति श्रीकुन्यकुन्यस्थानुंगीद्रवन्तः ।
> > सह्यसारकारमण्याविष्यस्य लक्ष्यतिष्ठा किलप कराम ।।१।।
> > बातोऽत्री किलसम्पर्वशित्तरमस्य वाद्याभ साहु तवतः
> > साहित्यागमतक्ष्रीमात्रप्रस्य वाद्याभ साहु तवतः
> > साहित्यागमतक्ष्रीमात्रप्रस्य वाद्याभ साहु ।
> > तत्रपृष्टं मुनियोलसूषण्यस्य वीत्यावर्याष्ट्रस्य
> > स्वत्रपृष्टं मुनियोलसूषण्यस्य वीत्यवर्यस्य ।
> > व्यान्द्रसम्बद्धस्य व्याप्यसम्य वाद्यस्य ।
> > व्यान्द्रसम्बद्धस्य कालवास-पृष्टं तदीये रमवस्यतायो ।।३।।
> > तत्रपृष्टं प्रकटो काल विष्यपृष्ट्य वीतिनः ।
> > तेनेव रिवतो यस सम्बद्धस्य वीतिनः ।
> > तेनेव रिवतो यस सम्बद्धस्य सुत्य ।।४।।
> > वटवह्नि दिविश्यस्य सार्यस्य सुत्य ।।४।।

२०४५ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ते० काल ६० १६११ । वे० सं० १६७६ । द्व प्रधार । विर्वय—मोगी तुनी की कवलाकार सन्दल रचना ची है। पत्रो का कुछ हिस्सा चूहोंने काट रखा है। १०१६. बुकुटस्तरनीज्ञतीयापन ''''। यत्र तं० २ । सा० १२६४६ इंच । जाया संस्कृत । विषय⊷ े पूजा। र०काल ४ । ते० वाल तं० १२२म । पूर्ण । दे० तं० ३०२ । सामन्यार ।

१०६०. शुक्तावसीम्रतपुत्रा '' '''। पव सं० २ । सा० १२×१६ १ व । मावा-संस्कृत । कियक-पूजा । र०काल × । ते०काल × । पूर्ण । वे० सं० २०४ । च कच्छार ।

२०६१. गुक्तावकीक्रतीयायन्यूका..... । यम सं० १६। बा० ११२/८६ इ.च । वाया-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ते० काल सं० १८६६ । पूर्ण । दे० सं० २०६ । च वस्तार ।

विसेव---महारमा जोशी पक्षालाल ने बक्पुर में प्रतिनिधि की वी ।

४०६२ शुक्तावसीव्यतिष्यान। यम सं० २४ । सा० य2,४६ इ'व । प्रायर-संस्कृत । विषय-पूरा एवं नियन । र० काल ४ । ते० काल सं० १९२६ । पूर्व । वे० तं० २४६ । क्ष सम्बार ।

४०६३. शुक्रावतीपुत्रा---वर्षी युक्तसागर। पच तं० ३। सा० ११×१ इ.च. । साथा-संस्कृतः। विषय-पूजा। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्णं। वे० तं० १११। क क्षत्रार।

४०६४ प्रति सं० २ । पण स० ३ । से० कास X । दे० सं० ११६ । क अध्यार ।

३०६४. नेषमाकाविषि " "" । १० त० २ । मा० १०४४३ ए व । नाया- संस्कृत । विषय-स्वत्र विषया । १० काल ४ । त० काल ४ । पूर्ण । वै० त० ०११ । क्या सम्बार ।

४०६६. सेचमासामतोद्यापनपूजाः """। वत्र तं० ३। मा० १०६८ए इ.च.१. नावा-संस्कृतः। विवय-चतः पूजा। र० काल ४। ते० काल तं० १०६२। पूर्णः। वे० तं० १००। व्या वस्त्रारः।

४०६७. रङ्गप्रवरुपापनपूत्रा "। पत्र सं० २६। बा० ११% ४६% द'व । माना-संस्कृत । विवय-पूजा। र० कान ×। ने० काल स० १८२८। पूर्व । वै० सं० ११६। ख्रा मध्यार ।

विशेष--- १ प्रपूर्ण प्रति भीर है।

श्रद्भाः प्रति सक २ (पत्र सं० ६० । तेक काल 🔀 । के शंक ६६ । मह अवसार ।

४०६६- रक्षत्रवाषयसासः ''। पत्र सं० ४ । या० १० $\frac{1}{2}$ \times १ इ'व । माचा-माहतः । विवय-पूजा । एकान \times । ते० कान \times । पूर्ति । वै० तं० २६७ । या प्रस्तार ।

विक्षेत्र---हिन्दी में कर्ष दिया हुवा है। इसी मध्यार में एक प्रति (दे० सं० २७१) बीर है।

१८७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ते० काल स० १९१२ जादवा तुदी १ । पूर्वा । वे॰ सं० १६॥ । स्व नव्यार ।

निवेष---एको बच्चार में एक मति (वे॰ वं॰ १५६) सीए है।

```
्रवृजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य
数年 ]
            ४०७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ | ले० काल × | वे० सं० ६४३ | क भण्डार !
            ४०७२. प्रति सं०४ । पत्र सं०५ । से , कास सं०१८६२ भादवा सूदी १२ । वे० स० रेह७ । ख
 भण्डार ।
            ४०७३. प्रति सं० ४। पत्र स० ४। से० काल ×। वे० स० २००। मे भण्डार ।
            विशेष-इसी मण्डार में एक प्रति ( वे० सं० २०१ ) और है।
            ४०७४. रक्षेत्रवक्षव्यातः " । पत्र सं० ६ । मा० १०४७ इंस । भाषा-मपत्र श । विषय-पूजा ।
 र॰ काल ×। ले० काल स० १८३३ । वै॰ सं० १२६ । छ भण्डार ।
            विशेष-संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये है। यत प्रसे अन-तद्दरक्या श्रुत्सागर कृत तथा अन त
 नाम पूजा दी हुई है।
            अरुक्ष्यः, प्रति संव २ । पत्र सं प्रा लेक काल सक १८१६ सावन गदी १३ । वक गक १४६ । छ
 भण्डार ।
            विशय-इसी अण्डार मे २ प्रतिया इसी वेष्ट्रन मे और हैं।
            अक्ष्मिर्दे राजवराज्यकाता " । पत्र सं० ६ । आ० १०३४४३ इ.च । आधा-मन्द्रत । विषय-पत्रा ।
 र॰ काल 🗙 । ले॰ काल स॰ १८२७ झाबाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे॰ सं॰ ६८२ । 🖼 नण्डार ।
            विशेष-इसी भण्डार में एक प्रति ( वै० सं० ७४१ ) धीर है।
            ४०७७. प्रति स० २। पत्र स० ३। ल० नाल ×। वे० स० ७४४। च भण्डार।
            श्टब्र प्रति संट ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० स० २०३ । स्नु भण्डार ।
            ४८७६. रखत्रवजवसालाभाषा—सथसल । पत्र स० ५ । सा० १२×७१ इ.च । भाषा-जिल्हो ।
 विवय-पूजा। र० काल संग् १९२२ फायुन सुदी ६ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० ६१३ । 🖼 अण्डार ।
            प्रट=a. प्रति संघ थ। पत्र स० ७। ले० काल स० ११३७। वे० स० ६३१। क अण्डार।
            विशेष-इसी अध्वार मे ५ प्रतिया ( वै० सं० ६२६, ६२०, ६२७, ६२८, ६२४ ) और है।
            ४०८१. प्रति संब है। पत्र संव है। सेव कान ×। वेव संव ८५। छ अवडार।
            ४०=२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । नं० काल सं० १९२० कालिक ब्रॉ १० । वे० स० ६४४ । ट
 भण्डार ।
    विशेष-इसी मण्डार मे २ प्रतिया ( वे॰ सं॰ ६४४, ६४६ ) और है।
```

४० द रे. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १६० । स्त भवदार ।

r)

४० प्रश्न र स्त्रवज्ञवज्ञास्त्र $\cdots \cdots$ ापत्र सं• ३ । बा० १३३ \times ४ इंच । सावा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल \times । से० काल \times । वे० सं० ६३६ । क्र सम्बार ।

४०⊏४. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ६६७। ज अण्डार।

४०८६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४ । ने० काल सं० १६०० द्वित्र शासोप्त बुदी १ । ने० सं० १८४ । म्र मण्डार । ४०८७. रक्तम्बपूजा—सं० खासाचर । पत्र सं० ४ । म्रा० ८३/४४ इ'व । भाषा-संस्कृत । विषय— पूजा । र० काल ४ । ने० काल ४ । पूर्ण । नै० सं० १११० । खा मण्डार ।

४०८८. रङ्गत्रवपूत्रा—फेराबसेन । पत्र सं० १२ । घा० ११×५ इ'व । मादा–संस्कृत । विवय-पूजा। र० कान × । ने० कान × । पूर्ण । वे० सं० २६६ । च मण्डार ।

४०८६. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले॰ काल 🗙 । वे॰ सं॰ ४७६। वा मण्डार।

४०६०. रक्षत्रयपूजा—पद्मतन्दि । यत्र सं॰ १३ । धा० १०३/४६३ इंच । सावा—संस्कृत । विषय— पूजा । र० काल imes । तेर काल imes । पूर्ण । वेरु सं० २०० । च सम्बार ।

४०६१. प्रति सं०२ । पत्र सं०१३ । ते० काल सं०१६६३ मंत्रसिर बुदी६ । वे० सं०३०५ । च भण्डार । ४०६२. रज्ञत्रपूर्वाः''''''''। पत्र सं०१५ । मा०११४५ ६ व । मादा-संस्कृत । विदय-पूजा।

र क काल × | लेक काल × पूर्ता | वेक सक्थक | क्या प्रथमार | विशेष— इसी सर्वार में ४ प्रसियां (वेक संक्थ ५ ६६, १२०४, २१४६) ग्रीर हैं। ४०६३ - प्रति संक्य । पत्र संक्थ । लेक काल संक्श ६८६१ | वेक संक्य १ हा स्वयमार । ४०६४ - प्रति संक्ये। पत्र संक्ष १४ । लेक काल × | वेक संक्य ६६ | स्वयमार | ४०६४ - प्रति संक्थ । पत्र संक्ष काल संक्श ६११६ | संक्येक ६४७ । स्वयमार |

४०६६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १८। ले॰ काल सं० १८१८ पीय सुदी ३। वे॰ सं० ३०१। व

शम्बार । विशेष—इसी तप्कार में ३ प्रतियां (केंग्बंग ३०२, ३०३, ३०४) और हैं। ४०६७. स्रति संग्रह । पत्र संग्रह । तेंग्बंग × । वेग्बंग रंग्बंग राह्म विशेष—इसी तप्कार में २ प्रतियां (केंग्बंग ४८६, ४२६) और हैं। ४०६८. प्रति संग्रा । पत्र संग्रह । केंग्बंग ४ । सपूर्या । केंग्बंग १९७६ । इसकार ।

२०६६. रज्ञानपूजा--वानतराव । पत्र सं० २ ते ४ । सा० १०३/४६३ इ.च.। साल-हिन्ती । विवय-पूजा । १० काल ४ । लें० काल सं० १८६७ चैच दुरी ३ । सपूर्ण । वे० सं० ६३३ । क सम्बार । ४१८०. प्रति सं० २ | पत्र सं० ६ | ते० कास × | वे० सं० ३०१ । आ अवकार |

४१०१. रह्मत्रयपूत्रा—ऋषभदासः। पत्रसं∘१७। घा०१२८४१ इ'च। जाना-हिन्ती (पुरानी) विषय-पुत्रा। र०काल ×ो से०काल सं०१च४६ पीचवृती ४ | पूर्णीवैण्डं पर्दर्शकालकार।

४१०२, प्रति सं०२ । पन सं०१६ । सा०१२५४५६ इंच । ते० काल ४ । पूर्ण । वे० सं०३६४ । कः अध्यार ।

विशेष-संस्कृत प्राकृत तथा मपभ्रंश तीनों ही भाषा के शस्य हैं।

मन्तिम---

सिहि रिसिकिति मुहसीसै,

रिसह दास बुहदास भएति । इय तेरह पयार चारिलउ.

संक्षेत्रे भानिय उपवित्तर ।।

४१०३. रक्षम्ययुकाः*****। पत्र सं०४ । का० १२×८ ६ व । भाषा-हिन्सै । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्वी । वै० लं० ७४२ । का मण्यार ।

४१०४. प्रति सं∗ २ । पत्र सं० ४३ । ले॰ काल × । वे॰ सं० ६२२ । का भण्डार ।

५१०४, प्रति सं०३। पत्र सं०३३। ते० काम सं०१६६४ पीप बुदी २। वे० सं०६४६। इन् भण्डार।

विशेष-इसी अण्डार में एक प्रति (वै० सं० ६४०) और है।

४१८६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० १०६। म्ह भण्डार।

विशेष-इसी मण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ १०६) घौर है।

४१०७. प्रति संट ४ । पत्र संव ३४ । लेव काल संव १६७८ । वेव संव २१० । क्य अवदार ।

श्रीरुक्त. प्रति संट ६। यत्र सं० २३। ले० वाल ×। वे० सं० ३१६। व्या अण्यार ।

४१०६. रज्ञत्रसमें दक्षविधानः। पत्र सं० ३४, । झा० १०४६ इंचः। माया–हिन्दीः। विषय–पूत्राः। र० कालः × । ले० कालः × । वे० सं० ५७ । इस भण्डारः ।

४११०. रज्ञन्यविधानयुका—पं० रज्ञकीचि । पत्र सं० द । मा० १० \times ४ $\frac{1}{4}$ संग माना—संस्कृत । विषय—पुना एवं निधि विधान । र० काल \times । ते० काल \times । पूर्वी | वे० सं० ६४१ । इस मध्यार ।

४९११ रह्मत्रपविभासः """। पत्र सं०१२। मा०१०३×४० इ.च | झावा-संस्कृत । विषय-पूजा एवं विधि विभाग । र० काल × । ते० काव सं०१८६२ स्मृत सुवी ३) है० सं०१६६ | स्न सम्बार। k१२२. रक्षत्रविधावपूजा—क्षेक्रमान् । यस सं० ३६ । सा० १२४७३ ह च । भाषा-हिन्दी । विध्य-पूजा । १० काल प्र । ते० काल सं० १९७५ । पूर्ण । वे० सं० ६९ । रा सम्बद्धाः

४११३. प्रति सं० २। पत्र सं० ३३। ले० काख ×। वे० सं० ११७। सः अण्डार।

हरेश्वर रक्कवक्रतोद्यापन------। यन सं०६। झा० ७४६ इ'न । आवा-संस्कृत । विवय-पूजा । र० साल ४ । ते० साल ४ । सपुर्श । वै० सं०६६० | इन्यम्बार ।

विशेष-इसी मण्डार में एक प्रति (वै० सं० ६६३) और है।

 χ ११ χ . रज्ञावजीज्ञतस्थिमान—न० कुन्न्याद्यस्य । यच सं००। झा० १० χ १ χ दंच । नापा—हिन्दी । विषय-विधि विधान एवं पूजा । र० काल χ । ले० काल सं० १६८१ जैन बुदी २ । पूर्ण । वै० सं० ३८३ । क्या भव्यार ।

विशेष-प्रारम्भ-- भी बुषभदेवसस्यः भीसरस्वस्ये नमः ।।

जय जय नामि नरेन्द्रपुत सुरमण सेवित पाद । तत्व सिंदु सामर लसित योजन एक निनाद ।। सारद पुर बरले नवी नयु निरक्षन हुंस । रत्नावांत तप विधि बहुं तिम वाधि तुक वंदा ।।२।।

कुर्वः -- अंबुडीप जरत उचार, बहुं बड़ी बरलीचर तार । तेह सभ्य एक बार्य युक्तंत्र, रक्कांकेक्षपमिति प्रकार ॥ वंतपुरी समरी उद्दास, स्वर्णकोक सम बीसिकास । उज्येस्तर जिनवर मासाब, ऋत्तर डोल पटहस्तर नाव ॥

प्रतिन-- भनुकानि युतिनि देईराज, दिखा लेई करि प्रात्म काज ।
सुक्ति काम गुर हुउं प्रमास, ए सहा पूरनक्षह वास्य ॥१६॥।

इति भी इत्नावकी का विकास निकास भी पास बढ़ांवर सम्बन्ध समात ।।

and the second of the second

सं०१६८५ वर्षे चैत्र सुदी २ कोने त० इच्छावात पूरणगङ्गजी तालाच्य त० वर्द्ध मान निकित ।।

2११६, रिविज्ञतोषापनपूजा— वैचेन्द्रकीरिंत । पत्र सं०६। सा०१२४५१ इ.च.। भाषा—संस्कृत ।
विच्य-पुजा । २० काल X । ते० काल X । वे० सं०१ । सा भण्यार ।

५११७. प्रति सं०२ । पत्र सं०६ । ले० काल स०१ ८०८ । वे० सं०१०१० । व्या प्रण्यार ।

४११ च्यानवीपूत्रा— विश्वभूषया। पत्र सं०६। झा०१२१×६ दव। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं०१७३६। ले० काल सं०१९४०। पूर्ण। वेश सं०३०३। स्व मण्डार।

विषेत-प्रन्तिम- सरत्समेषेटित्रितत्त्ववन्द्री फाग्रुन्यमासे किल कृष्ण्यसे । नवरंगवामे परिपूर्णतास्यः अस्या जनानां प्रवदातु सिद्धिः ॥

इति श्री रेवानदी पूजा समाप्ता ।

इसका दूसरा नाम बाहुड कोटि पूजा भी है।

११९६. रैव्कत—गंगारास्रा पत्र सं०४ । सा०१२×५ इंच । भाषा-मंस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । से० काल × । वे० सं० ४३६ । का वण्यार ।

४१९०. रोहिस्सीन्नतमंबस्नविधान — केशवसेन । पत्र सं० १४ । झा० ६२,४४३ इंब । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा विधान । र० काल × । ते० काल सं० १०७० | पूर्ण । वै० सं० ७३० । का बस्दार ।

विशेष--जयमाला हिन्दी में है। इसी अण्डार में २ प्रतियां वै० सं० ७३६, १०६४) और हैं।

४१२१. प्रतिसं०२। पत्र सं०११। लेश्काल सं०१८६२ योष बुद्दी १३। वेश्मं०१३४। ज , भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० २०२, २६२) और हैं।

४१२२. प्रति सं० ३। पत्र सं० २०। ले० काल सं० १६७६। वे० सं० ६१। का अण्डार।

४१९२. रोहियोझलोखापन। पत्र सं० ४ । झा० ११४६ इ.च.। भाषा–संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । के० काल × । झपूर्ण । वे० सं० ४४६ । इस सम्बद्धाः ।

विशेष---इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४०) और है।

४१२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० २६२ । सा मध्दार ।

४१२४. प्रति सं ३। पत्र सं ६। ते काल ×। वे सं ६६६। अ प्रण्यार ।

विशेष---इसी अध्वार में एक प्रति (वै॰ सं॰ ६६५) और है।

४१२६. प्रति सं० छ। पत्र सं० ७। ते० काम ×। वे० सं० ३२४। स अध्वार।

वृजा प्रतिश्वा एव विधान साहित्य]

श्ररणः अञ्चलकियोजेक विभागः ""। प्रच सं० ३ । न्या० १२ (४६%) इ.च.। भाषा संस्कृतः। विषय− भगवान के स्रविष्ठको पूजाव निमान । ए० काल ४ । ले० काल सं० १६६६ वैद्याला सुदी १४ । पूर्णः। वे० सं० १७७ । जानण्यारः।

४१२८. स्रमुकल्यासाः। पत्र सं०८। मा० १२×६ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-मित्रिक विमान । र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण । वे०सं० ६३७। इ.भण्डार ।

४१२६. प्रति सं०२। पत्र सं०४। ते० काल ×। वे० सं०१८२६। ट मण्डार।

४१३०. सञ्चयनन्त्रमञ्जूषाः........। यत्र सं०३ । स्ना०१२८४३ प्रचामाया-संस्कृत । विषय-यूजा । र०काल ४ । तं०काल सं०१६३६ सासीच बुदी १२ । यूर्ण । वे०सं०१८४७ । इ. मण्डार ।

४१३१. समुरांतिकपूजाविषः सः '''' ''''। पत्रः सं०१४। झा० १०३८४३ इ.च.। भाषा-संस्कृतः। विषय-पूजाः। र०कालः ४ । ते०कालः सं०११०६ साथ जुदौ कः। पूर्णः। वे०सं०७३ । च्या भण्यारः।

> ४१३२. प्रति सं०२ । पत्र सं०७ । ते० काल सं०१८६० । अपूर्ण । वे० सं०८६३ । इस मण्डार । ४१३२. प्रति सं०३ । पत्र सं०८ । ते० काल स०१९७१ । वे० सं०६६० । इस मण्डार ।

विद्योष---राजुलाल भौंसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

४१३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८८६ वे• सं० ११६ । छ अण्डार ।

४१३४. प्रति सं० ४ । पत्र स० १४ । ने० काल × । वे० सं० १४२ । ज अण्डार ।

४१३६. लाचुक्षेयविधि— सभयनन्दि । पत्र सं० १ । प्रा० १०६/४७ ६ व । जावा संस्कृत । विषय– विधि विधान । र•काल ४ । ले०काल सं० १६०६ फाग्रुस्स पुर्वी २ । पूर्या । वै० स० १५८ । अर मण्डार ।

विशेष-इसका दूसरा नाम श्रेयोविधान श्री है।

४१२७. अञ्चल्लापनटीका—पंट आंबशार्सी। पत्र सं० २२। सा०१२४४ ६ इंच। माया-संस्कृत। विषय—समियेक विकि । र०काल सं०१४६०। ले० काल सं०१८१४ कालिक बुदी ४ । पूर्ण। वै० सं०२३२। का मण्डार।

४१२८ सामुस्तपन्न **** । पत्र सं∘ ४ । झा॰ = ४४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय- मनिषेक विधि । र० कास ४ । ले० काल ४ । पूर्वी। वै० सं∘ ७३ । सामध्यार ।

्र ४१३६. स्रक्षित्रविद्यानपुत्रा—हवेकीस्ति । रम सं० २ । घा० ११३/४१६ दंव । माया-संस्कृत । त्रविदय-पूजा । र० साम ४ । मे० काम ४ । पूर्ण । वे० सं० २२०१ । घर मध्यार ।

विशेष---इसी अध्यार में एक प्रति (वे॰ तं॰ ११४१) भीर है।

४१४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल 🗴 । वै० सं० ६१४ । 🖝 मण्डार ।

४१४१ प्रति सं०३। पत्र सं०३। ले० काल। वै० सं० ७७। मा भण्डार।

४१५४२ स्त्रिक्षियानयुक्ता''' । पत्र सं॰ १ । सा॰ ११४४ ६'व । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । ६० काल × । से॰ काल × । सत्रुर्ण । वे० सं० ४७६ । इस मध्यार ।

विशेष--इसी अण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० ४६४, २०२०) और हैं।

अश्प्रके. प्रति सं≎ २ । पत्र सं∗ ११ । ले॰ काल × । वै० सं० १६८ । सा अण्डार ।

श्रीक्षप्त, प्रति सं : ३। पत्र सं : १० । ले : काल x । दे : सं : द७ । धा मण्डार ।

४१४४. प्रति संc ४। पत्र संc १०। ले॰ काल संc १६२०। वे० संc ६६३। क मण्डार।

श्रेप्टर्ड. प्रति सं० श्रापत्र सं० १। ले० काल ×ावे० सं० ३१६। आ अध्यार।

विशेष---इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे॰ सं॰ ३१६, ३२०) और हैं।

४१४७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ११७। छ भण्डार।

. ४१४ फ. प्रति संट ७ । पत्र सं∘ २ से द । ले० काल सं० १६०० भावता सुदी १ । सपूर्ण । वे० सं० ११७ । आ मण्डार ।

विशेष-इसी अण्डार मे एक प्रति (वे सं १६७) और है।

श्रिष्ट. प्रति संब मा पत्र संब १४ । ते काल संब १६१२ । वेब संब २१४ । मा मण्डार ।

४९४०. प्रति संट ६ । पत्र संट ७ । सेट काल संट १८८७ माहसूदी १ । वेट संट ६३ । इत्र कण्यार ।

विशेष-- मंडल का चित्र भी विवा हुमा है।

४१४१. लेब्बियानझतोद्यापनपूजाः ""। पत्र सं∘ १ | बा∘ ११४४ इ.व | काषा–संस्कृत । विषय∽्रजा । र० काल ४ । ते० काल सं∘ भाषता सदी ३ । प्रर्ण | वे० सं० ७४ | ग्रामक्वार ।

विशेष--- मन्नालाल कासलीकाल में प्रतिसिधि करके बौंबरियों के मन्तिर में चढाई ।

४१४२. प्रति सं०२ | पत्र सं०१० | ते० काल × | वे० सं०१७६ । मा अण्डाद ।

४१४६. सब्बिक्शिनपूजा-साजवन्द् । यत्र सं० २१ । सा० ११४८ इ.स. माया-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १९६३ । से० काल सं० १९६२ । पूर्ण । वे० सं० ७४४ । व्यायस्थार ।

विशेष--इसी अध्यार मे २ प्रतियां (वे० सं० ७४३, ७४४/१) घोर हैं।

५६४४: लब्बियनियुज्ञा''''' । पत्र सं• ३४ । सा• १२४४६ ६ व । मावा हिन्दी । विवस-पुजा। १० काल ४ । ते• काल ४ । पूर्ण । ३० सं• १७० । व सम्बार । १९१८ - स्विष्यान तथापनपुत्राः। पत्र सं० ८ । सा० १९६४ ६ इ.च । आया-संस्कृत । विषय-पूत्रा । र० काल ४ । ते० काल सं० १९१७ । पूर्ण । वे० सं० ६९२ । क नण्यार ।

विशेष--इसी अण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे॰ सं॰ ६६१) और है।

४१४६. प्रति सं० २ । पत्र स० २४ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० २२७ । ज अण्डार ।

४१४७. बास्युपुत्राः'''''''। पत्र सं० १ । मा० ११६ँ×५ इ'च । माया-संस्कृत । विषय-इक् स्रवेश पूत्रा एवं विभाग । र० काल × । के० काल × । पूर्वा । वै० सं० १२४ । का वण्डार ।

४१४ म. प्रतिसं०२ । पत्र सं०११ । ले० काल सं०१६३१ बैबास सुदी मा वै० सं०१९६ । अस्मारः

विशेष--- उद्धरनाल पांड्या ने प्रतिनिधि की बी।

४१४६. प्र'त सं⊂ ३ । पत्र सं०१० । ले०काल सं०१८१६ वैद्याला सुदी द । वे० सं०२० । अर भण्डार ।

४१६० विद्यमानवीसतीर्थेह्नरपूजा—नरेन्द्रकीचि । पत्र सं०२ । बा० १०४४ ६ व । वाका-संस्कृत । विवय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल सं०१ तरे० । पूर्ण । वै० सं० १७२ । का वण्डार ।

४१६१. विद्यमानवीसतीर्थेष्ट्रस्यूजा—जींहरीकाल विकासा । यत्र सं० ४२ । या० १२४७ ई र व । भाषा-हिस्सी , विषय-पूजा । र० काल सं० १६४६ सावन सुदी १४ । ले० काल 🗶 । पूर्ण । वे० सं० ७३६ । व्य भष्यार ।

४१६२, प्रति सं० २ । यम सं० ६३ । ले० काल × । वै० सं० ६७५ । क मण्डार ।

±१६३. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १६ । ते० काल सं० १९१६ डि० ज्येष्ठ युदी २ । वे० सं० ६७८ । ख मध्यार ।

विमेश-इसो अण्डार में एक प्रति (वै० सं० ६७६) और है।

४१६४. प्रति सं० ४ । पण सं० ४३ । ले॰ काल × । वे॰ सं० २०६ । **स्** मण्डार ।

विशेष--- इसी अण्डार में इसी वेष्ट्रन में एक प्रति और है।

हरेदेश. विसानग्रह्मि—चन्द्रकीचि । यम सं० ६ । बा० ११३×५ इ'व । जाया-संस्कृत । विषय-विचि निषान एवं दूजा । १० काल × । ते० काल × । दुर्ख । वे० सं० ७७ । ब्रा जय्बार ।

वियोग--कुछ प्रष्ठ पानी में भीग गये हैं।

११६६. प्रति सं० २ । पण सं० ११ । ते॰ काल × । ते॰ सं० १२२ । ह्यू प्रस्तार । वितेष--वीची के विवाद में सक्तीपाल ने प्रतिक्रिय को सी । xas J श्रद्धि विसानशुद्धिपूत्रा'''''''। पत्र सं० १२। घा० १२३×७ इ'स। प्रावा-सस्कृत । विषय-युक्ता। ए० काल × । ले० काल सं० १६२० । पूर्ण । वै० सं० ७४६ । का भण्डार ।

विशेष-इसी अवडार में एक प्रति (वै० सं॰ १०६२) भीर है।

998⊑ प्रतिसं०२ । पत्र सं०१० । ले० काल × । वै० सं०१६८ । ज मण्डार ! विशेष--शान्तिपाठ भी दिया है।

४१६६. विवाहपद्धति-सोमसेन । पत्र सं० २४ । ब्रा॰ १२४७ इ'च । भाषा-सस्कृत । विषय जैन विवाह विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६६२ । का मण्डार ।

४१७०. विवाहविधि। पत्र संब माग ह×४ इ.च : भाषा-सस्कृत ! विषय-जैन विवाह विधि । र० काल ⋉ । ले० काल ⋉ । बापूर्ण । वै० सं० ११३६ । इस भण्डार ।

४१७१. प्रति सं २ । पत्र सं ० ४ । ले० काल × । वे० सं० १७४ । स्व भण्डार ।

४१७२, प्रति सं० ३। पत्र सं० ३। ले० काल × । वे० स० १४४ । छ भण्डार ।

४९७३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ ले० कान सं० १७६८ ज्येष्ठ बुदी १२। वे० पं०१२२ । ह्य अण्डार । ¥१७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ने० काल × । वे० सं० ३४१ । ह्या प्रण्हार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वै० सं० २४६) और है।

४१७४. विष्णाकुमार सुनिपुका-वाबुलाल । पत्र संबद्धा प्राव ११४७ इवः भाषा-हिन्दी । विषय-पंजा । र० काल 🗴 । मे० काल 🗴 । पूर्ण । वै० सं० ७४५ । 📆 अण्डार ।

४१७६. विहार प्रकरण ' '''। पत्र सं०७। मा० म×३३ इ'व। मावा-संस्कृत । विषय-विधान। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १७७३ । ऋ अवशार ।

४१७७. ब्रतनिर्वाय— मोहन । पत्र सं०३४ । प्रा० १३×६, इ.च.। भाषा-संस्कृत । विषय-विश्वि विधान । र० काल सं० १६३२ । ले० काल स० १६४३ । पूर्ण । वे० सं० १६३ । सा अध्याद ।

विशेष--- प्रजयदर्ग में रहने वाले विद्वान ने इस ग्रन्थ की रचना की थी। ग्रजमेर में प्रतिलिधि हुई।

४१७८ अतनाम "। पत्र सं०१०। मा०१३×६ इ'च। भाषा-हिन्दी। विषय-वृतो के नास । र॰ काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वै॰ सं० १८३७ । ट अण्डार ।

विशेष-इसके मतिरिक्त २ पत्रो पर ध्वजा, माला तथा क्षत्र भादि के चित्र हैं। कुल ६ चित्र हैं।

४१७६ अतपुजासम्बद्धःःःःः । पत्र सं० ३६८ । भाग १२३×५३ द च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुजा | र० काल 🗙 | ले० कील 🗙 | सपूर्ण | वै० सं० १२८ | छ अण्डार ।

विश्रेष---निम्न पूजायो का संग्रह है।

नाम पूचा	कर्चा	भाषा	विद्येष
बारहसी चौतीसम्रतपूजा	वीसूवस	संस्कृत	ने॰ काल सं॰ १८००
विशेषदेवगिरि में पार्श्वन	ाष चैत्यामय में लिखी गर्द ।		वीष बुदी ४
बम्बूडीपपूजा	चिनदास		से० काल १८०० पीय बुदी १
रत्नत्रयपूजा	_		,, ,, पीच बुदी ६
वीसती र्व कुर पूत्रा		हिन्दी	
बुतवू वा	शानभूषस	संस्कृत	
पुरुष्ट्रवा	जिनदास	17	
सिढपूजा	पदानन्दि	,,	
बोडशकारस	-	77	
दशनकाराष्ट्रजाजयमास	ce#	वपश्च व	
लबुस्वयं सूस्तोत्र		बंस्कृत	
नन्दीस्वर उद्यापन		11	से॰ समार्थः १६००
समबक्षरसपूर्वा	रामग्रेकर	**	
ऋविमंडलपूजाविधान	पुर ाहमन्दि	99	
तस्यार्चसूम	क्यास्याचि	19	
तीसचौबीसीपूचा	बुजनन	संस्कृत	
धर्मसम्बद्धाः	-	,	
विन <u>युक्तसंपत्तिपू</u> षा	केसवरीन	m ·	. 10 MM 1668
रलक्यपूजा वयमास	क् यभदास	सपश्र'व	
नवकार पैतीसीपूचा	,	संस्कृत	
कर्मरहनपूजा	कृतक न		
रविवारपूचा		29	
प श्चलवास्त्रक रूवा	दुवासागर	n	

११८०. ऋतविश्वास्त्रण्याः। पत्र सं॰ ४ । प्राः ११६ ४५ इंब । भाषा-हिन्दी । विवय-विवि विश्वास । र० कास ४ । से० कास ४ । प्रार्थ । वे० सं० ६७६ । व्या सव्यार ।

विशेष- इसी भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० सं० ४२४, १६२, २०३७) और हैं।

¥१६९. प्रति सं०२ । पत्र सं०३० । ले० काल × । वै० स० ६६० । क मण्डार ।

४१≒२. प्रति संट ३ । पत्र सं० १६ । लं० काल × । वै० सं० ६७६ । क भण्डार ।

४१८३. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०। ते० काल ×। वे० सं० १७८। छ मण्डार।

विभोष -- चौबीस तीर्थ कूरो के पंचकत्यागुक की तिथिया भी दी हुई है |

े ४१८४. ब्रतविधानरासो – दौलतरामसंघी । पत्र सं० ३२ । घा० ११८४६ इ'व । प्रापा–हिन्दी । विषय-विधान । र० काल स० १७६७ घासोब मुदी १० । ले० काल सं० १८३२ प्र० आदवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १९६ । ब्रु अध्वार ।

६१८४. जनविवरएः'''''''''''। पत्र सं० ४ । मा० १०३८४ इंच । आया–हिन्दी । विवय–ब्रत विवि । १० काल ४ । ले॰ काल ४ । अपूर्ण । वे० सं० ८८१ । इस मध्यार ।

विकोध-इसी अव्हार में एवं प्रति (वे० सं० १२४६) और है।

४१६६. प्रति सं०२ । पत्र सं०६ से १२ । लं० काल × । बपूर्ण वे० स०१६२३ । ट अण्डार ।

४१८०. जतविषरणु***''। पत्र तं∘ ११ । घा० १०४५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-यत विभि । १० कान ४ । ते० कान ४ । धपूर्णा∣वे० स० १८३६ । इ. सण्डार ।

४१८म अन्तसार— आपा० शिवकोटि । पत्र सं०६ । सा०११४४३ इंव । आवा–संस्कृत । विवय– ब्रत विधान । र०काल x । ते०काल x । पूर्ण । वे०सं०१७६४ । ट मण्डार ।

४१न६ त्रतोशापनसम्बद्धःःःःः। पत्र सं० ४४६ । मा० ११८४ द्वं व । भावां-संस्कृतः । विषय-वतपूजा । र० कात ८ । ले० काल सं० १८६७ । महार्गा । वेऽ सं० ४४२ । का अध्वारः ।

विशेष---निम्न पाठो का संग्रह है---

	_	
नास	कर्त्ता	भाषा
पस्यमंडलविधान	शुभवनः	संस्कृत
मक्षयदशमी विधान		****
मीनिव तोद्यापन		77
भौनिवतीखापन		"
		_

वंचमेरजयमासा	मूचरदास	-
ऋविमंडलपूजा	ছুন্দা ন	हिन्दी -
पद्मावतीस्तोत्रपूजा		संस्कृत
पश्चमेरुपूजा		71
धनन्तवतपूजा		71
मुक्तावलियूजा	****	7
बास्त्रपूजा		77
वोडशकारस व्रवाचापन	केम्बरसेन	*
मेचमाना वतोद्या यन		•
चतुर्विशतिष्रतोद्यापन		,,
र शलकासुत्रा	_	79
पुष्पाञ्ज लवतपूषा [बृहद]	***	79
पश्चमीवतोद्यापन	कवि हर्षकल्यास्य	"
रत्न वयवतोद्यापन [वृहद्]	केशवसेन	>
रत्नत्रयद्वतास्त्रायम		19
मन-तबतोबापम	प्र ण् य न्द्रसृरि	77
हादशमासांतच्युदशीवतायायम	20 4. vd. ("
पश्चमास बतुर्दकीवतो छापन		•
ब ष्टाह्मिकासतोकापन		"
प्रश्नवनिविष्ट्रजा	_	19
सीस्पनतो रा पम	_	n
ज्ञानपञ्जिब शतिवती छापन	-	39
खमीकार र्वेतीकीपू चा	••••	•
रत्नावलिवतीकापन	-	79
वित्रकृत्वयस्तिपुत्रा	_	,
वसपरमस्यानवतीयापन		*
an is it at the Miles of the latest at the l	-	.0

	संस्कृत
	n
_	,
	,,
श्री मूचरा	"
श्राशाधर	**
_	n
	"

४१६०. प्रति सं०२। पत्र सं०२३६। ले० काल ×) वे० सं०१६४। स्र सम्बार।
 निस्त प्रतायो का संबद्ध है—

नाम	कर्चा	भाषा
सन्धिविधानोद्यापन		संस्कृत
रोहिसीवतोबापन		हिन्दी
भक्तामरक्रतीचापन	केशवसेन	संस्कृत
दशलकगुद्रतोद्यापन	सुमतिसागर	27
रत्नत्रयद्वतोद्यापन	-	,,
धनन्तवतीचा पन	गुरावदसूरि	7)
पु ष्पाञ्ज लिश्वतोखापन	-	,,
शुक्तपञ्चमीत्रतपूजा	-	19
पञ्चमासचतुर्वशीपूजा	म॰ सुरेन्द्रकीर्ति	,
व्रतिमासातचतुर्वशीवतो <u>खा</u> पन	-	,,
कर्मबहनपूजा	-	**
बादित्मदारवतोषायन	-	,,

४१६१. बृहस्पतिविद्याल **** । पण र्ष० १ । घा० १८४४ इ.च । मावा-संस्कृत । विदय-विद्याल । २० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००७ । घर कच्चार । ξ १६२ बृहत्गुरावसीरातिसंबक्षपूजा (चौसठ ऋद्विपूजा)—स्वक्षपर्वत् । पत्र सं० ५६। धा॰ ११ \times ५ र व । जाना-हिन्ती । विषय-पूजा । र० काल सं० १६१० । से० काल \times । पूर्वः । वै० सं० ६७० । क जन्यार ।

११६६. प्रति सं० २ । यब सं० २२ । मे० काल ४ । वे० सं० ६४ । घा मण्डार । ११६४. प्रति सं० ३ । यत्र सं० ३६ । ते० काल ४ । वे० सं० ६०० । घा मण्डार । १९६४. प्रति सं० ४ । यब सं० ६ । ते० काल ४ । बयुर्ख । वे० सं० ६०६ । घा मण्डार । १९६६. परव्यविक्षेत्रपूजा —विश्ववेस । यब सं० १७ । ब्रा० १०० ४४ ६ वं । मामा—सस्कृत । विषय— पूजा । र० काल ४ । ने० काल ४ । युर्ख । वे० सं० ७१ । ब्रा मण्डार ।

भीनव्यक्तिस्त्वासं योजयस्तित्वकं रामसेनस्यकं । गच्छे नंदोतटाक्ये यमितिह्य पुने नु खकर्गानुनीन्द्र ।। स्यातोसीविष्यमेनांविमनतरमित्यवयक्तं कार्यात् । सोममुदामवासं अविजनकार्तने क्षेत्रपालानां शिवास ।।

चौबीस तीर्थक्ट्रों के भौबीस क्षेत्रपासो की पूजा है।

४१६७, प्रति सं०२ । यत्र सं०१७ । ने० नात ४ । पूर्या । ने० सं०२६२ । सा प्रकार । ४१६६ व्यवशास्त्रसम्बद्धसम्बद्धाः ःः । यत्र सं०१८ । ता०११३४५ इत्या मात्रा-प्राकृत । विवय-पूता । र०काल ४ । ने०काल स०१८६४ माववा बुदी १३ । ने०सं०३२६ । व्यवस्थार ।

निषेप---संस्कृत में पर्याचवाची सन्य विषे हुने हैं। इसी प्रष्टार में २ प्रतियां (वे० नं० ६१७, २६६, व-४, १०११, २०४४) और हैं।

अरेंबर. प्रति संब धा पण संब १६ । तेक काल संब १८०२ मंगसिर युवी १० । तेक संब १६० । य

श्रद्द अति सं∈ २ । पण सं० १४) ले० काल सं० १७६० आसोज सूदी १४ । वै० सं० ३०३ । का

विशेष-इसी बन्दार में एक सपूर्त प्रति (वे॰ सं॰ ३६१) सीर है।

श्र-०३. प्रति सं० ६ | पत्र सं० १२ | ले० काल × | वे० सं० २०८ | मा मण्डार |

४२०४. प्रति सं० ७। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८०२ मगसिर बुवी ११। वे० सं० २०६ । स्व

नव्यार। ४२०४. पोदशकारसाजयमाल—रदुधू । पत्र सं०२१ । झा०११८४ इ.च । माया-स्पार्भ श । विषय-पूजा। र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । दे० सं० ७४७ । इस्पेटार।

विशेष-संस्कृत टीका सहित है। इसी अण्डार में एक प्रति (वै० सं० ८८६) धीर है।

. ४२०६. घोडराकारगुज्यसालः ''''' पत्र सं०१३। झा०१३×५ इंच। जावा-झपभंश। विषय-पूजा। रं∘काल ×। ते० काल ×। पूर्ण। वै० सं०१६६। स्र जध्दार।

४.२०७. प्रति सं०२ । पत्र सं०१५ । ते० काल × । वे० सं०१२६ । इद्र भण्डार ।

विशेष---संस्कृत में टिप्पए दिया हुआ है। इसी मण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ १२६) और है।

४२०८. वोडशकारस्यख्यापन *****। पत्र सं०१४ । धा०१२४४३ इ.च.। भाषा-संस्कृतः। विषय∽ पूजा। र० कलः × । ले० काल सं०१७६३ बाजाख बुवी १३ । पूर्णा । दे० सं०२४१ । का अध्यारः।

विशेष--गोधों के मन्दिर मे पं॰ सदाराम के वावनार्थ प्रतिनिधि हुई थी।

4२०६. चोडराकारसाजयमाल******। पत्र सं० १०। बा० ११५×१३ इ'वः भाषा-प्राङ्गत, संस्कृत । विचय-पूत्रा । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । समूर्णः वे० सं० १४२ । छा सम्बार ।

४२१०. प्रति स० २ । पत्र सं० ६ । ते० काल × । वे० स० ७१७ । कृ मण्डार ।

श्रे ९९१. यो डराकारगुजयमालः'''''' । पत्र स० १२ । प्रा० १२×८ इंग । आया–हिन्दी गडा । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६६६ धायाड बुत्रो ४ । पूर्ण । वे० सं० ६९६ । घा अध्यार ।

४०१२. घोडराकारणतथा दशलक्षण जयमाल—रह्यू । १७ सं० ३३ । बा० १०४७ इंच । मावा-मन्त्रंश । विषय-पूजा । र० काल ४ । लं० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १२६ । क्क मण्डार ।

ररररे. पोडशकाररापूजा—केरावसेन । पत्र मं∘ १२। आ० १२×५२ इंच। आचा संस्कृता । विचय-पूजा। र०काल सं०१६२४ माव बुवी ७। ते० काल सं०१दर३ सासोज बुवी १। पूर्णा । वे० सं०५१२ । का अच्यार।

विशेष-इसी अवटार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ५०६) और है।

४२१४. प्रति सं०३ । पत्र सं०२१ । ले० काल × । वै० सं०३०० । सा सण्डार ।

४२१४. वोडशकारसपूजा......। यत्र सं०२। मा० ११४४३ इंच। मादा-संस्कृतः । विवय-पूजा। र०कास ४। सं०काल ४। पूर्ण। वे०सं०६६६। का मनदार।

विजेष---इसी अञ्डार में एक प्रति (वै॰ सं॰ ६२५) सीर है।

% २२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ | ते० काल × । सपूर्ण | वे० सं० ध्रश् । क्र बण्डार | १९१७ प्रति सं० १ । पत्र सं० १ से २२ । ते० काल × | सपूर्ण | वे० सं० ४२४ । व्य बण्डार । विवेद — सामार्थ पूर्णवन्त्र ने नीजन,बाद में प्रतिकित्त को वी । प्रति प्राचीन है।

१२१८. प्रति संघ्षां पण संश्राति काल संश्रादिक सावस्त दुवी ११। देश संश्रप्त । चा चण्यार।

> विनेष---इसी जवहार में एक प्रति (वे० सं० ४२६) घीर है। ४२१६. प्रति सं० ४ । वण स० १३ । से० कस्त × । वे० सं० ७२ । मृह जव्यार ।

. ४२२०. पोक्टशकारसमुच्चा (पृक्षपु)। यम स० २६ । सा० ११३,×५५ इ.च । भाषा–संस्कृत । विवय-पुता । १० काल × । से० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७१० । क वण्यार ।

४२२१. प्रति सं० २ । वत्र सं० २ से २२ । के॰ काल × । ब्रपूर्ण | वै॰ सं० ४**२६ । अ जण्डार** ।

२२२२. चोहराकारका सरोवापनयुका— राजकीति,। यम सं० २७ । सा० १२×६६ दं व । सत्या— सस्कतः । विषय-पूजा। र० काल 🔀 । से० कालः सं० १७१६ सालोज सुदी १० । पूर्णः। वे० सं० १०७। च्या मध्यारः।

४२२३. वोकशकारणावतोषापतवृत्ता—सुप्रतिकाशर । यम सं २१। वा० १२×५३ ६ व । वावा— सस्कृत । विवय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । दुर्ख । वे० सं० ११४ । व्य वस्ताः ।

४२२४. **राष्ट्रक्षणणिरिक्**या—भ्रष्टारक विश्वभूष्या । एवः सं० ६ । मा० ११३,४६३ इंच । जावा— \hat{V} संस्कृत । विवय-द्वता । र० कान 🗷 । से० कान 🗶 । पूर्ण । वे० सं० १०६७ । का जण्यार ।

४२९४ शरदुत्सवदीपिका , संबक्ष विवास पूजा)—विव्यतनिष् । पत्र संग ६८४ इंग 🖄 भाषा-संकत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । वै० काल 🗴 । पूर्त । वै० सं० १६४ । व्या मध्यर ।

> विजेष--- वारम्भ- वीसीरं विश्वा मत्या बीरनंदिवह्मुहः । विह्नवीदःहं वक्ते बरतुत्ववदीपिका ॥१॥ व्याप वास्ते क्षेत्रं जबूदीपमनोहरे । एथ्यपेवेस्ति विकासा विविद्यासाम्बर्गः पूरी ॥१॥

विन्तवराद- एवं नहाजावं च हन्द्रता तथास्तवा जनाः ।
कलुं जवादवावं च ततात्रवेद जवसीतः ।
ववाज्ञात्वेरण्यं नीतदं ववसीतते ।
हण्या सन्दर्भः सुद्देशं च वेन्स्यवर्थक्योकोः ।। १४।।

नातो नागपुरे युनिर्करतरः श्रीसृत्ससेषरः । सूर्वः श्रीवरपूत्रयाद समतः श्रीवीरनंगाहृयः ॥ तिष्क्रयो नर तिषनंदिनुनियत्नेनवगानिष्कृता । नोकोडोषनहेतवे युनिवरः कुर्वेतु भो सञ्जनाः ॥२१॥ इति श्री यरदुत्तवकथा समाताः ॥१॥

इसके पश्चात् पूजा दी हुई है।

४२२६. प्रतिसा≎ २ । पत्र सं०१४ । ते० काल सं०१६२२ । ते० सं०३०१ । साभवार ।
४२२७. शांतिकविधाल (प्रतिष्ठापाठ का एक भ्राग) " "" । पत्र स०३२ । घा०१०५०४, इंखा भाषा—संस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल ⋉ । ले० काल सं०१६३२ काग्रन पृदी १० । ते० सं० ४३७ । साभव्यार ।

विशेष— प्रतिष्ठा में काम धाने वाली सामग्री का वर्शन दिवा हुन है। प्रतिष्ठा के लिये गुरका महत्व-पूर्ण है। मध्यतावार्य श्रीषान्यकीर्ति के उपदेश से इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी। १४वे गत ने यन्त्र दिय हुये हैं जिनकी संख्या ६८ है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

ॐ नमी बीतरागायनमः। परिमेष्टिने नमः। श्री गुरुवेनमः।। संः १६३२ वर्ष फायुग सूरी १० सुरी श्री मुक्तसंचे अ० श्रीपपार्नीदेवेशस्तरस्ट्रे अ० श्रीश्वनबन्ददेव। तरस्ट्रे अ० श्रीश्रमवन्ददेव। तरस्ट्रे अ० श्रीप्रभावंददेव। तरस्ट्रे अंदलावार्यश्रीषम्भैवन्द्रदेव। तद् गंदलावार्य शनितकीतिदेव। तस्क्रियमंदलावार्य श्रीवन्द्रदेशीत उपदेशात ।

डसी मण्डार में २ प्रतियां (वे॰ सं॰ ११२, ११४) स्रीर हैं।

१२२ = . सांतिकविचान (बृहद्) ******** । पत्र सं० ७४ । झा० १२.४६) इ.च. भावा-संस्कृतः । विचय-विचि विचान । र० काल ४ । ते० कान सं० ११२६ भाववा बुदीऽऽ । पूर्णा । वे० मं० १७७ । इस मध्दारः । विकोय----पं० प्रमानानजी ने शिष्य जयवाद्र के पठनार्थ प्रतिकिर्ति की सी ।

४२२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल 🗴 । सपूर्स । वे॰ सं० ३३६ । च मण्डार ।

४६३०. हातिकविधि—काईहेव । पत्र सं०५१ । झा०११३४५३ इंच । नाया नसंस्कृत । विषय-संस्कृत । विषय विधि विधान । र०काल × । ते०काल सं०१८९८ माच बुरी ५ । पूर्ण । वे० सं०६८६ । कृ सम्बार ।

४२३१. शान्तिविधि******* । पत्र सं०१। मा०१०×४ इ.च.। नाया-संस्कृत । विषय-विधि विद्यान । र०कास × । ते॰ कास × । मपूर्ण | वै०सं०६०६। इ. सम्बार ।

विक्रेय--पं० फतेहलास ने प्रतिलिपि की थी।

४२३३. **शास्त्रियककृपुत्रा'''''''। पत्र संग्र**ाधार १०३,४५३ दंव। आरपा-संस्कृत । विषय– पूजाः रण्कास × । लेण्काल संग्रेशच्छ चौत्र सुती ४.। पूर्णा विश्व तेर १३६ । आरमण्डार ।

विमेष--इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ १७६) और है।

४-३४, प्रति सं०२। पत्र सं०३। मे० काल ×। मे० सं० १२२। का भण्डार।

विजेय--इसी अण्डार में एक प्रति (वै० सं० १२२) छौर है।

४२३४. शान्तिनाक्षयूक्रा— रामचन्द्रापण सं०२ । सा०११×५ इंच । भाषा-हिन्दी। विषय— पूजा। र०काल ×। ने०काल ×। पूर्णावै०सं० ७०४ । इस्मस्टार।

४२३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६६२ । च मण्डार ।

y-२.क. हार्गतिसंडसपूजाः.....। पत्र सं० २०। मा० १० $\frac{1}{2}$ \times १.व. मावा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल \times । पे०काल \times । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । उट मण्डार ।

. १२६ च. शांतिपाठ **** पत्र सं०१। मा०१०६ ४५ इ.च.। भाषा– धंस्कृत । विषय–पूत्राके सन्त मे पढाजाने बालापाठ । ए० काल ४ । मे० काल ४ । पूर्ण। वे० सं०१२२७ । आह्र भण्डार ।

विभेष--- इसी अध्डार में ३ प्रतियां (वै० सं० १२३८, १३१८, १३२४) श्रीर हैं।

४२३६. शांतिरक्षसूची''''''। यत्र सं०२ । सा० ८३/४४ इंचा भाषा—संस्कृतः । विषय-विद्यानः र०कालः \times । ते०कालः \times । पूर्वाचे० सं०१८६४ । द्वः अध्यारः ।

विमेष--प्रतिष्ठा पाठ से उद्धूत है।

४२४०. शान्तिहोसिक्यान —काशाक्य । पत्र सं \bullet ४। सार् ११२ \times ६ दंव । जाना—संस्कृत । विषय-विकि विभाग । र० कास \times । तेर कास \times । पूर्ण । वेर सं \bullet ७४७ । कः भव्यार ।

विशेष--प्रतिष्ठ।पाठ में से संबद्धीत है।

Samuel Sa

श्रीपृष्ठ शास्त्रमुक्तव्यसस्यःःःः। यतः ६० २। बा० ११४६ इ'च । भाषा-प्राकृतः। विषय-पूजा। ्रः २० कान ४। ते० काल ४। पूर्त्तं। वीर्त्तं। वै० सं० ३४२। च वध्यारः।

- १९४९. शास्त्रवस्थाल--- ब्राजशृक्षः । पण ग्रं० ३ । घा० १६५×४ इ'व । आवा-संस्कृत । विषय-पूजा । ए० काल × । त्रेल काल × । पूर्व ३ वे० सं० ६०० । क क्वार । and the second

४२४३ शास्त्रप्रवचन प्रारम्भ करने की विधि। पत्र सं०१। मा०१०३४४३ हंव। भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल ४। ते० काल ४। पूर्ण । वे० सं०१ दद४। इस भण्डार ।

४२४४. शासनदेवतार्थनविधान"""। पत्र सं० २१ से २५ । आ० ११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा विधि विधान । र० काल imes । ले० काल imes । पूर्ण । वे० सं० ७०७ । क भण्डार ।

. ४२०४. शिसरविज्ञासपूजाः पत्र सं∘ ७३ । सा० ११×५३ इ.च.। भाषा–हिन्दी । विचय− पूजा । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वै० स० ६८६ । क जण्डार ।

४२४६. शीतकनाथपुत्रा—धर्मभूषसा । पत्र सं० ६ । मा० १०३४५ रंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० कान 🗴 । ले० काल सं० १६२१ । पूर्ण । वे० सं० २६३ । सा भण्डार ।

क्क भण्डार । ५२४ = . शुक्रपञ्चमीन्नतपूजा'''''''''। यत्र मं० ७ । ग्रा० १२४४ दृद व । भाषा-सम्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १५ ...। ले० काल ४ । पूर्णा । वे० सं० २८४ । च भण्डार ।

विशेष—रचनासं० निस्न प्रकारहै— ग्रन्डेरंग्र यसलं वसुचन्ड।

४२४६. शुक्रपद्धामीत्रतोद्यापनपूजा''''''''। यत्र सं०१ | झा० ११×१ इंच | भाषा⊸सस्कृत । विषय-पूजा | र०काल × | ले०काल × | पूर्ण | वे०सं०११७ । इस भण्डार ।

४२.४०. कुतङ्कानपूजाः***** । पत्र नं० १ । प्रा० ११.४५ इंच । भाषा-सम्ह्रन । विषय-पूजा । र० नाल × । ने० काल सं० १०६१ प्रायात सुर्दा १२ । पूर्ण । वे० सं० ७२३ । इक अण्डार ।

¥२.४.१. प्रति सं०२ । पत्र सं०६ । ले० काल 火 । वे० सं०६८ । च अण्डार ।

४२४२ प्रति संद ३। पत्र सं० १३। ते० काल ४। ते० सं० ११७। छ भएडार।

४२४३- श्रुतक्षानप्रतपुत्राः ''''''। पत्र सं० १०। मा० ११×०३ इंच । आवा—संस्कृत । विषय-पूजा। र०काल ×। ते०काल ×।पूर्गा वे० सं० १६६। स्र भण्डार ।

४२४४ श्रुतक्कानश्रतीद्यापसपूजा''''''' | पत्र सं०११ । ग्रा० ११४४ हे इंच । भ्रोषा-संस्कृत । विचय पूजा । र०काल ४ | ले०काल ४ | पूर्ण । वै०सं०७२४ | कामण्डार ।

े ४२४४. श्रुतक्कानत्रतोद्यापन*******। पत्र सं०८। मा०१०३×४ इ'च। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र०काल ×। न०काल सं०१६२२। पूर्ण। वे०सं०३००। स्व अच्छार।

. ४२४६. श्रुतपूजा****** । पत्र तं∘ ४ । मा० १०३/४६ रंज । आवा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० कान × । तं० काल सं∘ न्येष्ठ नुसी ३ । पूर्ण । वे० सं० १०७६ । श्रु जण्डार । ५२५७. श्रुतस्कंषपुत्रा-श्रुतसागर। यत्र सं०२ से १३। बा० ११३×६ रंत्र। शाया-संस्कृत। विषय-पूत्रा। र० कान ×। मे० कान ×। मनूर्ल। वे० सं० ७०६। इट प्रकृत प्रकृत

४२४⊏ प्रतिसंट २ । पत्र संट ५ । लेट काल × । वेट संट ३४६ । च मण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में एक प्रति (वै॰ सं० ३५०) भौर है।

४२४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १८४ । ज भण्डार ।

×२६८. श्रुतस्केषपुत्रा(झानपद्माविश्ता)— मुरेश्यूकीर्श्ति । यत्र सं० ४ । घा० १२४४ इ'व । भाषा-संस्कृत । विषय-पूत्रा । र० कान सं० १८४७ । ते० काल ४ । पूर्ता। वे० सं० ५२२ । व्यः सम्बार ।

विशेष -- इस रचना को श्री सुरेन्द्रकीतिजी ने ५३ वर्ष की अवस्था में किया था।

४२६१. श्रुतनकंश्रयूजा......पत्र सं०५ । श्राव ६२,४७ इ.च.। श्राचासंस्कृत । विषय-पूजा। रण्कान 🗴 । नेण्काल 🗴 । पूर्ण । वेण्सं०७०२ । आद्र सण्डार ।

४२.६२. प्रति सं०२ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० २६२ । सा भण्डार ।

४२६३. प्रति संट ३ । पत्र सं• ७ । ले० काल × । वे० सं० १८८ । उद्य अण्डार ।

अरे६४. मिति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ४६०। व्य भण्डार ।

४२६४. अनुसर्कश्रयुकाकथा " """। पत्र सं० २० । ब्रा०१२३४७ इ'च । मापा—हिन्दी । विवय— पूत्रा तथा कथा । र० काल ४ । से० काल सीर सं० २४३४ । पूर्ण । वे० सं० ७२० । इस मध्यार ।

विशेष—चावली (धागरा) निवासी श्री ताताराम ने सिला फिर श्रीर सं० २४५७ को वन्नानालजी गाथा ने नुकीनक स्नीर में निलवाया । जीहरीलाल फिरोजपुर बि० दुस्वाशां ।

बनारसीदास कृत सरस्वती स्तोत्र भी है।

. १२६६. सकत्तीकरस्यविधि********। पन सं०३। सा०११४४३ इ.च.। आवा—संस्कृतः। विषय— विधि विधानः। २०काल ४ । सं० काल ४ । पूर्णः। वे० सं० ७४ । छ। अध्यारः।

विशेष-इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे॰ सं॰ ८०, ५७१, ६६१) भीर हैं।

४२६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ते॰ काल × । वे॰ स॰ ७२३ । स जण्डार ।

विशेव-इसी अध्यार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ७२४) भीर है।

श्रद्दः. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ते० काल × । वे० सं० ३६८ । व्य वण्डार ।

विशेष-पाणार्थ हुर्वकीति के वाषकों के लिए प्रतिविधि हुई थी।

The Carlot of the server of the server

४.९६६ सक्कबीकर्स्या ''''''''' | पत्र सं∘२१ । झा० ११×५ इ.च | भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधास । रे० काल × । ले० काल × | पूर्णा वे० सं० ४,७१ | इस सम्बर्गा |

श्र-१७०, प्रति सं० २ | पत्र सं० ३ | सिं० काल × | वे० सं० ७१७ | क अवहार |

श्र**्थर. प्रति सं**ट ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । ते० गं॰ १२२ । छ भण्डार ।

विशेष---इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६) ग्रीर है।

¥क्कर. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वै० मं० १६४ । ज भण्डार ।

४२७३. प्रति सं० **४ ।** पत्र सं० ३ । ले० काल × । ते० मं० ४२४ । का भण्डार ।

विशेष—हांसिया पर संस्कृत टिप्पए। दिया हुन्ना है। उसी अण्डार में एक प्रांत (वे० ग० ४०३) स्रोर है।

. १९७४ . संबादाविधि****** । पत्र तं० १ । झा० १०४५ १ इंच । आया-प्रायृत, संस्कृत । विषय विचान । र०कास ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वै०सं० १२१६ । इस अच्छार ।

विकोष-इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२५१) और है।

१९२७४. सप्तपदी******। पत्र सं०२ मे १६ । झा० ७१४४ टंब । भाषामधंस्कृत । विषयमांवधात । १० काल ⋉ । संग्रेण काल ⋉ । सपूर्ण । वै० सं० १६६६ । स्त्र भण्डार ।

४२७६. समपरमस्थानपुत्रा''''''''। पत्रः सं०३। ग्रा०१०३, ४४ डंच। भागा-संब्द्धन : .वगस-पूजा। र० काल ×। नेक काल ×। पूर्ण। कै० सं०६६६। इस भण्डार।

१२.00. प्रति संव २ । पत्र संव १२ । तेव वाल 🗴 । वेव मंव ७६२ । 🖝 भण्डार ।

. १९७८. सप्तर्षिषुता— विख्यास । पत्र मं०७। प्रा०६४ ३ इ.च.। प्राणा—संस्कृत । विषय-पूत्रा। र•काल ×। मं०काल ×। पूर्णावेश सं०२२२ । इद्र भण्डार।

४२७६. समर्पियुजा— लाइसीसेन । पत्र सं०६ । सा०११% ५ इ'च । आसा-संस्कृत , विषय-पुजा । र०काल ⋉ । ते०काल ⋉ । पूर्णावे० सं०१२७ । क्षु अध्वार ।

४२८०. प्रतिसं०२ । पत्र सं०६ । ते० काल सं०१६२० वर्गतिक सुदी२ । वे० सं०४०१) व्य

४२८१. ब्रसि संट १ । पत्र सं० ७ । ले॰ काल × । वे॰ सं० २११० । ट मण्डार ।

विशेष--- महारक मुरेन्द्रकीर्ति द्वारा रचित चांदनपुर के महावीर की संस्कृत पूजा भी है।

४२प२. सुप्तरियुका-विश्वभूषसः । पत्र सं०१६ । प्रा० १०५४१ इंच । भाषा-संस्कृत । विश्वय-पूर्वा | र०काल × । से०काल सं०१११७ । पूर्व | वे०१ । स्न मध्यार । ४२ म् ३ प्रतिसं०२ । पत्र सं०१ । मै० काल मं०१६२० ज्येष्ठ मुद्दी मा देव सं०१२७ । इत् अध्यार ।

. श्रद्रस्थितुवा। पत्र सं∘ १३ । मा० ११×५३ दंव । बावा–संस्कृत । विवय–युत्रा । र०काल × । ने०काल × । पूर्ता वे० सं० १०११ । का जच्चार ।

५२८४. समबरारसापुका-कासितकीर्ति । यत्र सं०४७ । झा० १०३४१ इत्र । आसा-संस्कृत । विषय-पूत्रा । र० काम ४ । मे० काम सं०१८७७ मंत्रसिर बुदी ४ । पूर्ण । वै० सं०४४१ । इस अध्वार ।

विशेष--- लुस्यालजी ने जयपुर नगर में महात्मा अंग्रुराम से प्रतिलिपि करवायी थी।

४२६६. समवदारसपुर्वा (बृहद्)— रूपचन्द । पत्र सं० ६४ । सा० ६६४६ हजा। नावा-संस्कृत । विषय पूजा। र० काल सं० १४६२ । ले० काल सं० १८७६ पीच बुरी १३। पूर्ण । वे० सं० ४४४ । इस मण्डार ।

विशेष--रवनाकाल निम्न प्रकार है- अतीतेष्ट्यनन्दभडासकृत परिमिते कृष्णुपक्षेत्र माने ॥

≱२८७. प्रति सं०२। पत्र सं०१२। ते० काल सं०१६३७ चैत्र बुदी १४। वे० सं०२०१ | आह्र प्रथार ।

विशेष---पं० पप्रालालजी जोबनेर वालों ने प्रतिमिपि की बी।

४२.८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४१ । से० काल सं० १६४० । दे० सं० १३३ । इस सम्बार । ४२.८६. समस्वारसपुर्जा—सोमकीर्थित । पत्र सं० २८ । सा० १२.४१३ इंच । मात्रा-संस्कृत । विवय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८०७ सेवाल सुदी १ । दे० सं० ३८४ । द्या मण्डार ।

विंशेष---धन्तिम श्लोक-

And the second second

व्याजस्तुत्यार्था गुराबीतरागः ज्ञानार्कसाम्राज्यविकासमानः। श्रीसोमकीलिविकासमानः रन्नेवरलाकरवार्ककीलिः॥

जयपुर में सवानन्त सीगालों के पठनार्थ खाबूराम पाटनी को पुस्तक से प्रतिस्तिपि की बी । इसी अध्दार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ४०%) और है।

१२६०. समबरारखपूजा.........। यत सं० ७ । बा॰ ११%० इ'व) जावा-संस्कृत । विश्वय-पूजा (र॰ काल 🗴 । से० काल 🗴 । घरूसी । वे० सं० ७७४ । क्ष चच्चार)

श्रद्ध रे. सम्मेदिसलरपूत्रा—र्गक्कादासः । पत्र सं०१० । सा० ११है×७ इंव । नावा—संस्कृतः । विवय— पूत्रा । र० काल ×। ते० काल सं०१ दन्दश्याव सुरी १ । पूर्णः । वे० सं०२०११ । व्याववादः ।

विशेष—गंगाशस वर्षचम्य सहारक के शिष्य ने । इसी मच्यार में एक प्रसि (वे० सं० ४०६) और है । ४२६२. प्रति सं० २ | पण तं० १२ | ने० कास तं० १६२१ मंगविषर बुदी ११ | वे० तं० २६० ३ स भवार | % रहे. प्रति सं०३ । पत्र सं०७ । ले० काल सं०१८६३ दैशाल मुदी ३ । दे० सं० ४३६ । व्य वसकार ∤

१२९४. सस्मेदशिक्तरपूजा—पंट जवाहरलाल । पत्र सं• १२। मा॰ १२×० इ.च.। भाषा-हिन्दी। विवस-पूजा। र॰ काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ सं॰ ७४० । द्वा भण्डार ।

४२६४. प्रति संट २ । पत्र सं० १६ । र० काल सं० १८६१ । ले० काल सं० १६१२ । वे० सं० ११६ । भः सण्डार ।

४२६६. अति सं० है। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १६४२ आसोज बुदी १०। वे० सं० २४०। ह्य

. १९६७: सम्मेदशिलरपूजा—रामधन्त्र । पत्र तं० रः । धा० ११३-४५ रंव ः भाषाः हिन्दी । विषय— भूता । रं० काल × । ते० काल सं० ११४४ आवरा सुदी है । पूर्ण । वे० तं० ३६३ । ब्रा अध्वार ।

विमोष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ११२३) और है।

४२६म. प्रतिसं०२ । पत्र सं०७ । ले० काल सं०१६५८ मात्र मृती१४ । वं० सं० ७०१ । च मण्डार ।

. १२६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल 🏃 । वे० मं० ७६३ । क्र भण्डार ।

विकोष--इसी अध्वार में एक प्रति (वे० सं० ७६४) और है।

४३००. प्रति सं०४। पत्र सं०७। ले० काल ×। वे० सं० २२२। छ भण्डार।

े **४२०१. सम्मेदशिकरपूजा**---भागणान्द्रापण सं०१० । म्रा० १३/.४ इ.च । भाषा--|हन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं०१६२६ । ते० काल सं०१६२० । दुर्गा | ३० सं०७६७ । क भण्डाण ।

विशेष- पूजा के पश्चाल पद भी दिये हुये है।

¥२०२. प्रति संट २ । पत्र संट ≒ । लेठ काल < । वेठ संट १४७ । छ भण्डार ।

विशेष-सिद्धक्षेत्रों की स्तुति भी है।

४२०२. सम्भेदशिखरपूजा— स० सुरेन्द्रकोर्ति । पत्र सं∘ २१ । सा० ११४ ५ ६ च ≀ भाषा हिन्दी । विचय-पूजा । र०कास ≾ । ने०कास स० १६१२ । पूर्ण । वे० सं० ५६१ । इस मण्यार ।

विशेष---१०वे पत्र से मागे पश्चमेरु पूजा दी हुई है।

४२.५८ सम्मेदशिसरपूजा'' '''। पत्र सं० १। मा० ११×४ है इ.च.। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२३१। मा मण्डार।

४२०४. प्रति सं०२ । पत्र सं०२ । प्रा० १०४ इ.च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० कान्र ४ । सें० कान्त ४ । बूर्स । वे० सं० ७२१ । क नम्बार ।

विसेष---इसी भण्डार में एक प्रति (वं ० सं० ७६२) ग्रीर हैं।

४३०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० द । ते० काल × । वै० सं० २६१ । आ अध्यार ।

४२०७. सर्वतोअद्रयुक्ता '''''''''। यत्र सं० ४ । बा० ध×६५ ६ च । आदा-संस्कृत । विश्वक-पूजा । ९० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १३६३ । इत्र अध्वार ।

४२० म. सरस्वतीयूजा—पद्मानिङ् । पत्र सं० १ । मा० १ \times ६ ६ व । भाषा—पेस्कृत । विषय—यूजा । ए० काल \times । ले० काल \times । यूर्ण । वे० सं० १३३४ । का वण्यार ।

४२०६. सरस्वतीपूजा— **कालभू**वसा। यत्र सं०६ । सा० प×४ ६ व । भावा—संस्कृत । विषय—पूजा। र० काल ×। ने० काल १६३० । पूर्सा | दे० सं०१३६७ । **छा अध्यार** ।

विशेष-इसी मण्डार में ४ प्रतियां (वै० सं० ६=६, १३११, ११०=, १०१०) और हैं।

४२ १०. सरस्वतीयुजाः.......... पत्र सं॰ १। धा॰ ११ \times १६ इंच । नावा—संस्कृत । विषय—यूजा । र॰ कान \times । सं॰ कान \wedge । पूर्ण । वे० सं॰ ८०१ । क्र भण्डार ।

विशेष-इसी अण्डार में एक प्रति (वै० सं० ८०२) और है।

≛२११. सरस्वतीपूजा— संबीपझाझाझाः गण सं०१७ । मा० १२×६ ६ व । बाया-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं०१६२१ । ते०काल × । पूर्वा । वे० सं०२२१ । क्क्रू बण्डार ।

विशेष-इसी मण्डार में इसी वेष्टन में १ प्रति और है।

४६१२. सरस्वतीपृत्रा—नेसीचन्द्र वक्सी । पत्र संग्रह । साग ११४६ इंव । आवा-ै हिन्दी । विवय-पूत्रा । रणकाल संग्रह २६३६ ज्येष्ठ सुदी ४ । तेणकाल संग्रह २६३७ । पूर्व । वेण संग्रह । क्सान्ता

४३१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ते० काल × । वे० सं० ८०४ । क प्रण्डार ।

४२१४. सरस्वतीपूजा—पंठ शुध्रसम्ब्री । यत्र संग्रा । याग्र×४२ इंच । प्राथा–हिन्दी । विषय– पूजा । रण्काल × । तेण्काल × । पूर्ण । वेण संग्रा १००६ । व्या प्रस्तार ।

४२ १४. सरस्वतीपुत्रा''''''''' । पत्र सं० २१ । बा० ११ \times ५ इंव । समा हिन्दी । विषय-पूजा १ र० काल \times । त्रुर्त । वै० सं० ५०६ । वा सन्दार ।

विजेष---महाराजा माथोसिंह के शासनकाल में प्रतिविधि की सबी बी ।

१२१६. सहस्रकृटविनासक्यूबा......। यथ सं० १११ । बा० ११३×४१ इ.च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । ए० कल × : ने० कान सं० १६२१ । पूर्व । वे० सं० २१३ । का बच्चार ।

विकेष---वै - प्रशासास ने प्रतिसिधि की की ।

. १३९७. सरस्रसुर्यातपुत्रा — अ० धर्मकीशि । यत तं० ६६ । सा० १२८४६ इ.च । ज्ञाचा—संस्कृत । विषय—पुत्रा । १० काल ४) ते० काल तं० १७६६ प्राचाड सुदी २ । पूर्ता । वे० तं० १३६ । छा जन्दार ।

विशेष-इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ४४२) और है।

¥देश्य. प्रति सं० ६ । पत्र सं० दर । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० २४६ । सा अण्डार ।

अ388. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२२। ले० काल सं० १६६०। ते० सं० ६०६। अ भण्डार।

¥३२०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६९। ले० काल ×। वै० सं० ६३। मा भण्डार।

४३२१. प्रति सं० ४ | पत्र सं० ६४ | ले० काल × | वे० सं० ६६ | व्य भण्डार |

विशेष---आवार्य हर्षकीति ने जिहानावाद मे प्रतिलिपि कराई थी।

±३२२. सहस्रमृश्चितपुद्धा''' '''। पत्र सं०१३ । घा० १०४१ इंच । बाषा–संस्कृत । विषय–पूत्रा । र०काल ४ । ले०काल ४ । घपूर्णी वै० सं०११७ । छः जण्डार ।

¥३२३. प्रति सं०२ । षत्र सं०८⊏ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं०३४ । व्या भण्डार ।

४३२४. सहस्रनामपूजा—सर्मेश्रूचण्। पत्र सं० ६६। झा०१०३४४, दंब । आपा–संस्कृत । विषय-पुजा | र०काल × | से०काल × । सपूर्ण | वै०सं० ३०३ | च अण्डार ।

५२२ ५. प्रतिसं०२ । पत्र सं०३६ से ६६ । ले० काल सं०१८८४ प्रवेष्ट बुदी ४ । प्रपृशी । वे० सं० ३८ ६ । जा मण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वै० सं० ३६४, ३६६) भीर हैं।

४३२६. सहस्रतासपृक्षाः*****। पत्र सं०१३६ ते १४८ । सा०१२८४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ×ु। ते०काल ×ा पूर्ण । वे०तं०३६२ । च भण्डार ।

विशेष-- इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ३८७) और है।

. ४३२७. सहस्रतामपूजा — चैनसुस्त । पत्र सं० २२। मा० १२६४८३ इंच । भाषा-हिन्दी । दिवद-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २२१ । छ जण्डार ।

४३२८. सहस्रानाअपूका******। पत्र सं०१८ । घा०११४८ इंच। प्रावा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ४। ते०काल ४। पूर्त्तं। वे०सं०७०७। च अच्छार।

४३२६. सारस्वतयन्त्रपूत्रा'''''''''| पत्र सं०४ । घा०१०३,४५ दंव । बाया-संस्कृत । विषय-पूजा । र०कास × । जे०कास × । पूर्ण । वै०सँ० ४७७ । व्यापन्यार ।

४२३०. प्रति सं०२ । पत्र सं०१ । ले० काल × । वे० सं०१२२ । ऋ अण्डार ।

४६६९. सिद्धकेशपूजा—चासतराय । पत्र संग्राधाः दहे×५६ स्त्राः। जाया—हिन्दीः नियय— पूजाः। रग्नाल ×ालेण्यास ×ापूर्णः। वेश्संग्रेदशः। समस्यारः।

४३३२. सिद्धान्तेत्रुज्ञा (बृहद् —स्वरूपयन्त् । पण मं० ४३। सा० ११३४४ इ'य । आया-हिन्दी । विषय-गुजा । र० माल सं० १८१८ कॉलिक दुरी १३। ते० काल सं० १८४१ कानुसा सुरी = । पूर्ता । वे० सं० =८ । मा मण्डार ।

विभेष---सन्त में मध्यल विधि श्री दी हुई है। रामनानको बज ने प्रतिनिधि की बी। इसे सुननवन्द संगवान ने वोधरियों के सन्दर में चढ़ाया।

४३२३. सिद्धस्त्रेत्र्जा"""" "। पत्र सं०१३ । घा०१२४८३ दंव । त्राचा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल ४ । ते०काल सं०१९४४ । पूर्ण । वे० सं०२०४ । इद्ध अच्छार ।

४३३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ते• कास × । वे० सं० २६४ । आ अध्यार ।

विशेष--प्रतिशयक्षेत्र पूजा भी है।

४३३६. सिद्धणकपूजा (बृह्यू)—अ० आशुक्रीचि । पत्र सं० १४३ । झा० १०६४५ द्वा । जावा— संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ⋉ । ने० काल सं० १६२२ । वे० सं० १७६ | क्षु क्ष्यार |

४६३७. सिद्धवक्ष्युका (बृहद्)—व्यंश्च सुभवन्त्र । पत्र सं० ४१ । प्रा० १२×८ इ'व । बाया-संस्कृत । विषय-पुत्रा । र० काल × । से० काल सं० १९७२ । पूर्ण । दे० सं० ७५० । हा व्यकार ।

विशेष--इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ मं॰ ७५१) धीर है।

प्रदेदेद. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ते० काल × । वे० सं० द४५ । क अण्डार ।

४३३६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४४। ते० काल ×। वे० सं० १२६। स्नु मण्डार।

निवेष---नं॰ १६६६ काहुल तुरी २ को कुणकर सम्मेरा ने संगोधित की । ऐसा शन्तिम रम पर निवा है। इसी मध्यार में एक प्रति (दे॰ सं॰ २१२४) श्रोर।

र्थपेश- सिञ्चणकपूजा- मुतसागर । पत्र सं० ३० से ६०। झा० १२×६ इ'च । जाया-संस्कृतः विषय-पूजा। र० काल ×। ते० काल ×। सपूर्ण। वे० सं० द४४ । क्र पण्डार ।

. १९४१: विज्ञानकपूर्वा---जमान्यन् । पर तं० ६ । बा० १९४६ ६ व । मध्या-वंत्रुत । विवय--पूर्वा ' र० नाम × । ते० नाम × । पूर्वा । वे० वं० ४६६ । वः सम्बद्धः ।

. १९४९. सिद्धाचकपूजा (बृहद्)। पत्र सं० १४ । घा॰ १२४४.३ इ'च । आया–संस्कृत । विचय-पूजा । १० काल ४ । से० काल ४ । सपूर्ण । वे० सं० ६०७ । क्र जण्डार ।

. ४३४४. प्रति सं०२ । पत्र सं०३ । ले० काल 🗴 । वै० सं०४०५ । च भण्टार ।

४.२४४. प्रतिसंठ ३ । पत्र सं०१७ । ले० काल सं०१०६० श्रावमा बुदी १४ । वै० मं०२१ । इक सम्बद्धार ।

. १९६६ सिद्ध चक्रमुजा(बृहदू) — संतत्तातः। यत्र सं०१०६ । झा०१२×८ टंव ! भागा-हिन्दी । विषय-पूत्रा। र०काल × । ले०काल सं०१६६१ ! पूर्णी | वै०सं०७४६ । इस मण्डार ।

विशेष-ईश्वरलाल बांदवाइ ने प्रतिलिपि की थी।

. ४२४७. सिद्धणक्रयूजा''''''''''''' पत्र सं०११३ । मा०१२५७३ : इ.च.। भाषा-शिर्ताः विषय-पूजा। र०काल × । ते०काल × । पूर्णा वै०तं० स्प्र६ । इक मण्डार ।

४१४८. सिद्धपूत्रा—रक्षभूषस्। पत्र सं० २ । मा० १०३४४} ड'व । भागा-संस्कृत । विषय-गृजा। द०कास × । ने०काल सं० १७६० । पूर्स । वे०सं० २०६० । ब्रा भण्डार ।

विशेष-- भोरक्तुजेब के शासनकाल में संग्रामपूर में प्रतिलिशि हुई थीं।

×देश ६. प्रति सं≎ २ । पत्र सं∘ ३ । घा० प्र्रूं×६ इ'व'। भाषा–संस्कृत । दिवय-पूत्राः र० काल ⋌ । ले० काल ⋌ । पूर्वा । वे० सं० ७६६ । इक मण्डार ।

. १२ हें १०. सिद्धपूत्रा—सहापं० काशाधर । पत्र सं०२ । झा० ११ ',४६ इक्षः । भाषा–सङ्गः। विषय—पूत्रा। २० काल × । ले० काल सं०१ ८२२ । पूर्णा । वे० सं०७१४ । कृष्णकार ।

विशेष-इसी मण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ७६५) ग्रीर है।

४.३५१. प्रतिसं०२ । पत्र सं०३ । ले०काल सं०१ द२३ मंगसिर मुदीद । ३० सं०२३३ । ह्य भव्यार ।

विशेष---पूजा के प्रारम्भ में स्थापना नहीं है किन्तु प्रारम्भ में ही जल बढाते का मन्त्र है।

&नेश्रेर, सिद्धपूका''''''''''। पत्र सं॰ ४ । मा० ६५ ४४३ द्देश्व । भाषा-सम्कृत । विषय-पूजा। यं॰ काल \times । दूर्शी वे॰ सं॰ १६६० । दः सम्बार ।

विक्षेय- इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ १६२४) शीर है।

क्ष्मेर सिद्धपूत्राः । यत्र सं॰ ४४ । बा० १ \times ५ र व । जाया-हिन्दी । विषय-पूजा । र॰ काल \times | ते० काल सं॰ ११५६ । पूर्ण । वै० तं० ७१५ । य जन्यार ।

४.६४.१. सीसंघरस्वासीयुजाः........। पत्र सं०७ । झा० द.४६३ इंच । आवा-वंस्क्रकः । विषय-यूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ल । वे० सं० द.५द । इक वच्छार ।

. ४२४४. सुलसंपत्तिव्रतोशायन—सुरेन्द्रकीचि । पत्र सं०७ । वा० द×६३ दक्का । वाना–संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं०१ द६६ । ते० काल × । पूर्वी । वे० सं०१०४१ । का वच्चार ।

. १३४६. सुस्रसंपत्तिक्रतपूत्रा—कास्त्रयरामा। पत्र सं० १। मा० १२४१३ इ'च। नापा—संस्कृत। विषय प्रजार०काल सं०१८००। ले०काल ×ापूर्ण। वै० सं०६०६। क्क अपकार।

४३४७. सुरान्धद्शश्रीक्रतीचापनः'''''''''' वत्र सं०१३ । बा० द×६६ इंच । प्राथा–संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वे० सं०११२ । इस प्रस्वार ।

बिमेव—इसो अध्वार मे ७ अतियां (बै॰ सं॰ १११३, ११२४, ७४२, ७४२, ७४४, ७४४, ७४६) भीर है।

४३४ म. प्रति सं०२ । पत्र सं०६ । ले० काल सं०१ १२ म । वे० सं०३०२ । **सः भण्डा**र ।

£3£8. प्रति सं० ३ | पत्र स० ८ | ते० काल × | ते० तं० ८६६ | क अण्डार |

४३६०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं४ १६४६ प्राप्तोज बुधी ७ । दे० सं० २०३४ । ट अध्वार ।

. ४३६१. सुपारवनाथपुरा—रामचन्द्रापत्र सं०४। मा० १२×४३ इ.च.। भाषा-हिन्दी। विषय— पूजा र० काला ले० काल ×ा दूर्णा दे० सं० ७२३। च प्रथ्वार।

४१६२. सुतकनिर्शय"""""।पत्र सं०२१।सा० ⊏४४ इ'व। भाषा⊸संस्कृत । विषय–विकि विभाव । र०कात ४ । ले०काल ४ । पूर्णावे ० सं०४ । स्र अध्यार ।

विशेष-सूतक के प्रतिरिक्त जाप्य, इष्ट प्रनिष्ट विवार, माला फेरने की विधि प्रादि भी हैं।

×३६३. प्रति सं०२। पत्र सं०३२। ले० काल ×। वे० सं०२०६। मा अण्डार।

४३६४. सूनकवरील''''''''''। पन सं०१। या०१०३×५ रंग। मापा-संस्कृत । विषय-विधि विवास । रु०कास × । तेरुकास × । पूर्व । दे० । ० ६४० । इस सम्बर्गर ।

> ४३६%. प्रति सं० २। पत्र सं० १। ते० काल सं० १८४४ । वे० सं० १२१४ । वस समझार । विशेष--इसी प्रकार में एक प्रति (वे० सं० २०३२) झीर है ।

४.६६६. सोनामिरपूजा—कारा। । तव वं० य । जा० ४,२४२ इ'व । माया-संस्कृत । विवय-पूजा । २० काम ४ । ते० काम तं० १८६व कामूल बुकी ७ । पूर्ता । के० वं० ३,४६ । सा कस्तार ।

A Geralia Record Contract

न्तिनेष----पं∘ गंगाघर सोनागिरि वासी ने प्रतिलिपि की थी । *१३६७. सोनागिरपूजा---------।पत्र सं∘ ⊏ । घा∘ द्∤×४३ इ'व । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रु-क्षाल × । ने० काल × । पूर्ण । वे० सं० ⊏⊏५ । इक मण्डार ।

४३६६. सोलहश्वारखपुत्रा—खानतराय । पत्र सं०२। प्रा०८×४३ इ.च । भाषा-हिन्दी । विषय-पुत्रा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं०१३२६ । छ। भग्दार ।

४३६६. प्रति सं०२ । पत्र सं०२ । ले० काल सं०१६३७ । वे० सं०२४ । इस मण्डार ।

≱३. श्रति सं०३ । पत्र सं०५ । ले० काल ४ । ने० सं०६३ । ग भण्डार ।

¥३७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ३०२ । ज भण्डार ।

विषय---इसके प्रतिरिक्त पञ्चमेरु भाषा तथा सोलहकारए। संस्कृत पूजाये ग्रीर हैं।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ १६४) झौर है।

४३७२. सोलहकारगपुत्रा'''''' । पत्र सं० १४ । घा० ८४५ इंव । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ७४२ । ङ भण्डार ।

४२७२. सोसहकारसमंडलविधान—टेकचन्द् । पत्र सं०४८ । झा०१२imesद दंव । भारा–हिन्दी । विवस–भूवा। र॰ काल imes । से॰ काल imes । पूर्ण । वे॰ सं०८८७ । क्रभण्डार ।

४२७४. प्रति संव २ । पत्र संव ६६ | लेव काल × | वेव संव ७२४ । च अवहार ।

विशेष---इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ७२५) झीर है।

४३७४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४४। ले० काल X। वे० सं० २०६। छ अध्दार।

श्रदेश्क. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४१ । ते० काल × । ते० सं० २६४ । ज मण्डार ।

४२७०⊏. प्रतिसं०२ । पत्र सं०१४ । ले० काल सं०१८१ चैत्र बुदी है। दे०स० ४२७ । च अध्यार ।

४२७६. स्वपनविधान। पत्र मं∘ दासा० १०४४ ईव । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ता। वे० सं० ४२२ । का मण्डार।

४३<०. स्तपनविधि (बृहद्)*******। २व सं० २२ । ग्रा० १०४५ दश्च । नावा—संस्कृत । विषय— ूचा। र० काल ४ । ले० काल ४ । वे० सं० ५७० । व्या ग्रण्डार ।

विशेष--- प्रन्तिम २ पृष्ठों में जिलोकसार पूजा है जो कि प्रपूर्त है।

गुटका-संग्रह

(शास्त्र भग्डार दि ० जैन मन्दिर पार्टी की, जयपुर)

४२=१. गुटका सं०१। तव स०२६४। झा०६×६ ६'व। भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-संब्रह । त्रे० काल सं०१८१८ ज्येष्ठ सुर्वी ६। सदुर्ता । दशा-सामान्य ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
१. भट्टानियेक	×	संस्कृत	पूर्ख
२. रत्न त्रयपू जा	×	"	**
३. प श्चमेरुनूजा	×	**	,
४. धनन्त्रचतुर्दशीपूजा	×	**	
प्र. योडशकारसम् यूजा	सुमतियागर	संस्कृत	,,
६, दशलक्षम्।उद्यापनपाठ	×	"	n
७. सूर्यव्रतीचापनपूजा	ब्रह्मवयसागर	,	77
८, युनिगुत्रसम् द	में क. प्रमायग्र	संस्कृत हिन्दी	,
मुनिमुद्रत सन्द निस्पते	_		98 १२० −-१ २४

पुष्पापुष्पनिकपर्वं ग्रुसानिधि मुख्यतं नुवतं

ः स्वाह्यवाष्ट्रतापितासिसवर्गं दुःसान्निधाराधरं । क्रोचारव्यम् वर्वं धनकरं प्रध्यस्तकर्मारिणं

वंदे तद्शुरविद्ववे हरिनुतं मोमात्मजं सौस्परं ॥१॥

वनविसमगत्रीरं प्रान्तजन्यान्वितीरः

प्रवत्तवदनवीरः पंचवायुक्तवीरः

हतविषयविकार: सततत्वप्रवारः

स जबति प्रस्कारः सुत्रतो विष्णहारः ॥२॥

ENE.

त्रिभुवनजनहितकतां भर्ता सुपवित्रमृत्तिवरसभ्याः । कन्दर्भवर्षकृतं नुवतवेको जयित ग्रुगाथतां ।११। यो वक्षमीलिसंगतपुकुटमहारलरत्तनवानिकरं । प्रतिचालितवरवरस्यं केवलवोधे मंडितसुभगं ॥२॥ तं पुनिसुवतनाथं नत्वा कथवानि नन्य स्त्रवोहं ।

शृष्वन्तु सकलभन्याः जिनधर्मपराः मौनसंयुक्ताः ॥३॥

बहिल्लखंद---

प्रथम कस्यारा कहुं मनमोहन, मगघ मुदेश बने धित सोहत ! राजोह नवरि वर मुन्दर, मुमित्र भूव तिहां जिसी पुरंदर ।।१।। चन्द्रमुकीमृयनवर्गी बाला, तस रागी सोमा सुविधाला । पिछमरवर्गी धिलकुलबाला, स्वर्म सोल देवे गुगमाना ।।२।। स्न्दादे से धित मु विवस्तमा, ख्रुप्त कुमारि नेवे गुभलकाण ; रम्बदृष्टि करें धनद मनोहर, एव छमास गवा मुभ गुलस्ट ।।३।। हरिसम्मा भूपति भुवि मंगल, प्रागुत स्वर्ग हवे धालक्टम । श्रावश्वदि बीजे गुराधारी, जनमा गर्भ रह्यो मुक्करि।।।।

मुजङ्गप्रपात----

वरंति वनिये वरं वर्धभार न रेक्षात्रयं भगवायत्रमार ।
तदा प्रागता दग्यक्तानरेग्द्रामुरावाग्यवाम न गुक्ता मुनप्रा ।।१।।
पूरं त्रिःपरित्यालिनंदेवसंया गृह प्राप्त गोमित्र कंते गता या ।
स्यित गर्भवासे जिनं तंत्रकानंत्र प्रमाणावरातं वताहित्यवान ।।२।।
कुमायों हि सेवां अकुकेरित गाह विभावकेर्यक्तवलहीयपुरहृद्धवान्तः ।
वरं पत्रभूगं दवानंपुषुर्तं प्रकीर्णं तित्रव्यक्तकं कुंभं सुपूर्णं ।।३।।
सुरावेदवनाविश्वेतस्यवित्र ससद्दरलकृष्टि ग्रुप्त प्रध्यात्रः ।
जिलं गर्भवाक्ता विकर्तुकत्वेतं वरं स्तीमि सीमाग्यनं सीह्यकेतं ।।१।।
श्रीजिनवर प्रवत्यां महि ।त्रमुत्रन चित्र हवां मुत्यता महि ।
धंटा तिहं संव परहारत, पुरस्ति सहमा करें जय जवरवं ।।१।।
वैशास्त्र वर्षेत्र स्वीमी-जिन जायो, गुरस्तृ द वेतं तह प्रायो)
ऐरावस्य प्राव्य पुरंदर, सथीसहित सोहं ग्रुप्तविद ।।२।।

धविज्ञासन्द--

मोती रेखुक्कं वं---

5

तब ऐरावेख समकरी, वक्यो सतमुज बार्लाद भरी ।
जब कोटी सतानीस के समरी, कर नीत मृत्य वनीद भमरी ।।३।।
गम कार्ने डोहें नोवर्ल वमरी, पण्टा टक्कार विद सह प्रति ।
सावाब्बलकंकुयवेबंबरी, उक्ष्यमंगल गया जिन नगरी ।।
राजगर्खे मल्या स्टब्सह, बाजें वाजित गुरंग बहु ।
सक्कं बहु, जिनवर लावें सही, स्टब्स्ग्री तब घर मके गई ।।
जिन वाक्क बीठी निज नयगो, स्टब्स्ग्री वोलें वर वयसें ।
माया मेंकि मुतह एक कीयी, जिनवर मुगरी जई स्टर दीयो ।।

इसी प्रकार तप, ज्ञान और नीक करवाएंग का वर्णन है। सबने प्रियंक जन्म करवाएंग का वर्णन हैं जिसका रचना के बाथे से प्रियंक भाग में वर्णन किया गया है इसमें उन्न क्रमी के ब्रिटियन नीलावती खुन्द, हुनुसंत्रक्क्य, हुहा, वंभांग खंदीं को और प्रयोग हुमा है। व्यंत्र का पाठ इस प्रकार है—

事研刊--

बीस धनुष जस वेह वहं किन कक्षर लाखन । भीस सहस्र वर वर्ष प्राप्त स्वत्न मन रखन ।। हरवंशी कुराबीमल, भक्त दारिह विहेदन । मनवांखितवासार, नगरवालोहमू महन ।। भी सुनसंख संबद तिलक, जानमूचल सहामरण ।

इति मुनियुक्त खद सम्पूर्कोऽय ।।

पत्र १२० पर निम्न प्रसस्ति वी हुई है---

arang profession

संबत् १०१व वर्षे वाके १६व४ प्रवर्षमाने ज्येष्ठ सुदी १ सोमनासरे श्रीमूलवंवे सरस्वतीयच्चे वसस्वार-गरी श्रीभुषकुंवावायांच्ये महारक चीवयमांच तत्यहूं भ० भीदेवेन्द्रकोत्ति तत्यहूं भ० थीवियानांन्द तत्यहूं महारक ची विश्वभुषकुं तत्यहूं म० धीवयमीच्या म० तत्यहुं शीवीरच्यः तत्यहं भ० थी ज्ञानभूवत्य तत्यहुं भ० थीव्याव्यम् सत्यहूं भ० चीव्यावीच्यः तत्यहुं भ० धीव्याव्यम् तत्यहुं म० धीमेच्यनः तत्यहुं भ० थीव्याव्यम् तत्यक्ष्यं महस्वियाचीच्यः तत्यहुं भ० धीव्याव्यम् तत्यहुं म० धीमेच्यनः तत्यहुं भ० धीव्याव्यम् तत्यक्ष्यं

/, · · · ·			
विषय	कर्त्ता	भाषा	विशेष
१. मातापद्मावतीस्र न्द	महीचन्द्र भट्टारक	संस्कृत हिन्दी	१२५-२=
१०. पारवंनावपूजा	×	संस्कृत	
११. कर्मदहनपूजा	वादिचनद्र	2)	
१२. वननावरातः 👉	ब्रह्मजिनदास	हिन्दी	
१३. शष्टक [पूजा]	नेमिदत्त	संस् कृ त	पं० राघव की प्रेरगाने
१३. ब्रष्टक	×	हिन्दी	यन्ति पूर्वकदी गर्ड
१५. मन्तरिक पार्श्वनाय भ्रष्टक	×	संस्कृत	
१६ वित्यपूजा	×	77	

विशेष---पत्र न०१६८ पर निम्न लेख लिखा हुवा है---

सष्ट्रारक भी १०० श्री विद्यानन्त्रजो सं० १०२१ ता वर्षे साके १६६६ प्रवर्त्तमाने वर्गत्तकमासे कृष्णपरक्षे प्रतिचदादिवसे रात्रि यहर पाछलीड देवलोक यथा क्षेत्री

४३ ज्ञ. सुटका सं०२ । पत्र सं०६३ । सा० ६३ ४४३ ड'व । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । २० काल सं०१६२० । ले० काल सं०१८३४ । पूर्ण । दवा-सामान्य ।

इति श्री मिथ्यातसण्डन नाटन सम्पूर्णः। लिखतं बन्तराम साहः सं० १८३५ ।

४३=३ गुटका सं०३। पत्र सं०७४ । घा० ८४४ इख। माषा–संस्कृत-हिन्दो । विषय–४ । न० काल सं०१६०४ । पूला । दवा–सामान्य ।

विशेष---फतेहराम गोदीका ने लखा था।

१. रसायनविवि	×	हिन्दी	!- 3
२. परमञ्योति	बनारसीदास	,,	4-१२
३. रत्नत्रबपाठविधि	×	संस्कृत	₹ ३ -४३
४. घन्तरायवर्शन	×	हिन्दी	¥1-¥¥
५. मंगसाष्ट्रक	. ×	संस्कृत	¥3-¥6
६. यूजा	प्रथमन्दि	"	X=-XX

```
1 286 4
गरका-संबद
  ७. क्षेत्रपालस्तोत्र
                                                                                XX-XE
                                    ×
  ८. पूजा व जयमाल
                                                                                X0-3X
                                    ×
          ४३८४. गुटका सं० ४। पत्र सं० २५। बा० ३×२ इखा । बाषा-संस्कृत हिन्दी । ले• काल × ।पूर्णी ।
वशा-सामान्य ।
          विशेष-इस गुटके में ज्वालामासिनीस्तोत्र, प्रष्ट्रादशसहस्रक्षीलभेद, पटलेश्यावर्शन, जैनर्रस्थामन्त्र श्रादि
पाठों का संग्रह है।
           ४३८४. गुटका सं० ४ । पत्र सं० २३ । बा॰ द×६ इंच । नाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य ।
           विशेष-भृत हरिशतक ( नीतिशतक ) हिन्दी प्रर्थ सहित है ।
           ४३८६. गुटका सं०६। पत्र सं०२८। मा० ८×६। भाषा-हिन्दी। पुर्लं।
           विशेष-पूजा एवं शांतिपाठ का संग्रह है।
           ४३८. गटका सं० ७। पत्र सं० ११६ । बा॰ १४७ इंच । ले॰ काल १८४८ मासीब बुदी ४
शनिवार । पूर्ण ।
   १. नाटकसमयसार
                                    बता सीदास
                                                               हिन्दी
                                                                                   2-20
   २. पद-होजी म्हारो कंख
           बत्र दिलजानी हो ँ विश्वपूषसा
                                                                                     819
   ३. सिन्दूरप्रकरसा
                                     बनारसीदास
                                                                                £5-114
           ४३८८. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २१२ । बा० ६×६ इस्र । ते० काल सं० १७६८ । दशा-सामान्य ।
           विशेव---पं० धनराज ने लिखवाया था।
           ४३८६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ३५ । बा॰ ६×६ इस । माबा-सिली ।
           विशेष--जिनदास, नवल आदि के पदों का संब्रह है।
           ४३६०. गुटका सं० १०। पत्र सं० १५३। या॰ ६×५ इस । ते॰ काल सं॰ १९५४ थानस सुवी
 १३। पूर्ण । रका-सामान्य ।
   १. पर-जिनवासीमाता दर्शन की बसिहारी 🗙
                                                          हिन्दी
                                                                                       ŧ
    २. बारह्मावना
                                      पीलतराम
    १. मालोचनापाठ
                                     बोडरीसास
    ४. वससम्बद्धपुत्रा
```

43"			
***]			[गुटका-संमह
 पञ्चमेर एवं नंदीश्वरपूजा 	वानतराय	हिन्दी	२-३४
 तीच चौबीसी के नाम व दः 	र्शनपाठ 🗴	संस्कृत हिन्दी	
७. परमावन्दस्तोत्र	बनारसीदास	**	*
<. संस्मीस्तोत्र	द्यानतराय	,,	•
ू र. निर्वासकाण्डभाषा	भगवतीदास	n	४-६
१०. तत्वार्यसूत्र	उमास्वामी	*	
११. देवशास्त्रगुरुपूजा	×	हिन्दी	
१२. बौबीस तीर्थक्करों की पूजा	×	n	* १५३ तक
४३६१. गुटका सं॰	११। पत्र सं० २२२। ग्रा	१० <mark>१</mark> ×६ड≌ । भा	पा–हिन्दी । ले० कान २००
\$0×€			
विशेषनिम्न पाठों व	न संग्रह है ।		
१. रामायण महाभारत कथा	×	हिन्दी गद्य	₹-१४
[४६ प्रस्तों का उत्तर है]			
२. कर्मचूरव्रतवेलि	मुनि सकलकोर्ति		₹ ५ -₹ =
- अथ बैलि लिख्यते			
दोहा	कर्मचूर वृत जे कर, जीनवार	र्गातंतसार ।	
	नरनारि भव भंजन धरे, उत	र चौरासी स वार ।:	

र भव भजन घर, उतर चौरासी मुपार ।: कीषी कुरी कुरत बारंभ्यो सकलकीति नाम,

कर्म सेइय कीधो गुग्री कोसंबी वसि गाम ।। नमग्री ग्रुरु निरगंथ नै, सारद दसगुग्रा पुरै। कहो बरत बेलि उदयु करमसेएा कर्मचुरै ॥ ज्ञानावर्श दर्स्न सात्ता वेदनी मोह मंदराई। मन्हें जीतने चेति होसी, कहासु कर वस्तरा मुहाई ।। नाम कर्म पांचमौग कुछुगे मायु भेदो । गोत्र नीच गति पोहो वाहै, झन्तराई भय भेदो ।। वितामिंग सुचित प्रविलागी, कर्मसेगा कुगुगाई ।।१।।

ले० काल १७३६

गुटका-समह]

दोहा---

एक कर्म को वेदना, युंजे है सब मोइ। नरनारी करि उधरै, बरण गुणसंस्थान संजोई ॥१॥

धन्तिमगाठ- कवित्त-

२. ऋषिमण्डलमन्त्र

सकतकोत्ति श्रुनि झान भुनत बिटैं संताप चौरासी निर्द आई फिर झनर झनर पद पाइवे ॥ जूनी पोसी आई झक्षर दीसे नहीं फैठ उतारी बंध खंद कवित्त बेली बनाई कुगाईवे ॥ चंप नेरी चाटलू केते अट्टारक अये साथा पार झड़सठि जेहि कर्मजूर बरत कही है वसाई ब्याइवे ॥ संवन् १७४६ सोमवार ७ करकोतु कर्मजूर कत बेठगो झमर पद चुरी सीर सीधातंन जाइवे ॥

संस्कृत

×

नोट-पाठ एक दम प्रशुद्ध है। लीपि भी विकृत है।

			39-09		
४. चितामशि पादर्वनायस्य	तेत्र ×	n	प्रपूर्ण २०		
५. धंजनाको रास	वर्गमूबस्र 🐣	हिन्दी	₹-48		
प्रारम्भ—	पहेली रे महँत पाय नमें।				
	हरे भव दुस भंजन त्वं भगवंत क	र्मकायातनाकापसी।			
	पाप ना प्रभव श्रस्त सौ श्रंत तौ रास भरो इति श्रंजना				
तै तौ संयम साधि न गई स्वर लौक तौ सती न सरोमिला वंदीये ॥१॥					
	वसं विधाधर उपनी माय, नामै	तीन बनंधि संपत्रे ।			
	भाव करंता ही भवदुख जाय, स	तो न सरोमिशा बंदये ॥	Ru		
	ब्राह्मी नै सुंदरी बंदये, राजा ही	रसम तरौ वर द्वीय।			
	बाल परी तप बन गई काम ना	भौनन बंखीय वे हती ।।	सती व ****** ३ ।।		
	मेच सेनापति नै वरजारि धंवना	सो मदालसा।			
	त्यारे न कीनै सीयाल सवार तो	भती न४ ॥			
	पंचले किसन कुमारिका, इति ।	वास कुवारी सामी रे पारं	t i		
	जावन जन वाली करि, दारिका	ब्हन सुनि तप नाम ।			
•	हरी तनी प्रेयका बंदीय जिने रा	। सीटी मन मैं बरपी वै	राय तो १। सती न ***६१)		

धन्तिवपाठ----

वंस विद्याघर ढानि सात, नामे नवनिषि पावसी ।

शाव करंता हो भव दुक जायतो, साती न सरोपिए वंदीये ॥ १८ ॥

इस गावे धर्मभूवरए रास, रतनमात हु थो रिव रास ।

सर्व पंविभित्त मंगल पयो, कहै ता रास उपने रस विलास ॥

ढाल अवन केरी इस भरो, कंड विना राग किम होई ।

दुषि विना ज्ञान नविसोई, गुरू विना मारग कीम पानी सी ।

दौपक विना मंदर प्रथकार, देवभित्त भाव विना सब द्वार तो ॥१६॥

रस बिना स्वाद न उपने, तिम तिम मित वर्ष देव गुरू पनाव ।

बिसा विन सील करे कुल हारिए, निर्मल भाव राखो सदा ।

केतन कतक शानि कुल जाय, कुमित विना हर्नभ सरावक धवतार ।

दुहि समका भावसूं स्योगुरवास, एह क्यी सब मगल करी॥

इति भी भंजनारास सती संदर्श हर्मण प्रसादान संपुरए।।

स्वस्ति श्री मूलसंवे सरस्वतीणच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंबकुन्दावार्यान्यये महारक श्रीजगन्कीत्ति तराहे भ० श्रीवेदेन्द्रकीत्ति तत्वह भ० श्रीवेदेन्द्रकीत्ति तत्वह भ० श्रीवेदेन्द्रकीत्ति तत्वह भ० श्रीवेदेन्द्रकीत्ति तत्वह प्राप्ति स्वाप्ति तत्वह प्राप्ति वाहित स्वाप्ति प्राप्ति वाहित प्राप्ति वाहित स्वाप्ति प्राप्ति वाहित स्वाप्ति प्राप्ति वाहित स्वाप्ति प्राप्ति वाहित स्वाप्ति वाहित स्वाप्ति वाहित स्वाप्ति प्राप्ति वाहित स्वाप्ति स्वापति स्वा

६. न्हबर्गाविध × ले॰ काल १६२० ग्रासोज वदी ३ ७. ख्रियालीसपुरा × हिन्दी " पृष्ठ ३६वें पर **चौ**बीसवे तीर्थ **क्**रोके जिन्न ۴. × चौबीस तीर्यकूर परिचय × हिन्दी 14-40 विवोध---पत्र ४०वें पर भी एक चित्र है सं० १८२० में पं० खुशालचन्द ने बैराठ में प्रतिलिपि की थी। १०. भविष्यदत्तपञ्चमीकया व • रायमञ्ज हिन्दी

वभ्ययपश्चानका प्र*्र-८१ रचनाकाल सं∘१६३३ ग्रह ५० पर रेखाचित्र ले∘ काल सं०१६२१ वीराव (वीरात) में खुशानवन्द ने प्रतिकिथि की बी। पत्र ६२ पर तीर्वक्करों के शेखत्र हैं।

•	गुटका-संबद्]			į kęk
	११. हनुमंतकथा	बह्म रायमल	ाहन्दा	¤३−१०€
ň,	१२. बीस विरहमानपूजा	हर्षकीर्लि	"	***
	१३. निर्वासकाण्डभाषा	भगवतीदा स	"	***
	१४. सरस्वतीजयमाल	ज्ञानभूषस्	संस्कृत	222
	१४. मभिषेकपाठ	×	,	११२
	१६. रविव्रतकथा	भाउ	हिन्दी	११२ ≠१२१
	१७. विन्तामरिगलम	×	सस्कृत ने०का	न १=२१ १२२
	१८. प्रसुम्नकुमाररासो	त्रहारायमञ्ज	हिन्दी	१२३-१५१
			र० काल	१६२८ ले० काल १८११
,	१६. श्रुतपूजा	×	<i>मंस्</i> कृत	१५२
	२०. विषापहारस्तोत्र	धनच्चय	**	१४३-१५६
	२१. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	१ <i>५७</i> -१६६
	२२ पूजासंग्रह	×	**	?६७-१७२
	२३. कल्याग्यमन्दिरस्तोत्र	कुमृदयन्द्र	संस्कृत	१ ८३
	२४. पादाकेवली	×	हिन्दी	१ 4४-२१७
	२४. पश्चकत्यासाकपाठ 🗸	स्पनाद 🕡	19	२१७–२२२
	विशेष—कई जगह पत्र	ों के दोनों घोर मुन्दर देलें है।		
	४२६२. गुटका सं०	१२। पत्र सं० १०६। सा०	१०२×६ इख । भाषा	हिन्दी।
	विशेषनिम्न पाठा व	न संग्रह है।		
	१, यज्ञ की सामग्री का व्यौरा	×	हिन्दी	,

विशेष —(सब नामों को मोने सिमरिया में प्र० देवाराय ने ताकी सामा साई संस्था १७६७ माह कुत्ती पूरियाना पुरानी पोषी में से उतारी । पोषी भीरर्फ होगई तब उतारी । सब बीजों का निरक्त भी दिया हुमा है । २. सक्तमहिमा

विशेष-मोबे सिमरिया में माह सुदी ११ सं० १७६७ में यह किया उसका परिवय है। सिमरिया में बीहान भेव के राजा भीराय से। मासारान दीवान के पुत्र देवाराम से। यहात्रार्थ मोरेना के पं० टेकबन्द से। यह यह बात दिन तक बता था। 40.4

३. कर्मविपाक

×

×

सस्कृत

3-22

विशेष--- ब्रह्मा नारद संवाद में से लिया गया है। तीन श्रध्याय है।

४. बादोश्वर का समवशरण

हिन्दी १६६७ कॉनिक मुदी

१२-१४

बादीश्वर को समोज्या-ब्रादिभाग--

पुर यनवरि मन ध्वाङं, वित वरन सरन त्याउ । मति मानि लैंड ग्रेसी, मुनि मानि लैंह जैसी ॥१॥ सादीश्वर सुन्त गार्ड, वर माथ समु (र) पार्ड । वारित जिनेस लोगा, भरम को राखु दीया ॥२॥ तिज राज होड भिनारी, जिन मीन बरन थारी । तब भागनी कमाई, भई उदय संतर्ग्छ ॥३॥ मृति भीस काज जावड, नहि भानु हाय सावड । तैई कस्या सहया, कोई राना यनि भना।॥॥॥

धन्तिमभाग---

दोहरा---

रिविसहस मुन नावड, पन बोचि सीह पावड । वर कोडिइ मृन जामड, प्रश्तु वरन सग्त रालड ।। ११। समीमरण जिनरायी जी, गावडि ने नरवारि । मनवडित पन जागवरे, निर्दि पहुचिर अव गरा ॥ ५२। गोनसह सहसाठे वरण, कालिक सुदी ब.सराज । मानकोट मुन भागवर जसक तथा जिनराज ॥ १३३॥ इति श्री सादीभारती वी । समीसरण समाज ॥

ब्रिनीय समीसरण

ब्रह्मगुलाल

हिन्दी

28 8E

श्राविभाग---

प्रथम मुम्मिर जिन्हाज सन्त गृत्व नियान मान मित्र मेत जिनवामी मुमिरत मतु बढ़े. उसी पुनठान ख्रिएक खितु बढ़े ॥१॥ पुरुषर नेवह बढ़ा गुलान, देवसाहत गुर मंगल माल । इनिह मुम्मेर बस्यो मुलसार, समबसरन जैसे बिसनार ॥१॥ बीठ बुधि सन भाषों करे. प्ररिल पद प्रान पासो वरें । मुनहु भव्य मेरे परवान, समोमरत को करी बखान ॥३॥

24-90 रबना सं० १६६ मधावरा सुदी व

सुम शासन दिव जांग ध्यान, वर्द्धभान मयी केवल ज्ञान । समोसरमा रचना प्रति बनी, परम धरम महिमा प्रति तस्मी ।।४।।

यन्तिमभाग-बल्यो नगर फिरि धवने राइ, बरगा सरगा जिन धति सूख पाइ।

समासरस्यय पूरता मयौ, सुनत पढित पानिय गलि गयौ ॥६४॥

दोहरा---सोरह से घठसठि समै, माथ बसे सित पक्ष । गुनालब्रह्म अनि गीन गति, जसोनंदि पद सिक्ष ॥६६॥ नूरदेस हथि कंसपुर, राजा वक्कम साहि।

> गुनालबद्धा जिन धर्म्म जय, उपमा दोजै काहि ॥६७॥ इति समोसरन ब्रह्मणुनाल कृत संपूर्ण ।।

> > हिन्दी जगतभूषम् के शिष्ट

विश्वभूषम् प्रथम जपौ परमेष्ठि तौ गुर हीयौ धरौ।

सस्वती करहूं प्रगाम कवित जिन उचरी।। मोर्डि देस प्रसिद्ध द्वारिका श्रति बनी ।

रवी इन्द्र नै झाइ सुरनि मनि बहुकनी।। बहु क्लोय मंदिर चैन्य सीयी, देखि मुरनर हरपीयी।

समुद विजै वर भूप राजा, सक्र मोभा निरस्तीयी ।। प्रिया जा सिब देवि जानी, रूप ग्रमरी उदसा।

राति सुंदरि सैन सूती, देखि मुपने योडशा ॥१॥

संबन् सीलृह से घटानूवा जाखीयी ।

सावन माम प्रसिद्ध षष्ट्रमी मानियी ।। गाऊं सिशंदराबाद पार्श्वजन देहरे।

श्र.वग श्रीवा सुजान धर्म्य सौ नेहरे ।। भरें धर्म सी नेहु प्रति ही देही सबको दान जू।

स्यादवार मानी ताहि माने करे पंडित मान पू ॥

६. नेमित्री को मंगल

(दिभाग---

मन्तिम भाग---

जगतमूषरा भट्टारक जै विश्वभूषरा मुनिवर ।

नर नारी मंगलकार गावै पढत पातिग निम्तर ।।

इति नैमिनाथ जू की मंगल समाप्ता ।।

७. पार्श्वनाषचरित्र

विश्वभूषस्

हिन्दी

35-65

धादिभाग राग्रनट--

पारस जिनदेव की सुनह बरिष्ठु मनु लाई ।। टेक ।।

मनड मारदा माइ, भजी जनभर चितुलाई ।

पारस क्या संबंध, कही भाषा सुखदाई ।।

' जबू दिबन भरव में, नगर पोदना माम ।

राजा थी प्ररिविद जु, सुगते सुख सवाम ।। पारम जिन० ।।

विप्र तहां एकु वसी, पुत्र दो राज सुवारा ।

कमछु वटी विपरीत, विसन सेथे जु प्रपारा ।।

लघु भया मरपूर्ति सी, वमुर्यार दई ता नाम ।

रति कीडा नेज्या रच्यी, हो कमठ भाव के घाम ।। पारम जिन० ।।

कोषु भयी मरपूर्ति, कहां मंत्री सो राच्यो ।।

समठ विषे रस कारने, समर भूति बांधी जाई ।

सो मरि वन हाथी भयी, हियनि भई त्रिय घाइ ।। पारम जिन० ।।

धन्तिमपाठ---

प्रविध हेत करि बात सही देविन तव जानी ।
पदमावित घरगेन्द्र छत्र मस्ता पर तानी ।।
सब उपसर्ज निवारिकै, पार्थनाथ जिनंद ।
सकल करम पर जारिकै, अये मुक्ति विश्वदे ।। पारम जिने ।।
भूलसंघ पट्ट विश्वप्रपण मुनि राई ।
उत्तर देवि पुराण रिव, या वर्ष मुभाई ।।
वसै महावन लोग जु, दान चुर्जुविधि का देत ।
पार्यक्रमा निहुवै सुनी, हो मोछि प्राप्ति कल लेत ।।
पारस जिनदेव की, मुनह वरिजु मन लाइ ।।२५।।

इति भी पार्श्वनायजी की चरित्र संपूर्ण ।।

	गुटफा-संमह]			[445
٠	ब, बीरजिशंदगीत	भगौतीदा स	हिन्दी	18-90
k.	१. सम्बन्धानी धमाल	"	77	२०२१
3,	१० स्यूलभद्रशीलरासो	×	"	२१-२२
	११. पार्श्वनायस्तोत्र	×	n	२२-२३
	१ २ "	चानतराय	"	२३
	₹₹. "	×	संस्कृत	₹ ३
	१४. पार्श्वनायस्तोत्र	राजसेन	,	२४
	₹¥. #	पद्मनन्दि	"	२४
	१६. हनुमतकथा	प्र० रायम ल	हिन्दी र∙काल १	६१६ २४-७४
			से•कास १०	-३४ ज्येष्ठ सुदी ३
	१७. सीता व रित्र	×	हिन्दी बपूराँ	90-90€

विशेषनिम्न पूजा पाठों ।	का संबह है—		
१, कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	
२. लक्ष्मीस्तोत्र (पादर्वनावस्तोत्र)) पराप्रमदेव	संस्कृत	
३. तस्वार्थसूत्र	उमास्वामी	,	
Y. मकामरस्तोत्र	मा॰ मानतु [*] ग	"	
५, देवपूजा	×	हिन्दी संस्कृत	
६. सिंडपूजा	×	"	
७. बशलक्षरापूजा जयमाल	×	संस् कृत	
८, बोडशकारसपूत्रा	×	"	
१. पार्श्वनामपूजा	×	हिन्दी	
१०. शांतिपाठ	×	संस्कृत	
११. सहस्रनामस्तोत्र	पं॰ बासाधर		
१२. पश्चमेरपुषा	मूबस्य/त	दिल्यों •	

200]			[गुट का संबंध
· •			[Gowland
१३. प्रष्टाह्मिकापूजा	×	संस्कृत	"
१४. पश्चिपेकविधि	×	"	, , "
१४. निर्वाणकांडभाषा	भगवतीदास	हिन्दी	••
१६. पश्चमञ्जल 🗸	रूपचेन्द्र 🗸	" "	"
१७. घमन्तपूजा '	×	संस्कृत	**
विशेष—यह पुस्तक मुखलाल	ाजी बज कें पुत्र मनसुख	के पढने के लिए लिखी गई	थी।
१ ४३६५. गुटका नं० १४।	पत्र सं० १३ । मा० ४	«×८ ^३ ६ घ । भाषा–सस्कृत	। पूर्णः । दशा-सामा यः।
विशेषशारदाष्ट्रक (हिन्दी) तथा ८४ मासादनो	के नाम हैं।	
४३६४. गुडका नं० १४।	पत्र सं० ४३। झा० ५	(×३१ इंच। भाषा–हिन्दी	। लें श्रुकाल १६६० . यस
विशेष— पाठ शशुद्ध हैं—	•	,	
 कहण्योजी नेमजीस् जाय म्हेतो थ 	ाही संग चालां 🗶	हिन्दी	ę
२. हो मुनिबर कब मिलि है उपगारी		,	१–२
३. ध्यावांला हो प्रभु भावसों जी	×		
 प्रमु बांकींजी मूरत मनड़ो मोहियो 	ब्रह्मकपूर	, ,	₹-=
 गरज गरज गहै नवरसै देखी भाई 	× .	'11	3-2
६. मान लीज्यो म्हारी झरज रियभ वि		**	Ę
७. तुम सी रमा विचारी तजि	·×	19	₹0
 कहज्योओं नेमिजीस् जाय म्हे तो 	×	19	**
र्ट. मुके वारीजी भाई साइयां	· ·	"	8.5
१०. संबोधपंचासिकाभाषा	· ×	ų,	₹ ₹
११. कहज्योजी नेमिजीसू जाब म्हेतो धा	बुधरन	n	₹4-70
१२. मान लीज्यो म्हारी याज रियभ जिन	न्हा सग्वाला राजवन्द 	"	28-23
		3 7	₹₹
१३. तजिक गये पीया हमके तुमसी रमा	वचारी 🗶 -	#	23-28
१४. म्हे ध्यावासा हो प्रभु भावसू	×	,,	₹¥ -
र्रं. साबु दिगंबर नगन उरं पद संबर भूष	राधारी 🗙	,	24
4	•	**	**.

गुरका-संबद्]			(201
१६. म्हे निशिदिन ध्यावांला	बुधः	बन ,,	२६
१७. दर्शनपाठ	×	77	76-71
ं १ँ८. कवित्त	×	99	₹=-₹
१६. बारहमावना	नवः	7 %	\$ \$-\$
२०. विनती	×	,,,	ŧε≟ş
२१. बारहभावनः	হল	ગો ,,	\$=-3
४३६६. गुटका सं० १	६। यत्र सं० २२६	। भा० ५३ ×५ इ.च.। ले० कालाः	१७५१ कार्तिक सुद्दी १
पूर्ण । दशा सामान्य ।		•	
विशेष—दो गुटकामी को	मिला दिया गया है	1	
विषयमूची			
१. बृहद्बल्यामा	×	हिन्दी	9-19
२. मुक्तावलिवत की तिथियां	×	27	१ २
३. भःडादेने का मन्त्र	×	n	१२-१६
४. राजा प्रजाको बक्षमें १ रनेका स	गन्य 🗙	n	₹ ७ −₹ =
५. मुनीश्वरों की जयमान	बहा जिनदास	"	₹₹-₹¥
६. दश प्रकार के बाह्यए	×	सस्कृत	२४-₹६
७. सूतकवर्णन (यशस्तिलक सं)	सोमदेव	**	30-31
 गृहप्रदेशविचार 	× ·	,	3?
€ं. भक्तिनामवर्शन	×	हिन्दी सम्कृत	33-3X
१०. दीपावतारमन्त्र	×	,	36
११. काले विक्युके बक्क उतारने का	संव ⊀	 हिन्दी	ŧs
नोज यहां ने फिर सक्य	। प्रारम्भ होती है।	•	• •
१२, स्वाध्याव	*	संस्कृत	१- ३
१३. तत्वार्थसूच	वेमस्याति		(- q
१४. प्रतिक्रमशापाठ	×	•	• .
र्रभं. मक्तिगठ (सात)	X.	**	nt35
		19	३७७ २

R]			[गुडका-स गर
१६. बृहस्त्वयं मूस्तीत्र	समन्तभद्रावार्य	Ħ	32-50
१७ बसात्कारगरा गुर्वावलि	×	,,	£ 3-3=
१८, श्रावकप्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	£4-600
११. श्रुतस्कंध	ब्रह्म हेमचन्द्र	प्राकृत	१०७-११=
२०. श्रुताबतार	श्रीधर	संस्कृत गद्य	११८-१२३
२१. श्रालोचना	×	प्राकृत	१२३-१३२
२२. लघु प्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	445-448
२३. भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	77	88E-8XX
२४. बंदेत न की जयमाला	×	संस्कृत	१४५-१५६
२५. धाराधनासार	देवसेन	प्राकृत	१४६-१६७
२६. संबोधपंचासिक।	×	"	१६ =-१७२
२७. सिद्धित्रियस्तोत्र	देवनन्दि	संस्कृत	१७२-१७६
२८, भूरालचीबीसी	भूपालकवि	"	१७७-१८०
२६. एकीमावस्तोत्र	वादिराज	"	\$50-\$5¥
३०. विषापहारस्तोत्र	घनज्ञय	"	१८४-१८८
३१ दशलकाराजयमाल	पं०रइचू	अ पभ्र [°] श	१ =६-१६४
३२. कल्यासमिदरस्तीत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	१ ६६–२०३
३३. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	₹•३-२०४
३४. मन्त्रादिसंग्रह	×	n	२०५-२२६

प्रशस्ति—संबद् १७५१ वर्षे बाके १६१६ प्रवर्तमाने कार्तिकमासे गुद्धपके प्रतिपदा १ तिचौ मङ्गलवारे साचार्ये श्री बास्कीति पं॰ गंगाराम पठनार्ष वाचनार्ष ।

४३६७. गुटका सं० १७। पत्र स० ४०७। मा॰ ७×१ इश्र ।

१, ध्रशनसमितिस्वरूप	×	प्राकृत	संस्कृत व्याख्या सहित १–३
२. भयहरस्तोत्रमन्त्र	×	संस्कृत	¥
३. बंधस्थिति	×	"	मूलाबार से उद्धृत ५-६
¥, स्वरविचार	×	"	

गुटका-समह]			{ ו3
प्र. सं दृष्टि	×	सन्द्वत	€-₹१
६. मन्त्र	×	,,	t¥
७. उपवास के दशभेद	×	"	१ ५
द. फुटकर ज्योतिष पद्य	×	**	१४
 अडाई का व्यीरा 	×	"	१द
१०. फुटकर पाठ	×	"	१द- २०
११. पाठसंग्रह	×	संस्कृत प्राकृत	२१–२४
	गो	मट्टमार, समयसार, द्रव्यसंग्र	ह ब्रादि ने संगृहीत पाठ हैं।
१२. प्रश्नोत्तररत्नमाला	ग्रमोधवर्ष	संस्कृत	२४-२४
१३, सञ्जनचित्तवक्षम	म लियेगाचार्य	"	२६-२=
१४. गुग्गस्थानव्यास्या	×	" प्रवचनकार तथ	२६-३१ ा टीका ब्रादि से संब्रहीत
१५. छातीमुल की घोषिष का नुमला	×	हिन्दी	३ २
१६. जयमान (मालारोहरा)	×	धपश्र श	३२-३४
१७. उपवासविधान	×	हिन्दी	३४−३६
१८. पाठसेयह	×	प्राकृत	35-30
१६. श्रन्ययोगव्यवच्छेदक्द्वात्रिशिका	हेम बन्द्राचार्य	संस्कृत	मन्त्र ग्रादि भी है ३६-४०
२०. गर्भ कल्यासक क्रिया में भक्तियां	×	हिन्दी	¥ŧ
२१. जिनसहस्रनामस्तोत्र	जिनमेनाचार्य	संस्कृत	¥?-¥ ξ
२२. अक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	**	¥8-43
२३. यतिमावनाष्ट्रक	ग्रा• मुंद मुंद	"	५२
२४. भावनाहाणिशतिका	भा० भमितगति	**	* 4-**
२५. बाराधनामार	देवसेन	प्राकृत	%%—%
२६. संबोधपंचासिका	.×	प्र पन्न श	¥€ -4 •
२७. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	£2-40
२८. प्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	<i>₹७−==</i>
२६. मिल्स्तोत्र (प्राचार्यमक्ति तक)	×	संस्कृत	= {- {••

३०. स्वयंभूस्तोत्र ३१. लक्ष्मीस्तोत्र ३२. दर्शनस्तीत्र ३३. सुप्रभातस्तवन ३४. दर्शनस्तीत्र ३५. बलात्कार गुरावली ३६. परमानन्दस्तोत्र ३७. नाममाला ३६. बीतरागस्तोत्र ३£. करुएाष्ट्रकस्तोत्र ¥•. सिद्धिप्रियस्तोत्र ४१. समयसारगाथा ४२. महद्भिविधान ४३. स्वस्त्ययनविधान ४४. रत्नत्रयपूजा ४४. जिनस्त्यन ४६. कलिक्ण्डपूजा ४७. बोडशकारसपूर्ता ४८. दशलक्षमापुत्रा ४१. सिद्धस्तुति ५०. सिद्धपूजा ५१. शुभमालिका ५२. सारसमुख्य ५३. जातिवर्गन ४४. फुटकर वर्शन

४४. पोडशकारगपुजा

		[गुटका संपद
ग्रा० समन्तभद्र	संस्कृत	१० 5- १ १5
पश्चत्रभदेव	19	१ १≈
सकलचन्द्र	n	355
×	**	११६-१२१
×	সাকু র	१२१
×	संस्कृत	१ २२–२४
पूज्यनाद	**	१२४-२ ४
धनकुय	"	१२५-१३७
पद्मनित्द	"	१३ =
17	,,	3 6 9
देवनन्दि	*)	£\$6-£X\$
भा० कुन्दकुन्द	,,	१ ४१
×	,,	\$ \$\$ -\$ \$ 3
×	"	\$**-\$#E
×	91	१ ५६-१६ २
×	"	१६२ -१६ =
×	"	१ ६ द-१७१
×	"	₹ <i>७</i> २−१७३
×	"	\$65-E6\$
×	"	१७५-१७६
×	"	१७६-१८०
श्रीधर	"	१ =२ -१ ६२
कुलभद्र	"	१६ २–२०६
×	🥠 ५८ पश्च ७७	जाति २०७-२०८

₹0€

₹१•

×

×

का-संबद् 🐧 -			[xex
<ि भौषधियों के नुस से	×	हिन्दी	ररर
(७. संग्रहसूक्ति	×	संस्कृत	
. दक्षापटल	×	77	788
.१. पार्श्वनायपूजा (मन्त्र सहित) ×	"	78¥
॰. दीक्षा पटल	· ×	" "	78#
१. सरस्वतीस्तोत्र	×	"	₹₹#
२. क्षेत्रपालस्तोत्र	×		
। सुभावितसंग्रह	×	,,	779-875
८. तत्वसार	देवसेन	গ সাকুর	₹₹₹-₹₹₽
८. योगसार	योगचन्द	शकुत संस्कृत	₹ ₹₹
. द्रव्यसंग्रह	नेमियन्द्रावार्य	-	₹₹-₹₹
. श्रावकप्रतिक्रमत्व	×	प्राकृत संस्थान	₹ १६ -२३७
. भावनापद्धति	पद्मनन्द	संस्कृत	₹ ₹७ ~₹ ४ ₹
. रत्नत्रयपूजा		78	48e-480
क्त्यासमाना	•••	**	२४८−२४६ ∙
	पं॰ ब्राशाधर	77	२४६-२६०
एकी भा वस्तोत्र	वादिराज	"	₹•-२६३
. समयसारबृत्ति	धमृतच न्द्र सूरि	"	₹ \$ ¥−₹ = \$
परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	धपम्र ंश	₹=६-३०३
बस्यासमि-दरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	4.x-4.¢
परमेडियों के ग्रुए व स्रतिसय	×	प्राकृत	₹•७
स्तोत्र	पद्मनन्दि	सस्कृत	4-5 4-4-3-6
प्रमा राप्रमेथकलिका	नरेन्द्रसूरि	**	₹० - ३२१
देवागमस्तोत्र	वा॰ समन्तभद्र		
बक्लकू ।हरू	महाकसङ्		427-420
नु मावित	×	**	₹२=-₹२€
विमगुक्तवन	×	11	₹₹ - ₹₹

- 1 3			
६२, क्रियाकलाप	×	,,	\$\$5-\$\$X
८ १. संभवनाथपद्धही	×	ध्रपभ्रंश	ままれーまま さ
ब४. स्तोत्र	लहमं। चन्द्रदेव	प्राकृत	3€€-2€€
८३. स्क्रीम्यञ्चा रवर्णन	×	संस्कृत	388-368
ब६. चतुर्विश्वतिस्तोत्र	माधनन्दि	,,	\$85- \$ 8\$
६७, पञ्चनमस्कारस्तात्र	उमास्वामि	"	ş¥¥
८६. मृत्युम होत्सव	.<	**	₹४१
८६. ग्रनन्तगंठीवर् गन (मन्त्र सहित)	×	"	3×6-3×=
. बा युर्वेद के नुसले	×	**	386
६१. पाठसंग्रह	×	17	3×6-9×8
६२. धायुर्वेद नुसस्ता संग्रह एवं मंत्र	।दिसंग्रह ४	संस्कृत हिन्दी योगशन वै	द्यक मे मंगृहीत ३५७-३८
६३. झन्य पाठ	×	"	355-703
इनके झतिरिक्त निम्नपाठ	इस गुटके में और हैं।		
१. कस्यासा बडा २. मुनिश्वर	•	•	
४. सूतकविधि (यशस्तिलक चम्पू	म) ५. गृहाबबलक्ष	म् ६. दोपोवतास्मन्य	
४३६८. गुटका सं०१	द्र पत्र सं० ५ ५ । ग्रा०	७×५ इ छ। भाषा −हिन्दी	। लेल्बाल में ० १८०४
श्रावरण बुदी १२ । पूर्ण । दशा–सामान	य ।		
१. जिनराज महिमास्तोत्र	×	हिन्दी	₹-\$
२. सतसई	विहारीत्राल	🤧 ले० काल १७७४	फागुगा बुदी १ १-४=

[गुटका-संबद्ध

" १८०४ मावरा बुदी १२ ४६-४<u>५</u>

ब्रथ रस कौतुक लिब्यते— गंगाधर लेवहु सदा, गाहक रसिक प्रयोग । राज सभा रंजन कहत, मन हुलास रस लीन ।।१।)

३. रसकौतुक रास सभा रक्षन

दोहा---

दंपित रति नैरोग तन, विधा सुधन सुगेह। जा दिन जाम मनंद सी, जीतव की फल ऐह ॥२॥

ग ङ्गादास

सुंदर पिय मन नावती, नान भरी महुनारि । भोड नारि सनेवरी, जाकी कोठि ज्वारि ॥३॥ हित सी राज मुता, विलसि तन न निहारि । ज्यां हाचां रे बरह ए, पार्थां मैड कारन आरि ॥४॥ तरसे हुं परसे नहीं, नोडा रहन उदान । जे सर मुक्ते आदर्वे, की सी उन्हाने बास ॥४॥

धन्तिमभाग--

समये रित पोस्ति नहीं, नाहुरि मिले बिनु नेह । धौनरि जुक्यों मेहरा, काई वरनि करेंह ।१८=।। मुदरी ने ख़लस्यों कहां, भी हों फिर ना पैद । काम सरे दुल योतरे, वैरो हुवो वेद ।१६६।। मानवती निस दिन हरे, बांसत खरीबदात । नदी किनारे स्वहां, जब तब होद दिनास ।१२०।। सिव मुखदाबक पानपति, जरो धान की भोग । नासे देसी स्वहां, ना परदेनी भोग ।१०१। गंता भेम समुद्र है, गाहक चनुर मुजान । राज सभा बहै, मन हित भीति निवान ।।१०२।।

इति श्री गंगाराम कृत रस कौतुक राजसभा रखन समस्या प्रबंध प्रभाव । श्री मिती सावए। विदि १२ - बुधवार संबन् १८०४ सवाई जयपुरमध्ये निक्षी दीवान ताराबन्दजी को योधी निक्तं मास्तिकनन्द बज वांचे जीहेने विकास मास्तिक बंच्या ।

४३६६. गुद्धका सं० १८। पत्र सं० ३६। माखा-हिन्दी। ने० काल सं० १६३० घाषाढ सुरी १४। पूर्वा।

विशेष---रसासबुंबर की बीपई-नसक,कवि इत है।

४४००. शुटकासं०२०। यत्र सं०६०। बा०६×३६८६। ले०काल सं०१९६५ ज्येष्ठ बुदी १२। ्रा ,युर्व। बसा–सामान्य।

विशेष--- महीबर विरक्ति मन्त्र महीदिव है।

४४ १. सुटका सं ६२१। पत्र सं • ३१६। बा० ६×५ इच्च। पूर्ण। दशा–सामान्य।

ŧ.	सामाविकपाठ	×	संस्कृत प्राकृत	₹ - ₹¥
₹.	सिद्ध भक्ति मादि संग्रह	×	प्राकृत	₹₹-७•
₹.	समन्तभद्रस्तुति	समन्तभद्र	संस्कृत	હર
٧.	सामाधिकपाठ	×	प्राकृत	9=-€8
٧.	सिवित्रयस्तोत्र	देवनन्दि	संस्कृत	= ?- = §
€.	पार्श्वनाथ का स्तोत्र	×	**	60-600
७.	चतुर्विशतिजिनाष्ट्रक	शुभवन्द्र	"	१०१-१ ४६
=	पश्चस्तोत्र	×	"	{¥3{90
€,	जिनवरस्तोत्र	×	**	१७ ० -२००
१ ۰.	मुनीश्वरों की जयमाल	×	11	२०१–२५०
११ .	सकलीकरएविधान	×	7	₹ ₹ -३००
१ २.	जिनचौबीसभवान्तररास	~ विमलेन्द्रकीसि	हिन्दी पद्य पद्य सं	

मादिभाग---

जिनकर चुबीसइ जिंहा भानू पाय नमी कहु भवहं विचार ! भाविदं सुरहत ये संत ॥१॥

यज्ञाय राजा परिए मरगोइ, माग भूमि ब्राइ परिए सुरगोड ।

श्रीघर ईशानि देव ॥२॥

मुचिराज सातयइ भवि जाग्यु, ग्रन्थुतेन्द्र सोलम वस्तारमु।

वज्यवाभि चन्द्रेश ।।३।।

तप करि सर्वारथ सिद्धि पासी, भन मन्यारम बृवझह स्वामी।

मुगितइंग्या जगनाह ॥४॥ '

विमलबाहना राजा धरि जांगुं, पंचामुलरि महमिन्द्र सुभारत्ं।

इशं अवजिन परमपद पास्यू ।।१८।।

विमल बाहन राजा घरि जांयुं, पंचामुत्तरि ब्रहमिन्द्र बस्तासुं।

मजिल मगर पद पास्तू" ॥६॥

गुटका-संबद्

वस्तिवश्राप-

विश्वल बाहुक राजा चरि मुखीह, प्रजमवीबि श्रहींगद्र मुज्योर्थ ।
संजव जिन श्रवतार ११७०।
स्राहिताच श्रम्यान भवान्तर, चन्द्रमन त्रव सात सोहेकर ।
सान्तिताच त्रवपार ११४१।
निमाच अवदशा तम्हें जाखुं, पार्वनाच नव स्त्रह बकारखुं ।
महाचीर जब तेत्रीसह ११४६॥
स्राहितनाच जिन स्राहि कही जह, स्रतार जिनेश्वर हिंद चरीजई।
निस्ति त्रिस्ति श्रव सही जासु ११४७॥

जिन बुबीस जवांतर सारो, अग्तता मुख्तता पुष्प वपारो । श्री विमलेन्द्रकोत्ति इस बोलड ॥४८॥

इति जिम चुबीस भवान्तर रास समाप्ता ॥

१३. मालीरासी	जिनदास	हिन्दी पद्य	₹ • □−₹ ₹•
१४. नन्दीऋरपुष्पाञ्चलि	×	संस्कृत	३११-१ ३
१५. पद-जीवारे जिल्लावर नाम भर्ज	×	हिन्दी	\$ १ ४- १ %
१६. पद-जीया प्रश्नुन सुमरको रे	×	n	***

४४०२. सुटका सं० २२। पत्र सं० १४४। ब्रा॰ ६×१३ इक्का । आया-हिन्दी । विषय-व्यवन । से० कान सं० १०१६ । पूर्ण । दक्षा-सामान्य ।

१. नेमि युरा गाऊं बांखित पाऊं	वहीचन्द सूरि	हिली	t
	बाय नगर में सं॰	१८८२ में एं० रामचन्द्र ने	प्रतिसिवि की वी।
२. पार्वनावजी की निधारही	हर्ष	हिन्दी	१- ६
१. रे जीव जिनवर्ग	समय सुन्दर	99	•
४. युक्त कारल सुगरी	′×	,	
५. कर जोर रै जीवा जिनगी	यं • फतेहबन्द	,,	•
६. बरल सरल मब माइबो	**	"	4
७. स्तृत किरको मनावित्री रै जीवा	n	,	

30

त्रिलोककौलि

३४. करो निज सुखदाई जिनधर्म

२५. श्रीबिनराय की प्रतिमा वंदी जाव २६. होजी बांकी सांबक्षी सुरत	त्रिलोककीर्ति एं० फ्लेहबन्द	हिन्दी	₹₹
३६. होजी बांकी सांबली सुरत	पं॰ फ्लेहबन्द		**
		"	३ २
३७. कवही जिलसी हो युनिवर	×	19	11
३८. नेमीसुर ग्रुरु सरस्वती	मूरजमल	_{११} र०कार	स्य∙्१७६४ ३३
१९. भी जिन तुमसै बीनऊ	धनवराज	"	4 ¥
४०. समद्दिजयशीरी नंदको	मुनि हीराषम्ब	×	92
४१. शंगुजारो वासी प्यारो	नयविमस	"	36
४२. मन्दिर भासालां	×	,,	३ ६
४३. भ्यान घरघाजी मुनिवर	जिनदास	*	10
४४. ज्यारै सोभै राजि	निर्मल	"	₹ ∈
४५. केसर हे केसर भीनो म्हारा राज	×	"	76
४६. समक्ति वारी सहलड़ीजी	पुरुषोत्तम	**	Y•
४७. भवगति मुक्ति नहीं छै रै	रामचन्द्र	,,	¥ŧ
४८. वधावा	"	"	*4
४६. श्रीमंदरजी मुख्या मोरी बीनती	बुराय न्द्र	,,	¥ŧ
५०. करकसारी बीनती	भगोसाह	***	**-**
		सूचा नगर में सं•	१८२६ में रचनाहुई बी।
४१. उपदेशवावनी	×	हिन्दी	84-65
१२. जैनवडी देशकी पत्री	म अलसराम	90 (1	• १८२१ - ६२-६६
४३. ८४ प्रकार के पूर्वी के भेद	×	,	€10€E
५४. रागमामा	×		गनियों के नाम है ७०
११. प्रात मयो सुमरदेव	जगतरामगोदी का	"	राग मैकं ७०
१९. यांग २ हो गयि दर्शन कार्ज	, ,,	 71	98
५७. देवो जिनराज देव सेव	**		95
५०. महाबीर जिन मुक्ति वचारे	,,	*	9 ₹
४.६. हमरेतो प्रश्न पुरति			
	-	**	
and the second second		Type A	

249 1

7. 1				
६०. श्रीरियमजी को ध्यान वरो	जगतराम गोदीका	हिन्दी		• 1
६१. प्रात प्रथम ही जयो	**	,,		98
६२. जाने श्रीनेमिकुमार	"	n	राग रामकली	७४
६३. प्रभुके दर्शन को मैं ग्रायो	**	n		৩২
६४. गुरुही भ्रम रोग मिटावे	,,	,,		৬২
६५. भून कंदरी नेमि पड़ावें	"	"		હ્ય
६६. निंदा तूजागत क्यों नहिरे	17	,,		٥Ę
६७. उतो मेरे प्रास्तको वियारो	,,	,,		७६
६०. राइकोजी जिनराज सरन	99	,,		७६
६९. जिनजी से मेरी लगन लगी	19	**		७६
७०. मुनि ही ग्ररज तेरे पांय परी	**	,,		90
७१. मेरी कौन गति होसी	**	**		••
७२, देखोरी नेम कैसी रिद्धि पाई	"	**		৩=
७३. झाजि बनाई राजा नाभि के	"	"		৩=
७४. बीतराग नाम मुमरि	मुनि विजयकीति	"		30
७५. या चतन सब बुद्धि गई	बनारसीदास	,,		૭૬
७६. इस नगरी में किस विध रहना	बनारसीदास	"		હ્
७७. मैं पाये तुम त्रिभुवन राय	हरीसिह	n		=0
७८. ऋषभग्रजित संभव हरगा	भ० विजयकीनि	"		50
७६. उठो तेरी मुख देखूं	बह्यटोडर	,,		5+
८० देखोरी ब्रादाश्वरस्थामी कैसा ध्या	न लगाया है लुझालचंद	••		⊏ १
८१. जै जै जै जै जिनरा ज	लालचन्द	99		= १
< २. प्रभुती तिहारी कृपा	हरीसिह	99		5 8
६३. धमकि २ घुम तागड दिदाना	रामभगत	"		- -
८४. विषय त्याग शुभ कारज लागो	नवल	"		45
- ५. छ विजिन देली देवकी	फतेहबन्द	,,	•	45
				•••

पुरकः संगष्ट्]			[#=3
ब६. देखि प्रमु दरस कीए	फतेहब-द	हिन्दी	4.5
८७. प्रभु नेमका भजन करि	वसतराम	"	~ ?
८८. गानि उदै वर संपदा	क्षेम चन्द	,,	d.A.
८१. मज भी ऋषभ जिनंद	को भा य न्द	77	4 4
६०. मेरे तो योही बाव है	×	n	<¥
११. मुनिसुवत जिनराज को	मानुको रित	,,	e.
९२. मारे प्रमुसूं प्रीति लगी	बीपचन्द	,	e.A.
६३. शीतल गंगादिक जल	विजयकीसि	11	6 1
६४. तुम मातम गुव जानि	बनारसीदा स	**	4 1
६५. सब स्वारथ के मीत है	×	77	4 ¥
६६. तुम जिन घटके रेमन	গ্ৰী মুখন্ত	99	4 1
९७. व्हारे सज्ञानी जीवकू	×	>1	46
६६. जिन नाम सुमर मन बाबरे	वानतराय	3)	< ç
६६. सहस राम रस पी।जय	रामदास	21	* 5
१००. सुनि मेरी मनसा मालएते	×	**	« ۶
१०१. वो साधुसंसारमे	×	n	59
१०२. जिनमुद्रा जिन सारसी	×	,	~50
१०३. इएविधि देव ब्रदेव की मुद्रा लबि	त्र सीजै ×	#	; <9
१०४. विद्यमान जिनसारसी प्रतिमा जि	नवरकी लालचर	**	44
१०५. काया बाढी काठको सीचत सूके व	गप मुनिपचतित्तक	**	*55
१०६. ऐसे क्यों प्रभु पाइके	×	**	= {
१०७. ऐसे वों प्रश्नु पाइवे	×		
१०८. ऐसे वों प्रश्नु पाइवे सुनि पंडित प्र	ाणी ' ×	99	
१०६. मेटो विचा हमारी	नयनसुब	•	4.
११०. प्रमुजी को तुम सारक नाम धरायो	-	77	
१११. रे मन विषयां मूलिबो	भागुकीर्ति		- 41

१३७. पिव बिन पल खिन वरस विद्वात

8 19

€ø

गुटफा-संबद् }			[×=
१३८. श्रीवत जिन सरस तुन्हारी	मानुकीसि	हिन्दी	8.9
१३९. तेरी सूरति रूप बनी	रूपचन्द	"	દેષ્ઠ
१४०. घषिर नरभव जागिरे	वि जयकीति	,,	€=
१४१. हम हैं कीमहाबीर	**	39	ę<
१४२. मलैयल ग्रासकर्ली मुक्त प्राज	**	**	€=
१४३. कहां लो दास नेरी पूज करे	n	"	€=
१४४. आज ऋषभ घरि जाने	**	**	EE
• १४५, प्रांत भयो बलि जाऊँ	79	"	EE
१४६. जागो जागोजी जागो	**	**	68
१४७. प्रात समै उठि जिन नाम लीजै	हर्वबन्द	"	4.6
१४८. ऐसे जिनवर में मेरे मन विललायो	धनन्तकीर्ति	19	१ 00
१४१. मायो सरम् तुम्हारी	×	10	n
१५०. सरण तिहारी बायो प्रश्नु मैं	धश्चयराम	"	**
१५१. बीम तीर्यक्कर प्रात संभारो	वि उसकीर्ति	**	र०१
१५२. कहिये दीनदयाल प्रमु तुम	चानतराय	"	79
१४३. म्हारे प्रकटेदेव निरक्कन	बनारसीदास	,,	
१५४. हूं सरएागत तोरी रे	×	"	"
१११. प्रमु मेरे देखत मानन्द मये	जगतराम	n	१ •२
१५६. जीवडा तू जानिनै प्वारा समस्तित म	हिलमें हरीसिंह	"	.
१५७, घोर घटाकरि घागोरी जलघर	वयकीति	70	-
१५८, कीन दिवासूं आनी रे ननचर	. ×	n	
१५६. सुमति जिनंब दुक्तमाला	पुराषन्त	,	₹•₹
ू. १६०. जिन बादस पढि आजो हो जवमें	"	,	
१६१. प्रदु हम चरतान सरन करी	ऋषमहरी		
ें १६२. विव २ वेड्ी होत पुरानी	जनमस	v	
SEA MAN ASSESSMENT AND ASSESSMENT AND ASSESSMENT ASSESS	- Econol	* * * * * * * * * * * * * * * * * * * *	o josia in in terior

			(Asier-eine
्रेडिंग्डर ने १६४. क्या सोवत ग्रति भारी रेमन	चानतर:म	हिन्दी	t•¥
१६५. सम्बद्धित उत्तम नाई जगतमे	,,	,,	n
ूर्व १६६. रे मेरे घटजान बनागम खायो	**	"	t • ¥
१६७. ज्ञान सरोवर सोइ हो भविजन	,,	"	*
१६८. हो परमगुरु बरसत ज्ञानकरी	"	,,	*
्रिक्ट उत्तरा र शिक्षित दर्शन की न	ोम देवमेन	"	"
्रें है ७० मेरे सब ग्रुक है प्रश्रुते वक्तनो	हर्षकीर्ति	"	१०६
ें १७१. बलिहारी खुदा के वन्दे	जानि मोहमद	"	91
१७२. मैं तो तेरी ब्राज महिमा जानी	भूधरदास	**	\$1
१७३. देखोरी बाज नेमीसुर मुनि	×	**	"
१७४. कहारी कहुं कखु कहत न ग्रावें	द्यानतराय	1)	१.0
१७५. रेमन करिसदा संतोष	बनाग्सीदास	**	,,
१७६. मेरी २ करता जनम गयो रे	रूपवन्द	n	"
१७७ देह बुढानो रेमै जानी	विजयकोत्ति 	33	33
१७८ माधो ल ज्यो मुमति प्रकेली	बनारसीदास	n	₹+=
१७६. सनिक जिया जाग	विजयकीर्ति	n	n
१००. तन धन जोबन मान जगत मे	×	**	,,
१८१ देख्यां बन में ठाडो वीर	भूघ (दास	n	305
१८२. चेतन नेकुन तोहि संभार	बनारसीदास	5)	71
१८३, लगिरह्योरे ग्ररे	वस्रतराम	,,	99
१ = ४. लागि रह्यो जीव परभाव मे	×	n	"
. १०४. हम लागे मातमराम सो	वानतराय	,,	2
१ के६, निरन्तर व्याक नेमि जिनंद	वि न यक्तीति	**	"
१ 4 ७. कित गयोरे पंथी बोल ती	भूष (दास	77	"
१६६, हम बैठे घानी मीन से	बनारसीदास	"	n
१८६. बुलिया कम जैहेगी	×	"	११ १,

गुरका-संबद्]			NEV.
१६०. जबत में सो देवन का देव	वनारसीदास	हिन्दी	444
१६१. मन लागो भी नवकारसू	गुरगचन्द्र	n	79
१६२. चेतन प्रव सोजिये	**	"राच सारङ्ग	***
रहरे. आचे जिनवर मनके मावर्ते	राजसिंह	,,	,,,
१६४. करो नाभि इंबरजी की धारती	लालचन्द	n	
१९४. री भाको देव स्टन ब्रह्मा स्टल	नन्ददास	,,	413
१६६. तें नरभव पाय कहा कियो	€79-2	"	
९६७. य क्रिया जिन दर्शन की प्यासी	×		75
रेटन. वलि जदये नेमि जिनदकी	भाउ	77	**
१६६. सब स्वारथ के विरोग लोग	विजयशीस	*	**
🗸 २००. मुक्तायिरी वदन बद्वे री	देवे-द्रभूषस्य	7	₹ ₹¥
,	,	ण =२१ में विजयकीर्ति ने बुक्तायिरी की कं	"
२०१ उमाहा लाग रह्यो दरशन को	जगतराम		
२०२. नाभि के नद करण रज वदी	जनतराम विसन दास	हिन्दी	* * *
२०३. लाम्या झातमराम सो नेह		n	R.
२०४. घनि मेरी बाजको बरी	चानतराय	"	79
रे॰ ध मेरो मन बस कीना जिनहास	×	*	***
k २०६. धनि वो पीव धनि वा प्यारी	यन्द	77	**
	बहार याल	**	**
२०७. बाज मैं नीके दर्शन पायी	कर्मवस्द	n	29
२०८ देको भाई माया लागत प्यारी	×	n	225
२०६. कलियुग में ऐसे ही दिन जाने	हर्वकीर्तर	n	
२१० भीनेशि यसे राख्यस तविके	·×	,	
२११. नेसि कांवर वर बीब विराजे	×		n Etu
रे१२ तेष बढ़गानी तेष बढ़गानी	बुंबरबूब स्	,	
दे१ है. बरे नन के के बर समग्राबी	×		M,
२१ ७ का गिलिही नेग व्याद	Parties		**
	. Allia and Algebra	7	

***]			[शुटका संमा
२११. नेमिजिनंद वर्नन की	मकलकी ति	हिन्दी	११=
२१६. शब छाज्यो दाव बन्यो है मजते श्री	ोभगवान 🗴	99	***
२१७. रेमन जायगो कित और	×	**	,
२१ व. निश्चय होसाहार सो होय	×	**	**
रेश्ट. समक नर जीवन बोरो	रूपवन्द	"	n
२२०. लग गई लगन हमारी	जगतराम	,,	215
२२१. बारे तो को कैसे २ कह समफावें	चैन विजय	,,	"
२२२. माधुरी जैनवासी	जगतराम	19	,, .
२२३. हम धाये हैं जिनराज तोरे बन्दन व	ो वाननराय	"	**
२२४. मन बटक्यों रं. ब्रटक्यों	धर्मपाल	,,	**
२२५. जैन धर्म नहीं कीना वैदन देही पा	पी त्रह्मजिनदा स	17	१२०
२२६. इन नैनों दा यही सुभाव	"	17	*
२२७. नैना सफल भयो जिन दरसन पायो	रामदास	**	,,
२२८. सब परि करम है परधान	रूपचन्द	"	"
२२१. सब परि बल चेत ज्ञान	हर्षकी ति	"	**
२३०, रे मन जायगो किस ठौर	जगतराम	27	 १ २१
२३१. सुनि मण नेमजी के वैन	छाननराय	>>	"
२३२. तनक ताहि है री ताहि बापनो दरस	जगतराम	"	**
२३३. चलत प्रागा क्यों रोयेरी काया	×	17	
२३४. बाबत रंग मृदग रसाला	जयकोति	"	,,
२३५. धव तुम जागो चेतनराया	गुगा चन्द	**	" १ २२
२३६. कैसा ध्यान घरवा है	जनतराम	"	
२३७. करिरै घ'तम हित करिले	शानतराय	"	**
२३८. साहिब खेलत है चौगान	नरपाल	,,	•
२३१. देव मीरा हो ऋषभजी	समयसुन्दर	" n	"
२४०. बंदी चेरी हो पिया में	वानतराम	,,	१ २३

गुरका-सब्द ो			[४८६
२४१. मैं कवा तेरा हो स्वामी	धानतराय	हिन्दी	१२३
२४२ जैजैहोस्वामी जिनराय	रूपक्र र	19	,
२४३ तुम ज्ञान विभो फूली वसत	चानतराय	**	१ २४
२४४. नैननि ऐसी बानि परि गई	जगतराम	10	,,
२४५ लागिलीनाभिनदनस्यौ	भूषरदास	,,	
२४६ हम धालम को पहिचाना है	द्यानतराय	**	"
२४७ कौन समानान कीन्हारे जीव	जगतराम	**	
२४० निपर ही कठिन हेरी	विजयकीनि	19	77
२४६ हाजी प्रयुदीनदयाल मैं बदानेरा	द्यक्षयराम	•	? ? %
 ४० जिनवागी दरमात्र मन मेरा ताहि म भृ 	्न पुरा ब न्द्र	••	n
४४१. मनहुमहागत राज प्रमु	19	•	"
४ २ व्हें इये ऊपर ग्रमवार चतन	29	"	n
र / ३ श्रारमी देखत मोहि श्रारसी लाग	यमग्रु-दर	***	१२६
रध ८, काम गढ फोज चढी है	×	13	**
२५५. दरवाज बढा मोलि मोलि	बमृतच-द	19	**
२५६ चिति रेहिन चिति चिति	चानतराव	**	
२५७ चितामिता स्थामी साथा साहब गरा	वनारनीद≀स	99	,,
२६६. मुनि मामा ठगिनी तैं सब ठिगी सामा	मूचरदास	**	450
२५६ चलि परसें भी शिखरममेद गिरिरी	×	**	*
८६० जिन ग्रुए। गा वीरी	×	**	77
२६१ बीतराग तेरी माहिनी मूरत	विजयकीर्ति	"	29
२६२ प्रश्नु सुमरन की या विरियां	19	"	१२ =
२६३. किये बाराधना तेरी	नवस	n	*
२६४. वडो धन बाजकी ये ही	नवस	*	**
२६५. मैम्या धपराथ क्या किया	विजयकीरित	19	इन्ह
२६६, तजिके गये पीय हमको तकतीर गया	विचारी, नवल	*	*

×

बनारमीद स

२६२. तुब्ह्य भूलो, तुब्ह्य भूलो सज्ञानी रेप्राणी

गुटका-संबद			[-
२६३. होजी हो मुधातम एह निज	ादभूतिरह्या X	हिन्दी	१ ३
२६४. मुनि कनक कीर्निकी जकड़ी	मोसीराम	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	१३
रचनाकाल सं०	१८५३ लेखन काल संबत् १८	: १६ नागीर में व	ं रामचन्द्र ने लिपि की।
२६५. स्त्रीक विचार	×	हिन्दी	ते०काल १८६७ १३
२६६ सोवरियाग्नरत्र सुनो मुक्त द	निकी हो एं० खेमचंद	हिन्दी	61
२६७. चोदलेडी में प्रभुजी राजिया	**	"	
२८६. ज्यो जानत प्रश्नु जोग धरधो	है चन्द्रभान	"	
२६१. ब्रादिनाथ की विनती	मुनि कनक कीर्ति	71	र० काल १८५६ १३६-)
३००. पार्श्वनाथ की ग्रारती	n	,	ę,
३०१. नगरो की वसायत का संबत्	बार बिबरगा "	"	t,
संबद् ११११ नागौर	: मंडाएो। झाला तीज रैं दिन ।		
"६०१ दिली	वसाई धर्नमपाल तुंवर वैसाल	मुदी १२ भीम ।	
च १६१२ झस्ब	र पातशाह झागरी क्सायो ।		
" ७३१ राजा	भोत्र उंजसो बसाई।		
"१४०७ झहमर	राबाद बहमद पातसाह बसाई !		
_म १५१५ राजाः	जीवे जोवपुर बसायो जेठ सुदी	११ ।	
_स १५४५ बीकाने	र राव बीकै वसाई		
» १५०• उदयपु	र रासी उदमसिंह बसाई।		
" १४४५ राव ह	मिर न रावत फलोधी बसाई !		
₃ , १०७७ राजा	भोज रै बेटै बीर नारायश सेवा	एगो बसायो ।	
,, १४६ <i>६ रावस</i>	वीदै महेवो बसायो ।		
, १२१२ माटी	जेसे जैसलकेर बसायी सां (वन	र) दुवी १२ रवं	11
" ११०० पवार	नाहरराय मंडोबर बसायो ।		
,, १६११ राव व	गलदे माल कोट करायो ।		
	शिवाबत मेड्ती बसायो ।		
ू १७८ १ राजा	वैसिंह जेपुर बसायो कक्षावे ।		

127

संबद् १३०० जालीर सीमडारे बसाई।

- , १७१४ **भौरंगसाह** पालसाह भौरंगावाद बसायो ।
- १३३७ पातसाह झलावद्दीन लोबी वीरमदे काम झायो ।
- » १०२ **धराहल बुवाल** पाटला बसाई वैसा**ल** सुदी ३।
 - २०२ (१२०२) ? राव ग्रजेपाल पवार ग्रजमेर बसाई।
- " ११४= सिंधराव जैसिंह देही पाटगा मैं।
- , १४५२ देवडो सिरोही बसाई।
- ,, १६१६ पातसाह भक्तवर मुलतान नीयो ।
- , १५६६ रावजी तैतवो नगर बसायो।
- "११८१ फलोघी पारसनाथ**जी** ।
- १६२६ पातसाह भ्रकबर श्रहमदाबाद लोधी ।
- १५६६ राव मालदे बीकानेर लोधी मास २ रही राव जैतसी ग्राम श्रायो ।
- १६६६ राव किसर्नासह किशनगढ बसायो।
- "१६१६ मालपुरो बसायो।
- " १४५५ रैसपुरी देहूरी यांत्रना।
- , ६०२ चीतोड चित्रंगद मोडीयै बसाई।
- " १२४५ विमल मंत्रीस्वर हवो विमल बसाई।
- "१६०६ पातसिंह सकबर चीतोड़ लोधी जे० सुदी १२ ।
- १६३६ पातसाह बकबर राजा उदैसिहजी नुंम्हाराजा रो खिताब दीयो ।
 - १६३४ पातसाह अन्तवर कछोविदा लीघो।

३०२, व्वेताम्बर मत के चौरासी बोल		हिन्दी	34-615
३०३, जैन मत का संबल्प	×	संस्कृत	มสมา
३०४, शहर मारोठ की पत्री	×	हिन्दी पद्य	141

सं० १८४६ घमाड वदी १४

सर्वज्ञजिनं प्रसुमामि हितं, सुमनान पलाडा थी लिखितं। सुमुनी महीनन्दिन को विदयं, नवनैदं हुकम सुरुग्नं सदयं ॥१॥ करवा फुरिए मोहन जीवरायं, सपरंपुर बारोठ बानकर्यं ।
सरवोपन लायक बान खत्रं, युव देल नु धानम बक्ति यत्रं ।।२।।
तीर्षेक्टर ईस दुर्भातः चरं, जिन पूज पुरंदर जेम करें ।
बसुसंव सुभार चुरंपरमं, जिन चीतं देखालव कारकर्यं ।।३।।
तत द्वारस पानर्से सुद बरा, सतरें पुनि नेम घरें मुक्दरा ।
बहु दान चतुर्विच देय तदा, युव धानन मुदेव पुने सुकदर ।।४।।
धर्म प्रकल खु चीएक पूप जिला, सपन्नेयांस वानपति खु तिला ।
जिन वंस खु ध्योग विवाहरमं, गुरु सीच्य क्लानिधि बोधमसं ।।४।।
यु इत्यादिक दोसम योगि बहु, लिक्तियो खु कहां लग वोय सहं ।
दयुवा गोठि खु धावग पंच लसे, मुदि बुढि समूदि धानन्य वसे । ६।।
तिह सोगि निक्षे प्रम बुढि सदा, नहियो सुक्त संपति भोग मुदा ।

इह बानक प्रानन्द देव जपै, उत बाह्त सेम जिनेन्द्र कुपै।
प्रपरंव वु कायद प्राइ इतै, समावार वाच्या परसेन तितै।।६।।
सहु बात बु साय प्रमुकर, प्रम देव ग्रुद पसि आंक्त गरें।
मर्याद मुखारक मायक हो, करनदु व काम मुदायक हो।।६।।
यश्चंत विनेतंत दातृ गहो, ग्रुएश्चीस दश्यम पालक हो।
कत है स्ववहार सवा तुम को, ज्यरांति तुमै नहि धौरन को।।१०।।
किसिसो सबु को विधमान यहु, युव पत्र बु वाहुदतां निस्ति हु।
वसूर वास्त्व वसूर दुनि कन्द्र किसं, वदि मास समाह बनुविधियं।।११।।
इह बोटक संद बुक्तस नही, निकसी पतरी हित रीति वही।

तुम वेबि हूं वेक संकर ने, समबार कहा। पुत्र ते पुरने । हनके समाबार इते पुत्र ते, करज्यो परवान सर्वे युक्ते ॥१३॥ ॥ इति पत्रिक सहर व्हारोठ की पंचावती कुं॥

४४०३. गुटका सं० २३। पत्र सं० १८२। मा० ८४१३ इंब। पूर्ण। वशा-सामान्य। विशेष---विभिन्न रचनामी में से विशिष पाठों का संग्रह है।

४४०४. गुटका सं० २४ । पत्र सं० ६१ । मा० ७४६ इका । माया-संस्कृत हिन्दी । विवय- पूजा । पूर्वी । देशा-सामान्य ।

१. चतुर्विशति तीर्यङ्कराष्ट्रक	बन्द्रकीर्ति	मस्कृत	\$- \$ X
२. जिनवैत्यालय जयमाल	रत्नभूषस	हिन्दी	६ ६- ६८
३. समस्त ब्रत की जयमाल	वन्द्रकीर्ति	,,	£0-00
४. ग्रादिनायाष्ट्रक	×	,,	メシーを
५. मिएरलाकर जयमाल	×	,,	৩५-৩৩
६. बादीश्वर बारती	×	97	= ?

४४०४. गुटका सं० २४ । पत्र सं० १४७ । घा० ९४१ इक्का | भाषा—संस्तृत हिन्दी । ले० काल सं० १७४५ प्रासोज मुदी १३ ।

१. दशसक्षरणपूजा	×	संस्कृत	t-x
२. लयुम्वयंभूस्तोत्र	×	**	१६-१=
३. शास्त्रपूजा	×	77	१€− २४
४. वोडशकाररापूजा	×	,,	78-20
१. जिनसहस्रनाम (लयु)	×	n	₹७३२
६ सोलकारणरास	मुनि सकलकीर्ति	.' हिन्दी	11-14
७. देवपूत्रः	×	संस्कृत	¥0- \$ \$
 संख्यूणा 	×	,,	₹ <i>υ</i> υ३
६. पश्च मेरुपूजा	×		
१०. मष्टांह्रकाभक्ति	×	n	68-0X
११. तस्वार्थसूत्र		"	\$-= \$
•	उमास्तामी	"	€ 0- ? 0 %
१२. रत्नत्रयहूजा	पॅंडिताचार्थं नरेन्द्रसेन	37	११६-१३७
१३. क्षमावसीपूजा	ब्रह्मसेन		
१४. श्रीलंहीतिथवर्णन	7	n	\$ 3≈-\$××
and an agent agent	×	हिन्दी	4,44

		{ xex
×	संस्कृत	****
×	प्राकृत	१ 44-4१

१/०६. गुटका सं० २६। पत्र सं० १४६। मा० १८४ दशा । ले० काल सं० १६८८ ज्येष्ठ हुदी २। पूर्ण । दशा-जीर्सा।

₹.	. विषापहारस्तोच	धनश्चय	संस्कृत	y- y
₹.	, भूपालस्तोत्र	मूपान	,	¥-8
ŧ,	. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवम/न्द	17	6-13
¥.	. सामविक पाठ	×	,,	१३-३ २
¥.	मिल गठ (सिंद भक्ति बादि)	×	,	\$ \$-90
۴.	स्वयंभूस्तोत्र	समन्त भद्राव	79	91-59
٥.	बन्देतान की जयमाला	×	77	55-52
٩.	तस्वार्थमूत्र	उमास्वामि	,,	e 0 \$-37
€.	श्रावकप्रतिक्रमम्	×	"	₹ ० द−२३
₹0.	गुर्वाविस	×		*******
₹₹.	कल्यासमिन्दरस्तोत्र	कुयुदयन्द्रायार्थ	"	437-436
१ २.	एकी भाव-तोत्र	वा दराव	"	\$\$E-\$Y\$

सवत् १६८८ वर्षे स्वेष्ठ वृदी द्वितीया रवीदिने प्रचंह श्री वनीयेन्द्रमे श्रीचन्द्रप्रभवेत्यासवे श्रीवृत्वसंवे सरस्वतीयच्चे वनास्वाराणे कुँवकुँदावार्यान्ववे बहुएस श्रीविद्यावन्ति पट्टे अ० भीमाज्ञिन्नपण्डे अ० श्रीसम्बद्धन्ति त्व श्रीसम्बद्धन्ति व्व श्रीसम्बद्धन्ति त्व श्रीसम्बद्धन्ति व्यवस्ति विष्टि विष्य विष्टि विष्टि

४४०७. शुटका सं० २७ । पत्र सं० १४७ । सा० ६४६ रख । से० काल सं० १५६७ । क्सा-सामान्य । ्रं वियोज—पं० सेथपाल ने प्रतिसिंद की थी ।

े १. सास्य द्वा	×	र्वसङ्गत	. 3-9
र सुद्ध दिनो नव विकास क्रिकेट विकास	× ,	livit	1-0

are 1			(गुटका-संबद्
३. मंगल पाठ	×	संस्कृत	5-6
४. नामावली	_ ×	,,	e-??
 तीन चौबीसी नामः 	×	हिन्दी	१२-१३
६. वर्शनपाठ	×	संस्कृत	₹ ३− ₹¥
७. भैरवनामस्तोत्र	×	,,	₹¥-₹¥
म. पश्चमेरूपू जा	मूध रदास	हिन्दी	8×
१. म ष्टाह्मिकापूजा	×	संस्कृत	₹₹-₹¥
१०. चोडमकाररापूजक	×	77	₹4>७
११. दशसक्षारापूजा	×	"	30-25
१२. पश्चपरमे ष्ठीपूजा	×	**	₹6-30
१३. धनन्तप्रतपूजा	×	हिन्दी	\$ 6 – 3 5
१४. जिनसहस्रनाम	बाशाधर	सम्बन	34-4£
१५. भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्यं	संस्कृत	¥ ७− ₹३
१६. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	**	¥ 2 – x <u>x</u>
१७. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	x €- € o
१=. पद्मावतीसहस्रनाम	×	,,	£?-७१
१६. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	**	७२-८७
२०. सम्मेद शिखर निर्वास काण्ड	×	हिन्दी	
२१. ऋषिमण्डसस्तोत्र	×	संस्कृत	53-22 e3-53
२२. तत्वार्थसूत्र (१–५ प्रध्याय)	उमास्वामि	,,	
२३. वक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	" हिन्दी	• • 9 - 9 3
२४. बस्याग्रमन्दिरस्तोत्र भाषा	वनारसीदास	,,	\$00- \$ E
२५. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास		\$99-005
२६. स्वरोदयविचार	×	"	११२-१३
२७. बाईसपरिषह	×	,,	\$\$X-\$\$v
२८. सामायिकपाठ लघु	×	"	१२०-१२५
		"	१२४-२६

त्र चर्चा ४ ४४० = . शुटका सं०२ च। पत्र सं०२०। बा० =३४७ इका। पूर्ण। दशा–सामान्य।

१४७-१५७

विशेष--- प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है ।

Š.

३५. ज्योतिष वर्षा

४४०६ गुटकासं० २६। पत्र मं० २१। सा० ६३/४४ इखा। ले० काल सं० १६४६ मंगसिर सुदी १०। पूर्वा (दया—सामान्य)

विशेष-सामान्य शुद्ध । इयमें संस्कृत का सामायिक पाठ है ।

४४१०. गुटका सं० ६०। पत्र सं० ८। बा० ७xx इचा। पूर्ल ।

विशेष---इसमें भक्तामर स्तोत्र है।

४४११. गुटका सं० ३१। पत्र सं० १३। बा० ६३x४३ इंच । प्रावा-हिन्दी, संस्कृत ।

विशेष---इसमे निस्म नियम पूजा है।

४४९२. गुटकासं० ३२ । पत्र सं० १०२ । घा० ६६ं×५ इक्का । वादा—हिन्दी । ले० काल सं० १०६६ कानुस्त बुदी ३ । पूर्वी एवं बुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—दसमें पं॰ जवकावती इत सामायिक पाठ (प्रापा) है। तनसुक सोनी ने घलवर मे साह् दुलीकाव की कवहरी में प्रतिकिपि की यो । घलितन तील पत्रों में तबु सामायिक पाठ की है।

४४९२. गुटका सं० २३। पत्र सं० २४०। झा० ४४६६ इख । विषय-नजन संग्रह । ने० काल ४। पूर्ण । यक्ता-सामान्य ।

विशेष---जैन कवियों के भजनो का संबह है।

श्वरेष्ट. गुरुका सं० १४ । वन सं० ४१ । बा० ६६ँ×१ रख । भाषा—संस्कृत । से० काम सं० १६० द्र पूर्ण । बामान्य मुख । ववा-वायान्य । श्रादिभाग- दोहा----

सकल जगत सुर असुर नर, परसत गरापित पाय । सो गरापति बुधि दोजिये, जन प्रपनो जितलाय ।। श्ररु परसो चरनन कमल, यूगल राधिका स्याम । धरत ध्यान जिन चरन को, सुर न (र) मुनि माठो जाम ॥ हरि राधा राघा हरि, जुगल एकता प्रान । जगत धारसी मैं नमो, दूजो प्रतिबिम्ब जान ॥ सोभित बोढे मत्त पर, एकहि जुगल किसोर । मनो लस घन मांभ ससि, दामिनी बार बोर ॥ परसे अति जय चित्त कै, चरन राधिका स्याम । नमस्कार कर जोरि कै, भाषत किर्पाराम ॥ साहिजहापुर सहर में, कामच राजाराम । तुलाराम तिहि बंस मे, ता सूत किरपाराम ॥६॥ लघु जातक को ग्रन्थ यह, सुनो पंडितन पास । ताके सबैं स्लोक कैं, दोहा करे प्रकास ॥७॥ म्रो प्रवहु जे सुनौ, लयो जुझरथ निकारि । ताको बहुबिधि हेत सीं, कह्यो ग्रन्थ विस्तार ॥६॥ संबद् सत्तरह से वरस, और बाख़बे जानि । कातिक सुदी दक्षमी गुरु, रच्यी ग्रन्य पहचानि ॥६॥ सब ज्योतिष को सार यह, लियो जु ग्ररथ निकारि । नाम घरघो या ग्रन्थ को, तातें ज्योतिष सार ॥१०॥ ज्योतिव सार बु ग्रन्थ की, कलप ब्रह्म मनु लेखि ! ताको नव सामा लसत, बुदो बुदो फल देखि ॥११॥

भव वरस फल लिसते---

संबन् महै हीन करि, जनम वर (प) सी मिल। रहै सेव सो गत बरव, बावरदा मैं बिस ।।६०।। भये बरव गत सक्तू झर, मिस घर बाहु ईस । प्रथम थेक मन्दर है, ईह वही इकतीस ।| ११।। घरतीस पहले घरवा, संक की दिन घपने मन जानि । दुवे घर फल तीसरी, चौचे स शस्तिर व ठांन ॥६२॥ सर्वे बरण गत ग्रंक को, ग्रुन भरवाको चिता । बुखाकार के शंक में, भाग सात हरि मित ।। १३।। भाग हरे ने सात की, लबध संक सी जानि । जो मिने य पल मैं बहुरि, फल ते वटी बलानि ।।६४।। चांटेका मै तै दिवस मै, मिलि जै है जो घंक। तामे भाग व सत को. हरि ये मित न सं ।। १ ४।। भाग रहे जो सेष सो, बचै सक पहिचानि । तिन मैं फल घटीका दसा, अन्य मिलावी झानि ॥ ६६॥ जन्मकाल के धत रवि. जितने बीते जानि । उतने बाते ग्रंस रवि. बरस मिस्पी पहचानि ।।१७।। बरस लम्बी जा शंत में, सोइ देत चित धारि । बादिन इतनी वडी ब. पल बीते लग्नन बीबारि ।।६८।। सगन सिसी तै गोरह जो, जा घर बैठो जाड । ता घर के फल सुफल को, बीचे मित बनाइ ॥६६॥ इति भी किरपाराम कृत अवोतिषसार संपूर्णम्

१. पाश्चाकेवली

x

Bent

31-30

४४१४. गुटका सं० ३४। पत्र सं० १८ । मा० ६३×४५ इश्च । भाषा-× । विषय-संग्रह । ले० काल सं० १८८६ भाषवा बुदी ४ । पूर्स । क्षुत्र । दशा-सामान्य ।

विशेष--जबपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

१. नेमिनामजी के दश भन	× ·	हिन्दी पद्य	१-५
२. निर्वास काण्ड भाषा	भगवतीदास	"र०काल	१७४१, ५ .७
३. दर्शन पाठ	×	सं स्कृत	=
४. पार्खनाथ पूजा	×	हिन्दी	8-80
५. दर्शन पाठ	×	,	11
६, राजुलपचीसी	नानबन्द विनोदीनान		-
६, राजुलपश्चासा	नालबन्द विनोदीलाल	"	१२-१=

४४१६. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० १०६ । मा० द।।⋉६ टश्च । भाषा-हिन्दो । त्रयय-संग्रह । ले० काल १७६२ माह बुदी द । पूर्ण । मणुढ । दया-और्ण ।

विशेष-- बुटका जीर्गा है। लिपि विकृत एवं बिलकुल ग्रशुद्ध है।

×	हिन्दी प्राचीन पद्य सं.	V94 9_=u
×		₹4-30
×	(हर्न्दी	-
×	/	₹0#
×		\$? — \$ Y
		₹ 4- ¥₹
×	हिन्दी हिन्दी	। के झाधार पर । ४२-४४
	मं० १७६	र माहबुदी १३।
×		पदा, ४४-४३
×	n	43-4 4
×	n	44-4 6
×	n पद्य सं ० ३	× × = = = = = = = = = = = = = = = = = =
	× × × × × ×	 भ नेव काल १७६२ माइ भ हिन्दी भ १११ पद्म । पौरास्मिक कर किर्दी भ १११ पद्म । पौरास्मिक कर भ हिन्दी भ १२१ भ भ १२१ भ भ १२१ भ

```
गुक्का-संबद्ध ]
                                                                                           f $01
     ११. बारहकडी
                                               ×
                                                                     हिन्दी
     १२. विरहमज्जरी
                                                                                         40-45
                                               ×
े १३. हरि बोला वित्रावली
                                                                                         ₹२~६=
                                               ×
                                                                            पद्य सं० २६
     १४. जगन्नाय नारायण स्तवन
                                                                                         4=-00
                                               ×
     १४. रामस्तोत्र कवस
                                                                                         80-08
                                               ×
                                                                    संस्कृत
    १६. इरिरस
                                                                                         9×-99
                                               ×
                                                                   हिन्दी
               विशेष—पुटका साजहानावाद जयसिंहपुरा में लिखा गयाथा। लेखक रामजी मीलाथा।
                                                                                        95-52
               ४४९७. गुटका सं० ३७। पत्र सं० २४०। घा० ७३×४३ इस।
     १. नमस्कार मंत्र सटीक
                                                                   हिन्दी
     २. मानबावनी
                                           मानकवि
                                                                               ४३ पछ है ४-२६
    रे. चौबोस तीर्बक्टर स्तुति
                                             ×
    Y. भायुर्वेद के नूसले
                                                                                           32
                                             ×
    ४. स्तृति
                                                                                           31
                                         कनककीति
                                                                                           B to
                                                             लिपि सं० १७६९ ज्येष्ठ सुदी २ रविवार
    ६. नन्दीश्वरद्वीप पूजा
                                            ×
                                                                 संस्कृत
                  कुबला सौगाएती ने सं० १७७० में सा० फ्रोहबन्द गोदीका के मोल्ये से लिखी।
                                                                                           **
   ७. तस्वार्धसूत्र
                                        उमास्वामि
                                                                 संस्कृत
                                                                            ६ सध्याय तक
   प. नेमीश्वररास
                                       बहारायम्स
                                                                 हिन्दी
                                                                           र० सं० १६१४ १७२
   ६. जोगीरासो
                                          विनदास
                                                                        लिपि सं० १७१० १७६
हैं . पर
                                           ×
 ११. माबित्यवार कथा
                                        माऊ कवि
 १२. दानशीलतपमावना
                                                                                        208
                                           ×
१३. चतुविवाति खुण्य
                                                                                  २०५-२३६
                                                                  » र० सं० १७७७ झसाड वदी १४
   षावि भाग---
                   बादि बंत जिन देव, सेव पुर नर तुम करता।
                   नय नयः ज्ञान पवित्र, नामु नेतरि सत्र हरता ॥
```

सरसुति तनइ पसाइ, जान सनवांखित पूरइ ।
सारव लागी पाइ, जेमि दुल दालिड भरइ ।।

"ब्रेड निरम्रक प्रसाद कर, जिन चउनीसो मन घरउ ।
मुनकीति इम उक्षरइ, सुम नसाइ र वेला तरउ ।।१।।
नाभिराव कुष्णपन, नंद मस्देवि जानउ ।
काइ पनुष सत पत्र, बृषम लाखन चुनकानउ ।।
देग वर्ष कहि कायु, मामु तक्य बुषोरासी ।
पूरव गनती एह, जन्म संयोध्या वासी ।।
मरपहि राषु हु सीपि कर, सस्टारद सीघउ तदा ।
गुनकीति इम उक्षरद, मुम्नवित लोक बन्दह सदा ।।१।।

व्यक्तिम भाग--

श्रीमुलसंध विश्वातगञ्च तरसुनिध बल्लाल । तिहि महि जिन चउनीन, ऐह सिक्षा मन जानत ।। पराय सह प्रसाद, उत्तंग मूलचन्द्र प्रधुजानी । साहिजिहां परिस्थाहि, राजु विलीपित मानी ।। सतरहमदृह सतीसरा, तदि प्रमाद चउदिस करना । प्रनार्शित इम उन्नर, मुसकत संघ जिनकर सरना ।

।। इति श्री चतुर्विसत्ततीर्थंकर खपैबा सम्पूर्ण ।।

१ के सीलरास कुएाकीर्त हिन्दी रचना सं० १७१३ २४०

४४१ = गुटका सं० २= — पत्रसंख्या— २२६। — मा० १०×७॥ दशा— जीर्ता।

विशेष— ३४ पृष्ठ तक बायुर्वर के मज्जे नुसले है।

१. प्रमादती करुर × हिन्दी कई रोगों का एक नुस्रका है।

२. नाडी परीक्रा × संस्कृत

करीव ७२ रोगों की विकित्सा का विस्तुत कर्शन है।

ų٤

३. धील कुंचर्सन रातों

х

हिन्दी

४. प्रष्ठ संस्था ५२ तक निस्न धवतारों के सामान्य रंगीन वित्र हैं जा प्रदर्शनी के योग्य हैं।

(१) रःमावतार (२) कृष्णावतार (३) परश्चरामावतार (४) मञ्ज्ञावतार (५) कञ्ज्ञावतार (६) बराहात्रतार (७) नृसिद्वानतार (६) कल्किम्बनतार (१) बुद्धानतार (१०) हंबग्रीवानतार तथा (११) पार्श्वनाथ चैत्यालय (पार्श्वनाथ की यूर्ति सहित)

५. धकुमावनी संस्कृत ६. पादाकिवली (दोव परीक्षा) × हिन्दी

44 जन्म कुण्डली विचार

७. प्रष्ठ ६८ पर भगे हुए व्यक्ति के वाजिस झाने का पत्र है।

मानतु ग ८, भक्तामस्स्तोष संस्कृत \$0 E. वैद्यमनोत्सव (भाषा) हिन्दी नवन स्ख 44-45 १०. राम विनाद (ग्रायुवेंद) द२-१८ X ११. सामुद्रिक शास्त्र (भाषा) х **EE-117**

लिपी कर्ता-पुक्षराम ब्रह्मास प्योसी १२. शोधवोध काशीनाथ संस्कृत १३. पूजा संबह × REX १४, बोगीरासं जिनदास हिन्दी 720 १४. तत्वार्यसूच उमा स्वामि संसकत 304 १६. कल्यासमिंदर (भाषा) **बनारसोदास** हिन्दी ₹\$• १७. रविवारत्रत कथा × 775 १८. वर्तीका ब्योरा ×

सन्त में ६४ वोगिनी शाबि के यंत्र है।

१४१६ गुटका सं० ३६ -- पत्र सं० ६४। मा० ६४६ इस । पूर्ण । दशा-सामान । विशेष-सामान्य पाठीं का संग्रह है।

१४४२ शुटका सं० ४०---पत्र सं० १०३ । बार द्याः ४ इश्च । आया---हिन्दी । ते० सं० १८६० पूर्वा । सामस्य युद्ध ।

विकोष-पूजाकों का संग्रह तथा प्रष्ट ८० से नरक स्वर्ग एवं पृथ्वी क्रादि का परिचय दिया हुवा है ।

१४२१ सुद्रका सं० ४१—पत्र संस्था—२५७ । या०—८×१। इक्कः । नेत्रन काल—संबत् १८७१ माह बुदी ७ । पूर्णः । दक्षा उत्तम ।

१. समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी रच • मं०	१६६३ ब्रासो.मु. १३ १-५१
२. मारिएक्यमाला	संग्रह कर्ता	हिन्दी संस्कृत	त प्राकृत सुभाषित ५२-१११
ग्र'यप्रश्लोसरी	ब्रह्म ज्ञानसागर '		
३. देवागमस्तोत्र	माचार्य समन्तभद्र	मंस्कृत	निषि संवन् १८६६
कृपारामसौगाएंगे ने कर	लि राजा के पठनार्थ हाडी	ती गांव में प्रति लि	र की । पृष्ठ - १११में ११ ५ ।
४. धनादिनिधनस्तोत्र	×	" লিবি	# 0 1= 5E 18X-115
५. परमानंदस्तोत्र	×	संस्कृत	११६-११७
६. सामायिकपाठ	श्रमितगति	"	??u-??=
७. पंडितमरस	×	"	111
म. वीवीसतीर्यकूर मक्ति	×	"	११ ६-२०
		लेखन सं०१	१७० बैमाल मुदी ३
१. तेरह काठिया	बनारसीदास	हिन्दी	१ २ ०
१०. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	१२३
११. पंचर्मगल	रूपचंद	हिन्दी	१ २३–१२=
१२. कल्यासमंदिर भाषा	बनारसीदास	"	१२ =−३०
१३. विवापहारस्तोत्र भाषा	ग्रचलकीति	79	१२ ०-३२
			रचना काल १७१४।
१४. भक्तामर स्तोत्र भावा	हेमराज	हिन्दी	x558
१४. वजनाभि वक्कवित्तकी भावना	मूधरदास	"	१व४-वद

perdut]	3		[4 0
१६. निर्वास काव्य मावा	मगवती दास	39	₹ ₹ -₹७
७ बीपास स्तुति	'×	हिन्दी	₹३७३=
८. तत्वार्वसूत्र	उमास्वामी	संस्कृत	\$ \$4-8X
१. सामाधिक बढ़ा	×	"	१४ ५-५२.
·. सबु सामाधिक	×	**	१४२-५३
१. एकीभावस्तोत्र भाषा	अगजीवन	हिन्दी	१ १३-१४
२. बाईस परिवह	भूषरदास	,,	8 K K. 8
३. जिनदर्शन	19	13	१५७ ५व
४. संबोधपंचासिका	चानतराय	"	१ ५≈ - ६ ०
थ. बीसतीर्वंकर की जकड़ी	×	"	१६०-६१
६. नेभिनाच मंगस	सास	हिन्दी	१ ६१ - १६
		र• सं०	१७४४ सावसा सु•
७. दान वावनी	वानतराय	39	? 4 0-0?
द. चेतनकर्म चरित्र	भैय्या भगवतीदास	***	. १७१-१८३
			र० १७३६ वेठ वदी
१. जिनसङ्खनाम	धासाधर	संस्कृत	₹ 47 ~ 48
•. भक्तामरस्तोत्र	मानतु य	»	?= e -e?
१. करवारामन्दिरस्तोत्र	कुपुरव न्त	संस्कृत	163-64
२. विचापहारस्तीत्र	धनक्षय	77	12 7-2 5
१. सिक्षप्रियस्त्रीम	देव मन्दि	,,	12 1-2 =
४. एकीमामस्तोष	, वादिराव		१६ =-२•
८. भूपानचीबीती	सूपास कवि	 #	₹00-₹0
६. वेबपूचा	. ×		Bapn
७. विरह्मान दुवा	•	~	7.4

		£	युरका-समह
	×	"	२०७२०=
११. सोसहकाररापूजा	×	11	२०६–२•६
्र ४०, वशक्तराणुजा	×	"	40E-63
्रिष्टे, रस्तत्रयपूजा ्रिष्ट, कसिकुण्डसपूजा	×	**	२१४-२२६
४३, चितामणि पार्श्वनाथपूजा	×	**	२२४-२६
४४, शांतिनायस्तोत्र	×	"	२२६
४४. पाद्यंनाथयूजा	×	" प्रपूर्ण	२२६२७
४६. बौशीस तीर्यक्टर स्तवन	देवनस्दि	"	₹₹ - ₹9
४७. मबग्रहगीभत पाहर्वनाथ स्तवन	×	"	430-Ro
४८. कलिकुण्डपार्श्वनायस्तोत्र	×	17	₹¥+-¥₹
		लेखन काल १८६३ म	घ सुदी ४
४६. परमानन्दस्तोत्र	×	33	585-83
५०. लघुजिनसहस्रनाम	×	77	5×3-×6
		लेखन काल १८७०	वैशाल मुदी ५
४१. सूक्तिमुक्तावलिस्तोत्र	×	"	२४६-४१
५२. जिनेन्द्रस्तोत्र	×	31	२४ २-४४
५३. बहसरकला पुरुष	×	हिन्दी गवा	२४७
ः १४४. चौसठ कला स्त्री	×	**	"
	_	-	

४४२ - गुटका संट ४२। पत्र मं० ३२६। प्रान् ७×४ इश्च। पूर्णा।

विशेय-इसमे भूधरदास ी का वर्चा समाधान है।

४४२६. शुटका सं० ४३ — पत्र सं० ५६ । झा० ६३×५३ दश्च । भाषा-संस्कृत । के० काल १७८७ कार्तिक युक्ता १३ । दुर्ख एवं युद्ध ।

विशोध---व पेरवासान्यये साह श्री जगरूप के पठनार्ट प्रहारक श्री देवचन्द्र ने प्रतिसिधि की थी। प्रति संस्कृत टोका सहित है। सामाधिक पाठ सार्थ का संग्रह है।

> ४४२४. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ६३ । झा० १०४४ इकाः माया-हिन्दी । पूर्ण । दक्षा जीर्रा । - विकोद--- चर्चामी का संग्रह है ।

४४२४ गुटका सं० ४४ । पत्र सं० १४० । बा॰ ६६×४ इस । पूर्त ।

१. वेबबास्वसुर पूजा	×	संस्कृत	१- ७
		· -	e-t•
२. कमलाष्ट्रक	×	19	
३. ग ुरूस्तु ति	×	n	40-55
४. सिद्धपूजा	x ,	,	१२-१ ६
५. कसिकुण्डस्तवन पूजा	×	17	14-12
६. षोडशकारसपूजा	×	**	११- २१
७. दशलक्षरमपूजा	×	91	२२-३३
८. नन्दीक्वरहूता	×	n	39-35
६. पं चमेर पूत्र।	भट्टारक महीचन्द्र	**	\$6-XX
१०. सम न्तचतुर्दशीपू न	"मेरुचन्द्र	11	4x-40
११. ऋषिमंडलपूता	गीतमस्वामी	n	20-68
१२. जिनसहस्रनाम	बाजाधर	99	£6-08
१३. महाभिषे क पाठ	×	**	43-40
१४. रत्नत्रयपूजाविधान	×	22	20-171
१५. ज्येष्ठजिनवरपूजा	×	हिन्दी	₹ २ ₹ - ₹X.
१६. क्षेत्रगम की धा रती	×	37	१ २६-२७
१७. गराधरक्लयमंत्र	×	संस्कृत	. १३५
१ व. भावित्यत्रारकथा	नादी चन्द्र	हिन्दी	** e -4*
१६. गीत	विद्याभूषरा	,,	111-11
२०. लचु सामाविक	, ×	संस्कृत	tty
२१. पद्मवतीस्द	४० महीचना	33	\$4x-£x0

अप्रदर् गुटका सं० ४६-- पत्र सं० ४६ । बा॰ ७३×१६ स्था मावा-क्रियो । पूर्व क्ष

१४९७. गुटका सं० ४७ । पत्र स० १४० । बा० प्र∕४ इच पूर्स । बहा—सामान्य ।

	- • · · · · · · · · · ·		
१. सूर्व के बस नाम	×	स म्कृत	t
१, बन्दी मोस स्तोत	×	,,	7-7
1. Najolala	×	,,	२-३
४. वा र्वक ेवपुरास	×	,,	A-#6
५, काली सहस्रनाम	×	**	५५-१३२
६. बुसिहपूजा	×	"	१३३-३५
७. देवीयूक्त	×	••	844-64
द, गंग- सहिता	×	स स्ट त	१९६-२३३
१. ज्यासामा लिनी स्तीत	×	,	49-3 5
१०. हरगोरी समाद	×	,	₹ ₹~७ ₹
११. नारावण कवन एव प्रष्टक	×	n	५७३−७६
१२. बामुण्डोपनिषद्	×	"	२७६-२८१
१३. पीठ पूजा	×	,,	457-50
१४. योजिनी कवल	×	"	455-34°
१४. धानंबसहरी स्तोत्र	शकराचार्य	17	\$88-8X

४४२८ गुटका न०४८ । पत्र स०---२२२ । मा०---६॥४५॥ ३८ पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. जिनवज्ञकल्प	प० भानाधर	स स्त्र त	१-१४ १
२ प्रशस्ति	ब्रह्म दामोदर	**	1 41-44

दोहा- ॐ नम सरस्वत्ये। प्रथ प्रशस्ति ।

श्रीमत सन्मतिवेद, नि कर्मात्म् वयवद्युवस् । अस्या प्रशास्य वयवेद्धः त्रवास्ति ता प्रशास्य । १ ।। स्माह्माविनी बाह्मी बह्मतत्य-प्रकाशिनी । सत्मिराराधिता वापि वर्षमा सत्यवकरी ।। २ ।। सिशानी वीतवाधीय सवारार्शकतारकात् । । व

मूनसंबे बनात्कारमत्ते सारस्वते शति । 👫 गन्छे विश्वपदण्ठाने वंखे वृदारकादिकिः ॥ ४ ॥ नंदिसंबोभवसत्र नंदितामरनायकः। कुंदकुंदार्वसंक्षोऽसी सुलयत्नाकरी सहस्र ॥ ॥ ॥ तत्पट्टक्रमतो जातः सर्वसिद्धप्रश्रमारवः हमीर-भूपसेम्बोर्य धर्मचंक्रो स्तीत्ववरः । १६॥ तत्पट्टी विश्वतत्त्वको नानाम् विकास्यः रत्नवयकृतान्यासी रत्वकीर्तरमून्युनिः ॥७॥ शकस्वामिसभामध्ये प्राप्तवानमातीस्तवः । सि प्रभावंद्री जगद्वं श्री परवादिमार्थकरः ना द ।। कवित्वे वापि वक्तृत्वे मेथावी शान्तसुक्रकः। पद्मनंदी जिताक्षीमूलस्पट्टी विशिवसम्बनः ॥ १ ॥ तन्त्रियोजनि भव्योषपूजिताहिक्षुद्धणीः धुतचंद्री महासायुः सायुक्तोककृतार्यकः ।। १०। त्रामाशिकः प्रमालेऽसूवरगमाध्यास्यविश्वादीः । नकारो नवारार्थको भूरकार्यकेन्द्रिः ॥ ११ ॥ मर्हरमस्तिततस्वार्णवादः पति निष्कापतिः । हतपेनेषुरम्तारिजिनचडी विचक्काः ॥ १२ ॥ बम्बूड्यांकिते बम्बूदीपे द्वीपमधानको । तनस्ति भारतं क्षेत्रं सर्वश्रीयकवप्रदं 11 53 11 मध्यदेशी मनराम सर्वदेशोसमोक्षमः षनपान्यसमामीर्शनासैदेवशिकायैः ।। १४ ।। नानानुबाष्ट्रसेमाति सर्वसन्बद्धांकरः मनीयतमहामोदः दाता दातुश्चमन्दितः ।। १८ ।। योदाव्योद्वास्त्रहातुर्गी वृर्वश्रुव्यः विदायरः। त्रवहासायपर्यं योपि विष्णृष्टविद्यायपुर्व 🔉 १५ ॥

स्वच्छपानीयसपूर्णे वापिक्पादिभिर्महर्त् । श्रीमद्वनहटानामहट्टब्यापारमूचितं ॥ १७ ॥ म्मईत्वैत्यालये रेजे जगदानंदकारक । विचित्रमठभदोहे विशाज्जनमुमंदिरो ॥ १८॥ स्तिष्टम् मजन्याधिपतिस्त्रम् प्रजापालो लसद्गुरग । कान्त्याचंद्रो विभात्येष नेजसापद्यवाधव ॥ १६ ॥ विष्यस्य पालको जातो दुष्टनिग्रहकारक । पचागमत्रविच्छूरो विद्याशास्त्रिविद्यारद ॥ २०॥ शौर्योदार्यग्रुगोपेतो राजनी तिविदावर । रामसिहो विभुधीमान् भ्रत्यवेन्द्रो महायशी ।। २१।। द्यासाद्वाराकवरम्तत्र जैनधर्मपरायरा । पात्रदानादर श्रेष्ठी हरिच द्वाग्रुरगाम्रसी ॥२२॥ श्रावकाचारसपन्ना दलाहारादिदानवा । शीलभूमिरभूलस्य गूजरित्रियवादिनी ॥२३॥ प्त्रस्तयोरभूत्साधुव्यक्ताहत्सुभक्तिकः । परापकरशाम्बातो जिनाचनक्रियाद्यतः ॥२४॥ 🗚 श्रीवकाचारतस्वज्ञो त्रुकारुव्यवारि घ । देल्हा साबु व्रताबारी राजदत्तप्रतिष्ठक ॥२/॥ स्य भाषा महासाध्वी शीलनीरतरिंगगी। प्रियेवद हिताबारावाली सीजन्यधारिएी।।२६॥ तया क्रमेशासजाती पुत्री लावण्यसन्दुरी। भगव्यपुष्यसस्यानी रामलक्ष्मग्राकाविद ।।२७।। M िनयज्ञीत्स्वानन्दकारिया व्रतधारिया । मर्हत्तीर्थमहायात्रासपक्कंप्रविधायिनौ ॥२८॥ रामसिहमहाभूपत्रधानपृथ्वी सुभी । समुद्ध् तिनागारी धर्मानाषुमहोत्तनी ।।२१।

तथ्यावरोधवद्वीरो नायकै ,सबन्तमाः । लाकप्रवास्यसत्कीर्ति धर्मसिहो हि धर्मभुत् ।। ३० ॥ तत्कामिनी बहस्रीलधारिएी शिवकारिस्ती। -टेव्री चन्द्रम्य बसती ज्यातस्त्रा पापध्वान्तापहारिखी ॥३१॥ 吸忆 बु नद्वयविशुद्धासीत् सथमत्तिमुन्यसा । धर्मानन्दितचेतस्का धर्मश्रीर्मतृ मास्तिका ।।३२।। पुत्रावाम्नान्तयोः स्वीयरूपनिजितसन्मयौ । लक्ष गाञ्च गाञ्ची योषिन्मानसब्द्वाची ।।३३।। महंदे वसुसिद्धान्तपुरभक्तिसमुद्धती । विद्वजनिवयी सीम्यी भोल्हाह्यपदार्थकी ॥३४॥ तुधारिक खीरसमानकीति कुटुस्वनिर्वाहकरी यशस्वी । प्रतापवान्धर्मधरो हि बीभान् सब्देलवासान्वयकज्ञानु ॥३४॥ भूपेन्द्रकार्याधकरो दयाळ्यो पूळ्यो पूर्गेन्द्रसकासमुखोबरिष्ठ । भव्छी विवेकाहितमानसाऽसी सुधीर्मन्दतुभूतनेऽस्मिन् ।।३६॥ हम्बद्धयं यस्य विनार्चन वैजैन बराबाम्युक्पकवे च । ह्रवक्षर बाहत्मक्षय वा करोतु राज्य पुरुषोत्तमीय ॥३०॥ तःत्राणुबक्षभाजाता जैनवतिवधाविनी । सती मतिहाका श्रेष्ठी दानीत्कष्ठा यशस्त्रिकी ।।३८।। चतुर्विधस्य संघस्य भक्त्युक्षासि मनीरथा । नैनभो: सुषावात्कव्योकोशाभोजसन्मुसी ।।३१।। हर्वमदे सहर्वात् द्वितीया तस्य बह्ममा । ान बानमानीन्सुबानन्दबर्खिताशेयवेतसः ॥४०॥ श्रीरामसिंहेन नुपेशा मान्यश्रतुविषश्रीवरसवत्रकः। प्रयोतितानेवपुरासाकोको नामू विवेकी चिरमेवजीयात् ॥४१॥ प्राह्मरवास्त्रीयवजीवरका बानेषु सर्वार्थकरेषु सायुः । करपद्गं मीमाचककाववेषुर्वाषुर्वसायुर्वस्तारपुरिष्यां ॥४२॥ 😘 सर्वेषु जास्त्रेषु परप्रशस्य जीवास्त्रवानंहृतवान्यमंत्रः ।
स्वर्गापवर्गेकवित्रृतिपात्रः समस्तासःवावित्रवात्रकः ।।४३।।
स्वर्गापवर्गेकवित्रृतिपात्रः समस्तासःवावित्रवात्रकः ।।४३।।
स्वरीति पुत्वा परमंत्रवार्षः व्यक्षीनिक्रान्तामुलमा प्रतिहा ।।४४।।
केळ्वा गुमावात प्रतिहातारपुत्तमः ।
स्वर्वायानेवरायापि वरावात्र जानहृतवः ।।४५।।
सम्याप्रवारात्रक्षयः सूनिपालक्षिरोमस् ।।४६।।
स्वर्वे मार्यो तित यक्षे सोमवारे हि सौध्यः ।
प्रतिहातार एवानी समातिमगमस्परा ।।४७।।
सर्वे स्क्रमाचीननकावरायी सव्यूवसमाक्ष्रुक्ष्युर्व्यायः ।
प्रयावतो बासनवेवता सा नाष्ट्र सुष्याषु विरमेव पानात् ।।४६।।
स्वर्वेवता सरं वेन प्रमास्मुद्वयारः।

ख

श्रोमत्सविज्ञवद्योत्य नायू साधु सनन्दतु ॥४६।।

।। इति प्रकारत्यावली ।।

३. कर्रापिशाचिनीमत्र	×	संस्कृत	\$XX
४. वडाराशातिकविधि	*	,	144
५. नक्प्रहस्थापनाविधि	×	,,	,,,
६. पूजाकी सामग्री की गूची	×	हिन्दी	*** ***-**
७. समाधिमरसा	×	संस्कृत	\$ \$ 0-\$¥
= कमग्रविधि	*	"	x3-fe\$
२. मैरवा ष्टक	×	79	785
१०. भक्तामरस्तोत्र मंत्रसहित	×	**	१ ६ ५-२१४
११. बमोकारपचासिका पूजा	×	"	21=

४४२६ गुटका सं० ४६--पंत्र सं०-५६ । 'प्रा०-४८४ इस । 'प्रेकन काल स०--१६२४ पूर्ता। वसा-सामान्य।

गुरंका-संबंध]

[484

१. संबोयबलीसी	भानकवि	हिन्दी	१-२४
२. फुटकर रचनाएं	×	99	२६-५६

४५३० शुद्धा सं० ४०। पत्र सं० ७४। घा० ८४५ इक्ष । ने० कान १८६८ मगसर सुदी १४। पूर्ण । विशेष---मगाराम वैद्य ने सिरोज में ब्रह्मजी संतमागर के पठनार्थ प्रतिकिप नी थी।

१. राषुल पत्रीसी	विनोदीलाल लालचंद	हिन्दी	१− ¥
२. वेतनवरित्र	भैवाभगवतीदाम	n	€-२६
३. नेमीश्वरराज्यविवाद	वद्यज्ञानसायर	-	₹0-3?

नेमीध्बर राबुल को भगडी लिख्यते ।

चादि भाग-राजुल उवाय-

भोग प्रनापम क्षोडी करी तुम योग लियो मो नहामन ठाएो। । संग विचित्र तुमाई सनोपम सुदर नारि को समान सम्मू॥ सुक्त ततु सुक्त क्षोडि प्रतक्ष काहा दुव देवत हो प्रनत्रानु। राखुल पूक्त नेनि कुंबर कुंबोग विचार काहा गन प्रानु॥ १॥

नेमीश्वर उवाच

मुन रिमित मुठन जान जानत हो सब मोग तन जोर वर्ट है। पाप बढ़े सदक्तर्भ सके परमारच की सब पेट फटेहैं। इंदिय को कुच किचित्काल ही मास्तिर दुख ही दुख रटेहैं। नेमि कुंबर कहे सुनि राखुल योग बिना नहिं कम्म कटेहैं।। २।।

मध्य भाग-राषुलोवाय--

कार निरसार तथि बरबार असे बतथार विश्वीक गोसाई।
पूप समूच बनायन थार "सुबाट सहो छूड़ कार्ड के तोूई।। ३।
पूस-पियान यनेक परिसह पावन हो कसु सिर्द्यन आई।
राजुल नार कहे सुविधार चु नेनि कुंबार मुग्न नन ताई। १७।।

नेमीरवरोबाच

काहे को बहुत करो तुम स्वापनप वेक सुनो उपवेस हमारो । कोवहि बोग किये वब हुवस काव न वेक सरे वु तुम्हारो ।।



नानव जन्म बड़ी जगनान के कांत्र विता मतु कूप में डारो । नैमो कहें सुन राजुन तूसव मोह ताँजे । नैप्रो कांत्र सवारो ।। १० ।। कांगिसक साम —राजुलोवाय —

> आपक धर्म्म क्रिया गुभ नेपन शाघ कि संगत वेग नुनाह। भोग तनि नन गुप करि जिन नेम तछी जब संगत पाद। भेद धनेक करी टहता जिन माशा की सब बात मुनाई। कोच करी मन माब धरी करी राष्ट्रल नार मई तब बाई।। ३१।।

444-

मार्थि रचन्ता थिवेक सबल गुनती समभायो । नेमिनाय रुढ चित्त सबहु राखुत कुसमाभायो ॥ राजमति अवोध के नुष भाव संयम लीयो ॥ बहु। ज्ञानसागर कहे बाद नेमि राखुल कीयो ॥ ३२॥

।। इति नेमीववर राजुल विवाद संपूर्णम् ।।

४. श्रष्टाह्मकावत कथा	विनयकीर्ति	हिन्दी	39-31
५. पार्वनाथस्तीत्र	पद्मप्रभदिव	संस्कृत	31
६. शातिनाथस्तोत्र	मुनिद्धर ाश्रद	,	
७, वर्धमानस्तोत्र	×	"	**
 चितामित्यपाद्यं नायस्तात्र 	×		
६. निर्वासकाण्ड भाषा	भगवतीदास	" हिन्दी	\$10
१०. भावनास्तोत्र	वानतराय	,	₹⊊
११. युरुविनती	मुधरदा स	77	3.6
१२. ज्ञानपद्मीसी	बनारसी दास	*	٧٠
१३. प्रभाती ग्रजस्पमंत्र ग्रवे	×	n	46-8 5
१४. मो गरीब कूं साहब तारोजी		27	*4
१४. घन तेरो मूल देखु	गुलाबिकवान	,,	"
१६. प्रात हुवो सुमर देव	टोक्र	99	¥¥
र क्यात द्वेता सुम्द देवे	भूषरदास	11	Yŧ

गुरंका-संबद			[49 %
१७. ऋषमजिनन्दजुहार केशरियो	भानुकीति '	हिन्द	t va
१८. कर बराधना तेरी	नवस	*	*
१६. भूल भ्रमारा केई भने	×	77	₹ €.
२०. भीपालदर्शन	×	**	, Ye
२१. भक्तामर भाषा	×	31	¥द≟४२
२२. सांवरिया तेरे बार बार वारि जाऊं	जगतराम	,,	. १२
२३. तेरे दरबार स्वामी इन्द्र दो सड़े है	×	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	धव
२४. जिनजी यांकी सूरत मनड़ो मोह्यो	बहाकपूर	**	99 '
२४. पार्खनाथ तोच	वानतराय	77	, યત્ર
२६. त्रिभुवन गुरु स्वामी	जिनदास	77	र॰ सं॰ १७४४, ५४
२७. बहो जगत्गुर देव	मूचरदास	77	યુદ્
२८. चितामिण स्वामी साचा साहब मेरा	बनारसीदास	**	४६–१७
२१. बन्धारमभिद्यस्तीत्र	कुमुद	11	* 10-40
३०. कलियुग की बिनती	बहादेव		\$1-63
३१. वीलवत कं भेद	×	я	43-44
३२. पदसंग्रह	गंगार्गम वैद्य	77	ξ 4- ξ α

अधरेर. गुटका सं० ४२। पत्र सं० १०६। सा॰ ०४६ इंब। विषय-संग्रह। ले॰ काल १७६६ फामण मुरी ४ मंगनतार। पूर्ती। दक्षा-साथान्य।

विशेष-सवाई जबपुर में लिपि की गई थी।

₹.	भावनाता रसंग्रह	चामुच्डराय	संस्कृत	?-e•
₹	मक्ताबरस्तोत्र हिग्वी टीका सहित	×	,, सं०१८०	* 64-6*

१:६२. गुटकासं० ४१ कः। पण सं० १४२ । बा० ०४६ इंच । ले० काम १७६६ सम्ब दुवी २ । पूर्ण । क्या-नामान्य ।

श्रद्धः विशेष--- किशनसिंह कृत क्रियाकीश नावा है।

प्रभावे श्रीष्टका संक प्रत । यस संक १६४१म् वन ६६ । बाक वरण देखा ।

कियोष —सीन अपूर्ण बुटकों का मिश्रण है।

name and all di Real	41 14261 6 1		
१. पडिकम्मणसून	×	সাকু র	
२. पश्चकारा	×	39	
६. बन्दे सू सूत्र	×	11	
४. चंत्रस् पपार्श्वनास्तवन (बृहत्)	मुनिग्रभयदेव	पुरानी हिन्दी	
४. ध जितवांतिस्तवन	×	**	
Ę. "	×	n	
७, वयहरस्तोत्र	×	"	
ः, सर्वारिष्ट निवारसस्तोत्र	जिनदत्तमूरि	n	
१. ग्रुरुपारतंत्र एवं समस्म रण	,,	n	
१०, भक्तामरस्तोत्र	ब्राचार्यमानतु म	सस्कृत	
११. कस्वाणमन्दिरस्तोत्र	कुरुवनद	"	
१२. घांतिस्तवन	देवसूरि	19	
१३. सर्ताचिजनस्तवन	×	प्राकृत	
लिपि संवत् १७५० श ासोज मुदं	ा४ को सीमान्य हर्ष [्]	ने प्रतिलिपि की थी।	
१४. जीवविचार	श्रीमानदेवसूरि	প্রাকৃ শ	
१५, नवतस्वविचार	×	Ħ	
१६. श्रजितवांतिस्तवन	मेरू नन्द न	पुरानी हिन्दा	
१७. सीमंधरस्वामीस्तवन	×	n .	
१८. शीतलनायस्तवन	समयसुन्दर गिए।	राजस्थानी	
१६. यंत्ररापार्श्वनायस्तवन लघु	×	, *	
₹0. 37	×	n	
रंश. बेर्विकायस्तर्वन	समयसुन्दर	77	
२२. चतुर्विश्चति जिनस्तवन	जयसागर	हिन्दी	
२३. चौबीसजिन मात पिता नामस्तवन	पा नन्दसूरि	» रचना० मं ० १४	(
२४. फलबची पार्खनायस्तवन	समयसुन्दरगरित	राजस्थानी	

[टका-संबद]		ि ११७
. पा र्वनायस्तव न	समयसुन्दरवस्ति	राज्ञलानी
₹€. "	n	,
२७. बौड़ीपादर्वनायस्तवन	n	,,
₹≅. "	जोधराज	11
२९. वितामगिषार्थनाथस्तवन	लाम र्थंद	n ·
३०. तीर्षमालास्तवन	ते ज राम	हिन्दी
₹t. "	समयसुन्दर	n
३२. बीसविरहमानजकड़ी	,	**
२३. नेमिराजमतीरास	रत्नपुक्ति	•
३४. गौतगस्वाभीरास	×	n
३५. बुढिरास	शानिभद्र द्वारा संकलित	n
३६, शीनरास	विजय देवसूरि	"
	जोघराज	ने सीविशी की भार्या के पठनार्घ लिसा।
३७. साधुवंदना	धानंद सूरि	n
३८. दानतपशीनसंबाद	समयपुन्दर	राजस्थानी
१९. माषाडमूतियौडालिया	कनकसोम	हिन्दी
	र० काल १६३८।	तिपि काल सं० १७५० कॉलिक बुदी ५।
४०, बाइकुमार बमाल	99	77
	रचना संब	त् १६४४ । धमरसर में रचना हुई वी ।
४१. नेषकुमार चौड़ालिया	77	हिन्दी
४२. समासतीसी	समयसुन्दर	n
	' লিখি	वित् १७४० कातिक सुदी १३ । सवर्यमा बाद
४३. कर्मक्तीची	राजसमुद	हिन्दी
ं ४४. बारहवायमा	वयसोमगरित	,,
४४, वदावतीरानीसारावना	समयसुन्दर	" "
∮	- '	•

43 2 48 3 10 48 3		िगुरका-संगर
५७. नैमिजिनस्तवन	जोषराज मुनि	हिन्दी
४४. मधीपाइनंनायस्तवन	"	4
४६. पश्चमस्यागमञ्जूति	×	प्राकृत
१०. पंचनी स्तुति	×	संसकत
११. संगीतबन्बपार्श्वजिनस्तुति	×	हिन्दी -
१२. जिनस्तु ति	×	" सिपि सं• १७५•
१३. नवकारमहिमास्तवन	जिनवह्मभसूरि	7
१४. नवकारसञ्काय	पद्मराजगिता	"
14 ,,	बु राप्रभसूरि	"
१६. गौतमस्वामिसज्भाय	 समयशुःदर	
to. "	×	"
४८. जिनवस्तुर्योत	सुन्दरमस्सि	"
११. जिनकुत्तलसूरि चौ ३ई	जयसामर उपाध्याध	19 31
		र• संवत् १४०१
६०. जिनकुग्रससूरिस्तवन	×	"
६१. नेनिन्रासुलकार्द्धमासा	भानन्दसूरि	n र• सं• १६८६
६२. नेमिराकुल गीत	युवनकी ति	"
₹₹. "	जिनह र्व जूरि	 "
ξ¥. »	×	"
६५. यूलिभद्र गीत	×	"
६६. बिमराजिव सङ्ग्राम	समयसुन्दर	" "
६७. सम्बाद	,	"
६०. भरहनासण्याय	,,	
६१. मेचकुमारसञ्कास	 7	7
७०. बनाचीमुनिसन्भाव	,	

×

७१. सीवाजीरी सञ्जाब

७२. बेसना री सण्काव ७१. भातमशिका υŧ. ७१. स्वार्थवीती **मुनिचीसार** ८०, शत्रु जववास रावसमुद्र < र. सोलह सतियों के नाम **८२. बलदेव महामृति सम्भाव** < ३. श्रेरिकराजास**ण्या**व **८४. बहुबलि** < थ. शांतिमद्र महामुनि " ८६. वंबरावाडी स्तवन ८७. सनुज्ञयस्तवन राजसमूद ८८, राखपुर का स्तवन **८१. गीतमपुर्व्हा** ६०. नेनिराजयति का चीमासिया × **११. स्पृतिभद्र सरकाय १२. क्यंश्रती**सी

८३. प्रथमतीवी **८४. गौडीपार्स्यगायसम्** **१**८. बीनएकावची स्तवन

समयसन्दर

हिन्दी

रवना सं० १६८१। जैसलमेर में रवी गई। लिपि सं० १७५१।

४४३४. गुरुका सं० ४३। पत्र सं० २६६। सा० ६२×४३ इत्र । लेसनकाल १७७५ । पूर्ण ।

वसा-सामान्य ।

निस्म सुमरक हिरदै घर

१. राजाचन्द्रग्रुप्त की चौपई	बहारायनझ	हिन्दी
२. निर्वाताकाण्ड भाषा	मैया मगवतीदास	"
वद		
 प्रमुजी जो तुम तारक नाम घरायो 	हर्षच-द्र	,,
४. बाज नानि के द्वार भीर	हरिसि ह	
थ. तुम सेवामें जाय सो ही सफल घरी	दलाराम	
६. चरन कमन उठि प्रात देस मैं	n	
७. सोही सन्त शिरोमनि जिनवर गुन	गावे "	 n
 मंगल झारती कीजै भोर 	,,	,,
 आरती कीजै की नेमकंवरकी 	"	,,
१० बंदों दिगम्बर गुरु चरन जग तरन	 भूषरदास	 m
तारन बान	-	,,
११. त्रिबुबन स्वामीजी कस्सा निधि नार	तिजी 🥠	,,
१२. बाजा बजिया गहरा जहां बन्म्या हो	,	,,
ऋषम कुमार		
१३. नेम कंबरजी ये सजि आया	साईदास	,,
१४. मट्टारक महेन्द्रकीतियी की जकड़ी	महेन्द्र कीर्य	59
१५. बह्रो जगलुङ जनपति परमानंद निष	ान सूबरदास	n
१६. वेस्या दुनिया के बीच वे कोई		*
मजब तमासा		
१७. विनती-वंदों भी झरहंतदेव सारद	,	,,

		£ 445
्रेराजमती बीनवे नेमजी सबी	विश्वमूचसा	•् श्रृत्वी
तुन क्यों बढ़ा गिरनारि (विनसी)		
े १६. नेमीक्वररास	बहा रायमझ	» र॰ कास सं॰ १६१५ लिपिकार दवाराम सोसी
२०. चन्द्रगुप्त के सोसह स्वप्नों का फल	×	भ
२१, निर्वाशकाष्ट्र	×	গদুৰ
२२. बीबीस तीर्थकुर परिचय	×	हिन्दी
२३, पांच परवीवत को कवा	वेखीदास	» नेवन संबद् १७७५
२४. पद	बनारसीदास	2
२५. मुनिस्वरों की जयमाल	×	
२६. घारती	वानवराव	
२७. नेमिश्वर का गीत	नेमिचन्द	.
२८. विनति-(बंबहु जी जिनराय मनवज काव करोजी)	कनककीर्ति	•
२१. जिन मिक्त पद	हर्वकी ति	7
 शस्त्री रो नीत (प्रास्तीका रेनू कांई सोनै रैन चित्त) 	×	•
३१. जनवी (रियम जिनेस्वर बंदस्यी)	वेवेन्द्रकीति	_
३२. बीव संबोधन गीत (होजीव	×	*
नव मास रह्यो वर्ज बासा)		•
३३. बुद्दरि (नैनि नवीना नाव वां परि वारी म्हारालाल)	×	n
३४. मोरड़ो (म्हारो र मन बोरड़ा पूतो उठि पिरनारि बाद रै)	×	*
्रः देशः नटोइ (तु तोषिन भवि विकास न साम नटोई नारव सूनी रे)	· ×	(ignal)
े ३६. वंचन वृति की बैलि	र्वकीति	n To de Man

ATT 8. 1/4. 0		
M j		r descri ti
वेक, करम हिण्डोसखा	×	ि युव ्या सम ्ब हिन्दी
वैष- पद-(ज्ञान सरोवर माहि मूलै रे	हंसा) सुरेन्द्रकीसि	•
वर्ट: पेर्व-(वॉर्वीसॉ तीर्यंकर करो वॉर्व वर्षन)	नेमिचंद	19 79
४०. करमां की गति न्यारी हो	वहानाषु	
४१. झारती (करों नामि कंवरजी की मारती)	नालबद	31
इं रे. मारती	चानतराय	_
४३. पद−(जीवड़ा पूजो श्री पारस जिनेन्द्र रे)	"	99 99
४४. गीत (डोरी वे लगावीं हो नेमजी का नाम स्वो)	पांड़े नाबूराम	"
४४. चुहरि-(यो ससार मनादि को सोह बाव बच्चो री लो)	ही नेमि चन्द	29
४६. खहरि-(नेमि कुंबर ब्याहन बढयो राखुल करें इ सिनार)	"	17
४७. जोगोरासो	पांडे जिनदास	
४ म. कलियुगकी कथा	केशव	श ४४ कडा। शुरु मृं० १७७६ अ
४१. राजुलपचीसी १०. ब्रष्टान्हिका वत कथा	लालबन्द विनोदीसाल	,
पर. मुनिश्वरों की जयमाल	» ब्रह्मजिनदास	." हिन्दी
१२. कस्यासामन्दिरस्तोत्रभाषा	न्त्याजनदास बनारसीदाम	,
४३. तीर्थ क्ट र जकड़ी	हर्षकीति	n .
१४. जनत में सी देवन की देव	बनारसीदास	77
११. हम बैठे घपने नीन से १६. क्वेंस बंजीवीं जीवको पुरु ज्ञान बतावे	,,))))
ः पर जनाया जानका श्रुष्ट सीन बतावे	"	The second

្ន ស្វារ មេនក្រ				[\$ 44
शुरका-संगर 🚶	*			१ करन
५७. रंग बनाने की विवि	×		निहर्नी	,
५ व. स्कुट बोहे	,,		"	
५९. ग्रुसुवेशि (बन्दन बाला गीत)	,		11	,
६०. श्रीपालस्तवन	**		19	
६१. तीन नियां की जकड़ी	धनराज	•	*19	
६२. सुसवड़ी	**		÷	
६३. सनका बीनती (बारहसदी)	**	3	÷99	
६४. बठारह नाते कीकवा	सोहट		'99	
६५, प्रठारह नाता का न्योरा	×		***	•
६६. श्रादित्यवार कया	×		'99	64.4 ga
६७. धर्मरासो	×		77	
६८. पद-देखो माई ग्राजि रिषम वरि ग्रावे	×		÷	
६१. क्षेत्रपालगीत	যুসৰদা		"	
७०. गुरुघों की स्तुति	_		संस्कृत	
७१. सुनाचित परा	×		गह िन्दी	:
७२. पार्श्वनायपूजा	×		,,	
७३. पद-उठो तेरो मुख देखूं मानिजी के न	न्द टोडर		,,	
७४. जगत में सो देवन को देव	बनारसीदास		39	
७६, दुविधाकव जइ या मन की	×		19	
७६ इह चेतन की सब सुधि गई	वनारसीदास		10	
७७. नेमीसुरजी को जनम हुवी	×			
७८. बीबीस तीर्वकुरों के विश्व	×		**	
क ७१. दोहासंब्रह	नानियनास		,	
u>, प्रामिक वर्षा	×			
			."	
बहुद्ध पूरि गयो जग नेती	भतश्याम	C.	**	· N 4
मेर. देशो माद बाज दिवन घर बाद	×		*	
Same and the second		* .		

चानतराय

सुमरन ही में त्यारे

१०८. पार्वनाय के दर्शन

बृन्दावन

हिन्दी र०सं०१७६६

१०१. प्रमुजी में तुम बरलवारल गह्यो

बाल बन्द

४४**६४. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ६६ । धा० ६**४६ **६॥ । ध**पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विजेप—स्त गुरुके में शुद्ध ६४ तक पण्डिताचार्य धर्मदेव विरोचित महाधातिक पूजा विचान है। ६५ से ६१ तक सन्य प्रतिष्ठा सन्वन्धी पूजाएं एवं विधान हैं। पत्र ६२ पर सपक्रांत में चौबीस तीर्यक्कर स्तृति है। यत्र ६५ पर राजस्थानी भाषा में 'रे सन रामि रहु चरशाजिनन्द' नामक एक बढ़ा ही सुन्दर पर है जो नीचे उज्जूत किया जाता है।

रे मन रमिरहु चरण जिनन्द । रे मन रमिरहु चरणजिनन्द ।।ढाल।। जह पठावहि तिहुक्सा इदं ॥ रै मन • ॥ 💍 🐔 यह संसार बसार मुले चित्रु कर जिब बम्मु दवालं। परग्य तच्छ पुराहि परमेट्विह सुमरीह बप्पु पुरालं ।। रे मन ।। रे ।। भीउ बजीउ दुविहु पुरापु बासब बन्धु मुखहि बउमेयं । संवर निजर मोसु वियासाहि पुष्पापीय सुविसोयं ॥ रे मन० ॥ १ ॥ जीउ दुमेउ मुक्त संसारी मुक्त सिद्ध सुविवाली। वसु गुरा जुल कलक्कु विविद्धि भासिये केवलए। ऐ ।। रे मन० ।। ३ ।। वे संसारि ममहि जिय संबुत लक्ष जोरिए चउरासी । थावर वियलिदिय सर्वालिदिय. ते पुणाल सहवासी ॥ रे मन० ॥ ४ ॥ पंच मजीव पढर्ममु तहि पुमासु, धम्मु सधम्मु सामासं । कालु प्रकार पंच कापासी, ऐक्छह राज्य प्रवास ।। रे सन ।। १ ॥ अग भासत दुविह बम्बभावहं, पूत्यु पंच पवार जिल्लूसं । मिन्छा विरव पनाय कसायहं कोयह बीच प्रमुन् ।। रे मन० ।। ६ ॥ कि बारि पवार बन्यु पविवृद्ध दिवे वह अस्तुवाब पश्चते । क्रि जीना पवित प्रमुखिंदावागु वाव कताव विशेश ।। रे सन् ।। ७ ।। मूह परितामे होइ सुहासन, बसुहि प्रसुह निवासी ! पुड् परिलामु करह हो मविसह, विम सुद्ध होय निवाली ॥ रै वन० ॥ य ॥

Barto Barton Barton Barton Commence

संबद करहि जीव जग सुन्दर प्राप्तव दार निरोहे ।

प्रव्ह तिव सबु थापु नियारणु , सोहं सोहं सोहं ।। रे मन० ।। रे ।।

रिग्रनर जरह निर्मातह कारणु, जिय जिएनवरण संजाते ।

वारह विह तव वनविह संजयु, पंच महावय पाते ।। रे मन० ।। रे० ।।

वारित विह तव वनविह संजयु, पंच महावय पाते ।। रे मन० ।। रे० ।।

वारित विह तव वनविह संजयु, पंच महावय पाते ।। रे मन० ।। रे० ।।

वारित विह तव वनविह संजयु, पंच महावय पाते ।। रे मन० ।। रे१ ।।

वारित विह तव विह पुरे, इंग्लिश हैन्यह वारो ।। रे मन० ।। रे१ ।।

24

जिसावर सासरापु तब्बु पयासरापु, सो हिय बुद थिर धारइ ।। रे मन**ः** ।। १२ ।।

४४३६ गुटकासं०४४ । पत्र सं०२४० । झा०६×६५ इक्का आया-हिन्दी संस्कृत । ते० काल १०१६ वटा

विशेष-पूजा पाठ एव स्तीत्र झादि का संग्रह है !

४४२७. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० ११० । झा० ६६ ४४३ इका। पूर्णएवं जीर्रा। प्रधिकांश गठ मधुब है। लिपि विक्वत है।

विशेष-इसमें निम्न पाठों का संग्रह है।

१. कर्मनोकर्म वर्शन	×	সাকৃত	3-X
२. ग्याग्ह मग एवं चौदह पूर्वों का विवररण	×	हि न्दी	६-१ २
३. श्वेताम्बरो के ८४ बाद	×	"	१२-१३
४ संहनन नाम	×	**	₹\$
 सघोत्रांति कथन 	×	99	\$ X

उन नमः थी पार्वनाय काले बुद्धकीतिना एकाला निष्यात्वकीद स्वादित ।। १ ।।
संवत् १३६ वर्षे भद्रवादृत्तित्वेत्। जिनक्ते ता संस्विमन्द्रात्वं स्वेतपटमतं स्वापितं ।। २ ।।
स्री वीतततीयं द्वरकाले इसिरकस्वावार्भपुत्रेशः पच्चतिन विषयीतमतं विष्यात्व स्वापितं ।। ३ ।।
सर्वेतीयं द्वरत्यां काले दिन्यमिन्द्यात्वं ।। ४ ।।
स्रीयात्वंनावगिति विच्येत् सन्तां द्वर्षुतंनासायनिष्यात्वं थी सहस्वीद काले स्वापितं ।।
स्रीयात्वंनावगिति विच्येत् सन्तां द्वर्षुतंनासायनिष्यात्वं थी सहस्वीद काले स्वापितं ।।
स्रीयात्वंनावगिति विच्येत् प्रसादिक्ष्यंत्वात्वात्वित्वा व स्वापितं । ए ।।

च्या चदु: संपोरातिः कव्यते । श्रीभववाकृषिण्येशः श्रीभृतसंपर्धातेन धर्वतन्त्रितिपृतिष्ठताचाविकाःकावार्षेविः नामचय बारकेशः श्रीष्ठताचार्येशः निर्दसंषः, सिहमंषः, सेनसंषः, देवसंधः इति चरवारः संचाः स्वापिताः । तेम्यो वचाकमं वसारकारपश्चारयो गर्गाः सरस्वरावयो गर्धाश्च जातानि तेषां प्रावस्थापिषु कर्म्यम् कोपि वेदोस्ति ।। व ।।

संबत् २५३ वर्षे विनयभेनस्य किच्येगा सन्यासभंगयुक्ते न कुमारसेनेन दारुसंघ स्वापितं ॥ ६ ॥

संबत् १५६ वर्षे मध्यपतप्रकृत्यदयेन रामसेनेन विःपिष्कक्ष्यं स्थापितं ॥ १० ॥ संबत् १८०० वर्षे मधीते वीरवन्तपुत्रैः सकावात् मिक्सचीत्पत्ति भविष्यति ॥ एम्पोनन्येवापुरर्गतः पंत्रमकालावसाने सर्वेवामेशो ॥

गृहस्थानां शिष्यामां विनाशो अविष्यत्येक जिनमतं कियरकानं स्थाप्यतीतिक्रेयमिति वर्शनसारे सक्तं ॥

६. गुरहस्यान वर्गा	×	प्राकृत	₹ % —₹•
७. बिमान्तर	वीरचंद्र	हिन्दी	२१−२३ `
 सामुद्रिक शास्त्र भाषा 	×	"	78-70
६, स्वर्धनरक वर्शन	×	"	47-30
१०. यति बाहार का ४६ दोष	×	,	₹₩
११ लोक वर्शान	×	"	\$4 - 24
१२. बउबीस ठाए। बर्बा	×	,,	#4-c6
१३. सम्बद्धिट पाठ संबह	×	"	E=-{X+

४४३= गुरुका सं० ४७---पत्र सं० ४-१२१ । घा० ६×६ इ**व । धपू**र्ण । दशा-जीर्ण ।

१. त्रिकालदेववंदना	×	मंस्कृत	%- {?
२. सिडमिक्त	×	"	85-68
 मंडीश्वराविभक्ति 	×	प्राकृत	₹¥ - ₹₹
४. बौतीस प्रतिशय भक्ति	×	संस्कृत	१६-१६
१. श्रुतज्ञान भक्ति	×	n	१६-२१
६. वर्शन अक्ति	' ×	n	२१- २२
ें ७, ज्ञान मक्ति	×	"	२२
ंद. परित्र मक्ति	×	संसक्त	२२-१४
१. धनागार मस्ति	· ×	•	२४-२ ६

Land of the good of market to

444]			[गुटका-समह
१०. योग मस्ति	×	,,	₹4-7=
११. निर्वाताकाण्य	×	प्रा≴त	₹==३०
१२. वृह्यस्वयंत्र् स्तोत्र	समन्तभद्राच र्थ	संस्कृत	\$0-85
१३. प्ररावली (समु बाचार्य भक्ति)	×	**	46-44
१४. चतुर्विश्चति तीर्यक र स्तुति	×	**	44-4£
१४. स्तोत्र सम्रह	×	**	¥4-¥•
१६. भावना बतीसी	×	"	४१-४२
१७, बाराधनासार	देवमेन	प्राकृत	¥3-€0
१८. संबोधपचासिका	×	,,	६१-६ =
१६. द्रव्यसंग्रह	नेमिच द	*7	६ =-७१
२०. भवतामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	७१-७५
२१. ढाडसी गाया	×	,,	4 ¥- 5 ₹
२२. परमानंद स्तोत्र	×	13	द ३- ५४
२३. झर्गस्तमिति संधि	हरिज्यन्द	সাকু ন	#X~ #E
२४. भूतडीरास	विनय क द	**	£ • - E ¥
२५. समाधिमरल	×	" स्राप्त'श	£4-46
२६, निर्मारपंचमी विधान	यक्तिवनयचन्द्र	,,	€€-१°¥
२७. सुष्ययदीहा	×	"	₹0 4 —₹₹0
२८, द्वादशानुप्रेका	×	"	110-112
₹€. "	अल्ह्स	"	117-11v
३० योगि वर्षा	महात्मा ज्ञानचंद	,,	114-116
४४३६. गुटका सं० ४ विशेष-गुटका प्राचीन है	८⊏ । पत्र सं०१३ – ४१ । झा० [।] है।		
१. जिनरात्रिविधानकथा	नरसेन	अप्रसंश	अपूर्ण १३-२ .
चन्तिम भाग कतिय किन्ह चट	इसि रत्तिहि, गउ सम्मद्द जिलु		

77. 13.

> कत्तिय किन्ह चउहसि रतिहि, गउ सम्मद्द जिलु पंत्रम छतिहि। इय सम्बन्धु कहिउ सयलागलो, जिनरति हि फुलु अवियह मंगलो ।

सवविष कोराप्ति करेसह, तो मरद्भवरत सहेसह।

सारत मुत्र महिरासि कु'लेसह, रह समाशा कुल जित्तरमेसह।।

पुणु सोहाम सम्मी जाएसह, सह कीलेसह शिष्ठ मुकुमालिहि।

सम्प्रसुखु कु जिबि जाएसह, सिकपुरि बानु सोवि पासेसह।

इय जिलाप्ति विहानु वयोसित, नहिज्यासार्याच्या गणहरि भासित।

के होशाहित काहिम कुलज, तं बुहारण मठु समझ शिष्ठात ।

पहु सस्यु जो लिहह सिहासह, पहड पहानद कहह कहासह।

जो नर नारि एहमशि शासह, कुण्याह सहित्र पुण्य फलु रामह।

धत्ता—

सिरि एरसेग्रह सामित्र, सिकपुरि गामित्र, बब्दमाख तित्यकर । जद मागित्र देद करण करेद वेद मुबोहि साह परमेसर ॥ २७ ॥ इय सिरि बद्दमाखक्रासुराखे विधादिभवमाचावण्याची जिल्लाहित्स्वरूपले ॥ विरि एरसेख विरद्दप कुमक्यासण्डलाखिमिती पदम परिकेह सम्मतो ।

।। इति जिरारात्रि विधान कथा समाप्ता ।।

·. रोहिशिविधान

मुश्चिषुराभद्र

भपश्रं श

प्रारम्भिक भाग--

वासवनुवपायहो हरिपविचायहो निक्विय कामहो प्यवुष्ट ।
सिवयमाशहायहो केवलकायहो रिसहहो पर्णाविव कमकमञ्ज
परमेट्टि पथ पर्णाविव सहंत, मबजनाह पोय विहिष्य कमंत ।
सारभ सारत सिंख जोह्न जेन, रिणम्बन वरिण्डक केरणकेम ।
जिहि गोयनए विशिष्य वरस्त, सेखिय रायस्त असोहरस्त ।
तिह रोहिशी वय कह कहींय अन्य, जह सितिश वारिय पावश्यम ।
दव वंद्रवीय हो भरद केसि, कुंच जंगल ए सिवि गए वशीत ।
हिष्यागढ पुरत्य पद्मरिद्ध जग्नु बबह जिल्नु सह सब सिंबड ।
तिह यीववीज गयसीज सुंद, विज्ञु पहरद रह हियव सुत्र ।
तिह यीववीज गयसीज सुंद, विज्ञु पहरद रह हियव सुत्र ।
तिह यीववीज गयसीज सुंद, विज्ञु पहरद रह हियव सुत्र ।
तिह यीववीज गयसीज सुंद, विज्ञु पहरद रह हियव सुत्र ।

बह संग विसद जरण कुलह विसए संपादिर वस्त्र प्रस्ताह विस्तर ।
मुद्द स्थानिसी उस्ताहबंदु, सिरिम्गद विस्तर्गक दिन कमन्तु ।
सुय सङ्घ तासु प्रिर जिस्स तासु, रोहिस्सी कम्म्यासं कामपासु ।
कस्तिय सङ्घाहिक सोपवास, गयपुर वहि जिस्सा वसु पुज्जवास ।
जिस्तु स्विथित पुरिस वेदिव स्रवेस, सिरि वासुपुज्ब प्रस्तविसेस ।
सह मिन्मस्सि मुस्ति कंपिल देद गोहिस्सी जानस्यमा संकलद ।
सबलोदित सुत्त खुल्वस्स समेस, परिस्तस्य चित हस्मासि समेस ।
सिस्ताहित सुत्त खुल्वस्स समेस, परिस्तस्य चित हस्मासि समेस ।
सिस्ताहित मंतु विभिन्दित समेस, सिर्ट विस्तरित विहससेन ।

धत्ता--

ता पुरवउ वहिरि कि परिउ साहि, रिबद्ध मंच चउ पासहि । करायमयमु संचिय रयसा करचिय, मडिय मडव पासहि ॥ १ ॥

चन्त्रिम भाग---

नियुराइ जिग्नवित् सावहृष्णु विस्ताइर्स करन्यु सावसातु ।
वस्या घामको जह सरस्मुद्धात्म, स्व सावहो जीवहो सहस्मात् भीव ।
सस्मा हावह सुहामुह एक्कुबीज, तस्मु निष्णु लेइ सरस्माव भीव ।
सस्मार सहक्ष्मणु पुरकर समुदरु, संग्रुजि थाव विहलु कुमुदरु ।
प्रास्त्रव कम्यु जो एहि विष्मु, तही विस्तर्स संवर होइ क्ष्मा ।
समं भावि सहियर कम्युसात, परिभागित सोहु जीवित सपात ।
इल्लु जिस्स धम्मु समुति सम्मु, स्मृति संग्रह्मित कम्म्मेण लगात ।
इत्र मुस्सिव सर्मित जिस्स विक्तस्म, हुव गरस्क्ष क्षमत्म ।
सर्मित वराध्यापन प्रममलस्मान्, सेम्बु हुव विक्रम् ।
धीयत विस्तिम संपत्त प्रज्ञ, वज्यरी विक्रिय वृष्णु स्वस्म ।
इव केश्यमोंक्स गयहीस विक्रम्य, स्मृत् हुव्ह विस्तर्म ।
वज्यरिय सक्सस्मुसी परि सुस्मित, स्मृत् हुव्ह विस्तर्म ।
वज्यरिय सक्सस्मुसी परि सुसम्बद्ध, स्मृत् हुव्ह विस्तर्म ।
वज्यरिय सक्सस्मुसी परि सुसम्बद्ध, स्मृत् हुव्ह हुन्ह ।
रो हुन्न विहित्न ताहर्स्ड, रोहिस्ड स्मृतिहर्म्स समृत्र्ह्न हुन्ह ।

Ę

धत्ता—

सिरि पुराभद्दमुरीसरेस्। विहिय कहा बुधी भरेता ।
सिरि मनविकत्ति पथल खुक्नसारिक, सावयनभी यह मसुद्धविवि ।
सांदर्ज सिरि जिसकां, सावज तहसू म बाखुरिस विक्यं।
सांदर्ज सन्द्रास्त्र, सावज तहसू म बाखुरिस विक्यं।

।। इति श्री रोहिस्ती विश्वानं समाप्त' ।।

३. जिनरात्रिविषान कथा	×	भ पभ्र ं श	२६-२१
४. दशलक्षराक्या	मुनि ग्रुगाभद्र	77	₹0-4
५. चदनपष्ठीवतकथा	भाषार्य खत्रसेन	संस्कृत	33-35

नरदेव के उपदेश से भाषार्थ छन्नसेन ने कथा की रचना की थी।

बारम्भ —

ऋतितम---

Original Color of the Color

जिनं प्रशास्य चंद्राभ कर्मीयध्यात्वज्ञास्करं ।
विधान वदनवच्छ्यत्र भ्रथ्यानां कर्मामहां ॥ १॥
डीपे जम्बूटुमं केम्मिनु तीत्रे भ्रष्टतनामनि ।
कालो देशीस्त विख्यातो वर्ष्ण्यतो बहुधानुवे: ॥ २॥
सावार्यस्त्रप्रतेनेन नरदेवीपदेशतः ।

प्रावार्यक्षत्रसेनेन नरदेवोषदेशतः ।
कृत्या बंदनवष्ठीयं कृत्या मोक्षपत्रप्रदा ।। ७७ ।|
यो मध्यः कृत्ये विद्यानयमनं स्वर्गायवर्गप्रदा ।
योग्य कार्यते करोति अविनं व्याक्ष्याय संबोधनं ।।
मून्तासी नरदेवयोष्यंरमुखं सम्ब्रुयसेनावता ।
यास्यांतो विजनायकेन महते प्राप्तेति जैनं श्रीया ।। ७८ ॥

।। इति चंदनषष्ठी समाप्तं ।।

्री. गुकावनी क्या ,× रंत्कृत १६-१० अः आरम्भ- मारि देवं प्रशुम्योक्तं युक्तारमानं विश्वक्तितं । स्य संवेपकी वच्चे कवा युक्तारपश्चितिहः ॥ १ ॥ सर्वेषदश्रमी कवा

रामकीर्तिके विषय विमन कीर्ति वपस्र श

\$4-88

-

पराविष्पष्ठ सम्मइ जिलोसरहो जा पुन्वसूदि झागम अणिया। लिसुरिएज्जह अविषष्ठ इक्कमना, कहकहमि सुगवदसमी हितश

श्रम्तिम पा

लिपुणिज्जह सिवाह इक्कमना, कहकहाम सुगवदसमी हित्तर्गाएगा।
स्विगिह मुसंब विहालुकरेविल्यु तहब कर्ण उप्पण्ण गरेविल्यु।
बज्जह साहरवेहि पवाहित सामी मुहर भुंजह प्रविरोदित।।
पुहरी मण्डलु पुर पुर हुक्कहु, राज पवार्ज दवाजल बक्कहु।
सानम मुंदिर गत्ति उपण्णी सवलावित नामि र्हपूर्वणी।।
विशि विद्या कुमरि विचावहु भत्ती भञ्जवाेब मालस मोहतो।
सामवण्ण मण्यांवि सुरहि तलु जिल्लाक सामिज पञ्जह प्रमु दिल्यु।।
साम्य बज्जवह दिति स्व त्यक्कह तह व खक्क का वण्ण स्व सहस् ।
सम्बद्धंत विक्त स्व स्व सम्म समारिह।
रामं सार्यारेखाविय बामहि, पुत कलतहि विद्यतामहि।।
रामं सार्यारेखाविय बामहि, पुत कलतहि विद्यतामहि।।
रामं सार्यारेखाविय बामहि, पुत कलतहि विद्यतामहि।।
रामंकित सुर्विवस्त करेविल्यु विद्यालामहि।।
विद्या त्य पुरस्तु करेविल्यु विद्यालामहि।।

धत्ता

जो करइ करावइ एहिविहि वक्सािएाय विभवियह दावेट । सो जिसस्साह भासियहु समुप्रभोक्सुफव पावइ ॥ ८॥

इति सुगधदशमीकवा समाप्ता

८. पुष्पाञ्जलि कथा

×

घपभ्रंश

88-84

चारम्भ

धन्तिम घत्ता

जन जय प्रस्तृ निरोसर हमतम्मीसर प्रतिसिरोनररात्पधरणः । प्रयस्य गरात्रामुर सहयमहीसर प्रति गिराधर समकरणः ॥ ६ ॥ बसवलरिमाणि रस्याकिति सुरिण सिस्य दृष्टिवं दिज्जदः । भावविस्ति पुरु मनेविक्षित्रपुरु पुरु जीन विहि क्लिज्बदः ॥ ११ ॥

3

पुष्पांत्रक्षि कथा समाप्ता

*

१. अनंतविधान कथा	×	धपम्र'श	¥4-48
४४४० गुटका सं०	१६पत्र संस्था१८३ । सा०-७।	IX६ । दक्षा सामान्यजीर्रा ।	
१. नित्यवंदना सामायिक	×	संस्कृत प्राकृत	1-17
२. नैमित्तिकप्रयोग	×	संस्कृत	? %
३. श्रुतमक्ति	×	,,	₹ ¥
४. वारित्रमक्ति	×	*	16
४. बाबार्यभक्ति	×	,,	28
६. निर्वाग्रभक्ति	×	**	₹ 9
७. योगभक्ति	×	n	,,
द. नंदीश्वरभक्ति	×	77	२६
६. स्वयंभूस्तीत्र	बाबार्य समन्तमह	**	٨ş
१०. गुर्वावित	×	19	YŁ
११. स्वाच्यायपाठ	×	प्राकृत संस्कृ	4.0
२. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	६७
१३. सुप्रभाताष्टक	यतिनेमिषंद	29	पत्त सं॰ ६
४. सुप्रभातिकस्तुति	मुबनभूषरा	77	,, રશ
१५. स्वप्नावलि	मुनि देवनंदि	17	n २१
१६. सिक्रिप्रिय स्तोत्र	p	39	" રથ
७. मूपालस्तवन	भूपाल कवि	79	» २४
१८. एकीमावस्तीत	वादिराज	,	» ?Ę
१६. विवापहार स्तोत्र	चन श्चय	n	13 Ye
२०, पार्कनायस्तवन	वेवचंद्र सूरि	,,	, YY
२१. कस्यास मंदिर स्तोत	कुमुर्यचन्द्रसू रि	संस्कृत	
२२. भावना बत्तीसी	×		
ो. कस्ताम्टक	पचर्नवी	, 9	
२४. बीतराग वाचा	×	HING	

े] ं [शुरकाध्रतंत्रह

रेश. मेंगलाष्ट्रक × संस्कृत २६. आवता कौतीको अव्यवस्थि - १२-१५

भारम्भ

बुद्धम्बन्नास्विमास्तसम्स्तमोहं, निहातिरेकमसमावगमस्व मार्थ । धानंदकंदपुदवास्तददाानिकां स्वायंपुर्वं भवतु धाम सतां चिवाय ।! १ ।। श्रीगीतमप्रमुत्योधि विभोर्मीहर्मः प्रायः कमानयनयः स्तवनं विधातुं । प्रयं विवायं जहतस्तद्युप्तनोके सीस्थापने जिन अविध्यति में किमम्यत् ।। २ ।।

च्च स्तिम

श्रीमध्यभेन्दुप्रदुषास्परीसः विकाशिषेतः कुमदः प्रमोदात् । श्रीभावनापद्धतिःशास्पयुद्धय[े] श्रीपद्मानी स्वयं ककार ॥ ३५ ॥ इति श्री अद्वारक पद्मशिददेव विरक्षिते बतुर्वित्रशह मावना समाप्तकिति ।

२७. भनतामरस्तोत्र ग्राचार्य मानतुं य

२८. बोतरागस्तोत्र

भ॰ पद्मनंहि

संस्कृत

चारम्भ

 -

स्वज्ञोक्कतम्बाह्मिरीश्राञ्चलमेकन.सं. स्वाह्मवनावितमयाकृतविद्वार्थः । निःशीयसंत्रमयुवारसत्तरम् यस्यन्ति पुष्य सहिता द्वृति वीतरार्थः ।। ७ ।। सम्बद्धमाराकुपुराकरपूर्वचन्त्रं मोयस्यकाररावर्गतपुर्यः वितन्त्रं । इष्ट्रमदास्त्रविधियोवितप्रमित्रार्थः, पर्यान्त पुष्य सहिता द्वृति बीटरार्थः ।। ॥ ॥ भोरवानिःरचितं किमसीतरागस्तोनं,

विश्वमतावद्यमनादिनादौ ।

यः कोमलेन वचसा विनय।विचीते,

स्वर्गापवर्वकमलातमलं वृशीतः ।। १ ।।

।। इति भट्टारक श्रीपद्मनन्दिविरिवते वीतरायस्तोत्रं समाप्तेति ।।

२६. बाराधनासार	देवसेन	भ्रयभ्रंग र० तं≉ १००	Ę
३०. हुनुमतानुप्रेक्षा	यहाकवि स्वयंभू	" स्वयंभू रामयमा का एक धंवा	११६
३१. कालावलीपद्धडी	×	n	***
३२. ज्ञानविष्ट की विशति पद्धिका	×	n	177
३३. ज्ञानांकुस	×	संस्कृत	१३२
३४, इड्डोपदेश	पूज्यपाद	*	755
३५. सूक्तिमुक्तावलि	धांचार्य सोमदेव	n	\$4£
३६. श्रावकाचार	महापंडित बाबाधर	,, ७ वें सध्याय से वाने वपूर्स	१ 4३

४४४१. शुटका सं० ६०। पत्र सं० ५६। बा० द×६ इत्र । बपूर्ण । दशा-सामान्य ।

. •			
१, रत्नमस्यूजा	×	মাকুর	22-2 0
२. पंचमेर की पूजा	×	,	50-55
३. लबुसामाधिक	×	संस्कृत	17-11
४. घारती	×	*	₹ ४- ₹१
१. निर्वालकान्य	` ×	माङ्गल	19-10

१४४२. गुरुका सं० ६१ । पत्र सं० ५६ । बा॰ बर्५×६ इस । सपूर्ण । विशेष—वैदा सहाहत हिन्दी पद संग्रह है । १४४६२. गुटका सं०६२। पत्र सं०१२८। बा० ६४६ इका। भावा-हिन्दी। ते० काम सं०१८२८ बदुवी।

विकेष---प्रति कीर्राशीर्श झवस्या में है। मधूमालती की कथा है।

४४४४. गुटका सं० ६३। पत्र सं० १२१। का० ६×५ इक्ष । भाषा-संस्कृत । पूर्वा । दशा-सामान्य

१. तीचॉदकविधान	×	संस्कृत	8-88
२. जिनसहस्रनाम	माशावर	"	१२-२२
६. देवशास्त्रग्रस्पूजा	"	"	₹?-1€
४. जिनवजनस्य	"	"	३७−१२५

४४/४. गुटका सं० ६४। यत्र सं० ४०। बा० ७४७ इश्च। भाषा-हिन्दी। पूर्ण। विभेष--विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है।

१४४६ गुटका सं०६४—पत्र संस्था-०६-४११। बा०-०४६। लेखनकाल—१६६१। धपूर्ण। क्या-बीर्स ।

ŧ.	सहस्रनाम	पं॰ माशाधर	गंसकृत	श्रपूर्ती। ८६-८७
₹.	रत्नत्रबपूजा	पद्मनंदि	प्र पभंश	,, =0-63
₹.	नंबीश्वर पंक्तियूजा	27	मंस्कृत	" ٤ ३-६७
¥,	बड़ीसिद्धपूजा (कर्मदहन पूजा)	सोमदत्त	19	१५-१०६
¥.	सारस्वतवंत्र पूजा	×	**	१०७
٩.	बृहत्कलिकुण्डपूजा	×	,,	200-222
٥.	नराषर्वलयपूजा	×	,,	111-11X
۲,	नंदीएव रजयमाल	×	সান্ধূর	224
€.	बृहत्योड सकारसमूजा	×	संस्कृत	115-17=
₹•,	ऋषिमंडलपूजा	ज्ञान भूषरा	,,	१२ 5−३६
₹₹.	वातिचक्रपूजा	×	,,	१३७ ~३⊏
१ २.	प ञ्चमेस्पूजा (पुष्पाञ्ज लि)	×	भगन्न श	118-Y2
₹₹.	पराकरहा अयमाल	×	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	{Y2
ţ¥.	बारह धनुप्रेका	×	"	\$45-A0 644

electropic]			[430
१५. मुनीववरों की जनमाल	×	घपम श	840
१६. समोकार पायबी जवमान	×	,,	tye
१७ चौवीस जिनव जयमाल	×	,,	१ ५० -१ ५ २
१८ वससम्बद्धाः जयमास	रहवू	w	१ १३-१५६
१६ मक्तामरस्तोत	मानतुङ्गाचार्य	सस्कृत	१ ५५१ ६७
२० कल्यारामंदिरस्तोत्र	कुमुदब इ	"	₹ १७ ~₹ १ ८
२१ एकी आवस्तोत्र	वादिराज	"	१ ५ =-१६•
२२ धकलंकाष्ट्रक	स्वामी प्रकलक	77	१ ६•
२३ भूपालचतुर्विद्यति	भूवास	"	१६१-६२
२४ स्वयभूस्तीत्र (इच्टोपवेश	वूज्यपार	**	147-4Y
२४ लक्ष्मीसहस्रतोत्र	पश्चनदि	,,	\$ EX
२६. सपुसहस्रनाम	×	n	272
२७. सामायिकपाठ	×	प्राकृत संस्कृत ले ० स ० १	جعب وفترسه
२८ सिविजियस्तोत्र	देवनंबि	स स्कृत	903
२१. भावनाद्वात्रिविका	×	3	<i>१७१</i> -७२
३०. विषापहारस्तोत्र	धनक्षय	**	¥ 0 ~50\$
३१. सत्वार्वसूत्र	तमास्वा मि	99	\$62-66
३२ परमात्मप्रकाश	योगीन्द्र	बनम्म व	\$ 06-44
		स॰ स॰ १६६	१ वेषास सुवी ॥ ।
३३. सुप्पवदीहा	×	×	₹ 44 ~€ •
३४. परमानदस्तोत्र	×	संस्कृत	161
२४. यतिमापनाष्ट्रक	×	*	
१६. कब्लाप्टक	पद्यमंदि	n	163
के. स्टब्स्टार	देवसेन	प्राकृत	ter
१व. दुर्वभाषुमेका	×	77	*
६६. नेराव्यमीत (क्यरपीत)	चीहर	श्चिती	Tex
ve. Programmingly	×	वपक्र स	aling tree.

् गुरुषा-संगद 15m:] 284-20 **४१. सिद्धपस**्चा सस्कृत × ¥२. जिनवासनभक्ति प्राकृत प्रपूर्ण १६६-२०० x **४३, धर्मदृहेका जैमी का (** त्रेपनक्रिया) हिन्दी २०२-३७ ×

विशेष--लिपि स्वत् १६६६ । आ० शुभवन्द्र ने ग्रुटके की प्रतिलिपि करायी तथा श्री माधवसिंहजी के चासनकास में नदकोट ग्राम में हरजी जोशी ने प्रतिलिपि की !

४४. नैमित्रिनंद व्याहलो	खेतसी	हिन्दी	२३ -४२
४४. गरावरवलययत्रमण्डल (कोठे)	×	,,	245
४६. कर्मदहन का मण्डल	×	,,	283
४७. वसलक्षरावतोद्यापनपूजा	नुम तिसाग र	हिन्दी	283-48
४ ८. पंत्रमीव तोद्यापनपूजा	वे शवसेन	,,	२६४-७४
४६. रोहिसीवत पूजा	×	,,	२७४
६०. त्रेपनक्रियोद्यापन	देवेन्द्रकीत्ति	सस्कृत	२७५-८६
११. जिनगुस्तउद्यापन	×	हिन्दी प्रपूरण	3=7=€
१२ पंचिन्द्रियवेलि	छीहल	हिन्दा श पूर	र्ण ३०७
१३. नेमीसुर कवित्त (नेमीमुर	कवि ठमकुरसी	91	30-08
राजमतीवेलि)	(कविदेल्हकापुत्र)		
१४. विज्युज्यर की जयमाल	×	"	93-306
११. हरावतकुमार जयमाल	×	झपभ श	₹११-१४
५६. निर्वासकाण्डगाया	*	মাকুৰ	\$\$A
१७ कुपराछन्द	ठक्कु रसी	हिन्दी	\$ { \$ - } 0
१८. मानलचु बावनी	मनासाह	"	३१५-२१
५६. मान की बढ़ी बावनी	"	n	\$ 22-24
६०. नेमीस्वर को रास	भाउकवि	5	३ २६ ~ ३३
€€. "	बह्य राय महा	" र० सं० १६१४	111-Y?
६२, नेमिनाथरास	रत्नकीर्ति	"	\$44-\$4 \$
६३. श्रीपाष्टासी	बद्धारायमञ्ज	्भ र.सं. १६४०	144-1 1

क्रिकी ए सं. १६२६ ३४६-६६

जिनदास हिन्दी 360-62 अ॰ सकलकीति 35==58 356-43 बहारायमञ्ज

रचना संवत् १६२८ । गढ हरसीर में रचना की नई की ।

× \$=\$--£X. きとえーとり × मपूर्ण १६५-४११ ×

४४४७. गुरका संट ६६ । पत्र सं० ३७ । भा• ७×१ इक्क । भपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. भक्तामरस्तोत्र मंत्र सहित मानतु गाचार्य संस्कृत ₹**-**₹ २. पद्मावतीसहस्रनाम × २६--२७

४४४८. गुटका सं• ६७ । पत्र सं• ७० । ब्रा॰ ८३×६ दश्च । ब्रपूर्ण । दशा-जीर्स ।

१. नवकारमंत्र ग्रावि ŧ

२. तस्वार्यसूत्र उमास्वामि 4-38 हिन्दी धर्ष सहिल । अपूर्श

६, अम्बूस्वामी परिश्र × हिन्दी अपूर्ख 🦥 ४. चन्द्रहंसकथा टीकम चन्द र. सं. १७०६ । अपूर्ण

र्ष. चीपालजी की स्तुति

६. स्तुति

श्रप्रेष्ठ. गुरुका सं० ६८ । यत्र सं० ८६-११२ । माना-हिन्दी । सपूर्ण । ते० काल सं० १७८० नैव सरी रहे।

> विशेष---माएम्म में वैश्व मनोस्तव एवं बाद में प्रापुर्वेदिक नुससे हैं। अध्येष. गुरुका संब ६६ । पत्र सं० ११॥ । सा० १×६ इ'स । हिली । पूर्ण ।

विकेत-स्वादकीयात कि सम्बद्धार सक्ष्य है।

र्था रहे हैं . गुटका सं० थ०। पत्र सं० १४। बा० दर्भ ६ इंच । मावा-संस्कृत हिन्दी । विक्य-सिद्धान्त विद्याप्त पूर्व बच्छ । बचा-जीर्थ ।

ं विषय —इस ग्रुटके में उसास्वामि इस तत्रार्मयूज की (हिन्दी) टीका दी हुई है। टीका सुन्दर एवं विस्तृत है सवा <u>पान्ये क्रयव</u>न्दजी इस है।

४४४२ गुटका सं० ७१। पत्र सं० ३५-२२२। मा० ६३×६ इ'च। मपूर्ण। दशा–सामान्य।

र स्वरोध्य	×	हिन्दी	\$ %— ~\$
२. सूर्वस्थय	×	संस्कृत	44
३. राजनीतिवास्त्र	वागान्य	"	¥7-40
४. देवसिटपूजा	× .	19	X=-{3
५. दशसकरापूजा	×	"	48-4 4
६. सन्त्रवपूजा	×	,,	キャーメラ
क सोसहकारराष्ट्रजा	×	**	メローギョ
द, पार्श्वनायपूजा	×	"	94-0F
१. कविकुम्ब पूजा	×	19	७६-७८
१०. क्षेत्रपालपूजा	×	"	७५-६२
११. न्हवनविधि	×	**	= २-= ५
१२. सक्ती स्तोत्र	×	"	5 %
१३. तस्वार्वसूत्र तीन मध्याय तक	उमास्वामि	"	= X- m 0
१४. शांतिपाठ	×	77	44
१५. रामविनोद भाषा	रामविनोद	हिन्दी	=8777

४४४३. गुटका सं० ७२ । पत्र सं० २०४ । बा॰ ६१×६३ इ'व । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

,	१. नाटक समयसार		बनारसीदास	हिन्दी	1-111
	•			रचना संबत् १६१६ लिपि सं•	10001
	२. बनारसीविश्वास	•	, ,	हिन्दी .	षपूर्ण
ر م م	३, लीपुक्तिसम्ब		×	, ब्रमुखं पथ है।	16-0.

3

```
४४४४. गुटका सं० ७३। पत्र सं० १४२। मा० ७×६ इ'व। मपूर्ण। दशा-जीर्ण शीर्ण।
🐧 १. राष्ट्र भाशावरी
                                                                        ध्रपभ्रंश
                                                                                                     ŧ
         प्रारम्भ--
                           विसउगामेगा कुरुजंगले तहि यर बाउ जीउ राजे।
                           थराकरासायर पूरियत करायपह धराज जीउ राजे ।। १ ।।
               विमेष-भीत प्रपूर्ण है तथा प्रस्पष्ट है।
    २. पडडी (कौमुदीमध्यात् )
                                                                        घाम श
          प्रारम्भ---
                            हाहर्व धम्मञ्जू हिंडिउ संसारि प्रसारइ।
                            कोइपए सुगाउ, ग्रुग्रिद्ठु संस बिग्नु बारइ ।। छ ।।
          श्रन्तिम घत्ता--
                            पुरावृमंति कहइ सिवाय सुरिए, साहरएमेयहु किज्जइ।
                            परिहरि विगेष्ट्र सिरि सतियत संधि सुमद्दं साहिज्जद्द ॥ ६ ॥
                               ।। इति सहरापालकृते कौमुदीमध्यात् पढड़ी खन्द लिखितं ।।
                                            मृनि विनयचन्द
     ३. कस्याराकविधि
                                                                                                 $ 3-0
          प्रारम्भ--
                        मिद्धि सुहंकरविद्धियह
                         पण्विवि तिजद्द प्यासण् केवलसिद्धिहि कारण्युणिमहर्त ।
                         सबस्रवि जिए। ब्यहारण निह्यमन सिद्धि सुहंकरसिद्धियह ।। १ ।।
          श्रन्तिम--
                         एमभलु एक्कु वि ब्ह्लासाउ विहिस्तिन्वयदि शहबद्द गरासाउ ।
                         महवासय महत्तवसाविहि, विसायचेदि सुरित कहित समस्वह ।।
                         सिढि सुहंकर सिडियह ।। २५ ॥
                                  ।। इति विनयसन्द इतं कस्यागुकविधिः समाप्ता ।।
```

पूनकी (विद्यानं वंदिकि यंथ हुद) व्यति विनयभाषः

₩ 1			(den en
थ. भराजिमिति सं धि	हरिसन्द्र प्रप्रवाल	भक्तं श	₹ ७ −₹¥
६. सम्माधि	×	,,	28-20
७. मगुबसंधि	×	"	75-07
व. स्तास्तिवह	×	•	\$\$-XX
विशेष२० कडवक हैं।			
 श्रावकाचार दोहा 	रामसेन	"	**-**
१०. दशसाक्षरगीकरास	×	"	XE-40
११. श्रुतपश्चमीकवा	स्वयंभू	,,	\$?- \$ 0
(हरिवंश मध्यात् विदुर	वैराम्य कथानके)		
१२. पदड़ी	यशः की लि	**	<i>₹७</i> -७०
(यशःकीर्ति विरवित चंद्रप्रभच	रित्रमध्यात्)		
१३. रिट्ठुगोमिवरित (१७-१८ संघि)	स्वयभू	" (ধৰলাঝিং	१) ७७-६६
१४. वीरचरित्र (अनुप्रेक्षा भाग)	रइधू	n	= ₹= €
१५. चतुर्ग ति की पढड़ी	×	79	≈€-€१
१६. सम्यकत्वकौमुदी (भाग १)	सहरापाल	Seamouton state.	€ १− €¥
े १७. भावना उर्णतीसी '	×	n	84-66
१८. गीतमपृच्छा	×	प्राकृ त	P = = = = ?
११. भादिपूरासा (कुछ भाग)	पुष्पदन्त	भ पम्र ['] श	809-38
२०. यशोघरचरित्र (कुछ भाग)	•	n	\$ \$ 7 -8 \$
४४४४ गुटका सं० ७४।	पत्र सं०२३ से १३	२३। मा० ६×६ डचं। सपूर्ती।	
१. फुटकर पद्य	×	हिन्दी	₹-₹
२. पश्चमञ्जल	रूपवन्द	,	\$2-¥\$
३. कर् गाष्ट्रक	×	"	YY.
Y. पारवंनायजयमाल	लोहट		έχ
५. विनती	मूबरदास	"	ያ ው
६. ते गुरू मेरे उर बसो		ग ग्रालेक व्यवस्थित १	

		ıı.	_
गुरुका समिद्	,		[484
७. जनवी	चानतराय	हिन्दी	प्रश
c. मगन रही रै तूप्र भुके म जन	में बृत्दावन	**	٤́٦
 हम भावे हैं जिनराज तोरे वंद 	न को द्यानतराय	"ले॰का	स सं• १७१५ 🙀
१०, राजुलवसीसी	विनोदीलास सासवस्य	77	¥3-Ç•
विशेष-से० काल सं	• १७६६ । दमाचन्द सुहाहिय	ाने प्रतिलिपि की ची। पै	पक्रीरचन्द्र कासबीबाल
ने प्रतिलिपि करवायी थी।	3		,
११. निर्वासकाण्डमावा	वगवतीदास	हिन्दी	41-41
१२. श्रीपालजी की स्तुति	19	,	45-64
१३. मनां रे प्रभु वरत्या ल बुलाव	हरीसिंह	79	₹¥
१४. हमारी करुणा ल्यो जिनराज	पचनन्दि		44,
१४. पानीका पतासा जैसा तनका	तमासा है [कवित्त] केशवदास		44-4 =
	पश्चिम सुंदरदास झादि	"	46-67
१७. गुणुबेसि	×	ि. हिन्दी	υX
१८. पद—वारा देश में हो लाल गर	इ बड़ो गिरनार 🗴	`,	90
१६. कमका	युलासचन्द	*	७६-६२
	•	••	० ले० काल संं० १८००
२०, पं वतभावा	×	हिन्दी	e.
२१. मोक्षपैडी	×	,,	~ §
२२. भजन संग्रह	×	**	१२
२३. दानकीबीनती	वतीदास	संस्कृत	11 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
	1	निहासचन्द्र ग्रजमेरा ने प्रति	लिपि की संबत् १८१४ ह
२४. शकुनावनी	×	हिन्दी सिपिका	# १७१७ ११-१० १
२५. फुटकर पर एवं स्थित	.×	**	१२३'
१४४६ गुरुका सं २ ५ सामान्य । बपूर्वा ।	०४१ व संस्था ११६। सा	•-तर्र×८१ द.स । धु० क	ल सं• १८४६ । दश्री
. १. निर्वासिकाच्यमामा	वयनवीदात	हिली	, ,
२, क्लाहासंदिरमाना	बनारसीवास		way

**			
वे. सरमीस्तोत्र	पद्मप्रमदेव	संस्कृत	•
¥. श्रीपालची की स्तुति	×	हिन्दी	
१. सामुबंद ना	वनारसीदास	"	
६. बीसरीर्चकुरों की जकडी	हर्षकीति	"	
७. बारह्यायना	×	"	
य. दर्बनाष्ट्रक	×	हिन्दी सब	दर्शनों का वर्शन है।
१. पद-व रण केवल को ध्यान	हरीसिंह	n	"
१०. मक्तामरस्तोत्रमाचा	×	"	"
४४४७ गुटका स० ७१	३ । पत्र संख्या—१८० । झा ०	— १॥×४॥ ने सन स	ं० १७८३ । जीर्सा ।
१. तत्वार्यसूत्र	उमास्यामि	संस्कृत	
२. नित्यपूजा व भाद्रपद पूजा	×	n	
३. नंदीस्वरपूजा	×	,,	
		पंडित नगराज ने हिर	श्गौदामें प्रतिलिपि की।
४. श्रीसीमंधरजी की जकड़ी	×	हिन्दी प्रति	लिपि गुढ़ामें की गई।
५. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत	
६. एकीभावस्तीत्र	वादिराज	19	
७. जिनजपिजिन जपि जीवरा	×	हिन्दी	
 चितामिश्यिको की जयमाल 	मनरथ	"जोवनेरमं	नगराजने प्रतिनिधि की थी।
६. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	संस्कृत	
१०. अक्तामरस्तोत्र	मावार्यमानतु ग	29	
४४४६ गुरका सं० ७७	। पत्र सं०१२४ । झा०६×	४ इंच ा भाषा —संस्कर	Tima da mor essas
माहसुदी १२।			. १ तन सन काल १५१६
१. देवसिळपूजा	×	संस्कृत	₹ - ₹¥
२. नंबीश्वरपूजा	×	"	
 सोसहकारता पूजा 	×	,,	\$ \$-AA
८. दश सक्षालपूजा	×	"	**-X*
ઋધ		"	x x x

and the second	4.4.5		' 2'
गुहका-संबद]			[FUR
५. रत्नत्रयपूजा	*	हिन्दी	45-58
६. पारर्वनायपूजा	× '	"	\$7 - \$10
७. श्रांतिपाठ	×	"	42-48
८ तत्वार्थसूत्र	उमास्यामि	"	40-11Y
४४४६. गुटका सं० ७	८। पत्र संख्या १६०। मा०	६४४ इ.च । अपूर्शाः । द	क्या-जीर्ख ।
विशेषदो गुटकों का स	व्मिश्रता है।		7
१. ऋषिमण्डल स्तवन	×	सस्कृत	₹०₹७
२. चतुर्विशति तीर्यक्कर पूजा	×	**	2=-38
३. चितामश्चिस्तोत्र	×	"	34
४. लदमीस्तोत्र	×	**	₹9-₹=
५. पार्श्वना पस्त वन	×	हिन्दी	₹8-४•
६. कर्मदहन पूजा	म० शुप्रयन्द्र	संस्कृत	₹ —¥ ₹
७. चितामिंग पार्श्वनाथ स्तवन	×	n	¥4-¥#
<. पार्खनाचस्तोत्र	×	99	¥ 4- 23
६. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	44-46
१०, वितामिता पार्श्वनाथ पूजा	म० शुभवन्द्र	,,	42-=2
११. गराषरवसय पूजा	×	79	a6-15X
१२. ब्रष्टाञ्चिका कथा	यशःकीर्ति	"	1.4-115
१३, धनन्तप्रत क्या	लसितकीति		₹१२११=
१४. सुगन्धवशामी कवा	,	,	११=-१२७
१४. वोडवकारण क्या	27	29	१२७१३ ६
्द्र६. रामभय कथा	19	'n	\$\$ 5 —\$\$\$
१७. विनवरित्र क्या	. ,,	,,	1×1-1×4
्रेट. बाकासर्थमी क्या			Principles

ţ,

Aller Park	· · · ·			
im]				[गुटका-संग
२०. ज्यासामासिन	स्तित	×	संस्कृत	१ ५५- १ ६१
२१. बैत्रपालस्तीत्र		×	•	१६२-६३
२२. खातिक होम	विधि	×	,,	₹ <i>७४–७</i> ६
२३. बीबीसी विन	ती	भ॰ रत्नचन्द्र	हिन्दी	१ = ६ — = 8
*86	०. गुटका सं० ७६।	पत्र ं ०३३। ग्रा०७ ३	≺४३ इ'च । बपूर्ण ।	
१. राजनोतिशास्त्र		वास्तव्य	संस्कृत	१ —२ ५
२. एकीश्लोक राम	ायरा	×	***	35
३. एकोस्लोक भाग	•त	×	"	37
४. गरोशद्वादशनाम		×	77	₹0-₹१
५. नवग्रहस्तोत्र		वेदव्यास	**	₹2-₹
भपू र्ख । विशेष	— प द्ध मंगल, बाईस परि	त्वह, देवापूजा एवं तत्वाः	ा ६३ × ४३ इ.च.। भ संसूत्र कासंग्रह है।	।प!—संस्कृत सद्याहिल्दी।
भपूर्ण । विशेष ४४६	— प द्ध मंगल, बाईस परि	त्वह, देवापूजा एवं तत्वाः	ा ६३ × ४३ इ.च.। भ संसूत्र कासंग्रह है।	
श्रदुर्ख । विशेष ४४६: सामान्य ।	– पश्चमंगल, बाईस परि २ गुटका सं० दर । प	त्वह, देवापूजा एवं तत्वाः त्र सं०२—२६ झा०ः	ा ६३ × ४३ इ.च.। भ संसूत्र कासंग्रह है।	।प!—संस्कृत सथाहिन्दी।
भपूर्ण । विशेष ४४६ सामान्य । विशेष	— पश्चमंगल, बाईस परि २ गुटका सं ० दर । प —नित्य पूजा एवं पाठों	त्यह, देवापूजा एवं तत्वाः त्र सं०२ – २६ । झा॰ : कासंब्रह है ।	ि ६२ ४४ देखा अ र्यसूत्रकासंबद्ध है। ४ ५ ४ देखा साबा⊸	ाषा-संस्कृत तथा हिन्दी । संस्कृत । अपूर्ण । दशा
श्रदूर्णः । विशेष ४४६ः सामान्यः । विशेषः ४४६ः	— पश्चमंगल, बाईस परि २ शुटका सं० सर् । प — नित्य पूजा एवं पाठों शुटका सं० =३ । पत्र	(बहु, देवापूजा एवं तत्वा) त्र सं∘ २–२६ झा० ! का संब्रह है । ा सं∘ ३० । झा० ६×४	ि६२ ४ ४ ३ च्चा अ सैनून कासंबह है। ४ ५ ४ ४ च्चा भाषा~ च्चा भाषासंस्कृता	।प!—संस्कृत तथाहिन्दी।
स्पूर्णः । विशेषः ४४६ः सामान्यः । विशेषः ४४६ः विशेषः	— पश्चमंत्रल, बाईस परि १ गुटका सं ० दर्श । प —नित्य पूजा एवं पाठों १ गुटका सं० - १ । पन —पद्मावती स्तोत्र एवं	(बहु, देवापूजा एवं तत्वा। 'त्र सॅ० २ — २६ । झा० : कासंब्रह है। । सं० ३० । झा० ६४४ जिनसहस्रनाम (पं० स	०६२ ४४ देखा अ र्यसूत्र कासंबह है। ५६ ४४ देखा शाषा– देखा भाषासंस्कृता । मामपर)कासग्रह है।	ाषा-संस्कृत समाहित्यो । संस्कृत । अपूर्ण । दशा
बदुर्ख । विशेष ४४६ सामान्य । विशेष ४४६१	— पश्चमंत्रल, बाईस परि १ गुटका सं ० दर्श । प —नित्य पूजा एवं पाठों १ गुटका सं० - १ । पन —पद्मावती स्तोत्र एवं	(बहु, देवापूजा एवं तत्वा) त्र सं∘ २–२६ झा० ! का संब्रह है । ा सं∘ ३० । झा० ६×४	०६२ ४४ देखा अ र्यसूत्र कासंबह है। ५६ ४४ देखा शाषा– देखा भाषासंस्कृता । मामपर)कासग्रह है।	ाषा-संस्कृत सद्या हिन्दी । संस्कृत । अपूर्ण । दशा
बदुर्ण । विशेष ४४६: सामान्य । विशेष ४४६: १. स्वस्थपनविधि	— पश्चमंत्रल, बाईस परि १ गुटका सं ० दर्श । प —नित्य पूजा एवं पाठों १ गुटका सं० - १ । पन —पद्मावती स्तोत्र एवं	(बहु, देवापूजा एवं तत्वा। 'त्र सॅ० २ — २६ । झा० : कासंब्रह है। । सं० ३० । झा० ६४४ जिनसहस्रनाम (पं० स	०६२ ४४ देखा अ र्यसूत्र कासंबह है। ५६ ४४ देखा शाषा– देखा भाषासंस्कृता । मामपर)कासग्रह है।	ाषा—संस्कृत समाहित्याः। संस्कृतः। अपूर्णः : दशा— - ने०कालः सं०१८८३ः।
बयुर्ण । विशेष ४४६: सामान्य । विशेष ४४६: दिगोप १८६: १. स्वस्थ्यमाविष २. सिक्यूना	— पञ्चमंत्रम, बाईस परि २ गुटका सं० घर । प —नित्य पूजा एवं पाठों १ गुटका सं० =३ । पत्र —पपायती स्तोत्र एवं १ गुटका सं० घर । पर	त्यह, देवापूजा एवं तत्वाः त्र सं०२ – २६ । झा० : कासंग्रह है। सं०३० । झा०६ ४४ जिनसहस्रताम (पं०स इ.सं०१ ⊏ – ४१ । झा०	०६2.४४३ दंव। अ र्थमूत्र कासंग्रह है। ४५.४४ दंव। सावा– दंव।भाषासंस्कृत ; स्थापर)कासग्रह है। ७४.४६ देवंब।	ाषा—संस्कृत समाहित्याः। संस्कृतः। अपूर्णः : दशा—— ने०कालः सं०१८८३ः। १९–२०
सपूर्ण । विशेष ४४६ः सामान्य । विशेष ४४६ः विशेष १४६ः १. स्वस्थ्यमविधि २. सिद्धपुजा १. श्रीकृषकारसपुर	— पञ्चमंत्रम, बाईस परि २ गुटका सं० घर । प —नित्य पूजा एवं पाठों १ गुटका सं० =३ । पत्र —पपायती स्तोत्र एवं १ गुटका सं० घर । पर	त्वह, देवापूजा एवं तत्वाः त्र सं० २—२६ । झा० : का संग्रह है । ा सं० ३० । झा० ६८४ जिनसहस्रताम (पं० स इ. सं० १८—५१ । झा० ४	०६२ ४४ देव । अ र्ममूत्र का संबह है । ६२ ४ देव । भाषा- देव । भाषा संस्कृत । सामार)का सब्बह है । क्र ४६ देव ।	ाषा—संस्कृत समाहित्दी। संस्कृत। अपूर्ण : दशा— - ने० काल सं० १८८३
सपूर्ण । विशेष ४४६ः सामान्य । विशेष ४४६ः विशेष ४४६ः १. स्वस्त्ययनविष २. सिद्युवा ३. श्रीकृशकारसपूर्वा ४, बस्तंकससुरूवा	— पञ्चमंत्रम, बाईस परि २ गुटका सं० घर । प —नित्य पूजा एवं पाठों १ गुटका सं० =३ । पत्र —पपायती स्तोत्र एवं १ गुटका सं० घर । पर	त्वह, देवापूजा एवं तत्वाः त्र सं०२ – २६ झा० : का संग्रह है । ा सं०३० । झा० ६ ४४ जिनसहस्रताम (पं० म इ.सं०१ त – ४१ । झा० ४	०६२ ४४ देव । अ र्ममूत्र का संग्रह है । ४ दे×४ देव । भाषा- इंव । भाषा संस्कृत । गाम ४ का सग्रह है । ४४४ देवंब । संस्कृत	ाषा—संस्कृत सथा हिन्दी। संस्कृत । अपूर्ण । दशा— ने० काल सं० १८८३ । १९—२० २१—२३
सपूर्ण । विशेष ४४६ः सामान्य । विशेष ४४६ः विशेष १४६ः १. स्वस्थ्यमविधि २. सिद्धपुजा १. श्रीकृषकारसपुर	— पञ्चमंत्रम, बाईस परि २ गुटका सं० घर । प —नित्य पूजा एवं पाठों १ गुटका सं० =३ । पत्र —पपायती स्तोत्र एवं १ गुटका सं० घर । पर	प्लह, देवापूजा एवं तत्त्वाः त्र सं०२ – २६ झा० : का संग्रह है । सं०३० । झा० ६४४ जिनसहस्रताम (पं०म इ.सं०१ त− ५१ । झा० . ×	० ६२ ४४ देखे । अ र्यमुत्र का संबद्ध है । ४ दे×४ देखे । भाषा- देखे । भाषा संस्कृत । वास्थर)का सब्बद्ध है । ४४४ देखे । संस्कृत	वा-संस्कृत तथा हिन्दी संस्कृत अपूर्ण दशा ने॰ काम सं॰ १८८३ १९-२० ११-२३

शुरका-संबद् ी			[440
७. वितामिरिष्ट्रवा	×	संस्कृत	\$6-X\$
<. तस्या र्यसूत्र	उमास्वामि	11	44-44

४४६६४. गुटका सं० दश् । यत्र सं० २२ । बा० ६४४ ६ का । साथा-संस्कृत । अपूर्ण । दशा-सामान्य। विशेष----पत्र ३-४ नहीं हैं । जिनसेनावार्य इति जिन सहस्रनाम स्तोत्र है । ४४६६. गुटका स० दह । पत्र सं० ४ से २५ । बा० ६४५ इ'व । आवा---हिन्सी । विशेष----१८ मे ८७ सवैयों का संग्रह है किन्तु किस प्र'य के हैं यह प्रकात है ।

४४६७. गुटका सं० ८७। पत्र सं० ३३। भा० ८×४ ईच । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. जैनरक्षास्तोत्र	×	संस्कृत	१- ३
२. जिनपिजरस्तोत्र	×	"	Y-X
३. पार्स्वनायस्तोत्र	×	n	•
४. वक्रदेवरीस्तीत्र	×	99	•
५. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	w-84
६. ज्वालामालिनीस् रेत्र	×	,,	₹1,-₹4
७. ऋषि मंडलस्तोत्र	गीतम गराधर	93	१ ५-२४
६. सरस्वतीस्तु ति	माशापर	"	8x-8 6
६. शीतलाष्ट्रक	×	n	₹७-4₹
१०. क्षेत्रपासस्तोत्र	×	**	३२-३३

४४६८. गुटका सं० यह । पत्र सं० २१ । झा० ७४५ इ**ज्र** । झपूर्स । दशा—सामात्व ।

\$03

			ि गुटका-संका
र् संबोध पंचासिकामाचा	वानतराय	[[] हन्दी	y-5
र. अकामरभाषा	हेमराज	,,	8-84
📜 🎉 करवासा मंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	,,	१५-२२
अध्यः गुटका सं० ६२।	पत्र सं० १३०२०३	। सा० ⊏× म इंचा	भाषा-संस्कृत हिन्दी । ने •
नक्त १८३३ । अपूर्ण । दशा सामान्य ।			
१. मविष्यदत्तरास	रायमझ	हिन्दी	23EX
?. जिनपञ्जरस्तोत्र	×	संस्कृत	१८५ ८७
३. पार्स्वनायस्तोत्र	×	,,	१ ८८
🎺 ४. स्तवम (ग्ररिहन्त संत का)	×	हिन्दी	१= ६ - ६ ३
५. चेतमचरित्र	×	"	१६३-२०३
४४७३. गुटका सं० ६ ३। विशेष—प्रारम्भ के २४ पत्र न १. पार्श्वनाथपूजा		हिन्दी	•
१. पस्वनायपूजा २. मकामरस्तीत्र	× मानत्र गाचार्य	•	रुप्र
इ. मक्तानरस्तान इ. सक्सीस्तोन	माग्यु गाचाव पद्मप्रभदेव	संस्कृत	XX .
-		"	६२
४, सासू बहू का मगडा	ं ब्रह्मदेव	हिन्दी	ξx
५. पिया चले गिरवर कूं	×	"	Ę to
६. जाभि नरेन्द्र के नंदन कूंजग बंदन	×	29	£e
७. सीसाजी की विनती	×	97	હર
 तत्वार्यसूत्र 	उमास्वामि	संस्कृत	49-64
६. पद- घरज करां छा जिनराजजी रागः	सारंग 🗴	हिन्दी	श्रपूर्ण १६
१०. 🤧 की परि करोजी ग्रमान वे कै दिनका	महमान, बुधजन	"	€0
११. अन्यान मोरी नगी ऐसी	×	,	ee
१२. ,, शुभ गति पावन गाही चित धारीर्व	ो नवस	"	• • •
१३. _{१९} चाऊंगी संगि नेम कंबार	×	,,	
			. 500

गुरका-संबद्]			[fire
१५. जेनत है होरी मिलि साजन की टोरी	हरिथम	हिन्दी	१०२
(राग काफी) १६. देवो करमां सूं फुन्द रही बजरी	क्षिमदास	97	₹0₹
१७. सबी नैमीजीसूं मोहे मिलाबोरी (रागह	ोरी) चानतराय	n	
१८. दुरमति दूरि सड़ी रही री	देवीदास	,,	१०४
११. घरज सुनो म्हारी धन्तरजामी	सेमबन्द	,,	₹•६′
२०, जिनजीकी अर्थि सुन्दर या मेरे मन भा	ŧ ×	,,	धपूर्ण १००

४४७४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० १∼४० । बा० ४४४ इंब । ते० काल सं० १८२१ । बपूर्ण । विशेष—पत्र संस्था २६ तक केशवदास कृत येथ मनोत्सव हैं। ब्रायुवेंद के नुसले हैं। तेजरी, इकांतरा बादि के मंत्र हैं। सं० १८२१ में भी हरलाल ने पावटा में प्रतिविधि की थी।

४४७४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० १८७ । झा० ४×३ इत्र । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. भादिपुरास	जिनसेना चा र्य	संस्कृत	t-tt=
२. वर्षासमावान	भूषरदास	हिन्दी	286-530
३. सूर्यस्तोत्र	×	संस्कृत	१३८
४. सामायिकपाठ	×	,,	\$\$=- \$ ¥¥
५. मुनीस्वरों की जयमाल	×	n	१४ ५-१ ४ ६
६. वांतिनायस्तोत्र	×	n	\$40 - \$45
७. जिनपंचरस्तोत्र	कमलमससूरि	n	{*e-{*{
ब, मेरबाष्ट्रक	×	n	8×8-8×8
६. सक्तंकाष्ट्रक	धक्लंक	n	₹ % 4-₹ % €
१०. पूजापाठ	×	n	2 40-24 0

४४७६ गुटका सं ६६। पन तं॰ १६०। बा॰ १८३ इस। ते॰ कास तं॰ १८६७ फासुस सुदी द ।

ţ.	विषापहार स्तोत्र	धनस्रम	संस्कृत	१- १
₹.	म्बासायासि वी स्तोष	×	79	

(% :)			[garan-ain
३. विदामधिपार्धनावस्तीव	×	र्तसङ्ख्	»
४. सक्नीस्तोत्र	×		
१. चैत्यवंदना	×	**	
६. ज्ञानपचीसी	वनारसीदास	? हिम्बी	
७. वीपालस्तु ति	×	-	\$0\$X
द. विवापहारस्तोत्रभाषा	भ यलकी वि	,,	२४–२≡ २६–३१
६. चौनीसतीर्यकुरस्तवन	×	77	
१०. पंचमंगल	स्पनंद	"	₹₹-₹७
११. तत्वार्यसूत्र	उमास्वामि	,, ,,	\$4- 7 0
१२. पद-मेरी र लंगावी जिनजी का नावस्		संस्कृत	x=- 16
१३. कल्यासमिदिरस्तोत्रभाषा	. ^ बनारसीदास	हिन्दी	40
१४. नेमीश्वर की स्तुति		"	₹१ -७ •
१५. जन्मी	नुषरदास	हिन्दी	44-42
\$6 -	स्पन् द	77	🧣 ७३-७१
· n	मूषरदास	,	<i>47−</i> € ₹
१७. पद- लीमो जाय तो लीचे रेमानी जिनजी को नाम सब भलो	×	,	=A-=A
१८. निर्वासकाण्डभाषा	मगक्तीदास	97	7 4 - 4
११. वन्दाकर्ममंत्र	×		=X-=6
२० वीर्वकुरावि परिक्य	×	"	€•−€६
२१. वर्शनपाठ	×	"	६७-१६२
२२. पारसनायली की नियासी		संस्कृत .	\$ \$ \$ - \$ x
रेके स्तुति	X	हिन्दी	144-00
	कनककीति	**	१ुंग-बु२
रे४ पर-(बहु श्रीजिनराय मनवन काम करा रे४७७. गुटका सं० ६७। पत्र	ला़) ×	,	**

४४७७. गुटका सं० ६७ । वन सं० ७४ । या० ३४४६ रख । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । वसा सामान्य । विशेष-मुटकाजीयां सीर्यो हो हुका है। मक्षर मुद्र चुके हैं।

रै सत्वार्वसुष जनास्वामि -

स स्कृत

			[Fag
२. वर्षामरस्तोत	वानतुङ्गावार्य	•	
१. दंगीमानस्तोत्र	वादिराज	7	
४. चेंत्वालंगदिरस्तोव	कुतुरव <i>र</i>	"	
ध. पी रवैशावस्तो त्र	×		
६. वर्षनामस्योत्र	×	"	
७. स्तोष संबह	×	*	
रप्तकात्व । दशा सामान्त्र ।	ं० ६८ पत्र सं० १६-११४।	ग्र मा० २१×२१ दवा	३६-॥२ । नावा–(सहस्र । ब्यु र्स ।
विवोष-नित्य पूजा ए	र्व कोडककारलादि भाइपद पूजा	में का संग्रह है।	
	हेह । पत्र सं o ४-१०४ । मा		
रै- क्वकावतीसी			
२. तिकासचीवीसी	×	हिन्दी	A-15
₹. मिक्तपाठ	×	•	£x-40
४. तीस्पीवीसी	क्लककीति	"	£12-40
५. पदेखियां	×	27	₹ -₹ ₹
६ तीन्त्रीबीसीरास	मारू	**	44-E3
- विवृद्धिकाण्डभाषा	×	n	4x-44
. मीपास् बीनती	भगवतीदास	n	£0-03
. मुक्तुः	×	79	44-62
• नवकार वडी बीनती	×	n	9E-=•
· प्रकृत्याती	प्रहादेव	» લં૦	१८४१ व्ह-दर
. नेजीहबुर का व्याहला - नेजीहबुर का व्याहला	विनोदीसास	**	= 1 - <u>2</u> - 2
	लालचन्द	» प्रपूर्ण	
बहुद् गुटका सं र	००। यत्र सं• २-६०। सा० १	॰×६ इच्चा सपूर्ता वह	। सामान्यः
	मबलरा म	Agrig.	
मानिकासामा.	राम्बंद	., -,	\$
विस्त्रुवा	× (4),	.91	4-4
	••	ALEX.	Y-3.

see J			[गुडका-संबद
४. एकीमावस्तोच	बादिराज	संस्कृत	4-4 "
व. विनपूजाविधान (केन्यूजा)	×	हिन्दी	v-{x
1, spent	धानतराय	**	₹ % -₹ %
७. वस्तानरस्तीच	मानतु गाचार्य	संस्कृत	₹ ३ —₹ ¥
क, तस्वार्थसूत्र	उमास्वा मि	"	१५- २१
 सीसहकारसपूजा 	×	"	२२ २४
१०. दशसकारापूजा	×	77	₹4-4₹
११. रत्ननवपूजा	×	99	₹₹-
१२. पद्मपरमेष्ठीपूजा	×	हिन्दी	\$10
१३, मंदीस्बरद्वीपपूजा	×	संस्कृत	35-0₽
१४. बास्वपूजा	×	11	¥•
११. सरस्वतीपूजा	×	हिन्दी	¥ŧ
१६. डीर्बक्टरपरिचय	×	"	¥₹
१७. नरक-स्वर्गके यंत्र पृथ्वी आदि का	वर्णन ×	77	¥3−¥°
१८. जैंनसतक	मूषरदास	"	x 5-x 6
१८. एकीमावस्तोत्रमाणा	n	n	€0-€8
२•. द्वाद्यानुत्रेका	×	19	\$?- \$3
२१. दर्शनस्तुति	×	70	£3-£8
२२. सामुबंदना	बनारसीवास	n	₹ Y − ξ ¥
र्श. वंबमञ्जल	रूपचन्द	हिन्दी	\$ ¥ –\$ &
२४. जोगीरासो	विनदास	97	42-6 0
२४. वर्षीये	×	77	60-50

४४द**२. गुटका** सं० १०१। पत्र सं० २-२१। बा० ५३×५३ इ'व । भावा-प्राकृत । विवय-चर्चा । प्रयुक्त । बता-सामान्य । चौबीस ठाला का पाठ है।

४४ क्ष्यर. शुटका सं० १०२ । यत्र सं०२ २३ । बा० ४×४ इ'व । आया-हिन्दी । सपूर्णा । दशा-बामान्य । मिन्न कवियों के पदों का संबह है ।

गुरका-संबद्	r		f w
१. पूल क्यों गया जी म्हानें	×	विनी	F 440
ै २. जिन खबि पर जाऊं मैं बारी	राम		₹
· १. वंशिया तनी तैड़े	×	,	₹
४. हमनि सुक पामी जिनवर देखि	×	"	₹
४. लगन मोहे सगी देखन की	बुषवन	,,	₹ .
६. जिनजी का ध्यान में सन कवि रह्यो	×	37	•
७. प्रमु मिल्या दीवानी विस्त्रीवा कैसे किया	सहयां 🗙		1
 नहीं ऐसो जनम बारम्बार 	नवसराम	"	*
 मानन्द मङ्गल भाग हमारे 		77	¥
to. जिनराज भवो सोहो जीत्यो	×	"	¥
११. सुम पंच लगो ज्यो होय भला	नदसराम	19	Ł
१२. खांडवे मनकी हो कुटिलता	27	n ,	¥
१३. सबन में दया है धर्म को मूल	**	19	•
	29	"	•
· १४- डुक्स काहू नहीं दीजे रे बाई	×	27	•
१५ मारणनाम्यो	नवसराम	*	ę
१६. जिम बरलां बित लगाय मन	27		•
१७. हे मां जा मिलिये भी नेमकंबार	,	"	
१ व. म्हारो साम्यो प्रमु सूं मेह	29	19	
१६. यां ही संग नेह सम्यो है	n	**	,
२०. यां पर वारी हो जिनराय	,	•	
२१. मी मन यां ही संग साम्बो	19	99	5
२२. घनि चड़ी वे वई वेसे प्रमु नैना	,,		***
२३. बीर री मीर मोरी कालों कड़िये	* **	-	•
२४. विनराय व्यावी त्रवि भाव से		~	₹•
२१. सबी जान कावी पति को समग्राची	•	-	**
24. wigelt reitet fermit meiner all eine		77	48
	高型(含)。这	San Santa	San San San

			ारक-वर्ष
रक. हैं विश्व सैलिये हो बतुर तर	नबलराम	हिन्दी	14
रेड. मधु पुन गावी प्रविक वन	,	,,	१र
े रहे. यो मन म्हारो जिनकी सू' लाग्यो	,,	**	21
कि मञ्जू पूक सक्सीर मेरी माफ करी वे	"	,	£ \$
वरसन् करत अब सब नसे	77	"	11
उर. अन्य सोमिया र	,,	,,	ţ¥
वेषे अध्य तुप वैरागे चित भीनो	77	**	१ 1
हेर्ड. देव बीन को दयाल जानि चरण सरण स	राबो "	**	99
३ थे. यावो हे श्री जिन विकलप स्त्रारि	77	"	,,
३६. प्रश्नुजी म्हारो धरज सुनो चितलाम	**	97	१ ६
३७. ये किसा चित लाई	77	"	29-79
रेब. में पूजा फल बात सुनी	77	**	१व
१८. जिन सुमरन की बा र	77	19	n
४°. सामाधिक स्तुति बंदन करि के	"	"	\$\$
¥रे. जिनन्दजी की रुख रख नेन लाय	संतदास	,,	1)
४२. बेतो क्यों न झानी जिया	"	11	२०
४वे. एक घरन सुनी साहब मोरी	बानतराय	"	"
अर्थ. मो से अपना कर बवार रिकाम दीन तेरा	बुधजन	**	₹•
४५. धपना एंग में रंग दगोजी साहब	×	n	99
४६. मेरा मन मधुकर घटनयो	×	,,	78
्र ४७. भैवा तुम चोरी त्यागोजी	पारसदास	,	"
४० . चड़ी २ क्ल २ खिल २	वीलतराम	39	**
. पर चट वट वटवर	×	"	** **
२०. बारन भएनी जोब सुप्तानी कोर्र	×	99	,
1.8. युनि जीवा रे निरकात रे सोमी	×	"	
V. or the tail	Angua		

हुरेका-संबंध]			[4 88
८३. माई सोही सुर्पुष बकानि रै	नवन राम	हिली	२३
५४. हो मन जिनजी न क्या नहीं रहे	*	17	
४४, की परि इतनी मयकरी करी	**	**	मपूर्व
र्श्वन्त्रे. गुटका स० १०३।	पत्र स० ३२० । शा	• ६×५ इ.स. । अपूर्ण ।	रशा जीवर्ड ।
विषेषहिन्दी पदी का संबह	t ı		
४४८४. गुटका स० ५०४ (44 40 \$0-\$44	। मा॰ ६×१ इ स । ने॰	कास व ॰ १७२८ कार्तिक
हुवी १५ । सपूर्ण । दशा-जीर्ग ।			
१. रत्नशबपूजा	×	माकुत	₹०~३२
२. नन्दीश्वरद्वीप पूजा	×	n	44-40
३ स्नपनविधि	×	संस्कृत	¥4-4•
४ क्षेत्रपालपूजा	×	11	£0- £ ¥
४. क्षेत्रपालाष्ट्रक	×	•	4 7-48
६. बन्देलाम की जयमाना	×	77	44-48
७ पार्श्वनाथ पूजा	×	79	40
 पार्वनाथ जयमाल 	×	,	wu\$
६ पूजा थमाल	×	वस्कृत	44
• वितामित्व की बदमान	नहारायमञ्	हिन्स	٠¥
१. क्षिकुच्यस्तवन	×	माइत	<i>-9−9</i>
२. विश्वमान बीस तीर्वकूर पूजा	नरेन्द्रकीति	वस्कृत	48
३. पद्मावतीपूजा	**	,	ex
४. रत्नावली बतो की तिविको के नाव		" ફિલ્મી	41-40
८. दास मंदल की	"	-	
. विनर्शिक्षेत्रीय	. बाबाबर	# संस्कृत	44-46
. Yanianiillisin	*		यह-१०३
, that the following water	×		4-8-848

इंशर] [शुटका संगद्द

स्ट्क्सुवर्णन वारह मासा वनराज हिन्दी धपूर्ण २४-४३
 स्विक्त स्वक् ×
 मंद्रिक प्रक्रिक स्वक् स्वयो के नायक नायिका सबन्यों कवित्त हैं।

ा । अभिन्न कावया के नायक नायका सबन्धा कावण है।

> ४४८६ शुटकास० १०६। पत्र म०२४ । झा०६४६ इझ। आवा-सम्कृत।पूर्ण। नीर्ग्य। विवेष—उमास्वामि इत तत्वायसूत्र है

४४८७. गुटका स० १०७। पत्र सं० २०-६४ | मा० १४४ दश्च । भाषा-हिन्दी | से० कास स० १७४८ वैकास सुदी १४ | मपूर्ण | दशा-सामान्य ।

१. कुम्लारनमिएवेलि हिन्दी गद्य टीका सहित पृथ्वीराज हिन्दी २०-५४

लंखन काल स० १७४८ वैद्यास मुदी १४ । र० कान स० १६३७ । प्रपूर्ण । व्यक्तिस पाठ---

रमता जगदीश्वरतरागै रहसी रस मिथ्यावचन न ता सम है । सरसति रुकमिस्त्री तरिए सहचरि कहि या प्रूपैतियज नहै ।। १०।।

टीका—रहित एका तह रुकमर्था। सायह श्रीष्कृत्युको तह रमता कीवाता जे रस ते दृष्टि दीवा सरीक्ष कक्क्षी । पर त वचन माही कूढउ नेमत मानउ साच मानिज्यो । रुमस्यो सरस्वतोनी सहयरी । सरस्वरी तिराह युत-बात कक्की मुफ्तनइ मान्याउ जाएं।।। जाएं। सववात कही तहन। मुख यकी सुर्या तिमही ज नहीं।। १०।।

> रूप लक्षण ग्रुण तत्मास वः मीलि जहिवा समरवाक कुण । जाि्या जिका सातिसामैं जिपया गांविद राि्या तला ग्रुण ।। ११ ।।

टोका — स्कमित नव कप सकारा प्रता क हवा प्रतित समर्थ कुरा समय तर श्रद अपितु को निहं परसद । बाहरि नितद अनुसार जिला ज्याच्या तिस्या ग्रन्थ माहि श्रूच्या वहा। तिरा काररा हू ताहरड वासक स्तू भी परि कृप। करिन्सी ।। देश ।

> वसु शिव नयन रस शिंस वस्पर विजयवसमि र्राव रिष वरशोत । किसन रुक्तमुरी बेलि कस्पतव कीथी कमध व कस्पासा उत ॥ १२ ॥

दीका—अबस पर्वत सस्व रहु तम हुए। ३ अग ६ ग्राविकत्रमा १ समत् १६३७ वर अवस हुए। रिव सित सिव रात नीमन कस ।। करि भी अरतार अवसी दिन रात रठ करि श्रीकल प्रगति प्रदार विषद्ध भी सदमी मन मस्तीर स्कमन्छ। हुम्युमन भी स्कम्प्सी वस करी जावना कीबी ए वेली प्रहो ममसी अवस्थे सांअसित रात दिन यसद्द करह भी सक्की कर कम पालह । À

वैद बीज जल वसए सुक्ति जठ गंडीस थर ।
पन ह्वा प्रस्प पुरुपवास मोगो सिख्यों वर ॥
पसरी वीप प्रदीप स्रविक गहरी या हवर ।
मनशुकेणीत संब फल पामिद स्रवर ॥
विसतार कोच खुवि खुगी विमल प्रशी कितन कहणहार थन ।
समृत जैनि पीयल सतद रोगी कनियाण तनुज ॥ ३१३ ॥

क्कर्य-सूल वेद पाठ तींको बीज जल पार्यो तिको कविवस्य तिने वस्यो करि अडमाबीस हद परिग्रह ।। इहा ते पत्र हुता ग्रुप्त ते कूल सुगन्य वास जोगी भगर शीक्करणजी बेलिंद मांकहर करी विस्तरी जगत्र नह विये दीप प्रतीप । व दीवा थी प्रधिक प्रतक्तत विस्तरी जिके मन मुची एह नठ की जाग्छह तीको इसा फल पांमह । अंबर कहितां स्वर्ण नां नुस्त पांमे । विस्तार करी जगत्र नह विषद विमल कहीता निर्मल श्रीक्तिनजो बेलि मा पर्यो नह कहित हार धन्य तिको पिरा समृत कपरणे बेलि पृथ्वी नह जिलह प्रविचल पृथ्वी नई विदाज श्री कस्याग्य तम बेटा पृश्वीराजह कहा।।

इति कृष्वीराज इत इत्यसः कमस्यो बेलि लंपूर्ण । मुस्यि जग विमल बाचरार्था । संवत् १७४६ वर्ग बेशास्त मासे कोषण पक्षे तिथि १४ अनुवासरे लिखतं उस्सियरा नवः ॥ थी ॥ रस्तु ॥ इति मंगलं ॥

×	हिन्दी		¥٧
नंददास	"		XX-58
हेमराज	,,	४६ पदा हैं	£8-E10
×	,,	,	Ę
×	77		₹ ₹-=0
बनारसीदास	,,		==-{{}
	नंददास हेमराज × ×	नंदरास 19 हेमराज 19 × 19 × 29 ************************************	नंददास 19 हेमराज 11 ४६ पदा हैं × 11 × 27 केमारमीहास

४४मम. गुटका सं० १०७ क । पत्र सं० २३४ । मा० ४×४ इस । विषय-पूजा एवं स्तीत्र ।

१. देवपूजाप्टक	×	संस्कृत	₹ ~¥
२. सरस्वती स्तुति	शानभूषस	**	Y-6
१. पुराष्ट्रक	×	**	%-0
४. प्रस्तवन	शांतिरास		` •
. N. guige	वाविराज		
震荡性病 沙耳		· · ·	•

EXE]			[गुडका-संबद्
६. सरस्वती जयमान	बह्मजिनदास	हिन्दी	₹0-₹₹
७. गुरुजयमाला	**	"	१३-१ ४
म. ल षु(न पनविधि	×	संस्कृत	१६-२३
१. सि डवक रूजा	×	n	4x-#0
१०. कलिकुण्डपादर्वनाथपूजा	यशोविजय	,,	31-34
११. वोडवकारसपूजा	×	,,	\$4-\$E
१२. दशनकारापूजा	×	"	₹€- ४२
१३ नन्दीश्वरपूजा	×	"	ሉ \$- ሉ ሺ
१४, जिनसहस्रनाम	माशाघर	"	४६-४१
१४, धहंद्भक्तिविधान	×	"	४६-६२
१६. सम्बक्दर्शनपूजा	×	"	£5-£8
१७ सरस्वतीस्तुति	म्राशाधर	संस्कृत	£8- £ £
५६. ज्ञानपूजा	×	**	, ६७-७१
१६. महचिस्तवन	×	"	\$e-\$0
२०. स्वस्त्ययनविधान	×	37	30-50
२१. चारित्रपूत्रा	×	**	७६-८१
२२. रत्नत्रयज्यमाल तथा विधि	×	प्राकृत संस्कृत	= १-६१
२३. बृहद्स्तपन विधि	×	संस्कृत	€१-११€
२४. ऋषिमण्डल स्तवनपूजा	×	**	११६-२६
२४ बष्टाह्मिकापूजाः	×	39	१२६- ५१
२६. विरदावली	×	25	१५२-६०
२७. वर्शनस्तुति	×	n	१६१-६२
२=. भाराचना प्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	141-45

॥ ॐ तय. सिखेम्य:॥

श्री जिख्तवरवाणि खेवेवि ग्रुक्त निर्धन्य प्रस्तुमेवी । कहुं धाराधना सुविधार संक्षेत्रे सारी थीर ।। १ ।)

हो क्षपक बयरा प्रवधारि, हवि बास्यो तुम भवपारि । हो सुभट कहुं तुमः भेउ, घरी समक्ति पालन एहु ॥ २ ॥ हॉव जिनवरदेव बाराहि, तूं सिच समरि मन मांहि। सुरिए जीव दया बुरि धर्म्म, हवि खाँडि मनुए कर्म्म ।। ३ ।। विथ्यात कु संका टालो, वराग्रुद वचनि पालो । हवि कान वरे मन बीर, त्यो संजय दोहोलो वीर ॥ ४ ॥ उपप्राचित करि वत सुचि, मन बचन काय निरोधि । तू कोष मान माया खांड़ि, बापुण सूं सिलि मांडि ।। ५ ।। हीं क्षमो क्षमावी सार, जिम पामो सुख भण्डार। तुं मंत्र समरे नवकार, भीए तन करे भवनार ॥ ६ ॥ हिंब सबै परिसह जिपि, प्रभंतर ध्याने दीपि । वैराग्य धरै मन माहि, मन मांकड़ शादु साहि।। ७।। सुशि देह भीय सार, भवलको वयसा मा हार। हिंव भोजन परिए खांड़ि, यन लेई मुनति मांडि ।। 🕻 ।। हवि श्रुएक्सरा पुटि धायु, मनासि छांडो काय। इंडीय बस करि धीर, कुटंब मोह मेल्हे बीर १। १ ।। हवि मन गन गांठु बांचे, तू नरण समाधि साधि । वे साथो मररा सुनेह, जेवा स्वर्ग मुगतिय मसीय ११ १० ।।

×

चन्तिम माग

हिन हंइदि वास्ति निचार, वातु कहिंद्द किहि तु वपार । लिका बद्यसम् दीक्या भागा, सम्यास खांद्रो प्राम्त ॥ १३ ॥ सम्यास तरमां फल बोद, स्वर्ग तुद्धि किस तुजु होद । वित बावक कोल दूं पाबीद, बाही निर्वाण सुवती वालीद ॥ १४ ॥ वे वर्गि तुम्बिन नरवारी, ते बाद क्ववि पारि । की विवत्तेत्रकीति कही विधार, बाराववा प्रविचोचकार ॥ १५ ॥

×

Y

इति भी कारायमा अतियोध समान्त

×

55.]				[गुटका-संप्र
'१. पंत्रमेरुपूजा (बृहत्)	देवेन्द्रकीति	संस्कृत		₹७० ₹८०
३०. समन्तपूजा	ब्रह्मशांतिदा स	हिन्दी		33-025
३१. गराधरवलयरूजा	शुभवन्द्र	सस्कृत		188-311
३२. पञ्चकत्यासकोद्यापन पूजा	भ. ज्ञानभूवरा	,,	धपूर्श	₹₹-₹¥

थ४८६. गुटका सं० १०८ । पत्र मं० १२० । मा० १×१ इश्व । भाषा-हिन्दी । पूर्गा । दशा-जीर्ग ।

१. जिनसहस्रनामभाषा	बनारसीदास	हिन्दी		१–२१
२. लचुसङ्ग्रनाम	×	संस्कृत	7	२-२७
३, स्तवन	×	बरभ्र ेग	श्रपूर्ग	२८
Y. पद	ं मनराम	हिन्दी		35

ले० काल १७३**५ मा**मोज बुदी ६

केतन इह घर नाही तेरी।

घटपटादि नैनन गोचर जो, नाटक पुर्गन केरी।। टॅक ॥

तात मात कामिन मुत बंधु, करम बंध को थेरो।

किर है गौन प्रानगित को जब, कोई नही प्रावत नेरी॥ १॥

प्रमक प्रमत संसार गहन बन, कीवी प्रानि वसेरी।।

मिच्या मोह उदे तें समभो, इह नदन है मेरी ॥ २॥

सदपुर बचन जोइ यट वीपक, मिटे प्रनादि प्रमेरी।

प्रसंख्यात वरदेस म्यान मय, ज्यो जानऊ निज हेरी।। ३॥

नाना विकलप स्थागि प्रापकी, प्राथ प्राप महि हेरी।

गौ मनराम प्रवेतन परसीं, सहजें होइ निवेरी।

५. पद—मो पिय चिदानंद परवीन	मनराम	हिन्दी	40
६. वेतन समिक देखि घरमांहि	"	" मपूर्ण	71
७. के परमेश्वरी की घरचा विधि	n	19	12
६. जबति द्यादिनाय जिनदेव ध्यान गाऊँ	×	27	33
 सम्बद्धाः प्रसुविधि सिरिपास हो 	"	*	14-11

•	,			
१०, पंचमन	ते वेशि	हर्वकी ति	हिन्दी	सं० १६०३ श्रावण धपूर्ण
११. पंच सम	स्वर	×	**	"
१२. मेषकुमा	रगीव	पूनों	हिन्दी	¥0-¥
१३. भक्ताबर	(स्तीत्र	हेमराव	"	YE
१४. पद-स	मोहे क्छून उपाय	क्पचंद	"	80
१४. पंचपरा	नेष्टीस्तवन	×	সাস্থ্য	80-86
१६. शांतिप	16	×	संस्कृत	४०-४२
१७. स्तवन		बाशायर	27	**
१८. बारह	मायमा	कविमासु	हिन्दी	
१६. पंचनंग	ल	🗸 रूपचंद	77	
२०. जकड़ी		30	,	
₹₹.	79	,	, ,	
२२.	**	,,	n	
₹३.	n	दरिगह	"	

सुनि सुनि जियरा रे जू निमुक्त का राउ रे ।

(त) वर्षरावर्ग ने निर्मित सहस्र सुमान रे ।।

वेतिस सहस्र नुमान रे नियरा परस्यों निनि क्या राच रहे ।

कारा पर बाण्या पर बप्पाएग वजन्य पुरुष प्रशाह सहे ।।

धवसी प्रशा की कर्म हं खीलने नुगाह न एक जपान रे ।

संस्ता शास परिवार रे जिंद सू निमुक्त का राज रे ।। १ ।।

करमित विद्या रे अस्ति से से स्वाम से हि स्वयाद रे ।।

सोह्या मोह सर्वार रे मोह्या मोहि स्वयाद रे ।।

सोह्या मोह सर्वार रे जिंद रे निज्यान्य नित संवि रह्या ।

पर परिवार करम मेरियस्य सामायरणि साहि क्या ।।

हिंड क्या कुमान करमारीस सहावस्य सुद्ध कियाय रे ।। २ ।।

तू सित सीवहि न बीता रे बैरिन से काहा वास रे।

प्रवचन दुकराय करें सिनका करें विद्यास रे।।

तिनका करेंहि विद्यास रे सिवडे तू मुझा निह निमयु वरे।

वस्मत्म प्ररत्म करा दुकदायक तिनस्यों तू नित नेह करें।।

प्राप्ते स्वाता प्रापे हिष्टा कहि सम्माऊं कास रे।

रे बीव तू मित सोवहि न बीता बैरिन में काहावास रे।।

ते जगमीहि जागे रे रहे धन्तरस्यवनाइ रे।

केवल विगत भगारे, प्रगटी जोति सुभाइ रे।।

प्रगटी जीति सुभाइ रे जीववे सिच्या रेति विहार्ता।

स्वप्रस्थेत कारण जिल्ह मिलिया ते जग हुवा वार्ता।।

सुग्रह सुमर्भ पंच परमेन्डी तिनके लागी पाय रे।

कहै दरिगह जिन निमुद्दन सेवें रहे धतर स्ववनाइ रे।। ४।।

२४. क्ल्यागुमंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	ले॰ काल १७३१ झासोज बुदी १
२५ निर्वासकाण्ड गाथा	×	प्राकृत	
२६. पूजा संग्रह	×	हिन्दी	

४४६०. सुटकार्स० १०६ । यत्र सं० १४२ । बा० ६४४ ६ आहा ते • काल १८३६ सावसा सुदी ६ । अपूर्ण | बता-नीर्सकीर्सा ।

विशेष-लिपि विश्वत एव अधुक है।

 शनिश्चरदेव की कथा 	×	हि-दी		₹ ₹¥
२. बल्यासमन्दरस्तात्रभाषा	बनारसीदास	,,		14-58
३. नेमिनाय का बारहमासा	×	,,	बपूर्ण	₹4-₹
४. जनवी	नेमियन्द	**		90
 सबैया (मुख होत शरीरको दासिद 	भागि जाइ) 🗙	,,		₹=
६, कविस (श्री जिनराज के ध्यान के	ो उछाह मोहे लागे	99		35
७. निर्वात्काप्यभाषा	भगवतीवास	,,		111

गुंटका-समिद्दे]			
स्तुति (मागम प्रमु को अब भयो)	×	हिन्दी	\$A-\$6
१. बारहमा सा	×	17	35-05
१०, पद व भजन	×	"	A0-A0
११. पारवेंगांवपूजा	हर्वकोसि	n	A4-AF
१२. बाम नींबू का फगड़ा	×	"	५०-५१
१३. पद-कोइ समुद विजयसुत सार	×	99	4 ?-4 0
१४. बुक्सों को स्तुति	भूधरदास	"	યલ-યુદ
१५. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	€•€₹
१६. विनती (त्रिभुवन गुरु स्वामीजी)	मूषरदास	हिन्दी	€8−€€
१७. लक्ष्मीस्तोत्र	प् राप्रभदेव	संस्कृत	40-4=
रैब. पद-मेरा मन बस कीना जिनराज	×	हिन्दी	••
११. मेरा मन बस कीनो महावीरा	हर्षकीर्ति	"	65
२०. पदं-(नैना सफल भयो प्रश्नु दर सग्। पाय) रामदास	n	90
२१. चलो जिनन्द वंदस्या	×	"	७ २ −७३
२२. पद-प्रभुती तुम मैं बरण शरण गहाो	×	19	v.
२३. आमेर के राजाओं के नाम	×	,,	હર્ષ
RY. "	×	**	9 €
२५. विनती-बोल २ मूलो रे भाई	नेविचन्द्र	77	94-9£
१६. पर-चेतन मानि से बात	×	37	30
७. मेरा मन बस कीनो जिनराज	×	21	₹•
 विनती-वंदू भी घरहत्तदेव 	हरिसिंह	**	<१- = २
६. पर-सेवक हूं बहाराज तुम्हारो	दुशी च न्द	,, .	= 5-EY
o. मन वरी वे होत उद्यावा	×	n	<y-41< td=""></y-41<>
१. धरम का डोल बढाचे सूली	' X		59
२. घव मोडि तारोजी जगदग्रह	मनसाराम	,	46
३. सामो दौर सामो दौर प्रश्रुवी का ध्याममें		n	
४. सामरा विमराज तेरा		**	44
ड. आसरा विनरस्य तरा	×	79	44

£ £ 8]			[गुटका संग्रह	
१४. यु जाली ज्यों तारोजी	×	हिन्दी	52	
१६. तुम्हारे वर्श देखत ही	जोधराज	"	٠.	
३७. सुनि २ रे जीव मेरा	मनसाराम	**	६०-६१	
१८. गरमत २ संसार चतुर्गति दुस स	₹i ×	,,	£\$£\$	
३१. भीनेनकुवार हमको क्यों न उतार	तेपार 🗴	,,	€X	
४०, भारती	×	**	v3-#3	
४१. पर-विनती कराखां प्रश्नु मानो	जी किशनग्रलाव	"	ęς	
४२. वे की प्रमू तुम ही उतारोंने पार	,,	n	33	
४३, बसूबी मोह्या छै तन मन मारा	×	**	33	
४४. बंदू बीजिनराज	कनककीर्ति	**	\$ • • - \$ • \$	
४५. बाबा बजय्या प्यारा २	×	**	१०२	
४६. सफल वडी हो प्रमुजी	सुशालचन्द	,,	१०३	
40. 4 €	देवसिंह	"	१०४−१ ●¥	
४८. बरसा चलता नांही रे	मूघरदास	,,	१०६	
४६. मक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	मं स्कृत	200-20	
५०. बोबीस तीर्थंकर स्तुवि	"	हिन्दी	११६−२१	
५१. त्रेषकुभारवार्ता	**	"	8 2 8 - 2 x	
५२. झनिस्चर की कथा	"	"	१२ %—४१	
५३. कर्मयुद्ध की विनती	*	"	\$X5-X3	
५४. पद-धरज कर छू बीतराग	"	"	१४६-४७	
५५. स्कुट पाठ	"	**	\$×≈- ₹ \$	
४५६९. गुटका सं० ११०। पत्र सं० १४३। मा० ६×४ इ.च । मावा-हिन्दी संस्कृत ।				
१. निस्यपूजा	×	मंस्कृत	१-२६	
२. मोसशास्त्र	उमास्वामि	,	38-86	
३. वक्तामरस्तोत्र	धा∙ मानतु [ं] ग	"	५०— ५८	
४, पंथमंत्रस	रूपचन्द	"	% =- % =	

तुरका-संबद]			[६६४
u. कल्यासामन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसी रास	हिन्दी	₹≈-७ ५
६. पूजासंग्रह	×	,,	७४-१०२
७. विनतीसंग्रह	देवासहा	**	१•२ -१ ४३

४५६२, शुटका सं०१११ । यत्र चं॰ २व । बा॰ ६५४४६ इ.च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । यणा-सामाज्य |वरस्तोष मानतु वाचार्य संस्कृत १–६ |क्टोच व्ययस्थित १११

मानतु गाचाय	संस्कृत	3-7
पद्म प्रमदेव	"	££ .
×	प्राकृतहिन्दी	39-98
	पद्मप्रमदेव	पद्मप्रमदेव ,,,

विशेष-- "पुस्तक बातामरजी की रं० लिक्समीचन्द रैनवाल हाला की छी। मिती चैत सुदी ६ संबत् १९४४ का में मिनी सफर्त राज जी राठीडबी की सूर्यवीसू।" यह पुस्तक के ऊरर उन्नेख है।

> ४४६३. गुटकासं० ११२ । पत्र मं० १४ । बा० ६४६ इंच । भाषा—संस्कृत । ब्रःस्तुत । विशेष---पूत्राधो कासंग्रह है ।

४४६४. गुटका सं० ११३। पत्र सं० १६-२२। सा० ६३-४६ र व । सपूर्ण । दशा-सामान्य । स्रथ डोकरी चर राजा भोज की वार्ता खिक्कारे । पत्र सं० १०-२०।

बोकरी ने राजा जोज कहां बोकरी है राज राज । बीरा राज राज । बोकरी यो मारण कहां जाय है । बीरा है मारण पर्यो माई यर परयी गई ॥ १ ॥ बोकरी मेहे बटाउ है बटाउ । ना बीरा ये बटाऊ नाही । बटाऊ तो संसार मांही सोय और हो हो ॥ एक दो बांद धर एक सूरज ॥ २ ॥ बोकरी मेहे राजा है राजा ॥ ना बीरा ये तो राजा नाही । राजा तो संतार हो हो ॥ एक दो बांद धर एक सूरज ॥ २ ॥ बोकरी मेहे थोर है थोर है थोर । ना बीरा ये बोर राजा तो संतार में दोय धोर हो । एक तो जात घर एक पर पाणी ॥ ३ ॥ बोकरी मेहे थोर है थोर । ना बीरा ये बोर ना । थोर तो संतार में दोय धोर ही ही । एक ते ना थोर धीर एक जन वीर ही थोर । ना बीरा मेहे तो हमवा है हनवा । ना बीरा ये तो हमवा नाहीं ॥ हमवा तो संतार में दोय धौर ही ही । कोई पराये घर ससत मंगिया आह् उका पर में है पिए नट जाय सो हमवी । १ ॥ बोकरी मूम माता है माता । ना बीरा माता तो दोय धोर ही ही पए कतो वदर मोही मू काहे सो नाता । इतरी वाय माता ॥ ६ ॥ बोकरी मेहे ते हारचा है हरपा । ना बीरा ये क्या ने हारपो । हारपो तो संतार में तोन धौर ही है । एक तो नारण वालती हारपो । दूपरो देटी जाई सो हारपो तो स्वरी और सी बारपो । छ ॥ बोकरी मेहे बारवा है नावा । ना बीरा ये वापरा नाही । बारवा तो स्वरा सीर ही एक तो नार की वायो वापरी । वीरारो के की नाहा वापरा । हमरी हमरी हम सी बारपी । वीरारो के की नाहा वापरा सीर ही वापरा ही बारपो ।। वापरा नाही । बारवा तो स्वरा बारपो । वीरारो के की माता वापरा सीर ही वापरा ही बारपो ।। वापरा सीर ही बारपो ।। वापरा सीर ही बारपो । वापरा ही बारपो । वापरा सीर ही बारपो । वापरा ही बारपो । वापरा सीर ही बारपो । वापरा सीर ही बारपो । वापरा सीरपो ही बारपो । वापरा सीरपो सीरपो ही बारपो । वापरा । ही बोरपो । वापरा सीरपो ही बारपो ।। वापरा ही बारपो । वापरा सीरपो ही बारपो । वापरा सीरपो सिका ही साथ सिका ही सीरपो ही साथ सीरपो । वापरा सीरपो । वापरा । वापरा सीरपो ही साथ सीरपो । वापरा सीरपो । ही सीरपो सीरपो । वापरा ही सीरपो सीरपो । वापरा सीरपो । वापरा ही सीरपो सीरपो ही सीरपो । वापरा ही सीरपो सीरपो । वापरा ही सीरपो सीरपो सीरपो ही सीरपो सीरपो ही सीरपो सीरपो । वापरा सीरपो सीरपो सीरपो सीरपो सीरपो । वापरा सीरपो सी

मिला। बीरा मिलबा बाला तो संसार में न्यारि धोर ही है। जैको बार विरथा होती हो वां निलसी। घर जे को बैटो परदेश दूं धायो होती सो वां मिलसी। दूसरो सांवता मादवा को मेह बरस सी सी समन्वर दूं। तीसरो वालेब की भारा पैराबा जाती सो वो मिलसी। बौदा स्वीपुरुव मिलसी। डोकरो जाच्या है जाच्या। मेरिया कहे न उनकेउ भनसी धाया। पुरुवा धार्द पारवा बोलार लाखा।। १०॥

।। इति डोकरी राजा भीज की वार्ता सम्पूर्ण !।

अप्रदेश. गुटका सं० ११४ । पत्र सं० ६-७२ । ब्रा० ६३×४३ दश्च । विशेष—स्तोत्र एवं पूजा संग्रह है ।

४२६६. गुटका सं० ११४ । पत्र सं० १६८ । घा० ६४५ इ व । आया-हिन्दी । अपूर्ण । दया-सामान्व विशेष---पूजा संग्रह, जिनयज्ञकल्प (धाषाधर) एवं त्वयंग्रस्तीत्र का अंग्रह है ।

४४६७. सुद्रका सं० ११६ । पत्र सं० १६६ । घा॰ ६४५ इ'ब । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । दवा-जीले । विशेष—पुटके में निम्न पाठ उल्लेखनीय हैं ।

४. भूवनकोति गीत

बूचराज हिन्दी

27-28

प्राण्डि प्रनत्त नित कोटिहि सारिह मुद्ध पुर सुद्ध पुर वेदहि सुक्ति रलीए।।

कारि प्रनत्त नित कोटिहि सारिह मुद्ध पुर सुद्ध पुर वेदहि सुक्ति रलीए।।

कारि रली बन्दह सकी सुद्ध पुर नविष गोश्म सम सरे।

जापु वेलि बरशणु टलिह भवदुल हो ह नित नविनिध घरे।।

कर्नु र वन्दन सगर केसिर माणि भावन भाव ए।

श्रीपुत्रवकीति वरणा प्रशामोह सखी साज बढाव हो।। १।।

तेरह विवि वारित प्रशामोह सखी साज बढाव हो।। १।।

तेरह विवि वारित प्रशामोह नित्त हिनकर विनकर तिम तिप सोहद ए।

सर्वीति मासिउ धर्म मुखाव वारित हो वारित भुम माहदूर ।

मोहिनित वारित प्रशासिक स्वाया मतत्त्व प्रमाम भाक्ष ए।

वर दश्य घर पश्चासिक स्वाया मतत्त्व प्रमाम भाक्ष ए।

स्वायो परिष्कृ सहस्य धर्म सुवार गुनु तेरह विवे।। २।।

स्वायुष्प स्वादन्त प्रशास्त मोहए मोह्य सहस्य ताहियो ए।

स्तिपति नित्तु संति ह महिस्य प्रसु कोवदुष्प कोवदुष्परितिह रक्तीयो ए।

स्तिपति नित्तु संति ह महिस्य प्रसु कोवदुष्प कोवदुष्परितिह रक्तीयो ए।

रालियो जिमि कं बैं। करिहि वनउ करि इस बोलइ। गुरु सियास मेरह जिन्हा जंगमु पवरा सह किम डोलए । को पंच विषय विरतु चितिहि कियर सिर्ज कम्मह तागु । श्री भूवनकीति चरता प्रतामद घरद घठाइस मूलग्रुता ॥ ३ ॥ दस लाक्षरण धर्म निखु चारि कुं संजमु संजमु मसरणु वनिए । सन्तु मिन्नु को सम किरि देखई ग्रुरनिरगंधु महा सुनीए।। निरगंषु युक् बद बहु परिहरि सवय जिब प्रतिपालए। मिथ्यात तम निर्द्धा दिन म जैराधर्म उजालए।। तेर्मवतहं प्रसम् वित्रहं कियउ सकयो जम । न्त्री मुक्तकोति वरण वरणमञ घरइ दशसक्षिण धर्म्यु ।। ४ ।। सुर तरु संघ कलिउ चितामिश दुहिए दुहि। महो भरि वरि ए पंच सबद बाजहि उछरंगि हिए।। गावहिए कामिशा मधुर सरै मित मधुर सरि गावित कामिशा। जिलाहं मन्दिर धवही सष्ट प्रकार हि करहि पूजा कुसममाल बढ़ावहि ।। बूचराज भारत भी रत्नकीति पाटिउ दयोसह पुरो । भी भुवनकीति सासीरवादहि संचु कलियो सुरतरो ।!

।। इति भाषार्थ श्री भुवनकीति गीत ।।

माडी परीक्षा
 मायुर्वेदिक नुसले
 पायुर्वेनायस्तवन

×	संस्कृत	₹ ¥ -₹≈
×	हिल्दी	70-7-95
समयराज		2-6

तुम्बर सोह्या प्रश्न निनन, जन जीवता जिला चन्दोती ।

मन मोहन निहंगा निजन, सदा २ चिरनंदो जी ।। १ ।।

जेसननेक बुहार्रिए पान्यत परनाननोजी ।

पान जिलेबुर जब बसी फरिबसो दुरत्य कन्दोनी ।। २ ।। थे० ।।

विस्तु वास्तिक मोती जक्यत कन्दालम रहामो थी ।

विकार सेहर बोह्यन पुनिय बरिवण बालोगी ।। ३ ।। थे० ॥

निरमल तिसक सोहुषस्युउ जिन पुत्र कुमल रितालोशी।

कानों कुष्यल दीपतां फ़िक जिय आक समालोशी।। ४ ॥ वे॰ ॥

कंठि मनोहुर कंठिनाउ उरि वारि नव मिर हारोशी।

बहिर सवहि भना करता सन्न भन कारोशी।) ४ ॥ वे॰ ॥

सरकत मिंग तुनु दीपतो मोहुन सूर्यत मारोशी।

सुन्न सोहुन संपद मिलह जिस्सुवर नाम अपारोशी।। ६ ॥ वे॰ ॥

हन परि पास जिस्सिक भेटबाउ कुल सिस्मारोशी।

जिस्सवन्न सुर्य पसां जन्म सम्बराज मुक्कारोशी।। ७ ॥ वे॰ ॥

शिक्ष की पार्चनास्रस्तवन सम्सोशियां।।

४४६८. शुटका सं०११७। पत्र सं०३४०। झा०६३४१ डखः जापा—संस्कृत हिन्दी । झपूर्मा । दक्षा सामान्य।

> विशेष-- विविध पाठों का संग्रह है। चर्चाएं पूजाए एवं प्रतिक्वादि विषयों में संबंधित पाठहै। ४४६६. गुरुका सं० ११८। पत्र सं० १२६। ग्रा० ६×४ इव।

१. शिक्षा चतुष्क	नवलराम	हिन्दी	¥
२. श्रीजिनवर पद वन्दि कै जी	वस्रतराम	"	¥-9
३. घरहंत चरनचित लाऊ	रामकिशन	"	€-₹•
४ चेतन हो तेरे परम निधान	जिनदास	91	११-१ २
५. चेत्यवंदना	सक्लचन्द	संस्कृत	१२-१३
६. क्व्लाष्ट्रक	पद्मनंदि	n	₹₹
 पद—माजि दिवसि धनि लेखे लेखना 	रामचन्द्र	हिन्दी	30
द, पद–प्रातभयो सुमरि देव	जगराम	35	¥₹
 पद—युफलघड़ीजी प्रमु 	बुशालचन्द्र	11	৬ৼ
१०. निर्वाणमूमि मंगल	विष्य भूषर्ग	"	=4-6•
		संवत् १७२१ में भुसावर मे पं० वे	सरीसिंह ने निस्ता।
११. पश्चमगतिवेशि	हर्ष कीति	हिन्दी	११ ¥− १ =
		रचनासं∘ १६ ⊭३ प्रति वि	मित्र सं०१६३०

४४००. गुटका सं० ६६६ । पत्र सं० २४६ f सा० ६३×६ दश्च । ते० काल सं० १८३० असाद बुरी न । सपूर्वा । दशा—सामान्य ।

विशेष---पुरावे चाट वक्कुर में व्यवस देव वैरपालय में रतना पुत्रारी ने स्व पठनार्प प्रतिलिपि की बी ! इसमें कवि वालक इन्त सीता चरित्र हैं विसमें २५२ वस हैं | इंस हुटके का प्रथम तथा मध्य के प्रमय कई पत्र नहीं हैं |

४४०२. गुटका सं० १२० । पत्र सं० १३३ । सा० ६×४ इ.स. । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय संयह । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. रवित्रतकवा

हिन्दी २-३ ले० काल सं०१७६३ पीव सु०=

प्रारम्भ---

सक्त जिनेस्वर मन वरी सरसति विश ब्यार्क । सब्द्वर बरण कमन निम रवित्रत प्रण गाऊँ ॥ १ ॥ व.सारसी पुरी सोमती मतिसागर तह ताह । सात पुत्र सुद्दासन्ता कीठे टामे बाह्र ।। २ ।। मुनिवादि बेठे लीबो रविकोबत सार। सांत्राजि कहूं बढ़ासा कीया वत नंत्रो प्रपार ।। ३ ।। नेड् बी धन करा सङ्गाबो हरजीयो क्यो सेठ । सात पुत्र बाल्या परदेश अजोध्या पुरसेठ ॥ ४॥ ै

च विकास

वे नरनारी बाब सहित रविनों बत कर सी। निमुवन ना फल ने नहीं शिव रकनी वरसी ॥ २०॥ नदी तट नष्म विचानशी सूरी रावरत्न सुनुवन । नमकीति कृष्टी पाव नवी क्रष्टासंग गति पूचना ॥ २१ ॥ इति रविवत कमा संपूर्ण । इन्बोर मक्ने सिवि कृती । ते - काल हो - १७६३ पीय बुधी द पं - सवाराय ने जिसी की बी |

२. पर्मसार सोवर

.do बिरोमशि

कात १७३२ । केंद्र कात, १७१४ वयनितका पूरी में कीदवाराक ने जीतिनी

	()			[गुरका-संबद्
۹,	विकास्तर स्तोषभाषा	भवनगीति	हिन्दी	4.4
¥.	इससूच बहुक	×	६ स्कृत	≈ ₹~₹•
		दयाराम ने सूरत मे	प्रतिलिपि की थी। स	१७६४। पूजा है।
1	विवाहिया लाकाश्चन्द	श्रीपास	सस्कृत	61-61
4	पद-विई वेई वेई नृत्यति ग्रमरी	कुमुदचाद	हिन्दी	ę o
v	पदप्रात समै सुमरो जिनदेव	भीपाल	"	ę 3
•	पास्कविनसी	ब्रह्मनायू	,,	€ =-€€
ŧ	कविश	बह्यगुलाल	**	१५४

गिरनार की यात्रा के समय सूरत म निपि किया गया।

४४०२ गुटका स० १२१ । पत्र स० ३३ । मा० ६३×४६ दश्च । भाषा-हिन्दी ।

विशेष-विभिन्न कवियों के पदा का समृह है।

४४०३ गुटका स० १२२ । पत्र स० १३० । बा० ५°×४६ इख । भाषा-हिन्दी सस्कृत ।

विशव-तीन बोबीसी नाम दर्शनस्तोत्र (सस्कृत) कत्यागुमदिरस्तीत्र मावा (बनारसीटास) भारामर स्तोत्र (मानतु गावार्य) नश्त्रीस्तोत्र (सस्कृत) निर्वागकाण्ड पवमगल त्यपूजा सिद्धपूजा सोलहकारण पूजा पश्चीसो (नवस) पार्वनायस्तोत्र सूरत का बारहसडी बाईस परीवह जैन''तत (मूधरदास) सामान्यक नीका (हिन्दी) भादि पाठा का सम्रह है।

४४०४ गुटना स० १-३ । पत्र स० २६ । मा० ६×६ इस भाषा सस्त्रत हिंदा । दशा-जीर्राशार्म ।

१ अक्तामरस्तोत्र ऋदिमत्र सहित	×	संस्कृत	?-१=
२ पर्व्याविध	×	27	१=-२२
३ जैनपचीसी	नवलराम	हिन्दी	₹₹~₹£

४४०४ गुटका स० १२४। पत्र स० ६६। घा॰ ७×६ ६**॥**।

विशेष-पूजाओ एव स्तोत्रो का सग्रह है।

४४०६ शुद्रको स० १२४। पत्र स० ४६। बा॰ १२×४ दश्च । पूर्ण । सामान्य सुद्ध । दशा-सामान्य ।

१ कर्म प्रकृति वर्षा × हिन्दी २ बोबीसठासा वर्षा ×

१. बंगदेश । २. वंगदेश । ६. कॉलगदेश । ४. तिलंगदेश । ५. राष्ट्रदेश । ६. लाष्ट्रदेश । ७. कर्लाटदेश । व. मेदपाटदेश । ६. वैराटदेश । १०. गीरुदेश । ११ वीरुदेश । १२, हाविरुदेश । १६. महाराष्ट्र-देम । १४. सीराष्ट्रदेस । १५ काममोरदेस । १६. कीरदेश । १७. महाकीरदेश । १८. मगबदेश । १२. सूरसेनुदेश । २०. कारेरदेश । २१. कम्बोगदेश । २२ कमनदेश । २३. अकरदेश । २४. करहाटदेश । २४. क्रव्हेश । २६. क्राएपदेश । २७. कम्बदेश । २८ कीसिकदेश । २१. सक्देश । ३०. प्रधानकदेश । ३१ कीसिकदेश । ३२. 📽 ं ''') ३३. कास्तदेश । ३४. कापूनदेश । ३५ कछदेश । ३६. महाकछवेश । ३७. मोटदेश । ३८. महामीटदेश । ३१, कीटिकदेश । ४०, केकियेश । ४१ मोलगिरियेश । ४२ कामकादेश । ४३ कृष्कुरादेश । ४४, कृतस्रवेश । ४५, कलकुटदेश । ४६, करकटदेश । ४७. केरसदेश । ४८, खश्चदेश । ४८ वर्ष्यदेश । ५०. सेटदेश । ६८. विक्रार-देश । ४२. वेदिदेश । ४३ जालंबरदेश । ४४. टंक्स टक्क । ४४. मोडियाल्देश । ४६. नहालदेश । ४७. तुमुदेश । १८ नायकदेश । ११. कीमलदेश । ६० दशासादेश । ६१. दण्डकदेश । ६२. देशसभदेश । ६३. नेपासदेश । ६४. नर्सक-देश । ६४. प्रभावदेश । ६६. प्रमावदेश । ६७. प्र इदेश । ६८. प्रथमप्रदेश । ६६ प्रस्पप्रदेश । ७० संब्रदेश । ७१. बसु-देश । ७२. गंबीरदेश । ७३. महिष्मकदेश । ७४. महोबयदेश । ७४. मृरण्डदेश । ७६. मुरलदेश । ७७. मस्त्रमधेश । ७८. मृदगरदेश । ७१. मंगनदेश । ८०. महावर्तदेश । ६१. पदनदेश । ६२. शारामदेश । ६३. राहकदेश । ६४. बह्योत्तावेस । ८१. बह्यावर्तदेश । ८६. बह्यागुदेश । ८७ वाहकदेश । विवेहदेश । ८१. वनवासदेश । १०. वनायुक-वेस । ६१. वाल्डामदेस । ६२. वजनदेस । ६३ धर्वन्तिदेश । ६४. विश्वेस । ६४. सिंहमदेश । ६६. सहादेस । १७. पुपरवेस । १८. सुहबवेस । १६. बस्मकवेस । १००. हुस्सवेस । १०१. हुर्म्मकवेस । १०२. हुर्म्मकवेस । १०६. ईसवेम । १०४. हृहमवेस । १०५. हेरकवेस । १०५. वीत्सवेश । १०७. वहावीत्सवेश । १००. वहावीत्सवेश । १०१. योज्यवेश । ११० गांबाक्येश । १११. प्रवरातवेश । ११२ पारसञ्जूसवेश । ११३. प्रवासकावेश । ११४. कोलववेस । ११४ शाकंशरिवेश । ११६. कनउथवेस । ११७. बादनदेस । ११०. उदीविसवेस । ११६. नीका-वरवेश । १२०. गंगानारवेश । १२१. संवाखवेश । १२२, काकविरिवेश । १२३, नवसारिवेश । १२४, वालिरिवेश ।

_{र्य}्द. विमानादियों के १६३ मेव

`x

हिन्दी

^{ैं} क्रीहिट-- यह गाम पुरुष ने बाली बीका हुया है।

```
E Maint-sing
```

```
🗷 भृष्टिस एव पद्य संग्रह
                                         ×
                                                           हिंदी सस्ट्रल
व हादचानुत्रेका
                                          ×
                                                            संस्कृत
दे सुक्तावनि
                                         ×
                                                            , न० कान १८३६ धावरा धुवना १०
१० स्कुट पदा एवा मन शादि
                                         ×
                                                           हिन्दी
         ४४०७ शुटका स० १२६ पत्र स० ४४। आ० १० ४३ दक्क भाषा हि.दी सस्कृत । विषय-वर्षा
         विकेष---क्षांबों का सग्रह है
         श्रम्थल सुरक्षा स० १२७ । पत्र स ३३ मा॰ ७×४ डळ
         विक्रीय---पूजा पाठ सम्रह है।
         प्रश्रुट गुटका स० १२७ क। पत्र स० ११। मा० ७३×६ हवा।
 १ शीधवीष
                                  ×
                                                            संस्कृत
                                                                                  8-88
 २ तचुवांचर्गी
                                  ×
                                                                                 39-49
                                                विशेष--वैद्यावधम। म० नाम स० १८०७
                                 नोपति
 ३ व्योतिब्यटसमासः
                                                           नस्कन
                                                                                 ¥0-48
                                  ×
 ४ सररसी
                                                           हिन्दी
                                                                                 48-44
                                                       ग्रहा का देलकर वर्षा हाने का सौग
         ४४१० मुदका स० १२८ । पत्र स० ३ ६० आ० ७२× इसा मावा नस्कृत ।
         विशेष--- सामान्य पाठी का सबह है।
        ४४११ शुटेका सं ० १२६ । पत्र स० ६--२४ । झा० ७⋌८ ६ च । मावा-सस्कृत ।
        विशेष---वैत्रपासस्तोत्र सक्ष्मीस्तोत्र (स०) एव पश्चमञ्जूलपाठ है।
        हरूरेव. मुद्दका सं० १३०। पत्र स० ६८ । घा० ६×४ ६ व । से० कास १७६२ प्रापल बुती १० ।
१ चतुर्वेशसीर्वेक्ट्ररपूजा
                                                                                 1-44
२ चीवींसवर्थींक
                                 वीसतराम
                                                                                **-
३ पेंडिजेशासन
                                   ×
                                                                                    44
        ४.४१३ शुद्रका स०१३१। पत्र स०१४। बा० ७×१ इव । भाषा सस्हत हिन्दी।
        विक्षेष--सामान्य पछो का सम्रह ।
        ४४१४ शुद्धा स० १६२ । यत्र सं० १४-४१ । सा० ६×४ ६ व । नावा-कियी ।
```

4

अप्रश्नेतः गुरुका सं० १३६ । पत्र सं० १२१ । सा० ४३×४ इ'व । नावा-संस्कृत दिन्दी ।

विशेष— कह्दाला (वालसराय), पंचमञ्जल (स्वयन्त), पूर्वाये एवं(तस्वर्शसूत्र, ककामरस्तीत साहि वा संबद्द है।

४४१६. शुरुका सं० १३४। पत्र सं० ४१ । मा॰ १३×४ इ'व । नावा-संस्कृत ।

विशेष-व्यक्तिमानस्तीत, स्क्वपुरास, चनवदीताके कुछ स्वतः। से० काम सं० १८६६ माच सुधी ११ । ४५१७. शुद्रका सं० १३४ । पत्र सं० ११-१४ । मा० १६४४ ४ वं । वावा-संस्कृत दिली । क्यूसी

विशेष--पंचमञ्जल, तत्वार्थसूत्र, झादि सामान्य पाठों का संबद् है।

४४१८, गुडका सं० १३६। पत्र सं० ४-१०८। बा॰ ८३×२ रख। नावा-बंत्कृतः।

विशेष-अक्तामरस्तोष, तत्वार्वसूत्र, श्रष्टक सादि हैं ।

४४१६. गुटका सं० १३७ । पत्र सं० १६ । बा० ६×४३ । आवा-क्रियो । अपूर्ण ।

गोरिण्यापारी (कृष्ण) के कवितः वर्गवात, करोत, विषिध देव हिन्दी ३ कविता है:
 र वाश्विषती के कविता पासिय ...

वाजिय के वरिवर्तों के शर्मव हैं। जिनमें २० पन हैं। हनमें से निरम् के संग के २ सम्य कीचे अस्तुता विभी वाले हैं।

नाबीद विर्यत बेहर कहो कहा तुम्म वॉ । यर कमान की मीय करी शीव शुम्म की । पहले मनती मोर दीर को तान हो, वरि हां पीचे हारत हरि जगत तब बाब मार्च 11२11 विन पासन बेहास रही कों जीव रै। बरद हरद ती वर्ष किया तीहि रीवरे । वर्षित नाम के तमा है के बास है। वरि हो जब बीच माना पीच मीर कों केवना 11२211 कहिंचे तुमिचे राज और न नितर रै। हरि क्रमुर की ब्लाम सं वरिषे नित्य रै। बीच विसम्बर्ध रीम प्रमुद्ध राज की। परि हो जुम बंगति गांविय कही कों कान की २५11 2824- गुहक्का संक रेड्ड । वण बंग री। बांग अंटरट्ट होंग। माना-विकास सं विकास-कहा न

पुत्र कुछ । यथा-सामान्य

विकेष-पुरस्तानी स्थापक पाना ।

्रिक्ति स्टब्स्य स्टब्स्य सं १४०। यत सं ० ८। या ६६ ४ रहे १ र । श्रास-हिसी । विषय-पूत्रा । ते ० क्ष्या से १६०१ सावाद सुदी १४ । पूर्वी एवं सुद्ध दशा-सामान्य ।

विशेष-सोनागिरि पूजा है ।

४४९९. गुटका सं० १४१ । पन सं० ३७ । मा० ३×३ इच्च । भाषा संन्तृत । विषय-स्तीत । विषय-विष्णु सहस्रताम स्तीत है ।

र्थं १२ रीटफा सं०१४२ (पत्र सं०२०। प्रा०४,४४ इ.व.। भाषा⊸हिन्दी। ले० काल सं०१६१८ स.सरी १४।

३११ विशेष—पुटके में निस्त २ वाठ उल्लेखनीय है।

रै. चहवाला धानतराय हिन्दी २. चहवाला किवान

१-६ १०-१२

प्रदेश शुरुका संव रेपर। पत्र सेव रेपर। माव ११,४४ इ.स.। आया-हिन्दी संस्कृत । नेव काल रेक्टका पूर्ण।

विषेय -- सामान्य पाठों का संग्रह है ।

४४२४. गुटका सं० १४४ । पत्र सं० ६१ । मा० व×६ ६ व । भाषा-सस्कृत हिस्सी । पूर्ण । विवोष—सामान्यः पाठों का संग्रह है ।

क्रेक्टर्ड. शुटका संवे १४४ । यन सन् ११ । यान ६४४ १ न । भाषा-संस्कृत । विषय-पक्षीशास्त्र । सेन काल १८७४ ज्येष्ठ सुरी १४ ।

प्रारम्भ के पश्च--

वयस्क्रव्यवहारेवं प्रश् सान्त्रविशादः । विष्णुदर्ववीभाग यक्षते एक्पिक्ष्यः ॥१॥ स्रवेत सान्त्रसारेगु सीके कालवर्य वित । सम्बद्धाः विद्युज्यन्ते सर्वकार्येषु निश्चितं ॥२॥

े देदरेश गुटेका सं० रेष्ट है। पत्र सं० २५ है तो ० ७४४ है वे। भाषा-हिन्दी । ब्रपूरों । बहा-सामान्य विशेष--- मादिनाच पूजा (सेवकराज) मजन एवं नेमिनाच की भावना (हेवकराज) का के वह है। अही पहाने भी जिल्हे गये हैं। स्विकराज पत्र सामी हैं। ४४२८. गुडका सं० १४७। वन सं० ३-५७। बा० १४१ इ'व । नाया-संस्कृत । विवय-ज्योतिक ।

विशेष-चीझबोध है।

४४९६, सुद्रका सं० १५८। वन सं० ११। मा० ७४१ इ.च । माचा-संस्कृत । विषय स्तीन संबह है ४४३०. गुडका सं० १४६ । यन स॰ २६ । सा॰ १४६३ इ.न । माना-किसी । से॰ काल सं॰ १८४१

कातिक सुदी १ । पूर्ण । दशा-जीर्स ।

१. बिहारीसतसई विहारीसास

बुन्दक्रि

२ बृन्द संतसई

७०० पक्ष हैं। ते० काल सं० १०४६ चैत सुदी १० ।

वे. कावल

देशीदास

. ४.४.२१. गुटका सं०१४० । यत्र सं०१३४ । सा०६३४४ इ'च । बावा–सस्कृत हिन्दी । से० काल

सं० १८४४ । दशा-जीर्स शीर्स ।

विशेष---निपि विद्वत है। क्लका बत्तीसी, राग बीतसा का दूहा, फूल मीतसा का दूहा, मार्थि पाठ है। घकांश पत्र साली है।

४४३२. गुटका संट र¥१ पत्र सर्व १६ । धा॰ ६४४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विजेष---पर्वो तथा विनितियों का संग्रह है तथा जैन पर्वोत्ती (नवसराव) बारह वावना (दौसतराव)

१४१६ शुद्धका ००१४ । यत्र संक्रीरण । मार्व १२४४ इ.स. । बाबा-संस्कृत हिन्से । स्था-बीर्स

विज्ञेष--विजिल मुन्यों में से बोटे २ पाठों का संबद्ध है। यह १०७ वर बहाएक पुटावृत्ति उल्लेकतीय है। १११ है। युरका सं० ११३ । यम सं० ६० । बा० «X१२ इ'व । माया-हिन्दी संस्कृत । विवयन संबद्ध

şw. }			[शुरुक ा संब ध
१. चतुरसोनी गीता	×	77	58-5A
४. चानवत गहिना	×	हिन्दी	२५-५१
४. चाराचत माहुन।	^		इं देवाबिदेव स्तीम है।
३. महामारत विष्णु सहस्रकान	×	संस्कृत	४२-=€
४४३६, गुटका सं०	(स्थापत्र सं० ६व । ६×६	इंच। भाषा-संस्कृत । पू	र्ण ।
१. बोकेन पूजा	×	संस्कृत	?-3
२. पार्वनाय जयमाल	×	77	¥-{\$
३. सिंडपूजा	×	n	१ २
y, पारवेंगामाष्ट्रक	×	"	7-5
४. बोडसकारसपू जा	बाबार्य केशव	,,	₹~ ₹ ¥
६. सीलह्कारक वयमाल	×	श्रपश ंश	3 5- 40
 दशस्त्रक्षण् जनमान 	×	7	*1-43
ब, हावस्त्रतपूजा जयमान	×	0 (T/O	£4~#•
 शुभोकार पेंतीसी 	×	#	= 1 -= 1

४,४,३७, शुद्धकार्सं० १,४६ । यजसं० १७ । सा० ४.४३ इंचा ले० काम १७७६ ज्येह मुदी २ । काला-हिल्सी। यजसं० ७६ ।

विशेष-वावव वंशावित वर्शन है।

४४३८. गुटका सं० १४७। पत्र सं० ३२ । बा० ६×५ इंच । ते० काल १८३२ ।

विशेष---मकामरस्तोष, सकार वायनी, (बानतराम) एवं पंचनंपल के पाठ हैं। पं॰ सवाईराम ने नेनिमान चौदालय में सं॰ १०३२ में प्रति लिपि की।

४८६६. गुटका सं० १४७ (क) पत्र सं० १४१। मा॰ ६४४ ६का। माशा-दिली। विकिस कवियों के वर्षों का संबद्ध है।

स्थ्रपुर, गुटका संव १४६ । यम वंव १० । बाव १४६ इंच । माना-हिन्ती । तेव काल १०१० । वसा-भीवी । विवेद-सामान्य वसीकी वर पाठ है।

प्रथप्तः गुरुका सं० रेश्वः। यत्र सं० १६०। मा० ७४४। ते० काल-श्रं वया-पौर्याः। विकिश्व कवियो के वयों का संग्रह है। ४४४२, गुडका सं० १६०। यत्र तं० ६४। बा० ७४६ इरुव । माया-संस्कृत हिन्दी । पूर्ण । विशेष-सामान्य पाठो का संग्रह है।

अक्षप्रदेश शुद्धका सन् १६१ । यत्र सं २६ । मान ५×१ इस्त्य । भाषा हिन्दी संस्कृत । से० कास १७३७ पूर्ण । सामान्य पाठ हैं ।

४.४४४४. शुटका सं०१६२ । यत्र तं०११ । सा०६४७ इत्यत्र । भाषा-संस्कृत । सनूर्ण । जूनाओं का संग्रह है।

४४४४. गुटका सं० १६३। पत्र सं० २१। मा० ५×४ इञ्च। मावा-संस्कृत।

विशेष-भ कामर स्तोत्र एवं दर्शन पाठ मादि है।

४४४६. गुटका सं० १६४ । पत्र सं० १०० । या० ४×३ ६ छ । भाषा-हिन्दी । ने० काल १८२४ पूर्वा । विशेष-पपपुराशा में ने गीता महात्म्य निया हुवा है । प्रारम्भ के ७ पत्रों में सस्कृत मे भगवत शीखा माना दी हुई है ।

> प्रश्नपुर, गुरुका सं० १६४ । पन सं० १० । मा० ६३×५३ इक्ष । विषय-मायुर्वेद । सपूर्ण । वद्या जीवर्क) विशेष-मायुर्वेद के पुश्के हैं ।

> ४४४४ शुरुका सं० १६६ । वन स॰ ६८ । सा॰ ४×२३ इख । माना-हिन्दी । पूर्ण । दशा-सामान्त ।

४.४४६. गुडका सं० १६७। पत्र सं० १४८-२४७। बा॰ २×२ इका। सपूर्ण।

४४.१०. गुटका सं० १६≈। पत्र सं० ४०। बा॰ ६×६ इ**व**ा पूर्ण ।

१८४१, गुटका सं० १६६। यम र्य० २२। मा० १४६ इखा। मामा-हिम्बी। से० काम १७४० भाषण सुरी २। पूर्व। दशा-सामान्य।

१. वर्गरासो × हिन्दी १-१०

व्यव वर्मी दासी क्षिक्यते--

नहती बंधो जिल्लार राह, लिहि बंधा दुवा वातिह जाद ! रीन कमेख न संबर्द, बाद करन सब बाद पुनाई !! विश्व दुव्हि यह संबर्द, ताको किन सम्बं होई सहाई !! १ !! सम्में बुदेनो जैन हो, छह दरसन वे डी वरसान ।
आवन जन मुण्जि दे हान, अध्यवीव बित संमतो ॥
पढ़ा बित सुन होई निभान, धर्म दुवेगो जैन को ॥ २ ॥
दूजा बर्दो सारद शाई, बूनो घानर घाणो हाह ॥
कुमति क्लेस न उस्जे, महा सुमनि भंदी धिभकाइ ॥
जिल्लामर्न रासो वर्णन, तिहि वदत मन होइ उछाह ॥
धर्म दुदेनो जैन को ॥ ४ ॥

यन्तिम---

क्यों जीमण् जांवे सही, सागम बान जिलेमुर कही। बर पात्रा झाहार ले, ये महाईस मूनकुण जाणि।। धन जती जे पानही, ते मनुकम पहुचे निरवासि।। धर्म्म इसेनो जैन का ॥१४२॥

मूढ देव गुरुशास्त्र बसागित, तङ्ग यद् धनायनन जागितः धाठ दोष शङ्का धादि दें, धाठ भद सौ नजे तश्रोस ।। ते निश्चै सम्यक्त फलें, ऐसी विधि भागे जगहीशः । धर्म्म दुलेली जैन वा ॥१४ ३॥

इति की वर्ध्यस्ति समारता ॥१॥ २० १७६० - नवस्त्र ह्वा २ सावातावर कथ्य । ४४४२. गुडका सं० १७६ । पत्र सं० ४ । या० ६४६ द व । भाषा सस्कृतः । विवय-पूत्रा । विवेष —विदर्जना है। ४४४३. गुडका सं० १७१ । पत्र स० ६ । या० ६४७ द व । भाषा-हिन्दी । विवय-पूत्रा ।

४४४४ शुरुका संदर्भि । पत्र स०१४-६०। मा०३×३ इ.च.। भाषा-संस्कृत हिन्दी। के० कान स०१७६०। सावरण सुदी १०।

विशेष-सम्मेदशिसर पूजा है।

विशेष — पूजा, पर एवं विनिविधो का सबह है। ४४४४. गुटका सं० १७३। पत्र स० १०४। मा० ६८८ इ.च.। सपूर्ण। वजा- जंगा। विशेष —सामुर्वेद के नुससे, मन्त्र, तन्त्रादि सामग्री है। कोई उल्लेखनीय रखना नही है।

```
४४४६ शुटका सं० १७२। एवं सं० ४-६३। झा० ६×४३ इ'व । वादा-हिन्दी । विवय-म्युक्तार
्रसा। ले॰ काल स॰ १७४७ वेठ दुरी १।
            विसीय-इन्द्रजीत विरवित रसिकप्रिया का संप्रष्ठ है।
            ४४४७. गुटका सं० १८४ । पत्र सं० २४ । झा० ६×४ इ च । जावा-संस्कृत । विवय-पुत्रा ।
            विशेष--पूजा संसह है।
            ४४४८ शुटका सं० १७६ । यत्र सं० ८ । बा० ४×३ ६ न । बाबा- बस्कृत । विवय स्तोत्र । ले०
 कास स॰ १=०२। पूर्ण।
            विशेष--पद्मावतीस्तीत्र ( ज्वालामालिनी ) है।
            ४४४६ शुटका स०१७७। पत्र सं० २१। बा० १'×१' इ व । त्रावा-हिन्दी । बहुर्स ।
            विशेष---पद एवं विनती सदह है।
            ४४६०. शुटका सं० १७८। पत्र स० १७। ग्रा० ६×४ इ व । भाषा-हिन्दी ।
            विशेष--- प्रारम्म मे बाबजाह अहांगीर के तस्त पर बैठने का समय लिखा है। स॰ १६०४ मंगसिर सुदी
 १र । तारातम्बोल की जो यात्रा की गई वी वह उसीके झादेश के अनुसार धरतीकी सबर मगाने के लिए की गई वी ।
             ४४६१. गुटका स० १७६ । पत्र स० १४ । बा॰ ६४४ इ.व । बारा-हिन्दी । विषय-पर संग्रह ।
 बर्स ।
            विशेष--हिन्दी पद सब्रह है।
            ४४६२ शृहका स॰ १००। पत्र स० २१। मा० ६×४ इ व । मावा-हिन्दी ।
            विक्रेय--निर्वेषसस्त्रीकथः ( ब्रह्मरायम् ), प्रादित्यवारक्या के पाठ का मूक्यसः सबह है।
            १ ३४५३ सा संक १०१ । पत्र सक २१-४६ ।
    १. चन्द्रकरदाई की बार्ता
                                        ×
                                                              हिल्दी
                                                                                      28-28
                                                                पद्य सं० ११६ । ले॰ काम सं॰ १७१६
    २ सुपुरसीस
                                        ×
                                                              हिन्दी
                                                                                      ₹==≥+
    ३, वनकावशीसी
                                     ब्रह्मपुर्णान
                                                               ,, र० काल सं० १७६५ ३०-३४
   ४. सम्बराह
                                        ×
                                                                                      #Y-YE
            विशेष---धविकांस वय काली हैं।
           ४४६४. शहस्या सं० १८२ । यत सं० १६ । बा॰ १४६ इ व । श्रावा-संस्कृत । विकय-पूजा । अपूर्ण ।
           विशेष---नित्व निवम पुत्रा हैं।
```

क्षेत्रेक्ष. शुक्रका सं०१८६ । पत्र सं०२० । वा० १०%६ इ'व । भाषा—संस्कृत हिन्दी । बहुसी । क्का—कीर्स वीर्सा ।

विक्षेय---प्रथम ५ पत्रों पर पृष्क्षायें हैं। तथा पत्र १०-२० तक शकुनशास्त्र है। हिन्दी गच में है।

४४६६. गुडका सं• १८४। पत्र सं• २४। मा• ६३×६ इंब । मावा-हिन्दी । मपूर्ण ।

विशेष--वृत्व विनोद सतसई के प्रथम पद्य से २४० पद्य तक है।

१८६७. सुद्धका सं० १८१ । यह सं० ७-६६ । सा० १०%१ ३ वं । भाषा-हिन्दी । ते० काल सं० १८२३ वेबाल सुदी ६ ।

विशेष---बीकानेर में प्रतिलिपि की गई थी।

१. समयसारमाटक	बनारसीवास	हिग्दी	g 19 q
२. मनायीसाथ शौढालिया	विमल विनयगरिए	" ৬३	परा है ७६-७८
३. ग्रष्ट्यम गीत	×	हिन्दी	७ ≂~ = ३
	दस मध्याय में मलग	धलगगीत हैं। भन्त में इ	लिकागीत है।
४. स्फुट पद	×	हिन्दी	58-55

४४६८. गुडका सं० १८६। पत्र सं० १२। सा० १८४१ इंच भाषा-हिन्दी। विषय पद संबह। विशेष-१४२ पदों का संबह है मुख्यतः बातनराम के पद हैं।

४१६६. गृहका सं० १८७। पत्र सं• ७७। पूर्ण ।

विश्लेष-पुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है।

१. चौरासी बोत	×	हिन्दी	1-7
२. कसवाहा बंश के राजाओं के नाम	×	1)	5-X
३. देहली राजामाँ की बंधावली	×	n	4-25
 देहनी के बादशाहों के परमनों के नाम 	×	77	१७− १६
५. सीख सत्तरी	×	n	१६- २•
६. ३६ कारकानों के नाम	×	"	71
७. बौबीस ठाएग वर्षा	×	"	44-88

११७०. शुरुका सं• १८८ । पत्र सं• ११-७३ । सा• १४४६ इंच । माषा-हिन्दी संस्कृत । विवेद-पुटके में भक्तावरस्तीत्र कसायामीवरस्तीत्र हैं।

```
गुरका-संबद् ।
                                                                                    [ $=?
१. पावर्वमायस्तवन एव ग्रन्थ स्तवन
                                    यतिसंगर के द्वाच्य जनका हिन्दी
                                                                             २० सं० १६००
                                         मागे पत्र कुडे हुए हैं एवं विकृत लिनि में लिसे हुये हैं।
          ११०१. गुरका संव १८६ : यत संव १-७० । माव १३×४ १८ । मावा-हिन्दी गरा : विवय-
इतिहास ।
          विशेष-- प्रकार वादशाह एवं वीरवल सावि की वार्ताएं हैं । बीच बीच के एवं सावि अन्त मान नहीं हैं >
           ४४७२, गुटका सं० १६०। पत्र सं० १७। सा॰ ४×३ दश्र । माना-हिन्दी ।
           विशेष--- रूप कृत पश्चमंत्रल पाठ है।
           ४४७३. गुटका सं० १६१। पत्र सं० २८। मा० ८३×६ इ'व । माया-हिन्दी ।
           विशेष -- सुन्दरदास कृत सबैये एवं धन्य पद्य है । प्रभूर्त है ।
           ४४७४ गुटका सं० १६२ । पत्र सं० ४४ । मा० ८३×६ इ'व । मावा-प्राकृत सस्कृत । से काव
$500 }
र. कविश
                                           ×
                                                             हिन्दी
                                                                                      $-X
२. मयहरस्तोन्न
                                           ×
                                                                                      X-4
                                                                हिन्दी गद्य टीका सहित है।
 ३. शातिकरस्तोच
                                       विष्यासिति
                                                                                       9-8
 ४. नमिऊएस्तोष
                                           ×
                                                                                      4-11
 ४. प्रजितवात्तिस्तवन
                                         नन्दिवेशा
                                                                                      18-23
 ६. भक्तामरस्तोत्र
                                    मानतुं माचार्य
                                                              CHEE
                                                                                      21-10
 ७. क्त्यालमंदिरस्तोत्र
                                           x
                                                             संस्कृत ३१-३१ हिन्दीयच टीकासहित है।
 ६ शांतिपाठ
                                           ×
                                                              RING YOU'S
            ४४७४. गुटका सं० १६३। यम सं० १७-३२। आ० वर्×१ इस । माया-संस्कृत । से० काल
 1 0725
            विशेष-सरपार्वयूष एवं मस्तागरस्तीम है।
            १४७६. गुटका सं ० १६४। वय सं० १३ | बा॰ १४६ दंव । जावा- हिन्दी। विवय-कामबास्य १
पदुर्ख । रहा-नागम्य । कोकसार है ।
            ११७० गुरका सं० १६४ । पत्र तं० ७ । या» १×६ इ'स । शाया-संस्था ।
```

वियोग-महारक महीचनाइत वियोधस्तीय है। ४३ पक्ष है।

५१७व्य. शुहन्दा सं० १६६ (यथ सं० २२ आ ० ९×६ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष – नाटक्समयसार है।

अर्थक. तुटका सं० १६७ । पत्र सं० ३० । घा० ८×६ इ व । घण्या-हिन्दी। ने० कान १८६४ धावसा स्क्री १४ । बधावन के पदी का संग्रह है।

श्चेक्षण्यः शुटका संवर्धकः यत्र संव ३ राष्ट्राकः क्षेत्रभूषः इत्यास्त्रणीः तृतासञ्चलहिः। श्चेक्षण्यः शुटकासंवर्धकः स्वयं संवर-भदः। साव क्ष्यः दंवः। साया–संस्कृत किसी सपूर्णः। अक्या–चीर्णः।

विशेष-पूजा पाठ संग्रह है।

४४⊏२. गुरुका सं० २००। पत्र स० ३४। ग्रा० ६¦४८ इ.च । पूर्ण । दशा—सामान्य

सिक्यन वीर्थ रहरूबंब प्राप्त हिन्दी
 स्थला संबद् १६५४ बाववा सुदी ६ । ले॰ काल सबद् १७४२ । वालव निवासी महानन्द ने प्रतिनिधि की य

 सहस्रकोति प्रार्थीन हिन्दा प्रार्थि

द० काला सं०१६६७ । रचना स्थान-सालकोट । ले० कान-स०१७८२ ममसिर टुगै ७ । महानद ने इनितिलिपि की थी। १२ रचने ४५ वे इक ६१ तक ने पस हैं।

 ६ पंजवजातो
 X
 राजन्यानी लेग्गत वर्ग
 ,

 ४ व्यक्त
 वृद्धावनदास
 हिन्दी

 ६ पव-रेमन रेमन जिनांवन कृत न विवार
 लग्गांगाग
 ,
 रागकाहार

 ५ तृती तृही ने रे साहित
 ,
 ,
 रागकाणे

 ७. तृती तृही र तृती वाल
 ,
 ,
 ×

 ८. तृती तृही र तृती वाल
 ,
 ,
 पत्र १६

ने ॰ शहन स॰ १७६० कामण बुदो १४ । ककीर बन्द जैस । सने प्रतिनिधि को यो । कैनास का वासो गोस तेला ।

१२. समुख विजय सुत सांवरे रंग भीने हो	×	**
	मे कास १७७२	बोतीहरका देहुरा दिल्ली में प्रतिनिधि की थी।
१३. पश्चकस्यासकपूजा सष्टक	×	संस्कृत से॰ काल सं० १७ ५२ व्यक्त कं० १० ।

१४, बट्रस कथा X संस्कृत से० काल सं० १७४२ ।

४४६६३. गुटका सं० २०१। पत्र सं० ३६। बा० १४६ इ'व । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । दूर्ण । विशेष—मादित्यवाधकथा (भाऊ) जुजालय'र इत सनिश्यरवेव कथा एव सालयन्य इत राहुन परवीसी के पाठ और हैं।

४४८८५. शुटका सं०२०२। तत्र सं०२०। घा० १८४६ इ.च.। जाना—संसकृतः। ले∘कास सं० १७४०। विसेन पूजा पाठ सवह के छतिरिक्त शिवचन्य मुनि कृत हिम्बोमना, ब्रह्माच्य कृत द्वापास पाठ औ है।

श्रद्धाः शुटका ६० २०३। पत्र सं० २०-११, १८४ से २०३। घा० १×६६ इ'व। आवा संस्कृत

• हिन्दी । सपूर्ण । दशा-सामान्य । सुस्थतः निम्न पाठ है ।

१ जिनसहस्रताम	श्राशाधर	संस्कृत	₹ ०-२ ₹ [%]
२. ऋषिमण्डलस्तवन	×	**	36-08
१. जलगावाविधि	ब्रह्मविनदास	n	164-164
४. ग्रुक्सों की जयम _ा ल	n	हिन्दी	189-189
५. समीकार खन	ब्रह्मसास सागर	,,	teo- 27•

देश्य६, शुद्धका संः २०४। एम तं० १४०। मा० १४४ ई व। माला-हस्त्रस हिन्दी। ते० काल सं० १७३१ चैव गुरो ६। मञ्जूर्य । जीर्छ।

विशेष — उनकेन में प्रतिसिधि हुई की । हुकाराः सम्पत्तार गाटक (बनारशीयास) पार्थनाव्यत्यन (बहुत्वाहु) का स्वाह है।

रुक्षक शुरुको सं० २८४। नित्य नियम पूजा संबद्ध । पत्र सं० ६७ । घा० वर्×६६ । पूर्व एव सुद्ध । वजा-वानामा ।

श्रसम्म, शुक्रका सं०२०६। यम तं०४७। सा० पर्×७। पाना शिली । समूर्ताः स्थासम्ब। स्थासं०२ मही हैं।

हुई. चुंदर भूगार १८० ने महासमियाम १८०० हिम्सी १८०० प्रश्नासं स्व

नहारामा प्रवीविद्यो के कार्यमधान में बानेर निवादी नांबीरान काला के ववपूर में मीर्पाधिक की की

२. स्यामक्तीकी

नन्ददास

्रमीक्रमोर निवासी महास्था ककीरा ने अतिसिंध की । माशीरान कलाने सं० १६६२ में प्रतिसिधि कराई बी । क्रमित्रस आजार-

> बोहा-- कृष्ण व्यान चरासु घठ प्रवनहि सुत प्रवान । कहत स्याम कलमल कल्लू रहत न रंच समान ।) ३६ ।।

. झन्द् मत्तरायन्द---

स्यो सन गाविक नारवस्मेद बह्म सेस महेस बुपार न पायो। सो बुक स्थास विरोध बकानत निगम कुंसोचि प्रगम बतायो।। सेक जाक नीह भाग जसोमति नग्यस्ता बुग प्रानि कहायो। सो कवि या कवि कहाय्य करी बुकस्यान बुस्यांम मने बुनगायो।।३०।।

इति श्री नन्ददास इत स्वाम बत्तीसी संपूर्ण ।! सिचार्त महास्मा ककीरा वासी श्रीकानेर का । सिचायतु बालीरुपण कामा संवत् १८२२ मिती भावना पुत्ती १४ ।

. ४,४८६. गुटकासँ० २०७। पत्र सं० २००। मा० ७४१ इ'च। माशा-हिन्दी संस्कृत। ते० काल सं० १६६६।

विशेष-सामान्य पूजा पाठ, पद एवं अजनों का संग्रह है।

४४६०. गुरुका सं० २०६। पत्र सं० १७। मा० ६३ ६५ इ'व। माया-हिन्दी।

विशेष--वाखन्य नीतिसार तथा नाषुराम इत जातनसार है।

४४६१. गुरुका सं० २०६। पत्र सं० १६-२४। बा० १×४ इ'व । मापा-किसी ।

विशेष--सूरदास, परमानन्द बादि कवियों के पदों का संग्रह है। विशय-कृष्ण मिक्त है।

४४६२. गुटका सं० २१०। पत्र तं • २८। मा० ६३×५३ इ'व। भाषा-हिची।

विशेष--- चतुर्वश ग्रुग्याम वर्षा है।

४४६३. गुटका सं० २११ । पत्र सं० ४१-मध । मा० १×६ इ.स । मावा-क्रियो । से० कास १८१० ।

विशेष-अहारायमञ्ज कृत श्रीपालराम का संब्रह है।

सप्रदेश. गुटका सं० २१२ । पत्र सं० ६-१३० । मा० ६×६ इ'स ।

निसेष--रठीत, पूजा एवं पह संप्रह है।

४४६४. शुटका सं २ २१३ । पत्र सं ० ११७ । बा० ६×५ इंब । भाषा-हिन्दी । ले॰ कास १०४७ । विशेष-वीच के २० पत्र नहीं है। सम्बोधपंचासिका (धानतराय) वृजलाल की बारह भावना, ्वैराग्य पश्चोसी (ममवर्तादास) मालोचनापाठ, पद्मावतीस्तोत्र (समयमुन्दर) रादुल पश्चोसी (विनोदीलाल) प्रादित्य-वार कथा (भाऊ) भक्तामरस्तोव बादि पाठों का संब्रह है।

४४६६. गुटका सं० २१४। पत्र सं० ६४। मा॰ १×६ इ'स।

विशेष-मुन्दर भृ'गार का संग्रह है'।

४४६७. गुटका सं० २१४ । पत्र सं० १६२ । घा० १×६ इ'व । आवा-हिन्दी ।

१. कलियुग की विनती	वेबाबह्य	हिन्दी	•	4-6
२ सीताजीकी विकती	×	n		9-4
 हंस की ढाल तथा विन ते 	दान 🗴	n		6-83
४. जिनवरमी की विनती	देवापाण्डे	**	,	१ २
५. होशी कथा	धीतरठोलिया	,,	र० सं• १६६०	. ₹=१=
६. विनतियां, ज्ञानपश्चीमी, बा	रह माबना	-		
राजुल पर्वासी ग्रादि	×	17		18-40
७. पांच परवी कवा	बहानेगु (स जयकीति के शिष्य)	,,	७६ परा है	X\$-X0.
< चतुर्विशति विनती	चन्द्रकवि	,,		¥¥-€0
६. बंबाया एवं विनती	×	"		10-18
१०. नव संगम	विनोदीसास	 77		40-46 40-46
१९. मनका बतीसी	×	,,		
१२. बंबा कनका	तुलाबराज			A0-25.
१३. विनशियां	x	31		E0E?
MARK. TIMET S	an and and an area and an			≈१−१ ३२

० २१६ । पत्र सं० १६४ । सा० ११×६ इ.च.। आया—हिन्दी संस्कृत ।

			**
			[गुर्देश-संबद
३. मुक्तावलि गीत	सकलकीति	हिन्दी	t u
४. चीबीस गराधरस्तवन	गुराकीति	,,	₹•
 श्र. ब्रष्टाह्मिकागीत 	भ० गुभवन्द्र	**	२१
६. मिच्छा दुक्कड	ब्रह्मजिनदास	,,	२२
७. क्षेत्रपालपूजा	मिरि) भद्र	संस्कृत	३७-३=
६. जिनसम्रह नाम	श्राशाधर	**	908-884
९ भट्टारक विजयकीर्ति श्रष्ट क	×	"	१ %•
Vutt marrie 20	. 1 mm ri. 1 u 1 1 mm.		views 1

४४६६. गुटका सं० २१७ । पत्र सं० १७१ । ब्रा० ८३×६३ इ'व । भाषा-संस्कृत ।

विषोष---पूजा पाठों का संग्रह है।

४६००. गुटका सं० २१≈। पत्र सं० १६६। बा० ६×५६ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष--१४ पूजायों का संग्रह है।

\$६०१. गुटका सं० २१६। पत्र सं० १८४। ब्रा॰ ६×८ इ'च। भाषा-हिन्दी।

विशेष--- सब्गतेन कृत त्रिलोकदर्पमुक्या है। ले० काल १७५३ ज्येष्ठ बुदी ७ बुधकार।

४६०२. गुटका सं० २२०। पत्र सं० ८०। बा० ७३×५ इ'च। आया-मार्श्वा संस्कृत ।

त्रिसतजिएाचऊबीसी

महर्गासह

व्यपभ्र श

₹**-** 3

२. नाममाला

धनकुष

.

विशेष—पुटके के समिकाश पत्र जीर्श तथा फटे हुए है एवं गुटका सपूर्ण है।

४६०३. गुटका सं० २२१। पत्र सं० ५१-१६०। ग्रा० म् १>६ इ'च। भाषा-हिन्दी।

विशेष-जीधराज गोदीका की सम्यक्त बोधुदी (झरूर्ग). श्रीन्यकरवरित, एवं नववक्क की हिन्दी यद्य टीका सर्जूर्स है।

४६० : गुटका सं० २२२ । पत्र सं० ११६ । मा० ४×६ इ.च । मापा-संस्कृत ।

विश्रेष-सामान्य पाठों का संग्रह है।

४६०४. गुटका सं० २२३ । पत्र सं० ४२ । ग्रा० ७४४ इ व । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—यन्त्र, पुच्छाएं एवं उनके उत्तर दिये हुए है।

र्थ६०६. शुटका सं० २२४। यत्र सं० १४०। ग्रा॰ ७४४३ इ.च.। भाषा-संस्कृत आहतः। बसा-औं जीर्ल बीर्ल एवं पपूर्णः।

विशेष —धुरावनी (पपूर्ण), मिकताठ, स्वयंप्रस्तोत्र, तत्वार्षसूत्र एवं सामायिक वाढ कार्षि हैं ३

४६०म. शुद्रका सं०२०४। पत्र सं०११-१७७। मा० १०×४६ इंव। मापा-हिन्दी।

 विद्वारी स्नतम् सटीक—टीकाकार हरिचरखदास । टीकाकाल सं० १८३४ । वय सं० ११ से १३१ । ते० काल सं० १८५२ साथ क्षमणा ७ प्रविवार ।

विमोध---पुस्तक में ७१४ पद्य हैं एवं = पद्म टीकाकार के परिचय के हैं।

बन्तिय भाव- पुरवोत्तमदास के दोहे हैं-

वविष है सोना सहन मुक्त न तऊ सुदेश । पोये और कुटीर के लरमें होत विशेष ॥७१॥

इस पर ७१४ संस्था है। ने सातकों से प्रचिक को दोहें हैं ने दिये गये हैं। टॉका सबी की दी हुई है। केवल ७१४ की जो कि पुस्थोत्तमदाय का है, टीका नहीं है। ७१४ दोहों के बावे निम्न प्रयस्ति दी है।

दोहा----

सालग्रामी सरज्जह मिली गंगसी ग्राय । धन्तराल में देश सो हरि कवि को सरसाय ॥१॥ लिले दूहा भूषन बहुत धनवर के धनुसार। कतुं भीरे कतुं भीर हू निकलेंगे सक्टार ॥२॥ सेवी पुगल कसोर के प्राननाव जी नांव। सप्तसती तिनसों पढी बसि सियार बट ठांव । है।। अमुना तट श्रृङ्कार वट तुलसी विधिन सुदेस । सेवत संत महंत जहि देखत हरत कलेस ।।४।। पुरोद्ति भीवन्व के मुनि सहित्य महान । ह्य हैं वाके थीत में मोहन मा जजमान ।।॥।। मोहन महा उदार तिंग और जाविये काहि । सम्पत्ति सुदामा को दर्द इन्द्र लही नहीं जाहि ।।६।। गहि यंक मुमनु तात ते विधि को बस सकाय। रोवा नाम कहें सुने सानम कान बढाव सकत संबद् बठारहसी बिते ता परि तीस६ चारि । वन्याठै पूरो कियो क्रमत बरत यन बारि ।।६।।

इति हरचरणदास कृता बिहारी रिवत सप्ताती टीका हरिप्रकाशास्त्र्या सम्पूर्णी । संवत् १०४२ मध्य कृष्ण्छ । ७ रिवासरे गुभमस्तु ।

२. कविवल्लम-प्रन्थकार हरिचरणदास । पत्र सं० १३१-१७७ । आया-हिन्दी पक ,

विशेष --- ३६७ तक पद्य हैं। ग्रागे के पत्र महीं हैं।

प्रारम्भ मोहन वरन पयो ग में, है तुलसी को बास।

ताहि सुमरि हरि मक्त सब, करत विघ्न को नास ।।१।।

कविल- ग्रानन्द को कन्द वृषभान जाको मूलचन्द,

लोला है। ते मोहन के मानस को चीर है।
दूरों तैसो रचिन को चाहत विरचि निति,
सिंग को नगवें प्रतो मन कौन मोरे हैं।
फेरत है सान प्रासमान पेंचाय फेरि,
पानि यें चाय वें को नारिध में भोरे हैं।

राधिका के झानन के जोट न विलोके विधि, हक हुक तोरे पुनि हक हुक जोरे है।

झब दोष लक्षण दोहा---

रम झानन्द सरूप की दूर्वे ते हैं दोष ।

घात्मा की ज्यो मंघता भीर विधरता रोच ॥३॥

प्रन्तिम भाग---

साका सतरह सौ पुत्री संवत् पैतीस जान ।

घठारह सो जेठ बुदि ने ससि रवि दिन प्रात ॥२६४॥

इति भी हरियरणुजी, विर्याचत कविवक्षमी सन्य सम्पूर्ण। स०१८५५ नाम कृष्णा१४ रिवमासरे। ४६०६. गुटकासं०२२६ । पत्र सं०१००। घा०६१४६ इ.च.। भाषा-हिन्दी। ले० काल१८२५ कैठ बुदा१५ । पूर्ण।

हिन्दी

१. सप्तमंगीवासी भगवतीवास

. .

४६१०. गुटका सं० २२७। पत्र सं० २६। घा० १×४३। जाला-हिन्दी। विषय-घापुरेंद। ले

वनारसीदास

ं काम सं॰ १०४७ सवाढ बुदी ६ ।

२. समबसारनाटक

विशेष--रससावर नाम का बामुर्वेदिक संय है। हिन्दी पत्र में है। पीची किसी पंडित हूं गरसी की सो देखि तिश्री-दि॰ शसाद बुदी १ बार सोमवार सं॰ १०४७ निस्ती सवाईराम गोषा ।

४६११. गुडका सं० २२८ । पत्र सं० ४६ ते ६२ । बा० १×७ ६० । जावा-प्राकृत हिन्दी । के० काल १६१४ । ब्रब्ध संग्रह की भाषा टीका है ।

४६१२, शुटका सं • २२६ । पत्र सं • १८ । ब्रा • १×७ ६० । भाषा हिन्दी ।

१. पंचपाल पैतीसी **₹**—**₹** × २. संकानाचार्यप्रका 9-17 ३ विधानुकुमारपूजा × 23-2#

४६१३. गुटका संव २३० । पत्र संव ४२ । झाव ७×६ ६० । जावा-हिन्दी संस्कृत ।

विशेष--- मित्य नियस पूजा संग्रह है।

४६१४. गृहका सं० २३१ । पत्र सं० २१-४७ । बा० ६×६ ६० । बाबा-हिन्दी । विवय-बायुर्वेद । विजेय--- नयनमुखदास इत वैद्यमनोत्सव है।

४६१४. गुटका सं० २३२ । पत्र सं० १४-१४७ । मा० ७×४ इ० । माना-हिन्दी । सपूर्ता ।

विभेष-भेषा भगवतीदास इत श्रमित्य पन्धीसी, बारह मानना, सत श्रष्टोत्तरी, जैनसतक, (भृषरदास) दान बादनो (दानतराय) चेतनकर्मचरित्र (मगवशीदास) कर्मक्रतीसी, ज्ञानपञ्चीसी, भक्तामरस्तोत्र, कस्यास् मदिर मापा, बानवर्शन, परिषद्व वर्शन का संबद्ध है।

४६१६, गृहका सं० २३३। पत्र संस्था ४२। भा० १०×४३ भाषा-हिन्दी संस्कृत ।

विशेष-सामान्य पाठों का संग्रह है।

२ पीवीसहाखापर्या

४६१७. गुटका सं० २३४। पत्र सं० २०३। मा॰ १०×७३ ६०। मावा-हिन्दी संस्कृत । प्रवा पाठ. बनारती निनास, चीनीस ठाएए चर्चा एवं समबसार नाटक है।

४६१८. गुरुका सं० १६४ । पत्र सं० १६८ । मा० १०×६३ ६० । जाना-हिनी ।

१. तत्वार्वसूच (हिन्दी टीका सहित) हिन्दी संस्कृत ×

६३ पत्र तक दीमक ने का रका है।

श्रदेश. गुडका सं० २३६ । पन सं० १४० । मा० १४७ ६० । जावा किसी ।

विकेष-पूजा, स्तीम बादि सामान्य वाठी का संबह् है।

श्रृदेष्ठः **सुद्रका** सं० २३६ । तत्र सं० २१० | मा० १×६३ ६० | वादा−हिन्दी ।। ते० कास सं०

्रेण्यः मासीन बुदी १	₹1		
१. कुन्द विद्या	सगरदास एवं सन्य कविवस	हिन्दी लिपिक	ार विजयराम १-३३
२. पद	मुक्त्यरास	n	33-54
•		ये॰ काव १७७५	मारण सुबी ४
4. विसोक्यर्पशक्या	सङ्गसेन	हिन्दी	\$4-5K•
4621.	गुटका सं० २३६। यत्र सं० १६८। मा॰	१३१ू×६ इखः। भावा-	हेन्दी ।
. १. धायुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	¥5-\$
२. क्याकीय	×	,,	१४- 5४
a, त्रिलोक वर्णन	X		c4-8&c

४६२२. गुटका सं० २४०। पत्र सं० ४८। बा॰ १२२४८ ६०। भाषा-संस्कृतः। विषय-स्तीत्रः।

विश्रोष---पहिले अक्तामर स्तोत्र टीका सहित तथा बाद मे यन्त्र मंत्र सहि। दिया हुवा है।

- ४६२३. गुटका सं० २४१। पत्र सं० १-१७०। मा० ४×३ ६०। भाषा-हिन्दी । ले० काल १०४७ वैद्यास दुरी प्रमानस्या।

विशेष--- निवितं महात्मा शमूराम । ज्ञानदीपक नामक न्याय का ग्रन्थ है ।

. सदिश्वः शुद्धका स्वं० २४२ । यत्र सं० १—२००, ४०० ५६५, ६०५ सं ७६४ । सा० ४imes१ ५० । साला-क्षिती गर्यः ।

विशेष-भावदीपक नामक प्रत्य है।

४६२४. गुटका सं० २४३। पत्र सं० २४०। बा॰ ६४८ द०। बाबा-स इत।

.विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

४६२६. गुटका सं० २४४। पत्र सं० २२। मा० ६×४ ६०। मावा-संस्कृत ।

११. वैशोक्य मोहन कवच	रायमल	ei ceo	ने- काम १७६१ - ४
-२. वक्षणामूर्तिस्तोत्र	शंकरायाय	,	
	×	-	¥19
. इरिहस्नामानसिस्तोत्र	×	11	6-4
थ. हादशराशि <i>पस</i>		*	u-t.
	×		to- 12 ·

```
1 528
शृहका संगद
                                                              म ने काम १७६२ १२-१४
६. बहरपति विचार
                                         ×
७. धन्यस्तोत्र
                                         ×
                                                                                   EE-44
           ४६२७. गुरुका सं० २४४ । यह सं० २-४६ । मान कर्रा ६० ।
           विवोध-स्तोध संग्रह है।
          श्रद्दरम्, गृहका सं० २४६ । पत्र सं० ११३ । या॰ ६×४ ६० । मापा−हिन्दी ।
          विशेष---नन्दराम इस मानमञ्जरी है। प्रति नदीन है।
           ४६२६. गुटका सं: २५७ । पत्र सं : ६-७३ । बा : ७×४ ६० । बापा-संस्कृत हिन्दी ।
          विशेष---पूजापाठ संबह है।
          ४६३०, ग्रहका सं० २४८ । पत्र सं० १२ । बा॰ ८३×७ ६० । भाषा-हिन्दी ।
          विशेष--तीर्धक्रों के पंचकत्वाल बादि का वर्तन है।
          ४६३१, गृहका सं> १४६ । यम बं• द । या• द2×3 ६० । श्रावा-हिली ।
          विषोध---वद संबह है।
          ४६३२, गुटका संट २४०। यम सं० १४ : बा॰ =3×७ ६०। माया-संस्कृत ।
          विशेष--- बृहस्त्ययमूस्तोष है।
           ४६३३. गुटका सं० २४१ । पत्र सं० २० . सा० ७×१ ६० भाषा-संरक्ष्य ।
          विशेष--समन्तमह क्रुत रत्नकरण्ड जान्यवार है।
          श्रदेश. गुरका स॰ २४२ । पत्र सं० ३ । बा॰ द्रे×६ ६० । बावा-संस्कृत । से० कास १९३३ ।
          वियोध--- सक्तकुत्क स्टोम है ।
          श्रदिशे. ग्रहका कंट नेश्रदे पण संग्रह । बाव ६×४ ६० । बावा-संस्कृत के काल संग्रहित है
          विशेष - अक्ताबर स्तीय है।
          253६. शुटका स० १४४ । एव सं० १० । बा० व्यथ ६० । भाषा हिन्दी ।
```

विवेद--पुष्पत इत प्रः सतीयो पंचनवत्त एवं प्रता सादि है। १९६८: सुरक्ता खें-११६ । वर वं-१ । सा-२/४७ ६० । साया-हिन्दी । स्रश्च । विवेद--वर्षाक्य क्या एनक्य परित्र है।

४६३७. गुडका सं० २४३ । पत्र सं० १६ । सा० ७८६ ६० । ताया -संस्कृत हिल्ली ,

विशेष---विम्य निर्वास विधि है। .

सुदी है।

(प्राचाचर) है।

```
श्रदेशे. गुरुका संव २५७ | पत्र संव द । माव द×१ ६० । भाषा-हिन्दी । दशा-वीर्शकीर्राः ।
          वियोध-सन्तराम कृत कविल संग्रह है।
          ४६४०. गढका सं० २४८। पत्र सं- १। मा० ४×४ ६०। भाषा-संस्कृत । सपूर्ण ।
          विशेष —ऋषिमध्डनस्तोत्र है।
          ४६४१. गुटका सं० २४६ । पत्र सं० १ । बा॰ ६×४ इ० । भाषा-हिन्दो । ते० काल १८३० ।
          विशेष -- हिन्दी पद एवं नाषू इस्त सहुरी है।
          ४६४२. गुटका सं० २६०। पत्र सं० ४। झा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी।
          विशेष---नवस कृत दोहा स्तुति एवं दर्शन गठ है।
          श्रदेश्वरे. शृदका सं० २६१ । पत्र सं० ६ । मा० ७×५ ६० । भाषा-हिन्दी । र० काल १८६१ ।
          विशेष-सोनागिरि पश्चीसी है।
          ४६४४. गुटका सं० २६२ । पत्र सं० १० । मा० ६×४३ ६० । माषा-संस्कृत हिन्दी । ब्रनूर्ण ।
          विशेष--जानोपदेश के पद्य हैं।
          ४६४४. गुटका सं० २६३। यत्र सं० १६। घा० ६५×६ इ०। भाषा-संस्कृत ।
          विशेष-शंकरायार्थं विरचित अपराधसूदनस्तोत्र है।
          ४६४६ गुटका सं० २६४। पत्र सं० ६। ब्रा० ६×४ ३०। भाषा-किनी।
          विशेष-सप्तस्ताकी गीता है।
          ४६४७. गुटका सं० २६४। पत्र सं० ४। मा० ५३×४ ६०। भारा-संस्कृत ।
          विशेष-वराहपुरास में से सूर्यस्तीत है।
          ४६४८. गुटका सं० २६६। पत्र सं० १०। मा० ६४४ ६०। भाषा संस्कृत। ले० काल १८८७ पीष
          विशेष- पत्र १-७ तक महागरापित कवच है।
          ४६४६. गुटका सं० २६७ । पत्र सं० ७ । घा॰ ६×४१ ६० । मावा-हिन्दी ।
          विशेष--- मूधरवास कृत एकी माव स्तोत्र मावा है।
          धर्मथः. गुडकासं० २६८ । पत्र सं० ३५ । सा० ५२ ४४ ६० । बावा-संस्कृत । के० काल १८८६
वीव सुदी २ ।
          ।
क्लिय—मह|व्या संतराय ने प्रतिक्षिप की थी । पद्मावती पूजा, चतुम्ही स्तोव एवं जिनसङ्खनाय
```

धपूर्व ।

```
अद्वर्ष, ब्रह्मका सक वेषेट । येथ संक वेथ । याक विदेश्रदे दर्व । वार्या-संस्कृत । वेर्या ।
          विशेष---निस्य पूजा पाठ संघड है।
           प्रदेशक बाह्यका संव देवक । यत संव व । बाक दर्दे 🗙 ४ एक । बावा-संस्कृत । के काल संव
22.27: SE 1
           विशेष--तीन चौबीसी व वर्शन पाठ है।
           ४६४३ मुह्या सक २७१। पत्र सं • ३१। बा॰ ६४४ इ०। बाया-सस्कृत । विवय-संब्रह । प्रेर्ण ।
           विशेष--- अकामरस्तोत्र, ऋदियुलयन्त्रं सहित्, विवयक्तरस्तोत्र है ।
           ४६४४. शटका सं० २७२ । वय सं० ६ । मा॰ ६x४३ ६० । माया-संस्कृत । विवय-सम्रह । पूर्ण ।
           विशेष--- मननायतपुर्वा है।
           ४६४४. गुरुका स० २७३ । पत्र सं० ४ । मा० ७×१३ ६० । मार्ग-हिनी । विषय-पत्रा :
           विशेष---स्वरूपवन्द इस चन्नरकारबी की पूजा है। चनकार क्षेत्र संवत् १८०६ में जीववा सुदी २ वह
प्रकट हवा था । सवाई माधोपुर में प्रतिकिपि हुई थी ।
           १६४६. गुरुष्य स० २७४। पत्र सं० १६। मा० १०×६३ ६०। मापा-हिन्धे । विवय-पुत्रा । पूर्व
           विशेष---इसमें रामचन्त्र कृत शिक्षर विसास है। पत्र द से बाने बाली पटा है।
           प्रदेशक, राष्ट्रका सक वेकर । यह सं o E र । बाक प्रदेशर प्रका पूर्ण ।
           विशेष---निम्न पाठो का संबद्ध है तीन बीबीसी नाम, विनयबीसी ( नवस ), वर्धनपाक, निस्त्रुवा
मक्तागरस्तोत्, पश्चमञ्चल, बल्यासमिन्दर्, निस्त्रपाठ, सबीवपञ्चातिका ( बानसराज ) ।
            ध्रीभ्य गुरुका सक २७६। यम सक १०। बाक १ देश है के बावा-संस्कृत । के बाब संब
 १८४३ । अपूर्वा ।
            विशेष---मकायरस्क्षेप, बड़ा समका (श्विष्यी ) बादि वाठ हैं ।
            १६४६ गुरुषा सं० २७० । पन स॰ २-२३ | मा० प्रदेशकी ६० | बाना-हिन्दी | विश्वस-प्रस
            विशेष---शरसक्त के वर्षों का बंबह है।
            १९६०. गुरुषा संक केवर । यह संक १००० । साथ १०४४ ४० । संवर्त )
             विमेच---वीच के वर्ष वस मही हैं। बोबीआवेव कुस वरवारवालकार है ।
             १६६१. गुरुका संव २०६ । यह संच ६-१४ । बान १८४ ६० । बहुर्स ।
             विशेष---विस्त्युका संबद्ध है ६
```

. 4

F.

्राहरू के श्री स्थापन संव स्टब्द । यह तंव २-४१ । याव १३×४ १० । यावा-शियो वस । वपूर्त । विवेद--क्यामाँ का वर्णन है ।

३६६३. शहका सं० २०१ । यम रं० ६२ । सा० ६×६ ६० । शाया-× । पूर्ण ।

विकेष-कारहकारी, पूजालंबाह, दसलकारा, सोसहकारण, पश्चमेन्यूजा, रत्नत्रवपूजा, तत्वार्यसूज क्षादि ्याजें का संबह्न है।

१६६४. गुडका सं० १६६ । पत्र सं० १६-८४ । बा० ६३×४३ ६० ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का संबद्ध हे— जैननबीती, पद (त्रुपरशस) मक्तामरसाया, परसम्बोधियाया विषयशहरवाया (मचनकीत्ति), निर्वालकाय, एकीमाव, सङ्गिमग्रेत्यालय व्यवसाय (भगवतीयात्र), सहस्रनान, सामुग्रेवना, विगती (प्रयाराय), निरायुका।

४६६४. सुद्रका सं० २५२। पत्र मं० १३। सा० ७६%६ ६०। भाषा-हिन्दी परा। विश्व-सम्पन्न । सञ्जर्भ।

विशेष-- ३३ से काने के पत्र साली हैं । बनारशीदास कुत समयसार है ।

४६६६. सुद्रका सं० २८४। पत्र सं० २-३४। मा॰ ८४६५ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष---वर्षाञ्चतक (वानतराव), शुत्रवीप (कालिवास) ये दो रवन'ये हैं।

४६६७. गुटका संट २८४ पत्र सं० ३-४६। सा० व×६६ ६०। मावा-संस्कृत प्राकृत । सपूर्ण ।

विशेष---नित्यपुत्रा, स्वाध्यायपाठ, शौबीस्क्रासाचर्च ये एवनावँ हैं।

श्रद्धन. गुटका सं० २६६। पत्र सं० ३१। मा० म×६ इ०। पूर्त ।

विशेष-- द्रव्यसंग्रह संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित ।

श्रद्द. गुटका सं० २८७ १ पत्र सं० ६२ १ मा० ७२/×१ १० । जावा-संस्कृत । पूर्व ।

विशेष--वस्वार्मस्य, नित्वपुता 🕻 ।

१६७०. गुटका सं० २८६ । यत्र सं० २-४२ । बा० ६×४ ६० । विषय-संबह । सपूर्ण ।

वियोध-- सह फल साबि दिया हुना है।

४६०१, गुरुष्का सं० २५६ १वष सं० २०। घा० ६४४ ६०। बावा-क्रिकी । विषय-ज्युद्धार । दुर्श विवेय---रिकराय कुल रोबुस्मिसा कें वे कहन कोगी संबक्त विवा है।

वा(क्स ---

एक् समय बन्दास की बुरति मई हरिराइ।

नित्र जन प्रपनी जानि के ऊषी लियी बुलाइ ।।

बीकिरतन बचन ऐस नहें क्रमब पुन सुनि ने । नन्द बसीया प्राप्ति के तब बाद सुख दें।। २ ।। सब वासी ब्रह्मभ स्वा मेरे जीवनि प्रान । साने नीवच न बीसकं नीहे नन्दराव की बान ।।

स्रन्तिम---

बहु लीला क्षत्रवास की वोची किरसन सनेह : अन मोहन जो बाव ही ते नर पाढ देह ॥ १२२ ॥ जो बाव सीच सुर नमन तुम वचन सहेत ।

रसिक राय पूरन कीया मन वांक्षित फल देत ।। १२३ ।। कोट----बाने नाम सीला का पाठ भी दिया हुवा है !

४६७२. गुडका सं॰ २६० । पत्र सं॰ ४२ । सा॰ १×४ ६० । सङ्गर्स ।

विकोध--पुष्प विष्य राख्नें का संबद्ध हैं।

१. सोसहकारएक्या	रत्नपास	संस्कृत	4-11
२. दशसक्षरणीकवा	युनि ससितकीर्ति		43-59
हे. रत्नवयवतकवा	93	**	\$9-0\$
४. पुरराञ्चानिवतकवा	•	•	१९-२३
१. वसयरसमीक्या	77	79	77-75
६. धवनाचतुर्दशीयतकवा	20	**	₹ ७
७. वैधाननोत्सव	नयनपुष	हिन्दी पद्य	पूर्ण ११६१

विशेष- नाकेरी बाय में दीपान भी पुर्वीबहुतों के राज्य में पुन्नि नेवविशव के ब्रीडिकिए की थी। े पुरुष काफी बीर्सी है। पत्र पूर्वों के बाये हुए है। तेवनकाम स्पष्ट नहीं है।

> ४६७३. गुरुका सं० २६१। तम तं- ११७। भाषा-दिगी वंस्तृत । विषय-संबद्द् । विषय-पूषा वर्ष स्वीप संबद्ध है। बंस्तृत में वत्यकार करत्यु,पर्वक की हैं? १६७४, गुरुका सं० २६२ । वम वं० ४४।

रे. नवीतिपदास्य X वस्तृत ११-३(

के॰ काल सं॰ १७६३ संत हरियंबदास ने लवाए में प्रतिलिपि की बी ।

श्रद्भिक्ष गुरुका सं० २६३ । संग्रह कर्ता पाण्डे टोडरमलजी । पत्र सं० ७६ । घा० ५×६ इख । से० ंकास र्डं १७३३ । पपूर्व । दमा-जीर्य ।

विश्वेष-शायुर्वेदि र गुसले एवं मंत्रों का संब्रह है।

४६७६, गुटका सं• २६४ | पत्र सं • ७७ | बा • ६×४ इच्च । ले • काल १७८८ पीय मुदी ६ । पूर्ण । सायान्य शुद्ध । दशा-जीर्श ।

विश्रोध---पं गोबर्द्ध न ने प्रतिलिपि की भी | पूजा एवं स्तोत्र सेंग्रह है।

४६७०. राह्या सं व १६४ । पत्र सं ० ३१-६२ । प्रा० ४×५। इस आवा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल शक सं० १६२५ सावन बुदी ४ ।

विशेष--पृष्याहवाचन एवं मक्तामरस्तीत भाषा है।

४६७८. गुटका सं० २६६ । पत्र सं० ३-४१ । मा॰ ३×३३ इक्क । मापा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । बपूर्खः । बका-सामान्य ।

बिवोब-भक्तामरस्तोत्र एवं तत्वार्य सूत्र है।

्रष्ट्रकृष्ट. गुटका सं० २६७ । पत्र सं० २४ । मा॰ ६×४३ इच्छ । भाषा-िन्सी । सपूर्ण ।

विशेष-मायुर्वेद के नुसले हैं।

४६८०. गुटका सं० २६८ । पत्र सं० ६२ । बा० ६३×१ इच । बावा-हिन्दी । पूर्वा ।

. विशेष-प्रारम्भ के ३१ पत्र साथी हैं। ३१ से भागे फिर पत्र १ २ से प्रारम्भ है। पत्र १० सक श्राकार के कविश हैं।

१. बारह मासा-पत्र १०-२१ तक । बृहर कवि का है। १२ पद हैं। वर्णन सुन्दर है। कविता में पत्र जिसकार बताया गया है। १७ पस है।

२. बारह भासा--गोबिन्द का-पत्र २६-३१ तक।

४६=१. गटका सं० २६६ । पत्र सं० ४१ । सा० ७×४६ ६० । मापा-हिन्दी । विवय-अकार । वियोध-कोकसार है।

४६८२. गुटका सं• ३००। पत्र सं• १२। ब्रा॰ ६×१ई ६०। ब्रावा-हिन्ती । विवय-मन्त्रसास्त्र । विशेष--मन्त्रशास्त्र, आयुर्वेद के नुससे । पत्र ७ से आगे साली है ।

शुंदको संग्रह }

४६८६, शुद्धका संव २०१। पण सं० १८। घा० ४२×३ ६०। भाषा-संस्कृत हिन्ती। विषय-संग्रह । के० कास १९१८। पूर्ण ।

विशेष--- आवस्यी मांगीतुंगी की- हर्वकीर्ति ने सं॰ १९०० ज्येष्ठ मुदी ५ को यात्रा को थी ।

४६६४, गुडका सं० ३८२। यत्र मं० ४२। या० ४%३३ ६०। भाषा-संस्कृतः विषय-संबहः । पूर्ण विशेष--पूजा पाठ संबह है।

४६८४. गुडका स० ३०३। यम सं० १०४। मा० ४६×४३ इ०। पूर्ल।

विशेष— १० सन्त्र दिये हुने हैं। कई हिन्दी तथा उर्जू में जिले हैं। झागे मन्त्र तथा मन्त्रविधि दी हुई है। उनका कल दिया हुआ है। जन्म भो सं० १०१७ की जगतराम के पीत मारण्कवन्द के पुत्र की झायुर्वेद के नुसली विये हुने हैं।

४६८६. गुटका सं० ३०३ क । पत्र सं० १४ । मा० ८×४३ ६० । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—प्राप्त्य में विश्वामित्र विश्वित रामकवय है। पत्र ३ से तुलसीदास कृत कवित्तवेश रामकिरत्र है। इसमें खप्पम खप्पों का प्रयोग हुवा है। १—२० पश्च तक संस्था ठीक हैं। इसमें आगे ३५६ संस्था से प्राप्त्य कर ३८२ तक संस्था बती है। इसके आगे २ पत्र काली हैं।

५६८७. गुटका सं० ३०४। पत्र सं० १६ । घा० ७५×५ ६०। भाषा-हिन्दी । घपूर्ण ।

विशेष— ४ मे १ तक पत्र नहीं है। धजयराज, रामदास, बनारसीदाम, जनतराम एवं विजयकीर्ति के पटो का संग्रह है।

४६८८. गुटका सं० २०४। पत्र सं० १०। सा॰ ७४६ इ॰। मापा-संस्कृत । विवय-पूजा। पूर्ण। विशेष---निरस्तवाजा है।

१६८६. गुरुका संव १०६। यत्र संव ६। माव ६३×४६ ६०। माया-संस्कृत । विषय-पूत्रा पाठ। पूर्व । विशेष-साविपाठ है।

ह६६१. गुडका सं० ३०८। तम तं० १०। मा० ४×४३ ६०। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोष । कूर्स विकेष---मकामरण्डियम्य विकेष हैं।

क भगडार [शास्त्रभगडार बाबा दुलीचन्द जयपुर]

	४६६२. गुटका सं∘ १ । प	त्र सं०२७१। झा० ह	३×७% इख्र । वे० संब	८५७ । पूर्ण ।
१. भाषाः	पूषरण भी	रजसिंह राठौड	हिन्दी	8-≈
२. बठोत्त	रासनाथ विधि	×	"से०ः	काल सं०१७५६ १३
	भौरंगजेब के समय में पं• भ्रम	यसुन्दर ने बहापुरी में	प्रतिलिपि की थी।	
३. जैनशर	1 4 6	सूधरदास	हिन्दी	\$4
४. समयस	गर नाटक	वनारसीदास	17	* ११७
	बादकाह शाहजहां के शासन क	ाल में सं० १७०८ में	लाहौर में प्रतिलिपि हु	दे थी।
५. बनारस	ी विलास	×	**	378
	विशेषबादशाह शाहजहां के	शासनकाल सं० १७१	१ में जिहानाबाद में प्रति	तिलिपि हुई थी।
	४६६३. गुटका सं०२ । पत्र	। सं० २२५ । झा० व	×५६ इ. च. मपूर्ण। वे	० सं० तर्द ।
	विशेषस्तीत्र एवं पूजा पाठ र	तंत्रह है।		
	४६६५. गुटका सं० ३। पत्र	सं०२४। ग्रा०१०३	×५३ ६०। भाषा−हिल	री। पूर्या। बै० सं० ६५६।
१. शांतिव		×	हिन्दी	t
	विक सामग्री	×	**	१−=
३ प्रतिष्ठा	में काम भाने वाले ६६ यंत्रों के वि	17 ×	n	8-54
	४६६४. गुटका सं०४। पत्र	सं० ६३ । मा० ५३×	(कर्देड०। पूर्ण। वे० स	io 680
	विशेषपूजामों का संग्रह है।			
	४६६६. गुटकासं•४ । पत्र	सं० ५६। झा० ६×	४ ६०। भाषा-संस्कृत	हिन्दी। भ्रार्गा वे० सं०
E 6 1	विशेष—सुभाषित पाठों का संग्र	ह है ।		
e { ? }	४६६७ गुटका सं०६। पत्र	सं०३३४। झा०६≫	४ इ०। भाषा-संस्कृत	। पूर्गाः जीर्गाः वै० सं०
	विद्योष—विभिन्न स्तीत्रों का संग्रह			
	४७६८. गुटका सं० ७ । पत्र	सं० ४१६। आ० ६३	×४. ६०। ले० कालासं	॰ रैद ० ४ घषात सदी ४
पूर्ण । वे॰	सं० ६६३ ।			

गुटका-संपद्]

१. पूजा पाठ संप्रह 🔀 संस्कृत हिन्दी

२. प्रक्रिष्ठा पाठ × "

रे. **चीबीस तीर्थकूर** पूजा रामचन्त्र हिन्दी ले० काल १८७५ **आववा सुदी १०**

४६६६. गुटकास० ⊏ंपत्र सं०३१७ । या०६४ ४ ६० । आया—संसकृत हिन्दी। के० काल सं∙ १७६२ आसोज सुदी१४ । पूर्यावे कंट ०६४ ।

विशेष--पूजा एवं प्रतिहा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है। यह २०७ पत्र भक्तामरस्तोत्र की पूजा विशेषतः उत्सेखनीय है।

३७००. गुटका सं०६। पत्र सं०१४। बा०४४४ ६०। जाता-हिन्दी। पूर्ण। दे० सं०६६६६ विशेष—जगतराम, गुमानीराम, हरीसिंह, ओधराज, लाल, रामचन्द्र बादि कवियों के जजन एवं पदों का संगृह है।

स्त्र भगडार [शास्त्रभगडार दि॰ जैन मन्दिर जोबनेर जयपुर]

४७२१. गुटका सं० १। पत्र सं० २१२। बा० ६×४३ इ०। ते० काल ×। प्रपूर्ण ।

₹.	होडाचक	×	संस्कृत	। श्रपूर्ण	5
₹.	नाममाना	धनज्जब	,,	,	£-\$?
₹.	श्रुतपूजा	×	19		₹₹₹€
٧,	पञ्चकस्यारगकपूजा	×	n	ले॰ काल १७८३	₹ 8 — € ¥
X.	मुक्तावलीपूजा	×	"		4 x-48
₹.	द्वादशव्योष्टापन	×	n		46-46
v.	त्रिकालचतुर्दशीपूजा	×	"	ते० काल सं० १७८३	=e-१• २
۲.	नवकारपैतीसी	×	71		
€.	धादित्यवारकया	×	"		
₹•.	प्रोषधोपवास व्रतोवापन	×	"		१०१-२१२
₹₹.	नन्दीश्वरपूषा	×	n		
₹₹.	पञ्चकत्यासम्बद्ध	· ×	n		
₹₹.	पञ्चमेरपूजा	×	99		

१९७०२, गुटका सं० २। पत्र सं० १६६। बा॰ १×६३ ६०। ले॰ काल ×। वसा-जीर्श जीर्सा ।

१. विसोकवर्णन	×	संस्कृत हिन्दी	१- १०
२. कालचळवर्शन	×	हिन्दी	\$ 1 - \$ 4
३, विकारगाया	×	সাকুল	१५-१६
४. बौबीसतीर्बक्टर परिचय	×	हिन्दी	\$4-98
४. वर्जनीसठासम्बर्ग	×	**	3 7-0 5
६. शासव निमङ्गी	×	প্রাকুন	98-117
७. भावसंग्रह (भावतिभक्ती)	×	**	११३-१३३
द. त्रेपनक्रिया श्रावकाचार टिप्पस	×	संस्कृत	\$\$ % ~\$\$\$
१. तस्वार्यसू ण	उमास्वामि	n	१ ५४-१ ६=

१५७० रे. गुटका सं० ३। पत्र सं० २१५। ग्रा॰ ६×६ इ०। ले० काल x। पूर्ण।

विशेष---नित्यपूजापाठ तथा मन्त्रसंग्रह है । इसके ग्रांतिरिक्त निम्नपाठ संबह है ।

समयसुन्दर	हिन्दी	३३
जितचन्द्रसूरि	27	र० काल १६१६ ३३~४०
जैतसिंह	17	34-18
जित्तसिंहसूरि	"	र० काल १६०६ ४६-६४
"	77	£4-4•£
"	*:	१०६-११७
जित च न्द्र	11	355-055
,,	"	१२०
27	,,	१२०-१२१
"	"	१२ २-१४१
	जितचन्द्रपूरि जैतसिह जितसिहसूरि ११ ११ वितचन्द्र ११	जित्तचन्द्रपूरि 33 जैतसिह 33 जितसिहसूरि 33 33 35 34 35 35 35 37 37 38 39

४७०४. गुडका सं० ४। पत्र सं० ४१। सा० १२/२३ ६०। माग-हिन्ती। ले॰ काल सं० १९०४। पूर्ण।

वियोच---नित्यपाठ व पूजाओं का संग्रह है। लश्कर में प्रतिलिपि हुई थी।

1 4008

४७०४. गुरुका सं० ४। पत्र सं० ४०। मा• ४×४ इ०। ल० काल सं० १६०१। पूर्गा।

विशेष---कर्मप्रकृति वर्शन (हिन्दी), कत्यारामन्दिरस्तीत, सिद्धिप्रियस्तीत्र (संस्कृत) एवं विजिन्न कवियों के : पदों का संग्रह है ।

१९७६ शुटका सं० ६ । पत्र सं० ८० । सा० ५ २ ४६ ई ६० । मे० काल 🗴 । सपूर्ता । विवोध — गुटके में निम्म मुख्य पाठों का संग्रह है ।

 १. बौरासीबोल
 कौरपाल
 हिन्दी
 प्रपूर्ण
 ४-१६

 २. धाविपुराण्तिनती
 गङ्गादास
 ,
 १७-४३

विशेष--सूरत में नरसीपुरा (नरसिंघपुरा) जाति वाले विराक पर्वत के पुत्र गङ्गादास ने विनक्षी रचना

को थी।

४७०७. गुटका सं० ७। पत्र सं० ४०। घा० ५३×४३ ६०। ले० काल ×। घपूर्ण।

विशेष---४८ यन्त्रो का मन्त्र सहित संग्रह है। यन्त में कुछ बायुर्वेदिक नुससे भी दिये हैं।

४७०८. गुटका सं० ८। पत्र सं० ×। मा॰ ४×२३ इ०। ले॰ काल ×। पूर्ण।

विशेष-स्फुट कवित्त, उपवासों का व्यौरा, श्वनाधित (हिन्दी व संस्कृत) स्वर्ग नरक मादि का वर्रान है।

१७०६. गुटका सं०६। यत्र सं०५१। मा० ७४५ ६०। भाषा—संस्कृतः । विषय—संब्रहः । कि० काल सं०१७६३। पूर्याः

विशेष--- प्रायुर्वेद के मुसले, पाशा केवली, नाम माला प्रादि हैं।

५७१०, गुरुका सं० १०। पत्र सं० ५४,। घा० ६४३ ६०। जाया-हिन्यी। विषय-पद संबहः के०काल ४। पूर्णः।

विशेष--शिप स्पष्ट नहीं है तथा प्रसुद्ध भी है।

१७६१. गुरुका सं०११। पत्र सं०१२-६२ । मा०६×१ ६० । जादा-संस्कृत । ते० काल 🗙 । सपूर्ण । जीर्थ ।

विशेष-ज्योतिष सम्बन्धी पाठों का संबह है।

े ४७१२, शुटका सं०१२ । पत्र सं०२२३ । झा० १४४ इ० । जावा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल सं०१९०५ वैद्याल बुदी १४ । पूर्ण ।

विक्षेष---पूजाव स्तोत्रों का संग्रह है।

४७१३. गुटका सं० १३। पत्र सं० १६३। म्रा० ४×५३ इ०। ले० काल ×। पूर्ण ।

विशेष--सामान्य स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है.।

४७१४. गुटकासं० १४ । पत्र सं० ४२ । झा० ⊏३्४६ इ० । आपा-हिन्दी । ले० काल ४ । सपूर्ण । • विली पर्ण १-१८

 १. जिलोकवर्णन
 ×
 हिन्दी
 पूर्ण
 १-१८

 २. खंडेला की वरवा
 ×
 "
 "
 १६--२६

 ३. जेसठ शलाका पुरुववर्णन
 ×
 "
 "
 २६-४२

अध्येश्च. गुटका सं०१ अः। पत्र सं० ७६। घा०६×५ इ०। ले० काल० ×। पूर्गी। विशेष —पूजा एवं स्तोत्रो का संग्रह है।

४०१६. गुटका सं०१६ । पत्र सं०१२० । मा०६×५३ ६० । ले०काल सं०१७६३ वैद्यास पुत्री ३ । पूर्वी ।

१. समयसारनाटक	वनारसीदास	हिन्दी	309-08
२. पार्श्वनायजीकी निसासी	×	,,	\$\$0-\$\$*
 शान्तिनाथस्तवन 	पुरासागर	**	११ ५ —११६
४. युषदेवक्वविनती	×	,,	११७-१२०

४७१७ गुटका सं० १७। पत्र सं० ११४। घा० ६×५ इ०। ले० काल ×। प्रपूर्ण। विशेष—स्तोत्र एवं पूजाम्रों का संग्रह है।

১৬% म. गुटका सं० १६। पत्र सं० १६४ । घा० ४० ४४ ६० । जाषा—संस्कृत । ले० काल ४ । सदूर्ण । । विशेष — किरु नैमिसिक पूजा पाठों का संग्रह है ।

४.५१६. शुटका सं० १६। पत्र सं० २१३। झा० ४×३१ इ०। ते० काल × पूर्ण।

विशेष---नित्य पाठ व मंत्र भावि का संग्रह है तथा मायुर्वेद के नुसले भी विये हुये है।

१७२०. गुरका स०२०। पत्र सं०१३२। बा० ७×६ इ०। ले० काल सं०१६२२ । ब्रपूर्ण ।

विशेष — निरमपूत्राचाठ, पार्श्वनाय स्तोत्र (पद्मश्रमदेव) जिनस्तुति (क्यवन्त, हिन्दी) पद (सुन्न वश्र एवं कनककीर्त) करेनवलो की उत्पत्ति तथा सामुद्रिक सास्त्र झारि पाठों का संस्रह है। ४७६१. गुटका सं० २१। पत्र सं० ४-६२। घा० ४,५४५ ६०। ते० काल ४। घपूर्व । वीर्षः। विशेष-सम्यसार गाया, सामायिकपाठ वृत्ति सहित, तत्त्वार्थसूत्र एवं अक्तामरस्तोक के पाठ हैं। ४७२२. गुटका सं० २२। पत्र सं० २१६। घा० ६४६ ६०। ते० काल सं० १०६७ वैत्र सुधी १४।

४७२३. गुटका सं० २३। पत्र सं० ६७--२०६। धार ६×१ ६०। ले॰ काल ×। बपर्सा।

40.40 Ben (1- //)				
१. पद- ' वह पानी मुलतान गये)	×	हिन्दी	वूर्ख	દહ
२. (पद-कौन सतामेरीमै न जानी तर्जि	×	19	n	, ·
के चले गिरनारि)				
 पद-(प्रभू तेरे दरसन की वःलहारी) 	×	n	57	n
४. ग्रादित्यवारकथा	×	n	"	€ €- ₹₹¥
५. पद-(चलो शिय पूजन भी बीर जिनंद)	×	n	"	१७ =-१७ ६
६. जोगीरासो	जिनदास	"	"	180 -18 7
७. पञ्चेन्द्रिय बेलि	डनकु रसी	31	**	१ ८२–१६४
द. जैनविद्रीदेश की पत्रिका	मजलसराय	"	39	164-160

ग भगडार [शास्त्रभगडार दि॰ जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर]

४७२४' गुटका स०१। प्रा॰ म×५ ६०। ते॰ काल ×। पूर्स । वे० सं॰ १००। विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है।

१. पद- सोवरिया पारमनाथ मोहे तो च।कर राखो	सुशालबन्द	हिनदी
२. " मुक्ते है चाव दरसन का दिखा दोगे तो क्या होया	×	n
६. दर्शनपाठ	×	संस्कृत
Y. तीन वौबीसीनाम	×	हिन्दी -
५. कल्यासमिन्दरभाषा	वनारसीदास	,,
६. अक्तामरस्तोत्र	मानतुः ङ्गाचार्य	संस्कृत
७. सक्ष्मीस्तोत्र	पश्चत्रभवेव	

		•
woy]		[गुटकासंग
व देवपूजा	×	हिन्दी संस्कृतः
 अध्वनिम जिल चैत्यालय जयमाल 	×	हिन्दी
१०. सिश्च पूजा	×	संस्कृत
११. सीलहंकाच्यापूजा	×	
इ रे. व्यक्त संस्पृता	×	,,
१३. शान्तिपाठ	×	77
१४. पार्श्वनाथपूजाः	×	v
१५. पंचमेल्यूजा	भू धरदास	हिन्दी
१६. नन्दीस्वरपूजा	×	संस्कृत
१७. तत्वार्यसूत्र	उमास्वामि	श्रपूर्ण "
१८. रलक्यपूजा	×	"
१६. ब्रकुत्रिम चैत्यालय जयमाल	×	हिन्दी
२०. निर्वाशकाष्ट भाषा	भैया भगवतीदास	,,
२१. गुरुकों की विनती	×	,,
२२. जिनपचीसी	नवलराम	,,
२३. तत्वार्यसूत्र	उमास्वामि	पूर्ण संस्कृत
२४. पञ्चमस्याग्यमंगल	रूपचन्द	हिन्दी
२५. पद- जिन देख्या विन रह्यो न जाय	किशनसिंह	17
२६. 🤧 कीजौ हो भैयन सो प्यार	द्यानतराय	
२७. 🤧 प्रभू यह घरज सुग्गो मेरी	नन्द कवि	-
२८. 😠 भयो सुख चरन देखत ही	. "	"
२९. 😠 प्रभू मेरी सुनो विनती	,,	**
३०. 😠 परघो संसार की क्षारा जिनको वार नहीं बारा	**	"
३१. " कला बीदार प्रभू तेरा भया कर्मन समूर हेरा	"	"
३२. स्तुति	" दुधजन	. "
१६. नेमिनाथ के दश भव	×	"
३४. पद- जैन मत परको रे माई	×	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,
		,

४७२४. गुटका सं० २ । पत्र सं० पत्र-४०३ । घा० ४३४२ ६० । घपूर्या । वे० सं० १०१ । विशेष---निम्न पाठों का संबद्ध है ।

१. कल्यागमन्दिर भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	बपूर्ण = ३-१३
२, देवसिद्धपूजा	×	**	64-668
३, तोलहकारसपूजा	×	थपश्च [°] श	११५-१२२
४. दशसक्षरापूजा	×	भपभंग संस्कृत	8 २ ३ − १ २ ६
५. रत्नश्रयपूजा	×	संस्कृत	१२=-१६७
६, नन्दीस्वरपूजा	×	प्राकृत	१६५-१५१
७. शान्तिपाठ	×	संस्कृत	१८१- १ ८६
द. पश्चमंगल	रूपचन्द	हिन्दी	१८७-२१२
 तत्वार्थसूत्र 	उमास्वामि	संस्कृत प्रपूर	र्ग २१३–२२४
१ सहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनावार्य	,	२ २ ५ -२६ ८
११, भक्तामरस्तोत्र मत्र एवं हिन्दी			
वद्यार्थ सहित	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत हिन्दी	946-80€

४७२६. गुटकासं० ३ । पत्र सं० ६१ । झा० १०४६ इ० । विषय—संघष्ट । ने० काल सं० १८७६ श्रावसामुकी १४ । पूर्ण । वै० सं० १०४ ।

विशेष---निम्न पाठी का संग्रह है।

१. चोबोसतीर्थंकरपूजा	वानतराय	हिन्दी
२. ब्रष्टाह्मिकापूजा	"	19
३. वोडशकारसपूजा	"	**
४. दशसक्षरापूजा	"	53
५. राजनयपूजा	"	17
६. पंचमेरपूजा	**	"
७. सिद्धक्षेत्ररूगः	, "	"
द. दर्शनपाउ	×	,,
a. पद - घरज हमारी मुन	×	"

१०. वकासरतोत्रोत्पतिकचा × ॥
११ मकासरतोत्रत्रद्विसंवसहित × संस्कृत हिन्दी

नथमल कृत हिन्दी अर्थ सहित ।

४०२७. गुटकास०४। पत्र सं०४४। झा० ८४१ ६०। जाया-हिन्दी। ले॰ काल लं॰ १६४४ । पूर्णा देल सं०१०३।

विशेष—जैन कवियों के हिन्दी पदों का संबह है। इसमें दौलतराम, खानतराय, जोभराज, नवल, बुधजन भैस्का भाग तीदास के नाम उल्लेखनीय है।

घ भराडार [दि॰ जैन नया मन्दिर वैराठियों का जयपुर]

४७ - द्र. सुटका सं० १ । यत सं० ३०० । या० ६२ \times ६ र० । ले० काल \times । पूर्त । वे. सं० १४० । विशेष — निम्न पाठो का सम्रह है: —

१. भक्तामरस्तीत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत		१-६
२. घन्टाकररामन्त्र	×	"		Ę
 बनारसीविलास 	बनारसीदास	हिन्दी		७-१६६
४. कविस	"	,,		१६७
🗸. पग्मार्थदोहा	रूपचन्द 🗸	17		१६= -१७ ४
६. नाममालाभाषा	बनारसीदास	19		१७ ५-१६०
 धनेकार्थनाममाला 	नत्दकवि	"		\$60-960
जनपिंगलखंदकोश	×	,,		\$65-504
೬. जिनसतस ई	×	"	प्रपूर्श	२०७२११
१०. निगलभाषा	रूपदीय	,,	• .	२११ -२२ १
११. देवपूजा	×	 n		२२२ -२६२
१२. जैनशतक	भूषरदास	,,		२६२२≈३
१३ भक्तामरभाषा (पद्य)	×	39		₹=४-३००

विशेष--श्री टेकमचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

गुडका-संमद्"]

६. रविवारकवा

अध्यर्थ. गुरुका संबंध र । पत्र संव रहेरे । आव ६×६ इव । लेव काल × । पूर्ण । वेव संव १४१

	श्रुष्टरः गुटका सः	र । पत्र स० रश्य । भा०६×६	:६०। ल०काल X ।	पूरा। व० स० १४१
	विशेषनिम्न पाठों क	ा संग्रह है।		
۶.	परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	धपश्च श	१-१ •६
	विशेष—संस्कृत गर्व में	टीका वी हुई है।		
₹.	धर्माधर्मस्वरूप	×	हिन्दी -	\$\$0-\$00
₹.	डा ढसीयोचा	ढा ढसीमुनि	प्राकृत	१७१- १ ६२
¥.	पंचलव्यिवचार	×	, n	663-662
¥.	मठाबीस मूलगुरारास	ब • जिनदास	हिन्दी	ક€ λ−કે€∉"
٤.	दानकथा	,,	**	१९७-२१६
٥,	बारह मनुत्रेका	×	"	२१५२१७
۴.	हंसतिल करास	ब्र॰ द्यजित	हिन्दी	210-213
€	विद्रूपभास	×	"	२२०-२१७
80	भा दिनाथक रपारएककथा	ब्रह्म ज्ञानसागर	77	२२=-२३३
	४७३०. गुटका सं० ३	। पत्र सं० ६८ । मा० १३ ×४	इ०। ले० काल सं० १	६२१ पूर्ण । वे० सं० १४२
₹.	जिनसहस्र ना म	जिनसेना चा र्य	संस्कृत	. ₹- ३ %
₹.	बादित्यवार कथा भाषा टीका स	बहित मू०क० सकलकीति	हिन्दी	३ ६–६०
		भाषाकार-सुरेन्द्रकीति र०	काल १७४१	
₹.	पञ्चपरमेष्ठिगुरहस्तवन	×	n	\$?-\$ =
	४७३१. गुटका सं०	प्तः। पण सं०७० । स्ना० ७३ ×	६ इ.०। ले० काल 🗙	। पूर्ता। वै० सं० १७४३
₹.	तस्वार्यसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	४~२५
₹.	भक्तामरमावा	हेमराज	हिनदी	२६−३२
ą.	जिनस्तवन े	वीलतराम वीलतराम	**	17-11
v	GERTAT	• _		2X-X8

् पटका-संबद्

४.७१२. गुटका सं०४ । पत्र सं०३६ । सा० ८१×७ इ० । आया–हिली । ले० काल × । पूर्त । वै० सं०१४४ ।

विशेष-पूजाओं का संग्रह है।

४७९६. गुटका सं०६। तत्र सं०६-३९ । घा० ६५४८ इ०। भाषा-हिन्दी। ते० काल 🗴 । सपूर्ता। वै० वै० १४७ ।

विशेष---पूजाघों का संबह है।

४७३४. गुटका सं• ७। पत्र सं• २-३३। झा० ६३×४३ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा । ते० काल ×। सपूर्ण । वे० सं० १४६।

४७३४. गुटकासं० क। पत्र सं० १७-४०। घा०६२,४५ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल 🗙 । घपूर्वाचै० सं० १४६।

विशेष-वनारसीविलास तथा कुछ पदों का संग्रह है।

४.७३६ शुटकासं०६ । पत्र सं०३२ । ग्रा•६×५३ ६०। ने०कान० सं०१ ८०१ फाशुस्त । पूर्णावैक सं०१४५ ।

विशेष--हिन्दी पदों का संग्रह है।

४७२७. गुटका सं०१०। पत्र सं०४०। झा०६४४२ ६०। भाषा−हिन्दी । विषय–पूजा पाठ संग्रह। के॰ काल ×। पूर्वी। वै० सं०१५०।

४७६८ . गुटकास० ११ । यत्र सं०२४ । आर०७४४ ६०। भाषाहिन्दी। विषय-पूजा पाठसंब्रह से० काल ४ । सपूर्णावेल सं०१४१।

४७३६ गुटका सं०१२ । पत्र सं० ३४-वर । मा० ६२/४६३ इ०। भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ संग्रह । ते० काल 🗙 । मनूर्ण । वे० सं०१४६ ।

विशेष-स्फुट पाठों का संग्रह है।

४७४०. गुडका सं०१३ . पत्र सं०४ मा आर्था० म×६६०। भाषा हिन्दी। विषय-पूजा पाठ संग्रह | ने० काल × अपूर्णा वे० सं०१६२।

ङ भगडार [शास्त्रभगडार दि० जैन मन्दिर संघीजी]

४७४१: गुटका सं०१। पत्र सं०१०७ । मा० ६२,४५३ इ०। भाषा—हिन्दी सँसकृत । ले० कान 🗙 । कपूरों । विशेष-- पूना व स्तोत्रों का संबह है । गुटका-संबह

४०४२, गुटका सं०२ । पत्र सं० ६६ । बा० ६४४ ६० । भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८७६ वैद्याल युक्ता १०। सपूर्ण।

विवोध — चि॰ रामसुकाती हूं गरसीजी के पुत्र के पठनार्थ पुत्रारी राषाकृष्ण ने मंडानगर में प्रतिसिधि की बी। पूजामों का संग्रह है।

४७४२े. गुटका सं० २ । पत्र सं० ६६ । झा० ६ $\frac{1}{2}$ \times ६ ६० । भाषा-प्राकृत संस्कृत । ते० काल \times । सपूर्ण ।

विशेष---भक्तिपाठ, संबोधपद्धासिका तथा सुमाधितावली बादि उल्लेखनीय पाठ हैं।

४७४४. गुदका सं० ४ । पत्र सं० ४-६६ । झा० ७४८ ६० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८२८ । सपूर्यो ।

विशेष---पूत्राव स्तोत्रो का संग्रह है।

४७४४. गुटका सं० ४ । पत्र सं० २८ । मा० ८×६३ ६० । माया-संस्कृत । ले० काल सं० १६०७ । पूर्वा ।

विषोध-पूजाओं का संग्रह है।

४७४६. गुटकासं०६। पत्र सं०२७६। मा॰६४४३ इ० । ले॰कालसं० १६६.... माहबुदी ११। मपूर्वा।

विशेष—अट्टारक चन्द्रकीति के शिष्य शाचार्य लालचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिंग की थी । पूत्रा स्तोत्रों के प्रतिरिक्त निम्न पाठ उल्लेखनीय हैं :---

१. आराधनासार देवनेन प्राकृत
 २. सवीयपंत्रासिका ' × "
 ३. श्रुतस्क्च हेमचन्द्र संस्कृत

४७४७. शुटका सं० ७। पत्र सं० १०४। मां० ६६×४६ ६०। जावा-हिन्दी। ने० काल ×। पूर्छ। विवेद-स्वादित्यवार रूपा के साथ मन्य कवार्ये भी हैं।

१७४६. गुरुका सं० ६। पत्र सं० ३४। मा॰ ४५२४ ६०। मापा-हिन्दी । ते० काल \times । सपूर्ता । विशेष—हिन्दी परों का संग्रह है $\hat{\bf i}$

१८४४ हुन । त्रवक्त सं० ६ । पत्र सं० ७६ । सा० ७६/४४ हुन । जाना-हिन्दी । विषय-पूजा एवं स्तोत्र संबद्ध । तेन काल × । पूर्वी । कीर्यो ।

BOTH BUTTON

धपूर्ण ।

१८७५०. गुटका सं० १०। पत्र सं० १०। घा० पर्×६ ६०। ले० काल 🔀 । धापूर्या ।

विशेष--- आनन्दघन एवं सुन्दरदास के पदों का संग्रह है।

४७४१. गुटकासं०११। यत्र सं०२०। मा०६३/४४३ इ०। भाषा-हिन्दी। ते० काल 🗴 ।

विशेष--भूषरदास मादि कवियो की स्तुतियों का संग्रह है।

क्षेत्ररेर. गुटका सं० १२। पत्र तं० १०। धा० ६४४३ इ०। भाषा-हिल्दी। ते० काल ४। सपूर्या विशेष--पश्चमञ्चल क्षपण्य इत. वधावा एव विनित्यों का संग्रह है।

४७४३. गृहका सं० १३ । पत्र सं० ६० । बा० द×६ ६० । भाषा-हिन्दी । से० काल × । पूर्ता ।

१. धर्मविलास

द्यानतराय

हिन्दी

२. जैनशतक

मूषरदास "

४७४४. गुटका सं० १४। पत्र सं० १४ से १३४। प्रा० ६४६ इ०। प्रापा-हिन्दी। से० काल 🗙। पूर्णी

४७४४. गुटका संद $\{x \mid q\pi \text{ tio } yo \mid x \text{ sio } y \geq x \neq x = x \text{ sion} - x \text{ find} \rightarrow x \text{ sion} \times x \text{ sign}$ विशेष—Real पर्यो का संद्रह है।

४७४६. गुटकासं०१६। पत्र सं०११४। म्रा०६×४५ ६०। भाषा–हिन्दीसंस्कृत। ले०काल × । मनुर्य।

विशेष--- पूजापाठ एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

प्रथप्त गुटका सं०१७। पत्र सं० ६९। मा० ६×४ ६०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। मपूर्स ।

विशेष---गञ्ज, विहारी मादि कवियों के गद्यों का संग्रह है।

४७५८. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ४२ । मा० ६४६ इ० । भाषा—संस्कृत । से० काल 🗙 । सपूर्ण । त्रीर्ण । विशेष—तत्त्वार्षमूत्र एवं पुत्रायें है ।

४७४६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १७३ । प्रा० १८७३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल 🗴 । बार्स्स

१. सिन्द्ररप्रकरस	बनारसीदास	हिन्दी	श्रपूर्ण
२. जम्बस्वामी चौपई	४० रायम श्च	,,	gef
३. धर्मपरीक्षाभाषा	×	"	तः सपूर्ण
४. समाधिमरसभाषा	×		
		27	**

मपूर्ण ।

४७६०. गुटका संव २०। पत्र संव १६। काव कर्-४६३ ६०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। तेव कास ×।

विशेष--- बुमानीरामजी ने प्रतिलिपि की थी।

र० काल सं० १०२६ १. बसंसराजशकुनावली संस्कृत हिन्दी x बावन सुदी १ ।

२. नाममाला ४७६९. गुटका सं० २१। पत्र सं० ८-७४। मा० ८×५ ई ६०। ले० काल सं० १८२० स्रवाह युवी

८ । मपूर्ल ।

हिन्दी १. ढोलामारुगी की बार्ता ×

२. शनिश्वरकथा ×

३. चन्दकुं वर की वार्ता ×

> ४७६२. गुटका सं० २२ । पत्र सं० १२७ । बा॰ स×६ ६० । के॰ काल 🗶 मपूर्ण । विशेष-स्तोत्र एवं पूजाबों का संग्रह हैं।

४७६३. गुटका संट २३। पत्र संट ३६। प्राट ६३×५३ ६०। तेर काल 🗙 । अपूर्त । विशेष--पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

४७६४. गुटका सं० २४। पत्र सं० १२८। झा० ७×६६ ६०। ले० काल सं० १७७४। सपूर्त । जीर्स

१. यशोधरकवा जुशालचन्द काला हिन्दी ८० कास १७७३ है २. पद व स्तुति ×

विवेष-- खुशालचन्दजी ने स्वयं प्रतिनिधि की थी।

४७६४. गुटका सं० १४ । पत्र सं० ७७ । मा० ६×४; इ० । ले० काल × । सपूर्त ।

विशेष -- पूजाओं का संबद्ध है।

४७६६. गुरुका सं० २६ । पत्र सं० ३६ । मा० ६३×१३ ६० । माचा-संस्कृत । ते० काल × । सपूर्ण

१. पद्मावतीसहस्रमाम ×

५. ब्रष्यसंग्रह

४७६७. शुटका सं० २७ । पत्र सं० १३८ । जी॰ बार ६० । ते॰ काल 🗴 । जार्स ।

t. gareine ×

```
गुटका-संमह
  २. प्रश्रमगरास
                                                 ब्रह्मरायमञ्ज
                                                                                        हिम्दी
  ३. सुदर्घनरास
  ४. श्रीपालरास
  ३, ब्रादित्ववारकया
             ४७६८. गुटका सं० २८। पत्र सं० २७६। मा० ७४४३ इ०। ले० काल ×। पूर्ण।
             विशेष---गुटके में निम्न पाठ उल्लेखनीय है।
  १. नाममाला
                                               धनंत्रय
  २. धकलंकाष्ट्रक
                                             मकलंकदेव
. ३. त्रिलोकतिलकस्तोत्र
                                         भट्टारक महीचन्द
 ४. जिनसहस्रनाम
                                            माशाषर
 ५. योगीरासी
                                            जिनदास
            ४७६६. गुटका सं० २६। पत्र सं० २५०। झा० ७×४१ इ०। ले० काल सं० १८७४ देशास कृष्णा
 १। पूर्व ।
 १. नित्यनियमपूजासंग्रह
                                            ×
                                                               हिन्दी
 २. चौबीस तीर्यंकर पूजा
                                          रामचन्द्र
 ३. कर्मदहनपूजा
                                          टेकचन्द
४. पैचपरमेहिपुजा
                                            ×
                                                                        र० काल सं० १८६२
                                                                         ले॰ का॰ सं॰ १८७६
                                                         स्यौजीराम भावसां ने प्रतिलिपि की थी।
ध. पंचकत्यासकपूजा
                                            ×
                                                              हिन्दी
६. द्रव्यसंग्रह भाषा
                                         वानतराय
           १९७०. गुदका सं० ६०। पत्र सं० १००। घा० ६×१ ६०। ने० कान ×। धपूर्ण।
१. पूजापाठसंग्रह
                                           ×
                                                             स्टब्त
२ सिन्द्ररप्रकरण
                                      बनारसीदास
                                                             हिन्दी
३. लघुचाएक्यराजनीति
                                         नाराक्य
٧. इद " "
```

```
गुरका-संपद् ीः
                                                                                      1 683
४ नाममाना
           ४७०१. गुटका स० ३१ । पत्र सं० ६०-११० । बा० ७×५ ६० । श्रापा-संस्कृत हिन्दी । से०
काल 🗙 । मपूर्ण ।.
           विशेय---पूजा पाठ संग्रह है।
           ४७७२. गुटका सं० ३२। पत्र सं० ६२। आ० १६×१३ इ०। ते० काल 🗙 । पूर्ण (
 १. क्वकाबसीसी
                                                                                  हिन्दीं
                                           ×
 २. पूजापाठ
                                                                            संस्कृत हिन्दी
                                           ×
 ३. विक्रमादित्य राजा की कथा
                                           ×
 ४. शनिश्चर्देव की कथा
                                           ×
            ४७७३. गुटका सं २३ । पत्र सं ० द४ । बार ६×४३ ४० । से ० काल × । पूर्ण ।
 १. पाशाकेवली (ब्रबजद)
                                           ×
                                                                                   हिन्दी.
 २ ज्ञानो उदेश बत्तीसी
                                        हरिदास
 ३. स्यामबत्तीसी
                                            ×
 ४. पाशाकेवली
                                           ×
            १८७४. गुरका सं० २४। बा॰ ४×५ ६०। पत्र सं० ६४। से० काल × । बापूर्ण ।
            विशेष-पूजा व स्तोत्रीं का संग्रह है।
            ४७७४. गुटका सं० ३४। पत्र सं० ६१। बा० ६×४३ ६०। माथा-हिन्दी। से० काल सं० १९४० १
 पूर्ण ।
             विशेष-पूजाओं का संग्रह है। बच्चलाल खाबडा ने प्रतिलिपि की थी।
             ४७७६ शुटका सं० ३६। पत्र सं० १४ से ७६। मा० ७×४ इ० । से० काल × । मपूर्ण ।
             विशेष--पूजाओं एवं पद संग्रह है।
             ४७७०. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० ७३ । बा० ६×५ इ० । ते० काल × । बापुर्य ।
```

मुषरदास

चानतराय

हिन्दी

१. जैनशतक

B. पद-संग्रह

२. संबोधपंचासिका

४७७८. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० २१० । आ० ४३×३३ ६० । नापा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल ×। पूर्ण ।

विशेष--पूजामों तथा लोशों का संग्रह है।

श्रुक्त सं० ३६। पत्र सं० ११८ । मा० ८३×६ ६०। भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८६१। पूर्व।

विशोध---नानु गोधा ने गांधी के बाना में प्रतिलिपि की बी।

१. गुलालपण्चीसी	बह्मगुलाल	हिन्दी	
२. चंद्रहंसकमा	हर्षकवि	,, ₹	कासं. १७०८ ले. का.सं. १८११
३. मोहविवेकयुद	बनारसीदास	,,	
४. ग्रात्मसंबोधन	वानतराय	n	
५. पूजासंग्रह	×	"	
६. भक्तामरस्तोत्र (मंत्र सहित)	×	संस्कृत	ले० का० सं० १८११
७. प्रादित्यवार कथा	×	हिन्दो	ले० का० सं० १८६१
१७८०. गुरका सं०४०	। पत्र सं० ६२ । सा० ५	१×४ इ०। ले∙	काल × । पूर्ग ।

१. नसशिसवंगीन

× हिन्दी

२. बायुर्दे किनुसर्वे

×

श्र•वर्ष. गुरुका सं० ४१। पत्र सं० २००। झा० ७३×४३ ६०। मापा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण।

विक्रेष -- ज्योतिष संबन्धी साहित्य है ।

प्रकार. गुरुका सं० ४२ । पत्र सं० १५८ । मा० ८४६ ६० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा पाठ। ले॰ काल 🔀 । अपूर्ण।

विशेष-मनोहरलात इत ज्ञानचितामणि है।

४७८३. गुटका सं ४३। पत्र सं ० ००। घा० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा व पर। ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष-शनिश्वर एवं क्रांक्रियवार कवायें तथा पदों का संग्रह है।

४७८४. गुटका संव ४४। पत्र संव ६०। बाव ६×५ इ०। लेव काल संव १६४६ फायुन बुदी विशेष-स्तोषसंग्रह है।

गुँदका-संपद्			[ú?:
Xeny.	् गुटका सं० ४४ । पत्र सं० १० । श्रो	• =×४३ ६०। ले० काल ×। पूर्ता	1
१. नित्यपूजा	×	हिन्दी संस्कृत	
२. पश्चमञ्जल	्रका च न्द	,,	
 जिनसहस्रनाम 	प्राशाधर	संस्कृत	
४७८६.	गुटका सं० ४६। पत्र सं० २४४।।	ग०४×३६०। भाषा–हिन्दीसंस्कृ	त । ले० काल 🗴
मपूर्ण ।			
विशेष	-पूजाओं तथा स्तोत्रों का संग्रह है।		
७ । पूर्वा ।	गुटकासं०६७। पत्र सं०१७१।	ग्रा० ६×४ ६०। ले∘ काल सै०१	८३१ भादना नुद
१. मर्नुहरिशतक	मर्नु हरि	संस्कृत	
२. वैद्यजीवन	लोतिम्मराज	"	
३. सप्तशती	गोवद्ध नावार्य	ले०काल सं०१७३१ "	
विगेष	-जयपुर में ग्रमानसागर ने प्रतिलिपि की	थौ ।	
<u> پر ج</u> ر	गुटका सं० ४६ । पत्र सं० १७२ । ।	गा० ६×४ ६० । ते० काल × । पूर	fι
१. बारहसडी	सूरत	हिन्दी	
२. कक्काबसीसी	×	,,	
३. बारहसडी	रामचन्द्र	n	
४. पद व विनती	×	n	
विशेष	प्रधिकतर त्रिभुवनचन्द्र के पद हैं।		1
يعدد.	गुटका सं० ४६। पत्र सं० २८। मा	• ८३ ×६ इ.० । भाषा हिन्दी संस्कृ	त । लै॰ नाल सं
१६५१। पूर्वा।			

विशेष--स्तोत्रों का संग्रह है। स्थर . गुडका संव रव । पत्र संव १११ । काव १०१×७ इव । कै काक × । पूर्ण ।

विशेष--पुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है।

१. शांतिनायस्तोत्र

२. स्वयम्ब्रुस्तोषभाषा चानतराय

380	1

[गुटका-संग्रह

३. एकीमावस्तोत्रभावा	भूषरदास	हिन्दी
V. सबोषपद्मासिकाभाषा	धानतराय	"
५. निर्वासकाण्डगाया	×	प्राकृत
६. जैनशतक	मूधरदास	हिन्दी
७ सिद्धपूजा	भागाधर	संस्कृत
s. लघुसामायिक भाषा	महाचन्द्र	"
६. सग्स्वतीपूजा	मुनिपद्मनन्दि	**

४७६१ गुटका सं० ४१। पत्र सं० १४। मा० ६५/४५ इ०। ने० काल सं० १६१७ चैत्र सुरी १० मपुर्ता।

विशेष—विमनलाल भांवसा ने प्रतिलिपि की थी।

विशेष---यह रथयात्रा सं० १६२० फाग्रुए। बुदी ६ मगलवार को हुई थी।

४७६२. गुटका सं०४२ । पत्र सं०१३२ मा०६×५३ ड०। भाषा-संस्कृत हिन्दी । ते० काल सं० १८६० । बदुर्गा

विशेष---पूजास्तोत्र व पद संग्रह है।

४७६६. गुटका संc ४०। पत्र सं० ७०। मा० १०४७ ६०। भागा-संस्कृत हिन्दी। ने० काल 🗙। पूर्णी

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

१८६४: गुटका सं० १४ । पत्र सं० १० । सा० म-४१३ ६० । नाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७४४ स्राक्षेत्र मुद्री १० । सपूर्वी। जीर्धासीयाँ।

विशेष-नेमिनाथ रासो (ब्रह्मरायमञ्ज) एवं धन्य सामान्य पाठ है।

४७६४. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ७-१२८ । मा० १×१३ इ० । ले० काल × । मपूर्वी !

विशेष—पुटके में मुख्यतः समयसार नाटक (वनारसीदास) तथा धर्मपरीक्षा भ्राया (मनोहरलाल) इन्त है।

3341-Reft]

्र्रेश्वर्दः, दुद्धका झंट श्रदः। प्रत्र प्रंत् प्रदे । ब्राट ANY2 द्रृदः । ब्राया-चंदकुत क्षिणी । लेट काल संट १८१५ वेसास सुदी द । पूर्णी । जीर्णी ।

विशेष-कंवर वस्तराम के पठनार्थ पं॰ झाशाराम ने प्रतिसिपि की शी ।

१. नीतिबास्त्र	चारा क्य	बंस्कृत
२. नवरत्नकविस	×	्रिक् री
३, कवित्त	×	

४७६७. गुटका सं० ४७। पत्र सं॰ २१७। मा॰ ६३×४६ ६०। मे॰ काल ×। मपूर्छ।

विशेष-सामान्य पाठों का संग्रह है।

४७६८, गुरका सं० ४८। पत्र सं० ११२। बा॰ ६२×६ द०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । ते० काल 🗴 ।

श्रद्धाः ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

४७६६. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० ६० । स्ना॰ ४×४ ६० । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले० काल × ३

पूर्ण i

विशेष--लघु प्रतिक्रमण तथा पूजामों का संग्रह है।

४८: •. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ३४४ । घा० १८६३ इ० । भाषा-हिन्दी । से० काल 🗶 । ब्रपूर्ण विशेष--- ब्रह्मरायमञ्ज कृत भोपालरास एवं हुनुस्तरास तथा घन्य पाठ भी हैं ।

६८०१. गुटका सं०६१ । पत्र सं०७२ । मा०६×४ दूँ ६० । आया–६स्कृत हिन्दी । ले० कास 🗙 १ पूर्ण । जीर्र्ण ।

> विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है। पुट्टों के दोनों घोर गरोवाजी एवं हनुमानजी के कलापूर्श किन्न है। ४००२. गुटका सं०६२। पत्र सं०१२१। घा०६×४६०। घाषा—हिन्दी। ले० काल ४। धपूर्शी। ४००२. गुटका सं०६३। पत्र सं०७-४१। घा०६१×६६०। घाषा—हिन्दी। ले० काल ४।

श्युर्श ।

र्थ्य-४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० २० । सा० ७४५ ६० । आया-व्हियी । से० काल ४ । स्पूर्त । १ १८०४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ६० । सा० १३४३ ६० । आया-व्हियी । से० काल ४ । पूर्त । विशेष---पर्वो का संग्रह है ।

४८०६. गुटका सं० ६६। पत्र सं० ८। सा॰ ८४४३ द०। माला-हिन्दी। से० काल ×। सपूर्ण । विशेष--प्रवचनसार माला है।

च भराडार [दि॰ जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर]

४८०७. शुटका सं०१। पत्र सं०१६२ । प्रा०६३×४३ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले॰ काल सं०१७१२ पीच । पूर्ण। के सं०७४७ ।

विशेष--- प्रारम्म में बायुर्वेद के नुसले है तथा फिर सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

४८०६. गुटकासं० २ । संसहरूका पं० फतेहक द नागोर । पत्र सं० २४६ । घा० ४४६ ६० । माया-हित्दीसंसहत । से० काल ४ । पूर्ण | वे० सं० ७४६ ।

विशेष--ताराचन्दजी के पुत्र सेवारामजी पाटग्री के पठनार्थ लिखा गया था--

१. नित्यनियम के बोहे	×	हिन्दी	ले० काल सं० १८५७
२. पूजन व नित्य पाठ संग्रह	×	_ल संस्कृत	ले० काल सं० १८५६
३, गुमधीस	×	हिन्दी	१० = शिक्षामें हैं।
४. ज्ञानपदवी	मनोहरदास	5 3	
५. बैत्यवंदना	×	संत्कृत	
६. बन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	×	हिन्दी	
७. श्रादित्यवार की कथा	×	,,	
द. नवकार मंत्र चर्चा	×	77	
 कर्म प्रकृति का ब्यौरा 	×	,,	
१०. लपु सामायिक	×	,,	
११. पावाकेवली	×		ले० काल० सं १८६६
१२. जैन बहीदेश की एत्री	· ×	,,	

४८०६. सुटका सं० ३ । यत सं० ४७ । सा० १४४३ इ० । माया-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । ते० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४९ ।

४८९०. गुटकासं० ४ । पत्र सं० २०६ । बा० ४८६ , इ० । आया हिल्दी । विषय-पद अजन । ते० काल ४ । पूर्वा । वे॰ सं० ७४० ।

४६९१. गुटकासं ४ । पत्र सं १२४ । सा० ६३४६३ ६० । भाषा-तिनी संस्कृत । ते० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० ७५१ । गुटका-संग्रह] [७१६

विशेष-सामान्य पूजा पाठ संप्रह है :

६८९२. गुटका सं०६ । पत्र सं०१४१ । बा॰ ६३×४३ ६० । बाया-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । वे॰ कान × । पूर्वा । वे० सं०७४२ ।

विशेष-प्रारम्भ में भायुर्वेदिक नुसले भी हैं।

४८१३. गुटका सं० ७ । आ० ६४६३ ६० भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजापाठ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ७४३ ।

४८५१%. गुटका सं० ⊏। पत्र सं० १३७ । बा० ७३/४५५ ६० । बावा हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । से० काल ×। बपूर्त्ता वे० सं० ७४४ ।

४८९४. गुरुक। सं> १ । पत्र सं> ७२ । सा० ७३×४३ इ० । आया-हिन्दी संस्कृत । विवय-पूचा पाठ । से० काल × । पूर्ण बै० सं० ७५४ ।

४८१६, गुटका सं० १०। पत्र सं १४७। सा० ६४५ ६०। प्रापा—हिल्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ। ले॰ काल ×। सपूर्ण । वे॰ सं० ७५६।

४८९७. गुटका सं०११। पत्र सं०१२८। धा०६५४८६ ६०। आषा—हिन्दी संस्कृत। विषय— पूना पाठ। ले० काल ×ा पूर्ण वे० सं०७५७।

४-९९- गुटका सं० १२। पत्र सं० १४१-७१२। घा० ६४४ ६०। घावा संस्कृत हिन्दी। ते० कात × । मपूर्ण। वे० स० ७१८।

विशेष-निम्नपाठों का संग्रह है---

१. दर्शनपच्चीसी	×	हिन्दी
२. पश्चास्तिकायमावा	×	,
३. मोक्षपैडी	बनारसीदास	10
४. पंचमेरजयमाल	×	77
५. साधुवंदना	वनारसीदास	n
६. जसरी	सूचरवास	p
७. पुरामश्चरी	· ×	
ब. सबुमंगल 🗸	रूपचन्य 🗸	n
१. सक्मीस्तोष	पद्मप्रभदेव	99

w?o]		[गुटका-संबद्	
१०. धकुत्रिमचैत्यालय जयमाल	भैया भगवतीदास	n र० सं• १७४५	
-देश अवस्ति परिषद्	भूभरदास	n	
१२. निर्वासकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	" र० सं० १७३६	
१३. बारह मात्रना	91	"	
१४. ह्वीमानस्तोत्र	मूघरदास	n	
१५. मंगल	विनोदीलाल	"र० सं०१७४४	
१६. पञ्चमंगल	रूपचन्द	1)	
१७. भक्तामरस्तोत्र भाषा	नथमल	**	
१८. स्वर्गसुख वर्गान	×	17	
११. कुदेवस्वरूप वर्णन	×	"	
२०. समयसारनाटक भाषा	बनारसीदास	"ले० सं० १८६१	
२१. दशलक्षरापूजा	×	"	
२२. एकीमावस्तोत्र	वादिराज	संस्कृत	
२३. स्वयंभूस्तोत्र	समंतभद्राचार्य	"	
२४. जिनसहस्रनाम	माशाधर	"	
२५. देवागमस्तोत्र	समंतभद्राचार्य	"	
२६. चतुर्विश्वतितीर्थक्टूर स्तुति	चन्द	हिन्दी	
२७. चौबीसठाएग	नेमिबन्द्राचार्य	प्राकृत	
२८. कर्मप्रकृति भाषा	×	हिन्दी	

४=१६. गुटका सं०१३ । पत्र सं०४३ । बार्० ६५×४३ ६० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । के॰ काल × पूर्णा । के॰ सं० ७४६ ।

विशेष-पूजा पाठ के ऋतिरिक्त लघु चाग्तक्य राजनीति भी है।

४.≒५० गुटका सं० १४ । पत्र सं० ४ । सा० १०×६३ ६० । भाषा-हिन्दी । ले० काल ४ । स्रपूर्ण वै० सं० ७६० ।

विशेष-- पश्चास्तिकाय भाषा टीका सहित है।

४.५२१. गुटका रं० १४ । पत्र सं० १–१५४ । मा॰ १ 2 \times ५३ ६० । जावा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ते॰ काल \times । मनूर्यो । ते॰ सं॰ ७६१ ।

४८६२. गुटकास०१६ । पत्र सं•१२७ । सा०६६४४ इ० । माया–हिन्दीसंस्कृत । विवय–पूजा पाठ । के० काल 🗙 । सपूर्ण । वे० सं• ७६२ ।

४८८२ शुटका सं० १७ । पत्र सं० ७-२३० । स्ना० ८३/४७३ ६० । भावा-हिन्दी । ले० काल सं० १७६३ सासीज दुरी २ । सपूर्ण । वे० सं० ७६३ ।

विद्योप—यह पुटका बसवा निवासी पं॰ दौलतरामजी ने स्वयं के पढ़ने के लिए पारमराम ब्राह्मए। मे लिक्स्वाया था।

१. नाटकसमयसार	बनारसीदास	हिन्दी	भपूर्ण ११
२. बनारसीविसास	77	**	e 5-4° ±
४, तीर्यक्करों के ६२ स्थान	×	"	१६४-२२ ०
 खंडेलवालों की उत्पत्ति बीर उनके ८४ गोत्र × 		,,	२२ ४−२३ ०

¥स्दर्भ गुटकासं• १सः। पत्र सं० ४–३१५ । सा० १६ै×६ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । से० काल × । समूर्या । दे० सं० ७६५ ।

≱म्पर्थ. गुटका सं०१६। पत्र सं०४७। ग्रा• म्र्य्रं प्रः । भाषा– हिन्दी संस्कृतः विषय-स्तोत्र मे० काल प्रापूर्णावे० सं०७६५।

विशेष-सामान्य स्तीत्रों का संग्रह है।

४०२६. गुटका सं० २०। पत्र सं० १६४। झा० ८×४६ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-दूजा स्तोत्र । ने० काल × । स्रपूर्ण । बे० सं० ७६६।

४८२७. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० १२८ । सा० ६×३३ ६० । भाषा- × । विषय-पूजा पाठ । के० काल × । सपूर्ण । वे० सं० ७६७ ।

विशेष--पुटका पानी में भीगा हुखा है।

१४६२६. गुटका सं० २२ । यत्र सं० ४६ । बा० ७४१.३ ६० । भाषा-हिल्दो । विषय-पद संग्रह । ले० काल 🗙 । ब्यूर्ग । वे० सं० ७६६ ।

विशेष--हिन्दी वदों का संग्रह है।

ब भगडार [दि॰ जैन मन्दिर गोधों का जयपुर]

४८२६. शुटकासं०१। पत्र सं०१७०। मा० ४८४ ६०। भाषाहिन्दीसंसक्ता। ते∙ काल 🗴 । सपूर्यः। वै० सं०२३२।

विसेष-पूजा एवं स्तोत्र संबह है। बीच के अधिकांस पत्र गले एवं फटे हुए हैं। पुरूष पाठों का संबह

्रिमन प्रकार है।			
े १. नेमीम्बररास	मुनिरतन की लि	- हिन्दी	इस पख है।
२ नेमीश्वरकी बेलि	ठक्कुरसी	27	55-EX
३. पंचेन्द्रियवेलि	"	**	e4-t+t
४. चौबी सतीर्थंकररास	×	17	१०१−१० ३
५. विवेक्जकडी	जिनदास	**	१ २६-१३३
६. मेचकुमारगीत	पूनो	,,	१४ =-१ १ १
७. टंबासागीत	कविवृत्रा	**	१ 4१-१4 १
🗸 व. बारहबनुप्रेका	बरधू	99	१ ५३- १ ६•
		ले॰ काल सं	॰ १६६२ जेष्ठ बुदो १२
्र शान्तिनायस्तोत्र .	पुराभदस्यामी	संस्कृत	१६०-१६३
रै॰. नेमीश्वर का हिंडोलना	मुनि रतन कीर्ति	े हिन्दी	\$63 - \$64
४८३० गुटका सं	२ । पत्र सं• २२ । इस० ।	६×६ ६०। शावा–हिल	ि। विषय-संबद्धः से०
काल 🗙 । यूरा । वै० सं० २३२ ।		•	
र. नेमिनाथमंगल	लाल प न्द	हिन्दी र०	काल १७४४ १-११
२. राजुलप ञ्चीसी •	×	,	१२– २२
४६३१. गुटका सं०	३ । पत्र सं० ४−५४ । म्रा० ः	:×६ ६० । भाषाहिन्दी	। ले॰ काल × । बपूर्शः ।
वै॰ सं॰ २११।			•
∕ १. प्रबुम्नरास	कृष्णराव	हिन्दी	¥- ? •
२. ग्रादिनायविनती	कनककीर्ति	,	98
 बीस तीर्थकरों की जबमाल 	हर्वकीर्ति	,,	19-9C
		-	** **

४. चन्द्रकुप्त के सोहसस्वप्न

×

हिन्दी

27-2Y

इनके मतिरिक्त बिनती संग्रह है किन्तु पूर्यातः प्रशुद्ध है।

श्रददेर, गुटका संघ्रशः। यत्र तं∙ ७४ । आ० ६३ ४६ द० । आया-विश्वी संस्कृतः। के० कस्त ४ । अपूर्तः। वे० सं० २३४ ।

विशेष-आयुर्वेदिक गुसलों का संग्रह है।

क्ष्यपेते. गुटका सं० ४ । पत्र सं० २०-७४ । बा० ७×६ ६० । आया-हिन्दी संस्कृत । से० काल सं० १७६१ नाह सुती ४ । बपूर्ता । वे० सं० २३४ ।

१. प्रादित्यवार क्या

भाऊ हिन्दी

बपूर्ण १०-६२

२. सप्तब्यसनकविशा ३. पार्श्वनावस्तुति

बनारसीदास .

४. मठारहनाते का चौडाला

लोहर ...

थ्यदेशः शुटकासं०६। पत्र सं०२-४२ । बा०६३×६६०। बाया-हिन्दी। विषय-कवा। ते० कात ×। बदुर्खा वे० सं०२३४।

विशेष--वानिश्चरजी की कथा है।

श्रम्भेश्रः गुटका सं० ७। पत्र चं० १२-६४। मा० १०३/४६३ ६०। मे० काल 🗙 । सपूर्ण । वे० सं० २३४।

१. वास्यवीति	वासम्ब	संसक्त	बपूर्ण	11
२. साबी	कबीर	हिन्दी		१३- १६
रे. ऋविमन्त्र	×	संस्कृत		१९- २१
४. प्रतिष्ठाविधान की सामग्री एवं वर्तों का	चित्र सहित वर्णन	हिन्दी		48

४८३६. गुडका सं० = । पत्र तं० २-११ । बा॰ ६×१ इ० । ते० काल × । प्रपूर्ण । वे० तं० २१७ ।

		(1/4 4- 4- 44	a v 1 45011	40 90 460
१. बलमदगीत	×	हिन्दी	बपूर्व	₹-€
२. जोगीरासा	पाँढे जिनदास	*		9-65
१. क्लकावलीसी	×	99		*!-! *
Y. 19	• मनराम	**		१४-१ ८
 पद – साथी बोडो कुमति बकेली 	विनोदीकास	*		₹=
६. 🥫 रे बीव बगत सुनमों जान	बीहल	77		₹•

and the material of the second of the second

vev]			[गुद्का संग द
w. " भरत सूप घरही में बरागी	कनककीत्ति	,,	₹•-₹}
 चुहरी- हो बुन जीव घरज हमारी या 	सभाषन्द	11	२१-२२
 परमारव जुहरी 	×	19	२२-२ १
१०. पद- भवि जीववदि से चन्द्रस्वामी	रूपवन्द	,,	२७
११. " जीव सिव देशक ले पधारी	सुन्दर	,,	₹=
१२. 🙀 जीव मेरे जिस्तवर नाम भजो	×	"	₹€
१३. " योगी या तु झावलो इला देश	×	"	₹&
१४. " धरहंत ग्रुख गायो भावी मन भावी	धजयराज	**	78-35
१५. " गिर देसत दालिह माज्या	×	,,	३१
१६. परमानन्दस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृ त	३२-३ ५
१७. पद- घट पटादि नैननि गोचर जो	मनराम	हिन्दी	35
नाटिक पुद्रस कैरो			
१८. " जिय तैं नरभव योंही खोयो	मनराम	,,	₹₹
१६. ,, श्रंखियां श्राज पवित्र भई	7		
२०. , बनौ बन्यो है झाजि हेली नेमीसुर	-		
जिन देखीयो	नगतराम		Y•
२१. 🦡 नमो नमो जै श्री प्ररिहंत	"	**	*\$
२२. " माधुरी जिनवानी सुन हे माधुरी	"	**	¥3-¥¥
२३. सिब देवी माता को घाठवों	मुनि शुभचन्द्र	,,	44-4£
२४. पद-	,,	"	¥ 4 -¥¢
२४. "	19	"	¥=-¥€
२६. " हलदी चहीडी तेल चहोडमी छपन			
कुमारि का	19	,,	XE-X6 .
२७. 🥠 जे जिंद साहिए ल्यायौ नीली घोड़ी	या	,,	48-43
२व. अस्य प्र		••	¥3-46
अंदर्भक्ष सामका संव ३ । एक	सं o €_222 । क	TA 5009	

क्ष्यपुरुष, शुरुका सं०६। पत्र सं०६–१२६। घा०६ \times ४३ ६०। ते० काल \times । प्रपूर्ण। ते० सं०२६६।

अपन्देषः, शुद्धका स्रोठ १०। पत्र संग्धान व्हे×६ ६०। विषय-संग्रहः। लेश्काल ×। वेश्संत्र २००।

 १. जिनपञ्जीती
 नवस
 हिन्दी
 १.-२

 २. संबोधपंजासिका
 धानतराय
 २.-४

्रेष्य३६, शुटका सं०११ । पत्र सं०१०–६० । बा० ५२/४४३ इ० । भाषा-संस्कृत । ते० काल ४ । वै० सं०३०० ।

विशेष-पूजाओं का संग्रह है।

४८८७. **गुउका सं**०११ । यत्र सं०११४ । आ.०६५ै४६ इ०। माषा–संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले॰ काल ४ । वे॰ सं०३०१ |

४८४१. शुटकासं० १२ । यत्र सं० १३० । झा० ६३४६ ६० । आया—संस्कृत । विषय-पूजास्तोत्र । ले० काल ४ । अपूर्णाके सं० ३०२ ।

क्ष्यप्तरः, शुटका सं० १३ । यत्र सं० ६-१७ । बा० ६२,४६ ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । ले॰ सं० X । ब्रपूर्ण । वे॰ सं० ३०३ ।

> श्रद्धके. गुटका सं० १४ । पत्र सं० २०१ । घा० ११×१ ६० । ले० काल × । पूर्ता । ४० स० ३०४ विशेष—पूजा स्तोत्र संबद्ध है ।

स्प्रप्तरः गुटका सं०१४। पत्र सं०७७। सा०१०४६ ६०। भाषा-हिन्दी। विश्वय-क्या। से० काल सं०१८०३ सावन सुरी ७। पूर्ण। वे० सं०३०६।

विशेष—इस्वशक गह सनोन पुस्तक को हिन्दी जाया में निवा गया है। मूल पुस्तक फारसी भाषा में है। स्रोटी २ कहानियां हैं।

> श्रम्प्रेश्च. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १२६ । बा॰ ६×४ र० । ते० काल × । बपूर्ण । वे० सं० ३०६ विवेष---रावचन्य (कवि बालक) इस सीता वरित्र है ।

श्रव्यक्ष. गुडका सं० १७। पत्र सं० १-२६। मा० ४४२ ६०। मापा-सस्क्रत हिन्दी। ते० काल ४। सपूर्वा । वै० सं० ४०७।

१. वेनपूर्वा प्रपूर्ण २. वृष्यवाणी ना रातो हिन्दी १०-२१ ६. नेनिमाच राष्ट्राय ₃₂ २१-६६

TOPE AND TO THE

श्रद्धक सुंदक्का सं० १६ । पत्र तं० १६० । झा॰ ८३/४६ इ० । ले॰ काल × । समूर्यो । वे॰ सं हु० इ विवेष —पत्र तं॰ १. ले ३६ तक सामान्य पाठों का सम्रह है ।

१. सुन्दर मृङ्गार	कविराजसुन्दर	हिन्दी	३७४ पदा है	\$6-40
२. विहारीसतसई टीका सहित	×	**	बपूर्ण	= १ -=¥
		v	४ पद्यों की ही टी	काहै।
३. बसत दिलास	×	,,		64-403
४. बृहत्वंटाकर्णकल्प	कवि भोगीलाल			104-EE0

विशेष---प्रारम्भ के = पत्र नहीं हैं आगे के पत्र भी नहीं हैं।

इति श्री कखुवाह कुलभवननश्कासी राउराजा बस्तावर्रीसह मानन्द कुले कवि भोगीनास विरक्ति बस्रत विलाले विभाव वर्णनो नाम नृतीय विशासः ।

पत्र द-५६ नायक नायिका वर्शन।

इति श्री कछवाहा कुलभूषननकासीः राजराजा वक्तावर सिंह ग्रानन्द कृते भोगीसास कवि विरोधते 'वक्तविकासनायकवर्णनं नामाष्टको विकास: ।

≮स्प्रस. गुटका सं०१६। यत्र सं०५४। सा० =×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ता। वै० सं०१०६।

विशेष - खुशाल बन्द इत धन्यकुमार चरित है पत्र जीर्रा है किन्तु नवीन है।

≱मध्दे. गुटका सं०२०। यत्र सं०२१। घा० १४६ इ० । आया–हिन्दी। ते० काल ४ । पूर्ण। वै० सं०३१०।

१. ऋषिमंडलपूजा	सदासुख	हिन्दी	१- १०
२. शकन्यनाचार्याद मुनियों की पूजा	×	,,	25
३. प्रतिष्ठानामावलि	×		૨ ૧

रूप्पर- गुटकास०२०.(क)। पत्र सं०१०२। मा०१×६ ६०। भावा-हिन्दी। ते० काल ×। पूर्वा। वे० सं०१११।

 $\mathbf{x}=\mathbf{s}^{\mathbf{c}}$. गुटका स०२१। पत्र सं०२६। झा० घ $\mathbf{r}^{\mathbf{c}} \mathbf{x} \in \mathbf{s}^{\mathbf{c}}$ इ०। ले० काल सं० १**६३७ झावरा हुरी** ६। पूर्ण। वे० स०३१३।

विशेष--- महलावार्य केशवसेन इन्स्सिन विरवित रोहिस्सी बत पूजा है।

४८५२. गुटका सं २२ । पत्र सं १६ । मा ११४६ ६० । ते व काल ४ । पूर्ण । वे व सं १६४ । व ज्ञवन्तवक्रवित का वारह्वासा ४ हिन्दी ६ २. सीताची का वारह्वमसा ४ % १ १-१२ १. मुनिराज का वारह्वमसा ४ % १ १३-१६

४८४६े. गुटका सं० २३। पत्र तं०२३। प्रा००३४६ ६०। आवा-हिन्दी वया। विवय-क्या। ते०काल x। पूर्ण। वे० तं० २१४।

विवोच--पुटके में प्रष्टाह्मिकावतकया दी हुई है।

४८६४. गुटका सं०२४। पत्र स०१४। झा० ८३४६ इ०। बावा-हिन्दी विषय-पूजा। ले० काल सं०१८८३ पीच बुदी १। पूर्णा वे० सं०३१६।

विशेष--पुटके में ऋषिमंडलपूजा, अन-तत्रतपूजा, बीबीसतीर्थंकर पूजादि पाठों का संग्रह है।

र्र्यप्रस्. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ३१ । घा॰ व×६ ६० । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । से० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१७ ।

विशेष-धनन्तवतपूजा तथा श्रृतज्ञानपूजा है।

१८८६: गुटका सं० २६ । पत्र सं० १६ । घा० ७४६ ६० । प्राथा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल सं० १६२१ माघ बुरी १२ । पूर्ण । वे० सं० ३१८ ।

विशेष--रामचन्त्र कृत चौवीस तीर्यंकर पूजा है।

्रस्य. शुटका सं०२०। पत्र सं०१३। सा०६×१६०। ले० काल सं०१६४४। पूर्वा। वे० स०२१६। विकेप — सटके में निम्न रचनायें उल्लोबनीय हैं।

. १. धर्मवाह X हिन्दी २ २. बंदनाजसडी विहारीदास _{११} ३-४ ३. सम्मेदशिकरपूजा गंवादास सस्कृत ५-२०

> ४८६८ गुटका सं० २८ । यत्र सं० १६। बा॰ ८४६ ६० । ते॰ काल 🗴 । पूर्ण । वै॰ सं॰ १२० । विशेष---तरवार्वभुत जनास्वानि इत है ।

श्रम्थर्थ. गुड़का सं० २६ । पण सं० १७६ । सा० १४६ ६० । ते० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १२१ । विक्रेय—विद्यारीयात इत सतकई है । योहा सं० ७०७ है । हिन्सी यक पण बोनों में ही सर्व है टीका-काल सं० १७०५ । टीकाकार कवि कृष्णुवस्त हैं । साथि सन्तवान दिन्न हैः— प्रारम्भः---

सम विहारी सतसई टीका कवित्त वंध तिस्पते:--मेरी भन वाचा हरी, राधा नागरी सोइ।
'आतन को साई परे, स्थाम हरित दृति होइ।।

टीका—सह संगलाचरन है तहां श्री राथा जूकी स्तुति यंग कर्ता किय करतु है। तहां राथा और बटे साते जा तम को कार्य परे स्थाम हरित दुति हो इ. या पद तें श्री वृषमान सुता की प्रतीति हुई — कविया—

> जाकीप्रमा सबकोकता ही तिहु सोक की शुन्दरता गहि नारि। इच्छा कहै सरसी कहे नैंनिन की नामु यहा मुद मंगल कारी।। जातन की ऋतके ऋतके हित्त जुलि स्थाम की होत निहारी। भी कुषमान कुंमारि इत्या कें सुराधा हरी जब याथा हमारी।। १ ॥

धन्तिम पाठ---

मायुर विभूककोर कुल लह्यौ कृष्ण कवि नाउ। सेवकु ही सब कविनु की बसतु मधुपुरी गांउ।। २४।: राजा मल्ल कवि कृष्ण पर ढरची कृपा के दृ।र । भांति मांति विपदा हरी दीनी दरवि ग्रापार ।। २४ ॥ एक दिना कवि सौ नुपति कही कही को जात। दोहा दोहा प्रति करी कवित बुद्धि अवदात ।। २६ ।। पहले हु मेरे यह हिय मैं हुंती विचार । करी नाइका भेंद की ग्रंथ बुद्धि शनुसार ।। २७ ।। जे कीनै पूरव कवितु सरस प्रथ सुबादाइ। तिनहिं झांडि मेरे कवित को पढि है मनुलाइ ॥ २८ ॥ जानिय हैं अपने हियें कियो न ग्रंथ प्रकास । नूप की बाइस पाइके हिय में अये हुलास ।। २६ ॥ करे सात से बोहरा सुकवि विहारीदास। सब कोऊं तिनकी पढे गुने सुने सविकास ।। ३०।। वडी भरोसों जानि मै गह्यी मासरो बाइ। यातें इन दोहानु संग दीने कवित सगाइ ॥ ३१ H

1

उक्ति दोहानु की सकर जोरि नवीन ।

करें सातसी कवित में सीखें सकल प्रवीन ।। ३२ ।।

मैं प्रंत ही बीज्यों करी कवि कुल सरल युकाद ।

पूल पूक कछु होद सो लीजों चमकि बनाइ ।। ३३ ॥।

सत्तृ सतसे सागरे प्रसी वरस रविवार ।

कातिक बदि चोचि मये कवित सकल रससार ।। ३४ ॥।

दिल श्री विहारीसतसई के बोहा टीका सहित संपूर्ण ।

सतते ग्रंथ निक्यों भी राजा भी राजा साहिवजी जीराजामस्तजी कों। लेखक सेमराज की वास्तव वासी. मोजे ग्रंजनगोई के प्रगर्न पछोर के । मिती माह सुदी ७ बुद्धवार संवत् १७६० मुकाम प्रवेस जयपुर ।

४....६०. गुटका सं० १० ≀ पत्र सं० १६० । झा० ४.४६ ६० । झे० काल ४ । धपूर्ण वे० सं० १४२ । १. तत्वार्यसूत्र काला कनककीर्ति हिन्दी ग॰ धपूर्ण २. शासिश्रद्रवीपर्द जिवसिंह सूरि के शिष्य मितसागर "प० र० काल १६७० "

ले॰ काल सं० १७४३ भादवा सुदी ४। प्रजमेर प्रतिनिपि हुई थी।

स्फुट पाठ

×

४८६१. गुटका संव ६१। पत्र संव ६०। घा० ७४५ ६०। माषा—संस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा। सेक-काल ×। मधुर्स। वेव संव ६२६।

विशेष-पूजाओं का संग्रह है।

४८६२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० १७४ । झा० ६४६ इ० । आया-हिन्दी । विषय पूजा पाठ | ले≪ काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ३२४ ।

विशेष--पूजा पाठ संग्रह है । तथा ६६ हिन्दी पद नैन (मुसनयनानन्द) के हैं ।

४८६३. गुटका सं० ६३। पत्र सं० ७३। घा० १४६ इ०। बाया-हिन्दी। से० काल ४। पूर्ण । वै० सं० ३२१।

विशेष---रामचन्द्र कृत चतुर्विशतिजिनपूजा है।

४-६४. गुटका सं० १४ । पत्र सं० =६ । सा० १४६ ६० । विषय-पूजा । ते० कास सं० १=६१ आवस तुरी ११ । वै० सं० १२६ ।

विशेष--वीवीस तीर्थंकर पूजा (रामचन्त्र) एवं स्तोण संब्रह है। हिच्छीन के कती रामचन्त्र ने प्रतिविधि

, J,

gitt.

४८६४. गुटकासं० ३४ । पत्र सं०१७। प्रा०१४०६०। प्राथा हिन्दी । ते० काल 🗴 । पूर्ती । कै० सं०३२७।

विशेष--पावानरि सोनागिर पूजा है।

्रस्त्रक्ष्य सुरुका सं०३ ६ । पत्र सं०७ । सा० त×४,१ ६० । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा गाठ एवं . ज्योतिकपाठ । ले० काल × 'सपर्या । वे० सं०३२० |

१. बृहत्षोडशकारस पूजा

× संस्कृत

२. चाल्यवनीति शास्त्र वाल्यव

३ शालिहोत्र X संस्कृत **श**पूर्या

ीं ≱्रद्भक् शुद्रका सं०३क। पत्र सं०३०। मा॰ ७×६ ६०। भाषा-संस्कृत । ले० गल ×। सपूर्ण। वैकसं०३२८।

्रेस्प्ट्रिस, गुटकासं० ३८ । यत्र सं०२४ । सा०४×४ इ० । माषा-संग्वत । ले०काल × । पूर्ण । वै० सं०३३० ।

विशेष---पूजामों का संग्रह है। इसी में प्रकाशित पुस्तकें भी बन्धी हुई हैं।

४८६६. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० ४४ । झा० ६८४ इ० । आया-संस्कृत । ने० कान 🗴 । पूर्ण । कै० सं० ३३१ ।

विशेष-देवसिद्ध्यूजा मादि दी हुई हैं।

४८.७०. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० ६० । मा० ४४६ १ ६० । भाषा-हिन्दी । १४यय घापुरेंद । ले० काल × । स्यूर्ण । वे० सं० ६२२ ।

विशेष-मायुर्वेद के नुसले दिये हुये है पदार्थों के गुलों का वर्लन भी है।

४८००१. गुटका सं० ४९ । पत्र सं० ७९ । झा० ७४५ १ ६० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्णा । के० सं० ३६३ ।

विशेष--- पूजा पाठ संग्रह है।

४८. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० ८६ । मा० ७४१ ३ ६० । जापा—हिन्दी संस्कृत । लं० काल सं० १८४६ । मनूर्या । वे० सं० ३३४ ।

विशेष—विदेह लोग के बीस तीर्यंकरों की पूजा एवं सदाई डीप पूजा का संग्रह है। दोनों ही सपूर्ण है। जीइसी कालाने प्रतिसिधि की थी। क्ष्य-पुरा सं १६६ । पत्र सं १२६ । सा० ६२४७ ६० । भाषा-शिल्पी । विषय-पूजा । ले॰ काल \times । प्रणी । वै॰ सं॰ १३६ ।

४००४. गुटका सं० ४४। वय सं० ४०। मा० ६४५ ६०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। नै० कास ४। पूर्णा दे∘ सं० ६६६।

विकोष--हिन्दी पद एवं पूजा संग्रह है।

४.च.अ. शुटका स० ४४। पत्र सं० १०६। सा० ५२/४३) ६०। जावा-सस्कृत हिन्दी । विदय-पूत्रा पाठ। से० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० १९७।

विशेष--वेबयूजा, सिळ्यूजा, तत्वार्थसूज, कत्याणुगन्दिस्तोत्र, स्वयंग्रस्तोत्र, दशलक्षण, श्रोलङ्कारण सार्व का संग्रह है।

४८. गुटका संट ४६ । पत्र सं० १५ । झा० ८×५ ६० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ सं० काल × । सन्दर्श । वे० सं० १३८ ।

विक्रेष--- तत्वार्धसूत्र, हवनविधि, सिद्धपूत्रा, पावर्यपूत्रा, सोलहकारस दशलक्षस पूजाएं है।

४८७७. गुटका सं० ४७। पत्र सं० ६६। मा० ७४४ ६०। भाषा हिन्दी। विषय-क्या। से० कास ४। पूर्णा वे० सं० ३३६।

१. जेष्ठजिनवरवया	ৰুয়ানখন্ব	हिन्दी	?− ₹
		र० काल सं०	१७८२ जेठ सुदी ६
२ भादित्यवसक्या	,,	हिन्दी	44-48
 सत्यरमस्थान 	**	"	75-35
४ मुकुटसप्तमीवतकथा	"	**	25-30
५ दशलक्षण् वतक्या	**	**	\$0-3Y
६. पुट्यक्तिवतकथा	**	**	\$Y-Y*
 रक्षाविधानकथा 	11	संस्कृत	¥{-¥¥
 विभारस्तीत्र 	77	27	79-44

१८८६ शुटका सं० ४८ । पन सं० १२८ । बाल ६८१ ६० । बाला-हिन्दो । विषय-सध्यास्य । र० तम सं० १६६३ । ते० काल ४ । बचूर्सा । के० सं० १४० ।

विशेष-विश्वासायाः इत समयसार नाटक है।

्र्याच्छ. शुरुक्षासं० ४६ । पत्र सं० ४१ । घा० ४×४ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत । ते० काल × । पूर्वो । दे० सं० ३४१ ।

विज्ञेष--पुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं--

१. जैनशतक	भूषरदास	हिन्दी	१-१ ३
२. ऋषिमण्डलस्तोत्र	गौतमस्वामी	सं म्कृत	१४-२ 0
3	*********	ir. err toon	av va

१८८६ . गुटका सं० १०। पत्र सं० २४४ । झा० १८४ ६०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-पूत्रा पाठंते० काल 🗙 । पूर्णावे० सं० ३४२

४८८२. सुटका सर ४१ । पत्र सं०१६३ । झा० ७३४४३ ६० । भाषा–हिन्द संस्कृत । ले० वाल सं०१६८२ । पूर्वा । वै० सं०१४३ ।

विशेष-गुटके के निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय हैं।

१. नवग्रहर्गाभतपार्श्वस्तोत्र	×	प्र.कृत	१-२
२. जीवविचार	धा० नेसियन्द्र	"	₹
३. नवतत्त्वप्रकरण	×	n	45-3
भ. यौबीसद ण्डकविचार	×	हिन्दी	१५६=
५. तेईस बोल विवरण	*	**	4E-8X

विशेष— दाता की कसीटी दुरिमछ परे जान जाइ। सूर की कसीटी दोई छनी खुरे रन में ।।

मित्र की कसीटी मामलो प्रगट होय |
हीरा की कसीटी है जीहरी के पन मे ।।
कुल को कसीटी घादर सनमान जानि |
सोने की कसीटी सराफन के जतन में ।)
कहैं जिननाम जैसी बस्त तैसी कीमित सी |
सामु की कसीटी है दुष्टन के बीच में 11

१. विनती समयसुन्दर हिन्दी १०३-१०३

२. हम्पसंग्रहणाया	हेमराज	_	₹१७ – १४१
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	। पुदी १०। ले० काल सं०१६।	
३. गोविंदाष्ट्रक	शक्रुराचार्य	हिन्दी	\$44-\$4# .
४. पार्वनाथस्तोत्र	×	_{११} ले० कास १८०	t {x4-{x0
४. कृपसप्पानिसी	विनोदीलाल	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,	4x3-6x4 F
६. तेरापन्य बीसपन्य मेद	×	,,	१४५-१६३
४८८२. गुटका सं० ४	(२ । पत्र सं०३ ६ । झा० ७	३,×४ ६० । माचा-हिन्दी । ं	ते • काल सं • १६६५

कार्तिक बुदी १३। वै० सं० २४४।

विशेष---पूजा पाठ संग्रह है । प॰ सदासुखजी ने प्रतिसिपि की थी ।

्रयम् हे. सुदका सं० ४३ । पत्र सं० द० । घा० ६६×५३ द० । भाषा—हिन्दी । ते० कात × । पूर्ता । वे० सं० ३४५ ।

विवोष--सामान्य पाठों का संग्रह है।

१८२५, सुटका सं० ४४। पत्र सं० ४४। या० ६२४६ ६०। मावा-हिन्दी। सपूर्ण। हे० सं० १४६ विशेष--भूबरदास इत वर्षा समामान तथा बन्द्रसागर पूजा एवं सान्तिपाठ है।

४प्पन्थः, गुटका सं० ४४ । पत्र सं० २० । झा॰ ६२,४६ ६० । जाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय-सूत्रा पाठ ने० कान × । पूर्ण | वे० सं० ३४७ ।

४८८६ शुरका सं० ४६। पत्र सं० ६८। मा० ६३%५३ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । विश्वय-पूचक पाठ। ने० काल ४। पूर्ण । वे० सं ३४८।

रूप्तक, शुरका सं० ४७। पत्र सं० १७। मा० ६५×१५ द०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्त । वे० सं० ३४१।

विशेष---रानम्य वतिविधि एव कथा वी हुई है।

्रयस्यः, गुरुका सं० श्रमः। पत्र सं० १०४ । मा० ७×६ ६० । जाया—संस्कृतः श्रिणीः। विषय—पूचा पाठ । ते० काल ×। पूर्ती । वे० तं० १४० ।

विशेष--पूजा पाठ संपष्ट है।

श्रम्मधः गुरुका सं० १६। पत्र सं० १२६। बा० ६२४६ ६०।} प्रायम-संस्कृतः। विषय-सामुदेवः। ते० कान 🗙 । बहुर्या । वै० सं० १६१।

वियोध-सन्तविभिष्यय नामक श'व है।

४००६०. सुरका सं०६०। पत्र सं०११३। बा०४४३ इ०ः भाषा–सन्तत हिन्दी। ले० काल ४४। पूर्णी कै० सं०३५२।

विशेष--पूज: स्तोत्र एव बनारसी विलास के कुछ पद एवं पाठ हैं।

अप्यदेशै. शुटका सं०६१। पत्र सं०२२३। ग्रा०४×३ इ०। भाषा–संस्कृत हिसी। ले०काल ×। पूर्णाकेल सं०३४३।

विशेष---पूजा पाठ संग्रह है।

४.न.६२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० २०६ । ग्रा० ६ χv_{k}^{2} इ० । भ्रापा-संस्कृत हिन्धे । ले० काल χ । पूर्यो । वे० सं० ३ $\chi \chi$ ।

विशेष--सामान्य स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है:--

४.८६३ गुटका सं०६२। पत्र सं० २६३। झा० ६¦४६ इ०। भाषा–हिन्दी ले० काल ४। प्रपूर्ण। **वै**० सं०६४४।

विशेष---निम्न पाठों का संग्रह है।

१. हनुमतरास	वहारायमञ्ज	हिन्दी	v3-¥7
		ले० काल सं०१८६	० फागुमा बुदी ७ ।
२. बालिभद्रसज्माय	×	हिन्दी	333
३. जलालगाहासी की वार्ता	×	,,	१०१-१४७
		ले० काल १	त्रश्माह बुदी ३

विशेष-कोड्यारी प्रतापसिंह पठनार्थ लिखी हलमूर्रमध्ये ।

४. तंत्रसार	×	,,	पद्य सं०४६	१४ =-१४२
५. चन्दकुंवर की बार्ता	×	11		१ ५२-१६४
६. घग्परनिसांगी	जिनहर्ष	11		१ ६ ५-१६६
७. सुदयवद्यसालिया री वार्ता	×	,,	भपूर्ण	£39-003

४. च दुक्तासं०६४ । पत्र सं०१७ । मा०६५ ४४ ६० । मावाहिन्दी संस्कृत । पूर्ण। लंगकल ४. । वे० सं०३५६ ।

विशेष---नवमञ्जल विनोदीलास कृत एवं पद स्तुति एवं पूजा संग्रह है।

XX-2 E

१८६६ गुद्धकार्स०६४ । यत्र सं०६३ । सा०६×४६० । भाषा-हिल्यीसंस्कृत । ले०काल × । पूर्वावेण सं०३४७ ।

वितेय-सिद्धवक्राजा एवं प्रधावती स्तोत्र है।

४.स.६६. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ४४ । सा० ६.४४ ¦ ६० । बाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा । ने० कान × । पूर्ण | वे० सं० ३५ स ।

 $y=\xi w$. गुटका संट ६७ । पत्र म० ४६ । स्रा० ६२ ४५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ते० काल \times । पूर्ण । वै० सं० २५६ ।

विशेष---भक्त-मरस्तोत्र, प्रचमगल, देवपूत्रा सादि का संग्रह है।

४८६८ सुद्रकासं-६८ । पत्र सं०६४ । सा०४४३ ६० । मापा—संस्कृत हिन्दी । विषय–स्तोत्र संबह ले० काल ४ । दे० सं०३६० ।

%⊏६६. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० १९१ । आ • ७ ४ ६० । आपा—हिन्दी । से० कास × । पूर्श ३ वै० सं० ६९१ ।

विभेष--- मुख्यत: विम्न पाठों का समह है।

१, सत्तरभेषपुत्रा सामुकीति (हिन्दी १-१४ २. महावीरस्तवनपूत्रा समयनुन्दर , १४-१६ ३ पर्मरीका नावा ✓ विशालकाति , ने० काल १८६४ ३०-१६१

विशेष —नागार मे पं० चतुर्भुत ने प्रतिलिधि की बी।

४६०० सुरका सं०७० . पत्र स०१६ । बा०१२४१ ६० आवा-हिन्दी । ले० काल सं०१८०२ पूर्वा : वे० स० ३६२ ।

१. महायण्डक × हिन्दी ३--४३

मै० काल सं०१ = ०२ भीष बुदी १३।

विसेष -- उदयक्तिमल ने प्रतिस्थिषि की बी। श्रिकपुरी में प्रतिस्थि की गई बी।

४६०१. शुटकासट ७१ । यम तं∘ १२१ । यः० ६ ्४४ ६० मापा शस्कृत हिन्दी । दिवय-स्तोचसंसह से• कान ४ । पूर्शः । दे• सं• १६१ ।

3. Oak

२ कोम

ţ

े ४६०२. गुडका स० ७२ । यत्र सं० १४७ । बा० ४४३ इ० । बाया-संस्कृत हिन्दी । से० काल ४ । ूर्युर्ग । ये० सं० १६४ ।

विकेष--पूजा पाठ व स्तोत्र झादि का संग्रह है।

. ४६०३. गुटका सं० ७३। पत्र सं० १६। ग्रा० ४४३ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। त० काल ४। पूर्की देे सं० २६४।

१. पूजा पाठ संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी	\$- **
२. बायुर्वेदिक नुसस्रे	×	हिन्दी	¥ X −€ €

३६०४. गुटका सं० ७४। पत्र सं० ४०। मा० ५३/४६३ ६०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। मपूर्ण कै० सं० ३६६।

विश्रीय----प्राप्त- में पूजा पाठ तथा नुससी दिये हुये हैं तथा घन्त के १७ पत्रों में संवत् १०३३ से सारत के राजाओं का परिचय दिया हुया है।

४६०४. गुटका सं० ७४। यत्र सं० ६०। आ० ४५/४६६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ते० कल 🗙 । स्रपूर्ण। वै० सं० ३६७।

विशेष-सामान्य पाठों का संग्रह है।

४६०६. सुद्रका सं० थ६। पत्र सं० १२-१३७। झा० ७imes२ द०। भाषा हिन्दी संस्कृत । लेoकाल imes1 झपूर्ण । वेoसं० १६म ।

विशेष-- प्रारम्भ में कुछ मंत्र हैं तथा फिर बायुर्वेदिक नुसले दिये हुये हैं।

४६०७. गुटका सं० ७०। पत्र सं० २७। मा० ६३×४३ ६०। माया-हिन्दी। ले० काल ×। सपूर्ण कै० सं० ६६६।

१. ज्ञानिबन्तामिए	मनोहरदास	हिन्दी	१२६ पद्य है	1-16
२. वजनःभिवक्रवर्तीकी मावना	मूथरदास	"		16-53
३. सम्मेदगिरिश्रूजा	×	,,	भपूर्ण	२ २- २७

४६०८. गुटका सं० ७८। पत्र सं॰ १२०। मा॰ ९×३ई ६०। मापा-संस्कृत। से॰ काल ×। सपूर्ण के॰ सं॰ ३७१।

विशेष---नाममाला तथा लब्बिसार गावि में से पाठ है।

१६०६, शुटका सं० ७६। यत्र सं० ३०। बा० ६६×४६ ६०। बाबा-दिली । ते० काल सं० ्रे १०१ '''। पूर्वा । वै० तं० ३७१।

विशेष -- ब्रह्मरायमस्य कृत प्रयुम्नरास है।

४६१०. शुटका सं० ८० । पत्र सं० ४४-१३१ । ब्रा० ६३% ६ ६० । भाषा-संस्कृत । ले० काल 🗙 । ब्रपुर्ख । वै० सं० २७२ ।

विशेष--निम्न पाठों का संप्रह है।

	१. श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द	आसृत	भपूर्ण	4 %-06
	२. मूलसंघ की पट्टावलि	×	संस्कृत		E0-53
	३. गर्भवडारचक	देवनन्दि	"		4X-60
ķ	४. स्तोत्रवय	×	संस्कृत		€0-90¥
		एकीमाव, मक्ताम	र एवं भूपालबतुर्विशा	त स्तोत्र हैं।	

	एकामाव, मक्तानर एव	मूनाल मद्वापना	e reprop	,	
४, बीतरागस्तोत्र	भ० परानन्दि	,,	१० पह	ŧ	\$0.X-\$0.E
६. पारर्वनावस्तवन	राजसेन [बीरसेन के शिष्य]	"	٤	99	१०६१०७
७. परमात्मराजस्तोत्र	पद्मनन्दि	39	44	99	309-608
=, सामायिक पाठ	व्यमितिगति	"			११०-११ ३
६. तत्वसार	देवसेन	प्राकृत			\$\$\$-\$\$
१०. बाराधनासार	"	7			\$5x -\$ \$\$
११. समयसारगाया	मा० कुन्दकुन्द	19			१३४−१३ =

४६११. गुटका सं० २०१ । यत्र सं० २-५६ । मा० ६४४ ४० । माया-हिन्दी । ले॰ काल सं० १७६० भावता सुदी १३ । सपूर्ता । वै० सं० १७४ ।

विशेष-कामशास्त्र एवं नाविका वर्णन है।

४६१२. शुटका सं० दर। पत्र सं० ६३×६ ६०। त्राया—संस्कृत हिन्दी। ते० काल ×। पूर्ण। के सं० १७४। विशेष-पूत्रा तथा कवालों का संग्रह, है। सन्त में १०६ से ११३ तक १८ मी बठाव्यी का (१७०१ से १७६१ क) वर्ष सकाल युद्ध साथि का सोग विवा हुमा है।

हर १३. गुडफा सं० म १। पत्र सं० म ६। बा० ६×४ ६०। माबा-हिन्दी ! से० काल × । बीर्स्टा । पूर्व ! पे० सं० १७॥ ।

υξα]			् गुर्देश-व
१ कृष्णरास	×	हिन्दी	पद्य सं०७६ है १-१
	# #	हापुराण के दशम स	इन्ध में से लिया गया है।
२. कालीनागदमन कथा	×	33	१६-२१
वे. कृष्णाप्रेमाष्ट्रक	×	"	२ ६-२ =
४६१४. गुटका संव	. ८४ । पत्र सं० १५२-२४१ ।	मा॰ ६३ै≾५ इ० .	। भाग-संस्कृत । ले० काल
श्चपूर्ण । वे० सं० ३७६ ।			
विशेष—वैद्यकसार ए	वं वैद्यवस्थान ग्रन्थों का संग्रह है।	ı	
५६१४. गुटका सं०	८ 🗱 । पत्र सं० ३०२ । झा० व	×५ इ०: भ न्पा	हिन्दी ते ः काल 🗴 । सपू
वे० सं० ३७७।			
विशेष—दो गुटको क	ाएक ग्रुटकाकर दिया है। निम्न	न पाठ मुख्यतः उपन	यनीय है।
१. चिन्तामिग्रिजयमान	ठनकुरसो	हिन्दी	११ स्य हे २०-२४
२. बेलि	छीहन	,,	वृष्-०४
३. टंड्रागागीत	बूबा	"	÷y-≒=
४. चेतनगीत ∽	मुनिसिहनन्दि	17	\$ c - \$ 0
५. जिनलाङ्क	बह्मरायमञ्ज	**	35-08
६. नेमीश्वरचोमासा -	— सिंहनन्दि	**	32-33
७ पंथीगीत	खे [.] हल	**	41-47
= नेमीस्वर के १० भव	ग्रह्मधर्म ह चि	"	¥3-¥3
६. गीत	कवि पत्ह ः-	11	Y9-Y5
१० सीमंधरस्तवन	— ठक्कुरसी	**	¥€-¥•
	•		¥E-X0
११. मादिनायस्तवन 🗨	कार्यिपल्ह - ' '	"	• C - 40
११. मादिनायस्तवन <u></u> १२. स्तोत	की 4 पत्ह ्र भ ्तिनच न्द्र देव	,,	४०-५१
	म ः निचन्द्र देव		
१२. स्तोत्र	म ः निचन्द्र देव	n - n	४० -५१ ४२-८७
१२. स्तोत्र	म ः निचन्द्र देव	n - n	५०-५१

गुटका-संमद्द		(व्हेर
१६, वनिभद्र गीत	श्रभगवन्द	,, ३०-३६
१७ मनिष्यदत्तकथा	वहारायमञ्ज	" Yo-51
१८. निर्दोषसप्तमीवत कथा	**	"
		ते० काल १६४३ ग्रासीज १३।
१६. इनुमन्तराम	*	,, अपूर्श

४६१६, गुडका संघ न६ । यत संघ १८६ । आष ६४६ इर । भाषा-संस्कृत हिली । विषय-पूजा एवं स्तोव । नेव काल संघ १६४२ बादरा मुदा १ । पूर्ण । रेव संघ ३७६ ।

४६९७. सुदक्षा सं० २०। पत्र सं० २००। पा० १३४४ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल 🗴 । पूर्ण। वै० सं० २७६।

विशेष—ाूबा एवं स्तायों के अतिरिक्त कावन्द, बनारमोदास तथा विनोदीलाल झादि कवियों कुउ हिन्द। पाठ है।

४६६६ सुटकासं० मन । पत्र सं० ५० । मार्गा-हिन्दी । विषय–पद । ते० काल ४ । स्मृती । वे० सं० ३८० ।

विशेष-भगतराम कृत हिन्दी पदो का संग्रह है।

४६१६. गुडकामंट ८६ । यव सं०२ – २६६ । ब्रा०८×५ ६० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले॰ काव ×। पहली । वे० सं०३ ८६१

विशेष---निम्न पाठी का स्वह है।

१. प≛नमस्कारस्तोत्र	उमास्वानि	संस्कृत	१ 5-२0
२. बारह धनुपंका	×	प्राकृत ४७ गामायें हैं	। २१-२५
३. भादनाचतुर्विशति	पद्मनन्दि	संस्कृत	
४. घन्य स्फुट वाठ एवं पूजायें	×	संस्कृत हिन्ही	

४६२: गुटका सं०६०। पत्र सं०६-६१। या० ८८५ $\frac{1}{2}$ ह०। आला शिल्या। विषय-स्व संबह । मे० काल \times । पूर्ता दे० सं०६०२।

विशेय---नलबराम के पदों का संबह है।

प्रस्ति सुरक्षा संस्कृति यह सर्व १४-४६। यात् क्षेत्र १ ६०। आया-त्यि संस्कृत के काम \times । पूर्ण । वेत संव १ काम \times । पूर्ण । वेत संव १ काम

विशेष-स्तीय एवं पाठीं का संबह है।

्रें ६६६२. शुटका सं० ६२ । पत्र सं० २६ । मा० ६×१ ६०। भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। ले० काला × । समूर्णी वै० सं० ३६४।

विशेष-सम्मेदगिरि पूजा है।

४.६२३. गुटका सं०६३ । पत्र सं०१२३ । मा०६×१ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×) इस्की देल सं०३ न ४.।

विशेष---मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है।

ŧ.	वेतनवरित	भैमा भगवतीदास	हिन्दी	१-१ •
₹.	जिनसहस्रनाम	भाशाधर	संस्कृत	११-१५
₹.	लघुतस्वार्यसूत्र	×	,,	3 3−3 ₹
٧.	चौरासी जाति की जयमाल	×	हिन्दी	\$E-80
ų.	सोलहकारएकया	ब्रह्मकानसागर	हिन्दी	46-9A
٤.	रत्नत्रयक्षा	,,	,,	98-86
७.	ब्रा दित्यवारकथा	भाऊकवि	"	<i>७६</i> – ८६
ج.	दोहाशतक	रूपसन्द	"	€¥-£ ₹
٤.	त्रेपनक्रिया	व्रह्मगुलाल	"	€७-=€
₹•.	प्रष्ठाहिनका कथा	ब्रह्मज्ञानसागर	"	\$00-\$0X
25.	झन्यपाठ	×	77	१ ८५–१२३

४६२४. गुरका सं० ६४। पत्र सं० ७-७६। मा॰ ४×१२ ६०। भाषा-हिन्दी। से॰ कान ×। मनूर्ता। वे० सं० ३६६।

विशेष-देवाबहा के पदों का संबह है।

४६२४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ३-६६ । मा० १×४६ ह० । मावा हिन्दी ले० काल × । मपूर्ता । वै० सं० १६७।

१. प्रविध्यदत्तकवा बहारायमल हिन्दी स्पूर्ण ३-७० ले॰ काल सं॰ १७६० कार्तिक सुदी १२ २. इनुपतकवा ११ ११ ७१-०६

. ४६२६. गुटकासं० ६६ । यत्र सं० यह। सा० ६८६ ६०। माया-संस्कृतः । विषय-संव सास्त्रः । के० कालसं० १८६६। पूर्वः। वै० सं० देवदः।

गुटका-संबद्]	•		(981
१. भक्तामरस्तोत्र ऋदिमंत्रयंत्रसहित	मानतु गाचार्य	संस्कृत	₹- ¥₹
२. पद्मावतीकवच	×	,,	४३–१२
३. पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	. X5-68
४. पद्मावतीस्तोत्र बीजमंत्र एवं साधन (विधि 🗙	ъ .	44-44
x. पद्मावतीपटल	×	n	= 4-=0
६. वदावतीहंडक	~	_	Fig. F

४६२७. गुटका सं• ६७। पत्र सं• ६-११३ मा• ६×४ ६०। भाषा-हिन्दी। ले॰ काल ×। सपूर्य वै॰ सं• ३८६।

१. स्फुटबार्ला	×	हिन्दी	घपूर्ण	६–२२
२. हरिचन्दशतक	×	77		₹₹-
३. श्रीघूचरित	×	•		₹9-€₹
४. मल्हारवरित	×	11	मपूर्ण	E3-883

४६२ स. गुटका सं०६ स । पत्र सं०१३ । आ। ० १४४ ६० । आया-संस्कृत हिन्सी । ले० काल \times । प्रपूर्ण । वे० सं०३६० ।

विशेष-स्तोत्र एवं तत्वार्थसूत्र आदि सामान्य पाठों का संग्रह है।

४६२६. शुटकासं०६६ । पत्र सं०६-१२६ । साग् न्३४५ ६० । भाषा-हिल्दी संस्कृत । के० काल 🗙 । सपूर्तावे० सं०३६१ ।

४६३०. गुटका सं० १८० । पत्र सं० ८८ । घा० ८४५ इ० । भाषा-हिन्दी । ते० काल 🗴 । घपूर्छ ।

व० स० २६२।			
१. वादित्यवारकया	×	हिल्दी	{ <i>A−</i> ∮ <i>A</i>
२, पक्की स्याही बनाने की विधि	×	39	३ %
३, संकट चीप ई कवा	×	19	\$ 5- 4\$
४. करका बत्तीसी	·×	*	የ ጂ-ሃቴ
४. निरंजन शतक	×	*	₹ \$~#¥.

विक्षेय---विषि विकृत है पढ़ने में नहीं बाती।

स्टेरेर. गुडका सं०१०१। वय सं०२३। आ० ६५ू×४३ ६०। भाषा-हिन्सी। ते० काल ×। महर्त्वा तं० २२३।

विक्षेत्र---कवि सुन्दर इत नायिकालक्षरण दिया हुन्ना है। ४२ से १५० पद्य तक है।

४६६२. सुटका सं० १०२ । तत्र सं० ७८-१०१ । मा० ८४७ ६० । भावा-हिल्यो । विषय-संबद्ध । वै॰ काल 🗙 । मनूर्यो । वे० सं० ३६४ ।

१. चतुर्दशी कवा

डालुराम

हिन्दी र० काल १७६५ प्र. जेठ सुदी १०

ले० काल सं० १७६५ जेठ सुदी १४ । अपूर्ण ।

विशेष---२६ पद्य से २३० पद्य तक हैं।

मध्य भाग---

माता ए सो हठ मति करी, संजम विनाजीय न निसतरे।

कांकी माता काकी बाप, मातमराम मकेलो माप ॥ १७६॥

दोहा---

साप देखि पर देखिये, दुख सुख दोउ भेद। सातम ऐक विचारिये, भरमन कहुन खेदा। १७०॥ मंगलाबार कंबर को कीयो, दिख्या लेएा कवर जब गयो। सुवामी साथे जोक्या हाम, दीख्य दोह मुनीमुर नाव।। १०६॥

चन्तिमपाठ---

बुधि सार क्या कही, राजधारी मुलतान ।

करम कटक मैं देहरों बंडो पने नु जांगा ॥ २२६ ॥

सतरासे पनावने प्रथम जेठ भुदि जानि ।

सोमवार दसनी मानी प्ररण क्या वसानि ॥ २२६ ॥

संदेशवाल बौहरा गोत, प्रांवावतो मैं वास ।

बानु कई मित भी हंती, हं सबन की दास ॥ २३० ॥

महाराजा बीसनसिद्धी प्राया, साह्या घाल की सार ।

वो या क्या पढे जुली, सो पुरिष मैं सार ॥ १३१ ॥

वीदश की कथा संपूर्ण। मिती प्रथम जेठ मुदी १४ संवर् १७६४

२. बीदशकोजयमाल

×

हिन्दी १३-६४

रे. तारातीबोलकी कथा

» ले॰ काल सं० १७६३ १४-१६

शुरंका-समस् ो	**	•		[als
४. नवरत्न कवित्त	बनारसीदास	"		89-09
५. ज्ञानपच्चीसी	"	15		६५-१००
६. पद	×	,,	बपूर्ण	200-605

४६६२३, शुद्धका सं० १०२। पत्र सं० १०-४४। बा० य्यू×६३ ६०। नाषा-हिन्दी। ते० कात ×। बपूर्ण। वै० सं० २१४।

विशेष---महाराजकुमार इन्द्रजीत विरवित रसिकप्रिया है।

४६२४, गुटकासं० १०४ । पत्र सं० ७ । बा० ६८४ ६० । प्राथा-हिन्दी । से० कास ४ । बुर्सी । वै० सं० ६२७ ।

विशेष--हिन्दी पदों का संग्रह है।

ज भगडार [दि॰ जैन मन्दिर यति यशोदानन्दजी जयपुर]

४६२४. गुटका सं० १। पत्र सं० १४०। घा० ७३×५३ ६०। लिपि काल ×। विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संबह है।

१. देहली के बादशाहों की नामावलि	एवं	हिन्दी	1-12
परिचय	×	ले॰ काल सं० १८५३	वेठ बुदी ४.।
२. कवित्तसंब्रह	x '	,,	40-88
३. शनिश्वर की कथा	×	,, वच	*¥~£0
४. कविल एवं दोहा संग्रह	×	**	\$=-& ¥
५. द्वावशमाला	कवि राजसुन्दर	19	& x - e e
		ले॰ काल १८५६ पी	ष बुदी ५ ।

विवेष--रख्यम्भीर में सक्ष्मण्यास पाटनी ने प्रतिलिपि की थी।

४६३६. गुटका सं० २ । पत्र सं० १०६ । बा॰ ४×४३ ६० ।

विशेष--पूजा पाठ संबह है।

४६३७. गुटका सं० १ । पत्र सं० १-१४१ । बा० ६×४३ ६० ।

विशेष--पुरुषतः विश्व पाठों का संग्रह है ।

गीत-वर्मकीति ×
 (जिल्लवर ध्यादयदावे, मीन जिल्ला फलु पाना)

iai)

हिन्दी

3-Y

२. बोत-(विख्यर ही स्वामी चरल बनाम, सरसति स्वामिति बानऊ ही)

163	3				ि गुर्ह्य संगा
ŧ.	पुष्पञ्जलिजबमाल		×	घपभंग	5-38
₹.	लबुक्त्यास्त्रपाठ		×	हिन्दी	₹¥-₹
۹,	तत्वसार		देवसेन	प्राङ्गत	¥6-40
٧.	धाराधनासार		"	"	≒३−१० ०
¥.	हादशानुप्रेक्षा	-	लक्ष्मीसेन	"	१००-१११
٤.	पार्श्वनायस्तोत्र		पद्मनन्दि	संस्कृत	१११-११२
٧.	द्रव्यसंग्रह		धा० नेमियन्द	प्राकृत	8x6-8x8

हर देव. गुटका सं०४। पत्र सं०१ द६। झा० ६×६ इ०। आपा-हिन्दी। ले० कास सं०१ द४२ मायाद सुदी १४।

विशेष---निम्न पाठों का संग्रह है।

१. पार्श्वपुरास	भूषरदास	हिन्दी		8-8-8
२. एकसोग्रनहत्तरजीव वर्शन	×	,,	\$=¥?	१०४
३. हतुमन्त चौपाई	व० रायमल	n	१८२२ झाषाढ	धुदी ३ ",

प्रदेह. गुटका स० ४। पत्र सं० १४०। बा॰ ७३×४ इ०। भाषा-सस्कृत।

विशेष--पूजा पाठ संग्रह है।

४६४०. गुटका सं० ६। पत्र सं० २१३। आ० ६×४ ६०। भाषा-संस्कृत । ले० काल ×।

विशेष--सामान्य पाठों का संग्रह है।

द्र-४४. गुटका सं० ७। पत्र सं० २२०। झा० १८७३ ६०। झावा-हिन्दी। ले० काल ४। पूर्णी। विशेष--पं० देवीचन्दकृत हितीपदेश (संस्कृत) का हिन्दी भाषामं अर्थ दिवा हुमा है। भाषा गव्य और पद्य दोनों में है। देवीचन्द ने प्रपत्ना कोई परिचय नहीं लिखा है। जयपुर में प्रतिलिप की गई थी। भाषा साधारण है —

थब तेरी सेवा में रहि हों । धैसे कहि गंगदत कुवा महि ते नीकरो ।

दोहा-खुटो काल के गाल में प्रव कही काल न प्राय।

भ्रो नर भरहट मालतें नयो जनम तन पाय।)

वार्षा—संप की दांड में ते खुटी कर कही नवी जनम पायों। कुने में ते बाहरि बाद यो कही बहां सांप किंदनिक वेर तो बाट देखी। न प्रामी जब बाहुर अभी। तब भी कहीं में कहा कीयों। जबरि कुवा के मेंडक सब खायो दे जब जन गंगारत की न खामो तब सम रखा कड़ खायो नहीं।

```
शुक्का-संबद् ] [ अश्रष्ट
प्रदेशन: गुक्का संब = । पत्र संव १६६-४३० । आव १८६ इ० । भाषा-हिन्दी । ने० काल 🗴 ।
```

धपूर्ग ।

विशेष---बुलाकीदास इत पाडवपुरासा भाषा है।

४६४३ गुटका स॰ ६। पत्र स॰ १०१। घा॰ ७६×६५ ६०। विषय-संग्रह | ले॰ काल 📈 । पूर्मा ।

विशेष-स्तोत्र एव मामान्य पाठी का सग्रह है।

४६४४ गुटकार्स० १०। पत्र स०११०। झा० ०३४६ ६०। भाषा-हिन्दी पद्य: विषय-मबहु। न० नाल स०१०६० माह बुदी १। पूर्णा।

१ सुदरविलाम मुन्दरदास हिन्दी १ मे ११६

विशेष--- ब्राह्मण् चतुर्भु ज सहलवाल ने प्रतिसीपि की थी।

र बारहमडी दलवाल n

विशेष-- ६ पदा है।

४६४४. सुटका स०११ । यत्र म०४२ । बा० प्र 4 ४६ ६० । आया-हिन्सं यद्य $_1$ से० काल स०१६० प्रसेत बुशो ६ । पूर्ण ।

विशेष---वृ वसतसई है जिसम ७०१ दोहे हैं। दसकत चीमनलाल कालल हाला का।

स्थर्भः सुटकास०१२ । पत्र स०२० । मा० म×६३ ६० । भाषा—हिनी । ले० काल स०१०६० मालोत्र बुरी १ । पूर्णः ।

विशेष---प बमेरु तथा रत्नमय एव पार्वनायस्तुति है।

४६४७ सुटका सं०१३ । यत्र सं०१४ । मा० ब×६२ इ० । नाया—संसकृत हिन्दी । ते० काल सं०१७६० ज्येष्ठ सुरी १ । मधूर्ण ।

निम्नलिखित पाठ हैं---

करपालमंदिर वाषा, श्रीमालस्तुति, बठारा नाते का बोडात्या, मक्तामरस्तोत्र, सिडपूजा, पार्श्व'नाव स्तुति [पधावदेव इत] पंचपरमेष्टी हुल्यास, बान्तिनासस्तोष बादित्यपार कवा [पाउक्त] नवकार राखी, बोदी राखी, जनरणीत, पूजाहक, विन्तानसि पार्श्व'नाव पूजा, नेमि राखो, इक्स्तुति झार्ब ।

बीच के १०० से १३२ पत्र नहीं हैं। पीके काट गये बाखून होते हैं।

क भगडार [शास्त्र भगडार दि॰ जैन मन्दिर विजयराम पाड्या जयपुर्र]

४६४८ गुरका स०१। पत्र स०२०। झा० ४५४४ इ०। भाषा-हिदी। विषय-सम्रह। ले॰ काल -स०१९४६ । पूर्वा। वे० स०२७।

विशेष---- भाको बनापाठ सामायिक्याठ छहुडाला (दोलतराम) कर्मप्रकृतिविधान (बनारसीदास) सकृतिक वैत्यालय जयमाल ग्रादि पाठों का समृह है।

१६४६ गुटकास०२। पत्र स०२२। सा०१२%४ ६०। बापा-हिन्दी पष्ट। ले॰ काल 🗙 । पूर्णा के स०२९।

विशय-वीररस के कवितों का सग्रह है।

४६.४० शुटकास०३ । पत्र स०६० । प्रा०६×६०० । भाषा–सस्तृत हिंदी। ल०काप 🔉 । पूर्णाजीसासीस्य । के०स०३० ।

विशेष--सामा य पाठी का सम्रह है।

४६४१ गुटका स०४। पत्र स०१०१। झा० १×५ १ ६०। भाषा हिदी। २० काल \times । पूm। के स० ४१।

विशय-मुख्यत निम्न पाठा का सयह है।

ŧ	जिनसहस्रनामस्तोत्र	बनारसीदास	हि दा	9 - 9 8
2	लहुरी नमाश्वरका	विश्वनूषरा	,,	16-41
ą	पद- भातम सः। सुहाव	ाना व नतराय	,,	48
¥	विनती	_ x	"	71-14
	विशय-	~ - इपचदने मागरेम स्वपठनाथ लिखी थ	Γ}	
¥	सुवाधडी	हचकीत्ति	"	₹ % -₹¥
ę	सि दूरप्रकरण	वनारसादास	,,	5X-80
•	मध्यात्मदोहा	रू पचन्द	"	¥0-XX
•	सामुबदना	बनारसोदास	,,	44-8 4
Ł	मोक्षपैडी	"	,,	¥ c- €8
१ •	कमप्रकृतिविधान	n	"	43-20

११. विनती एवं पदसंग्रह

×

हिन्दी

109-19

४६.४२. गुटका सं० ४। पत्र सं० ६-२१। मा० ४×४ ६०। भावा-हिन्दी। ने० कास ×। मनुर्ता । वै० स० २२।

विशेष — नेमिराजुलपश्चीसी (विनोदीलाल), बारहमासा, ननद भौजाई का अगवा ग्रावि पार्टी का संबह है।

. १६४३. गुटकासं०६ । पत्र स०१६ । बा०६×४५ ६० । भाषा–हिन्दी। ले० काल × । पूर्व । वै० सं०४१ ।

विशेष - निम्न पाठ हैं- पद, बौरासी न्यात की जयमान, बीरासी जाति वर्शन !

स्टर्थः, सुटकासं०७। यम सं०७। सा०९×४३ ६०। माला-हिन्दी। ते० कालसं०१६४३। वैद्यालस्पीर। प्रपूर्ण। वे०स०४२।

विशेष--विधापहारस्तात्र भाषा एव निर्वासकाण्ड भाषा है।

४६.४४. सुटकासट = 1 पत्र त० १=४ । बा० ७ \times ५ $\frac{1}{2}$ ६० । बावा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तीत्र । त० सल \times 1 पूर्ण । वे० त० ४३ ।

१. उपदेशशतक	धानतराय	हिन्दी	१-३४
२. छहडाला (बक्षरवात्रनी)	,,	**	₹1,4€
१. घर्मपश्रीसी	31	"	\$6- 45
¥. तस्वसारभाषा	»	39	¥7-¥€
र. सहस्रतामपूजा	धर्मचन्द्र	संस्कृत	46-60x
६. जिनमहस्रनामस्तवन	जिनसेनाचार्य	,,	१- १२

से॰ काल सं॰ १७६८ फायुन सुदी १०

४६५६. शुटका सं० ६ । पत्र सं० १३ । बा० ६५×४३ ६० । बाया-प्राकृत हिन्दी । ले० काल सं० १६१६ । पूर्त्तो वे० सं० ४४ ।

विक्रेय-सामान्य पाठी का सग्रह है। ,

१६१७. गुरका सं० १० । पत्र तं० १०१ । बा० व×७ ६० । ते० काल × ।

१. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	श्रपत्रं स	1-10
२. तरबसार	वेवसेन	RINGS	50-5A

			[गुटका संबद
३. बारहमकरी	×	संस्कृत	२४-२७
. ४. समाधिरास <u> </u>	×	युरानी हिन्दी	२७२६
विशेषपं० डालूराम	म ने ध्रपने पढने के लिए लिखाः	या ।	
. ४. द्वाद वानुत्रेका	×	पुरानी हिन्दी	98-39
६. योगीरासो 🗼	योगीन्द्र देव	ध्रपभ्रं श	. \$4-\$\$
.७. श्रावकाचार दोहा	रामसिंह	"	¥3- 43
द. षट्पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	54-\$0X
 षटलेश्या वर्शन 	×	संस्कृत	\$08-80X
४६४८. गुटका संव	२१। पत्र सं०३४। (खुले ।	हुये शास्त्राकार) द्या० ७३,४	(५६०। भाषा–हिन्दी
के० काल 🗴 । पूर्ण । वै० मं० ८४			
विशेष—पूजाएवं स्त	गोत्र संग्रह है।		
४६४६. गटका संव	२ १२ । पत्र सं०५० । झा०६:	×५ ड० । भाषा∸हिन्दी। हे	ग०काल × 1 श्रुपर्ग।
वे॰ सं॰ १००।	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,		
विशेषनित्य पूजा	पाठ संग्रह है ।		
	पाठ सग्रह है। > १३। पत्र सं॰ ४०। झा० ६७	≺६ इ०। भाषा–हिन्दी। हे	। • काल × । मपूर्ण ।
	२ १३ । पत्र सं∘४० । झा०६;		।० काल × । अनूर्गा ।
४६६०. गुटका संव वे० सं० १०१। १. चन्दकथा	० १ ३ । पत्र सं∘ ४० । झा० ६; लक्ष्मग्	ि,न्दी	० काल × । झपूर्गा । १–२१
४६६०. गुटकासंव वे०सं० १०१। १. चन्दकथा	२ १३ । पत्र सं∘४० । झा०६;	ि,न्दी	•
४६६०. गुटकासंव वे०सं० १०१। १. चन्दकथा	० १ ३ । पत्र सं∘ ४० । झा० ६; लक्ष्मग्	ि,न्दी	•
४६६०. गुटका संव वे० सं० १०१। १. बन्दकथा विशेष—१७ वद्य मे २. फुटकर कविस विशेष—बन्दन मानि	०१३ पत्र सं०४० झा०६) लघ्मरण २६२ पद्य तक ग्राभानेरी केरा ग्रागरदास प्रामिर्दक्ष हो।	िन्दी जाचल्यको कथाहै। फ	१-२१ २२-४०
४६६०. गुटका संव वे० सं० १०१ । १. बन्दकथा विशेष—१७ वद्य मे २. कुटकर कविस विशेष—बन्दन मानि	०१२ । पत्र सं०४० । झा०६: लब्सए। २६२ पद्यालक ग्राभानेरीकेरा क्रमरदास	िन्दी जाचल्यको कथाहै। फ	१-२१ २२-४०
४६६०. गुटका संद वे० सं० १०१। १. चन्दकथा विशेष—१७ पद्य मे २. कुटकर कविस विशेष—चन्दन मानि	०१३ पत्र सं०४० झा०६) लघ्मरण २६२ पद्य तक ग्राभानेरी केरा ग्रागरदास प्रामिर्दक्ष हो।	िन्दी जाचल्यको कथाहै। फ	१-२१ २२-४०
४६६०. गुटका संव वे॰ सं० १०१। १. करकथा विशेष—१७ पद्य मे २. कुटकर कविस विशेष—कप्य मंतिर ४६६१. गुटका संव	०१३ पत्र सं०४० झा०६) लघ्मरण २६२ पद्य तक ग्राभानेरी केरा ग्रागरदास प्रामिर्दक्ष हो।	िन्दी जाचल्यको कथाहै। फ	१-२१ २२-४०
४६६०. गुटका संव वै० संव १०१। १. बन्दकथा विशेष—१७ पद्य मे २. जुटकर कविस विशेष—चन्दन मिल ४६६१. गुटका संव १६४३। पूर्या। वै० संव १०२।	० १३ पत्र सं० ४० झा० ६/ लटमरण २६२ पद्य तक ग्राभानेरी केरा ग्रगरदास प्रापिरिकषा है। ० १४ पत्र सं० ३६६ झा०	िन्दी ताचल्यको कथाहै। n ७×६ द०। भाषा–संस्कृत	१–२१ २२–४० हेन्दी। ते∘ काल सं∙
४६६०. गुटका संव वे० सं० १०१। १. बन्दकथा विशेष—१७ पद्य मे २. फुटकर कवित्त विशेष—बन्दन मलिग ४६६१. गुटका सं० १६५३। पूर्ण। वे० सं० १०२। १. बौरासी जाति मेंद	० १३ । पत्र सं० ४० ≀ झा० ६/ लटमएा २६२ पद्य तक ग्राभानेगीकेरा ग्रगरदास प्रापिरिकषाहै। ० १४ । पत्र सं० ३६६ । झा० / ४ पुष्परल	िल्दी ताचलाको कथाहै। ११ १४ - ६२०। भाषा–संस्कृत	१-२१ २२-४० हेन्दी। ले० काल सं० १-१९
४६६०. गुटका संव वे० सं० १०१। १. बन्दकया विशेष—१७ पद्य मे २. फुटकर कविस विशेष—बन्दन संवि ४६६१. गुटका संव १६५३। पूर्ण। वे० सं० १०२। १. बौराली जाति मेद २. नेमिनाय फाष्ठ विशेष—झन्तिम पाठ	० १३ । पत्र सं० ४० ≀ झा० ६/ लटमएा २६२ पद्य तक ग्राभानेगीकेरा ग्रगरदास प्रापिरिकषाहै। ० १४ । पत्र सं० ३६६ । झा० / ४ पुष्परल	िल्दी जाचल्यको कथाहै। "" ७×६ द०। भाषा–संस्कृत∫ हिल्दी	१-२१ २२-४० हेन्दी। ले० काल सं० १-१९
४६६०. गुटका संव वे० सं० १०१ । १. कन्दकत्रा विशेष—१७ पद्य मे २. कुटकर कविस विशेष—कन्दन मिल ४६६१. गुटका संव १६५३ । पूर्ण । वे० सं० १०२ । १. बोरासी जाति नेद २. नेमिनाय फायु	० १३ । पत्र सं० ४० । ध्या० ६; लटमरण २६२ पद्य तक ग्रामानेरी केरा ग्रगरवास धामिरि कचा है। ० १४ । पत्र सं० ३६६ । ध्या० : प्रण्यास्त	िल्दी जाचल्यको कथाहै। " ७×६ द०। भाषा-संस्कृत ∫ हिल्दी "	१-२१ २२-४० हेन्दी। ले० काल सं० १-१९
४६६०. गुटका संव वे० सं० १०१। १. चन्दकथा विशेष—१७ पद्य मे २. कुटकर कविस विशेष—चन्दन मिल ४६६१. गुटका संव १६५३। पूर्ण। वे० सं० १०२। १. चौरासी जाति भेद २. नेमिनाय फाष्ठ विशेष—धन्तिम पाठ	० १३ पत्र सं० ४० झा० ६/ लटमरण १६२ पद्य तक ग्रामानेरी के रा प्रगरदास सामिरि कचा है । ० १४ पत्र सं० ३६६ झा० ४ पुष्पारल इ. विजय तन ग्रुए। निस्तु सेव क	िल्दी जावश्यको कथाहै। ११ ७×६ द०। भाषा-संस्कृत हिल्दी ११ रइजनुसुर नरकृत्द। समजेमि जिस्स्वरा ६४।।	१-२१ २२-४० हेन्दी ते० काल मं० १-१६

गुरका-संबद्]	•	ì	[asr
३. प्रबुम्मरास	व ॰ रायमहा	हिन्दी	₹5-4.
४. सुदर्शनरास	,,	"	४१ -००
५. श्रीपालरास	,,	"	116
		ले० काल सं	ं॰ १६५३ जेठ बुदी २
६. शीलरास	·· · »	"	? ? ? ? ,
७. मेथकुभारगीत	पूर्वी	77	१व४
 पद-चेतन ही परम निधान 	जिनदास	**	२३६
 ,, वेतन विर भूलि उभिन देख उ 			
वित न विचारि।	रूपवन्द 🗸	n	₹\$€-
१०. " चेतन तारक ही चनुर समाने वे नि	र्मन		
दिष्टि मछत तुम भरम भुलाने।	**	,,	77
११. 🤧 बादि सनादि गवायो जीव विधिय	ास		
बहु दुल पायो चेतन।	"	,	*
१२. "	दास	79	₹४•
१३. " वेतन तेरो दानो वानो वेतन तेरी	गति। रूपवन्द 🦯	v	
१४. " जीव मिय्यात उदे विरु भ्रम ग्राय	ħ i		
वारत्नत्रय परम धरम न मार्य	tu "	,,	
१४. " सुनि सुनि जियरा रे, नू विभुवन	काराउरे दरिगह 🦄	y - "	
१६. 🕫 हा हा भूता मेरा पद मना जिनव	₹		
घरम न वेथे।	99	,,	
१७. 🔐 जैजैजिन देवन के देवा, सुर न	τ		•
सकल करे तुम सेवा।	रूपवन्द 🗸	,,	8Y9
१८. शकुत्रिमचैत्यालय जयमाल	, x	সাস্থ্যব	रश्र १
११. मक्षरहुस्माला	मनराम	हिन्दी है	िकास १७३५ २५५
२०. चनासुत के १६ स्थपन	×		ने कास १७३४ २४७
२१. वक्दी	दयालदास		712
Marian San San San San San San San San San S			The state of the s

हर्षकीति 212 न भावे। े २३. रविव्रत कथा भानुकीति र• काल १६८७ 336

(ग्राठ सात सोलह के ग्रंक वर्ण रचें सुकथा विमल)

२४. पद - जो बनीया का जोरा माही श्री जिए।

कोप न ध्यावै रे । शिवमुन्दर 388 २४. शीलबत्तीसी ₹85 श्रकुमल 362 २६. टंडासा गोत वृत्तराज १६ पद है 354 २७. भ्रमर गीत मनसिंघ

(बाडी फूली ग्रति भली सुन भ्रमरारे)

४६६२. गुटका सं० १४ । पत्र सं० २७४ । मा० ४×४३ इ० । ले० कुाल मं० १७२७ । पूर्ण । वे० सं० १०३।

बनारसीदास 873 १. नाटक समयसार हिन्दी

र० काल सं० १६६३ | ले० काल सं० १७६३

२. मेचकुमार गोत प्रनो 379-875 ३. तेरहकाठिया बनारसीदास \$55 ४. विवेकजकही जिनदास २०६ गुगाक्षरमःला मनराम ६. मुनीश्वरों की जयमाल जिनदास ७. बावनी वनारसीदास 288 E. नगर स्थापना का स्वरूप × 211 **१. पंचमग**ति को वेलि हर्षकीति २६६

श्रद्ध . गुटका सं० १६ । पत्र सं० २१२ । मा॰ ६×६ ६० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ते० काल × । वे० सं० १०६।

विशेष-सामान्य पाठी का संग्रह है।

४६६४. गुटका सं० १७। पत्र सं० १४२। ब्रा० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। से० काल × । युर्वी । वे० सं० १०८।

Éwke

१. भविष्यदत्त चौपई

त्र० रायमझ

466

२. बीबोस तीर्यक्कर परिचय

×

17

१४२

४६६४. गुटका सं०१७ । पत्र सं०६७ । झा०६×६६० । बाषा–हिन्दी । विषय-चर्ची । ते० कात ×। पूर्वी । के० सं०११० ।

विशेष---गुरास्थान वर्षा है।

४६६६. गुटका सं०१२। पत्र सं०१२। मा० ७४६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं०१८७४। पूर्णा वे० सं०१११।

१. लग्नवन्द्रिका भाषा

स्योजीराम सौगानी

हिन्दी

1-44

भारम्भ -- ब्रादि मंत्र कूं सुमरिइं, जगतारण जगदीश । जगत मधिर सिंख तिन तज्यो, जिनै नमाउ सीस ।। १ ।। हूजा पूज्ं सारदा, तीजा ग्रुरु के पाय। लगन चन्द्रिका ग्रन्थ की, भाषा करूं बर्गाय ।। २ ।। गुरन मोहि भाग्या दई, मसतक धरि के बाह । लगन बन्द्रिका ग्रंथ की, भाषा कहूं बरगाय।। ३।/ मेरेश्री गुरुदेव का, ग्रांबावती निवास | नाम भीजैयन्द्रजी, पंडित बुध के वास ।। ४ ।। लालबन्द पंडित तरो, नाती चेला नेह। फतेबद के सिय तिने, मौकूं हुकम करेह !। १ ।। किंद सोमार्गी योत्र है, जैन मतो पहचानि । कंवरपाल को नंद ते, स्थोजीराम बसारिए।। ६ ।। ठारासे के साल परि, बरच सात चालीस। माथ सुकल की पंचमी, बार सुरनकोईस ॥ ७ ॥ लगन चन्द्रिका ग्रंथ की, आचा कही जुसार। जे मासी से ते नरा ज्योतिस को ले पार ॥ ५२३॥

षश्तिम-

२. बुन्दसतसई

कुन्यकृति

हिन्दी प० ले० काल वैशास सूदी १० १८७४

३. राजनीति कविस

वेबीदास

×

१२२ वस है।

४६६७. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ३० । घा० =×६ ६० । भाषा- हिन्दी । विषय-पद । ते० काल ×। पूर्ण । के० सं० ११२ ।

विश्लेव---विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है। गुटका ग्रश्च लिखा गया है।

४८६ म. शुरुका सं०२०। पत्र सं०२०१। मा०६ 🖂 ४६०। भाषा-हिन्दी संस्कृतः। विवय-संग्रहः। के० काल ० सं०१७६२। पूर्णावेश सं०११४।

विशेष—मादिनाय की दोनती, श्रीपालस्तुति, ग्रुनिश्वरो की जयमान, वडा कनका, भक्तामर स्तोत्र मादि हैं। ४६६६. गुटका सं० २१ । पत्र सं० २७६ । मा० ७४४ दे द० । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । से०

काल × । पूर्ण वे॰ सं॰ ११५ । ब्रह्मरायमञ्ज कृत भविष्यदत्तरास नेमिरास तथा हुनुमन चौपई है ।

४६७०. गुटकासं० २२ । पत्र सं०२६-४३ । सा०६४४ ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। के० वार ४ । सपूर्णावे० स०११ ।

४.६७१. गुटका सं०२३ । पत्र सं०६१। मा०६८४६३ ६०। भाषा⊸संस्कृत । विषय पूजापाठ। ते•काल ×ापूर्ण।वे०सं०१३१।

विशेष---पूजा स्तोत्र संग्रह है।

४६७२. गुटका सं०२४ । पत्र सं०२०१ । आग० ६×४२ इ० । आगा-हिन्दी संस्कृत विषय-पूत्रा पाठ । ते० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं०१३२ ।

विशेष---जिनसहस्रनाम (आशाधर) षट्भिक्त पाठ एव पूजाओं का संग्रह है।

४६७२े. गुटका सं०२४ । पत्र सं०६-८ । घा०६×४ ६०। भाषा-प्रकृत संस्कृत । विषय-पूत्रा पाठ । वे० काल × । घरूर्ण । वे० सं०१३३ ।

४१.७४. गुटका सं०२६ । पत्र सं०५४ । झा०६४४ इ०। भाषा⊸हिन्दी । विषय-पूजापाठ । के० काल ४ । पूर्ण । के० सं०१३४ ।

४६७४. गुटका सं०२७। पत्र सं०१०१। प्रा०६×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले• काल ×। पूर्ल। वै० सं०१४२।

विशेष---बनारसीविलास के कुछ पाठ, रूपचन्द की जकडी, द्रव्य संग्रह एवं पूजायें है।

४६७६. गुटका सं० २८। पत्र सं० १३३। मा० ६×७ ६०। माथा—हिन्दी | ले० काल सं० १८०२ | पूर्वा | वे० सं० १४३ |

प्रन्तिम-

विशेव-समयसार नाटक, भक्तामरस्तोत्र भाषा-एवं सामान्य कथायें हैं।

४६७७. सुद्रका सं० २६। पत्र सं० ११६। घा० १४६ ६०। भाषा-हिन्दो संस्कृत । विषय-संग्रह के॰ काल \times । पूर्ण। वे॰ सं० १४४।

विशेष-पूजा एवं स्तोत्र तथा ग्रन्य साधारमा पाठीं का संग्रह है।

. ६६.५६. गुटका सँ० २०। पत्र सं०२०। भ्रा०६×४ इ०। भाषा–संस्कृत प्राकृतः। विषय–स्तातः। ले•काल×।पूर्णावैकसं०१४५।

विशेष---सहस्रनाम स्तीत्र एवं निर्वालकाण्ड गाया है।

४६.७६. गुटका सं०३१। पत्र सं०४०। झा०६×५ ६०। माप्रा-हिन्दी ; विवय-कथा। से० कात्र × । पूर्णावे सं०१६२ ।

वियोध - रविव्रत क्या है।

४६८०. सुदक्का सं० ३२। पत्र सं० ४४। झा॰ ४३×४३ इ०। भाषा-हिन्दी । विषय-सम्रह् । के॰ काल \times । पूर्गी । वे सं॰ १७७६ ।

विशेष-श्रीव २ मे से पत्र साली हैं १ बुलासीदास सत्री की बरात जो सं० १६८४ मिली संगतिर मुझी ३ की मागरे में महमदाबाद गई, का विवरण दिया हुमा है। इसके प्रतिरिक्त पद, गणीवार्धद, लहरियाजी की पूजा सावि है।

४६८९१. गुटकासं० देदे । पत्र सं० दे२ । मा० ६५%४६ ६० । भाषा−हिल्दी । ले० काल 🗙 । पूर्ता। वे० सं० १६३ ।

१. राजुनपन्चीसी	विनोदीसाल सालवंद	हिन्दो
२. नेमिनाय का बारहमासा	n	19
३. राजुलमंगल	×	×

प्रारम्भ--- तुम नीकस भवन सुदाहे, जब कमरी भई वरागी।

प्रमुखी हमनै भी ते चालो साम, तुम विन नही रहे दिन रात । धापा दोपु ही मुक्ती मिलाना, तहां फेर न होम धाबागबना । राखुल धटल सुमबी नीहाइ, तिहां राखी नहीं खे कोई, सोथे राखुल मंगल गावत, मन बंखिल फल पावत ॥१८॥

ं इति भी राजुल मंगल संपूर्ण ।

् . [शुरुकासंबद्

४६ म.न. गुटका सं० २४ । पत्र सं० १६० । झा० ६४४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ते० काल 🗴 । पूर्ण | वे० सं० २३३ ।

विशेष---पूजा, स्तोत्र एवं टीकम की चतुर्दशी कथा है।

४.६८ च् गुटका सं० ३.४ । पत्र सं० ४०। झा० ५४४ इ०। आवा⊸हिन्दी संस्कृत । ले० काल ४ । पूर्णावेल सं० २३४ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठ हैं।

प्रध⊏प्र. गुटकासं० ३६ । पत्र सं०२४ । म्रा•६४४ ६० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं०१७७६ कामुल दुदी १ । पूर्णावे० सं०२३४ ।

विशेष---भक्तामर स्तीत्र एवं कत्याए। मंदिर संस्कृत ग्रीर भाषा है।

प्रस्मप्र. गुटकासं• ३०। पत्र सं० २१३। ग्रा० ५x७ ६०। भाषा-हिन्दी संग्द्वत । ते० काल xा पूर्णी।

विशेष-पूजा, स्तोत्र, जैन शतक तथा पदों का संग्रह है।

४६–६. गुटकासंट दे≒ । पत्र कं०४६ । झा०७४४ ६० : आया–हिन्दी। विषय–्रता स्नोतः । के०काल × । पूर्णावै० संट २४२ !

विशेष-सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

४६८७. गुटका सं० ३६। पत्र सं० ५० । झा० ७८४ इ० । ल० काल 🔀 । पूर्ण । वै० सं० २४३ ।

•			
१ , श्रावकप्रतिक्रमरा	×	प्राकृत	8-84
२. जयतिहुवसास्तोत्र	ग्र मवदेवसूरि	,,	१ ५ -१६
३ ब्राजितशान्तिःजनस्तोत्र	×	"	₹• - -₹¥
४. श्रीवंतजयस्तोत्र	×		24-12

ग्रन्य स्तोत्र एवं गौतमरासा ग्रादि पाठ है।

४६⊏∓. गुटका सं० ४०। पत्र ६० २४। घा० ४×४ ६०। जावा—हिन्दी । से० कान × । पूर्ण } वे० सं० २४४

विशेष-सामायिक पाठ है।

४६≔६ राष्ट्रका सं०४१। पत्र सं०४०। घा०६४४ ६०। भाषा-हिल्मी। लेश्काल ४। पूर्णा वै० सं०२४६।

विशेष-हिन्दी पाठ संग्रह है।

४६६० सुटका सं० ४२।पत्र सं०२०। मा० १४४ ६०। बावा हिन्दी। ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० सं०२४७। विवेद-सामाधिक पाठ, करपालुमन्दिरकोत्र एव जिनाच्चीली है।

४६६९, गुटका सं० ४३ । पत्र सं० ४८ । झा० ४८४ ६० । भाषा हिन्दी । ले० काल 🗴 । पूर्या । वै० स० २४६ ।

४६६२ गुटकासं०४४ । पत्र सं०२४ । ब्रा०६×४ ६० भाषा-संस्कृत । ते०काल ×। दूर्गः। वै०सं०२४६ ।

विशेष-ज्योतिष सम्बन्धी सामग्री है ।

४६६६२. सुटका सं० ४४ । पत्र सं० १६ । मा॰ ६×१ ६० । भाषा- हिःसी । विषय-मुः पित । ले॰ कात्र imes । सं χ र्ण । वै० सं० २५० ।

१६६४. गुटका सं० ४६। यन सं० १७७। झा० ७४१ इ०। ले० काल सं० १७४४। पूर्ण। दे० सं० १४१।

१. भक्तामरस्तोत्र भाषा	चसयराज	हिन्दी गद्य	6-28
२. इष्टोपदेश भाषा	×	n	8¥-K5
३. सम्बोधपं वासिका	×	प्राकृत संस्कृत	90-54
 सिन्दूरप्रकरग् 	ब नारसीदास	हिन्दी	93-50
५. चरवा	×	**	£ 9-90 \$
६. योगसार दोहा	योगीन्द्रदेव	**	१०४-१११
७. इन्यसंग्रह गाया भाषा महित	×	बाइत हिन्दी	११२-१३३
द सनित्यपं वाशिका	त्रिभुवनचन्द	**	634-640
६. जकडी	र्∼ रूपवन्द	13	\$xe-\$xx
to. "	दरिगह	n	१५५-५६
ξξ "	. र भगवन्द	,,	84 0-8 64
१२. पद	72	11	१६×-१६ ६
१३. धा रमसंबोध जयमाल ग्रादि	` ×	n	200-200

. १६६४. शुद्धका सं०४७। पत्र तं०१६। मा०५×५६०। भारा-हिन्दी। ले० काव × पूर्ता। वै० सं०२५४।

```
OXE ]
                                                                                 ् गुटका-संग्रह
           ४६६६. गुटका सं० ४= । पत्र सं० १०० । घा० ५×४ इ० । भाषा -हिन्दी । ले० काल सं० १७०५
पूर्णावै० सं०२५५।
           विशेष-मादित्यशारकथा (भाऊ ) विरहमंजरी (नन्ददास ) एवं प्रायुर्वेदिक नुसले हैं।
           ४६६७. गुटका सं २ ४६ । पत्र सं० ४-११६ । ग्रा॰ ५×४ इ० : भाषा-संस्कृत । ले॰ काल × । पूर्ण
के सं २५७।
            विशेष-सामान्य पाठों का संग्रह है।
            ४६६८. गुटका सं० ४०। पत्र सं० १८। मा० ४×४ इ०। भाषा-संस्कृत । ले० काल ×। पूर्ण ।
वे॰ सं॰ २४८।
            विशेष-पदों एवं सामान्य पाठों का संब्रह है।
            ४६६६, ग्रहका सं० ४१ । पत्र सं० ४७ । आ० ८×५ ६० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।
 के सं २ २४६।
            विशेष--प्रतिष्ठा पाठ के पाठों का संग्रह है।
            ६०००. गुटका संव ४२ । पत्र संव ६८ । माव न ३×६ ट० । भाषा-हिन्दी , लेव मंव १७२५ भादव।
बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३६० ।
            विशेष-समयसार नाटक तथा बनारसीविलास के पाठ है।
            ६००१, गुटका सं ० ४३ । पत्र सं० २२८ । बा० ६×० ड॰ । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७४२ ।
 पूर्गा, वे० सं० २६१।
                                       बनारसोदास
                                                               हिन्दी
    १. समयसार नाटक
                                                                                        1-61
            विशेष-विहारीदास के पुत्र नैनसी के पठनार्थ सदाराम ने लिखा था ।
                                रामचन्द्र (वालक)
 २ सीतावरित्र
                                                              हिन्दी
                                                                                        2-230
                                      कवि संतीदास
 ३. पद
                                                                 71
 ४. ज्ञानस्वरोदय
                                          चरएादास
 ५. षट्पंचासिका
                                              ×
            ६००२. गुटका सं० ४४ । पत्र सं॰ ४८ । आ॰ ४×३ ड० । आपा-हिली । ले॰ काल सं० १८२७
 बेठ बुदी १३। पूर्ण। वे॰ सं० २६२।
    १. स्वरोदय
                                               हिन्दी
                                                                                        १-२७
            विशेष--उमा महेश संवाद में से है।
```

२. पंचाध्यायी

२८-१८

विशेष-कोटपुतली वास्तव्य श्रीवन्तलाल फकीरचन्द के पठनार्थ लिखी गई थी।

६००३, शुटका सं० ४.४ । पत्र सं० ७–१२६ । बा॰ ४.३×३३ ६० । माया—हिन्दी संस्कृत । मे॰ काम ४ । वर्षा । डे० सं० २७२ ।

X । पूरा। व० स० २७२ ।			
१. सनन्त के खप्पय	भ० धर्मभन्द	हिन्दी	68-89
२. पद	विनोदीलाल	"	,
३, पद	जगतराम	97	
(नेमि रंगीलो छ।	रीलो हटीलो चटकीले मुगति व	वधुसँग मिलो)	
४. सरस्वती चूर्णका नुसस्ता	×	*	
५, पद- प्रात उठी ले गौतम नाम वि	जम मन		
वांखित सीभे काम।	कुमुदबन्द	हिन्दी	
५. जीव वेलडी	देवीबास	>>	
(सतग्रुर कहत सुनोरेभ	ाई यो संसार बसारा)	"	२१ पद्य हैं।
७. नारीरासो ∽	×	77	३१ पदा हैं।
द, बेतावनी गीत	नाषू	,,	
 जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र 	भ० जिल्लाचन्द्र	संस्कृत	
१०. महाबीरस्तोत्र	म० ग्रमरकीति	"	
११. नेमिनाय स्तोत्र	ৰ্ণ ফালি	"	
१२. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	
१३. बट्नत वरका	×	39	
१४. बाराधनासार	विनदास	हिन्दी	अरुपच है।
१५. विनती	,,	'n	२० पदा हैं।
१६. राजुल की संग्रमाय	. "	"	३७ पद्य हैं।
१७. भूतना	गंगादास	*	१२ वद हैं।
१व, जानपेडी 🔍	मनोहरदास	77	
s a monthur	v		

विशेष---विभिन्न कवित्त एवं बीतराग स्तोत्र झाँदि हैं।

रि॰८४. शुरुका संब ४६ । पत्र संन १२० । प्राव ४५/४४ ६० । जापा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल ४ पूर्ण । के० संव २७३ ।

विशेष--सामान्य बाठों का संग्रह है।

६००४. शुद्रका स्तं० ४७ । पत्र सं० ३–६६ । प्रा॰ ६३ \times ४ $\frac{5}{2}$ इ० । आया-हिली संस्कृत । ते० काल सं० १८४३ चैत बुदी १४ । अपूर्ता । ते० सं० २७४ ।

विषेय—मक्तारस्तोव, स्तुति, कस्यास्त्रभनिंदर आया, बांतिराठ, तीत्र वोबीसी के नाम, एवं देवा पूजा मादि है ६००६. शुटका सं० ४६ । पत्र सं० ४६ । मा० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ती । वे० सं० २७६ ।

१. तीसचौबीसी

×

हिन्दी

२. तीसचौबीसी चौपई स्याम

,, र० काल १७४६ चैत मुदी ५

ले ब काल सं ० १ अप्रह कातिक बदी प्र

अन्तिल-नाम चौपई ग्रन्थ यह, जोरि करी कवि स्याम ।

जैसराज मुत ठोलिया, जोवनपुर तस धाम ।।२१६॥ सतरासी उनचास में, पूरन ग्रन्थ मुभाय १

चैत्र उजाली पंचमी, विजे स्कन्ध नृत्राज ॥२१७॥ एक बार जे सरवहै, प्रथवा करिसि पाठ ।

नरक नीच गति कै विथै, गाढे जडे कपाट ॥२१८॥

।। इति श्री तीस बोइसो जी की चौपई ।।

६००७. शुटका सं० ४६ । पत्र सं० ५२ । मा० ६×४३ ६० । भाषा⊸संस्कृत प्रकृत । ले० काल × । पूर्वा । वे० सं० २६३ ।

६००न. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ३४ । मा॰ ६४० इ० । भाषा-हिन्दी । से॰ काल सं० १९४६ , पूर्ण । वे॰ सं० २९३ ।

१. समन्तमद्रकवा

जोधराज

हिन्दी र० काल १७२२ वे**शास दुदी** प

२. श्रावकों को उत्पत्ति तथा प¥ गीत

हिन्दी

३. सामुद्रिक पाठ

×

ज सक सम जनके सम हेत ।

क्यन्तिम-संयुन छलन सुमत सुष सब जनकू सुब देत।

भाषा सामुद्रिक रच्यो, सजन जनों के हेता।

विशेष—विरहमान तीचंकूर अकडी (हिन्दी) बशनकारण, रत्नमय पूजा (संस्कृत) पंचमेव पूजा (मूचरवास) नन्दीश्वर पूजा जयमाल (संस्कृत) झनन्तजिन पूजा (हिन्दी) चमस्कार पूजा (स्वरूपवन्द) (१९१६), पंचकुमार पूजा मादि है।

> ६०१०. गुटका स० ६२। पत्र सं०१६। झा० ८६४६ ६०। ले० काल ४। पूर्ण। वै० सं० २६७। विशेष---हिली पदो का संग्रह है।

६०११. गुटका सं०६३ । पत्र सं०१६ । म्रा० ६३,४४३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-संग्रह । वे० काल 🗴 । पूर्णा । वे० सं०१० ।

विशेष--सामान्य पाठों का सम्रह एवं ज्ञानस्वरोदय है।

६०१२. गुडका सं० ६४। पत्र सं० ३६। मा० ६४७ ६०। भाषा-हिन्दो। ले० काल 🗴 । पूर्ण । वै० सं० ३२५ ।

निसेष—(१) कवित्त पद्माकर तथा ग्रन्थ कवियों के (२) चौदह विद्या तथा कारसाने जात के नाम (३) पामेर के राजाओं को बसावजों, (४) मनोहरपुरा की पीढियों का वर्शन, (६) सहैला की वैद्यासनी, (६) संदेलवानों के गोज, (७) कारसानों के नाम, (६) ग्रामेर राजाओं का राज्यकान का निवरस्त, (६) सिक्की के बादसाहों पर कवित्त ग्रादि हैं।

६०१६ गुटका सं ८६४। पत्र सं ०४२। झा० ६४४ ६०। आणा-हिन्सी संस्कृतः । ले० काल 🗶 । . पूर्या । वै० सं० ३२६ ।

विशेष--सामान्य पाठों का संबह हैं।

६०१४: गुटकासंद ६६। यथ संग्रहरू । साग्ध्यप्र इ० प्राचा-विश्वी संस्कृत । लेग कास प्रा सञ्जूषी । वेग्संग्रहरू

विशेष-सामान्य पाठों का संप्रह 🎙 ।

·\$0]

६०१**१. शुरुका सं**०६७। पत्र सं०५२। मा०६×४ ६०। मापा-हिन्दी संस्कृत । ते० काल ×३ पूर्वी 1 दे० दे० ३२ वा ं

विषीय-कवित्त एवं बायुर्वेद के नुसलों का संग्रह है।

६०१६, गुटका सं० ६८ । पत्र तं० २६ । सा० ६५४५३ ४० । आगा-हिन्ती । विषय-संग्रह । से० काल 🗴 । पूर्वी । वै० सं० ३३० ।

विशेष--पदों एवं कविताधों का संग्रह है।

६०**१७, गुटका सं०६६** । यत्र सं०६४ । झा० ६×४ ड०। भाषा-हिन्दी । ले**०** कान × । पूर्ण । वैकसं० ३३२ ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है।

६०१ **म. गुटका सं०७०। पत्र मं०४०। मा०६**१ X४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल X**। पूर्ण।** वे**० सं०** २२२।

विकोष---पदों एवं पूजाओं का सैग्रह है।

६०**१६. गुटका सं० ७**१। पत्र सं० ६८ । आ० ४६[°]×३३ द०। आपा-हिन्दी। विषय-कामशास्त्र। के**॰ काल x**। पूर्ण। के॰ सं० ३३४।

६०२०. गुटका सं० ७२ । स्फुट पत्र । वे० सं० ३३६ ।

विशेष -कर्मों की १४= प्रकृतियां, इष्टक्तीसी एवं जोधराज पञ्चीसी का संबह है।

६०२१^० गुटका सं० ७३ । पत्र सं० २६ । मा॰ ८२/४, इ० । भाषा–हिन्दी | ले० काल x । पूर्सा । वै० सं० ३३७ ।

विशेष -- ब्रह्मविलास, चौबीसदण्डक, मार्गगाविधान, प्रकलक्काप्टक तथा सम्यक्तवपश्चीसी का संग्रह है।

६०२२. गुटका सं० ७४ । पत्र सं० ३६ । मा० ८२,×१ ६० । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३ ८ ।

विंशेष--विनतियां, पद एवं अन्य पाठों का संग्रह है। पाठों की संस्था १६ है।

. ६०२३. गुडका सं० ७४ । पत्र सं० १४ । आ० ४×४ ६० । जापा-हिन्दी । ते० काल सं० १६४६ । पूर्वो । दे० ते० ३६६ ।

विशेष---नरक दुःस वर्शन एवं नेमिनाथ के १२ भवों का वर्शन है।

450

६०२४. गुटका सं० ७६। पत्र सं० २५। बा० ०६×६ ६०। मापा-संस्कृत ।। ले० काल ×। पूर्ता । वै० सं० १४२।

विशेष-प्रायुर्वेदिक एवं यूनानी नुसलों का संग्रह है।

६०२४. गुटका सं०७०। पत्र सं०१४ । स्ना०६८४ ६०। भाषा-हिन्दी । विषय-सबहु। हे० काल ४ । वै० सं०३४१ ।

विशेष-जोगीरासा, पद एवं विनतियों का संग्रह है।

६०२६. शुटकासं० ७८:। पत्र सं० १६०। झा० ६४५ ६०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल 🗙 । पूर्णावेल सं० २५१।

विशोष — सामान्य पूजा पाठ संग्रह है। युष्ठ ६४—१४६ तक वंशीषर इत प्रव्यसंग्रह की बालावडीच टीका है। टीका हिल्दी गण मे है।

६०६७. सुरक्तास्०७६ । पत्र सं०६६। घा०७ \times ४६०। भाषा—हिन्दी। विषय—पद-संग्रह। के० काल \times । पूर्णाके सं०३४२।

ञ भगडार [शास्त्र भगडार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, जयपुर]

5०२ म. गुटका सं० १। पत्र सं० २४ म । मा० २४४ ६०। । वे० काल ४। यूरो । वे० सं० १। विशेष—पूजा एवं स्तीत्र संदह है। लटमीसेन का चितामिएस्तवन तथा देवेन्द्रकीर्ति इत प्रतिमासास्त चतुर्देशी पूजा है।

ई०२६. गुटका सं•२। पत्र सं० ४४। घा० १८४ ६०। मापा-हिन्दी संस्कृत। से० कास सं० १८४३। पूर्णा

विशेष--- जीवराम कृत पद, भक्तामर स्तोत्र एवं सामान्य पाठ संग्र है।

६०३०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० १३ । झा॰ ६×१ । भाषा संस्कृत । ले॰ काल × । पूर्ता ।

जिनसङ्ग विधान, ग्रजियेक पाठ, गराधर बलय पूजा, ऋषि मंडल पूजा, तथा कर्मदहन पूजा के पाठ हैं।

६०३१. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १२४ । आ ० - x ७ है ६० । मापा-हिनी संस्कृती से० काल सं० १६२६ । पूर्व ।

निनेष—निस्प पूजा पाठ के ग्रतिरिक्त निम्न पाठों का संग्रह है—

ভহ্	3			[गुडका संबद्	
٩. ۽	हिता जनांकुश इत्यादि	×	"		
₹, š	रेपनक्रिया	×	,,		
¥, ₹	समयसार	मा० कुन्दकुन्द	प्राकृत		
X, 1	मादित्यवारक या	শা ক	हिन्दी		
€. 0	गेसहरास	ज्ञानभूषरा	**		
	वर्मतस्योत	जिनदास	"		
4 . 4	बहुगतिचौपई .	×	"		
€. ₹	र् गंसारम टवी	×	**		
₹o. ÷	वे तनगीत	जिनदास	".		
	nt. sene %	मंबावती मे प्रतिनिधि हुई थी।			
		•			
पूर्णi	६०३२. गुटका स० ४।	पत्र सं०७ ५। झा० ६×५ इ०	• । भाषा-संस्कृत । ले०	काल स० १६८२।	
•	विशेष—स्तोत्रों का संग्रह	है।			
	सं॰ १६=२ में नागौर में	सं॰ १६८२ में नागौर में बाई ने दिक्षा सी उसका प्रतिज्ञा पत्र भी है।			
	६०३३. गुटका सं०६	। पत्र सं∙२२ । झा० ६×५ इ०	। भाषा-हिन्दी । विषय-	संग्रह ∤ ले० काल ⋋	
वै• सं	• ६				
₹.	नेमीश्वर का बारहमासा	सेर्तासह	हिन्दी	4	
₹ :	ग्रादीश्वर के दशभव	गुगाचंद	,		
₹. :	क्षीर हीर	×	29		
	६०३४. गुटका सं• ७।	। पत्र स० १७७ झा० ६×५ इ	(०। भाषा-हिन्दो) ले ० व	तल ⋌ । प्रर्ण ।	
		, सुभाषित (भूधरदास) तथा		••	
६०२ स् गुटका सं० च । पत्र सं० १४६ । सा० ६×५६ इ० । भाषा-संस्कृत, प्रपन्न शा ।					
ले० क	ाल × । पूर्वाः	The fact of the fact of	८ । नाना-सरकृत, अनुज	મા .	
	चन्तामशिपाधर्वनाथ जग्रमाल	सीम	'		
	द् षिमंडलपूत्रा	पान मुनि गुरानंदि	यपभ्रं श		
	विशेषनित्य पूजा पाठ संर	• • • •	संस्कृत		
		.6 61			

६०३६, गुटका सं० ६ । पत्र सं० २० । मा० ६×४ ६० । माया हिन्दी । से० काल 🗴 । पूर्ती ।

विशेष-सामान्य पाठों का संग्रह, लोक का वर्शन, प्रकृतिम बैत्यालय वर्शन, स्वर्गनरक दृक्ष वर्शन, वारों गतियों की बायू बादि का वर्शन, इष्ट छत्तीसी, पश्चमञ्जल, बालोचना पाठ बादि हैं।

> ६०३७. गुटका सं० १०। पत्र सं० ३८। मा ७४६ इ०। माथा-संस्कृत । ले० काल 🗴 । पूर्ण । विशेष-सामाधिक-पाठ, दर्शन, कल्यागुर्मदिर स्तीत्र एवं सहस्रनाम स्तीत्र है।

६०३=, शृहका संव ११ : पत्र संव १६६ । माव ४×६ ६० । मावा-हिन्दी । लेव्याल × । पूर्व ।

संस्कृत हिन्दी ले॰ काल सं॰ १७२७ चैतसुदी ५ १. भक्तामर स्तोत्र ढव्वाटीका × २ पद— हर्वकीति × (जिए जिए जप जीवडा तीन भवन में सारोजी)

ले॰ काल सं॰ १७२६ ३. पंचपुर ती जयमाल न रायमत

४. कवित × "

 हिलोपदेश टीका × हिन्दी

६. पद-तै नर भव पाय कहा कियो 🗸 रूपचन्द ७. जकही х

पद-मोहिनी बहकायो सब जग मोहनी मनोहर

६०३६. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १३= । ग्रा॰ १०×= ६० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले॰ काल × । पूर्ता। निम्न पाठ है:---

क्षेत्रपास पूजा (संस्कृत) क्षेत्रपाल जयमाल (हिन्दी) नित्यपूजा, जयमाल (संस्कृत हिन्दी) सिद्धपूजा (स॰) वोडवाकारण, दक्षतकारण, रत्नत्रमपुत्रा, कलिकुण्डपुत्रा मीर जयमाल (प्राकृत) नंदीश्वरपंक्तिपूजा मनन्तचतु-दंशीपजा. बलयनिधिपजा तथा पार्श्वनास्तीत्र, बायुर्वेद ग्रंथ (संस्कृत ले० काल सं० १६८१) तथा कई तरह की रेसाओं के बित्र भी है, राशिपल बादि भी दिये हुये हैं।

> ६०४०. गुटका सं० १३ । पत्र सं० २८३ । बा० ७४५ इ० । ले० काल सं० १७३८ । पूर्ण । राटके में मुख्यतः निम्न पाठ है---

१. जिनस्तुति सुमतिकीति हिन्दी २. ग्रुखस्यानकगीत प्र**० भी वर्द्ध** न

१५. हादवानुत्रेका

सन्तिम्- प	ब्ह ित, बी, बर्ड ब्हु वहा एड् वाज़ी भविषण सु			
३. सम्बद्धनः नवव्यस्	×	श्रपञ्च व		
Y. परमार्वकीत 🦯	कप्रवन्त	हिन्दी		
१, 'पद - छही वे डे जीव	तू. कत. भरमायो, तू			
चेतन यह जड परम	है यामै कहा सुभायो । मनराम	n		
६. वेषकुवाद्गीव	पूनो	17		
७. मनोर्यमाला	ग्र चलकीर्ति	"		
धवना तिहि तला	युण गाइस्यों,			
सहेलीगीत	मुन्दर	हिन्दी		
सहेल्यो	। हे यो संसार ग्रसार मो चित में या उपनी	जी सहेल्यो है		
ज्यो रा	ांचै सो गवार तन धन जोबन थिर नहीं।			
ह. पव-	मोहन	हिन्दी		
	जादिन हुँस चलै घर छोडि, कोई न साथ खडा है गोडि ।।			
	जए। जरा, के मुख ऐसी वासी, बड़ो वेरि	ा मिलो अन पागी।।		
	बरा विडह्न े उनगै सरीर, खोसि स्रोसि	ालेतनक चीर।		
	चारि जर्गाजङ्गल ने जाहि, घर मैं घर	ीरहरादेनाहि।		
	जबताबूड विडामें वास, यो मन मेर	तमया उदास।		
	काया माया भूठी जानि, मोहन होऊ म	जन परमासि ॥६॥		
१०. पद-	ह र्चकीति	हिन्दी		
गरि	हं छोड़ी हो जिनराज नाम, मोहि धौर मिध	यात से क्या बने काम ।		
? ?	मनोहर	हिन्दी		
	सेव तौ जिन साहिब की कीजे नरफ	व लाहो लीजै		
१२. पद-	जि ग्गवास	हिन्दी		
₹₹. "	स्यामदास	"		
१४. मोहविवेक्युद	बनारसीदास	n		

सुरत

शुटफा-संबद्]			ا مولا
-			
१६. द्वादशामुत्रेका	×	**	
१७. विनती	रूप वन्द	,	
जै जै जिल देव	निकेदेवा, सुर नर	सकल कर तुम सेवा।	
१८. पंचेन्द्रियवैश्वि	ठनकुरसी -	हिन्दी र०कालसं	• १x=x
१६, पञ्चगतिवेलि	हर्षकीर्ति	17 79 11	\$ = 6 3
२०. परमार्थ हिंडोलना	क्ष्पवन्द 🦯	n	
२१. पंथीगीत	छीहल	77	
२२. मुक्तिपीहरगीत	×	79	
२३. पद—श्रव मोहि श्रौर कखुन सुहाय	क्रियमन्द	99	
२४. पदसंब्रह	वनारसीदास	•	
६०४१. गटका सं० १४। प	व सं० १०६२३७।	मा॰ १०×७ इ॰ । माया -संस्कृत	। ले∘ काल x i
मपूर्ण । विशेष—स्तोत्र, पूजा एवं उसक्			
६०४२. गटका सं० १४ । प	त्र सं• ४३। झा० ७:	×५ ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-	-पद सग्रह । ले०
काल × । पूर्ण ।		,	·
६०४३. गुटका सं० १४। प	त्र सं० ५२ । सा• ५	s×१ ६० । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।	विषय-सामान्य
पाठ संग्रह । ले० काल 🗶 । पूर्ण ।			
६०४४. गुटका सं० १७। प पूर्ता।	त्र सं०१६६। मा०	१३×३ ६०। ते∙ काल सं० १६	११३ ज्येष्ठ बुदा ।
१. श्रियालीस ठाए।	ब्र• रायमझ	संस्कृत	3\$
विशेषवीबीस तीर्थकुरों के	नाम, नगर नाम, कुल	, वंश, पंचकत्यासाकों की तिथि स	विवरस्य है।
२. बौबीस ठाए। बर्बा	×	19	₹=
३, जीवसमास	×	्र प्राकृत ले॰ काल सं०१६	·
विशेष ग० रायमता ने देहली			114 448 46
४. सूच्यव दोहा	×	हिन्दी	
५, परमारम प्रकास भाषा	प्रभुदास	•	**
	_	****	88
६. रलकरण्डभावकाचार	समंतमद	संस्कृत	£Y
SAUL STREET NA SELE		WASTE TRUE 1 OF COA	7. STEET V 1 mm5

६०४८. गुरुका सं० १८ । पत्र सं० १४० । मान ७४२३ ६० । भाषा-संस्तृत । ते० काल 🗴 । पूर्वः विवेद---पूजा पाठ वेत्रह है ।

ट भगडार [आमेर शास्त्र भगडार जयपुर]

	*		
६०४६. गुः सं• १४•१।	टकासं०१ पत्र सं०३७ । माषा−हिन	दी विषय—संग्रह ले•	काल × । पूर्ण ॄ वै∙
१. मनोहरमंजरी	मनोहर मिश्र	हिन्दी	१-२६
त्रारम्भ	श्रथ मनोहर मंजरी, श्रथ नव जीवन	। लक्षनं ।	
	याके योवनु मंकुरयो, मंग मंग छन्	कोर!	
	सुनि सुचान नव यौवना, कहल भेद ह	े होर ॥	
प्रन्तिमः	लहलहाति प्रति रसमसी, बहु सुबासु	भवाठ (?)	
	निरिक्त मनोहर मंजरी, रिसक सुङ्क स	ंडरात ॥	
	सुनि सुवानि ग्राभिमान तथि मन विचा	रियुन दोष।	
	कहा विरहु कित प्रेम रसु, तही होत दु	स मोस ॥	
	चंद मत्द्वीय के, मंक बीच म	कास	
	करी मनोहर मंजरी, मकर चांदनी स्या	स ।)	
	मायुर का हो मथुपुरी, बसत महोली	गेरि ।	
	करी मनोहर मंत्र री, धनू प रस सी	रे ॥	
इति श्र	सक्ललोककृतमश्चिमरीचिमंत्ररीनिकरनीरार्वि	जतपदद्व <i>'दमुन्दावनविहारका</i> रि	(नवाक टावस टोपामक
नोहर मिश्र विरचिता मन	ोहरमंजरी समाप्ता ।		
कुल ७४ पद्य	है। सं० ७२ तक ही दिये हुये हैं। नायिक	न भेव वर्शन है।	
२. फुटकर दोहा	×	हिन्दी	३०-३ ६
विशेष ७०	बोहे हैं ।		
३. ब्रायुर्वेदिक नुससे	×	"	३७
६०४७. गुट ५०२।	कासं≎ २ । पत्र सं∙ २-५ ⊏ । भाषा–ि	हन्दी। ले∙काल सं०१७६	४। सपूर्ण । वैक संक
१. नाममजरी	नंदबास	हिन्दी पद्य सं•२६	१ २-२=
२. घनेकार्थमंजरी	27	39	₹⊏-४•
	स्वामी सेमव	सि ने प्रतिनिधि की थी।	

[950 गुटका-संगद] ¥1-41 ३, कविल × ×3-8= ४, भोजरासो उदयभानु प्रारम्भ-श्री गर्गेमझ्य नमः । दोहरा । कुंजर कर कुंजर करन कुंजर बानंद देव। सिधि समपन सत्त सूच सुरतर कीजिय सेव ।। १ ।। जगत बननि जग उछरन जनत इस घरधंग । मीन विश्वित्र विशासकार हंसासन सरवंग ।। २ ।। सूर विरोमिशः सूर सुत सूर टरें नहि द्यान। जहां तहां स्वन सुन जिबे तहां मूपति मोज बसान ।। ३ ।। शन्तिम-इति श्री मोजजी की रासी उदैशानजी को किशी । लिखलं स्वामी खेमदास मिली फाग्रए। बदी ११ संबत् १७६४ । इसमे कुल १४ पदा है जिनमें भोजराज का वैभव व यश वर्गीन किया गया है। कवित हैं ५. कविश टोडर हिन्दी **8E-8** विशेष-ये महाराज टोडरमल के नाम से प्रसिद्ध वे भीर सक्ष्यर के मुस्किर विभाग के मंत्री वे। ६०४८. गुडका सं० ३। पत्र सं० ११व। बाबा-हिन्दी। ले॰ काल सं० १७२६। अपूर्ण। वे॰ सं० 14031 १. मायाबहा का विचार × हिन्दी गव भपूर्श विशेष---प्रारम्भ के कई पत्र फटे हुये हैं गद्य का अनूना इस प्रकार है। "माया काहे ते कहिये व'मस्यो सबस है तातै माया कहिये । प्रकास काहे तें कहिये पिड बह्याड का प्रादि भाकार है तातें भाकास कहीये । मुनी (शून्य) काहे ते कहीये-जड है ताते सुनी कहिये । सकती काहे तें कहिये सकल संसार को जीति रही है तार्ते सकती कहिये।" व्यन्तिम-एता माया बहा का विचार परम हुंस का ध्यान वंभ जगीस संपूर्ण समाता । श्रीशंकाचारीज बीरव्यते । निती प्रसाद सुदी १० स० १७२६- का सुकान प्रह्युटी उर कोस दोइ देईदान बारण की पोषीस्य उतारी पोबी सा''''म डोल्या साह नेवसी का बेढा "'''कर महाराज जी रचनावस्यंत्रजी। २ गोरसपदावली गोरसमाम हिल्ही धपूर्ण विशेष--करीम ६ पण है।

म्हारारे बैरागी जोगी जोगिए संग न छाडे जी। मान सरोवर मनस मुलती ग्रावै गगन मड मंड नारेजी।।

३. सत्तसई

बिहारीलाल

हिन्दी श्रपूर्ण ले॰ काल सं॰ १७२४ माथ सुदी २ ।

₹-6.%

विशेष---प्रारम्भ के १२ दोहे नही हैं। कुल ७१० दोहे हैं।

४. वैद्यमनोत्सव

नवनमह

म्र्रुल ह७--११८

६०४६. गुटका सं० ४। पत्र सं० २४। भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । ले॰ काल सं० १८३२ पीय सुदी ७ । पूर्ण । वे॰ सं० १५०४ ।

विशेष---चाराक्य नीति का वर्रान है। श्रीवन्दजी गंगवान के पठनार्थ जयपुर मे प्रतिशिव की यी।

६०४.०. गुटकासं०४.।पत्र सं०४०।भाषा—हिन्दी।ले•काल सं०१८३१।ग्रपूर्ण। ने०स० १४०४।

विशेष--विभिन्न कवियों के शृङ्गार के मनूठे कविता है।

६०४१ शुटका सं०६। पत्र सं०६। मा०६४४ ६०। भाषा हिन्दी। र०काम सं०१६८८ । मे०काल सं०१७६८ कार्तिक सुदी६। पूर्णीवेल सं०१४०६।

६०४२. गुटका सं०७ । पत्र सं०४५ । मा० १८७६ ६० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं०१८३१ वैशास बुरी ८ । मनूर्ण । वे० सं०१५०७ ।

१. कवित्त

मनर (मग्रदाम)

हिन्दी

श्रपूर्ण १-१०

विद्योच— कुल ६३ पद्य है पर प्रारम्भ के ७ पद्य नहीं हैं। इनकाळल्द कुण्डलिया सालगताहै एक छन्द निम्न प्रकार है—

आंधो बांटै जेवरी पाछै बखरा लाग।

पाई बहुरा साथ कहत पुरु सीस न माने। ग्यान पुरान मसान छिनक मैं धरम थुनाने।। करो विप्रतो रीत मृतय धन नेत न लाजे। नीच न समर्भ भीच ५रत विषया के काजे। स्रगर जीव स्रादि तै यह बंध्यीस करें उपाय। स्रांग बीट धैवरी पाई बंध्यीस करें उपाय।

```
गुडफा-संबद ]
                                                                                           1 468
   थ्, द्वादवानुप्रका
                                             सोहट
                                                                 हिन्दी
                                                                                          39-08
                                                              ले • काल सं • १८३१ वैद्याख बुदी ८ ।
           विशेष---१२ सबैये १२ कविल खप्पय तथा प्रन्त में १ दोहा इस प्रकार कूल २५ खंद हैं।
धन्तिम--
                          धनुत्रेक्षा द्वादश सुनत, नयो तिमिर धन्नान ।
                          धष्ट करम तसकर दुरे, उच्यो सनुत्रे भान ।। २५ ॥
            इति द्वादशानुप्रेक्षा संपूर्ण । मिती वैशास बुदी प संवत् १८३१ दसकत देव करण का ।
   ४. कर्मपच्चीसी
                                           भारमस
                                                                                           28-58
            विशेष-कुल २२ पदा हैं।
                          करम था तोर पंच महावरत वरू जपू चौबीस जिलांदा।
ग्रन्तिमपद्य---
                          धरहंत ध्यान लैव बहुं साह नोयरा बंदा ।।
                          प्रकृति पञ्चासी जात्ति के करम पचीसी जान ।
                           मूदर भारैमन .....स्योपुर थान ।। कर्म प्रति० ।। २२ ।।
                                   ।। इति कर्म पच्चीसी संपूर्ण ।।
   ४. पद-( बांसुरी दीजिये बज नारि )
                                             सुरदास
                                                                                                २६
   ६, पव-हम तो बज को बसिबी ही तज्यी
                                                                                           20-25
      व्रज में बंसि वैरिशि तू बंस्री
   ७. श्याम बलीसी
                                               श्याम
                                                                                            ₹७--४०
            विशेष-कुल ३५ पदा है जिनमें ३४ सबैये तथा १ दोहा है:-
प्रतिम--
                           कृष्ण भ्यान चतु घष्ट में भवनन सुनत प्रनाम ।
                           कहत स्याम कलमल कहु रहत न रक्कक नाम ।।
   a. पर-विन माली जो लगावै बाग
                                                                  हिन्दी
                                                                                                 ٧.

    बोहा-क्वीर भीग्रन एक ही गुल है

               सांस करोरि
   १० प्रटकर कवित्त
                                               ×
                                                                                                  45
🌁 ११ अम्बुद्धीप सम्बन्धी पंच नेच का बर्र्सन
```

६०४२. शुटका संट च । पत्र संट न १ मा० १४८ द० । ते० काल संट १७७६ व्यवसा दुनी १ । पूर्या | वे० संट १४०८ ।

१. क्रम्यमुक्तमित् वेलि पृथ्वीराज राठीर राजस्वानी विशल १-६५ र० काल० सं० १९३७ ।

विगेष--- प्रंथ हिन्दी गाटीका सहित है। पहिने हिन्दी पद्य हैं फिर गद्य टीका वी गई है।

c E २, विच्ला पंजर रक्षा × संस्कृत 59-55 ३. अजन (गढ बंका कैसे लीजे रे माई) हिन्दी × 58 ४. पद-(बैठे नव निकुंज कुटीर) चन्भूज ४**. "** (धुनिमुनि मुरली बन बाजै) हरीदास ६. .. (मृन्दर सावरी भावे बल्यो मसी) नंददास ** , (बालगोशन धैगन मेरे) परमानन्द ८ ,, (बन ते आवत गावत गौरी) ×

६८५५, गुटकासंदर्धापत्र मंद्रद्या झाट्य ५० इत्। ब्राया–हिन्दी। लेट्यान ४। पूला। वेटसंट १५०६।

थियोप—केवन कृष्णास्त्रमण्डी वेलि कृष्णीराज राठौर कृत है। प्रति हिन्दी टीका महित है। टीकावार स्रकृत है। ग्रुटमा से० = में साई हुई टीका से भिन्न है। टीका काल नहीं बिया है।

६०४.४. गुटकासं० १०। पत्र सं०१७०-२०२ । सा०६४.७ ६० । भारा-हिन्दी । ले∘ काल ४ । सनुस्ती । ले सं०१४१ ।

१. कवित्त राजस्थानी जिंगल १७१-७३

विगेष-भृष्क्कार रस के मुन्दर कविता है। विरहितों का वर्शन है। रसमे एक कविता छाहल का भी है। २. ओक्वमरिष्हमणुजी को राक्षों तिररदास राजस्थानी एख १७३-१८५४

विनीन — इति श्री रनमशी इध्यानी को रावो तिपरवास कृत सपूर्य । संबद् १७३६ वर्ष प्रथम चैत्र मासे तुम शुक्त पन्ने तिथी दशस्यो बुधवानरे श्री मुकत्यपुर मध्ये लिखापितं साह सजन काष्ट्र साह सूर्याओ तत्पुत्र सजन साह श्रेष्ठ छाजूजी वाषनाय । लिखत व्यास जटूना नाम्ना ।

३ क.बेला × हिन्दी १८६–२०३

विशेष -- भूधरदास, मुजराम, विहारी तथा केशवदास के कविलों का संग्रह है। ४७ विवस है।

६०४६, गुटका सं० ११। पत्र सं० ४१। मा० १०×व इ०। भाषा-हिन्दी। ते० कात ×। मपूर्ण। वै० सं० १९१४।

१. रसिकतिया

केशवदेव

हिन्दी

श्रपूर्ण १-४=

ले० काल सं० १७६१ जेष्ठ मुदी १४

२. कवित

×

77

¥ξ

६०४७. गुद्धका सं८ १२ । पत्र सं० २-२६ । ब्रा० ४×६ ६० । जाषा-हिन्दी । ले० काल × । ब्रपूर्ण विजेब--निम्न पाठ उल्लेखनीय हैं ।

१. स्नेहलीला

जनमोहन

हिन्दी

६−१५

श्चन्तिम---या लीला बज वास की गोपी कृष्ण सनेह ।

जनमोहन जो गाव ही सो पार्वनर देह ॥११६॥ जो गावै सीक्षे सुनै जाव प्रक्ति करि हेत।

रसिकराम पूरण कृपा मन वांखित फल देत ॥१२०॥ ॥ इति स्नेहलीला संपूर्ण ॥

विशेष--प्रत्य में कृप्ण ऊधव एवं ऊधव गोपी संवाद है।

६०**४.स. शुटका** सं०१३। यण सं०७६। झा० द×६३ ६०। भाषा-हिन्दी। ते० काल सं०×। पूर्ण | के० सं०१४२२ |

१. रागमाला

श्याम मिश्र

क्रिन्दी

1-17

र० काल सं० १६०२ फाग्रुसा बुदी १०। ले० काल सं० १७४६ सामन सुदी १५। विशेष—मन्य के साथि में काक्षिणकों का वर्शन है। उंच का दूसरा नाम कासिम रिक्त विलास भी है।

कान्तिम-संवत् तीरह से वरता उत्तर बीते दोस। कानुन वदी सनो दसी सुनो तुनी जन लोग ।) पोषो रची सहौर स्वाव श्वापरे नगर के। राजवाट है और पुत्र बसुनूज निका के।।

इति रागमाना सन्य स्थाम मिश्र इत संपूर्ण । संवत् १७४६ वर्षे सावश सुदी १५ शोववार पोणी तेरवढ प्रगर्ने हिंबींश का में साझ गोरधनवास सक्वाल की पोणी वे किसी सिसतं मीजीराम ।

२. हादवानासा (बारहमासा) महाकविराइसुन्दर

हिन्द

(9ev [गुरका-संबंह विशेष---कुल २४ कविल है। प्रत्येक मास का विरहिती वर्णन किया गया है। प्रत्येक कविल में सन्दर वाब्द हैं। सम्भव है रचना सुन्दर कवि की है। ३. नसशिसवर्शन केशबदास हिन्दी 28-82 ले॰ काल सं॰ १७४६ माह बुदी १४। विशेष---शेरगढ में प्रतिलिपि हुई थी। ४. कवित्त-गिरधर, मोहन सेवय श्रादि के हिन्दी ६०४६. गुडका सं० १४ । पत्र सं० ३६ । झा० ४×४ ६० । आवा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे॰ सं॰ १५२३ । विशेष--सामान्य पाठों का संग्रह है। ६०६०. गुरुका संव १४। पत्र संव १६८ । आव -×६ ६० ! भाषा-हिन्दी । विषय-पद एवं पूजा । ले • काल सं० १८३३ मासोज बुदी १३ । पूर्श । वे० सं० १४२४ । हिन्दी **१−**५= १. पदसंग्रह विशेष--जिनदास, हरीसिंह, बनारसीदास एव रामदाम के पद हैं। राग रागनियों के नाम भी दिये हुये है २. बीबीसर्तार्थकूरपूजा रामचन्द्र हिन्दी X5-885 ६०६१. गुटका सं० १६। पत्र सं० १७१। मा० ७×६ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १६४७ । सपूर्ण । वे० सं० १५२५ । विशेष-- मुख्यतः निम्न पाठों का संब्रह् है । १. विरदावली संस्कृत विकोष - पूरी भट्टारक पट्टावली दी हुई है। २. ज्ञानवावंनी मतिशेखर हिन्दो १६-१०२ विशेष---रचना प्राचीन है। ५३ पद्यों में कवि ने प्रक्षरों की बावनी लिसी है। मतिशेखर की लिसी हुई मन्ना चलपई है जिसका रचनाकाल सं॰ १५७४ है। ३ त्रिमुबन की विनती गङ्गादास विकोष---इसमें १०१ पद्य हैं जिसमें ६३ शलाका पुरुषों का वर्राम है। मावा गुजराती लिपि हिन्दी है। ६०६२. गुटका सं १७। पत्र सं १३-७०। बा॰ १४६ इ०। भाषा-हिन्ती। के काल सं १८४७ । धपूर्ण । वे॰ सं० १५२६ । विशेष-सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६३, गुटका सं १८ । पत्र सं ० ७० । बा० ६×४ ६० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं ० १८६४ ज्येष्ठ बूदी ८८ । पूर्शा वे० सं० १४२७ । १. बतुर्दशीकथा र० काल सं० १७१२ विवोष---३५७ पद्य हैं। २. कलियुग की कथा दारकादास विशेष--पचेवर में प्रतिलिपि हुई थी। ३. फुटकर कविल, रागों के नाम, रागमाला के दोहे तथा विनोदीलाल कृत बीबीसी स्तुति है। राजस्थानो ४. कपडा माला का दहा सुन्दर विशेष--इसमें ३१ पद्यों में कवि ने नामिका को बलग २ कपडे पहिना कर विरह जागृत किया तथा किर पिय मिलन कराया है। कविता सुन्दर है। ६०६४. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ५७-३०५ । मा० ६ ४६ ६० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विवय-संग्रह । ने० काल सं० १६६० द्वि० वैद्याल मुदी २ । अपूर्ग । वै० सं० १४३० । १. भविष्यदत्तवीपर्ड ४० रायशस्त्र २. श्रीपालचरित्र परिमल्ल ₹00-75 ₹ विद्याप -- कवि का पूर्ण परिचय प्रशस्ति में है। अकवर के शासन काल मे रचना की गई थी। ३ धर्मरास (श्रावकाचाररास) × २⊏३~२६¤ ६०६४. गुटका सं २०। पत्र सं ० ७३। शा० ६×६३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले काल सं ० १८३६ चैत्र बुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० १६३१ । विशेष-स्तोत्र पूजा एवं पाठों का संग्रह है। बनारसीदास के कवित्त भी हैं। उसका एक उदाहरश निम्न है:---कपड़ा की रौस जारों हैवर की हौस जारा । न्याय भी नवेरि जासी राज रीख मासिबी ।। राग तौ स्तीस आखै लियल बसीस जारी। बूप बतुराई जारी महल में मारिएकी।। बात जारी संबाद जारी चुवी ससदोई जारी। सगपम साथि जारी धर्ष को जाशियौ । करत बलारसीदास एक जिन नांव विना ।

•••• ••• ••• गुडी सब वाशियी ।।

६०६६. शुटका सं०२१ । पत्र सं०११४ । घा० ६४४ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय संग्रह । ले० काल सं०१८६७ । प्रपूर्ण । वे० सं०१४२२ ।

विकेष-सामान्य स्तोत्र पाठ संग्रह है।

६०६७. गुटका सं०२२ । पत्र सं०४ न्या०१०४७ ६० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह । ले॰ काल ४ । प्रपूर्ण । वे॰ सं०१४३३ ।

विशेष-स्तोत्र एवं पदों का संग्रह है।

६०६८. गुटका सं०२३ । यत्र सं०१५-६२ । घा० ४,४४ ६० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८०८ । सपूर्णावेल सं०१५३४ ।

विशेष---निम्न पाठों का संग्रह है:--अक्तामर भाषा, परमज्योति साया, मादिनाय की बीनती. ब्रह्म जिनदास एवं कनककीत्ति के पद, निर्वाशकाय गाया, त्रिभुवन की बीनती तथा मेवकुमारबीगर्ड।

६०६६. गुटका सं० २४ । पत्र सं० २० । घा० ६×४ दे ६० । भाषा हिन्दी । ले० काल १८६० । घनुर्ला । वे० सं~ १५३४ ।

विशेष--जैन नगर में प्रतिनिधि हुई थी।

६८**७०. गुडको सं**०२४ । पत्र सं०२४ । म्रा०५४४ इ०। भाषा-हिन्दी । ले० काल ४ । सनूर्ण। वै० सं०१४३६ ।

विक्षेप—निम्म पाठों का संग्रह है:—विवायहार मापा (ग्रवनकीति) भूगलबीबीसी भाषा, अन्तामर भाषा (हेमराज)

६०७१. गुटका सं० २६ । पत्र सं०६०। झा०६×४३, ड०। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १८७३ । अपूर्णावेल सं०१४३७ ।

विशेष-सामान्य पाठी का संग्रह है।

६०७२. गुटका सं० २७ । पत्र र्स० १४-१२० । आया-संस्कृत । ले० काल १८६४ । प्रपूर्ण । वे० सं० १४३६ ।

विशेष--स्तोत्र संग्रह है।

६०७३ शुद्रका सं०२ मापन सं०१५०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले॰ काल सं०१७५३ । प्रपूर्ता वे॰ सं०१५३६।

विक्षेत्र सामान्य पाठों का संवह है। सं० १७४३ प्रयाद धुवी ३ मु० मी० नत्वपुर गंगाजी का तट। दुर्गावास चांववाई की पुस्तक से मनक्य ने प्रतिक्षिप की थी।

215

4\$6-64X

६०७४. गुरुका सं० २६। पत्र सं० १६। मा० ५×६ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-पूजाबाठ। ले • काल ⋉ । पूर्ण । वै • सं०१४४० ,

विशेष---नित्य पूजा पाठ संप्रह है।

६०७४. शुटका सं० ३०। पत्र सं० १५४। मा० ६×६ ६०। मापा-हिन्दी। ले० कान × । पूर्ण। बै॰ सं॰ १४४१।

१. मविष्यदत्त चौपाई **स**० रायमञ्ज हिन्दी 70-5 र० सं०१६३३ कार्तिक सुदी १४। बिक्षेष-फतेराम बज ने जमपुर में सं० १८१२ श्रषाढ बुदी १० को प्रतिलिपि की थी। २. वीरजिएन्द की संघावली पुनो हिन्दी 30-00 विशेष-मेबकुमार गीत है। ३. घठारह नाते की कथा लोहट 50-53 ४. रविवार कथा र० काल सं० १७७५ बुशालवन्द विशेष--- लिखतं फतेराम ईसरदास बज बासी सांगानेर का । बनारसीदास प्र. ज्ञानपश्चीसी ६. वौबीसतीयँकरों की बंदना **मेमीयन्द** £ to ७. फुटकर सेवया × \$ \$ \$ पटलेश्या वेलि हर्वकीति र०काल सं०१६८३ ११६ ६. जिनस्तृति जोधराज गोदीका

र० काल सं० १७७१ वैद्यास सुदी ११

६०७६. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ४-२६५ । मा० ८३×६ ६०। वाषा-संस्कृत हिन्दी। से० काल 🗙 । श्रपूर्ख । वै० सं० १४४२ ।

मु० नेमीचन्द

विश्रीय---पूजा एवं स्तीन संग्रह हैं।

१०. प्रीत्यंकर सीपई

६०७७. शुरुका सं० ३२ । पत्र सं० ११६ । घा० ६×४३ इ० । नाषा-हिन्दी संस्कृत । से० कास × पूर्ल वै॰ सं॰ १५४४।

विशेष--नित्य एवं भाइपव पूजा संबह है ।

६०७८. गुटकासं० ३३ । पत्र सं० ३२४ । सा० १८४ ६० । प्रापा–हिन्दी। ते० काल सं० १७४६ वैद्यालासुति ३ । अपूर्ता वे० सं० १४४४ ।

विशेष--सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०७६. गुटका सं० ३४। पत्र सं० १३६। झा० १४६ ६०। भाषा-हिन्दी। ने० कान × । पूर्ण । वै० सं० १४४६।

विशेष--- मुख्यतः नाटक समयसार की प्रति है।

६०८०. शुटका संव ६६। पत्र संव २४। झाव ४×४ ६०। भाषा-हिल्दी। विषय-पद संग्रह। लेव काल ×। प्रणी विव संव १४४७।

६०⊏१. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० १७० । ग्रां० ६४४ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले० काल ४ । पूर्वी वे० सं० १४४६ ।

विशेष--नित्यपूजा पाठ संग्रह है।

६०=२. गुटका सं० २=। पत्र सं० २४। मा० ५ \times ४ र०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल १६४२ पूर्णी। वे० सं० १५४=।

6---

विशेष-- मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है।

१. पदसग्रह	मनराम एव मूधरदास	हिन्दी	
२, स्तुति	हरीसिंह	17	
३, पार्श्वनाथ की गुरामाला	लोहट	"	
४. पद- (दर्शन दीज्योजी नेमकुमा	र मेलीराम	"	
५. मारती	गुमयन्द	**	
विशेषग्रन्तिम-ग्रारती	करता धारति भाजै,शुभवन्द जा	न मगन मैं साजै।।	; (
६. पद- (मै तो बारी प्राप्त महिमा	जानी) मेला	"	
७. शारदाष्ट्रक	बनारसीदास	**	ले॰ काल १८१०
विशेष-अयपुर में कार्न	दिस के मकान में लालाराम ह	ने प्रतिलिपि की थी।	
द, पद- मोह नींद में छकि रहे हो ।	नाल हरीसिंह	हिन्दी	
 अ उठि तेरो मुख देखूं नामि । 	बूकेनंदा टोडर	**	
१०, चतुर्विश्वतिस्तुति	विमोदीलाल	**	
११. विनती	सजैराज		

१७. नेमिनाबाष्ट्रक

480

६०८३. गुटका सं० ३६	। पत्र सं० २-१५६ । भा०	५×५ ६० । मावा−	हेन्दी। ले∙काल ×ा पूर्लं।
वै॰ सं॰ १५५० । मुख्यतः निम्न पाठों	का संबद्ध है:		
१. भारती संग्रह	चानतराय	हिन्दी	(५ घारतियां है)
२. बारती-फिह विवि मारती करी प्र	युतेरी मानसिंह	11	
 बारती—इहिविध भारती करों प्रशु 	तेरी दीपचन्द	,,	
४. बारती-करी बारती बातन देवा	विद्वारीवास	,,	4
५. पद संग्रह	चानतराय	,,	१७
६, पद-संसार अधिर नाई	मानसिंह	"	¥•
७. पूजाहरू	विमोदीसास	19	ध्व
द. पर-संग्रह	भूषरदास	"	Ęu
 पद—बाग पियारी श्रव क्या सोवै 	कवीर	19	••
१०. पद—क्या सोवै उठि जाग रै प्रभात	ीमन समयसुदर	"	vv
११. सिखपूजाष्ट्रक	दीलतराम	**	50
१२. भारती सिद्धों की	गुसासचन्द	"	~ {
१३. युरुप्रष्टक	वानतराव	**	49
. १४. सामु की बारती	हेमराज	"	= X
१५. वाली ब्रष्टक व जयमाल	वानतराव	77	n
१६. पार्श्वनाषाष्ट्रक	सुनि सनमनी त्ति	19	77

मन्तिम--- मष्ट विवि पूजा धर्व जतारी सक्तकीतिमुनि काज मुदा ।।

१८. पूजासम्रह	नानक्य	*	₹ ३=
१८. पद-उठ तेरी मुझ देखूं न	ानिनी के संया टीवर -	,,	tvx
२०, पव-देशो माई मान रिका	मधीर प्रार्थ सृहिकीरत	99	,,
२१. पद-संबद्	सोमायन्य सुभवन्य मानंब	, ,	£4\$
२२ व्हबस्य मंगम	वंसी		tro
२३, क्षेत्रपात घेरनवीस	श्रीभाषन्द	*	tve

```
965
                                                                               [ गुटफासंबह
२४. न्हबरा भारती
                                        थिरपाल
                                                            हिन्दी
                                                                                      240
धन्तिम---
                         केशवनंदन करहिंखु सेव, थिरुपाल भगौ जिला चरला मेव ॥
२४. ग्रारतो सरस्वती
                                    व्र० जिनदास
                                                                                      $ 2 3
           ६०८४. गुटका सं० ४०। पत्र सं० ७-६०। मा० म×६ ६०। भाषा -हिन्दी। ले० कास सं० १०८४।
अपूर्ण। वे० सं० १५५१।
           विशेष-सामान्य पाठों का संग्रह है।
           ६०मधः गटका सं० ४१। पत्र सं० २२३। मा० ५% है ६०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। से० काल
सं०१७४२। सनूर्ण। वे० सं०१४५२।
           पूत्रा एवं स्तोत्र संग्रह है। तथा समयमार नाटक भी है।
           ६०८६. गुटका सं०४२ । पत्र सं०१३६ । बा० ५०४३ ड०। ते० काल १७२६ चैत सुदी १ ।
मपूर्ण। वे० सं० १५५३।
           विशेष--मुख्य २ पाठ निम्न है:--
  १. चतुर्विशति स्त्ति
                                          ×
                                                           মাকুন
                                                                                       ٤
  २. लब्धिविधान चौपई
                                   भोषम कवि
                                                           हिन्दी
                                                                                      30
                      र० काल सं० १६१७ फाग्रुस पुदी १३। ले० काल सं० १७३२ वैद्याल बुर्रा ३।
           विशेष-संवत मोलसी सतरी, फाग्रुगा मारा जब ऊनरी।
                   उजलपापि तेरम तिथि जागि, तादिन क्या चढी परवागि ॥१६६॥
                   बरतै निवाली मांहि विख्यात, जैनि धर्म तसु गोधा जानि ।
                   वह कथा भीषम किव कही, जिनपुराए। माहि जैसी लही ॥१६ ॥।
                                  ×
                                             Х
                                                       х
                                                                ×
                   कडा बन्ध चौपई जागि पूरा हुमा दोइसे प्रमाणि ।
                   जिनवासी का अन्त न जास, भिंत जीव जे लहे मुखवास !!
          इति श्री लब्बि विधान चौपई संपूर्ण। लिबिनं चोखा निखालि माह श्री भोगोदास पठनाथै। सं 🕫
१७३२ वैद्याख बुदि ३ कृष्णपक्ष ।
 ३. जिनकुशस की स्तुति
                                    मायुक्तीति
                                                               हिन्दी
४ नेमिजी वीलहरि
                                    विश्वभृषस्
```

गुटका-संबद			[005	
५. नेमीश्वर राखुल की लहुरि (बार	हमासा) खेतसिंह साह	हिन्दी		
६. ज्ञानपं बमीवृहद् स्तवन	समयमुन्दर	,		
७. भादीश्वरगीत	रंगविजय	17		
द, कृशसग् रदत्तव न	जिम रंगसूरि	"		
€ "	समयमुन्दर	39		
१०. चीबो सीस्तवन	जयसागर	"		
११. जिनस्तवन	कनककोति	"		
१२. भोगीदास को जन्म कुण्डली	×	,,	जन्म सं० १६६७	
६०८७. गुटका सं० १	∤३। पत्र सं० २१। द्या०	५, ×५ ६०। भाषा-संस्कृत	। ले० काल सं० १७३०	
मपूर्गावे० सं०१५५४				
विशेषतत्वार्थंसूत्र तथ	ा पद्मावतीस्तोत्र है। म ला	।रनामें प्रतिलिपि हुई थी।		
६०८८. गुरका सं० ४	। ४ । पत्र सं० ४ – ७६ । सा	ा० ७×४ ३ ६० । भाषा-हिल	दी। ले॰ काल×। अपूर्ण	
वै० सं० १४४४।				
विजेष ग्रुटके के मुख्य प	गठ निम्न हैं।			
रै. श्रेताम्बर मत के ८४ बोल	जगरूप		सं•१८११ ले० काल	
	_	सं• १८६६ मासीज सु	री ३।	
२. वतविधानरासो	दौलतराम पाटनी	हिन्दी रू०काल सं०१	-	
	¥ । पत्र सं० ५ − १०३ । क	।।०६३,×४३, इ०। भाषा-	हिन्दी । लेक काल संत	
१८६६ । झपूर्म । वे॰ सं० १४५६ ।				
विशेष—पुटके के मुक्य प	ाठ निम्न है।			
 मुदामा की बारहसाडी 	×	हिन्दी	\$?- \$ ¥	
विशेष—कुल २८ पद्य हैं	ı			
२. जन्मकुष्डली महाराजा सर्वाई ज	गर्तासहजीकी 🗴	संस्कृत	१०३	
विशेषजन्म सं० १८४:	र चैत बुद्दी ११ रवी ७।३०	• घनेष्टा ५७।२४ सिष योग	बन्म नाम सदासुख ।	
६०६०. गुटका स॰ ४२। पत्र सं॰ ३०। मा॰ ६२×४६ ६०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। से॰ काल 🗴				
पूर्ल । वे॰ सं॰ १४५७ ।				
विमेय—हिन्दी पद संग्रह				

६०६१. गुटका संब ४७ | यत्र संब ३६ | या॰ ६८१६ दः । भाषा संस्कृत हिन्दी । के॰ काल 🗴 । पूर्वो | के॰ संब १४१६ |

विशेष-सामान्य पूजा पाठ संब्रह है।

६०६२. सुदका सं० ४८ । पत्र सं० १ । घा० ६×१२ ६० । भाषा-संस्कृत । विषय-स्थाकरसा । ते० काल × । समुर्ख । वे० सं० १४१६)

विशेष--- भनुभूतिस्वरूपावार्यं कृत सारस्वत प्रक्रिया है।

६०६३. शुद्रकासं०४६ । पत्र सं०६४ । झा०६×४ ६० । मापा-हिन्दी। से०कालसं०१=६= सावन दूदी१२ । पूर्ण। दे०सं०१४६२ ।

विशेष - देवाबहा कृत विनती संप्रह तथा ले।हट कृत अठारह नाते का चौडालिया है।

६०६४: गुटका सं० ४०। यत्र सं० ७४। झा० ६४४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । से० काल 🗴। पूर्वा १वे० सं० १४६४।

विशेष-सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६%, शुद्रका सं० ४१ । पत्र सं० १७० । आ० ४२% ४ ड० । प्राचा-हिन्दी । ले० कान \times । ले० नान \times । पूर्ण । वे० सं० १४६३ ।

विशेष---निम्न मुस्य पाठ है।

३. बारहमासा

 कवित्त कन्हेंबालाल हिन्दी १०५-१०७ विशेष—३ कवित्त हैं।
 र. रालपाला के बोहे जैतली n ११३-११८

६०६६. शुटका सं० ४२ । वत्र सं० १७६ । सा० ६३×६ ६० । जाया-हिन्दी | ले० काल ×० सपूर्वा । वे० सं० १४६६ ।

नसराज

विशेष-सामस्य पाठों का संबह है।

६०६७, शुद्रका सं० ४६ । यत्र सं० ३०४ । बा० ६५४ १ ६० । जावा—संस्कृत हिन्दी । ने० काल सं० १७६३ माह दुवी ४ । पूर्ण । वै० सं० १४६७ ।

विशेष---पुटके के मुक्य पाठ निम्न प्रकार है।

१. ब्रष्टाह्मिकारासी विनयकीत्ति

• हिन्दी

१२ बोहे हैं

{ X =

275-275

२ रोहिस्ति विधिकवा

ै बंसीदास

हिन्दी

१५६-६0

र॰ काल सं० १६६५ ज्येष्ठ सुदी २।

विशेष--- सोरह से पच्यानऊ ढई, ज्येष्ठ कृष्ण् दुतिया भई

कातिहाबाद नगर मुलमात, घयवान विव जातिप्रधान ।।
पूर्लामह कीरति विक्यात, विवानकीत्ति गोवम सममान ।
ता शिव बंधीदास मुजान, मानै जिनवर की प्रान ।।=६।।
सक्षर पद तुक तने जु होन, पढी बनाइ सदा परवीन ।।
क्षमी शारदा रहितराइ पढत मुनत उपजै बमीं मुजाइ ॥६॥।

इति रोहिगोधिधि क्या समाप्त ॥

१, सोलहवारगारासो	सकल की नि	हिन्दी	१७२
२. रन्त्रयका महार्घ व क्षमावस्ती	ब्रह्मयेन	संस्कृत	१७ ५- १५६
५. विनती चौपड की	मान	हिन्दी	4x4-4xk
६. पार्श्वनाथजयमाल	सोहट	"	248

६०६म. गुटका सं० १४। पत्र सं० २२-३०। मार। ६३×८६०। मारा-हिन्दी। ले० काल 🗙 । सपूर्ण। वै० सं० १४६०।

विशेष-हिन्दी पदों का संग्रह है।

६८६६. गुटका सं० ४४ । यत्र सं० १०४ । बा० ९४४ , ६० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । से० काल सं० १८८४ । बनूर्या । वे० सं० १४६६ ।

विशेष-शृटके के मूल्य पाठ विस्त प्रकार है-

१. श्रभानकारा

पं•नकुल

संस्कृत श्रार्थ

25--o\$

विशेष--व्लोकों के नीचे हिन्दी बर्य भी है। बध्याय के बन्त में पृष्ठ १२ पर--

इति श्री महाराजि नकुन पंडित विरक्ति सन्ध सुन्न विरक्ति प्रथमोध्यायः ॥

२. श्रुटकर दोहे

कवीर

रिर हिन्दी

६१००. गुटका सं० ४६। यन सं० १४। मा० ७३×१३ ६०। भावा-हिन्दी । ले० काल ×। पूर्ला । वे॰ सं०,१४७०।

विक्रेय-कोई उस्तेखनीय पाठ नहीं है।

६१०१. गुटका सं० ४७। पत्र सं० ७५। मा॰ ६×४३ इ०। माषा-संस्कृत। से॰ काल॰ सं० १८४७ वेठ सुरी ५ । पूर्ण । वे० सं० १५७१ ।

विशेष---निम्न पाठ है---

१. बुन्दसतसई

वृन्द हिन्दी ७१२ दोहे हैं।

२. प्रश्नावित कवित

वैद्य नंदलाल

३. कवित्त चुगलसोर का शिवलाल

६१०२. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० ६२ । मा० ४×५३ ६० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्णावे न सं १५७२।

विशेष-सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०३. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० ६-६८ । मा० ७×४६ इ० । भारा-हिन्दी संस्कृत । ने० काल × सपूर्ण। बे० सं० १४७३।

विशेष-सामान्य पाठों का संग्रह है !

६१०४. गुटका संव ६०। पत्र स० १८०। मा • ७×१३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। मपूर्ण। वे॰ सं० १५७४।

विशेष--- मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१. नघुतत्त्वार्थसूत्र २. झाराधना प्रतिबोधसार संस्कृत हिन्दी

४४ पराहे

६१० थ. गु.टका सं० ६१। पत्र सं० ६७। मा॰ ६४४ इ०। भाषा-सम्कृत हिन्दी। ते० काल सं० १८१४ मादवा चुदी ६ । पूर्ल । ० सं० १५७५ ।

×

×

विशेष---मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१. बारहसडी

× हिन्दी

34

कुशलविजय

Y.

२. विनती-पार्श्व जिनेश्वर वंदिये रे साहिव मुकति तर्गु दातार रे

३. पद-किये घाराघना तेरी हिये घानन्द नवलराम

अगपत है

V. पद-हेली देहली कित जाय खे नेम क बार

गुढका-संबद्]				[७ ८३
५. पद-नेमकंबार री बाटडी हो राखी	सुशालचंद	हिनी		¥ŧ
राजुल जोवे सही हो स	ाडी			
६. पद-पल नहीं लगदी माय मैं पल नहिं लग	गदी वक्षतराम	,,		8.5
पीया मो मन भावे नेम पि	ाया			
७. पर-जिनजी को दरसए। नित करां हो	रूपवन्द	n	•	99
सुमति सहेल्यो				
८. पद-तुम नेम का भवन कर जिसते तेरा व	मनाहो बलतराम	"		¥¥
६. विनती	श जैराज	"		¥4
१०. हमीररासो	×	हिन्दी	श्रपूर्ण	YE
११. पद-मोग दुलदाई तत्रमनि	जगतराम	**		40
१२. पद	नवसराम	हिन्दी		* ?
१३. 🤧 (मङ्गल प्रभाती)	विमोदीसास	19		४२
१४. रेखावित्र मादिनाय, चन्द्रप्रभ, व	दिं मान एवं पार्श्वनाय	**	¥	9 −₹5
१४. वसंतपूजा	प्रजेराज	11	¥	6-48

विशेष-अन्तिम पद्म निम्न प्रकार हैं :--

धावैरि सहर सुहावस्यू रित बसंत कू पाय। अजैराज करि जोरि के गावे हो मन वक काय।।

्रे ६१०६. गुटका सं० ६२। पत्र सं० १२०। झा० ६४१३ द०। भाषा-हिन्दी। ते० समझ सं० १८६व कुर्सा। ते० सं० १४७६।

विशेष--सामान्य पाठों का संबह है।

६१०७. गुटकासं० ६३। यत्र सं० १७। मा० ६×१ ६०। माया-संस्कृतः। से० काल ×। सपूर्तः। वे० सं० १४=१।

विक्रीय-देशावद्य इस पद एवं भूभरदास इस प्रदर्भों की स्तुति है।

६१० म. शुरुका सं०६४ । यम सं०४० । बा० वर् 🕸 ६० । वादा-हिन्दी । ते० काल १८६७ । कपूर्ण । वै० सं०१४८० । ६९०६ गुटका सं० ६४। यत्र सं० १७३। सा० ६२/४४३ ६०। गाया-हिन्दी। ले० काल ४। पूर्ण वै० सं० १६५१।

विशेष-पूजा पाठ स्तोत्र संग्रह है।

६११०. गुटकासं० ६६। पत्र सं० ३२। घा० ६६ ४४६ द०। भाषा-संकृत हिन्दी। ले० कान 🗴। सपूर्ती। वै० सं० १४६२।

विशेष - पंचमेर पूजा, प्रष्टाह्मिका पूजा तथा सोलहकारए एवं दशनक्षरए पूजाएं हैं।

६१११. सुदकासं०६७ । पत्र सं०१८५ । झा० ८३ ४७ ६० । भाषा−संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०१७४३ । पूर्ता। वे० सं०१४ ६६ ।

विशेष--सामान्य पूजा पाठ संप्रह है।

६११२. मुटका संब ६८ । पत्र संब ११४ । प्राव ६८४ इव । भाषा-हिन्दी । लेव कात 🗴 । पूर्व । कैव संव १४८६ |

विशेष-पूजा पाठो का संग्रह है।

६११३. सुटका सं०६६ । पत्र सं०१४१ । मा०४२,४४ ड० । भाषा-संस्कृत । ने०वान × । सपूर्ण वै० सं०१४=म ।

विशेष-स्तोत्रो का संग्रह है।

६१९४. गुटका सं० ७० । पत्र सं० १७–४० । ब्रा० ७ 1_2 \times ४ ६० । भागा-संस्कृत । ले० काल \times । पूर्णी के सं० १४८६ ।

विशेष -- नित्य पूजा पाठों का संग्रह है।

६१**१४. गुटका सं०७१** । पत्र सं०१६ । आ०५०५५ दुः। भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० वाल 🗙 । पूर्णा के सं०१४६० ।

विशेष---चौबीस ठाएग चर्चा है।

६११६. गुटका सं० ७२। वत्र सं० ३२। मा० ४५% २३ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । ते० काल x पूरी । के० सं० १४६१।

विशेष-पूजा पाठ संग्रह एवं श्रीपाल स्तुति झादि है ।

६११७. शुटकासं० ७३। पत्र सं०२ ४०। म्रा०६२,×४ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल : । मपूर्णा वे० सं०१४६४।

```
शुटका-संमद
                                                                                      المحلا
          ६९१=. गुटका सं० ७४ । पत्र सं० ६ । ब्रा० ६६×५३ ६० । भाषा-हिन्दी । ले० काल 🗴 । ब्रपूर्त ।
वैक संक १५६६ ।
           विशेष--मनोहर एवं पूनो कवि के पद हैं।
           ६११६. गुटका सं० ७४ । पत्र सं० १० । बा० ६×५३ ६० माषा-हिन्दी । ले० काल × । बापूर्यो ।
वै॰ सं॰ १५६८ ।
           विशेष--पाशाकेवली भाषा एवं बाईस परीपह बर्गान है।
           ११२०. गुटका सं 0 4ई। पत्र सं 0 २६। मा ६ ६४४ ६०। भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।
जे॰ काल × । बार्गा । वै॰ मं॰ १५६६ ।
          विशेष -- उमास्यामि कृत तस्वार्थमूत्र है।
          ६१२१. गटका सं० ७०। पत्र सं० ६-४२। झा० ६×४३ ६०। भाषा-हिन्दी। ने० कान 🗴 । सपूर्ती।
वे॰ सं० १६००।
          विशेष---सम्यक दृष्टि की भावना का बर्रान है।
           ६६२२. गुटका सं ० ७८ । पत्र सं ० ७-२१ । भाव ६xx3 ६० । भावा-संस्कृत । से ० कास x )
धार्मा । वे॰ सं०१६०१ ।
          विशेष--उमास्वामि कृत तस्वार्य सूत्र है।
           ६१२३. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० ३० । बा॰ ७४४ ६० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ते० काल 🗶 ।
धपूर्ण । वे० सं • १६०२ । सामान्य पूजा पाठ हैं ।
           ६१२४. गुटका सं• प०। पत्र सं• ३४। मा• ४×३३ ६०। भाषा-हिन्दी। ते• काल ×।
मपूर्गा | वे० सं० १६०५ ।
           विशेष-देवाब्रह्मा, मूधरदास, जगराम एवं बूधजन के पदों का संबह है।
           ६१२४. शुटका सं० ६१। पत्र सं० २-२०। घा० ४×३ इ०। भाषा-हिन्दो । विषय-विनती संबह ।
ले॰ काल 🗴 । ब्रार्श । वै॰ सं॰ १६०६ ।
           ६१२६, गुटका सं० दर । पत्र सं० २६ । मा॰ ४×३ ६० । माबा-संस्कृत । विवय-पूजा स्तोत्र । के०
काल 🗶 । अपूर्ण । वे० सं० १६०७ |
           ६१६७. गुडका सं० ६३। पत्र सं० २-२०। मा० ६३×१३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। से० काल 🗴
श्रपूर्ण । वै० सं० १६०६ ।
           विशेष-सहस्रनाम स्कोष एवं पदी का संग्रह है।
```

ž

७८६]

् ६१२.स. शुटका सं० ⊏ ४ । पत्र सं० १४ । घा० ८ दू×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० कान × । सपूर्ण । वै॰ सं१६११ ।

विशेष-- देवाबहा कृत पदों का संग्रह है।

ः - ६१२.६. शुटकासं० स६ । पत्र सं० ४० । सा० ६५ूं ४४१ ६० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १७२३ । पूर्णी । ले० सं० १६४६ ।

विशेष--- उदयराम एवं बहतराम के पद तथा मेतीराम कृत कल्याग्मन्दिर तीत्रभाग है।

ं ६१३०. शुरकासंट स्∌ापव सं०७०-१२म् । सा०६×४३ इ०। भाषा हिन्दी। ने०कान १०६४ , सपूर्तावे कंट १६४७ ।

विशेष —पूजाओं का संग्रह है।

ः ६१६१. गुटकास० म= । यत्र सं० २ मा । ६१ ४५१ १० । भाषा–संस्कृत । ले० काल ४ । सपूर्ण वै० सं० १६५ म

विशेष---नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है

६१३२. गुडका सं० ⊏६। पत्र मं० १६। आ० ७४४ ६०। भाषा-्रिनी। लं० काल ४। पूर्ता। वैक सं० १६४६।

विशेष-भगवानदास कृत झाचार्य शान्तिसागर की पूजा है।

ं ६१६६. गुटकासं० ६०। पत्र सं० २६ । आग् ६३,×७ ६० । आग्या-हिन्दीः ने० कान १६१० । पूर्णावे० स० १६६० ।

विशेष-स्वरूपचन्द कृत सिद्ध क्षेत्रों की पूजाधी का सम्रह है।

६१२४. गुटका सं० ६१। पत्र म० ७२। प्रा० ६२%६ इ०) भाषा-हिन्दी . त० काल सं० १६१४ पूर्णा वेल सं० १६६१।

विशेष— प्रारम्भ के १८ पत्रों पर १ से ४० तक पहांदे हैं जिनके ऊपर नीति तथा शृङ्गार रस के ४७ दोहे हैं। गिरधर के कवित्त तथा सनित्थर देव की कथा स्रादि हैं।

६१६४. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० २० । घा० ४.४८ इ० । आया–हिन्दो । ले० काल × । धबूर्ला । वै० सं० १६६२ ।

विशेष-कौतुक रत्नमंजूया (मंत्र तंत्र) तया उपोतिय सम्बन्धः माहित्य है।

६१३६. गुटका सं०६२ । पत्र सं०१७ । प्रा०५४४ ६० । आया-संस्कृत । ले० कान 🗴 । पूर्ण । वै० सं०१९६३ । विशेष--- संघीजी श्रीदेवजी के पठनार्थ निस्ता गया था । स्तीत्रों का संग्रह है ।

६१६७. गुटका सं० ६४। पत्र सं० ६-११। बा० १४६ ६०। माया गुजराती। ले॰ काल 🗴। बायुर्गा वे॰ सं॰ १६६४।

विशेष-विश्वभक्त स्वमिता विवाह वर्रान है।

६१३ = . गुटका सं०६४ । यत्र सं०४२ । म्रा० ४×३ ६० । माना-संकृत हिन्दी । ते० कात × । पूर्ण । वे० स०१९६७ ।

विशेष—संस्वार्थमुत्र एवं पद (चार्द रच की बजत बधाई जी सब जनमन मानन्द दाई) है। चारों रचों का नेना सं० १६१७ फाग्रुस बुदी १२ को जयपुर हुमा था।

६१३६. गुरुका संट ६६ । पत्र सं० ७६ । झा० ८४५ ६० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ते० कान 🗙 । पूर्ण । वै० सं० १६६८ ।

विशेष---पूजा पाठ संग्रह है।

६१४०. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ६० । ग्रा० ६३×८६ ६० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ते० काल ×१ कुछ । वे० सं० १६६६ ।

विशेष-पूजा एव स्तोत्र संग्रह है।

६१४१. गुटकासंट ६८ । पत्र सं० ५८ । आरः ७८७ इ० । आया-व्हिनी । ले० काल ४ । अपूर्णी । वै॰ सं० १६३० ।

विशेष--- सुभाषित दीहे तथा सदैये, लक्षण सथा नीतियन्य एवं शनिश्चरदेव की कथा है ।

६१४२. गुटका सं०६६ । पत्र सं०२-१२ । झा० ६×१ इ० । आया-मंस्कृत हिन्दी । ले० काल 🗙 । सनुर्या । वै० सं०१६७१ ।

विशेष---मन्त्र बन्त्रविधि, प्रामुर्वेदिक नुसन्ने, सम्बेसनः सो के ६४ योत्र, तचा दि० जैनों की ७२ जातियां जिसमें से ३२ के नाम दिये हैं तमा चाराक्य नीति प्रादि है। ग्रमानीराम की पुस्तक से चाकसू में सं० १७२७ में निका गया।

६१४६ गुटकासंट १८०। पत्र सं० १४। सा० ६४४६ ६०। भाषा-हिन्सी । ते० काल 🗙 । सपूर्ण। वै० सं० १६७२।

विशेष-वनारसीदास कृत समयसार नाटक है। १४ से बागे पत्र खाली है।

. ६९४४: गुटकासं० ९०१ । पत्र सं० ८–२४ । घा० ६×४३ ६० । भाषा–संस्कृत हिल्दी । ले० काल सं० १८४२ । ब्यूर्या । वे० सं० १६७३ ।

विशेष—स्तोत्र संस्कृत एवं हिन्दी पाठ है।

६९४४. गुटका सं० १८२ । पत्र सं० ३३ । झा० ७%७ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० कास । मपूर्ण । ते० सं० १६७४ ।

विशेष — बारहसडी (सूरत), नरक दोहा (सूथर), तत्थार्थसूत्र (उनास्वामि) तथा कुटकर सबैसा है। ६१४६. गुटका सं०१०३। पत्र सं०१६। सा० ५४४ ६०। आषा-संस्कृत। ले० काल ४। पूर्ण। बै० सं०१६७४।

विशेष-विवापहार, निर्वाणकाण्ड तथा भक्तामरस्तोत्र एवं परीषह वर्शन है।

६९४७. गुटका सं० १०४ । पत्र सं० २० । आ० ६८५ इ० । आषा हिन्दी । ले॰ काल 🗴 । अपूर्ण । कै० सं० १६७६ ।

विशेष--पञ्चपरमेष्ठीगुरा, बारहभावना, बाईस परिवह, सोलहकारण भावना ग्रादि हैं।

६१४ स. गुटकासं० १०४ । पत्र सं० ११-४७ । आ० १८५ १० । आपा-हिन्दी । ने० काल 🗴 । सपूर्ण (वै० सं० १६७७ ।

विशेष--स्वरोदय के पाठ है।

६१४६. गुटका सं० १०६ । पत्र सं०३६ । सा॰ ७४३ ६० । भाषा-संबद्धत । ले॰ कात 🗴 । पूर्ण । वै० सं० १६७६ |

विशेष-वारह भावना, पंचमगल तथा दशलक्षण पूजा है।

६१४०. गुटकार्स० १०७ । पत्र सं० ६ । घा० ७४४ । भाषा-हिन्दी । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० १६७६ ।

विशेष-सम्मेदशिखरमहातम्य, निर्वाणकांड (सेश्य) फुटकर यद एव नेमिनाथ के दश भव है।

६१४.१. शुद्धकासं ३ १० मा पत्र सं॰ २-४ । मा॰ ७४४ ६० । भाषा-हिन्दी। ने० काल 🗙 । मञ्जूषी | वे॰ सं०१६=० |

विशेष-देवाबद्धा कृत कलियुग की बीनती है।

६१४२. गुटका सं० १०६। पत्र सं० ६६। मा० ६४६ दे इ० भाषा-हिन्दी। विषय-संबद्धा ले० १ सर ४ । बदर्श । वे० सं० १६६१।

विषेष—१ से ४ तया ३४ से ५२ पत्र महीं हैं। निम्न पाठ हैं:—

हरजी के दोहा
 हरवी।

विशेष---७६ से २१४, ४४७ से ४४१ दोहे तक है आगे नहीं है। हरजी रसना सी कहें. ऐसी रस न ब्रोर।

हरजी रसना सी कहें, ऐसी रस न झोर

तिसना तु पीवत नहीं, फिर पीहे किहि ठीर ॥ ६६३ ॥

हरजी हरजी जो कहै रसना बारंबार।

पिस तांज मन हं क्यों न ह्वी जमन नाहि तिहि बार ॥ १६४ ॥

२. पुरुष-स्त्री संवाद	राम बन्द	हिन्दी	१२ पद्य हैं।
 फुटकर कवित्त (गृंगार रस) 	×	,,	४ कवित है।
 दिल्नी राज्य का न्यौरा 	×	"	

विशेष-चौहान राज्य तक वर्शन दिया है।

५. श्राधाशीशी के मत्र व यन्त्र हैं।

६१४३. गुटका सं०११८ । पत्र सं०६४ । प्रा०७४४ ः०। भाषा–हिन्दी संस्कृत । विषय–सब्रह । ले०काल × । पूर्ता। वे०सं०१६-२ ।

विशेष -निर्वाणकाण्ड, भवतामरस्तीत्र, तत्त्रार्थमूत्र, एकीभावस्तीत्र मादि पाठ हैं।

६, ४४. गटका सं०१११। पत्र सं०३द। षा०६८४। भाषा हिन्दी। विषय−र्गत्रह। ले० काल 🗶 १ ७ पूर्णावे० सं०१६⊏३।

विशेष — निर्वाणकाण्ड-सेवग यद संग्रह-भूषरदास, जोधः, मनोहर, सेवग, पद-महेन्द्रकीर्ति (ऐसा देव विनंद है सेवो भवि शानी) तथा चौरासी गोजोशित वर्णन सादि ताठ हैं।

६१४४.सुटकासं०११२ । पत्र सं०६१। सा० ४४२ ६०। भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र ।से० काल ४ ।पूर्णावे० सं०१६६४ ।

विशेष-जैनेतर स्तोत्रों का संग्रह है। गुटका पेमसिंह भाटी का लिखा हुआ है।

६१४६. गुरुका सं०११३ । यत्र सं०१३६ । झा०६४४ ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-संबह् । के० काल ४ । १ सन्द । पूर्णी वे० सं०१६न ४ ।

विशेष—२० का १०००० का, १५ का २० वा यत्र, दोहे, पाला केवली, आक्तानरस्तोत्र, यद संबह सवा राजस्थानी में ग्रुंपार के दोहे हैं।

६/४७. गुटका सं० ११४ । पत्र.सं० १२३ । मा० ७४६ ६० । मापा-संस्कृत । विषय-व्यक्त परीक्षा । के० काल ४ ।१६०४ मपाड बुदी ६ । पूर्ण । के० सं० १६६६ ।

विशेष-पुरत्तक ठाकुर हमीरसिंह गिनवाडी वालों की है जुवाल वन्द ने पाश्टा में प्रतिसिधि की थी। बुटका सजित्द है। ६१४ म. गुटका सं०११४ । पत्र सं० ३२ । मा० ६३% ६ इ०। भाषा-हिन्दी । ते० काल 🗙 । सञ्ज्ञी । ते० सं०११४ ।

विशेष---धायुर्वेदिक नुससे हैं।

६९४.६. शुटकासं० ११६ । यत्र सं०७७ . सा॰ द×६ ६० । भाषा हिन्दी। ले० काल × । पूर्सी। वै•सं०१७०२ ।

विशेष—पुटका समित्र है। सम्बेतवानों के 🖙 गोत्र, विभिन्न कवियो के पद, तथा दीवाए। समयबन्दत्री के पुत्र साननीताल की सं० १९१९ की जन्म पत्री तथा सामुकेंदिक नुमले हैं।

> ६१६०. **गुटका** सं० १९७ । पत्र सं० ६१ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७०३ । विशेष—नित्य नियम पूत्रा संबह है ।

६१६१. शुद्धका सं० ११६ । पत्र सं० ७६ । घा० ६×६ ६० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । सपूर्ण । वै० सं० १७०५ ।

विशेष---पूजा पाठ एवं स्तोत्र संप्रह है।

६१६२. गुडका सं० ११६ । पत्र सं० २४० । सा० ६४४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० कान सं० १८४१ सपूर्ता । वै० सं० १७११ ।

बिशेष-भागवत, गीता हिन्दी पद्य टीका तथा नासिकेतोपास्थान हिन्दी पद्य में है दोनों ही भारूर्ण है।

६१६६. गुटकासं० ६२०। पत्र सं० ६२–१२ मा । प्रा० ४४४ ६०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ४। समूर्ताकै० सं० १७१२।

विशेष--बुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है ---

१. नवपरपूजा देवचन्द हिन्दी धपूर्ण ३२-४३ २. बहुत्रकारोपूजा ,, ४४-४०

विशोष—पूजा का कम वनेतास्त्रर मान्यतानुसार निम्न प्रकार है—जल, बन्दन, पुरा, पूप, दीप, झक्षत, नैनेख, फन दनकी प्रत्येक की सनग स्रता पूजा है।

३. सत्तरभेदी पूजा सामुकीति ,, र० सं॰ १६७६ ६०-६६ ४. पदर्शबह

६१६५४. गुडकासं० १२१। पत्र सं० ६-१२२। धा० ६४५ इ०। भाषा-हिली संस्कृत । के० काल ×। प्रपूर्ण । वे० सं० १७१३। विशेष-पुटके के मुक्य पाठ निम्न प्रकार है --

14414 324 2. 34			
१. गुरुजयमाला	ब्रह्म जिनदास	हिल्दी	१ ३
२. नन्दीश्वरपूजा	मुनि सकलकीति	संस्कृत	\$ c
 सरस्वतीस्तुति 	पाशावर	"	**
४. देवशास्त्रगुरूपूत्रा	,,	,,	Ęc
५. गराबरवलय पूर्व ।	,	"	१०७-११२
६. बारती पंचपरमेश्री	पं• विमना	हिन्दी	***

धन्त में लेसक प्रवास्ति दी है। यट्टारकों का विवरण है। सरस्वती गच्छ बलारकार गण मूल संघ के विद्याल कीर्ति देव के यट्ट में भट्टारक दांतिकीर्ति ने नागपुर (नागौर) नगर में पार्श्वनाथ वैत्यालय में प्रतिलिधि की थी।

६१६४. सुटका सं० १२२ । यत्र सं० २५-१२६ । ब्रा॰ १६/४, ६० । आया—संकृत्त हिन्ती । ले॰ कान × । ब्रह्मी । वै॰ सं० १७१४ ।

विशेष---पूजा स्तोत्र संग्रह है।

६१६६. गुटका सं० १२३ । यस सं० ६-४६ । झा० ६४४ इ० । भाषा-हिन्दी । ते० काल 🗴 । समूर्ता | वै० सं० १७११ ।

विशेष--विभिन्न कवियों ने हिन्दी पदों का संबाह है।

६१६७। गुडका सं० १२४ । पत्र सं० २४-७० । ब्रा० ४८५३ इ० । आया-हिन्दी । ले० काल 🗴 । ब्रदुर्ण । वे० सं० १७१६ ।

विशेष---विनती संग्रह है।

६१६ म् गुटका सं० १२४ । पत्र सं० २-४४ । मारा-संस्कृत | ते० काल 🔀 सपूर्ण । वै० सं० १७१७ । विशेष—स्त्रीण संबद्ध है |

६१६६. गुटका सं० १६६ । यम सं० १६-१८२ । सान ६८४ ६० । माना-हिन्दी । ते० काल 🗴 । सपूर्ण । वे० सं० १७६८ ।

विशेष--भूषरदास कृत पार्श्वनाव पुरास है।

६१७०, गुटका सं० १२०। पत्र सं० ६६-२४६। सा० ०४४३ इ०। जाया-सुकराती । विदि-हिन्दी। विदय-न्या। र० काल सं० १७०६। ले० काल सं० १००६। स्यूची। वे० सं० १७१६।

नियोध---मोहन निजय हुत बन्दना चरित्र हैं।

Substitute of the

६९७९ शुटका सं०१२ ≍ । पत्र सं०११ –६२ । ब्रा०१४४ ६० । आया-हिन्दी संस्कृत । ते० काल ४ । सपूर्णा वे० सं०१७२० ।

विशेष--पूजा पाठ संग्रह है।

६९७२. गुटका सं०१२६। पत्र सं०१२। झा० १८४ ६०। भाषा-हिन्दी। ले० काप 🗵 झपूर्छ। वै० सं०१७२१।

विशेष--- मक्तामर भाषा एवं चौबीसी स्तवन भादि है।

६१.७३. गुटकासं०१३०.। पत्र सं०४.–१६। मा०६४४ इ०। बाबा-हिल्दी पद। ले० काल ४.। मनूर्या। वै० सं०१७२२।

रसकौतुक राजसभारंजन ३२ से १०० तक पद्य है।

म*न्तिम* कंता प्रेम समुद्र हैं गाहक चतुर गुजान !

राजसभा रंजन यहै, मन हित प्रीति निदान ॥१॥

इति श्रीरमकोतुकराजसभारंत्रन समस्या प्रवस्य प्रयम नाव संदर्भ।

६९७४. गुटका सं० १३१। पत्र सं०६-४१। प्रा०६×५ ६०। भाषा—संस्कृता ने० काल सं० १८६१ स्रपूर्ण। वे० सं० १७२३।

विशेष--भवानी सहस्रनाम एवं कवच है।

६१७४. गुटकासं० १३२ । पत्र सं० १-१६० । मा० १०% ६६० । माथा नहेन्यो । ले० काल सं० १७५७ । सपूर्ण । वै० सं० १७२४ ।

विशेष-सहुतुन्त कथा (त॰ रायमझ) घंटाकरण मंत्र, विनती, बदावित, (अगवान सहावीर में लेकर सं॰ १६२२ सुरेन्सकीति अष्टारक तक) झादि पाठ हैं।

६१७६. **गुटका सं∘ १३३**। पत्र सं∘ ४२। घा० १×४ इ०। भाषा⊸हिन्दी । लं∘ काल ×। धपूर्ण **१**० सं० १७१४।

विशेष-समयसार नाटक एवं सिन्दूर प्रकरण दोनों के ही अपूर्व पाठ है।

६१७७. शुटका सं० १२४ । पत्र सं० १६ । मा॰ ६×१ ६० । मापा-हिन्दी । ते० काल × । प्रपूर्ण वै॰ सं० १७२६ ।

विशेष—सामान्य पाठ संग्रह है।

६१७≔. शुटकासं० १३४ । पत्र सं॰ ४६ । सा० ७४४ ६० । बागा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१८ । सपूर्ण । वे० सं० १७२८ ।

१. पद- राखी हो वृजराज साज मेरी	सूरदास	हिल्दी
 महिंदो विसरि गई लोह कोड काह्नन पद-राजा एक पंडित पोली तुहारी 	ममूकदास • सूरदास	ग हिन्दी
y, पद-मेरी मुक्कनीकी सक तेरो मुख बारी o	चंद	,,
 पद श्रव मैं हरिरस वासा लागी भक्ति सुमारी० 	कबीर	
६. पद-बादि गये दिन साहिब विना सतग्रुर चरसा सने।	ह्विना "	"
७ पदवादिन मन पंछी उदि जी है फुटकर मंत्र, भीषषियों के नुससी म्रादि i	" ₹1	* .

६१७६. गुटका सं० १३६। पत्र सं० ४-१६ | घा० ७४४ ६० । भाषा—हिन्दी । विषय—पदः ले∻ कात्र १७०४ । प्रमुखी । वे॰ सं० १७४६ ।

विशेष --वस्तराम, देवाब्रह्म, चैनमुख बादि के पदों का संग्रह है। १० पत्र मे बागे खाली हैं।

६९८०, गुटका सं०१६७। पत्र सं० ८८ । आ।०६१४५ ६०। भाषा-हिन्दी । विषय-पद । क्षेक् काल ४। अपूर्ण । दे० सं०१७६६ ।

विशेष —वदारकोक्शिस के कुछ पाठ एवं विनाराय, दौनतराय, जिनवास, नेवय, हरीखिह, हरखक्क, नानकर, गरीबदाय, पूजर एवं किसतहनाव के वर्षों का संबद्द है।

> ६१८९. शुटका संव १३८। पत्र संव १२१। घाव १३४५३ ६०। वैव संव २०४३। विशेष--मुक्य पाठ निम्न हैं:---

१. बीस विरहमान पूजा	नरेन्द्रकोर्लि	हिन्दी संस्कृत
२. नेमिनाय पूजा	षुवलयषन्द	संस्कृत
३. कीरोदानी पूजा	ग्रमयक्त्	"
४ हेमफारी	विवयभूषर्	हिन्दी
५. क्षेत्रपासपूजा	सुमतिकी ति	n
६. शिकार विलास भाषा	्षनराज	» र०काल सं०१८४व

६१=२. शुद्धा सं० १३६। वन सं० ३-४६। मा॰ १०३×७ ६०। मापा—हिन्दी प०। से० काल सं७ १९३५। सपूर्ण वे० सं० २०४०।

विवेद---पासकावरण व्योखिय का प्रन्य है इतका दूतरा नाम जातकालकार की है। वैदेशास जोसी ने अधिकाल की की । ६१८६. गुडका सं० १४० । पत्र सं० ४-४३ । मा० १०३×० ६० । माना-संस्कृत । तै० काल सं० १९०६ कि० माचना बुदी २ । सपूर्ण । वै० सं० २०४४ ।

विशेष-- समृतवन्द सूरि इत समयसार वृत्ति है।

६१८६: शुटका सं० १४१। पत्र तं० ६-१०६। झा० १०३×६३ ६०। भाषा-हिली। ते० काल तं० १८५३ सपास सुरी ६। सपूर्ता वे० सं० २०४६।

विशेष---नवनतुष हत वैद्यमनोत्सव (र० सं० १६४२) तथा बनारसीविसास साथि के पाठ हैं। ६१८४. गुदका सं० १४२। पत्र सं० ६-६३ । बाला-हिन्दी। से० काल 🗴 । सपूर्ण । दे० सं० २०४७ ।

विशेष--वानतराय कृत वर्षासतक हिन्दी टब्या टीका सहित है।

६१८६. गुडका सं० १४३। पत्र सं० १६-१७१। सा० ७६४६३ ६०। भाषा-संस्कृत। ले॰ काल सं० १६१५। समूर्या विक सं० २०४८।

विशेष--पूजा स्तीत गादि पाठों का संग्रह है।

संबत् १६१५ वर्षे क्वार पुरी १ विने ची मूलसंबे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगरो सीमाधिनावसंखालवेटुः बावी युसस्याने मन् श्रीवकतकीर्ति, मन् श्रुवनकीर्ति, मन् श्रानकृष्ण, मन् विश्ववकीर्ति, मन् युनवन्द्र, मान् पुरस्तेमात् सान् भीरत्वकीर्ति मान् वयःकीर्ति युरावन्त्र ।

६१८०. गुरुका सं० १४४। पण सं० ४६। या० ८४६६०। प्राया-हिन्दी। विषय-क्या। ते० काल सं० १६२०। पूर्व । वे० सं० २०४६।

विशेष---निम्न पाठों का संप्रह है।

१. युक्तावनिकवा	भारमङ्ग	हिन्दी	र• कास सं• १७८८
२. रोहिखीवतक्या	×	,,	
३. पुष्पाञ्चलित्रतकवा	समितकीति		
४. दशसकास्वतकवा	४० मानसागर	**	
५. ब्रष्टाङ्किकाकया	विनवकीर्ति	,	
६. सङ्कटचीयव्रतक्या	देवेन्द्रभूषण [४० विश्वमूषण के शिष्य]	,,	
७. बाकासपश्चमीकवा	वांडे हरिकृत्स	*	र० काम सं० १७०१
 निर्वोषसप्तमीकवा 	,		er 21010.2

दिया. गुरुका सं० १४६। वयः सं० ११-वयः। बारः सहै:४४६ १० । बाया-संस्कृत क्रियोः । केर काम सं० १७०१ । समूर्यः । वै० सं० २०६१ ।

विक्रीय-समारतीविकास एवं वस्त्रवस्ता वादि के पाओं का संबद् है।

६१६० ग्राटका सं० १५७ । पत्र सं० ३०-६३ मारु ४४४ई दर । भाषा-संस्कृत । लेरु काल 🗴 । समुद्रत । देरु सं० २१८६ ।

विशेष----श्तोत्रों का संग्रह है।

्र १९६९ . गुटकासं० १४६ । पत्र मं० ३४ । ब्रा० ⊏×१० ६० । ते० काल मं० १५४३ । पूर्ण। वै० सं० २१८७ ।

१. पञ्चकल्यासम्बद्धाः हरिचन्द्र हिन्दी १-२० र०काल सं०१६३३ ज्वेष्ठ सुदी ७

२. त्रेन्त्रक्रियावतोष्ठारम देवेन्द्रकीत्ति संस्कृत

विशेष---नीमैडा में चन्द्रप्रभ चैन्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

३, पट्टाशील X हिन्दो ३५ ६१६२, गुटका सं० १४६ । पत्र सं० २१ । सा० ९४६ ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । सं०

६१६२. सुटका मे≎ १४६ । पत्र स० २१ । मा० ६४६ ६० । भाषा⊸हिन्दी । विषय–इतिहास । से० काल सं∙ १८२६ ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वै० सं० २१६१ ।

विशेष-- गिरनार यात्रा का वर्गान है। चांदनगांव के महावीर का भी उल्नेख है।

६१६३. गुटकासं०१४०। पत्र सं०४४६। पा० ८×६६०। भाषा–द्रिन्दी संस्कृत । मे० काल १७१७। पूर्णी विकसं०२१६२।

विशेष-पूत्र। पाठ एवं दिल्ली की बादशाहत का ब्योरा है।

६९६४ गुटकासं०१४१। पत्र सं०६२। घा०६८६ इ०। आया-प्रकृत-हिन्दी । मे० क.ल 🔀 अपूर्ण। वै० सं०२१६४।

विशेष -- मार्गेगा चौबीस ठागा चर्चा तथा भक्तामरस्तोत्र प्रादि हैं।

६१६४ शुद्धका सं० १४२। पत्र मं० ४०। घा० ७६४४६ इ०। जाया-संस्कृत हिन्दी। से० काल 🗴 घणुर्ख । वे० सं० २१६६।

विशेष--सामान्य पूजा पाठ संबह है ।

६१६६. गुटका सं० १४३ । पत्र सं० २७--२२१) .धा० ६५ \times ६ इ० । भाषा-संसक्त हिल्मी । मे० कस्त \times । सूर्णा । वै० स० २१६७ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठ संबह है।

६१६७. गुटकासं० १४४ । पत्र तै० २७-१४७ । सा० २४७ ६० । भाषा-हिन्दी | ले० काल 🗙 । स्रपूर्ण । वै० तं० २१६६ |

विशेष-सामान्य पूजा पाठ संबह है।

६१६ स. शुक्का सं• १४४ क। यम सं• ३२। माषा—संस्कृत । विषय-पूजा । ते॰ काल 🗴 । धपूर्त । वै॰ सं॰ २१९९ ।

वियोष-समनवारसा पूजा है।

६१६६. शुटका संव १४४। पत्र संव ४७-१४२। बाव ७३४६ ६०। जाया-हिन्दी। तेव काल x । प्रपूर्ण। वैव संव २२००।

विशेष-- नासिकेत पुरास हिन्दी गण तथा गोरख संवाद हिन्दी एक में है।

६२००. गुटकासं० १४६ । पत्र सं०१ द-३१ । बा० ७३% ६ ६० । बावा-हिल्दी । ते० काल 🗙 । सन्दर्भा । वे० सं०२२०१ ।

विशेष---पूजा पाठ स्तोत्र झादि हैं।

६२०१. गुटका सं० १४७ । यत्र सं० १० । झा० ७३,४६ ६० । भाषा-हिन्दी । विषय⊸यापुर्वेद । क्षे० काल ४ । ब्यूर्ण । वे० सं० २२०२ ।

विशेष-धायुर्वेदिक नुसले हैं।

fig. 1 Step 1 Step 1 Step 1

६२०२. गुटका सं०१४६ । पत्र सं०२-३०। ग्रा०७४५ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं०१८८७। ब्रपूर्ण। वे० सं०२०३।

विशेष--मंत्रों एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

६२०३, गुटका संब १४६। पत्र संब ६३। घाव धर्५×६ इ०। भाषा-हिन्दी। तेव काल 🗴। पूर्ण वैव संव २२०४।

विशेष---क्युवाहा वंश के राजामीं की वंतावती, १०० राजामीं के नाम दिये हैं। सं० १७४६ तक वंदावती है। यब ७ पर राजा पृथ्वीसिंह का गद्दी पर सं० १०२४ में कैठना सिका है।

 विक्की नगर की बसायत तथा बादबाहृत का म्योरा है किल बादबाहृ ने किनने वर्ष, महोने, दिन तथा बड़ी राज्य किया इसका हुसान्त है।

बारह्यासा, प्रास्तीका नीत, जिनवर स्तुति, श्रृङ्गार के सबैवा प्रादि है ।

६२०४. शुटका सं० १६०। पण सं॰ १६। मा॰ ६४४३ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । से० कास 🗴 सन्दर्स । पे॰ सं॰ २२०४।

विशेष---वनारती विकास के कुछ पाठ तथा बक्तावर स्तोब साथि गाठ है।

६२०१. गुटका सं० १६१। पन सं० १४। बा० ७४६ ६०। माया-प्राकृत हिली। ते० काल 🗴। समूर्ता । वै० सं० २२०६।

विक्षेष-शावक प्रतिक्रमण हिन्दी ग्रर्थ सहित है। हिन्दी पर गुजराती का प्रभाव है।

रे से ५ तक की गिनती के यंत्र हैं। इसके बीस यंत्र हैं? से ६ तक की गिनती के ३६ जानों का यंत्र हैं। इसके २२० पंत्र हैं।

६२०६. गुटका सं० १६२ । पत्र सं० ११-४६ । ग्रा० ६३%७६ इ० । त्राया-हिन्दी । विषय-पद । के॰ काल सं० ११४४ । धरुर्स । के॰ सं० २२०६ ।

विशेय—सेवग, जगतराम, नवल, बलदेव, मागुक, धनराज, बनारसीदास, खुवालचन्द, बुधजन, न्यायत स्रादि कवियों के विभिन्न राण रागिनियों में पत हैं।

६२०७. शुटका सं०१६३ । पत्र सं०११ । बा० १३/४६ इ० । बाया-हिन्दी । ले० काल 🗙 । मञ्जूष्ठी वै० सं०२२०७ ।

विशेष —नित्य नियम पूजा पाठ है।

हरेल्ड. गुटका सं०१६४। पत्र सं० ७७। बा०६५%६ ६०। भाषा-संस्कृत । ते० काल 🗙 । सपूर्ण । वे० सं०२२०६।

विशेष--विभिन्न स्तोत्रों का संग्रह है।

६२८६ गुटका सं०१६५ । पत्र सं०५२ । सा०६३×४३ ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-पय । ले० काल × । समूर्तावै० सं०२२१० ।

विशेष--- नवस, जगतराम, उदयराम, गुनपूरए, चैनविजय, रेसराज, जोधराज, चैनमुस, धर्मधान, भगतराम, सूचर, साहिस्राय, विनोशीलाल झादि कवियों के विभिन्न राग रागिनियों में पद है। पुस्तक योमतीसासजी ने प्रतिसिध करवाई थी।

६२१०. गुटका सं० १६६। यत्र सं० २४। झा० ६६४४३ इ०। माया-हिन्दी। ते० काल 🗙 । मदूर्ण। वे० सं० २२११।

स्वारह नाते का चौदालिया तोहट हिन्दी १-७
 मुहर्लमुकावलीकावा शक्करावा ॥ १-२३

६२११. शुटका सं० १६७। यत्र सं० १४। सा० ६×४ई ह०। भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रकास्य । से० काल ×। सपूर्ण । के० सं० २२१२। विशेष-पद्मावतीयन तथा युद्ध में जीत का सन्त्र, सीचा जाने का सन्त्र, नजर तथा वशीकरण सन्त्र तथा बहुतसमीतमंत्रीवकरतीय हैं।

६२(२. गुटकासं० १६८ । पत्र तं॰ १२–३६ । झा० ७३/४६३ ६० । भाषा-हिन्दी । ते० काल 🗴 । स्रमुखी । वै० सं० २२१३ ।

विवोध--श्रुत्व सतसई है।

६२१३. गुटकासं० १६६। यत्र तं० ४०। प्रा० य्द्रे×६ ६०। त्राला—हिन्दी। विवय—संग्रह। ते० काल ×। सपूर्ण। वै० सं० २२१४।

विशेष---भक्तामर, कस्यालमन्दिर बादि स्तोत्रों का संबह है।

६२१४. गुटका सं० १७०। पत्र सं० ६९। था॰ द्र×४६ ६०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय-संग्रह । मे॰ काल ×। मपूर्ण। वे॰ सं० २२१४।

विशेष---भक्तामरस्तोत्र, रसिकप्रिया (केशव) एवं रत्नकोश हैं।

६२१४. गुटका सं० १०१। पण सं० २-६१। झा० ४६४४६ इ०। जावा-वित्यी। विषय-पर । मे० काल ×। प्रपूर्ण । वे० सं० २२१६।

विशेष--- बगतराम के पदों का संग्रह है। एक पद हरीसिंह का भी है।

६२१६. गुटका सं०१७२। यत्र सं०४१। घा० ५×४६ ६०। बाया –हिन्दी। के॰ काल ×। सपूर्ती। वै॰ सं०२२१७।

विक्षेत--बायुर्वेदिक बुसले एवं रति रहस्य है।

श्रवशिष्ट-साहित्य

६२१७. माहोस्तरीस्तात्रविधि******। पत्र तं० १ । बा० १०×५३ ६० । वाषा-संस्कृत । विषय-विधि विचान । र० काल × । ते० का० × । यूर्वा । वे० तं० २६१ । ब्रा जब्दार ।

६२१८. जम्माञ्जमीयूजन """। पत्र सं०७। सा० ११५%६ इ०। जावा-संस्कृत । विषय-यूजा । र०काल ×। ने०काल ×। ने० सं०११५७। च्याच्यार ।

६२१६. क्षुत्रसीविवाहः.....। पण ग्रं० १ । मा० ६३×४३ १० । वाषा-संस्कृत । विषय-विविधाल । ए० काल × । वे० काल सं० १८८६ । पूर्ण । जीव्हाँ । वे० सं० २२२२ । सः चच्चार ।

६२६०. वरसायुनामविधि (ताय कोस वरिताय)*****। वच तं० २ । या० ६६%१६६ ६० । जावा-क्षियो । विवय-नारमे तथा शोलने की विधि । र० कास 🗶 । वे० कात 🗶 | पूर्वी । वे० तं० २१६७ । 👊 जन्मार । **६२२१. प्रतिश्वापाठविश्विः****** । पत्र सं०२०। प्रा०८३४६ है ६०। आसा-हिन्दी। विषय-पूजा विषि । र० कास x । ते० काल x । पूर्वा। वे० सं०७७२। ऋ प्रष्कार ।

६२२२. त्रायश्चितचूलिकाटीका— निवृगुरु । पत्र सं०२४ । घा० द४४ ६० । भाषा–संस्कृत । विदय–धाचारकारका । र० काल × । के० काल × । पूर्ण । वे० सं०४२० । क मण्डार ।

विमोच—बाबादुलीचन्द ने प्रतिलिपि की थी। इसी अण्डार में एक प्रति (वै० वं० ५२६) भीर है।

६२२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल 🗴 । वे० स० ६४ । घ मण्डार ।

विशेष-टीका का नाम 'प्रायश्चित विनिश्चयवृत्ति' दिया है।

६२२४. अकिरत्नाकर—बनसाबी अष्ट । पत्र सं० १६। घा० ११६×५ ६०। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोष । र॰ काल × । ते० काल × । सपूर्श । जीर्ग । वे० सं० २२६१ । घ्य मण्डार ।

६२२४. अद्रबाहुसंहिता—अद्रबाहु। पत्र सं०१७। घा० ११५४२३ द०। आवा-संस्कृत । विवय-ज्योतिक । र०काल × । ले०काल × । सपूर्या । वे० सं० ४१। जा भण्डार ।

विकोष-इसी मण्डार में एक प्रति (वे॰ सं०१६६) ग्रीर है।

६२२६. विधि विभान''''''। पत्र सं० ७२-१४३ । ग्रा० १२४४<u>) ६० । भाषा-संस्कृत । विषय-</u> युजा विभान । र०काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वे०स० १०८३ । श्राभण । ४०।

६२२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ते० काल × । वे० म० ६६१ । क भण्डार ।

६२९८. समबदारायपूजा-पन्नाताल दूनीवाले। पत्र संग्दश प्राण् १२२४८ इण्। भाषा-हिन्दी । विषय-पूना। रण्काल संग् १६२१। लेण्काल ४ । पूर्णा। वेण्यं १७७१। इत्याप्तरा

६२२६. प्रति सं०२ । पत्र सं०४ ३ । ते० काल सं०१ २२ ६ माद्रपद शुक्रा १२ । वे० सं०७७७ । इक मण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ ७७६) ग्रीर है।

६२६०. प्रतिसं०३ । पत्र सं०७५ । ले० काल सं०१६२० मात्रवा मुद्दी ३ । वे० सं०२०० । 📺 अण्डार ।

६२३१. प्रति सं० ४। पत्र सं० १३६। ले० काल ×। वै० सं० २७=। व्या मण्डार।

६२६२. समुखवयौबीसतीथेक्करपूजा****** । पत्र सं० २ । झा० ११३/४५३ ६० । आया-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०४० । छा भण्यार ।



थन्था**नुक्र**मीरााका

¥

मन्थ नाम						
	लेखक	भाषा ६८ सं				
भक् बर बीरबल वार्ला		(हि०) ६०१	मसयदशमीक्या	लेखक		१ष्ठ सं०
अकलकुष रित्र		(हि॰ ग॰) १६०		लितकीर्त्ति	(सं∘)	FEX
धकतक्क्कचरित्र	नाथूराम	(हि॰) १६०			(सं•)	¥.\$=
धकलङ्कदेव बचा		(सं०) २१३			(सं०)	YXY
ध कल ङ्कनाटक	मक्खनसास	(हिं°) ३१६	1	×.	०६, ५३६	, 19 5 3
म कल ड्रा प्टक	भट्टाकलङ्क		मक्षय िष्युजा	शानभवस	(हि∗)	YXX
		(सं०) ५७५		नप्रतक्या —	(सं∘)	284
धकलङ्काष्ट्रक		€₹७, ६४ ६, ७१२	मक्षयनिधिमङ्ग [मंडर	[বিস]	(,	X ? X
		(सं०) ३७१	मक्षयनिधिविधान	·	(सं∘)	
मक्तकाष्ट्रक मक्तकाष्ट्रक	ासुन्त कासलीव	ाला (हि॰) ३७६	मक्षयनिधिविधानक्या		٠,,	አ ጀጸ
	_	(স্থিত) ওছত	अक्षय निधित्रतकथा	-	(सं∘)	588
धकंपना वार्यपुत्रा		(हि॰) ६८६	अक्षयविधानकथा	खुशातचन्द्	(हि०)	388
ध क्लसंदवार्ला	-	(हि॰) ३२४	बक्षरवावनी -		(सं∙)	₹8
धकुत्रिम <i>ि</i> जनचैत्यालय जय	माल —	(STO) YES		धानतराय (हि	·)	₹ ⊍ ₹
शक्तिमजिनचैत्यालय जय	माल भगवनी न	T (fire)	धनितपुरास पंडित	ाचार्यं श्रहण्यमण्	(₹∘)	143
		स (१ह०) ६६४ ७२०	वजितनावपुरारग	विजयसिंह	(भप॰)	143
बङ्गतिमचैत्यालय जयमाल			मजितशान्तिजिनस्तोत्र			988
मक्तिमचैत्यालयपूजा	Α.	go) 00x,0x\$	प्र जितशान्तिस्तवन	- 0 >	(भा°)	•
शकुषि <i>मवे</i> त्यालयंपूजा	मनरङ्गसास	(हि०) ४५४				१७६ १८१
•		(सं०) प्रश्य	भवितवातिस्तवन	/		-
अक्रुत्रिमचैत्यासय वर्शन		(हि॰) - ७६३	प्र जितशांतिस्तवन	(41		रेदर्
मक्किमजिनचैत्यालयपूजा	विनदास	(4º) XX3	मनितशोतिस्तवन			345
मकुत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	चैनपुस	(fg+) YX2	स्रवितशांतिस्तवन	मेरुनम्बन	(₹°)	454
सङ्गिमजिनवैत्यालयपूत्रा	वासजीत			_	(₽•)	***
	पंडे विनदास	44.	मजितवातिस्तवन	-	(# ·)	
Section 1	सक क्यानहास	(go) ANS	घकीर्यां वश्चरी	काशीराम	(wo)	1000
All and the same of the same of	int of the course		in the second of	3 3 4 f	****	- (1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1

स्ववास से से सा प्रष्टि सं । स्विति के से	444 J	1 4				[4	स्थानुकम ि	श्च
स्वार्धनिकारी स्वार्ध का मंदल [विच] स्वार्ध का मंदल विच] स्वार्ध का मंदल को के कथा स्वार्ध का स्वर्ध का स्व	सम्बद्धास	नेसद	भाषा प्र	सं०	प्रन्थ नाम	लेखक	भाषा प्र	8
स्वतार्व का मंद्रल [षिष] — (वं०) ४२३ सम्तलबहुर्दवीक्षण मृत्तीन्द्रकीक्षण मृत्तीन्द्रकीक्षण मृत्वस्ति स्वतार्व (वं०) ४५ स्वतार्व का स्वतार्व का स्वतार्व का स्वतार्व (वं०) ५२३ स्वतार्व का स्वतार्व का स्वतार्व (वं०) ५२३ स्वतार्व का स्वतार्व (वं०) ५२३ स्वतार्व का स्वतार्व (वं०) ५२३ स्वतार्व का स्वता		_	(सं∘)	₹€ ₹	भनन्तचतुर्दशोकया			3
स्वार्ध स स्वीरा	· ·	r) —		४२४	ध नन्तचतुर्दशीकथा	मुनीन्द्रकीचि		•
महास्ति मुख्युण वर्गन कहास्ति मुख्युण वर्गन कहास्ति मुख्युण वर्गन कहास्त्र महि क्या क्य		-	(सं∘)	XX3	ग्रनन्तचतुर्दशीकथा -	त्रः ज्ञानसागर	(हि॰)	
स्वकारह नाते की कया स्विष्ट तिहु० २२३ प्रमानवार्युर्वायुजा मानितदास तिहु० १२३,७७४ प्रमानवार्युर्वायुजा — (में०) ११४ प्रमानवार्युर्वायुजा मानितदास (में०) ११४ प्रमानवार्युजा	4	· -	(सं०)	84	धनन्तच तुर्दशीपूजा	भ० मेहचन्द	(सं∘)	1
सकारह नाते की कथा लोहट (हि॰) ६२३,७७४ सानत चतुर्वची हुना जि. हि॰) ४१४ सानत चतुर्वची हुना च. हि॰) ४१४ सानत चतुर्वचा च. हि॰) ४१४ सानत चतुर्वची हुना च. हि॰) ११४ सानत चतुर्वची हुना च. ह				२१३	धनन्तचतुर्दशीपूजा	शान्तिदास	(सं∘)	
स्वारह नाते का चौडाल्या साँडट (हि॰) ७२१ प्रत्नतावृत्तेवीपुत्रा मे सूच्या (हि॰) १२१ प्रतन्तवृत्तेवीपुत्रा — (हि॰) १२१ प्रतन्तवृत्तेवीपुत्रा — (हि॰) १२१ प्रतन्तवृत्तेवीपुत्रा स्वार्तवृत्तेवीपुत्रा — (हि॰) १२१ प्रतन्तवृत्तेवीपुत्रा स्वार्तवृत्तेवीपुत्रा स्वार्तवृत्तेवपुत्रा स्वार्तव्यत्वव्यत्वव्यत्वय्व स्वार्वेवप्त्रा स्वार्वव्या स्वार्वेवप्त्रा स्वार्वव्या स्वार्वव्या स्वार्वव्याव्यव्या स्वार्वव्याव्याव्याव्याव्या स्वार्वव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्या स्वार्वव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्	-	_		,હહ્ય	धनन्तचतुर्वशीरूजा	- (सं०) ५५	3
प्रशास नाते का चौदाल्या — (हि॰) ५२२ धनल्य लहुर्रवीय त्रवण्या व प्रशास हुराज यन्य (हि॰) धन्य धनल्य लहुर्रवीय त्रवण्या व प्रशास हुराज यन्य (हि॰) धन्य धनल्य लहुर्रवीय त्रवण्या व प्रशास हुराज यन्य (हि॰) धन्य धनल्य वार्य वाय प्रशास विश्व हिन्द हुराज यन्य (हि॰) धन्य धनल्य हुराज यन्य (हि॰) धन्य धनल्य धन्य धन्य प्रशास विश्व हुराज यन्य धन्य प्रशास विश्व हुराज यन्य धन्य प्रशास वन्य धन्य धन्य प्रशास वन्य धन्य प्रशास वन्य धन्य प्रशास वन्य (हि॰) धन्य धनल्य धन्य धन्य प्रशास वन्य धन्य प्रशास वन्य (हि॰) धन्य धनल्य धन्य धन्य प्रशास वन्य (हि॰) धन्य धनल्य धन्य धन्य प्रशास वन्य (हि॰) धनल्य वन्य धन्य धन्य प्रशास वन्य (हि॰) धनल्य वन्य धन्य धन्य प्रशास वन्य (हि॰) धनल्य वन्य वन्य वन्य वन्य वन्य वन्य (हि॰) धनल्य वन्य वन्य वन्य वन्य (हि॰) धनल्य वन्य वन्य वन्य वन्य वन्य वन्य वन्य वन					धनन्तचतुर्दशीपूजा	श्री भूषग	(हि∘)	
स्कारह नात का स्थीरा — (हि॰) ६२३ वनल वनुर्देवीवतक्या सिंद क्रिक प्राप्त क्रिक्त क्षित क्षित (वं॰) विकास क्षित क्ष					अ नन्तचतुर्दशीपूजा		(सं∘हि∍)
स्वासीचमुषपुष्णास प्रश्निवास (हि॰) ७०० प्रमानावपुरा पाँडे हरिकृष्ण (हि॰) स्वासादिवास्त्र प्राप्त के स्वयम प्रमान्त्र (हि॰) स्वासादिवास्त्र प्राप्त कार्यक्र कार्यक्र कार्यक्र कार्यक्र कार्यक्र (हि॰) स्वयम्त कार्यक्र कार्यक	बदारह नाते का चौड	ाल्या	(हि॰)	७४५	भनन्तचतुर्वशीवतक या	व पूजा खुशाल	बन्द (हि०)	•
स्कोतरासमान्विषि — (हि॰) १६० सम्मान्त के स्वयय धर्म चन्न्र (हि॰) स्वार्म [वार्य ह्या डोण्युना सुमन्त्र (तं॰) ४४१ सम्मान्त्र वार्य डाण्युमा (हि॰) ४४१ सम्मान्त्र वार्य डाण्युमा (हि॰) ४४१ सम्मान्त्र वार्य डाण्युमा (हि॰) ४४१ सम्मान्त्र इस्त्र इस्त्र स्वार्म (हि॰) ४४१ सम्मान्त्र इस्त्र हिण्ड १६० १६० सम्मान्त्र इस्त्र हिण्ड १६० १६० सम्मान्त्र इस्त्र हिण्ड १६० १६० सम्मान्त्र हिण्ड इस्त्र हिण्ड	श्रठारह नाते का व्यौर	-	(हिं∘)	६२३	धनन्तचतुर्दशीवतकथा	सस्तितकीर्त्त	(सं∘)	
स्वतार्द [बार्ब हथ] डोपगुजा शुअपनन्द (सं०) ४४४ पत्रतातितपूजा सुरेन्द्रकृषि (सं०) ४४६ पत्रतातिपूजा — (हि॰) ४४८ पत्रतातिपूजा — (हि॰) ४४८ पत्रतातिपूजा — (हि॰) ४४८ पत्रतातिपूजा मुख्या (सं०) ४४६ प्रयानातापूजा सेवा (हि॰) ४४८ पत्रतातापूजा की भूषण (सं०) १४६ प्रयानातापूजा सेवा (हि॰) ४८२ पत्रतातापूजा सेवा (हि॰) ४८२ पत्रतातापूजा मन्ततापूजा — (सं०) ४८२ पत्रतातापूजा — (सं०) ४८२ पत्रतातापूजा — (हि॰) ४८२ पत्रतातापूजा — (हि॰) ६८० प्रयानातापूजा — (हि॰) प्रयानातापूजा — (हि॰) ६८० प्रयानातापूजा — (हि॰) ६८० प्रयानातापूजा — (हि॰) प्रयानातापुजा — (हि॰) प्रयानापुजापुजापुजापुजापुजापुजापुजापुजापुजापुज	वाठाबीसमूलपुरास	त्र० जिनदास	(हि∘)	000	ब्रनन्तचतुर्दशीवतक या	पांडे हरिकुष्ण	(हि॰)	
सहार्द्विप पूजा हाल्ट्राम (हि॰) ४४४ सम्मानायुराए ग्राग्रस्था (हि॰) ४४० सम्मानायुराए ग्राग्रस्था (हि॰) ४४० सम्मानायुराए ग्राग्रस्था (हि॰) ४४० सम्मानायुराए ग्राग्रस्था (हि॰) ४४० सम्मानायुरा सेवा (हि॰) ६४० सम्मानायुरा सेवा (हि॰) ६४० सम्मानायुरा (हि॰)	श ठोत्तरासनायविधि		(हि॰)	६१८	ध्रनन्त के छप्यय	धर्मचन्द्र	(हि∘)	
सहार्द्वीच दुवा — हि॰) ७३० सानतानापुराए गुग्नुअद्रावार्थ (सं॰) सहार्द्वीचसर्थन — (४० हे१६ स्वरूप्ट सम्बाल (स्व०) २१३ स्वरूप्ट सम्बाल (स्व०) २१३ सम्वतानापुरा सेवना (हि॰) स्वरूप्ट सम्बाल (स्व०) १२३ सम्वतानापुरा सेवना (हि॰) स्वरूप्ट सम्बाल (स्व०) १२३ सम्वतानापुरा — (स्व०) १२३ सम्वतानापुरा — (हि॰) १२६ सम्वतानापुरा — (हि॰) १२६ सम्वतानापुरा — (हि॰) १६६ सम्बल्ध मोत — (हि॰) १६६ सम्बल्ध स्वाव सेवना — (हि॰) १२६ सम्बल्ध स्वाव सेवना सम्बल्ध स्वव संव० हि॰) सम्बल्ध सम्बल्ध स्वव संव० १६० सम्बल्ध सम्बल्ध स्वव संव० १६० सम्बल्ध सम्बल्ध स्वव संव० १६० सम्बल्ध सम्बल्ध स्वव स्वव स्वव स्वव स्वव स्वव स्वव स्	बढाई [सार्ख इय] डी	प्रजा शुभचन्द्र	(सं∘)	४११	धनन्तजिनपूजा	सुरेन्द्रकीत्ति	(सं≀)	
सहार्द्धाप्यस्तितं च (६०) ११६ प्रतन्ततामपुता से प्रयुत्ध ६०) १४६ प्रतन्ततामपुता सेवता (हि०) ६५० ६५० प्रतन्ततामपुता सेवता (हि०) ६५० प्रतन्ततामपुता सेवता (हि०) ६५० प्रतन्ततामपुता — (हि०) प्रतन्ततामपुता — (हि०) प्रतन्ततामपुता — (हि०) ६५० प्रतन्ततामपुता — (हि०) प्रतन्ततामपुता — (हि०) ६५० प्रतन्ततामपुता — (हि०) प्रतन्ततामपुता — (हि०) ६५० प्रतन्ततामपुतामपुता — (हि०) ६५० प्रतन्ततामपुता — (हि०) ६५० प्रतन्ततामपुता — (हि०) ६५० प्रतन्ततामपुतामपुता — (हि०) ६५० प्रतन्ततामपुतामपुता — (हि०) ६५० प्रतन्ततामपुतामपुता — (हि०) ६५० प्रतन्ततामपुतामपुतामपुतामपुतामपुतामपुतामपुतामप	बढाईद्वीप पूजा	डाल्राम	(हि॰)	**	धनन्तजिनपूजा		(हि॰)	
स्वादिविष्वर्शन — (६०) १११ प्रतन्तनायपुता से प्रमुख्य ६०) प्रश् प्रमुख्यामितिविषि इस्तिम्रज्ञ समयास (४४०) २११ प्रमुख्यामितिविषि इस्तिम्रज्ञ समयास (४४०) २११ प्रमुख्यामितिविषि इस्तिम्रज्ञ समयास (४४०) २११ प्रमुख्यामितिविषि इस्तिम्रज्ञ प्रमुख्यामितिविषि २१ प्रमुख्यामितिविष् (१६०) १६० प्रमुख्यामिति — (१६०) १६० प्रमुख्यामिति — (१६०) १६० प्रमुख्यामितिविष् सीमित्विष (४०) १११ प्रमुख्यामितिविष्यामित्विष् (४०) १११ प्रमुख्यामितिविष्यामित्विष्याम् स्थापम् स्थापम	सकाईद्वीप पूजा		(हि०)	950	धनन्तनाथपुराए।	गुणभद्राचार्य	(सं∘)	
स्वाविविविविवि इरिज्ञान्द्र समयाक (स२०) २४३ वानत्तातावृता सेवता (हि॰) व्यक्त का मंडल [चित्र] ५२६ वात्तित्तावपूता – (हि॰) ६५० वात्तित्त्तावपूता – (हि॰) वात्तित्त्त्तावपूता – (हि॰) वात्तित्त्त्तावपूता – (हि॰) वात्तित्त्त्त्वावप्तावप्ताव्या – (हि॰) वात्तित्त्त्वावव्या – (हि॰) वात्तित्त्त्वावव्याव्यावव्याव्यावव्याव्यावव्याव	ब ढाईद्वीपवर्शन		(+0)	39#	प्रतन्तनाथ ्रजा			
\$ १२८, ६४२ यमल्यताचपूर्वा	ध्यायमितिसंधि	हरिखन्द्र अप्रवा	स्र (भग०)	२४३	मनन्तनायपू जा			
स्वति का मंडल [विन] (हि॰) ४.१३ सहावतागर — (हि॰) १.६६ सहावतागर — (हि॰) १.६६ सहावतागर — (हि॰) १.६६ सहावतागर — (हि॰) १.६६ सम्मावतागर च (हि॰) १.६६ सम्मावतागर च कि राजसङ्ग (हि॰) १.६६ सम्मावताग्वता मार्च (हि॰) १.६६ सम्मावताग्वताग्वताम्य — (हि॰) सम्मावताग्वताम्य — (हि॰) सम्मावताग्वतम्य — (हि॰) सम्मावत्वतम्य — (हि॰) सम्मावताग्वतम्य — (हि॰)			\$?=	, ६४२	1		(#o)	
. प्रस्तुवतकागर — (हि॰) २६६ पानतपुरा — (सं॰) प्रमाधनन गीत — (हि॰) ६६० पानतपुरा — (सं॰) प्रमाधननमतनार्थेष कवि राजसङ्ग (सं॰) १२६ पानतपुरा — (सं॰) प्रमाधनवर्षकृषी सोमदेव (सं॰) १६६ पानतपुरा — (प्रप॰) प्रमाधनवर्षकृषी सोमदेव (सं॰) १६६ पानतपुरा — (सं॰) प्रमाधनवर्षकृषी क्षानद्व (हि॰) ७४६ पानतपुरा अस्ति।श्व (सं॰) प्रमाधनवर्ष जवन्यन् ज्ञावहा (हि॰) १६६ पानतपुरा अस्ति।श्व (सं॰) प्रमाधनवर्ष वनारसीदास (हि॰) १६६ पानतपुरा पानतपुरा स्वावदा (सं॰) प्रमाधनवर्षकृष कवि सुरत (हि॰) १६६ पानतपुरा — (सं॰) प्रमाधनवर्षकृष कवि सुरत (हि॰) १६६ पानतपुराका — (सं॰)	द्धरतका मंडल [चि	[ब]		५२५	धनन्तनाथपूजा	त्र> शाग्तिदास	(हिo) ६ ६	٠,
. मुसुबतागर — (हि॰) २६६ प्रमत्यपुत्रा — (शं०) प्रमत्यपुत्रा वित्र — (हि॰) ६६० प्रमत्यपुत्रा वित्र — (हि॰) ६६० प्रमत्यपुत्रा वित्र व	श्चतिशयक्षेत्रपू जा		(हि॰)	** \$	धनन्तनाथपुत्रः।	-	(हि∘)	•
प्रभावन गीत — (ष्टि॰) ६=० धनन्तपुतावतमहास्य — (४०) प्रभावन गीत — (षि॰) १२६ प्रमादनकात्रित्तृत्वी सोमदेव (पै॰) १२६ प्रमादनकात्रित्तृत्वी सोमदेव (पै॰) ११६ प्रमादमकात्रित्तृत्वी सोमदेव (पै॰) ११६ प्रमादमकात्रित्तृत्वी स्वन्तित्वी (पि॰) ११६ प्रमादमकात्रित्ती वनारकीदास (ष्टि॰) ११६ प्रमादमकात्रित्ती वनारकीदास (ष्टि॰) ११६ प्रमादमकात्रित्ती किस्सुरत (ष्टि॰) ११६ प्रमादमकात्रव्वाच प० भ्राह्माधर (सै॰) १४६ प्रमादमकात्रव्वाच (प० भ्राह्माधर (सै॰) १४६ प्रमादमकात्रव्वाच (प० भ्राह्माधर (सै॰) १४६	्रभ्द्रभुतसागर		(हि॰)	२६६	1 "	_		
- प्राचासम्बन्धनार्थण कि राजमञ्ज (वं०) १२६ मनन्वविधानकथा — (प्रव०) - प्राचासमदर्शकुषी सोमदेव (वं०) ११६ मनन्ववतकथा अ० पद्मानीर्द् (वं०) - प्राचासमयेक् प्रवचन्द्र (वि०) ७४६ मनन्ववतकथा अतसागर (वं०) - प्राचासमयेक प्रवचन्द्र (वि०) ११६ मनन्ववतकथा अतिवाक्षीत्त्र (वं०) - प्राचासमयेक प्रवचन्द्र (वि०) ११६ मनन्ववतकथा सद्भक्षीत्त्र (वं०) - प्राचासम्बन्धने कि सुर्त (वि०) ११६ मनन्ववतकथा मद्भक्षीत्त्र (वं०) - प्राचारमर्थापृत्व प्रवच्यासम्बन्धने कि सुर्त (वि०) ११६ मनन्ववतकथा मद्भक्षीत्त्र (वं०) - प्राचारमर्थापृत्व प्रवच्यासम्बन्धने प्रवच्यासम्बन्धने प्रवच्यासम्बन्धने प्रवच्यासम्बन्धने स्वत्यत्वतकथा — (वं०)	अध्ययन गीत	-	(हि॰)	६६०	1 "			
. प्रभास्त्रवरिक्कणी सोमदेव (वं॰) ६६ प्रनन्तवरुक्कण भ० पञ्चमिन्द् (वं॰) प्रभास्त्रवर्ग प्रमाद्रवर्ग प्रवर्ग (वि॰) ७४६ प्रनन्तवरुक्कण भ्रुतसागर (वं॰) प्रभास्त्रवर्ग ज्ञवस्य हावड़ा (वि॰) ६६ प्रनन्तवरुक्कण लिजिक्किक्ति (वं॰) प्रभास्त्रवर्गी बनारसीयास (वि॰) ६६ प्रनन्तवरुक्कण मदनकीति (वं॰) प्रभास्त्रवर्गिक प्रभास्त्रवर्ग किस्सूर्त (वि॰) ६६ प्रनन्तवरुक्कण — (वं॰) प्रमाप्तर्गाप्त्रवर्गिक प्रभास्त्रवर्ग प्रभास्त्रवर्ग — (वं॰)	. बाध्यात्मकमसमार्सण्ड	कवि राजसङ्ख	(सं०)	१२६	1			
प्रमाप्तरविहा हरवन्त् (हि॰) ७४६ धनत्ववतन्त्रा श्रुतसागर (सं॰) प्रमाप्तरवत्र प्रमाप्तरवत्र प्रमाप्तरवत्र प्रमाप्तरवत्र प्रमाप्तरवत्र प्रमाप्तरवत्र प्रमाप्तरवत्र प्रमाप्तरवत्र प्रमाप्तरविद्या (हि॰) ६६ धनत्ववतन्त्र प्रमाप्तरविद्या प्रमापति प्र	. अध्यात्मतरिक्षणी	सोमदेव	(सं०)	33	धनन्तवतकथा	भ० पद्मानन्दि		
प्रधारमयत्र जयसन् झांबद्दा (हि॰) १२ यानलवतकया स्रोक्षेत्रकीत्रि (सं॰) अध्यारमवत्तीती बनारसीदास (हि॰) १२ यानलवतकया मदनकीत्रि (सं॰) ध्रम्यारमवादकक्षी क्रिये सूरत (हि॰) १२ यानलवतकया — (सं॰) यानलवतकया — (सं॰) यानलवतकया — (सं॰)		रू पचन्द	(龍。)	98£	धनन्तव तकथा	-		
भ्रम्यारमबन्धिती बनारसीदास (दि॰) ६१ धनन्तवतकथा मदनकीत्ति (तं॰) धम्यारमबारद्ववदी कविसूरत (दि॰) ६१ धनन्तवतकवा — (हं॰) धममारपर्वाद्व पं॰ भ्राहाधर (हं॰) ४० धमनववतकवा — (धप॰)	श्रम्यस्मपत्र	जयसम्द छ।बहा	(हि∘)	33	धनन्तव्रतकथा			
धम्भारमबारद्ववद्यो कवि सुरत (वि॰) ६१ धननवदकका — (वः॰) धननवरकांद्रव पं॰ धाराधर (वं॰) ४० धननवदकका — (धर॰)	प्रथ्यारमबद् यसी	बनारसीदास	(寝。)	3.3	धनन्तवसक्या			
मनगरमगीमृत प ः भाशाधर (संः) ४८ धनन्तप्रतस्त्रा — (सरः)	श ब्दारमबारहसङ्ग	कवि सरत	(हि॰)	33	धनन्तवतकवा	_		
1000	धनगारधर्मामृत	-	(₹6)	¥s	धनन्तप्रतक्षा			
			(₹∘)	202	प्रकल्पन्न स्था	खुशाल चन्द	(हिं°)	

वन्थ माम	तेल इ	भाषा प्र	ष्ट्र सं०	प्रन्थ नाम	तेशक	भाषा पृष्ठ	सं०
बनन्तवत्रुगा	न्नी भूषण	(4,∘)	**	श नेकार्थम अ री	नन्द्दास	(हि॰) २७१	1965
धनन्तवतपूजा	_	(4.0)	**	धनेकार्यशत	भ० हर्षकीत्ति	(eĦ)	908
	¥	₹ ₹ , ₹ ₹3	, ७२=	भनेकार्य सं ग्रह	द्वेमचन्द्राचार्य	(सं॰)	२७१
बनन्तवतपूजा 🐃	य० विजयकीसि	(Bo)	4% O	धनेकार्थसंग्रह [महोः	कोश] —	(सं०)	१७१
धनन्तवतपूजा	साह सेवगराम	(हि∘)	¥ሂo	प्रन्तरायवर्शन	_	(हि॰)	X Çu
धनन्तव्रतपूजा	-	(हि॰)	४१८	ध न्तरिक्षपादर्वनाथाष्ट्र	क	(€0)	460
	4	११६, ५८६	, ७२८	भ्रत्ययोगव्यवच्छेदकद्व	विशिका हेमचन्द्र	गचार्य (सं∘)	१७३
धनन्तवत्र आविषि	_	(सं०)	410	धन्यस्फुट पाठ संबह	_	(हि॰)	4 ? 9
श्र नन्तव्रतविषान	मदनकीत्ति	(₹•)	२१४	श्रपराषसूदनस्तोत्र	शङ्कराचार्य	(#i#)	468
भनन्तवतरास	म ० जिनदास	(हि∘)	४६०	<i>शव उदकेव</i> ली	-	(4,0)	305
धनन्तवतोद्यापनपूजा	बा॰ गुण्यन्द्र	(सं∙)	*10	भभिज्ञान बाकुन्तन	काविदास	(₹•)	725
	×	१३, ५३६	, XY•	द्मनिषानकोख	पुरुषोश्तमदे व	(सं॰	२७१
ध नाग।रभक्ति		(सं∘)	६२७	धनिधानविताम शिन	ानमाना हेमच न्	(ाचार्य (सं•)	२७१
धनायी ऋषि स्वाध्याय	- (हि० गुत्र०)	305	ग्र िमधानरत्भाकर	धर्मचन्द्रगणि	(सं०।	२७२
बनायानो बोढा ल्या	खेम	(ॡ∘)	४३५	ग्रमिधानसार	पं॰ शिवजीसात	(सं∙)	797
धनायीसाथ मौडालिय	ा विमलविनयगरि	म (हि०)	% 50	विभिषेक पाठ		(₹•)	¥X.
धनाषीमुनि सज्काय	समबसुन्दर	(हि॰)	48 =	!		444 ,	6 €₹.
मनाचीमुनि सञ्काय		(हि॰)	¥\$¥	व्यभियेकविधि	स दमीसेन	(eie)	¥\$=
धनादिनिधनस्तोत्र	(सं	o) \$98	¥0¥,	ग्रभिषेकविधि		(tio)	164
र्धानटकारिका	_	(सं•)	२५७			¥۲,	¥ De
वनिटकारिकावपूरि		(सं∘)	820	धभिषेकविधि		(हि•)	Y
श नित्यपश्चीसी	भगवतीदास	(€ 0)	846	श्रमरकोश	षमरसिंह	(सं•)	२७२
धनित्पश्चासिका	त्रिमुबनषन्द्र	(हि∘)	UXX	सगरकोशटीका	भानुजी दीवि	त (सं०)	şuş
सनुभग्यकाच दीप	चन्द्र काससीबास	r (fg.)	¥s	समरव िद्रका		(fg+)	100
धनुभवविसाध	-	(fg.)	488	धगरूशतक		(₩•)	150
ध षुश्रवासन्द	-	(feo 40)	Ye	समृतवर्ग रसकाव्य	गुस्यनद्रदेव	(₫•)	100
सनेकार्यच्यानिम श री	महीकृषस्यकृति	(सं∙)	१७१	धमृतसागर स०।	सवाई प्रवादसिंह	(fige)	70.1
ध्रमेकार्यव्यक्तिसङ्ग री	****	(∉•)	२७१	घरहुना सज्जाय	समबसुम्बर	⟨fg∘).	3.84
धनेकार्यं नायगासा	श्रीवद्यवि	(fg•)	340	बरहमस्यवन	4.4	(40)	. was

(हि॰) २२**॰**

(हि०) २४७ ७२७

(rio) 224

लेख ह भाषा पृष्ठ सं० परिप्रवर्ता (Ho) 708 वरिष्टाप्याय (সা০) ४५६ महिद्वात केवलीपावा (₹io) 309 **धर्य**दीपिका जिनभदगसि (সা॰) धर्यप्रकाश लङ्कानाथ (सं०) २१६ अर्थंप्रकाशिका सदासुख कासलीवाल (हि॰ ग०) धर्षशर टिप्परा (€°) 20 **प्र**हंत्प्रवचन (संo) 1 बहिहरप्रवचन व्याख्या (#i o) **बर्हनक्कीटालिया**गीत विसत्तविनय[विनयरंग](हि॰) ४३५ महंद्भक्तिविधान (सं०) ५७४,६५६ **श्रवक्ट्रा**रटीका (₹०) 305 बलक्काररत्नाकर दलपतिराच वंशीधर (हि०) ३०६ धलक्कारवृत्ति जिनवद्ध न सरि (eio) ३०६ (सं०) मल कारधास्त्र ₹05 श्रवंति पार्यनाथजिनस्तवन हर्षसरि (f€∘) 30€ भन्ययप्रकरण (सं∘) २४७ श्चययार्थ (io) 240 **धवानस**मितिस्वस र (সা৽) ४७२ यशोकरोहिए) कथा श्रवसागर (io) 784 **प्रशोक**रोहिएशिवतकथा ्हि० ग०) २१६ ग्रम्बद्धारा ५० नकुल (feo) 1948 ग्रश्वपरीक्षा (सं०) ७५६ **धषाढ**एकादशोमहात्स्व (सं०) २१५ सष्टक [पूजा] नेमिद्त्त (सं०) ५६० प्रष्टक [पूजा] — (हি**०) ধ্**६०, ७०१ भष्टाह्निकावतकया त्रः ज्ञानसागर मष्टकर्म प्रकृतिवर्शन (सं∘) **भष्टा**ह्मिकात्रतकथा बहुपहुड (NI.) **प्र**शिक्षकात्रवपूजा (हि॰ ग॰) ६६ म्हाल्लिकात्रतोबापनपूजा २० शुभवन्द (हि॰) ४६१ बहुपाहुडभाषा जयचन्द् छ।बहा

संखक भाषा प्रष्ट सं० ग्रन्थ नाम देवचन्द (চি০) ৬৪০ **ध**ष्टप्रकारीपूजा मष्ट्रशती [देवागम स्तोत्र टीका] श्रकलकूदेव (सं०) १२६ (सं०) १२६ घष्टमहन्त्री 🖚 म्राः विद्यानन्दि **प्र**ष्टागसम्यग्दर्शनक्या (सं०) २१% सक्तकीशि पं॰ मेधाबी (सं०) २१५ भ्रष्टागोपास्थान ···· (सं०) १६१ **ध्रष्टादश्**सहस्रशीलभेद यशःकीचि (संत) ६४५ **प्र**ष्टाह्निकाकथा (मं०) २१५ ध्रष्टाह्निकाकया शुभवन्द **प्र**शिक्षिकाकथा नः ज्ञानसागर (हo) ७४० ब्रष्टुःह्यिकाकया नथमल (हि॰) २१५ ब्रष्टाह्निका कौमुदी मं०) २१५ **प्र**पृक्तिकागीत भ० शुभचन्द्र ्हिः) ६८६ ब्रष्टाह्मिका जयनाल (#o) 846 प्रष्टाह्मिका जयमाज अ४४ (धार **घष्टा**ह्मिकापू ना 140) YXE, ५७०, ५६६, ६४८, ७८४ **श्र**ष्टाह्मिकापूजा चानतराय (हि०) ४६०, ७०५ **ब**ष्टाह्मिकापूजा (हि॰) ४६१ **ब्रष्टाह्मिकापूजा**कथा **प्ररे**न्द्रकीति (#o) YE. श्रष्टाह्मिकाभक्ति (सं०) ४९४ **प्र**ष्टाह्मिकायतकथा विनयकीत्ति (हo) ६१४ 950, 9EX ब्रष्टाह्मिकावतकथा (सं०) २१४ मष्टाह्मिकावतकयासंबह गुणचन्दसूरि (सं०) २१६ मप्टाह्मिनामतकथा लालचंद विनोदीलाल (हि॰) ६२२

-						•	
प्रम्थनाम	लेखक		पृष्ठ सं०	मन्थनाम	लेखक	भाषा प्र	ष्ट सं
अष्टा ह्मिकावतोचापन		(सं •)		। स्रातमशिक्षा	प्रसम्बद्ध	(हि∘)	, 5
पष्टाह्मिकावतोदापन संस्थान		(हि∗)	४६१	धातमशिक्षा	राजसमुद्र	(हि॰)	456
मंकुरारोप ग् विधि	पं॰ श्राशाधर	(सं०)	ΑXś	प्रातमशिक्षा	राजरा छ त्र मालम	(हि॰)	471 4 71
बंकुरारोपस् विधि		,.	४१७	भा तुरप्रत्यास्यानप्रकी		(°°°) (°गर)	454
	इन्द्रसन्दि	(सं०)	¥Κź	पात्मध्यान	वनारसीदास	(तर•) (हि•)	10
मंकुरारो ग्लाविधि	_	(4,0)	8¥3	धात्मनिन्दास्तवन	रबाकर	(ग्रु॰) (सं∘)	3=
मंकुरारोपग्रामंडलवि -	স		५२४	बारमप्रबोध	क्रमार कवि	(सं∘)	200
शक्त नचारकथा		(हि०)	२१५	धात्मसंबोध जयमाल		(हि॰)	१०१
श्रञ्जनाको रास	धर्मभूषण	(हि॰)	४६३	धारमसंबोधन	वाननराय	(हि॰) (हि॰)	923
प्रज नार!म	शांतिकुशल	(हि०)	350	भारमसंबोधनकाश्य		(सं०)	₹0¢
	খ্যা			श्रात्मसंबोधन हाव्य		(सर ः)	200
FT1F	• •			बात्मानुशासन	गुणभद्राचाये	(सं∘)	100
माकाशपश्चमीकथा	ल जिनकी चि	(4;∘)	₹¥¥	म्रान्नानुशासनटीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(ゼゥ)	१०१
माकाशप द्य माकया	मद्नकीर्त्ति	(मं०)	२४७	भात्मानुशासनभाषा	पं ॰ टोडरमल	(हि॰ ग॰)	₹##
मानाशप ञ्च मीकथा		(सं०)	२१६	म्रात्मावलोकन दीपः			
माकाशपञ्चमीक्या	स्तुशाक्षचन्द	(f₹•)	२४४	भात्रेयवैद्यक	ग्यः कासलावाल स्रात्रेय ऋषि		200
मकाश र≋ मीकथा	पांडे हरिकृष्स	.हि०)	430	धा दिजिनवरस्तृति	नात्रय ऋषि कसलकीर्त्ति	(सं∘) ङ-ः\	256
प्राकाशपञ्चमीवतकथा	श्रुतसागर	(#o)	284	मादिन्यवारकथा	- क्लंबकश्च	हि॰) (ने)	¥\$€
मागम परीक्ष्म		(सं∘)	322	मादित्यवारक्या	गंगाराम	(₫∘)	488
नागमविलास	द्यानतराय	(feo)	¥£	मादित्यवारकथा	गगाराम ३० ज्ञानसागर	(हि∙)	७६४
रागामी त्रेसठशमाका	पुरुष वर्णन	(हि॰)	१४२	मादित्यवारकथा	मण्डानसागर भाऊकवि	(हि∘)	२२०
संचारसार	बीरनन्दि	(vi)	38			(हि∘)	488
गवारसार ।	कालाल चौधरी	(हि॰)	38	मादित्यवारकवा	¥, ७२३, ७४०,		
ाचारांगसूत्र	_	(মা ৹)	2	मादित्यवारकथा	त्र० रायमञ्ज	(हि•`)	945
। चार्यभक्ति	-	(ño)'	633		वादीचन्द्र	(हि॰)	50 0
ाचार्यभक्ति पृष्ट	।।सास चौधरी	(fg•)	880	मादित्यवारक याभाषा		सक्तकीर्व	1
। वायों का श्यौरा		(ख॰) (हि॰)	300		सुरेन्द्रकीर् <u>चि</u>	(सं० हि॰)	904
। दक्ती डिम्रु सिपूजा	विश्वभूषस्	(4ja)		भादित्यवारकया		(हि॰)	Ę ą:
	प राक् रसारं	. ,	865		६७६, ७१३,	७१४, ७१६	, 19 81
	र् चक्ष मावद	(₹•)	357	माबित्यवारपूजा	****	(康 v)	451

27	्र मन्धनाम	~_	_				•	• • •
16.5		लेख	क भाषा	पृष्ठ सं०	प्रन्थनाम	लेख	क भाषा	रुष्ठ सं॰
1.3	्री श्रादित्यवतपूजा ————————————————————————————————————	_	(स०)	४६१	श्रादीश्वार का समय	ासरम्	- (हि॰)	४६६
, k	बा दित्यवारवतोद	गपन	(सं∘)	ሂሄ፥	श्रादीश्वरस्तवन	जितचन्		
1, 1,	भादित्यव्रतक्या	खुश।लचन्द	• • • •	७३१	ग्रादीश्वरवि व्यक्ति		(हि॰)	¥\$0
٧.	भादित्यवतपूजा	केशवसेन	(सं∙)	४६१	भाद्रकुमारधमाल	कनकसोस		
	भा दित्यत्रतोद्यापन		(₹;•)	280	ग्राध्यात्मिकगाथा	भगकाम भ० तदमीचन	(()	६१७
	बा दिनायकल्याग्।	क्या ब्र० ज्ञानसार	ार (हि॰)	909	मानन्दलहरीस्तोत्र	भण लद्भाचन शङ्कराचार्य	• • • •	
	भादिनाय गीत	मुनि हेमसिद्ध	(हि॰)	४३६	मानन्दस्तवन मानन्दस्तवन	राङ्कराचाय	(শ•)	६०८
100	बा दिनायपूजा	मनहरदेव	(हि॰)	488	श्रासपरीक्षा	-2	(सं∙)	४१४
	मादिनाथपूजा	रामचन्द्र	(हि०) ४६१			विद्यानन्दि	(सं∘)	3€\$
	सादिनायपूजा	त्र॰ शांतिदास		હૃદય	1	समन्तभद्राचार्थ	(सं∘)	4 ₹ 0
	बादिनायपूजा	सेवगराम	(हि॰)	FOY	मासमीमांसाभाषा	जयचन्द् छात्र	इा (हि०)	१३०
	प्रादिनामपू जा	_	(हि॰)	845	मासमीमांसालकृति	विद्यान हिंद	(म०)	१३०
	बादिनाय की विन	ती	(हि॰) ७७४		श्रामनीबूका भगड़ा		(हि॰)	६६३
	भादिनाय विनता	कनककीर्त्त	(हि॰)		भामेर के राजामीका		ण — (हि॰)	७५६
	म्रा दिनाथसज्काय			७२२	श्रामेर के राजाग्रोकी	वंशावलि —	(igo)	320
	बादिनायस्तवन	कवि पल्ह		¥3 €	भ्रायुर्वेदिक ग्रन्थ		(सं०) २६७,	७६३
	मा दिनायस्तोत्र	समयसुन्दर			भ्रायुर्वेदिक नु सम्बे		(सं०) २६७,	
	सादिनायाष्ट्रक			६१६	मायुर्वेदिक नुसले		(हि॰)	
	मा दिपुरासा	जिनसेनाचार्य	(ग्हे॰) (ग्हे॰)	४६४	६६७, ६७७, ६६	343 .		
	बाविपुरास				७१८, ७१६, ७२	3 1930 1036	-5, 654, 6	₹¥,
	माबिपुरास		भप∙) १४३ । (હદેહ, હદ્દ	1, 010, 014,	७२०, ७६१, ७	ξĘ, .
	भादिपुरास टिप्पस			۱ ۲۷۲	प्रायुर्वेद नुसस्तो का संद	17	<i>(</i> * ,	
	भादिपुरासा विनती	प्रभाचन्द्		1 EX	गयुर्वेदमहोदधि			ęξ
	श्रादीश्वर बारती	गङ्गादास			गरती	सुखदेव		<i>e</i> 9
	मादीश्वरगीत -		(हિ•) પ્ર	88 B	गरती			₹¥
	मादी भर के १० मव	रङ्गविजय		७६ म	ारती	चानतराय (हि०) ६२१, ६	१२
	यादीश्वरपूजाष्ट्रक स	गुग्चन्द		F 5	रती	दीपचन्द	(हि॰) <i>৬৬</i>	16
	मादीश्वरकाय -		(हि॰) ४ १	: - 1	रती	मानसिंह	(ট্টি৽) ৬৬	19
		क्रानभूषग	(हि॰) ३६	. 1	_	लालचन्द	(हिं०) ६२	₹ ,
	प्रादीभाररेस ता	सहस्रक्षीर्श्त	(हिं•) ६a:		-	विहारीदास	(fē) 60.	3
			•			शुभवन्द	(唐·) 1955	
:	F							

ų,

	अन्तायुक्तवाद्याच्य	1							
	प्रस्थनाम	तेतक	भाषा पृष्ठ	सं०	प्रन्थनाम	तेखक	भाषा पृष्ठ		
		पं० चिमना	(fg°)	130	म्राश्रव वर्शन		(ह•)	₹	
	भारती सरस्वती	व्र जिनदास		3=6	द्माषाढमूति चौढालिया	कनकसोम		६१७	
	ब्रास्ती संग्रह	ब ः जिनदास	(हि∘)	3=8	झाहार के ४६ दोपवर्णन	भैया भगवती	दास (हि॰)	X.	
	मारती संग्रह	धानतराय		000		इ			
	भारती सिंडों की	खुशालचन्द	(हि•)	000	इक्कीसठाए।वर्षा	सिद्धसेन सूरि	(গাদ)	4	
	श्राराधना		(vik)	¥32	इन्द्रजाल		(हि॰)	₹४७	
	घाराधना		(हि॰)	350	इन्द्रध्यजपूजा	विश्वभूषस्	(सं∙)	४६२	
	धाराधना क्या कोश		(#o)	२१६	इन्द्रध्यजमण्डलपुजा	_	(4 °)	४६२	
	बाराधना प्रतिबोधसा	र विभन्नेन्दकी सि	(fg o)	६४८	इष्टब्रसीसी	बुधजन	(हि ०)	६ १	
	श्चाराधना प्रतिबोधसा		(fgo)	Ęĸĸ	इष्ट्रथलीसी		(हि॰) ७६ ०	F70	
	श्राराधना प्रतिबोधसा		(हि॰)	७६२	इ श्लोपदेश	वृक्यपाद	(सं∘)	\$ ≂o	
	माराधना विधान	_	(₹o)	843		पं॰ व्याशाधर	(सं∘)	1 <0	
		 देवसेन	(नः) (प्रा॰)	38	इष्टोपदेशमापा		(हि॰)	७ሂሂ	
	भाराधनासार	-		_	इष्ट्रोपदेशभाषा		(हि॰ गद्य)	\$co.	
		l, ६२८, ६३४, ७०		७१७	1	ई			
	भाराधनासार	जिनदास	(ફe∙)		र्यभरवाद		(सं०)	141	
	शाराधनासारप्रवन्ध	प्रभाषन्द	(#i*)	₹\$	Į.	उ			
	द्याराधनासारभाषा	पद्मालाल चौधरी		ΑĒ	उषप्रहफल	बद्धस्	(4;∘)		
	धाराधनासारम।षा	-	(हि॰)	X۰	उलादिसूत्रसंग्रह	उज्बलद् च		२५७	
į	धाराधनासार वयनि	का बा॰ दुकीचन्द	(हि० गः) X0		गुणभद्राचार्य			
	भारा धशसारवृति	५० चाशाधर	(सं∘)	X٥	उत्तरपुराशटिव्यस्	प्रभाषन्द	(₫∘)	SAX	
	धारामशोभाकया		(सं∘)	२१७		खुशासचन्द	(हि॰ पद्य)	\$.A.K	
	बाला पप द ति	देवसेन	(4 ∘)	१३०	उत्तरपुरासभाषा स	ांची पत्राकाल			٠
	भालोबना		(भा•)	४७२		-	(গাং)	₹ .	
	सालोबना पाठ	औं इरीकाल	(हि∗)	, 448			(fg.)	1	
	श्रासोचनापाठ		(हि∘)	४२६	उदबसत्ताबंधप्रकृतिवर्	ন —	(∉∘)	*	
	ž		€ 5%, 19€	9, 6 44	उद्धवगोपीसं वाद	रसिकरास			,
	शामवित्रमङ्गी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा ०)	٠ ٦	उद्ध वसंवेशाक्यप्रकल्थ	-	(सं∘)		,
	शास्त्रविभ न् री	-	(प्रा∘)	900	उपवेशस्तीसी	जिसहर्ष	(Re)	\$\$X .	
	amanfa and		(fr-)	ą	उपदेशपणीसी	,	(Re)	**	

-ce- 1						
प्रस्थताम	सेखक	भाषा पृ	g सं०	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
उपदेशरत्नमाला	सक्तभूषण	(#o)	५ ०	ऋदिशतक	स्वरूपचन्द बिलाला	(हि०) ५२ ५११
उपवेशरतमाला	धर्मदासगरिए	(×r)	৬২৯	ऋषभदेवस्तु ति	जिनसेन	(सं∘) ३८१
उपदेशरत्ममालागा या		(आ॰)	Хą	ऋपभदेवस्नुति	पद्यनिद	(पा०) ३८१ ५०६
				ऋषभनाथचरित्र	भ० सकतकीर्त्त	(सं०) १६०
उपदेशरत्नमालाभाषा				ऋषभस्तुति		(सं०) ३८२
उपदेशरत्नमालाभाषा	•	(हि॰)	48	ऋषिमण्डल [चि	7]	४२४
उपवेशशतक		हे•) ३२५		ऋषिमण्डलगूत्रा	छाः गुग्निन्द	(गं०) ४६३
चपदेशसज्माय	देवादि <i>ल</i>	(हि॰)	३८१			५३७, ४३६, ७६२
उपदेशसज्भाय	रंगविजय	(ig•)	३८१	ऋषिमण्डलपूजा	मुनि झानभूपरा	(मं०) ४६३ ६३६
उपदेशसज्काय	ऋषि रामचन्द	(हि॰)	३५०	ऋषिनण्डलाूजा		१३६ ४३४ (२६)
उपदेशसिद्धान्तरत्नम	ला भंडारी नेमिच	द् (प्रा०)	7 8	ऋषिमण्डलपूजा	दौजत आमेरी	(हि॰) ४९४
उपदेशसिद्धांतरत्नमा	नाभाषा भागचन्द	(हि॰)	४१	ऋषिमण्डलपूजा		(हि०) ७२७
उपवासग्रहराविवि		(সা৽)	४६३	ऋषिमध्यलपूजा	सदासुख कासलीवा	ल (हि०) ७२६
उपवास के दश भेद	_	(गं∘)	४७३	ऋषिमण्डलमन्त्र		(नं०) ५६३
उपवासविधान	_	(हि॰)	५७३	ऋषिमण्डलस्त वस	·	(२ं०) ६४५ ६८३
उपवासो का ब्यौरा		(ig•)	9.8	ऋषिमण्डलस्तवः	न्यूजा	(मंद) ६४६
उपसर्गहर स्तोत्र	पूर्णचन्द्राचार्य	(₹•)	३=१	ऋषिमण्डलस्तीव	गौनमस्वामी	(संक) ३६२
उपसर्गहरस्तोत्र		(• i+)	878		४२४, ४२६,	¥\$\$, \$ \$0, 5\$\$
उ पसर्गार्थविवर रा	बुपाचार्य	(सं∘)	યર	ऋषिमण्डलम्तोत्र		(स०) इबर ६६२
उपांगललितवतक्या		(सं∘)	२१७		Ų	
उपाधिव्याकर सा		(सं∘)	२५७	एकसीगुनहत्तर अ		(हि॰) ७४४
उपासकाचार		(सं∘)	५२	एकाक्षरनोदा	च्चपश्क	(सं०) २७४
उपासकाचारदोहा	आ० सदमीचन्द्र	(44 0)	યર	एकाक्षरनाममाल	т	(सं∘) २७४
उपासकाभ्ययन	_	(सं∘)	યર	एकाक्षरीकोश	वरकृचि	(सं∙) २७४
उमेश्वरस्तो त्र		(4°)	७३१	एकाक्षरीकोश		(सं०) २७४
	ऋ			एकाक्षरीस्तोत्र [तकाराक्षर]	(#o) 352
	નદ			एकीभावस्तोत्र	- वादिराज	(सं०) २२४
ऋस्तसम्बन्धकथा	व्यभयचन्द्रगरिष्	(গাং)	२१=	३८२, ४२४,	४२४, ४२८, ४३०, १	(17. Y11. Yus
ऋतुसंहार	कालिद।स	(4,•)	१६१	યહ્ય, પ્રદય,	६०४, ६३३, ६३७, ह	YY EYP GUT
्रेऋदिमन्त्र	-	(सं∘)	७२३	६६४, ७२०,	७३७, ७इह	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·

(हि∘) २११

(₹•) 220

(₹•)

250

नारचम्

क्याकोश

महारां प्रष्ठ

व्यारलसागर

হ্যমন্ত্র

X \$0. EYK

(सं०) ४६४

420, 480, 652

```
प्रत्य ] [ प्रत्यात स्वाप्त स्व
```

प्रन्थनाम	लेखक	भाषा प्रष्ठ सं	0	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा ष्ट	ष्ट्र सं॰	
कर्मदहनपूजा	टेकचन्द	(हि०) ४६	X.	कलशारोपस्मविधि	_	(सं∙)	***	
कमैदहन [मण्डल	चित्र]	ध्र	X	कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजाः	भ॰ प्रभाचन्द्र	(सं∘)	४६७	
कर्मदहन का मण्डल	-	(हि०) ६३	5	कलिकुण्डपादर्यनाथ रूता र	पंगाविजय	(सं∘)	६५८	
कर्मदहनव्रतमन्त्र		(स०) ३४	v	कलिकृण्डनार्यनाय गुजा	_	(हि∙)	४६७	
कर्म नोकर्म वर्णन		(प्रा०) ६२	٤	कलिकुण्डपाइर्ननाथ ∫मंडस	निय]		* ? *	
कर्मपत्रीसी	भारमल	(हि०) ७ ६	3	कलिकुण्डपाइर्वनाथन्तवन		(सं∘)	£ ~ £	
कर्मत्रकृति	नेभिचन्द्राचायं	(গাং)	ş	কলিফুড্ছ ণুজা	_	(#i o)	860	
कर्मप्रकृतिचर्चा		(fह०) <u>५, ৬</u> २	0		¥34, ½? 6, ¥	98, 40 1	, ६४०	
कर्मप्रकृतिचर्चा	_	(हिं०) ६७	0	किल कुण्डपूतः श्रोर जयमः	PT —	(sis)	७६३	
कर्मश्रकृतिटीका	सुमतिकीर्त्ति	(मं०)	X	कलिकुण्डस्तवन		(40	tog	
कर्मप्रकृतिकाव्यौ	रा	(हि०) ७१	5	कलिकुण्डस्तवन	_	(आः)	६५५	
कर्मप्रकृतिवर्शान		(हि०) ७०	8	कलिकुण्डस्नोत्र	-	(He.	४७५	
कर्मप्रकृतिविधान	बनारसीदास	(हि॰)	ų	कलियुगकी कथा	व शत	(हि॰)	६२२	
		३६०, ६७७, ७४	3	कॉलयुगकीकथा ह	((काद्)म	(fgo)	৬ ৬ ই	
कर्मबत्तीसी	राजसमुद्र	(हि०) ६१	૭	कलियुगकी विनर्ता	द्वात्रद्व	(f&c)	६१५	
कर्मयुद्ध की विनती	· -	(हि०) ६६	¥			६८४	, 955	
कर्मविपाक		(सं०) २२१, ५६	Ę	कल्किश्चवतार [चित्र]			€ 0 ‡	
कर्मविपाकटीका	सकलकीर्ति	. ,	¥,	कल्पद्रुमपूजा	_	(₹0)	484	
कर्मविपाकफल		(हि०) २६	0	करुरसिद्धानसंग्रह	_	(সা৹)	Ę	
कर्मराशिफल [कर्म	विपाक] —	(सं०) २८	•	क्टामूत्र	भद्रवाह्	(গা০)	Ę	
कर्मस्तवसूत्र	देवेन्द्रसूरि	(গা৽)	¥	कन्तम्त्र भिक्स	्याम्यणं	(গাং)	Ę	
कर्महिण्डोलना		(हि०) ६२	۶.	करपसूत्रमहिमा		(fg0)	3=3	
कर्मों की १४८ प्रव	हतियां —	(हि॰) ७६	•	कल्पसूत्रटीका समय	सुन्दरोपाध्या य	(सं∘)	•	
कलशविधान	मोहन	(सं०) ४६	Ę	कल्पमूत्रवृत्ति	_	(शह	9	
कलशविधान		(सं०) ४६	- 1	करुपस्थान [करुपव्यास्या]	*****	(सं∘)	२६७	
कलशविधि		सं०) ४२व, ६१	١ ا	कत्याग्वक	समन्तभद्र	(মা৽)	3 < 3	
कलशविधि	विश्वभूषस	(हि•) ¥६१	- 1	वल्याग [बडा]	_		१७६	4
कलशाभिषेक	पं० च्याशाधर	(सं०) ४६७	- 1		नियमागर	(40)	\$48	-
कलशारोपस्विधि	पं० चाशाधर	(सं०) ४६६	1	कल्यागमन्दिर	हर्षकीर्श्ति	(0B)	٧٠ţ	
							-	

प्रन्थनाम	होस क	भाषा (्ष्ट सं०) मन्धनाम	सेसक	-	
क रुयाग्।मन्दिरस्तो	त्र कुसुद्चन्द्र		194 194	कविस	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	भाषा प्रा	-
	(10, ¥38, ¥33,			कवित्त	बनारसीदास	(हिं°) ७०१	•
KEY, COX	€१४, ६१६, ६३३	£3:	. 202	कविल स्वा	मंहन	(₹°)	993
	उ०१, ७ ३ १, ७६३	, 110, 44(, 440	कविस	वृन्दावनदास	(हि ॰)	६८२
कल्यासमन्दरस्तो		(#o)	_	कविस	मन्तराम	(हि॰) (६०)	48 2
	त्रवृत्ति देवतिलक		,	कवित्त	सुम्बन्नान	(हि॰) (ि \	ξĶĘ
	त्र हिन्दी टीका —		₹¤.ሂ	कविस	सुन्दरदास सेवग	(ह∙) (⊱.)	£X\$
	त्रभाषा पद्मानाल	(ਕਰਾਵਨ) ਵਿੱਚ		कविस		(हि॰) राज• डिंगल)	900
	त्रभावा बनारसीद्।		३०४	कर्तिम	(-	•	990
			354	1	७१७, ७४८, ७६०	(हि∘)	448
• 10, 456, X	E4, 403, E08,	६२२, ६४३,	£8¢,	afan anan)	०५०,०५५,७५० स्काशिवलाल		
manameters	9.9, 608, 908			कवित्तनंब्रह		(हि ॰)	७६२
Sammer (en)	भाषा मेलीराम	(हि॰)	७८६	कविशिया	 केशबदेव	(हि॰) ६४६, (हि॰)	
कत्यामामन्दरभाषा	मापा ऋषि रीमर		₹ ८ ४	कविवसम	करावद्व हरिच रसादाम		\$ \$ \$
40.410141.46(414)		(हि॰)	६८६			(हि॰)	ŞEC
न ल्यागमाला	७४४, ७४४,			कक्षपुट	सिद्धनागः जु न	(सं∘)	२६७
कल्यासाविधि		स०) ५७४	, ₹6%	कातन्त्रटीका कातन्त्ररूपमालाट	ेका दौर्गासंह	(सं०) (सं०)	२४७
-	मुनि विनयचन्द	(भ्रप०)	£ 88	कातन्त्ररूपमालाव		(4°)	₹¥ =
कत्यासगष्टकस्तोत्र	पद्मनिन्	(≓∘)	808				२४६
कवलचन्द्रायस्मद्रतक कविकर्पटी	था	(संत) २२१	२४६		विष्रि चारित्रमिंह	(सं०)	२४७
कावकपटा कविस		(9e)	30€		• शिववर्मा	(मं०)	२४६
कविस	व्यवदास	(हि॰) (० न	985	कादम्बरीटीका		(सं ०)	775
कवित्त	कन्हेयासास	(हि ०)	950	कामन्दकीयमीतिस	रभाषा —	(i ₹∘)	३२६
कविस	केमवदास गिर धर ((g₀,	£ & \$	कामशास्त्र		(हि॰)	ひ手む
कविल	,	(Eo) 1919 ?		कामसूत्र	कविद्वास	(সা॰)	₹ ¥
कविस		(हिं°) ६७०,		कारकप्रक्रिया		(सं∙)	२५९
कविस	छीडल जयकि शन	(f ₹ ∘)	990	कारकविवेचन	-	(सं∘)	325
कविल		(हि॰) (ि)	£83	कारकसमासप्रकरः		(4,∘)	२४१
कविस कविस	देवीदास	(fg+)	FOX	कारसानों के नाम		(fg.)	oxe
707 (1	वद्यान्दर	(f ₹ ∘)	980	कार्तिकेयानुबेक्षा	स्वामी काश्विकेय	(গা॰)	£03

अन्धनाम	सेवक	भाषा !	पृष्ठ संब	प्रत्यनाम	लेखक	भाषा प्र	ष्ट्र सं०
कार्सिकेयानुत्रेक्षा टी	का शुभचन्द्र	(सं∘)	१०४	कृष्णस्वमस्मिवेलि पृ	लीर क राजीर	(rise frag	r) 1010.0
कार्तिकेयानुप्रकाटी	का	(मं०)	१०४	कृष्णरूकमाणुवेलिटीक		(10.1	
कास्त्रिकेयानुप्रेकाभ	ाषा जयजन्द छ।बङ्	(हि० गर	a) ६०४	कृष्णस्वमस्मित्रेलि हिन		/G- \	990
कालयकवर्णन	_	(हि॰)		कृष्यगरुवमस्गिमञ्जल			६ ४६
का लीनागदमनकथ	п —	(हि.)	७३८	कृष्णावतारचित्र इष्णावतारचित्र	पदम भगत	(हि॰)	२२ १ ६०३
कालीसहस्रनाम		(4∘)	₹ 0 5	केवलज्ञान का ब्योरा		(हि॰)	χą
काले विच्छूके डङ्क	जतारनेका मंत्र —	(स० हि०) ২৬१	केयल ज्ञानीस उक्ताय	विनयचन्द्र	(ਫ਼ਿ॰)	३८४
काव्यप्रकाशटोका		(€€)	१६१	कोक-मञ्जरी	14114449	(हि॰)	
कासिम रसिकविल	ास	(fgo)	908	कोकशास्त्र			६५७
किरातार्जुनीय	महाकवि भारवि	(म०)	१६१	कोकसार	আন-ব	(मं०) (हि०)	३४३ ३४३
कुगुरलक्षरा	and the same of th	(हि०)	ય્ય	कोकसार	•		
कुण्डलगिरियुजा	भ० विश्वभूषण्	(मं∘)	84.9	कोविलापद्ममीकथा	ञ∞ हर्षा	(हि०) ३५३. (► \	
कुण्डलिया	अगरदास	(हि॰)	480	कौनुकरत्नमञ्जूषा	अ० हवा	(हि०)	२२८
कुदेवस्थरूपवर्णन		(हि•	७२०	कौतुकर्लं लावती		(180)	७८६
कुमारसम्भव	कालिदास	(मं०)	१६२	T.	>0		रेद०
कुमारसम्म वटीका	कनकसागर	(₹10)	१६२		ा० धनकोत्ति		२२२
कु वलयानन्द -	ऋष्य दी ज्ञित	(मं०)	₹05	क ञ्चिकावनोद्या पनपूजा	लीलनकात्ति	(स०)	¥\$⊏
कु । लयानन्द	_	(स∘)	₹0 <i>=</i>	किष्काकाद्यायम	******		8£8
कुवलयान-दकारिक	-	(सं∘)	3∘€	काजीवारस (मण्डल (₩a \	¥\$#,	
कुशलस्तवन	जिन <i>ःङ्गसूरि</i>	(हि॰)	૭ ૭૨	का जीवतीचापनमण्डल			* 7 %
कुशलस्तवन	स्मयसुन्दर	(ਫਿ o)	3હહ	कियाकलाप -	(. ,		* ? \$
कुशलागुबधि श्र र म्		(प्रा•)	808	क्रियाकलापटांका			४७६
कुशील सम्ब न	, जयलाल	(°5°)	યર	कियाकलापटीका	प्रभाषस्त्	(स०) ५३,	X 3 X
कुदन्तपाठ		(+i o)	२५६	क्रियाकला म्युत्ति	_	(सं∘)	χş
कुपण्छन्द	ठ वकु रसी	(हि•)	435	क्रियाकोशभाषा	. ~	(গাং)	4.
कुपराखन्द	चन्द्रकीर्त्ति	(fg∘)	37.5	क्रियाकोक्षमाया	किशनसिंह	(हि॰) ५३,1	f g w
कृपरापश्चीसी	विनोदीलाल	(ॡ-) (हि∘)	933			(fg•)	¥.ą
कुष्णप्रेमाष्ट्रक		(हि॰)	७३६	कियावादियों के ३६ भे			90
	श्री किशनज्ञाल	(१६०) (हि०)	¥\$0	क्रोधमानमायालोभ की			(Y#
कृष्णरास		(हि॰)	840		दी भसिंह	(4°) 8	Ęą
- •		(16a)	उरम	क्षपर्णासारटीका	-	(4;∘)	•

A	_				ł.	भन्यानुका	गणका
अ म्थनास	लेखक	भाषा पृ	ष्ट्र सं	· मन्थनाम	लेखक	भाषा	प्रष्ट सं०
गर्भ कल्यारमक क्रिया में	भक्तियां —	(हि॰)	X to 3	पुग्स्थानवर्शन		(हि∙)	
गर्भवडारभक्र	देवनन्दि	(#o) \$ \$ \$, 630	गुगास्थानव्यास्था		(संo)	-
गिरनारक्षेत्रपूत्रा	भ० विश्वभूषण्	(सं∘)	¥= 8	1	मनराम	(हि॰)	
विरवारक्षेत्रपूता		(हि०) ४६६	. ሂየቅ				७४०
विरमारक्षेत्रपूजा	_	(fह°)	५१=	. 1		(सं०) ६२।	, 444
विरिनारयाश्ववर्णन		(हि॰)	હ ે ફ	गुरग्रष्टक	चानतराय	(हिं०)	909
गीत	कवि पल्ह	(fg。)	935	34844	शुभवन्द	(ਫ਼ਿ॰)	३≖६
गीत	धमेकीसि	(feo)	983	प्रकायमाल	त्र० जिनदास	(हि <i>०</i>)	£X=
गीत	पांडे नाथूराम	(हि॰)	६२२	1			, ७६१
गीत	विद्याभूषस	(हि॰)	₹a⊌	व्यवस्था ।वस्ता		(हि॰)	900
गीत		(fg。)	988	युग्गामावालछन्द	_	(fro)	3 = €
गीतगोविद	जयदेव	(सं∘)	253	गुरुपारनन्त्र एवं समस्य		रे (हि०)	έşξ
गीतप्रबन्ध		(#io)	3=5	गुरुपूजा	जिनदास	(fg。)	X R o
गीतमहात्म्य		(सं०) (सं०)	4 - 4 4 0 0	गुरु द्वाष्ट्रक	-	(#i°)	E YE
गीतवीतराग ऋशि	गनवचा रुकीर्त्ति	(#io)	\$ee	गुरुमहस्त्रनाम		(य०)	3=0
गुग्वेलि [चम्दनवाल		(हि॰)	६२३	गुरुम्बबन	शांतिदास	(सं०)	६५७
पुरावेलि	-	(हि॰)	5¥:	<i>पुरुम्</i> तुति		(स०)	६०७
ग्रु गम ज्जरी		(हि∘)	988	गुरुस्तुति	भृथरदास	(fg0)	ŧ٤
पुरास्तवन		(#o)	उर्ट ३२७	¥₹u	, xx3 Etc, 5	¥7, ĘĘĘ,	95 \$
पुरास्यानगीत	श्रीवर्द्धान	(fg。)	५२७ ७६३	गुरुमाको विनता		(हि॰)	800
गु रास्थानकमारोहमूत्र	रस्रोतर	(#o)		गुरुषो की स्तुति		(#o)	478
गुएस्यानवर्चा		(प्रा॰) _{५,}	م د عد	गुर्वाष्ट्रक	वादिराज	(सं∘)	EXO
ग्रुगस्यानवर्षा	चन्द्रकीर्त्ति	(तह _०)		<u>प्र</u> विश्वि		40) 464,	
गुस्थानवर्षा		40 1	אַנ	गुर्वावलातूजा		(मं∘)	X ? E
पुरस्यानवर्षा		(¶o)	ا : ``	गुर्वावली वर्शन	_		₹७१
षुस्यानप्रकरस्		(#°)	-	गोकुलगावकी लीला			
गुर गस्थानभेद		(#io)		गःम्मटसार [कर्मकाण्ड]	22		1
बु ग्गस्थानमार्गगा		(हि॰)				(সা৽)	१ २
पुरास्थानमार्गरा। रचना		(₹•)	-	गोम्मटसार [कर्मकांड] र्ट	ाना कनकनन्दि	(₹0)	१२ 🍃
ग्रुगस्यानवर्णन		(सं∘)		गोम्मटसार [कर्मकांड] टी	का झानभूषस्	(4°)	१ २
		·-·/		गोम्मटसार [कर्मकांड] टी	· · · ·	(₫∘)	? ?

Mad 1 Brown of me	3						
प्रम्थनाम	है स क	भाषा दृष्ट	सं०	श्रन्थनाम	शेयक	भाषा प्रष्ठ	
गोम्मटसार [कर्मकोड]	भाषा पं० टोडरर	मझ (हि॰)	१३	म्बारह झंग एवं चौदह पूर्व	का वर्शन -	1.6.1	६२६
गोम्मटसार [कर्मकांड]	भाषा द्वेमराज	(हि॰)	11	गृहप्रवेश विचार		. ,	१७१
गोम्मटसार जीवकाड			£	वृहविबलकारा		ζ- /	४७६
गोम्मटसार [जीववांड		(é þ)	12	ग्रहदशावर्ण न			दृह४ इहर
गोम्मटसार [जीवकांद	ी भाषा टोडरम	स (हि॰)	ę۵	बहफल		()	
संक्रमटसारटीका	धर्मचन्द्र	(सं∘)	£	ब्रह्फल		• •	२ =0
गोम्मटमारटीका	सकतभूषण	(सं∘)	۶.	ग्रहों की ऊन्चाई एवं ग्रायुव	र्गान	(fĕ∘)	315
गोम्मटसारभाषा	टोडरमब	(हि॰)	ŧ•		घ		
गोम्मटमारपीठिकाभा	ता टोडरमल	(हि॰)	15	धटकर्परकाव्य	घटकपेर	(सं∙)	848
गोम्मटसारबृत्ति	केशबवर्णी	(सं॰)	₹•	बन्धर निसासी		(rio) \$=0,	¥\$0
गोम्मटसारवृत्ति		(सं∘)	ţ.	ब स्टाकर्गकस्य		(सं∙)	
गोम्मटसार मंहिष्ट	पं० टोडरमल	(庵。)	12	बण्टाकर्शमन्त्र		(₫•)	₹¥७
गाम्मटसारस्तीत्र		(सं०)	३८७	वण्टाकर्रामन्त्र	_	(fe) 480,	530
गोरसपदावली	गोरसनाथ	(हि॰)	७६७	बण्टाकर्गां बृद्धिकत्य		(हि∙)	484
गोरसमंबाद	-	(हि∘)	७६४		च		
गंविदाष्ट्रक	शङ्कराचार्य	(सं∘)	450		7	(हि∗)	900
गीडोपार्श्वनायस्तवन	जोधराज	(राज•)	£ ? 10	वउदीसीठामावर्षा	_	(१५७)	28
गौडीपार्वनायस्तवन	समयपुन्दरगणि	(राज०) ६।	७ ६१४	घउसरप्रकरण		(ह•)	10%
गौतमकुलक	गौतमस्वामी	(গা॰)	ŧ¥	वक्रवर्तिकी बारहभावन		• • •	344
गौतमकुलक		(प्रा॰)	1	वक भरीस्तीव	_	(4.)	
र्गातमपृच्छा		(SIE)	Ę¥B	l	\$ =6	, ४३२, ४२ ८	₹¥₹
गीतमपृच्छा	समयसुन्दर	(हि॰)	312	बतुर्गति की पढड़ी		(मप०)	
गीतमरासा		(हि∘)	UXY	बतुर्दशपुर्वशासमा वर्ष		(દિ +)	€<¥
गीतमस्वामीचरित्र	धर्मचन्द्र	(सं∘)∙	163	बतुर्दशतीर्य कुरपूजा	_	(4·)	603
गौतमस्वामीचरित्रभ			188	बतुर्दशमार्गसा वर्षा		(fg•)	\$08
गीतमस्यामीरास		(हि•)	Ęŧo		विनयचन्द्र	(∉•)	\$4
गातगरमामाराज गीतमस्यामीसम्भाव	समयसुम्दर	(fg•)	5 8=			(গা॰)	\$X
वातमस्यामासरकाय वीतमस्यामी सरकाय		(हि∙) (हि•)	41=			. (₫•)	18
यातमस्यामा संग्याप ग्रंथकुटीपूजा	_	(₹°)	210	वपुर्वशोकवा	टोकम	(E.) AK	1, 901
34		1)	-,-				

i. •]	प्रमानुक्यक्रिका
दर्ह]	माबा पृष्ठ सं०	प्रन्थनाम हेसक	भाषा द्वष्ठ सं•
Hedail a	(हि०) ७४२	चतुर्विशतितीर्थकुराष्ट्रक चन्द्रकीरिंग	(#o) XEX
48441111	(सं०) २२२	चतुर्विञ्चतिपूजा	(हि०) ४७१
चतुर्दशीविधानकवा	(4°) 448	बत्विशतियज्ञविधान —	(हि॰) ३४८
चतुर्वजीवतपूजा	(सं०) १०५	बतुबिशतिबिनती चन्द्रकवि	(हि०) ६८४
चतुर्विषयान चतुर्विशति गुस्रकीर्ति	(हि॰) ६० १	चतुर्विश्वतिव्रतोद्य।पन	(rio) 438
	(सं०) १८	चतुर्विश्वतिस्थानक नेमिष्दरद्वाषार्य	(प्रा•) १५
#Glasticaco.	(4°) ¥€E	चतुर्विशतिसमुख्यपूजा —	(सं०) ५०६
चतुर्विकातिजयमान यति साधनंदि	(हि॰) ७२ ६	चतुविद्यतिस्तवन —	(स०) ३८७ ४२६
	• - /	चतुर्विश्चतिस्तुति —	(পা৽) ৬৩=
बतुविद्यतिजिनराजस्तुति जितसिहसूर्व	(हि॰) ६१६	चतुर्विशतिस्तुति विनोदीलाल	(हिं०) ७७६
401-14101-1-1-		बनुविद्यतिस्तीत्र भूधरदास	(हि॰) ४२६
19.1	(सं०) ५७६	चतुक्लोकीगीता —	(सं•) ६७६
13.11	(সা৽) ३=७	बतुः प्रष्ठोस्तोत्र	(सं०) ६६२
बतुविश्वतितीर्धकुर जयमाल	(#o) Yoo, EYX	चतुष्पदीस्तोत्र	. (सं०) ३८८
बतुबिशतितीर्थक्रपूजा		चन्दकथा सदमय	। (हि॰) अ४व
वतुविश्वतितीर्वकूरपूजा ने ीचन्द् पा	ा (हि∘) ४७३ व	चन्दकुंवरकीवार्ता —	
चतुर्विश्वतितीर्थकुरपूजा बस्तावरलाव	. (ફિ∘) ૪⊍₹	चन्दनबालारास	- (हि॰) ३ ६१
चतुर्विशतितीर्घकुरपूजा सनरङ्गलाल सर्वाज्यवितीर्घकरपूजा रामचन्द्र	(हि॰) ४७२ (हि॰)	चन्दनमलयागिरीकथा भद्रसेन	
aldination a man		चन्द्रनमलयागिरीकथा चतर	
वतुविशतितीर्घक्ररपूजा वृश्दावन वतुविशतितीर्घक्ररपूजा मुगनचन्द		1	(ছি॰) ৬४=
	• •	बन्दनवहिकया इ० भूतसागर	
बतुविशितितीर्वकुरपूजा सेवाराम सा	(ছি ০) ४ ৩३	1	(#o) २२४
Addancon Bry		1	
बतुर्विश्वतितीर्यक्करस्तवन हेमविमस	द्वार (सं) साम्रिया (सं०) देवस	4.4.4.9.41 40.916.400	
चतुर्विशतितीर्थकुरस्तोत्र कमलविजय	(हिं०) ७२० (हिं०) ४०५	Amari	(हि॰) ४१६
बतुविशतितीर्थकुरस्तुति बन्द		1	(सप०) २४६
बतुविवातितीर्थकूरस्तुति समन्तभा	•	1 4444	
बतुर्विवातितीर्यक्रूरस्तुति —			(सं०) ४१०
वतुर्विशतितीर्वकूरस्तोत्र माधननि			
बतुर्विवातितीर्थक्टरस्तोष	(सं∙) ३८०	1	२४४, २४६

वामुण्डोपनिषद्

टीकमचन्द् (हि॰) २२४, ६३६

चन्द्रहंसकथा

(40) Com

(đo) XX

```
5ts ]
                                                                                      प्रस्थानुकमशिका
     प्रत्यनास
                           लेखक
                                      भाषा पृष्ठ संव
                                                        मन्थनाम
                                                                              लेखक
                                                                                         भाषा पृष्ठ सं०
   बारमाहकी पश्चमी [मंडलवित्र] ----
                                                      बिन्तामशिपार्श्वनाथपुत्रा एवं स्तोत्र लद्दमीसेन (सं०) ४२३
                                               454
    बारमित्रों की कवा
                        च जयरा ज
                                                      विन्तामस्सिगार्ग्वनाथ्रजास्तोत्र
                                       (हि०) २२४
                                                                                          (सं०) ५६७
   वारित्रपूजा
                                        (सं०) ६५८
                                                      बिन्तामशिपार्श्वनाथम्तबन
                                                                                          (#o) Exx
   वारित्रमिक
                                    (सं०) ६२७,६३३
                                                      चिन्तामिएपार्वनाथम्नवन लालचन्द
                                                                                         (राज०) ६१७
   चारित्रमक्ति
                   पनालाल बौधरी
                                       (Eo) xx0
                                                      चिन्तामस्मिपाष्टवनायम्<u>तवन</u>
                                                                                          (Re) 848
    बारित्रशुद्धिविधान
                          श्रीभूषग्
                                                      चिन्तामशिपार्ध्वनायम्तोत्र
                                       (Ho)
                                               Yey
                                                                                          (#o) X53
   बारित्रशुद्धिविधान
                          शुभवन्द्र
                                       (前o)
                                              YUX
                                                                                           41x, 4x0
   चारित्रशृद्धिविधान
                                                     बिन्तामिग्।पार्वनायन्तात्र मित्र सहित ।
                         सुमतित्रहा
                                       (FO)
                                                                                          (#io) 355
                                              ¥92
   वारित्रसार
                   श्रीमश्रामुख्डराय
                                                     विन्तामणिपूजा [बृहद] विद्याभूषण्यूरि
                                       (#o)
                                                χX
                                                                                         (Ho)
                                                                                                 808
   चारित्रसार
                                                     चिन्तामसिपुत्रा
                                       (#io)
                                                y E
                                                                                          (# v)
                                                                                                E 2 9
   चारित्रसारभाषा
                     मञ्जालाल
                                                     चिन्तामरिगयन्त्र
                                       (Ro)
                                                χĘ
                                                                                         (# e)
                                                                                                 310
    बारदत्तचरित्र
                     कल्यागुकीर्त्त
                                                     विन्दामशियन
                                       (fe o)
                                              280
                                                                                         (1.0)
                                                                                                7.57
   बारदत्तचरित्र
                        चर्यला स
                                                     विस्ताम ग्रिम्नवन
                                      (居の)
                                              338
                                                                           लदमीसे न
                                                                                         (# a) 959
   वारदतचरित्र
                        भारामञ्ज
                                      (E0)
                                                     चिन्तामस्मिन्तोत्र
                                             154
                                                                                                340
   बारों गतियोकी बायु बादिका वर्गान
                                      (हिं०) ७६३
                                                                                          YUX, EYX
  विकित्सासार
                                      (fgo)
                                                    विद्विविलाल
                                                                 दीपचन्द्र कासलीवाल
                                             ₹€ 5
                                                                                       1701
                                                                                              104
  विकित्सो जनम
                  उपाध्याय विद्यापति
                                      (Fo)
                                             785
                                                    चुनही
                                                                    विनयचन्त्र
  चित्र तीर्थकूर
                                                                                       (भग०)
                                                                                               448
                                             484
                                                    चूनहोराम
                                                                    विनयचम्द
                                                                                      (भप०)
                                                                                               $ ? c
  विषयभस्तीत्र
                                  (सं०) ३८६ ४२६
                                                    चुर्गाधिकार
  चित्रसेनकथा
                                                                                       (सं०) २६७
                                     (संत) २२४
                                                    वेतनकर्म चरित्र
                                                                    भगवर्तादाम (हि॰) ६०४, ६८६
  चिद्र पशास
                                     (信o)
                                            و دو
                                                   चेतनगीत
                                                                   जिनश्रम
 वितामशिज बमाल
                                                                                      (हिं०) ७६२
                       उक्करसी
                                    (fह•)
                                            385
                                                   चेतनगीत
 चिताम शाजयमान
                                                                   मनि सिहनन्दि
                                                                                      (हिं०) ७३८
                    त्रः रायमञ्ज
                                    (fgo)
                                            Eyy
 वितामशिजयमान
                                                   चेतनचरित्र
                                                                   भगवतीदाम
                                                                                      (feo) 423
                      मनाध
                                    (Fo) Ex
 विन्तामग्रिपादवंनाथ [मण्डलवित्र]
                                                                                        444, WY0
                                           228
                                                  वेतनदाव
चिन्तामत्सामर्थनाथ असमान सीम
                                                                     फेतरमल
                                                                                     (हिं०) ४५२
                                  (वप०) ७६२
                                                  नतननारीस उभाव
विन्तामस्तिपादर्वनायज्ञयम।सस्तवन ---
                                                                                     (Bo) ६१8
                                   (Ho)
                                          $5.
                                                 वेतावनीगीत
विन्तामशिपादर्वनाथपुत्रा शुभचन्द्र
                                                                     नाथृ
                                                                                     (ছি০) ৬২৬
                                  (मं०) ४७५
                                                 वेसनासज्यः।य
                                                                     समयसुन्दर
                                                                                    (fgo) ¥30
                               ६०६, ६४४, ७४४ | बैत्यवरिवाटी
                                                                                    (E.) X$0
```

```
F = 98
 शम्बासुक्रमशिका ै
                                                                             भाषा कससं०
                                                                   लेसक
                                भाषा प्रश्नसं०
                                              प्रन्थनाम
                     लेखक
 वन्धनास
                                                                              (हि॰) ७२२
                                              बौबीसतीर्थ सररास
                                (#·) ६६=
                  研制研修
बैत्यवंदना
                                                                               (feo) ¥3=
                                              चौबीसतीर्थं सूरवर्णन
                                (Ho) 15E
बैत्यवंदना
                                                                   देवनन्दि
                                                                               (स०) ६०६
                                              चौबीसनीर्य हुरम्तवन
                             ३६२, ६४०, ७१६
                                              चीबीसतीर्थकुरस्तवन लुगुक्ररग्रकासलीवाल (हि॰) ४३८
                        - (fgo) ¥tE, ¥39
बैत्यवंदना
                                              बौबीसतीर्थ क्रूरस्तवन
                                                                               (Bo) $40
                                (हि०) २२४
                   जोषिरा ज
बीदाराधनाउद्योतकक्या
                                                                              (क्या॰) ६२४
                                              बौबीसनीर्ब क्रूरस्तुति
                                (#o) $20
बौनीस प्रतिशयभक्ति
                                                                               (fgo) ¥4=
                                              बोबीसतीर्थ क्रूरस्तुनि
                                                                    त्रद्वारेव
                                (go) ax2
चौदश की जयमान
                                                                           (唐の) ちゃり、ちちぎ
                                              चौबीसतीर्घ दूरम्तुति
बीदहरुगुस्थानवर्ग 🛷 ऋखयराज
                                (fgo)
                                         15
                                                                               (सं०) ६२३
                                              चौबीसनीर्यकूरा के जिल्ल
                                 (म०) ४७६
बौदहपुत्रा
                                              भौबीसतीर्थकूरोके पश्चकस्यामक की निविद्या- (हि०) १३८
                                 (हि॰)
वीदहमार्गगा
                                         18
बौदहविद्या तथा कारखाने जातके नाम -- (हि०) ७५६
                                               बोबोसतीर्बकुरों की वंदना
                                                                               (Bo) 43%
                   गुणकीति
                                 (Ro)
                                       ₹ 5 €
 वौद्योसगराधरस्तवन
                                                                  दौलतराम
                                                                               (हि०)
                                                                                        ¥ Ę
                                               थौबीसदण्डक
                                                                 ¥28, ¥¥5, ¥88, 567, 64.
                                 (So) $25
बीबीर्शाजनमातपितास्तवन आनन्तुम्रि
                                                                               (हि॰) ७३२
 वौबीसजिनंदजयमाल
                                (धप०) ६३७
                                               जीबीसदण्डकविचार
                                                                                (fgo) 3=E
 वौबीसजिनस्त्ति
                    संग्रहस्ट
                                 (go) X30
                                               बीबोसस्तवन
                                                                                       **
 बौदीसठासावर्षा
                             (मं) १६,७६४
                                               बीबीसीमहाराज (मंडलवित्र) --
                                                                               (Bo) 4x4
 चौबीसठालावर्षा नेमिचन्द्राचाय
                                                               भ्रव्यसम्बद
                                 (মা৽) १६
                                               बौबंसी विनती
                                                                                (feo) 448
                                                                  अयसागर
                                   ७२०, ६६६
                                               बीबीसोस्तवन
                                                                            (हिं०) ४३७, ७७३
 वीबीसठासादर्वा
                                 (唐o)
                                         ₹5
                                               वीबीसीस्त्रत
                                                                                (ۥ)
                                                                                        10
              ६२७, ६७०, ६८०, ६८१, ६६४, ७६४
                                                बौरासीश्रसादना
                                                                                (Bo) $40
 चौबीसठाखाचर्चावृत्ति
                                 (₹•)
                                          84
                                                बौरासीगीत
                                                                                32¢ (•jf)
 बौबीसतीर्च कुरतीर्थपरिषय
                                               बौर/सीमोत्रीत्रात्तिवर्शन
                                 (fe) ¥$0
                                               बौरासीजातिकी जयमान विनोदीलाल
                                                                                (हि∘)
 चौबीसतीर्थक्ररपरिचय
                                 (हि०) ५६४
                                                                                (हि०) ३७०
                                                                        ___
                              ६२१, ७००, ७४१ बौरासीज्ञातिसन्द
                                                                                (E) AX.
 बोबीसतीर्थक्ररपूजा [समुख्य] शानतराय (हि०) . ७०५ वौरासी जातिको जयमाल
                                                                                (हि॰) ७४६
                                 (हि॰) ६८६ बीरासीजाति भेद
 बौदीसतीर्य कुरपूजा
                     रामचन्द्र
                                                                                        OYO
                                                                                (fgo)
                              ७१२, ७२७, ७७२ | बौरासीआतिवर्शन
                                                                                (हि॰) ७४७

    (हि•) ४६२, ७२७ बौरासीम्बात की जयमाल

 बीबीसतीर्य क्रूरपूजा
                                                                  इ० जिल्हास
                                                                               (fe.) ver
                                  (सं०) ६०४ बौरासोम्बातमाला
 चीबीसतीर्च सूरमिक
```

८२०]					Ĺ	मन्था नुक्रम	विका
मन्धनाम	संखक	भाषा पृष्ठ	सं०	प्रन्थनाम	लेख क	भाषा प्र	ष्ट सं॰
चौरासीबोल	कवरपाल	(हि॰)	٥ ٠ ١	छंदशिरोम ग	सोमनाथ	(हि॰)	** X
चौरा सीला स उत्तरग्र	m	(हि॰)	ধ্ত	छंदसंग्रह	_	(हि॰)	146
बीसठऋद्विपूजा	स्बह्भपचन्द्	(हि∘) ·	₹ 0\$	खदानुदासनवृत्ति	हमचन्द्राचार्थ	(सं०)	308
नी सठकना	_	(हि॰)	, 0 €	खुदशनक	हपकीर्त्ति	(सं•)	308
चौ सठयोगिनीयन्त्र	_	(初0)	, o 3		*ज	` '	
वीसठयोगिनीस्तात्र	-	(मं०) ३४८, ४	:28			•	
वीस ठशिवकुमारकाज			88	जकडी		(हि॰) ७५५	
_		,,,		जकडी	द्याननराय	(हि०)	
	छ				>		390
ह्यठा भाराका विस्त	Tr	(हि०) ३	٠.	जकडी	देवेन्द्रकीर्त्त	(fg.o.)	-
खलीस कारवानोंके				चकडी	नेमिचन्द	(हि ०)	६६२
श्रहाला	किशन		uy	जकडी	रामकृष्ण	(院。)	
•	वानतराय		¥ ?	जकडी	र्कष चन्द	(हि०)	Éào
बहुडाला		५ (५५) ७, ६७४, ७	- 1			६६१, ७४२,	2 X X
warenzy t	दौलतराम		, o	नकडी		(हि∙)	\$30
स हदाला	dianela		1	जगन्नायनाग्यस्मन	ৰ ৰ —	(fro)	408
	707	و روه و (احد)	- 1	जगन्नायाष्ट्रक	शहराचार्य	(मं०)	કેંદ્રફ
खहराना 	बुधजन		13	जन्मकु ढली [महा	राजासवाई जगलसिह] - #o)	300
खातीसुसकी श्रीप [ि] ध व खिनवै क्षेत्रपाल व चो	-		1	जन्मकुं डलीविचार	-	(हि०)	६ ०३
खिनाव कानगण प पा खिनाबीसयुग्	 I an an all all all an all			जन्मपत्री दीवाग ग्र	।।नरदीलाल	(রি০)	• 30
			- 1	जग्बूकुमारमज्भाय	-	(fg•)	¥\$⊏
खियालीसठाग्। 	त्र० रायमञ्ज	सं०) ७९	- 1	जम्बूद्वारपूत्रा	पांडे जिनदास	(4io)	800
खिया लीसटारगाच र्या			3			Xoe,	e f X
भ्रे दपिण्ड	इन्द्रसन्दि			जम्बूद्धापप्रज्ञपि	नेमिचन्द्र।चार्थ	(otr)	316
खोटादर्शन 	बुधजन	(eşi) 38		जम्बूद्वीपफल	-	(मं∙)	16
खोतीनिवार स्विधि	<u> </u>	(हि॰) ४७	- 1	जम्बू द्वीप सम्बन्धी प		(fgo) u	48
	ः सुरेन्द्रकीत्ति	(सं०) ३४	- 1	जम्बूस्वामीबरित्र	न ० जिनदास	(सं•) १	٤ =
स् रकोश	` -	(सं०) ३१	- 1	जम्बूस्वामी बरित्र	. (1-1-10)	(सं०) १	3,2
खंदको श ं	रज्ञशेखरसूरि	(₫∘) ३०		जम्बूस्वामी चरित्र	विजयकी र् ति	(fg.) 2	58
छंदश तक	वृ न्दाबनदास	(हि॰) ३२	9 1	जम्बूस्वामीचरित्रभाष	ा पश्चालाल चौधर्र	(हिo) १	Ęę I
						, .	

(#i+) ¥8¥ (村0) 320 (हि०) ६४१ ६६३, ७०४, ७२४, ७४४ (Bo) ×3= (Bo) 60 £ (#*) YOS [अनपुरूपकोसी सेवगराम (हि॰) ४४७ जिनपुजापुरन्दर**क्या** सुशासचन्द (हि॰) २४४ जिनद्रशमाला (हि॰) ३१० जिनपुत्रापुरन्दरविधानकथा स्त्रसरकीर्ति (धप०) २४६ जिनपुरासंपत्ति [मंदनवित्र] ---जिनपूजाफलप्रातिकवा X78 (4°) You जिनस्**रासंप**रिक्या (सं०) २२४, २४६ जिनपुजाविधान (हि॰) ६४२ जिनप्रसर्भवस्थिकः इद ज्ञानसाग्रह (डि॰) २२६ जिनपश्चरस्तीत्र **ह्यासप्रभाषार्थ** (सं०) ३६०. ४३२

द्दर]				1	ſ	प्रन्थामुक्स	विका
वस्थ रा म	सेखक	भाषा पृ	ष्ट्र सं	प्रस्थनाम	लेखक	भाषा १	१८ सं०
जिनपञ्जरस्तोत्र		(सं०)	₹8•	६ ५≈, ६≈३, ९	६८६, ६६२, ७१२,	७१४, ७२०	, ७१२,
		¥7¥, ¥31	, ¥₹ ,	9801			
		६४७, ६४८	, ६६३	जिनसहस्त्रनाम	जिनमें नाचार्र	(मं ०)	₹€ ₹
जिनपञ्जरम्तोत्रभाषा	स्बरूपचन्द	(f₹∘)	* ११	l	४२५,	४७३, ७०७,	080
जिम मक्तिपद	हर्षकीचि	(底の) ४३年	, ६२१	जिनसहस्त्रनाम	सिद्धसेन दिवाकर	(सं∙)	₹8₹
जिनमुखा । लोकनकव	-	(सं०)	२४६	जिनसहस्रवाम [स	raj] —	(मं ०)	₹8₹
जिनयज्ञकल्य [प्रतिष्ठा	सार] यं० द्याश	।धर (मं०)	¥95	जिनसहस्रनामभाष	। बनारमीदास	(हिं०) ६६०	, ७ ४६
	६०६	. ६३६, ६६७	, ७६१	जिनसहस्रनाम अ:व	ा नाधूराम	(ਫ਼ਿ∗)	₹3₿
जिनयङ्गविधान		(मं०) ४७६	, ६ ४४	जिनसहस्रवामटी व	ा श्रमरकांति	(सं०)	₹€ ₹
जिनयशमञ्जल	सेवगराम	(हि॰)	44.9	िनसहस्त्र नाम टीक	ा श्रनसागर	(# o)	₹3€
जिन राजमहिमास्ती त्र	_	(हि॰)	४७६	जिनसहस्रतामटा व	-	(40)	€3€
जिनरात्रिविद्यानकथा	_	(स∘)	२४२	जिनसहस्वन।मपूजा	धर्मभूषस	(मं०)	¥50
जिनरात्रिविधानक य।	नरसेन	(ম্বৰ)	६२८	जिनमहस्त्रनामपू ज		(前の)	440
जिन रात्रिविधानकथा	-	(मप०) २४६	, ६३१	जिनसहस्त्रनामपूजा	चैनमुख लुहाड़ि	या (हि॰)	850
जिनरात्रित्रतकथा	इंट झानसागर	(हि•)	२२०	जिनसहस्त्रनामपूजा	स्वरूपचन्द्र विला	ल्बा (हि०)	¥50
जिनलाङ्क	त्रः रायमञ्ज	(হি॰)	910	जिनम्नपन [ग्रीभा	वेकपाठ] —	(40) Yas	, Yor
जिनवरकी विनती	देवापांडे	(हि॰)	Esx	जिनसहस्रनामपूजा		(Ro)	४८१
जिनवर वर्शन	पद्मनन्दि	(oIR)	₹60	जिनस्तवन	कनककीर्त्त	(所o)	306
जिनवरब्रतजयमाल	त्रः गुलाल	(tge)	₹€ 0	जिनस्तवन	दौलतराम	(हि॰)	903
विनव रस्तुति		(हि॰)	હ કુછ	जिनस्तवनद्वात्रिक्ष	*I	(平。)	135
जिमवरस्तोत्र	_	(中。) きを。	, ¥35	जिनम्तु <u>ति</u>	शोभनमुनि	(सं •)	125
श्चिमवासीस्त व न	ज∙ानराम	(हि॰)	3€0	जिनस्तुति :	जोधराज गोदीका	(唐。)	308
जिनशतकटीका	नःसिंह	(40)	38.5	जिनस्तुति	स्पवन्द	(fgo)	909
जिम ातकटीका	शबुसाधु	(सं०)	360	जिनसंहिता	सुमतिकीर्त्त	(fg。)	470
जिनशतकान ह्यार	समन्तभद्र	(40)	93\$	जिनस्तुत <u>ि</u>	_	(fg.)	4 8=
जिनेशासन भक्ति	-	(air)	६३८	जिनानन्तर	बीरचन्द्र	(हि॰)	470
जिनसतसई	-	(हि॰)	905	जिनाभिषेक निर्माय	-	(fig•)	YE ?
	पे॰ काशाबर	(₩•)	136	जिनेन्द्रपुरास भ	० जिनेन्द्रभूषस	(₹∘)	t ¥€
४४०, ५६६, ६०४	, ६०७, ६३६, ६	¥€, €¥७, 1	દ્યય, '	जिनेन्द्र मसिस्तोत		(fg-)	**=
						1.4.	- 17

वन्यनाम	तंत्रक	भाषा पू	ष्ठ सं	प्रन्थनाम	लेख क	भाषा प्रश	सं०
जिनेन्द्रस्तोत्र		(सं∙)	4.4	¥78, 4X7, 40	, ६६६, ६६८,	905, bto,	७१३ ,
जिनोपदेशोपकारस	मरस्तोत्र —	(सं ०)	*?3			७१६, ७३२,	oxx
जिनोपकारस्मरणस	तोत्र	(€i•)	४२६	जैनसदाबार मालंग्ड	नामक पत्रका प्रत्यु		
जिमोपकारस्मरसस्	तोत्रभाषा —	(हि ०)	\$8\$	जैनागारप्रक्रिया		(हि∘) (ि~)	₹•
जीवकायासरुकाय	भुवनकी चि	(हि∙)	989	जनागारप्राक्रमा जैनेन्द्रमहाबृत्ति	बा० दुतीषम्द स्रभवनन्दि	(हि∘) (सं∘)	४७ २६०
जीवकायासञ्काय	राजसमुद्र	(唐。)	333	जैनेन्द्रव्याकर ग	समयनान्द देवनन्दि	(स॰) (सं॰)	२५६
जीवजीतसंहार	जैतराम	(हि॰)	२२४	जगन्द्रव्याकरस्य जोगीरासो	युवनान्य पांडे जिनदास	(स॰) (हि॰)	tae tox
जीवन्धरचरित्र	स ः शुभ ष न्द्र	(मं०)	100	६०१, ६२२, ६३१			•
जीवन्धरचरित्र	नथमल विलाला	(हि ०)	100	जोधराजपश्चीसी	., 424, 664,	(हि॰)	७६०
जीवन्धरबरित्र प	क्राकाल चौधरी	(fg •)	101	ज्येष्ठजिनवर [संडर्ला		(160)	५२५
जीवन्धरचरित्र		(fe o)	308	ज्येष्ठजिनवर उद्यापनपू	_	(सं∘)	20E
जीववि वार	मानदेवसृरि	(সা৽)	414	ज्येष्ठजिनवरकथा -	,чı —	(4;∘) (4,∘)	२२४
जीवविचार		(oTR)	७३२	ज्येष्ठाजनवरकथा -	जसकीर्त्ति	(हि॰)	२२४
जीव वेलड़ी	देवीदाम	(हि∘)	હ પ્રહ	ज्येष्ठजिनवस्यूजा -		(+io)	VEX
जीवसमास		(সা০)	७६४		मुतसागर ———————	(ਜ਼∘) (ਜ਼ਂ∘)	४१६
र्जावसमासद्विष्ण		(সা॰)	18	ज्येष्ठजिनवरपूजा ज्येष्ठजिनवरपूजा	सुरेन्द्रकीरिं त	(₩•)	x (4 ¥¤ ?
जीवसमासभाषा	_	(प्रा० हिल्)	35	ज्येष्ठजिनवरपूजा •	_	(ह॰)	६०७
जीवस्वरूपवर्णन		(स∘)	35	ज्येष्ठ जिनवरलाहा न	म ् जिनदास	(स∘)	vex
जीवाजीवविद्यार		(do)	₹€	ज्येष्ठुजिनवरव्रतकथा	सुशालचन्द		
जीवाजीवविद्यार		(Nio)	3.5	ज्येष्ठ िनवरद्रत पुत्रा	Attendaria	(4•)	¥= ₹
जैनगायत्रीमन्त्रविधा	ान	(सं•)	₹४=	ज्वेष्ठपूर्शिमाक्या		(fg•)	E ER
जैन रश्लीसी	नवसराम	(fg o)	Ę (Jo	ज्योतिष वर्षा	_	(₫•)	4£.6
			468 ·	ज्योतिष -		(4•)	250
जैनवदी मूहबद्रीकी	यात्रा सुरेन्द्रकीर्दि		100	ज्योतिष ाटलमाला	श्रीपति	(4;•)	६७२
.,	का मजलसरायः (ज्योतिषशस्त्र -	7/10	(सं∗)	FEX
जैनमतका संकल्प		(寝 o)	४६२	ज्योतियसार	- कपाराम	(fg•)	XS.
पैन रक्षास्तीम	_	(村。)	440	क्वरचिकित्सा -	1041414	(1€°)	रहम स्ट्रम
वैनंविवाहपद्वति		(ਜ਼੶)	YES	ज्यरतिमिरभास्कर -		(#•}	
वैनशतक -	भूधरदास	(Re)	370		चामुरहराय	, .	२१ व
	A 4/414	(-9-)	414	रमबाख	-	(₹•)	२६ य

प्रम्थनाम '	केसक	भाषा प्र	ष्ठ सं ०	प्रन्थनःम	लेक्द	भाषाः	ष्ट्र सं०	
ज्वासामानिनीस्तोत्र	_	(सं०)	४२४	क्रानांकु श	_	(सं∘)	43%	
४२८, ४३३	, 148, 404, 41				भद्रबाहु	(सं०)	¥?•	
शान विन्तामस्ति	मनोहरदास	(fg。)	४८	ज्ञानाकुशस्तोत्र	_	(+i •)	४२६	
		988.		अनासंव शु	भ चन्द्राचार्थ	(4;∘)	808	
ज्ञानदर्गस	सःह दीपचन्द	(हि∘)	१०४	क्रानार्गावटीका [गद्य]	भूतसागर	(₹०)	₹•७	
श्चानदीपक		हि०) १३०,	, ६६०	ज्ञानार्गवटीका	नयाथिकास	(सं∘)	१ 05	
श्चानदीपकवृत्ति	`	(fg•)	१३१	ज्ञानार्गावभाषा अव	व्यंद छ।बड़ा	(हि॰)	१ •5	
शानपश्चीसी	वनारसीदार	हि०)	६१४	ज्ञानार्शवभाषाटीका स	विध विमलगणि	(हि॰)	१ 05	
ÉŝĀ	, ६५०, ६८५, ६८	€, ७४३,	४७७	ज्ञानी बंदश के पद्म		((£0)	६६२	
ज्ञान पश्चीसीस्तवन	समयसुन्दर	(fg o)	¥ŧs	ज्ञानोयदेशबर्तामी		(fg∘)	487	
ज्ञानपदवी	मनोहरदाम	(हि॰)	७१८		भ			
ज्ञानपञ्जविशतिका वर	तोचापन सुरेन्द्रकी	त्ति (सं०)	8=5	भाखडी श्रीमन्दिरजी कं	·	(ぼ。)	vic	
			3 F. X	भाडा देनेका मन्त्र		(fg•)		
ज्ञानपश्चमीवृहद् स्तवन	समयसुन्दर	(हि॰)	300	भाभरियान् चोढाल्या	_		A3=	
ज्ञानपिण्डकी विश्वतिप	द्वहिका —	(भप०)	६३४	भूलना		(fg o)	৬২৬	
ज्ञानपूजा	-	(सं•)	६४८			,	0.0	
ज्ञानपैडो	मनोहरदास	(हि॰)	৬ৼ৬	रर	-ड- ड- ख-ण			
ज्ञानबावनी	मतिशेखर	(हि॰)	७७२	र्टडामागीत	वूचराज	(हि∘)	७४०	
ज्ञानभक्ति		(₹०)	६२७	ठाएांग सूत्र		(#ic)	₹•	
ज्ञानसूर्योदयनाटक			३१६	डोकरो झर राजा भाजर	ाजकी त्रार्ता	(हिं•)	£ € &	
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाष	। पारमहाम निगे	त्या (हि॰)	३१७	ढाढसी गाथा	*****	(সা৽)	६२८	`.
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाष	वस्ततावरमल	(हि०)	३१७	ढ।ढर्सा गाथा द	। दसी मुनि	(o TR)	909	
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाष		(हि॰)	३१७	ढालगग्	_	(हि∘)	३२७	
ज्ञानसूर्योदयंनाटकभाष	। भागचंद	(हि॰)	३१७	ढाल मङ्गलमको		(Fe0)	ĘXX	
ज्ञानस्वरोदय	चरगदास	(हि॰)	७४६	ढोला मारुगी की बात	(fg) २२६,	Ę	
ज्ञानस्वरोदय	-		७५६	ढोला मारूग्री की वार्ता	_	(fgo)	980	
	रायमझ		X۶	ढोला मारूवगी बीपाई	कुशज जाभ (हि) राज	२२ %	
ज्ञानबावनी	बनारसीदास	(हि॰)	१०५	स्वकार पंचिवशति पूजा		(₹•)		, 'A
श्चानसागर	मुनि पद्मसिंह	(आ॰)	4.× 1	रामोकारकल्प		(ë•)	lyc	

(d.)

जन्य नास	हेसद	भाषा ह					•
तदित प्रक्रिया	464	_		प्रन्थनाम	सेसक	भावा वृक्ष स	
तपसवास्य कथा		(सं०) (S-)	750	तीर्थमालास्तवन	समयसुन्दर	(राज॰) ६१	
तमासूकी जयमाल	खुशालवंद	(हि∘)	४१६	तीर्थावनीस्तोत्र	-	(सं०) ४३	?
तर्माञ्जू का जननाल तर्कदीपिका	श्राणं द्मुनि	(हि॰) (१३०)	¥\$5	तीर्योदकविधान		(सं∙) ६३	
तकवापका तकीयकरता	_	(सं∘)	8 3 8	तीर्थंकरजकडी	हर्षकीर्त्ति	(हि०) ६२२, ६४	¥
चन्त्रमास् सर्क प्रमास		(सं∘)	8 3 6	तीर्थंकरपरिचय		(हि०) ३७	•
तक्रमाया तक्माया		(₹∘)	१३२	1		६५०, ६५	₹
तर्कमाया प्रकाशिका	केशव सिभ	(सं∘)	१३२	तीर्यंकरस्तोत्र		(मं∘) ४३	•
तकरहस्य दोपिका	वात चन्द्र	(4,∘)	१३ २	तीर्थंकरों का ग्रंतर		(हि•) ३७	o
-	गुणरत्न सूरि	(सं०)	१३ २	तीर्यंकरों के ६२ स्थ	रान	(हि०) ७२	•
तर्कसंग्रह	च स्तंभट्ट	(सं०)	₹₹?	तीसची बीसी		(हिं०) ६४१, ७४।	=
तर्कसंग्रहटीका	_	(सं∘)	१३३	तीसचौबीमी बौपर्ड	श्याम	(ক্লি০) ৬২০	=
तारालंबोल की कथा	-	(हि॰)	७४२	तीसनीबीसीनाम		(हि०) ४वः	3
ताकिकशिरोमिंग	रघुनाथ	(सं०)	१३३	तीसचीबीसीप्ता	शुभचन्द्र	(सं०) ध३७	
तोनचौबीसी		(हि०)	F3	तीसचौबसीपूजा	बृ न्दाबन	(हि॰) ¥ = ३	
तीनवौबीसीनाम		(हि∘)	48६	तीस बौबीसीसमुद्दस्य		(हि॰) ४ ८३	
	\$100 , \$	€₹, ७०₹,	७४८	तीसचौर्बासीस्तवन		(#o) 36%	
सीनवौद्यासीपूजा	_	(सं०)	8=5	तेईसबोल(बबरग्			
तीनवीबीसीप जा	नेमीचन्द	(हि∗)	858	तेरहकाठिया			
तीनवोबीसीपूजा		(हि॰)	845	तरहनगठवा	बनारसीदास	(हि॰) ४२९	
तोन चौ बीसीरास		(हि॰)	FXE			६०४, ७५०	
तोन चौ बीसी समु च् वय	पूजा —			तेरहर्द्वापपूता	शुभवन्द्र	(4°) ¥≈\$,
तीन मियां की जकडी	धनराज	(fgo) 1			ः विश्वभूषम्	(सं०) ४६४	
तीनलोकक्यन		(हि॰) :		तेरहद्वीपपूजा		(सं०) ४६४	
तीनसीक चार्ट	_	_ :		ते रहद्वीपपृत्रा	बाबजीव	(go) rev	
तीनलोकपूजा [त्रिलोक	सार प्रजा जिलो			तरहद्वीपपूजा	-	(go) ara	
	नेमी चन् य	_		रहद्वीपपूजाविधान		(4°) YEY	
तीनलोकपुत्रा	टेकचन्द		_` `'	रहपंथपच्चीशी	माशिकचन्द	(हि॰) ४४६	
तीनलोकवर्णन	८क्कपन्द — (हि	(ট্রি০) Ya	- 1 "	रहरन्यबीसपन्थभेद		(हि०) ७३३	
तीर्थमाल स्तवन			- 1 "	त्रसार		(हिं०) धरेप	
	वसम	(₹0) €₹	७ ' त्रय	विवातिका		\$•\$ (•#)	

मन् यातुममधिका	3			,		[दर्•
प्रम्बनाम	हेतक	भाषा प	18 सं०	प्रम्थनाम	सेवक	भाषा द्वंत्र सं
जिकाण्डशेषसूची [ध	रकोश] चमरसि	ह (सं०)	२७४	त्रिकोकवर्शन		(हि०) ६६
त्रिकाण्डक्षेषामिषान	पुरुषोत्तमदेव	(4;∘)	२७४			400 00
त्रिकाल वतुर्वशी पूजा		(सं∘)	466	त्रिलोकसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा∘) ३२
त्रिकाल चौबीसी	-	(हि॰)	4 48	तिलोकसारकथा		(हि०) २२
त्रिकाल चौबी सीकमा	[रोटतीज] स्रभ्रहेर	(मं०) २२	६, २४२	त्रिलोकसार वौ प ई	स्यरूपचंद	(हि०) ४ १
त्रिकाल चौबीसीकथा	(रोटतीज) गुरान	(न्द्रि(सं०)	775	त्रिलोकसारपृजा	व्यभयनन्दि	(सं०) ४६
त्रिकालचौबीसीनाम		(स∘)		त्रिलोकसारपूजा	- (सं०) ४८६, ११
त्रिकाल वीबीसीपूजा	त्रिभुवनचंद्र	(सं°)	YEY,	त्रिलोकसारमाया	टे।डरमल	(हि०) ३२
त्रिकालवीबीसी पूजा	•	(#o) ¥=1		त्रिलोकमारभाषा	_	(हि∘) ३२
त्रिकाल चौबी सीप्जा	_	(प्रा०)		त्रिलोकसारभाषा		(हि॰) १२
त्रकानदेव बं दना		(हि॰)		त्रिलोकसारवृत्ति स	।धव चन्द्र त्रै विद्या	देव (सं०) १२
त्रिकालपुजा		(सं∙)		त्रियांकसारवृत्ति	_	(सं०) ३२
त्रि बतुर्विश्वतिविधान		(स०)	२४६	त्रिलोकसारसह ं ष्ट	नेमिचन्द्राचार्य	(आ॰) ३२
त्रिपं बाशतक्रिया		(हि∙)	३१७	विलो क्स् तोच	भ० महीचन्द	(हि०) ६८
त्रिपं वाशतब्रदोद्या पन		(सं o)	411	त्रिलोकस्थजिनालयप	ুৰা —	(हि॰) ४८
विश्ववन की विनती	गंगादास	(हि०)	७७२	त्रिलोकस्वरूप व्यास	।। उद्यताल गरा	वाला(हि०) ३२
त्रिमुबन की बिनती		(ह 0)	800	त्रिवर्गाचार	भ॰ सोमसेन	(€°) X
त्रिभंगीसार	नेमि चन्द्राचार्य	(গা০)	**	त्रिशती	शाङ्गंधर	(सं०) २६
त्रिभंगीसारटीका	विवेकानन्दि	(सं∘)	₹?	त्रिषष्ठिशलाकाखंद	श्रीपास	(सं०) ६७
त्रिली क्योज पूजा		(fgo)	YEX	विषष्ठगलाका पुरुषव	एांन	(vi) (vi)
লিল <u>াক</u> ৰিপ		(हि•)	₹₹•	त्रिषष्ठिसमृति	भाशाधर	(सं०) १४
विसोकविसक्त ो त्र	अ० महीचन्द्र	(सं∙)	. ७१२	विषय जिल्ला बजनी सी	महर्णासह	(शय०) ६०
जिलोक दीपक	बामदेव	(₹•)	120	षेपनक्रिया		(सं०) ४१, ७६
निसोक् वर्प श् का र	सद्गसेन	(f ۥ)	4 =4,	नेपनक्षिया	१० गुलास	(हি॰) ৬১
	•	۶ و ه	, ३२१	त्रेपनक्रियाकोश	दौलवराम	(हि॰) ४
विसोकवर्जन		(₩•)	3 22	त्रेपनक्रियापू षा	_	(#•) ¥
विकोक्तर्याव		(He)	₹₹₹	त्रेपनक्रिया [मण्डल	বিস]	.
वियोक्सर्कत [वित्र]			121	त्रेपनक्रिया वत पूजा		(#o) Y
विकोकवर्णम		(₹•)	***		के के स्थान की जिल	

```
विश्वातुक्रमविका
 दरह ]
                                                                         नेसक
                                                                                   भाषा इष्ट सं॰
                                                   प्रम्थनाम
                       तेतक
                                  भाषा पृष्ठ सं०
  प्रम्बनाय
                                                                         देवसेन
                                                                                    (प्रा॰) १३३
                                   (#o) XY0
                                                  दर्भनसार
बेपनक्रियावतोचापन
                                                                                     (fg∘)
                                                                                            ***
                                                  दर्गनसारभाषा
                                                                         नथमस
                                   fof (off)
 जेवत्यासाकापुरवन्त्रिय
                                                                                     (fgo)
                                                                                            111
                                                                     शिवजीकात
                                                  वर्धनसारमाषा
 वैष्ठणकाकापुरववर्णन
                                   (हि०) ७०२
                                                                                     (宿。) १३३
                                   (fg o )
                                           २२०
                                                  दर्शनसारभाषा
 वैसोबय तीज क्या ज्ञ० श्वानसागर
                                                                             -- (#o) $X4, $30
                                    (सं∘)
                                           580
                                                  दर्शनस्तुति
 त्रैलोक्य मोहनकवय
                       रायमञ्ज
                                                                                     (彦。)
                                                                                            444
                    सहस्रकीति
                                   (সা০)
                                           ३२३
                                                  दर्शनस्त्रति
 बैसीक्यसारटीका
                                    (#o) Y=X
                                                  दर्शनस्तोत्र
                                                                       सकत्तवस्य
                                                                                     (सं∙)
                                                                                            808
                    सुमतिसागर
 बेलीक्यसारप्जा
                                                                                     (₹∘)
                                                  दर्शनस्तोत्र
                                                                                             $68
                                    (#o) ¥55
 <del>त्रैलोक्यसारमहाप्</del>जा
                                                  दर्शनस्तोत्र
                                                                        पद्म नन्दि
                                                                                     (সা৽)
                                                                                            40€
                       ध
                                                  दर्जनस्तोत्र
                                                                                     YUX (OTR)
                                   ,हि०) ७२५
 बूलभद्रजीकारासी
                                                                                             448
                                                                                     (हि०)
                                                  दर्शनाष्ट्रक
                                    (後の) 年8年
 बंबस्पादवंनायस्तवन मुनि अभयदेव
                                                                                     (E)
                                                                                             $£.8
                                                  दलालीनीसज्काय
                                   (राव) ६१६
  'महापादर्वनाथस्तवन
                                                                                      (सं०)
                                                                                             101
                                                  दश प्रकारके बाह्यसा
                                                                                      (सं∘)
                                                                                             ४७६
                       ₹
                                                  दशप्रकार विप्र
                                                  दशबोल
                                                                                      (俺。)
                                                                                             195
                                    (#o) $E0
                     शहराचार्य
  दक्षशासूतिस्तोत्र
                                                                                      (हि∘)
                                                                                             ***
                                                  दशबोलपश्चीसी
                                                                       श्च/नतराय
                                     सं०)
                                             4.6
  दण्डकपाठ
                                                                                     (Ro)
                                                                                              48
                                                  दशमक्ति
                                    (e is)
                                           २२७
  दत्तात्रय
                                                                                     (康0)
                                                                                            २२७
                                                  दश्चमूलोंकः कथा
                                           270
                                    (₹°)
                       भारामञ्ज
  दर्शनकथा
                                                                                      (₹•)
                                                                                             XXO
                                                  दशलक्षम्।उद्यापन पाठ
                                    (सं∘)
                                            २२७
  दर्शनकथाकोश
                                                                         क्षे कसेन
                                                                                      (ŧi∘)
                                                                                             220
                                                  दशलक्षराक्षा
                                    (徳。)
                                           390
  दर्शनपश्चीसी
                                                                                      (सं∘)
                                                                                             २२७
                                                  दशसक्षमाक्षा
                                    (सं∘)
                                           484
  दर्शनपाठ
                                                                                            552
                                                                   मुनि गुणभद्र
                                                                                     (सप०)
                                                  दशमक्षराक्या
   Eas, 40%, 4%0, 443, 400 463, 403, 443
                                                                      सुरासचन्द
                                                                                      (हि॰) २४४
                                                  दणलक्षस्य
                                    (寝o) ४३を
  दर्शनपाठ
                        वृधक्रन
                                                                        सोमसेन
                                                                                      (#**) vex
                                                   दशमक्षरा जगमाल
                                    (fgo) $00
  दर्शनपाठ
                                                                    पं० भावशर्मा (प्रा॰) ४२६, ६१७
                                 487, 483, 100%
                                                  दशलकत्।जयमाल
                                                   वशलकशुज्जबनाल
                                                                                      (भार) ४६७
                                     (E.) x35
   दर्शनपाठस्त्रति
                                                                                  (प्रा० सं०) ४५७
   दर्शनपाहुद्धभाषा
                                     (हि.) १.E
                                                   रशलक्षागुजयमास
                                     (ह•)
                                                    दशसक्षा अवमान
                                                                        पं० सम्
   दर्शनप्रतिमास्वरूप
                                                                                     (सप०) १४६
                                             Χŧ
  * दर्शनभक्ति
                                     (सं∘)
                                                               ¥=4, 41=, 420, 402, 480, 404
                                             430
```

						•		
घन्यसम	सेसक	भाषा पृ	ष्ठ सं०	मन्धनाम	सेसक	भाषा पृष्ठ	सं०	
दशमक्षागुजयमाल	सुमतिसागर	(हि∘)	७६५	दशलक्षरशिकथा	वितकीर्त्त	(सं∘)	48%	
दशलक्षाराजयमाल		(हि॰)	844	दशनक्षर्गीरास		(ध प०)	482	
दशकक्षसम्बर्भवर्शन एं	सदासुसकासर्स	वास (हि) 4 €	दशवैकालिकगीत	जै तसिंह	(fg o)	900	
बशलक्षराधर्मव र्शान	_	(fg0)	Ę٥	दशवैकालिकसूत्र		(সা৽)	3 2	
दशलक्षरापूजा	चभयनन्दि	(सं०)	YSS	दशवैकालिकसूत्रटीका		(स•)	₹?	
दशलक्षरापूजा	-	(सं∘)	४वद	दशस्तोकीशस्त्रस्तोत्र		(₹•)	58 •	
४१७, ४३६, ५७४,	४६४, ५६६, ६	04, 40 0 ,	₹¥0,	दशसू त्राष्ट्रक		(सं०)	€100	
६४४, ६४६, ६४२,	६४८, ६६४, ७	¥, 5 ₹,	७४१,	दशारास	अंश्व सम्ब	(सं०)	{ =}	
		७६३,		दादूपद्यावली		(हि॰)	348	
दशलक्षरापूजा		ध्यतः दःः)	408	दानकथा	त्र े विनदास	(हि∙)	909	
दशलक्षरापूजा	श्रभ्रदेव	(ন ০)	865	दानक्या	भारामञ्ज	(हि॰)	२२=	
दशलक्षरापूजा	खुशाझचन्द	(हि०)	४१६	दानकुल	_	(भा॰)	Ę.	
दशलक्ष गुपूत्रा	चानतराय	(हि॰)	¥55	दानतपशीलसंवाद	समयसुन्दर	(राज०)	480	
		* \$ 6	, 60 X	दानपञ्चाशत	पद्मनन्दि	(4.0)	६०	
दशलक्षणा्चा	भूधरदास	(हि∙)	* 6 4	दानवावनी	द्यानतराय	(穫0) ६0%,	329	
दशलकारापूजा	-	(寝•)	¥4€	दाननीसा		(हि∘)	400	
दशनक्षरापुजाजग्रमाल			, 954	दानवर्शान	_	(हि॰)	₹ ⊏ €	
दशलक्षरा [मंडलचित्र	1	(सं०)	786	दानविनती	जतीदास	(f ₹ •)	₹¥₹	
	_	•	१२५	दानकोलतपभावना		(सं∘)	Ę.	
दशसक्षरणमण्डसपूजा दशसक्षरणविधानकथा	->->-	(हि०)	¥≈€	दानकोलतपभावना	धर्मसी	(fg•)	٩.	
दशसकार्गावधानस्य। दशसकाराविधानपुत्रा	स्रोक्सेन (दानशोलतपभावना	_	(हिo) ६o,	402	
**		(हि॰) (ने १	¥£0	दानशीलतपभावना का	वीढाल्या स	म यपु न्द्रगवि		
दशनकाराष्ट्रतकथा	भुतसागर	(सं०) (कः)	२२७			(fg0)	२२ =	
दशसभाग्दसम्बा	खुशासचन्द	(f g∘)	380	दिल्ली की बादशाहतक	स्थौरा —	(fg•)	730	
	० ज्ञानसागर	(fg∘)	430	दिल्लीके बाबचाहों पर	कविस	(ig∘)	oxe	
वगसभागावतक्या		(f €∘)		दिल्ली नगरकी बसापत	तया बादशाहत	का स्पीरा	****	
	जिनचम्द्रसूरि -	(者=)	Aes			(f ij•)	GEX	
दशसकाराजतीचापनपूज	म् या तसागर	(सं∘)	Au S	विल्ली राजका व्यौरा		(Re)	320	
		ZYo,	5 \$4	रीक्षागटम		(∉•)	\$08 ·	,
वसमझामदोका पनपूज	-	(4.)	283	वीत्रमात्रिका निर्याय	,—	(Re)		
and the second	1	. 3				, ,	, ,	•

	er u	1. 1					
*. '	eș.]					{ 9	म्या नुकारिका
,	मन्यनाम	सेवक	भाषा पृष्ठ	संध	प्रन्थनाम	तेसक	भाषा प्रश्व सं०
	बीपावतारमञ्ज	(ŧ	io) XUZ,	५७६	देवागमस्तोत्रभाषा		हि॰ यद्य) ३६६
100	दुवारसविधानक	मा अधुनि विनयचन्द्र	(च प०)	२४४	देवाप्रमस्तोत्रवृत्ति	आगुभा [शिष	विजयसेनसूरि]
	पुर्व इकाव्य	_	(4,•)	१७१			(सं०) ३६६
	बुर्लभागुत्रे का	_	(মা৽)	६३७	देवीसूक्त	-	(सं०) ६०८
200	देशकीटास	रतनचन्द	(हि∘)	**•	देशों [भारत] के न	н —	(हि॰) ९७१
3	देवकीडास	ब्र्एक्र्स्य कासलीवाल	(修)	¥\$£	देहलीके बादशाहोंकी	। नामावली एवं परि	
٠, ،	वैवतास्तुति	पद्मनिन्	(हि∘)	¥3 <i>§</i>			(हि॰) ७४३
	देवपूजा	इन्द्रनन्दि योगीन्द्र	(₹•)	¥€0	देहलीके बादवाहोके	परगनींके नाम —	(ह ∘) ६८०
	वेवपूजा		(ਚं•)	४१५	देहलीके बादशाहोंका	व्यौरा —	(हि॰) ३७२
		१६४, ६ ०	પ, હરપ,	\$\$0	देहलीके राजाओंकी		(हि०) ६८०
	देवपूजा		(हि॰ सं॰)	४६६,	दोहा	कवीर	(हि०) ७६९
				808	दोहाप:हुड	रामसिंह	(প্রব•) ६•
	देवपूजा	द्यानतराय	।हि॰)	46	दोहाशतक	-	हि०) ६७३, ७४०
	देवपूजा	_	(हि∘)	€8€	दोहासम्रह	नानिगराम	(हि•) ६२३
		₹७•, <i>५</i>	०६, ७३४,	७४८	दोहासंग्रह		(हिं।) ७४३
	वेवपूजाटीका	-	(सं∘)	460	चानतविलास	धानतराय	(हि०) ३२ ८ (─) ३२
	देवपूजाभाषा	जयचन्द छ।बड़ा	(fg•)	860	द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्राचाये द	(प्रा०) ३२
	वेवपूजाष्टक	-	(स∘)	६५७		X3X, 4	e, 044, 088
	देवराज बच्छरा	न नौपई सोमदेवस् रि	(हि∙)	२२=	द्रव्यसंग्रहटीका		(सं०) ३४, ६६४
	वेवलोकनक्या	, –	(सं∘)	२२८	द्रव्यसम्बह्गाया भाषा		ē∘) ⊍XX, 4=8
	डेबझास्त्रगुरुपू ज	। ब्याराधर (सं०) ६३६	७६१	द्रव्यसंग्रहवालावबोध		(हि॰) ७६१
	वेववास्त्रगुरुपूज		(स∘)	Éoo	द्रव्यसं ब्रह्माया	जयचन्द छ।बङा	(हि॰ पद्य) ३६
	देवशास्त्रगुरुपूज	-	(हि∘)	५६२	द्रव्यसंग्रहभाषा	जयचन्द झाबडा	(हि॰ गष्ट) ३६
	देवसिखपूजा	_	(सं∙)	852	द्रव्यसंग्रहभाषा	बा॰ दुक्षीचन्द	(हि॰ गष्ट) ३७
		¥8., \$1	ro, EYY,		द्रव्यमंत्रहमाथा	चानतराय	(हि॰) ७१२
	देवसिक्यूजा		(हि॰)	७०४		पनासास चौधरी	(₹•) ३६
	देवागमस्तीत	चा॰ समन्तभद्र	(Ħ°)	168	द्रव्यसंद्रहमाय।	देशराज	(Bo) 1022
		₹ ₹ ₹, ¥₹₹, ₹७			इ व्यसं प्रहमाचा	-	(हि∗) ३ ६
	वेवागमस्तीवश्रा	वा अवजन्त् झावड्।	(ह∙)	184	इञ्चलंग्रह्माणा	पर्वेत धर्मार्थी	(E4+) #5

म्बाञ्चकमविका 📑

	and the same of the	,					-		
	अम्बनाम	तेसक	भाषा	दृष्ट सं ०	प्रम्थनाम	सेसक	यापा क	A Aio	
ış;	द्रव्यसं प्रहृषृति	महादेव	(F0)	ź¥	हारवानुत्रेका		(fg•)	१०१	
	प्रव्यसंप्रहृतृत्ति	प्रभाषम्	(₹∘)	έA			६५२, ७४८,	७६५	
	द्रव्यस्मरूपवर्शन		(सं०)	\$10	हादशोगपूजा		· (4°)	138	
	रष्टांतवतक	-	(सं∘)	\$ 5 e	द्वादशांगपूजा	डास्राम	(हि∘)	X£ \$	
	डादशमाववाटीका		(हि∘)	3.5	£ 1श्चयकाव्य	हेमबन्द्राचार्य	(सं∘)	\$w\$	
	द्वादशमा यन हष्ट्रांत		(गुव०)	₹•€	द्विजयसनस्पेटा	_	(村。)	***	
	द्वावधामाला द	वि राजसुन्दर	(fg=)	9¥\$	हितीयसम्बन्धरण	म ः गुलास	(ۥ)	**	
	द्वादशमासा [बारहमा	क्षा किया राइह्	ुक्दर (हि०)	१७७	क्रिपं चकत्याराकपू जा	-	(सं∘)	४१७	
	द्वादशमासांत चतुर्दशीव	तोखापन	(4;°)	¥ ₹£	हिसंचानकाव्य	घनस्रव	(4°)	101	
	हादशराशिकल		(सं∘)	460	द्विसंघानकाभ्यटीका {	पदकोमुदी] नेहि	।चन्द्र (सं०)	१७२	
	द्वादशवतक्या	पं० सभ्रदेव	(सं∘)	२२=	हिसंधानकाष्यदीका	विनयमन्द	(सं•)	१७२	
			२४६	, YE.	द्विसंघामकाव्यटीका		(₫∘)	१७२	
	इावशद्रतक्या	चन्द्रसागर	(fۥ)	२२८	द्वीपसमुद्रों के नाम		(हि∘)	६७१	
	डादशक्रतकथा		(सं∘)	२२८	हीपायनहास	गुणसागरसूरि	(हि∗)	**•	
	द्वादशत्रतपूजाजयमा ल		(सं∘)	६७६		ਬ			
	द्वादशत्रतमण्डलोद्यापन		(सं∘)	XX.		4			
	डादशवतोचापन		(40) A66	, ६६६	धनदल सेठ की कथा		(f g•)	२२€	
	इावशबतोच्चापन	जगतकीर्त्ति	(सं∙)	134	धन्ताकपालक	_	(₹•)	२२६	
	द्वादसम्रतोचापनपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(सं∘)	¥63	धन्नाचौपई		(fg•)	७७२	
ŧ.	हावशक्तीबा गमपूजा	पद्मनन्दि	(सं∘)	464	धन्नाशसिभद्रचौपई	_	ફિ∘)	२२€	
2	डावसानुत्रेका		(सं०) १०६	, 407	धन्नाशनिभद्ररास	जिनराञ्चसूरि	(fg o)	३६२	
	डाबगानुत्रेका	तस्मीसेन	(4.°)	446	धन्यकुमारचरित्र	षा० गुसभद्र	(š o)	१७२	
	हावसानु प्रेक्षा		(आर)	305	धन्यकुमारवरित्र	त्रः नेमिद्त्त	(₫•)	\$0\$	
	दारवागुत्रेका	जल्हना	(भप॰)	६ २८	धन्यकुमारचरित्र	सक्सकीचि	(₫•)	१७२	
	हायमानुजेशा		(घप•)	. 4 52	वन्यकुमारवरित्र		(सं∙)	ter	
	द्वावशासुत्रेकार	साह बालु	(हि∘)	₹•€	धन्यकुमारचरित्र	सरावचन्द	(Ro) १७३,	450	
	हरपवानुष्रेवा	कवि क्य	(हि॰ पद्य)	305	धर्मधक [मध्यल विश	-		272	
,	अवस् रेता	बोहर	(fg a)	990	वर्गवक्यूवा	- बशोनन्दि	(4.0) AS 5		
\$	granghar	स्रव	(R•)	490	धर्मवस्त्रुवा	साध्र रखनत			٠,
10							• •		
74	Ettingerin (* 15.)	75. A	er war and			•			

_	_				-		-
प्रम्थनास	लेखक	भाषा १	ष्ट सं०	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा प्रश्न र	jo
धर्म पक्ष् यूबा	_	(सं∘)	४६ २	धर्मरासा		(fgo) 31	ęę
		220	, ধ্ৰভ	धर्मरासो		(R.) ६२३, ६u	•
वर्शवन्द्रप्रबंध	धर्म चन्द्र	(গা০)	338	धर्मलक्षरा		(सं∘) १	12
वर्षेवाह		(हि॰)	७२७	धर्मविलास	वानतराय	(हि०) ३२८, ७१	٠
धर्मकाहना		(हि॰)	4 8	धर्मशर्माभ्युदय स	हाकवि हरिश्चन्य	(सं०) १७	٧
धर्मतस्गीत	जिनदास	(हि०)	७६२	धर्मशर्माम्युदयटीका	यशःकीर्त्ति	(सं॰) १७	¥
धर्मदशावतार नाट	क	(40)	३१७	धर्मशास्त्रप्रदीप		(सं∙) ६	ŧ
धर्म दुहेला जैनी व	हा[त्रेपन क्रिया]	(हि॰)	€\$=	धर्मसरोवर जे	ोधराज गोदीका	(f₹o) ६	ŧ
धर्मपर्न्यासी	चानतराय	(हि॰)	७४७	धर्मसार [चौपई] व	ं० शिरोमशिदास	(हि०) ६३, ६६	E
धर्मपरीक्षा	व्यमितिगति	(सं०)	3 % %	धर्मसंग्रहश्रावकाचार		(सं०) ६	
धर्मपरीक्षा	विशासकीर्त्त	(हि॰)	७३५	धमसप्रहश्रावकाचार		(सं•) €	
धर्मपरीकाभाषा	प्रनोहरदास सोनी	\$ X &	७१६	धर्मसग्रहश्रावकावार		(हि॰) ६	
धर्मपरीक्षाभाषा	दशस्य (नगोत्या (हि० ग०)	3 ⊻ €	धर्माधर्मस्वरूप		(हि ०) ७०	•
धर्मपरीक्षाभाषा	 (f₹	o) 345,	७१०	धर्मामृतसूक्तिमंग्रह	श्राशाधर	(सं०) ६-	¥
वर्मपरीक्षारास	८० जिनदास	(हि॰)	३१७	धर्मोपदेशपीयूषश्रःवन	ध नार सिंहनन्दि	(#io) E	¥
धर्मपंचविषातिका	त्र० जिनदास	(fg。)	εę	धर्मो पदेशश्रावकावार	अमोधवर्ष	(सं०) ६:	
धर्मप्रदीपभाषा	पन्नाताल संघी	(हि॰)	६१	धर्मो पदेशश्रावकाचार	व्र॰ नेमिद्त्त	(#o) \$1	
धर्मप्रक्नोत्तर	विमलकीर्त्त	(सं०)	Ę?	धर्मो ।देशश्रायकाचार		(#o) \$1	,
धर्मप्रश्नोत्तर		(हि॰)	Ę Į	भर्मोपदेशसंग्रह	संवारामसाह	(fe•) ev	f
धर्मप्रक्तोत्तर श्रावन	तवारभाषा —	(सं∘)	ę٠	धवल		(সা০) ইঙ	,
धर्मप्रकोत्तर श्रावन	गवार भाषा चम्पारास	(fe o)	48	धातुपाठ	हेमचन्द्राचार्व	(सं०) २६०	,
वर्मप्रश्लोत्तरी		(हि॰)	48	धातुपाठ		(सं०) २६०	,
धर्मबुद्धि बीपई	कालचन्द	(हि॰)	२२६	धातुप्रत्यव		(सं•) २६१	
धमंबुद्धि पाप बुद्धिः	क्या —	(मं०)	२२६	ধা নুৰুণাৰলি	_	(सं०) २६१	
वर्मबुद्धि मंत्री कवा	बृन्दाबन	(庵。)	२२६	घू बीला		(fgo) 400	
वर्गरलाकर	पं॰ मगल	(#io)	42	श्रीधूचरित्र		(fgo) was	
धर्मरसायन	पद्मनंदि	(*IF)	42	ब्बजारोपस्तुत्रा	_	(#i+) X ? ?	
धर्मरसायम	_	(4•)	42	म्बजारोपस् मं त्र		(44) ASS	
धर्मरास [भावकावा	π] —	(fg.)	1 500	म्बजारीपसुदंब		(4.e) AES	
						10.3 40.5	

1

	•					_	
प्रन्थनाम	शेखक	भाषा पू	ष्ठ सं०	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	еij
ध्वजारोपग्गुविधि	भाशाधर	(स∘)	YE 2	नन्दीश्वरपूजा	- ((प्रा०) ४६३,	७०५
ध्यजारोपस्त्रविधि	-	(मं॰)	YER	नन्दीश्वरपूजा	_	(নঁ০ সা০)	₹9¥
ब्वजारोह स्विधि		(#°)	88 8	नर्न्दाश्वरपूजा		(ग्रस्थ)	¥€3
	न			नन्दीश्वरपूत्रा		(हि॰)	¥€ ₹
नस्रशिवकर्णन		/6- · \		नन्दीश्वरपूजा जयमान	-	(मं •)	. ક્રપ્રેજ
	केशवदास	(हि∘)	५७७२	नन्दीश्वरपूजाविधान	टेकचन्द	(हि॰)	45 4
नसशिखवर्गान		(हि्०)	७१४	नन्दीश्वरपक्तिपूजा	पद्मनन्दि	(सं०)	६३६
नगरस्थापनाकास		(हि०)	৬५•	नर्न्दाश्वरपक्तिपूजा		(सं०)	£38
नगरों की बसापन व						484 ,	७६३
į	रुनि कनककेर्ति	(हि॰)	५६१	नन्दीश्वरपन्तियूगा		(हि॰)	£3¥
ननद भोजाई का अर	गड़ा	(हि॰)	७४७	नन्दीश्वरभक्ति		(# °)	६३३
नन्दिताद्भाष्ट्रंद		(গাৎ)	₹\$0	नन्दीश्वरभक्ति	पश्च (जान	(हि॰) ४६४,	የጀ ቀ
नन्दिषेशा महामुनि स	रज्ञाय —	(हि॰)	387	नन्दीश्वरविधान	जिनेश्वरदा स	(हि॰)	¥\$¥
नन्दीश्वरतद्यापन	_	(सं∘)	४३७	नन्दीश्वरविधानकथा	हरिषेश	(सं०) २२६,	* \$ *
नन्दं।ध्वरकथा	भ० शुभचन्द्र	(सं ॰)	२२६	नर्न्दाश्वरविधानकथा		(सं०) २२६,	२४६
नन्दीश्वरत्रयमान		(सं॰)	463	नन्दीश्वरव्रत्तविधःन	टेक्चन्द	(हि०)	४१८
नन्दें हव र जयमाल		(সা৹)	€\$€	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	भ नन्तकीर्त्त	(ŧio)	¥\$¥
नन्दीरवरजयमाल	कनककीर्त्त	(झप०)	५१६	नन्दोश्वरव्रतोद्यापनपूजा	नन्दिषेग्	(ep)	¥8¥
नन्दीश्वरजञ्चमान	_	(য়ঀ৹)	¥ £₹	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा		(सं०)	¥8¥
नर्नाहबरद्वोपपूजा	रत्ननन्दि	(सं०)	¥8	नन्दी श्वरत्रतोद्या पनपूजा	_	(iĝo)	¥8¥
मन्दीश्वरद्वीपपूजा		(सं∘)	₹3¥	नन्दीश्वरादिभक्ति		(সা•)	६२७
		६०१	, ६५२	नान्दीसूत्र		(সা৹)	ξo
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	_	(oir)	ĘXX	नन्दूससमीवतीद्यापन	_	(4;•)	¥8¥
नन्नीश्वरद्वीपपूजा	धानतराय	(हि०) ४१६	, 457	नमस्कारमन्त्रकरूर्ववध	सहित सिंहन	देद (सं०)	386
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	मङ्गल	(हि॰)	£3¥,	नमस्कारमन्त्रसटीक		(सं० हि०)	६०१
नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि		(सं∘)	४७६	नमस्कारस्तोत्र		(₹•)	४२५
नन्दीश्वरपूजा	सक्तकीर्त्त	(⋪∘)	१३७	नमिऊस्पस्तोत्र		(गा॰)	8=8
नन्दीश्वरपूजा		(सं∘)	464	नवचक	देवसेन	(eIR)	\$ \$ ¥
ųt	¥, 400, 4 ¥¥,	444, 488	yo¥	। नयवक्रटीका	_	· (fgo)	\$ = \$

मन्थनाम	सेखक	भाषा पृष्ठ	मं ः	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा प्र	ु सं∘
नयसक्रभाषा	हेमराज	(हि॰)	१३४	नवग्रहपूजाविधान	भद्रबाहु	(सं०)	¥8¥
नयत्रक्रभाषा	-	(हि॰)	१३४	नवग्रहस्तोत्र	वेद्व्यास	(सं ०)	ere
नरकदु:सवर्शन [दोहा) भूधरदास	(।ह०)	ĘX	नवग्रहम्तोत्र	_	(सं०	¥\$0
	•	७६०,	9==	नवग्रहस्थापनाविधि		(सं∘)	६१२
नरकवर्णन		(हि०)	Ę¥	नवतत्वगाया	_	(∘।प्र)	₹७
नरकस्वर्गकेयन्त्र पृथ्वी	म्रादिका वर्शन —	- (हि॰)	६५२	नवतत्वप्रकरश	_	(সা৹)	७३२
नरपतिजयचर्चा	नरपति	(सं∘)	२न४	नवतत्वप्रकरसा	तदमीबल्लभ	(हि०)	₹७
नल दमयन्ती नाटक		(सं∘)	३१७	नवतःवव बनिका	पत्रालाल चौधरी	(f∉∘)	₹¤
नलोदयकाव्य	कालिदास	(सं∙)	१७४	नवतत्त्रवर्गान	_	(हि॰)	35
ननोदयकाव्य	माणिक्यसूरि	(सं०)	१७४	नवतत्वविचार	_	(f70)	६१६
नवकारकल्य	-	(सं∘)	388	नवतत्वविचार		(हि०)	₹⊏
नवकारपैतीसी		(स०)	इहह	नवपदपूजा	देवचन्द	(fg o)	હફે હ
नवकारपैतीसीपूजा		(स०)	४३७	नवमङ्गल	विनोदीलाल (सि	ξο) ξ αχ	ऽ३४
नवकार बड़ो विनती	ब्रह्म देव	(हि॰)	६५१	नवरत्नकवित्त		(मं∘)	३२६
नवकारमहिमास्तवन	जिनवज्ञभसृरि	(हि॰)	६१८	नवरत्नकवित्त	बनारसीदाम	(f₹∘)	७४३
नवकारमन्त्र	_	(सं •)	४३१	नवरत्नकवित्त	-	(हि॰)	७१७
नवकारमन्त्र	_	(प्रा०)	\$₹₽	नवरत्नकाव्य		(मं०)	१७४
नवकारमन्त्रवर्चा		(हि∘)	७१६	नष्टोदिष्ट		(4°)	ĘĶ
नवकाररास	श्रवतकीर्त्ति	(हि॰)	éko	नहनसीपाराविधि		(हि॰)	२६६
नवकाररास		(हि॰)	३६२	नामकुमारचरित्र	धर्मधर	(₹ ∘)	१७६
नवकाररासी		(हि∘)	७४४	नागकुम।रचरित्र	मझिषेगुसृरि	(सं०)	१७५
नवकारश्रावकाचार		(গা৽)	ĘX	नागकुमारचरित्र	_	(सं०)	3e. 9
नवकारसज्भाय	गुणप्रभसूरि	(हि॰)	६१८	नागकुमारचरित्र	उद्यक्ताल	(हि∘)	१७६
नवकारसज्ञाय	पद्मराजगिषा	(हि॰)	६१८	नागकुमारचरित्र		(हि॰)	१७६
नवग्रह [मण्डलवित्र]	_		५२५	नागकुमारचरितटीका	प्रभाचन्द्	(सं∘)	१७६
नवग्रहर्गाभतपार्श्वनाथ	स्तवन	(सं∘)	६०६	नागमंता	— (fi	र १० राज०)	
नवपहगभितपादर्वस्तोः	-	(সা৽)	७३२	नागनीला		(fgo)	FEX
नबग्रहपूजा		(स∘)	X£X	नागश्रीकथा	त्र० नेमिद्त्त	(₹ø)	792
नवग्रहपूजा		(७इ०)	* 54	नागश्रीकथा	किशनसिंह	(Ro)	230

```
मन्थानुकमिका ी
                                                                                    [ SAK
                       तेसक
                                 भाषा पृष्ठ सं०
                                                                      सेख ह
  प्रस्थताम
                                                 प्रस्थनाम
                                                                                भाषा पृष्ठ सं०
                                                नित्यनियमपूजा सदासम्ब कासलीबाख (हिं) ४६६
                    विनयचन्द
                                  (हि॰) ४४१
 नागश्रीसण्काय
                                                                                 (हि॰) ७१२
                  बनारसीवास
 नाटकसमयसार
                                  (fgo) $80
                                                निस्यनियमपु जासंग्रह
             ६४७, ६=२, ७२१, ७४०, ४६१, ७७६
                                                नित्यनैमित्तिकपूजापाठ संग्रह
                                                                                  (मं०) प्रश्
 नाडीपरीक्षा
                                  23€ (vit)
                                                नित्यगाठसंग्रह
                                                                               (सं० हि०) ३६८
                                    ६०२, ६६७
                                                नित्यपू जा
                                                                                  (सं०) ५६०
 नांदीमञ्जलपुजा
                                  (सं०/ ५१८
                                                                              44x, 48x, 480
 नाममाना
                      धनस्य
                                  (सं०) २७४
                                                निस्ययुका
                                                                                 (唐0) ¥8年
  २७६, ४७४, ६८६, ६८६, ७०१, ७११, ७१२, ७३६
                                                नित्यपुजाजयमाल
                                                                                 (हिं०) ४६६
                 वनारसीवास
                                                                          --- (सं० हि०) ६६३
नाममाला
                                  (Ro) २.5
                                                नित्यपू जापाठ
                                    €0€, 3EY.
                                                                                    ७०२, ७१५
नाममञ्जरी
                                                नित्यपुजापाठमंग्रह
                    नन्दरास (हि॰) ६६७ ७६६
                                                                         -- (प्रा० सं०) ६९४
नायिकालक्षरा
                   कवि सन्दर
                                  (Bo) . 369
                                                नित्यपू बाराठमंग्रह
                                                                                 (सं०) ६६३
नायिकावर्शन
                                  (हि०) ७३७
                                                निन्यपु जा गाठसं प्रह
                                                                                 (ぜo) 0000
नारचन्द्रज्योतिषद्यास्त्र
                                  (सं०) २८४
                      नारचन्द्र
                                                                                    ७७५, ७७६
नारायगुक्तवच एवं शहर
                                  (सं०) ६०८
                                                नित्यपु जामं ग्रह
                                                                         — (সাং মণং) ४१৬
नारीरासो
                                  (রি০) ৩২৩
                                                निस्य जामग्रह
                                                                             (#o) YEU, UE3
नासिकेतपुरास
                                 (ছি০) ৩৪৩
                                                निन्यवदनासामा यह
                                                                          -- (सं० प्रा०) ६३३
नासिकेतोपास्यान
                                 (fec) uso
                          __
                                                निमित्तकान [भद्रवाहु सहिता] अद्रवाह
                                                                                 (मं∘)
                                                                                         २६४
निषंद्
                                  (do) 266
                                                नियमनार
                                                               भाः कन्द्रकृत्द
                                                                                 (সা০)
                                                                                          35
निजन्मति
                   जयतिलक
                                  (Ho)
                                          35
                                                नियममारटीका पद्माप्रभमलधारिदेव
                                                                                 (सo)
                                                                                          35
निजामिए
                 म० जिनदास
                                 (हि॰)
                                          ξX
                                                निरय।वर्लाम् अ
                                                                                 (গা॰)
                                                                                          ₹5
नित्य एवं माद्रपदपूजा
                                  (सं०) ६४४
                                               निरञ्जनशनक
                                                                                 (हि॰) ७४१
नित्यकृत्यवर्शान
                              (Ro) EX. YEX
                                               निरञ्जनस्तोत्र
                                                                                 (सं०) ४२४
नित्यक्रिया
                                               निर्भारपश्चमात्वधानकथा विजयचन्द्र (मप०) २४५, ६२८
                                 (सै०) ४६४
नित्यनियम के दोहे
                                 (Bo) 494
                                               निर्दोषसप्तमीवथा
                                                                                 (बप०) २४५
नित्यनियमपूजा
                                               निदीयमसमीकवा पांडे हरिक्रदश
                                 (40) KEX
                                                                                 (Bo) 488
                                   202, $ 98
                                               निदोषसप्तर्भावनकथा
                                                                  अंद रायमञ्ज (स०) ६७६, ७३६
नित्यनियमपुजा
                              (सं ० हि ०) ४३६ निर्माल्यदोषवर्शन
                                                              बा० दुलीचन्द
                                                                                  (fg o )
                                   ४६७, ६८६ | निर्वाशक्त्यासक्त्रुजा
                                                                                 (सं०) ४६८
```

-44 1							
प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष	ुसं∘	प्रन्थ ना म	लेखक	भाषा प्र	ष्ठ सं०
निर्वारणकाण्डगाथा	-	(প্রা৽)	₹8=	नीतिवाक्यामृत	सोमदेवसूरि	(सं∘)	330
¥78, ¥38, X3	६, ६२१, ६२८,	६३५, ६३८,	६६२,	नीतिविनोद	-	(हि॰)	₹₹0
₹७०, ६ ६४, ७१	६, ७४३, ७७४,	७८८, ७६६		नीतिशतक	भन्°इरि	(सं • '	३२€
निर्वा सकाण्डटीका		(sie eir)	3 3 €	नं तिगास्त्र	चाग्वय	(सं०)	७१७
निर्वासकाण्डपुजा		(+0	¥8 =	नीतिसार	इन्द्रनन्दि	(सं∘)	3 ≥ €
निर्वासकाण्डभाषा	भैया भगवतीता	स (मं०)	33€	र्नातिसार	चाग्रक्य	(सं०)	ÉER
¥₹₹, ¥₹€, ¥¥			ξο Χ,	र्नातिसार		(सं०)	३२६
€8¥, ¥€¥, € £				नीलवण्डताजिक	नीलकंठ	(मं∘)	२८४
930, 989	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	,	·	नीतमूक	-	(सं०)	330
निर्वासकाण्डभाषा	संवग	(हि०)	355	नेमिगीत	पासचद	(हि०)	**\$
निर्वाशक्षेत्रपुजा		(हिं°) ४६६.	प्र१=	नेमिगीत	भूधरदास	(हि॰)	४३२
निर्वासक्षेत्रमण्डलपुत्र	· -	(हि∘)	£83	नेमिजिनदच्याहलो	खेतसी	(हिं०)	६३५
निर्वासपुत्रा	-	(स०	¥88	नेभिजिनस्तवन स्	ुनि जोयराज	(हि∙)	६१८
निर्वारापुजापाठ	सनरङ्गलाल	(fह°)	358	नमित्रंकाचरित्र	श्रागन्द	(fg o)	१७६
	-	(Fo)	٤ų	नांमश्रीका लहुरी	विश्वभूषण	(हि <i>०</i>)	3e.e
निर्वागभक्ति	- manual	35¢ (6H)	, E \$ 3	नामद्वकाव्य स	ाकवि विक्रम	(सं∘)	१७६
निर्वाणभक्ति प	झालाल चौधरी	(fa o)	620	नेमिनरे-इस्तोत्र	जगनाथ	(मं०)	338
निर्वागमिक	_	(हि॰)	338	नमिनायएकाक्षरीस्तोत्र	पं० शालि	(₹io)	४२६
निर्वाणभूमिम ङ्गल	विश्वभूषस्	(fze)	\$ \$ \$	नेमिनायका बारहमासा	विनोदीलाल	तालचन्द	
निर्वासमादकनिर्गय	नेसिद्दास	(tg。)	દય			(हि॰)	ξχυ
निर्वास्पविधि		(मं०)	٤.5	ने।मनाथका बारहमासा	-	(हि॰)	६६२
निर्वागसप्तश्वतीस्तोत्र	-	(मं∙)	33₽	नेमिनाथकी भावना	सेवकराम	(€o)	40 8
निर्वाशस्तोत्र		(मं ०)	38€	नेमिनाथ के दशमव		(हि॰)	१७७
निःशस्याष्ट्रमीकया		(मं०)	२३१			₹00, ७ 0४,	-
निःशल्याष्ट्रमीकथा	ब ० ज्ञानसागर	(fह°)	२२०	नेमिनाण के नवसङ्गल	विनोदीलाल		
नि:शस्याष्ट्रमीकथा	पांडे हरिकृष्ण	(हि॰)	(કર્ય	नेमिनाथ के बारह भव	जना द्!लाल	(हि∙)	***
निशिभो ननकथा	त्र॰ नेसिद्त्त	(स ०)	२३१	नेमिजीकोमञ्जल		(हि∘)	७६०
निशिभोजन कथा		(हि॰)	२३९		जगतभूषरा (भचन्द्राचार्य	(हि॰)	४६७
निवेकाच्यायवृत्ति	_	(Ho)	२६४	नेमिनाथछन्द		(सं∙)	१७७
					शुभवन्द्र	(हि ०)	३८६

त्रेमिनायपुरास प्रश्निक स्वाप्त (सं०) १४० विमायपुरास प्राप्त (ह०) १४६ विमायपुरास प्राप्त (ह०) १४६ विमायपुरा प्राप्त (ह०) १४६ विमायपुरा प्राप्त (ह०) ४६६ विमायपुरा (ह०) ६६६	प्रन्थनाम	सेसक	भाषा दृष्ट	सं०	प्रन्थना म	लेखक	भाषा पृष्ठ	सं॰
वैमिनायपुवा कुबबुख्यप्त (सं०) १२६ वैमिनायपुवा प्रोरेन्द्रकीसि (सं०) ४२६ वैमिनायपुवा — (हं०) ४२६ वैमिनायपुवाष्ट्रक शंक्र्राञ्च (सं०) ४२६ वैमिनायपुवाष्ट्रक शंक्र्राञ्च (सं०) ४२६ वैमिनायपुवाष्ट्रक शंक्र्राञ्च (हं०) ४५६ वैमिनायपुवाष्ट्रक एदराल (हं०) ४५६ वैमिनायपुवाष्ट्रक (एद०) ४५६ वैमिनायपुक्त (हं०) ४५६ वैमिनायपुक्त लालचन्द (हं०) ४५६ वैमिनायपुक्त (हं०) ४३२ वैमिनायपुक्त लालचन्द (हं०) ४५६ वैमिनायपुक्त किव ठक्क्र्रसी (हं०) ६३२ वैमिनायपत प० शाक्ति (हं०) ४५५ वैमीनायपत मिनायपत (हं०) ६६२ वैमिनायपत प० शाक्ति (हं०) ४५० वेमीनायपत (हं०) ६६२ वैमिनायपत प० शाक्ति (हं०) ६६२ वेमीनायपत (हं०) ६६० <tr< td=""><td>नेमिनाचपुरास</td><td>म० जिनदास</td><td>(⋪•)</td><td>180</td><td>नेमिराजुलगीत</td><td>जिनहर्षसूरि</td><td>(হি॰)</td><td>६१८</td></tr<>	नेमिनाचपुरास	म ० जिनदास	(⋪•)	180	नेमिराजुलगीत	जिनहर्षसूरि	(হি॰)	६१ ८
नैमिनायपुत्रा सुरेन्द्रस्तीति (तं०) ४१६ नैमिनायपुत्रा — (हि०) ४१६ नैमिनायपुत्रा — (हि०) ४१६ नैमिनायपुत्राहरू रासूरास (तं०) ४१६ नैमिनायपुत्राहरू रासूरास (तं०) ४१६ नैमिनायपुत्राहरू — (हि०) ४६६ नैमिनायपुत्राहरू — (हि०) ४६६ नैमिनायपुत्राहरू — (हि०) ४५६ नैमिनायपुत्राहरू — (हि०) ४५६ नैमिनायपुत्र ना सारहमामा — (हि०) ४१६ नैमिनायपान्न ना सारहमामा — (हि०) ४१६ नैमिनायपान्न ना सारहमामा — (हि०) ६६६ नैमिनायपान्न ना सारहमासा — (हि०) ६६६ नैमीनायपान्न ना सारहमासा (हि०) ४६६ नैमीनायपान का रह्मिती (हि०) ४६६ नैमीनायपान का रह्मितीय क	नेमिनाबपुरासा	भागचन्द	(हि∘)	146	नेमिराजुलगीत	भुवनको चि	(हि॰)	६१८
तेमनायपुत्राष्ट्र संस्ट्रास (तं०) ४११ तेमनायपुत्राष्ट्र संस्ट्रास (तं०) ४११ तेमनायपुत्राष्ट्र संस्ट्रास (तं०) ४११ तेमनायपुत्राष्ट्र संस्ट्रास (तं०) ४११ तेमनायपुत्राष्ट्र — (हं०) ४११ तेमनायपुत्राष्ट्र — (हं०) ४११ तेमनायपुत्राष्ट्र — (हं०) ४११ तेमनायपुत्राष्ट्र (हं०) ४९१ तेमनायपुत्राप्त लालवन्द (हं०) ६९१ तेमनायपुत्राप्त ऋषि द्रास्त्राच — (हं०) ६११ तेमनायपुत्राप्त ऋषि द्रास्त्राच — (हं०) ६११ तेमनायपुत्राप्त ऋषि द्रास्त्राच — (हं०) ६११ तेमनायपुत्राप्त ऋषि द्रास्त्राच (हं०) ६११ तेमनायपुत्राप्त ऋषि द्रास्त्राच (हं०) ६११ तेमनायपुत्राप्त कर द्रायपुत्रास (हं०) ६१६ तेमनायपुत्राप्त कर द्रायपुत्रास (हं०) ६१६ तेमनायपुत्राप्त व्यवस्त्राच व्यवस्त्राच व्यवस्त्राच त्राप्ताच कर द्रायपुत्राच (हं०) ६१६ तेमनायपुत्राच व्यवस्त्राच व्यवस्त्रच व्यवस्त्रच व्यवस्त्रच व्यवस्त्रच व्यवस्त्रच व्यवस्त्रच व्यवस्त्रच व्	नेमिनायपूजा	कुबतायचन्द	(सं॰)	७६३	नेमिराजुलपृषीसी	विने।दीलाल (हि॰) ४४१,	6.26
तेमनायपुत्राष्ट्रक रांभूराम (तं०) ४६६ नेमनायपुत्राष्ट्रक — (ह०) ४०० नेमनायपुत्राष्ट्रक — (ह०) ४६६ नेमनायपुत्राष्ट्रक — (ह०) ४६६ नेमनायपञ्जन लालवन्द्र (ह०) ४०० नेमनायपञ्जन लालवन्द्र (ह०) ४०० नेमनायपञ्जन लालवन्द्र (ह०) ४६६ नेमनायपञ्जन लालवन्द्र (ह०) ६६६ नेमनायपञ्जन का बारहमावा — (ह०) ४६६ नेमनायपञ्जन का बारहमावा — (ह०) ६६६ नेमनायपञ्जन का बारहमावा का द्रव्याक्ष (ह०) ६६६ नेमनायपञ्जन का बारहमावा विकास का द्रव्याक्ष (ह०) ६६६ नेमनायपञ्जन व्यवस्थ (ह०) ६६६ नेमनायपञ्जन व्यवस्थ (ह०) ६६६ नेमनायपञ्जन का बारहमावा व्यवस्थ (ह०) ६६६ नेमनायपञ्जन हिर्चवाद्रपञ्जन (ह०) ६६६ नेमनायपञ्जन का व्यवस्थ (ह०) ६६६ नेमनायपञ्च का व्यवस्थ (ह०) ६६६ नेमनायपञ्जन का व्यवस्थ (ह०) ६६६ नेमनायपञ्जन का व्यवस्थ (ह०) ६६६ नेमनायपञ्च विवस्य व्यवस्थ (ह०) ६६६ नेमनायपञ्च विवस्य विवस्य विवस्य (ह०) ६६६ नेमनायपञ्च विवस्य विवस्य विवस्य विवस्य विवस्य (ह०) ६६६ नेमनायपञ्च विवस्य विवस्य विवस्य विवस्य (ह०) ६६६ नेमनायपञ्च विवस्य विवस्	नेमिनायपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्त	(सं∘)	93Y	नैमिराजुलसज्काय	-	(fae)	¥ / ₹
नेमिनायपुज्जकृष्ट — (हि॰) ४१६ नेमिनायपुज्जकृष्ट (हि॰) ४०० नेमिनायपुज्जकृष्ट लालवण्ड (हि॰) ४०० नेमिनायपुज्जकृष्ट लालवण्ड (हि॰) ४०० नेमिनायपुज्जकृष्ट लालवण्ड (हि॰) ४०१ नेमिनायपुज्जकृष्ट कार्याह्मा — (हि॰) ४१६ नेमीनायपुज्जकृष्ट कार्याह्मा — (हि॰) ४१६ नेमीनायपुज्जकृष्ट कार्याह्मा (हि॰) ४१६ अ१० नेमीनायपुज्जकृष्ट कार्याह्मा (हि॰) ४१६ नेमीनायपुज्जकृष्ट कार्याह्मा (हि॰) ४१६ नेमीनायपुज्जकृष्ट कार्याह्मा (हि॰) ४१८ नेमीनायपुज्जक्षा कार्याह्मा हिण्याह्मा	नैमिनायपूजा	_	(हि∘)	33 4	नेभिरासो	-	(हि॰)	७४१
नेमिनायमञ्जल लालचन्द्र (हि॰) ७४६ नेमिनायमञ्जल लालचन्द्र (हि॰) ६०४ नेमिनायमञ्जल लालचन्द्र (हि॰) ६०४ नेमिनायमञ्जल लालचन्द्र (हि॰) ६०४ नेमिनायमञ्जल लालचन्द्र (हि॰) ६९६ नेमीन्यस्त्रीचन्त्र चिम्मुर राजमनिनेलि कि उनकुरसी (हि॰) ६९६ नेमीन्यस्त्राच प्रशासित (सि॰) ७६६ नेमीन्यस्त्राच मेमीन्यन्द्र (हि॰) ६९६ नेमीन्यस्त्राच प्रशासित (सि॰) ७६६ अर्थ नेमीन्यस्त्राच प्रशासित (हि॰) ७६६ अर्थ नेमीन्यस्त्राच प्रशासित (हि॰) ७६६ अर्थ नेमीन्यस्त्राच प्रशासित (हि॰) ७६६ नेमीन्यस्त्राच प्रशासित (हि॰) ७६६ नेमीन्यस्त्राच प्रशासित (हि॰) ७६६ नेमीन्यस्त्राच हिंदी प्रशासित (हि॰) ७६६ नेमीन्यस्त्राच प्रशासित (हि॰) ७६६ नेमीन्यस्त्राच हिंदी प्रशासित हिंदी प्रशासित हिंदी (हि॰) ७६६ नेमीन्यस्त्राच हिंदी प्रशासित हिंदी प्रशासित हिंदी (हि॰) ७६६ नेमीन्यस्त्राच हिंदी प्रशासित हिंदी प्रशासित हिंदी प्रशासित हिंदी प्रशासित हिंदी (हि॰) ६६६ नेमीन्यस्त्राच हिंदी प्रशासित हिंदी (हि॰) ६६६ नेमीन्यस्त्राच हिंदी प्रशासित हिंदी (हि॰) ६६६ नेमीन्यस्त्राच हिंदी हिंदी हिंदी हिंदी हिंदी हिंदी नेमिन्यक्रवाह हिंदी हिंदी हिंदी हिंदी नेमिन्यक्रवाह हिंदी हि	नेमिनायपूजाष्ट्रक	शंभूराम	(सं॰)	83¥	नेमिस्तवन ।	जेतसागर गणी	(हि∘)	¥00
नेमिनायमञ्जल लालचन्द (हि॰) ६०४ नेमिनायमञ्जल लालचन्द (हि॰) ६०४ नेमिनायमञ्जल लालचन्द (हि॰) ६०४ नेमिनायमञ्जल का बारहनावा — (हि॰) ६२६ नेमीन्यायमञ्जल का बारहनावा एक रावासञ्जल (हि॰) ६१६ नेमीन्यायमञ्जल का बारहनावा एक स्वास्त्र (हि॰) ६१६ नेमीन्यायमञ्जल का स्वास्त्र वा स्वास्त्य वा स्व	नेमिनायपूजाष्ट्रक		(हि॰)	334	नेमिस्तवन	ऋषि शिव	(fē∘)	¥00
निमनावराजुन का बारहमावा — (हि॰) ७२४ निमायराज ऋषि रामसन्य (हि॰) १६२ निमायराज ऋषि रामसन्य (हि॰) १६२ नेमीधरका बारहमामा स्वतिस्व (हि॰) ६२१ नेमीधरका बारहमामा स्वतिस्व (हि॰) ६२१ नेमीधरका बारहमामा स्वतिस्व (हि॰) ७६२ नेमीधरका वारहमामा स्वतिस्व (हि॰) ७६३ नेमीधरका वारहमामा स्वतिस्व (हि॰) ७६३ नेमीधरका वारा माध्य (हि॰) ७६३ नेमीधरका वारा माध्य (हि॰) ७६३ नेमीधरका वारा स्वतिस्व वार्थ (हि॰) ७६३ नेमीधरका वारा माध्य (हि॰) ७६३ नेमीधरका वार्य माध्य (हि॰) ६३३ नेमीधरका वारा माध्य होने एक होने होने (हि॰) ६३३ नेमीधरका वारा माध्य होने एक होने (हि॰) ६३३ नेमीधरका वारा माध्य होने एक होने होने होने होने होने होने होने होने	नेमिनाथफागु	पुरुवरह	(हि॰)	9¥5	नैमिस्तोत्र		(सं ०)	¥ ₹₹
नेमानापरास ऋषि रासचन्द्र (हि॰) १६२ नेमीनापरास प्रश्निका पंच्यासि (हि॰) ७१६, ७४२ नेमीनापरास प्रश्निका (हि॰) ७१६, ७४२ नेमीनापरास प्रश्निका (हि॰) ७१६, ७४२ नेमीनापरास प्रश्निका (हि॰) ६६२ नेमीनापरास विश्वयदेवस्ति (हि॰) ६६२ नेमीनापरास विश्वयदेवस्ति (हि॰) ६६२ नेमीनापरास विश्वयदेवस्ति (हि॰) ६६२ नेमीनापरातेष पं॰ रासि (हि॰) ६६२ नेमीनापरातेष पं॰ रासि (हि॰) ६६२ नेमीनपरातेष पं॰ रासि (हि॰) ६६२ नेमीनपरातेष प्रश्निका पं० रासि (हि॰) ७५४ नेमीनपरातेष प्रश्निका पं० नेमिन्द्र (हि॰) १५४ नेमीनपरातेष प्रश्निका प्रश्निका (हि॰) १५४ नेमीनपरातेष प्रश्निका पर्वाप्तिक (हि॰) १६६ नेमीनपरातेष प्रश्निका पर्वाप्तिक (हि॰) १६६ नेमीनपरात्रिका सहाकि (हि॰) १६६ नेमीनपरात्रिका होरी स्वर्तिक (हि॰) ७६६ नेमीनपरात्रुकाविवार प्रश्निका (हि॰) १६६ नेमीनपरात्रुकाविवार प्रश्निका प्रभाव (हि॰) १६६ नेमीनपरात्रुकाविवार प्रश्निका प्रभाव (हि॰) १६६ नेमीनपरात्रुकाविवार प्रश्निका प्रभावन्द्रवेद (सि॰) १६३	नेमिन।यमञ्जल	लालचन्द	(fgo)	६०४	नेमिमुरकवित्त [नेमिम्	(र राजमतिवैलि]	कवि ठक्कु	रसी
नेमिनायस्तात पं० सालि (सं०) ७६० नेमीयरका बारहमामा सेतार्सि (हि०) ७६२ नेमीयाराम प्रवासि (हि०) ७६६ ७६२ नेमीयाराम प्रवासि (हि०) ७६६ ७६२ नेमीयाराम प्रवासि (हि०) ६६० नेमीयारा	नेमिनाथराजुलका स	बारहमासा —	(€0)	७२४			(हि॰)	= # =
नेमिनायरास प्रश्निक्ष (हि॰) ७१६, ७५२ नेमिनायरास प्रक्रिक्ष (हि॰) ७१६, ७५२ नेमिनायरास प्रक्रिक्ष (हि॰) ७१६, ७५२ नेमिनायरास प्रक्रिक्ष (हि॰) ६१८ नेमीयरास विकायरेक्स्यूरि (हि॰) ६१८ नेमीयरास हिंद्रांचना मुनि रतनकीत्ति (हि॰) ७२२ नेमिनायराते पं॰ रासि (सं॰) ६१८ नेमीयराते रास भाउकिव (हि॰) ७३८ नेमिनायराष्ट्र भ्रूपरदास (हि॰) ७७७ नेमिनायराष्ट्र प्रथम प्रश्निक्ष (हि॰) ७३८ नेमीयरावे रास भाउकिव (हि॰) ७३८ नेमिनायराष्ट्र हिंद्रांच्याराष्ट्र हिंद्रांच्यायराष्ट्र हिंद्रांच्यायराष्ट्र हिंद्रांच्यायराष्ट्र हिंद्रांच्याच्यायराष्ट्र हिंद्रांच्याच्याच्याच्याव्याव्याव्याव्याव्याव्यायः हिंद्रांच्याच्याच्याच्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव	नेमिनाथरास	ऋषि रामचन्द	(हि॰)	३६२	नेसीश्वरका गीत	नेमीचन्द	(हि॰)	428
नेमिनायरान रह्नकीचि (हि॰) ६३८ । नेमीन्यरात विश्वयदेवसूरि (हि॰) ६३८ । नेमीन्यरात विश्वयदेवसूरि (हि॰) ६३८ । नेमीन्यरात विश्वयदेवसूरि (हि॰) ६३८ । नेमीन्यरात हिंगाना मुनि रतनकीचि (हि॰) ७३८ । नेमीन्यराह हिंगाना हिंगान हिंगाना हिंगान हिंगाना हिंगान हिंगाना हिंगाना हिंगाना हिंगान ह	नेमिनाथस्तोत्र	पं० शाति	(सं∙)	€ ૪ ૄ	नेमीश्वरका बारहमास	ा खेतसिंह	(हि॰)	७६२
नेमान्यरास विश्ववदेवसूरि (हि॰) ६१२ नेमान्यरता हिंडानता मुनि रतनकीत्ति (हि॰) ७२२ नेमान्यरता विश्ववादातेत्र पं॰ रास्ति (ति॰) ७७० नेमान्यरतेत्र वास्त्र मान्यस्त्र (हि॰) ७३६ नेमान्यरते वास्त्र स्त्र (हि॰) ७३६ नेमान्यरते वास्त्र हिंदान्य (हि॰) ७३६ नेमान्यरत्त्र काम मान्यस्त्र (हि॰) ७३६ नेमान्यरत्त्र काम मान्यस्त्र (हि॰) ७३६ नेमान्यरत्त्र काम मान्यस्त्र (हि॰) ७६३ नेमान्यरत्त्र मान्यस्त्र मान्यस्त्र (हि॰) ७६३ नेमान्यरत्त्र मान्यस्त्र (हि॰) ७६३ नेमान्यरत्त्र मान्यस्त्र (हि॰) ६९४ नेमान्यरत्त्र मान्यस्त्र (हि॰) ६९४ नेमान्यरत्त्र मान्यस्त्र (हि॰) ६९४ नेमान्यस्त्र मान्यस्त्र (हि॰) ६९४ नेमान्यरत्त्र मान्यस्त्र (हि॰) ६९४ नेमान्यरत्त्र मान्यस्त्र (हि॰) ६९४ नेमान्यस्त्र मान्यस्त्र स्त्र नाष्ट्र (हि॰) ६९४ नेमान्यस्त्र मान्यस्त्र (हि॰) ६९४ नेमान्यस्त्र मान्यस्त्र (हि॰) ६९४ नेमान्यस्त्र मान्यस्त्र (हि॰) ६१४ नेमान्यस्त्र मान्यस्त्र स्त्र मान्यस्त्र (हि॰) ६१४ नेमान्यस्त्र मान्यस्त्र स्त्र स्त्	नेमिनाथरास	म॰ रायमञ्ज	(हि॰) ७१६,	७५२	l .	ठककुरसी	(हि॰)	७२२
नेमिनापात्रतेत्र पं शासि (सं ०) १६९ नेमीभारके द्वाप्त्रत प्रध्यकेल् (हि ०) ७६६ नेमीभारके द्वाप्त्रत प्रध्यक्ष (हि ०) ७६६ नेमीभारको रास प्राइक्कि (हि ०) ६६६ नेमीभारको रास प्राइक्कि (हि ०) ६६६ नेमीभारको रास प्राइक्कि (हि ०) ६६६ नेमीभारको रास प्राइक्कि (ह ०) ६६६ नेमीभारको रास प्राइक्कि (ह ०) ७६६ नेमीभारको प्राप्त प्राइक्कि वाप्त्रप्रह (सं ०) १७७ नेमिनवांस्त्रपात्रका प्राप्त (ह ०) ६६६ नेमीभारराष्ट्रप्रका नहीं। स्वेतिस्त्र सांच्य (ह ०) ७६६ नेमीभारराष्ट्रप्रका नहीं। स्वेतिस्त्र सांच्य (ह ०) ७६६ नेमीभारराष्ट्रप्रका नहीं। स्वेतिस्त्र सांच्य (ह ०) ६६६ नेमीभारराष्ट्रप्रका नहीं। स्वेतिस्त्र सांच्य (ह ०) ६६६ नेमीभारराष्ट्रप्रका नहीं। स्वेतिस्त्र सांच्य (ह ०) ६६६ नेमीभारराष्ट्रप्रका नेमीभारराष्ट्रप्रका (ह ०) ६६६ नेमीभारराष्ट्रप्रका प्राप्त (ह ०) ६६६ नेमीभारराष्ट्रप्र प्राप्त (ह ०) ६६६ नेमीभारराष्ट्रप्रका नेमिप्त प्राप्त (ह ०) ६६३ नेमीभारराष्ट्रप्रका प्राप्त प्राप्त (सं ०) ६३३ नेमिराज्यनस्वाका सांच्यक्ष (ह ०) ६६० नेमिराज्यनस्वाका सांच्यक्ष प्राप्त प्	नेमिनाघरास	रक्रकीर्त्त	(हि॰)	Ęŧs	नंगीश्वरकी स्तुति	भूधरदास	(हि॰)	६५०
नैमिनाषाष्ट्रक सूच्ररहास (हि॰) ७७७ नेमीचरको रास साइ-कि (हि॰) ६३६ नेमीचरराण हिरावंषापुराण निर्मावं सिह्न सिह्म सिह	नैमिनाथरास	विजयदेवसूरि	(ફ •)	\$ \$?	नेमीश्वरकाहिडोलना	मुनि स्तनकात्ति	(fg•)	७२२
नेमिनुराण् हिर्बणुराण् विक नेमिन्स (सं०) १४७ नेमिनिराण् महाकवि बाग्भट्ट (सं०) १४७ नेमिनिराण् महाकवि बाग्भट्ट (सं०) १४७ नेमिनिराण् महाकवि बाग्भट्ट (सं०) १४७ नेमिनिराण्यिका — (सं०) १४७ नेमिनिराण्यिका — (हं०) २३१ नेमियराज्यती को भोग्नी — (हि०) ६११ नेमियराज्यती को भोग्नी — (हि०) ६११ नेमियराज्यती को भोग्नी — (हि०) ४४१ नेमियराज्यती को भोग्नी — (हि०) ४४१ नेमियराज्यती को भोग्नी — (हि०) ४४१ नेमियराज्यती कारहणामा — (हि०) '६५७ नेमियराज्यति वारहणामा — (हि०) ६१७ नेमियराज्यति वारहणामा मानिकृत्यु (हि०) ६१० वारहणामा मानिकृत्यु (हि०) १३२ वाराण्यक्रवारहणामा कामन्स्त्रि (हि०) ६१०	नेमिनायस्तोत्र	पं॰ शास्त्रि	(सं∘)	386	नैमीश्वरकेदशभव	ब्रद्ध धर्मकांच	(हि॰)	७३८
नेनीमिनतील महाकवि बाग्भट्ट (सै॰) १७७ नेनीभरका काग प्रत्यसङ्घ (हि॰) ७६३ नेनीभरका काग प्रत्यसङ्घ (हि॰) ७६३ नेनीभरका काग प्रत्यसङ्घ (हि॰) ७६३ नेनीभरका कोगा के कानसागर (हि॰) ६१३ नेनीभरका कोगाविया — (हि॰) ६१६ नेनीभरका कोगाविया — (हि॰) ६१६ नेनीभरका कोगाविया — (हि॰) ४४१ नेनीभरका कागाविया — (हि॰) ६१६ नेनीभका कागाविया — (हि॰) ६१६ नेनीका क्रमीय — (हि॰) ६३३ नेनिका कागाविया कागाविया — (हि॰) ६१६ नोनीका कागाविया कागाविया — (हि॰) ६१६ नोनीका कागाविया क	नेमिनाथाष्ट्रक	भूधरदास	(हि•)	७७७	नेमीश्वरको टास	भा ३ कवि	(हि॰)	5 \$ 5
नेनिमानवीस्परिका — (सं०) १७७ नेनिमानवीस्परिका — (सं०) १७७ नेनिमानवीस्परिका — (सं०) १७७ नेनिमानवीस्परिका — (हि॰) १३३ नेनिमानवास्त को योगी — (हि॰) १११ नेनिमानवासी को योगी — (हि॰) १४१ नेनिमानवासी को योगी — (हि॰) ४४१ नेनिमानवासी को योगी — (हि॰) ४४१ नेनिमानवासी को योगी — (हि॰) ४४१ नेनिमानवासी वारह्यासा — (हि॰) ४४१ नेनिमानवासी वारह्यासा — (हि॰) १६॥ नेनिमानवासीसा सहस्रोकि (हि॰) १३७ नेनिमानवासीसा सहस्रोकि (हि॰) १३३ नेनिमानवासास्त्रोकी गोवीकृत्या (हि॰) १३३ वारह्यासा सानव्यस्त्रोस सानवास्त्रास प्राथमहरूष्टें (सं०) १३३ वारह्यासा सानव्यस्त्रोस सानवास्त्रास प्राथमहरूष्टें (सं०) १३३ वारह्यास्त्रास सानव्यस्त्रोस सानवास्त्रास प्राथमहरूष्टें (सं०) १३३ वारह्यास्त्रास सानव्यस्त्रोस सानव्यस्त्रोस प्राथमहरूष्टें (सं०) १३३	नेमिपुरास [हरिवंद	तपुरासा] व ० नेसि	द्त्त (सं०)	१४७	j	सिहनन्दि	(हि॰)	6
निक्षाहुको — (हि॰) २३१ नेतिस्याहुको माविया — (हि॰) ६१६ नेतिराजनतीका चोमाविया — (हि॰) ६१६ नेतिराजनतीका चोमाविया — (हि॰) ४४१ नेतिराजनतीका गोत द्वीराजन्द (हि॰) ४४१ नेतिराजनतिका गोत द्वीराजन्द (हि॰) ४४१ नेतिराजनतिका राहुकोक्ष (हि॰) १६५७ नेतिराजनतिकास राहुकुक्कि (हि॰) ६१७ नेतिराजनताहुको गोवीकुल्यु (हि॰) २३२ नेतिराजनताहुका साहुक्की सस ताज — (हि॰) ३३०	नेमिनिर्वाण	महाकवि वाग्भट्ट	(सं∘)	१७७	ı	-		670
निवस्त्रमतीका बोमासिया — (हि॰) ५२१ विभिन्नताकत को मासिया — (हि॰) ५२१ विभिन्नताकत को मासिया — (हि॰) ५२१ विभिन्नताकत को बोदी — (हि॰) ५२१ विभाग्यरास मासिया मासिया — (हि॰) ५२१ विभाग्यरास मासियान — (हि॰) ५१५ विभाग्यरास मासियान — (हि॰) ६१७ विभाग्यताक वारहमासा — (हि॰) ६१७ विभाग्यताक वारहमासा — (हि॰) ६१७ विभाग्यताक वारहमासा मासियान — (हि॰) ६१७ विभाग्यताक वारहमासा मासियान — (हि॰) ६१० विभाग्यताक वारहमासा कार्यान हि॰) ६१० व्यायक प्रावस्त्र विभाग्यताक वार्यान वार्यान विभाग्यताक वार्यान वार्या	नेमिनिर्वास्पश्चिका	_	(सं∘)	१७७	1		(हि॰)	300
नियराजमतीका बोमासिया — (हि॰) ६११ नैबीच्यरास सुनि रसजकीचि (हि॰) ७२२ नैबीच्यरास सुनि रसजकीचि (हि॰) ७२२ नैबीच्यरास प्राप्त स्वाप्त	नेविध्याहली		(हि॰)	238	नेमीश्वररा खुलविवाद	त्र० ज्ञानसागर	(हि॰)	₹१३
नैविराजमतीका गीत हीराजन्द (दि०) ४४१ हिए। १४१ हिए। १४४१ हिम्साजमति वारहणसा — (हि०) १६५७ हैमिसाजमति वारहणसा — (हि०) १६५७ हैमिसाजमतिरास राज्ञश्चिक्त (हि०) ६१७ हैमिसाजमतिरास राज्ञश्चिक्त (हि०) ६१७ हैमिसाजमतिरास राज्ञश्चिक्त (हि०) ६१० हैमेसाज्ञलसाहको गोपीकुच्या (हि०) ६१० होमेसाजुज्ञलसाहका प्रभावन्त्रहेव (सं०) १३४	नेमिराजमतीका च	मासिया —		488	नेमीश्वररास र	पुनि रतनकीर्त्ति	(हि॰)	७२२
नैनिराजनित बारहणसा — (हि॰) '६५७ नैमित्तिक प्रयोग — (सं॰) ६३३ नैयराजनिताल राज्युक्ति (हि॰) ६१७ नैयराजनिताल राज्युक्ति (हि॰) ६१७ नैयराजनिताल गोपीकुच्या (हि॰) ६३२ नीयराजनव्याहणी सातग्र — (हि॰) ६३० न्यायकुणुवनित्रका प्रभावन्त्रदेव (सं॰) १३४	नेमिराजमती की धं	ोड़ी —	(हि ॰)	***	वेबीश्वर रा स	त्र० रायमञ्ज	(हि॰)	4.5
मैयिराजनितास राज्युकि (हि॰) ६१७ नैयमवित्य हुपैकीचि (सं॰) १७७ नैयमवित्य नायसहस्या गोपीकुच्या (हि॰) २३२ नीयराजनव्याह्यास आनम्बस्यूरि (हि॰) ६१८ व्यायकुयुवनित्रका प्रभावन्त्रदेव (सं॰) १३४	नेमिराजमतीका गी	त दीरानन्द	(feo)	***	l		६ २ १	, ६३=
नैविराजनव्याहलो गोपीकृष्या (हि॰) २३२ नीविरवां बादशाहकी यस ताज — (हि॰) ३३० नेविराजनवारहणता क्यानम्बस्दि (हि॰) ६१८ ग्याचकुणुववन्त्रिका प्रभावन्द्रदेव (सं०) १३४	नेमिराजनति बारह	मासा	(हि∘)	·4x0	नैमित्तिक प्रयोग		(₹o)	433
नेनिराज्जनबारहमासा आनम्बस्दि (हि॰) ६१८ म्यायकुपुरविन्तका प्रभावन्त्रदेव (सं०) १२४	वैभिराजनतिरास	रत्नशुक्ति	(हि∘)	£ \$ 10	नैपषचरित्र	६र्षकीर्त्त	(4∘)	१७७
	नैमिराजलब्याहलो	गोपीकुज्य	(fg•)	२३२	नौशेरवां बादशाहकी	दस ताज	्हि∙)	₹ ₹•
नैनिराजनिसरकाय समबसुन्दर (हि॰) ६१८ न्यायकुमुददन्त्रोदय अहाकल कु देव (सं०) १३४	नेनिराजुलवारहमा	सा भानम्बस्रि	(हि∗)	Ę ? c	ग्यायकुमुद्य बन्द्रिका	प्रभाषन्द्रदेव	(₩o) १३ ४
	नेमिराजविसण्याय	समयसुन्दर	(fg•)	585	न्यायकुमुदयन्द्रोदय	भट्टा कलङ्कदेव	(do)	₹ ₹ ¥

e\$=]					ſ	प्रम्थानुक	मियाका	
अन्यनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	प्रन्थनाम	तेसक	भाषा	ष्ट्रष्ट स॰	
न्यायदी (का	यति धर्मभूषगा	(सं०)) १३ ४	पञ्चकल्यासाकपूजा	ज़ोटेलाल मित्र	त (हि॰)	100	
न्यायवीपिकाभाषा	संघी प्रभाताल	(हि॰)	१३४	1 "	टेकचन्द	(हि॰)		
न्यायदीपिकाभाषा	सदासुख कासलीवात	я (fę́o)) १३ ५	प≋कल्यासकपूजा	पश्रासास	(fg o)		
न्यायमाला परम	इंस परिवाजकाचार्य	(सं∘)	१३ ५	प ञ्चक ल्यास् कपूजा	भैरवदास	(हि∘)	208	
न्यायशास्त्र		(सं०)	१३४	1	∽रूपचन्द	(हि॰)		
न्यायसार	माधबदेव	(₹∘)	१३ ५	पश्चकत्यासम्बद्धाः -	शिव जी लाल	(हि∘)		
<i>-यामसार</i>		(ぜ∘)	१३५	पञ्चकल्याराकपूजा		हि॰)		
न्यायसिद्धान्त मञ्जरी	भः चृहामग्रि	(सं०)	१३६	1			१, ७१२	
न्यायसिद्धान्तमञ्जरी	जानकीदास	(सं∘)	१३४	पञ्चरत्यासकपूजाष्ट्र	F	(平 0)		
न्यायसूत्र	_	(सं∘)		पञ्चनत्याग्।क [मण्ड			भ्र	
नृसिंहपूजा	_	(हि ॰)		पश्चकल्यासम्बद्धति	·	(भा०)		
र्मुसहावतारचित्र			६०३	पञ्चकत्यासाकोचापन	पुजा ज्ञानभाषका			
न्हबराम्रारती	थिरूपाल	(हि॰)	999	पश्चकुमारपूजा		(हिं०) ५०		
न्हवरामञ्जल	वसी	(हि•)	999	पश्चक्षेत्रपालपूजा	गङ्गादास			
न्ह् बरम् विध	— (सं	io) * \$	¥, Ę ¥o	पश्चन्नेत्रपालपूजा	सोमसेन			
	q			पश्चस्थारम		(মা০)		
य ञ्च करताव इतिक	पुरेश्वराचार्य	(₹i∘)	२६१	पश्चगुरुक्त्यारापूत्रा	शुभचन्द्र	(Ho)	414	
पञ्चन त्याग्।कगाठ	- ह/चन्द्	(हि॰)		पद्मगुरुको जयमाल	अन्य प्र अन्य समझ	(हि॰)	983	
पेश्वक त्यासम्बद्धाः	इश्चिन्द	(fee)		पञ्चतरवधारणा	(1446)	(संo)	\$ · E	
पञ्चकल्यासम्बद्धाः	_	(#o)	488	पश्चतन्त्र	पं॰ विष्णुशर्मा	(年4)	330	
प ञ्च क्त्यास् कपू जा	चर समिस	(₹io)	400	पञ्चतनत्रभाषा	1-14-3(14)	(fee)		*
पचक ल्यास्मकपूजा	गुणकी सि	(सं∘)		पञ्चदश [१४] यन्त्रव	ही विक्रि	(सं०)	330	
पञ्चक ल्यासम्बद्धाः	वादीभसिंह		¥00				38€	
व ञ्चक ल्यागुकपूजा	सुत्रासागर	(सं∙)	X 0 0	पञ्चनमस्कारस्तोत्र पञ्चनमस्कारस्तोत्र		(सं०) ५७६		
	Baltilet	(सं o)	X00	प ञ्च नमस्कारस्तीत्र	विद्यानन्दि	(শ॰)	4.5	
पश्चकल्यागकपू जा	सुयशकी र् ति	४१६ (मं०)	, ₹₹७ 400	पञ्चपरमेष्ठीउद्यापन	-	(सं∙)	X0 8	
पश्चकत्यागुक _{र्म} जा	सुरेन्द्रकीर्ति			पश्चपरमेष्ठीगुरा	_	(f € ●)	44	
पञ्चकल्यासकपूजा	-	(स॰) (र्स-)	YEE			¥7£,	924	, T.
				पश्चपरमेष्ठी युक्तमाल	-	(₹°)	ወሄደ	æ-tje-,
	४१४, ४१व, ४१६,	478, 5	1 33	प ञ्च परमेष्ठीगुजुबर्गान	हासूराम	(हि∘)	**	

adigania a	,					_	
द्रम्थनाम	तेसक	भाषा प्र	9 ej o	मन्धनाम	तेलक	भाषा सं	S.S.
पञ्चपरमेष्ठीगुसास्तवन		(f€∘)	000	पंचमीवतीचापन	दर्षकल्याग	(सं०) ५०४,	
पश्चरमेष्ठीपूत्रा	वशोनन्दि	(सं०) ४०२	. ५१=	षं समीवतीयापनपूजा	केशवसेन	(सं∘)	\$ \$5
पश्च-(रमेक्ठीपूजा व	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	४०२	पंचमीवतोकापनपूजा	_	(सं∘)	80%
प ञ्च परमेष्ठीपूजा		(सं∘)	४०३	पंचमीम्तुति		(सं०)	६१ =
		* 5.4	, ४६६	पंचमेरुज्ञापन	भ० र जन न्द	(सं∘)	X o X
पञ्च ररमेष्ठीपूजा	डाल् गम	(हि∘)	४०३	र्वंचमेरजयमाल	भूधरदास	(हि०)	3 F X
पञ्चवरमेरठीपूजा	टेकचन्द	(ছি০) ২০३	, ४१८	पं चमेरअयमा ल	_	(हि॰)	919
प अपमेष्ठीपूजा		(हि॰)	¥∙₹	पं बमेरपूजा	देवेन्द्रकीति	(₫∘)	४१६
	₹१=,	५१६, ६५२,	७१२	पंचमे स्पूजा	भः महीचन्द	.(सं∘)	६०७
पञ्चारमेक्टी [मण्डलिंब	ৰ] —		४२४	पंचमेरुपूत्रा		(सं∘)	¥\$6
वश्चवरमेष्ठांस्तवन		(सं०)	४२२		४४७, ४६४,	4EY, 4EE, 1	95 Y
प ञ्च परमेष्ठीस्तवन		(গা॰)	६६१	पंचमेरपूजा		(গাং)	Ęąĸ
प≋परमेण्ठीस्तवन वि	तनवज्ञ असूरि	(हि॰)	**\$	पंचमेरुपूजा	_	(भप०)	६३६
प ञ्चपरमेष् ठीस नुष्य यपूजा	_	(सं०)	५०२	पंचमेरपूजा	डाल् राम	(हि॰)	१०५
प ञ्च परावर्तन	_	(4∘)	şs	पंचमेरपूजा	टेक्सन्द	(हि॰)	४०४
दश्च पालपैतीमो		(हि∙)	446	पं च मेरुपूत्रा	धानतराय	(हि॰)	4• 4
बश्चन्नहत्त् या		(村。)	२६६		486, 487,	५६६, ७०४,	७५६
वश्चवधावा	-	(信・) 年¥3	, ६६१	पं चमेर पूजा	सुखानस्न	(हि॰)	XoX
पं सर्वधावा		(राज•)	६६२	प्रचमेरुपूजा	_	(हि॰)	४०४
प बढालयतिपूजा		(f g 0)	40 ¥			282	, ७४१
पंचमगतिवेति	हर्षकीरिंत	(हि∘)	६२१	पंचमञ्जलपाठ, पंचमं	क्त्याराक्म क्रूल,	पं वमञ्गल	
	448	, ६६८, ७४०	, ७ ६४		रूपचन्द	(R•)	₹€5,
पंचमास चतुर्दशी पूजा	धुरेन्द्रकी	र्ति (सं॰)	***	४२६, ४०१ ४०४	r, ४१=, ४ ६४,	१७०, ६०४,	६२४,
पंचमास बतुर्देशीयतो छ।	पन सुरेन्द्रकी	चि (सं•)	¥°¥	4 47, 4 44, 4 4	o, ६ ५२, ६ ६१,	६६४, ६७ ०,	₹७ ₹,
पंचमासचतुर्दशीवतो या	पन —	(सं∘)	. x 92	६७४, ६७६, ६८१	, 468, 464,	908, 90X,	७१०,
पं चमीउद्या यन	_	(सं• हि•)	४१७	७१४, ७२०, ७३	४, ७६३, ७८८	;	
पं चमीवतपूजा	केशवसेन		**	पंचवतिस्तवन	समयसुन्दर	(हि∘)	488
् वं चमीसतपुत्रा	देवेन्द्रकीति		208	पंचरत्नपरीका की ग	-	(FTP)	915
र चमीत्रलपुत्रा			११७	वंबसम्बिबिबार		(प्रा•)	909
		, ,		•		· · · /	

	<u> </u>				•	-
अन्धनाम	लेखक	भाषा प्र		🖟 प्रन्थनाम	लेखक	भाषा प्रष्ठ स०
पंचसंग्रह	चा० नेमिचन्द	(ঘা•)	şc	पक्षीशास्त्र	-	(सं∘) ६७४
पंचसंग्रहटीका	समितगति	(#•)		पट्टीपहाड़ोंकी पुस्तव	·	(हि०) ३६=
पंचसंग्रहटीका		(सं॰)	¥٥	पट्टरीति	विष्णुभट्ट	(सं०) १३६
प वस ग्रहवृत्ति	श्रभयचन्द	(सं•)	3€	पट्टावरिल	_	(हि॰) ३७३, ७९६
वं वसंधि	_	(स०)	२६१	पडिकम्मग्रसूत्र		(प्रा०) ६१६
पंचस्तोत्र		(सं∘)	४७६	पराकरहाजयमाल		(झप०) ६३६
पंचस्तोत्रटीका	*****	(सं ॰)	80 \$	पत्रपरीक्षा	पात्रकेशरी	(स०) १३६
पंचस्तीत्रसंग्रह		(मं•)	808	पत्रपरीक्षा	विद्यानन्दि	(स०) १३६
पं चास्यान	विष्णुशर्मा	(₹∘)	२३२	पथ्यापथ्यविचार		(स०) १३६
र्षसङ्ग	चरहू		२८४	पद	श्रमीराम	(16°) YEX
पंचांगप्रबोध	_	(सं०)	२६५	पद	श्रद्धस्य	
पंचा क्रमांघन गरीह	त् [केशवपुत्र]	(सं∘)	२८४	पद	च जयराज च जयराज	
पंचाधिकार	(*	io) 303	, 4 १ ६			
पंचाध्यायी	_ `	, (हि॰)	७५६	पद	अनन्तकी ति	हिंग, ७२४, ४६०
पंचासिका	त्रिभुवनचन्द्	(हि॰)	६७३	पद		(हिं०) प्रदय
पं चास्तिकाय	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा॰)	Y.	पद	अमृ तचन्द्र	(हि॰) ४८६,
पं चास्तिकायटी का	श्रमृत चन्द्रमृरि	(ਜ•)	48			हर) ७८६, ७ ६८
पंचास्तिकायभाषा	बुधजन	(हि०)	46	पद	कनकीकांत्ति	,
पं चास्तिकायमाचा	पं॰ हीरानन्द	(हि॰)	¥8		६६४, ७	૦૬, ૭૨૪, ૭૭૪
पं चा स्तिकायभाषा	पांडे हेमराज	(हि॰)	1	पद	ब्र े कपूरचन्द्र	(রিং) ২৬০
पंचास्तिकायभाषा	पा ठ ह्मरा ज (हि		85			६१४, ६२४
पंचारसमायनाया पंचेन्द्रियवेलि	• •	•		पद	कवीर (हि	(°) (°°)
पचान्द्रयवाल पंचेन्द्रियवेलि	इदीहला	(हि∘) (िः)	035	पद	कर्मचन्द	(हि॰) ४८७
प मान्द्रयवाल	ठक्कुरसी	(हि॰)	\$00	पद	किशनगु जाब (हि	(·) ६६४. ७६३
ं चेन्द्रियरास		७२२,		पद		(हि०) ६४६
पंडितमरस्		(हि∙)	- 1	पद	किशनसिंह (हि	o) X80 1904
	_	٠,		पद	कुमुद्दचन्द्र (हि	o) uxu, ६७o
पंथीगीत	ब्हीहल (हि		७६४	पद	केशरगुलाव	(हि॰) ४४५ ३
पं द्रहतियी			220	पद	खुशासचन्द	(हिo) ४६२
पनकी स्याही बनानेकी	विधि —	(हि∙)	688	६२४, ६६४,	9 f x, 9 f =, 00 }	('e'') 457
					, •••	, 474, 464

वन्धनाम	शेतक	भाषा प्र	ष्ठ सं०	प्रम्थनाम	नेसक	भाषा पृष्ठ स	da.
पद	स्रेमचन्द	(हि॰ ∕	X=0	पद		(हि॰) ধ হ৽, ৬	
		४८३ ४६१	, 4 48	पद	जोधराज	(हि∘) ¥	
पद	गरीवदास	(हि०)	98			90 €, UEE, UE	5
44	गुणचन्द्र	(हि∙)	४८१	पद	टो ड र	(हि०) १।	= ?
		५६५, ५६७	, ५६६		₹१४, 1	₹₹ ₹ , ७७ ६ , ७७:	•
₹₹	गुनपूरवा	(हि०)	u£=	पद	त्रिलोककीर्त्त	(টি৽) খ্ৰ৹, খ্	= 2
q₹	गुमानीराम	(हि॰)	ĘĘĘ	पद	८० द्यास		40
वद	गुलावकृष्ण	(हি॰) খ্ৰু	, ६१ ४	पद	द्यातदास	(ছি॰) ৬	16
पद	घनश्याम	(हि∘)	६२३	पद	द्रिगह	(हি॰) ৬	16
पद	चतु र्भु त	(हि॰)	990	पद	द्सजी	(ছি॰) ৬	re
पद	चन्द	(ছি •) খ্ৰ ড	, ७€३	पद	दास	(হি০) ৬	18
पद	चन्द्रभान	(ह ∗)	48 8	पद	दिलाराम	(ছি০) ৬	£ ₹
वर	चैनविजय	(हि॰) খ ==	, ७६=	पद	दीपचन्द	(ছিন) হ	s ą
वद	चैनपुत्र	(हि ०)	F30	पद	दुलीचन्द	(हि॰) ६	Ęŧ
पर	ब ीहल	(हि॰)	•23	पद	देवसेन	(हि०) ध ः	4
पद	अगतराम	(हि॰)	४८१	पद	देवामहा		ε¥
४८२, ४८४, ४	X X.E. 1	६१४, ६६७,	4 88,			٥٣٤, ٥	F 3
७२४, ७४७, ७	६८, ७११			पद	देवीदास	(हि॰) ६	ΥE
पद	जगराम	(हि०) ४४४	, ଓፍጂ '	पद	देवीसिंह	(हि॰) ६	٤٧
q t	वनमस	(हि॰)	४६४	पद	देवेन्द्रभूषस्		 49
98	जयकीर्चि	(ছি ০) খ নখ	, १८६	पद	दौलवराम	(fgo) &	XY
98	बयचन्द्र झावदा	(fe)	¥¥Ę			٥٥ ६, ७६२, ७	
q e	बाद्राम	(€ ∘)	YYY	पव	चानतराय	(हि∘) ४	
वह	जानिमोहम्मद्	(हि॰)	¥=€		· ŧ, १६७, १६६,		
get .	विनदास	(ह ∙)	१८१	पद	ه ,۷۰۷, ۷۷۶ , ۶۲ سستسم	०६, ७१३, ७४ ६ (हि॰) ४८८, ७	
444, 	१ ४, ६६=, ७४ ८, ७		₽ ₽ ₹,	qe	यमगाः धनराज	(150) x==, ts (150) ts	
-94	विनद्ये		¥8.	44	नगराज नथ विसक्त		e e e e
ATT	बीवखदास	(fg•)	YYX	96			
	वीवकराम	(Re)	340	17	नम्ब्रास	(B(+) 1	
	, ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	(-V		ł		990, V	in g

ens]					L	गरमाह इसमिहा
अन्थनाम	ब्रेखक	भाषा प्रा	स ०	प्रन्थन	ाम होसक	भाषा पृष्ठ सुं०
पर्व .	नयन <u>ध</u> ुस	(हि॰)	४८३	पद	भार	(हि॰) ४५७
मब	नरपास	(हि॰)	४६६	पद	भागचन्द	(हि॰) ४७०
पद	नवस्र	(हि॰)	५७१	पद	भानुकीर्त्त	(हि०) ४८३
	४६०, ६१४, ६४८, ६	¥₹, ६ ५४,	६५५,			४८४, ६१४
७०६, ७६२,				पद	भूषरदास	(हि०) ४८०
पद	त्रः नाथू	(हि॰)	६२२	५८६,	X=E, XE0, E?Y, E?X,	६४=, ६१४, ६६४
पद	निर्म त	(हि॰)	४८१	£8%,	७६५, ७६३, ७६६	
पद	नेभिचन्द	(हि•)	ሂና፣	पद	मक्रसराय	(हि•) ५८१
		६२२	, ६३३	पद	मनराम	(हि०) ६६०
पद	स्थामत	(हि॰)	७६६	Ì		, ७६४. ७६९, ७७६
पद	पद्मतित्तक	(हि॰)	५ ६ ३	पद	मनस ाराम	(हि∘) ५ ≂∙
पद	पद्मनन्दि	(हि॰)	ξ¥ş			६६३, ६६४
पद	परमानन्द	(हि॰)	990	पद	मनोहर	(हि ०) ७६३
पद	पारसदास	(हि॰)	Ę¥¥			७६४, ७६४
पद	पुरुषोत <i>म</i>	(हि॰)	४८१	पद	स ल् कचन्द	(हि॰) ४४६
पद	વૃત્તો	(हि∘)	७५४	पद	श ल्कदास	(हि॰) ७१३
पद	पूर सादेव	(हि॰)	£ ₽ ₽	पद	महीचन्द	(ছি০) ২৩১
पद	फतेहचन्द	(हि॰)	3 & 1	पद	महेन्द्रकीर्श्व	(हि॰) ६२०, ७८६
	¥s	o, y=2, 3	. = ?	पद	माश्चिक चन्द	(হি॰) ১১৫৩
98	बस्रतराम		Xεξ	ì	•	44=, <i>6</i> 2=
	४८६, ६६८, ७	≈ २, ७≈६,	∮3 0	पद	मुकन्द दास	(हि॰) ६१०
पद	बनारसीदास	(हि∘)	४८२	पद	मेला	(हि॰) ৬ ৬ ६
४८३, ४८४, ४	54, X50, X52, 422, °	६२३, ६६७.	985	पद	मेकीराम	(i₹∘) <i>७७६</i>
प्द	बतदेव	(हि∘)	38 €	पद	मोतीराम	(हि॰) ४११
पद	बालचन्द	(₹°)	ERX	पद	मोइन	(हि॰) ७६४
पद	बुधजन	(हि॰)	(40	पद	राजचन्द्र	(দ্রিত) ২৬৩
	५७१, ६४३, ६४४, ७०	६, ७८४, ।	230	पद	राजसिंह	(Ro) \$40
पद	भगतराम	(fgo) v	25	पद	राषाराम	(fs.) xe.
पड	भगवतीदास	(fgo) y	,0€	पद	राव	(R•) 4K3
पद	मगोसाइ	(fۥ) 1	152	पद	रामक्रियान	(B.) 480

प्रम्थनाम्	सेख क	भाषा पृष्ठ सं०	प्रन्थन(म	लेखक	भाषा प्रकृक्षं०
पर	रामचन्द्र	(हिं।) ४८१	पद	सकतकीर्ति	(हि॰) ४८६
		६६०, ६६६	पद	सन्तदास	(हि॰ ६४४, ७४६
पद	रामदास	(हि॰) ४८३	पद	सबलसिह	(हि॰), १२४
		४८८, ६६७	पद	समयपुन्दर	(हि॰) ४७६
पद	रामभगत	(हि०) ५६२			४६६, ४६६, ७७७
पद	रूपचन्द्र	(हि∘) ४८४	पद	श्यामदास	(igo) <i>aex</i>
प्रदर्, प्रदक्त, प्र	==, X=0, E7¥, E	58, 038, 08E	ाव	सवाईराम	(हि॰) प्रह्रू॰
७४४, ७६३, ७	६४, ७८३		न्पद	सांईदास	(हि०) ६२०
पद	रेखराज	(हि॰) ७६८	पद	सा हकीर्त्ति	(हি ०) ৩৯ ৯
पद	सदमीसागर	(हि॰) ६८२	पद	साहित्रराम	(हি॰) ৬ৄৼ
पद	ऋषि सहरी	(हি০) খ্ৰখ্	पद	सुनदेव	(हि॰) ४न∙
पद	लाजचन्द	(हिं०) ४६२	पद	सुन्दर	(हि॰) ७२४
	¥=₹, 3	(50, 588, 683	पद	सुन्दरभूषण	(हि-) ४८७
पद	विजयकी सि	(हि०) ५६०	पद	सूरअमल	(हि०) ५८१
४६२, १	(48 , 144, 144, 1	(८७, ४८६, ६६७	पद	सूरदास	(हि॰) ७६६, ७६३
पद	विनादीसास	(fgo) xe•	पद	सुरेन्द्रकी चि	(हि॰) ६२२
		=30, f=0,0%	पद	सेवग	(हि॰) ७६३, ७६८
4€		हि॰) ४६१, ६२१	पद	हउसतदास	(हि॰) ६२४
पद	विसनदास	(হি০) খ্ৰড	पद	हरस्व न्द	(हি॰) খন্ধ
पद	विद्वारी शस	(हि॰) ४५७			५८४, ४८४, ७१३
पद	वृत्दावन	(feo) ६४३	पद	हर्षकी(ति	(हि०) ४८६
पद	श्राम् शिक्ताल	(fgo) xx2	४८४, ४८८,	४६०, ६२०, ६२४, १	६६३, ७०१, ७४०
पद	शिवसुन्दर	(হি০) ৬২০	७६३, ७६४		
98	-	हि०, ७०२, ७२४	पद	इरिश्चन्द्र	(हि॰) ६४६
q e			98	इरिसिंह	(हिं०) १८२
•	शोभाचन्द	(हि०) ४८३	ध्यथ, ६२०,	443, 444, 443, 4	£e, 007, 00 4
44	भीपास	(Bo) 800	530 ,530	_	
वर	भी भूषण	(हि॰) ४५३	पव	६रीदास	(gla) dide
4£	श्रीशम	(Bo) 180	पद :	मुनि हीराचन्द	(No) test

							••
- 488]					(प्रन्थानुक्रम	विका
श्रम्थनाम	तेत्रक	भाषा	पृष्ठ सं०	प्रन्थनाम	लेवक	भाषा वृ	명 선 •
वद	हेमराज	(हि॰)	¥€•		४७४, ५०	६, ४१७, ६४१	८, ६६२
वर	_	(हि∘)	AAE	पद्मावतीमण्डलपूजा		· (4°)	४०६
200, 20E, Fo	₹, <u>}</u> ₹¥₹, ₹ ¥¥,	६४०, ६५३	, ७०३	पद्मावतीरानीद्माराधन	n समयसु न्दर	(हि॰)	६१७
७०४, ७०४, ७३	¥, ७३१, ७४३,	৩১४, ৬৬০	, ७७७	पद्मावतीशातिक		- (सं∘)	¥•\$
গ্ৰহৰী	यश:कीर्स	(स्वः)	६४२	पद्मा वतीस हस्र नाम		(सं∙)	¥• ₹
पद्धवी	सहस्रवास	(भ ग०)	EAS		४८६, ५८६	, ६३६, ७११	, 4 48
पद्मकोष	गोवर्धन	(सं०)	६१६	पद्मावतीसहस्रनामवपू	লা —	(सं ०)	४०६
पद्मवरितसार	_	(हि॰)	१७७	पद्मावतीस्तवनमं श्रस	हेत	(4.0)	४२३
षश्चपुराश	म० धर्मकीर्त्ति	(सं∘)	188	पद्मावतीस्तोत्र		(सं०)	¥•₹
पषा पुराख	रविषेगाचार्य	(सं०,	१४६	¥23, ¥30, ¥37	, ¥३३, ५०६,	¥₹€, ¥€€,	६४५
पद्मपुरास (रामपुरा	ए) भ० सोमसेन	(सं∘)	१४८	६४६, ६४७, ६७६	, ७३४, ७४७,	300	
पद्मपुरास (उत्तरसम	e)	(₩•)	848	पद्मावतीस्तोत्र	समयसुन्दर	(fह∘)	€=¥
पद्मपुरासामाया	खुशालचन्द	(हि॰)	88€	पद्मावतीस्तोत्रबी अएवं		(सं∘)	७४१
वचपुरासामाषा	दौत्ततराम	(हि॰)	88€	पदविनती	_	(हि∗)	७१५
पद्मनंदि पं व िविद्यतिका	पद्मनदि	(4。)	ĘĘ	पद्यसंग्रह	विद्वारी	(fg°)	980
पद्मनंदिपं चर्विश्वतिक	टीका —	(₹i∘)	६७	पद्यसम्बह	गंग	(fg•)	uto
यद्मनदिपं वर्विद्यतिक	जगतराय	(हि∙)	६७	पदसंग्रह	वानन्द्रधन	(हिंo) ७१०,	
पद्मनन्दिपकीसी भाषा	मनालाल लिंद्	ा (हि∘)	Ęs	पदसंग्रह	म ० कप्रसद	(हि•)	YYY
पद्मनं विपद्मांसी भाषा		(हि॰)	Ęs	पदसंग्रह	खेमराज	(fe∘)	YYX
पद्मनंदिश्चाव क।चार	पद्मनंदि	(₹io)	٩s	पदमंग्रह	र गाराम वैध	(fg。)	52X
पद्मावत्याष्ट्रकवृत्ति	पाश्वंदेव	(स∘)	४०२	पदमंग्रह	चैनविजय	(fह∙)	YYY.
पद्मावसी की ढाल	_	(f₹•)	¥• 9	पदसंग्रह	चैनकुस	(हि॰)	AA£
पद्मावशीकरूप	_	(सं•)	346	पदसग्रह	जगतराम		YYX
पद्मावतीकवच		(ño) 火 ∘€	988	पदसंग्रह	विनदास		७७३
पद्मावती वक्के स्वरीस्त		(सं∘)	¥\$2	पदसंग्रह	बोधा		YYX
पद्मावतीखंद	मह।चद	(सं∘)	400	पदसंग्रह	मांभूराम		
पचावती रण्डक		सं०) ४०२,	988	प्रवसंग्रह	दक्षाराम		YYX
पद्मावती पट क		(वृ०) ति॰ हें		वदसंग्रह	· देवामध		4 90
वयस्वतीयूचाः		(सं•)					AAE .
			1	*	•	68% AX.	na ś

परमारबबुहरी

परमार्थस्तोच

७४२, ७६६, ७६७, ७६१, ७७४, ७७६, ७८१, ७६०

(हि०) ७२४

(#o) YoY

(सं०) ४०७

(सं०) १७८

(हि०)

(हि∘)

£X ?

बादिचन्द्रसूरि

मारू

महावेस्य

पादवंजिनस्तवन

पार्स्वजिनेश्वरस्तीत्र

पार्श्वनाथएवं वद्धं मानस्तवन

६८४ | रार्श्वनायकीमारती मूनि कनककीति

जितचन्द्र

(fe) 000

(सं०) ४२६

(सं०) ४०४

(fgo)

पल्यो रमोपवासविधि

पवनदूतकाव्य

वांचपरतीकथा

पहेलियां

•	•					L
प्र न्थ ना स	क्षेत्रक	भाषा १	ष्ट्र सं०	प्रम्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
पादर्शनाथकीगुग्।माल	स्रोहर	(हि॰)	७७६	पार्श्व नायस्तवन	समयराज	(हि॰) ६६७
पारसना यको निसार्गी	_	(हि॰)	६ ५०	पार्श्वनायस्तवन	समयपुन्दरग	िया (राज०) ६१७
पाइर्वनाथ की निशानी	जिनहर्ष (हि०) ४४६	, ५७६	पार्श्व नाथस्तवन		(हि॰) ४४६, ६४५
पाइवंनाथकीनिकानी	_	(fg0)	७०२	पार्श्व नायस्तुति		(हि॰) ও४४
पादर्वनायकेदर्शन	बृन्दावन	(fg o)	६२५	पार्श्व नाथस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(सं०) ६१४
पाइवं नाथ चरित्र	रइधू	(भग०)	309			७०२, ७४४
पार्श्वनाथचरित्र	वादिराजसूरि	(सं०)	308	पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मनिद्	(सं०) ४६६, ७४४
पार्श्व नाथचरित्र	भः सक्तकीत्ति	(सं०)	3e 9	पार्श्वनायस्तोत्र	रघुनाथदास	(सं०) ४१३
पार्श्वनाथचरित्र	विश्वभूषण	(हि॰)	४६=	पादवंनाथस्तोत्र	राजसेन	(म०) ५६९
पार्वजिनचैत्यालयचित्र	7		Ęo}	पार्श्वनाथस्तात्र	_	(सं०) ४०५
पादर्वनाथ जयमाल	स्रोहट	(हि॰)	\$ ¥₹	४०६, ४२४, ४२!	र, ४२६, ४३२,	४६६, ५७= ६४४,
पार्श्वनाथ त्रयमाल	- (1	हि०) ६५५	, ६७६	६४७, ६४८, ६४१	, ६७०, ७६३	
पार्वनायपद्मावतीस्तीः	T	(सं∘)	Yox	पार्श्वनाथस्तोत्र	द्यानतराय	(हि•) ४०६
पादर्वनायपुरासा [पादर	(पुरागा) भूधरह	тн —				४०६, ४६६, ६१४
	(fro) १	9 E , 977,	७६१	पार्क्ताथम्तोत्र		(ફિં∘) ૪ ∘૬
पार्श्वनायपूजा	-	(सं∘)	४२३			YYE, <u>4</u> 4E, 633
४६०	, ६०६, ६४०, ६	४४, ७०४,	७३१	पार्वन।बस्तोत्रटीका		(सं०) ४०६
पार्श्वनायपूजा (विधान	सहित। —	(सं∘)	५१३	पार्वनायाष्ट्रक	_	(सं०) ४०६, ६७६
पार्भः नाथपूजा	हर्षकीत्ति	(हि॰)	5 5 3	बारवं ना याष्ट्रक	सकतकीर्त्त	(हি॰) ৩৩৩
पादर्वनाथपूजा		(fgo)	200	पाराविधि		(हि॰) २६६
	४६६, ६००, ६	२३, ६४४,	ty c	पाराशरी		(सं०) २६६
पार्श्व नायपूजामंत्रसहित	_	(सं०)	XuX	पराशरीसज्जनरंजनीट	ोका —	(स०) २८६
पार्श्व महिम्नस्तोत्र स	हामुनि रामसिंह	(सं∘)	¥0€	पावागिरीपूजा	_	(हি০) ৬३০
पार्श्व नायलक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(सं∘)	You	पाशाकेवली	गर्गमुनि	(सं•) २०६ ६४७
पार्श्वना यस्तवन	देशचहस्र	(सं∘) ं	£\$\$	पाशाकेवली	कानभास्कार	(सं०) २८६
पार्श्व नाथस्तवन	राजसेन	(हि∘)	<i>उइ</i> ह	पावाकेवली		(सं०) २८६, ७०१
पार्श्वनायस्तवन	अगर्प		458	पाशक्षाकेवली	श्रवजद	(fgo) 423
पार्श्वनायस्तवन [पार्श्व	विनतो] अरुन।	ų —	- 1	पाशाकेवली -		(हि॰) २८७
	(हि०)	₹ ७ •,	6=3	१६१	, ६०३, ७१३,	७१८, ७८४, ७८६

,							
प्रन्थनाम	सेवक	भाषा प्रा	इसं∘	प्रम्थनाम	होसक	भाषा प्र	
पिगल छंदशास्त्र	माखन कवि	(हि॰)	110	व ुक्वार्थ सि द्धयु पायभाषा	टोडरमल	((ۥ)	4.6
पिगलछंदशास्त्र (स	द रत्नावली '			पुष्कराद [®] पूजा	विश्वभूषण	(सं∘)	840
	इरिरामदास	(हि∘)	111	पुष्पदन्तजिन पूजा	_	(सं∘)	X∘£
पिगलप्रदीप	भट्ट लदमीनाथ	(सं∘)	* ? ?	पुष्याञ्जलिकया		(aha)	644
पिनसभाषा	- रूपदीप	(हि॰)	७०६	पुष्पा ज ्जनिजयमाल	_	(भप०)	988
पिगलकास्त्र	नागराज	(#°)	3 9 €	पुष्राञ्जलिविधानकथा	पं० हरिश्चन्द्र	(भप०)	२४५
पिगलशास्त्र	_	(मं ०)	388	पुष्पाञ्जलिविधानकया	_	(सं∘)	२४३
पीठपुजा		(सं०)	६ 05	पुष्पाञ्जलिवतकथा	जिनदास	(सं∘)	4 \$ &
पीठप्रक्षालन	-	(सं∘)	६७२	पुष्पाञ्जलिवतकथा	श्रुतकीर्त्ति	(सं∘)	२३४
पुच्छीसे ग	_	(গা॰)	33	पुष्पाञ्जलिवतकथा	ललितकीर्त्ति	(स•) ६६४	, હદ્દ ૪
पुष्पञ्च तीसी	समयसुन्दर	(हि∙)	387	पुष्पाञ्जनिवतकया	खुशाल चन्द्र	(ફિં•)	२३४
पुष्यतत्वचर्ग	_	(सं∘)	*1			२४४,	१६७
पुष्यास्त्रवक्याकोश	मुमुजु रामचंद	(સં∘)	433	पुष्राञ्जलियतोद्यापन	पुटराक्क लबतपूज	ा] गङ्गा	दास
पुष्यास्रवकयाकोश	टेकचंद	(हि॰)	२३४			(iio) XoE	, ५१६
पुष्यास्रवक्याकोश	दौलतराम	(हि॰)	२३३	पुष्पाञ्जलियतपू न।	भ० रतनचन्द	(सं∘)	४०५
पुष्पान्तवकयाकीश	_	(हि॰)	233	पुष्पाञ्जलिवसपूजा	भ० शुभचन्द्र	(सं∘)	४०६
पुष्यास्त्रवक् षा कोशः	र्वा —	(हि॰)	२३४	पुष्पाञ्जलिवतपूजा	_	(સં૦) ૫૦	c, 136
पुष्पाहवाचन		(ন ০) ২০৬,	₹8€	पूष्पाञ्जलिव्रतविधानक	41 —	(€0)	288
पुरन्दर नौ पई	मालदेव	(हि॰)	७३५	पुर शक्तां स्वतां सापन		(सं०)	¥¥•
पुरन्दरपू जा	_	(स ०)	४१६	पूजा	पद्मनन्दि	(सं∘)	4६.
पुरन्दरविधानकथा		(4∘)	२४३	पूजा एवं कथासग्रह	खुशासचन्द	(f g•)	x te
पुरन्दरव्रतीद्यापन		(4•)	ጳዕፍ	पूजाकिया		(f ₹ ∘)	X05
पुरक्षरस्विध	_	(सं∘)	२६७	पूजासामग्री की सूची		(fg+)	414
पुराससर	श्रीचन्द्रमुनि	(₹)	१५१	पूजा व खबनाल		(e e)	448
दुरा णसारसं ब्रह	भ॰ सकत्तकी चि	(₹å)	141	पूजा धमाल	_	(सं∘)	ĘXX
पुरुषस्त्रीसंवाद		(fg•)	يمو	पूजापाठ		(fg•)	417
पुरुषार्था <u>नु</u> शासन	गोविन्द्रभट्ट	(सं∙)	ĘĘ	दुवापाठसंग्रह	_	(•i•)	X+=
•	ब्रमृतचन्द्राचार्य	(₹•)	Ęc	₹¥€, ₹#₹, ₹ €७	Ecc 423		
	_		¥8	000, 400, 400,			-14
पुरुषाय सिद्धचु पाय	वयनिका भूधर मिश्र	((£0)	46	, 964			

```
[ =84
मन्द्रानुक्रमण्डा ]
                                                                         लेखक
                                                                                   भाषा द्वष्ठ सं०
                                                   प्रन्थनाम
                      लेख क
                                 भाषा प्रश्न सं०
 प्रन्थनाम
                                                                                      (सं०) २६१
                                   (信0) 280
                                                  प्रक्रियाकौ मुदी
पू जापाठसंबह
                                                                                      (हि०) ६५७
                                                  पुच्छावसी
                              255, 0X4, 0XX
                                                                                     (NIO)
                                                                                               90
                           -- (सं० हि०) ७१०
                                                  प्रत्याख्यान
  ापाठस्तोत्र
                                           820
                                                                                      (सं∘)
                                                  प्रतिक्रमश
                                    (eio) 1288
                                                                                        ¥24, X08
                     उमाध्यामी
पुजाप्रकरण
                                    (सं∘)
                                           FEE
                                                   प्रतिक्रमण
                                                                                      (alb)
वुजाप्रतिष्ठापाठसंग्रह
                                    (सं०) ५१२
                                                                               — (प्रा∘ सं०) ४२५
वूजामहात्म्यविधि
                                                   प्रतिक्रमश
                                    (सं०) ४१२
पूजाबराविधि
                                                                                               ¥⊌X
                                           ५१२
                                    (प्रा०)
                                                                                      (MIO)
                                                                                                48
पुजाविधि
                                                   प्रसिक्तमरापाठ
                                    ₹92 (oi)
                                                                                      (গা॰)
                                                                                                33
                     बिश्वभूषग्
                                                   प्रतिक्रम ससूत्र
 पुजाष्ट्रक
                                    (हि•)
                                            488
                                                                                                ŧŧ
                                                   प्रतिक्रमरासूत्र [वृतिसहित]
                                                                                       (NIO)
                     श्रभयचन्द्र
 पूजाष्ट्रक
                                    (feo) 1287
                                                   प्रतिमाज्ञ्यापकक् उपदेश अगरूप
                                                                                       (feo)
                                                                                                130
                     बाशानन्द
 पुजाष्ट्रक
                                    (हिu) ५१२
                                                   प्रतिमासांतचतुर्दशी [ प्रतिमासांतचतुर्दशीवतीचा ।नपूजा ]
                         लोहर
 पुजाष्ट्रक
                    विनोर्द लाल
                                    (দ্বি০) ৩৩৩
 पुजाष्ट्रक
                                                                         चलवराम
                                                                                       (स०) ५१६
                            -- (唐a) × 97, 684
                                                    प्रतिमामांत बतुर्दशीपुत्रा देवेन्द्रकी चि
 पुत्राष्ट्रक
                                                                                        (सं०) ७६१
 पूजास प्रह
                                                    प्रतिमासांतचतुर्दशीवतोद्यापन
                                                                                       (सं०) ४१४.
                      ६६४, ६६८, ७११, ७१२, ७२५
                                                                                          ४२०, १४०
                                    (हिं०) ५२०
 पुजासंप्रह
                       राम चन्द्र
                                                    प्रतिमासान्तचतुर्दशीवतोद्यापनपूजा रामचन्द्र सं०) ५२०
                                     (हि॰) ৩৩৩
                       जासचन्द
 दूजासमह
                                                    प्रतिष्ठाकु कु मपत्रिका
                                                                                        (eio) 303
                                     (हि॰) ५६५
  पूजास प्रह
                                                                       श्रीराजकीरित
                                                                                        (सं•) ५२•
                                                    प्रतिष्ठादर्श
   ६०४, ६६२, ६६४, ७०७, ७०८, ७११, ७१४, ७२६,
                                                                      पं॰ नरेन्द्रसेन
                                                                                        (सं०) ५२१
                                                     व्रतिष्ठादीपक
                                                                           व्याशाधर
                                                                                         (सं०) ४२१
   ७३०, ७३१, ७३३, ७३४, ७३६, ७४८ ।
                                                     प्रतिष्ठापाठ
                                                     प्रतिष्ठापाठ [प्रतिष्ठासार] बसुनंदि (सं०) ४२१, ४२२
                                      (do) k20
  पुत्रासार
                                                                                         (सं•) ४२२
  पुजास्तोवसंप्रह
                              -- (前o 腹o) 年8年
                                                     प्रतिष्ठापाठ
    ७०२, ७०८, ७०६, ७११, ७१३ ७१४, ७१६, ७२४,
                                                                                            ₹€€, ७१€
                                                                                         (feo) 127
                                                                      बा॰ दुक्की चन्द
                                                     प्रतिष्ठापाठभाषा
    שלא, שעל, שעל, שעל, ששה ו
                                                                                 - (हि0) ३७४, ७२६
   पूर्वनीमांसार्वप्रकरतासंबह क्षीगाविमास्कर (सं०) १३७
                                                     प्रतिष्ठाना माव नि
                                      (Ro) 931
                                                      प्रतिष्ठाविधानकी सामग्रीवर्शन
                                                                                          (हि॰) ७२३
   र्वेसडबोस
                                       (हि॰) ७६२ प्रतिहाविधि
                                                                                          (सं•) १२२
   पोसहरास
                        इ।नभूषण्
```

```
£3.
                                                                                      गन्थानुकमशिका
                                                      प्रन्थनाम
                                                                              तेलक
                                                                                         भाषा पृष्ठ सं०
                                    भाषा प्रश्न स०
                                                                                            (भा०) ११६
प्रतिहासम्बन्धीयन्त्र
                                              46=
                                                     प्रवचनसार
                                                                       আ০ ক্লব্ৰুল
                                                                                           (सं∘)
                                                                                                    220
                                                                      श्रम्त चन्द्र
इतिहासार
                                     (#o) X ??
                                                     प्रवचनसारटीका
                                                                                           (#i∘)
                                                                                                    223
व्रतिष्ठासार
                पं० शिवजीलाल
                                     (fee)
                                              * ? ?
                                                     प्रवचनसारटीका
                                                                                           (唐0)
                                      (सं०)
                                                                                                   111
                                              422
                                                     प्रवचनसारटीका
प्रतिष्ठासारोद्धार
                                                                                            (सं∙)
                                                                                                    111
श्रंतष्ठासूतिःसंग्रह
                                      (सं०) ५२२
                                                      प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति
                                                                     जोधराज गोवीका
                                                                                           (唐。)
                                                                                                    888
                 [प्रच_म्नरास]
                                      इ० रायसञ्ज
                                                      प्रवचनसारभाषा
प्रद्युम्नकुमाररास
                    (हि॰) ४६४, ६३६, ७१२, ७३७
                                                                                           (fg.)
                                                                                                    888
                                                      प्रवचनसारभाषा
                                                                         वृन्दावनदास
                    महासे ना चार्य
                                                                         वांडे हेमराज
                                                                                           (हि॰)
प्रधुम्न वरित्र
                                      (सं ०
                                              $40
                                                      प्रवचनमारभाष ।
प्रस्तू स्नचरित्र
                       सोमकीर्त्ति
                                      (सं∘)
                                             १८१
                                                                                       (fgo) ११४, ८१ >
                                                      प्रवयनसारभाषा
प्रयुक्त निरंत
                                       (स०) १८२
                                                                                            (Ħ+)
                                                                                                    332
                                                      प्रस्ताविकश्लोक
प्रचुम्नवरित्र
                        सिंहकवि
                                       (बप०) १८२
                                                                                           (#o)
                                                      प्रश्नवृहामस्ति
                                                                                                    रवङ
द्रखुम्नचरित्रभाषा
                       मञ्चाताल
                                      (ē)
                                              १८२
                                                      प्रश्तमनोरमा
                                                                                  रार्श
                                                                                           (#o)
                                                                                                    250
प्रश्रं स्तवरित्रभाषा
                                      (हि०)
                                              १८२
                                                                                            (सं o)
                                                                                                    २६६
                                                      प्रदेशमाला
प्रयं म्नरास
                                      (f₹∘)
                                                                                            (सं∘)
                       कृष्णराय
                                              ७२२
                                                      प्रश्नविद्या
                                                                                                    २८७
 प्रंद्यु-नरास
                                      (हि॰)
                                                                                            (FO)
                                              380
                                                      प्रश्तविनोद
                                                                                                    250
                      बैजलभूपति
                                       (स∘)
 प्रेबोधवन्द्रिका
                                                                                            (सं∘)
                                              ३१७
                                                                               हर्यमी व
                                                                                                    २८६
                                                      प्रव्तमार
 प्रबोधसार
                       यश:कीर्त्ति
                                       (de)
                                              378
                                                                                            सं०)
                                                                                                    255
                                                      प्रकासार
 प्रभावतीकस्प
                                      (हि॰) ६०२
                                                      प्रक्रममुगनाव नि
                                                                                            (#io)
                                                                                                    २दव
 प्रमाणन क्तवालोकालं कारटीका [रत्नाकरावतारिका]
                                                      प्रध्नाविस
                                                                                            (₹ o)
                                                                                                    ₹44
                                      (सं०) १३७
                                                      प्रश्नावित कवित्त
                                                                          वैद्य नंदलाल
                                                                                           (ह∘)
                      रलप्रसम्बद्ध
 प्रमाशनिर्शाय
                                       (सं०) १३७
                                                      प्रश्नोत्तर माशिक्यमाला अ० आनसागर
                  बा॰ विद्यानम्ब
                                       (ग•)
 त्रमाखपरीका
                                               $30
                                                      प्रश्नोत्तरमाला
                                                                                            (#o)
                                                                                                    रेदद
                                       (हि॰)
 प्रमास्प्रदीक्षा भावा
                        भागचन्द
                                               130
                                                      प्रश्नोत्तरमालिका प्रश्नोत्तरस्त्नमाला
 प्रमाशाप्रमेयकलिका
                        नरंन्द्रसुरि
                                       (सं∘)
                                              XuX
                                                                                         सं० ३३२, ५७३
 प्रेमीयामीमीसा
                                       (₹•)
                       विद्यानन्दि
                                               135
                                                      प्रश्नोत्तरस्त्रमाल।
                                                                           तुलसीदास
                                                                                          (g(3 0 )
                                                                                                    111
 प्रमाणमीमांसा
                                       (₩•)
                                               १३८
                                                      प्रश्नोत्तरश्रावकाचार
                                                                                            (स∘)
 प्रमांग्एप्रंमेंयेकलिका
                                       (सं∘)
                        नरेन्द्रसेन
                                               १३७
                                                      प्रक्तोत्तरश्रावकाचारभाषा बुलाकीदास
                                                                                           (権。)
  प्रमेयकमसमार्सिण्ड
                    वा० प्रभावन्द
                                       (#o)
                                                      प्रवनोत्तरश्रावकाचारभाषा प्रशालाख चौधरी (हि॰)
  प्रमेगरालमाला
                       धनन्तवी ये
                                       (स∘)
                                              १३६ प्रश्नोत्तरभावकाकार
                                                                                          (寝o)
                                                                                                     ٧ŧ
```

	पन्धानुकर्मीयका	}					ţ.	1
	प्रन्थनाम	ते स क	भाषा पृष्ठ	eio	प्रत्यनाम	शेसक ः	भाषा प्र	Ho.
	प्रकोत्तरस्तोत	_	(fio)	¥0 €	प्रीत्यक्टरचौपई	नेभिचन्द	(度。)	200
	प्रस्तोत्तरोपासका चा र	अ ः सक्तकीति	(सं०)	υt	प्रीस्यक्करवरित्र		(हि ∘)	६ -६
	प्रश्नेलरोबार	_	(हि॰)	9 3	प्रोषभदोषवर्गान		(ह•)	u x
	प्रशस्ति	म ० दामोदर	(सं०)	405	प्रोवधोपवास्त्रतोखापन		(सं∘)े	ઘદ
	प्रशस्ति		(सं०)	१७७		42		
	प्रशस्तिकाशिका	बालकृध्य	(मं०)	७३		•		1.00
	प्रह्लाद चरित्र	-	हि॰)	६ 00	फलफांदले [पञ्चमेरु]	मण्डलचित्र —		४२४
	प्राकृतछन्दकोश	_	(সা•)	388	फलवधीपार्श्वनावस्तवन	संमयंतुन्दरगिष		484
,	प्राकृतछन्दकोश	रमशेलर	(গা॰)	388	फुटकरकेविस -	_	(हि∘)	98c
	प्राकृतछन्दकोश	बान्दु	(গা॰)	358				, 605
	प्राकृत िगलशास्त्र	_	(सं०)	३१ २	फुटकरज्योतिषपद्य	-	(सं∙)	₹ ⊌⊁
	प्राइतब्याकरेख	सरहक वि	·#**)	२६२	फुटकर दोहे		(Eo)	46 %
	मा कृतरूपमाला	श्रीरासभट्ट	(সা৽)	२६२				, 452
	प्राकृतब्युत्पत्तिदीपिका	सौभाग्यगणि	(सं०)	757	कुटकरपद्य	_	(हि ०)	
	प्राराप्रतिहा		(सं•)	473	फुटकरपच एवं कवित	_	(हि॰)	ÉAŚ
	प्रा रामगास्त्र		(₹०)	888	कुटकरपाठ		(सं∙)	103
	प्रासीकार्गीत	_	(fe°)	989	फुटकरवर्शन	_	(सं∙)	KOR
	प्रात:क्रिया		(सं∘)	68	फुटकरसर्वया	_	(हि॰)	७७५
	प्रात:स्मरणमेन्द्र	_	(#io)	Yo E	कूलभीतस्मी का दूहा		(हि०)	६७४
¥	प्रे ।मृतसार	थाः कुःदंकुन्द	(प्रा∙)	į į.		ৰ		
	प्रायम्ब	_	(सं <i>०</i>	48	-	जयकीर्ति	(हि॰)	343
	प्रायीभतविधि	बेंक्ल हुचरित्र	(₹0)	٧è	बंकजूलरास बंभगुवाडीस्तवन	कम लक लरा	(fg•)	486
	प्राथीभवनिधि	भः एकसंघ	(ep)	98	वसतविसास	कन संक्रियर।	(寝。)	
	प्राथितविधि	_	(tio)	. 98			(हि०) (हि०)	
	प्राथमितकार्य	इस्ट्रनन्दि	(Åie)	ÜŸ	वशक्यका	गुजाबराय	(<i>091)</i> 37 (०ज्ञी	
	प्राथिकतशास्त्र	4. 14.11.4	(युंग ०)		बडाकनका बडादर्शन		हु०) ५९ १०) ३६	
	प्राची सतसपुष्टीका	नंदिगुर्ड	(₫è)	يۇن	1 1			4, 545 4 3 6
ŕ,	मानानाततपुर्वाता प्रीतिकृत्वत्ति		1.		बढी सिढपूजा [कर्मदा	(गपूजा] सा सद् श	(स०) (हि०)	
×	* # T ' JE	मः नेसिंद्त्त	(ۥ)	१८२	बदरीनाव के छंद	_	• • •	
	त्रीति कु रवरित्र	कोषराज	(fg+)	₹ =₹	विष्या ।	-	(हि∙	9 66

प्रन्थानुक	मसिका "
भाषा	पुष्ट सं०

प्रन्यताम	तेलक	भाषा पृ	ष्ठ सं ०	प्रन्थन।म	लेख क	भाषा	प्रष्ठ सं०
वधायाय विनती		(हि∘)	Éex	बारहर झी	पारवदास	(हि∙)	117
बन्दना जकड़ी	बुधजन	(हि॰)	344	बारहखड़ी	राम चन्द्र	(हि∘)	٥ξ٤
बन्दना जकड़ी	विदारीदास	(हि॰) ४४६	:, ७२७	वारहसडी	सूरत	(हि॰)	= ? ?
बन्दे तू सूत्र	·	(• IR)	६१६	1		ioo, 1083	(, ७55
बन्दोमोक्षस्तोत्र	***	(सं०)	Ę.5	बारहसडी		(हि∙ ,	३३२
बषउदयसत्ताचीपई	श्रीताल	(हि∘)	¥ŧ	1	¥¥8, \$	08, EEY	, 6-2
बंधस्यति	_	(सं∘)	१७२	बारहभ,वना	रइधू	(हि॰)	११ ४
बनारसीविनास	वन ःरडीदास	(हि॰)	680	बारहभावना	થાતુ	(हि॰)	६ ६१
६८६, ६६८, ७०६	, ७०८, ७२१,	७३४, ७६३	, હદ્ય	बारहभावना	ज न्मोमगर्ग्धि	(f₹∘)	६१७
989 		G- \		बारहभावना	जित बन्द्रसृरि	(हि॰)	900
बनारसीविलास के कु बरहारतारचित्र	18 410 I	(१६०) ७१२		बारहभावना	नवल	(हि ०)	१ ४
बरहास्ताराजन बलदेव महामुनि सङ्		(fm-)	€ 0₹	į		1 1 X	, ४२६
बलपदग नहानुगा तरण बलपदगीत	ы ч समय धुन्द्र	(हि॰) (हि॰)	६१६ ७२३	बारहभाव-ा	भगवतःदास	(हि॰)	७२०
बसात्कारयसायुर्वावनि		(₹°)	308	बारहभावनः	भूथरदास	(हि∘)	११५
401/4/194141			, <u>408</u>	बारहभावना	दौलतराम (वि	हर) ५६१	. ६७५
बलिभद्रगीत	श्रमयचन्द	्हि∘)	380	बारहभावना		(fg•)	११५
बसंतराजशकुनावली	_	(सं० हि०)	७११		३८३, ६४४, ६		৬==
वसंतपूजा	श्रजैराज	(हि॰)	Ę=3	बारहमासकी चौदम	[मण्डल चित्र]	_	४२४
बहत्तरकलापुरुष	_	(हि॰)	६०६	बारहमासा	गाविन्द	(हि॰)	₹₽\$
बाईसद्मभक्यवर्शन	बा॰ दुलीचन्द	(हि०)	७४	बारहमासा	चृहरकत्रि	(fgo)	484
बाईसपरिषहवर्णन	भूषरदास	(हि॰)	હય	बारहमाला	जसराज	(हि॰)	950
	६०४, ६७०,	७२०, ७८५	, 655	बारहमासा	_	(हि ॰)	£ € \$
वाई सपरिषह	_	(हि॰)	৬২			989,	
		४६६	, ६ ४६	बारहमाहकी पद्मर्मा [मडलिय) —		424
वारहमक्षरी		(सं∘)	७४७	बारहवतो का ब्यौरा		(हि∗)	111
बाहरसनुप्रेक्षा	-	(01K)	૭ફ€	बारहसो चौर्तासवतकय	। जिनेन्द्रभूपस	(ह∙)	58 k
बाहरमनुप्रेक्षा -	अ वधू	(हि॰)	७२२	बारहसी चौतीसवतपूज	ा श्रीभूषण	(सं∙)	430
बारहसनुत्रेक्षा		(हि॰)	900	बालवदापुरासा पं प्र		संक्रि∗)	१४१
बारहबड़ी	दत्तकाल	(हि∘)	OYX	बाल्यकालवर्णन		(fg•)	***

मन्यानुकमियका)			[=k•
प्रनथनाम तेखक	भाषा पृष्ठ सं	प्रन्थनाम क्षेत्रक	भाषा पृष्ठ सं०
- महदेवोकी सज्भःय ऋषि लालचन्द	(हि॰) ४५०	महावीरस्तोत्र स्वस्तपृष्णन्द	(हि०) ५११
मझिनाथपुरासा सक्तकीर्ति	(सं०) १४२	महावीराष्ट्रक भागचन्द	(4jo) 263
मक्तिनाथपुराराभाषा सेवारास पाटनी	(हि॰) १ ५ २	महाशान्तकविधान पं धर्मदेव	(स०) ६२५
मल्हारवरित्र	(हि॰) ७४१	महिम्नस्तवत अयकीर्त्ति	(सं॰) ४२५
महर्पिस्तवन	(सं०) ६५८	महिम्नस्तीत्र —	(सं०) ४१३
	४१३, ४२६	महीपालकारत्र चारित्रभूषण	(सं०) १८€
महर्षिस्तवन —	(हि०) ४१२	महीपालवरित्र भ०रझनस्टि	(do) १=६
महागगाः ।तिकवच	(म०) ६६२	महीपालचरित्रभाषा नथमल	(हि॰) १८६
महादण्डक —	(हिं०) ७३४	मागीतुंगीगिरिमंडलपूजा विश्वभूषस्	(सं०) ४२६
महापुरास्म जिनसेनाचार्य	(सं∘) १५३	मासित्वमानाप्रत्यप्रश्नोत्तरी	संग्रहकर्ला—
महागुरासा [मक्षित] —	(सं०) १४२	त्र० ज्ञानसागर (मं	शा० हि०) ६०४
महापुरागः। सहाकवि पुष्पद्स्त	(सप०) १५३	माताके सोलहस्त्रप्त	(हि॰) ४२४
महाभारतविष्णुसहस्रताम —	(सं∙) ६७६	माता पद्मावतोखन्द भ० मही चन्द	(सं० हि०) ५६०
महाभिषेकपाठ	(सं०) ६०७	माधवनिदान साधव	(सं०) ३००
महाभिषेकसामग्री	(हि०) ६६=	माधवानलकया आनन्द	(सं०) २३४
महामहर्षिस्तवनटीका —	(सं०) ४१३	मानतुंगमानवति चौपई मोहनविज	य (सं०) २३५
महामहिम्नस्तोत्र —	(4•) ४१३	मानकी बड़ी बावनी सनासाह	(हि∗) ६३ ८
महालक्ष्मीम्नोत्र	(सं०) ४१३	मानबावनी मानकवि	(हिं०) ३३४, ६०१
महाविद्या [मन्त्रोका संग्रह] —	(स०) ३४१	मानमञ्जरो नम्दरास	(हि०) ६४१
महाविद्याविडम्बन	(सं०) १३८	मानमञ्जरी नन्द्दास	(हি ॰) २७६
महावारजोका चौडाल्या ऋषि लालचन	द्र (हि०) ४४०	मानलघुबावनी सनासाह	(हिं०) ६३=
.महावीरछन्द शुभचन्द	(हि॰) ३८६	मानविनोद मानसिंह	(4io) 300
महाबीरनिर्वाखपूजा	(सं०) ५२६	मानुषोत्तरगिरिपूजा भ० विश्वभूषस	(40) YEW
महावीरनिर्वासकस्यःसपूत्रा	(सं०) ४२६	मायाबहाका विचार	(हिं।) ७६७
महाशीरनिर्वाणकल्यालकपूजा —	(हि॰) ३६८	मार्कण्डेमपुरासा	(सं०) १४३, ६०७
महावीरपूजा वृन्दावन	(हिं०, ५२६	मार्थसमा व गुस्तस्थान वर्सन	
महावीरस्तवम जितचन्द्र	(हि॰) ७००	मार्गसावर्सन	(आर) ७१६
महाबीरस्तवनपूजा समयशुन्दर	(ছি৽) ৬३২	मार्गसाविधान	· (fe) 64*
बहाबीरस्तोष भ० श्रमरकीर्ति	(র্ন০) ৬২৬	मार्गशासमास	(HI0) AS

बन्धनाम				[प्रन्था नुकमश्चिका
	लेखक	भाषा पृष्ठ स	ं० प्रस्थनाम	लेखक	27157 nm
मालीरासी .	जिनदास		६ मुनिसुब्रतगुरामा		भाषा पृष्ठ सं॰
मिच्छादुनकड़	म ० जिनदास	(हि॰) ६=	5 2	न॰ कृष्णदास 	(स०) १४३
मित्रविलास	घासी	(हि०) ३३		इन्द्रजीत	(हि०) १५३
मिथ्यःत्वसः इन	बस्तराम	(हिं०) ७८, ५६	3 3	देवा त्रहा	(हि॰, ४४०
मिष्यास्त्रखंडन	-	(हि॰) ७	j		(स०) ४२⊏
मुकुटसप्तमीकथा	पं० श्रभ्रदेव	(सं•) २४	- 1	યહદ, પ્	७८, ६४६, ७५२
मुकुटसप्तमीकया	खुशालचन्द	(हि॰) २४४, ७३।	मुनीश्वरोकी जयमान		(भग०) ६३७
मुकुटससमीव्र तोद्यापन	_	(मं∘) ५२७	1	त्रद जिनदास	(हि०) ४७१
मुक्तावलिकय।		(मं०) ६३१	1		६२२, ७५०
मु क्तावलिक था	भारामल	(हि०) ७१४	1 -		(हिं०) ६२१
मुक्तावलिगीत	सक्तकी त्ति	(हि॰) ६६६	3 - 11 - 141	नार्य देवचन्द्र	fac) 300
मुक्तावलि [मण्डन			1 50	_	(Fr) >= E
	ीं सुन्वसागर	— ५२४ (सं०) ५२७	1	महादेव	(म०) २१०
मुक्ताव निपूजा			मुहल मृताःली q	रसहं सपरि त्राजव	गचार्य—
मुक्तावलिविधानकथा	श्रुनसागर	सं०) ४३६, ६६६ (सं०) २३६	,	शङ्कराचार्य	(કિં ડ) હદ્દ
मुक्ता - लिवनकथा	सोमप्रभ		57 137 114 41	- (मं० हि.) २६०
मुक्तावांलविधानकथा	\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\		मृहसंसग्रह		(मं०) २६०
	बुशालचन्द	(भ्रप०) २३६	मूटनाज्ञानानुः ग		(म०) ७६२
मुक्तावलि द्र तकथा	341014-4	(feo) 2xx	मूर्वकेनदाम		
मुक्तावलि व्रतकी तिथिया	_	(f80) (08)	मूलमघकोपट्टावलि		
मुक्तावलि व त _् जा	-	(ছি০) ১৩%	सूत्राचारटीका आह	^{२ वसुन} न्दि (प्र	
उक्तावलि य तविधान		(म०) ५२७	T	d	ा∘ मं∘) ७६
मुक्तावलिवनोद्यापनपूजा	_	(सं०) ४२७	7 mm		(#o) ve
मु ंक्तरीहरगीत		(म॰) ५२७	पूलाबारभाषा		(fec) =•
मुखावलोकनकथा -	_	(Fe) 64x 1	गापुत्र - उढाला		(हि॰) ६०
मुनिराजका बारहमामा		(Ho) 583 1	[त्युमहोत्सव		हि०) २३४
- 0		(FRe) 19=9 H		— (#o)) ११४, ४७६
जुनिमुद्रतनाथपूजा मुनिमुद्रतनाथपूजा	भाचन्द (सं	० हि०) ४४७ 🏻	् ः ः । । । सदा <u>सु</u>	त्य कामजीवःल-	
यु:गर्यं नायपूत्रा मुनिमुद्रतनायस्तुति		स॰) ४०६ म	युमहोत्सवभाषा		हे॰) ११५
o. · Panatasidid	- (थप०) ६३७ ँ	2 4 0 4 4141	— (f	हे॰) ४१२
		,			६६१, ७२२

¥

प्रन्थानुकमिणका	}					١,	EXE.
घन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्	इसं०	प्रन्थनाम	सेसक	भाषा प्र	सं ॰
मेचकुमारगीत	पूनो	(हि॰)	७३८	मोहविवेक्युद्ध	बनारसीदास	(हि॰) ७१४	9 ξΥ
		७४६, ७५०	, ७६४	मौनएकादशीकया	श्रुतसागर	(सं०)	२२८
मेषकुमारचौढालिया	कनक्रमाम	हि०)	६१७	मौनएकादशीस्तवन	समयसुन्दर	(f ₹ ∘)	६२०
मेघकुमारचौपई	-	(हि०)	४७७	मौनिवतकथा	गुणभद्र	(सं∘)	२३६
मेघकुमारवार्ता		(हि॰)	ÉÉA	मौनिवतकथा	_	(सं∘)	२३७
मेघकुमारसज्ञाव	समयसुन्दर	हि॰ '	६१८	मौनिवतविधान	र ल कीर्सि	(सं० ग०)	488
घदूत	कालिदाम	(4:0)	१८७	मौनिवनोद्यापन	_	(सं∘)	४१७
मेघदूनटीका प	रसहंसपरित्राज	कःचार्य			य		
मेघमाना		(म∘)	२६०		•		
मेपमानाविधि		(मं०)	५२७	यन्त्र [भगे हुए व्यक्तिवे	वापम भानेका	}	€0₹
मेघमानावनक्या	श्रृतमः गर	(मं०)	४१४	यन्त्रमन्त्रविधिकल	_	(हि॰)	318
मेधमानावतकथा	******	(सं०) २१६	२४२	यन्त्रमन्त्रसंग्रह	_	(सं०) ७०१	, હૃદ
मेघमा नावनकथा	खुशान चन्द्	(हि॰) २ ३ ६,	388	यन्त्रसग्रह		(सं∘)	3× 3
मेघमालावत [मण्डल वित्र]—	,	(२४			६८७	, ७६५
मेधमालाव्रतोद्यापनकः	या	(सं०)	५२७	यक्षिरगीकरूप		(सं∘)	₹4.5
मेघमानावतोद्यापनपूज	rr	(मं०)	४२७	यज्ञकीसामग्रीका व्यौरा	_	(हि∙)	४६४
मेधमालाञ्च तोद्यायन	_	(स० हि॰)	५१७	यज्ञमहिमा	-	(हि॰)	4
			५३६	र्यातदिनचर्या	देवसृरि	(शा॰)	50
मे/दनीकोण		(सं०)	२७६	यतिभावनाष्ट्रक १	माः कुम्दकुन्द	(গা॰)	¥⊌₹
मेरूपूजा	मोमसेन	(सं०)	હદ્ય	यतिभावनाष्ट्रक		(4°)	430
मेरपंक्ति तपकी कथा	म्बुशाल चन्द	(हि ०)	प्रश्ह	यतिष्ठाहार के ४६ दो		(fe•)	\$ ₹ 0
मोक्षपैडी	बनारसंदाम	(हि॰)	۲.	यःयाचार प	प्रा० बसुनन्दि	(सं०)	50
		६४३, र	38e	यमक	_	(सं०)	४२६
मोक्षमार्गप्रकाशक	पं॰ टोहरमल	(राज०)	۲.	(यमकाष्ट्रक)			
भोक्षणस्त्र	उमास्ब:मी	(सं०)	,£ €¥	यमकाष्ट्रकस्तोत अ	अमरकीर्त्ति	(सं०) ४१३	, ४२६
मोरपिच्छधारी [कृष्ण]केकवित कपे	त (हि•)	₹७३	यमगलमातगकी कथा		(सं∘)	२३७
मोरपिच्छधारी कृष्सा] के कविल धर्मर	(१स (ह०)	€0₹	यञ्चस्तिलकचन्यू	सोमदेवसूरि	(सं∙)	१८७
मोरपिच्छधारी [कृष्ण]	के कविस विचि	त्रदेव हि०)	FOP	यगस्तिलकचम्पूटीका	श्रुतसागर	(€,0)	१८७
मोहम्बदराजाकी कव।		(fg ·)	400	वशस्तिलकवस्पूटीका	-	(4, ∘)	१६८

550]					[प्र	बानुकमर्शिका	!
		भाषा पृष्ठ	2 0 1	प्रनथनाम	संगक	भाषा पृष्ठ सं	•
प्रम्थनाम	हेसक		- 1	योगशत	बररुचि	(सं०) ३०	२
यक्षीधरकया [यशोधर ⁴	(रित्र] खुशाल व		183	यागशतक		(सं∘) ३०	₹
			380	योगशतक	_	(हि०) ३०	₹
यक्षीधरचरित्र	झानकीर्त्ति	,	\$55	योगशत टीका	_	(सं <i>०</i>) ३०	7
यशोभरवरित्र व	व्यस्थपद्मनाभ		3=5	योगशास्त्र	हेमचन्द्रसृरि	(सं०) ११	٤
बहाधरच रेण	पूरसादेव		150			(स∘) ११	٤.
वक्रोधरचरित्र	वादिराजसूरि		\$58	योगद्यास्त्र	ये। गचन्द	(io) %	×
वसोधरचरित्र	वासवसेन	,	828	यागसार	ये।गीन्द्रदेव (प		ı x
यक्तोधरचरित्र	श्रतसागर	(₹•)	१६२	योगमार	स्थान्द्रद्व (न सन्दर्भ	(fe) १ १	
मशोधरचरित्र	सकलकीत्ति	(सं०)	१८८	योगसःरभःषा		(fgc) 1	
वशोधरचरित्र	•	स्रवः) १८८			बुधजन		
यशोधरवरिष	गारबदास	(Fo 40)	155	योगसारभाषा	प्रमाताल चौधरी		
स्त्रोधरव रित्र	पन्नालाल	(हि <i>र</i>)	3.5	योगसारभाषा	_	((oF o 51)	
श्रकोधरचरित्र		(हिं∙)	१६२	योगमारसंग्रह		•	१७
बक्तोधरवरित्र टिप्पस्	प्रभाचन्द्र	(# °)	189	यंगिनीकव च	_	(- /	• 5
बात्रावर्णन		(हि॰)	308	यागिनीस्तीत्र			३०
सादवव सावलि	-	(हि॰)	६७६	यागीचर्चा	गहात्मा झानचन्द	(भा०) ६	
युक्त्यनु रा सन	ब्याः समन्तभद्र	(म∘)	१३६	योगं रासी	योगीन्द्रदेव	(भग०) ६	o \$
गुक्त्यानु ञ्जासनटीका	विद्यानिद	(स•)	3 🕫 9	!		७१२, ७	34
युगादिदेवम[हस्तस्तो	স —	(40)		योगीन्द्र रूजा	-	(सं०) ६	, u \$
ब्रुनानी नूसले	-	(सं∘)	६६१	1	₹		
होगर्जिताम रिग्	मनू सिंह	(स०)	३०१	ì	•		
योगवितामांग उ	पाध्याय हर्षकीर्वि	त (सं०)	३०१	रङ्ग बनाने की	afu —	(हि॰) ६	२३
योगचितामीं ए	_	(मं०)	₹0 ₹	रक्षाबधनक्या	-	(40) =	130
योगचितामशिवीज	ъ —	(₹i∘)	३०१	रक्षाबधनकथा	म ० झानसागर	(हि•)	१२०
योगफल		सं∘)	२६०	रक्षाबधनकथा	नाथूराम	(f₹•) ÷	₹¥ ₹
योगबिन्दुप्रकरण	श्रा ० ह रिभद्रसूरि	(सं∘)	११६	रक्षाविधानकय	-	(सं०) २४३, १	9 3 2
योगमस्ति	_	(सं०) ६३	३, ६२८	्र रघुनाथविलाम	रघुनाथ	(हि॰)	₹₹ _{"3} "
योगभक्ति	_	(গাম)	215	रधुवंशटीका	मक्षिनाथसूरि	(सं∘)	tea .
योगभक्ति	पन्नाताल नौधरी	(庵)		रपुवंशटीका	गुर्खावनयगरिए	(सं०)	(EX

```
प्रम्थाञ्चकमधिका ]
                                                                                    [ = 5 ?
 पन्यवास
                      बेसक
                                भाषा पुष्ठ सं० |
                                                 प्रम्थन। म
                                                                      सेवक
                                                                                भाषा पृष्ठ सं०
रचुवंशटीका
                  समयसुन्दर
                                 (#o) 188
                                                रत्नवयपुत्रा
                                                                पं वन्द्रसेन
                                                                                 (#o) XEY
              सुमविविजयगारिए
रचुवंशटीका
                                 (सं०) १९४
                                                रत्नवयुजा
                                                                                  (सं०) प्रश्
रपुवंशमहाकाव्य
                    कालिदास
                                 (सं०) १६३
                                                      प्रदेश, प्रवेष, प्रवेष, देवर, देवर, देवर,
रतिरहस्य
                                 (feo) uee
                                                             ६४२, ६६४, ७०४, ७०४, ७४१, ७६३
                                 (सं०)
रश्नकर हमावकाचार
                   समन्त्रभट
                                        58
                                                रत्नत्रयपुत्रा
                                                                             (सं० हि∘) ५१ ≤
                                    ६६१, ७६%
                                                रत्ननयपूजा
                                                                             (प्रा॰) ६३४, ६४४
रत्नकर डशावकाचार पं श्रसदासुख का सलीवाल
                                                रत्नवयपूजा
                                                                   व्यवभवास
                                                                                 (हि०) ५३०
                          (हि॰ गद्य)
                                          53
                                                रत्नचयपूजाजयमाल
                                                                  ऋषभदास
                                                                                 (भप०) ५३७
रत्नकरंडश्रावकाचार
                      नथमल
                                 (हि∘)
                                          53
                                                रत्नत्रयपुत्रा
                                                                    चानतराय
                                                                                 (Bo) YEE
रत्नकरढश्रावकाचार सधी प्रशासास
                                 (हि०)
                                          ۳ą
                                                                                    X09, X72
रत्नकरंडश्रावकाचारटीका प्रभाचन्द
                                 (सं०)
                                          53
                                               रत्नत्रयपुत्रा
                                                                  खुशालचन्द
                                                                                 (हि॰) ४१६
रत्नकोष
                         - (#o) $38, U:E
                                                रत्नचयपुत्रा
                                                                                 (हि०) ४१६
रत्नकोष
                                 (हि०)
                                         334
                                                                              430, EVY, WYK
रत्नप्रयउद्यापनपुत्रा
                                 (सं•)
                                         4 20
                                                रत्नत्रयपूजाविधान
                                                                                  (do) tous
रत्नत्रयकवा
                त्रः ज्ञानसारार
                                 (हि∘)
                                                रत्नत्रयमण्डल [चित्र]
                                         980
                                                                                         171
रत्नवयका महार्घ व क्षमावरणी ब्रह्मसेन
                                 (सं∘)
                                                रत्नवयमण्डलविधान
                                         ७६१
                                                                                 (हि॰) ५३०
रत्नवयगुराकथा
               पं० शिवजीलाल
                                 (सं∘)
                                                रत्नवयविधान
                                         २३७
                                                                                  (सं०) १३०
रत्नव्यवसमाल
                                 (গা॰)
                                                रत्नवयविधानकया
                                                                    रमकीर्त्त (सं०) २२०, २४२
                                         ४२७
रत्नत्रयजयमाल
                                 (सं∘)
                                                रत्नवयविधानकया
                                         ४२८
                                                                                  (i•) २३७
                                                                    भूतसागर
रत्नवयभ्यमाल ऋषभदास बुधदास
                                 (हि॰)
                                                रत्नत्रयविधानपुत्रा
                                         215
                                                                     रक्रकीर्त्त
                                                                                  (सं∘)
                                                                                          410
रत्न त्रय त्रयमाल
                                 (बर०) १२८
                                                रत्नवयविधान
                                                                     वेकचम्ब
                                                                                  (हि∙)
                                                                                          ***
रत्नवयज्यमाल
                                 (हि०)
                                                रत्नमयविधि
                                         ४२₽
                                                                    जाशाधर
                                                                                  (सं०) २४२
रत्नवयजयमालभाषा
                                 (f₹∘)
                                                रत्नवयव्रतक्या [रत्नवयक्या]
                     नथग्रस
                                         ४२५
रत्वचयत्रयमास तथा विकि
                                 (#To)
                                                                विविद्याचि (सं०) ६४४, ६६४
                                         4×=
रत्न त्रयपाठिविधि
                                 (सं∘)
                                         240
                                                रत्नवयवत विधि एवं कवा
                                                                                  (হি॰) ৬१३
                पं० ब्याशाधर
रत्नत्रयपूजा
                                 (सं०) ४२६
                                                रत्नवयवतोश्वापन
                                                                     केशवसेन
                                                                                   (सं०) ५३६
रत्वत्रयपुत्रा
                    केशवसेन
                                 (वं०) ४२६
                                                रत्नवयवतोद्यापन
                                                                                   (4·) #$#
रत्नत्रयपुत्रा
                    पद्मनन्द
                                  (do) १२६
                                                                               1177, 1186° 250
                                   ४७४, ६३६ | रत्नवीयक
                                                                       गणपवि
                                                                                   (40) 860
```

'व्यक्ष्य]					[प्रन्थ। नुकम	विका
प्रन्थनाम	सेखक	भाषा प्र	ष्ठ सं०	प्रस्थनाम	तेतक	भाषा !	हुष्ठ सं०
रत्नदीपक	_	(सं∘)	२६०	रसप्रकरण	_	(40)	३०२
रत्नदीपक	रामकवि	(हि॰)	315	रसप्रकरण		(हि॰)	३०२
रानमाला	ष्मा० शिवकोटि	(सं∘)	5 2	रसमञ्जरी	शास्त्रिनाथ	(स∘)	३०२
रत्नमंजूसा		(4 °)	३१२	रसमंजरी	शकुधर	(सं∘)	३०२
रलमञ्जूषिका		(सं∘)	३१२	1	भानुदत्त मिश्र	(हि ॰)	318
रत्नावनिव्रतकथा	गुणनन्दि	(हि॰)	२४६	रसमञ्जरीटीका	गोपालभट्ट	(स∘)	₹%.8
रत्नावलिवतकथा	जोशी रामदास	(सं०)	२३७	रससागर	300000	(fa∘)	458
रत्नाव लिवतविधान	ड्र॰ कृष्मदास	(हि॰)	५३१	रसायनविधि		(fa)	480
रत्नावनिवतोद्यापत	_	(सं∘)	प्र३६	रसालकुं वरकी चौ ।ई	नावर कवि	(हि∘)	X 19 15
रत्नावसिवनोंकी ति	थियों के नाम	हि॰)	६५५	रसिकप्रिया		(हि०) ६७:	
रवयात्रावर्शन		(हि॰)	७१६	रसिकत्रिया		(fgo) 49	
रमलज्ञान	_	(हि॰ ग॰)	२६१	रागर्चातग्रकादूहा	વરાવ	(हिं°)	१ ७९६ १७१
रमलवास्त्र	पं० चिंतासिए	(स∘)	२६०	रागमाला		(स०)	३१८ ३१८
रमलशास्त्र	_	(हि∘)	२६०				
रयस्थासम	भा ० कुन्दकुन्द	(∘1₽)	58	रागमाला	श्यामसिश्र	(हि०)	9 9 8
रविवारकथा	खुशालचन्द	(हि॰)	४७७	रागमाला के दो	जैनश्री	(f₹∘)	950
रविवारपूजा		(सं∘)	४३७	रागमाला के दोहे		(f ह ∘)	७७७
रविवारव्रतमण्डल [[বিস] —		४२४	रागरागनियों के नाम	_	(हि॰)	३१६
रविवतकया	श्रुतसागर	(हि०)	२३७	रागुधासावरी	रूपचन्द	(भग०)	£8.6
रविवतक्या	जयकीर्त्ति	(हि॰)	६६६	रागों के नाम		(हि०)	७७३
रविव्रतकथा [रविव	।ग्कथा] दे वे न्द्रभूष	ास (हि॰)	२३७	राजनीति कवित्त	देवीदास	(f g 0)	७४२
			909	राजनीतिशास्त्र	चाग्वय	(सं०) ६४०	, ६४६
रविद्रतकथा	भाफकवि (हि॰	प०) २३७	, ሂξሂ	राजनीतिशास्त्र	जसुराम	(हि॰)	₹₹
रविव्रतकथा	भानुकी ते	(हि॰)	७५०	र)जनं।तिशास्त्रभाषा	देवीदास	(हि०)	335
रविव्रतकथा	´	(fg•)	२४७	राजप्रशान्त	_	(सं∘)	¥0¥

(सं०) ५३२ राजादिकल

रसकीतुक राजसभारंजन गंगादास (हि॰) १७६ राजा प्रजाको दशमें करने का मन्त्र — (हि॰) १७१

(हि॰) ७१२ राजारानीसञ्काय

रविवतोद्यापनपूजा देवेन्द्रकीत्ति

रसकोतुकराजसभार**ज**न

६०३, ७५२ राजा चन्द्रगुप्तकी चौपई झ० गुलाल (हि॰) ६२०

(सं०) २६१

(हि॰) ४५०

प्रम्थनाम	लेख क	भाषा पृष्ठ	सं०	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ट	सं॰
राजुलपच्चीसी	बालचंद विनोदीला	ला (हि∙)	Ęo o	रामायग्रमहाभारतकय	प्रश्नोत्तर —	(हि•ग०)	५६ २
६१३, ६	२२, ६४३, ६४१,	इ.स. १८४, ७	₹₹,	रामावतार [वि	*] —		€•¥
9 X \$				रावपमेग्गीसूत्र	-	(সা৽)	¥₹
राजुलमञ्जल	_	(fgo)	o¥ ₹	राशिफल		(सं∘)	७६३
राजुलको सम्भःय	जिनदास	(fg∘}	exe	रासायनिकशास्त्र		(हि॰)	\$\$0
राठीडरतन महेश	दशोत्तरी	(f₹∘)	२३८	राहुफल		(हि ॰)	२६१
रोडपुरास्तवन	_	(हि॰)	४५०	रक्तविभागप्रकरस		(सं∘)	58
राडपुरकास्तवन	समयसुन्दर	(हि॰)	33,	रिदृशोमित्रारुउ	स्वयभू	(भप०)	६४२
रात्रिभोजनकथा		(₹0)	? 3 =	रुवमश्चिक्या	मदनकीत्ति	(स∘)	२४७
रात्रिभोजनकथा	किशनसिंह	(हि॰) :	2 \$ =	: स्वमसिकुष्णुजीको र	-	(हि॰)	990
रातिभोजनकथा	भारामल	(हि०) ः	? \$ =				
रात्रिभोजनकथा		(हि॰) :	१२≡	रुवमिस्तिविधानकथा	इत्रसेन (र		
रात्रिभोजनयोपई		(हि॰)	3 🕫 🥱		वझम	(हि <i>॰</i>)	959
रात्रिभोजनस्यागवर	ર્શન	(f ह o)	4	रुक्मि सितिवाहवेलि प	ध्वीराज राठीड	(हि॰)	\$68
राधाजन्मोत्सव		(हि॰)	4	रुग्नविनिश्चय	_	(सं∙)	# \$0
राधिकानाममाला	_	(हि॰) ४	188	रुविकरमिरिपूजा भ	० विश्वभूषण	(सं०)	# #0
रामकवस	विश्वामित्र	(हि॰) ६	ę u	रुद्रज्ञान		(सं०)	२१ १
रामकृष्णकाव्य	दैवज्ञ पं० सूर्य	(सं०) १	٤¥	रूपम क्ष ीनाममाला	गोपालदास	(सं∘)	२७६
रामयन्द्रवरिष	वधीचन्द	(हि॰) ६	13	रूपमाला		(सं∙)	२६२
शमबन्द्रस्तवन		(सं∘) ४	24	क् रसेनचरित्र	_	(₹•)	२३€
रामचन्द्रिका	केशवद।स	(हि॰) १	£ ¥ !	रू स्थम्यानवर्शन		(सं०)	219
रामचरित्र [कविला	iu] नुतसीदास	(fgo) ફ	وع	रेसाचित्र [बादिनाय	चन्द्रप्रभ वर्द्धमानः	एवं पादवंना	ष]
शमबसीसी	जगनकवि	(हि॰) ४	۲× :				७६३
रामविनाद	रामचन्द्र	(हि ॰) ३	• २	रेखाचित्र			£70
रामविनोद	रामविनोद	(हिं°) ६	80	रेवानदीपूजा [ब्राहूडक	टिपुजा विश्वसम	स्रा (सं॰)	433
रामविनोद				रैरवत	गंगाराम	(सं∘)	XXX
रामस्तवन			\$8	रैदव्रतकथा	देवेन्द्रकीर्थि	(सं∘)	776
रामस्तोत			5.8	रैदन्नतकथा	प् य ण्ड्रकारचे	(सं∙)	11E
रामस्तोत्रकाच	****					٠.	
		(43) 1	• (Z48(14)41	म ० जिनदास	(₹•)	₹¥ ६

≈ €8]					ĺ	प्रन्थानुकमश्चिका
प्रन्थन। स	तेसक	भाषापृ	छ सं॰	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
रोहिणीचरित्र	देवनन्दि	(भप•)	२४३	लग्नचन्द्रिकाभाषा		(सं०) २९१
रोहिसीविधान	मुनि गुणभद्र	(घप॰)	६२१	लग्नशास्त्र	वद्यं मानसूरि	(મં∘) રશ્ય
रोहिलीविधानकया		(सं∘)	. २४०	सं युद्धन न्तवतपूजा		(सं∘) ४३३
रोहिसीविधानकया	देवनन्दि	(भ्रप०)	2 43	लघुग्रभिषेकविधान	_	(पं०) ४३३
रीहिशीविधानकथा	ब सीदास	हि॰)	७८१	स धुनत्याग्	_	(मं०) ४१४, ४३३
रोहिग्गिव्रत्तकथा	ब्रा० भानुकीर्त्ति	(सं∘)	२३६	लघुकल्यागापाठ		(हि॰) ७४४
रोहिसीवतकथा	ललितकीर्त्ति	(सं∘)	₹¥¥	ल षुचाए। स्यरा जनीति	च।शि क्य	(前0) 11年
रोहिसीव्रसक्या	_	(भप०)	२४५			७१२, ७२०
रोहिएीव्रतकथा	ज ० ज्ञानसागर	(हि॰)	२२०	लघुजातक	भट्टीत्पल	(स०) २६१
रोहिग्गीवतकया	_	(fe•)	२३६	लघुजिनसहस्रनाम		(सं०) ६०६
रोहिएशिवसकथा		(हि॰)	98 x	लघुतत्वार्थसूत्र		(सं०) ७४०, ७६२
रोहिस्तिवतपूजा के	(वसेन कृष्णसेन (सं०) ४१३	१, ५१६	लघुनाममाला	हर्षकी तिसूरि	(सं०) २७६
रोहिस्तीवतपूजामंडल	ा[चित्रसहित] - (सं०) ५३३	१, ७२६	लघुन्यासवृत्ति	_	(स०) २६२
रोहिगीवतमण्ड लवि	थान			नघुप्रतिक्रम ण		७१७ (वाप्त)
श्रीहिस्मीवतपूजा		(हि॰)	६३८	ल घु प्रतिक्रमग्		(प्रा॰सं०) ५७२
शोहिंगीवतमण्डल [বৈদ] —		५२४	लघुमञ्जल	रूपचन्द	(हि०) ६२४
रोहिसीवतोद्यापन	_	(सं०)	प्र१३	ब षुमञ्जल		350 (oši)
		४३२	, ५४०	त घुव ःचरगी		(सं०) ६७२
रोहिखोद्रतोद्यापन	_	(हि॰)	280	लघुर्रावद्गतकथा ब्र	० झ नसागर	(हि॰) २४४
	ल		i	लघुहपसर्गवृत्ति	_	(स•) २६३
लंधनपथ्यनिर्शय		(सं०)	303	लघुत्रातिकविधान	_	(सं∘) ४३२
लक्ष्मगोत्सव	श्रीलदमग्र	(सं०)	303	लचुबातिकमन्त्र		(सं०) ४२४
लक्ष्मीमहास्तोत्र	पद्मनन्दि	(स०)	६३७	ल पुशांतिक [मण्डल चि	٦]	४२६
लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(सं∘)	ASA .	लघुशातिस्तोत्र	_	(सं०) ४१४, ४२३
	६, ४३२, ५६८, ५०			लघुश्रेयविधि [श्रेयोविध	।।न] व्यभवनहि	द (सं०) ५३३
•	द, ६६३, ६६४, ६ ७	_	i	लघुसहस्रनाम	-	(सं०) ३६२
लक्ष्मीस्तोत्र		(स∘)	*:4			48u, 44.
	48¥, € ¥			लषुसामाविक [पाठ]	_	(4.0) EA
लक्ष्मीस्तोत्र	चानतराय	(हि॰)	४६२		३६२, १	०४, ४२६, ४२६
सम्प्रवीन्द्रकामाया स	योक्षीराम सोमानी	(हि॰)	७५१	चपुसामा यिक	-	(सं० हि०) ६४

-			. 1		>		4.
प्रन्थनाम	तेख क	भाषा प्रश्न	1	प्रन्थनाम	सेखक	भाषा पृष्ठ र	
लघुसामायिक		,	1	लहरियाजी की पूजा		,	x 2
लचुसामायिकभाषा	महाचन्द्	,	- 1	लहुरी	नाथू	,	εş
लघुमारम्बत चनुभू ति	स्वरूपाचाये	• ,	२६३	लहुरी नेमीश्वरकी	विश्वभूपग		२४
लबुसिद्धा-नकौमुदी	वरद्राज	(सं०)	₹3¢	नाटीसंहिना	राजमल	٠,	4
लघुसिद्धान्तकौस्तु भ		(मं∘)	२६३	लावरणी मांगीतु गीकी	इ र्पकीत्ति	(हि॰) ६	દહ
लधुन्तोत्र	_	(सं∘)	X S X	लि ग राहुड	षा० कुंदकुंद		10
लघुरनपन		(सं०)	४३३	निगपुराग			X ₹
लघुम्तानडोका	भायशर्मा	(मं०)	***	विगानु वासन	हेमचन्द्र	(सं∘) ः	৩৩)
लघुम्नपनविधि	-	(#o)	६४=	लिगा नुशासन		(सं∘) ः	२७६
लघुम्बयंभूम्तो त्र	समन्त्रभद	(₹0)	प्रश्प	र्लानावती	भाष्कराचार्य	(सं०)	375
लघुम्वयभूमतोत्र		(નં૦) પ્રરુ૭,	XEX	लीलावतीभाषा ड	यास मधुरादास	(fgo)	3∌€
ल बुशक्येन्दुर्गम र		(सं∙)	२६३	नुहरी	नेमिचन्द	(हि॰)	६२२
नांत्यविधान रथा	पं० ऋभ्रदेव	(मं∘)	२३६	बुह री	सभाचन्द्	(हि॰)	७२४
लब्धिविधानकथा	खुशासचन्द	(हि॰)	२४४	लोकप्रत्यास्यानधमि	नक्या	(सं∘)	२४०
लांटधविधान चौपई	भीपमकवि	(हि०)	७७५	लोश्यर्णन		(व्हे०) ६२७,	७६३
सञ्चिवधानपूत्रा	श्रभ्रदेव	(₹0)	४१७		व		
ल व्यक्तिधानपूजा	हर्षकीर्त्त	(₹०)	333		•	(-3 \	
लब्धिवधानपूत्रा		(सं •)	* \$ 3 %	वक्ताधोतालक्षण		(₫∘)	37.6
		X3K	, XX0	वक्ताश्रोतालक्षण		(हि॰)	378
लस्थिविधानपूजा	श्रानचन्द्	(हि॰)	X # X	वज्रदन्तवक्रवति क		हि॰)	७२७
लब्धिविधानपूजा		(हि॰)	४३४	वजना भक्कवीत	की भावना भूधरद		5 1
लब्धिविधानमण्डल् [ৰিয়]		४२४		,	14E, EOY, 1	
संबिधविधानउद्यापनपू	(জা —	(सं०)	メネメ	वज्रशङ्करस्तोत्र	_	(सं०) ४१४,	४३२
लब्धिविधानोद्यापन		(सं∘)	280	वनस्पतिसत्तरी	मुनिचन्द्रसूरि	(₹7)	= 1
सब्धिविधानवतीद्याप	नपूत्रा	(संo)	' ¥38	वन्देतानकी जयमार	_	(सं∘)	१७२
लस्थिसार	ने मिचन्द्राचार्य	(সা ০) ধ	₹. ७३ ६			tex	, ६५५
सब्धिसारटीका	· -	(सं•)	¥ŧ	वरांगचरित्र	भर्नु इरि	(सं०)	११५
सब्धिसारभाषा	पं॰ टोहरमल	(ۥ)	¥3	वरांगवरित्र	पं॰ बद्ध मानदेव	(सं∙)	162
लब्धिसारक्षपसासार				वर्द्ध मानकथा	जयमित्रहत	(बप॰)	188
सम्बद्धारक्षपग्रासार	संहष्टि एं० ट्रीबर	सम्न (हि॰)	¥\$	वद मानकाव्य	भीमुनि पद्मनन्दि	(₫°)	{ 2 2

प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृ	ष्ट सं०	ग्रन्थ ताम	क्षेत्रक	भाषा पृष्ठ स०
वर्द्धभानवरित्र	पं० केशरीसिंह (वि	हें०) १५४	८, १९६	विज्युचरको जयमाल		(हि०) ६३८
वर्षा मानद्वात्रिशिका	सिद्धसेन दिवाकर	(सं∘)	४१५	विज्ञमिपत्र	हंसराज	(हि०) ३७४
वर्द्ध मानपुराख	सकलकीर्त्त	′ सं o)	१४३	विदग्धमुखमंडन	धर्मदास	(सं०) १६६
वर्द्ध मानविद्याकल्प	सिंहतिलक	(स०)	३५१	विदग्धमुखमडनटीका	विनयः ल	(स॰) १६७
वर्डभानस्तोत्र	छा ० गुणभद्र	(स०)	* ? *	विद्वज्जनबोधक		(सं०) ६६,४६१
		843	, ४२६	विद्वजनबोधकभाषा	संघी प्रशासास	(রি৹) = ६
बद्ध मानस्तोत्र	(*	io) ६१४	, ६५१	विद्वज्जनबाधकटीका		(हि०) ८६
वर्षवोध	-	(स०)	₹8,	क्यिमानबोसतीर्थ दूरपृ	(जा सरेन्द्रकीर्नि	(संठ) ४३४, ६४४
वसुनन्दि श्रावकाचार	श्वा० वसुनन्दि	(সা৹)	5 X	विद्यमानवीमतीर्थाञ्चर	(जा जौहरील।ल	विताला
वनुनन्दिश्रात्रकाचार	पश्चात्ताल	(fह。)	5 ×	1		(हि०) ५३४
बसुधारा गठ		(ų•)	४१५	विद्यमानबीसतीर्थ हुरो	कीपूजा	(हिंद) ४११
वसुधारास्तोत्र	- (₹	ं०) ४१४	, ४२३	विद्यमानबीमतीर्थ ह्रूरर	तवन मुनिदीप	(हि॰) ४१४
वाग्भट्टालङ्कार	बारभट्ट	(सं∘्र	३१२	विद्यानुजासन	_	(원호) 2것은
वाग्भट्टालङ्कारटीका	वादिराज	(सं०)	₹१३	विनतिया	-	(15°) £=X
बाग्मट्टालख्द्वारटीका	-	(सं∘)	323	विनती	श्रजैशाज (१	हे॰) ७७६, ७२३
वाजिदनी के प्रक्लि	वाजिद	(हि∘)	€ १३	विनती	कनककीर्त्ति	(हिं०) ६२१
वासी ग्रष्टक व जयम	nल द्यान तराय	(हि॰)	७७७	विनती	कुशलविजय	(দি০) ৩০২
वारिषेणमुनिकथा	जोधराज गोदीका	(हि॰)	280	विनती	वर्गानदासः (हेर) ४२४, ७१७
वार्तासंग्रह		(हि॰)	= E	विनती	बनार सीदास	(हिं∗) ६१५
बासुपूज्यपुरासा	_	(हि॰)	११५	विस्त्री		६४२, ६६३, ६६४
बास्तुपूजा	_	(स∘)	X 	विनर्ता	रूपचन्द	·हि॰) ७६५
बास्तुपूजाविधि	_	(सं∘)	४१६		समयपुन्दर	्र(हि॰) ७३२
बास्तुविन्यास -		(स०,	348	विनती	_	(हि०) ७४६
विक्रमचरित्र दाच	सचार्य अभयसोम	(हि॰)	788	विनती गुरुग्रोकी	भूधरदाम	(हि०) ४११
विक्रमचौबोली चौपई	अभयचन्द्रसूरि	(हि॰)	240	विनर्ताचीपडकी	मान	(feo, 358
विक्रम।दित्यराजाकी	क्था —	(हि॰)	690	विनतीपाठस्तुति	जितचन्द्र	(fe) 000
विचारगाया	-	(ЯT●)	900	विनतीसंग्रह	नहार्व	(हि०) ४४१
विजयकुमारसज्काय	ऋषि लालचन्द	(हि॰)	840	विनतीसंग्रह	देशब्हा (ह	६०) ६६४, ७८०
विजयकी लिखन्द	शुभवन्द	(fg•)	3=8	विनतीसंग्रह्	-	(底o) xx。
विजययन्त्रविधान		(सं०)	848	विनोदसतसई		680, 680
•		. ,				(हि॰) ६८०

>

```
=60
 प्रधानुकर्माणका ]
                                                                                 भाषा प्रष्ठ सं०
                                                                      लेखक
                                भाषा प्रष्ठ सं०
                                                 प्रम्थत। म
                      तेलक
 घन्धन। म
                                                                     श्रुतसागर
                                                                                   (#io)
                                                                                          ₹¥•
                                                विध्युकुमारमुनिक्या
                                  (alls)
                                          ¥$
विपाकसूत्र
                                                                                   (ĕ•)
                                                                                          580
                                                विष्णुकुमारमुनिकया
                                  (#io) १५५
                त्रः कृष्णदाम
विमलनाथपुरास
                                                                                   (feo)
                                                                                          *45
                                                विधानुकुमारमुनि रूजा
                                                                     बाबूनात
                   चन्द्रकी ति
                                  (सं∘)
                                         XXX
विमानशुद्धि
                                                                                   (#0)
                                                                                          990
                                                विध्युपद्धारसभा
                                  (सं∘)
                                         ¥ $ $
विमानशुद्धिपूजा
                                                                                   (सं∘)
                                                                                          EOY
                                                विष्णुसहस्रनाम
विमानगुद्धिशानिक [मण्डलचित्र] ---
                                          * * *
                                                                                          **
                                                विजयसत्तात्रिमङ्गी आ० नेमिचन्द्र
                                                                                   (प्रा∘)
                                   (सं०) ६४८
विरदावली
                                                                                           83
                                                               वैद्यराज महेश्वर
                                                                                   (ei∘)
                                                 विश्वप्रकाश
                                    730, Fee
                                                                                   (सं०) २७७
                                                                       धरसेन
                                                 विश्वलोचन
                                  (हि॰) ७४६
विरहमानतीर्थञ्जरजनकी
                                                 विश्वलीचनकोशकी शब्दानुक्रमिणका ---
                                                                                   (सं०) २७७
                                  (सं∙)
                                          ξoų
 विरहमानपूजा
                                                                                   (#o) १६७
                                                 विहारकाव्य
                                                                      कालिदास
                                   (#o)
                                          440
विरहमञ्जरी
                     नन्धदास
                                                                                   (जा॰) ६३३
                                                 वीतरागगाया
                                   (हि∙)
                                          ५०१
 विरहमधुरी
                                                                                    (सं०) ४२४
                                                                      पद्मनन्दि
                                                 बीतरागस्तोत्र
                                  (go)
                                          000
 विरहिनी का वर्गन
                                                                          ४३१, ५७४, ६३४, ७३७
                                   (Fie)
                                          ¥ 3 4
 विवाहप्रकरस्य
                                                                   खां हेमचन्द्र (सं०) १३६, ४१६
                                   (eit)
                                          2 F X
                                                 वीतरागस्तोत्र
 विवाहपद्धांत
                                                                                    (だっ) ツメニ
                                                  वीतरागस्तोत्र
                                          X 4 6
                                   (सं∘)
 विवाहविधि
                                                                                   (धप०) ६४२
                                                 वीरवरित्र [ शनुप्रेका भाग ] रह्यू
                                   (मं•)
                                           788
 विवाहशोधन
                                                                                           ¥8.€
                                                                                     (सं•)
                                                  वीरखसीसी
                                   (सं∘)
                                           135
 विवेकजब ही
                                                                     भगौतीदास
                                                                                    (हि॰)
                                                                                            37.8
                                                  बीरजिसंदगीत
                      जिनदास (हि॰) ७२२,७५०
 विवेकजक्डी
                                                  वीरजिए।दको संघावलि
                                   (हि०)
                                            = 5
 विवेकविलास
                                                                           वृतो
                                                                                    (fgo) 00X
                                                  मेवकुमारगीत
 विषहरनविधि
                     संतोपकवि
                                   (fg.)
                                           101
                                                                                     (सं∘)
                                                  बीरद्वात्रिशतिका
                                                                    हेमचन्द्रस्रि
                                                                                             355
                                   √सं∘} ४०२
 विवापहारस्तोत्र
                       धनस्रय
                                                                                     (सं∘)
                                                                                            *44
                                                  बोरनायस्तवन
        ४१४, ४२३, ४२४, ४२८, ४३२, ४६४, ४७२,
                                                                पन्नालाल चौधरी
                                                                                     (हo)
                                                                                             48.0
                                                  बीरभक्ति
        प्रदेश, ६०५, ६३७, ६४६, ७०६
                                                  बीरभक्ति तथा निर्वासभिक
                                                                                     (fgo) ¥X?
                                    (सं०) '४१६
  विषापहारस्तोत्रटीका
                     नागचन्द्रस् र
                                                                                     (他)
                                                                                             OYE
                                                  वीररस के कवित्त
                                   (हo) ४१६
 विषापहारस्तोत्रभाषा
                    व्यवनकीत्ति
                                                                                     (সা• /
                                                                                             ¥88
                                                   बीरस्तवन
                   ६०४, ६४०, ६७० ४१४, ७७४
                                                                                             ĘĸŁ
                                                                                     (કિ•)
                                                   वृजलालकी बारहभावना
                                    (हि०) ४१६
                       प्रशासिक
  विवापहारभाषा
                                                                       कालिदास
                                                                                      (ei•)
                                                                                             $5.8
                                                   बुत्तरत्नाकर
                                    (हo) ¥40
  विषापहारस्तोत्रभाषा
                                                                                              388
                                                                       भट्ट केदार
                                                                                      (₹•)
                                                   बृतरत्नाकर
                                      ७१६, ७४७
                                                                                      (rio) 114
                                                   वृत्तरत्नाकर
  विधायुक्तमारपूजा
```

```
मन्था नुकमणिका
  = = ]
                       लेखक
                                                                       लेखक
  प्रम्थनाम
                                 भाषा वृष्ट सं०
                                                   प्रस्थनाम
                                                                                  भाषा पृष्ठ स०
                                  (सं०) ३१४
 वृत्तरत्नाकरखन्दटीका समयसुन्दरगिए।
                                                               €03, €36, €56, €64, ७€5, ७6¥
                                   (#o) ३१४
                                                                          — (मं०) ३०४, ७३८
                    सुरुह एक वि
                                                 वैद्यवसभ
 वृत्तरत्नाकरटीका
                       बृन्द्कवि
                                   (唐o) ३३६
                                                 वैद्यांवनोद
                                                                                   (सं०) ३०५
 वृन्दसतई
                                                                      भट्टशङ्कर
                    ६७४, ७४४, ७४१, ७६२, ७६६
                                                 वैद्यविनं।द
                                                                                   (রি৽) ३০২
                                   (सं०) ६३६
 बृहद्कलिकुण्डपूजा
                                                 वैद्यसार
                                                                                   (सं०) ७३८
                                  (हि॰)
                                          ४७१
                                                 वैद्यामृत
                                                                   माणिक्यभट्ट
 बृहद्कल्यारा
                                                                                   (यं०)
                                                                                          ३०५
 बृहद्गुरावलीशांतिमण्डलपूजा [चौसठऋद्विपूजा]
                                                 वैय्याकरराभूपरा
                                                                     कौहनभट्ट
                                                                                   (io)
                                                                                          ₹ ₹ ₹
                    स्बरूपचन्द
                                   (हि०) ४४१
                                                 वैध्याकरगाभूषरा
                                                                                   (40)
                                                                                          ≎६३
 बृहद्घंटाकर्णकरंग कवि भौगीलाल
                                  (हिं०) ७२६
                                                 वैराग्यगीत [उदरगीन]
                                                                      छीहल
                                                                                   (fgs)
                                                                                          €:3
 बृहद्चारिएक्यकीतिवास्त्रभाषा मिश्ररामराय (हि०) ३३६
                                                 वंराग्यगीत
                                                                       महमन
                                                                                  (ほ)
                                                                                          ₹ ₹ €
बृहद् चारिएक्यराजनीति
                                   (শ০) ৬१२
                      चाएक्य
                                                 वैराग्यपश्चासी
                                                                  भगवनीतास
                                                                                  (fg.e.)
                                                                                          5=4
                      भट्टोत्पल
                                  (स०) २६१
 वृहज्जातक
                                                 र्व राग्यशतक
                                                                     भन् द्वरि
                                                                                   (4.)
                                                                                          223
                                  (मं०) ४३१
 बृहद्नवकार
                                                 व्याकरमा
                                                                                  (40)
                                                                                          446
                                 (सं•) ६६, ६७
वृहद्प्रतिक्रमएा
                                                व्याकरमाटीका
                                                                                   (+c) = = x
                                  (সা৹) দহ
बृहद्प्रतिक्रमश्
                                                व्याकरराभाषाटीका
                                                                                  (40) DEZ
                          — (सं∘) ४०१, ७३०
बृहद्षोडशकारसपूजा
                                                व्रतकयाकोश
                                                                  पं० दामोदर
                                                                                  (4o)
                                                                                         268
बृहन्शांतिस्तोत्र
                                  (मं०) ४२३
                                                व्रतकथाको ज
                                                                  देवेन्द्रकीर्त्ति
                                                                                   मं०) २४२
                                  (मं०) ६५८
बृहदस्नपनविधि
                                                व्रतकथाकोश
                                                                    श्रुतमागर्
                                                                                  (स०)
                                                                                         288
                                  (ন৹) ২৩২
बृहद्स्वयं भूस्तो त्र
                    समन्तभद
                                                व्रतकथा को श
                                                                  सक्तकीर्नि
                                                                                  (₹Te)
                                                                                         2 4 2
                                    ६२८, ६६१
                                                व कथाकाश
                                                                                  (HO) 788
बृहस्पतिविचार
                                  (मं०) ६६१
                                                व्रतकथाकोश
                                                                             (संब्द्या०) २४२
बृहस्पतिविधान
                                  (सं०) ५४०
                                                व्रतकथाकोश
                                                                  ख्शालचन्द
                                                                                 (हि०) २४४
बृहद्सिद्धचक्र | मण्डलचित्र]
                                         444
                                                व्रतकथाकोश
                                                                                 (हि॰) २४४
बैदरभी विवाह
                      पेमराज
                                 (हि०) २४०
                                                व्रतक्यासंग्रह
                                                                         _
                                                                                 (स०)
                                                                                        ₹8€
वैद्यकसार
                                  (सं∘)
                                         ३०४
                                                व तक्यासंग्रह
                                                                                (ध्रप०)
                                                                                        784
                 हर्पकी त्तिसूर्गर
वैद्यकसारोद्धार
                                  (सं०) ३०४
                                                वतकयासंग्रह
                                                              म० महतिसागर
                                                                                 (हिo)
                                                                                        ₹1€
                  लोलिम्बराज (सं•) ३०३, ७१४
वैद्यजीवन
                                                त्रतकथास ग्रह
                                                                                (Ro)
                                                                                        280
वैधजीवनग्रन्य
                                 (सं०) ३०३
                                                वतजयमाला
                                                                 सुमतिसागर
                                                                                 (fg0)
                                                                                        ७१५
वैद्यजीवनटीका
                       रुद्रभट्ट
                                 (सं०) ३०४
                                                वतनाम
                                                                                (हि∘)
                                                                                        X 9 E
बैधमनोत्सव
                                 (हि॰) ३०४ | व्रतनामावली
                     नयनपुख
```

(₹•)

प्रत्थानुकर्मणिका]				
ब न्थनाम	तेशक	भाषा पृष्ठ	संद	प्रस्थ
व तनिर्णय	मोहन	(# c)	५३६	षट्गाहु
ब त्रामग्रह	*****	(म०)	€ € ,¥	षट्पाहु
व्रतिवधान		(fe o)	734	पट् गर्
ब्रनविधानरासी दौत	।तराम संघी (हे०) ६३८	300,	पर्मन
ब्रनविवरग		(मं ०)	५३ ५	षट्रम
यनविवरमा	-	(हि०)	Χśα	पर्वर
द्वपगर आ	० शिषके हि	(सं∘)	प्3८,	पट्ला
यनगर		(मं०)	E3	पट्न
ब नसम्बर्ग		(हि॰)	5.9	पर्ले
द्वतीयहानश्राव राचा र		(#ie)	5	पट्ग
वनावारनसम्बद्ध		(सं •)	४३८	पड्द
बुत: स्वासवर्गन		(स०)	53	पट्व
प्रती (वासवर्शन		(हि.)	53	1
क्रमाके चित्र	-		७२३	1
क्रमोकी निधियोका व्य	ोरा —	(ff.0)) ६४४	1
द्र (किनाम		(हि०) =3	92
क्रताका ब्योरा		(ছি৽) ६०३	व प
	प			d:
षट्ग्रावञ्यकः [लघुः	नामा(यक] स	क्षचन्द (हि०) ८	ડ વિ
९ट् मा स्टब्क विभान	पद्मातान	ा (हिं) 5	3 4
दट् [.] ऋतुवर्गानबारहम			ه) <i>ډ</i> لا	६ व
वर्यमंत्रथन	-	- (स <u>ं</u>	o)	₹ 7
पट्कमॉगदेश <i>रत्</i> ममा	ता [स्द्रक्तमोवण्	पमाला]		10
	हाकवि श्रमरकी		۰) ه	۲ ۲
पट्कर्मा विश्वरत्नमा	लाभाषा पांडे	लालचन्द्र	(हि॰) ।	== \ '
पट्पं चासिका	बराहमिह			27
पट्पञ्चासिका			ķο) ξ	¥€
बट्पक्कासिकावृत्ति	મટ્ટોલ			E R
षट्पाठ	Ţ,		tio) Y	180
षद्पाठ	बुधः	गन ((e)	188
•	•			

	न्थनाम		भाषा पृष्ठ	
षट्	सहड [प्राभृत] ऋस	ऽकुन्दवुद (प्र	10) ११७,	9% =
षर्	पाहु बटी का	श्रुतमागर	(# °)	११६
पट्	गहुबडीका	_		११८
षर्	मनवरचा		(मं॰)	
पट	्रमकथा		(4i o)	६८३
d3	्तरवादर्गन		(4∘)	
q	क्तस्यावर्णन .		(हि॰)	
q:	হ্ৰহনা ^ৰ শি	हर्षकीत्ति	(हि॰)	
प	न् लेश्यापे ल	माह सोहर	(हिं)	३६६
	ट्गहनमदर्शन	सक्रम्ब	(fe)	==
q	ड्दर्गनवार्मी		(#io)	१३६
1	।ट्दर्शन ^{िचार}		(fie)	१३६
	इर्दर्शनसम ुद् य	हरिभद्रसृरि	(ri o)	१३६
1	पड्डर्शनमनुष्ट्यटी ग		(4 o)	4.80
	पडदर्शनसम्बयकृति	गगः स्तनमृद्	(मं०)	369 (
1	पट्चलियाठ		. (#10) 5 22
- 1	पड्मसित्रर्भन		- (d •) ==
1	दग्गवनिक्षेत्र पा लपूता	बिश्वसे म	(# e) X	१६, ५४१
,	पष्टिशनक टप्पम्	भक्तिलात		
	याख्याधिकशतकटीन			•) ٧٧
٤	पोडशकारमाउद्यापन			o) 484
2	योडशकाः गक्या	ल जिसकी		o) ६४ %
۲	योडशकारण जयमा) XX8
	i		,	Ho) XX2
5	पोडनकारलजयमार		•	प्रक, प्रथ
: <	पोडशकारण्जयमा			10) 483
દ્ર	पोडशनारग्जबमा			
ų ę	पोडशकारणजयमा			ग०) ४४२
٤٦	वोडशकारसपूत्रा	चाडणकार णक	ग्रवापन	N 14 3 8 11 5
ţ	1	शवसेन (सं		
184	वोडझकाररापूजा	श्रुतस	let.	(d ∘) ×१•

#a0]					(-,		
प्रन्थनास	सेखक	भाषा पृष्	ु स०	प्रनथनाम	लेखक	भाषा प्र	ष्ट्रमंश्
षोडवकाररापूजा [षोडषकारएक्ततोद्या	पनपूजा		नतुक्तयनीर्थरास [न?			
सुमति स	ता गर (सं०)	४१७, ४४३	, 440		समयमुन्द्र (सं०	१ ६१ ड	, 900
षोडवकाररापूजा		(सं०)	પ્રય	दा <u>ष</u> ्ट्रभयभाग	राजममुद्र	(fgo)	€ १ €
४३७, ४४२	, 483, 488, 1	166, XE×,	५८६,	शबुद्धायस्य दन	राजसमुद्र	(हि०)	883
\$0 ७ , \$ ४९	, ६४८, ७६३			शनिश्चरदेवकी कथा	ख्यालचन्द्र	, F70)	६ द
षोडशकारसपूजा	खुशालचन्द	(हि॰)	334	शनिश्चरदेवसीकथा [ः	[निश्चानथा] —	(170)	६६२
षोडशकारसपूजा		(हि०)		૬૬૪, હક્ક્	, ७१३, ७१४, ७२३	2, 364,	95€
षोडशकारसभावना		(410)	= 8	शनिश्चरहष्टिविचार		(원이)	₹3∓
वोडशकारग्गभावना	पं० सरामुख	(हि॰ग०।	55	शनिस्तोत्र		(स ०)	126
षांडषकारगाभावना		(fz.)	==	शब्दप्रभेद व धानुप्रभः	श्री सहेश्वर	F[o]	ووډ
षोडशकारग्।भावनाज	यमाल नथमल	(हि०)	t, c	ब न्दरस		(ris)	599
षोडशकारगाभावनाव	र्शनवृत्ति पं० शिक	जीलाल (i	(a) 55	बान्दर सर्वात्रीत	-	(40 i	258
बोड शकारणविधानक	त्था पंटचाभादे	র (গৃ৹)	220	शन्दर रिगा	श्रा० वर्रीच	(40)	58.6
		२४२, २४४,		घलकोभा	र्याव नीलकठ	(*(* ·	२६४
खोडशकार शविधानव			25.8	शब्दा नु ज्ञासन	हे सचन्द्राचार्य	(मं ८)	sey
षोडशकारगावतकथा •		(দি <i>ং</i>)	258	धन्दानुधामनवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	(寸0)	२६४
कोडश कारसम्बद्धकथा		(प्रनः)	- 20	शरगु⊣बईःविका [म	ण्डलविधानपूचा <u>]</u>		
बोडशकारसम्ब तीयार			4/3		सिंहनन्दि	(ii o)	8.73
पाडशकारणप्रताचार		(40)	273	बहरमाराठ भी प्रधा		(f₹0)	५६२
	श			गावटायनध्यावरम्	शावरायन	(∓i∘)	८६४
शम्बुप्रसुम्नप्रबन्ध	समयसन्दरगणि	(₩∘)	€35	गान्तियनाम		(fg o)	६६८
शकुनविचार		(गं०)	२६२	व्यान्तिकरम्नोत्र	बिद्याभिद्धि	(গা॰)	६⊏१
शकुनशास्त्र		(हि० '	€ ∘ 3	शास्तिकरस्तोत्र -	मु न्द रसूर्य	(91e)	४२३
शकुनावली	गर्ग	(40)	२१२	गान्तिकविधान	_	(हि∙)	188
शकुनावली .		(सं०) २६२		शान्तिकविधान (बृहर्		(#i°)	XXX
बाकुनावली	श्रवजद	(हि०)	२ ६ २	शान्तिकविधि	श्रहदेव	(सं०)	2,88
शकुनावली	((हि०) २६३		गा न्तिकहोमविधि	_	(₹10)	exe.
शतब्रष्ट्रतरो		(हि॰)		शान्तिघोपगाम्तुति	-	(Ho)	880
शतक		(सं०)	२७७	शांतिवक्रपूता	_	(4°)	५१७
शत्रुज्ञविगिरिपूजा ४	र ावस्वभूषण (म०) ५१३,	XX3	शातिचक्रमण्डल (चित्र)	. ,	४२४
							. , •

ग्रन्थनाम लेखक	भाषा पृद	सं०	प्रन्थनाम	संखक	भाषा पृष्ठ	संब
शातिनायवरित आजितप्रभस्रि	(ग०)	१६=	शारदाष्ट्रक	वन।रसीदास	(हि•)	७७६
बातिनाथचरित्र भ० सकतकीर्त्ति	(4° 0)	१६८	शारदाष्ट्रक	_	(हि॰)	800
शांतिनावपुरासा सहाकित ऋशग	(सं०)	***	शारदीनाममाला		(सं∙)	२७७
शानिनायपुराण खुशालचन्द	(हि॰)	१४५	शाङ्गिधरसंहिता	शाङ्गंधर	(मं∘)	30%
वातिनायपूजा रामचन्द्र	(f₹o)	አጻሂ	शार्क्न धरमहिला ं का	नाडमझ	(सं∘	₹0€
शातिनाथपूता —	(मं०)	χο€	शालिभद्रचौरई	जिनसिंहमू र	(हि॰)	900
गातिनायस्तवन	(मं∘)	४१७	बालिभद्रमहामुनिम उभ	ाय —	(हि॰)	€ 8 €
र्शातनायम्बदन गुरामागर	(हि॰)	७०२	शालिभद्र चौपई	मतिसागर	(हि॰) १६ = ,	७२६
शातिनाथम्बदन ऋषि नालचंद	(fg0)	४१ э	द्यानिभद्रयन्नानीचौपर्ड	जिनसिंहसूरि	(हि॰)	२५३
शातिनायस्थीत मुनि गुणभद्र	(मं•)	६१४	शालिभद्रमहामृतिस ः भ	E14	(हि॰)	६१६
द्यानिनम्बस्नीय सुग्राभद्रस्वामी	(नं०)	955	शालिभद्रसज्मः य		(हि॰)	४६७
ञानिनायस्तीय गुनिभद्र	(मं०) ४१७,	ভংগ	ञानिहांत्र		(स०)	0 \$ 0
र्गानिनाधस्तोत्र —	(सं०)	३८३	शालिहोत्र [भश्विचि	नेत्सा]		
४०२, ४१८,	६४६, ६७३,	७४४		पंट नकुता	(सं०-हि०)	३०६
शांनिपाठ	(%0)	४१ ⊏	शालिहोत्र [,ग्रस्विचि	वरसा] —	(सं०)	305
४२८, ४४४, ४६६, ६४०, ६६१, ६	e, 30%, v	४०६	शास्त्रगुर् जयमा ल	·	(সা•)	ሂሄሂ
७३३, ७४८			शास्त्रजयमाल	ज्ञानभूषस्	(सं∘)	***
शातिबाठ (बृहद्) —	(#∘)	ሂሄሂ	शास्त्रजयमाल		(সা০)	५६५
शांतिगढ द्यानतराय	(हिं०)	४१६	शास्त्रपूत्रा	_	≀सं∘)	3 F X
शातिपाठ —	(f₹o)	६४४			५६४, ५६५,	, ६५२
बातिपाठ	(fe0)	४०६	शास्त्रपूजा	_	(हि॰)	292
शांतिमंडलपूत्रा —	(°F)	४०६	शास्त्रप्रवचन प्रारंभ क	रने		
वांतिरत्नसूची —	(सं०)	ሂ ሄሂ	को विधि		(स ं ०)	ሂሄዩ
शांतिविधि —	(4,6) ⋅	ሂሄo	शास्त्रजीकामंडल वि	(त्र]		४२४
शांतिविधान	(सं∘)	¥{=	वासनदेवतार्चनविधान	_	(₹i∘)	484
बानार्यशोतिगागरपूजा भगवानदासः	(हि॰) ४६१,	७६६	शिकाचतुदक	नवलराम	(f₹∘)	55 c
शांतिस्तवन देवसूरि	(सं∘)	45£	विवरविनास	रामचन्द्र	(हि•)	£3.
शांतिहोमविधान आशाधर	(सं∘)	१४१	विवरविलासभूवा		(हि॰)	X84
शारदाष्ट्रक	(#o)	४२४	विखरविलासभाषा	धनराज	(fg o)	4.00

श्रावकाचार

श्रावकाचार

(सं०) F35 (₹°)

(प्रा॰) € ₹

88

शुमासुमधीग

	,				[८७३
प्रम्थानुकमणिका	}				जेसक भाषा पृष्ठ सं०
व्रस्थनाम	होसक र	भषा पृष्ठ सं०		ग्न्थनाम	*****
भावकाचारदोहा -	रामसिंह (भ	[o] 8 × 7, 0 × =	শ	वतजयस्तीव	(Alo) AXA
व्रावका वारभावा		(हि.ग.) ६१	र्श्व	स्तोत्र	(4°) 85c
आवकावार		(हि॰) ६१	খু	तज्ञानपूजा	— (前o) いそい、XYE
भावकों की उत्पत्ति तर	m ∈x शोत्र	(fis) ute	9	तज्ञानभक्ति	— (सं०) <i>९२७</i>
श्रावको को बौरासी		(igo) \$01		त्रज्ञानमण्डलचित्र	— (स∘) ४२४
		संबंहिक) ३७१	. 9	तुतकानवर्श न	— (हि∘) १ २
श्रावकों की बहलर उ	,	(सं•) २४।	, 9	नद्रतोद्योतनपूजा	— (हि॰) ४१३
शावसीदादशीउपास्य	पं ० अभ्रदेव (रुतज्ञ)नवतोद्यापन	— (सं॰) ४१३
श्रावसीद्वादशीकमा	प० अभिनेत ((4°) 3x		र भूतभक्ति	— (सं•) ६३ ३
श्रावगीद्वादशीक्या	*	(संo) ४१		० पुतर्भक्ति	— (前o) ¥₹¥
श्रीपतिस्तीव	चैनसुबजी	(ह•) २४		्र ध्रुतभक्ति	पद्माताल बीघरी (हि॰) ४५०
श्रीपाल कषा		1.4		श्रुतज्ञानवतपूजा	─ (4) ガメを
श्रीपालवरित्र	व्र० नेसिद्त्त	(,,,,		थुतज्ञानवतोद्यापन अतुत्रज्ञानवतोद्यापन	— (₫ο) <i>૫</i> ४ ६
	भ० सकतकीति	(सं०) २० (सं०) २०		भुतपंचमीकथा	स्वयंभू (शप०) ६४२
श्रीपालबरित्र		(सर्व) २०		-	हानमृष्य (तं॰) १३७
श्रीपालवरिष	mfrum	(हि.q.) २२, ७९		श्रुतपूजा 	- (#o) XXE
श्रीपालबरिय	414-481		٠ ٦	श्रुतपूजा	¥ 4x, 488
श्रीपालवरित्र	_	***	٠ ٦		कालिदाख (सं०) ३१४, ६६४
श्रीपालचरित्र		(,4)	12	श्रुतबोध	मनोहरश्याम (सं०) ३१५
श्रीपासदर्धन	_		1	श्रुतबोधटीका	बरहरिं (सं०) ३१६
श्रीपासरास	जिनहर्ष गरिए	,	6 %	भुतवोष	— (do) 31%
श्रीपालरास	५० रायमञ्	(.6.)	\$c	श्रुतबोधटीका	- ·
	₹ = ₹,	७१२, ७१७, ४		श्रुतबोधवृत्ति	Edding (m.)
श्रीपालविनती		,,,	* *	श्रुतस्कं ष	अ० हेमचन्द्र (प्रा०) वेष६ ५७२, ७०१,७३७
श्रीपालस्तवन		,	153		
श्रीपालस्युति	_	(सं०)	४२३	श्रुतस्कंषपूजा	Zagini i ,
-		७४४, ७४२, १	STY,	अुतस्कंषपू जा	— (40) xxa
श्रीपासजीकीस्तुरि	: टीक्मसिंह	(fg•)	347	श्रुतस्कंत्रपूजा (ज्ञानपं	वविक्षतिपूजा]
श्रीपाशजीकीस्तुरि	_	(हि॰)	€ r ₹		सुरेज्यकीचि (वं•) १४७
श्रीपालस्तुति		(fg•)	Şok	<i>बुतस्कंबपूजाकवा</i>	- (fg.) 2x10
अध्यातित			ę٤.	मुतरकंषमंत्रव [विग	[] — x5x
					*

४४७, ६३६

मन् <u>षा</u> तुकसस्यिका	3					[=	:42
प्रन्थनाम	से मक	भाषा पृष्	ु सं०	प्रन्थतःम	लेखक	भाषा पृष्ठ	ejo
सञ्जनचित्तवह्नभ	सक्षियेग् (स	io) 330,	, ५७३	सतपदार्थी	शिवादित्य	(सं∘)	{ ¥•
सज्जनचित्तवक्कम	शुभवन्द	(4,0)	३३७	सतपदार्थी		(सं०)	680
सज्जनविश्वद्धाम	_	(सं∘)	१३७	सत्तपदी		(सं०)	48 4
सञ्जन विश्ववद्याम	मिहरचन्द	(हि∘)	₹₹७	सप्तपरमस्यान	खुशासचन्द	(हि॰)	१६७
सञ्जनविस्तवस्त्रभ	६ गू लाल	(f₹∘)	३३७	सत्तपरमस्यानकया 🕏	ग० चन्द्रकीर्ति	(सं ०)	388
सरमाय [चौदह बोल]	ऋषि रासवन्दर	(fgo)	***	सप्तगरमस्थानकपूजा	- (सं•) ४१७,	XXC
सङ्ग्राम	समयसुन्दर	(fgo)	Ęţĸ	सप्तपरमस्थानवतकया	खुशासचद्र	(हि॰)	48 8
सतसई	बिहारीलाल (वि	ह०) ४७६	, ७६८	सप्तपरमस्थानवतोद्या	गन	(सं∙)	3 f K
सतियों की सज्भाय	ऋषिद्ध जमल जी	(हि॰)	448	सप्तभंगीव।ग्गी	भगवतीदास	(हि॰)	Éee
सत्तरभेदपूजा	साधुकोसि (वि	हे०) ७३५	, ७६०	सप्तविधि		(हि॰)	₹०७
सत्तात्रिभंगी	नेमिचन्द्राचार्य	(সা৽)	¥¥	सध्तव्यसनसनकथा इ	ग० सोमकीत्ति	(सं०)	२४∙
सत्ताद्वार		(सं∘)	**	सप्तव्यसनकथा	भारामल	(हि∘)	२४०
सङ्कारितावली	सक्तकीर्त्त	(₩•)	₹ ₹<	सप्तव्यसनकथा भाषा	_	(हि॰)	२५०
सद्भाषितावली भाषा	पक्रासास चौधरी	(हि॰)	445	सप्तब्यसनकवित्त	ब्नार्सीदास्	(हि॰)	७२३
सङ्ग्राचितावली		(fgo)	335	सप्तशती	गोबर्धनाचार्य	(₫•)	ofi
समिपातकलिका		(#o)	₹00	सप्तरलोकीगीता		(सं०) ३६-	धर ६६२
संत्रपातनिदान	_	(सं∘)	405	सप्तसूत्रभेद		(#e)	461
समिपातनिद नवितित्स	बाहडदा स		₹0€	समातरंग समातरंग	_	(ਜ਼•)	334
सन्देहसमुख्यम	धर्मकसरास् रि		335	सभाग्र गार	_	(सं∙)	198
सन्मतितर्क	सिद्धसेनदिवाद्ध		{ ¥0	समान्ध्र गार		(संक्षिं∘)	336
सत्विजिनस्तवन		(সা৽)	717	1		(fg•)	385
सस्रविषूजा	वियादास	(सं∘)	XY5	सभासारनाटक	रचुराम	(हि•)	£3
सर्वाष्ट्रवा	देवेन्द्रकीर्पत	(सं∘)	984	समक्तिदास समक्तिविखवोधर्म	भासक (स	(हि॰)	408
सप्तर्भिपूजाः	सस्मीसेन		. 484	1	जिनदास जोधराज	(fg∘)	94.
सर्रावपूजा	विश्वभूषया	(vi•)	XXE.	समंतभदकवा			
बस पिपूजा	·->24-2/4-04	(#°)	448	समंत भद्रस्तुति	समंतभद्र	(ë•)	200
सतऋषियंडस [चित्र]		(#o)	HEY	समयसार (मामा)	-	(সা॰)	111
सप्तनपविद्यासस्यन						₹0¥, Qα₹	
	-62-6	(ij+)	¥ţs	1	प्रमुतपन्द्राचार्थ	(#o)	\$? •
सत्तवगरकोष	सुनिने त्रसिंह	(40,0)	ţxe	सम्रक्तारकवकाटीका		(₹ a)	£ 3#

• •

```
≈⊌$ }
                                                                          मन्यानुकमियका
 प्रम्थनाम
                       लेखक
                                 भाषा पृष्ठ सं० |
                                                                      तेसक
                                                                                भाषा प्रष्ट सं०
                                                  प्रन्थनाम
                                  (हि॰) १२५
समयसारकलकाभाषा
                                                समाधिमरण
                                                                                 (ग्रप०) ६२८
समयसारटीका
                               (सं०) १२२, ६६४
                                                समाधिमरराभाषा पन्नालालचौधरी
                                                                                 (fg.)
                                                                                         १२७
समयसारनाटक
                  वनारसीदास
                                  (हि॰) १२३
                                                                                 (हि∘)
                                                समाधिमरराभाषा
                                                                     सुरचन्द
                                                                                         $ 70
                                                                         - (हि॰) १४, १२७
                 , ६०४, ६३६, ६८o, ६८३, ६८८,
                                                समाधिमरख
                   ६८६, ६६४, ७०२, ७१६, ७२०,
                                                                                   9 0, 9 YE
                                                समाधिमररापाठ
                                                                             (हि॰) १२६,३६४
                             , 3 x 0 , 5 x 0 , 9 £ 0
                                                                  चानतराय
                              995, 959, 9ER
                                                समाधिमरण स्वरूपभाषा
                                                                                 (हि॰) १२७
                 जयचन्दछाबडा (हि॰ ग॰) १२४
                                                समाधिशतक
समयसारभाषा
                                                                     पुच्यपाद
                                                                                 (Ho)
                                                                                        120
समयसारवचनिका
                                 (हि०) १२४
                                                समाधिशतकटीका
                                                               प्रभाचन्द्राचार्य
                                                                                 (# o)
                                                                                        १२०
                 श्रमृतचन्द्रसृरि (सं०) ५७५, ७६४
                                                समाधिशतकटीका
समयसारभृति
                                                                                 (#o)
                                                                                        १२८
समयसारवृत्ति
                                 (प्रा०) १२२
                                                समुदायस्तोत्र
                                                                    विश्वसेन
                                                                                 358 (oF)
                  रामबाजपेय
                                 (सं०) २१४
                                               समुद्घ।तभेद
समरसार
                                                                                (सं०)
                                                                                         € ₹
                  लिलतकी चि
                                               सम्मेदगिरिपूजा
समवशरसपूजा
                                 (सं०) ४४६
                                                                        — (原o) 93年, 980
                    रत्नशेखर
                                               सम्मेदशिखरपूजा
समबद्यारसपुजा
                                 (सं०) ५३७
                                                                  गंगादास
                                                                             (सं०) ५४६ ७२७
                                               सम्मेदशिखरपूना पं० तबाहरलाल
समवशरसञ्जा [बृहद्]
                     रूप चन्द
                                  (#io) Xue
                                                                                (Ro) $20
                         -- (सं०) ५४६, ७६७
समवशरएपप्रजा
                                               सम्मेदशिखरपूजा
                                                                   भागचन्द
                                                                                (हि०) ५५०
               बिध्यसेन मनि
समवशरगस्तोत्र
                                 (सं०) ४१६
                                               सम्मेदशिखरपुजा
                                                                   रामचन्द
                                                                                (हिं।) ५५०
समयशरणस्तोत्र
                    विश्वसेन
                                 (सं०) ४१४
                                               सम्मेदशिखरपुजा
                                                                               (हि॰) ४११
समवद्यरणस्तोत्र
                                 (सं•) ४१६
                                                                                  ४१८, ६७८
                                (हि॰)
समस्तवत की जयमाल
                   चन्द्रकीर्ति
                                        ×3×
                                               सम्मेदशिखरनिविशाकाण्ड
                                                                               (हि॰) प्रइ
                                               सम्मेदशिखरमहातम्य दीसित देवदृत्त
समाधि
                                (भग०) ६४२
                                                                                (संo)
                                                                                        83
समाधितन्त्र
                                 (सं०, १२५
                     पुज्यपाद
                                               सम्मेदशिखरमहात्म्य
                                                                               (fĕ∘)
                                                                                        83
समाधितंत्र
                                 (सं∘)
                                               सम्मेदशिखरमहात्म्य
                                        १२४
                                                                 बाबचन्ड (हि॰ प॰) १२, २४१
                नाथुरामदोसी
                                (हि॰)
समाधितन्त्रभाषा
                                        १२६
                                              सम्मेदशिखरमहात्म्य
                                                                               (fg o )
                                (हि॰)
समाधितन्त्रभाषा
                 पर्वतधर्मार्थी
                                              सम्मेदशिखरविलास
                                        १२६
                                                                 केशरीसिंह
                                                                               (E0)
                                                                                        £ 3
समाधितन्त्रभाषा
                  माग्राकचन्द
                                (fgo)
                                              सम्मेदशिखरविलास
                                        194
                                                                  देवात्रद्धा (हि॰ प०)
                                                                                       € ₹
समाधितन्त्रभाषा
                               (हि॰ग॰) १२४
                                              सम्यक्तवकौमुदीकथा
                                                                      खेता
                                                                               (सं०) १४१
समाधिमररा
                                 (मं०) ६१२
                                              सम्यक्तवकौमुदीकथा
                                                               गुग्गकरसृरि
                                                                               (₺•)
समाधिमरस्
                                (प्रा०) १२६ सम्यन्त्वकोमुदीभाग १
                                                                                      288
                                                                  सहस्रपाल
                                                                              (990)
```

पन् यातुक्तम शिका	1					[=	P-0
प्रम्थनाम	तेवक	भाषा प्रश्न स	io	प्रन्थनाम	तेसक	भाषा पृष्ठ	ij.
सगन्धदशमीवतोद्याप	म	(∉∘) ≿	KK !	gभाषित पद्य	-	(हि॰)	६२३
सुग्रदशतक	जिनदासगोघा (हि	8,08\$ (opo)	80	सुवाषितपाठसं गह		(सं०हि०)	98 =
सुगुरुस्तोत्र	_	(सं∘) ४	22	सुभाषित <u>मुक्ता</u> वली		(सं∙)	3 48
- सवयबच्छसावलिंगा	की चौपई			सुभाषितरत्नसंदोह	धमितिगति	(सं॰)	444
	मुनिकेशव	(हि॰) २	K.A.	सुभावितरत्नसंदीह भा षा	पद्मासासचीध	री (हि॰)	\$¥\$
दयवच्छसालिगारी	वार्ता	(हि॰) 'ध	38	मुभाषितसं प्रह		(सं०) ३४१,	५७ ६
सुदर्श नचरित्र	त्र० नेभिद्त्त	(₫∘) ₹	205	सुभाषित संग्रह		(सं॰प्रा॰)	३४२
सुदर्जन वरित्र	मुमुज्विद्यानंदि	(4;∘) :	308	सुमाषितसंग्रह	-	(सं ०हि०)	३४२
मुदर्शनचरित्र	भ ॰ सकलकीति	(∉•) ;	२०५	सुभाषितार्णव	शुभचन्द्र	(सं०)	≱ 8.6
<u>सु</u> दर्शनचरित्र	_	(सं•)	२०६	सुभाषितावली	सकतकीर्त्त	(∉ ∘)	\$ 8.\$
मुदर्शनच रित्र			२०६	सुमावितावनी		(सं०) ३४३	, #o£
मुदर्शन रास	त्र रायमञ्ज		356	सुभाषितावलीभाषा व	। ० दुकीचन्द	(₽e.)	ÁAA
		६३६, ७१२,		सुमाषितावलीमावा प	मासासचौ धरी	1	
मुदर्शनसेठकीढाल	[क्या] —	, ,	SX A			(हि•)	
सुदामाकीबारहसर्व	ì -		300	सुवावितावली मापा	_	• P• ≸) ·	•
मुदृष्टित रंगिग्गी भाष	श टेकचन्द	(हि॰)	60	सुभौमवरित्र	भ० रतनचन		
बुदृष्टितरं गिर्गी मा ^र	n —	(हि॰)	ŧv	सुभौमचक्रवत्तिरास	ब्र े जिनदास		
सुन्दरविनास	सुन्दरदास	(हिं∘)	98¥	सूक्तावली		- (#o) #¥	
<i>बुन्दरमृ</i> ङ्गार	महाकविराय	(हि∘)	\$ = \$	सूक्तिमुक्तावली	स्रोमप्रभाचा		
सुन्दरशृङ्गा र	सुन्दरदास	(हि०) ७२३,	७६८		_	(सं•)	
सुन्दरशृङ्गार		(हि∘)	ĘĸX	1 "	-	- (सं∙) 444
सुपादर्वनायपूजा	रामचन्द	(हि॰)	***	सूतकवर्शन [यशस्ति			
मुप्पय दोहा		(धप॰)	4 2 e		सोमदे		•
सुप्पंथ बोहा		(धप॰)	4 \$ 9		-	(सं∙	•
सुव्यय बोहा		· (हि॰)	węx		•	(वं	
सुप्रभातस्तवन	-	- (सं°)	208	सूत्रकृतांग	-	— (मा	•
सुत्रभारताष्ट्रक	बति नेमिचन	ह (वं∗)	444	सूर्यकवय	•	(a)	•
बुबनातिकस् तुवि	भुवनभूष	i (4,•)	641	सूर्वकेदशमाम		(q	·) 4.c
युवाचित	-	- (सं०)	ž(G)	सूर्वगमनविधि		(4	•) २६४
युवाचित	-	- (ફિ •)	190	सूर्यवतोबायमपूर्वा	इ० जयस	।गर (वं	•) ###
•		,					

```
[ प्रम्बानुकमणिका
 tet ]
                     सेखक
                                                                    तेखक
                                                                              भाषा पृष्ठ स०
 प्रस्थांगाम
                               भाषा प्रष्ठ सं० ो
                                                व्रम्थनाम
                                                                              (हिंc) ६१६
सूर्यस्तोत्र
                         - (#o) 4xe, 4e?
                                              सोलहसतियोकेनाम
                                                                  राजसमृद्
                                                                              (हि०) ४१२
सोनागिरिपक्वीसी
                     भागीरथ
                                 (हिc)
                                         23
                                              सोलहसतीसज्काय
                                                                               (सं०) ४२२
सीनागिरिपञ्चीसी
                                (feo) $82
                                              सौंदर्यलहरी स्तोत्र
                                              सौदर्यलहरीस्तोत्र भट्टार्क जगदुभूपण
                                                                               (सं०) ४२२
सीनागिरिएजा
                                 (सं०) ४५४
                       आशा
                                                                अवयराम (सं०) ४१६, ४४६
सोनागिरिप्रजा
                                (हिं°) ध्रक्
                                              सौस्यवतोद्यापन
                                              सीस्यंत्रतोद्यापन
                                                                               (सं०) ५३६
                                  050,807
सोमउत्पत्ति
                                (सं०) २६४
                                              सौमाम्यपंत्रमीक्या सुन्दर्विजयगरिए
                                                                               (Ho) 388
सोमशर्मावारिषेशकया
                                (प्रा०) २५५
                                                                               (#o) Esc
                                              स्कन्दपुरास्
 सीसहकारराक्या
                     रत्नपाल
                                (सं०) ६६५
                                                                              (धप०) ६६०
                                              स्तवन
 सोलहकारराक्या त्र० ज्ञानसागर
                                (度o) 4Yo
                                                                               ाहिक) ६४=
                                              स्तवनग्ररिहन्त
                                (ध्रपः) ६७६
 सोसहकारण जयमाल
                                              स्तवन
                                                                  श्राशाधर
                                                                              (मं०) ६६१
                  नः जिनदास
 सोलहकाररापुजा
                                 (#o) UEX
                                              स्तुति
                                                                               (Ho) 882
 सोलहकारसपूजा
                                 (सं०) ६०६
                                              स्तुति
                                                                 कनकर्काति (हि॰) ६०१ ६५०
                       448, 447, 468, 608,
                                              स्त्रुति
                                                                टीकमचन्द
                                                                              (Bo) ६३8
                                  ७३१, ७८४
                                              स्युति
                                                                     नवल
                                                                              (fgo) 983
 सीलहकाररापूजा
                               (য়ঀ৽) ৩০২
                                              स्नृति
                                                                   वुधजन
                                                                              (हि०) ७०४
 सोलहकारसपूजा
                   चानतराय
                                (हि०) ५११
                                              स्तृनि
                                                                  हरीसिंह
                                                                              (fer) 608
                                  ५१६, ४५६
                                              स्तृति
                                                                              (हिं) ६६३
 सोलहकाररापूजा
                         — (हिंc) ४४६ ६७०
                                                                                ६७३, ७४८
 सोलहकारसभावनावर्शन सदासुख
                                (fg o)
                                             स्तोत्र
                                                                   पद्मानंदि
                                                                              (मं०) ५७५
 सोलहकारगभावना
                                (ছি০) ৩নদ
                                             स्तोत्र
                                                             लदमीचन्द्रदेव
                                                                             (সা০) ২৬६
 सोलहकाररमभावना एवं दशलक्षरम्
    वर्गन-सदासुखकासलीवाल
                                             स्तोत्रसंग्रह
                                (हि०)
                                                                      -- (सं०हि०)६२= ६५१
                                        ٤Ę
 सीलहकाररामंडलविद्यान
                     टेकचद
                               (हि॰) १४६
                                                                    $64, 003, 08Y, 08X
 सोलहकाररामंडल [ चित्र ]
                                      428
                                                               946, UXP, UEP, UEF, UEB
 सोलहकारसम्बतोद्यापन
                               (सं०) ११७ स्तोत्रसंग्रह
                                                                          (सं०हि०) ७२१
सोलहकारसारास अ० सकलकी त्ति
                               (हि०) ४९४
                                                                    שלכ, שצע, שצב, ששצ
                                 $3E, 058
                                            स्तोत्रपूजापाठमंबह
                                                                         (स०व्हि०) ६६०,
सोलहतिषिवर्शन
```

(हo) kex

\$ 00

```
प्रन्यानुकर्मीयका ी
                                                                                    [ wet
                                                                      सेलक
                      तेखक
                                भाषां प्रश्न सं०
                                                 प्रन्थनाम
                                                                                 भाषा प्रश्न सं०
 प्रम्थनाम
                                                स्बर्यभूस्तीत्र टीका प्रभाचन्द्राचार्य
                                                                                  (संब्र) ४३४
स्वीमृतिसंहत
                                  (हo) ६४0
                                  (सं०)
स्त्रीलक्षरा
                                         325
                                                स्वयं मस्तोत्रं मावा
                                                                     द्यानसराय
                                                                                   (सं०) ७१४
स्त्रीश्रं गारवर्शन
                                  (संc)
                                         ५७६
                                                स्वरविचार
                                                                                  (eb) Rot
स्यापनानिर्शय
                                                स्वरोदय
                                                                                   (संबं) १२०
                                  (#e)
                                          £۶
                                                स्वरोदय रनजीतदास (चरनदास)
                                                                                  (唐o) $¥X
स्यूलभद्रकाचीमासावर्गान
                                  (हिo)
                                          300
स्यूलभद्रगीत
                                                स्वरोदय
                                  (信o)
                                         ६१८
                                                                           -- (हिo) ६४0, ७६६
स्थूलभद्रशीलरासो
                                 (fe) X48
                                                स्वरोदयविचार
                                                                                   (fro) 125
स्यूल भद्रसज्काय
                          - (fro) xx2, 498
                                                स्वर्गनरकवरान
                                                                                  (हि॰) ६२७
स्तपनविधान
                          -- (feo) 224, 422,
                                                                                     90 t, 198
स्नयनविधि ! बृहद् रे
                                  (#o) XXE
                                                स्वर्गसूखवर्शन
                                                                                   (fe) 440
स्नेहलीला
                    जनमोहन
                                  (हिं०) ७७३
                                                स्वरणीकर्षशाविधान
                                                                       सहीधर
                                                                                   (सं०) ४२=
स्नेहलीला
                                  (हि॰) ३६८
                                                स्वस्त्ययनविधान
                                                                                   Yef (cir)
                                                                                     ₹₹₹, ₹¥₹
स्फुटकविस
                                  (Ro) 608
स्फुटकविलएवंपद्यसंग्रह
                                (सं०हि०) ६७२
                                                                                   (सं०) ५७१
                                                 स्वाध्याय
स्फूट दोहे
                           -- (唐o) ६२३, ६७३
                                                 स्वाध्यययगर
                                                                                 (सं०प्रा०) ५६४
स्फ्रटपद्मएवं संनद्मादि
                                  (feo) $400
                                                                          -- (प्रा॰सं॰) ६८ ६३३
                                                स्वाध्यायपाठ
                          — (हि॰) ६६४, ७२६
                                                               पद्मालाख चौधरी
                                                                                   (店o) ¥10
स्फुटपाठ
                                                स्वाध्यायपाठ
स्फुटवार्ला
                                  (हि०) ७४१
                                                 स्वाध्यायपाठभाषा
                                                                                   (fe • )
                                                                                            64
                                                                                (epogi)
स्फटवलोक संग्रह
                                  (सं०) ३४४
                                                                    नाथुराम
                                                ्त्वान भववर्ष रा
                                                                                           १२व
स्फ्टहिन्दीपद्य
                                  (हि०) १६५
                                                 स्वार्थबीसी
                                                                    मनि श्रीधर
                                                                                   (हo) ६१६
स्वप्नविवार
                                  (fro) REX
                                                                      ₹
                                  (सं०) २६५
स्वप्नाध्याय
                      देवनन्दि (सं०) २६४, ६३३
                                                हंसकीढालतयाविनतीढाल
स्वप्नावली
                                                                                   (Bo) tax
                                                                                   (E0) 400
स्वय्नावसी
                                  (सं०) २६४
                                                 हंसतिलकरास
                                                                    म॰ चात्रित
स्याद्वादचूलिका
                                                 हठबोगदीपिका
                                                                                    (सं०) १२=
                                 (हि॰य॰) १४१
स्याद्वादमंगरी
                  मक्रिवेसस्र
                                  (40) EXE
                                                 हरावंतकुमा रजबमाल
                                                                                   (घप०) ६३८
स्वयं मुस्तो त
                                  (सं०) ४२३
                                                                                    (सं०) २१०
                    समन्त्रभट
                                                 हनुमध्वरिष
                                                                     इ० छाजित
                        ¥₹X, ¥₹6, ¥6¥, ¥£X,
                                                 हनुमच्यरिय
                                                                    関います (現れ間)
                                                                                   (हि॰) २११
                              $33 $$X, $#$,
                                                        ( हनमन्तकथा )
                                                                                141. 14e. 00w.
                                                        ( हनुमतकवा )
                                    ७२०, ७३१
                                                                                     980, vfc.
```

,							
44. 0]					[प्रन्थानुकर्म	विका
प्रम्बन्धम	शेलक	भाषा पृ	ष्ठ सं०	मन्थनाम	बेसक	भाषा ह	हुष्ठ सं०
(हनुमतरा	स)	<i>७</i> ४०,	6 88,	हरिवंशपुरासभाषा	_	(हि॰) १४:	=, १५६
(इनुमंत च	गेपर्ध)	७५२	, ७१२	हरिवंशवर्णन	_	(हि॰)	२४४
हनुमान स्तीत्र		(हि॰)	४३२	हरिहरनामावलिवर्शन	_	(सं०)	460
हनुमत्तानुत्रेका स	हाकवि स्वयंभू	(भप•)	Ęąĸ	हबनविधि		(€0)	v 3 ?
हमीरचौ पई		(हि∘)	₹७5	हाराव्रलि सहास	होपाध्याय पुरु	त्तवोभदेव	
हमीररासो	महेराकवि 🗥	हे॰) ३६७	, ७८३			(सं∘)	288
ह्यप्रीवावतारचित्र			€0₹	हिण्डोलना	शिवचंदमुनि	(सं०)	Ęsi≩
हरगौरीसंगद	_	(सं∘)	€ 05	हितोप देश	देवीचन्द्र	(सं०)	UYY
हरजीके दोहे	हरजी	(हि॰)	955	हितोपदेश	विष्णुशर्मा	(₹०)	₹¥¥
हरडेक ल्प	_	(हि॰)	₹•७	हितीपदेशभाषा		(हि॰) ३४६	, 9 €₹
हरिचन्दश्चतक		(हि॰)	७४१	हुण्ड।वसर्पिग्गीकासदोध	माग्कचन्द	(हि॰) ६ ८	, ४४५
हरिनाममाला	शंकराचार्य	(सं∘)	३६८	हेमभारी	बिरवभूषण	(हि॰)	\$3€
हरिबोलाचित्रावली	_	(हि०)	€ 0 ₹	हेमनीवृहद्वृत्ति	_	(₹ 0)	२७०
हरिरस	-	(हि॰)	६०१	हेमाव्याकरस [हेमव्य	। हरण्डृति]		
हरिवंशपुराख	ड्र॰ जिनदास	(सं∘)	१४६		हेमचन्द्राचार्य	(सं∘)	२७०
हरिबंशपुरास	जिनसेनाचार्य	(सं∘)	१४४	होडाचक		(सं∘)	333
हरिवंशपुराए	श्री भूषस	(स•)	१५७	होराज्ञान	_	(सं∘)	२६४
हरिबंबपुरास	सक्तकीर्त्त	(सं∘)	१४७	होलीकथा	जिनचन्द्रसृरि	(#°)	२५६
हरिवंशपुराख	धवल	(भप॰)	१४७	होलिकाकथा	_	(₹0)	२ ४४
हरिवंशपुराए	यशः कीर्त्ति	(भप०)	१५७	होलिकाचौपई	हूं गर कवि	(हि॰प॰)	२ १५



दौततराम (हि॰ग॰) १४७ होलीरेगुकाचरित्र प्र॰ जिनवास

महाकांवे स्वयंभू (भप०) १५७ होलीकया

खुशालचन्द (हि॰प॰) १५८

हरिवंशपुरास

हरिवंशपुराणभाषा

हरिवंशपुरासभावा

हुंगर कवि (हि॰प॰) २४४

(हि॰) २४६,

२४४, ६८४

(सं०) २११

छीतर ठोलिया

प्रस्वताम लेखक भाषा पृष्ठ मं प्रस्थाम लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
the second secon	
् सम्पन्त्वनीमुदीकवा (मं०) २५१ मरवतीस्तोत्रमाना [गारदान्तवन]	
सम्यक्तकोमुदीकथाभाषा जगतराम (हि॰) २५२	(सं०) ४२०
सम्पक्तकत्रेमुदीकवाभाषा जोधराजगोदीका स्टब्स्वतीम्तोत्रभाषा बनारसीदास	(हি॰) ২৮৩
(हि॰) २४२,६६६ सम्पन्तकोषुरीकथाभाषा विनोदीलाल (हि॰ग॰) २४२	(सं∘) ४४१
सर्वतो भद्रमंत्र —	(सं०) ४१६
मर्भ जार समस्यादर्गमा	(मं०) ३०७
सम्पन्तवज्ञयमान — (१९२०) ७६४ सम्पन्तवज्ञनेसी — (हि०) ७६०	(गै॰) २७व
মুৰ্গিমিতি চন্দ্ৰ	(सं०) ४५
सम्यानानवान्त्रका प०टाइरम्बल (हि॰) ७ सम्यानानीधमाल भगौतीदास (हि॰) ५६६	(हि०) ४६
सम्पार्थानपुत्रा — (सं०) ६४८ सर्वायिभिद्धिसञ्काय —	(हि०) ४५२
सम्याद्षिकोभावनावर्गान (हि०) ७८४ सर्वारिष्टनिवारसनोत्र जिनदसासूरि	(हि०) ६१६
सरस्वतीष्रष्टक — (हि॰) ४४२ सवैद्याएवंपद सुन्दरदास	(हिo) ६=१
सरम्बतीक्ल्प — (सं०) ३४२ सहस्रक्ट्रजिनालयपूत्रा —	(सं०) ५५१
सरम्बतीचूर्णकानुसस्का — (हि॰) ७४७ सहस्वग्रुगितपूजा धर्मकीचि	(सं∘) ध्रथ्र
सरस्वती जयमान अरु जिनदास (हि०) ६५६ सहस्रगुणितपूत्रा	(सं०) ४१२
	र्न०) ४४२, ७४७
सरस्वतीपूता [त्रयमाल] झानभूषसा सहश्रतामपूत्रा	(सं∘) ४४२
(सं०) ४१४, ४६४ सहस्रतामपूजा धीनसुख	(हि॰) ४४२
मरस्वतीपूजा पद्मनंदि (सं०) ४४१, ७१६ सहस्रनामपुजा	(हि•) ५५२
सरस्वतीपूजा (स०) ४४१ सहस्रतामस्तीव प० ऋाशधर	(सं०) ४६६
सरम्बतीपूत्रा नेमीचन्द्वस्शी (हि॰) १११	¥=0\$,3€3
सरस्वतीपूजा संघीपनालाज (हि॰) ५५१ सहस्रनामस्तोत्र	(4jo) #\$A
सरम्बतीपूजा प० बुधजान (हि॰) ४४१	£30, £30
सरस्वतीपूजा — (हि॰) ४४१, ६४२	
सरस्वतीस्तवन समुकवि (सं॰) ४१६ सहस्रनाम [बडा]	(सं०) ४३१ (सं०) ४४१
सरस्वतीस्तुति हालभूष्या (सं•) ६४७ सहस्रवाम [तचु] आः समतभद्र	(4°) .85°
सरस्वतीस्तीत्र आशाधर (मं॰) ६४७, ७९१ सहस्रनाम [लघु] —	(40) ASS
सरस्वतीस्तोच बृहस्पति (सं०) ४२० सहैतीयीत सुन्दर	(हि॰) ७६४
सरस्वतीस्तोच श्रुतसागर (सं∙) ४२० साली कवीर	(हि०) ७२३
सरस्वतीस्तीत्र — (सं॰) ४२०, १७६ सांगरवलवरित्र द्वीरकवि	(हि॰) २०४

```
F65 ]
                                                                       ् मन्धानुकसिंगका
प्रस्थनाम
                     लेखक
                               भःषा प्रष्टुसः
                                              प्रस्थत) म
                                                                   लेखक
सागारधर्मामृत
                    श्राशाधर
                                (FO) E3
                                              सामुद्रिकपाठ
                                                                              (Teo) uxe
सालव्यसनस्वाध्याय
                                (fg o)
                                              सामुद्रिकलक्षाग
                                                                              (सं०) २६४
                        _
                                        88
साधुकीमारती
                                              सामुद्रिकविचार
                     हेमराज
                                (हि०१ ७७७
                                                                              (唐•) 788
सामुदिनवर्गा
                                (গাং)
                                              सामुद्रिकशास्त्र
                                                             श्री निधिससुद्र
                                                                              (#io) REY
                                        88
साधुवंदना
                  श्रानन्दस्रि
                                (हि॰)
                                       ६१७
                                              सामुद्रिकशास्त्र
                                                                         (सं०) २६४, २६५
                  पुरुवसागर (पुरानीहि०) ४५२
साधुबदना
                                              सामुद्रिकदास्त्र
                                                                              (प्रा०) २६४
साष्ट्रवंदना
                 वनारसीदास
                                (हि०) ६४४
                                              सामुद्रिक्कास्य
                                                                              (हि०) २६५
                             ६४२, ७१६, ७४६
                                                                            ६०३, ६२७, ७०२
साधुवंदना
                  माशिक चन्द
                                (हि०) ४४२
                                              सायंसध्यापाठ
                                                                               (मं०) ४२०
                                              सारचन्त्रिकात
                                                                               (fie) ¥70
साधुवंदना
                                 (fro) EEY
                                              सारचीबीसीभाषा पारसदासनिकीत्या
 सामायिकपाठ
                                                                              (fgo) *XX
                  श्रक्षितगति (२०) ६०४, ७३७
सामाधिकपाठ
                                              सारकी
                                                                              (भप०) २६४
                                 (₹ 0)
                                              सारम्गी
                                                                               (हि०) ६७२
                        ४२४, ४२६, ४२६, ४३०,
                                              सारमंग्रह
                                                                   वरद्शज
                                                                               (Ho) 120
                        ४६४, ४६७, ६०६, ६३७,
                                              सारः ग्रह
                                                                               (40) 300
                              ६४६, ६८६, ७६३
                                              सारसमुच्बय
 सामाधिकपाठ
                                                                    कुलसङ्ख (मं०) ६७, ५७४
                     बहुमुनि
                                (MI0)
                                              सारमुलयंत्रमंडल (चित्र]
 सामायिकपाठ
                                                                                      ***
                         — (310) € €, ₹05
 सामायिकपाठ
                                              सारस्वत दशाध्यारी
                                                                               (40) 356
                         — (৭০ সা০) ২৬০
                                                              चन्द्रकीत्तिसुरि
                                              मारस्तदीपिका
 सामायिकपाठ
                                                                                      ₹ ₹
                    सह।चन्द
                              (fફo) ૪૨૬
                                              सारस्यतप बस्रधि
 सामायिकराठ
                                                                               (सं०) २६४
                                (हिं) ६७१
                                              सारस्वतप्रक्रिया अनुभृतिस्वरूपाचार्य (सं०) २६४, ७८०
                             ७४६, ७१४, ७१४
                                              सारम्बतप्रक्रियाटीका
                                                                              (सं०) २६७
                                                                   गही भट्ट
 सामायिकपाठभाषा जयचन्दछ।बद्धाः (हि०) ६६, ५६७
                                              सारस्वतयंत्रपूजा
                                                                              (सं०) ५१०
 सामाविकगाठभाषा
                  तिलोकचन्द
                                (go)
                                              सारस्वतयंत्रपूजा
                                                                      — (₦**) ४४२,६३६
 सामायिश्याठभाषा
                  व्यमहादःह
                                (fg。)
                                              सारस्वती धातुपाठ
                                                                              (सं०) २६५
 सामायिकपांठभाषा
                         - · (Ro No) EE
                                              सारावली
                                                                              सं०) २६४
 सामायिकवडा
                         - (#o) ¥$2, Eox
                                              सालोत्तररास
                                                                              (Ro) 300
 सामायिकलध
                                (सं०) ४३१
                                              सावपधम्म दोहा
                                                             मुनि रामसिंह
                                                                             (য়ঀ৽)
                             ४६६, ६०४, ६०७
                                              सांबलाजी के मन्दिर की
 सामायिकपाठवृ निमहित
                                (40) 403 !
                                                    रययात्रा का वर्शन
                                                                              (हि॰) ७१६
```

```
प्रन्थानुकर्माणुका
420 ]
                                                                                भाषा पृष्ठ संव
                                                                      लेखक
                      हेरक
                                 भावा वृष्ट संव ।
                                                  ग्रन्थन|म
 धम्धनाम
                                                                                  (Ho) XXX
                                                र्मः मन्धरस्वामीपूजा
                      देवना र
                                  (2 c) Yor
सिद्धिप्रयस्तोत्र
                                                                                  (हि०)
                                                                                         € $ €
                  ¥28, ¥27, ¥-X, ¥28, ¥$?,
                                                 र्सं मन्धरम्बामीस्तव न
                                                                    गुगाकी सि
                                                                                  (हिo)
                                                                                         405
                   ४३२. ४७२, ४७४, ४७८, ४६४
                                                 सीलरास
                                                               भः सकतकीर्त्ति
                                                                                  (₹i o )
                                                                                         २०६
                                                मुबुमालचरिं उ
                         १८७, ६०४, ६४०, ६३३
                                                                                 (अप•)
                                                                                         २०६
                                    ६३७, ७०१
                                                 मुकुमालचरित्र
                                                                       श्रीधर
                                                 मुकुमालवरित्रभाषा पं० नाथूलालवे सी (हि॰ग) २०७
सिद्धिप्रयस्तात्रदीका
                                   (Ho: 821
                                                                                 (हिल्प०) २०७
                                                सुकुमालचरित्र
                                                                 हरचंद गंगवाल
सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा
                       नधमल
                                  (Eo) X28
सिद्धिप्रवस्तोत्रभाषा पत्र)लालचौधरी
                                                                                 (हि०) २०७
                                  (हि∘)
                                          878
                                                 मुकुमाल वरित्र
                                   (Ho)
                                          300
                                                 मुकुमालमुनिकथा
                                                                                (प्रिंग्या) २५३
सि इयोग
                                  (fz0)
                                                 म्कुमालस्वामीरा
                                                                   त्रः जिनदास
                                                                                (हिल्युज) ३६६
सिद्धों नास्वरूप
                                           શ કુ
                  संमध्याचार्य
                                   (i,o)
                                                 नुखघडी
                                                                      धनराज
                                                                                 (Fo) 503
                                          380
 सिन्दूरप्रकरण
                                                                     हर्षकीति
 सिन्दूरप्रकरगाभाषा
                  बनारमीदास
                                  (हि०) २२४
                                                 मुखबडी
                                                                                  (Po) 668
                                                 मुखनिधान
                                                                  कवि जगनाथ
                                                                                  (Ho)
                    ३४०, ५६१, ५६४, ७१०, ७१२
                                                 गुम्बमंत्रीनगूत्रा
                                                                                  (#ie)
                                                                                         196
                               685, 614, 665
                                                 मुख्यंपत्तिविधानवथा
                                                                                  (# o)
                                   (E0) 380
                                                                                          २४६
 सिन्द्रप्रकरराभाषा
                     ८न्दरदास
                                                 मुखसंपत्तिविधानकथा विसलकोनि
                                  (ग्रप•) २०४
 सिरिपालवरिय
                   पं० नरसेन
                                                                                         २४५
                    चे मं कर मुनि
                                                 गुम्बस र नियमपूजा
                                                                     श्चायसम
 सिहासनहात्रिशिवा
                                   (सं∘)
                                         २५३ |
                                                                                   (मं∘)
                                                                                         4 X X
                                                 गुससर्पानवनाद्यापनपुत्रा
 सिहासनदात्रिशिवा
                                    (₹ 0 )
                                          2 7 3
                                                                                  (40)
                                                                                          288
 सिंहासनबत्तीसी
                                   (सं∘)
                                          २५३
                                                 मुगन्धदशमीकवा
                                                                   ललितकीर्त्ति
                                                                                  (सं०) ६४४
                                   (हिo) ६=o
                                                 सुगन्धदशमीकथा
  सीखनतरी
                                                                     श्रुनसागर
                                                                                  (सं०)
                                                                                         X . X
  सीताचरित्र कविरामचन्द् (बालक) (हि॰प॰) २०६
                                                 मुगन्धदञमीकथा
                                                                                  (मं०)
                                     ७२४ ७४४
                                                 मुगन्धदशमीकया
                                                                                 (भप०) ६३२
                                                 सुगन्धदशमीवतकथा िसुगन्धदशमीकथा है
                                   (हि०) ५६६
  सीताचरित्र
                                   (हि॰) ४५२
                                                                     हेमराज (हिं०) २५४, ७६४
  सीताढाल
                                    (हि०) ७२७
  सीताजीका बारहमासा
                                                  सुग-धददामीपुत्रा
                                                                    स्बरूपचन्द
                                                                                  (हि॰) ५११
  सीताजीकीविनर्ता
                           -- (हि॰) ६४८, ६८४
                                                 सुगन्धदशमीमण्डल [चित्र]
                                                                                          ४२४
                                   (हिं०) ६१८
  सीताजीकीसब्साप
                                                 सुगन्धदशमीवतकथा
                            _
                                                                                  (4°) 282
                                   (修) $47
  सीमन्धरकीजकर्डा
                                                  सुगन्धदशमोन्नतकथा
                                                                                   (भप०)
                       ठक्कुरसी
                                   (हि॰) ७३८ | मुगन्धदशमीवतकथा
  सीमन्धरस्तवन
                                                                   खुशालचन्द्र
                                                                                  (हि॰) ४१६
```

🚤 ग्रंथ एवं ग्रंथकार 🦐

पाकृत भाषा

र्पथकार क नाम	प्रंथनाम प्रंथसूचीकी पत्रसंद		प्रंथनाम द्रंथसूचीकी पत्रसं०
श्रभयचन्द्राखि —	ऋरणसंबंधकथा २१०	देवसेन-	माराधनासार ४ ६
श्रभयदेवसूरि	जयतिहुवस्पस्तोत्र ७५४		१७२, १७३, ६२=, ६३४,
अल्हु	प्राकृतछंदकोष ३९१		७०६, ७३७, ७४४
इन्द्रनंदि—	क्षेदपिण्ड ५७		तत्वमार २०, ५७५
	प्रायश्चितविधि ७४		६३७, ७३७, ७४४, ७४७
कासिकेय	कात्तिकेयानुप्रेक्षा १०३	1	दर्शनसार १३३
कु दकुंदाचार्य	बष्टुराहुड ११		नयचक्र १३४
	पंचास्तिकाय ४०		भावसंत्रह ७७
	प्रवचनसार ११२	देवेन्द्रसूरे-	कर्मस्तवसूत्र ५
	नियमसार ३६	धर्मचन्द्र—	धर्मचन्द्रप्रबन्ध ३१६
	बोधप्रामृत ११५	धर्मद।सगिश	उपदेशरत्नमाला ५०
	यतिभावनाष्ट्रक ५७३	नन्दिषेशा—	ग्रजितशांतिस्तवन ३७६
	रयणसार ६४	भंडारी नेमिचन्द्र	उपदेशसिद्धान्त
	लिगपाहुड ११७	नेमिचन्द्राचार्य —	रत्नमाला ५१ साधवित्रमंगी >
	बट्पाहुड ११७, ७४८	1144.81414	अध्यवात्रभगा २ कर्मप्रकृति ३
	समयसार ११६,		गोम्मटसारकर्मकाण्ड पूर
	४७४, ७३७, ७६२		गोम्मटसारजीवकाण्ड ६,
गौतमस्वामी —	गौतमकुलक ,१४		१ ६, ७ २०
	संबोधपंचासिका ११६, १२८		चतुरविशतिस्यानक १८
जिनभद्रगर्थि	मर्थदिपिका १		जीवविचार ७३२
ह। दसी सुनि	ढाढसीगाया ७०७		त्रिभंगीसार ३१
देवसूरि	मतिविनवर्मा द १		इब्यसंप्रह ३२, ५७५,
	जीवविचार ६१६	1	£54, 688

प्रयकार का नाम	श्रंथ नाम श्रंथ	सूचीकी पत्रसंब	श्रंथकार का नाम	ं प्रथमाम प्रथमूचीकी पत्रसं०
	त्रिलोकसार	370		पपञ्चंश भाषा
	त्रिलोकसारसंदृष्टि	355	, ,	भपत्र रा नामा
	पंचसंग्रह	३८	अमरकीर्त्त-	षट्कर्मोपदेशरस्नमाला दन
	भावत्रिभंगी	४२	ऋषभदास	रत्नत्रयपूजाजयमालाः ५३७
	लब्धिसार	٧₹	कनककीत्ति	नन्दोश्वरजयमाला ५१६
	विशेषसत्तात्रिभंगी	४३	मुनिकनकामर	करकण्डुचरित्र १६१
	सत्तात्रिभंगी	४४	मुनिगुसभद्र—	दशलक्षग्।कथा ६३१
पद्मनंदि	ऋषभदेवस्तुति	३८१		रोहिग्गीविधान ६२६
	जिनवरदर्शन	38●	जयभित्रहल	वर्डमानकथा १६६
	जम्बूद्वीपप्रज्ञाति	388	जल्ह्या	हादशानुप्रक्षा ६२८
शुनिपद्मसिंह	ज्ञानसार	१०५	मानचर्-	योगचर्चा ६२८
भद्रबाहु—	करपसूत्र	€,७	तेजपाल	संभवतिरएस्याहचरित्र २०४
भावशर्मा	दशलक्षराजयमाल ४	दर, ५१७	देवनंदि	रोहिग्गीचरित्र २८३
मुनिचन्द्रसूरि—	वनस्पतिसत्तरी	5 1		रोहिग्गीविधानविधा २४३
सुनीन्द्रकीर्त्त-	भन न्तचतुर्दशीकथा	288	धवल	हरिवशपुरामा १५७
रत्नशेखरसूरि	प्राकृतछंदको <i>श</i>	₹११	नरसेन —	जिनरात्रिविधानक्या ६२६
ब च्यीचन्द्रदेव	स्तोय	४७६		सिरिपालचरिय २०५
सर्मीसेन	द्वा दशानुप्रेक्षा	988 6	रुप द् न्त	माविपुरासा १४३, ६४२
बसुनन्दि—	वसुनन्दिश्रावकाचार	5 X		महापुरागा १५३
विद्यासिद्धि शिवार्य	शांतिकरस्तोत्र	६८१	_	यशोधरचरित्र १८८
	भगवतीबाराधना	- '	हर्णसिह—	त्रिशतजिस्सम्द्रवीसी ६८६
श्रीराम—	प्राकृतस्पमाला	२६२ ∤ य	शः कीर्त्त	चन्द्रप्रभचरित्र १६५
श्रुतमुनि 	भावसंग्रह	95		पढडी ६४२
समंतभद्र	कल्यारगक	३८३		पाण्डवपुरासा १५०
सिद्धसेनस्रि—	इनकीसठागुष्यची	२ 🖆	गीन्द्रदेव	हरिवंशपुरागा १५७
धुन्द रसूर्य—	शांतिकरस्तोत्र	X53 4.	1117K d d	परमात्मप्रकाश ११०,
कविहाल	कामसूत्र	3×3		x0x, 46\$, 000 080
व ० देसचन्द्र	श्रुतस्कंच ३७६,	४७२, रहर	r	योगसार ११६, ७४८, ७१६
	600,			दशलक्षराजयमाल २४३,
				४८६, ४१८, ४३७ ४७२, ६३७

भय एव प्रन्थकार	j				r
मंचकार का नाम		य सूची ई पत्र सं	मंथकार का नाम	प्रंथनास क्रं	[८६७ व सूचीकी पेत्र संट
	पार्श्वना थव रित्र वीरचरित्र	१७१ १४३	***	कृत भाषा	14 (19
	षोडशकारमा जय	माल ५१७,	WITE CONTRACTOR OF THE PARTY OF	चकलं काष्ट्र क	****
	वंबोषपंचासिका	***	1	६३७, सरगर्थराजवासिय	६४८, ७१२ इ. ३२
रामसिह—	सिद्धान्तार्यसार सावयधम्म दोहा	Αέ		न्यायकुमुदचन्द्रोदय प्रायश्चितसंग्रह	£ \$8
	(श्रावकाचार) दोहापाहुड	و ي ۲۲, ۱۲۶	श्रव्यराम	रामोकारपैतीसी पू	'
रूपचन्द	रागमासावरी रागमासावरी	६० ६४१	1	प्रतिमासान्त चतुरर्द	⊊₹, ११७
लदमण	सोमिसाहचरिउ	808		वतोद्यापन पूजा ५	
कस्मीचन्द्	भाष्यात्यक्याया	₹०₹	•	सुखसंपत्तिवत पूजा	**, * *
	उपासकाचार दोहा चूनडी ६	¥२ २=, ६४१		सौस्यकास्य व्रतोद्याव	न
	क ल्यासम्बद्धाः	448	ब्रह्म श्रजित	र् हनुमच्चरित्र	१६, ४४६
विनयचन्द्र	दुधार्सविधानकथा	२४४,	श्रजितप्रसम् रे <i>−</i> -	शान्तिना धवरित्र	२१० १€=
	निर्मारपंचमीविधान		श्रनन्तकीर्ति	नन्दीश्वरव्रतोकापन	
विजयसिंह	२) मजितनाथपुरासा	१४२ हरू	चनन्तवीर्य	पल्पविधान पूजा	१०७
विमत्तकीर्त्त सहयापास	सुगन्धदशमीकथा	\$ \$?	धन्नंभट्ट	प्रमेयरत्नमाला तर्कसंग्रह	१३८ १३२
√64444 —	पद्धडो (कौमुदीमध्यात्) 625	षनुभूतिस्वरूपाचार्य	सारस्वतप्रक्रिया	€₹¥
 .	सम्यक्तकौमुदी	\$ ¥?			€, ७=०
सिंदकवि	प्रजुम्नवरित्र	8= 5	भ पराजितसूरि	मधुसारस्वत	२६३
महाकविस्वयं भू	रिट्ठलेमिकरित १४	0, ६४२	मप्यदीक्ति—	भगवतीमाराधनाटिक कुवलयार्भंद	
	शुतपंचमीकवा हनुमतानुत्रेका	685	षभयषन्द्रगश्चि—	पुन्तवात्त्व पं व संग्रहवृत्ति	\$0E
भीधर	वृक्षमालवरित	452 1	चमयबन्द्र	र्था रोदानीपूजा	38 830
	म स्तिमितिसंधि		षभयनंदि।	जैनेन्द्रमहाबु <u>स</u> ि	२६०
	Ęą	£ 44 4	षमयनस्टि—	त्रिलोवसार पूजा	REX

मंथकार का ना म	प्रंथनाम प्रंथसूचीकी पत्रसं•	र्भथकार का नाम	प्रंथनाम प्रंथसूचीकी पत्रसं≎
	दशलक्षरण पूजा ४८६	श्रमोतकचन्द	रथयात्राप्रभाव ३७४
	ल णु श्रेयविधि ५३३	श्रमृतचन्द्र	तत्वार्थसार २२
त्रभयसोम	विक्रमचरित्र १६६		पंचास्तिकायटीका ४१
पं० अभ्रदेव	त्रिकालवीर्वःसीकथा २२६,		परमात्यप्रकाश टीका ११०
	(रोटतीजकया) २४२		प्रवचनसार टीका ११२
	दशलक्षरापूजा ४८८		पुरुपार्थसिद्धघुपाय ६=
	हादशवतकया २२८, २४६		समयसारकलङा १२०
	डादशक्रत पूजा ४६०		समयसार टीक्का १२१
	मुकुटसप्तमीकथा २४४		७५४, ७६४
	लब्धिविधानकथा २३६	श्रहग्रमिग्	श्रजितपुरासा १४२
	लब्धिविधान पूजा ५१७	ऋहंद्देव	पंचतःत्याग्गकपूत्रा ५०० शान्तिकविधि ४४४
	श्रवराद्वादशीवया २४५	श्रशग	
	श्रुतस्कंधविधानकथा २४४	धात्रेयऋषि	
	षोडशकारमाकथा २४०	आनन्द	
	२४४, २४७	আলা	
अभरकीर्त्त	जिनसहस्रनामटीका ३६३	श्राशाधर-	
	महावीरस्तोत्र ७५२		• • •
	यसकाष्ट्रकरतोत्र ४१३,४२६		४१७ शनगारधर्मामृत ४६
चमरसिंह	भगरकोश १७२	1	अनगरधमामृत ४६ श्राराधनासारवृत्ति ६४
	त्रिकाण्डकोपसूची २७४		डप्टोपदेशटीका ३ ० ०
श्रमितिगति	धर्भपरीक्षा ३५६		कल्यागामंदिरस्तोत्रदीका ३८४
	_		कल्याममाला ५७५
			कलशाभिषेक ४६७
			कलझारोपसाविधि ४६६
	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,		गराधरवलयपूजा ७६१
			जलमात्राविधान ४७७
श्रमोधवर्ष			जिनयज्ञकरा
	धमापदशश्रायकाचार ६४ प्रक्नोत्तररत्नमाला ५७३		(प्रतिष्ठापाठ) ५२१
	734	1	४७८, ६०८, ६३६

मंथकार का व	ताम प्रंथ नाम	मंग स्की		र्थं श्र नाम	[554
	िजनसहस्रन	पत्र स् अक्ट	1°		मंथ सूनी की पत्र सं०
	४४०, ५	६६, ४६६, ६०:	ι, [हंप्र२, हप्र१, हहा इप्र४, हप्र१, हहा	, 484, 480,
	६०७, ६	३६, ६४६, ६४६	ı.	80X, 800, 67	, 000, 008, 9. 057. 1055
	६८३, ६८	ः६, ६६२, ७१२	,	पंचनमस्कारस्त	ोत्र १७६
		२०, ७४०, ७५:	۲	पूजाप्रकरत	437
	धर्मामृतसूक्ति ध्व जारोपस्पृति		370 FF	भावकाचार	
	न्य गरापस्तात त्रिषष्टिस्मृति	٠,	कनककीश्चि-	प्रायश्चितविधि	48
	देवसास्त्रगुरुपूर	\$¥\$		गमोकार वैतीसी	
	भूगल ब तुबिश		क्तक्रकुराल-	विधान देवागमस्तोत्रबृहि	४६२, ४१७ । ३१६
		टीका ४११	कनकनंदि	मोम्मटसार कर्मक	शबदीका १२
	रत्नत्रयपूत्रा	४२६	क्वकसागर— कमस्रमात्राचार्य—	कुमारसंभवटीका	१६२
	भावकाचार		जनसम्भागाय	जिनपंजरस्तोत् <u>र</u>	₹€•,
	(सागारधर्माम् शातिहोमविधान		कमस्रविजयगर्गि	्रै चतुर्विषति तीर्यंव	¥40, EYE T
	सरस्वतीस्तुति	Ero.	कालिदास		तेषं ३८८
		६४=, ७६१	-india-	कुमारसंभव	१६२
	सिखपूजा	४४४, ७१६		ऋतुसंहार मेचदूत	175
इन्द्रनंदि	स्तवन	448		रयुवंश	{=0 1€}
4.3/41.4	र्थं कुरारोपस्पविधि -	*X\$		द्भतरत्नाकर	Agy
	देवयूञा नीतसार	*8.		श्रुतबोध शाकुन्तस	£83.
उब्बदसदस्य (समह	गातसार क्ता ी	398	काकिदास	नलोदयकाव्य नलोदयकाव्य	386
	उ गादिसूत्रसंग्रह	- 1		मृ वारतिलक	\$ OX
इसस्यामि	.तस् वार्यसूत्र	२३, ४२४	घारीनाथ—	ज्योतिषसार सम्म र्वा	३५१ का२८३
	४२७, ४३७, ४३७, ४	42, X4E	ग् रीराज—	गीधबोध २।	₹२, ६०३
	प्रकृत, प्रकृत, प्रवृत, प्र	eq, qoe,	विद्यन्द्र ग्रेड्शराज	षवीर्गामंबरी ,कस्यागुर्मोदरस्तोच	784
	६०३, ६०५, ६३३, ६	No Alt		४२५, ४२७, ४३	ier v sii,

र्मयकार का नाम	श्रंथ नाम प्रं	थ सूचीकी पत्रसंब		प्रंथ नाम प्रं	थ सूची र्फ पत्र सं०
	४६४, ५७२,	५७४, ५६४,	गस्पवि—	रत्नदीपक	980
	६१६, ६३३,	६३७, ६७०,	गणिरतनसूरि	षडदर्शनसमुज्ययद	ति १३६
		७२४, ७५७	गर्गोश	ग्रहलाधव	२८०
कुलभद्र	सारसम ुज्य य	€७, ¥७¥		र्वजागसाधन	२८४
महकेदार	वृत्तरत्नाकर	₹१४	गर्गऋषि	गर्ममंहिता	२८०
केशव	जातकपद्धति	२=१	1	पाशाकेवली	२८६, ६४७
_	ज्योतिषमग्गिमा	ला २८२		प्रश्नमनोरमा	२८७
केशवमिश्र—	तर्कभाषा	१३२		शक्तावली	787
केशवबर्धी	गोम्मटसारवृक्ति	१०	गुणकीत्ति	पंचकत्यास्पकपूजा	¥00
 >	मादित्यव्रतपूजा	8 ई १	गुणचन्द्र	भनन्तवतोद्यापन	५१३
केशवसेन	रत्नत्रयञ्जा	3 F X	1	,	 438, 480
	रोहिश्गीवतर्भजा	४१३,		ब्रष्टाह्निकाव्रतकथा	110, 400
	elanaremo-r	४३२, ७२६		संग्रह	२१६
	षोडशकारगापूजा	4४२, ६ ७६	गुणचन्द्रदेव	श्रमृतधर्म रस काव्य	Y5
बैटबर	भाष्यप्रदीव	262	गुर्वादि—	ऋषिमंडलपुत्राविधान	
कौहनभट्ट	वैय्याकरसाभूषसा	747	30.114	.,	. ∧₹\$ }€, ७€5
त्र० कृत्यादास	मुनिसु व तपुरास	848		चंद्रप्रशकाव्यपं (जका	18:
	विमलनाथपुरा रा			विकालचीबासीकथा	
कृष्णशर्मा	भावदीपिका -	888		संभवजिनस्तोत्र	\$? ?
चपराक	मानवातका एकाक्षरकोश	१३८ २७४	गुणभद्र—	सातिनाथस्तोत्र सातिनाथस्तोत्र	₹,€
चेमंकरमुनि	सिहासनद्वात्रिशिका		2441	सातनायस्तात्र	£8¥,
बमेन्द्रकीत्ति-	गजपंथामं डलपू जा	₹X₹]सभद्राचार्य—		655
बेता—			20 XI 414	श नन्तन।थपुराम्	885
गंगादास—	सम्यक्तकौमुदीकया	२५१		बा त्मानुदासन	१००
	पं बक्षेत्रपालपूजा	805		उत्तरपुरा <i>ण्</i> जिनदत्तवरित्र	\$ & &
	पुष्पांजनिवतोद्यापन	४०६			196
	देवत	४१६		धन्यकुमार व रित्र	\$45
	सम्मेदशिखरपूजा	४३२		मौनिवतस्था	794
	वयाचाचारपूजा	XX6'		बर्द्ध मानस्तोत्र	Yłż
		७२७ गुर	भूष णाचार्य	श्रावकाचार	

New &4 2421	,			•	
मंथकार क नाम	प्रंथनाम प्रंथस्	चीकी एवसं०	श्रंथकार का नाम	प्रंथनाम प्रंथस्	चीकी व्रसंध
			वितामिय-	रमलकास्त्र	₹8#
गुग्ररत्नस्रि—	तर्क रहस्यदी विका	. \$35	1	न्यापश्चित्रान्तमं अरी	235
गुराबिनयगणि	रघुवंशटीका	\$E.A	चूडामिख-	चन्दनवहीवतपूजा -	Yui
गुखाकरसूरि—	सम्यक्तवकौमुदीकथा		चोसवन्द—		448
गोपासदास—	रूपमंजरीनाममाला	२७६	छत्रसेन	चदनषष्ट्रोप्रतकया	
गोपालभट्ट	रसमं जरीटीका	376	अगतकीर्त्ति	द्वादशवतोद्यापनपूजा	888
गोवर्द्धनाचार्य	सप्तशती	७१५	जगद्भूषण	सौंदर्यलहरीस्तोत्र	४२२
गे।विन्दभट्ट	पुरुवार्थानु शासन	3.7	जगन्नाथ	गरापाठ	३५६
गौतमस्वामी	ऋषिमंडलरूजा	\$ 0 to	1	नेमिनरेन्द्रस्तोत्र	398
	ऋधिमडलस्तोत्र	३६२		सुखनिघान	₹•७
	858, 886	. ७३२	जतीदास	दानकोवीनती	ÉRŚ
घटकर्षर—	घटकपेरंकाव्य	258	जयतिसक	निबस्मृत	₹⊑
चंड कवि	प्राकृतव्याकरम्	787	जयदेव	गीतगोबिन्द	१ ६३
चन्द्राकीति	चत्रविशतितोथीकराष्ट्र व	FXEX	७० जयसागर—	सूर्यवतोद्यापनपूजा	**
	विमानशुद्धि	4 3 4	जानकीनाथ	न्य।यसिद्धान्तमं अरी	2 3 X
	सप्तपरमस्थानकथा	386	भ० जिग्राचन्द्र —	जिनचतुर्विशतिस्तोत्र	じょう
चन्द्रकोचिस्रि	सारस्वतदीनिका	२६६	जिनचद्रसृरि—	दशलक्षग्।व्रतोद्यापन	A=6
चाग्यक्य	चाग् क्यराजनीति	३२६,	म ० जिनदास	जम्बूद्वीपपूजा	850
	६४०, ६४६, ६८३,	७१२.	Ì		, X ₹ 0
	७१७. ७२३			जम्बूस्वामी चरित्र	१ ६ ८
	लबुचाराक्यराजनी ति	995		ज्येष्ठजिनवरलाहान	હદ્ પ્ર
	-			नेभिनाचपुरारा	\$80
	914	, ७२०		<i>पुष्नां जलीवतक</i> वा	5 \$ ₹
चामुरहराय		XX		सप्तर्षिपूजा	ሂሄሩ
	ज्यरतिमिर मास्कर	₹8=		हरिषंशपुरारा	***
	भावनासारसंग्रह ५५,७	७, ६१५		सोलहकारखपूजा	७६५
पास्कीर्त्त-	गोतवीतराग	३८६		জলবাগাৰি ছি	1 =1
बारित्रभूषण-	महीपा लव रित्र	१८६	पं० जिनदास—	होतीरे गुकावरित्र	288
चारित्रसिंह—	कातन्त्रविश्रमसूत्राव-			बकृत्रिमजिनवैत्वासय	
	भू रि	२५७		पूजा	¥X\$
				-	

प्रथ	एवं	मन्धकार

ĺ

मंथका , का जाम	संयु खाम	प्रंथ सूची व पत्र सं		प्रंथ नाम ग	iबस्दी∉ पकसं
विज्ञामस्रि—	सिद्धहेमतंत्र		· 1	चन्द्रप्रभवरिष	14.6
विव्रदेवसूरि-	मदनपराजय	3.5	1	प्रशस्ति	Ę.s.
विवसाभस्रि-	चतुर्विशतिजि	नस्तुति ३८	•	वतक्याकोश	241
विजयह नसूहि	भलकारवृत्ति	3.	देवचन्द्रसृरि	पाहबैनाथस्तवन	553
क्रिक्सेनानार्य	मादिपुरासा	8¥7, E¥8	1	सम्मेदशिसरमहा	
	ऋषभदेवस्तुति		4.1693.44	गर्भवडारवक	₹₹, ७३७
	जिनसहस्रनाम	स्तोत्र ३९२	1 -	जैनेन्द्रव्याकर <i>रा</i> ।	348
	-	१, ४७३, ६४ ७		जनप्रभागरण चीवासतीर्थंकर स्त	
		909, 989		सिद्धित्रयस्तोत्र	वन ५०६ ४२१
विक्सेनाचार्य	हरिवंशपुरारा	? X X		**************************************	
बिनसुन्दरसूरि—	होलीकथा	74.5	j I		
स्॰ जिनेन्द्रभूषण्—	जिनेन्द्रपुरास्य	1 44		४७२, ४६४, ४	
अ० ज्ञानकीरित—	यशोधरचरित्र	187			०६, ६३३,
ज्ञानभास्कर —	पाशाकेवली	7= =	देवसूरि		\$0, EXX
ह्यानभूषगु	बा त्मसंबोधनक		देवसेन-	शांतिस्तवन	६१६
	ऋषिमंडलपूजा		देवेन्द्रकीर्त्त-	मा लापप र ति	१३०
	गौम्मटसारकर्मन	1987) er en	द्वन्द्रकाास—	चन्दनवष्ठीवतपूजा	
	तत्वज्ञानतरंगिरा			चन्द्रप्रभजिनपूजा	Yoy
	पं चकल्यासाकोचा			त्रेपनक्रियोद्यापन ६	
	भक्तामरपूजा	48		हादशप्रतोद्यापनपूजा पंचमीवतपूजा	
	श्रुतपूजा	४३७		पंचमेरुपूजा	५०४ ५१६
	सरस्वतीपूजा	प्रश्य		प्रतिमासांतचतुर्दकां यू	४१६ जा७६३
		४४४, ४४१		_	v, x3x
देवमद् दिराज	सरस्वती स्तुति	६५७		रैवतकवा	7, 444 288
त्रिभुवनचंद्र	जातकाभरस् त्रिकालचौबीसी	२८२		वतकयाकोश	
दयाचंड—		Aca		सप्तऋषिपूजा	२४२
7 ·· 1X ··	तत्वार्यसूत्रदशाध्या	भूजा ह	होर्गसिंह—		⊘£ X
दिवपतराय वंशीधर			नश्चय	कातन्त्ररूपमालाटीका डिसंधानकाव्य	२४६
उन्सन्तराथ मरा।धर्	बलंकाररत्नाका र	₹0=			१७१
		,		नाला देख्ध	Kox.

प्रंचकार का नाम	प्रंथ माम	र्भय सूर प	ति की त्र सं०	मंबकार का नाम	भंब नाम	प्रंथ सूची पत्र र	
	٤	न६, ६६६,	688.	नरहरिभट्ट	श्रवसम्बर्		EE
		७१२,	, ७१३	नरेन्द्रकीश्वि	विश्वमानबी	सत्रीर्यंकर	
	विवापहार	स्तीत ४१४,	४२१			पूजा १	, ₹¥
	¥20, 1	८६४, ४७२,	दहर,			422, 1	18
	ξο χ, 1	६३३, ६१७	987		पद्मावती १	(अरा	ĘŲŲ
धर्मकलशस्र्रि—	सन्देहसमु	च्चय	\$ 35	नरेन्द्रसेन	प्रमासप्रमे	কলিকা	
धमंकीर्त्ति -	कौयुदीकर	T I	२२२			१३७ ,	१७६
	वद्यपुरास	r	6.86		प्रतिष्ठाबीप	布	५२१
	महम्बगुरिय	त ्रजा	**		रत्नत्रम पू	जा	XEY
मंः धर्मवस्त्र	कथाकोश		२१६		सिद्धान्तस	ारसंग्रह	¥'9
	गौतमस्य	.मी वरित्र	१६३	नागवन्द्रसृरि-	विषापहा	रस्तोत्रटीका	484
	गोन्महस	ारटीका	ţ.	नागराज-	पियलका	स्व	155
	संबोषपं	वमीकया	२५३	नागेशभट्ट	सिद्धान्तः	मंजूषिका	१७ ०
	सहस्रका	मपूजा	989	न गोजामह	परिभाष	- दुक्तेश्वर	758
धर्मचडगर्शि	ग्रामधाः	नरत्नाकर	२७२	नादमस्त-	धाःकृषः	सहिता टीका	305
धवदास —	विदग्धम्	युवम ह न	984	नारचंद्र	कथारत्न	सागर	२२ •
धर्मघर	नस्पकुष	रवरित्र	१७६		म्बोतिय	सारसू ४टिप्यस्	२८३
धर्मभूवस्य	जिनमह	स्रनामपूजा ४	ናፍ <i>ቀ</i> , ሂሂ ¹		नारकन	अ्योतिषशास् य	२ ८ ४
	न्यायदी	पिका	₹ ₹%	कविनीलकंठ	नीलकं	उताजिक	२८६
	र्बातसः	नामपूजा	***		शब्दशो	भा	788
नंदिगुरु	प्रायदिव	त सम ुज्य य		मुनिनेत्रसिंह—	सप्तन	सब्बोध	१४ 0
	चूरि	लकाटीका	७४, ७८०	नेसिचन्द्र-	हिं स थ	नका ध्यत्रीका	१ ७२
नन्दिषेश	नन्दीएर	रवतीयापन	464	: `_	सुप्रभा	ताष्ट्रक	£ \$ \$
१० सणुक —	द्भारवस	क्षस	64	त्र० नेमिद्च —	धीवध	रानक्या	₹\$=
	वालिह	ोत्र	705		बहुक	्रवा	44.
प० नयविसास	शानार	र्गवटीका	? 00	;	क्या	लेख (घाराण	41 -
नरपशि	नरपरि	उवयथर्या	रद	*		क्या को।	ह) २१६
नरस्तिहर्भट्ट—	विमध	तटीका	₹€	* 1	वॉग	थी क्या	791

				[44.4.	
प्रवकार का नाम	र्भंथ नाम	मंथ सूचीकी पत्रसंद		प्रंथ नाम प्रंथ	सूची की पत्र संब्
	धन्यकुमार व	रित्र १७	1	सिद्धपूजा	थ इंक
	धर्मोपदेशभा	वकाचार ६१	4	स्तोत्र	<i>x</i> & <i>x</i>
	निशिभोजन	व्या २३।	पद्मनाम	भाष्यती	२०९
	पात्रदानक्या	73	पद्मनाभकायस्थ —	यशोधर च रित्र	3=5
	प्रीतिकरचरि	त्र १८	र प्रदापभदेव	पार्श्वनाथस्तोत्र	808
	श्रीपालचरित्र	. २०	•	₹₹¥, 1	307, 4 8%
	सुदर्शनचरित्र	700	: [लक्ष्मीस्तीत्र :	११४, ४२३
पंचाननभट्टाचार्य	सिद्धान्तमुक्त	।वली २७०	,	४२६, ४३२, ४	
पद्मनंदि ।	पद्मनन्दिपं व	वंशतिका ६	1	५७४, ५६६, १	
	पद्मनन्दि श्राट	काचार ६८, ६		६६३, ६६४,	
वदानंदि ॥—	धनन्तवतकय	ा २ १)	र विश्वप्रभसूरि	भुवनदीयक	વેવ€
	करुए।ष्टक	২ ৬ <i>।</i>	, परमहंसपरित्राजका	च।र्यमुहुर्त्त मुक्तावली	3=6
	ę	33 £30, £c:	.	मेघदूतटीका	१८७
	द्वादशवतोद्या	पनाूजा ४६१	पार्ग्यानी	पाश्चिनीव्याकरम्	२६१
	दानपंचाशत	- * c	, पात्रकेशरी	पत्रपरीक्षा	१३६
	वर्मरसायन	£ 8		पद्मावत्यष्टकवृत्ति	805
	गावनायस्त	ात्र ५६३	पुरुषोत्तमदेव	श्रीभधानकोश	२७१
		987	•	विकाण्ड रोपाभिधा न	109
	पूजा	५६०	.	हारावित	988
	नंदोक्बरपं ति	मूजा ६३६	पूज्यपाद	इष्ट्रीपदेश (स्थयभूर	तोत्र)
	भावनाचौतीः	ft	İ	•	३४, ६३७
	(भावनापद	ते) ४७४, ६३४		परमानदस्तोत्र	19 8
	रत्नत्रयपूजा	प्रव्ह	1	श्रावकाचार	ۥ
		१७१, ६३६		समाधितत्र	१२५
	लक्ष्मीम्तीत्र	4 \$0	l	समाधिशतक	१२७
	वीतरागस्तोत्र	¥₹¥,		सर्वार्थसिद्ध	YŁ
	४३१, ५७४	, ६३४, ७३१	पूर्ण देव	यशोध । चरित्र	120
	सरस्वतीपूत्रा	५४१, ७११	पूर्णचन्द्र	उ पसर्गहरस्तोत्र	1=1

मंथकारक नाम	प्रथानाम प्रथ	सूची की	प्रथकार का नाम	प्रंथ नाम	प्रंथ सूची की
	_	पत्र सं०			यत्र सं•
पृथ्वीधराषार्य	वामुण्डस्तोत्र	३८८	भक्तिकाभ—	विष्ठिशतकटिप	नसा ३३६
	ञ्चबनेष्यरीस्तोत्र		महशंकर	वैद्यविनोद	\$ e X
	(सिद्धमहामध	3×£ (महोजीदीश्वित	सिद्धान्तकीमुद	ो २६७
प्रभाचन्द्र	बा त्मानुशासनटीक	१०१	भट्टोत्यस	लचुजातक	२६१
	_ भाराधनासारप्रबंध	₹₹	1	बृहरजातक	२८१
	बादिपुर।शाटिष्यश	6.8.3	1	बटप बासिकार	ति २१२
	उत्तरपुरास्तिटव्यस	१४४	भद्रबाहु	नवग्रहपूजाविष	त्न ४६४
	क्रियाकलापटीका	¥۶		भद्रबाहुसंहिता	
1489	तत्वार्थरत्नप्रभाकर	२१		-) ४६०, ६००
1	द्रव्यसंग्रह नु त्ति	₹¥	भत् इरि	नीतिशतक	, 1974
	नागकुमार वरित्रटीक	त १७६	भवु द्वार	वरांबचरित्र	tex
	- न्यायकुमुदचन्द्रिका	8 3 X	ļ		
	🔔 प्रमेयकमलमार्लण्ड	१३८	1	वेशस्यशतक 	489
	_ रत्नकरण्डमावकावाः	₹-	1	भर्तु हरिशतक	३३३, ७१४
	ਟੀ	का द२	भागवद—	महावोरा ष्ट्रक	483, ¥74
	यद्योधर चरित्रटिप्यस		मानुकीचि	रोहिस्गीवतक	षा २३६
	समाधिशतकटीका	•••		सिद्ध यस पूज	***
	स्वयंमूरतोत्रटीका	१२७ ४३४	भानुजीदीज्ञित—	श मरकोषडी	का २७४
भ० प्रभावंद्य	*		भानुदत्तमिश्र—	रसमंजरी	346
H = HH HZ	कलिकुण्डपादर्वनाथपू		1		
	मुनि सुवतस्त्रद 	४४७	तीर्थमुनि—	न्यायमाला	१३४
	सिद्धभक्तपूत्रा	***	परमहंसपरित्रा बकाषा	र्येभीभारती—	
धृ मुनि	सामायिकपाठ	6.8	तीयं मुनी	न्यायमाला	5 4 %
।लचः ऱ् —	तर्कभाषात्रकाशिका	१३२	भारबी	किरातार्षु नीय	175
धदेव —	द्रव्यसंग्रहवृत्ति	₹¥	भावशमी	सबुस्नपनटीका	***
	परसारमप्रकाशशीका	111	भास्कराचार्थ—	लीलावती	140
ासेन	क्षमावर्गीपूजा	288	मुपासकवि —	भूपाशवतुर्विश	
	रत्मत्रयकामहार्थ व			. •	X, X67, XEX
	श्रमापशी	922		, ,	•
					₹∙ ¥, ₹ ₹₹

ere]				[झंथ	एवं भम्बकार
भ्याचार का नाम		ध्यं सूची व पत्रं सं		म्रंथ नाम ।	मंथ सूचीकी पत्रसं०
पं• संगत (संप्रह् कर	र्ता)—वर्गरत्नाकर	Ę	₹	शब्द व धातुभेद	प्रमेद २७७
मन्त्रिभद्र	क्षेत्रपालपूत्रा	Ęq	६ माघ—	शिशुपालवध	\$=8
गहस्कीरिय	मनं तव्रतविधान	₹१	४ माधनंबि—	चतुर्विद्यतितीर्थं व	न्द
	षोडशकारणविधा	न ५१	*	जयमाल	\$44, ¥48
मब्जनाल	मदनविनीद	300	•		205
मान भिश्र	भावप्रकाश	948	माशिक्यनंदि	परीक्षामुख	3 🕫 Ş
मञ्जूस्दनसरस्वती	सिद्धान्तविन्दु	२७०	. माणिक्यभट्ट—	वैद्यामृत	草の笑
मन्सिह	योगचिन्तामरिंग	108	म।शिक्यपूरि	नलोदयकाव्य	१७४
मनोहरश्याम—	श्रुतबोघटीका	३ १४	माधवचन्द्रजीवद्यदेव-	त्रिलोकसारवृत्ति	३ २२
मस्त्रिनाथसूरि	रघुवंशटीका	€3\$		क्षपगामारवृत्ति	3
	शिशुपालवधटीक	335 [माधवदेव	न्यायसार	१३५
मिलभूषण्—	दशलक्षरगद्रतोद्याः	पन ४०१	माबतु गाचाय	भक्तामरम्तोत्र	¥0.9,
रिक्तवेग्रस्र्रि—	नागकुमारचरित्र	१७४		४२४, ४२६, १	(38, 456,
	भैरवपद्मावतीबल	3¥\$ P		¥£€, €०३, €	
	सञ्जनवित्तवल्लभ	off T		६२=, ६३४, ६	
		X v #	1	₹¥¥, ₹ ¥≈, ₹	
	स्याद्वदमं जरी	\$8\$	ĺ	६६४, ६६४, ६ ६५४, ६८१, ७	
नहादेव	मुद्गर्त्तदीपक	२६०			00,088
	सिद्धान्तमुक्ताकलि	140	मुनिभद्र	शांतिनाथस्तोत्र ४	
हासेनाचार्य	प्रसुम्नचरित्र	१६०	पं० मेघाबी	मष्टागोपाल्यान	714
डीश्वपराकवि	श्रनेकार्थध्य निम जर			धर्मसंग्रहश्रावकाचार	55
० महीचन्द	त्रिलोकतिलकस्तोत्र		भ मेहचंद—	भन-तचतुर्देशीपूजा	600
	पं चमे ह्रपूजा	६६२, ७१२	मोइन	कलशविधान	¥ 5
		७०३	यशःकीर्त्त-	षष्ट्राह्मिक्या	ENX
धेषर—	A	₹0, ₹00		धमशर्माम्युदयटीका	2 o Y
	नग्नहादाध ३ स्वर्णाकवंग्राविधान	५१, ५७७		प्रबोधसार	331
री म ही—	सारस्वतप्रक्रियाटीक		यशोनन्दि	धर्मचक्राजा ४६।	t, 272
हेरवर—	वारस्यतमान्नयाटाक विश्वप्रकाञ	.,,,,		पंचपरमेष्ठीपूजाविधि	¥∙₹,
••••	1242MbM	र७७			^°₹, :, ¥१=

भंयकार का नाम यहो।विजय — योगदेव — रष्ठनाथ — साधुरखमहज्ज— रस्त्रसेक्टरस्ट्रिक्टरस्ट्रिक्टरस्ट्रिक्टरस्ट्रिक्टरस्ट्रिक्ट] मंथ नाम प्रंथ किनकुण्डपादर्वनायः तत्त्वार्थकृति तार्किक्विदारोमित् रचुनाथिकास पर्भवक्तुम। छुदकोश	सूची क पत्र संव पूजा ६४ व २२ १३३ ३१२ ४६२	राजमल्ल-	मंथ नाम प्रथ बध्यात्मकमलमार्त्त जम्बून्यामीयरिक लाटीसीहता क्पूरमंजरी पार्त्वमहिम्मस्तोक	\$\$\$ \$\$\$ \$\$\$
रत्नक्रीचिः— ् रत्नचन्द्-—	रत्नत्रथिषानक्या रन्तत्रयविधानपूजा जिनग्रुगुमंपत्तिपूजा	२४२ ५३० ४७७, ५१०	राजहंसीपाध्याय— सुयुज्जरामचन्द्र— रामचंद्राश्रम —	पादर्वनाथस्तोत्र ५ पष्ट्यायिकशतकटीक पुष्पाश्रवकवाकोष सिद्धान्तचन्द्रिका	६६, ७३७ ा ४४ २३३ २६८
रत्तक्द्ि—	ंचंमल्युजा पुगाजलिय्रलयुजा मुभीमचरित्र (भोमचरित्र) १८: नन्दीत्वरद्वीपयुजा पत्यिवधानपुजा भ्रद्धी	x o x o x o x	रामवाज्ञेष रायमस्त्र रुद्रभट्ट	नश्मग्गोत्सव	₹ £ 6 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0
, रत्नपास रत्नभूषगु रत्नशेखर	मोलहकारसकया मिळपूजा ग्रुसम्यान कमारोहसूद	48x XXX	लच्मीनाथ लच्मीसेन	विगलप्रदीप ग्रभिषेकविधि कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा	₹ ११ -
रत्नप्रभसृरि	छण्डमाण कमाराहसूत्र समवसरण्यूजा प्रमाणन्यतस्वादलोकाः लंकार टीका	५३७ - १३७			¥, 4 8w ¥78
रत्नाकर— रविषेणाचार्य— राजकीर्ष्य—	ब्रात्मनिदास्तवन पद्मपुरागा प्रतिष्ठादर्श पीडवाकारस्वतीवापन	\$44 \$44	त्रघुकवि— इतिसकीर्पत्त—	चिन्तामश्चिस्तवन सप्तिषपूजा सरस्वतीस्तवन मक्षयदसमीकथा	664 664 664

ि प्रथ यसं प्रम्थकार,

[4kg]				ि प्रंथ एवं	मन्धक।र,
मंश्रकार का लाम	प्रंथनाम प्रंथस्	्चीकी पत्रसं०	प्रंथकार का नाम	भंध नाम श्रंथ	सूची की पत्र सं•
	धाकारापंच भीकथा	ÉRX	वराहमिहर-	षट् पंचासिका	₹₹ ₹
	कंजिकावतीद्यापनपूजा	४६८	भ॰ बर्ड मानदेव	वरांगचरित्र	88.A
	चौसठशिवकुमारका		वद्ध मानसूरि	सम्बद्धास्त्र	939
	कांजी की पूजा	XXX	बल्काख	भोजप्रबन्ध	१८५
	जिनचरित्रकथा	Ę¥X	वसुनन्दि	वेत्रागमस्तीत्रटीका	36%
	दशलक्षर्गीकथा	48 4		प्रतिष्ठापाठ	426
	पल्यविधानपूजा	4 ∘ €		प्रतिष्ठासारसंग्रह	* 77
	पुष्पांजलिवतकया	₹€¥		मूलाचारटीका	90
		430	वाग्भट्ट	नेमिनिर्वास	१७७
	रत्नत्रयन्नतकया ६४४	, ફદય		वाग्भट्टालंकार	383
	रोहिएगिवतकथा	ÉRÁ	वादिचन्द्रसृरि-	कर्मदहनपूजा	¥ E o
	षोडशकारसक्या	εγχ		ज्ञानमूर्योदयनाटक	₹१६
	समवसरगापूजा	38%	1	 पवनदूतकाव्य	१७=
	सुगंधदशमीकथा	Ę¥¥	बादिराज	्वीभावस्तोत्र -	352
लोकसेन	दशलक्ष्याकथा २२७,	२४२	1	४२४, ४२७, ४७	
लोकेशकर	सिद्धान्तवन्द्रिकाटीका	375		४६४, ६०४, ६३	
कोकिम्बराज	वैद्यजीवन	७१४		६४४, ६५१, ६५	
स्रोगाविभास्कर—	पूर्वमीमांसार्थप्रकरसा	•			u78
	संबह	१३७		गुर्बाष्ट्रक	EX to
स्रोतिस्थराज	वैद्यजीवन	303		पाइवेनाथचरित्र	१७व
बनमालीभट्ट	भक्तिरत्नाकर	500		यशोधरचरित्र	₹€o
बरदराज—	लचुसिद्धान्तकौमुदी	253	बादीमसिंह	क्षत्रवृहामस्य	
	सारसंग्रह	240		पंचकत्यासाकपूजा -	१६२
बररुचि	एकाक्षरीकोश	200	वामवेष		¥00
	योग शत	409	41144	त्रिलोकदीपक	३२०
	गव्दरू पिशी	758		भावसंग्रह	७६
	श्रुतबोध	₹₹₩.	वासवसेन	सिद्धान्तित्रलोकदीपक	३२३
	सर्वार्थसाधनी	२७६		यक्षोधरचरित्र	16 •
		,,,,	वाह्डदास	सम्निपातनिदान	\$. 4

•	·				
मंबदार का नाम	श्रंथनाम श्रंथस्	चाका इ.सं०	प्रथकार का नाम	र्वथनाम प्रवस्	चीकी प्रसं•
विजयकीत्ति					
	चन्दनवहित्रतपूजा 	¥•€	1	तेरहद्वीपपूजा 	Ack
ष्मा० विद्यानन्दि—		, १३०		पद	444
	द्यासपरीक्षा	१२६		पूत्राष्ट्रक	प्रश्
	पत्रपरीका	१३६		मांगीतु गीनिरिसंडल	
	पं चनमस्कारस्तोत्र	808		पूजा	
	प्रमास्परीक्षा	१३७		रेवानदीपूजा	**
	प्रमा ग् मीबोसा	\$ \$ =		श <u>त्रुक्</u> जयगिरियूजा	211
	युक्त्यनुषासनटीका	१३६		सप्तर्विषूत्रा	**
	श्लोकवात्तिक	AA		सिद्धकूटपूजा	* \$ 4
मुमुज्जविद्यानन्दि—	सुदर्शनचरित्र	२०६	विश्वसेन	क्षेत्रपासपूजा	*40
उ पाध्यायविद्यापति	विविस्साजनम्	२१६		षरावितक्षेत्रपालपूजा	* ? %
विद्याभूषणसूरि	वितामिरापूजा (वृहद्)	४७४		वस्तवतिक्षेत्रपूजा	886.
विनयचन्द्रसूरी	गर्जासहकुमारचरित्र	१ ६३		समवसरग्रस्तोत्र	416
विनयचन्द्रमुनि	वतुर्दशसूत्र	ţ¥	विष्णुभट्ट	पट्टरीवि	\$\$\$
विनयचन्द्र	द्विसंधानकाव्यटीका	१७२	विप्रगुशर्मा	र्य चतत्त्व	转中
	भूपाल चतुर्वि श्रतिका			पंचास्याव	237
	स्तोत्रटीका	*१२		हितीपदेश	# X X
विनयरत्न —	विदग्धमुखमंडनर्ट.का	180	विष्णुसेनमुनि	समबसरग्रस्तोत्र ४१६	, ४२४
विमलकीर्त्त —	धर्मप्रश्नोत्तर	48	बीरनन्दि	श्चाचारसार	¥£
	सुबसंपतिविधानक्या	२४४		चन्द्रप्रभवरित्र	148
विवेदनंदि	विभंगीसारटीका	12	बीरसेन	भाव न् आयश्चित	48
विश्वकीचि	भक्तामरवतीयापनपूजा	४२३	बुप्रचार्य	उससर्गर्थ विवदत्त्	**
विश्वभूषण	धडाईडीपपूजा	XXX	वेद्व्यास	नवग्रहस्तोत्र	444
	बाठकोरमुनिपूजा	444	वैश्वसम्पति	प्रबोधचंदिका	eş ş
	ब्ल्द्रब्बजपूजा	844	वृद्दस्यति	सरस्वतीस्तोत्र	¥2.
	क्लग्रविधि	84,6	शंकरभगति	वालबोधिनी	१ ३८
	कुण्डलगिरिपूजा	¥\$0	शंकरभट्ट —	विवराधिउद्यापन	• • • •
,	विरि कारक्षेत्रपू जा	YEE		विधिकवा	780

भंभकार का नाम	रुथनाम श्रंथ सूचीकी प्रथकार काना	[प्रथ एवं प्रन्थकार म प्रथ नाम प्रथ सूचीक
शंकराचार्य —	पत्र संव मानन्दलहरी ६०० मपराषपुरनग्तोत्र ६६२ गोनिन्दाष्टक ७३३	पेत्र सं० गराधरवलयपूजा ६६० चन्दनपष्टित्रतपूजा ४७३
शंबूसाधु —	जगप्तायाष्ट्रक ३६६ वक्षसामूर्तिस्तोत्र ६६० हरिनाममाला ३६७ जिनश्रतटीका ३६०	चन्दनाचारल १६४ चतुबिवातिजनाष्ट्रक ५७६ चन्दत्रप्रचरित्र १६५ चारित्रजुद्धिविधान ४७५ चिन्सामस्सिपसर्वनाथ
. शंभूराम— शाक्टायन— शान्तिदाम—	नेमिनाथनुजाएक ४६६ साक्टायनव्याकरस्य २६४ स्रनंतचतुर्देशीपूजा ४४६	पूता ६४५ अंश्वन्धरचन्त्रि १७० तत्त्ववर्शन २०
शाक्र घर—	गुरुस्तवन ६५७ रसमंजरी ३०२ वा'र्क्नधरसंहिता ३०४	तासचोबीसीपुरु। ४२७ तरहडीपपूजा ४६३ पंचवन्यारमुखा ४०२
पं० शाली— शालिनाथ— श्वाः शिवकोटि— शिवजीलाल—	नेमिनायसोत्र ३०१, ७४,७ रसमञ्जरी ३०२ रतनमाला ६३ स्रमिथानसार २७२ पंचकत्याराकतूमा ४८६	पंचयरमेष्टीपूजा ५०२ पत्यवताखायन ५०७, ४३६ पाडबपुरामा ६४० पुष्पाजनिव्यतपूजा ५०६
शिषयमां— शिक्षदित्य — शुभचन्द्राचार्थ — शुभचन्द्र — II	रत्नत्रयसुर्णकथा २३७ पीट्यकाररणभावनागृति ६८ कातन्त्रयस्यस्य २४८ सस्यदाः १४० झानार्णव १०६ स्रष्टाह्निकाकथा २१५ कर्मदहनपूजा ४६५, ३३७ ६५४ कातिकेयागुरोशाटोका १०४	श्रीसक्बारित २०३ सञ्जनवित्तवस्त्रभ १३० साउँ स्वयीवपूजा (भ्रद्धारीपूजा) ४४४ सुमारितासीय १४१ सिद्धक्बूजा ४६३ जिनस्तुति ३६१ पुरस्सार १४१ सिद्धक्वूक्जा

भंबकार का नाम	मंथ नाम	वंथ सूच		मंथकार का नाम	मंथ नाम	शंथ सूची की
		पः	₹ सं ३			पत्र सं॰
नागराज	भावशतक		इ३४		वतकवाकोप	787
श्रीनिधिसमुद्र —					षट्पाहुडटीर	का ११६
श्रीपति —	जातयकमैपः		२८१		श्रुतस्कंधपूज	া খুখড
	ज्योतिषयटर	माला	६७२		षोडशकारस	
भीभूषण	बनन्तवतपूर	ग ४५६,	* ? k		सरस्वतीस्त	
	चारित्रशुद्धि	ৰি धान	¥ 0¥		सिद्धचक्रपूज	
	पाण्डवपुरार		१४०		सुगन्धदशर्म	
	भक्ताम रउद्य	ापनपूजा ५२३,	1114-	सकतकीर्त्त-	ब्रष्टांगसम्बर	दर्शन २१५
	हरीवंशपुरा				ऋषभनाध	वरित्र १६०
			१५७		कर्मविपाकः	
श्रृतकीर्त्त—	पुष्पांजलीव		२३४		तस्वार्थसार	
श्रुतसागर—	ग्रनंतवतक व		२१४		हादशानुत्रेक	
	ब्रशोकरो हि		२१६		भग्यकुमार	
	श्राकाशपंच		२१६		परमात्मरा	
	चन्दनपश्चित्र		258		पुराणसार	
		, ₹₹¥, — ^-:				गसकाचार ७१
	जिनसहस्रन		३८३			13
	शानासीवगर		१∙७			
	तत्वार्धसूत्रद		7=		पार्श्वनाथर	
	दशलक्षराव		२२७		मल्लिनाय	
	पत्यविधान				मूलाचारप्र	
	_	क्या	233		मशोधरच	, , , ,
	मुक्तावलिव		735	Ì	बर्ख मानपू	राख १५३
	मेबमालावर	क्या	4 १४		वतकयाक	ोबा २४२
	यशस्तिलकः	षम्यूटीका	१८७		शांतिनाय	
	यद्योधरवरि	7	१६२		श्रीपालचा	
	रत्नत्रयविष	ानकवा	२३७	1	सद्भाषिता	विलि ३३८, ३४२
	रवित्रतक्य	ı	e\$5		सिद्धान्तस	
	विष्युकुमा	रमुनिकवा	२४०	1	सुदर्शनव	_ ''
		-			2-444	रत २०६

संबद्धार का नाम	श्रंभ साम श्रंथ सूची व पत्र सं		प्रंथ नाम प्रंथ	सूची की पत्र सं०
बुनिसकबकीर्ति —	नंदीस्वरपूजा ७१	e	नसस्कारमं त्रकल्पवि	धि
सुबसचन्द्र	बैत्यबंदना ६६	=	सहि	त १४६
	बर्शनस्तोत्र ५७	४ सिद्धनागार्जु न —	नक्षपुट	२६७
सक्तभूष्म	उपदेशस्तमाला ५		जिनसहस्रनामस्तोत्र	
	गोम्बटसारटीका १	सिद्धसेनदिवाकर-	वर्द्ध मानद्वात्रिशिका सन्मतितर्क	444 440
बदानंदगकि	सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति २६।	मुलदेव	मायुर्वेदमहोद धि	989
व्याचार्यसमंत्रमङ् —	बासमीमांसा ६४०	1 -	मुक्तावसीपू जा	290
	जिनशतकालंकार ३६।		पंचकस्यासम्बद्धाः	X00,
	देवागमस्तोत्र ३९१	1 -	,	E, X30
	४२४, ४७४, ७२०		परमसप्तस्थानकपूजा	५१६
	युक्त्यनुशासन १३०१३६	धुन्दरविजयगश्चि	सौभाग्यपं चमीक्या	२४४
	₹¥u	. धुमतिकी र्ति —	कर्मप्रकृतिटीका	3
	रलकरण्डश्रावकाचार	सुभतित्रहा—	नारित्रशुद्धिविधान	४७४
	न १, ६६१, ७६४	9	रघुवंशटीका	88 8
	बृहद्स्क्यं मूस्तोत्र ४७२, ६२८	सुमतिसागर—	त्रैलोक्यमारपूजा	*=1
	समेतभद्रस्तुति ५७८	1	दवालक्षरगद्यतपूजा	YSE,
	सहस्रनामलघु ४२०			**0
	स्वयंभूस्तोत्र ४२४, ४३३,	1	षोड्शकारगणपूजा	¥ ? 10
	प्रथप, प्रद्य, ६३३,	->-0"		***
समयसुन्दरगणि	७२० रघुवंशटीका ११४	सुरेन्द्रकीर्त्त	ध नन्तजिनपूजा	**£
a. 19 3/18/			बष्टाह्मिकापूजाकया	λέ•
			छं≮की यकवित्त	३४४
समयसुन्दरोपाध्याय			ज्ञानपं चर्विशतिका	
सहसकीत्त-	• • "		व तीचापन	845
कविसारस्वत			(युतस्कंषपूत्रा)	XYU
सिंहतिलक			ज्येष्ठजिनवरपूजा	X ? \$
सिद्दनन्दि			र्व बक्त्यागुकपूजा	486
india.	धर्मोपदेशपीयूषश्चावका		र्वं चमास बतुर्वेशीपूजा	208
	बार ६४			ty.

श्रंथकार का नाम		सूचीकी पत्रसंध	वंथकार का नाम	शंधनाम शंध	सूचीकी पत्रसं•
				••	
	नेमिनाथपूजा	XE8		र्खंदोशतक	₹0€
	सुसमपतित्रतोद्यापन	XXX		पंचमीव्रतोद्यापन	Xex
सुरेखराचार्य	पंचिकरणवासिक	२६१		मक्तामरस्तोत्रदीव	1 80€
सुयशकीर्त्त-	पंचकल्यासक्त्रुजा	χοο		योगवितामणि	३०१
सुल्ह्या कवि	वृत्तरत्नाकर टीका	₹१¥		लबुनाममाना	२७६
दैवह पं० सूर्य	रामकृष्णकाव्य	18¥		लब्धिविधानपूजा	144
श्चा॰ सोमकीत्ति	पद्युम्नवरित्र	१८१		श्रुतयोषवृत्ति	***
	सप्तब्यसनकथा	२५०	महाकविहरिचन्द्	धर्मशर्मा म्युदय	१७४
	समवशरणपूजा	XXE	हरिभद्रसूरि—	क्षेत्रसमासटीका	XX
सोमदत्त-	बर्द।सिटपूजा			योगबिंदुप्रकरण	११६
	(कर्मदहनपूजा) ६३६		ब ट्दर्शनसमु ख ्य	१३६
सोमदेव	ग्रध्यात्वतरं गिर्मी	22	इरिरामदास-	विगलखंदशास्त्र	₹११
	नीतिवानयामृत	110	इरिवेश	नन्दीश्वरविधानकः	या २२६
	यशस्तिलक चम्यू	150			£ 5.8
सीमदेव	सूतक वर्णन			क्याकोश	२११
सीमप्रभाषार्थ—	मुक्ताव िवतक् या	236	हेमचन्द्राचार्य	ध मिधानचि न्ताम	
	सिन्द्ररप्रकरण	\$80		नाममा	
	• •	۹۴۶ ۲, ६३ <u>५</u>		बनेकार्थसंग्रह	र७१
सीमसेन	द्वातन्त्रुतायामः रह विवर्णायार			श्चन्ययोगव्यव न्धे दः	
M444-	•	¥5		বিয়া	स ५७३
	दशलक्षराजयमाल	७६५		खंदानुधासन वृत्ति	₹•€
	प रा गुराग्।	१४६		द्वाभयकान्य	रकर
	पेरूपूजा	હ દ્ર		य ातुपाठ	₹•
-1	विश्रह ग्रहति	***		ने मिना वद रित्र	₹′ou
सीमान्यगिया	प्राकृतव्युत् रसिबी पिका	१६२		योगशस्त्र	***
इवमीय —	प्रश्नसार	255		लियानु शासन	\$ 99
\$ 4	नैषधवरित्र	100		वीतरागस्तोत्र	146, V [4
र्षक्रयाम्	पं बमोबतोद्यापन	KAE		बीरद्वार्शिश रिका	†4 =
स्वेद्धीरित- -	धनेकार्यवातक	२७१		शब्दानु शास य	4èn

प्रंथ एवं प्रन्थकार

प्र'यकारकानास प्र	ंथना स प्रंथस् प	वीकी त्रसं०	मंथकार का नाम	श्यानाम मंथसू प	चीकी त्रसं•
, ,	शब्दानुशासनवृत्ति	२६४	श्रागंद—	चतुर्विशतिती र्यं करस्तक	न
	हेमीव्याकरण	२७०			e∮y
•	हेमोव्याकरसृवृत्ति	300		तमास्त्रकीजयमाल	358
• हिन्दी	भाषा		İ	पद	6 66
, .			थानन्द—	कोकसार	きよき
चक्रुमझ	शीलबसीसी	७५०	धानन्द्धः	पद	७१०
श्रवयराज—	वीदहुगुणस्थानवर्षा	१६	श्रानन्दस्रि	चौबीसजिनमाता पिता	
	भक्तामरभाषा	७४४	·	स्तवन	६१६
अस्यराम	पद ५६४,	, X5E		नेमिराजु लवा रहमासा	६१८
अगरदास—	कवित्र ७४=	-,७६८		सायुवंदना	६१७
	कु डिलिया	€ € •	साहचालू-	द्वादशानुप्रेक्षा १०६,	६६१
धवत्रर्शीत्त	मनोरथमाला	७६४	त्राशानंद	पूजाष्टक	५१२
	विषापहारस्तोत्रभाषा	४१६	थासकरण	समक्तिदाल	83
	६५०, ६७०, ७७४	, ६६४	इन्द्रजीत	रसिकप्रिया ६७८	, ७४३
	मंत्रनवकाररास	ŧ¥0	इन्द्रजीत	मुनिगुब्रतपुरागः	१५३
श्रजयराज	चारमित्रोंकोकथा	२२४	उत्तमचंद	प्द	***
444/14		, ξEu	चद्यभानु	भोजरासो	७६७
	७२४, ५८०		चद्यराम	पद ७६६,	હદ દ
		, v=3	उद्यताल—	वारूदत्तचरित्र	१ ६=
	वंसतपूजा	, (= 3		विसोकस्व रूपव्यास्या	३२२
महाद्यजित	*संतिलकरास			नागकुमारचरित्र	१७६
व्यनन्तकी चि	पद	900	ऋषभदास—	मुलाचारभाषार ५१६,	
श्रवजद	शकुनावली	४६४ २६२		रनत्रयपूजा	ve
षभयवश्द	पूजाष्ट्रक		ऋषभहरी	पद	XSX
श्रभवनम्द्सूरि—	रूगप्टम विक्रमचौबोलीचौपई	X 8 5	कनककी त्ति	श्चादिनायकीविनती	468
मुनिश्चम यदे व—	यंसरापादर्वनायस्तवन	380			७२४
				जिनस्तवन	७७६
धसृतकाद	पद	X5€		तत्वार्थसूत्रटीका ३०,	७२९
श्चवभू	बारहम्रनुप्रेक्षा	७२२	ł	पार्व नायकी ग्रारती	\$8 \$

र्भवकार का नाम	प्रंथ नाम	श्रंथ सूची की पत्र सं		मंथकार का नाम	प्रंथ नाम	मंथ सूच पर	ीकी वसं०
	वक्तिमाठ	ĘX	1		रात्रि भोजन	कथा	२३८
	पद	£ \$4, 00	۱ ا	इवलयचन्द	नेमिनाषपूर	rī .	9 8
		७२४, ७७		कुराससामगीय —	डोलामारूव	रशीषी पर्द	२२४
	विनती	६ २	٠,	कुरास विजय	विनती	•	७६२
	स्तुति	₹०१, ₹%	- 1	केशरगुलाब	पद		አ አአ
कनकसोम—	बादकुमारघ	माल ६१	6	केशरीसिंह	सम्मेदशिस		63
	धाषाटभू ति	बौढालिया ६१			बर्ख मानपु	राख	\$ \$8
	मेधकुमारच	ौढानिया ६१	9				788
कन्हेयालाल	कवित्त	৬=		केशव	कलियुगकी	क्या	६२२
क्षपे:त	मोरपिच्छध	तर्गक्रया			सदय ४ च्छ	सावलिंग।	
40414		 केकवित्त ६७	.3			की चीपई	5××
		¥1		केशबदास!	वैद्यमनील	व	£X8
म्र. कपूर यन्द	पद	¥. 3.00,€	1	केशबदास—॥	कविस	ÉA	, 600
•	-3		- 1		कविप्रिया		141
कवीर	वोहा	10 fo, 10			नस िसस	।एंन	७७२
	पद	999, 9			रसिक/प्र	শ ৬৬	350 ,
	सःसी	•	२३		रामचनि	का	,16A
कमञ्जकतश	वंभग्वाव	ोस्तवन ६	35	केशवसेन	पंच मी बत	ोचापन	₹₹¢
कमसकीर्चि—	भादिजिन	बरस्तु ति		कौरपाल	चौरासी	ो स	900
	(1 73	रसते) ४	36	क्याराम	ज्योतिष	सारभाषा	२६२
क्ष्मंबन्द	वद	¥	59				485
कल्यासकी ति	चास्दल	efre P	Ęij	कृष्णुदास	रलावल	वितविधान	*11
किशन	खहडाला		9¥,	कुष्णदास—	सतसई	ीका	७२७
किशनगुजाय	वद	X4Y, 58Y, 5	-	कृष्ण(व-	यश्ची स्था	तस	७२२
किशनदास	पद		34)	ल बगल	सतियों	की संज्ञाप	YX ?
				सङ्गरेन	विस्रोक	सारवर्ष सक्त	9 <i>94</i>
किरानकास—	कृष्ण्यास		of t			Ęq	4, 400,
किशनसिंह	क्रियाकी		χŧ	सानपन्द	परमाल	र प्रकाशका सा	
	पर	¥8•,	90Y			बोधटीक	1 . 555

3.95				ग्रंथ ए	वं प्रन्थकार
मंबकारका नाम	प्रंथ नाम प्रंथ	सूची की पत्र सं॰	प्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम ≰	iथ सूचीकी पत्रसं∘
सुराज चन्द् —	भनन्तव तकथा	788		पद	४०२, ६२४
_	भाकाशपंच मीकया	288		££y.	ĘĘ=, 60 0₹,
	धादित्यव्रतकथा				v=3, ve=
	(रविवारकय	४७७ (१	खेतसिंह—	नेमोश्वर का बार	
	भा रतीसिद्धांकी	৬৬৬			७६२
	उत्तरपुराग्गभाषा	१४४		नेमाञ्बरराजुलको	
	चन्दनषच्ठी व तकथा	228		तमार यर राष्ट्रायमा	300
		४, २४६		ने मिजिनंदब्याहलं	
	जिनपूजापुरन्दकथा	२४४	खेमचन्द	चौबीसजिनम्तुति	
	ज्येष्ठांजनवरस्था	788		_	۲۰, ۲۲ ۹ ,
	धन्यकुमारचरित्र १७	३, ७२६			४६१, ६४६
	दशलक्षराक्था २४	¥, ડ ३१	गङ्ग—	पश्चसग्रह	७१०
	पद्मपुरासभाषा	3*5	र्गगादास —	रसकोनुक	
	परूपविधानन या	२३३		राजसभार	त्रन ५,७६
	पुष्पांजलिद्रत स्था	२३४	गंगाद्दास	ब्रादिपुराग् विन ती	3 o e'
	98	4, ७३१		बा दित्यवारकथा	હૃદય
	पू जाएवं कया मग्रह	, 3 e k		भूलना	७४७
	मुकुटसप्तमी कथा। -	988		त्रिभुवनकावीनती	७७२
		७३१	गंगाराम—	पद	६१५
	मुक्तावली वतकथा	244		भक्तामरस्तोत्रभाषा	¥? e
	- मेघमालाय⊹कथा	₹ ₹	गारवदास	यशाधरचरित्र	181
		288	गिरधर—	कवित्त ७।	५२, ७ ६६
	यकोधरचरित्र १०१	, ७११	गुग्रकीत्ति —	चतुर्विद्यात छप्पय	₹० ₹
	सन्धिविधानस्था	248		चौबीसगराधरस्तवन	Ę-Ę
	शांतिनाथपुरास	- 1		सीलरास	40 7
	वोडशकारसद्भवस्या	14x	गुणचन्द्र—	धा रीश्वरकेदशभव	७६२
	सप्तपरमस्थानव्रतकथा	888		यद ४८१, ४८	
	हरिवंशपुरा ल	588	'0		15
	3119	१४८	गुस्पनंदि	रत्नावलिकया	3 88

प्रनथ एवं प्रंथकार ो

घंशकार का नाम	प्रंथनाम प्रंथस्	्चीकी अप्रसं०	मंथकार का नाम	प्रंथ नाम प्रंय सूचीकी चन्न सं∙
गुराषुरया	पद	७६=	चम्पासाल	वर्षासागर १६
गुखप्रभसूरि—	नवकारसङ्भाय	₹ १¤	चतर	चन्दनमलयागिरिकया २२३
गुणसागर—	द्वीपायनदास	440	चतुर्भु जदास-	पद ७७५
_	घांतिनायस्तवन	७०२		मधुमालतीकया २३६
गुमानीराम—	पर	₹€ €	चरणदास—	शानस्वरोदय ७५६
गुलाबचन्द—	करका	É¥Ş	विमना	बारतीपंचपरमेष्ठी ७६१
गुलाबराय	बडाकक्का	₹ ∈¥	चैनविजय	पद ५६८, ७६८
महा गुवाल	क्षकाबत्तीसी	६७६	चैनसुखलुहाहिया	ब्रकुत्रिमजिनवैत्यालयपूजा ४ ५२
	कवित्त ६७०	, ६८२		जिनसहस्रनामपूजा ४८०
	गुलालपच्चीसी	७१४		४५२
	त्रैपनक्रिया	980		यद ४४६, ७६८
	द्वितीयसमोसररा	४६६		श्रीपतिस्तोत्र ४१८
गोपीकृष्ण	नेमिराजुलब्याहलो	२३२	छ्त्रपतिजैसवाल	द्वादकानुप्रेक्षा १०६
गोरसनाथ	गोरखपदावली	७६७	4	मनमीदनपंचनतीभाषा ३३४
गोबिन्द्-	बारहमासा	ĘĘĘ	জ্বানু—	पादर्वजिनगीत ४ =
घनश्याम	पर्व	६२३	द्धीतरठोक्षिया	होलीकीकथा २५५,
षासी	मित्रविलास	338		4= 4
चन्द्	चतुर्विशतिर्तार्थंकरस्तुर <u>ि</u>	7 € ⊏ ¥	छीहल	पचेन्द्रियवेलि ६३८
		७२०		र्वयोगीत ७६५
	पद ४०७	, ७€३		पद ७२३
	प्रग्रस्थानवर्षा	5		वैराम्बनीत (उदरगीत) ६३७
चंद्रकीर्ति	समस्तवतकीजयमाल	YEY	कोटीनानजैसवान—	तत्वार्षसारभाषा ३०
चन्द्रभान	पद	157	क्षोटेकावभित्तत—	प वक्त्यास्कपूजा ५००
.चन्द्रसागर—	∎ावशकतकवा संग्रह	२२=	जगञ्जीवन	एकीभावस्तोत्रभाषा ६० ५
चम्पानाई	वस्पादातक	¥ŧo	वगतरामगोदीका	वद ४४४, ४८१, ४८२
चम्पाराम	धर्मप्रकालरभावकः			X4X, 42X, 480,
	चार ६			488, 684, 686,
	भद्रवाहुषरित्र	1 =1		७५३, ७६५, ७६६
	-			.,

Ċ

Fod]				[प्रथ एवं	मन्धकार
श्रंथकार का नाम	घंथ नाम प्रंथ	सूची की पत्रसंब	प्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम प्रंथ	सूची की पत्र सं०
	जिनवासीस्तवन	380		द्रव्यसंग्रहभाषा	3 €
जगतराय	पद्मनंदि रच्चीसी भाष	7 € 9		वरीक्षामुखभाषा	9 7 9
	सम्यक्तकौमुदीकवा	२५२		भक्तामरस्तोत्रभाषा	*{0
सगनकवि	रामबत्तीसी	*{*		समयसारभाषा	१२४
जगराम	पद ४	०५, ६६=		सर्वार्थमिडिभाषा	¥Ę
		७६४		सामायिकपाठभाषा	٤٤
जगहर-	प्रतिमाः त्यापककू "				४६७
	उ रदेश	,	जयलाल-	क्शीलखडन	×۶
	पार्श्वनायस्तवन	६८१	पांडे जयवंत	तत्वार्यसूत्रटीका	35
	श्वेतांबरमतके ८४ व	ৰাল ৬৩ হ	जयमागर—	चतुर्विञ्चतिजिनस्तवः	₹
स्वम्स	पद	प्रद्		(चौबीसीर	नवन)
जनमोहन	स्नेहलीला	७७१		Ę	ع م و ، په
जनराज	षट्ऋतुवर्णनवारहमा	सा		जिनकुशलसूरि चौपई	
		ξXĘ	जयसोमगणि —	बारहभावना	६१७
अयकिशन <i>─</i>	कवित्त	₹¥₹	जवाहरलाख	सम्मेद्शसरपूजा	220
जयकीत्ति	पद ५०	X X55	जमकीर्त्त—	ज्येष्ठजिनवरकथा	२२४
	बंकचूलराम	353	जसराज	बारहमासा	950
	महिम्नस्तवन	४२५	जसवतसिंहराठौड	भाषाभूषरा	₹१२
	रविव्रतकथा	446	जसुराम	राजनीतिशास्त्रभाषा	3 3 4
जयचन्द्ञ्।वडा —	बध्यात्मपत्र	33	जादूराम	पद	YYX
	ब ष्ट्रपाहुडभाषा	33	जितचंद्रसूरि	मादीस्वरस्तवन	400
	भाष्तमीमासाभाषा	₹३0		पार्श्वजिनस्तवन	900
	कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाभाषा	808		बारहभावना	900
	चं द्रप्रभवरित्रभाषा	१६६		महाबीरस्तवन	900
	कानार्णवभाषा	₹05		विनतीपाठस्तुति	
	तत्वार्थसूत्रभावा	₹€	जितसागरगरिए	नेमिस्तवन	¥00
	देवपूजाभाषा	038	जितसिंहसूरि		***
	देवागमस्तोत्रभाषा	764		चतुर्विशतिजिनराज -	

प्रवकार का नाम	श्रंथ नाम	श्रंथ सू र्	ीकी इसंश	वंशकार का नाम	प्रंथ नाम	प्रैंच सूची की वन्न सं•
	बीसतीर्थं कर		900		धर्मप वर्षि	
	वासिमदर्व	-	900		निजामश <u>ि</u>	
जिनवंद्रसूरि	क्यवशाची		378			• • •
विनयद्रवृत्त	भगवतीसी क्षमावतीसी		**		मिच्छादुर रैददतकय	
बिनदत्तसूरि		वंसप्तस्मरण	-		रदन्नतक्य समक्तित्वि	
mad adie	-	ारसस्तोत्र			समामदाव सुकुमानस	
पं० जिनदास	चेतनगीत	*11000013	७६२		33 गार सुभीम वह	
40 12414	धर्मतस् <u>न</u> ीत		७६२	जिनरंगसूरि	कुशशहुस	
		۹, ۲۹,		जिनराससूरि	धन्नाशासि धन्नाशासि	_
		958, 497,		जिनवल्लभस्रि—		हिमास्तवन ६१=
	बाराधनास		פעעט	जिनसिंहसरि—	शालिभद्र	-
	मूनी श्वरोंक		Xut	जिनहर्ष	घग्धरनिस	
	•	of, f77.		14.4	उपदेशस्त्र	
		=₹, ७ Ҳ०,			पद	\\.
	राजुलस न्म		920		नेसिराजुह	
	विनती	-	uux		_	नीनशानी ४४ ८
	विवेक्जकर्ड	5 19 93,	0 % 0	जिनहर्षगणि	श्रीपासरा	
	सरस्वतीज		535	जिनेन्द्रभूषख		े २६६ तितासव्रतकथा ७१५
			995.	जिनेश्वरदास	नन्दीहबर	
वावडेजिनदास	योगीरासा	१० ५,	,	जीवगुदास	पद	YYX
पाव डाजनराल				जीवगाराम	पद	¥e•
		•₹, ६२२,		जीवराम	पद	\$60,068
	•	४२, ७०३,		जैतराम	जीवजीत	मंहार २२५
			450	जैतमी	रागमाला	के दोहे ७८०
	मानीरासी		X ve	जैतसिह—	दशरीका	तकवीत ७००
बिनदासगोषा	सुग्रदशतक		¥¥V	जोधराजगोदीका-		नावचीतकवा २२ ४
त्र ः जिनदास	बठाबीसमू	भुक्तरास	400	1	वीबीपार	र्वनायस्तवन ६१७
	भगन्तवदर		160		जिनस् <u>प</u> ुरि	T wek
	चौरासी न्या	तिमाला	V£X	1	वर्मसरीव	F\$ 93

भैशकार का नाम	मंथनाम प्रंथस	्चीकी पत्रसं≎	श्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम प्रंथ सूची की पत्र सं०
	नेमिजिनस्तवन	६१८		सोलहकाररमकथा ७४०
	प्रवचनसार	888	मांभूराम—	पद ४४५
	प्रीतिकरचरित्र	१५३	टीकमचंद	चतुर्दशीकया ७५४, ७७३
	भावदीयक	99		चंद्रहंसकथा ६३६
	वारिषेरामुनिकथा	२४०		भीपालजीकीस्तुति ६३६
	सम्यक्तवकौमुदीभाषा	२४२		स्तुति ६३६
		६ ६	टीलाराम—	पद ७६२
	समन्तभद्रकथा	७५८	टेकचंद	कर्मदहनपूजा ४६५, ५१०
	पद ४४१, ६६	४, ६हह		७१२
	9=6	, ७६५		तीनलोकपूजा ४०३
औंहरीजानविकाना	विद्यमानबीसतीर्थं कर			नंदीश्वरव्रतविधान ४१४
	पूजा	४३४	!	प्रश्च
	द्यालोचनासठ	४६१		पंचकत्यागाकपूजा ५०१
हानचंद—	लब्धिविधान रूजः	X 3 6		पंचपरमेष्ठीपूजा ५०३, ५१⊄
इ शनभूषण	ग्रक्षयनिषिपूजा	YXY		र्पचमेरुपूजा ४०४
	प्रादीश्वरफाग	350		पुष्याश्रवकयाकीश २३४
	वनगालगारास	352		रत्नत्रयविशानपूजा ५३१
	पोमहरास	७६२		मुहष्टितरगिग्गीभाषा ६७
त्र े श्रानसःगर	धनन्त चतुर्दशीक या	2,8		सोनहकारसमञ्जलविधान
	म ष्टाह्मिकाकथा	980	टोडर—	४ ५ ६
•	मादिनाथकत्या गकथा	900	C16(पद ४६२, ६१४, ६२३
	कथासंग्रह	220	पं० टोडरमल—	હિં <mark>દ્</mark> ય, હહદ, હહહ
,	दशलक्षराष्ट्रतकया	430	40 618(40)	बात्मानुषासनभाषा १०२
	नेभीश्वरराजुलविवाद	484		क्षपरगासारभाषा ७
	माशिक्यमालाग्रं य	-		गोम्मटसारकर्मकाण्डभाषा ४३ .
-	प्रश्नोत्तरी	808		गोम्मटसारजीकाण्ड्रभाषा १०
	रत्नत्रयकथा	980		गोम्मटसारपीठिका ११
	लघुरविवसकया	288		गोम्मटसारसंदृष्टि १२
				त्रिलोकसारभाषा ३२१

मंथकार का नाम	शंधनाम प्रंथस	ूची की पत्र सं०	प्रधकार का नाम	बंधनाम बंधस्	्चीकी स्त्रसं•
	पुरुषार्थसिद्धम् पायभा	वा ६६	थानजीश्रजमेरा—	बीसतीर्थकरपूजा	४२३
	सोक्ष मार्ग प्रकाशक	60	थिरूमल—	ह्मवरामारती	995
	सब्धिसारभाषा	ΥŞ	दत्तनाल	वारहसडी	611
	लब्बिसारक्षपणासार	¥\$	वंद्यास—	पद	*
	लब्धिसारसंदृष्टि	¥\$	दयासराम	जकडी	GYE
टक्कुरसी—	कृपग्छंद	€ \$ =	दरिगह—	जकड़ी ६६१	, ৬ሂሂ
	नेमीश्वरकीवैलि			पद	946
	(नैमोश्वरकवित्त)	७२२	दलजी	बारहभावना	1408
	पंचेन्द्रियवेलि	60 €	द्वाराम	पद	६२०
•		२, ७६४	दशरधनिगोत्या	धर्मपरीक्षाभाषा	***
कविठाकुर	स्मोकारपञ्जीसी	368	दास	पर	980
	~ सज्जनप्रकाश दोहा	२६४	मुनिदीप	विद्यमानबीसतीर्थंकर	
डाल्राम—	भढाईद्वीप पूजा	XXX		पूजा	YŽX
	चतुर्दशीकथा	685	दीवचन्द	धनु भवप्रकाश	YE
	द्वादशांगपूजा	464	• •	भात्मावलोकन	1
	पंचपरमेष्ठी गुरावर्शन	ĘĘ		बिद्विलास	१ - ५
	थं चपरमेष्ठीपूजा 	¥•\$		घारती	999
	पंचमेरपूजा	४०४		ज्ञानदर्प ण	१०४
ह्रंगरकवि—	होतिकाचीपई	44 4		परवास्मपुरास	880
ह्रंगावैद	श्रेरिएकचौपई	२४८		पद	५८३
तिपरदास—	श्रीस्वमित्रकृष्णाजी को रासो		दुर्लीचंद	बाराधनासारव-बनिका	
तिलोकचंद	या रासः सामायिकपाठश्वाचा	9.50 2.5	30145-	जारायनातास्य पानना उपदेशस्त्रमाला	* * *
तुलसीदास	कविलबंधराम ध रित्र	960			*(
तुत्रसीदास—	प्रकीसररतमाल। प्रकीसररतमाला	132		जैनसदाचारमार्ल थ्ड	_
तेत्रशय	विश्वासास्तवन तीर्वमासास्तवन			नामकपत्रकाप्रत्युत्तर	₹₽
G 41 (14)	ताम नालास्तवर्ग	4	•	जैनागारप्रक्रिया नाया	X O
त्रिभु ।नचंद—	-			द्रव्यसंत्रहभाषा	tu
≀त्रशु रशक्ष्र—	सनित्यपं चासिका	OXX		निर्मास्यदोषवर्श्यन	ÉX
	qe	७१५ ।		पद	645

े दश्य ।			•	र्मथ	एवं प्रम्थकार
शंबदार का नाम	र्मथ नाम प्र	ंथ सूचीकी पत्रसंब		मंथ नाम	शंथ सूची की पत्र सं•
*	प्रतिष्ठापाठभाषा	४ २२	1	संकटचौयव्रतः	
•	बाईसग्रमस्यवर्गः	ৰ ৬২	दौत्ततराम	खहढाला	૫૭, ૭૪૬
S	सुभाषितावली	₹¥¥		-	909
वेदचन्द	मुष्टिकान	₹00		जिनस्तवन	909
वेवचंद	मष्टप्रकारीपूजा	96 o	1	98	¥¥ ₹, ₹₹¥
3. g	नवपदपूजा	980	1	बारहभावना	४६१, ६७५
देवसिह—	पद	ÉÉA	दौत्रतरामपाटनी	व्रत विधान रासो	
वेवसेम	पद	४८६	दौलतराम	मादिपुरास	£XX
देवादिल	उपदेशसङ् काप	३≈१		बौबीसदण्डकभा	
देवापारहे देवामध	जिनवरजीकी विनर्त	. ,			¥98, ¥¥5
কুকাস রঃ	कशियुगकोविनत्ती	4 84,			४११, ६७२
		६८४		त्रेपनक्रियाकोश	Xε
	चौबीसतीर्थं करस्तुति	,		वसपुरासभाषा	888
	_	=₹, ७ = ¥		परमात्मप्रकाशभा	षा १११
	विनती ४५१,६६ नवकारबडीवीनतो	ξX, υσο		पुण्याभवकयाकोद	
	मुनिसुन्नतवीनती	६५१		सिद्धपूजाष्ट्रक	৩৩৩
	सम्मेदशिखरविलास	YX.		हरिबंदापुराग्।	१४७
	सासबहुकामगढा		दौत्ततवासेरी	ऋषिमंडलपूजा	868
देवीसम्द	हितोपदेशमाषा	ess.	यानतराय—	मष्टाह्मिकापूजा ए	
देवीदास	कविश	1		ब्रक्ष रबावनी	₹७€
•	कायरा जीववेश <i>डी</i>	FOX		मागमविलास	88
	पद	७४७		भारतीसंग्रह ६	२१, ६२२
	राजनीतिकवित्त ३३।	389			999
विसिद्धावडा —	उपदेशरत्नमालाभाषा	- 1		उपदेशशतक ३:	२४, ७:४७
वेन्द्रकीर्त्त-	जकडी	47 47			¥, ६१ ¥,
विन्द्रभूषश्—	पद	X = 0			96x
••	रविवारकवा	440		चौबीसतीर्थंकरपूजा	VOY

म व एव प्रथकार	j		. [478
मंबकार का नाम	मंगलाम प्रंयसूचीकी पत्रसंब		मंगनाम प्रंथस्चीकी पत्रसं∙
	\$98, 980	• [संबोधप्रकारबावनी ११६
	प्रकारक ७७५	•	समाविमरतामाया १२६
	वकडी ६४३		सिक्कोत्रपुत्राष्ट्रक ७०१
	सस्यसारमाया ७४७	,	स्वयंगुरतोत्रभाषा ४२६
	वसबोलपञ्चीती ४४०		साहपरपूजा ५२४
•	बगलससपुत्रा ५१६, ७०४	डारिकादास-	कलियुगकोकवा ७७३
	बानबावनी ६०४, ६०६		तीनर्मियांकीयकडी ६२६
	धानतविकास ३२६		पर ७६०
	द्रव्यसंग्रहभाषा ७१२		विकरविलासभावा ७६३
	धर्मविसास १२व	धर्मभन्द	यनन्तकेख्यम ७५७
	धर्मपच्चीसी ७१०, ७४७		मोरपिन्सवारीकृष्णा के
	पंचमेरपूजा ५०५,७०५		कविता ६७३
	पादर्वनायस्तोत्रमाया ५६९	धर्मपाल	पद ५८८, ७१८
	६१४, ४० ६	वर्मभूष७	र्यजनाकोरास ५६३
	पदसंग्रह ४४४, ४८३	धर्मेबी	दानवीसतपभावना ६०
	४८४, ४८४, ४८६	भीरवसिंहराठीड—	भाषामूक्ता ६६६
	द्रव्य, द्रवर, द्रह०	नन्दरास—	यनेकार्यनायनासा ७०६
	433, 434, 4 48		मनेकार्यमंत्ररी २७१, ७६१
	६४६, ६१४, ७०४		101,000
	७४६, ७८७ मायनास्त्रोत्र ६१४		पर १८७, ७०४
	रत्नवस्त्रुजा ४२१, ७०४		14-9-11
	वाखीयष्ट्रभवजयमाल ७७७		
	वीवसकारगापूचा ५११		
	४११, ४४६, ७०५ संस्थानी ३७४		
		नेन्द्राय	योगसारमाचा ११६
	सबीवर्गवासिका १२८ ६०४, ६४४, ६८३	-	क्ष्मवसीसी ७३२
		वैद्यनम्बात	प्रवसावनिकविता ७८२
	कर्य, कर्य, कर्य	नसस्यवि	्रसासकु वरकी चीवर्ष ३७५ .

	ſ	प्रैथ	ऍवें	अम्बद्धार	
--	---	-------	------	------------------	--

विकार का नाम	भंद्यं नाम शंद्यं सूर्य पर	की सं•	में थकार का साम	प्रंथ नाम	प्रंथ सूची की पत्र सं०
विवासिकार्था ।	प्र ष्टाह्मिकाकथा	२१५	1	₹¥₹, ₹	१४, ६११ ७८२
·, *,	जीवंघरचरित्र	१७ ०	1		७८३, ७१८
* *	वर्शनसारभाषा	१ ३३	1	बारहभावना	११४
.*	परमात्मप्रकाशभाषा	***			¥78, 46 8
	महीपालचरित्र	१ ८६		भद्रवाहुवरित्र	₹=₹
	मन्त्रामरस्तोत्रक्या		1	शिक्षाचतुष्क	€ € €
,	माषा २३४,	७२०	नाथूरामदोसी	समाधितंत्रभा	षा १२६
•	रत्नकरण्डश्रावकाचार		व्रद्धनाथू	चेतावनीगीत	७४७
	भाषा	5 P	1	पद	\$ 2 2
		१२८		पार्श्व ना थस् तव	न ६२२
	बोडशकारसभावना		नाथुराम	धकलंकचरित्र	गीत १६०
	जयमाल	55		गीत	६२२
i	सिद्धान्तसारभाषा	¥6		जम्बूस्वामीचि	रंत्र १६६
	सिद्धित्रियस्तोत्र श्राचा ः	171		जातकसार	5 = 3
वयविमत्त		1=1		जिनसहस्रनामः	स्तोत्र ३१३
वर्षसमुख।	वैद्यमनोत्सव ३०४, ६	o \$,		रक्षाबंधनकथा	२३७
	' ६६४, ७६८, ४	68		स्वानुभवदर्ग ए।	१२=
मयमयुक्त!!	पद ४४४, ४	5 2	नाथूलाखदोसी	सुकुमालचरित्र	२०७
	मजनसंबह ४	ı	नानिगराम	दोहासंग्रह	474
नरपास —			निर्मल—	पद	५ व १
नरे ग्रं कीति—		(X	निहालचंद्यप्रवास	नयचक्रभावप्रकारि	शनी
	रत्नावलीवतों की तिथियों			टी	का १३४
±4	के नाम ६४	x a	मेमीचन्द	जकही	\$??
नंबसराम	युरुमोंकीवीनती ७०	*		तीमलोकपूजा	Aeá 411
	जिनपञ्चीसी ६५१, ६७	•		वी की सतीर्थं करों क	
	६७४, ६८३, ७२				दना ७७१
	नव ४४१, १३				441 68 2 440, 477
	प्रवह, प्रह्न, दृश्य, दृष्ट	•		प्रीर यंकर जीप ई	477, 477 99 8
					994

मस एवं नम्बद्धार	j				F
- श्वकाः, स्त् साम	प्रंथनाम श्रंथ	सूची की पत्र सं•	मंबक्तर का लाग	म थ साम	ं Mx मंग सूची की
	नेमीश्वरयीत	478	1		पंत्र सं•
	बुहरि	479	İ	जीवंधरचरित्र	१७१
	विमती	411		तत्यकोस्तु यं	7.
नें भी चंद्याह नी	चतुर्विश्वतितीर्थंकर	***		तस्वार्थसारमा	बा २३
				तरवसारमावा	28
	कू र्य के	805		इञ्चसंग्रहणाया	##
नेमीचंदबस्सी	तीनचौबीसीपूजा	Re 5		धर्मप्रदीपभाषा	11
मेमीवास-	सरस्वतीपूजा	४थ१		र्न दीश्वर मस्तिः	isti A&A
म्बामतसिंह	निर्वागमोदकनिर्ग्य	€x		नवसस्ववस्वित	F 3-2
. 4140146	पद	७१४		न्यायदीपिकाञ्चा	षा १३५
	भविष्दत्तदत्ततिलका-	-		पांडवपुर स् ख	2 No.
	सुन्दरीनाटक	₹१७		प्रशीत्तरभावक	
	पद	490			याचा ७०
पद्मभगत	कृ ष्ण्यक्षिमग्रीमंगल	२२१		मकामरस्तोत्रक	
वश्चकुमार	भातमशिक्षास ्या स	578		मकाम रस्तामक मक्तिपाठ	110.
पद्मतिलक—	पंद	Xes			446
पंदानदि	देवतास्तुति	888		मविष्यदत्त्वस्य	•
	पद	688		भूपाल वीबीसीब	Mt A£5
	परमान्मराजस्तवन	805		मरकतविसास	. 94
पदारांकराविः	नवकारसज्ञाय			योगसारमाया	484
पद्माकर	कविस	£\$5		ययोषरवरित्र	888
चौधरीपत्राक्षाक्षसंघी-		exe		रलकरण्डशावका	
	पाचारसारमा वा	AS		वसुनंदिश्रावकावा	रमाषा दर्
	बारावनासारमाया	86		विवापहारस्तीत्रभ	
	उत्तरपुरागुमाचा	\$.A.E		षट्गावस्यकविद्या	न ८७
	एकी भावस्तीच भावा	3=3		भावकप्रति क्रमसू त्र	त्यां दर्
	कस्यासामंबिरस्तोत्रमाव	ा वेसध्र ं		सङ्गवितावलीया	
	गौतमस्वामीचरित्र	5.6.5		समा विगरकृषाका	
	बम्बूस्वामीवरिव	146		सरस्यतीपुचा	***
	विनदसंबरित	\$40		विकिम्बरवोत्रका	

W 1				प्रेथ ।	श्वं प्रम्थकार
विश्वारका नाम व	विकास प्रथम् प	शीकी वसं०	मंबकार का नाम	र्मय नाम	प्रंथ सूची क पत्र सं
	सुमाषितावली माषा	ŧyy	प्रभुदास	परमात्मप्रकाश	भाषा ७६:
वसाबाबदनीवाते	पैक्कस्यास्त्रकपूजा	४०१	प्रसम्बंद—	धातमशिकास व	काय ६१
	विद्वज्जनबोधकमाया	= 4	फतेइचंद	पद १७६	, ५५०, ५५
	समवसरएपूजा	500	_		४६२, ४६
प्रावस्ताकतीयास-	बासपचपुराख	242	वंशी	न्हवरामंगल	991
परवानंद	वस ६०४,	990	वंशीदास	रोहिसीविधि	
गरिसस्त्र	श्रीपालवरित्र २०१,	€ 00	वंशीधर—	द्रव्यसंग्रहवाला	
पर्वतथर्मार्थी	द्रव्यसंग्रहभाषा	3 €			७६
	समाधितंत्रभ।षा	१२६	बस्रतराम	पद ५०	, x=€, ६६
पारसदासनिगोत्या—	श्चानसूर्योदयनाटकभाषा	120		मिथ्यात्वसंड न	७८३, ७६ <i>७</i>
	सारचौबीसी	***		बुद्धिविनास	v
पारसदास	पद	444	वस्तावरसाक्ष	चतुर्विद्यतितीः -	
पारवेदास	बारहसडी	₹ ₹₹		ज्ञानसूर्योदयना	• .
पुषयरत्न-	नेमिनायफायु	985	वधीचन्द	रामचन्द्रचरित्र	
पुरवक्षागर	साधुबंदनः	४५२	बनारसीदास	ग्रध्यात्मवसीर्स	-
पुरुषोत्तमगास—	बोहे	६८७		शासम्यान	· to
	पद	७६१		कर्मप्रकृतिविध	
पूर्ण्यो	पद	95X	l	350	, ६७७, ७ ४१
	मेषकुमारगीत ६६१,	७२२		कल्यासमंदिरस	तोत्रभाषा
	uze, uko,			1 =1	(, ४२ ६, ५ ६६
		४७७	ļ	48	६, ६०३, ६४१
	बीरजिएांदकीसंघावली पद	-	in the second	£&	=, ६५०, ६६१
वृत्कवेष	नव वैदरमीविवाह	£ £ \$		66:	₹, ६६ ४, ६७ ०
पेसराज पृथ्वीराजराठी ट -	वयरमा।वयाह कुट्युक्किमस्यिवेलि	३६४ ३६४		_	७०३, ७०३
Assidiaciois		998		कविस	७०६, ७७१
महाराजासवाईमतापर्सिह				विनसहस्रनामः	
Sale Anna Anna and and Hond	प्रमृतसागर	२६६		A A	986
	वंदकुंबरकीयात्त <u>ा</u>		1	नान प ञ्ची सी	६१४, ६२४

प्रंथकार का नाम	मंथनाम मंथसूची	की विश्वचार का नाम	ि ६२० प्रंथनाम प्रंथस्वीकी
	ज्ञानवावनी १०४, ६ तेरहकाठिया ४२६, ६	9४० वज्रदेव— 9४० वाबुलाल— ४२, वालचंद— १०६ विद्वारीदास—	पत्र संव पद ७६० विष्णुकुमारमुनिपूजा ६१% पद ६२% झारती ७७७ कविस ७७०
	४८०, ६१४, ६ ६२२, ६२३ ६. पादर्वनाथस्तुति ७ परमज्योतिस्तोतकाया ४४	२१ १७ २२ विद्वारीकाल—	पद ४६७ पद्यसंब्रह ७१० बंदनाजकडी ४४१, ७२७ सत्तसई ४७६, ६७१ ६६६, ७२७, ७६ <i>६</i>
	प्रमान्दस्तात्रभाषा प्रद् बनारसीविसास ६४ हिन्दे, ७० मोहबिवेक्युद्ध ७१४, ७६ मोसर्पेथी	£	इप्टब्रासी ६६१ खह्बाना १७ तत्वार्यबोध २१ वर्शनपाठ ४३१ पञ्चास्तिकासभावा ४१
r.	मासपथी द •, ७२ ७४ - सारदाव्यक समयसारनाटक १२३, ६०५ ६३६, ६४०, ६४५ ६ •, ६८३, ६८३		वद ४४४, ४४६, ५७६ ६४८, ६१३, ६१४ ७८१, ७९॥ वंदनाजकडी ४४९ बुमजनविलास ३३२ बुमजनसतसई ३३२, ३३३
	देवर, देश्य देश ७०२, ७१६, ७२० ७२१, ७३१, ७४१ प्रथम, ७६७ सामुबंदना ६४०, ६५२ ७१९		योगसारमाथा ११७ वटपाठ ४१६ संबोधपं बसिकामाथा १७० सरस्वतीपूजा ५१६ स्पुति ७१४ सामायिकपाठमाथा ६९
* -,	सिन्द्रप्रकरसा १४०, ७१० ७१२, ७४६		भाष्यवपुरासा १५०, ७४४ प्रस्तोत्तरभावकाचार ७० टंडासामीत ७२२, ७५०

मंथ एवं मन्धकार

•					
में बच्चार का नाम	मंथनाम प्रंथ	स्वीकी पत्रसंब	मंथकार का नाम	भंथ नाम अ	ध सूची की पत्र संब
	भुवनकी लिगीत	646	!	पद	Xev
मगवराम	पद	986		नेमीइवरकोरास	£ 3 a
मेथायगतीदास	स्राहारके ४६ दोष		भागचंद-	उ ।देशसिद्धान्तरर	
	वर्णन	20	alua!		ग माला ५१
	श्रकृत्रिम बैत्यालय			ज्ञानसूर्योदयनाटव	
	जयमाल ६।	१४, ७२०		नेमिनाथपुरास	
	चेतनकर्मवरित्र	980		प्रमाखपरीक्षाभाव	
		०५, ६८६			।। १२७ ४४६, ५७०
	धनित्य एक बीसी	६८६		-	
	निर्वासकाण्डभाषा	335		श्रावकाचारभाषा सम्मेदशिखरपूजा	£ ?
	¥38, 48	र, ४६४,	भागीरथ	सम्बद्धाः सरपूजाः मोनागिरपञ्चीसी	1 X 0
	१७०, ६१	८०, ४६६			
	. 400, 40	×, ६१४	भानुकीर्दि—	जीवकायासज्भाय	\$18
	६२०, ६१	17, ६५१			द४, ६१ <u>४</u>
	447, 60	¥, ७२०		रविग्रनकथा	७४०
	इ ह्मविलास	333	थारामल्ल	वर्म स्ववीसी	७६९
	बारहभावना	090		वास्दलचरित्र	१६८
	वै राग्यपच्चीसी	€=¥		दर्शनकथा	+ 70
	श्रीपालजीकीस्तुर्ति	£X3		दानकथा	२२=
	सप्तमंगीवासी	Ęcc		मुक्तावनिकथा	430
भगौतीदास—	बोरजिसंदगीत	४६६		रात्रिभोजनकवा	२३६
भगवानशास	धा. शांतिसागरपूजा	866		शीलकथा	२४७
		७८६		सप्तव्यसनकथा	२५०
भगोसाह	पद	४८१ 🔻	विमक्षि	लव्धिविधानश्रीपई	७७२
मद्रसेन	चन्दनमलयागिरी	२२३ जु	(बनकीश्चि	नेमिराजुलगीत	E E M
थाङ	भादित्यवारकथा	भु	नसभूषण	प्रमातिकस्तुति	533
	(रविव्रतकया) २३७	888	•	एकी भावस्ती त्रभाषा	242 242
	६०१, ६८४,	1		¥38, ¥¥=	
	७४४, ७४६,	७६२		₹ ६ २, ७१ ६	
				464, 654	, 440

44 44 44 44 44 44 44 44 44 44 44 44 44	,				, -,-
धंधकार का नाम	मंथ नाम	श्रंथ सूचीकी पत्र संब	। पंचकार का नाम ।	मं य नाम	मंथ सूचीकी पत्र सं≎
भूधरदास—	कवित्त	990	,	बारहमावना	११४
•	ग्रुरुमोंकीवीन	ाती ४४७	, [वधानाभिषक	वस्तिकी
	-	१४, ६४२, ६६३			भावना ८५
	वर्वासमाधाः	₹ १ ५, ६०६	. 1		४४ =, ७३६
		£46	1	विनती	487, 443
	वतुविशतिस्र	ोत्र ४२६			FEY
	जकडी	६४०, ७१६		स्तुति	480
	अनदर्शन	६०४		पुरुषार्थ सिद्धाय	
	जैनदातक	३२७, ४२६	मृथरमिश्र	•	्याच निका ६६
	٩x	7, 400, 456	20-		
	\$ 8	न, ७०६, ७१०	भेतीराम	पद	7 <i>00</i>
	७१	३, ७१६, ७३२	भैरवदास	वचक्यासक्ष	
	दशलक्षरगुरूज	१ ५६२	भोगीलाल	बृहद् षंटाकर्ण व	
	नरकदुखवर्गान	६५, ७८८	मंगलचंद	नन्दीश्वरद्वीपपू	जा ४६३
	नेमीश्वरकी तु	ति ६५०	ĺ	पदसंग्रह	880
		000	मकरंदपद्मावतिपुरवाल-	– षट्संहननदर्शन	7 ===
	पंचमेरुपूजः	४०५, ४६६	मक्खनलाख	ग्र क्लं कनाटक	784
	_	७०४, ७४६	मजलसराय	जैनबद्रीदेशकी प	की ५८१
	पार्श्वपुराग्	\$08. 088	मतिकुसक	चन्द्रलेहारास	998
		७६१	सतिशेखर	ज्ञानवावनी	998
	९ ह गर्थसि द्वच	पाय	मतिसागर—	वालिभद्रचीपई	१६८, ७२६
		भाषा ६८	मशुरादासम्यास	नीलावतीमाचा	₹€#
	पद ४४४	, ४००, १८६	मनरंगलाल-	प्रकृषिमचैत्याल	व्युजा ४५४
	¥€•	. 48x, 470		चतुर्विशति कीर्यः	 इरपुषा ४७३
	5 74,	464, 4X4		निर्वासपुरवापाठ	-
	. 444,	904, 900	मन्द्रथ—	वितामस्त्रिजीकी -	
	७८४,	७८६, ७६६			£44
	व देसपरीयहर्वरी		मवराम	पक्षरपुरामाला	wyż
*		40%			
				पुग्राक्षरमाना	97 o

में बार की साम कामा र हरे 100	भंग सम	मंग्रस्ची व पत्रसं		प्रंथनाम भ	थ सूची की पत्र सं०
F\$> tyre,	. पद ६	६ ०, ७२३, ७२	¥	वद ४४७,	¥¥=, ७६=
19.561.55	90	₹¥, ७ ६ €, ७७	Ę	समाधितंत्रभाषा	१२४
मनसाराम—	पद	६६३, ६६ .	*	साघुवंदना	YX ?
मनसुबद्धांच—	सम्मेदशिक्षरः	-	1	हुण्डावसपिरगीकार	
मनहरदेव-	भादिनायपूज	T 48	,	दो व	र्गान ६=
मंत्रीलालखिन्द्का	चारित्रसारम	तवा ५१	६ मानकवि—	मानवावनी	३३४, ६०१
· ;	पद्मनंदिप वर्षी		1	विनतीत्रीपडकी	७द१
	प्रयुक्तचरित्र		,	संयोगवत्तीसी	६१३
मनासाह—	मानकी बडी बा		यानसागर—	कठियारकानडरीच	पई २१=
नवाताव	मानकीलघुवा		। मानासह	म्रारत ⁹	७७७
मनोहर—	-	यनाः ५२५ ४, ७६३, ७६४	1	पद	७७७
4416(14	र, ७५२, ७५४ ७=४,७=६		भ्रमरगीन मानविनोद	७४०
	~ .				300
मनोहरदास-	ज्ञानिवतामिए	१८, ७१४	मारू—	पहेलियां	६४१
		३६०	मिहरचंद—	सज्जनचित्रक्रसभ	३३७
	ज्ञानपदवी	७१८	मुकन्द्दाम	पद	460
	ज्ञानपैडी	७४७	मेह्नन्दन	ग्रजितशांतिस्तवन	६१६
	धर्मपरोक्षा	३५७, ७१६	मेह्सुन्द्रगणि-	शीलोपदेशमाला	38 0
मजूकचंर—	पद	¥¥Ę	मेला	पद	७७६
मल्कदास	पद	£3 0	मेलीराम	कत्याग्रमंदिरस्तोत्र	9= {
महमत	वैराग्यगीत	¥84	महेशकवि	हमीररासी	3 50
महाचन्द्-	लयुस्वयंभूस्तोत्र		मोतीराम—	पद	488
	षट्ग्रावश्यक	50	मोहन	कवित्त	७७२
	सामायिकपाठ	358	मोहनमिश्र—	लीलावतीभाषा	340
महीचन्द्रसृरि	पद		मोहनविजय	चन्दनाचरित्र	930
महेन्द्रकीचि	जकडी			मानतु ममानवतिचीपा	966
	पद	६२० ७=६	रंगविजय	मादीश्वरगीत -	
मास्रनकवि	पिंगलछंदशास्त्र	- 1		जपदेशस म्माय	७७१
माणकचंद	तेरहपंचपच्चीसी	₹0 ₹	गिवनयगिया—	मंगलकलश महामुनि	
· -	V	88¢		चतुष्पदी	tex

ŗì

भैवकार का नाम	प्रवास अंथ सृ	्बीकी. सत्र संश	मिंथकार का नाम 	शंयनाम प्रंथसू चीकी पत्रसं∙
रहवू	वारहभावना	888		चतुर्विशतिती <i>र्वेवरपूजा</i>
रचुराम	सभासारनाटक	₹ ₹ €		४७२, ६१६, ७२७,
रखजीतदास	स्वरोदय	XXF		७२१, ७७२
रत्नकी चि	नेमीदवरकाहिण्डोलना	७२२	l	पर ४८१, ६६८, ६८६
	ने मीक्वररास	६३८		पूजासंबद ५२०
•		७२२		प्रतिमासान्तचतुर्दशी
रतनचंद	वौबीमीविनती	£x£		वतोद्यापन ५२०
	देवकी की डाल	840		पुरुपस्त्रीसंवाद ७८६
रत्नमुक्ति	ने मीराजम तीरास	६१७		बारहसडी ७१५
रत्नभूषण	जिनचैत्यालय जयमाल	45 8		शांतिनायपूजा ५४५
रल्हकवि	जिनदत्तवी रई	६८२		शिखरविलास ६६३
रसिकराय	नेहलीला	433		सम्मेदशिखर्यू गा ५५०
राजमल	तस्वार्थमूत्रटीका	şo		सोताचरित्र २०६, ७२५
राजसमुद्र	कर्मबत्तीसी	६१७		७५६
	जीवकायासज्भाग	६१९		मुपादर्वनायपूजा ४५५
	धत्रुङ नयभास	387	ऋषिरासचन्द्र	उपदेशसज्भाय ३६०
	ष त्रुञ् जयस्तवन	987		कल्यासमिदिरस्तात्र भाषा
	सोलहसतियोकेनाम	313		36%
राजसिंह	पद	४८७		नेमिनायरास ३६२ रामविनोद ३०२
राजपुन्दर	हादशमाना ७४	1, 901	रामचन्द्र— रामदास—	• •
	सुन्दरशृ'गार ६८।	, ७२६	(Md)4	वद ४८३, ४८६ ६६३, ६६७, ७७२
रांबाराम	पद	४६०	रामभगत	पद ५६२
राम	पद	\$X \$	विश्वरामराय	बृहद् चारिएक्यनीति
	रत्नपरीका	**		वास्त्रभावा ३३६
रासकृष्या	नकडी	84=	रामविनोद	रामविनोवभाषा ६४०
	पद	44 4	प्र० शायसंस्या	ब्रादित्यवारकया ७१२
रामचंद्र	पादिनाथपू जा	444		वितामिण्जयमाल ६५५
	र्वंद्रप्रस जिनपूजा	YUY		विवालीसठाणा ७६४

ARR I				मंग	व एव प्रम्थकार
ए यक् गर का नाम प्र	थं नाम	पंथ सूचीकी पत्रसं०	प्रथकार का नाम	धंथ नाम	श्रंथ सूचीकी पत्र सं•
	जम्बूस्वामीचरि	শে ৩१০	}	पंचमंगल ४	०१, ४२८, ४४७
	 निदींषसप्तमी	त्या ६७६		X 5	१८, ४६४, ५७०
	नेमीश्वरफाग	३६३, ६०१		\$?	४, ६४२, ६६०
	. ६२१	, ६३८, ७४२		६४	a, 448, 444,
-	पंचग्र रकी जयम	ाल ७६३		६७	३, ७०४, ७०५
r	त्रखुम्भरःस	\$ \$ \$ \$ \$ \$			७१४, ७२०
	७१३	१, ७३७, ७४६		र्व चकल्याराव	পুজা ২০০
	भक्ताम स्रतोत्रह	[ति ४०⊏		दोहाशतक	७४०, ७४३
;	भविष्यदत्तरास	३६४, ४६४		पद ४	= 4, 450, 455
	Ę¥	=, ७४०, ७५१	1	Ę:	२४, ६६१, ७२४
	७४	२, ७७३, ७७५		91	re, ७५४, ७६३
•	राजाचन्द्रगुप्तव	िचौपई ६२०			७६४, ७८३
	शीलरास	340		परमार्थगोत	७६४
	श्रीपालरास	६३८		परमार्थदोहा	9•€
		६६४, ७१२		परमार्थहिडो	नना ७६४
		७१७, ७४६		लघुमंगल	६२४, ७१६
	सुदर्गनरास	३९६, ६३६		विनती	४३०
		७१२, ७४६		समवसरण्यू	ना ५४६
	हनुमच्चरित्र	२१६, ४६४	पांडे रूपचंद— 🗸	तत्वार्धसूत्रम	षाटीका ६४०
	४६६	, ७१७, ७३४	रूपदीप	विगलभ पा	906
		७४०, ७५२	रेखराज	पद	9€=
		७४४, ७६२	लद्मग् —	चन्दकथा	ake
सावमीभाईरायमल्ज	ज्ञ (नानन्दश्रावन	ត	लद्मीवल्लभ	नवतस्वप्रकरस	e
	याः	τ χς	लदमीसागर	पद	६ ८२
रूपचंद	मध्यात्मदोहा	७४६	लिधिविमलगर्गा	ज्ञानार्शवटीव	ाभाषा १०८
,	जकडी	६५०, ७५२	पं० साम्रो—	पारवंना थवी	
		६६१, ७४४	नान	पद	****, \$ 55
•	जिनस्तुत <u>ि</u>	७•२	लालचन्द्	पारती	***, 44E 477

,

मंथ एवं मंथकार ी				ſ	484 §
गंथकारकानाम म	धनाम प्रंथस् प	रीकी प्रसं०	प्रंथकारकानाम प	धिनाम प्रथ	सूची की पत्र सं•
•	विन्तामशिपादर्वनाथ			पार्क्वजिनपूजा	४०७
	स्तवन	6 \$ 9		पूजाव्टक	128
	धर्मबुद्धियौपई	२२६		वट्लेश्याबेलि	366
	नेमिनायमंगल ६०५,	७२२	बल्सभ	रूकिमसीविवाह	959
	नेमीश्वरका ब्याहला	448	वाजिद	वाजिदकेभडिल्ल	६७३
	पद ४८२, ४८३	१६७	वादिचन्द्र	धा वित्यवारकथा	Ęo b
	पूजासंग्रह	७७७	विचित्रदेव	मोरपिच्छवारीके	
पांडे सामर्थंय	षट् कर्मी रदेश रत्नमा ला	44		कविस	\$ 0.3
	सम्मेदशिखरमहासम्य	٤٦	विजयकीर्त्त	द्यमन्तवतपुजा	880
ऋषि सासचद—	ग्र ठारहमा तेकीक्या	283		जम्बूस्वामीचरित्र	278
•	मरुदेवीस ज्ञा स्	840			E0, 152
	महाबीरजी बौढोल्या	¥ሂo		५८३, ४	<¥, 151
	विजयकुमारसञ्मा व	¥ሂo		५८६, ५	50, X5E
	शान्तिनाथस्तवन	¥\$0		धेरि ।कच रित्र	२०४
	शीतलनाथस्तवन	8 X X	विजयदेवस्रारि-	नेमिनायरास	242
लाखजीत	तेरहडी ग्रुजा	¥5¥		बीलरास	44, 486
अधावाल	जिनवरवतजयमाला	\$4x	विजयमानस्रि-	र्थे यांसस्तवन	***
मासवर्द्ध न	पाण्डबचरित्र	१७८	विद्याभूषस्—	गीत	Ę o to
मद्यावालसागर	शमोकारखंद	5=3	विनयकीचि	श ब्दाह्मिकान्नतकथ	1 588
स्त्रकारस्त्राम् स्राक्रस्यकासतीयाज		Ağı.	1444		950, VEY
Marka seconson	देवकीकीडाल	35.4	विनयचंद	केवलज्ञानसञ्काय	1=1
		• • • •	•		
साहसोहट	धठारहनातेकीकया		विनोदीसाससासचंद-		\$00
	(बीढाल्या)	493		-	tou, foe
	७२३, ७७४, ७८०			चौरासी आ तिका	
	द्वादशानुप्रेक्षा	७६१		जयम	
	पादर्वनायकी <u>यु</u> रामाला	400		नेमिनायकेनवर्गग	a AA.
	पः हर्व नाय जयमाल	485		₹=Ł,	७ २०, ७३ ४
		9= ?	1	नेमिनायकाबारह	ासा ७१३

				•	
प्रविकीर की नीम	वैये माम वैये	सूची की पत्र संब		प्रंथ नाम	प्रंथ सूची की पत्र सं०
	पुजाष्टक	999	वृजलाल	बारहभावना	६ = ५
	••	५६०, ६२३	1	वृत्दस तसई	396
		953, UE	1 *	Ęs	४, ७४१, ७६५
	भक्तामरस्तोत्रकथ		1	कवित्त	६ =२
•	सम्यक्तवकौमुदीकथ	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	1	चतुर्विशतितीः	वैवरवृजा ४७१
	राजुलपच्चीसी	*	1	छंदशतक	३२७
	-	२२, ६४३	T .	तीस चौबीसीपू	
		प्रश्, ६८४	1	पद	₹ २ ४, ६ ४३
		४७, ७५३		प्रवचनसारभार	
विमक्षकी चि —	बाहुबलीसञ्भाय	388	1.		
विमलेन्द्रकीर्त्त	श्राराधनाप्रतिबोधस	तर ६५=	शंकराचार्य-	मुहू र् नमुक्तावलि	-
	जिनचौबीसी भवान्त	₹	शांतिकुशल—	ग्रञ्जनारास	340
	₹1	स ५७८	व० शांतिदास	प्रनन्तनाय ्रजा	६६०, ७९४
विसर्वावनयगणि	ग्रनाथीसाधचौढा लि	या ६८०	_	ब्रादिनाथपूजा	७६५
	ब र्हन्नकचौढालियार्ग	त ४३४	शालिभद्र	बुद्धिरास	4 ? 10
विशाश्वकीत्ति	धर्मपरीक्षाभाषा	¥\$ø	शिखरचंद—	तत्वार्थमूत्रभाष	0 🖡 1
बिश्वभूषण्—	बप्टकपूजा	900	शिरोमणिदास	धर्मसार	₹ ३ , ६६€
	नेमिजोकीमंगल	४६७	ऋषिशिव	नेमिस्तवन	¥00
	नेमिजीकीलहुरि ७४	ŧ. ७७5	शिवजीनाल	वर्वासार	24
	-	४, ६६=		दर्शनसारभाषा	१ ३ ३
	पार्खनाथचरित्र	४६०		प्रतिष्ठासार	***
	विनती	438	शिवनिधानगणि	संग्रहसीबालावर	
	हेमफारी	\$30	शिवलाल	कवित्तचगलकोर	
विंश्वासित्र	रामकवच	460	शिवसुन्दर	का परा जुगलाका र पद	
विसनदास	पद	1	शुभवन्त्र		øX.
वीरचंद	जिनान्तर	६२७	244.7	घष्टा ह्नुकागीत	4=4
• • •	संबोधसतास्य	- 1		मारती	७७६
वेणीदास [ब॰ वेलु]	समायनताराषु पांचपरवीव्रतकीकथा	355		क्षेत्रपालगीत	653
	ग नगरनाश्रतकाक्ष र्या	\$ 9.8		पद	७०२, ७२४
		६५४			999

j

मंथकार का नाम	प्रंथ नाम ।	गंथ सूचीकी पत्र सं०	भंथकार का नाम	मंथ नाम	शंथ सूर्च पत्र	ो की । सं•
	शिवादेवी माता	कोमाठवों ७२४		शकलं काष्ट	क्सावा	30₹
शोभाषम्य	क्षेत्रपालभैरवर्ग	ার ৩৩৩		ऋषिमंडर	ापूजा	७२६
	पद	४८३, ७७७		तस्वार्यसूर	भाषा	35
श्यामदास	तीस नौ बोसी	७१५		दशलशए	धर्मवर्गम	¥ε
	पर	७६४		नित्यनिय	ापूजा	784
	द्यामब सीसी	७६९		न्यायदीपि	कामाषा	१ ३४
रयामसिश्र	रागमाला	७७१		भगवतीम	राषनाभाषा	90
श्रीपाल	त्रिषष्ठिशलाकाः	द्वंद ६७०		मृत्युमहोत	वभाषा	255
	पद	 490		रत्नकरण्ड	श्रावकाचार	= 2
श्रीभूषण	धनन्तचतुर्द शी	पूजा ४५६		षोडशका	रसभावना =	۳, ६ ۹
-	पद	४८३	सबलसिंह	पद		£58
श्रीराम	पद	५६०	सभाचन्द	बुहरि		65 8
श्रीवर्द्ध न	नु णस्थानगीत	७६३	सवाईराम	पद		X6 0
मुनिश्रीसार	स्वार्थबीसी	3\$7	समयराज-	पार्श्वनाथ		६६७
संतदास	पद	ξ¥Y	समयपुन्दर		निसञ्काय	६१ =
संवराम—	कविस	६६२		भरहनास		६१ =
संवताल	सिद्धवक्रपूजा	XXX		भादिना		484
संवीदास—	पद	७४६		कर्मछली		486
संतोषकवि	विषहरणविधि	101		कुशलग्रुर		300
मुनिसक्सकीर्त्त	माराधनाप्रतिक	ोधसार ६८४		क्षमाञ्चल	^{श्ला} र्वनाबस्तवन	६१७
	कर्मपूरवतवेरि	१ ५६२		disidi.	वनायस्तवन	६१७ ६१६
	पद	४८६		गौतमप्र	35 1	317
	<u> पार्वनायाष्ट्र</u>	<i>७७७</i>			न्त्रः शमीसरुकाय	415
	मुक्ताव लिगी	. १ =६			मीबृहद्स्तवन	300
	सोसहकारक	रास ५६४	1 '		नास्तवन	\$20
		६३६, ७ ८१			नारतपन शीससंबाद	450
सदासागर—	पद	ইল০			र्वायसम्बद्धाः विसम्बद्धाः	£\$=
सदामुखकासदीवास-					नावत्त्रकाथ इस्तद <i>न</i>	
सर्धिकाशकासक। यात		•	J	4441	≀रराष ण	456

ESE				ग्रंथ एवं	पन्धकार
र्भथकारका नाम	र्मथनाम प्रंथ	सूची की पत्रसंद		संघताम शंध	सूची क पत्र संब
	पद ५७	e, 15	सुमानंद—	पंच सेरुपूजा	7.03
	ሂሩ	e, 1900	सुगनचंद	 चतुर्विशतितीर्थंकर	
	पद्मावतीरानीमाराघन	स ६१७		पूजा	* Yu3
	पद्मावतीस्तोत्र	\$ 52	सुन्दर-	कपडामाला का दूहा	
	पाहर्वनाथस्तवन	६१७		नायिकालक्षरा	uy?
	पुण्यखतीसी	317		पद	७२४
	फल वधी पारुर्वना धस् तव	न ६१६		सहेलीगीत	9 \$ ¥
	बाहुबलिसज्भाय	387	सुन्दरगीग् —	जिनदत्तसूरिगीत	₹ १ =
•	बीसवि रहमानजकडी	६१७	सुन्दरदास-।	कवित्त	Ę¥\$
	महाबीरस्तवन	ソテシ		पद	७१०
	मेघकुमारसज्ञाय	६१=		सुन्दरविलास	WYX.
	मौनएकादशीस्तवन	६२०		सुन्दरश्र [ं] गार	७६=
	रागपुरस्तवन	488	धुन्दरदास-II	सिन्दूरप्रकरसभाषा	₹४0
	बलदेवमहामुनिसन्भाय	317	सुन्दरभूषण	पद	४८७
	विनती	७३२	सुमतिकीर्त्ति	क्षेत्रपालपूजा	F30
	शत्रुञ्जयतीर्थरास ६१	o, 190 o	1	" जिनस्तुति	७६३
	श्री राकराजासञ्काय	₹१€	सुमतिमागः।—	दशनक्षरावृत्तीसापन	53 c
	सङ्भाय	६१८			98 X
सहसकीत्तं	मादीश्वररेखता	६६२		वतजयमाला	98X
साईदास	पद	६२०	सुरेन्द्रकीर्त्त—	मादित्यवारकयामापा	
साधुकीत्ति—		, ७६०	_	जैनवद्रीमूडबद्रोकीयात्र <u>।</u>	000
	जिनकुशलकीस्तुत <u>ि</u>	995		पद	
सात्रम	मात्मशिक्षास ज्माय	488		सम्मेदशिखरपूजा	६२२ ४४०
साहकीरत	पद	७७७	सुरचंद	समाधिमरसाभाषा	**•
साहिबराम	पद ४४५	, ७६=	स्रदास—	पद	
युखदेव	पद	१५०			ée.
सुबराय	कविस	000	स्रजभानश्रोसवात		, ७€३
सुबवाल	कविल	६५६	स्रजमळ-	परमात्मत्रकाशभाषा पद	111

श्रंथकार का नाम		्चीकी ∣ पत्र सं∘∤	मंथकार का नाम	मंथ नाम	यंथ सूचीकी पत्रसं∙
कविसूरत—	द्वादशानु प्रेक्षा	nes		निर्वागुक्षेत्र	गंडलपूजा ४६⊄
	बारहसकी ६६, ३३	२, ७१५		पंचकुमारपू	লা ৬২૬
		955		पूजापाठसंब	ह ५११
सेवगराम	मनन्तनाथ पूजा	४१६		मदनपराज्य	1 ₹ £
	धादिनायपुत्रा	₹७¥		महाबीरस्तो	त्र ५११
	कवित्त	१७७		बृहद् गुरावल	गिशांतिमं डल
	जिनगुरापच्चीसी	***		(भौसठऋदिपूज	T) ४७६, ५११
	जिनयशमंगल	***		सिद्धक्षेत्रोंकी	पूजा १५३, ७८६
	पद ४४७, ७६	230,3		सुग न्धदश मी	पूजा ५११
	निर्वाशकाण्ड	955	इंसराज	विश्वतिपत्र	şur
	नेमिनाथकोभावना	4 08	हठमलदास	पद	६२४
सेबारामपाटनी —	मस्त्रिनाथपुरास्	१४२	हरसचंद	पद	१८३, १८४
सेवारामसाह—	धनन्तवतपूजा	***	1		ध्दध्
	चतुर्विद्यतितीर्थंकरपूज	1 400	हरचंद्श्रमवाल	सुकुमालच	रेत २०७
	धर्मीपदेशसंग्रह	٤¥		पंचकल्यास	क्पाठ ४००
सोम	चितामग्गिपादर्वना य				७६६
	जयमाल	७६२	हर्गु वाब	सज्जनवित	बल्लभ ३३७
सोमदेवसूरि	देवराजवच्छराजयौग	ई २२=	हर्षकवि	चंद्रहंसकय	१ ७१४
सोमसेन	पंचक्षेत्रपालपूजा	७६५	1	पद	34%
स्यौत्रीरामसौगायी	. ल म्नचं द्रिका	७५१	हर्षकीर्च-	जिस्मिक्त	¥ξα
स्वरुपचंद		354.5		तीर्यं करवन	नदी ६२२
	धमत्कारजिनेश्वरपू ज	T 488	1	पद	५८६, ५८७
		#3	1		थ==, थ ६०, ६२१
	जयपुरनगरसंबंधी				£78, £48, 608
	बै त्यालयोंकी बंदन	Y Y	1		470, 453, UEX
		222		पंचमगतिः	
	जिनसहस्रनामपूजा	¥4.			448, 44 4, 44 0
	विसोकसारबीपई	177			478
		•••	1		

विषकार का नाम	<u> </u>	् मय एवं मम्भकार
ं नेकार अप समित	प्रधानाम प्रधासूचीकी प्रथमारकाः पत्रसंक	
	पार्खनायपूजा ६६३	पत्र सं० विनती ६६३
	बीसतीर्यंकरों की जकडी	777
	<i>i</i> = \ \	स्तुति ७७६
	-0-0	सागरदत्तचरित्र २०४
		वद ४४७, ४८१
		पूजासंब्रह ५१६
*	षट्नेक्याबेलि ७७५ हीरानंद	पंचास्तिकायभाषा ४१
हर्षचन्द—	सुस्रवडी ७४६ हीरालाल	बन्द्रप्रमपुरासा १४६
६० चन्द्— हर्षसूरि	वद ४=४, ६२० हेमराज	गिंगातसार ३६७
	श्रवंतिपार्श्वजिनस्तवन ३७१	->
पांडेहरिकृष्ण	मनन्तचतुर्दशीव्रत	
	कया ७१६	द्रव्यसंग्रहभाषा ७३३
	माकाशपंचमीकया ७१४	पंचास्तिकायभाषा ४१
	निर्दोषसप्तमीकया ७६४	पद ५६०
	निशस्याष्ट्रमीकया ७१५	प्रवचनसारभाषा ११३
६रिचरख दास	कविवल्लभ ६८८	नयचक्रभाषा १३४
	बिहारीसतसईटीका ६८७	बावनी ६५७
इरीदास—		भक्तामरस्तोत्रमाया ४१०
		४१६, ६४८, ६६१
हरिश्चन्द्		909, 998
€रिसिंह—	पद ६४६	area-Arrana
614146	वव ४६२, ४६४, ६२०	
	4x4, 4xx, 488	मुगम्बदशमीक्या २५४
	७७२, ७७६, ७६६ सुनिद्देमसिद्ध —	७६४
	ं उत्तर्भासद्ध-	धादिनाषगीत ४३ ६



धर्मावर	4, 127, 180, XET, XET (बरह्मपुरत	§ ?•
(इक्ट्यर)	६८१, ७६७, ७७३	चित्रंग दमोडीयै	482
धजेपालपंचार	યદર	स नसास	Yet
धराहलग्रवास	યદર	जग तसिंह	₹७०, १ ८१, ३६१, ७७ €
धर्मग्रासत् वर	KET	जनपाल	(0°, (°, (°, (°, 00°)
झरविंद	1 \$ \$	जयसिंह (सवाई)	¥₹, ७१, १३, ६६, १२ ०
ध लाउद्दीन	३४६, २४६		१२८, २०४, ३०४, ४८२
(ग्रलावदीन)			४१४, ४२०, ४६१
यसावस रा	140	जयसिंहदेव	१४१, १७६
मतावहीनलोदी सत्तावहीनलोदी	**	असंगीर	वर, रक्ष
बहमदशाह	71E, 1E 1	जैत सी	*E ?
बालभ	रप्रश	जैसिह (सिषराव)	***
धौर गुजेब	६७, ४७८, ४१४, ६६६	जोधावत	361
क्षौरंगसाहि पातसाहि	३१, ३६, ४६२	जीवे	468
प्रा जीत	fyv	डोडरम ल	490
इताहीमलोबी -	१४ २	हूं गरेन्द्र	\$4\$
इब्राहीम (सुलितान)	tax	तैतको	***
ईस रीसिंह	775	देवडो	463
देव वरसिंह	438	नाहरराव (पवार)	48 \$
बबर्यातह	२०६, २४१, ४६१, ४६२	नी रंगजीब	३०१
उनेसिंह	२१६	नौरंन	YYE
कियनसिंह	484	पूरशमञ्ज	ter
कीत्तिसिंह	248	वेरीजासह	95
कुशलसिंह	. ¥¢	वृथ्वीराव	ŧ.u
केवरीसिंह	tyo	पूर्वासिंह	03, 244, 545, 080
वितरी	\$6.	प्रतापसिं ह	२७, १४६, १८६ ४९७, ४६१
गवासुदीन	¥3	फ्लेसिंह	44.
गजुदीहबहादुर	१ २ १	क्स्ताव दसिंह	790
ब ढसीराय	१७ २	बहुलोसवास्	45

430]			[शासकों की नामावलि
वाबर्	- ' (8)	रामस्यंच	224
बी कें	x e ?	रायचद	¥¥
दुव सिंह	५, २००	रायमल्ल	1=1
वगर्वतसिंह	३४	रायसिह	२४६, ३२०
माटीजेसे	१४१, १८८	लालाह	४ २२
बारामल	*68	लिखम ग् रस्यंच	२२६
भावसिंह	७१	वमुदेव	36Y
भावसिंह (हाडा)	3.5	विक्रमसाहि	५६७
भोज	192	विक्रमादित्य	२४१, २५३, ६१२
मोजदेश	₹¥	विजयसिंह विमलमंत्रीक्वर	२६३
मकरधुक	368	विश्वनसिंह	46 2
मदन		विशेष	२ = ३ ५६१
नहमदक्षां	१०	वीरनारायम् (राजाभोजकापुत्र)	xe;
महमदसाह	१ ५६	वीरमदे	483
महमूदसाहि	? 55	वीरवल	\$ # \$
महाशेरसांन	×э	शक्तिसिंह	3 0
माधोसिंह	१०४, १६२, ५४१, ६३६	शाहजहां	६०२, ६६=
माधवसिंह	६३८	श्रीपाल	3x
मानसिंह	वे४, १४६, १८४, १८६	श्रीमालवे	** *Eo
	१६२, १६६, ३१३	श्रीराव	१६० ४६४
- >	Y98, Y50	श्रेरिएक	363
मालदे	१६१, ४६२	सलेमसाह	७७, २०६, २१२ *
मूलराज	१३२	सोबलदास	ţsy
मोहम्मदराज		सिकन्दर	१४१
र साधीरसिंह राजसिंह		सूर्यसेन	¥, {E¥
•		सूर्यमञ्ज	339
राजामञ्ज		संग्रामसिंह	264
रामचन्द्र रामसिंह	00, 710	सोन डा रै	151
6	1 1121 (00) (04)	हमीर	३७८, ४११, ६०१
	६१०, ६११	لخف	

🗡 ग्राम एवं नगरों की नामावलि 🛨

	-		
षंजनगीई	9 96	. भागरा	123 2-4 New Hea
र्णवावतीगढ (ग्रामेर)	¥, ₹¥, ¥0, ७१, १२a	1	१२३, २०१, २४४, ४ ६१ १८४, ७४६, ७४१, ७७१
	253, 240, 265, YX	भाभानेरी	
मनवरानगर	Y 98	1	. ७४० . ११, ७१, १३ ,१७ ,११
भक्त राबाद	٤. ३६१		१३२, १३३, १७२, १ ०४,
सकत्वरपुर	24.0		
भकीर	986		१८८, १६०, २३३, २६४
भ जमेर	२१६, ३२१, ३४७, ३७३	1	\$\$0, \$\$¥, \$\$X, ¥\$\$
	४६६, ४०४, ४६२, ७२६	I .	४६२, ६=३, ७५१
प टोशिनगर	t 2	1	१ १ १
श्रसाहिलपत्तन (ग्रसाहिल्ल गट		410.1-14	२०१
पमरसर	, (5%) 4%(\$10	भावर (भामेर) भाभम नगर	१ =१
श मरावती	Y50	इन्दौर (तुकोगंज)	₹ १
धवंती	६६, २७१, ३१७	, ,	XXa
भर्ष लपुरदुर्ग (मागरा)	२०६, ३४ <u>६</u>	इन्ब्रपुरी	३५व, ३६३
बराह्ययपुर	to	1	. \$X+
पलकापू री	•	इंदोसली	३७६
<i>प</i> लवर	४३४ २४, ५६७	ईंडर	<i>७७</i> इ
प्रसावपुर (प्रस्तवर)	, ., . ¿¿y	ईसरदा	२७, ३०, ४०३
मलीगढ (ड. प्र)	३°, ४३७	उग्रियाबास उज्जैन	37.6
मब न्तिकापुरी	45, 84 6 880		१२१, ६=३
महमदाबाद	२३३, ३०४, ४६१	उज्जैसी (उज्जैन)	46१
	1	उदम पुर	३६, १७१, १६६, २४२
बहिपुर (नागीर)	१६२, ७५३	_	२€₹, ५९१
र्वाची	न्ह, २४१	एकोहमा नगर	YXY
विवती	₹७२	एलिकपुर	रेष्र
वां महानगर	३७२	भीरंगाबाद	७०, ४६२, ६१७
विर (अभिर)	i	कं क् एसाट	180
13. 1 4145)	१०७	क्छोबिदा	*85

₹ 5 5 }		l	माम एवं नगरों की नामाविक
नटक	4.5	(४ के रल	16
क्र ातेवपुर	35	१ केरवाग्राम	91
अ शाउ	3.6	७ कैंसोश	ta
कडीयाम	te	वे कोटपुतली	u y
कतारा (जिला)	२	२ कीटा	६४, २२७, ४४
बर् खाटक	₹s	६ कोरटा	40, 110, 82
Prior	35	৬ কীহাৰী	¥
करौली े	\$ 0 Y	कृष्यगढ	₹=३, २२१, २६ ८, ३१ ६
-	१ ५ १	कृष्णद्रह (कालाबेहरा)	720
बह मबल्लीपुर	34		£c.
कलिंग	98	व ीली	\$ 3 s
कड़रीग्राम	२४६	. बिराइदेश	१र७
कासोता	३७२	सेटक	57.6
कानपुरकेट	\$\$ X	गंधार	\$ X X
कामा यम्	१२ •	गऊड	12. 18.
कारंग	२०४	गढकोटा	६३८
कालस	= ?	गानीकाथाना	
कांबाडेरा (कालाडेहरा)	४४, २१०	गिरनार	0{8
	३०६, ३७२	गिरपोर	\$19 •
किरात	360	ग्रीवापुर	149
निवानगढ	४४, २५३, ५६२	गुजरात	¥•¤
मिंहरोर	२१व	ग्रुज्जर (ग्रुजरात)	र२४
हु [*] कुर्युंदेश	४२२	गुर्ज्यदेश (गुजरात)	03 f
मिला स	AAS	गुरूवचनगर	363
ह [°] मनगर	२२	गूनर	¥\$€
ў भलमेरूदुर्ग	२४१	गोपाचलनगर (बवालियर)	१४४, १७२, २६४, ४४३
अल्लि स	935	गोलागिरि	
र्रगण	७३६	गोबटीपुरी	₹७२
क्रजांगलदेश -		गोविन्दगढ	रेवर
क्रदी	२००	गौन्देर (गोनेर)	***

447, **46**4

150

७, १६, २४, २७ ३१

8x, 86, 48, 88, 48

148 I	c 1s.		माम एवं नगरों की नामावति
Armije Marije	ें १०१, २०१, ४	६२ ∫ विलास	184
वैदेवपुर	t :	३२ तुक्क	724
ब र्सा वेर्	५११, ६	२० दुक्क	12.0
बीरिहरुका	२४, ३१, ६१, ४१	८६ तोडा(टोडा)	4.6
	५०२, ६०	१ दक्साए।	ì, eu
बी षपुर सं	२०४, ३=१, ५६	१ विवस	03\$
वीहिनेर	२६, ३४, ७४, २३	र वाक	16x
	२६३, ३०२, ३३	३ विज्ञी-देहली	\$0, EE, \$3E, \$80
	४४४, ४६१, ४६		1×4, 10×, 120, 4×4
	¥=0, ¥88, 4 ¥	¥	YYE, XE?, WXE, WE'S
काल रापाटके	१ ६	रे विवसानगर (दौसा)	₹xx
मानासा	३७	२ हुदू	102
विकास विकास	185	्र _{वि} नी	300
	१७०, ३२६, ४ <i>७७</i>	वेषसामाम	761
मेर्जेटवार्ड)	३७२	देवगिरि (वींसा)	१७३, २ ८ ६, ३६४
टेहंटको टींक	३०२		125
	₹२, १८६, २०३	वैंखुंनी	\$ \$
टी राग्राम ा द	₹४=, ३१३	दैवल	161
क्यों डीवाम ठे ८	761	वौंसा-धीसा	
हिमा <u>ीं</u>	¥ŧ	द्रव्यपुर (मालपुरा)	१७३, ३२८, ३७२, ३७३
विक्वाना :	३११, ३७१	दारिका	२६२, ४७६
ढू डारदे श	३१६, ३२=	वर्वलक्सपुर	¥46
सागवचास (नागरचाल)	986	थांगानगर •	रें!=
समनगढबुर्ग (टोडारावसिंह) 66	र्थारानगरी	{ =
	१३=, १७X, १=३, २०o	नेंदतटग्राम	₹४, १₹३, १ ४ %, ₹७ ६
	2.11 22	नंदंप्रर	₹₹
तमाल	_ 1	नगर	#G¥
तार ग् षुर		ग्गर गगरा	२२७, ४६२
तिजास		ग्यन पुर	YÁK
बिलंग		विवयुर रिवरनगर	\$! =
	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	*******	49

पोंमें एवं नगरी की नाम	विकि]		. [ESK
गरंक्स	446	ŭid	111
र्ग र्रायका	११७, ३४३, ३८२, ४१४	विभेटा	Exs! ams
र्गरीवेसा (बढा)	*tiv	वंशिमिर	45.
र्नसंकच्छपुरा	tvi	पिपंकाद	351
नेमंबर दुर्ग	ŘŶ¥	विपंजीन	. Twi
नवसमपुर		पुँचाँ	avt
नों चंस	* 64	पूर्विसामगर	740
मं गिर या सदेश	44.	पूरवंदेश	ten
मागपुरे नगर	३३, ३४, वय, २व०, रेंस्र	पेरोंज ी र्ट	₹ ७ =
	३८४, ४७१, देवँ३	पेरींजापसन	६ २
नागपुर (नागीर)	७३ई, ७६९	पीर्वमार्गमं र	19 4
र्गागीर	३७३, ४६६, ४००	प्रति षुर	108
	४८०, ७१८, ७६२	र्वलीचा	F-9#
नामादेश	\$0	कांगेपुर	\$Y
निमंबंपुरं	¥09	फॉगी	12, 4x, \$00
निरासी (नरामसा)	140	फौफसी	141
नेवासंपुरी (सीगानेर)	१ 4६	बैगं	160
री में थ ा	P30	बंगाम	146
विद्या	१६ ६, २ ६०, ४६४, ४६७	र्वंषगोपासपुर	461
शिंवा	₹ ७, ३४१	वंगंरू	é9
i lonÿt	¥ŧe	वगंक-नगर	. uv; *60
विवरनगर	¥4, ¥4.	वंशहटा	₹ ४ ₹; ₹ \$4
हिंग	- - † 40	बटरपुर	{
निवासमगर	58	वनं।रस	741
भा को	\$E ?	वंरव्यर	1£s
चितास	44	वंरीड	tto
ाटखं	240, 408, 444, 487	वसंद (वस्सी)	१८१, २६६, ४१४
स् न पुर	žve	वंशयागगर	१६४, १७०, ३२ <i>६</i> , ४४६
में पंत	6 4.		४क्ष, ७३१
। श ष	(44)	बंहादुरपुर	₹ ₹ ₹

£16].			[प्राम एवं नगरों की नामावित
वागडदेश	६७, ११४, २३४	मथुरा	You
बासपुर ·	110	मधुपुरी	316
वायनगर	Xue.	मनोहरपुरा	
बारतहबरी ं	₹७२	मलारना	3 % 0
पालाहेडी	रेबद	मरूत्यल	90v
वासी	¥°€	मसूतिकापूर	€9.
बीकानेर	४६१, ४६२, ६ ≂४	मलयखेड	٧٠
बू न्दी	EA' A06	महाराष्ट	408
वैराठ	६७, ४६४	महुवा	₹₹₹
बैराड (बैराठ)	30Y	महेबो	२४, २६४, ४४४, ४७३
वालीनगर	¥=, १६६, १=३	गाधोपुर गाधोपुर	*68
बहापुरी	₹£=	मा धोराजपूरा	₹६ =
भवीच	308	मारवाड	३३३, ४४४
भदावरदेश	२५४, ३४०	मारोठ	880
भरतसम्ब	883	11(10	१६३, ३१२, ३७२
भरतपुर	3=5	मालकोट	३=४, ४६२, ४६३
भानगढ	305	मालपुरा	488
भानुमतीनगर	304	414361	४, २८, ३४, ४६, १२२, १३०
भावनगर	220		२३१, २४८, २४६, २६२, ३०१
भिष्ड	848		३४२, ३४३, ३४४, ४६०, ४६२
. विरूद	2010		६३६, ७६=
भिलोड		मालवदेश	३४, २००, ३४०, ३८७
भैंसलाना	1 •	गल्हपुर `	₹¥
भोपाल	- 1	मेथिलापुरी	¥¥3
मृतुकच्छ पुरी		(कन्दपुर	990
मंडोवर		लतान	१११, ४६२
मंदानगर	1 8	नताए। (मुनतान) इतः	१७७
मांबीबी	1	रता इरग्राम	१८४, ३७२, ४८६
मांडीगढ	- 1 '	हरश्रम स्पाट	10
मु'बाबती .	७४ मेव		२०४, ३८१
मंबनाणापुर	२४१ मेव		†uf
	1 44		₹७२

.

माम एवं नगरों की ना	माविद्या }	•	
मोहनवाडी	YE	. 1 *	[६३७
मोहा	११२, ४४७, ४२	10111	¥1.
ूमोहा गा		(4414)	₹४४, ६६४
मैनपुरी	१ २:	Caldi	200
मीजमा बाद	¥8		र** १२४
	¥€, ७१,१०४, १७)		१७०
	१६२,२०=, २४४, ४११		₹₹₺ ३८६, ७००
यश्र नपुर	४१२,४१६,४१७, ५४३	1	fex
योगिनीपुर (दिल्ली)	₫¥₿	1	रेवह
यौवनपुर	468	1	X\$
रणतभंदर (रलयंगीर)	300	बालसोट	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
	905	नाहौर	₹€=, ७७१
रस यम्भीरगढ	७१२, ७४३	वूरणकर्णसर	16-1 005
रणस्तभदुर्ग (रणयंभौर)	717	वनपुर	
रतीय	\$ 0\$	वाम	335
रूहितगपुर (रोहतक)	101	विकमपुर	408
राजपुर नगर		विदाध	\$6¥, 99\$
राजगढ	305	विसल	३७१
राजग्रह	२१७, २५४, ३६३	बीरमपुर	४१२
रांडपुरा	820	वृत्यावती नवरो	१७८
रासपुर	5 ?e	इ.नानता नवस	थ, ३६, १०१, १७६, २००
रामगढ नगर	₹¥€, ₹७०		*55
रामपुर		वृत्दावन	¥, ११०, २७६
रामपुरा		वेसरे ग्राम	48
रामसर (नगर)		वैरागर ग्राम	. A6' 45.
रायसरि		वैराट (वैराठ)	
रामदेश	44	वोराव (वोराज) नवर	१ ०६
(वितप्रकोषी	₹₹७	वेसलासा नगर	46 A
राज्य क्षत्र[वा]			₹¥¥

३७२ शाक्बाटपुर

६२, २४१ | शाहजहांनाबाद

488

:*राहेरी

रेवाबी

रेखंड्रस

₹**X**¥

¥¥q

220

\$. \$

80, \$04, Ko \$

	•		्याम एवं बगरी की सामानह
विवयुरी	,	३५ ∫ सागपत्तन नगर (
बु बाउनपुर		a • वागवा ड पुर	सागवाडा) १ूप् ५००
शेरपट	६ =२, ७:	} -	
स्रोरपुर	४०, २१२, ३६	1	₹u, १४
बैरपुरा	t1	4	111
श्रीवसन			43
भीपय	=¥, ₹€	1	
संग्रामगढ	71	- 1	न्थ, १२६
संप्रामपुर	₹ ४१, ४ ४.	1 .	444
सांबीरा	***, ** ***	1 1 2 1	YĘ0
समिनायर (संगानेर)	₹8: € 3:	1 -	YY
सांगानेर	६४, ६३, ७३, १३, १४, ६३, ७३, १३	1	७७, १४२, १४४, ३६७
	£xx, £x=, £x€, £x±	-	xex
	\$ K E' \$ E R' \$ E E' 5 '5 '5 '5 '5 '5 '5 '5 '5 '5 '5 '5 '5		१६२
	२०७, २२१, ३०१, ३७१		AÉÉ.
			¤¥, €₹₹
	\$54, \$64, 805, 870	सीर्सं।रनगर	२५६
साँगावती (साँगावर)	¥4., ¥=¥, ¥==, ७७¥	l	₹४, १२६
सांबर	78 %	सुवेट	360
समस्या नगर	₹ ७ १	ł	419
समाबद	२६०	सुभोट	438
सणरपुर	385	सुम्हेरवाली श्रांधी	३७ २
समीरपूर	YEG	सुरंगपत्तन	ţaţ
तम्बेदशि ख र	190	सूधानगर	Xut
स्विक्ष सम् पूर	₹ 8 ₹, ६ ७८	सूरत	(00
स्वाई माधीपुर	4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4	सूर्यपुर	- KKE
•	\$\$, 60, \$\$\$, \$XX	सेवास्तो	461
हारनपुर	३७०, ६८३	सोंनागिरि	XX5, 400, 000
हिला बन्दपुर		सोअःता (सोजत)	ne.
-	,	सीरठदेश	-
• •	. 1	हांसी	. 3
मिस नगरी	- 1		nes tat

_			(43
कंतपुर		परस	ŧv
सीर	, l'e	एरिंद राज्यस	₹¢′
गढ) हरसीर वर्ग	६३८ हिर	चव खोदा	\$ 87 \$ 87
r.	२००, २६६ हिस		₹₹, २ ७ ०
पूरि विो	१६७ हीर ७३४ हस्त	ापुर विदेश ⁻	२३.
ीती	६०४ . होलं		१७ . १ ००



🛨 शुद्धाशुद्धि पत्र 🛨

विश्व पंचिक	षशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ	
\$×8	व्यथ प्रकाशिका	धर्य प्रकाशिका	
EXC.	খিক ত্ত	किंघन	
40 4 २ ६	गोमट्टसार	गोम्मटसार	
? GXE	३०४	368	
FUNCE	१८१४	१८४४	
₹₹×₹₽	तत्वार्थ सूत्र भाषा	तत्वार्थं सूत्र भाषा-जयवंत	
.gexξο	वे. सं. २३१	वे. सं. १६६२	
数数次本	KSK	X86	
BRXSB	वष	वर्षे	
श्रम्भ र२२	_	XFF	
₹o×\$\$	नयचन्द्र	नयनचन्द्र	
本家% \$	कात	काल	
necre	सह	साह	
Kexik	र. काल	ले॰ काल	
€₹×€	. न्योपार्जि	न्यायोपार्जित -	
₹£X१•	'मूपरदास	मूधरमिश्र	
4e ×43	fref	भूपरासम १⊏०१	
exxic	बालाविवेध	बालावबोध	
wexer.	ना धार	नालाजनाव स्राचार	
• \$x ? \$ "	श्रीनंदिगस्	a141(
€r=><\$	सोनगिर पच्चीसी ,	·	
FEXE	१४ वी शताब्दी	सोनागिरपञ्चीसी	
नै ० ४२०	6886	१६ वी शताब्दी १३००	
१२१%१ धर्म पूर्व आचारशास्त्र		१३४१ ऋष्यात्म एवं योग शास्त्र	

चसुद्ध पा १७२८ रहतू । . दसहा ३०१६ भट्टा 2840 43EXP3 \$5EX-FXX सं क्षीत्र टीका EEXX H EXS

য়ৰ দাত १८२८ र० कालसं० १६६६ ले॰ काल २०४० सं० १४८४ क० सं० २१०० से २१४८ कवि तेजपाल नाढमञ्ज २३१८ भट्टारक 2908 व्याकारापं चमीकया देवेन्द्रकीर्त्त बद्ध भानमानम्य ३२८० पद्मनन्दि 3353 भक्तिलाभ 346-305 कल्याणमाला चौर कनकुरास भूपास चतुर्विशतिटीका ंहिन्दी भादवासुदी पञ्चगुरुकल्याम पूजा पाटोदी

्रे श्रह्माश्रुद्धि पत्र ो यन्ध्य पाक शुद्ध पाठ #F E/4 हिन्दी -439× Y øğ≎×c हिन्दी お覧Xさい हिन्दी चीतकतः । 44°54 P--P 4+ FW नहार। यवस्य वदा गयमञ्च οħ ÷ मनीमघ मार्नामह sy f= त्रभवदेषसूरि **अ**अयदेशसरि ¥1 5 अवभ्र श 마다는 것 다

1- y y



१६३

	वार सवा	
	पुस्तकाला ० १८-	\$17-7m
काल न०		
नेसर क्या	म्लीबास, क्य	स्यूर्यन्य सं
शीषंव उ / खण्ड	न्य क्रांचे कम मन्य	3T4S
दिनाक	लेने वाले के हस	ताक्षर वापसी
17/5	250mi	_ 14-2-
,	(}